रजिस्ट्री सं. डी.एल.- 33004/99 REGD. No. D. L.-33004/99

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

सी.जी.-डी.एल.-अ.-25062021-227890
CG-DL-E-25062021-227890

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)
PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 344] नई दिल्ली, बुधवार, जून 23, 2021/आषाढ़ 2, 1943
No. 344] NEW DELHI, WEDNESDAY, JUNE 23, 2021/ASHADHA 2, 1943

कारपोरेट कार्य मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 23 जून, 2021

सा.का.नि. 432(अ).—केंद्रीय सरकार, कंपनी अधिनियम, 2013 (2013 का 18) की धारा 469 के साथ पठित धारा 133 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए और भारत के राजपत्र असाधारण, भाग 2, खंड 3 के उपखंड (i) में सं. सा.का.नि.739(अ) द्वारा तारीख 7 दिसंबर, 2006 की को प्रकाशित कंपनी (लेखा मानक) नियम, 2006 [और जिसमें सं. सा.का.नि. 212(अ), तारीख 27 मार्च, 2008, सा.का.नि. 225(अ), तारीख 31 मार्च, 2009, सा.का.नि.378(अ), तारीख 11 मई, 2011, सा.का.नि.913(अ), तारीख 29 दिसंबर, 2011, सा.का.नि.914(अ), तारीख 29 दिसंबर, 2011, सा.का.नि. सं. 364(अ), तारीख 30 मार्च, 2016 और सा.का.नि. सं. 569(अ), तारीख 18 जून, 2018 द्वारा समय-समय पर संशोधन किए गए] को अधिक्रांत करते हुए, जिन्हें ऐसे अधिक्रमण से पहले किया गया है या करने का लोप किया गया है, उक्त अधिनियम की धारा 132 के अधीन गठित राष्ट्रीय वित्तीय रिपोर्टिंग प्राधिकरण से परामर्श करने के पश्चात् निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात्:-

1. **संक्षिप्त नाम और प्रारंभ:** (1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम **कंपनी (लेखा मानक) नियम, 2021** है।

(2) ये नियम राजपत्र में इनके प्रकाशन की तारीख से प्रवृत्त होंगे।

2. **परिभाषाएं**:- (1) इन नियमों में, जब तक संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो –

(क) "लेखा मानक" से नियम 3 में विनिर्दिष्ट लेखा मानक या उससे संबंधित परिशिष्ट अभिप्रेत है;

(ख) "अधिनियम" से कंपनी अधिनियम, 2013 (2013 का 18) अभिप्रेत है;

(ग) इन नियमों के संबंध में "उपाबंध" से इन नियमों से संलग्न लेखा मानक (एएस) से युक्त उपाबंध अभिप्रेत है;

(घ) "उद्यम" से इस अधिनियम की धारा 2 के खंड (20) में यथा-परिभाषित 'कंपनी' अभिप्रेत है;

(ङ) "लघु और मध्यम आकार की कंपनी" (एस एम सी) से ऐसी कंपनी अभिप्रेत है;

(i) जिसके साधारण शेयर या ऋण या प्रतिभूतियां किसी स्टाक एक्सचेंज में चाहे वह भारत में या भारत से बाहर हो, सूचीबद्ध नहीं है या सूचीबद्ध किए जाने की प्रक्रिया में नहीं है;

(ii) जो कोई बैंक, वित्तीय संस्था या कोई बीमा कंपनी नहीं है;

(iii) जिसका आवर्त (अन्य आय को अपवर्जित करते हुए) ठीन पूर्व लेखा वर्ष में दो सौ पचास करोड़ रुपये से अधिक नहीं है;

(iv) जिसकी ठीक पूर्व लेखा वर्ष के दौरान किसी समय देनदारियां (जिसके अंतर्गत लोक निक्षेप भी है) पचास करोड़ रुपये से अधिक नहीं है; और

(v) जो किसी कंपनी की नियंत्री कंपनी या समनुषंगी कंपनी नहीं है, जो कोई लघु और मध्यम आकार की कंपनी नहीं है।

स्पष्टीकरण: इस खंड के प्रयोजनों के लिए, कोई कंपनी, लघु एवं मध्यम आकार की कंपनी के रूप में अर्हित होगी, यदि उसमें वर्णित शर्तों का उस रूप में सुसंगत लेखा अवधि के अंत में समाधान हो जाता है।

2. उन शब्द और पद के, इसमें प्रयुक्त है, इन नियमों में परिभाषित नहीं है किंतु अधिनियम में परिभाषित है, वही अर्थ होंगे, जो उस अधिनियम में हैं।

3. **लेखा मानक:** (1) केंद्रीय सरकार, इन नियमों के उपाबंध में यथाविनिर्दिष्ट, भारतीय चार्टर्ड अकाउंटेंट संस्थान द्वारा सिफारिश किए गए लेखा मानक 1 से 5, 7 और लेखा मानक 9 से 29 को इसके द्वारा विहित करती है।

(2) लेखा मानक, 01 अप्रैल, 2021 से या इसके पश्चात् प्रारंभ होने वाली लेखा अवधियों के संबंध में प्रभावी होंगे।

4. **लेखा मानक का अनुपालन करने संबंधी बाध्यता :** (1) प्रत्येक कंपनी, उन कंपनियों को छोड़कर, जिन पर कंपनी (भारतीय लेखा मानक) नियम, 2015 के अधीन यथा-अधिसूचित भारतीय लेखा मानक लागू हैं, तथा इसके लेखापरीक्षक, उपाबंध में यथा विनिर्दिष्ट रीति से लेखा मानकों का अनुपालन करेंगे।

(2) लेखा मानक वित्तीय विवरण तैयार करने में लागू होंगे।

5. **लघु और मध्यम की कंपनी (एस एम सी) के संबंध में छूट या रियायत प्राप्त करने के लिए अर्हता:** कोई, विद्यमान कंपनी, जो पूर्व में लघु और मध्यम आकार की कंपनी (एसएमसी) नहीं थी और तत्पश्चात् लघु और मध्यम आकार की कंपनी (एस एम सी) हो जाती है, वह लघु और मध्यम आकार की कंपनी (एस एम सी) को उपलब्ध लेखा मानकों के संबंध में छूट या शिथिलता के लिए अर्हकनहीं होगी जब तक कि कंपनी शेष दो लगातार लेखा अवधियों के लिए लघु और मध्यम आकार की कंपनी रही है।

[फा. सं. 17/151/2013-सीएल Vpt.]

के.वी.आर. मूर्ति, संयुक्त सचिव

IndiaCode

उपाबंध

(नियम 3 देखें)

लेखा मानक

क. सामान्य अनुदेश

1. लघु और मध्यम आकार की कंपनियां इन नियमों के अधीन लेखा मानकों का अनुपालन करते समय निम्नलिखित अनुदेशों का अनुसरण करेंगी:-

1.1 ऐसी लघु और मध्यम आकार की कंपनी जो उसको दी गई छूट या शिथिलता के अनुसरण में कतिपय सूचना प्रकट नहीं करती है वह इस तथ्य को (उसके वित्तीय विवरणों के टिप्पण के रूप में) प्रकट करेगी कि यह एक लघु और मध्यम आकार की कंपनी है और उसने उन लेखा मानकों का, जहां तक वे निम्नलिखित आधारों पर किसी लघु और मध्यम आकार की कंपनी को लागू होते हैं, अनुपालन किया है :

"यह कंपनी एक लघु और मध्यम आकार की कंपनी (एस एम सी) है जैसा कि कंपनी अधिनियम, 2013 के अधीन अधिसूचित कंपनी (लेखा मानक) नियम, 2021 में परिभाषित है। तदनुसार, कंपनी ने किसी लघु और मध्यम आकार की कंपनी को लागू लेखा मानकों का अनुपालन किया है।"

1.2 जहां, कोई कंपनी कोई लघु और मध्यम आकार की कंपनी होने के कारण किसी छूट या शिथिलता के लिए अर्हता प्राप्त है किंतु पूर्व में, वह चालू लेखा अवधि में सुसंगत छूट या शिथिलता के लिए आगे अर्हता प्राप्त नहीं है, वहां सुसंगत मानक या अपेक्षाएं, चालू अवधि से लागू हो जाती हैं और लेखा अवधि के तत्समान अवधि के लिए आंकड़े केवल उसके लघु और मध्यम आकार की कंपनी न रहने के कारण पुनरीक्षित किए जाने की आवश्यकता नहीं है। यह तथ्य कि कंपनी पूर्ववर्ती अवधि में एक लघु और मध्यम आकार की कंपनी थी और उसने लघु और मध्यम आकार की कंपनी को उपलब्ध छूट और शिथिलताओं का लाभ ले लिया था, वित्तीय विवरणों के टिप्पणों में प्रकट किया जाएगा।

1.3 यदि, कोई लघु और मध्यम आकार की कंपनी, किसी लघु और मध्यम आकार की कंपनी को उपलब्ध किसी न किसी सभी छूट या शिथिलता का लाभ लेने का विकल्प नहीं देती है, तो वह उनके संबंध में जिस छूट या शिथिलता का उसने लाभ लिया है, मानकों को प्रकट करेगी।

1.4 यदि, कोई लघु और मध्यम आकार की कंपनी, किसी लघु और मध्यम आकार की कंपनी को उपलब्ध छूट या शिथिलताओं के अनुसरण में प्रकट न किए जाने के लिए अपेक्षित सूचना को प्रकट करने की इच्छुक है, तो वह सुसंगत लेखा मानक के अनुपालन में सूचना को प्रकट करेगी।

1.5 लघु और मध्यम आकार की कंपनी, लेखा मानक में विहित अपेक्षाओं के अनुपालन से कतिपय छूट या शिथिलता प्राप्त करने के लिए विकल्प ले सकेगी।

परंतु ऐसी भागतः छूट या शिथिलता तथा प्रकटन को किसी व्यक्ति या जनता को भ्रम में डालने के लिए अनुज्ञेय नहीं होगी।

2. लेखा मानक, जो विहित किए गए हैं लागू विधियों के उपबंधों के अनुरूप होने के लिए आशयित हैं। तथापि, यदि विधि में पश्चात्वर्ती संशोधनों के कारण विशिष्ट लेखा मानक ऐसी विधि के अनुरूप नहीं पाया जाता है, तो उक्त विधि के उपबंध अभिभावी होंगे और वित्तीय विवरणों को ऐसी विधि के अनुरूप तैयार किया जाएगा।

3. लेखा मानक केवल उन्हीं मदों के लिए लागू होने के लिए आशयित हैं जो तात्विक हैं।

4. लेखा मानकों के अंतर्गत बड़े, तिरछे अक्षरों में सीधे टाइप किए गए पैराग्राफों के सैट और हैं, जिनका समान प्राधिकार है। बड़े अक्षरों में तिरछे टाइप किए गए पैराग्राफ में मुख्य सिद्धांत उपदर्शित हैं। किसी व्यष्टि लेखा मानक को, उद्देश्यों के संदर्भ में, यदि उस लेखा मानक में कथित हों और इन साधारण अनुदेशों के अनुसरण में पढ़ा जाएगा।

ख. लेखा मानक

लेखा मानक 1

लेखा नीतियों का प्रकटन

*(इस लेखा मानक में कुछ **मोटे तिरछे** टाइप और कुछ सीधे टाइप में व्यवस्थित पैरा सम्मिलित हैं, जिनका समान प्राधिकार है। मोटे तिरछे टाइप में दिये गए पैरा मुख्य सिद्धांत उपदर्शित करते हैं। इस लेखा मानक को अधिसूचना के प्रति उपाबंध के भाग क में अतंर्विष्ट साधारण अनुदेशों के संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिये।)*

प्रस्तावना

1. यह मानक महत्वपूर्ण लेखा नीतियों के प्रकटन से संबंधित है जिनका वित्तीय विवरण को तैयार और प्रस्तुत करने में अनुसरण किया जाता है।

2. किसी उद्यम द्वारा अपने वित्तीय विवरणों में अपनी कार्य स्थिति और लाभ-हानि के बारे में प्रस्तुत दृष्टिकोण, वित्तीय विवरणों को तैयार तथा प्रस्तुत करने में अनुसरण की गई लेखा नीतियों द्वारा महत्वपूर्ण रूप प्रभावित हो सकता है। विभिन्न उद्यम भिन्न-भिन्न लेखा नीतियों का अनुसरण करते हैं। यदि प्रस्तुत किये गए दृष्टिकोण को ठीक से समझना है तो अनुसरण की गई महत्वपूर्ण लेखा नीतियों का प्रकटन आवश्यक है।

3. कुछ मामलों में वित्तीय विवरणों की तैयारी तथा प्रस्तुतीकरण में अनुसरण की गई कुछ लेखा नीतियों का प्रकटन विधि द्वारा अपेक्षित होता है।

4. लेखा मानकों में कुछ लेखा नीतियों जैसे कि विदेशी मुद्रा की मदों से संबंधित अनुवाद संबंधी नीतियों के प्रकटन अपेक्षित है।

5. हाल ही के वर्षों में, भारत में कुछ उद्यमों ने अपने शेयरधारकों को भेजें जाने वाली वार्षिक रिपोर्टों में वित्तीय विवरणों को तैयार करने तथा प्रस्तुत करने में अनुसरण की गई लेखा नीतियों का एक पृथक कथन देने की प्रथा अपनाई है।

6. तथापि, साधारणतः इस समय लेखा नीतियों को सभी वित्तीय विवरणों में नियमित रूप से पूर्णतः प्रकट नहीं किया जाता है। कई उद्यम लेखा संबंधी टिप्पणों में कुछ महत्वपूर्ण लेखा नीतियों का वर्णन शामिल करते हैं। किन्तु प्रकटन के स्वरूप तथा स्तर में निगमित तथा अनिगमित क्षेत्रों तथा एक ही क्षेत्रा में विभिन्न इकाइयों के बीच बहुत भिन्नता होती है।

7. कुछ उद्यमों में भी, जो इस समय अपनी वार्षिक रिपोर्टों में लेखा नीतियों का पृथक कथन सम्मिलित करते हैं, बहुत भिन्नता होती है। लेखा नीतियों का कथन कुछ मामलों में लेखाओं का भाग बनता है, जबकि अन्य मामलों में यह पूरक सूचना के रूप में दिया जाता है।

8. इस मानक का प्रयोजन, लेखा मानक के माध्यम से लेखा नीतियों के प्रकटन तथा उस रीति को जिसमें वित्तीय विवरण में लेखा नीतियों को प्रकट किया जाता है, स्थापित करके वित्तीय विवरणों को बेहतर रूप से समझने का संवर्धन करना है। ऐसा प्रकटन विभिन्न उद्यमों के वित्तीय विवरणों के बीच अधिक अर्थपूर्ण तुलना को भी सुकर भी बनाएगा।

स्पष्टीकरण

मूल लेखा मान्यताएँ

9. कतिपय मूल लेखा मान्यताएँ वित्तीय विवरणों की तैयारी तथा प्रस्तुतिकरण का आधार होती है। प्रायः उनका वर्णन विशिष्ट रूप से नहीं किया जाता है क्योंकि उनकी स्वीकृति तथा प्रयोग मान लिया जाता है। यदि उनका अनुसरण नहीं किया जाता, तो उनका प्रकटन आवश्यक है।

10. सामान्यतः निम्नलिखित को, मूल लेखा मान्यताओं के रूप में स्वीकार किया गया है।

क. चलायमान समुत्थान

उद्यम को सामान्यतः एक चलायमान समुत्थान अर्थात पूर्वानुमेय भविष्य के लिए प्रचालन को जारी रखने वाले के रूप में देखा जाता है। यह माना गया है कि उद्यम के पास समापन की अथवा अपने प्रचालनों के मान को तात्विक रूप से कम करने का न तो आशय है और न ही आवश्यकता है।

ख. संगतता

यह माना जाता है कि लेखा नीतियाँ एक अवधि से दूसरी अवधि तक समनुरूप (एक जैसी) हैं।

ग. प्रोद्भवन

राजस्व तथा लागत प्रोद्भूत होती है अर्थात उसी प्रकार अभिज्ञात होती है, जैसे उसे अर्जित या उपगत (न कि प्राप्त या संदत धन के रूप में) किया जाता है तथा उन्हीं अवधियों के वित्तीय विवरणों में अभिलिखित किया जाता है, जिससे वे संबंधित हैं। (प्रोद्भवन मान्यता के अन्तर्गत राजस्व की लागत से तुलना की प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले विचारणीय तथ्यों का इस मानक में वर्णन नहीं किया गया है।

लेखा नीतियों का स्वरूप

11. लेखा नीतियाँ विशिष्ट लेखा सिद्धांतों तथा उद्यम द्वारा वित्तीय विवरणों की तैयारी तथा प्रस्तुतीकरण में अपनाए जाने वाले उन सिद्धांतों को लागू करने की पद्धतियों के प्रति निर्देश करती हैं।

12. लेखा नीतियों की कोई भी एक सूची नहीं हैं, जो सभी परिस्थितियों में लागू हो। विभिन्न परिस्थितियाँ, जिनमें एक उद्यम विपरीत तथा जटिल आर्थिक क्रियाकलाप की स्थिति में प्रचालन करता हैं, वैकल्पिक लेखा सिद्धातों तथा उन सिद्धातों को लागू करने के तरीकों को स्वीकार्य बनाते हैं। उचित लेखा सिद्धांतों तथा उन सिद्धांतों को प्रत्येक उद्यम की विशेष परिस्थितियों में लागू करने के तरीकों का चुनाव उद्यम के प्रबन्धकों द्वारा गहन महत्वपूर्ण निर्णय की मांग करता है।

13. लेखा मानकों, सरकार तथा अन्य विनियामक संस्थाओं तथा प्रगतिशील प्रबन्धकों के संयुक्त प्रयासों ने विगत वर्षों में विशिष्ट रूप से निगमित उद्यमों के मामले में स्वीकार्य विकल्पों की संख्या को कम कर दिया है। जबकि भाविष्य में इस संबंध में किये जाने वाले निरंतर प्रयासों से इस संख्या में और अधिक कमी होने की संभावना है, परन्तु उद्य द्वारा सामना की जाने वाली बदलती हुई परिस्थितियों को देखते हुए इस बात की संभावना नहीं है कि वैकल्पिक लेखा सिद्धांतों तथा उन सिद्धांतों को लागू करने की पद्धतियों की उपलब्धता पूर्णरूप से समाप्त हो जाए।

वे क्षेत्र जिनमें भिन्न-भिन्न लेखा नीतियों का प्रयोग किया जाता है

14. वे क्षेत्र, जिनमें विभिन्न उद्यमियों द्वारा भिन्न-भिन्न लेखा नीतियां

अपनाई जा सकती हैं, के उदाहरण हैं:

क. अवक्षयण, निःशेषण तथा क्रमिक अपाकरण की पद्धतियां

ख. निर्माण के दौरान व्यय का प्रतिपादन

ग. विदेशी मुद्रा मदों का संपरिवर्तन या अनुवाद

घ. सूचीबद्ध सामान का मूल्यांकन

ङ. गुडविल का प्रतिपादन

च. विनिधानों का मूल्यांकन

छ. सेवानिवृत्ति प्रसुविधाओं का प्रतिपादन

ज. दीर्घ कालिक संविदाओं पर लाभ का अभिज्ञान

झ. स्थिर आस्तियों का मूल्यांकन

ञ. आकस्मिक दायित्वों का प्रतिपादन

15. उपयुक्त उदाहरणों की सूची को संपूर्ण करने का आशय नहीं है।

लेखा नीतियों के चयन में विचारणीय तथ्य

16. किसी उद्यम द्वारा लेखा नीतियों के चयन के लिए मुख्य विचारणीय तथ्य यह है कि ऐसी लेखा नीतियों के आधार पर तैयार तथा प्रस्तुत किये गए वित्तीय विवरण तुलनपत्र की तारीख को उद्यम की वित्तीय स्थिति का और उस तारीख को समाप्त हुई अवधि के लिए लाभ या हानि का सही तथा उचित रूप प्रकट करते हों।

17. इस प्रयोजन के लिए, लेखा नीतियों के चयन तथा लागू करने को शासित करने वाले मुख्य विचारणीय तथ्य निम्नलिखित हैं:

(क) विवेक

भविष्य की घटनाओं से जुड़ी अनिश्चितता को ध्यान में रखते हुए लाभों का पूर्वानुमान नहीं लगाया जाता बल्कि तभी अभिज्ञात किया जाता है जब वसूल हो जाए, जरूरी नहीं रोकड़ में हो। सभी ज्ञात दायित्वों तथा हानियों के लिए उपबंध किया जाता है, हालांकि रकम का निश्चित रूप से निर्धारण नहीं किया जा सकता तथा उपलब्ध सूचनाओं के आधार पर केवल सर्वोत्तम अनुमान को प्रदर्शित करती हैं।

(ख) स्वरूप पर वास्तविकता

संव्यवहारों तथा घटनाओं का वित्तीय विवरणों में लेखा प्रतिपादन तथा प्रस्तुतिकरण उनके सार द्वारा शासित किया जाना चाहिये, ना कि केवल विधिक स्वरूप द्वारा।

(ग) सारवानता

वित्तीय विवरणों में सभी ''सारवान'' मदों को अर्थात ऐसी मदों को जिनकी जानकारी से वित्तीय विवरणों के प्रयोग करने वाले का निर्णय प्रभावित हो सकता है, प्रकट किया जाना चाहिये।

लेखा नीतियों का प्रकटन

18. वित्तीय विवरणों को ठीक से समझने के लिए यह आवश्यक है कि वित्तीय विवरणों को तैयार करने तथा प्रस्तुत करने में अपनाई गई सभी महत्वपूर्ण लेखा नीतियों को प्रकट किया जाये।

19. ऐसा प्रकटन वित्तीय विवरणों का भाग होना चाहिये।

20. वित्तीय विवरणों के अध्ययनकर्ता के लिए यह सहायक होगा, यदि उन सभी को अलग-अलग बिखरे हुए कथनों, अनुसूचियों और टिप्पणों में प्रकट करने की बजाए एक स्थान पर प्रकट किया जाए।

21. ऐसे मामलों के उदाहरण जिनके विषय में अपनाई गई लेखा नीतियों का प्रकटन अपेक्षित होगा अनुच्छेद 14 में दिये गए हैं। तथापि, उदाहरणों की यह सूची को संपूर्ण करने का आशय नहीं है।

22. किसी लेखा नीति में, कोई ऐसा परिवर्तन, जिसका सारवान प्रभाव है, प्रकट किया जाना चाहिये। वह रकम जिसके द्वारा वित्तीय विवरण में किसी मद पर ऐसे परिवर्तन से प्रभाव पड़ता है, उसे भी ज्ञातव्य सीमा तक प्रकट किया जाना चाहिये। जहाँ ऐसी रकम पूर्णतः अथवा अंशतः अभिनिश्चय नहीं है, वहाँ इस तथ्य को उपदर्शित करना चाहिये। यदि लेखा नीतियों में कोई ऐसा

परिवर्तन किया जाता है जो चालू अवधि के वित्तीय विवरणों पर कोई सारवान प्रभाव नहीं डालता, परन्तु पश्चात्वर्ती अवधि में उनके सारवान प्रभाव पड़ने की युक्तियुक्त संभावना है तो ऐसे परिवर्तन के तथ्य को उस अवधि में उचित रूप से प्रकट करना चाहिये, जिसमें उसको अपनाया गया है।

23. लेखा नीतियों अथवा उनमें परिवर्तनों का प्रकटन लेखाओं में मद के गलत या अनुचित प्रतिपादन का उपचार नहीं कर सकता है।

मुख्य सिद्धान्त

24. वित्तीय विवरणों की तैयारी तथा प्रस्तुतीकरण में अपनाई गई सभी महत्वपूर्ण लेखा नीतियों को प्रकट किया जाना चाहिये।

25. महत्वपूर्ण लेखा नीतियों का इस प्रकार प्रकटन, वित्तीय विवरणों का भाग होना चाहिये तथा लेखा नीतियों को सामान्यतः एक स्थान पर प्रकट किया जाना चाहिये।

26. लेखा नीतियों में ऐसा कोई भी परिवर्तन, जिसका वर्तमान अवधि में सारवान प्रभाव है, अथवा जिसका भविष्य में सारवान प्रभाव पड़ने की संभावना है, प्रकट किया जाना चाहिये। लेखा नीतियों में परिवर्तन के मामले में, जिसका वर्तमान अवधि में सारवान प्रभाव है, उस रकम को, जिसके द्वारा किसी मद पर ऐसे परिवर्तन के कारण प्रभाव पड़ता है, उसकी ज्ञातव्य सीमा तक प्रकट किया जाना चाहिये। जहां पर ऐसी रकम पूर्ण रूप से अथवा अंशतः निश्चित नहीं की जा सकती वहां इस तथ्य को उपदर्शित करना चाहिये।

IndiaCode

27. यदि मूल लेखा मान्यताओं अर्थात चलायमान समुत्थान, संगतता तथा प्रोद्भवन का वित्तीय विवरणों में अनुपालन किया जाता है, तो विनिर्दिष्ट प्रकटन अपेक्षित नहीं है। यदि किसी मूल लेखा मान्यता का अनुपालन नहीं किया जाता है तो यह तथ्य प्रकट किया जाना चाहिये।

लेखा मानक 2

सूचीबद्ध सामान का मूल्यांकन

*(इस लेखा मानक में कुछ **मोटे तिरछे** टाइप और कुछ सीधे टाइप में व्यवस्थित पैरा सम्मिलित है, जिनका समान प्राधिकार है। मोटे तिरछे टाइप में दिये गए पैरा मुख्य सिद्धांत उपदर्शित करते हैं। इस लेखा मानक को अधिसूचना के प्रति उपाबंध के भाग क में अतंर्विष्ट साधारण अनुदेशों के संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिये।)*

उद्देश्य

सूचीबद्ध सामान के लेखा में मुख्य मुद्दा उस मूल्य का निर्धारण है, जिस पर सूचीबद्ध सामान को संबंधित राजस्वों को अभिज्ञात करने तक वित्तीय विवरणों में लाया जाता है। यह मानक ऐसे मूल्य के निर्धारण सहित सूचीबद्ध सामान की लागत तथा शुद्ध वसूलनीय मूल्य तक उसके किसी भी अपलेखन के निर्धारण का वर्णन करता है।

कार्यक्षेत्र

1. यह मानक निम्नलिखित से भिन्न सूचीबद्ध सामान के लेखाओं के संबंध में लागू किया जाना चाहिये:

(क) ***प्रत्यक्ष रूप से संबंधित सेवा संविदाओं सहित निर्माण ठेकों के अधीन उत्पन्न प्रगतिशील कार्य (लेखा मानक 7 निर्माण ठेके देखें);***

(ख) ***सेवा प्रदाताओं के कारबार के सामान्य अनुक्रम में उत्पन्न हो रहा प्रगतिशील कार्य;***

(ग) ***कारबार-स्टॉक के रूप में धारित शेयर, डिबेंचर तथा अन्य वित्तीय लिखत ; और***

(घ) ***उत्पादक के पशुधन, कृषि और वन उत्पादों तथा खनिज तेलों, अयस्कों और गैसों का सूचीबद्ध सामान उस सीमा तक, जिस तक वे उन उद्योगों में सुस्थापित व्यवहारों के अनुसार शुद्ध वसूलनीय मूल्य पर मापी जाती है।***

2. पैरा 1(घ) में निर्दिष्ट सूचीबद्ध सामान को उत्पादन के कतिपय प्रकमों पर शुद्ध वसूलनीय मूल्य पर मापा जाता है। उदाहरण के लिए, यह तब होता है जब कृषि फसलें काटी जा चुकी हों या खनिज तेल, अयस्क और गैसें निकाली जा चुकी हों और किसी अग्रिम संविदा या सरकारी गारंटी के अधीन बिक्री सुनिश्चित हो या जब एक समजातीय बाजार विद्यमान होता है और बिक्री की असफलता का जोखिम नगण्य होता है। इन सूचीबद्ध सामान को इस मानक के कार्यक्षेत्र से अपवर्जित किया गया है।

परिभाषाएँ

3. निम्नलिखित शब्द इस मानक में विनिर्दिष्ट अर्थों में प्रयुक्त किये गए हैं:

3.1 <u>सूचीबद्ध सामान</u> निम्नलिखित आस्तियाँ हैं:

(क) कारबार के सामान्य अनुक्रम में बिक्री के लिए धारित ;

(ख) ऐसी बिक्री के लिए उत्पादन की प्रक्रिया में ; या

(ग) उत्पादन प्रक्रिया में या सेवाएं प्रदान करने में उपभोग किए जाने के लिए सामाग्रियों या आपूर्तियों के रूप में।

3.2 <u>शुद्ध वसूलनीय मूल्य</u> एक कारबार के सामान्य अनुक्रम में अनुमानित विक्रय कीमत है जिसमें से कार्य पूरा होने की अनुमानित लागत तथा विक्रय करने हेतु आवश्यक अनुमानित लागत को घटाया होता है।

4. सूचीबद्ध सामान में पुनः विक्रय के लिए क्रय किया गया और रखा गया माल सम्मिलित होता है, उदाहरण के लिए, किसी फुटकर विक्रेता द्वारा पुनर्विक्रय के लिए क्रय की गई और रखी गई पण्य-वस्तुएँ, पुनः विक्रय के लिए रखा गया कम्प्यूटर साफ्टवेयर या पुनः विक्रय के लिए रखी गई भूमि या अन्य सम्पत्ति। सूचीबद्ध सामान में उपक्रम द्वारा उत्पादित

तैयार वस्तुएँ या उत्पादित किया जा रहा प्रगतिशील कार्य और उत्पादन प्रक्रिया में प्रयोग के लिए प्रतीक्षित सामग्रियाँ, अनुरक्षण आपूर्तियां, उपभोग्य और फुटकर औजार भी सम्मिलित हैं। सूचीबद्ध सामान में वे स्पेअर पार्ट, सर्विस उपकरण और अतिरिक्त उपकरण सम्मिलित नहीं हैं जो लेखा मानक 10, *संपत्ति, संयंत्र और उपस्कर* में दी गई संपत्ति, संयंत्र और उपस्कर की परिभाषा को पूरा करते हैं। इस प्रकार की मदों का लेखा, लेखा मानक 10, *संपत्ति, संयंत्र और उपस्कर* के अनुसरण में ही किया जाता है।

सूचीबद्ध सामान का मापन

5. सूचीबद्ध सामान को लागत और शुद्ध वसूलनीय मूल्य में से कम पर मूल्यांकित किया जाना चाहिए।

सूचीबद्ध सामान की लागत

6. सूचीबद्ध सामान की लागत में, सभी क्रय लागतों, संपरिवर्तन लागतों, तथा सूचीबद्ध सामान को उनकी वर्तमान स्थिति तथा दशा में लाने में लगी सभी लागतों को शामिल किया जाना चाहिये।

क्रय की लागतें

7. क्रय की लागतों में शुल्कों और करों (उनसे भिन्न जो उद्यम द्वारा कर अधिकारियों से बाद में वसूलनीय हैं), आंतरिक भाड़े और अर्जन से प्रत्यक्षतः सम्बंधित अन्य व्यय सहित क्रय मूल्य शामिल होता है। व्यापार बट्टे, रिबेट, शुल्क वापसियाँ और ऐसी ही अन्य मदें, क्रय की लागतों के निर्धारण में घटा दी जाती हैं।

संपरिवर्तन की लागतें

8. सूचीबद्ध सामान के संपरिवर्तन की लागतों में उत्पादन इकाइयों से प्रत्यक्षतः सम्बन्धित लागतें, जैसे कि प्रत्यक्ष श्रम, शामिल होती हैं। इसमें उन अतिरिक्त स्थिर और परिवर्तनशील उत्पादन उपरिव्ययों का एक व्यवस्थित आबंटन भी शामिल होता है, जो सामग्री को तैयार माल में परिवर्तीत करने में उपगत होते है। स्थिर उत्पादन उपरिव्यय वे उत्पादन की अप्रत्यक्ष लागतें हैं, जो उत्पादन की मात्रा की परवाह न करते हुए सापेक्षतः स्थिर बनी रहती हैं, जैसे कि कारखाना भवनों का अवक्षयण और अनुरक्षण तथा कारखाना प्रबंधन और प्रशासन का खर्च । परिवर्तनशीन उत्पादन उपरिव्यय, उत्पादन की वे अप्रत्यक्ष लागतें हैं, जो उत्पादन की मात्रा से प्रत्यक्षतः या लगभग प्रत्यक्षतः परिवर्तित होती है, जैसे कि अप्रत्यक्ष सामग्रियाँ और अप्रत्यक्ष श्रम ।

9. संपरिवर्तन की लागतों में स्थिर उत्पादन उपरिव्ययों को सम्मिलित करने के प्रयोजन के लिए उनका आबंटन उत्पादन सुविधाओं की सामान्य क्षमता पर आधारित होता है। सामान्य क्षमता सुनियोजित रखरखाव के परिणाम स्वरूप उत्पादन क्षमता की हानि पर ध्यान देते हुए, सामान्य परिस्थितियों के अन्तर्गत कुछ अवधियों या मौसमों में औसत तौर पर प्राप्त करने के लिए प्रत्याशित उत्पादन है। उत्पादन के वास्तविक स्तर का भी प्रयोग किया जा सकता है, यदि यह सामान्य क्षमता का अनुमान लगाती है। उत्पादन की प्रत्येक इकाई को आबंटित स्थिर उत्पादन उपरिव्ययों की रकम, कम उत्पादन या अप्रयुक्त संयत्र के परिणाम स्वरूप नहीं बढ़ती। अनांबटित उपरिव्यय, उस अवधि में, जब वे उपगत किये जाते हैं व्यय के रूप में अभिज्ञात किए जाते हैं। असामान्य तौर पर अधिक उत्पादन की अवधियों में, उत्पादन की प्रत्येक इकाई को आबंटित स्थिर उत्पादन उपरिव्ययों की रकम घटती है, जिससे सूचीबद्ध सामान लागत से ऊपर नहीं मापा जाता। परिवर्तनशील उत्पादन उपरिव्यय, उत्पादन सुविधाओं के वास्तविक प्रयोग के आधार पर उत्पादन की प्रत्येक इकाई को सौंपे जाते हैं।

10. किसी उत्पादन प्रक्रिया का परिणाम एक साथ उत्पादित किये जा रहे एक से अधिक उत्पाद भी हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, यह वह स्थिति है, जब संयुक्त उत्पाद उत्पादित किए जाते हैं या जब एक मुख्य उत्पाद और एक उप-उत्पाद होता है। जब प्रत्येक उत्पाद के संपरिवर्तन की लागतें पृथक रूप से अभिज्ञेय नहीं होती हैं तो उन्हें उत्पादों के बीच तर्कशील और सतत् आधार पर आबंटित किया जाता है। उदाहरण के लिए, यह आबंटन प्रत्येक उत्पाद के सापेक्ष बिक्री मूल्य पर, उत्पादन प्रक्रिया के प्रक्रम पर जब उत्पाद पृथकतः अभिज्ञेय हो जाता है या फिर उत्पाद के पूरे होने पर, आधारित हो सकता है। अधिकतर उप-उत्पादों के साथ ही स्क्रेप या अवशिष्ट सामग्रियाँ उनकी प्रकृति से नगण्य होती हैं। जब ऐसा मामला हो तो उन्हें प्रायः शुद्ध वसूलनीय मूल्य पर मापा जाता है और यह मूल्य मुख्य उत्पाद की लागत से घटाया जाता है। परिणामस्वरूप, मुख्य उत्पाद की कैरिंग रकम उसकी लागत से सारवान रूप से भिन्न नहीं होती है।

अन्य लागतें

11. अन्य लागतें सूचीबद्ध सामान की लागत में केवल उस सीमा तक शामिल की जाती हैं जिस तक वे सूचीबद्ध सामान को उनकी वर्तमान अवस्थिति और स्थिति में लाने के लिए उपगत की जाती है। उदाहरण के लिए, सूचीबद्ध सामान की लागत में, उत्पादन उपरिव्ययों के अतिरिक्त अन्य उपरिव्ययों को या विशिष्ट ग्राहकों के लिए उत्पादों को डिजाइन करने की लागतें शामिल करना उचित हो सकता है।

12. प्रायः ब्याज तथा अन्य उधार लागतों को सूचीबद्ध सामान को उनकी वर्तमान अवस्थिति और स्थिति तक लाने से सम्बन्धित नहीं माना जाता है और इसीलिए, सामान्यतः उन्हें सूचीबद्ध सामान की लागत में शामिल नहीं किया जाता है।

सूचीबद्ध सामान की लागत से अपवर्जन

13. पैरा 6 के अनुसार, सूचीबद्ध सामान की लागत का निर्धारण करने में कुछ लागतों को छोड़ देना और उस अवधि में, जब वे उपगत किए जाते हैं उन्हें व्यय के रूप में अभिज्ञात करना उचित है। ऐसी लागतों के उदाहरण निम्नलिखित हैं:

(क) अवशिष्ट सामग्रियों, श्रम या अन्य उत्पादन लागतों की असामान्य रकमें ;

(ख) भंडारण लागतें जब तक कि ये लागतें आगामी उत्पादन प्रक्रम के पूर्व उत्पादन प्रक्रिया में आवश्यक नहीं हैं ;

(ग) प्रशासनिक उपरिव्यय, जो सूचीबद्ध सामान को उनकी वर्तमान अवस्थिति और स्थिति में लाने में योगदान नहीं देते ; और

(घ) विक्रय और वितरण लागतें।

लागत सूत्र

14. ऐसी मदों की, जो सामान्य रूप से अन्तरपरिवर्तनीय नहीं हैं और विशिष्ट परियोजनाओं के लिए उत्पादित और अलग किए गए माल या सेवाओं के सूचीबद्ध सामान की लागत को, उनकी पृथक लागतों की विनिर्दिष्ट पहचान द्वारा नियत होना चाहिये।

15. लागत की विनिर्दिष्ट पहचान से यह अभिप्रेत है कि सूचीबद्ध सामान की पहचान की गई मदों के लिए विनिर्दिष्ट लागतें अभिनिश्चित की गई है। यह उन मदों के लिए उचित प्रतिपादन है जो इस बात की परवाह किए बिना कि चाहे वे खरीदी या उत्पादित की गई हैं या नहीं, विशिष्ट परियोजना के लिए अलग की जाती है। तथापि, जब सूचीबद्ध सामान की ऐसे मदों की संख्या अधिक होती है, जो आमतौर पर अन्तरपरिवर्तनीय हैं तो लागतों की विनिर्दिष्ट पहचान अनुपयुक्त है, क्योंकि ऐसी परिस्थितियों में कोई उपक्रम सूचीबद्ध सामान में रहने वाली शेष मदों को अभिनिश्चित करने की विशिष्ट पद्धति का चुनाव करके, अवधि के शुद्ध लाभ या हानि पर पूर्वनिर्धारित प्रभावों को प्राप्त कर सकता है।

16. पैरा 14 से संबंधित सूचीबद्ध सामान से भिन्न सूचीबद्ध सामान की लागत का निर्धारण पहले आना, पहले जाना या भारित औसत लागत सूत्र का प्रयोग करते हुए किया जाना चाहिये। प्रयुक्त सूत्र को सूचीबद्ध सामान को उनके वर्तमान अवस्थिति और स्थिति में लाने में उपगत की गई लागत के लगभग यथासंभव उचित सादृश्य का प्रदर्शन करना चाहिये।

17. सूचीबद्ध सामान की लागत का निर्धारण करने के लिए, उन सूचीबद्ध सामान के अतिरिक्त जिनके लिए पृथक लागतों की विशिष्ट पहचान उचित है, कई प्रकार के लागत सूत्रों का प्रयोग किया जाता है। सूचीबद्ध सामान की किसी मद की लागत के निर्धारण में प्रयुक्त सूत्र का चयन मदों को उनकी वर्तमान अवस्थिति और स्थिति में लाने में उपगत लागत के लगभग यथासंभव उचित सादृश्ता प्रदान करने की दृष्टि से करने की आवश्यकता होती है। 'पहले-आना, पहले-जाना' सूत्र मानता है कि सूचीबद्ध सामान की वे मदें जो पहले खरीदी या उत्पादित की गई थी उनका उपभोग पहले किया जाता है या वे पहले बेची जाती हैं, और परिणाम-स्वरूप अवधि के अंत में सूचीबद्ध सामान में शेष रह जाने वाली मदें वे होती हैं जो अभी हाल ही में खरीदी या उत्पादित की गई है। भारित औसत लागत सूत्र के अंतर्गत प्रत्येक मद की लागत का निर्धारण अवधि की शुरूआत पर समान मदों की लागतों और अवधि के दौरान खरीदी गई या उत्पादित समान मदों की लागत के भारित औसत से किया जाता है। औसत की गणना, उद्यम की परिस्थितियों पर निर्भर करते हुए, आवधिक आधार पर या प्रत्येक अतिरिक्त लादान (शिपमेंट) प्राप्त किये जाने के समय की जा सकती है।

लागत के माप हेतु तकनीकें

18. यदि परिणाम वास्तविक लागत के सन्निकट हैं तो सूचीबद्ध सामान की लागत के माप की कुछ तकनीकों, जैसे कि मानक लागत पद्धति का या फुटकर पद्धति का प्रयोग सुविधा के लिए किया जा सकता हैं। मानक लागतें, सामग्रियों और पूर्तियों के उपभोग, श्रम, दक्षता तथा क्षमता उपयोग के सामान्य स्तरों को ध्यान में रखती है। उनका नियमित रूप से पुनर्विलोकन और यदि आवश्यक हो तो विद्यमान स्थितियों को ध्यान में रखते हुए पुनरीक्षण किया जाता है।

19. फुटकर पद्धति का प्रायः फुटकर व्यापार में बड़ी संख्या में तीव्र गति से बदल रही उन मदों के सूचीबद्ध सामान को मापने के लिए प्रयोग किया जाता है, जिनका लाभ अंतर समान हो और जिनके लिए अन्य लागत पद्धतियों का प्रयोग करना अव्यवहारिक है। सूचीबद्ध सामान की लागत, सूचीबद्ध सामान के बिक्री मूल्य से उचित सकल लाभ-अंतर के प्रतिशत को घटा कर निर्धारित किया जाता है। प्रयुक्त प्रतिशत उस सूचीबद्ध सामान को ध्यान में रखता है, जो उसकी वास्तविक बिक्री कीमत से नीचे लाया जा चुका हैं। प्रत्येक फुटकर कार्यालय के लिए प्रायः एक औसत प्रतिशत का प्रयोग किया जाता है।

शुद्ध वसूलनीय मूल्य

20. सूचीबद्ध सामान की लागत, वसूलनीय नहीं हो सकती, यदि वह सूचीबद्ध सामान नष्ट हो जाएँ, या वे पूर्णतः या अंशतः अप्रचलित हो जाएं, या यदि उनकी बिक्री कीमतें गिर गई हों। यदि कार्यपूर्ण होने की अनुमानित लागतें या बिक्री के लिए आवश्यक अनुमानित लागतें बढ़ गई हों तो भी सूचीबद्ध सामान की लागतें वसूलनीय नहीं हो सकती हैं। सूचीबद्ध सामान की लागत को शुद्ध वसूलनीय मूल्य तक अपलिखित करने की कार्यप्रणाली इस विचार से संगत है कि आस्तियों को उनकी बिक्री या प्रयोग से प्राप्त होने वाली अपेक्षित रकमों से अधिक रकम पर नहीं लिया जाना चाहिए।

21. सूचीबद्ध सामान को सामान्यताः शुद्ध वसूलनीय मूल्य तक मद-दर-मद आधार पर अपलिखित किया जाता है। तथापि कुछ परिस्थितियों में, समान और सम्बंधित मदों को समूहबद्ध करना उपयुक्त हो सकता है। यह समान उत्पादन रेखा से संबंधित सूचीबद्ध सामान की उन मदों का मामला है, जिनके उद्देश्य या अन्तिम उपयोग समान है और जो समान भौगोलिक क्षेत्र में उत्पादित और विपणित की जाती है और जिन्हें उस उत्पादन रेखा में अन्य मदों से व्यवहारिक रूप से पृथकतः मूल्यांकित नही किया जा सकता है। सूचीबद्ध सामान के वर्गीकरण के आधार पर सूचीबद्ध सामान को अपलिखित करना उपयुक्त नहीं है, उदाहरण के लिए, तैयार माल या विशिष्ट कारबार खंड में सभी सूचीबद्ध सामान।

22. शुद्ध वसूलनीय मूल्य के अनुमान, सूचीबद्ध सामान द्वारा अपेक्षित मूल्य के विषय में लगाए गए अनुमानों के समय उपलब्ध अत्यधिक विश्वसनीय साक्ष्य पर आधारित होते हैं। यह अनुमान तुलनपत्र की तारीख के बाद घटने वाली घटनाओं से प्रत्यक्षतः संबधित कीमत या लागत के परिवर्तनों पर उस सीमा तक विचार करते हैं, जिस तक ऐसी घटनाएँ तुलनपत्र की तारीख को विद्यमान स्थितियों की पुष्टि करती हैं।

23. शुद्ध वसूलनीय मूल्य के अनुमान सूचीबद्ध सामान को धारित करने के प्रयोजन पर भी विचार करते हैं। उदाहरण के लिए पुष्ट विक्रय या सेवा संविदा को पूरा करने के लिए धारित सूचीबद्ध सामान की मात्रा का शुद्ध वूसलनीय मूल्य, संविदा कीमतों पर आधारित होता है। यदि विक्रय संविदा रखे गए सूचीबद्ध सामान की मात्रा से कम के लिए है तो अतिरिक्त सूचीबद्ध सामान का शुद्ध वसूलनीय मूल्य सामान्य विक्रय मूल्यों पर आधारित होता है। धारित सूचीबद्ध सामान की मात्राओं से अधिक के लिए पुष्ट विक्रय संविदाओं पर आकस्मिक हानियों और पुष्ट क्रय संविदाओं के संबंध में आकस्मिक हानियों का लेखा मानक 4, *आकस्मिकताएँ तथा तुलन पत्र की तारीख के पश्चात् होने वाली घटनाएँ*[1], में निरूपित सिद्धांतों के अनुसार प्रतिपादन किया जाता है।

24. सूचीबद्ध सामान के उत्पादन में प्रयोग हेतु रखी गई सामग्रियाँ और अन्य पूर्तियों को लागत से नीचे अपलिखित नहीं किया जाता है, यदि तैयार उत्पाद जिसमें वे सम्मिलित होंगे, लागत पर या लागत से ऊपर विक्रय किये जाने के लिए अपेक्षित हैं। तथापि, जब सामग्रियों की कीमत में कमी हो रही हों और यह अनुमान लगाया जाता है कि तैयार उत्पादों की लागत शुद्ध वूसलनीय मूल्य से अधिक होगी, तो सामग्रियाँ शुद्ध वसूलनीय मूल्य तक अपलिखित की जाती हैं। ऐसी परिस्थितियों में सामग्रियों की प्रतिस्थापित लागत, उनकी वूसलनीय मूल्य का सर्वोत्तम उपलब्ध माप हो सकता है।

---

[1] लेखा मानक 4 के सभी पैरा, जो आकस्मिकताओं से संबंधित है, केवल उस सीमा तक लागू होते हैं, जहाँ तक वे केन्द्रीय सरकार द्वारा विहित लेखा मानकों के अन्तर्गत नहीं आते हैं, उदाहरण के लिए, वित्तीय आस्तियों के ह्रास, जैसे कि प्राप्य का ह्रास (सामान्यतः डूबंत और शंकास्पद ऋण के उपबन्ध रूप में ज्ञात है) लेखा मानक 4 द्वारा शासित होते हैं।

25. शुद्ध वसूलनीय मूल का निर्धारण प्रत्येक तुलन पत्र की तारीख को किया जाता है।

प्रकटन

26. वित्तीय विवरणों में निम्नलिखित प्रकट किया जाना चाहिये:

(क) ***प्रयुक्त लागत सूत्र सहित सूचीबद्ध सामान के मापने में अपनाई गई लेखा नीतियां; और***

(ख) ***सूचीबद्ध सामान की कुल कैरिंग रकम और उद्यम के लिए उसका उपयुक्त वर्गीकरण।***

27. सूचीबद्ध सामान के भिन्न वर्गीकरण में धारित सूचीबद्ध सामान की कैरिंग रकमों के और इन आस्तियों में परिवर्तन की सीमा से सम्बंधित जानकारी वित्तीय विवरण के उपयोगकर्त्ताओं के लिए उपयोगी होती हैं। सूचीबद्ध सामान के सामान्य वर्गीकरण में निम्नलिखित सम्मिलित है:

(क) कच्चा माल और घटक

(ख) निर्माण या उत्पादनाधीन वस्तुएं (प्रगतिशील कार्य)

(ग) तैयार वस्तुएं

(घ) व्यापार में स्टॉक (व्यापार के लिए अधिग्रहीत वस्तुओं के संबंध में)

(ङ) स्टोर व स्पेअर पार्ट

(च) फुटकर औजार

(छ) अन्य (प्रकृति स्पष्ट करें)।

IndiaCode

लेखा मानक 3

रोकड़ प्रवाह विवरण

*(इस लेखा मानक में कुछ **मोटे तिरछे** टाइप और कुछ सीधे टाइप में व्यवस्थित पैरा सम्मिलित है, जिनका समान प्राधिकार है। मोटे तिरछे टाइप में दिये गए पैरा मुख्य सिद्धांत उपदर्शित करते हैं। इस लेखा मानक को अधिसूचना के प्रति उपाबंध के भाग क में अतंर्विष्ट साधारण अनुदेशों के संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिये।)*

कंपनी अधिनियम, 2013 के अधीन , 'वित्तीय विवरण' की परिभाषा के अनुसार, वित्तीय विवरण में रोकड़ प्रवाह विवरण सम्मिलित है। एक व्यक्ति कंपनी, छोटी कंपनी तथा निष्क्रिय कंपनी के वित्तीय विवचरण में रोकड़ प्रवाह विवरण शामिल करना आवशयक नहीं है।

उद्देश्य

एक उद्यम के रोकड़ प्रवाहों के बारे में जानकारी, उद्यम की रोकड़ और रोकड़ समतुल्यों के सृजन करने की क्षमता और उन रोकड़ प्रवाहों के उपयोग के लिए उद्यम की आवश्यकताओं के निर्धारण के लिए वित्तीय विवरण के उपयोगकर्ताओं को आधार प्रदान करने में उपयोगी है। उपयोगकर्ताओं द्वारा लिए गए आर्थिक निर्णयों में, उद्यम की रोकड़ और रोकड़ समतुल्यों के सृजन करने की क्षमता और उनके सृजन के समय और निश्चितता के मूल्यांकन की आवश्यकता होती है।

यह मानक, उस रोकड़ प्रवाह विवरण के द्वारा, जो अवधि के दौरान प्रचालन, विनिधान और वित्तीय क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाहों को वर्गीकृत करती है, एक उद्यम की रोकड़ और रोकड़ समतुल्यों में ऐतिहासिक परिवर्तनों के बारे में जानकारी के उपबंध से सम्बंधित है।

कार्यक्षेत्र

1. एक उद्यम को एक रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार करना चाहिए और इसे उस प्रत्येक अवधि के लिए प्रस्तुत करना चाहिए जिसके लिए वित्तीय विवरण तैयार किए गए है।

2. उद्यम के वित्तीय विवरणों के प्रयोगकर्ता इस बात को जानने में रूचि रखते है कि उद्यम रोकड़ और रोकड़ समतुल्यों के कैसे सृजन तथा उनका उपयोग करता है। ऐसा उद्यम के क्रियाकलापों की प्रकृति पर ध्यान दिए बिना या इस बात पर ध्यान दिए बिना होता है कि रोकड़ को उद्यम के उत्पाद रूप में देखा जा सकता है या नहीं, जैसा कि वित्तीय उद्यम के सम्बन्ध में हो सकता है।उद्यमों को रोकड़ की आवश्यकता अनिवार्यतः समान कारणों की वजह से होती है, यद्यपि उनके राजस्व-उत्पन्न करने वाली प्रमुख क्रियाकलाप भिन्न हो सकते है। उन्हें अपने प्रचालन करने के लिए, अपने दायित्वों की पूर्ति के लिए और अपने विनिधानकर्ताओं को प्रतिफल प्रदान करने के लिए रोकड़ की आवश्यकता होती है।

रोकड़ प्रवाह जानकारी के फायदे

3. जब रोकड़ प्रवाह विवरण अन्य वित्तीय विवरणों के साथ में प्रयोग किया जाता है तो यह ऐसी जानकारी प्रदान करते हैं जो उपयोगकर्ताओं को, परिवर्तित हो रही परिस्थितियों और अवसरों को अपनाने के लिए उद्यम की शुद्ध अस्तियों में परिवर्तनों, इसकी वित्तीय संरचना (इसकी रोकड़ीकरण और ऋण चुकाने की क्षमता सहित) और रोकड़ प्रवाहों की मात्राओं और समय को प्रभावित करने की इसकी क्षमता को मूल्यांकित करने के लिए सक्षम बनाता है। रोकड़ प्रवाहों की जानकारी एक उद्यम की रोकड़ और रोकड़ समतुल्यों के सृजन की क्षमता का निर्धारण करने में उपयोगी है और उपयोगकर्ताओं को भिन्न उद्यमों की भावी रोकड़ प्रवाहों का वर्तमान मूल्य नि र्धारित और उनकी तुलना करने के लिए नमूने विकसित करने में सक्षम बनाते है। यह भिन्न उद्यमों द्वारा प्रचालन निष्पादनता की रिपोर्टिंग की तुलनात्मकता को भी बढ़ाता है, क्योंकि यह समान संव्यवहारों और घटनाओं के लिए भिन्न लेखा प्रतिपादन के प्रयोग करने के प्रभावों का उन्मूलन करता है।

4. ऐतिहासिक रोकड़ प्रवाहों की जानकारी प्रायः भावी रोकड़ प्रवाहों की मात्रा, समय और निश्चितता के सूचक के रूप में प्रयोग की जाती है। यह भावी रोकड प्रवाहों के पिछले मूल्यांकन की शुद्धता की जाँच करने में तथा लाभप्रदता तथा शुद्ध रोकड़ प्रवाहों के बीच संबंध और परिवर्तित कीमतों के प्रभाव के निरीक्षण में भी उपयोगी है।

परिभाषाएँ

5. इस मानक में निम्नलिखित पारिभाषिक शब्द विनिर्दिष्ट अर्थों में प्रयुक्त किए गए हैं:

5.1 रोकड़ में हस्तगत रोकड़ तथा बैंकों के पास माँग जमा शामिल है।

5.2 रोकड़ समतुल्य अल्पकालिक, अत्यधिक तरल विनिधान है जो रोकड़ की ज्ञात मात्रा में सुगमता से परिवर्तनीय है तथा जो मूल्य में परिवर्तनों के महत्वहीन जोखिम के प्रति आधीन हैं।

5.3 रोकड़ प्रवाह रोकड़ तथा रोकड़ समतुल्यों का अंतर्वाह और बहिर्गमन है।

5.4 प्रचालन क्रियाकलाप उद्यम के राजस्व उत्पन्न करने वाले वे प्रमुख क्रियाकलाप तथा अन्य क्रियाकलाप है जो विनिधान या वित्तीय क्रियाकलाप नहीं हैं।

5.5 विनिधान क्रियाकलाप रोकड़ समतुल्यों में शामिल न की गई दीर्घकालिक आस्तियों और अन्य विनिधानों का अर्जन तथा व्ययन है।

5.6 वित्तीय क्रियाकलाप वे क्रियाकलाप है जिनका परिणाम स्वामित्व पूंजी (कम्पनियों की स्थिति में अधिमानी शेयर पूँजी सहित) और उद्यम के उधारों के आकार तथा सरंचना में परिवर्तन होता है।

रोकड़ और रोकड़ समतुल्य

6. रोकड़ समतुल्य विनिधान या अन्य उद्देश्यों की बजाए अल्पकालीन रोकड़ प्रतिबद्धता की पूर्ति के लिए धारण किए जाते हैं। किसी विनिधान को रोकड़ समतुल्य के लिए अर्हित होने के लिए सुगमता से रोकड़ की ज्ञात मात्रा में परिवर्तनीय तथा मूल्य में परिवर्तनों के महत्वहीन जोखिम के अध्यधीन होना चाहिए। इसलिए एक विनिधान रोकड़ समतुल्य के रूप में केवल तब उपयुक्त होता है जब इसकी परिपक्वता अवधि छोटी होती है जैसे अर्जन की तारीख से तीन या उससे कम मास की परिपक्वता अवधि। शेयरों में विनिधान रोकड़ समतुल्य में तब तक शामिल नही किया जाता है जब तक कि वे सारभूत रूप में, रोकड़ समतुल्य हैं ; उदाहरण के लिए विनिर्दिष्ट विमोचन तारीख के समीप अर्जित, कम्पनी के पूर्वाधिकारी शेयर (बशर्ते परिपक्वता पर रकम के भुगतान के लिए कम्पनी की असफलता का केवल महत्वहीन जोखिम हो)।

7. रोकड़ प्रवाह में उन मदों के मध्य गतिशीलनता को शामिल नहीं करते जो रोकड़ अथवा रोकड़ समतुल्यों का भाग है क्योंकि यह घटक उद्यम के प्रचालन, विनिधान और वित्तीय क्रियाकलापों का भाग होने की बजाए इसके रोकड़ प्रबंधन का हिस्सा होते है। रोकड़ प्रबंधन में अतिरिक्त रोकड़ का रोकड़ समतुल्यों में विनिधान शामिल होता है।

रोकड़ प्रवाह विवरण का प्रस्तुतिकरण

8. रोकड़ प्रवाह विवरण को अवधि के दौरान प्रचालन, विनिधान तथा वित्तीय क्रियाकलापों द्वारा वर्गीकृत रोकड़ प्रवाहों को प्रस्तुत करना चाहिए।

9. एक उद्यम प्रचालन, विनिधान तथा वित्तीय क्रियाकलापों से अपने रोकड़ प्रवाहों को एक ऐसे तरीके से प्रस्तुत करता है जो इसके व्यापार के लिए अत्यधिक उपयुक्त हो। क्रियाकलापों द्वारा वर्गीकरण ऐसी जानकारी प्रदान करता है जो प्रयोगकर्ताओं को उद्यम की वित्तीय स्थिति और इसके रोकड़ तथा रोकड़ समतुल्यों पर इन क्रियाकलापों के प्रभाव के मूल्यांकन की अनुमति देता है। यह जानकारी उन क्रियाकलापों के बीच संबंध का मूल्यांकन करने के लिए भी प्रयोग की जा सकती है।

10. एकमात्रा संव्यवहार उन रोकड़ प्रवाहों को सम्मिलित कर सकता है जो भिन्न रूप से वर्गीकृत हैं। उदाहरण के लिए, जब स्थगित संदाय के आधार पर अर्जित स्थिर आस्ति के संदर्भ में दी गयी किश्तों में ब्याज तथा ऋणि (लोन) शामिल होता है, तो ब्याज तत्व वित्तीय क्रियाकलापों के अंतर्गत और ऋण (लोन) तत्व विनिधान क्रियाकलापों के अंतर्गत वर्गीकृत होता है।

प्रचालन क्रियाकलाप

11. प्रचालन क्रियाकलाप से उत्पन्न हो रहे रोकड़ प्रवाहों की मात्रा उस सीमा का महत्त्वपूर्ण सूचक है जिसके प्रति उद्यम के प्रचालन ने, वित्त के बाहरी स्रोत के प्रति आश्रित हुए बिना, उद्यम की प्रचालन क्षमता को बनाए रखने के लिए, लाभांश का संदाय करने के लिए, ऋण चुकाने के लिए और नए विनिधान करने के लिए पर्याप्त रोकड़ प्रवाह उत्पन्न किए है। ऐतिहासिक प्रचालन रोकड़ प्रवाहों के विशिष्ट घटकों के बारे में जानकारी, अन्य जानकारी के संयोजन के साथ, भावी प्रचालन रोकड़ प्रवाहों के पूर्वानुमान के लिए उपयोगी है।

12. प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह, प्राथमिक रूप से उद्यम की राजस्व-उत्पादन कर रहे प्रमुख क्रियाकलापों से व्युत्पन्न हैं। इसलिए, वे सामान्यतः संव्यवहारों तथा उन अन्य घटनाओं से उत्पन्न होते हैं जो शुद्ध लाभ या हानि के अवधारण में प्रवेश करती हैं। प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाहों के उदाहरण है:

(क) माल के विक्रय और सेवाओं के प्रदान करने से रोकड़ प्राप्तियाँ ;

(ख) रायल्टियों, शुल्कों, कमीशनों और अन्य राजस्व से रोकड़ प्राप्तियाँ ;

(ग) माल और सेवाओं के लिए प्रदायकर्ताओं को रोकड़ संदाय ;

(घ) कर्मचारियों को और उनके लिए रोकड़ संदाय ;

(ङ) प्रीमियमों और दावों, वार्षिकी और अन्य पॉलिसी फायदों के लिए किसी बीमा उद्यम की रोकड़ प्राप्तियाँ और रोकड़ संदाय ;

(च) आयकरों का रोकड़ भुगतान या उनकी वापसी जब तक कि वे वित्तीय और विनिधान क्रियाकलापों के साथ विशिष्ट रूप से पहचाने नही जा सकते हैं ; और

(छ) भावी संविदाओं, अग्रिम संविदाओं, विकल्प संविदाओं तथा विनिमय संविदाओं से सम्बंधित रोकड़ प्राप्तियाँ और भुगतान जब संविदाए व्यौहार व्यापार के लिए धारण की जाती है।

13. कुछ संव्यवहार, जैसे कि संयंत्र की किसी मद का विक्रय, ऐसे लाभ या हानि को उत्पन्न कर सकता हैं जो शुद्ध लाभ या हानि के अवधारण में शामिल है। यद्यपि, ऐसे संव्यवहारों से सम्बंधित रोकड़ प्रवाह, विनिधान क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह हैं।

14. एक उद्यम व्यौहार या व्यापार के लिए प्रतिभूतियों और ऋणों को धारण कर सकता है, जिस स्थति में वे विशष्ट रूप से पुनर्विक्रय के लिए अर्जित स्टॉक के समान है। इसलिए, व्यापारिक प्रतिभूतियों के क्रय और विक्रय से उत्पन्न हो रहे रोकड़

प्रवाह प्रचालन क्रियाकलापों की तरह वर्गीकृत हैं। इसी प्रकार, वित्तीय उद्यमों द्वारा दिए गए अग्रिम धन तथा ऋणों को भी आमतौर पर प्रचालन क्रियाकलापों की तरह वर्गीकृत किया जाता है क्योंकि वह उस उद्यम की राजस्व उत्पन्न कर रहे मुख्य क्रियाकलापों से सम्बंधित होते हैं।

विनिधान क्रियाकलाप

15. विनिधान क्रियाकलापों से उत्पन्न हो रहे रोकड़ प्रवाहों का पृथक प्रकटन महत्वपूर्ण है क्योंकि रोकड़ प्रवाह वह सीमा प्रस्तुत करते है जिस तक भावी आय और रोकड़ प्रवाह को उत्पन्न करने के लिए तत्पर संसाधनों के लिए खर्च किए जा रहे हैं। विनिधान क्रियाकलापों से उत्पन्न हो रहे रोकड़ प्रवाहों के उदाहरण हैं:

(क) स्थिर आस्तियों (अमूर्त अस्तियों सहित) के अर्जन के लिए रोकड़ भुगतान। इन भुगतानों में वे भुगतान शामिल हैं जो पूंजीकृत अनुसंधान और विकास लागतों तथा स्वतः निर्मित स्थिर अस्तियों से सम्बंधित हैं;

(ख) स्थिर आस्तियों (अमूर्त आस्तियों सहित) के व्ययन से रोकड़ प्राप्तियाँ;

(ग) अन्य उद्यमों के शयरों, वांरटों या ऋण-लिखतों और संयुक्त उद्यमों में हितों के लिए रोकड़ भुगतान (रोकड़ समतुल्य समझे जाने वाले लिखतों और व्यौहार या व्यापार के लिए धारित लिखतों के लिए भुगतानों के अतिरिक्त) ;

(घ) अन्य उद्यमों के शयरों, प्रतिभूतियों या ऋण लिखतों और संयुक्त उद्यमों में हितों के व्ययन से रोकड़ प्राप्तियाँ (रोकड़ समतुल्य समझे जाने वाले लिखतों और व्यौहार या व्यापार के लिए धारित लिखतों के लिए प्राप्तियों से भिन्न);

(ङ) तीसरे पक्षकारों को दिए गए अग्रिम धन और ऋण (वित्तीय उद्यम द्वारा दिए गए अग्रिम तथा ऋणों के अतिरिक्त);

(च) तीसरे पक्षकारों को दिए गए अग्रिमों और ऋणों को चुकाने से रोकड़ प्राप्तियाँ (किसी वित्तीय उद्यम के अग्रिमों तथा ऋणों के अतिरिक्त);

(छ) व्यापार के लिए धारण किए गए संविदाओं और ऐसी स्थिति को छोड़कर जब भुगतान वित्तीय क्रियाकलापों की तरह वर्गीकृत की जाती है, भावी सांविदाओं, अग्रिम संविदाओं, विकल्प संविदाओं और विनिमय संविदाओं के लिए रोकड़ भुगतान ; और

(ज) व्यौहार या व्यापार के लिए धारण की गई संविदाओं और ऐसी स्थिति को छोड़कर जब प्राप्तियाँ वित्तीय क्रियाकलापों की तरह वर्गीकृत की जाती है, भावी संविदाओं, अग्रिम संविदाओं, विकल्प संविदाओं और विनिमय संविदाओं से रोकड़ प्राप्तियाँ।

16. जब एक संविदा को एक अभिज्ञेय स्थिति की सुरक्षा/बांड के रूप से लेखाबद्ध किया जाता है, तो संविदा के रोकड़ प्रवाह उसी तरह वर्गीकृत होते हैं जैसे की सुरक्षित की जा रही स्थिति के रोकड़ प्रवाह वर्गीकृत होते है।

वित्तीय क्रियाकलाप

17. वित्तीय क्रियाकलापों से उत्पन्न होने वाले रोकड़ प्रवाहों का पृथक प्रकटन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उद्यम के लिए निधियों (फंड) (पूँजी तथा ऋण दोनों ही) के प्रदानकर्ताओं द्वारा भावी रोकड़ प्रवाहों पर दावे पूर्वानुमानित करने के लिए उपयोगी है। वित्तीय क्रियाकलापों से

उत्पन्न हो रहे रोकड़ प्रवाहों के उदाहरण हैं:

(क) शेयर या ऐसी ही अन्य लिखत जारी करने से प्राप्त रोकड़ ;

(ख) ऋणपत्रों, ऋणों, प्रपत्रों, बंधपत्रों और अन्य अल्पकालिक या दीर्घकालिक ऋणों के जारी होने से प्राप्त रोकड़ ; और

(ग) उधार ली गई रकम का रोकड़ भुगतान।

प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाहों की रिपोर्टिंग

18. एक उद्यम को निम्नलिखित पद्धतियों में से किसी एक प्रयोग करते हुए, प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाहों को सूचित करना चाहिए :

(क) प्रत्यक्ष पद्धति, जिसके द्वारा सकल रोकड़ प्राप्तियों और सकल रोकड़भुगतानों के प्रमुख वर्ग प्रकट किए जाते हैं ; या

(ख) अप्रत्यक्ष पद्धति, जिसके द्वारा शुद्ध लाभ या हानि को गैर-रोकड़ी प्रकृति के संव्यवहारों के प्रभावों, पिछली या भावी प्रचालन रोकड़ प्राप्तियों या भुगतानों के किसी भी आस्थगन या उपार्जन और विनिधान या वित्तीय रोकड़ प्रवाहों से सम्बंधित आय या व्यय की मदों के लिए समायोजित किया जाता है।

19. प्रत्यक्ष पद्धति ऐसी जानकारी प्रदान करती है जो भावी रोकड़ प्रवाहों के अनुमान लगाने में उपयोगी हो सकती है और जो अप्रत्यक्ष पद्धति के अंतर्गत उपलब्ध नहीं है और इसीलिए, अप्रत्यक्ष पद्धति से अधिक उपयुक्त मानी जाती है। प्रत्यक्ष पद्धति में सकल रोकड़ प्राप्तियों और सकल रोकड़ भुगतानों के प्रमुख वर्गों के बारे में निम्न से जानकरी प्राप्त की जा सकती है:

(क) उद्यम के लेखा रिकार्डों से ; या

(ख) निम्नलिखित के लिए विक्रय ; विक्रिय की लागत (ब्याज और समान आय तथा वित्तीय उद्यम के लिए ब्याज व्यय और समान व्यय) और लाभ और हानि के विवरण में अन्य मदों को समायोजित करके:

(i) अवधि के दौरान सूचिबद्ध सामान तथा प्रचालन प्राप्य और संदेय रकमों में परिवर्तन;

(ii) अन्य गैर-रोकड़ मदें; और

(iii) अन्य मदें जिनके लिए रोकड़ प्रभाव विनिधान या वित्तीय रोकड़ प्रवाह हैं।

20. अप्रत्यक्ष पद्धति के अंतर्गत, प्रचालन क्रियाकलापों से शुद्ध रोकड़ प्रवाह, निम्नलिखित के प्रभावों के लिए शुद्ध लाभ या हानि का समायोजन करते हुए अवधारित होती हैं:

(क) अवधि के दौरान सूचीबद्ध सामान और प्रचालन प्राप्य व संदेय रकमों में परिवर्तन ;

(ख) गैर-रोकड़ मदें जैसे कि अवक्षयण, उपबन्ध, आस्थगित कर तथा अप्राप्यविदेशी विनिमय लाभ तथा हानियाँ ; और

(ग) अन्य सभी मदें जिसके लिए रोकड़ प्रभाव विनिधान या वित्तीय रोकड़ प्रवाह हैं।

वैकल्पिक रूप से, प्रचालन क्रियाकलापों से शुद्ध रोकड़ प्रवाहों को लाभ और हानि के विवरण में प्रकट गैर-रोकड़ मदों और अवधि के दौरान सूचीबद्ध सामान तथा प्रचालन प्राप्य व संदेय में परिर्वतनों को निरस्त करके प्रचालन प्राप्यों तथा व्यय के द्वारा दर्शाते हुए अप्रत्यक्ष पद्धति के अधीन प्रस्तुत किया जा सकता है।

विनिधान तथा वित्तीय क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाहों की रिर्पोटिंग

21. एक उद्यम को विनिधान तथा वित्तीय क्रियाकलापों से उत्पन्न होने वाले सकल रोकड़ प्राप्तियों तथा सकल रोकड़ भुगतानों के प्रमुख वर्गों को पृथकत रिर्पोट करना चाहिए, केवल इस सीमा के अतिरिक्त कि पैरा 22 और 24 में वर्णित रोकड़ प्रवाह शुद्ध आधार पर रिपोर्ट की गई हैं।

शुद्ध आधार पर रोकड़ प्रवाहों की रिपोर्टिंग

22. निम्नलिखित प्रचालन, विनिधान या वित्तीय क्रियाकलापों से उत्पन्न हो रहे रोकड़ प्रवाह शुद्ध आधार पर रिपोर्ट किए जा सकते हैं।

(क) रोकड़ प्रवाह के लिए रोकड़ प्राप्तियाँ तथा भुगतान जब रोकड़ प्रवाह ग्राहकों के क्रियाकलापों के बजाए उद्यम के क्रियाकलाप को प्रतिबिम्बित करें ; और

(ख) उन मदों के लिए रोकड़ प्राप्तियाँ और भुगतान जिनमें आवृत्त जल्दी होता है, रकम बड़ी होती हैं और परिपक्वता अवधि छोटी होती हैं।

23. पैरा 22(क) में उल्लिखित रोकड़ प्राप्तियों और भुगतानों के उदाहरण हैं:

(क) बैक द्वारा मांग जमाओं की स्वीकृति और पुनः संदाय ;

(ख) एक विनिधान उद्यम द्वारा ग्राहक के लिए धारण की गई निधि ; और

(ग) सम्पतियों के स्वामियों की ओर से संग्रहित और उन्हें संदत्त किराए।

पैरा 22(ख) में उल्लिखित रोकड़ प्राप्तियों और भुगतानों के उदाहरण निम्नलिखित के लिए अग्रिम देना और निम्न का पुनः संदाय है:

(क) क्रेडिट कार्ड ग्राहकों से सम्बंधित मूलधन रकम ;

(ख) विनिधानों का क्रय तथा विक्रय ; और

(ग) अन्य अल्पकालिक उधार, उदाहरण के लिए, वे जिनकी परिपक्वता अवधि तीन मास या इससे कम है।

24. निम्नलिखित प्रत्येक क्रियाकलापों से उत्पन्न होने वाले वित्तीय उद्यम के रोकड़ प्रवाह शुद्ध आधार पर रिपोर्ट किए जा सकते हैं:

(क) एक निश्चित परिपक्वता की अवधि के साथ जमाओं की स्वीकृति और पुनः संदाय के लिए रोकड़ प्राप्तियाँ और भुगतान ;

(ख) अन्य वित्तीय उद्यमों के साथ जमाओं को रखा जाना और जमाओं को निकाला जाना; और

(ग) ग्राहकों को दिए गए रोकड़ अग्रिम और उधार और उन अग्रिमों तथा उधार का पुनः संदाय।

विदेशी मुद्रा रोकड़ प्रवाह

25. विदेशी मुद्रा में संव्यवहारों से उत्पन्न हो रहे रोकड़ प्रवाह को, रोकड़ प्रवाहों की तारीख पर उपस्थित रिपोर्टिंग मुद्रा और विदेशी मुद्रा के बीच विनियम दर को विदेशी मुद्रा रकम पर लागू करते हुए उद्यम की रिपोर्टिंग मुद्रा में अभिलिखित किया जाना चाहिए। यदि सारभूत रूप से परिणाम वैसा ही है जैसा कि रोकड़ प्रवाहों की तारीख पर दरों के प्रयुक्त होने पर होता तो, वास्तविक दर से सन्निकट दर प्रयोग की जा सकती हैं। विदेशी मुद्रा में धारण किए गए रोकड़ और रोकड़ समतुल्यों पर विनिमय दरों में आए परिवर्तनों के प्रभाव को अवधि के दौरान रोकड़ तथा रोकड़ समतुल्यों में परिवर्तनों के समाधान के पृथक क भाग के रूप में रिपोर्ट किया जाना चाहिए।

26. विदेशी मुद्रा में व्यक्त रोकड़ प्रवाह लेखा मानक 11 *विदेशी मुद्रा विनिमय दरों में परिवर्तनों के प्रभाव*, के अनुरूप रिपोर्ट होने चाहिए। यह एक ऐसी विनियम दर के उपयोग की अनुमति देता है जो वास्तविक दर के सन्निकट है। उदाहरण के लिए, एक अवधि के लिए भारित औसत विनिमय दर विदेशी मुद्रा संव्यवहारों के अभिलेखन के लिए प्रयोग की जा सकती है।

27. विदेशी मुद्रा विनिमय दरों में परिवर्तनों से उत्पन्न हो रहे अप्राप्त लाभ और हानियाँ, रोकड़ प्रवाह नहीं हैं। यद्यपि, विदेशी मुद्रा में धारित या संदेय रोकड़ तथा रोकड़ समतुल्यों पर विनिमय दर परिवर्तन के प्रभाव अवधि की शुरूआत और अंत में रोकड़ तथा रोकड़ समतुल्यों को मिलाने के लिए, रोकड़ प्रवाह विवरण में रिपोर्ट किया गया हैं। यह रकम प्रचालन, विनिधान और वित्तीय क्रियाकलापों से उत्पन्न रोकड़ प्रवाह से पृथकतः उपस्थित होती है और इसमें अंतर शामिल होते हैं, यदि वे रोकड़ प्रवाह अवधि की समाप्ति पर उपस्थित विनिमय दरों पर रिपोर्ट होते हैं।

असाधारण मदें

28. असाधारण मदों से सम्बंधित रोकड़ प्रवाह को प्रचालन, विनिधान या वित्तीय क्रियाकलापों से उत्पन्न हो रहे रोकड़ प्रवाह के रूप में उचित रूप से वर्गीकृत और पृथक प्रकट किया जाना चाहिए।

29. असाधारण मदों से सम्बंधित रोकड़ प्रवाह प्रचालन, विनिधान तथा वित्तीय क्रियाकलापों से उत्पन्न हो रहे रोकड़ प्रवाहों के रूप में प्रयोगकर्ताओं को उनकी प्रकृति और उद्यम की वर्तमान तथा भावी रोकड़ प्रवाहों पर प्रभाव को समझने में सक्षम बनाने के लिए, रोकड़ प्रवाह विवरण में

पृथकतः प्रकट होती हैं। यह प्रकटन लेखा मानक 5, *अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि, पूर्वाविधि मदें और लेखा नीतियों में परिवर्तन*, द्वारा अपेक्षित असाधारण मदों की प्रकृति और रकम के पृथक प्रकटीकरण के अतिरिक्त हैं।

ब्याज तथा लाभांश

30. ब्याज तथा लाभांश से प्राप्त और संदत प्रत्येक रोकड़ प्रवाह को प्रथकतः प्रकट करना चाहिए। वित्तीय उद्यम की स्थिति में संदत्त ब्याज तथा प्राप्त किए गए ब्याज या लाभाशों से उत्पन्न हो रहे रोकड़ प्रवाह को भी प्रचालन क्रियाकलापों से उत्पन्न हो रहे रोकड़ प्रवाहों की तरह वर्गीकृत किया जाना चाहिए। अन्य उद्यम की स्थिति में, संदत्त ब्याज से उत्पन्न हो रहे रोकड़ प्रवाहों को वित्तीय क्रियाकलापों से उत्पन्न हो रहे रोकड़ प्रवाहों की तरह वर्गीकृत किया जाना चाहिए जबकि प्राप्त ब्याज तथा

लाभाशों से उत्पन्न हो रहे रोकड़ प्रवाहों को विनिधान क्रियाकलापों से उत्पन्न हो रहे रोकड़ प्रवाहों की तरह वर्गीकृत किया जाना चाहिए। संदाय किए लाभांश वित्तीय क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाहों की तरह वर्गीकृत होने चाहिए।

31. अवधि के दौरान संदत्त ब्याज की कुल मात्रा रोकड़ प्रवाह विवरण में प्रकट की जानी चाहिए, फिर चाहे यह लाभ तथा हानि के विवरण में व्यय रूप में अभिज्ञात हुआ हो या लेखा मानक 16, *उधार लागतें*, के अनुसार पूँजीकृत हो चुकी हो।

32. संदाय किया गया ब्याज और प्राप्त किया गया ब्याज और लाभांश सामान्यतः वित्तीय उद्यम के लिए प्रचालन रोकड़ प्रवाहों के रूप में वर्गीकृत होते हैं। यद्यपि, अन्य उद्यमों के लिए इन रोकड़ प्रवाहों के वर्गीकरण पर कोई सहमति नहीं है। कुछ का तर्क है कि संदत्त ब्याज तथा प्राप्त ब्याज व लाभांश प्रचालन रोकड़ प्रवाहों की तरह वर्गीकृत हो सकते हैं क्योंकि वे शुद्ध लाभ या हानि के निर्धारण में शामिल होते हैं। यद्यपि, यह अधिक उपयुक्त है कि संदत्त ब्याज और प्राप्त ब्याज तथा लाभांश को क्रमशः वित्तीय रोकड़ प्रवाहों और विनिधान रोकड़ प्रवाहों के रूप में वर्गीकृत किया जाए, क्योंकि यह वित्तीय संसाधनों को प्राप्त करने की लागत है या विनिधानों पर प्रतिफल है।

33. कुछ का तर्क है कि, प्रयोगकर्त्ता को प्रचालन रोकड़ प्रवाहों से लाभांशों को अदा करने की उद्यम की क्षमता को आँकने में सहायक होने के लिए, संदत्त लाभांश, प्रचालन क्रियाकलापों से उत्पन्न होने वाले रोकड़ प्रवाहों के घटक के रूप में वर्गीकृत किए जा सकते हैं। यद्यपि, संदत्त लाभाशों को वित्तीय क्रियाकलापों से उत्पन्न रोकड़ प्रवाहों की तरह वर्गीकृत करना अधिक उपयुक्त समझा जाता है क्योंकि ये वित्तीय संसाधन प्राप्त करने की लागत हैं।

आय पर कर

34. आय पर करों से उत्पन्न हो रहे रोकड़ प्रवाहों को तब तक पृथकतः प्रकट तथा प्रचालन क्रियाकलापों से उत्पन्न हो रहे रोकड़ प्रवाहों की तरह वर्गीकृत किया जाना चाहिए जब तक कि वे वित्तीय और विनिधान क्रियाकलापों के साथ विशिष्टतः पहचाने न जा सकें।

35. आय पर कर उन संव्यवहारों से उत्पन्न होते हैं जो उन रोकड़ प्रवाह को उत्पन्न करते है जो रोकड़ प्रवाह विवरण में प्रचालन, विनिधान या वित्तीय क्रियाकलापों के रूप में वर्गीकृत है। जहाँ कर व्यय विनिधान या वित्तीय क्रियाकलापों के साथ सुगमता से अभिज्ञेय हो सकता है, वहीं सम्बंधित कर रोकड़ प्रवाह पहचान के प्रति अकसर अव्यवहारिक है और अतंनिर्हित संव्यवहारों के रोकड़ प्रवाह से भिन्न अवधि में उत्पन्न हो सकते हैं इसीलिए, संदत्त कर अकसर प्रचालन क्रियाकलापों से उत्पन्न रोकड़ प्रवाह की तरह वर्गीकृत होते हैं। यद्यपि, जब उस व्यक्तिगत संव्यवहार जो ऐसे रोकड़ प्रवाहों को उत्पन्न करते हैं जो विनिधान या वित्तीय क्रियाकलापों की तरह वर्गीकृत होते हैं, के साथ कर रोकड़ प्रवाह को पहचानना व्यवहारिक होता है तो, कर रोकड़ प्रवाह, विनिधान या वित्तीय क्रियाकलाप की तरह वर्गीकृत होते हैं जो उचित लगे। जब कर रोकड़ प्रवाह क्रियाकलाप के एक से अधिक वर्ग को आंबटित किए जाते है तो, संदत्त कर की कुल मात्रा का प्रकटन किया जाता है।

समनुषंगियों, सहयुक्तों और सहउद्यमों में विनिधान

36. समनुषंगियों, सहयुक्तों औरैर सहउद्यमों में विनिधान का लेखा करते हुए, एक विनिधानकर्ता रोकड़ प्रवाह विवरण में अपनी रिपोर्टिंग को स्वयं अपने और सहउद्यम के बीच के रोकड़ प्रवाह तक सीमित करता है, उदाहरण के लिए, लाभांशों औरैर अग्रिम रकमों से सम्बन्धित रोकड़ प्रवाह।

समनुषंगियों और अन्य व्यापारिक इकाइयों का अर्जन तथा व्ययन

37. समनुषंगियों और अन्य व्यापारिक इकाइयों के अर्जन तथा व्ययनों से उत्पन्न हो रहे कुल रोकड़ प्रवाहों को विनिधान क्रियाकलापों की तरह पृथकतः प्रस्तुत और वर्गीकृत करना चाहिए।

38. एक उद्यम को अवधि के दौरान निम्नलिखित में से प्रत्येक को, समनुषंगियों और अन्य व्यापारिक इकाइयों के अर्जन और व्ययन दोनों ही के संदर्भ में सामूहिक रूप में प्रकट करना चाहिए :

(क) कुल क्रय या व्ययन प्रतिफल ; और

(ख) रोकड़ और रोकड़ समतुल्यों के द्वारा निक्षिप्त क्रय या व्ययन प्रतिफल का भाग।

39. समनुषंगियों और अन्य व्यापारिक इकाइयों के अर्जन और व्ययन के रोकड़ प्रवाह के प्रभावों का एक रेखीय मदों के रूप में पृथक प्रस्तुतिकरण, उन रोकड़ प्रवाह को अन्य रोकड़ प्रवाह से अलग करने में मदद करता है। व्ययन के रोकड़ प्रवाह प्रभावों को अर्जन के रोकड़ प्रवाह से घटाया नहीं जाता है।

गैर- रोकड़ संव्यवहार

40. उन विनिधान और वित्तीय संव्यवहारों को रोकड़ प्रवाह विवरण से बाहर रखना चाहिए जिन्हें रोकड़ या रोकड़ समतुल्यों की आवश्यकता नहीं होती। ऐसे संव्यवहार वित्तीय विवरण में कहीं और इस प्रकार प्रकट होने चाहिए जो इन विनिधान और वित्तीय क्रियाकलापों के बारे में सभी उपयुक्त जानकारी प्रदान करें।

41. कई विनिधान और वित्तीय क्रियाकलापों का चालू रोकड़ प्रवाहों पर कोई प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं पड़ता हाँलाकि वे उद्यम की पूँजी और आस्ति संरचना को प्रभावित करती है। रोकड़ प्रवाह विवरण से गैर-रोकड़ संव्यवहारों को बाहर रखना, रोकड़ प्रवाह विवरण के उद्देश्य से मिलता है क्योंकि यह मदें चालू अवधि में रोकड़ प्रवाहों को सम्मिलित नहीं करती। गैर-रोकड़ प्रवाहों के उदाहरण है:

(क) प्रत्यक्षतः सम्बंधित दायित्वों को स्वीकार करते हुए आस्तियों का अर्जन ;

(ख) शेयरों के निर्गमन द्वारा किसी उद्यम का अर्जन ;

(ग) ऋण का इक्विटी में परिवर्तन।

रोकड़ और रोकड़ समतुल्यों के घटक

42. एक उद्यम को रोकड़ और रोकड़ समतुल्यों के घटकों को प्रकट करना चाहिए तथा तुलन-पत्र में रिपोर्ट की गई समतुल्य मदों के साथ अपने रोकड़ प्रवाह विवरण में रकमों के समाधान को प्रस्तुत करना चाहिए।

43. विभिन्न रोकड़ प्रबंधन व्यवहारों को देखते हुए, एक उद्यम वह नीति प्रकट करता है जिसे वह रोकड़ तथा रोकड़ समतुल्य की संरचना के निर्धारण में अपनाता है।

44. रोकड़ तथा रोकड़ समतुल्यों के घटकों के निर्धारण हेतु नीति में किसी भी परिवर्तन का प्रभाव, लेखा मानक 5, *अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि, पूर्वावधि मदें और लेखा नीतियों में परिवर्तन*, के अनुसार रिपोर्ट किया जाता है।

अन्य प्रकटन

45. एक उद्यम को प्रबंधन द्वारा विवरण के साथ, उद्यम द्वारा धारण किए गए उन महत्त्वपूर्ण रोकड़ तथा रोकड़ समतुल्य अतिशेषों की मात्रा को प्रकट करना चाहिए जो इसके द्वारा प्रयोग के लिए उपलब्ध नहीं है।

46. ऐसी विभिन्न परिस्थितियाँ है जिनमें उद्यम द्वारा धारित रोकड़ तथा रोकड़ समतुल्य अतिशेष इसके द्वारा प्रयोग के लिए उपस्थित नहीं होते। उदाहरण में ऐसे उद्यम की शाखा द्वारा धारित रोकड़ और रोकड़ समतुल्य अतिशेष सम्मिलित हैं, जो ऐसे देश में कार्य करती है जहाँ विदेशी मुद्रा नियंत्रण और अन्य विधिक निर्बधंन लागू है, जिसके कारण उद्यम द्वारा प्रयोग के लिए अतिशेष उपलब्ध नहीं होते।

47. अतिरिक्त जानकारी, प्रयोगकर्ताओं के लिए किसी उद्यम की वित्तीय स्थिति तथा तरलता को समझने के लिए उपयुक्त हो सकती है। प्रबंधन द्वारा विवरण के साथ इन जानकारी का प्रकटन प्रोत्साहित किया जाता है और निम्नलिखित को सम्मिलित कर सकता है:

(क) अनारहित ऋण सुविधाओं की मात्रा जो भावी प्रचालन क्रियाकलापों के लिए और पूंजी वचनबद्धताओं के परिनिर्धारण के लिए उपलब्ध हो सकती है, इन सुविधाओं के प्रयोग पर किसी भी निर्बधंन को दर्शाते हुए ; और

(ख) रोकड़ प्रवाहों की कुल मात्रा जो उन रोकड़ प्रवाहों से, जिनकी आवश्यकता प्रचालन क्षमता को बनाए रखने के लिए होती है ; पृथकतः प्रचालन क्षमता में बढ़ोतरी प्रस्तुत करती है।

48. उन रोकड़ प्रवाहों का पृथक प्रकटन जो प्रचालन क्षमता में वृद्धि को दर्शाते हैं और जो प्रचालन क्षमता को बनाए रखने के लिए आवश्यक होते हैं और उपयोग कर्ता को यह निर्धारण करने में सक्षम बनाने के लिए उपयोगी है कि उद्यम, अपनी प्रचालन क्षमता को बनाए रखने में पर्याप्त रूप से विनिधान करता है या नहीं। एक उद्यम जो अपनी प्रचालन क्षमता को बनाए रखने में पर्याप्त रूप से विनिधान नहीं करता वह वर्तमान तरलता और स्वामियों के प्रति वितरणों के लिए भावी लाभप्रदता को क्षति पहुँचा सकता है।

दृष्टांत I

किसी वित्तीय उद्यम के अतिरिक्त अन्य किसी उद्यम के लिए रोकड़ प्रवाह विवरण

यह दृष्टांत लेखा मानक का भाग नहीं है। इसका उद्देश्य लेखा मानक के उपयोजन के स्पष्ट करना है।

1. दृष्टांत केवल चालू अवधि रकमों को दर्शित करता है।

2. लाभ और हानि के विवरण तथा तुलनपत्रा से प्राप्त जानकारी यह दर्शित करने के लिए प्रदान की जाती है कि प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष पद्धति के अंतर्गत रोकड़प्रवाहों के विवरण किस प्रकार व्युत्पतित हुए हैं। न तो लाभ और हानि का विवरण और न ही तुलनपत्र, लागू नियमों और लेखा मानकों के प्रकटन और प्रस्तुतिकरण अपेक्षाओं के साथ सहमति में प्रस्तुत है। इस दृष्टांत के अंत में दिए गए कार्यकरण टिप्पण का उद्देश्य उस तरीके को समझने में सहायता करना है जिसमें रोकड़ प्रवाह विवरण में दिखाई जाने वाली विभिन्न रकमें व्युत्पतित हुई हैं। यह कार्यकरण टिप्पण, रोकड़ प्रवाह विवरण का भाग नहीं है, और, तदनुसार इसे प्रकाशित करने की आवश्यकता नहीं है।

3. निम्नलिखित अतिरिक्त जानकारी भी रोकड़ प्रवाह के विवरण की तैयारी के लिए सुसंगत है (रकमें'000 रु. में हैं)

(क) 250 की रकम शेयर पूँजी के निर्गमन से जुटाई गई है और 250 की दीर्घकालिक उधारों से जुटाई गई है ।

(ख) ब्याज व्यय 400 था जिसमें से 170 अवधि के दौरान संदाय किया गया था। पूर्व अवधि के ब्याज व्यय से सम्बंधित 100 भी अवधि के दौरान संदाय किया गया था।

(ग) संदत्त लाभांश 1,200 थे।

(घ) प्राप्त लाभाशों (वर्ष के लिए 300 के कर व्यय में सम्मिलित है) पस्रोत पर कर कटौती 40 है।

(ङ) अवधि के दौरान, उद्यम ने 350 के लिए स्थिर आस्तियाँ अर्जित की। संदाय रोकड़ में किया गया।

(च) 80 की वास्तविक लागत और 60 के संचित अवक्षयण के साथ संयंत्र 20 के लिए बेचा गया।

(छ) 40 की विदेशी मुद्रा हानि, विनिधान के अर्जन की तारीख और तुलनपत्र की तारीख के बीच विनिमय दर में परिवर्तन से उत्पन्न होने वाली विदेशी-मुद्रा अभिहित बंधपत्रों में अल्पकालिक विनिधान कैरिंग रकम में कमी को दर्शित करती है।

(ज) विविध देनदार और विविध लेनदार में केवल उधार क्रय और उधार विक्रय से सम्बंधित रकम सम्मिलित हैं।

31.12.1996 पर तुलन पत्र

('000रु.)

	1996	*1995*
आस्तियाँ		
हाथ में रोकड़ और बैंकों में अतिशेष	200	25
अल्पकालीक विनिधान	670	135
विविध देनदार	1,700	1,200
प्राप्य ब्याज	100	
सूचिबद्ध सामान	900	1,950
दीर्धकालिक विनिधान	2,500	2,500
लागत पर स्थिर आस्तियाँ	2,180	1,910
संचित अवक्षयण	(1,450)	(1,060)
स्थिर आस्तियाँ (शुद्ध)	730	850

कुल आस्तियाँ	6,800	6,660
दायित्व		
विविध लेनदार	150	1,890
संदेय ब्याज	230	100
संदेय आयकर	400	1,000
दीर्धकालिक ऋण	1,100	1,040
कुल दायित्व	1,890	4,030
शेयर धारकों की निधि		
शेयर पूंजी	1,500	1,250
आरक्षिति	3,410	1,380
शेयर धारकों की कुल निधि	4,910	2,630
कुल दायित्व और शेयर धारकों की निधि	6,800	6,660

31-12-1996 की अवधि के लिए लाभ और हानि का विवरण

('000रु.)

बिक्री	30,650
बिक्री की लागत	(26,000)
सकल लाभ	4,650
अवक्षयण	(450)
प्रशासनिक और विक्रय व्यय	(910)
ब्याज व्यय	(400)
ब्याज आय	300
लाभांश आय	200
विदेशी मुद्रा विनिमय हानि	(40)
कराधान तथा असाधारण मद से पहले शुद्ध लाभ	3,350
असाधारण मद- भूंकप आपदा परिनिर्धारण से बीमा आगम	180
असाधारण मद के बाद शुद्ध लाभ	3,530
आय-कर	(300)
शुद्ध लाभ	3,230

IndiaCode

प्रत्यक्ष पद्धति रोकड़ प्रवाह विवरण पैरा 18 (क)

		('000रु.)
		1996
प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह		
ग्राहकों से रोकड़ प्राप्तियाँ	30,150	
प्रदायकर्ताओं और कर्मचारियों को संदत्त रोकड़	(27,600)	
प्रचालनों से उत्पन्न रोकड़	2,550	
संदत्त आय-कर	(860)	
असाधारण मद से पहले रोकड़ प्रवाह	1,690	
भूकंप आपदा परिनिर्धारण से आगम	180	
प्रचालन क्रियाकलापों से शुद्ध रोकड़		1,870
विनिधान क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह		
स्थिर आस्तियों का क्रय	(350)	
उपस्कर की बिक्री से प्राप्तियाँ	20	
प्राप्त ब्याज	200	
प्राप्त लाभांश	160	
विनिधान क्रियाकलापों से शुद्ध रोकड़		30
वित्तीय क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह		
शेयर पूँजी के निर्गमन से आगम	250	
दीर्धकालिक उधारों से प्राप्तियाँ	250	
दीर्धकालिक उधारों का प्रतिसंदाय	(180)	
संदत्त ब्याज	(270)	
संदत लाभांश	(1,200)	
वित्तीय क्रियाकलापों में प्रयुक्त शुद्ध रोकड़		(1,150)
रोकड़ और रोकड़ समतुल्यों में शुद्ध वृद्धि		750
अवधि के आरम्भ में रोकड़ तथा रोकड़ समतुल्य (टिप्पण 1 देखिए)		160
अवधि के अंत पर रोकड़ तथा रोकड़ समतुल्य (टिप्पण 1 देखिए)		**910**

IndiaCode

अप्रत्यक्ष पद्धति रोकड़ प्रवाह विवरण [पैरा 18(ख)]

		('000रु.)
		1996
प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह		
कराधान और असाधारण मद से पहले शुद्ध लाभ	3,350	
समायोजनः		
अवक्षयण	450	
विदेशी मुद्रा विनिमय हानि के लिए	40	
ब्याज आय के लिए	(300)	
लाभांश आय के लिए	(200)	
ब्याज व्यय	400	
कार्यचालन पूँजी परिवर्तनों से पहले प्रचालन लाभ	3,740	
विविध देनदारों में वृद्धि	(500)	
सूचीबद्ध सामान में कमी	1,050	
विविध लेनदारों में कमी	(1,740)	
प्रचालनों से जुटाया गया रोकड़	2,550	
संदत्त आय कर	(860)	
असाधारण मद से पहले रोकड़ प्रवाह	1,690	
भूकंप आपदा परिनिर्धारण से प्राप्तियाँ	180	
प्रचालन क्रियाकलापों से शुद्ध रोकड़		1,870
विनिधान क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह		
स्थिर आस्तियों का क्रय	(350)	
उपस्कर की बिक्री से आगम	20	
प्राप्त ब्याज	200	
प्राप्त लाभांश	160	
विनिधान क्रियाकलापों से शुद्ध रोकड़		30
वित्तीय क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह		
शेयर पूँजी के निर्गमन से आगम	250	
दीर्घकालिक उधारों से प्राप्तियाँ	250	
दीर्घकालिक उधारों की चुकौती	(180)	
संदत्त ब्याज	(270)	
संदत्त लाभांश	(1,200)	
वित्तीय क्रियाकलापों में प्रयुक्त शुद्ध रोकड़		(1,150)

IndiaCode

रोकड़ तथा रोकड़ समतुल्यों में शुद्ध वृद्धि	**750**
अवधि के आरम्भ में रोकड़ तथा रोकड़ समतुल्य (टिप्पण 1 देखिएं)	**160**
अवधि के अंतः में रोकड़ तथा रोकड़ समतुल्य (टिप्पण 1 देखिए)	**910**

रोकड़ प्रवाह विवरण के लिए टिप्पण

(प्रत्यक्ष पद्धति तथा अप्रत्यक्ष पद्धति)

1. रोकड़ तथा रोकड़ समतुल्य

रोकड़ तथा रोकड़ समतुल्य में बैंकों के पास अतिशेष तथा हाथ में रोकड़ बाकी तथा मुद्रा-बाजार लिखतों में विनिधान दोनों ही सम्मिलित है। रोकड़ प्रवाह विवरण में सम्मिलित रोकड़ तथा रोकड़ समतुल्यों में निम्नलिखित तुलन-पत्र रकम समाविष्ट है।

	1996	1995
बैंको के पास अतिशेष और हाथ में रोकड़ बाकी	200	25
अल्पकालिक विनिधान	670	135
रोकड़ और रोकड़ समतुल्य	870	160
विनिमय मुद्रा दर परिवर्तनों का प्रभाव	40	-
पुनर्कथित रूप में रोकड़ और रोकड़ समतुल्य	910	160

IndiaCode

अवधि के अंत में रोकड़ और रोकड़ समतुल्यों में शाखा द्वारा धारण किए गए 100 के बैंकों के निक्षेप शामिल हैं जो मुद्रा विनिमय निर्बंधनों के कारण कम्पनी के प्रति उदारता से भेजने योग्य नहीं हैं।

कम्पनी के पास 2,000 की अनाहरित उधार सुविधाएँ है जिसमें से 700 केवल भावी विस्तार के लिए उपयोग की जा सकती हैं।

2. वर्ष के दौरान कुल संदत्त कर (जिसके अंतर्गत प्राप्त लाभांशों पर स्रोत पर काटा गया कर भी है) 900 है।

अनुकल्पिक प्रस्तुतिकरण (अप्रत्यक्ष पद्धति)

अप्रत्यक्ष पद्धति रोकड़ प्रवाह विवरण में कार्य चालन पूँजी परिवर्तनों से पहले प्रचालन लाभ, एक विकल्प रूप में, कुछ इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है:

विनिधान आय को छोड़कर राजस्व	30,650	
अवक्षयण को छोड़कर प्रचालन व्यय	(26,910)	
कार्य चालन पूँजी परिवर्तनों से पहले प्रचालन लाभ		3,740

कार्यकरण टिप्पण

नीचे दिए गए कार्यकरण टिप्पण रोकड़ प्रवाह विवरण का भाग नही हैं और, तदनुसार, इन्हें प्रकाशित करने की आवश्यकता नहीं है। इन कार्यकरण टिप्पण का उद्देश्य मात्र उस तरीके को समझने में सहायता करना है जिसमें रोकड़ प्रवाह विवरण की विभिन्न रकमें व्युत्पन्न हुई हैं। (संख्याएँ '000 रु. में हैं।)

1. ग्राहकों से रोकड़ प्राप्तियाँ

बिक्रियाँ		30,650
जोड़िए: वर्ष की शुरूआत में विविध देनदार		1,200
		31,850
घटायें: वर्ष के अंत में विविध देनदार		1,700
		30,150

2. पूतिकर्ताओं और कर्मचारियों को संदत्त रोकड़

बिक्री की लागत		26,000
प्रशासनिक और विक्रय व्यय		910
		26,910
जोड़िए: वर्ष की शुरूआत में विविध लेनदार	1,890	
वर्ष के अतं पर सूचिबद्ध सामान	900	2,790
		29,700
घटायें: वर्ष के अंत पर विविध लेनदार	150	
वर्ष की शुरूआत पर सूचिबद्ध सामान	1,950	2,100
		27,600

3. संदत्त आय कर (जिसके अंतगर्त प्राप्त लाभांश पर स्रोत पर कर कटौती भी है)

वर्ष के लिए आयकर व्यय (जिसके प्राप्त लाभाशों से स्रोत पर काटा गया कर भी है)	300
जोड़िए: वर्ष की शुरूआत पर आयकर दायित्व	1,000
	1,300
घटायें: वर्ष के अतं पर आयकर दायित्व	400
	900

900 में से, प्राप्त लाभांशों पर स्रोत पर कर कटौती (40 तक) को विनिधान क्रियाकलापों से उत्पन्न रोकड़ प्रवाहों में अतिशेष किया जाता है और अतिशेष 860 को प्रचालन क्रियाकलापों से उत्पन्न रोकड़ प्रवाहों में सम्मिलित किया जाता है (पैरा 34 देखें)।

IndiaCode

4. दीर्घकालिक ऋणों का प्रतिदाय

वर्ष की शुरूआत पर दीर्घकालिक ऋण	1,040
जोड़िए: वर्ष के दौरान किए गए दीर्घकालिक ऋण	250
	1,290
घटायें: वर्ष के अंत पर दीर्घकालिक ऋण	1,110
	180

5. संदत्त ब्याज

वर्ष के लिए ब्याज व्यय	400
जोड़िए: वर्ष की शुरूआत पर संदेय ब्याज	100
	500
घटायें: वर्ष के अंत पर संदेय ब्याज	230
	270

IndiaCode

दृष्टांत II

वित्तीय उद्यम के लिए रोकड़ प्रवाह विवरण

यह दृष्टांत लेखा मानक का भाग नहीं है। इसका उद्देश्य लेखा मानक के उपयोजन को स्पष्ट करना है।

(1) दृष्टांत केवल चालू अवधि रकमों को दर्शित करता है।

(2) दृष्टांत प्रत्यक्ष पद्धति का प्रयोग करके प्रस्तुत किया गया है।

	('000 रु.)
	1996
प्रचालन क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह	
ब्याज तथा कमीशन प्राप्तियाँ	28,447
ब्याज संदाय	(23,463)
पहले अपलिखित उधार पर वसूलियाँ	237
कर्मचारियों और पूर्तिकर्ताओं को रोकड़ संदाय	(997)
प्रचालन आस्तियों में परिवर्तन से पहले प्रचालन लाभ	4,224
प्रचालन आस्तियों में (वृद्धि) कमी:	
अल्पकालिक निधि	(650)
विनियमन या मौद्रिक नियंत्राण प्रयोजनों के लिए धारित निक्षेप	234

ग्राहकों को अग्रिम निधियाँ	(288)	
क्रेडिट कार्ड प्राप्य में शुद्ध वृद्धि	(360)	
अन्य अल्पकालिक प्रतिभूतियाँ	(120)	
प्रचालन दायित्वों में वृद्धि(कमी):		
ग्राहकों से प्राप्त निक्षेप	600	
निक्षेप प्रमाण पत्र	(200)	
आयकर से पूर्व प्रचालन क्रियाकलापों से शुद्ध रोकड़	3,440	
संदत्त आय कर	(100)	
प्रचालन क्रियाकलापों से शुद्ध रोकड़		3,340
विनिधान क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह		
प्राप्त लाभांश	250	
प्राप्त ब्याज	300	
विनिधानों की बिक्री से प्राप्तियाँ	1,200	
स्थायी विनिधानों का क्रय	(600)	
स्थिर आस्तियों का क्रय	(500)	
विनिधान क्रियाकलापों से शुद्ध रोकड़		650
वित्तीय क्रियाकलापों से रोकड़ प्रवाह		
शेयरों का निर्गमन	1,800	
दीर्घकालिक ऋणों का प्रतिदाय	(200)	
अन्य ऋणों में शुद्ध कमी	(1,000)	
संदत्त लाभांश	(400)	
वित्तीय क्रियाकलापों से शुद्ध रोकड़		200
रोकड़ तथा रोकड़ समतुल्य में शुद्ध वृद्धि		4,190
अवधि के प्रारम्भ पर रोकड़ तथा रोकड़ समतुल्य		4,650
अवधि के अंत पर रोकड़ तथा रोकड़ समतुल्य		8,840

IndiaCode

लेखा मानक 4□

आकस्मिकताएँ तथा तुलनपत्र की

तारीख के पश्चात् होने वाली घटनाएँ

*(इस लेखा मानक में कुछ **मोटे तिरछे** टाइप और कुछ सीधे टाइप में व्यवस्थित पैरा सम्मिलित है, जिनका समान प्राधिकार है। मोटे तिरछे टाइप में दिये गए पैरा मुख्य सिद्धांत उपदर्शित करते हैं। इस लेखा मानक को अधिसूचना के प्रति उपाबंध के भाग 'क' में अतंर्विष्ट साधारण अनुदेशों के संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिये।)*

प्रस्तावना

1. यह मानक वित्तीय विवरण में निम्नलिखित मदों के प्रतिपादन से संबंधित हैं:

(क) आकस्मिकताएँ; और

(ख) तुलनपत्र की तारीख के पश्चात् होने वाली घटनाएँ।

2. निम्नलिखित विषय, जिनका परिणाम आकस्मिकताएँ हो सकता है, उनको लागू विशेष विचारों को ध्यान में रख कर, इस मानक के कार्यक्षेत्र से अपवर्जित किए गए हैं:

(क) जीवन बीमा तथा साधारण बीमा उद्यमों द्वारा जारी की गई पालिसियों के कारण उत्पन्न उनका दायित्व;

(ख) सेवानिवृत्ति प्रसुविधा योजनाओं के अधीन बाध्यताएँ ; और

(ग) दीर्घकालीन पट्टा-संविदाओं से उद्भूत होने वाली प्रतिबद्धताएं।

परिभाषाएँ

3. निम्नलिखित शब्दों को विनिर्दिष्ट अर्थों में इस मानक में प्रयोग किया गया है:

3.1. <u>आकस्मिकता</u> एक ऐसी स्थिति अथवा परिस्थिति है, जिसका अंतिम परिणाम, लाभ अथवा हानि, एक अथवा अनेक अनिश्चित भावी घटनाओं के घटने अथवा न घटने पर ही ज्ञात अथवा अवधारित होगा।

3.2. <u>तुलनपत्र की तारीख के पश्चात् होने वाली घटनाएँ</u>, वे महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं, अनुकूल तथा प्रतिकूल दोनों ही, जो तुलनपत्र की तारीख तथा कम्पनी के मामले में निदेशक बोर्ड द्वारा और किसी अन्य इकाई के मामले में तत्स्थानी अनुमोदन प्राधिकारी द्वारा वित्तीय विवरण का अनुमोदन करने की तारीख के बीच में घटित होती है।

दो तरह की घटनाओं की पहचान की जा सकती है:

(क) वे जो तुलनपत्र की तारीख को विद्यमान परिस्थितियों का और अधिक साक्ष्य प्रदान करते है; और

(ख) वे जो उन परिस्थितियों का संकेत दे सकें जो तुलनपत्र की तारीख के पश्चात् उत्पन्न हुई हों।

स्पष्टीकरण

4. आकस्मिकताएँ

4.1. इस मानक में ''आकस्मिकताएँ'' शब्द का प्रयोग तुलनपत्र की तारीख को ऐसी स्थिति अथवा परिस्थितियों तक सीमित किया गया है, जिसका वित्तीय प्रभाव भविष्य की घटनाओं के घटित होने अथवा न होने पर निर्धारित किया जाना होता है।

4.2. किसी उद्यम के अनेक चालू तथा आवृति क्रियाकलापों के लिए वित्तीय विवरणों में वर्णित की जाने वाली रकमों को निर्धारित करने के लिए अनुमानों की आवश्यकता होती है। तथापि, निश्चित रूप से घटने वाली घटनाएँ तथा अनिश्चित घटनाओं के बीच अन्तर अवश्य करना चाहिये। यह तथ्य कि कोई अनुमान लगाया जाना है, स्वतः ही ऐसी अनिश्चितता को जन्म नहीं देता, जो आकस्मिकता की विशेषता बताती है। उदाहरणार्थ, यह तथ्य कि अवक्षयण का निर्धारण करने के लिए उपयोगी जीवन का अनुमान लगाया जाता है, अवक्षयण को आकस्मिकता नहीं बनाता है, क्योंकि आस्ति के उपयोगी जीवन

□ इस मानक के सभी पैरा, जो आकस्मिकताओं से संबंधित है, केवल उस सीमा तक लागू होते हैं, जहाँ तक वे केन्द्रीय सरकार द्वारा विहित लेखा मानकों के अन्तर्गत नहीं आते हैं, उदाहरण के लिए, वित्तीय आस्तियों के हास, जैसे कि प्राप्य का हास (सामान्यतः डूबंत और शंकास्पद ऋण के उपबन्ध रूप में ज्ञात है) इस मानक द्वारा शासित होते हैं।

की पारिणामिक समाप्ति अनिश्चित नहीं है। इसी प्रकार प्राप्त सेवाओं के बदले देय धन पैरा 3.1 में दी गई परिभाषा के अनुसार आकस्मिकता नहीं है, यद्यपि रकम का अनुमान लगाया गया हो सकता है, क्योंकि इस तथ्य के बारे में कुछ भी अनिश्चितता नहीं है कि इन बाध्यताओं को उपगत किया जा चुका है।

4.3. भविष्य की घटनाओं से संबंधित अनिश्चितता को परिणामों की श्रेणी में व्यक्त किया जा सकता है। इस श्रेणी को मात्रात्मक सम्भावनाओं में व्यक्त किया जा सकता है, किन्तु अधिकतम परिस्थितियों में, यह शुद्धता के एक ऐसे स्तर का सुझाव देती है जिसका उपलब्ध सूचनाओं से साक्ष्य नहीं किया जाता है। अतः संभावित परिणामों का वर्णन वहाँ के सिवाय जहाँ पर, उचित मात्रात्मक प्रस्तुतिकरण व्यवहार्य है, साधारणतया किया जा सकता है।

4.4. आकस्मिकताओं के परिणामों तथा वित्तीय प्रभाव के अनुमानों का निर्धारण उद्यम के प्रबन्धन के निर्णय द्वारा किया जाता है। यह निर्णय वित्तीय विवरण के अनुमोदन की तारीख को उपलब्ध सूचना पर विचार करने पर आधारित होता है तथा इसमें तुलन पत्र की तारीख के पश्चात् होने वाली घटनाओं का पुनर्विलोकन जिसे इस प्रकार के संव्यवहारों के अनुभव से अनुपूरित किया गया हो तथा कुछ मामलों में, स्वतंत्र विशेषज्ञों की रिपोर्ट सम्मिलित होगी।

5. आकस्मिक हानियों का लेखा प्रतिपादन

5.1. आकस्मिक हानि के लेखा प्रतिपादन का निर्धारण आकस्मिकता के प्रत्याशित परिणाम के आधार पर किया जाता है। यदि इस बात की सम्भावना हो कि आकस्मिकता के कारण उद्यम को हानि होगी तो ऐसी हानि के लिए वित्तीय विवरणों में उपबन्ध करना विवेकशील होगा।

5.2. वित्तीय विवरण में उपबंधित की जाने वाली आकस्मिक हानि की रकम का अनुमान पैरा 4.4 में दी गई सूचना के आधार पर किया जा सकता है।

5.3. यदि आकस्मिक हानि की रकम का निर्धारण करने में परस्पर विरोधी अथवा अपर्याप्त साक्ष्य हैं तो ऐसी दशा में आकस्मिकता के विद्यमान होने तथा उसकी प्रकृति का प्रकटन किया जाना चाहिये।

5.4. उद्यम को होने वाली भारी हानि को कम किया जा सकता है अथवा उससे बचा जा सकता है, क्योंकि आकस्मिक दायित्व की संबंधित प्रति-दावों अथवा तीसरे पक्षकार के विरूद्ध दावे के साथ तुलना की जाती है। ऐसे मामलों में उपबन्ध की रकम का निर्धारण, उस दावे के अधीन संभावित वसूली को ध्यान में रखते हुए किया जाता है, यदि उसके मापन अथवा वसूली के संबंध में महत्वपूर्ण अनिश्चितता विद्यमान नहीं होती है। आकस्मिक दायित्व की प्रकृति तथा सकल रकम से संबंधित उचित प्रकटन भी किया जाता है।

5.5. गारंटी, मितिकाटा विनिमय पत्रों से उत्पन्न बाध्यताएँ, तथा इसी प्रकार वचनबद्ध किए गए अन्य बाध्यताओं की विद्यमानता तथा रकम को वित्तीय विवरणों में सामान्यताः टिप्पण के रूप में दिखाया जाता है, हालांकि इससे उद्यम को हानि होने की संभावना लगभग नहीं के बराबर होती है।

5.6. सामान्य अथवा अविनिर्दिष्ट कारबारी जोखिमों के संबंध में आकस्मिकता के उपबन्ध नहीं किये जाते हैं, क्योंकि वे तुलनपत्र की तारीख को विद्यमान परिस्थितियों अथवा स्थितियों से संबंधित नहीं होते।

6. आकस्मिक लाभों का लेखा प्रतिपादन

आकस्मिक लाभों को वित्तीय विवरणों में अभिज्ञात नहीं किया जाता हैं, क्योंकि इनके अभिज्ञान का परिणाम ऐसे राजस्व को अभिज्ञात करना हो सकता है, जो कभी वूसल न हो। तथापि, जब वस्तुतः किसी लाभ की वसूली निश्चित हो तो ऐसा लाभ आकस्मिकता नहीं है और ऐसे लाभ का लेखा उपयुक्त है।

7. ऐसी रकमों का निर्धारण, जिस पर आकस्मिकताओं को वित्तीय विवरणों में सम्मिलित किया जाता है

7.1. वह रकम जिस पर वित्तीय विवरणों में किसी आकस्मिकता को दिखाया जाता है, वित्तीय विवरणों के अनुमोदन की तारीख पर उपलब्ध सूचना पर निर्भर करती है। आकस्मिकता की पहचान करने तथा उस रकम की गणना करने में, जिस पर इन आकस्मिकताओं को वित्तीय विवरणों में शामिल किया जाता हैं तुलनपत्र की तारीख के पश्चात् होने वाली ऐसी घटनाओं को भी ध्यान में रखना चाहिये जो यह संकेत देती हैं कि तुलन पत्र की तारीख को किसी आस्ति में ह्रास हो सकता था अथवा एक दायित्व उत्पन्न हो सकता था।

7.2. कुछ मामलों में, प्रत्येक आकस्मिकता की पृथक रूप से पहचान की जा सकती है, तथा आकस्मिकता की राशि के निर्धारण में विचार में ली गई प्रत्येक स्थिति की विशेष परिस्थितियों की पहचान की जा सकती है। उद्यम के विरूद्ध एक

महत्वपूर्ण कानूनी दावा इस प्रकार की आकस्मिकता को प्रदर्शित कर सकता है। ऐसी आकस्मिकता का मूल्यांकन करने में प्रबन्धन द्वारा विचार में लिए जाने वाले तथ्यों में, वित्तीय विवरणों के अनुमोदन की तारीख को दावे की प्रगति, जहाँ आवश्यक हो, कानूनी विशेषज्ञों अथवा अन्य सलाहकारों की राये, इसी प्रकार के मामलों में उद्यम का अनुभव तथा इसी प्रकार की स्थितियों में अन्य उद्यमों का अनुभव है।

7.3. यदि अनिश्चितता, जिसने एक पृथक संव्यवहार के संबंध में आकस्मिकता का सृजन किया है, इसी प्रकार के संव्यवहारों के समूह के लिए एक जैसी है, तब आकस्मिकता की रकम को पृथक रूप से निश्चित करने की आवश्यकता नहीं है किन्तु इसी प्रकार के संव्यवहारों के समूह पर आधरित हो सकती है। ऐसी आकस्मिकताओं का एक उदाहरण प्राप्य लेखाओं का अनुमानित असंग्रहनीय भाग हो सकता है। ऐसी आकस्मिकताओं का एक और उदाहरण बेचे हुए उत्पाद की वारंटियां है। ये लागतें प्रायः बारंबार उपगत की जाती हैं तथा अनुभव ऐसा उपाय प्रदान करता है जिसके द्वारा दायित्व अथवा हानि की रकम का अनुमान उचित स्तर की शुद्धता तक लगाया जा सकता है, हालांकि उन संव्यवहारों की विशेष पहचान नहीं की जा सकती, जिनके परिणामस्वरूप हानि अथवा दायित्व हुआ था। इन लागतों के उपबन्ध के परिणामस्वरूप इनको उसी लेखा अवधि में अभिज्ञात किया जाता हैं जिनमें संबंधित संव्यवहार किए गए थे।

8. तुलनपत्र की तारीख के पश्चात् की घटनाएँ

8.1. वे घटनाएँ, जो तुलनपत्र की तारीख तथा जिस तारीख को, वित्तीय विवरणों का अनुमोदन किया गया है, के बीच घटित हुई हैं, वे तुलनपत्र की तारीख को आस्तियों तथा दायित्वों के समायोजन की आवश्यकता की ओर संकेत कर सकती हैं अथवा उसके प्रकटन की अपेक्षा कर सकते हैं।

8.2. तुलनपत्र की तारीख के पश्चात् होने वाली घटनाओं के लिए आस्तियों तथा दायित्वों का समायोजन अपेक्षित होता है, जो तुलनपत्र की तारीख को विद्यमान परिस्थितियों से संबंधित रकमों के निर्धारण को सारवान रूप से प्रभावित करने वाली अतिरिक्त सुचना प्रदान करता है। उदाहरणार्थ, किसी व्यापारिक प्राप्य लेखा पर हानि के लिए कोई ऐसा समायोजन किया जा सकता है, जिसकी पुष्टि किसी ग्राहक के दिवालियापन से होती है, जो कि तुलनपत्र की तारीख के पश्चात् घटित होता है।

8.3. तुलनपत्र की तारीख के पश्चात् होने वाली घटनाओं के लिए आस्तियों तथा दायित्वों का समायोजन करना उचित नहीं है, यदि ऐसी घटनाएँ तुलनपत्र की तारीख को विद्यमान परिस्थितियों से संबंधित नहीं है। इसका उदाहरण तुलनपत्र की तारीख तथा वित्तीय विवरण के अनुमोदन की तारीख के मध्य विनिधानों के बाजार मूल्यों में गिरावट है। बाजार मूल्यों में साधारण उतार चढ़ाव का साधारणतः तुलनपत्र की तारीख को विनिधानों की परिस्थिति से संबंध नहीं होता है, किन्तु उन परिस्थितियों को परिलक्षित करते है, जो आगामी अवधि में घटित हुई हैं।

8.4. सामान्यतः तुलन पत्र की तारीख के पश्चात् होने वाली घटनाएँ, जो वित्तीय विवरणों में वर्णित आंकड़ों को प्रभावित नहीं करती हैं, को वित्तीय विवरणों में प्रकट करने की आवश्यकता नहीं होगी, यद्यपि ये घटनाएँ इतनी महत्वपूर्ण हो सकती हैं कि इनका प्रकटन अनुमोदन अधिकारी की रिपोर्ट में होने की अपेक्षा होती है, जिससे की वित्तीय विवरणों को प्रयोग करने वाले, उचित मूल्यांकन कर सकें तथा निर्णय ले सकें।

8.5. कुछ ऐसी घटनाएँ है, यद्यपि वे तुलनपत्र की तारीख के पश्चात् होती हैं, जिन्हें कानूनी अपेक्षाओं के कारण अथवा उनकी विशेष प्रकृति के कारण कई बार वित्तीय विवरणों में परिलक्षित किया जाता है। उदाहरणार्थ, यदि तुलनपत्र की तारीख के पश्चात् और तुलनपत्र को जारी करने की स्वीकृति से पहले लाभांश घोषित किये जाते हैं तो तुलनपत्र की तिथि को लाभांश दायित्व में मान्य नहीं होंगें क्योंकि उस समय वह दायित्व विद्यमान नहीं है। लेकिन यदि कानूनी अपेक्षा है तो उसे मान्य किया जाएगा। इन लाभांशों को नोट (टिप्पणी) में प्रकट किया जाएगा ।

8.6. तुलनपत्र की तारीख के पश्चात् होने वाली घटनाएँ यह संकेत दे सकती हैं कि उद्यम एक समुत्थान नहीं रही है। प्रचालन लाभों तथा वित्तीय स्थिति में गिरावट या तुलनपत्र की तारीख के पश्चात् उद्यम के अस्तित्व तथा आधार को प्रभावित करने वाले आसामान्य परिवर्तन (उदाहरणार्थ मुख्य उत्पादन संयंत्र का तुलनपत्र की तारीख के पश्चात् आग लगने के कारण विनाश) यह विचार करने की ओर संकेत कर सकते हैं कि क्या वित्तीय विवरणों को तैयार करने में चलायमान समुत्थान की मूल लेखा मान्यता का प्रयोग करना उपयुक्त है।

9. प्रकटन

9.1. इस मानक में वर्णित प्रकटन की अपेक्षाएँ केवल उन आकस्मिकताओं तथा घटनाओं के संबंध में लागू होती हैं जो महत्वपूर्ण सीमा तक वित्तीय स्थिति को प्रभावित करती हैं।

9.2 यदि आकस्मिक हानि के लिए उपबन्ध नहीं किया जाता है तो इसकी प्रकृति तथा इसके वित्तीय प्रभाव के अनुमान को जब तक हानि की संभावना नगण्य न हो, सामान्यतः टिप्पण के रूप में प्रकट किया जाता है (पैरा 5.5 में उल्लिखित परिस्थितियों के अतिरिक्त)। यदि वित्तीय प्रभाव का विश्वसनीय अनुमान नहीं लगाया जा सकता है तो इस तथ्य को प्रकट किया जाता है।

9.3 जब तुलनपत्र की तारीख के पश्चात् होने वाली घटनाएँ अनुमादेन अधिकारी की रिपोर्ट में प्रकट की जाती हैं, तब जो सूचना दी जाती है उसमें, घटनाओं की प्रकृति तथा उनके वित्तीय प्रभावों का अनुमान या यह कथन कि ऐसा अनुमान नहीं लगाया जा सकता, शामिल होता है।

मुख्य सिद्धान्त

आकस्मिकताएँ

10. किसी आकस्मिक हानि की रकम के लिए उपबन्ध लाभ हानि विवरण में एक प्रभार के रूप में करना चाहिए, यदि:

(क) *यह संभाव्य है कि भावी घटनाएँ यह पुष्टि करेंगी कि, संभावित संबंधित वसूली को ध्यान में रखने के पश्चात्, तुलन पत्र की तारीख को कोई आस्ति ह्रासित हो गई है अथवा दायित्व उपगत हो चुका है, और*

(ख) *पारिणामिक हानि की रकम का उचित अनुमान लगाया जा सकता है।*

11. वित्तीय विवरणों में आकस्मिक हानि के विद्यमान होने का प्रकटन किया जाना चाहिये यदि पैरा 10 की कोई भी शर्त पूरी नहीं की गयी हो, जब तक कि हानि की सम्भावना नगण्य न हो।

12. आकस्मिक लाभों को वित्तीय विवरणों में अभिज्ञात नहीं किया जाना चाहिये।

तुलनपत्र की तारीख के पश्चात् होने वाली घटनाएँ

13. तुलनपत्र की तारीख के पश्चात् होने वाली उन घटनाओं के लिए आस्तियों तथा दायित्वों का समायोजन करना चाहिए, जो तुलनपत्र की तारीख को विद्यमान परिस्थितियों से संबंधित रकमों के अनुमान में सहायता हेतु अतिरिक्त साक्ष्य प्रदान करती है अथवा यह संकेत देती है कि चलायमान समुत्थान की मूल लेखा धारणा (अर्थात् उद्यम के अस्तित्व अथवा आधार का बना रहना) उपयुक्त नहीं है।

14. यदि एक उद्यम तुलनपत्र की तारीख के पश्चात् अपने शेयरधारकों को लाभांश घोषित करता है तो वह इन लाभांशों को उस तारीख के तुलनपत्र में दायित्व के रूप में तब तक मान्य नहीं करेगा जब तक कानूनी रूप से अन्यथा मान्य करने की अपेक्षा न हो। इन लाभांशों को तुलनपत्र के नोट (टिप्पणियों) में प्रकट किया जाएगा।

15. अनुमोदन अधिकारी की रिपोर्ट में तुलनपत्र की तारीख के पश्चात् होने वाली ऐसी घटनाओं का प्रकटन होना चाहिये, जो उद्यम की वित्तीय स्थिति को प्रभावित करने वाले सारवान परिवर्तनों तथा प्रतिबद्धताओं को प्रदर्शित करती हैं।

प्रकटन

16. यदि इस मानक के पैरा 11 द्वारा आकस्मिकताओं का प्रकटन अपेक्षित है, तो निम्नलिखित सूचना प्रदान की जानी चाहिये:

(क) *आकस्मिकता की प्रकृति ;*

(ख) *वे अनिश्चितताएँ जिनसे भावी परिणाम पर प्रभाव पड़ सकता है ;*

(ग) *वित्तीय प्रभाव का अनुमान या यह कथन कि ऐसा अनुमान नहीं लगाया जा सकता।*

17. यदि अनुमोदन अधिकारी की रिपोर्ट में तुलनपत्र की तारीख के पश्चात् होने वाली घटनाओं का प्रकटन इस मानक के पैरा 15 के अनुसार अपेक्षित है तो निम्नलिखित सूचना दी जानी चाहिये:

(क) *घटना की प्रकृति ;*

(ख) *वित्तीय प्रभाव का अनुमान या यह कथन कि ऐसा अनुमान नहीं लगाया जा सकता।*

IndiaCode

लेखा मानक 5

अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि, पूर्वावधि मदें और लेखा नीतियों में परिवर्तन

*(इस लेखा मानक में कुछ **मोटे तिरछे** टाइप और कुछ सीधे टाइप में व्यवस्थित पैरा सम्मिलित है, जिनका समान प्राधिकार है। मोटे तिरछे टाइप में दिये गए पैरा मुख्य सिद्धांत उपदर्शित करते हैं। इस लेखा मानक को अधिसूचना के प्रति उपाबंध के भाग क में अतंर्विष्ट साधारण अनुदेशों के*

संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिये।)

उद्देश्य

इस मानक का उद्देश्य लाभ और हानि के विवरण में कुछ मदों का वर्गीकरण तथा प्रकटन विहित करना है जिससे कि सभी उद्यम एकरूपता के आधार पर ऐसा विवरण तैयार तथा प्रस्तुत कर सकें। यह एक समयावधि पर और अन्य उद्यमों के वित्तीय विवरणों के साथ किसी उद्यम के वित्तीय विवरणों की तुलनात्मकता को बढ़ाता हैं। तदनुसार, यह मानक असाधारण तथा पूर्वावधि मदों के वर्गीकरण तथा प्रकटन और साधारण क्रियाकलापों से लाभ या हानि के भीतर कुछ मदों के प्रकटन की अपेक्षा करता हैं। यह लेखा अनुमानों में परिवर्तनों के लिए लेखा प्रतिपादन और लेखा नीतियों में परिवर्तनों से संबंधित वित्तीय विवरणों में किए जाने वाले प्रकटनों को भी विनिर्दिष्ट करता है।

कार्यक्षेत्र

1. यह मानक किसी उद्यम द्वारा लाभ और हानि के विवरण में, साधारण क्रियाकलापों, असाधारण मदों तथा पूर्व अवधि मदों से लाभ या हानि को प्रस्तुत करने में, लेखा अनुमानों में परिवर्तनों के लिए लेखा में और लेखा नीतियों में परिवर्तनों के प्रकटन में लागू किया जाना चाहिये।

2. यह मानक, अन्य विषयों के साथ अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि की कतिपय मदों के प्रकटन से संबंधित है। ये प्रकटन, अन्य लेखा मानकों द्वारा अपेक्षित किन्हीं अन्य प्रकटनों के अतिरिक्त किए जाते हैं।

3. यह मानक असाधारण मदों, पूर्वावधि मदों, लेखा अनुमानों में परिवर्तनों और लेखा नीतियों में परिवर्तनों से संबंधित कर प्रभावों से संबंधित नहीं है जिसके लिए परिस्थितियों के आधार पर उपयुक्त समायोजन किये जाने होंगे।

परिभाषाएँ

4. इस मानक में निम्नलिखित शब्द विनिर्दिष्ट अर्थों में प्रयुक्त किए गए हैं:

4.1. साधारण क्रियाकलाप, ऐसे कोई भी क्रियाकलाप हैं, जो किसी उद्यम द्वारा अपने कारबार के भाग रूप में किए जाते हैं और ऐसे संबंधित क्रियाकलाप जिसमें उद्यम इन क्रियाकलापों के अनुसरण में, इनके आनुषांगिक रूप में या इनसे उत्पन्न होने वाले क्रियाकलापों में लगा रहता है।

4.2. असाधारण मदें, वे आय या व्यय हैं, जो उन घटनाओं या संव्यवहारों से उत्पन्न होते हैं, जो उद्यम के साधारण क्रियाकलापों से स्पष्टतः भिन्न है और, इसलिए, उनके प्रायः या नियमित रूप से घटित होने की अपेक्षा नहीं की जाती।

4.3. पूर्वावधि मदें, वे आय या व्यय हैं, जो चालू अवधि में, एक या अधिक पूर्व अवधियों के वित्तीय विवरणों की तैयारी में गलतियों या लोप के परिणामस्वरूप उत्पन्न होते हैं।

4.4. लेखा नीतियां विशिष्ट लेखा सिद्धांतों और एक उद्यम द्वारा वित्तीय विवरणों की तैयारी और प्रस्तुतीकरण में अपनाए जाने वाले उन सिद्धांतों को लागू करने के लिए अपनायी गई पद्धतियों के प्रति निर्देश करती है।

अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि

5. आय और व्यय की वे सभी मदें, जो किसी अवधि में अभिज्ञात की जाती हैं, तब तक अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि के निर्धारण में शामिल की जानी चाहिये, जब तक कि किसी लेखा मानक द्वारा अन्यथा अपेक्षित या अनुज्ञात नहीं किया गया हो।

6. सामान्यतः किसी अवधि में अभिज्ञात आय और व्यय की सभी मदें, उस अवधि के शुद्ध लाभ या हानि का निर्धारण करने में शामिल की जाती हैं। इसमें असाधारण मदें और लेखा अनुमानों में परिवर्तनों के प्रभाव भी शामिल होते हैं।

7. अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि में निम्नलिखित घटक शामिल होते हैं, जिनमें से प्रत्येक को लाभ और हानि के विवरण में प्रकट किया जाना चाहिये:

(क) साधारण क्रियाकलापों से लाभ या हानि ; और

(ख) असाधारण मदें।

असाधारण मदें

8. लाभ और हानि के विवरण में असाधारण मदें, अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि के भाग के रूप में प्रकट की जानी चाहिये। प्रत्येक असाधारण मद की प्रकृति और रकम लाभ और हानि के विवरण में इस रीति में पृथक रूप से प्रकट की जानी चाहिये कि चालू लाभ या हानि पर इसके प्रभाव का अनुमान लगाया जा सके।

9. वस्तुतः अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि के निर्धारण में शामिल आय तथा व्यय की सभी मदें उद्यम के साधारण क्रियाकलापों के अनुक्रम से उत्पन्न होती हैं। इसीलिए, केवल दुर्लभ अवसरों पर ही, कोई घटना या संव्यवहार असाधारण मद को उत्पन्न करता हैं।

10. क्या कोई घटना या संव्यवहार उद्यम के साधारण क्रियाकलापों से स्पष्टतः भिन्न हैं या नहीं, इसका अवधारण घटनाओं के घटित होने की अपेक्षा की आवृत्ति के बजाए, उद्यम द्वारा किये जा रहे कारबार के संबंध में घटना या संव्यवहार की प्रकृति द्वारा किया जाता है। इसलिए कोई घटना या संव्यवहार एक उद्यम के लिए असाधारण हो सकती है, लेकिन उनके अपने साधारण क्रियाकलापों में भिन्नताओं के कारण दूसरे उद्यमों के लिए उतनी असाधारण नहीं हो सकती। उदाहरण के लिए, भूकंप के परिणामस्वरूप उठाई गई हानियाँ, कई उद्यमों के लिए एक असाधारण मद के रूप में उपयुक्त हो सकती है। तथापि भूंकप से उत्पन्न हो रहे, बीमाधारियों के दावे उस बीमा उद्यम के लिए असाधारण मद के रूप में उपयुक्त नहीं हो सकते, जो ऐसे जोखिमों के विरूद्ध बीमा करता है।

11. उन घटनाओं या संव्यवहारों के उदाहरण, जो प्रायः अधिकतर उद्यमों के लिए असाधारण मदों को उत्पन्न करते हैं:

- उद्यम की सम्पत्ति की कुर्की; या
- भूकंप

साधारण क्रियाकलापों से लाभ या हानि

12. जब साधारण क्रियाकलापों से लाभ या हानि में आय और व्यय की मदें ऐसी मात्रा, प्रकृति या प्रभाव की होती हैं कि उनका प्रकटन, उस अवधि के लिए उद्यम की निष्पादनक्षमता को स्पष्ट करने के लिए सुसंगत है, तो ऐसी मदों की प्रकृति और रकम को पृथकतः प्रकट किया जाना चाहिये।

13. यद्यपि, पैरा 12 में वर्णित आय और व्यय की मदें असाधारण मदें नहीं है, फिर भी ऐसी मदों की प्रकृति और रकम वित्तीय विवरणों के प्रयोगकर्ताओं के लिए, उद्यम की वित्तीय स्थिति और निष्पादन क्षमता को समझने और वित्तीय स्थिति तथा निष्पादन क्षमता के बारे में योजनाएँ बनाने के लिए उपयुक्त हो सकती है। ऐसी जानकारी का प्रकटन कभी-कभी वित्तीय विवरणों के टिप्पणों में किया जाता है।

14. उन परिस्थितियों में, जो पैरा 12 के अनुसार आय और व्यय की मदों के पृथक प्रकटन को उत्पन्न कर सकती है, निम्नलिखित शामिल हैं:-

(क) सूचीबद्ध माल को शुद्ध वसूली योग्य मूल्य तक अवलिखित किये जाने के साथ ऐसे अवलेखनों का उलटाव ;

(ख) किसी उद्यम के क्रियाकलापों की पुनर्संरचना करना और पुनर्संरचना करने की लागतों के लिए किसी भी उपबन्धों का उलटाव ;

(ग) स्थिर आस्तियों की मदों का व्ययन ;

(घ) दीर्घकालीन विनिधानों का व्ययन ;

(ङ) भूतलक्षी रूप से लागू होने वाले विधायी परिवर्तन ;

(च) मुकदमेबाजी का समझौता ; और

IndiaCode

(छ) उपबन्धों के अन्य उलटाव।

पूर्वावधि मदें

15. पूर्वावधि मदों की प्रकृति और रकम को लाभ और हानि के विवरण में इस प्रकार पृथकतः प्रकट करना चाहिये कि चालू लाभ या हानि पर उनके प्रभाव का अनुमान लगाया जा सके।

16. इस मानक में यथा परिभाषित 'पूर्वावधि मदें' पद केवल ऐसी आय या व्ययों के प्रति निर्देश करता है, जो एक या अधिक पूर्वावधियों के वित्तीय विवरणों को तैयार करने में हुई गलतियों या लोप के परिणामस्वरूप चालू अवधि में उत्पन्न होते हैं। इस पद में परिस्थितियों द्वारा आवश्यक ऐसे अन्य समायोजन शामिल नहीं है, जो यद्यपि पूर्वावधियों से संबंधित हैं पर जिनका निर्धारण चालू अवधि में किया जाता हैं, उदाहरण के लिए चालू अवधि के दौरान भूतलक्षी प्रभाव से मजदूरी के पुनरीक्षण के परिणाम स्वरूप कार्मिकों को संदेय बकाया।

17. एक या अधिक पूर्वावधियों के वित्तीय विवरणों की तैयारी में होने वाली गलतियों का चालू अवधि में पता लग सकता है। ये गलतियाँ गणितीय गलतियों, लेखा नीतियों को लागू करने में हुई गलतियों, तथ्यों के गलत अर्थों या दृष्टिभ्रम के परिणाम स्वरूप उत्पन्न हो सकती है।

18. पूर्वावधि मदें प्रायः प्रकृति से अप्रायिक होती हैं और लेखा अनुमानों में परिवर्तनों से सुभिन्न की जा सकती हैं। लेखा अनुमान अपनी प्रकृति से लगभग राशिकरण के होते हैं, जिसे अतिरिक्त जानकारी के ज्ञात होने पर पुनरीक्षण की आवश्यकता हो सकती है। उदाहरण के लिए, आकस्मिकता के परिणाम पर अभिज्ञात वे आय या व्यय, पूर्वावधि मद नहीं बनते, जिन्हें पहले विश्वसनीय रूप से अनुमानित नहीं किया जा सकता था।

19. आमतौर पर पूर्वावधि मदों को चालू अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि के निर्धारण में शामिल किया जाता है। चालू शुद्ध लाभ या हानि के निर्धारण के बाद लाभ और हानि के विवरण में ऐसी मदों को दर्शाना एक वैकल्पिक दृष्टिकोण है। किसी भी स्थिति में, उद्देश्य चालू लाभ या हानि पर ऐसी मदों के प्रभाव को दर्शाना है।

लेखा अनुमानों में परिवर्तन

20. कारबारी क्रियाकलापों में अंतर्निहित अनिश्चितताओं के परिणाम स्वरूप, कई वित्तीय विवरण मदें परिशुद्धता के साथ मापी नहीं जा सकती बल्कि उनका केवल अनुमान लगाया जा सकता है। अनुमान की प्रक्रिया में उपलब्ध नवीनतम जानकारी के आधार पर निर्णय शामिल होता है। उदाहरण के लिए, डूबंत ऋणों, सूचीबद्ध सामान अप्रचलन या अवक्षयणीय आस्तियों के उपयोगी जीवन का अनुमान लगाये जाने की आवश्यकता हो सकती है। उचित अनुमानों का प्रयोग, वित्तीय विवरणों को तैयार करने का अनिवार्य भाग है और उनकी विश्वसनीयता को कम नहीं करता है।

21. किसी अनुमान में पुनरीक्षण करना पड़ सकता है यदि उन परिस्थितियों के संबंध में परिवर्तन घटित होते हैं, जिन पर अनुमान आधारित था या नयी जानकारी, अधिक अनुभव या उत्तगामी विकासों के परिणाम स्वरूप। अनुमान का पुनरीक्षण अपने स्वरूप से किसी असाधारण मद या पूर्वावधि मद की परिभाषाओं के भीतर समायोजन को नहीं लाता।

22. कभी-कभी किसी लेखा नीति में परिवर्तन और लेखा अनुमान में परिवर्तन के बीच भेद करना मुश्किल होता है। ऐसे मामलों में, परिवर्तन को, उपयुक्त प्रकटन के साथ, लेखा अनुमान में परिवर्तन के रूप में माना जाता है।

23. लेखा अनुमान में परिवर्तन के प्रभाव को, निम्नलिखित में शुद्ध लाभ या हानि के निर्धारण में शामिल किया जाना चाहिए:

(क) यदि परिवर्तन केवल अवधि का प्रभावित करता है तो परिवर्तन की अवधि; या

(ख) यदि परिवर्तन दोनों को प्रभावित करता है तो परिवर्तन की अवधि और भावी अवधियां।

24. लेखा अनुमान में परिवर्तन केवल चालू अवधि को या चालू तथा भावी दोनों ही अवधियों को प्रभावित कर सकता है। उदाहरण के लिए, डूबंत ऋणों की रकम के अनुमान में परिवर्तन तत्कालिक रूप से अभिज्ञात किया जाता है और इसलिए केवल चालू अवधि को प्रभावित करता है। यद्यपि, अवक्षयण योग्य आस्ति के अनुमानित उपयोगी जीवन में परिवर्तन, चालू अवधि में और आस्ती के बाकी बचे उपयोगी जीवन के दौरान प्रत्येक अवधि में अवक्षयण को प्रभावित करता है। दोनों स्थितियों में चालू अवधि से संबंधित परिवर्तन के प्रभाव को, चालू अवधि में आय या व्यय के रूप में अभिज्ञात किया जाता है। भावी अवधियों पर प्रभाव, यदि कोई हो, तो वह भावी अवधियों में अभिज्ञात होगा।

25. किसी लेखा अनुमान में परिवर्तन का प्रभाव, लाभ और हानि के विवरण में वैसे ही वर्गीकरण को प्रयोग करते हुए वर्गीकृत किया जाना चाहिये, जैसा अनुमान के लिए पूर्व में प्रयुक्त किया गया था।

26. विभिन्न अवधियों के वित्तीय विवरणों की तुलनात्मकता को सुनिश्चित करने के लिए, लेखा अनुमान में परिवर्तन के उस प्रभाव को, जिसे पहले साधारण क्रियाकलापों से लाभ या हानि में शामिल किया गया था, शुद्ध लाभ या हानि के उस घटक में शामिल किया जाता है। लेखा अनुमान में परिवर्तन के उस प्रभाव को असाधारण मद के रूप में रिपोर्ट किया जाता है जो पहले असाधारण मद के रूप में शामिल थी।

27. लेखा अनुमान में परिवर्तन की उस प्रकृति और रकम को प्रकट किया जाना चाहिये, जिसका चालू अवधि पर सारवान प्रभाव है या जिससे उत्तरगामी अवधियों में सारवान प्रभाव की अपेक्षा की जाती है। यदि रकम का परिमाण बताना अव्यवहारिक है तो, यह तथ्य भी प्रकट किया जाना चाहिये।

लेखा नीतियों में परिवर्तन

28. उपयोगकर्ताओं को उद्यम की वित्तीय स्थिति, निष्पादन क्षमता और रोकड़ प्रवाहों की प्रवृत्तियों की पहचान करने के लिए, एक समयावधि के दौरान एक उद्यम के वित्तीय विवरणों की तुलना करने में सक्षम होना चाहिये। इसीलिए, प्रत्येक अवधि में समान घटनाओं या संव्यवहारों के लिए सामान्यतया समान लेखा नीतियाँ अपनायी जाती हैं।

29. लेखा नीति में परिवर्तन केवल तभी किया जाना चाहिए, जब कानून द्वारा या लेखा मानक के साथ अनुपालन के लिए भिन्न लेखा नीति अपनाने की आवश्यकता हो या यदि यह माना जाता है कि परिवर्तन का परिणाम, उद्यम के वित्तीय विवरणों का अधिक उपयुक्त प्रस्तुतिकरण होगा।

30. वित्तीय विवरणों में घटनाओं या संव्यवहारों का अधिक उपयुक्त प्रस्तुतिकरण तब घटित होता है जब नयी लेखा नीति का परिणाम, किसी उद्यम की वित्तीय स्थिति, निष्पादन क्षमता या रोकड़ प्रवाहों के बारे में अधिक उपयुक्त या विश्वसनीय जानकारी में निकलता है।

31. निम्नलिखित लेखा नीतियों में परिवर्तन नहीं है:

(क) उन घटनाओं या संव्यवहारों के लिए किसी लेखा नीति को अपनाना, जो पूर्ववर्ती घटित हो रही घटनाओं या संव्यवहारों से वस्तुतः भिन्न है, उदाहरण के लिए, सेवा निवृत्ति पर किसी नियोक्ता द्वारा कर्मचारियों के लिए तदर्थ अनुग्रह भुगतान के स्थान पर औपचारिक सेवानिवृति उपदान योजना का आरम्भ किया जाना ; और

(ख) उन घटनाओं या संव्यवहारों के लिए नई लेखा नीति को अपनाना, जो पहले घटित नहीं हुए या जो सारहीन थे।

32. किसी लेखा नीति में ऐसे किसी भी परिवर्तन को प्रकट किया जाना चाहिये, जिसका सारवान प्रभाव है। ऐसे परिवर्तन के प्रभाव और उनसे उत्पन्न हो रहे समायोजन यदि सारवान है, तो ऐसे परिवर्तन के प्रभाव को प्रतिबिम्बित करने के लिए उन्हें उस अवधि के वित्तीय विवरणों में दर्शाया

जाना चाहिए, जिनमें ऐसे परिवर्तन किए गए हैं। जहाँ ऐसे परिवर्तनों का प्रभाव पूर्णतः या आंशिक रूप से अभिनिश्चेय नहीं है, वहां यह तथ्य बताया जाना चाहिये। यदि लेखा नीतियों में ऐसा परिवर्तन किया गया है, जिसका चालू अवधि के लिए वित्तीय विवरणों पर कोई सारवान प्रभाव नहीं है लेकिन बाद की अवधियों में युक्तियुक्त रूप से सारवान प्रभाव नहीं पड़ना अपेक्षित है, तो उस परिवर्तन के तथ्य को उस अवधि में उचित रूप से प्रकट किया जाना चाहिये, जिस अवधि में उस परिवर्तन को अपनाया गया है।

33. एक लेखा मानक की ग्राह्यता के परिणामस्वरूप लेखा नीति में किसी परिवर्तन को, उस लेखा मानक में निहित विशिष्ट संक्रमणकालीन उपबन्धों, यदि कोई हों, के अनुसार लेखाबद्ध किया जाना चाहिए। लेकिन इस मानक के पैरा 32 द्वारा अपेक्षित प्रकटन किए जाने चाहिए जब तक कि किसी अन्य लेखा मानक के संक्रमणकालीन उपबन्धों द्वारा इस सम्बन्ध में वैकल्पिक प्रकटन अपेक्षित न हो।

IndiaCode

लेखा मानक 7

निर्माण ठेके□

(इस लेखा मानक में कुछ मोटे तिरछे टाइप और कुछ सीधे टाइप में व्यवस्थित पैरा सम्मिलित है, जिनका समान प्राधिकार है। मोटे तिरछे टाइप में दिये गए पैरा मुख्य सिद्धांत उपदर्शित करते हैं। इस लेखा मानक को अधिसूचना के प्रति उपाबंध के भाग क में अतंर्विष्ट साधारण अनुदेशों

के संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिये।)

उद्देश्य

इस मानक का उद्देश्य निर्माण ठेकों से संबंधित राजस्व तथा लागतों के लेखा प्रतिपादन का अवधारण करना है। निर्माण ठेकों में किए जाने वाले क्रियाकलापों की प्रकृति के कारण, वह तारीख जिस पर निर्माण क्रियाकलापों को आरम्भ किया जाता है तथा वह तारीख जिस पर क्रियाकलाप पूर्ण होते है साधारणतः भिन्न लेखा अवधियों में आते हैं। अतः निर्माण ठेकों के लेखा में मुख्य मुद्दा उन लेखा अवधियों, जिसमें निर्माण कार्य को निष्पादित किया है, ठेका राजस्व तथा ठेका लागत का आबंटन करना है। यह मानक यह अवधारण करने के लिए कि कब ठेका राजस्व तथा ठेका लागतों को लाभ और हानि के विवरण में राजस्व तथा व्यय के रूप में अभिज्ञात किया जाना चाहिये वित्तीय विवरणों की तैयारी तथा प्रस्तुति हेतु फ्रेमवर्क में स्थापित अभिज्ञान कसौटी का प्रयोग करता है। यह मानक इन आधारों को लागू करने के लिए व्यवहारिक मार्ग दर्शन भी देता है।

कार्यक्षेत्र

1. इस मानक को ठेकेदारों के वित्तीय विवरणों में निर्माण ठेकों के लेखा में लागू किया जाना चाहिए।

परिभाषाएँ

2. इस मानक में निम्नलिखित शब्द विनिर्दिष्ट अर्थों में प्रयोग किए गए हैं:

2.1 एक <u>निर्माण ठेका</u> आस्तियों अथवा आस्तियों के संयोजन, जो उनके डिज़ाइन, प्रौद्योगिकी तथा कार्य अथवा उसके अन्ततः उद्देश्य अथवा प्रयोग के अर्थों में गहन रूप से एक दूसरे से सम्बंधित अथवा एक दूसरे पर निर्भर हैं, के निर्माण के लिए विशिष्टतः समझौताबद्ध अनुबंध होता है।

2.2 <u>निश्चित कीमत ठेका</u> एक निर्माण ठेका है जिसमें ठेकेदार एक निश्चित ठेका कीमत या उत्पाद की प्रति इकाई निश्चित दर पर सहमत होता है जो कुछ मामलों में लागत वृद्धि के खंडों के अधीन होता है।

2.3 <u>लागत जमा ठेका</u> एक निर्माण ठेका है जिसमें ठेकेदार को अनुज्ञेय या अन्यथा परिभाषित लागतों एवं इन लागतों के निश्चित प्रतिशत या निश्चित फीस के लिए प्रतिपूर्ति की जाती है।

3. एक निर्माण ठेका एकल आस्ति जैसे एक पुल, भवन, बाँध, पाइप लाईन, सड़क, सुरंग या जलयान के निर्माण हेतु तय किया जा सकता है। एक निर्माण ठेका अनेक आस्तियों के निर्माण से भी सम्बंधित हो सकता है जो एक दूसरे से डिज़ाइन, तकनीक और कार्य या उनके अंतिम प्रयोग अथवा प्रयोजन के अर्थों में गहन रूप से अन्तर्संबंधित अथवा अन्तर्निभर होते हैं। ऐसे ठेकों के उदाहरणों में सम्मिलित है रिफाईनरीयों के निर्माण हेतु ठेके और संयंत्र या उपकरणों के जटिल खण्डों के निर्माण हेतु ठेके।

4. इस मानक के प्रयोजनों के लिए निर्माण ठेके निम्नलिखित को सम्मिलित करते हैं:

(क) सेवाओं को प्रदान करने के ठेके जो प्रत्यक्ष रूप से आस्ति के निर्माण से सम्बन्धित हैं उदाहरणतः परियोजना प्रबंधक तथा वास्तुविद की सेवाओं के लिए ; और

(ख) आस्तियों के विनाश अथवा प्रत्यावर्तन के लिए ठेके तथा आस्तियों के गिराये जाने के कारण पर्यावरण के प्रत्यावर्तन के लिए ठेके।

□ लेखा मानक 7 को, कम्पनी (लेखा मानक) नियम, 2006 के भाग के रूप में लागू करने की प्रभावपूर्ण अधिसूचना की तारीख से पूर्व लिए हुए ठेकों के सम्बन्ध में इस 'मानक' की प्रयोज्यता का अवधारण भारतीय चार्टर्ड एकाउंटेन्ट संस्थान द्वारा 2002 में संशोधित लेखा मानक 7 के आधार पर होगा।

5. निर्माण ठेकों को अनेक तरीकों में बनाया जाता है, इस मानक के प्रयोजनों के लिए उनको निश्चित कीमत ठेके तथा लागत जमा ठेकों में वर्गीकृत किया गया है। कुछ निर्माण ठेकों में निश्चित कीमत ठेके तथा लागत जमा ठेके दोनों की विशेषताएँ हो सकती हैं, उदाहरण के लिए, एक स्वीकृत अधिकतम मूल्य पर लागत जमा ठेके के मामले में। इन परिस्थितियों में यह अवधारित करने के लिए कि ठेके के राजस्व तथा व्यय को कब अभिज्ञात किया जाए, ठेकेदार को पैरा 22 और 23 में दी गई सभी शर्तों पर विचार करने की आवश्यकता होती है।

निर्माण ठेकों का संयोजन तथा खंडीकरण

6. इस मानक की अपेक्षाओं को सामान्यतः प्रत्येक निर्माण ठेके पर अलग से लागू किया जाता है। यद्यपि कतिपय परिस्थितियों में एक ठेके या ठेकों के समूह के सारतत्व को प्रदर्शित करने के लिए इस मानक को एकल ठेके के पृथकतः पहचानने योग्य घटकों के प्रति या ठेकों के एक समूह के प्रति लागू करना आवश्यक होता है।

7. जब एक ठेका अनेक आस्तियों का समावेश करता है, तो प्रत्येक आस्ति का निर्माण एक पृथक निर्माण ठेके के रूप में लिया जाना चाहिए जब:

(क) *प्रत्येक आस्ति के लिए प्रथक्क प्रस्ताव को प्रस्तुत किया जा चुका हो;*

(ख) *प्रत्येक आस्ति एक अलग समझौते के अधीन होती है और ठेकेदार एवं ग्राहक प्रत्येक आस्ति से संबंधित उस भाग को स्वीकार करने या निरस्त करने में समर्थ होते हैं ; और*

(ग) *प्रत्येक आस्ति की लागतें तथा राजस्व पहचाने जा सकते हैं।*

8. ठेकों के एक समूह को, चाहे एकल ग्राहक के साथ हो या कई ग्राहकों के साथ, एकल निर्माण ठेके के रूप में लिया जाना चाहिए जब:

(क) *ठेकों का समूह एकल पैकेज के रूप में तय किया जाता है;*

(ख) *ठेके इतनी गहनता से अन्तः संबंधित हैं कि वे वास्तव में एक समग्र लाभ मार्जिन के साथ एकल परियोजना का भाग हो; और*

(ग) *ठेकों के साथ-साथ या सतत् क्रमबद्धता से पालन किया जाता है।*

9. कोई ठेका ग्राहक की इच्छा पर किसी अतिरिक्त आस्ति के निर्माण के लिए व्यवस्था कर सकता है अथवा ठेके में एक अतिरिक्त आस्ति के निर्माण करने के लिए संशोधन किया जा सकता है। अतिरिक्त आस्ति का निर्माण एक पृथक्क निर्माण ठेके के रूप में लिया जाना चाहिए जब :

(क) *यह आस्ति मूल ठेके में समावेशित आस्ति या आस्तियों से डिज़ाइन, प्रौद्योगिकी अथवा कार्य में महत्वपूर्ण रूप से भिन्न हो; या*

(ख) *इस आस्ति का मूल्य मूल ठेका कीमत को ध्यान में न रखते हुए तय किया जाता है।*

ठेका राजस्व

10. ठेका राजस्व में निम्नलिखित समाविष्ट होना चाहिए :

(क) ठेके में सहमत हुई राजस्व की प्रारम्भिक रकम; और

(ख) ठेका कार्य, दावों और प्रोत्साहन भुगतानों में फेरफार :

(i) *उस सीमा तक जहाँ तक यह सम्भाव्य हो कि इनके परिणास्वरूप राजस्व उत्पन्न होगा; और*

(ii) *राजस्व रकम को विश्वसनीय रूप से मापा जा सकता है।*

11. ठेका राजस्व को प्राप्त अथवा प्राप्य प्रतिफल पर मापा जाता है। ठेके के राजस्व का माप अनेक अनिश्चितताओं द्वारा प्रभावित होता है जो कि भावी घटनाओं के परिणाम पर निर्भर करती हैं। अनुमानों में संशोधन की आवश्यकता होती है जैसे-जैसे घटनाएँ घटती है और अनिश्चितताओं का समाधान होता है, इसलिए ठेका राजस्व एक अवधि से अगली अवधि में घट या बढ़ सकता है। उदाहरणतः

IndiaCode

(क) एक ठेकेदार और ग्राहक विभिन्न फेरफारों या दावों पर सहमत हो सकते हैं जो ठेके के प्रारम्भिक समझौते की अवधि के पश्चात् की अवधि में ठेका राजस्व को घटा या बढ़ा सकते हैं ;

(ख) एक निश्चित कीमत ठेके में सहमत राजस्व रकम लागत वृद्धिकरण खण्डों के परिणामस्वरूप बढ़ सकती है ;

(ग) ठेका राजस्व रकम ठेकेदार द्वारा ठेका पूरा करने में हुई देरी के कारण उत्पन्न हुए जुर्मानों के परिणामस्वरूप घट सकती है; या

(घ) जब निश्चित कीमत ठेके में उत्पादन की प्रति इकाई निश्चित कीमत समाविष्ट होती है तो इकाइयों की संख्या बढ़ने के साथ ठेका राजस्व में वृद्धि होती है।

12. फेरफार ग्राहक द्वारा ठेके के अन्तर्गत करने वाले कार्य के क्षेत्र में परिवर्तन का निर्देश है। फेरफार के कारण ठेके के राजस्व में कमी अथवा वृद्धि हो सकती है। फेरफार के उदाहरण हैं, आस्ति के निर्दिष्टीकरण अथवा डिज़ाइन में परिवर्तन और ठेके की अवधि में परिवर्तन। फेरफार को ठेका राजस्व में सम्मिलित किया जाता है जब:

(क) यह संभाव्य हो कि ग्राहक फेरफार तथा फेरफार से उत्पन्न राजस्व की रकम का अनुमोदन करेगा; और

(ख) राजस्व की रकम को विश्वसनीय तौर पर मापा जा सकता है।

13. एक दावा एक ऐसी रकम है जो एक ठेकेदार अपने ग्राहक अथवा अन्य पक्षकार से ऐसी लागतों की प्रतिपूर्ति के रूप में वसूल करना चाहता है जिन्हें ठेका मूल्य में सम्मिलित नहीं किया गया। ग्राहक के स्तर पर विलंब, डिज़ाइन अथवा निर्दिष्टीकरण में त्रुटियाँ और ठेका कार्य में विवादस्पद फेरफार, दावा उत्पन्न होने के कारणों के कुछ उदाहरण हैं। दावों से उत्पन्न राजस्व की रकमों का माप उच्च स्तर की अनिश्चितता के अधीन है और बहुधा समझौतों के परिणाम पर निर्भर करता है। अतः दावों को केवल तभी ठेका राजस्व में शामिल किया जा सकता है जब:

(क) समझौते एक ऐसी परिपक्व स्थिति पर पहुँच चुके हो कि ग्राहक द्वारा दावे को स्वीकार करना सम्भाव्य है; और

(ख) वह रकम, जिसका ग्राहक द्वारा स्वीकार करना सम्भाव्य है,विश्वसनीय रूप से मापी जा सकती है।

14. प्रोत्साहन संदाय ठेकेदार को संदेय अतिरिक्त रकमें है यदि विनिर्दिष्ट निष्पादन मानकों को पूरा लिया जाता है अथवा उससे भी अधिक प्राप्त किया जाता है। उदाहरण के लिए ठेका उसके जल्दी पूरा होने के लिए ठेकेदार को प्रोत्साहन संदाय की व्यवस्था कर सकता है। ठेका संदायों को ठेका राजस्व में शामिल किया जाता है जब:

(क) ठेका इतना पर्याप्ततः आगे बढ़ चुका है कि विनिर्दिष्ट निष्पादन मानक प्राप्त हो जायेंगे या उससे भी अधिक प्राप्त होंगे ; और

(ख) प्रोत्साहन संदाय की रकम को विश्वसनीय तौर पर मापा जा सकता है।

ठेका लागतें

15. ठेका लागतों में निम्नलिखित समाविष्ट होने चाहिये:

(क) ***वे लागतें जो किसी विशिष्ट ठेके से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित हैं ;***

(ख) ***वे लागतें जो कि सामान्य रूप से ठेका क्रियाकलाप से जुड़ी है तथा ठेके पर आबंटित हो सकती हैं; और***

(ग) ***कुछ ऐसी लागतें जो कि ठेके की शर्तों के अन्तर्गत ग्राहक से विशेष रूप से वसूली योग्य हैं।***

16. लागतें जो विशिष्ट ठेके से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित हैं, निम्नलिखित

समाविष्ट करती हैं :

(क) स्थल श्रम लागतें, स्थल पर्यवेक्षण सहित;

(ख) निर्माण में प्रयुक्त सामग्रियों की लागतें;

(ग) ठेके में उपयोग किए गए संयंत्र तथा उपकरणों का अवक्षयण;

(घ) संयंत्र, उपकरण और सामग्री को ठेका स्थल पर लाने तथा ठेका स्थल से ले जाने की लागतें;

(ङ) संयंत्र और उपकरण के किराये की लागत;

(च) डिज़ाइन और तकनीकी सहायता की लागतें जो प्रत्यक्ष रूप से ठेके से संबंधित हैं;

(छ) प्रत्याशित वारंटी लागत सहित सुधार तथा गारन्टी कार्य की अनुमानित लागतें; और

(ज) तृतीय पक्षकारों के दावे।

ये लागतें ऐसी किसी भी आनुषंगिक आय से घट सकती है जो ठेका राजस्व में शामिल नहीं की जाती हैं, उदाहरणार्थ ठेके के अंत में अधिशेष सामग्री की बिक्री तथा संयंत्र एवं उपकरण के व्ययन से प्राप्त आय।

17. ऐसी लागतों में, जो साधारणतया ठेका क्रियाकलाप से जोड़ी जा सकती हैं तथा विशिष्ट ठेकों के प्रति आबंटित की जा सकती हैं, निम्नलिखित सम्मिलित है:

(क) बीमा ;

(ख) डिज़ाइन तथा तकनीकी सहायता की लागतें जो किसी विशिष्ट ठेके से प्रत्यक्ष रूप से, नहीं जुड़ी हैं ; और

(ग) निर्माण उपरिव्यय।

ऐसी लागतों का आबंटन व्यवस्थित तथा युक्तिसंगत पद्धतियों का प्रयोग करते हुए किया जाता है तथा समान लक्षण वाली सभी लागतों के संगत रूप से लागू किया जाता है। आबंटन निर्माण क्रियाकलाप के सामान्य स्तर पर आधारित होता है। निर्माण उपरिव्ययों में ऐसी लागतें सम्मिलित हैं जैसे कि निर्माण कार्मिक की वेतन पत्रिका की रचना तथा प्रसंस्करण करना। ऐसी लागतों में जो कि साधारणतः ठेका क्रियाकलाप से जोड़ी जा सकती हैं तथा विशिष्ट ठेकों पर आबंटित की जा सकती हैं, लेखा मानक 16 उधार लागतें, के अनुसार उधार लागतें भी शामिल हैं।

18. ऐसी लागतें जो ठेके के निबन्धनों के अनुसार ग्राहक से विशिष्ट रूप से वसूली योग्य हैं उनमें कुछ सामान्य प्रशासन लागतें तथा विकास लागतें सम्मिलित हो सकती हैं जिसकी प्रतिपूर्ति के लिए ठेके के निबन्धनों में विनिर्दिष्ट किया जाता है।

19. ऐसी लागतें जो ठेका क्रियाकलाप से नहीं जोड़ी जा सकती या उनको ठेके पर आबंटित नहीं किया जा सकता तो उन्हें निर्माण ठेके की लागतों से बाहर रखा जाता है। ऐसी लागतों में सम्मिलित हैं:

(क) सामान्य प्रशासनिक लागतें जिनके लिए ठेके में प्रतिपूर्ति विनिर्दिष्ट नहीं है ;

(ख) विक्रय लागतें; और

(ग) अनुसंधान एवं विकास लागतें जिनके लिए ठेके में प्रतिपूर्ति विनिर्दिष्ट नहीं हैं ;

(घ) ऐसे बेकार संयंत्र एवं उपकरण पर अवक्षयण जो किसी ठेका विशेष में प्रयोग न लाये जा रहे हो।

20. ठेका लागतों में एक ठेके को प्राप्त करने की तारीख से ठेके की अन्तिम पूर्णता तक की अवधि के लिए ठेके के प्रति चिन्हित की जाने वाली लागतें सम्मिलित होती है। यद्यपि उन लागतों, जो ठेके से प्रत्यक्ष रूप से सम्बंधित हैं और जिनको ठेका प्राप्त करने में उपगत किया गया है, को ठेका लागत के भाग के रूप में सम्मिलित किया जा सकता है यदि उनको अलग से पहचाना जा सकता है और विश्वसनीय रूप से मापा जा सकता है और यह संभाव्य है कि ठेके को प्राप्त किया जायेगा। यदि एक ठेके को प्राप्त करने के लिए खर्च की गई लागतों को उस अवधि, जिसमें यह उपगत की गई हैं, में व्यय के रूप में अभिज्ञात किया जाता है तो उन्हें ठेका लागतों में सम्मिलित नहीं किया जाता जब ठेके को पश्चात्वर्ती अवधि में प्राप्त किया हो।

ठेका राजस्व तथा व्ययों का अभिज्ञान

21. जब एक निर्माण ठेके के परिणाम का विश्वसनीय तौर पर अनुमान लगाया जा सकता है तो इस ठेके से जुड़े ठेका राजस्व तथा ठेका लागतों को रोपोर्टिंग तारीख पर ठेके के क्रियाकलाप के पूर्णतता के चरण के संदर्भ में क्रमशः आय और व्यय के रूप में अभिज्ञात करना चाहिए। निर्माण ठेके पर प्रत्याशित हानि को तुरंत ही पैरा 35 के अनुसार व्यय के रूप में अभिज्ञात करना चाहिए।

22. निश्चित कीमत ठेके के मामले में निर्माण ठेके के परिणामों का विश्वसनीय रूप से अनुमान लगाया जा सकता है जब निम्नलिखित शर्तों को पूरा कर लिया जाए :

(क) ***यदि कुल ठेका राजस्व को विश्वसनीय रूप से मापा जा सके;***

(ख) *यदि यह सम्भाव्य हो कि ठेके से जुड़े आर्थिक लाभ उद्यम को प्रवाहित होंगे ;*

(ग) *यदि ठेके को पूर्ण करने की ठेका लागत तथा रिर्टिंग तारीख पर ठेके के पूर्णता चरण, दोनों को विश्वसनीय रूप से मापा जा सकता है ; और*

(घ) यदि ठेके के प्रति चिन्हित की जाने योग्य ठेका लागतों को स्पष्ट रूप से पहचाना जा सकता है तथा विश्वसनीय रूप से मापा जा सकता है ताकि उपगत की गई वास्तविक ठेका लागतों की पूर्व अनुमानों के साथ तुलना की जा सके।

23. लागत जमा ठेके के मामले में निर्माण ठेके के परिणामों का विश्वसनीय रूप से अनुमान लगाया जा सकता है, जब निम्नलिखित सभी शर्तों को पूरा किया जाये:

(क) *यदि यह सम्भाव्य हो कि ठेके से जुडे आर्थिक लाभ उद्यम को प्रवाहित होंगे ; और*

(ख) *यदि ठेके के प्रति चिन्हित की जाने योग्य ठेका लागतों को चाहे विशिष्टत: प्रतिपूर्ति योग्य हो या न हो, स्पष्ट रूप से पहचानना तथा विश्वसनीय रूप से मापा जा सकता है।*

24. एक ठेके की पूर्णता के चरण के संदर्भ में राजस्वों और व्ययों के अभिज्ञान को बहुधा पूर्णता के प्रतिशत की पद्धति के रूप में सदंर्भित किया जाता है। इस पद्धति के अतंर्गत ठेका राजस्व को पूर्णता के चरण तक पहुँचने में उपगत की गई ठेका लागतों से मिलाया जाता है जिसके फलस्वरूप उस राजस्व, व्ययों तथा लाभ की रिपोर्टिंग होती है जिसको पूर्ण हुए काम के अनुपात के प्रति चिन्हित किया जा सकता है। यह पद्धति एक अवधि के दौरान ठेका क्रियाकलाप की सीमा तथा निष्पादन के बारे में उपयोगी जानकारी प्रदान करती है।

25. पूर्णता के प्रतिशत की पद्धति में ठेका राजस्वों को उन लेखा अवधियों में लाभ और हानि के विवरण में आय के रूप अभिज्ञात किया जाता है जिन में कार्य किया जाता है। ठेका लागतों को उन लेखा अवधियों में लाभ और हानि के विवरण में व्यय के रूप में अभिज्ञात किया जाता है जिनमें वह कार्य जिनसे ये लागतें सम्बन्धित हैं, निष्पादित किया जाता है। लेकिन कुल ठेका लागतों के कुल ठेका राजस्व पर किसी भी प्रत्याशित आधिक्य को तुरंत पैरा 35 के अनुसार व्यय के रूप में अभिज्ञात किया जाता है।

26. एक ठेकेदार ऐसी ठेका लागतें उपगत कर चुका हो सकता है जो ठेके के भावी क्रियाकलापों से संबंधित है। ऐसी लागतों को आस्ति के रूप में अभिज्ञात किया जाता है परन्तु यह सम्भाव्य हो कि उनकी वसूली होगी। ऐसी लागतें ग्राहक से प्राप्य रकम की अभिव्यक्ति करती हैं और बहुधा ठेका प्रगतिशील कार्य के रूप में वर्गीकृत की जाती हैं।

27. जब ठेका राजस्व में शामिल तथा लाभ और हानि के विवरण में अभिज्ञात रकम की वसूली में कोई अनिश्चितता उत्पन्न होती है, तो अवसूलनीय रकम अथवा वह रकम जिनके संबंध में वूसली की संभावना समाप्त हो चुकी है, को ठेका राजस्व की रकम के समायोजन के रूप में न लेकर एक व्यय के रूप अभिज्ञात किया जाता है।

28. कोई उद्यम सामान्यतः एक ऐसे ठेके से सहमति के पश्चात् विश्वसनीय अनुमान लगा सकता है, जो निम्नलिखित का निर्धारण करता है :

(क) निर्माण किये जाने वाली आस्ति के संबंध में प्रत्येक पक्षकार के प्रवर्तनीय अधिकार;

(ख) विनिमय किये जाने वाले प्रतिफलय; और

(ग) निपटान का तरीका और निबंधन ।

उद्यम के लिए साधारणत: यह भी आवश्यक है कि वह प्रभावशील आन्तरिक वित्तीय बजटन तथा रिपोर्टिंग प्रणाली रखे। जैसे-जैसे ठेके की प्रगति होती है उद्यम ठेका राजस्व और ठेका लागतों के अनुमानों की समीक्षा करता है और यदि आवश्यकता हो तो उन्हें संशोधित करता है। इस प्रकार के संशोधन की आवश्यकता अनिवार्यतः ऐसा संकेत नहीं देती ठेके के परिणामों का विश्वसनीय रूप से अनुमान नहीं लगाया जा सकता।

29. ठेके के पूर्णता के चरण का अवधारण अनेकों तरीकों से किया जा सकता है। उद्यम उस पद्धति का प्रयोग करता है जो निष्पादित कार्य का विश्वसनीय माप कर सके। ठेके की प्रकृति पर निर्भर करते हुए, पद्धतियों में निम्नलिखित को सम्मिलित किया जा सकता है:

(क) रिपोर्टिंग की तारीख तक निष्पादित कार्य पर लगाई गई ठेका लागतों का ठेके की कुल अनुमानित लागतों से अनुपात ; या

(ख) निष्पादित कार्य के सर्वेक्षण ; या

(ग) ठेका कार्य के एक भौतिक अनुपात की पूर्णता।

यह आवश्यक नही है कि प्रगति संदाय तथा ग्राहकों से प्राप्त अग्रिम धन निष्पादित कार्य को प्रदर्शित करें।

30. जब पूर्णता के चरण का अवधारण रिपोर्टिंग तारीख तक उपगत की गई ठेका लागतों के संदर्भ में किया जाता है, तो केवल वे ठेका लागतें जो निष्पादित कार्य का परिलक्षण करती है, रिपोर्टिंग तारीख तक उपगत की गई लागतों में सम्मिलित की जाती है। निम्नलिखित उन ठेका लागतों के उदाहरण हैं जिन्हें अपवर्जित किया जाता है:

(क) वे ठेका लागतें जो ठेके के भावी क्रियाकलाप से सम्बंधित है, जैसे सामग्री की लागतें जिसे ठेका स्थल पर भेज दिया गया है अथवा ठेके में उपयोग के लिए अलग रखा गया है परन्तु ठेका निष्पादन के दौरान स्थापित, प्रयुक्त अथवा प्रयोग नहीं किया गया है, जब तक सामग्री विशेष रूप से ठेके के लिए न बनाई गई हो ; और

(ख) उपठेके के अन्तर्गत निष्पादित कार्य के लिए अग्रिम धन के रूप में उपठेकेदार को संदाय।

31. जब निर्माण ठेके के परिणाम का विश्वसनीय अनुमान न लगाया जा सकता हो:

(क) ***राजस्व को उपगत की गई ठेका लागतों को उस सीमा तक ही अभिज्ञात किया जाना चाहिये जिनकी वसूलूली संभाव्य हो; और***

(ख) ***ठेका लागतों को उस अवधि में एक व्यय के रूप में अभिज्ञात किया जाना चाहिये जिसमें उन लागतों को उपगत किया जाता है।***

निर्माण ठेके पर प्रत्याशित हानि को पैरा 35 के अनुसार तुरंत ही व्यय के रूप में अभिज्ञात किया जाना चाहिए।

32. ठेके के आरम्भिक चरणों में बहुधा ऐसा होता है कि ठेके के परिणाम का अनुमान विश्वसनीय रूप से नहीं लगाया जा सकता। तो भी, ऐसा सम्भाव्य हो सकता है कि उद्यम उपगत की गई ठेका लागतों की वसूली कर पायेगा। अतः ठेका राजस्व को उपगत की गई लागतों की केवल उस सीमा तक ही अभिज्ञात किया जाता है जिनकी वसूली सम्भाव्य हो। क्योंकि ठेके के परिणाम का अनुमान विश्वसनीय रूप से नहीं लगाया जा सकता, किसी लाभ को अभिज्ञात नही किया जाता। यद्यपि चाहे ठेके के परिणाम का अनुमान विश्वसनीय रूप से नहीं लगाया जा सकता, ऐसा सम्भाव्य हो सकता है कि कुल ठेका लागतें कुल ठेका राजस्व से बढ़ जायें। ऐसे मामलों में, किसी ठेके के लिए कुल ठेका लागतों का कुल ठेका राजस्व पर सम्भावित आधिक्य को पैरा 35 के अनुसार तुंरत व्यय के रूप में अभिज्ञात किया जाता है।

33. वे ठेका लागतें जिनकी वसूली सम्भाव्य नहीं है तुरंत ही व्यय के रूप में अभिज्ञात की जाती हैं। ऐसी परिस्थितियों के उदाहरण जिसमें उपगत की गई ठेका लागतों की वूसली संभाव्य न हो, और इसलिए ठेका लागतों को तुरंत ही व्यय के रूप में अभिज्ञात करने की आवश्यकता हो, निम्नलिखित ठेकों को सम्मिलित करते हैं:

(क) जो पूर्णतः प्रवर्तनीय न हों अर्थात् उनकी विधिमान्यता गम्भीर रूप से प्रश्न के दायरे में है;

(ख) जिसकी पूर्णता लम्बित मुकदमेबाजी अथवा विधान के परिणाम के अधीन है ;

(ग) ऐसी सम्पतियों से संबंधित है जिनके स्वत्वहरण या अनुपयोगी होने की संभावना है ;

(घ) जहाँ पर ग्राहक अपनी बाध्यताओं को पूरा करने में असमर्थ हो; या

(ङ) जहाँ पर ठेकेदार ठेके को पूरा करने में या अन्यथा ठेके केअन्तर्गत बाध्यताओं को पूरा करने में असमर्थ है।

34. जब वे अनिश्चितताएँ जो ठेके के परिणाम का अनुमान विश्वसनीय रूप से लगाने को रोकती थी अब विद्यमान न हों, निर्माण ठेके से संबंधित राजस्व तथा व्यय को पैरा 21 के अनुसार अभिज्ञात किया जाना चाहिये न कि पैरा 31 के अनुसार।

प्रत्याशित हानियों का अभिज्ञान

35. जब यह सम्भाव्य हो कि कुल ठेका लागतें कुल ठेका राजस्वों से अधिक होंगी, प्रत्याशित हानि को तुरंत व्यय के रूप में अभिज्ञात करना चाहिए।

36. ऐसी हानि की रकम का अवधारण निम्नलिखित को ध्यान में न रखते हुए किया जाता है कि:

(क) ठेके का काम शुरू हो चुका है या नहीं;

(ख) ठेका क्रियाकलाप की पूर्णता का चरण; या

(ग) अन्य ठेकों पर उत्पन्न होने वाले संभावित लाभों की रकम जो पैरा 8 के अनुसार एकल निर्माण ठेका नहीं माने जाते।

अनुमानों में परिवर्तन

37. पूर्णता के प्रतिशत की पद्धति को ठेका राजस्व और ठेका लागतों के चालू अनुमानों के प्रति प्रत्येक लेखा अवधि में एक संचयी आधार पर लागू किया जाता है। अतः ठेका राजस्व या ठेका लागतों के अनुमान में परिवर्तन के प्रभाव को या ठेके के परिणाम के अनुमान में परिवर्तन के प्रभाव को लेखा अनुमान के रूप में लेखाबद्ध किया जाता है (देखें लेखा मानक 5 *अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि पूर्वावधि मदें तथा लेखा नीतियों में परिवर्तन*) । परिवर्तित अनुमानों का उस अवधि जिसमें परिवर्तन किया जाता है और आने वाली अवधियों के लाभ और हानि के विवरण में अभिज्ञात राजस्व तथा व्ययों की रकम के अवधारण में प्रयोग किया जाता है।

प्रकटन

38. एक उद्यम को प्रकट करना चाहिये:

(क) ठेका राजस्व रकम जो अवधि में राजस्व के रूप में अभिज्ञात की गई है ;

(ख) अवधि में अभिज्ञात ठेका राजस्व को अवधारित करने में प्रयुक्त पद्धतियाँ ; और

(ग) प्रगतिशील ठेके की पूर्णता के चरण के अवधारण हेतु प्रयुक्त विधियाँ।

39. उद्यम को रिपोर्टिंग तारीख पर प्रगतिशील ठेकों के लिए निम्नलिखित प्रकटन देने चाहिए :

(क) ***रिपोर्टिंग तारीख तक उपगत की गई लागत की कुल रकम तथा अभिज्ञात लाभ (घटाएँ अभिज्ञात हानियाँ) ;***

(ख) ***प्राप्त की गई अग्रिम रकमें ; और***

(ग) ***प्रतिधारण रकमें।***

40. प्रतिधारण रकमें प्रगति बिलिंग्स की ऐसी रकमें हैं जो इन रकमों के संदाय के लिए ठेके में विनिर्दिष्ट शर्तों के पूरा होने तक या दोषों को ठीक किये जाने तक चुकायी नहीं जाती है। प्रगति बिलिंग्स एक ठेके पर किये गये काम के लिए बिल की गई रकमें हैं चाहे उनका ग्राहक द्वारा संदाय किया जा चुका है या नहीं। अग्रिम रकमें सम्बद्ध कार्य के पूरा होने से पूर्व ठेकेदार द्वारा प्राप्त रकमें हैं ।

41. एक उद्यम को प्रस्तुत करना चाहिये:

(क) ***ठेके के कार्य के लिए ग्राहकों से प्राप्य सकल रकम को एक आस्ति के रूप में; और***

(ख) ***ठेका कार्य के लिए ग्राहकों को संदेय रकम को एक दायित्व के रूप में।***

42. ठेका कार्य के लिए ग्राहकों से प्राप्य सकल रकम निम्नलिखित की शुद्ध रकम होती है:

(क) उपगत की गई लागतें जमा अभिज्ञात लाभ ; घटायें

(ख) अभिज्ञात हानियों तथा प्रगति बिलिंग्स का योग।

उन सभी प्रगतिशील ठेकों के लिए जिनमें उपगत लागतें जमा अभिज्ञात लाभ (घटायें अभिज्ञात हानियां) प्रगति बिलिंग्स से अधिक हो।

43. ठेका कार्य के लिए ग्राहकों को संदेय सकल रकमें निम्नलिखित की शुद्ध रकम होती हैं:

(क) अभिज्ञात हानियों और प्रगति बिलिंग्स की कुल रकम; घटायें

(ख) उपगत गई लागतें जमा अभिज्ञात लाभ।

ऐसे सभी प्रगतिशील ठेकों के लिए जिनके लिए प्रगति बिलिंग्स उपगत की गई लागतों जमा अभिज्ञात लाभों (घटाएँ अभिज्ञात हानियाँ) से अधिक हो।

44. एक उद्यम लेखा मानक 4, *आकस्मिकताएँ तथा तुलन पत्र की तारीख के पश्चात् होने वाली घटनाऐं*[2], के अनुसार किसी आकस्मिकता का प्रकटन करता है। अकस्मिकताएँ, वारंटी उन मदों जैसे लागतें, जुर्माने अथवा सम्भावित हानियों से उत्पन्न हो सकती है।

दृष्टांत

यह दृष्टांत लेखा मानक का भाग नहीं है। इस दृष्टांत का प्रयोजन लेखा मानक के अर्थ को स्पष्ट करने में सहायता करने के लिए इसके लागू होने का दृष्टांत देना है।

लेखा नीतियों का प्रकटन

निम्नलिखित लेखा नीतियों के प्रकटन के दृष्टांत हैं:

निश्चित कीमत निर्माण ठेकों से राजस्व को पूर्णता के प्रतिशत पद्धति पर अभिज्ञात किया जाता है जिनकों रिपोर्टिंग तारीख तक प्रत्येक ठेके के लिए लगे श्रम घंटों का अनुमानित कुल श्रम घंटों के प्रतिशत के संदर्भ में मापा जाता है।

लागत जमा ठेकों में राजस्व को अवधि के दौरान वसूली योग्य उपगत लागतों और अर्जित फीस के जोड़ के संदर्भ में अभिज्ञात किया जाता है, इसका माप रिपोर्टिंग तारीख तक उपगत लागतों तथा ठेके की कुल अनुमानित लागतों के अनुपात से किया जाता है।

ठेका राजस्व तथा व्ययों का अवधारण

निम्नलिखित दृष्टांत ठेके की पूर्णता का चरण और ठेके के राजस्व एवं व्ययों के अभिज्ञान के समय के अवधारण की एक पद्धति का दृष्टांत देता है। (देखिए मानक के पैरा 21 से 34 तक)। (नीचे दिखाई गई रकमें लाखों रुपयों में हैं)

एक निर्माण ठेकेदार के पास पुल बनाने के लिए 9,000 रु. का निश्चित कीमत ठेका है। ठेके के लिए सहमत प्रारम्भिक राजस्व रकम 9,000 रु. है। ठेकेदार का ठेका लागतों का प्रारम्भिक अनुमान 8,000 रु. हैं। पुल बनाने में तीन वर्ष लगेंगे।

पहले वर्ष के अंत तक ठेकेदार का ठेका लागतों का अनुमान 8,050 रु. तक बढ़ जाता है।

दूसरे वर्ष में ग्राहक एक फेरफार का अनुमोदन करता हैं जिसका परिणाम राजस्व में 200 रु. की वृद्धि और अतिरिक्त अनुमानित लागत 150 रु. में निकलता है। दूसरे वर्ष के अंत में, लागतों में 100 रु. की मानंकित सामग्री जो कि कार्य स्थल पर रखी गई है, सम्मिलित है जिसको परियोजना को पूरा करने के लिए तीसरे वर्ष में प्रयोग किया जायेगा।

ठेकेदार किसी ठेके की पूर्णता के चरण का अवधारण रिपोर्टिंग तक निष्पादित किये गए काम के लिए उपगत ठेका लागतों तथा ठेके की अद्यतन अनुमानित कुल लागतों के अनुपात की गणना करके करता है। निर्माण अवधि में वित्तीय आंकड़ों का सारांश नीचे दिया गया है:

(रकम लाखों रु. में)

	वर्ष 1	वर्ष 2	वर्ष 3
ठेके में सहमत प्रारम्भिक राजस्व की रकम	9,000	9,000	9,000
फेरफार	----	200	200
कुल ठेका राजस्व	9,000	9,200	9,200
रिपोर्टिंग तारीख तक उपगत की गई ठेका लागतें	2,093	6,168	8,200

[2] लेखा मानक 4 के सभी पैरा, जो आकस्मिकताओं से संबंधित है, केवल उस सीमा तक लागू होते हैं, जहाँ तक वे केन्द्रीय सरकार द्वारा विहित लेखा मानकों के अन्तर्गत नहीं आते हैं, उदाहरण के लिए, वित्तीय आस्तियों के ह्रास, जैसे कि प्राप्य का ह्रास (सामान्यतः डूबंत और शंकास्पद ऋण के उपबन्ध रूप में ज्ञात है) लेखा मानक 4 द्वारा शासित होते हैं।

पूर्ण करने की ठेका लागतें	5,957	2,032	---
कुल अनुमानित ठेका लागतें	8,050	8,200	8,200
अनुमानित लाभ	950	1,000	1,000
पूर्णता का चरण	26%	74%	100%

दूसरे वर्ष के लिए पूर्णता के चरण (74%) की अवधारण रिपोर्टिंग तारीख तक किये गए काम के लिए उपगत की गई ठेका लागतों में से 100 रु. की कार्य स्थल पर रखी गई नामांकित सामग्री जिसको तीसरे वर्ष में प्रयोग किया जायेगा, को अपवर्जित करके किया जाता है।

तीन वर्षों के लाभ और हानि के विवरण में अभिज्ञात राजस्व, व्ययों और लाभ की रकमें निम्नलिखित हैं:

	रिपोर्टिंग तारीख तक	पूर्व वर्षों में अभिज्ञात	चालू वर्ष मेअभिज्ञात
<u>वर्ष 1</u>			
राजस्व (9,000 × .26)	2,340		2,340
व्यय (8,050 × .26)	2,093		2,093
लाभ	247		247
<u>वर्ष 2</u>			
राजस्व (9,200 × .74)	6,808	2,340	4,468
व्यय (8,200 × .74)	6,068	2,093	3,975
लाभ	740	247	493
<u>वर्ष 3</u>			
राजस्व (9,200 × 1.00)	9,200	6,808	2,392
व्यय	8,200	6,068	2,132
लाभ	1,000	740	260

ठेका प्रकटन

एक ठेकेदार अपने प्रचालनों के पहले वर्ष के अंत में पहुँच चुका है। उसकी सभी उपगत की गई ठेका लागतों को रोकड़ में चुकाया जा चुका है और इसके सभी प्रगति बिलिंग्स तथा अग्रिमों को रोकड़ में प्राप्त कर लिया गया है। खए ग तथा ङ ठेकों पर उपगत की गई ठेका लागतों में ऐसी

सामग्री की लागत भी सम्मिलित है जिसको इस ठेके के लिए क्रय किया गया है परन्तु रिपोर्टिंग तारीख तक उसको ठेके के निष्पादन में प्रयोग नहीं किया गया। ख, ग और ङ ठेकों के लिए ग्राहकों ने ठेकेदार को निष्पादित न किए गए कार्य के लिए अग्रिम दिये हुए हैं।

IndiaCode

पहले साल के अंत में उसके पाँच प्रगतिशील ठेकों की स्थिति निम्नलिखित है:

(रकम लाखों रु. में)

	ठेका					
	क	ख	ग	घ	ङ	कुल
पैरा 21 के अनुसार अभिज्ञात ठेका राजस्व	145	520	380	200	55	1,300
पैरा 21 के अनुसार अभिज्ञात ठेका व्यय	110	450	350	250	55	1,125
पैरा 35 के अनुसार अभिज्ञात प्रत्याशित हानियां	-	-	-	40	30	70
अभिज्ञात लाभ घटा	30	70	30	(90)	(30)	15
अभिज्ञात हानियाँ						
अवधि में उपगत की गई ठेका लागतें	110	510	450	250	100	1,420
अवधि में उपगत की गई ठेका लागतें जिनको पैरा 21 के अनुसार ठेका व्यय के रूप में अभिज्ञात किया गया है	110	450	350	250	55	1,215
पैरा 26 के अनुसार एक आस्ति के रूप में अभिज्ञात भावी क्रियाकलाप से संबंधित ठेका लागतें	–	60	100	–	45	205
ठेका राजस्व (ऊपर देखें)	145	520	380	200	55	1,300
प्रगति बिलिंग्स (पैरा 40)	100	520	380	180	55	1,235
बिल न हुए ठेका राजस्व	45	–	–	20	–	65
अग्रिम (पैरा 40)	–	80	20	–	25	125

मानक के अनुसार प्रकट की जाने वाली रकमें निम्नलिखित हैं:

अवधि में राजस्व के रूप में अभिज्ञात	
ठेका राजस्व (पैरा 38(क)	1,300
रिपोर्टिंग तारीख तक उपगत की गई ठेका लागतें और अभिज्ञात लाभ (घटा अभिज्ञात हानियाँ) (पैरा 39(क)	1,435

IndiaCode

प्राप्त अग्रिम (पैरा 39(ख))	
	125
ग्राहकों से ठेके कार्य के लिए प्राप्य सकल रकम जिसको पैरा 41(क) के अनुसार एक आस्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है	220
ठेका कार्य के लिए ग्राहकों को संदेय सकल रकम जिसको पैरा 41(ख) के अनुसार एक दायित्व के रूप में प्रस्तुत किया गया है	20

पैरा 39(क), 41(क) और 41(ख) के अनुसार प्रकट की जाने वाली रकमों की गणना निम्नलिखित हैं:

(रकम लाखों रु. में)

	क	ख	ग	घ	ङ	कुल
उपगत की गई ठेका लागतें	110	510	450	250	100	1.420
अभिज्ञात लाभ घाटा						
अभिज्ञात हानियाँ	35	70	30	(90)	(30)	15
	145	580	480	160	70	1,435
प्रगति बिलिंग्स	100	520	380	180	55	1,235
ग्राहकों का प्राप्य	45	60	100	–	15	220
ग्राहकों को संदेय	–	–	-	(20)	-	(20)

पैरा 39(क) के अनुसार प्रकट की गई रकम, चालू अवधि की रकम के समान है क्योंकि प्रकटन प्रथम वर्ष के प्रचालन से संबंधित है।

IndiaCode

लेखा मानक 9

राजस्व अभिज्ञान[3]

*(इस लेखा मानक में कुछ **मोटे तिरछे** टाइप और कुछ सीधे टाईप में व्यवस्थित पैरा सम्मिलित है, जिनका समान प्राधिकार है। मोटे तिरछे टाइप में दिये गए पैरा मुख्य सिद्धांत उपदर्शित करते हैं। इस लेखा मानक को अधिसूचना के प्रति उपाबंध के भाग 'क' में अतंर्विष्ट साधारण अनुदेशों*

के संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिये।)

[3] यह बात दोहराई गई है कि यह लेखा मानक (जैसा कि अन्य लेखा मानकों के सम्बन्ध में हैं) यह मानता है कि तीन मूलभूत लेखा मान्यताओं अर्थात् चलायमान समुत्थान, संगतता, और प्रोद्भवन, का वित्तीय विवरणों की तैयारी और प्रस्तुतिकरण में अनुसरण किया जाता है।

प्रस्तावना

1. यह मानक उद्यम के लाभ और हानि के विवरण में राजस्व के अभिज्ञान के आधारों से सम्बंधित है। यह मानक उद्यम के साधारण क्रियाकलापों के दौरान निम्नलिखित से उत्पन्न हो रहे राजस्व के अभिज्ञान से सम्बंधित है

- माल की विक्रय,
- सेवाओं के प्रदान, और
- ब्याज, रायल्टी और लाभांश प्रदान कर रहे उद्यम के संसाधनों का अन्य द्वारा प्रयोग।

2. यह मानक राजस्व अभिज्ञान के निम्नलिखित पक्षों से संबंधित नहीं है जिनके प्रति विशेष विचारणीय तथ्य लागू होते हैं:

(i) निर्माण ठेकों से उत्पन्न हो रहे राजस्व;[4]

(ii) किराया-क्रय, पट्टा करारों से उत्पन्न हो रहे राजस्व;

(iii) सरकारी अनुदानों और अन्य समरूप उपदानों से उत्पन्न हो रहे राजस्व;

(iv) बीमा संविदाओं से उत्पन्न हो रहा बीमा कम्पनियों का राजस्व।

3. निम्नलिखित उन मदों के उदाहरण हैं, जो इस मानक के प्रयोजन के लिए ''राजस्व'' की परिभाषा में सम्मिलित नहीं किए गए है:

(i) अचल आस्तियों के व्ययन से हुए लाभ, और उनको धारित करने से हुए अप्राप्त लाभ, जैसे कि, स्थायी आस्तियों के मूल्य में वृद्धि;

(ii) चालू आस्तियों के मूल्य में परिवर्तन से उत्पन्न हो रहे अप्राप्य धारिता लाभ, और पशुओं के समूहों और कृषि और जंगल संबंधी उत्पादों में प्राकृतिक बढ़ोतरी;

(iii) विदेशी विनिमय दरों में परिवर्तनों और विदेशी मुद्रा वित्तीय विवरणों के अनुवाद से उत्पन्न हो रहे समायोजनों के परिणामस्वरूप प्राप्त या अप्राप्त लाभ;

(iv) अपनी कैंरिग रकम से भी कम रकम पर दायित्व के व्ययन से उत्पन्न हो रहे प्राप्त लाभ ;

(v) एक दायित्व की कैरिंग रकम के पुनः व्यक्त करने से उत्पन्न हो रहे अप्राप्त लाभ।

परिभाषाएँ

4. निम्नलिखित शब्द इस मानक में विनिर्दिष्ट अर्थों के साथ प्रयुक्त हुए हैं:

4.1 ***राजस्व एक उद्यम के साधारण क्रियाकलापों के दौरान, मालों की विक्रय से, सेवाओं के प्रदान करने से, और ब्याज, रायल्टी और लाभांशों का प्रतिफल प्रदान कर रहे उद्यम के संसाधनों के अन्य द्वारा प्रयोग से, उत्पन्न हो रहे रोकड़, प्राप्य, या अन्य प्रतिफल का सकल अंतर्वाह है। राजस्व, पूर्ति किये गये मालों और प्रदान की गयी सेवाओं के लिए, ग्राहकों को दिए गए प्रभारों और उनके द्वारा संसाधनों के प्रयोग से उत्पन्न हो रहे प्रभारों और पारितोषिकों द्वारा मापा जाता है। एक ऐजेन्सी के संबंध में, राजस्व कमीशन की रकम है नाकि, नकद, प्राप्य रकम या अन्य प्रतिफल का सकल अंतर्वाह।***

4.2 ***<u>पूर्ण सेवा संविदा</u> पद्धति लेखा की वह पद्धति है जो लाभ और हानि के विवरण में राजस्व को तभी अभिज्ञात करती है जब संविदा के अंदर सेवाओं का प्रदान पूर्ण हो जाता है या सारभूत रूप से पूर्ण हो जाता है।***

4.3. <u>अनुपातिक पूर्णता पद्धति</u> लेखा की वह पद्धति है जो लाभ और हानि के विवरण में राजस्व को संविदा के अन्तर्गत सेवाओं की पूर्णता की दर के साथ अनुपातिक रूप से अभिज्ञात करती है।

स्पष्टीकरण

5. राजस्व अभिज्ञान मुख्य रूप से एक उद्यम के लाभ और हानि के विवरण में राजस्व के अभिज्ञान के समय-निर्धारण से सम्बंधित है। संव्यवहार पर उत्पन्न हो रहे राजस्व की रकम समान्यतया संव्यवहार में सम्मिलित पक्षकारों के बीच समझौते

[4] निर्माण ठेके' पर लेखा मानक 7 को देखें।

से निर्धारित होती है। जब रकम या इससे जुड़ी लागतों के अवधारण के सम्बन्ध में अनिश्चितताएँ उपस्थित होती हैं, तो यह अनिश्चितताएँ राजस्व अभिज्ञान के समय निर्धारण को प्रभावित कर सकती हैं।

6. माल का विक्रय

6.1 माल के विक्रय युक्त संव्यवहार से राजस्व का अभिज्ञान कब किया जाए, यह निर्धारित करने के लिए एक प्रमुख मापदंड यह है कि, विक्रेता ने प्रतिफल के लिए मालों के स्वामित्वों को क्रेता को अंतरित कर दिया है। अधिकांश स्थितियों में, मालों में स्वामित्व के अंतरण का परिणाम, क्रेता को स्वामित्व के महत्वपूर्ण जोखिमों और पारितोषिकों के अंतरण में निकलता है या इनके साथ मेल खाता है। यद्यपि, ऐसी स्थितियाँ भी हो सकती हैं, जहाँ मालों के स्वामित्व का अंतरण, स्वामित्व के महत्वपूर्ण जोखिमों और परितोषिकों के अंतरण के साथ मेल नहीं खाता। ऐसी स्थिति में राजस्व, क्रेता को स्वामित्व के महत्वपूर्ण जोखिमों और पारितोषिकों के अंतरण के समय अभिज्ञात होता है। ऐसी स्थितियाँ वहाँ उत्पन्न हो सकती हैं जहाँ सुपुदर्गी या तो क्रेता या फिर विक्रेता के दोष के कारण विलम्बित हुई हो और किसी भी हानि, जो शायद दोष न होने पर घटित भी न हुई होती, के संदर्भ में वस्तुएँ दोषी पक्षकार के जोखिम पर होती है। इसके अतिरिक्त, कभी-कभी पक्षकार सहमत हो सकते हैं कि जोखिम, स्वामित्व के अंतरण के समय से भिन्न समय में अंतरित होगा।

6.2 विशिष्ट उद्योगों में कुछ अवस्थाओं पर, जैसे कि जब कृषि संबंधी फसलें काटी जा चुकी हों या खनिज अयस्कों का निष्कर्षण हो चुका हो तो, निष्पादनता राजस्व उत्पन्न करने वाले संव्यवहार के क्रियान्वन से पहले सारभूत रूप से पूर्ण हो सकती है। ऐसी स्थितियों में जहाँ विक्रय वायदा संविदाओं या सरकारी प्रतिभूति के अंतर्गत सुनिश्चित होती है या जहाँ बाजार उपस्थित होता है और विक्रय के प्रति असफलता का जोखिम नगण्य होता है, वहाँ सम्मिलित वस्तुएँ अक्सर, शुद्ध वसूली योग्य मूल्य पर मूल्यांकित की जाती हैं। ऐसी रकमें यद्यपि इस मानक में वर्णित परिभाषा के अनुसार राजस्व नहीं है, कभी-कभी लाभ और हानि के विवरण में अभिज्ञात होती हैं और उपयुक्त रूप से व्यक्त होती है।

7. सेवाओं का प्रदान करना

7.1 सेवा के संव्यवहार से प्राप्त राजस्व को अक्सर सेवा निष्पादित होते ही या तो अनुपातिक पूर्णता पद्धति से या फिर पूर्ण सेवा संविदा पद्धति से अभिज्ञात किया जाता है।

(i) ***अनुपातिक पूर्णता पद्धति*** निष्पादनता में एक से अधिक कार्य का क्रियान्वयन सम्मिलित होता है। राजस्व अनुपातिक रूप से प्रत्येक कार्य के निष्पादन के संदर्भ द्वारा अभिज्ञात होता है। इस पद्धति के अंतर्गत अभिज्ञात राजस्व संविदा मूल्य, सम्बन्धित लागतों, कार्यों की संख्या या अन्य उपयुक्त आधार पर निर्धारित किया जाएगा। व्यवहारिक उद्देश्य के लिए, जब सेवाएँ समय की विशिष्ट अवधि पर कार्यों की अनिश्चित संख्या द्वारा प्रदान की जाती हैं तो राजस्व विशिष्ट अवधि पर सरल रेखा के आधार पर अभिज्ञात किया जाता है जब तक कि यह साक्ष्य न हो कि कोई अन्य पद्धति निष्पादनता के पैटर्न को बेहतर रूप से प्रस्तुत करती है।

(ii) ***पूर्ण सेवा संविदा पद्धति*** निष्पादनता में एकमात्र कार्य का क्रियान्वयन सम्मिलित होता है। वैकल्पिक रूप से सेवाएँ एक से अधिक कार्य के रूप में निष्पादित की जाती हैं, और निष्पादित होने से बची सेवाएँ पूर्ण संव्यवहार के संबंध में इतनी महत्वपूर्ण होती हैं कि निष्पादनता को तब तक पूर्ण नहीं समझा जाता जब तक कि वे कार्य क्रियान्वित नहीं हो जाते। पूर्ण सेवा संविदा पद्धति निष्पादनता के इन पैटर्नों से सम्बंधित है और तदनुसार राजस्व तब अभिज्ञात होता है जब एकमात्र या अंतिम कार्य घटित होता है और सेवा वसूली योग्य बन जाती है।

8. ब्याज, रायल्टी और लाभांशों का प्रतिफल प्रदान कर रहे उद्यम के संसाधनों का अन्य द्वारा प्रयोग

8.1 अन्य द्वारा उद्यम के ऐसे संसाधनों का प्रयोग निम्नलिखित को उत्पन्न करता है:

(i) ब्याज- नकद संसाधनों के प्रयोग के लिए प्रभार या उद्यम को संदेय रकमें;

(ii) रायल्टियाँ- तकनीकी जानकारी, पेटेंट, टेड-मार्क और कापीराइट जैसी आस्तियों के प्रयोग के लिए प्रभार;

(iii) लाभांश- शेयरों में विनिधान को धारण करने से प्राप्त पारितोषिक।

IndiaCode

8.2 अधिकतर परिस्थितियों में, समय के आधार पर ब्याज उपार्जन, बकाया रकम और प्रयोज्य दर द्वारा निर्धारित होता है। आमतौर पर, धारण की गयी उधार प्रतिभूतियों पर छूट या प्रीमियम इस रूप में लिया जाता है जैसे कि यह परिपक्वता की अवधि पर उपार्जित हो रही थीं।

8.3 रायल्टियाँ उपयुक्त संविदा की शर्तों के अनुसार उपार्जित होती हैं और सामान्यतया तब तक उसी आधार पर अभिज्ञात होती हैं, जब तक कि, संव्यवहारों के सार के सम्बन्ध में, राजस्व को किसी अन्य व्यवस्थित और तर्कसंगत आधार पर अभिज्ञात करना अधिक उपयुक्त नहीं होता है।

8.4 शेयरों मे विनिधानों से प्राप्त लाभांश, लाभ और हानि के विवरण में तब तक अभिज्ञात नहीं होते जब तक कि भुगतान प्राप्त करने का अधिकार स्थापित नहीं होता है।

8.5 जब विदेशों से ब्याज, रायल्टियों और लाभांशों को विनिमय स्वीकृति की आवश्यकता होती है और प्रेषण में अनिश्चितता पूर्वानुमानित होती है तो, राजस्व अभिज्ञान को स्थगित करने की आवश्यकता हो सकती है।

9. राजस्व अभिज्ञान पर अनिश्चितताओं का प्रभाव

9.1 राजस्व के अभिज्ञान में आवश्यकता होती है कि राजस्व मापने योग्य हो और विक्रय या सेवा प्रदान के समय अंतिम वसूली की अपेक्षा करना अतर्कशील न हो ।

9.2 जहाँ दावे के समय अंतिम वसूली को तर्कसंगत निश्चितता के साथ निर्धारित करने की क्षमता कम होती है, जैसे मूल्यों में वृद्धि, निर्यात प्रोत्साहनों, ब्याज आदि के लिए, वहाँ राजस्व अभिज्ञान सम्मिलित अनिश्चितता की सीमा तक स्थगित होता है। ऐसी स्थितियों में, राजस्व को अभिज्ञात करना केवल तब उपयुक्त हो सकता है जब यह तर्कसंगत रूप से निश्चित हो कि अंतिम वसूली की जाएगी । जहाँ अंतिम वसूली के विषय में कोई अनिश्चितता न हो तो वहाँ, भुगतान किस्तों में होने पर भी, राजस्व विक्रय या सेवा के प्रदान के समय अभिज्ञात होता है।

9.3 जब वसूली से संबंधित अनिश्चितता विक्रय या सेवा के प्रदान के समय के बाद उत्पन्न होती है तो, मूलभूत रूप से अभिलिखित राजस्व की रकम को समायोजित करने के बजाए अनिश्चितता को प्रतिबिम्बित करने के लिए पृथक उपबंधित रकम बनाना अधिक उपयुक्त है।

9.4 राजस्व के अभिज्ञान हेतु एक अनिवार्य कसौटी यह है कि मालों के विक्रय, सेवा प्रदान करने के लिए या अन्यों द्वारा उद्यम संसाधनों के प्रयोग से प्राप्त होने योग्य प्रतिफल, तर्कसंगत रूप से निर्धारण योग्य है। जब ऐसे प्रतिफल तर्कसंगत सीमाओं के अन्तर्गत अवधारण योग्य नहीं होते तो, राजस्व अभिज्ञान स्थगित कर दिया जाता है।

9.5 जब राजस्व का अभिज्ञान अनिश्चितताओं के प्रभाव के कारण स्थगित होता है तो, यह उस अवधि का राजस्व माना जाता है जिसमें यह उचित रूप से अभिज्ञात होता है।

मुख्य सिद्धान्त

10. विक्रय या सेवा के संव्यवहारों से राजस्व को तब अभिज्ञात किया जाना चाहिए जब निष्पादनता के विषय में पैरा 11 और 12 में व्यक्त अपेक्षाएँ पूरी की गयी हों, परन्तु निष्पादनता के समय अंतिम वसूली की अपेक्षा करना अतर्कशील न हो। यदि कोई दावा करते हुए अंतिम वसूली की अपेक्षा करना अतर्कशील है तो, राजस्व अभिज्ञान स्थगित होना चाहिए।

स्पष्टीकरण:

विक्रय के स्वंव्यवहारों (आवर्त) से प्राप्त राजस्व की रकम निम्नलिखित तरीके से लाभ और हानि के विवरण के मुख पर प्रकट होनी चाहिए :

आवर्त (सकल)	××	
घटा : उत्पाद शुल्क	××	
आवर्त (शुद्ध)		××

आवर्त से घटाए जाने वाले उत्पाद शुल्क की रकम अंतिम स्टॉक और आरम्भिक के बीच के अंतर से संबंधित उत्पाद शुल्क के अतिरिक्त वर्ष के लिए कुल उत्पाद शुल्क की रकम होनी चाहिए। अंतिम स्टॉक और आरंभिक स्टॉक के बीच के अंतर से संबंधित उत्पाद शुल्क को उत्पाद शुल्क की दो रकमों की प्रकृति को स्पष्ट करने के लिए, लेखा के प्रति टिप्पण में स्पष्टीकरण टिप्पण के साथ, लाभ और हानि के विवरण में पृथकतः अभिज्ञात किया जाना चाहिए।

11. मालों के विक्रय को सम्मिलित करते हुए संव्यवहार में, निष्पादनता को तभी पूर्ण माना जाता है जब निम्नलिखित शर्तें पूर्ण होती हों :

(i) *मालों के विक्रेता ने कीमत के लिए मालों के स्वामित्व को क्रेता को अंतरित कर दिया हो या स्वामित्व के सभी सारभूत जोखिम या पारितोषिक क्रेता को अंतरित हो गये हों और विक्रेता को अंतरित किए गए मालों पर, उस दर तक कोई प्रभावशाली नियंत्रण न रहा हो, जो आमतौर पर स्वामित्व के साथ जोड़ी जाती है ; और*

(ii) *प्रतिफल की उस रकम के संदर्भ में कोई सारभूत अनिश्चितता उपस्थित न हो जो मालों की विक्रय से उत्पन्न होगी।*

12 सेवा प्रदान करने से संबंधित हुए संव्यवहार में, निष्पादनता को या तो पूर्ण सेवा संविदा पद्धति या फिर अनुपातिक पूर्णता पद्धति, जो भी किए गए कार्य के प्रति राजस्व को संबंधित करे, के अंतर्गत मापा जाना चाहिए। ऐसी निष्पादनता तब पूर्ण मानी जानी चाहिए जब प्रतिफल की उस रकम के संबंध में कोई सारभूत अनिश्चितता न हो जो सेवा के प्रदान करने से उत्पन्न होगी।

13. ब्याज, रायल्टी और लाभांशों का प्रतिफल प्रदान कर रहे उद्यम के संसाधनों के अन्य प्रयोग से उत्पन्न हो रहे राजस्व को केवल तभी अभिज्ञान करना चाहिए जब माप या वसूली के विषय में कोई महत्वपूर्ण अनिश्चितता न हो। यह राजस्व निम्नलिखित आधारों पर अभिज्ञात होते हैं :

(i)	*ब्याज*	:	*समय अनुपात के आधार पर बकाया रकम और प्रयोज्य दर को ध्यान में रखते हुए।*
(ii)	*रायल्टियाँ*	:	*उपयुक्त संविदा की शर्तों के अनुसार उपार्जन के आधार पर।*
(iii)	*शेयरों में विनिधानों से प्राप्त लाभांश*		*जब भुगतान प्राप्त करने का स्वामी का अधिकार स्थापित हो जाता है।*

प्रकटन

14. लेखा मानक 1 'लेखा नीतियों का प्रकटन' के अनुसार अपेक्षित प्रकटनों के अतिरिक्त, एक उद्यम को वे परिस्थितियाँ भी प्रकट करनी चाहिए जिनमें विचाराधीन सारभूत अनिश्चितताओं के निदान होने तक राजस्व अभिज्ञान स्थगित हुआ हो।

दृष्टांत

ये दृष्टांत इस मानक का भाग नहीं हैं। इनका उद्देश्य, मानक की प्रयोज्यता स्पष्टीकरण में सहायता के प्रयत्न में कई व्यवसायिक स्थितियों के प्रति मानक की प्रयोज्यता की व्याख्या करना है।

(क) मालों की विक्रय

1. सुपुर्दगी, क्रेता की प्रार्थना पर विलम्बित होती है और क्रेता स्वामित्व लेता है और बिल स्वीकार करता है

भौतिक सुपुर्दगी पूर्ण न होने के बावजूद भी राजस्व को अभिज्ञात किया जाना चाहिए जब तक कि इस बात की प्रत्येक आशा हो कि सुपुर्दगी कर दी जाएगी। यद्यपि, सुपुर्दगी के लिए मालों को अर्जित या उत्पादित करने के इरादे की बजाए विक्रय के अभिज्ञात होने के समय मद हाथ में

होनी चाहिए और क्रेता को देने के लिए चिन्हित और तैयार होनी चाहिए।

2. शर्तों के अधीन सुपुर्दगी

IndiaCode

(क) संस्थापन और निरीक्षण अर्थात् माल संस्थापन, निरीक्षण आदि के अधीन विक्रय किया जाता है।

साधारणतः राजस्व को तब तक अभिज्ञात नहीं किया जाता जब तक कि ग्राहक सुपुर्दगी स्वीकार न कर ले और संस्थापन और निरीक्षण पूर्ण न हो जाए। यद्यपि कुछ स्थितियों में, संस्थापन प्रक्रिया प्रकृति में इतनी साधारण हो सकती है कि संस्थापन के पूर्ण न होने के बावजूद भी विक्रय को अभिज्ञात करना उपयुक्त हो सकता है (उदाहरण के लिए, कारखाने द्वारा निरीक्षत टेलिविजन रिसीवर की स्थापना के लिए सामान्यतया केवल उसे खोलने और पावर व एन्टैना को जोड़ने की आवश्यकता होती है)।

(ख) अनुमोदन पर

राजस्व को तब तक अभिज्ञात नहीं करना चाहिए जब तक कि क्रेता द्वारा माल औपचारिक रूप से स्वीकार न किया गया हो या क्रेता ने संचालन को अपनाने का कोई कार्य न किया हो या अस्वीकृति की समयावधि न बीती हो या जहाँ कोई समयावधि निर्धारित न हो वहाँ तर्कसंगत समय न गुजर गया हो।

(ग) गारंटीशुदा विक्रय अर्थात् क्रेता को वापसी का असीमित अधिकार प्रदान करते हुए कि गयी सुपुर्दगी।

ऐसी परिस्थितियों में, राजस्व का अभिज्ञान, संविदा के सार पर निर्भर करेगा। ऐसी फुटकर बिक्रियों की स्थिति में जो "पूर्णतः संतुष्ट न होने की स्थिति में पैसा वापसी की गारंटी देती है" विक्रय को अभिज्ञात करना उपयुक्त हो सकता है परन्तु जब पिछले अनुभव के आधार पर वापसियों के लिए उपयुक्त उपबंधित रकम बनायी जाए । अन्य स्थितियों में, संविदा का सार प्रेषण पर विक्रय के समकक्ष हो सकता है, जिस स्थिति में इसके साथ निम्नलिखित की तरह प्रतिपादित होना चाहिए।

(घ) प्रेषण विक्रय या ऐसी सुपुर्दगी की जाती है जिसके द्वारा प्राप्तकर्ता, प्रेषक की तरफ से वस्तु बेचता है।

राजस्व को तब तक अभिज्ञात नहीं करना चाहिए जब तक माल तीसरे पक्षकार को नहीं बेची जाती है।

(ङ) सुपुर्दगी विक्रय पर रोकड़

विक्रेता या उसके एजेंट द्वारा रोकड़ प्राप्त होने तक राजस्व को अभिज्ञात नहीं करना चाहिए।

3. ऐसी बिक्रियाँ जहाँ क्रेता, विक्रेता को किश्तों में भुगतान करता है और विक्रेता अंतिम भुगतान होने पर ही माल की सुपुर्दगी करता है।

वस्तुओं की सुपुर्दगी तक प्रत्येक विक्रय से प्राप्त राजस्व को अभिज्ञात नहीं किया जाना चाहिए। यद्यपि, जब अनुभव यह दर्शाता हो कि ऐसी अधिकतर बिक्रियाँ निष्पन्न हो रही है तो, महत्वपूर्ण जमा प्राप्त होने पर राजस्व को अभिज्ञात किया जा सकता है।

4. विशेष आदेश और पोत लदान अर्थात् जहाँ भुगतान (या आंशिक भुगतान), उन वस्तुओं के लिए प्राप्त किया जाता है जो वर्तमान में सूचिबद्ध सामानों में उपस्थित नहीं है उदाहरण के लिए उत्पादित किए जाने वाला सूचिबद्ध सामान या तीसरे पक्षकार से ग्राहक को प्रत्यक्षतः भेजे जाने वाला सूचिबद्ध समान।

ऐसी बिक्रियों से राजस्व को तब तक अभिज्ञात नहीं करना चाहिए जब तक कि वस्तुएँ उत्पादित, चिन्हित और तीसरे पक्षकार द्वारा क्रेता को सुपुर्द करने के लिए तैयार नहीं हो जाती।

5. विक्रय/पुनः क्रय संविदा अर्थात् जहाँ विक्रेता बाद की तारीख पर समान मालों को दोबारा खरीदने के लिए सहमत हो जाता है।

ऐसे संव्यवहारों के लिए जो सार-रूप में एक वित्तीय संविदा है, परिणामस्वरूप उत्पन्न हो रहा रोकड़ अन्तर्वाह राजस्व नही है जैसा कि परिभाषित है और उसे राजस्व के रूप में अभिज्ञात नहीं किया जाना चाहिए।

6. मध्यवर्ती पक्षकारों को विक्रय अर्थात् जहाँ पुनर्विक्रय के लिए वस्तुएँ वितरकों, विक्रेताओं या अन्य को बेची जाती हैं।

आमतौर पर स्वामित्व के सारभूत जोखिम अंतरित हो जाने पर ऐसे ही विक्रय से प्राप्त राजस्व को अभिज्ञात किया जाता है; यद्यपि कुछ स्थितियों में क्रेता मूलतः एक एजेंट हो सकता है और ऐसी स्थितियों में विक्रय को एक प्रेषण विक्रय माना जाना चाहिए।

IndiaCode

7. प्रकाशनों के लिए अभिदान

प्राप्त बिल बना राजस्व आस्थगित होना चाहिए और या तो समय के दौरान सरल रेखा आधार पर अभिज्ञात होना चाहिए या फिर जहाँ अवधि दर अवधि सुपुर्द की गई मदें मूल्य में भिन्न हों, वहाँ राजस्व, अभिदान द्वारा आच्छादित सभी मदों के कुल विक्रय मूल्य के सम्बंध में भेजे गए मद के विक्रय मूल्य पर आधारित होना चाहिए।

8. किश्तों पर विक्रय

जब प्रतिफल किश्तों में प्राप्त होने योग्य हो, वहाँ ब्याज के अतिरिक्त विक्रय कीमतों से सम्बंधित राजस्व को विक्रय की तारीख पर अभिज्ञात किया जाना चाहिए। ब्याज तत्व को विक्रेता को असंदत्त शेष के अनुपात में राजस्व की तरह अभिज्ञात किया जाना चाहिए।

9. व्यापारिक छूटें और मात्रागत घटौती

प्राप्त कि गयी व्यापारिक छूटें और मात्रागत घटौतियाँ राजस्व की परिभाषा में नहीं आती, क्योंकि वे लागत में कटौती को प्रस्तुत करती हैं। दी गयी व्यापारिक छूटों और मात्रागत घटौतियों को राजस्व निर्धारण करने में घटाया जाना चाहिए।

(ख) सेवाओं को प्रदान करना

1. संस्थापन शुल्क

उन स्थितियों में जहाँ संस्थापन शुल्क, उत्पाद की विक्रय के प्रति प्रासंगिकता से भिन्न है, वे केवल उपकरण की स्थापना और ग्राहक द्वारा उसे स्वीकार करने पर ही राजस्व रूप में अभिज्ञात होने चाहिए।

2. विज्ञापन एवम् बीमा एजेन्सी कमीशन

राजस्व को सेवा पूर्ण होने पर ही अभिज्ञात करना चाहिए। विज्ञापन एजेन्सियों के लिए, सामान्यतया मीडिया कमीशन तभी अभिज्ञात होंगे जब सम्बंधित विज्ञापन या व्यवसायिक स्वरूप जनता के समक्ष प्रकट हो और आवश्यक प्रज्ञापन एजेन्सी को प्राप्त हो इसके विपरीत उत्पादन कमीशन, जो परियोजना पूर्ण होने पर अभिज्ञात किया जाएगा। बीमा एजेन्सी कमीशन, सम्बंधित नीतियों के प्रभावी प्रारम्भिक या नवीकरण की तारीखों पर अभिज्ञात होने चाहिए।

3. वित्तीय सेवा कमीशन

एक वित्तीय सेवा को एकाकी कार्य के रूप में या एक समयावधि के दौरान प्रदान किया जा सकता है। इसी प्रकार, ऐसी सेवाओं के लिए प्रभार, एकाकी रकम के रूप में या उस सेवा की समयावधि के दौरान या उस संव्यवहार के जीवन के दौरान, जिससे यह सम्बंधित है, विभिन्न चरणों में प्रदान किए जा सकते हैं। ऐसे प्रभारों को पूरी तरह निपटाया जा सकता है जब प्रदान किया जाय या एक उधार में या अन्य लेखा में जोड़े जा सकता है और चरणों में निपटाये जा सकते हैं। इसलिए ऐसे राजस्व का अभिज्ञान निम्नलिखित को ध्यान में रखकर करना चाहिए:

(क) यदि सेवा ''एक बार और सबके लिए'' प्रदान की गई है या यह ''सतत्'' आधार पर है;

(ख) सेवाओं से सम्बंधित लागतों का भार ;

(ग) सेवाओं के लिए भुगतान कब प्राप्त किया जाएगा।

सामान्यतः उधार की व्यवस्था या उधार प्रदान करने के लिए या अन्य सुविधाओं के लिए वसूले गए कमीशनों को तब अभिज्ञात करना चाहिए जब एक बाध्य दायित्व बनाया जा चुका हो। प्रतिबद्धता सुविधा या ऋण प्रबंधन शुल्कों को जो सतत् दायित्वों या सेवाओं से सम्बंधित है सामान्यतः बकाया दायित्व की रकम, प्रदत्त सेवाओं की प्रकृति और उनसे सम्बंधित लागतों की कालबद्धता को ध्यान में रखते हुए सुविधा या उधार की समयावधि के दौरान अभिज्ञात किया जाना चाहिए।

4. प्रवेश शुल्क

कलात्मक अभिनयों, दावतों और अन्य विशिष्ट घटनाओं से उत्पन्न राजस्व को घटनाओं के घटित होने पर अभिज्ञात करना चाहिए। जब कई घटनाओं के लिए अभिदान बेचे जाते हैं तो शुल्क को व्यवस्थित और तर्कसंगत आधार पर प्रत्येक घटना के प्रति आबंटित करना चाहिए।

5. शिक्षण शुल्क

राजस्व अनुदेशों की अवधि के दौरान अभिज्ञात किया जाना चाहिए।

6. प्रवेश एवम् सदस्यता शुल्क

इन स्रोतों से प्राप्त राजस्व अभिज्ञान प्रदान की जा रही सेवाओं की प्रकृति पर निर्भर होगा। प्राप्त किया गया प्रवेश शुल्क सामान्यतया पूँजीकृत किया जाता है। यदि सदस्यता शुल्क केवल सदस्यता की अनुमति देता है और बाकी सभी सेवाओं या उत्पादों के लिए पृथक रूप से भुगतान होता है, या पृथक वार्षिक अभिदान होता है तो, शुल्क जब प्राप्त हो तब अभिज्ञात किया जाना चाहिए। यदि सदस्यता शुल्क, सदस्य को वर्ष के दौरान सेवाओं या प्रकाशनों का अधिकार देता है तो इसे प्रदान की गई सभी सेवाओं की कालबद्धता और प्रकृति के संदर्भ में, व्यवस्थित और तर्कसंगत आधार पर अभिज्ञात किया जाना चाहिए।

लेखा मानक 10

संपत्ति, संयंत्र और उपस्कर

*(इस लेखा मानक में कुछ **मोटे तिरछे** टाईप और कुछ सीधे टाईप में व्यवस्थित पैरा सम्मिलित हैं, जिनका समान प्राधिकार है। मोटे तिरछे टाईप में दिये गये पैरा मुख्य सिद्धांत उपदर्शित करते हैं। इस लेखा मानक को अधिसूचना के प्रति उपाबंध के भाग क में अतंर्विष्ट साधारण अनुदेशों के संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिये।)*

उद्देष्य

1. इस मानक का उद्देश्य सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर के लिए लेखा प्रक्रिया निर्धारित करना है ताकि वित्तीय विवरणों के उपयोगकर्त्ताओं को एक प्रतिष्ठान द्वारा उसकी सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर में किए गए निवेश (विनिधान) और ऐसे निवेश में परिवर्तनों के बारे में सूचना की आवश्यक जानकारी प्राप्त हो सके। सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर के लेखों के प्रमुख मुद्दे है: आस्तियों की मान्यता, (अभिज्ञान), उनकी अग्रणीत (कैरिंग) राशियों का निर्धारण और मूल्यह्रास (अवक्षयण) प्रभार तथा उनके संबंध में मान्य क्षतिग्रस्तता हानियां।

कार्यक्षेत्र

2. यह मानक सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर के लेखे पर लागू किया जाएगा, सिवाय इसके, जब लेखे के लिए कोई अन्य लेखा मानक किसी अलग लेखा विधि की अपेक्षा करता है या इसकी अनुमति देता है।

3. यह लेखा मानक निम्नलिखित पर लागू नहीं होता :

(क) धारक पादपों (पौधों) को छोड़कर, कृषिक कार्यकलापों से संबंधित जैविक आस्तियां। यह मानक यद्यपि धारक पादपों पर लागू होता है लेकिन उनके उत्पादों पर लागू नहीं होता; और

(ख) खनिज अधिकारों सहित बेकार आस्तियों, खनिजों, तेल, प्राकृतिक गैस और इसी प्रकार की गैर-पुनरूत्पादित संसाधनों की खोज व निष्कर्षण पर व्यय।

लेकिन, यह मानक उस सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर पर भी लागू होता है जो उपर्युक्त (क) और (ख) में यथावर्णित आस्तियों के विकास या रखरखाव में प्रयोग होते है।

4. अन्य लेखा मानक सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की किसी मद की मान्यता के लिए इस मानक से भिन्न किसी अलग दृष्टिकोण की अपेक्षा कर सकते हैं। उदाहरणार्थ, लेखा मानक 19, *पट्टे*, एक प्रतिष्ठान से यह अपेक्षा करता है कि वह किसी पट्टाशुदा सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर के एक मद की मान्यता का मूल्यांकन जोखिमों व पुरस्कारों के अन्तरण के आधार पर करे। हालांकि, ऐसे मामलों में इन आस्तियों की लेखा विधि के अन्य पहलू, जिनमें मूल्यह्रास भी शामिल है, इस मानक द्वारा निर्धारित किये जाते हैं।

5. लेखा मानक 13, *विनिधानों के लिए लेखा* में यथा परिभाषित निवेश सम्पत्ति का लेखा केवल इस मानक में दिए गए लागत मॉडल के अनुसार ही किया जाएगा।

परिभाषाएं

6. इस मानक में निम्नलिखित शब्दावली का प्रयोग यहां विनिर्दिष्ट अर्थों में किया गया है :

<u>कृषिक गतिविधि</u> एक प्रतिष्ठान का वह प्रबंधन है जिसमें वह जैविक आस्तियों का जैविक रूपान्तरण और जैविक आस्तियों की फसल की कटाई करता है ताकि उनकी बिक्री करे या कृषिक उत्पाद में रूपांतरित करें या फिर अतिरिक्त जैविक आस्तियां सृजित करें।

<u>कृषिक उत्पाद</u> वह कृषि उत्पाद है जो प्रतिष्ठान जैविक आस्तियों की कटाई से प्राप्त करता है।

एक <u>धारक पादप</u> वह पादप है :

(क) जो कृषिक उत्पाद के उत्पादन या आपूर्ति के लिए प्रयोग किया जाता है ;

(ख) जिससे यह आशा की जाती है कि वह 12 माह से अधिक तक उत्पाद धारण करेगा; और

(ग) जिससे प्रासंगिक अनुपयोगी चीजों (स्क्रेप) की बिक्रियों को छोड़कर कृषि उत्पाद के रूप में बेचे जाने की अल्प संभावना है।

निम्नलिखित धारक पादप नहीं हैं :

(i) वे पादप या पौधे जिन्हें इसलिए उगाया जाता है ताकि विकसित होने पर उन्हें कृषि उत्पाद के रूप में बाद में काटा जा सके (जैसेकि इमारती लकड़ी के लिए पेड़ों को उगाना) ;

(ii) वे पादप जिन्हें इसलिए उगाया जाता है कि उन्हें कृषि उत्पाद के उत्पादन के लिए प्रयोग किया जा सके और इस बात की बहुत-ही कम संभावना है कि उन्हें प्रतिष्ठान काट कर कृषि उत्पाद की तरह बेचे, लेकिन कुछ गौण अनुपयोगी (स्क्रेप) चीजों की बिक्री को छोड़कर (उदाहरण के तौर पर फलदार पेड़ जो फलों और इमारती लकड़ी , दोनों प्रयोजनों के लिए लगाये जाते हैं) ; और

(iii) वार्षिक (सालाना) फसलें (जैसे कि मक्का एवं गेहूँ)।

जब धारक पादप कोई उत्पाद देना बंद कर देता है तो उसे अनुपयोगी चीज समझकर काटकर बेच जा सकता है, जैसे की जलाने की लकड़ी। इस प्रकार की गौण अनुपयोगी चीज (स्क्रेप) की बिक्री, एक पादप को धारक पादप की परिभाषा में रहने से नहीं रोकेगी।

एक 'जैविक आस्ति' एक जीवित पशु है[5] या पादप है।

<u>अग्रणीत (कैरिंग) राशि</u> वह राशि है, जिस पर किसी आस्ति की मान्यता (अभिज्ञान), संचित मूल्यह्रास (अवक्षयण), तथा संचित क्षतिग्रस्तता (ह्रास) हानि को घटाकर की जाती है।

<u>लागत</u> एक नकद या नकदी तुल्य राशि अथवा अन्य प्रतिफल का उचित मूल्य है, जिसका किसी आस्ति के अधिग्रहण या निर्माण के लिए भुगतान किया जाता है या जहां लागू है, यह वह राशि है जो अन्य लेखा मानक की विशिष्ट अपेक्षाओं के अनुसरण में प्रारंभिक मान्यता से उस आस्ति से संबधित होती हैं।

<u>मूल्यह्रासयोग्य राशि</u> वह राशि है जो किसी आस्ति की लागत है या लागत हेतु वह वैकल्पिक अन्य राशि है जिसमें से उसका अवशिष्ट मूल्य घटा दिया जाता है।

<u>मूल्यह्रास</u> (अवक्षयण), किसी आस्ति के उपयोगी जीवन के दौरान मूल्यह्रासयोग्य राशि का एक व्यवस्थित आबंटन है।

<u>प्रतिष्ठान विशिष्ट मूल्य</u> वह है, जिसे प्रतिष्ठान किसी आस्ति के निरन्तर उपयोग से नकद प्रवाह (कैश फ्लों) के वर्तमान मूल्य के रूप में पाने की व इसके उपयोगी जीवन के बाद निपटान पर या फिर कसी दायित्व के भुगतान के समय खर्च करने की आशा करता है।

[5] कृषि से संबंधित लेखा मानक अभी तैयार किया जा रहा है जो, अन्य बातों के साथ-साथ, जीवित जानवरों का लेखा भी शामिल करेगा। जब तक कृषि पर लेखा मानक जारी नहीं किया जाता है, सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की परिभाषा को पूरा करने वाले जीवित जानवरों का लेखा, लेखा मानक 10 , सम्पत्ति, *संयंत्र और उपस्कर* के अनुसार ही होगा।

<u>उचित मूल्य</u> वह राशि है जिस पर एक आस्ति दो जानकार व इच्छुक पक्षों (पार्टियों) के बीच स्वतंत्र लेन-देन में विनियमित की जाती है।

<u>स्कल अग्रणीत राशि</u> एक आस्ति की वही लागत है या लागत के स्थान पर कोई वह दूसरी राशि है जिसमें से लेखा पुस्तकों में संचित मूल्यह्रास (अवक्षयण) और संचित क्षतिग्रस्तता (ह्रास) हानियां घटायी न गयी हों।

<u>क्षतिग्रस्तता (ह्रास) हानि</u> वह राशि है, जिससे किसी आस्ति की अग्रणीत (कैरिंग) राशि उसकी वसूली योग्य राशि से अधिक है।

<u>सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर</u> वे मूर्त मदें हैं, जो:

(क) वस्तुओं या सेवाओं के उत्पादन या आपूर्ति के उपयोग के लिए, अन्य को किराये पर देने के लिए, या फिर प्रशासनिक उपयोग के प्रयोजनों के लिए धारित की जाती है; और

(ख) जिनके 12 माह से अधिक की अवधियों के दौरान इस्तेमाल किये जाने की आशा हो। <u>वसूली योग्य राशि</u> वह होती है जो एक आस्ति की निवल विक्रय कीमत और प्रयोग मूल्य, इन दोनों में से जो अधिक हो।

<u>अवशिष्ट मूल्य</u> किसी आस्ति की वह अनुमानित राशि है जो कोई प्रतिष्ठान वर्तमान में आस्ति की आयु पूरी होने और उपयोगी जीवन के अन्त में उसके निपटान पर अनुमानित लागतों को घटाने के पश्चात् प्राप्त करने की आशा करता है।

<u>उपयोगी जीवन</u> से तात्पर्य है-

(क) वह अवधि जिसमें एक आस्ति के किसी प्रतिष्ठान द्वारा इस्तेमाल के लिए उपलब्ध रहने की आशा रहती है; या

(ख) आस्ति से प्रत्याशित उत्पादन की संख्या या इससे मिलती -जुलती इकाईयां।

मान्यता (अभिज्ञान)

7 किसी सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की एक मद की लागत को किसी आस्ति के रूप में मान्यता तभी दी जायेगी, यदि, और केवल यदि:

(क) *इस बात की संभावना हो कि इस मद के साथ जुड़े भावी आर्थिक लाभ प्रतिष्ठान को प्राप्त होते रहेगें; और*

(ख) *इस मद की लागत का माप विश्वसनीय रूप से किया जा सकता है।*

8. अतिरिक्त पुर्जे (स्पेयर पार्टस), अतिरिक्त (स्टैड बाई) उपस्कर व सहायक उपस्कर जैसी मदों को इस लेखा मानक के अनुसरण में मान्यता तब दी जाती है जब वे सम्पत्ति, संयंत्र व उपस्कर की परिभाषा को पूरा करती हैं, वरना इन मदों को सूचीबद्ध समान (इन्वेंट्री) में वर्गीकृत किया जाता है।

9. यह मानक मान्यता के माप के लिए किसी इकाई को निर्धारित नही करता है, अर्थात् किस मद को सम्पत्ति, संयंत्र व उपस्कर श्रेणी में लिया जाए और किस मद को नहीं। अतः एक प्रतिष्ठान की विशिष्ट परिस्थितियों के मान्यता मानदंड के प्रयोग के लिए विवेक की आवश्यकता रहती है। एक माप ईकाई का उदाहरण विनिर्माणी संयंत्र के निर्माण में एक परियोजना हो सकता है, न कि निर्माण अवधि के दौरान, खर्च किये गये व्यय के पूंजीकरण के प्रयोजन के लिए उपयुक्त मामलों में परियोजना की व्यक्तिगत आस्तियां। इसी तरह यह उपयुक्त होगा कि गैर- महत्वपूर्ण मदों, से कि सांचों, औजारों और डाइयों की अलग-अलग मदों को एक साथ लिया जाए तथा उनके समूचे मूल्य पर मानदण्ड को लागू किया जाए। एक प्रतिष्ठान यह निर्णय ले सकता है कि एक मद पर कितना खर्च किया जाए जो अन्यथा सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर में शामिल है, क्योंकि व्यय की राशि बहुत अधिक नहीं है।

10. इस मान्यता सिद्धान्त के अन्तर्गत, एक प्रतिष्ठान अपनी सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की समस्त लागतों का मूल्यांकन उस समय करता है, जब उन लागतों पर वह व्यय करता है। इन लागतों में वह व्यय सम्मिलित होता है जो:

(क) सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की किसी मद को प्राप्त करने या उसके निर्माण करने के लिए प्रारंभ में खर्च किया जाता है; और

(ख) वह व्यय जो बाद में इसके किसी भाग की वृद्धि के लिए/बदलने या उसके रखरखाव के लिए खर्च किया जाता है।

प्रारंभिक लागतें

11. सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की परिभाषा में वे मूर्त्त आस्तियां भी, सम्मिलित होती हैं जो प्रयोग या प्रशासनिक प्रयोजनों के लिए धारित की जाती हैं। 'प्रशासनिक प्रयोजन' शब्दावली का प्रयोग व्यापक अर्थ में किया जाता है और इसमें वस्तुओं या सेवाओं का उत्पादन या आपूर्ति या अन्य को किराये पर देने के अलावा सभी व्यावसायिक प्रयोजन सम्मिलित होते हैं। इस प्रकार, सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर में वे सभी आस्तियां सम्मिलित की जाती हैं जो विक्रय व वितरण, वित्त व लेखा, कार्मिक व प्रतिष्ठान के अन्य कार्यों से संबंधित हैं। सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की मदों को सुरक्षा या पर्यावरण कारणों से भी प्राप्त (अधिग्रहीत) किया जा सकता है। इस प्रकार की सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर के अधिग्रहण से, भले ही भविष्य में सीधे कोई आर्थिक लाभ प्राप्त न भी हो, लेकिन, यह संभव है कि अन्य आस्तियों से भविष्य से प्रतिष्ठान को आर्थिक लाभ मिलें। सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की ऐसी मदें आस्तियों की मान्यता के लिए अर्हक होती हैं, क्योंकि प्रतिष्ठान को भविष्य में ऐसे आर्थिक लाभ मिल सकते हैं जो, निस्सन्देह, उनसे अधिक होंगे जो उनके न होने पर होते हों। उदाहरणार्थ, कोई रासायनिक विनिर्माता खतरनाक रसायनों के उत्पादन और भण्डारण के लिए एक नई रसायन विस्थापना की प्रक्रिया स्थापित करता है, जो पर्यावरणी अपेक्षाओं को पूरा करने हेतु आवश्यक है। इस व्यवस्था में लगाये गये अतिरिक्त संयंत्र की मान्यता आस्ति के रूप में की जाती है, क्योंकि उसके बिना वह प्रतिष्ठान रसायनों का विनिर्माण और विक्रय नहीं कर सकता। इस प्रकार की ऐसी किसी आस्ति और इससे संबंद्ध किसी अन्य आस्ति की परिणमस्वरूप अग्रणीत (कैरिंग) राशि की क्षतिग्रस्तता के लिए समीक्षा लेखा मानक 28, *आस्तियों का ह्रास*, के अनुसार की जाएगी।

परवर्ती लागतें

12. पैरा 7 में दिये गये मान्यता सिद्धान्त के अन्तर्गत, कोई भी प्रतिष्ठान सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की किसी मद की अग्रणीत राशि में पद की दिन-प्रतिदिन की रखरखाव लागतों को मान्यता नहीं देता है। इसकी बजाय, यह लागतें जब खर्च की जाती हैं, तब लाभ-हानि विवरण में मान्य होती हैं। दिन-प्रतिदिन की सर्विसिंग लागतों में मुख्यतया श्रम तथा उपभोग्य वस्तुओं (खपत) पर खर्च होने वाली लागतें आती हैं। इनमें छोटे पुर्जों की लागतें भी शामिल रहती हैं। इस प्रयोजन से किये गये सभी खर्च प्रायः सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की संबंधित मद के मरम्मत और रखरखाव व्यय की श्रेणी में आते हैं।

13. सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की कुछ मदों के पुर्जों को नियमित रूप से एक अवधि के बाद बदलना जरूरी हो जाता है। उदाहरणार्थ, भट्टी (फर्नेस) को निश्चित कुछ घण्टों के प्रयोग के बाद रिलाइनिंग की आवश्यकता होती है या वायुयान की आंतरिक मदों जैसे की सीटों और गद्दियों को एयर फ्रेम के जीवन काल के दौरान कई बार बदलना पड़ता है। इसी तरह एक कन्वेयर प्रणाली के मुख्य पार्टों जैसे कन्वेयर बेल्ट, तार की रस्सियों आदि को कन्वेयर प्रणाली के जीवन काल में कई बार बदलना पड़ सकता है । सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की कुछ मदों को इसलिए भी अधिग्रहीत किया जाता है कि उन्हें बार-बार या जल्दी न बदलना पड़े जैसे की भवन की आन्तरिक दीवारों को बदलना या इस प्रकार बदलना कि उन्हें बार-बार बदलने से बचा जाए। पैरा 7 में दिये गये मान्यता सिद्धात के अन्तर्गत एक प्रतिष्ठान सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की किसी मद की अग्रणीत राशि में ऐसी मद के पुर्जे को बदलने की लागत तभी शामिल करता है जब कि लागत के समय वह मान्यता कसौटी को पूरा करते हैं। जिन पुर्जो को बदल दिया जाता है उनकी अग्रणीत राशि को इस मानक (देखें पैरा 74-80) के गैर-मान्यता उपबंधों के अनुसार अमान्य किया जाता है।

14. सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर (उदाहरणार्थ एक वायुयान) की कोई मद परिचालन में जारी रहे, इसके लिए नियमित रूप से प्रमुख निरीक्षण किये जाते हैं ताकि दोषों या कमियों का पता चलता रहे और उन्हें समय पर दूर किया जा सके, इसमें यह जरूरी नहीं कि उस मद के पुर्जों को बदला भी जाए। जब कोई प्रमुख निरीक्षण किया जाता है तो सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की मद की अग्रणीत राशि में उसकी लागत को बदलने की लागत के रूप में मान्यता दी जाती है बशर्ते मान्यता प्रदान करने की कसौटी पूरी हो। पूर्व निरीक्षण की लागत की किसी शेष अग्रणीत राशि (भौतिक पुर्जों से भिन्न) को अमान्य किया जाता है।

15. पैरा 13-14 में यथावर्णित अग्रणीत राशि की अमान्यता तब भी की जाती है चाहे गत पार्ट/निरीक्षण की लागत का पता उस लेन देन से चलता है जिसमें की वह मद अधिग्रहीत या निर्मित की गयी है। यदि एक प्रतिष्ठान के लिए मद के अधिग्रहण या निर्माण के समय प्रतिस्थापित बदले गये पार्ट/निरीक्षण की अग्रणीत राशि को निर्धारित करना व्यवहार्य

न हो तो यह इसी प्रकार के भावी निरीक्षण की प्रतिस्थापना लागत या प्रत्याशित लागत के लिए प्रतिस्थापित भाग/वर्तमान निरीक्षण घटक की लागत को एक संकेतक के रूप में प्रयोग ला सकता है।

मान्यता पर माप

16. सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की वह मद जो किसी आस्ति के रूप में मान्यता के लिए अर्हता प्राप्त करती है तो उसका माप उसकी लागत पर ही किया जाना चाहिए।

17. सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की एक मद की लागत के घटक इस प्रकार हैं :

(क) मद का खरीद मूल्य जिसमें आयात शुल्क और गैर-वापसी -योग्य खरीद कर तो शामिल है लेकिन व्यापार बट्टा और छूट नहीं।

(ख) किसी भी आस्ति को स्थल विशेष तक लाने या प्रबन्धन द्वारा निश्चित तरीके से परिचालन योग्य बनाने के लिए आवश्यक प्रत्यक्ष लागतें।

(ग) मद को विखण्डित करने, हटाने और स्थल विशेष को, जिस पर इसे लगाया गया था, वापस पहले जैसा करने की प्रारंभिक अनुमानित लागतें, जिनके लिए प्रतिष्ठान मद के अधिग्रहण या सूचीबद्ध समान (इन्वेंट्रीज) के उत्पादन के अलावा प्रयोग के दौरान, खर्च करने के लिए बाध्यकारी है।

18. प्रत्यक्ष रूप से संबंधित लागतों के उदाहरण इस प्रकार हैं:

(क) सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की मद के निर्माण या प्राप्ति से सीधे उत्पन्न कर्मचारियों के लाभों की लागत (लेखा मानक 15, *कर्मचारी प्रसुविधाएं*, में यथा परिभाषित) ;

(ख) स्थल की तैयारी की लागतें;

(ग) प्रारंभिक सुपुर्दगी और लदाई-उतराई की लागतें;

(घ) संस्थापना व जोड़-जुड़ाई की लागतें;

(ङ) क्या आस्ति ठीक से कार्य कर रही है या नहीं, इसके परीक्षण की लागतें जिनमें स्थल परद आस्ति को लाने और कार्य योग्य बनाने के समय जो उत्पादन किया गया है उसकी बिक्री को घटाया जाएगा जैसेकि, परीक्षण के दौरान किया गया नमूना (सैम्पल) उत्पादन; और

(च) व्यवसायिक शुल्क।

19. प्रतिष्ठान लेखा मानक 2, *सूचीबद्ध समान (इन्वेंट्रीज)* का मूल्यांकन, को उन लागतों पर लागू करता है जो उसके लिए मद को विखंडित करने, हटाने तथा स्थल को प्रयोग के बाद वापस पहले जैसा करने के लिए बाध्यकारी हैं। ये लागतें उस अवधि के दौरान मद के सूचीबद्ध समान के उत्पादन के लिए प्रयोग के परिणामस्वरूप खर्च की जाती हैं। इन लागतों की बाध्यताओं का लेखा लेखा मानक 2 या लेखा मानक 10 के अनुसार और इनकी मान्यता व माप लेखा मानक 29, *प्रावधान, आकस्मिक दायित्व और आकस्मिक आस्तियां*, के अनुसरण के किया जाता है।

20. जो लागतें सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की एक मद की लागतों के रूप में मान्य नहीं हैं, उनके उदाहरण इस प्रकार हैं;

(क) नई सुविधा या व्यवसाय प्रारंभ करने की लागतें, जैसेकि उद्घाटन संबंधित लागतें;

(ख) नया उत्पाद अथवा सेवा शुरू करने की लागतें (विज्ञापन तथा प्रोन्नति के क्रियाकलापों से संबंधित लागतों सहित);

(ग) नये स्थान पर अथवा ग्राहकों की नयी श्रेणी के साथ व्यवसाय शुरू करने की लागतें (स्टाफ प्रशिक्षण संबंधी लागतों सहित); और

(घ) प्रशासनिक तथा अन्य सामान्य उपरि-व्यय।

21. सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की मद की अग्रणीत राशि में लागतों की मान्यता तब समाप्त हो जाती है जब मद ऐसे स्थल तथा स्थिति में हो, जो प्रबंधन द्वारा निश्चित तरीके से परिचालन के योग्य हो। अतः एक मद को प्रयोग में लाने

IndiaCode

अथवा पुनः स्थपित करने की लागत को उस मद की अग्रणीत कैरिंग लागत में शामिल नहीं किया जाता उदाहरणतया, सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर कर मद की अग्रणीत राशि में निम्नलिखित लागतों को शामिल नहीं किया जाएगा:

22. सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की एक मद के निर्माण अथवा विकास के समय कुछ परिचालन-कार्य ऐसे हो सकते हैं जो कि उस मद को उस स्थल तथा स्थिति में लाने जो कि प्रबंधन द्वारा निश्चित तरीके के अनुसार परिचालन के योग्य बनाने के लिए आवश्यक नहीं हैं। ऐसे प्रासंगिक परिचालन कार्य निर्माण अथवा विकास-संबंधी क्रियाकलापों के दौरान अथवा पहले हो सकते हैं। उदाहरणतया, जब तक भवन का निर्माण-कार्य शुरू न हो, स्थल का उपयोग कार पार्किंग के लिए करना और आय अर्जित करना। चूंकि प्रासंगिक परिचालन-कार्य मद को प्रबंधन द्वारा निश्चित तरीके के अनुसार ऐसे स्थल तथा स्थिति में लाने के लिए आवश्यक नहीं है, प्रासंगिक परिचालन-कार्य से संबंधित आया तथा व्यय को लाभ हानि विवरण में मान्यता दी जाएगी तथा उसे आय व व्यय के संबंधित वर्गीकरण में डाला जाएगा।

23. स्वनिर्मित आस्ति की लागत का निर्धारण अधिग्रहीत की गयी आस्ति के सिद्धान्तों के अनुसार ही किया जाता है। यदि कोई प्रतिष्ठान सामान्य कारोबार के दौरान, समरूप आस्तियों की बिक्री करता है तो आस्ति की लागत सामान्यतया वैसे ही मानी जाएगी जैसे कि आस्ति का निर्माण बिक्री के लिए हो [देखें लेखा मानक 2] । अतः, ऐसी लागतों का निर्धारण करते समय आंतरिक लाभों को घटाया जाता है। इसी प्रकार, स्वनिर्मित आस्ति के निर्माण के समय बेकार सामग्री, श्रम तथा अन्य संसाधनों की खर्च की गयी असामान्य राशियों को आस्ति की लागत में शामिल नहीं किया जाएगा। लेखा मानक 16, *ऋण लागतें*, स्वनिर्मित सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की स्वनिर्मित मद की अग्रणीत राशि में ब्याज की श्रेणी को एक घटक के रूप में मान्यता देने के लिए मानदण्ड स्थापित करता है।

24. धारक पादपों का लेखा ठीक वैसे ही किया जाता है जैसे कि सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की स्व-निर्मित मदों का उसके प्रबंधन (मैनेजमैंट) द्वारा निश्चित तरीके अनुसार परिचालन के लिए आवश्यक स्थल व स्थिति में लाने से पहले किया जाता है। परिणामस्वरूप, इस मानक में 'निर्माण' के संदर्भ में उन कार्यकलापों को भी लिया जाएगा जो धारक पादपों की खेती के लिए आवश्यक हैं जो कि उन धारक पादपों को प्रबंधन द्वारा निश्चित तरीके के अनुसार कार्य करने की स्थिति से पहले होते हैं।

लागत का माप

25. किसी सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की लागत, मान्यता (अभिज्ञान) तिथि को उसकी नकद कीमत के बराबर होती है। यदि भुगतान सामान्य ऋण शर्तों से आस्थगित होता है, तो समान नकद कीमत व कुल भुगतान के अंतर को ऋण अवधि के दौरान ब्याज के रूप में मान्यता दी जाती है बशर्ते उसे लेखा मानक 16 के अनुसार पूंजीकृत न किया गया हो।

26. सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की एक या एक से अधिक मदों को गैर-मौद्रिक (आस्ति) आस्तियों अथवा मौद्रिक एवं गैर-मौद्रिक दोनों की संयुक्त आस्तियों के बदलने अधिग्रहीत किया जा सकता है। आगे की चर्चा एक गैर-मौद्रिक आस्ति को दूसरी गैर-मौद्रिक आस्ति के साथ विनिमय से अधिग्रहीत करने पर की गई है, परन्तु यह पिछले वाक्य में दिए गए सभी विनिमयों पर भी लागू है। ऐसी सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की लागत उचित मूल्य मापी जाती है, बशर्ते (क) विनिमय द्वारा लेन-देन में वाणिज्यिक सारत्व का अभाव न हो; अथवा (ख) प्राप्त की गई आस्ति (आस्तियों) अथवा प्राप्त परित्यक्त (छोड़ी गयी) आस्ति (आस्तियों) का उचित मूल्य विश्वसनीय रूप से माप योग्य नहीं हो। अधिग्रहीत मद (मदों) की लागत का निर्धारण इसी प्रकार किया जाता है, भले ही प्रतिष्ठान परित्यक्त (छोड़ी गयी) आस्ति को तत्काल अमान्य न कर पाए। यदि अधिग्रहीत मद (मदों) की लागत का माप उचित मूल्य पर न हो पाए, तो उसकी (उनकी) लागत का माप बदले में दी गयी आस्ति की अग्रणीत राशि पर किया जाएगा।

27. किसी विनिमय द्वारा लेन-देन में क्या कोई वाणिज्यिक सारत्व है या नहीं इसका निर्धारण करने के लिए एक प्रतिष्ठान इस बात पर विचार करता है कि लेनदेन से उसके भावी नकदी प्रवाह पर किस सीमा तक प्रभाव पड़ेगा। विनिमय द्वारा लेनदेन में वाणिज्यिक सारत्व होता है, यदि :

(क) प्राप्त की गयी आस्ति का नकदी प्रवाह विन्यास (जोखिम, समय तथा राशि) अन्तरित की गयी आस्ति से भिन्न हो,

(ख) विनिमय के परिणामस्वरूप लेन-देन परिवर्तन द्वारा प्रतिष्ठान के परिचालन के भाग के प्रतिष्ठान विशिष्ट मूल्य में परिवर्तन हुआ हो;

(ग) उपर्युक्त (क) अथवा (ख) में अंतर विनिमय की गई आस्तियों के उचित मूल्य के संबंध में महत्त्वपूर्ण हो।

यह निर्धारित करने के प्रयोजन से कि एक विनिमय लेनदेनों में क्या कोई वाणिज्यिक सारत्व है, लेनदेन के परिवर्तनों से प्रतिष्ठान के परिचालनों के भाग का प्रतिष्ठान विशिष्ट मूल्य करोपरान्त नकदी प्रवाहों के रूप में प्रदर्शित होगा। कुछ मामलों में इन विश्लेषणों का परिणाम विस्तृत गणनाएं किए बिना भी स्पष्ट हो सकता है।

28. एक आस्ति का उचित मूल्य तब विश्वसनीय रूप से मापा जा सकता है, यदि (क) तर्कसंगत उचित मूल्य मापों के परास (रेंज) में परिवर्तनशीलता उस आस्ति के संबंध में महत्त्वपूर्ण न हो ; अथवा (ख) परास (रेंज) के अंदर, विभिन्न प्राक्कलनों की संभाव्यताओं का तर्कसंगत निर्धारण उचित मूल्य के माप के प्रयोग द्वारा किया जा सकता है। यदि एक प्रतिष्ठान प्राप्त आस्ति या परित्यक्त आस्ति के उचित मूल्य को विश्वसनीय रूप से माप सकता है तो परित्यक्त आस्ति का उचित मूल्य प्राप्त आस्ति की लागत के माप के लिए प्रयोग किया जा सकता है बशर्ते जब प्राप्त आस्ति का उचित मूल्य अपेक्षया अधिक स्पष्ट न हो।

29. जब एक समेकित कीमत पर सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की अनेक मदें खरीदी जाती हैं, प्रतिफल को विभिन्न मदों के अधिग्रहण की तिथि को उनके उचित मूल्य के आधार पर विभाजित किया जाता है। यदि अधिग्रहीत मदों का उचित मूल्य का माप विश्वसनीय रूप से न हो सकता हो तो इन मूल्यों को सक्षम मूल्यांकनकर्त्ताओं (वैल्यूरों) द्वारा निर्धारित उचित आधार पर प्राक्कलित किया जाता है।

30. वित्तीय पट्टे के अधीन पट्टेदार द्वारा धारित सम्पत्ति, संयंत्र तथा उपस्कर की मद की लागत लेखा मानक 19, *पट्टे*, के अनुसार निर्धारित की जाएगी।

31. सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की मद की अग्रणीत राशि को सरकारी अनुदानों द्वारा लेखा मानक 12, *सरकारी अनुदानों के लिए लेखा,* के अनुसरण में कम किया जा सकता है।

मान्यता के पश्चात् माप

32. एक प्रतिष्ठान को अपनी लेखा नीति के रूप में पैरा 33 के अनुसार लागत मॉडल या पैरा 34 के अनुसार पुनर्मूल्यांकन मॉडल का चयन करना चाहिए और उसे अपनी इस लेखा-नीति को सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की सम्पूर्ण श्रेणी पर लागू करना चाहिए।

लागत मॉडल

33. एक आस्ति के रूप में मान्यता (अभिज्ञान) के पश्चात् सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की एक मद को संचित मूल्यह्रास (अवक्षयण) और संचित क्षतिग्रस्तता (ह्रास) हानियां घटाकर इसकी लागत पर अग्रणीत (कैरी) करना चाहिए।

पुनर्मूल्यांकन मॉडल

34. एक आस्ति के रूप में मान्यता के पश्चात् सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की एक मद जिसके उचित मूल्य का माप विश्वसनीय रूप से किया जा सकता है, उसे पुनर्मूल्यांकित राशि पर अग्रणीत किया जाना चाहिए जो परवर्ती संचित मूल्यह्रास और परवर्ती संचित क्षतिग्रस्तता हानियां घटाने के बाद पुनर्मूल्यांकन की तिथि को उचित मूल्य है। पुनर्मूल्यांकन पर्याप्त नियमितता से किया जाना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि अग्रणीत राशि उस राशि से ज्यादा भिन्न न हो जो तुलनपत्र की तिथि को उचित मूल्य का प्रयोग करते हुए निर्धारित की जाती है।

35. सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की मदों का उचित मूल्य आमतौर पर बाजार-आधारित उस साक्ष्य द्वारा निर्धारित किया जाता है जो सामान्यतया व्यवसायिक रूप से योग्यताप्राप्त मूल्यांकनकर्त्ताओं (वैल्यूर्स) द्वारा मूल्यांकन के आधार पर होता है।

36. यदि उचित मूल्य का बाजार-आधारित साक्ष्य इस कारण न हो कि सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की मद की ऐसी विशिष्ट प्रकृति है और मद को बहुत-ही कम बेचा जाता है, निरंतर व्यवसाय के भाग को छोड़कर, एक प्रतिष्ठान को आय दृष्टिकोण का प्रयोग कर उचित मूल्य का प्राक्कलन अनुमान करने की आवश्यकता पड़ सकती है (उदाहरणस्वरूप, बट्टागत नकदी प्रवाह पूर्वानुमानों पर आधारित) अथवा एक मूल्यह्रसित प्रतिस्थापन लागत दृष्टिकोण जिसका उदेश्य एक मद के अधिग्रहण या निर्माण की चालू लागत का वास्तविक प्राक्कलन करना है जिसकी वर्तमान मद की तरह ही सेवा संभाव्यता है।

37. पुनर्मूल्यांकित सम्पत्ति, संयंत्र तथा उपस्कर के उचित मूल्य के पुनर्मूल्यांकन की आवृत्ति उसके उचित मूल्यों में परिवर्तनों पर निर्भर करती है। जब पुनर्मूल्यांकित आस्ति का उचित मूल्य अग्रणीत मूल्य से बहुत भिन्न हो, तो उसका दोबारा पुनर्मूल्यांकन कराया जाना चाहिए। सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की कुछ मदों के उचित मूल्य में अस्थिर तथा महत्त्वपूर्ण बदलाव होते हैं, अतः उनका वार्षिक पुनर्मूल्यांकन कराया जाना आवश्यक है। सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की ऐसी मदें जिनके उचित मूल्य में मामूली बदलाव होते हों, उनका पुनर्मूल्यांकन इतनी शीघ्रता से कराया जाना आवश्यक नहीं हैं। बल्कि, ऐसी मदों का तीन या पांच वर्ष के अंतराल पर पुनर्मूल्यांकन कराया जाना आवश्यक हो सकता है।

38. जब सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की किसी एक मद का पुनर्मूल्यांकन किया जाता है तो पुनर्मूल्यांकित राशि में आस्ति की अग्रणीत राशि को समायोजित किया जाता है। पुनर्मूल्यांकन की तिथि को निम्नलिखित में से किसी एक तरीके अनुसार आस्ति का प्रतिपादन किया जाता है:

(क) सकल अग्रणीत राशि को इस तरह समायोजित किया जाएगा, जो आस्ति की अग्रणीत राशि के पुनर्मूल्यांकन के अनुरूप हो। उदाहरणस्वरूप सकल अग्रणीत राशि प्रलक्षनीय (दृष्टिगोचर) बाजार आंकड़ों के संदर्भ में पुनर्कथित की जा सकती है या इसे अग्रणीत राशि में परिवर्तन के समानुपात में पुनर्कथित किया जा सकता है। पुनर्मूल्यांकन की तिथि पर संचित मूल्यह्रास, संचित क्षतिग्रस्तता हानियों को ध्यान में रखकर सकल अग्रणीत राशि व आस्ति की अग्रणीत राशि के बीच अन्तर के समान समायोजित किया जाता है; या

(ख) संचित मूल्यह्रास को आस्ति की सकल अग्रणीत राशि से समाप्त किया जाता है। संचित मूल्यह्रास के समायोजन की राशि अग्रणीत राशि की वृद्धि या कमी का भाग बनती है और इसका लेखा पैरा 42 और 43 के अनुसार किया जाता है।

39. यदि सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की एक मद का पुनर्मूल्यांकन किया जाता है तो सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की संपूर्ण श्रेणी का, जिससे वह मद संबंधित है, पुनर्मूल्यांकित किया जाना चाहिए।

40. सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की श्रेणी में उन आस्तियों का समूह होता है जिनकी प्रकृति मिलती-जुलती होती है और एक प्रतिष्ठान में प्रयोग भी एक तरह से ही होता है। अलग-अलग श्रेणियों के उदाहरण इस प्रकार हैं:

(क) भूमि

(ख) भूमि एवं भवन

(ग) मशीनरी

(घ) जलयान

(ङ) वायुयान

(च) मोटर-वाहन

(छ) फर्नीचर व फिक्सचर

(ज) कार्यालय उपस्कर; और

(झ) धारक पादप

41. आस्तियों का चुनिन्दा पुनर्मूल्यांकन और वित्तीय विवरणों की उन राशियों की रिपोर्टिंग से बचने के लिए जो कि भिन्न-भिन्न तिथियों की लागतों व मूल्यों के मिश्रण, सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की एक श्रेणी की मदों का पुनर्मूल्यांकन एक-साथ किया जाता है। फिर भी, एक श्रेणी की आस्तियों का पुनर्मूल्यांकन रोलिंग आधार पर भी किया जा सकता है बशर्ते उन आस्तियों का पुनर्मूल्यांकन लघु अवधि में पूरा कर लिया जाए तथा पुनर्मूल्यांकन अद्यतन भी बना रहे।

42. पुनर्मूल्यांकन के परिणामस्वरूप एक आस्ति की अग्रणीत राशि में वृद्धि को पुनर्मूल्यांकन अधिशेष शीर्ष के अन्तर्गत स्वामियों के हितों में सीधे ही जमा (क्रेडिट) किया जाना चाहिए। लेकिन, वृद्धि को लाभ-हानि विवरण में मान्यता उस

सीमा तक दी जानी चाहिए जितनी की वह उस आस्ति की लाभ-हानि विवरण में पूर्व में मान्य मूल्यांकन में कमी का विपर्याय (उलटाव) हो।

43. *पुनर्मूल्यांकन के पारिणामस्वरूप आस्ति की अग्रणीत राशि में कमी को लाभ-हानि विवरण में चार्ज किया जाना चाहिए। फिर भी, कमी का पुनर्मूल्यांकन अधिशेष शीर्ष के अन्तर्गत स्वामियों के हितों में सीधे ही उस सीमा तक नामे डाला जाना चाहिए जितना कि उस आस्ति के पुनर्मूल्यांकन अधिशेष में जमा (क्रेडिट) शेष विद्यमान है।*

44. सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की एक मद के संबंध में स्वामियों के हितों में सम्मिलित पुनर्मूल्यांकन अधिशेष को आस्ति की गैर-मान्यता पर राजस्व प्रतिरक्षित राशि में अन्तरित किया जा सकता है। जब आस्ति को वापस किया जाता है या उसका निपटान किया जाता है तो अधिशेष की संपूर्ण राशि का अन्तरण किया जा सकता है। लेकिन जब प्रतिष्ठान द्वारा आस्ति का उपयोग किया जाता है तो अधिशेष की कुछ ही राशि का अन्तरण किया जा सकता है। ऐसे मामलों में, अन्तरित अधिशेष की राशि, आस्ति की पुनर्मूल्यांकित अग्रणीत राशि पर आधारित मूल्यह्रास की राशि और मूल लागत पर आधारित मूल्यह्रास की राशि का अन्तर होगा। पुनर्मूल्यांकन अधिशेष से राजस्व प्रतिरक्षित निधि में अन्तरण लाभ-हानि विवरण के द्वारा नहीं किये जाते हैं।

मूल्यह्रास (अवक्षयण)

45. *सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की मद का प्रत्येक भाग जिसकी लागत मद की कुल लागत के परिप्रेक्ष्य में महत्त्वपूर्ण हो उसका मूल्यह्रास अलग-से लगाया जाना चाहिए।*

46. एक प्रतिष्ठान सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की मद के प्रमुख भागों के प्रारंभिक मान्य राशियों का आबंटन करता है और प्रत्येक भाग का मूल्यह्रास अलग-अलग लगता है। उदाहरणस्वरूप, एक वायुयान, चाहे वह अपने स्वामित्व में है या वित्त पट्टे के अर्न्तगत है, एअरफ्रेम व इंजनों का मूल्यह्रास अलग-अलग लगाना उचित होगा।

47. सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की एक मद के महत्त्वपूर्ण भाग का उपयोगी जीवनकाल तथा मूल्यह्रास की पद्धति उसी मद के दूसरे महत्त्वपूर्ण भाग के जीवन काल व मूल्यह्रास पद्धति जैसी ही हो सकती है ऐसे भागों का मूल्यह्रास प्रभार निर्धारित करने के लिए उनका समूह बनाया जा सकता है।

48. प्रतिष्ठान सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की एक मद के कुछ भागों का जहां अलग-से मूल्यह्रास लगाता है वहीं वह उस मद के शेष भाग का भी अलग से मूल्यह्रास लगाता है। मद के शेष भाग में वे भाग होते हैं जिनका व्यक्तिगत तौर पर कोई महत्त्व नहीं होता। यदि प्रतिष्ठान इन भागों के लिए अलग-अलग प्रत्याशा है तो शेष भाग का मूल्यह्रास लगाने के लिए सन्निकटता तकनीकें आवश्यक हो सकती हैं जो उसके भागों की उपभोग प्रणाली तथा/अथवा उपयोगी जीवनकाल का सही-सही चित्रण करें।

49. एक प्रतिष्ठान एक मद के उन भागों के अलग से मूल्यह्रास लगाने के लिए चयन कर सकता है जिनकी लागत मद की कुल लागत के परिप्रेक्ष्य में अधिक नही होती है।

50. *प्रत्येक अवधि के मूल्यह्रास प्रभार को लाभ-हानि विवरण में मान्यता दी जानी चाहिए है बशर्ते किसी अन्य आस्ति की अग्रणीत राशि में यह सम्मिलित न हो।*

51. एक अवधि के मूल्यह्रास प्रभार को सामान्यतया लाभ-हानि विवरण में मान्यता दी जाती है। परंतु कभी-कभी आस्ति में निहित भावी आर्थिक लाभों को अन्य आस्तियों की उत्पत्ति में समाहित (एब्जार्ब) कर लिया जाता है। ऐसी स्थिति में मूल्यह्रास प्रभार अन्य आस्ति की लागत का भाग बन जाता है तथा उसे इसकी अग्रणीत राशि में शामिल कर लिया जाता है उदाहरणतया, विनिर्माण करने वाले संयंत्र तथा उपस्कर के मूल्यह्रास को सूचीबद्ध सामान (इंवेन्ट्री) में परिवर्तन की लागत में शामिल करना (देखें लेखा मानक 2) । इसी प्रकार, विकास गतिविधियों में प्रयुक्त सम्पत्ति, संयंत्र तथा उपस्कर के मूल्यह्रास को लेखा मानक 26, *अमूर्त आस्तियां,* के अनुसरण में मान्य अमूर्त आस्ति की लागत में शामिल किया जा सकता है।

मूल्यह्रास-योग्य राशि तथा मूल्यह्रास अवधि

52. *एक आस्ति की मूल्यह्रासयोग्य राशि उसके उपयोगी जीवनकाल के दौरान एक व्यवस्थित आधार पर आबंटित की जानी चाहिए।*

53. एक आस्ति के अवशिष्ट मूल्य और उपयोगी जीवनकाल की कम से कम प्रत्येक वित्तीय वर्ष के अन्त में एक बार समीक्षा करनी चाहिए और यदि गत प्राक्कलनों से प्रत्याशाएं भिन्न पायी जाती हैं, तो परिवर्तन (परिवर्तनों) का लेखा एक लेखा प्राक्कलन में परिवर्तन के रूप में मानक लेखा मानक 5, 'अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि, पूर्वावधि मदें और लेखा नीतियों में परिवर्तन ' के अनुसरण में करना चाहिए।

54. मूल्यह्रास को मान्यता तभी दी जाती है जब आस्ति का उचित मूल्य अग्रणीत राशि से अधिक हो और यह मान्यता तब तक दी जाती है जब तक आस्ति का अवशिष्ट मूल्य उसकी अग्रणीत राशि से अधिक नहीं हो जाता। आस्ति की मरम्मत और रखरखाव इसके मूल्यह्रास की आवश्यकता से इन्कार नहीं करता।

55. आस्ति की मूल्यह्रास राशि का निर्धारण उसके अवशिष्ट मूल्य को घटाकर किया जाता है।

56. एक आस्ति का अवशिष्ट मूल्य बढ़कर इसकी अग्रणीत राशि के बराबर अथवा उससे अधिक हो सकता है। यदि ऐसा होता है तो आस्ति का मूल्यह्रास प्रभार शून्य होता है। यह तब तक शून्य ही रहेगा जब तक कि इसका अवशिष्ट मूल्य घट कर अग्रणीत राशि से कम नहीं हो जाता।

57. एक आस्ति का मूल्यह्रास तभी प्रारंभ होता है जब आस्ति उपयोग के लिए उपलब्ध होती है, यानि जब वह प्रबंधन द्वारा निश्चित ढंग के अनुसार परिचालनयोग्य आवश्यक स्थान व स्थिति में होती है। एक आस्ति का मूल्यह्रास लगाना उस तिथि से बन्द हो जाता है, जब आस्ति सक्रिय प्रयोग से बंद होकर निपटान के लिए रखी जाती है या फिर उस तिथि से जब उसे अमान्य किया जाता है, इसमें जो भी तिथि पहले हो। अतः मूल्यह्रास लगाया जाना तब बंद नहीं होता जब आस्ति का प्रयोग न हो या उसे सक्रिय प्रयोग से हटा लिया गया हो (लेकिन यह निपटान के लिए नहीं रखी जाती) बशर्ते आस्ति पूरी तरह से मूल्यह्रासित न हो जाए। यद्यपि मूल्यह्रास की प्रयोग विधियों के अर्न्तगत मूल्यह्रास प्रभार शून्य हो सकता है जबकि कोई उत्पादन न भी हो।

58. प्रतिष्ठान को किसी आस्ति में अन्तर्निहित भावी आर्थिक लाभ मुख्य रूप से उसके उपयोग द्वारा प्राप्त होते हैं। परंतु, अन्य कारणों से, जैसे कि, तकनीकी अथवा वाणिज्यिक रूप से अप्रचलित होने और टूट-फूट के परिणामस्वरूप प्रयोग में न रहने से आस्ति से जो आर्थिक लाभ प्राप्त किए जा सकते थे, वे कम हो जाते हैं। अतः आस्ति के उपयोगी जीवनकाल का निर्धारण करने के लिए निम्नलिखित सभी घटकों पर विचार किया जाता है:

(क) आस्ति का प्रत्याशित उपयोग। उपयोग का मूल्यांकन आस्ति की प्रत्याशित क्षमता अथवा भौतिक उत्पादन पर निर्भर करता है;

(ख) प्रत्याशित भौतिक टूट-फूट जो कि उसके परिचालन कारकों पर निर्भर करती है, जैसे कि, आस्ति का उपयोग कितनी शिफ्टों के लिए किया जाना है, उसकी मरम्मत तथा रख-रखाव का क्या कार्यक्रम है और जब आस्ति प्रयोग में नहीं है तो उसकी देख-रेख व रख-रखाव कैसे होगा;

(ग) उत्पादन में परिवर्तन अथवा सुधार होने अथवा उत्पाद की बाजार की मांग में परिवर्तन होने अथवा सेवा में परिवर्तन होने के परिणामस्वरूप तकनीकी अथवा वाणिज्यिक अप्रयुक्तता। एक आस्ति का प्रयोग करते हुए तैयार की गयी एक मद की विक्रय कीमत में प्रत्याशित भावी कटौतियां, आस्ति की तकनीकी व वाणिज्यिक अप्रयुक्तता की प्रत्याशा का संकेत देती हैं जो बदले में आस्ति में सन्निहित भावी आर्थिक लाभों की कटौती को प्रदर्शित कर सकती है।

(घ) आस्ति के प्रयोग की कानूनी अथवा इसी तरह की अन्य सीमाएं, जैसे की संबंधित पट्टों (लीजों) की तिथियों का समापन।

59. किसी आस्ति का जीवनकाल प्रतिष्ठान के लिए उसकी प्रत्याशित उपयोगिता के संदर्भ में परिभाषित किया जाता है। प्रतिष्ठान की आस्ति प्रबंधन नीति में निर्दिष्ट अवधि के बाद अथवा भावी आर्थिक लाभों के निर्दिष्ट अंश तक उपभोग के बाद आस्ति के निपटान का निर्णय लिया जा सकता है। अतः आस्ति का उपयोगी जीवनकाल उसके आर्थिक जीवनकाल से कम हो सकता है। किसी आस्ति के उपयोगी जीवनकाल का प्राक्कलन का विषय विवेक-सम्मत है, जो कि प्रतिष्ठान के उसी प्रकार की आस्तियों के प्रयोग के अनुभव के आधार पर होता है।

60. भूमि तथा भवन पृथकयोग्य आस्तियां हैं तथा उनका लेखा भी पृथक रूप से किया जाता है, भले उन्हें एक-साथ अधिग्रहीत क्यों न किया गया हो। कुछेक अपवादों को छोड़कर, जैसे कि, उत्खनन तथा वह स्थान जिसका प्रयोग फिलिंग के लिए किया जाता है, भूमि का असीमित उपयोगी जीवनकाल होता है, अतः उसका मूल्यह्रास नहीं लगया

जाता है। भवनों को उपयोगी जीवनकाल सीमित होता है, अतः वे मूल्यह्रासयोग्य आस्तियां हैं, जिस भूमि पर भवन बना हो उसके मूल्य में वृद्धि हो तो उस वृद्धि का प्रभाव भवन का मूल्यह्रास राशि निर्धारित करने पर नहीं पड़ता है।

61. यदि भूमि की लागत में स्थान (साइट) को विखंडित करने, हटाने तथा पुनर्बहाली (पूर्व की स्थिति में लाने) की लागत भी शामिल हो तो इन लागतों से अर्जित लाभ की अवधि के दौरान भू-आस्ति के ऐसे भाग का मूल्यह्रास लगाया जाना चाहिए। कुछ मामलों में, भूमि का स्वयं सीमित उपयोगी जीवनकाल हो सकता है। ऐसी स्थिति में, उसका मूल्यह्रास इस ढ़ंग से लगाया जाता है जो इससे होने वाले लाभों को प्रकट करता है।

मूल्यह्रास विधि

62. अपनाई गई मूल्यह्रास विधि द्वारा उस पद्धति को प्रदर्शित करना चाहिए जिससे आस्ति के भावी आर्थिक लाभ प्रतिष्ठान द्वारा उपयोग में लाये जाने के लिए प्रत्याशित हैं।

63. एक आस्ति पर जो भी मूल्यह्रास विधि लागू की जाती है उसकी कम से कम प्रत्येक वित्त वर्ष की समाप्ति पर समीक्षा की जानी चाहिए और आस्ति में अन्तर्निहित भावी आर्थिक लाभों के प्रत्याशित उपभोग के तरीके में यदि महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हो तो मूल्यह्रास विधि में परिवर्तन कर देना चाहिए ताकि परिवर्तित तरीका परीलक्षित हो सके। ऐसे परिवर्तन का लेखा मानक 5 के अनुसरण में प्राक्कलन में परिवर्तन के तौर पर लेखा किया लाना चाहिए।

64. एक आस्ति के मूल्यह्रास योग्य राशि के आबंटन के लिए उसके उपयोगी जीवनकाल के दौरान एक व्यवस्थित ढंग के आधार पर भिन्न-भिन्न मूल्यह्रास विधियों का प्रयोग किया जा सकता है। इन विधियों में सीधी रेखा विधि, घटता शेष विधि और उत्पादन इकाई विधि सम्मिलित हैं। सीधी रेखा विधि में मूल्यह्रास उपयोगी जीवनकाल में एक-जैसा लगाया जाता है यदि, आस्ति का अवशिष्ट मूल्य परिवर्तित न होता हो। घटता शेष विधि में उपयोगी जीवन के दौरान घटते क्रम में मूल्यह्रास लगाया जाता है। उत्पादन इकाई विधि में मूल्यह्रास प्रत्याशित प्रयोग या उत्पादन के आधार पर चार्ज किया जाता है। एक प्रतिष्ठान उस विधि का चयन करता है जो आस्ति में सन्निहित भावी आर्थिक लाभों के उपभोग के प्रत्याशित ढंग को बहुत नजदीक से प्रदर्शित करे। उस विधि का प्रयोग समान रूप से एक अवधि से दूसरी अवधि तक जारी रहता है बशर्ते उन भावी आर्थिक लाभों के उपभोग के प्रत्याशित ढंग में कोई परिवर्तन न हो अथवा आस्ति के उपभोग के सर्वोत्तम प्रदर्शन के लिए विधान (कानून) के अनुसरण में विधि में कोई परिवर्तन न हो।

65. एक मूल्यह्रास विधि उपयुक्त नहीं है, जो उस राजस्व पद आधारित है, जो गतिविधि से उत्पन्न होता है जिसमें एक आस्ति का प्रयोग किया जाता है, एक आस्ति के प्रयोग सहित गतिविधि द्वारा उत्पन्न राजस्व, सामान्यतया उन कारकों को प्रदर्शित करता है जो आस्ति के आर्थिक लाभों के उपभोग से भिन्न हैं। उदाहरणस्वरूप, राजस्व अन्य निविष्टियों (इन्पुट्स) व प्रक्रियाओं, बिक्री गतिविधियों और बिक्री मात्राओं व कीमतों में परिवर्तनों द्वारा प्रभावित होता है। राजस्व का कीमत घटक मुद्रास्फीति से प्रभावित हो सकता है, जिसका आस्ति के उपभोग के तरीके पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

वर्तमान विस्थापन, पुनर्बहाली और अन्य दायित्वों में परिवर्तन

66. सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की लागत में परिवर्तन इसके अधिग्रहण या निर्माण के बाद दायित्वों में परिवर्तनों के कारण, कीमत समायोजन शुल्कों में परिवर्तन, विखंडन, हटाना, पुनर्बहाली और इसी प्रकार के तत्वों के लिए दी जाने वाली राशियों के प्रारंभिक प्राक्कलनों में परिवर्तनों से हो सकते हैं और अनुच्छेद 16 के अनुसरण में आस्ति की लागत में सम्मिलित हो सकते हैं। लागत में इस प्रकार के परिवर्तनों का लेखा निम्नलिखित पैरा 67-68 के अनुसरण में किया जाना चाहिए।

67. यदि संबंधित आस्ति का माप लागत मॉडल का प्रयोग करते हुए किया गया है:

(क) *निम्नलिखित (ख) के अधीन, दायित्व में परिवर्तनों को वर्तमान अवधि में संबंधित आस्ति की लागत में जोड़ा या घटाया जाना चाहिए।*

(ख) *आस्ति की लागत में से घटायी गयी राशि इसकी अग्रणीत राशि से अधिक नहीं होनी चाहिए।यदि दायित्व में कमी आस्ति की अग्रणीत राशि से अधिक हो जाती है तो उस वृद्धि लाभ को लाभ-हानि विवरण में तुरंत मान्यता दी जानी चाहिए।*

(ग) *यदि समायोजन से आस्ति की लागत में वृद्धि होती है तो प्रतिष्ठान को यह विचार करना चाहिए कि क्या यह आस्ति की उस नई अग्रणीत राशि का संकेत है जिसकी पूरी तरह से वसूली नहीं हो सकती है। यदि इस प्रकार का संकेत है, तो प्रतिष्ठान का आस्ति की क्षतिग्रस्तता की जांच वसूली योग्य राशि का प्राक्कलन करके करनी चाहिए और किसी भी क्षतिग्रस्तता हानि का लेखा लेखा मानक 28 के अनुसरण में करना चाहिए।*

68. यदि संबंधित आस्ति का माप पुनर्मूल्यांकन मॉडल का प्रयोग करते हुए किया गया है:

(क) *दायित्व मे परिवर्तन उस आस्ति पर पहले मान्य पुनर्मूल्यांकन अधिशेष में वृद्धि या कमी में निम्नलिखित रूप में बदलाव कर देते हैं, ताकि:*

(i) *दायित्व में कमी (नीचे (ख) के अधीन) स्वामियों के हित में पुनर्मूल्यांकन अधिशेष में सीधे जमा की जाएगी लेकिन उसे छोड़कर कि यह लाभ-हानि विवरण में उस हद तक मान्य होनी चाहिए कि यह आस्ति पर उस पुनर्मूल्यांकन कमी को उल्टा देती हैं जो पहले लाभ-हानि विवरण में मान्य थी।*

(ii) *दायित्व में वृद्धि लाभ-हानि विवरण में मान्य होगी लेकिन उसे छोड़कर जो स्वामियों के हित में पुनर्मूल्यांकन अधिशेष को उस हद तक सीधे घटा देनी चाहिए जितना उस आस्ति के पुनर्मूल्यांकन अधिशेष में कोई जमा शेष विद्यमान हो।*

(ख) *इस स्थिति में यदि आस्ति को लागत मॉडल पर अग्रणीत किया जाता है और दायित्व में कमी उस अग्रणीत राशि से बढ जाती है तो उस वृद्धि को लाभ-हानि विवरण में तत्काल मान्यता दी जानी चाहिए।*

(ग) *दायित्व में परिवर्तन इस बात का संकेत है कि आस्ति का पुनर्मूल्यांकन इसलिए किया जाना है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि अग्रणीत राशि उस राशि से बहुत अधिक भिन्न नहीं है, जो तुलनपत्र की तिथि को उचित मूल्य के प्रयोग द्वारा निश्चित की जाती है। इस प्रकार का पुनर्मूल्यांकन लाभ-हानि विवरण और उपर्युक्त (क) के अधीन स्वामियों के हित में ले जाने वाली राशियों के निर्धारण में विचारार्थ लिया जाना चाहिए। यदि पुनर्मूल्यांकन आवश्यक है, तो उस श्रेणी की सभी आस्तियों का पुनर्मूल्यांकन किया जाना चाहिए।*

69. आस्ति की समायोजित मूल्यह्रास योग्य राशि का मूल्यह्रास इसके उपयोगी जीवन के दौरान लगाया जाएगा। अतः जब एक बार संबधित आस्ति अपने उपयोगी जीवन के अंत तक पहुच जाती है, दायित्व में सभी परिवर्ती परिवर्तन वैसे ही लाभ-हानि विवरण में मान्य होगे जैसे-जैसे वे घटित होते हैं। यह लागत मॉडल और पुनर्मूल्यांकन मॉडल दोनों में लागू होता है।

क्षतिग्रस्तता (ह्रास)

70. यह निर्धारित करने के लिए कि क्या सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की कोई मद क्षतिग्रस्त (ह्रासित) है, एक प्रतिष्ठान लेखा मानक 28, *आस्तियों का ह्रास* का प्रयोग करता है। लेखा मानक 28 यह स्पष्ट करता है कि एक प्रतिष्ठान किस प्रकार आस्तियों की अग्रणीत राशि की समीक्षा करता है, वह किस प्रकार एक आस्ति की वसूली योग्य राशि का निर्धारण करता है और वह कब एक क्षतिग्रस्तता हानि को मान्यता देता है या उसका उलटाव करता है।

क्षतिग्रस्तता की प्रतिपूर्ति

71. सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की उन मदों पर जो क्षतिग्रस्त हो गई हों खो गई हों अथवा छोड़ी गई हों उन पर तृतीय पक्षों से प्रतिपूर्ति जब भी प्राप्य होती है लाभ-हानि विवरण में सम्मिलित की जानी चाहिए।

72. सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की मदों की क्षतिग्रस्तता या हानियों से तृतीय पक्षों से संबंधित दावे या प्रतिपूर्ति के भुगतान और परवर्ती (बाद की) किसी खरीद या निर्माण द्वारा आस्तियों का प्रतिस्थापन पृथक आर्थिक घटनाएं हैं और उनका लेखा भी निम्नलिखित अनुसार अलग-अलग किया जाता है।

(क) सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की मदों की क्षतिग्रस्तता की मान्यता की लेखा मानक 28 के अनुसरण में की जाती है;

(ख) सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर का उपयोग समाप्त हो जाने अथवा उसका निपटान कर देने पर इस मानक के अनुसरण में अमान्य किया है;

(ग) सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की मदों के क्षतिग्रस्त होने, खोन अथवा छोड़ने से हुए नुकसान की या तृतीय पक्ष से प्राप्य होती है, लाभ या हानि का निर्धारण करने के लिए सम्मिलित की जाती है; और

(घ) सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की मदों की पुनर्भण्डारण, खरीद या निर्माण की लागत का निर्धारण इस मानक के अनुसरण में किया जाता है।

निवृत्तियां (वापसियां)

73. सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की मदें जो सक्रिय प्रयोग से निवृत्त हो चुकी हों निपटान के लिए धारित हैं उन्हें अग्रणीत राशि और निवल वसूलयोग्य मूल्य, इनमें जो भी कम है, उस पर वर्णित किया जाना चाहिए। इस संबंध में से कोई भी अपलेखन लाभ-हानि विवरण में तत्काल मान्य किया जाना चाहिए।

अमान्यता

74. सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की एक मद को अग्रणीत राशि निम्नलिखित पर अमान्य की जानी चाहिए:

(क) ***निपटान पर; या***

(ख) ***जब उसके उपयोग या निपटान से भावी आर्थिक लाभ प्रत्याशित न हो।***

75. सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की किसी मद की अमान्यता से उत्पन्न होने वाला कोई लाभ या हानि उसी समय लाभ-हाति विवरण में सम्मिलित किया जाना चाहिए जब वह मद अमान्य की जाती है (बशर्ते लेखा मानक 19 पट्टे के अनुसार बिक्री और वापसी पट्टें पर अन्यथा अपेक्षा न हो)। लाभों (गेन्ज) को लेखा मानक 9, राजस्व अभिज्ञान में यथापरिभाषित राजस्व के अनुसार वर्गीकृत नहीं किया जाना चाहिए।

76. लेकिन, एक प्रतिष्ठान अपनी सामान्य गतिविधियों के दौरान सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की उन मदों को नेमी तौर पर (रूटीन) में बेचता है जो उसने अन्य को किराये पर देने के लिए रखी है, उसे चाहिए कि वह इन मदों को उनकी अग्रणीत राशि पर सूचीबद्ध माल (इन्वेंट्रीज) में तब अन्तरित कर दे जब वह उन्हें किराये पर देने को बंद करके बिक्री के लिए धारित करता है। इस प्रकार की आस्तियों की बिक्री से प्राप्त राशियां लेखा मानक 9, राजस्व (अभिज्ञान) के अनुसार राजस्व में मान्य (अभिज्ञात) होगीं।

77. सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की एक मद का निपटान कई प्रकार से किया जा सकता है (जैसेकि बिक्री, वित्त पट्टे या दान द्वारा)। निपटान की तिथि निर्धारित करने के लिए, एक प्रतिष्ठान वस्तुओं को बिक्री के प्राप्त राजस्व की मान्यता के लिए लेखा मानक 9 में दिये गये मानदंड का प्रयोग करता है। लेखा मानक 19, *पट्टे*, बिक्री और वापसी पट्टे (लीजबैंक) द्वारा निपटान पर लागू होता है।

78. पैरा 7 में दिये गये मान्यता सिद्धान्त के अधीन यदि एक प्रतिष्ठान सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की मद की अग्रणीत राशि में मद के भाग की प्रतिस्थापना की लागत के रूप में मान्यता देता है, वह प्रतिस्थापित भाग की अग्रणीत (कैरिंग) राशि को अमान्य करता है भले प्रतिस्थापित भाग का मूल्यह्रास (अवक्षयण) अलग-से क्यों न लगाया गया हो। यदि प्रतिष्ठान के लिए प्रतिस्थापित भाग की अग्रणीत राशि का निर्धारण करना व्यवहार्य न हो तो यह संकेतक के रूप में प्रतिस्थापिन लागत का प्रयोग कर सकता है जो इस समय थी जब इसे अधिग्रहीत या निर्मित किया गया था।

79. सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की मद की गैर-मान्यता से उद्भूत लाभ या हानि का शुद्ध निपटान प्राप्तियों, यदि कोई है, तथा मद की अग्रणीत राशि के बीच अन्तर के रूप में निर्धारित किया जाना चाहिए।

80. सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की एक मद के निपटान से प्राप्य प्रतिफल राशि की मान्यता लेखा मानक 9 में दिये गये सिद्धान्तों के अनुसरण में की जानी चाहिए।

प्रकटन

81. वित्तीय विवरणों को सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की प्रत्येक श्रेणी के लिए निम्नलिखित का प्रकटन करना चाहिए:-

(क) सकल अग्रणीत राशि के निर्धारण के लिए प्रयुक्त माप आधार (जैसेकि लागत मॉडल या पुनर्मूल्यांकन मॉडल);

(ख) प्रयुक्त मूल्यह्रास विधियां;

(ग) उपयोगी जीवन या प्रयुक्त मूल्यह्रास दरें। यदि उपयोगी जीवन या प्रयुक्त मूल्यह्रास दरें प्रतिष्ठान के अधिशासी विधान कानून में निर्धारित से भिन्न हो, तो इस तथ्य का भी विशेष रूप से उल्लेख किया जाए;

(घ) अवधि के आरंभ और अंत में, सकल अग्रणीत राशि और संचित मूल्यह्रास (संचित क्षतिग्रस्तता हानियों सहित); और

(ङ) अवधि के आरंभ और अंत में, अग्रणीत राशि का मिलान निम्नलिखित को प्रदर्शित करते हुए:-

(i) *अभिवृद्धियां;*

(ii) *सक्रिय प्रयोग से निवृत (हटायी गयीं) और निपटान के लिए धारित आस्तियां;*

(iii) *व्यवसायिक संयोजनों के माध्यम से अधिग्रहण;*

(iv) *पैरा 34, 42 और 43 के अंतर्गत पुनर्मूल्यांकनों से और लेखा मानक 28, के अनुसार पुनर्मूल्यांकन अधिशेष में सीधे मान्य या उल्टायी गयी क्षतिग्रस्तता हानियों के परिणामस्वरूप वृद्धियां या कमियां;*

(v) *लेखा मानक 28 के अनुसरण में लाभ-हानि विवरण में मान्य क्षतिग्रस्तता हानियां ;*

(vi) *लेखा मानक 28, के अनुसरण में लाभ-हानि विवरण में उलटायी गयी क्षतिग्रस्तता हानियां ;*

(vii) *मूल्यह्रास;*

(viii) *लेखा मानक 11, 'विदेशी मुद्रा विनिमय दरों में परिवर्तनों के प्रभाव'के अनुसरण में गैर-अभिन्न विदेशी परिचालन के वित्तीय विवरणों के रूपान्तरण से उत्पन्न निवल विनिमय अंतर; और*

(ix) *अन्य परिवर्तन।*

82. वित्तीय विवरणों को निम्नलिखित का प्रकटन भी करना चाहिए:

(क) *हक (टाइटल) पर प्रतिबंधों का आस्तित्व व राशियाँ तथा दायित्वों के लिए प्रतिभूति के रूप में बंधक (गिरवी) रखी गई सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर;*

(ख) *सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की मद के निर्माण के दौरान इसकी अग्रणीत राशि में मान्य व्यय की राशि;*

(ग) *सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर के अधिग्रहण की अनुबंधात्मक प्रतिबद्धताओं की राशि;*

(घ) *यदि लाभ-हानि विवरण के प्रमुख भाग में इसे अलग-से प्रकट नहीं किया गया है तो सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की उन मदों के लिए से प्राप्त तृतीय पक्षों से क्षतिपूर्ति की राशि जो क्षतिग्रस्त हो गयी हों, खो गयी हों या छोड़ी गयी हों और उस राशि को लाभ-हानि विवरण में सम्मिलित किया हो ; और*

(ङ) *सक्रिय प्रयोग से हटायी गयी (निवृत) और निपटान के लिए धारित आस्तियों की राशि।*

83. मूल्यह्रास विधि का चयन और आस्तियों के उपयोगी जीवन का प्राक्कलन, यह विषय विवेकपरक हैं। अतः अपनायी गयीं विधियां और प्राक्कलित उपयोगी जीवन या मूल्यह्रास दरों का प्रकटन वित्तीय विवरणों के प्रयोक्ताओं को यह सूचना प्रदान करता हैं जिससे उन्हें प्रबंधन द्वारा चयनित नीतियों की समीक्षा करने और अन्य प्रतिष्ठानों के साथ विचारार्थ प्रतिष्ठन की तुलना करने के लिए मदद मिलती है। इसी प्रकार के कारणों से निम्नलिखित का प्रकटन भी आवश्यक है:

(क) एक अवधि के दौरान मूल्यह्रास, भले ही इसे लाभ-हानि विवरण में या अन्य आस्तियों की लागत के भाग में मान्यता दी गई हो या नही; और

(ख) अवधि के अंत में, संचित मूल्यह्रास

84. लेखा मानक 5 के अनुसरण में, एक प्रतिष्ठान लेखा प्राक्कलन में एक ऐसे परिवर्तन की प्रकृति व प्रभाव को प्रकट करता है जिसका चालू अवधि के साथ-साथ पारवर्ती अवधियों में भी प्रभाव की आशा रहती है। सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर के लिए इस प्रकार का प्रकटन निम्नलिखित के संदर्भ में प्राक्कलनों में परिवर्तनों से उत्पन्न हो सकता है:

(क) अवशिष्ट मूल्य;

(ख) सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर के विखंडन, हटाने या पुनर्बहाली मदों की प्रत्याशित लागतें;

(ग)उपयोगी जीवनकाल; और

(घ) मूल्यह्रास विधियां।

85. यदि सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की मदें पुर्नमूल्यांकित राशियों में वर्णित की जाती है तो निम्नलिखित कर भी प्रकटन किया जाएगाः

(क) ***पुर्नमूल्यांकन की प्रभावी तारीख;***

(ख) ***क्या किसी स्वतंत्र मूल्यांकनकर्त्ता (वैल्यूर) को सम्मिलित किया गया था;***

(ग) ***मदों के उचित मूल्य के प्राक्कलन में प्रयुक्त विधियां व महत्वपूर्ण पूर्वमान्यताएं;***

(घ) ***वह सीमा जिस तक मदों का उचित मूल्य सीधे सक्रिय बाजार में प्रलक्षनीय कीमतों के संदर्भ में या हाल के स्वतंत्र बाजार के लेनदेनों द्वारा निर्धारित की गई हैं या अन्य मूल्यांकन तकनीकों के प्रयोग द्वारा प्राक्कलित की गई है; और***

(ङ) ***पुनर्मूल्यांकन अधिशेष, जिसमें अवधि के लिए परिवर्तन और शेयरधारकों के शेष के वितरण पर प्रतिबंधों का उल्लेख करते हुए।***

86. लेखा मानक 28 के अनुसरण में एक प्रतिष्ठान पैरा 81 (ङ) (iv), (v) और (vi) द्वारा अपेक्षित सूचना के अलावा क्षतिग्रस्त सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की सूचना प्रकट करता है।

87. एक प्रतिष्ठान को निम्नलिखित सूचना के प्रकटन के लिए प्रोत्साहित किया जाता हैः

(क) अस्थाई रूप से निष्क्रिय सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की अग्रणीत राशि;

(ख) पूरी तरह से मूल्यह्रासित सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की सकल अग्रणीत राशि जो अभी भी प्रयोग में है;

(ग) सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की प्रत्येक पुनर्मूल्यांकित श्रेणी के लिए अग्रणीत राशि जो लागत मॉडल के अधीन आस्तियों के अग्रणीत करने पर मान्य है;

(घ) सक्रिय प्रयोग से निवृत्त (हटायी गयी) और निपटान के लिए धारित न की गयी सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की अग्रणीत राशि।

संक्रमणकालील उपबंध[6]

88. जहां एक प्रतिष्ठान ने पूर्व में एक व्यय को लाभ-हानि विवरण में मान्यता दी थी और जो पैरा 9 की अपेक्षाओं के अनुसार सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की निर्माण-परियोजना की लागत के एक भाग के रूप में सम्मिलित किये जाने के लिए पात्र हैं वह ऐसी परियोजना के लिए पूर्व प्रभाव से ऐसा कर सकता है। पूर्व प्रभाव से इस प्रकार की अपेक्षा के प्रयोग का प्रभाव राजस्व प्रारक्षित निधि में निबल-कर के रूप में मान्य होगा।

89. आस्तियों के लेनदेन के विनिमय में अधिग्रहीत सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की मद का प्रारंभिक माप विषयक पैरा 26-28 की अपेक्षाएं, भविष्य में केवल उन लेन देनों में तभी प्रयोग में लायी जाएंगी जब यह मानक अनिवार्य हो जाता है।

90. जिस तिथि को यह मानक अनिवार्य हो जाता है, स्पेअर पार्ट्स जो लेखा मानक 2, सूचीबद्ध सामान का मूल्यांकन के अधीन अब तक माल सूची इन्वेंट्रीज के रूप में लिये जाते थे, उन्हें अब इस मानक की अपेक्षाओं के अनुसरण में पूंजीकृत किया जाना अपेक्षित है, उन्हें इनकी संबंधित अग्रणीत राशियों पर पूंजीकृत किया जाएगा। इस मानक की अपेक्षाओं के अनुसार इस प्रकार के पूंजीकृत स्पेअर पार्टो पर मूल्यह्रास भविष्य में उनके शेष उपयोगी जीवन के दौरान लगाया जाएगा।

---

[6] पैरा 88-91 में दिए गए संक्रमणकालील उपबंध केवल कंपनी (लेखा मानक) नियम, 2006 के अन्तर्गत्त अधिसूचित लेखा मानकों के लिए प्रासंगिक है, जो समय के साथ संशोधित किये गए हैं।

91. पुनर्मूल्यांकन मॉडल विषयक पैरा 32 और पैरा 34-44 की अपेक्षाएं भविष्य में लागू की जाएगी। जिस तिथि को यह मानक अनिवार्य हो जाता है, यदि एक प्रतिष्ठान पुनर्मूल्यांकन मॉडल को अपनी लेखा नीति के रूप में नहीं अपनाता है लेकिन सम्पत्ति, संयंत्र और उपस्कर की मद मदों की अग्रणीत राशि किसी पूर्ववर्ती पुनर्मूल्यांकन को प्रदर्शित करती है तो वह उस मद की अग्रणीत राशि के विरूद्ध पुनर्मूल्यांकन प्रतिरक्षित निधि में बकाया राशि को समायोजित करेगा। फिर भी, मद की अग्रणीत राशि कभी भी अवशिष्ट मूल्य से कम नहीं होगी। उस मद की अग्रणीत राशि से अधिक पुनर्मूल्यांकन प्रतिरक्षित निधि की कोई भी अधिक बकाया राशि, राजस्व प्रतिरक्षित, निधि में समायोजित की जाएगी।

लेखा मानक 11[□]

विदेशी मुद्रा विनिमय दरों में परिवर्तनों के प्रभाव

(इस लेखा मानक में कुछ मोटे तिरछे टाइप और कुछ सीधे टाइप में व्यवस्थित पैरा सम्मिलित है, जिनका समान प्राधिकार है। मोटे तिरछे टाइप में दिये गए पैरा मुख्य सिद्धांत उपदर्शित करते हैं। इस लेखा मानक को अधिसूचना के प्रति उपाबंध के भाग क में अतंर्विष्ट साधारण अनुदेशों के संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिए।)

उद्देश्य

एक उद्यम विदेशी मुद्रा को समाविष्ट करने वाले क्रियाकलापों को दो प्रकार से चला सकता है। वह विदेशी मुद्रा में संव्यवहार कर सकता है या विदेशी प्रचालन कर सकता है। विदेशी मुद्रा में संव्यवहार और विदेशी प्रचालनों को वित्तीय विवरणों में सम्मिलित करने के लिए संव्यवहारों को उद्यम की रिपोर्टिंग मुद्रा में व्यक्त करना चाहिए और विदेशी प्रचालन के वित्तीय विवरणों को रिपोर्टिंग मुद्रा में अनुवादित करना चाहिए।

विदेशी मुद्रा के संव्यवहारों और विदेशी प्रचालनों के लेखा में मुख्य मुद्दे होते हैं, यह निर्णय करना कि किस विनिमय दर को प्रयोग किया जाये और विदेशी मुद्रा में परिवर्तन के प्रभावों को वित्तीय विवरण में कैसे अभिज्ञात किया जाये।

कार्यक्षेत्र

1. यह निम्नलिखित को लागू करना चाहिए:

(क) विदेशी मुद्रा में हुए संव्यवहारों के लेखा में ; और

(ख) विदेशी प्रचालनों के वित्तीय विवरणों के अनुवाद में।

2. यह मानक अग्रिम विनिमय संविदाओं की प्रकृति के विदेशी मुद्रा संव्यवहारों के लिए लेखा का भी वर्णन करता हैं।[7]

3. यह मानक उस मुद्रा को विनिर्दष्ट नही करता जिसमें एक उद्यम अपने वित्तीय विवरणों को प्रस्तुत करता है। यद्यपि एक उद्यम सामान्यतः उस देश की मुद्रा का उपयोग करता है जिसमें वह निवास करता है। यदि वह भिन्न मुद्रा का प्रयोग करता है, तो इस मानक के अनुसार उस मुद्रा का प्रयोग करने के कारण के प्रकटन की अपेक्षा है। इस मानक के अनुसार रिपोर्टिंग मुद्रा में किसी प्रकार के परिवर्तन का प्रकटन अपेक्षित है।

4. यह मानक उस मुद्रा से भलिभाँति परिचित उपयोगकर्ताओं की सुविधा के लिए या ऐसे ही किसी और उद्देश्य के लिए वित्तीय विवरणों का रिपोर्टिंग मुद्रा से किसी अन्य मुद्रा में पुनः कथन देने का वर्णन नहीं करता है।

[□] वह अधिसूचना जो कि लेखा मानक 11 को, कम्पनी (लेखा मानक) नियम, 2006 के भाग के रूप में अवधारित करती है, के प्रभाव पूर्ण होने की तारीख से पूर्व रिपोर्टिंग इकाई द्वारा स्वयं या अपनी किसी शाखा द्वारा किये गये विदेशी मुद्रा के संव्यवहारों के लेखा पर इस मानक का लागू होना 2003 में भारतीय चार्टर्ड एकाउंटेन्ट संस्थान द्वारा पुनरीक्षित लेखा मानक 11 के आधार पर अवधारित होगा।

[7] यह मानक सभी अग्रिम विनिमय संविदाओं के विनिमय अन्तरों पर लागू होता है जिनमें विद्यमान आस्तियों तथा दायित्वों के विदेशी मुद्रा के जोखिमों की प्रतिरक्षा के लिए की गयी संविदाएं भी शामिल हैं और यह मानक उन अग्रिम विनिमय संविदाओं के विनिमय अन्तरों पर लागू नहीं होता है जो भावी संव्यवहारों के विदेशी मुद्रा जोखिमों की प्रतिरक्षा के लिए प्रविष्ट किए गए हैं जिनके लिए निश्चित वचनबद्धता की गयी है या जो अत्यन्त सम्भाव्य पूर्वानुमानित संव्यवहार है। एक 'निश्चत वचनबद्धता' एक विनिर्दिष्ट भावी तारीख अथवा तारीखों पर विनिर्दिष्ट मूल्य पर संसाधनों की विनिर्दिष्ट मात्रा के विनिमय के लिए बाध्य करार है और एक 'पूर्वानुमान संव्यवहार' एक गैर-वचनबद्ध परन्तु प्रत्याशित भावी संव्यवहार है।

5. यह मानक विदेशी मुद्रा संव्यवहारों से उत्पन्न रोकड़ प्रवाह और विदेशी प्रचालन के रोकड़ प्रवाह के अनुवाद के रोकड़ प्रवाह विवरण में प्रस्तुति का वर्णन नहीं करता (देखिए लेखा मानक 3, *रोकड़ प्रवाह विवरण*)।

6. यह मानक उस सीमा तक विदेशी मुद्रा उधारों से उत्पन्न विनिमय अन्तरों का वर्णन नहीं करता जहाँ तक उनको ब्याज लागतों के प्रति एक समायोजन के रूप में माना जाता है (देखिए लेखा मानक 16, *उधार लागतें*, पैरा 4(ङ))]

परिभाषाएँ

7. इस मानक में निम्नलिखित शब्दों को विनिर्दिष्ट अर्थों में प्रयोग किया गया है:

7.1 औसत दर एक अवधि के दौरान प्रभावी विनिमय दरों का औसत है।

7.2 अंतिम दर तुलन पत्र तारीख पर विनिमय दर है।

7.3 विनिमय अन्तर वह अन्तर है जो विभिन्न विनिमय दरों पर रिपोर्टिंग मुद्रा में विदेशी मुद्रा की उसी संख्या की रिपोर्टिंग से उत्पन्न होता है।

7.4 विनिमय दर दो मुद्राओं के विनिमय के लिए अनुपात हैं।

7.5 उचित मूल्य वह रकम है जिसके लिए सज्ञान, इच्छुक पक्षकारों के बीच किसी आम्स लैगृंय संव्यवहार में आस्ति का विनिमय किया जाता है या दायित्व का निपटारा किया जाता है।

7.6 विदेशी मुद्रा एक उद्यम की रिपोर्टिंग मुद्रा से भिन्न मुद्रा है।

7.7 विदेशी प्रचालन एक रिपोर्टिंग उद्यम की समनुषंगी,[8] सहयुक्त,[9] सहउद्यम[10] या शाखा है जिसके क्रियाकलाप रिपोर्टिंग उद्यम के देश से भिन्न किसी अन्य देश में आधारित हैं।

7.8 अग्रिम विनिमय संविदा एक अग्रिम दर पर विभिन्न मुद्राओं के विनिमय का करार है।

7.9 अग्रिम दर एक विनिर्दिष्ट भावी तारीख पर दो मुद्राओं के विनिमय की विनिर्दिष्ट विनिमय दर है।

7.10 समाकलित विदेशी प्रचालन एक विदेशी प्रचालन है, जिनके क्रियाकलप उस रिपोर्टिंग उद्यम का समाकलित भाग है।

7.11 मौद्रिक मदें धारित धन और धन की निश्चित या अवधारण योग्य रकम में प्राप्त या संदत्त की जाने वाली आस्तियाँ और दायित्व हैं।

7.12 एक गैर-समाकलित विदेशी प्रचालन में शुद्ध विनिधान उस प्रचालन की शुद्ध आस्तियों में रिपोर्टिंग उद्यम का शेयर है।

7.13 गैर-समाकलित विदेशी प्रचालन एक विदेशी प्रचालन हैं जो कि एक समाकलित विदेशी प्रचालन नहीं है।

7.14 गैर-मौद्रिक मदें मौद्रिक मदों से भिन्न आस्तियाँ और दायित्व हैं।

7.15 रिपोर्टिंग मुद्रा वित्तीय विवरण को प्रस्तुत करने में प्रयुक्त मुद्रा है।

विदेशी मुद्रा संव्यवहार

आरम्भिक अभिज्ञान

8. विदेशी मुद्रा संव्यवहार एक ऐसा संव्यवहार होता है जिसको विदेशी मुद्रा में अंकित किया जाता है या जिसका निपटारा विदेशी मुद्रा में होना अपेक्षित है, ऐसे संव्यवहारों सहित, जो तब उत्पन्न होते हैं जब एक उद्यम:

(क) ऐसे माल या सेवाओं का क्रय या विक्रय करता है जिनका मूल्य विदेशी मुद्रा में अंकित किया जाता है ;

(ख) निधि उधार लेता है या देता है जब संदेय या प्राप्य रकम विदेशी मुद्रा में अंकित की जाती है ;

---

[8] जैसा कि लेखा मानक 21 *समेकित वित्तीय विवरण*, में परिभाषित है।

[9] जैसा कि लेखा मानक 23, *सहयुक्तों में विनिधान हेतु समेकित वित्तीय विवरण में लेखा*, में परिभाषित है।

[10] जैसा कि लेखा मानक 27, *सहउद्यमों में हितों की वित्तीय रिपोर्टिंग*, में परिभाषित है।

(ग) एक अनिष्पादित अग्रिम विनिमय संविदा में एक पक्षकार बन जाए ; या

(घ) अन्यथा, विदेशी मुद्रा में अंकित आस्तियों का अर्जन करता है या व्ययन करता है या कोई दायित्व उपगत करता है या निपटाता है।

9. प्रारम्भिक अभिज्ञान पर विदेशी मुद्रा संव्यवहारों को रिपोर्टिंग मुद्रा में अभिलिखित करना चाहिए, उस विदेशी मुद्रा रकम पर वह विनिमय दर लगानी चाहिए जो संव्यवहार की तारीख पर रिपोर्टिंग मुद्रा और उस विदेशी मुद्रा के बीच में हो।

10. व्यवहारिक कारणों से, एक दर जो कि संव्यवहारों की तारीख पर वास्तविक दर के निकट है का प्रायः उपयोग किया जाता है, उदाहरण के लिए, एक सप्ताह या माह के लिए औसत दर का उस अवधि के दौरान प्रत्येक विदेशी मुद्रा में हुए सभी संव्यवहारों के लिए प्रयोग होता है। तथापि, यदि विनिमय दर में महत्वपूर्ण रूप से उतार-चढ़ाव आता है, तो किसी अवधि के लिए औसत दर का उपयोग अविश्वसनीय होता है।

पश्चात्वर्ती तुलन पत्र की तारीख पर रिपोर्टिंग

11. प्रत्येक तुलन पत्र तारीख पर

(क) ***विदेशी मुद्रा मौद्रिक मदों को अन्तिम दर का उपयोग करके रिपोर्ट किया जाना चाहिए। तथापि कुछ परिस्थितियों में अन्तिम दर रिपोर्टिंग मुद्रा में उस रकम को तर्कसंगत शुद्धता के साथ प्रतिबिम्बित नहीं करती जो तुलन पत्र की तारीख को एक विदेशी मुद्रा मौद्रिक मद के संदत्त हेतु अपेक्षित हो या वसूली हेतु संभावित हो, उदाहरणार्थ, जहाँ प्रेषणों पर प्रतिबन्ध हों या जहाँ अन्तिम दर अवास्तविक हो और यह संभव न हो कि तुलन पत्र की तारीख को उस दर पर मुद्राओं का विनिमय कर सकेंगे। ऐसी परिस्थितियों में सम्बद्ध मौद्रिक मद को उस रकम पर रिपोर्टिंग मुद्रा में रिपोर्ट करना चाहिए जिसको तुलनपत्र कि तारीख को ऐसी मद से वसूल किये जाने की या संदाय किये जाने की सम्भावना हो या उसकी अपेक्षा की जाये।***

(ख) ***गैर-मौद्रिक मदों को, जिनको विदेशी मुद्रा में अंकित ऐतिहासिक लागत पर ले जाया जाता है संव्यवहार की तारीख पर विनिमय दर का प्रयोग करते हुए रिपोर्ट करना चाहिए; और***

(ग) ***विदेशी मुद्रा में अंकित गैर मौद्रिक मदों को, जिन्हें उचित मूल्य पर या अन्य ऐसे ही किसी मूल्यांकन पर ले जाया गया हो, उस समय पर विद्यमान विनिमय*** **दरों का प्रयोग करके रिपोर्ट करना चाहिए जब उन मूल्यों का अवधारण किया गया था।**

12. रोकड़, प्राप्य और संदेय रकमें मौद्रिक मदों के उदाहरण हैं। स्थिर आस्तियाँ, सूचीबद्ध सामान और साधारण शयरों में विनिधान गैर-मौद्रिक मदों के उदाहरण हैं। एक मद की कैरिंग रकम सम्बन्धित लेखा मानकों के अनुसार अवधारित की जाती है। उदाहरणार्थ, कुछ आस्तियों को उचित मूल्यों पर या ऐसे ही अन्य मूल्यांकनों (जैसे, शुद्ध वसूली योग्य मूल्य) या ऐतिहासिक लागत पर मापा जा सकता है। चाहे कैरिंग रकम को उचित मूल्य पर या अन्य ऐसे ही मूल्यांकन पर या ऐतिहासिक लागत पर आधारित करके अवधारित किया जाये परन्तु उन अवधारित रकमों को फिर इस मानक के अनुसार रिपोर्टिंग मुद्रा में रिपोर्ट किया जाता है। तुलन पत्र की तारीख पर विदेशी मुद्रा में अंकित आकस्मिक दायित्व को अंतिम दर का उपयोग कर प्रकट किया जाता है।

विनिमय अन्तरों का अभिज्ञान

13. मौद्रिक मदों के निपटारे पर उत्पन्न विनिमय अंतर या उन दरों से अलग दरों पर एक उद्यम की मौद्रिक मदों की रिपोर्टिंग पर उत्पन्न विनिमय अन्तर, जिन दरों पर उनको अवधि के दौरान प्रारम्भिक रूप से अभिलिखित किया गया था, या पूर्व वित्तीय विवरणों में रिपोर्ट किया गया था, उस अवधि में आय या व्यय के रूप में अभिज्ञात किये जाने चाहिए जिसमें वे उत्पन्न होते हैं, पैरा 15 के अनुसार व्यवहृत विनिमय अन्तरों के अपवाद के साथ।

14. एक विनिमय अन्तर उत्पन्न होता है जब संव्यवहार की तारीख और एक विदेशी मुद्रा संव्यवहार से उत्पन्न किन्हीं मौद्रिक मदों के निपटान की तारीख के बीच विनिमय दर में परिवर्तन होता है। जब संव्यवहार का निपटारा उसी लेखा अवधि में हो जाता है जिसमें वह संव्यवहार हुआ था, तो सम्पूर्ण विनिमय अन्तर को उस अवधि में अभिज्ञात किया जाना चाहिए। यद्यपि, यदि संव्यवहार का निपटारा पश्चात्वर्ती लेखा अवधि में होता है, तो बीच की प्रत्येक मध्यवर्ती अवधि में संव्यवहार के निपटारे तक अभिज्ञात विनिमय अन्तर का अवधारण, उस अवधि में विनिमय दरों में हुए परिवर्तनों द्वारा किया जाता है।

एक गैर-समाकलित विदेशी प्रचालन में शुद्ध विनिधान

15. एक मौद्रिक मद पर उत्पन्न विनिमय अन्तर, जो सारवान रूप से एक गैर समाकलित विदेशी प्रचालन में उद्यम के शुद्ध विनिधान का भाग है, को उद्यम के वित्तीय विवरणों में विदेशी मुद्रा अनुवाद आरक्षिति में संचित करना चाहिए जब तक कि शुद्ध विनिधान का व्ययन न हो, जिस समय उन्हें पैरा 31 के अनुसार आय या व्यय की तरह अभिज्ञात किया जाना चाहिए।

16. एक उद्यम के पास ऐसी मौद्रिक मद हो सकती है जो गैर समाकलित विदेशी प्रचालन, से प्राप्य हो, या उनको देय हो। एक मद जिसके निपटारे की न तो कोई योजना है और न ही निकट भविष्य में घटित होने की कोई संभावना है, सारभूत रूप से उद्यम के गैर-समाकलित विदेशी प्रचालनों में शुद्ध विनिधान की वृद्धि या कमी है। ऐसी मौद्रिक मदों में दीर्घकालिक प्राप्य या उधार सम्मिलित किये जा सकते हैं परन्तु व्यापारिक प्राप्य या व्यापारिक संदेय रकमें सम्मिलित नहीं हैं।

विदेशी प्रचालनों के वित्तीय विवरण

विदेशी प्रचालनों का वर्गीकरण

17. विदेशी प्रचालन के वित्तीय विवरण के अनुवाद हेतु प्रयुक्त पद्धति उस तरीके पर निर्भर करती है जिसमें उसे वित्तपोषित किया जाता है और रिपोर्टिंग उद्यम के सम्बन्ध में उसका प्रचालन किया जाता है। इस उद्देश्य से विदेशी प्रचालनों को ''समाकलित विदेशी प्रचालन'' या 'गैर-समाकलित विदेशी प्रचालन'' में वर्गीकृत किया जाता है ।

18. एक विदेशी प्रचालन जो कि रिपोर्टिंग उद्यम के प्रचालनों से समाकलित है, अपना व्यवसाय इस प्रकार चलाता है जैसे कि वह रिपोर्टिंग उद्यम के प्रचालनों का विस्तार है। उदाहरणार्थ ऐसे विदेशी प्रचालन केवल उसी माल का विक्रय करें जो रिपोर्टिंग उद्यम से आयात की गई हों और उसकी प्राप्तियों को रिपोर्टिंग उद्यम को प्रेषित करते हों। ऐसे मामलों में रिपोर्टिंग मुद्रा और विदेशी प्रचालनों से देश की मुद्रा के विनिमय दर में परिवर्तन का उस रिपोर्टिंग उद्यम के प्रचालनों से रोकड़ प्रवाहों पर तुरंत प्रभाव पड़ता है। इसलिए विनिमय दर में परिवर्तन का प्रभाव उस प्रचालन में रिपोर्टिंग उद्यम के शुद्ध विनिधान की अपेक्षा विदेशी प्रचालन द्वारा धारित पृथक-पृथक मौद्रिक मदों पर अधिक पड़ता है।

19. इसके विपरीत, एक गैर-समाकलित विदेशी प्रचालन रोकड़ और अन्य मौद्रिक मदों का संचय करता है, व्यय उपगत करता है, आय का सृजन करता है और सभंवत उधार व्यवस्था करता है, ये सभी सारभूत रूप में स्थानीय मुद्रा में होते हैं । यह रिपोर्टिंग मुद्रा के संव्यवहारों सहित विदेशी मुद्रा के संव्यवहारों में भी प्रविष्ट हो सकता है। जब भी रिपोर्टिंग मुद्रा और स्थानीय मुद्रा के विनिमय दर में परिवर्तन होता है इसका गैर-समाकलित विदेशी प्रचालन या रिपोर्टिंग उद्यम के प्रचालनों से होने वाले वर्तमान या भावी रोकड़ प्रवाहों पर बहुत थोड़ा या कोई प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं पड़ता है। इस विनिमय दर परिवर्तन का प्रभाव गैर-समाकलित विदेशी प्रचालन द्वारा धारित अलग-अलग मौद्रिक और गैर मौद्रिक मदों पर न पड़ कर रिपोर्टिंग उद्यम के गैर-समाकलित विदेशी प्रचालन में शुद्ध विनिधानों पर पड़ता है।

20. एक विदेशी प्रचालन समाकलित विदेशी प्रचालन न हो कर गैर-समाकलित विदेशी प्रचालन है, इसके निम्नलिखित संकेत हैं:

(क) यद्यपि रिपोर्टिंग उद्यम विदेशी प्रचालन को नियंत्रित कर सकता है, परन्तु विदेशी प्रचालन के क्रियाकलापों को रिपोर्टिंग उद्यम के क्रियाकलापों से स्वायत्तता की महत्वपूर्ण मात्रा के साथ चलाया जाता है;

(ख) रिपोर्टिंग उद्यम के साथ संव्यवहारों का विदेशी प्रचालन के क्रियाकलापों में उच्च अनुपात नहीं है;

(ग) विदेशी प्रचालन के क्रियाकलापों का वित्तपोषण मुख्य रूप से रिपोर्टिंग उद्यम के बजाय स्वयं के प्रचालन या स्थानीय उधार से होता है;

(घ) विदेशी प्रचालन के उत्पादों या सेवाओं की श्रम की लागतों, सामग्री और अन्य भागों का मुख्यतः रिपोर्टिंग मुद्रा के बजाय स्थानीय मुद्रा में संदाय या निपटान किया जाता है;

(ङ) विदेशी प्रचालन की बिक्रियाँ मुख्यतः रिपोर्टिंग मुद्रा की बजाय किसी अन्य मुद्रा में होती हैं;

(च) रिपोर्टिंग उद्यम के रोकड़ प्रवाह विदेशी प्रचालन के क्रियाकलापों से सीधे प्रभावित होने की बजाय विदेशी प्रचालनों की दैनिक क्रियाकलापों से पृथक रहते हैं;

(छ) विदेशी प्रचालनों के उत्पादों के विक्रय मूल्य मुख्यतः विनिमय दर के परिवर्तनों के प्रति अल्पकालिक आधार पर प्रतिक्रियाशील नहीं होते है बल्कि स्थानीय प्रतिस्पर्धा या स्थानीय सरकार के विनिमय द्वारा अधिक अवधारित होते है; और

(ज) विदेशी प्रचालन के लिए उत्पादों के लिए एक सक्रिय स्थानीय विक्रय बाजार है, यद्यपि बड़ी मात्रा में निर्यात भी हो सकते हैं;

प्रत्येक प्रचालन के उपयुक्त वर्गीकरण को सिद्धांत रूप में उपरोक्त संकेतों से संबंधित तथ्यपूर्ण जानकारी से स्थापित किया जा सकता है। कुछ मामलों में, विदेशी प्रचालन का रिपोर्टिंग उद्यम के या तो गैर-समाकलित विदेशी प्रचालन में या समाकलित विदेशी प्रचालन में वर्गीकरण, स्पष्ट नहीं हो सकता, और उपयुक्त वर्गीकरण को अवधारित करने के लिए निर्णय लेना आवश्यक होता है।

समाकलित विदेशी प्रचालन

21. समाकलित विदेशी प्रचालन के वित्तीय विवरणों को पैरा 8 से 16 में दिए गए सिद्धांतों और प्रक्रियाओं का प्रयोग करके अनुवादित किया जाना चाहिए जैसे कि विदेशी प्रचालन के संव्यवहार स्वयं रिपोर्टिंग उद्यम के ही संव्यवहार हों।

22. विदेशी प्रचालन के वित्तीय विवरणों में पृथक मदों का इस प्रकार अनुवाद किया जाता है जैसे कि इसके सभी संव्यवहार रिपोर्टिंग उद्यम ने स्वयं किये हों। मूर्त आस्तियों की लागत और अवक्षयण का अनुवाद आस्ति के क्रय की तारीख को विनिमय दर पर करना चाहिए, या यदि आस्ति को उचित मूल्य या उसी प्रकार के किसी मूल्यांकन पर आगे ले जाते है तो मूल्यांकन की तारीख को विनिमय दर का प्रयोग करना चाहिए। सूचीबद्ध सामान की लागत को उस विनिमय दर पर अनुवादित करना चाहिए जो लागत उपगत होने के समय थी। आस्ति की वसूली योग्य रकम या वसूल होने वाली रकम का अनुवाद, उस विनिमय दर पर करना चाहिए जो वसूली योग्य रकम या वसूल होने वाली रकम का अवधारण करने के समय उपस्थित थी। उदाहरणतः जब सूचीबद्ध सामान के किसी मद के शुद्ध वसूली योग्य मूल्य का अवधारण विदेशी मुद्रा में किया जाता है, उस मूल्य का अनुवाद शुद्ध वसूली योग्य मूल्य का अवधारण करने वाली तारीख पर विद्यमान विनिमय दर का प्रयोग करते हुए किया जाता है। इसलिए प्रायः अंतिम दरों का ही प्रयोग किया जाता है। एक रिपोर्टिंग उद्यम के अंतिम विवरणों में एक आस्ति की कैरिंग रकम को उसके वसूल होने वाली रकम या उसकी शुद्ध वसूली योग्य मूल्य तक घटाने के समायोजन आवश्यक हो सकते हैं जबकि विदेशी प्रचालन के वित्तीय विवरणों में इस प्रकार के समायोजन आवश्यक नहीं हैं। आनुकालपिक के रूप से विदेशी प्रचालन के वित्तीय विवरण में एक समायोजन को रिपोर्टिंग उद्यम के वित्तीय विवरणों में उलटा करना आवश्यक हो सकता है।

23. व्यवहारिक कारणों से प्रायः ऐसी दर जो संव्यवहारों की तारीख पर वास्तविक दर के सन्निकट होती है, का प्रयोग किया जाता है, उदाहरणतः एक सप्ताह या एक मास के लिए औसत दर उस अवधि में होने वाले विदेशी मुद्रा के सभी संव्यवहारों के लिए प्रयोग में लाई जा सकती है। परन्तु यदि विनिमय दर में महत्वपूर्ण परिवर्तन आते हैं तो उसी अवधि के लिए औसत दर का प्रयोग अविश्वसनीय होता है।

गैर-समाकलित विदेशी प्रचालन

24. अपने वित्तीय विवरणों में सम्मिलित करने के लिए एक गैर-समाकलित विदेशी प्रचालन के वित्तीय विवरणों के अनुवाद में रिपोर्टिंग उद्यम को निम्नलिखित प्रक्रियाओं का प्रयोग करना चाहिए:

(क) एक गैर-समाकलित विदेशी प्रचालन की दोनों ही मौद्रिक और गैर-मौद्रिक आस्तियों और दायित्वों को अन्तिम दर पर अनुवादित किया जाना चाहिए ;

(ख) गैर-समाकलित विदेशी प्रचालन की आय और व्यय की मदों को संव्यवहारों की तारीख को विनिमय दरों पर अनुवादित किया जाना चाहिए ; और

(ग) इसके परिणामस्वरूप उत्पन्न सभी विनिमय अन्तरों को शुद्ध विनिधान के व्ययन होने तक एक विदेशी मुद्रा अनुवाद आरक्षिति में संचित किया जाना चाहिए।

25. व्यावहारिक कारणों से, एक दर जो वास्तविक विनिमय दरों के सन्निकट होती है, उदाहरण के लिए, अवधि के लिए एक औसत दर, को प्रायः एक विदेशी प्रचालन की आय और व्यय मदों के अनुवाद के लिए प्रयोग किया जाता है।

26. एक गैर-समाकलित विदेशी प्रचालन के वित्तीय विवरणों के अनुवाद के परिणामस्वरूप निम्नलिखित से उत्पन्न विनिमय अन्तरों को अभिज्ञात किया जाता है:

(क) आय और व्यय की मदों का संव्यवहारों की तारीखों को विनिमय दरों पर और अन्तिम दर पर आस्तियों और दायित्वों का अनुवाद ;

(ख) गैर-समाकलित विदेशी प्रचालन में प्रारम्भिक शुद्ध विनिधान का उस विनिमय दर से भिन्न दर पर अनुवाद जिस पर उसको पहले रिपोर्ट किया गया था ; और

(ग) गैर-समाकलित विदेशी प्रचालन की इक्विटी में अन्य परिवर्तन।

इन विनिमय अन्तरों को उस अवधि के लिए आय या व्यय के रूप में अभिज्ञात नहीं किया जाता है क्योंकि विनिमय दरों के परिवर्तनों का गैर-समाकलित विदेशी प्रचालनों या रिपोर्टिंग उद्यम के प्रचालनों के वर्तमान या भावी रोकड़ प्रवाहों पर प्रत्यक्ष रूप से नगण्य या कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। जब एक गैर-समाकलित विदेशी प्रचालन समेकित होता है परन्तु पूर्णतया स्वामित्वाधीन नहीं होता तो अनुवाद के परिणाम स्वरूप उत्पन्न संचित विनिमय अन्तर, जो अल्पसंख्यक के हित से सम्बंधित है ; वे समेकित तुलनपत्र में अल्पसंख्यक को आबंटित और उसके एक भाग के रूप में रिपोर्ट किये जाते हैं।

27. गैर-समाकलित विदेशी प्रचालन के अर्जन पर उत्पन्न गुडविल या पूंजीगत आरक्षिति को पैरा 24 के अनुसार अन्तिम दर पर अनुवादित किया जाता है।

28. एक गैर-समाकलित विदेशी प्रचालन के वित्तीय परिणामों में प्रकट एक आकस्मिक दायित्व को रिपोर्टिंग उद्यम के वित्तीय विवरणों में प्रकटन के लिए अन्तिम दर पर अनुवादित किया जाता है।

29. एक गैर-समाकलित विदेशी प्रचालन के वित्तीय विवरणों के रिपोर्टिंग उद्यम के विवरण में समावेश में सामान्य समामेलन प्रक्रियाओं का अनुसरण किया जाता है, जैसे एक समनुषंगी कम्पनी के समूह के मध्य संव्यवहारों और समूह के मध्य अतिशेषों का निराकरण (देखें लेखा मानक 21, *'समेकित वित्तीय विवरण'* और लेखा मानक 27, *'सहउद्यमों में हितों की वित्तीय रिपोर्टिंग'*)। यद्यपि, एक समूह के मध्य मौद्रिक मद पर उत्पन्न विनिमय अन्तर चाहे अल्पकालिक है या दीर्घकालिक, को अन्य समूह के मध्य अतिशेषों पर उत्पन्न तत्सम्बंधी रकम के विरूद्ध हटा नहीं सकते क्योंकि मौद्रिक मद एक मुद्रा का एक अन्य मुद्रा में परिवर्तन की प्रतिबद्धता का प्रतिनिधित्व करती है और मुद्रा उतार-चढ़ाव के द्वारा लाभ या हानि के प्रति रिपोर्टिंग उद्यम को अनावृत करती है। तदनुसार रिपोर्टिंग उद्यम के समेकित वित्तीय विवरणों में ऐसा कोई विनिमय अन्तर आय या व्यय के रूप में अभिज्ञात किया जाता है या यदि यह अन्तर पैरा 15 में वर्णित परिस्थितियों से उत्पन्न होता है तो इसको शुद्ध विनिधान के व्ययन तक एक विदेशी मुद्रा अनुवाद आरक्षिति में संचित किया जाता है।

30. जब कोई गैर-समाकलित विदेशी प्रचालन वित्तीय विवरणों को रिपोर्टिंग उद्यम की रिपोर्टिंग तारीख से एक अलग तारीख तक के लिए तैयार करता है तो गैर-समाकलित विदेशी प्रचालन बहुधा रिपोर्टिंग उद्यम के वित्तीय विवरणों में समावेश के प्रयोजन के लिए रिपोर्टिंग उद्यम वाली तारीख को ही विवरणों को तयौर करता है। जब ऐसा करना अव्यवहारिक हो, तो लेखा मानक 21 *'समेकित वित्तीय विवरण'* एक अलग रिपोर्टिंग तारीख तक के वित्तीय विवरणों का प्रयोग करने की अनुमति देता है परन्तु अन्तर छः मास से अधिक न हो और ऐसे किन्हीं महत्वपूर्ण संव्यवहारों या अन्य घटनाओं के प्रभावों के लिए समायोजन कर लिए गये हों जो विभिन्न रिपोर्टिंग तारीखों के बीच घटित होते हैं। ऐसे मामले में, गैर-समाकलित विदेशी प्रचालन की आस्तियों और दायित्वों को गैर-समाकलित विदेशी प्रचालन की तुलन पत्र तारीख को विनिमय दर पर अनुवादित किया जाता है और लेखा मानक 21 के अनुसार रिपोर्टिंग उद्यम की तुलन पत्र तारीख तक विनिमय दरों में महत्वपूर्ण परिवर्तनों के लिए जब उपयुक्त हो समायोजन किया जाता है। इसी दृष्टिकोण का प्रयोग, लेखा मानक 23 सहयुक्तों में विनिधान हेतु समेकित वित्तीय विवरणों में लेखा, के अनुसार सहयुक्तों में इक्विटी पद्धति लागू करने में और लेखा मानक 27, *सहउद्यमों में हितों की वित्तीय रिपोर्टिंग*, के अनुसार सहउद्यमों में आनुपातिक समेकन लागू करने में किया जाता है।

एक गैर-समाकलित विदेशी प्रचालन का व्ययन `

31. एक गैर-समाकलित विदेशी प्रचालन के व्ययन पर, विनिमय अन्तरों की संचित रकम, जो आस्थगित की जा चुकी है और जो उसी प्रचालन से सम्बंधित है, को उस अवधि के आय या व्यय की तरह अभिज्ञात करना चाहिए जिसमें व्ययन पर लाभ या हानि को अभिज्ञात किया गया है।

32. कोई उद्यम बिक्री, परिसमापन, शेयरपूंजी के पुनर्सँदाय, या उस समस्त या आंशिक व्यापार के परित्याग के माध्यम से गैर-समाकलित विदेशी व्यापार में अपने हित का व्ययन कर सकेगी । किसी ऐसे लाभांश का संदाय जो किसी व्ययन का भाग केवल तब होता है जब उससे निवेश का प्रतिलाभ मिलता है । संचित्त लाभों के प्रत्यावर्तन द्वारा किसी गैर-समाकलित विदेशी व्यापार से विप्रेषित्त राशि तब तक व्ययन का भाग नहीं होती जब तक कि यह निवेश का प्रतिलाभ न दे । आंशिक व्ययन के मामले में, संबंधित संचित विनिमय अंतर का केवल आनुपातिक शेयर ही अभिलाभ या हानि में सम्मिलित किया जाता है। किसी गैर-समाकलित विदेशी व्यापार में लगी हुई नकद राशि का अवलेखन आंशिक व्ययन नहीं होता है। तदनुसार, आस्थगित विदेशी विनिमय अभिलाभ या हानि के किसी भाग की अवलेखन के समय मान्यता नहीं दी जाती है।

विदेशी प्रचालन के वर्गीकरण में परिवर्तन

33. जब एक विदेशी प्रचालन के वर्गीकरण में परिवर्तन होता है तो संशोधित वर्गीकरण पर लागू अनुवाद प्रक्रियाएँ वर्गीकरण के परिवर्तन की तारीख से लागू की जानी चाहिए।

34. संगतता के सिद्धांत की अपेक्षा है कि कोई विदेशी प्रचालन एक बार समाकलित और गैर-समाकलित में वर्गीकृत कर दिया जाये तो ऐसे ही वर्गीकृत रहे। यद्यपि रिपोर्टिंग उद्यम से संबंध में एक विदेशी प्रचालन के वित्तपोषण की पद्धति और प्रचालन में परिवर्तन विदेशी प्रचालन के वर्गीकरण में परिवर्तन की ओर ले जा सकता है। जब किसी विदेशी प्रचालन, जो कि रिपोर्टिंग उद्यम के प्रचालन का समाकलित भाग है, को गैर-समाकलित विदेशी प्रचालन के रूप में पुनः वर्गीकृत कर दिया जाता है, तो पुनः वर्गीकरण की तारीख पर गैर मौद्रिक आस्तियों के अनुवाद से उत्पन्न विनिमय अन्तरों को विदेशी मुद्रा अनुवाद आरक्षिति में संचित कर दिया जाता है। जब एक गैर-समाकलित विदेशी प्रचालन का पुनः वर्गीकरण समाकलित विदेशी प्रचालन में कर दिया जाता है, तो परिवर्तन की तारीख पर गैर मौद्रिक मदों की अनुवाद रकमों को परिवर्तन की अवधि और पश्चात्वर्ती अवधि के लिए उन मदों की ऐतिहासिक लागत की भांति रिपोर्ट किया जाता है। आस्थगित किए जा चुके विनिमय अंतरों को प्रचालन के व्ययन तक आय या व्यय की तरह अभिज्ञात नहीं किया जाता है।

विदेशी विनिमय दरों में समस्त परिवर्तन

विनिमय अन्तरों के कर प्रभाव

35. विदेशी मुद्रा संव्यवहारों पर लाभ और हानि, और विदेशी प्रचालनों के वित्तीय विवरणों के अनुवाद के परिणाम स्वरूप उत्पन्न विनिमय अन्तर से कर प्रभाव हो सकते हैं जिनको लेखा मानक 22, *'आय पर करों के लिए लेखा'* के अनुसार लेखाबद्ध किया जाता है।

अग्रिम विनिमय संविदा[11]

36. एक उद्यम एक अग्रिम विनिमय संविदा और अन्य ऐसे किसी वित्तीय प्रपत्र में प्रविष्ट हो सकता है जो सारभूत रूप में एक अग्रिम विनिमय संविदा हो, जिसका आशय व्यापारिक या सट्टेबाजी का न हो, ताकि एक संव्यवहार के निपटारे की तारीख को उपलब्ध या अपेक्षित रिपोर्टिंग मुद्रा की रकम को स्थापित किया जा सके। ऐसे एक अग्रिम विनिमय संविदा की स्थापना पर उत्पन्न प्रीमियम या बट्टे का संविदा के जीवन के दौरान व्यय या आय के रूप में क्रमिक अपाकरण किया जाना चाहिए। ऐसे एक संविदा पर विनिमय अन्तरों को उस रिपोर्टिंग अवधि में लाभ और हानि के विवरण में अभिज्ञात किया जाना चाहिए जिसमें विनिमय दरें परिवर्तित होती हैं। ऐसे एक अग्रिम विनिमय संविदा के रददीकरण या नवीकरण पर उत्पन्न किसी लाभ या हानि को अवधि के लिए आय या व्यय के रूप में अभिज्ञात किया जाना चाहिए।

37. विनिमय दर में परिवर्तनों से जुड़े हुए जोखिमों को अग्रिम विनिमय संविदाओं में प्रवेश कर के कम किया जा सकता है। एक अग्रिम विनिमय संविदा की स्थापना से उत्पन्न प्रीमियम या बट्टे का अग्रिम विनिमय संविदाओं पर हुए विनिमय अंतरों से अलग लेखा किया जाता है। संविदा में प्रवेश करने के परिणाम स्वरूप उत्पन्न प्रीमियम या बट्टे का मापन अग्रिम विनिमय संविदा की स्थापना की तारीख पर विनिमय दर और संविदा में विनिर्दिष्ट अग्रिम दर के अन्तर से किया जाता है। अग्रिम विनिमय संविदा पर विनिमय अन्तर (क) संविदा की विदेशी-मुद्रा में कम जिसका अनुवाद रिपोर्टिंग तारीख को विनिमय दर पर किया जाता है या निपटारे की तारीख पर जहाँ संव्यवहार का निपटारा रिपोर्टिंग अवधि के दौरान किया जाता है और (ख) समान विदेशी मुद्रा रकम जिसका अग्रिम विनिमय संविदा की स्थापना की तारीख या अन्तिम रिपोर्टिंग तारीख में जो बाद की तारीख है उस पर अनुवाद किया जाता है, के बीच अन्तर होता है।

[11] देखें फुटनोट 7

38. एक अग्रिम विनिमय संविदा पर उस लाभ या हानि की संगणना, जिसके प्रति पैरा 36 लागू नहीं होता, संविदा की शेष परिपक्वता के लिए रिपोर्टिंग तारीख को उपलब्ध अग्रिम दर और संविदा की अग्रिम दर (या एक पूर्ववर्ती अवधि के लिए उस संविदा पर लाभ या हानि को मापने के लिए अंतिमः प्रयुक्त अग्रिम दर) के बीच अन्तर द्वारा अग्रिम विनिमय संविदा की विदेशी मुद्रा रकम को गुणा करके निकाली जानी चाहिए। इस प्रकार निकाले गये लाभ या हानि को अवधि के लिए लाभ और हानि के विवरण में अभिज्ञात किया जाना चाहिए। अग्रिम विनिमय संविदा पर प्रीमियम या बट्टा अलग से अभिज्ञात नहीं किया जाता है।

39. व्यापारिक या सट्टेबाजी के प्रयोजनों के लिए किये गये एक अग्रिम विनिमय संविदा का अभिलेखन करने में संविदा पर प्रीमियम या बट्टे की उपेक्षा की जाती है और प्रत्येक तुलन पत्र तारीख पर संविदा का मूल्य उसके चालू बाजार मूल्य पर आंका जाता है और संविदा पर लाभ या हानि को अभिज्ञात किया जाता है।

प्रकटन

40. एक उद्यम को प्रकट करना चाहिएः

(क) ***अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि में सम्मिलित विनिमय अन्तर की रकम; और***

(ख) ***शेयरधारक निधि के एक पृथक भाग के रूप में, विदेशी मुद्रा अनुवाद आरक्षिति में संचित शुद्ध विनिमय अन्तर और अवधि के आरम्भ और अन्त में इस प्रकार के विनिमय अन्तर की रकम का समाधान।***

41. जब रिपोर्टिंग मुद्रा उस देश की मुद्रा से भिन्न हो जिसमें उद्यम का निवास है तो एक भिन्न मुद्रा के प्रयोग के कारण को प्रकट करना चाहिए। रिपोर्टिंग मुद्रा में किसी परिवर्तन के कारण को भी प्रकट करना चाहिए।

42. जब एक महत्वपूर्ण विदेशी प्रचालन के वर्गीकरण में कोई परिवर्तन हुआ है, उद्यम को निम्नलिखित प्रकट करना चाहिए:

(क) वर्गीकरण में परिवर्तन की प्रकृति ;

(ख) परिवर्तन का कारण ;

(ग) शेयरधारकों की निधि पर वर्गीकरण में परिवर्तन का प्रभाव ; और

(घ) प्रस्तुत की गई प्रत्येक पूर्व अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि पर प्रभाव, यदि वर्गीकरण में परिवर्तन सबसे पहले प्रस्तुत की गई अवधि के आरम्भ में उत्पन्न हुआ होता।

43. तुलन पत्र तारीख के पश्चात् उत्पन्न विनिमय दर में परिवर्तन का एक विदेशी प्रचालन के वित्तीय विवरण पर या विदेशी मुद्रा मौद्रिक मदों पर प्रभाव को लेखा मानक 4 *'आकस्मिकताएँ और तुलनपत्र की तारीख के पश्चात् होने वाली घटनाएँ'*, के अनुसार प्रकट करना चाहिए।

44. उद्यम के विदेशी मुद्रा जोखिम प्रबंध नीति के प्रकटन को भी प्रोत्साहित किया जाता है।

संक्रमणकालीन उपबंध[12]

45. इस मानक के पहली बार लागू होने पर, यदि एक विदेशी शाखा इस मानक की आवश्यकता के अनुसार एक गैर-समाकलित विदेशी प्रचालन के रूप में वर्गीकृत होती है, तो एक विदेशी प्रचालन के वर्गीकरण के परिवर्तन के संबंध में इस मानक के पैरा 33 और 34 में व्यक्त लेखा प्रतिपादनों को लागू किया जाना चाहिए।

46. 7 दिसंबर, 2006 को या उसके पश्चात् आरंभ होने वाली और 31 मार्च, 2020[13] को या उससे पूर्व समाप्त होने वाली लेखा अवधियों के संबंध में, उद्यम के विकल्प पर (ऐसा विकल्प, ऐसी लेखा अवधि के लिए इस संक्रमणकालीन उपबंध के प्रवर्तन में आने की तारीख से या प्रथम तारीख से, जिसको संबंधित विदेशी करेंसी मुद्रा मद अर्जित की जाती हैं इनमें से जो

[12] अनुच्छेद 45 में दिए गए संक्रमणकालील उपबंध केवल कंपनी (लेखा मानक) नियम, 2006 के अधीन अधिसूचित लेखा मानकों लिए प्रासंगिक है, जो समय के साथ संशोधित किये गए हैं। पैरा 46-46क में दिए गए संक्रमणकालील उपबंध कंपनी (लेखा मानक) नियम, 2006 (जो समय के साथ संशोधित किये गए हैं) तथा कंपनी (लेखा मानक) नियम, 2021 के अधीन अधिसूचित लेखा मानकों लिए प्रासंगिक है ।

[13] प्रारंभ में 31 मार्च 2011 अवधि उल्लेखित्त थी जो भारतीय सरकार के कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय द्वारा प्रकाशित अधिसूचना दिनांक 11 मई, 2011 द्वारा "31 मार्च 2012" प्रतिस्थापित किया गया । तद्पश्चात, भारतीय सरकार के कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय द्वारा प्रकाशित अधिसूचना दिनांक 29 दिसंबर 2011 द्वारा 31 मार्च 2012 से 31 मार्च 2020 प्रतिस्थापित किया गया ।

IndiaCode

भी पश्चात्वर्ती हो, अप्रतिसंहरणीय होगा और उसका भूतलक्षी रूप से प्रयोग किया जाएगा तथा सभी ऐसी विदेशी करेंसी मुद्रा मदों को लागू होगा) उन दरों पर, जो उनसे भिन्न हैं, जिन पर वे आरंभ अवधि के दौरान अभिलिखित किए गए थे या पूर्ववर्ती वित्तीय विवरणों में रिपोर्ट किए गए थे, जहां तक उनका संबंध किसी अवक्षयणीय पूंजी आस्ति के अर्जन से है, दीर्घकालिक विदेशी करेंसी मुद्रा मदों की रिपोर्ट से उद्भूत विनियम अंतरों को आस्ति की लागत में जोड़ा जा सकता है या उससे घटाया जा सकता है और आस्ति के बकाया काल में अवक्षयण किया जाएगा तथा अन्य मामलों में, उद्यम के वित्तीय विवरणों में किसी "विदेशी करेंसी मुद्रा मद स्थानान्तरण अंतर लेखा" में संचित किया जा सकता है और पैरा 15 के अनुसरण में किए गए विनिमय अंतरों के अपवाद सहित, ऐसी अवधियों में से प्रत्येक अवधि में आय या व्यय के रूप में पहचान करके, ऐसी दीर्घकालिक आस्ति/दायित्व की बकाया अवधि में परिशोधन किया जाएगा, किंतु 31 मार्च, 2020[14] के परे नहीं। इस विकल्प के प्रयोग के प्रयोजनों के लिए, किसी आस्ति या दायित्व को किसी दीर्घकालिक विदेशी करेंसी मुद्रा मद के रूप में अभिहित किया जाएगा, यदि आस्ति या दायित्व को किसी विदेशी करेंसी में अभिव्यक्त किया जाता है और आस्ति या दायित्व के उद्गम की तारीख को उसका बारह मास या उससे अधिक की अवधि है। लेखा अवधियों से जो 7 दिसम्बर, 2006 को या उसके पश्चात् आरंभ होती है, संबंधित कोई अंतर विकल्प के प्रयोग करने से पूर्व लाभ और हानि लेखा में पूर्ववर्ती रूप से मान्यता प्राप्त है, प्रत्यावर्तित कर दिया जाएगा, जहां तक उसका संबंध आस्ति की लागत में जोड़कर या घटाकर किसी अवक्षयणीय पूंजी आस्ति के अर्जन से है, तथा अन्य मामलों में, "विदेशी करेंसी मुद्रा मद स्थानान्तरण अंतर लेखा" में अंतरण करके, दोनों मामलों में साधारण आरक्षिति में, यथास्थिति, विकलन या जमा करके किया जाएगा। यदि इस पैरा में कथित विकल्प का प्रयोग किया जाता है तो ऐसे विकल्प के ऐसे प्रयोग के तथ्य को तथा ऐसी अवधि के, जिसमें ऐसे विकल्प का प्रयोग किया जाता है, तथा प्रत्येक पश्चात्वर्ती अवधि के वित्तीय विवरणों में, जहां तक कोई विनिमय अंतर अपरिशोधित रह जाता है, परिशोधित की जाने वाली शेष रकम को प्रकट किया जाएगा।

46क. (1) 1 अप्रैल, 2011 को या उसके पश्चात् प्रारंभ होने वाली लेखांकन अवधि के संबंध में, वैसे उद्यम के लिए जिन्होंने पहले पैरा 46 के तहत विकल्प का प्रयोग किया है एवं किसी अन्य उद्यम के विकल्प पर (ऐसा विकल्प अपरिवर्तनीय होगा एवं ऐसी सभी विदेशी मुद्रा मौद्रिक मदों पर लागू होगा) इस अवधि के प्रारंभ में रिकार्ड किए गए या पिछले वित्तीय विवरणों में दी गई दरों से भिन्न दर पर लंबी अवधि के विदेशी मुद्रा मौद्रिक मदों की रिपोर्टिंग से उत्पन्न विनिमय अंतर, जहां तक उनका संबंध अवमूल्यन योग्य पूंजी संपत्ति के अधिग्रहण से है, को संपत्ति की कीमत में जोड़ा या उससे घटाया जा सकता है एवं संपत्ति के शेष जीवन से घटाया जा सकता है, एवं अन्य मामलों में, उद्यम के वित्तीय विवरणों में "विदेशी मुद्रा मौद्रिक मद अंतरण खाता" में जमा किया जा सकता है, एवं उक्त नियमावली के पैरा 15 के उपबंधों के अनुरूप निकाले गए विनिमय अंतरों को छोड़कर ऐसी प्रत्येक अवधि में आय या व्यय मानकर ऐसी लंबी अवधि की संपत्ति या देयता की बाकी अवधि में परिशोधित किया जा सकता है।

(2) उप-पैरा (1) में संदर्भित विकल्प का प्रयोग करने के लिए, यदि परिसंपत्ति या देयता को विदेशी मुद्रा में व्यक्त किया जाता है एवं परिसंपत्ति या देयता के प्रारंभ होने की तिथि में उसकी अवधि 12 माह या उससे अधिक है तो किसी संपत्ति या देयता को लंबी अवधि की विदेशी मुद्रा मौद्रिक मद के रूप में परिभाषित किया जाएगा :

बशर्ते उद्यम द्वारा चुना गया विकल्प ऐसे विकल्प के तथ्य का एवं उस अवधि के वित्तीय विवरण में, जिसमें ऐसा विवरण चुना गया हो एवं तत्पश्चात् आने वाली प्रत्येक अवधि में परिशोधित होने के लिए शेष राशि का प्रकटीकरण करेगा जब तक कि परिशोधन हेतु कोई विनिमय अंतर शेष रहता है।

लेखा मानक 12

सरकारी अनुदानों के लिए लेखा

*(इस लेखा मानक में कुछ **मोटे तिरछे** टाइप और कुछ सीधे टाइप में व्यवस्थित पैरा सम्मिलित है, जिनका समान प्राधिकार है। मोटे तिरछे टाइप में दिये गए पैरा मुख्य सिद्धांत उपदर्शित करते हैं। इस लेखा मानक को अधिसूचना के प्रति उपाबंध के भाग क में अतंर्विष्ट साधारण अनुदेशों के संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिये।)*

[14] उक्त (ibid)

प्रस्तावना

1. यह मानक सरकारी अनुदानों के लेखा से संबंधित है। कभी-कभी सरकारी अनुदान अन्य नामों से भी पुकारे जाते हैं जैसे कि आर्थिक सहायता, रोकड़ प्रोत्साहन, शुल्क कमी आदि।

2. यह मानक निम्नलिखित पर लागू नहीं होता:

(i) वित्तीय विवरणों में बदलते मूल्यों के प्रभाव या इसी प्रकार के प्रभावों को अनुपूरक सूचना में परिलक्षित करते हुए सरकारी अनुदान के लेखा में उत्पन्न विशेष समस्याएँ;

(ii) सरकारी अनुदानों के अतिरिक्त अन्य सरकारी सहायता ;

(iii) सरकार की उद्यम के स्वामित्व में सहभागिता ।

परिभाषाएँ

3. इस मानक में निम्नलिखित शब्द विनिर्दिष्ट अर्थों में प्रयोग किये गए हैं:

3.1 सरकार, सरकारी एजेन्सी, और इसी प्रकार के निकायों चाहे वह स्थानीय, राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय हैं को निर्दिष्ट करता है।

3.2 सरकारी अनुदान सरकार द्वारा एक उद्यम को गत या भविष्य में कतिपय शर्तों के अनुपालन के लिए रोकड़ या किसी वस्तु के रूप में सहायता है। इसमें सरकारी सहायता के उस स्वरूप को नहीं लिया जाता जिस पर उचित रूप से कोई मूल्य नहीं लगाया जा सकता और सरकार के साथ वे संव्यवहार जिन्हें उद्यम के साधारण व्यापारिक संव्यवहारों से अलग नहीं किया जा सकता।

स्पष्टीकरण

4. एक उद्यम द्वारा सरकारी अनुदानों की प्राप्ति वित्तीय विवरणों की तैयारी के लिए दो कारणों से महत्वपूर्ण है। पहले, यदि सरकारी अनुदान प्राप्त किया गया है, तो इसके लिए लेखा की उचित पद्धति आवश्यक है। दूसरे, यह वांछित है कि रिपोर्टिंग अवधि में उद्यम को ऐसे अनुदान से किस सीमा तक लाभ हुआ है उसका संकेत दे। इससे उद्यम के वित्तीय विवरणों का गत अवधियों से और अन्य उद्यमों से तुलना करने में सहायता मिलती है।

सरकारी अनुदानों का लेखा प्रतिपादन

5. पूंजी विचारधारा बनाम आय विचारधारा

5.1 सरकारी अनुदानों के लेखा प्रतिपादन हेतु दो व्यापक विचारधाराओं को अपनाया जा सकता है: 'पूंजी विचारधारा' जिसमें अनुदान को अंशधारक निधि का भाग माना जाता है और आय विचारधारा जिसमें अनुदान को एक या अधिक अवधियों के दौरान आय लिया जाता है।

5.2 जो लोग 'पूंजी विचारधारा' के समर्थक हैं वे निम्नलिखित तर्क देते हैं:

(i) कई सरकारी अनुदान प्रवर्तक के अंशदान की प्रकृति के होते हैं अर्थात् उन्हें एक उद्यम में कुल विनिधान के संबंध में या उसे कुल पूंजीगत परिव्यय के प्रति अंशदान की तरह दिया जाता है और, इस प्रकार के अनुदान के मामले में साधारणतया किसी पुनर्भुगतान की आवश्यकता नहीं होती। इसलिए उन्हें सीधे ही अंशधारक निधि में क्रेडिट कर दिया जाता है।

(ii) सरकारी अनुदान को लाभ और हानि के विवरण में अभिज्ञात करना अनुपयुक्त होगा क्योंकि उन्हें अर्जित नही किया जाता किन्तु ये बिना किसी संबंधित लागत के सरकार द्वारा प्रोत्साहन के रूप में प्रदान किये जाते हैं।

5.3 आय विचारधारा के पक्ष में निम्नलिखित तर्क दिये जाते हैं:

(i) सरकारी अनुदान दुर्लभ ही आनुग्रहिक होते हैं। उद्यम इन्हें इनसे जुड़ी हुई शर्तों का अनुपालन करके और इसकी परिकल्पित दायित्वों को पूरा करके अर्जित करता है। अतः इनको आय में लेना चाहिए और उससे जुड़ी लागत से मिलान करना चाहिये जिसकी प्रतिपूर्ति के लिए अनुदान दिया जाता है।

(ii) जैसे आयकर और अन्य कर आय के प्रति प्रभारित होते है यह तर्क पूर्ण होगा कि सरकारी अनुदान जो कि राजवित्तीय नीतियों का ही एक भाग है, को भी लाभ और हानि के विवरण में लिया जाये।

(iii) यदि अनुदानों को अंशधारक निधि में क्रेडिट करते हैं तो अनुदान के लेखा प्रतिपादन और इस अनुदान से जुड़े व्ययों के लेखा प्रतिपादन के बीच कोई सह संबंध नहीं बन पाएगा ।

5.4 सामान्यतः यह उपयुक्त समझा जाता है कि सरकारी अनुदान के लिए लेखा प्रतिपादन संबंधित अनुदान की प्रकृति पर आधारित होना चाहिये। जिन अनुदानों में प्रवर्तकों के अंशदान जैसी विशेषताएँ हों उनको अंशधारकों के निधि के भाग के रूप में लिया जाना चाहिये । अन्य अनुदानों के मामलों में आय विचारधारा को उपयुक्त माना जा सकता है।

5.5 आय विचारधारा के लिए यह आधारभूत है कि सरकारी अनुदानों को संबंधित लागतों से मिलाने के लिए आवश्यक अवधियों के दौरान व्यवस्थित एवं विवेकपूर्ण आधार पर लाभ और हानि के विवरण में अभिज्ञात किया जाये। प्राप्ति आधार पर सरकारी अनुदानों का आय के रूप में अभिज्ञान लेखा की प्रोद्भवन मान्यता के अनुरूप नहीं है। (देखें लेखा मानक 1, *लेखा नीतियों का प्रकटन*)।

5.6 अधिकांश मामलों में, सरकारी अनुदान से संबंधित लागतों या व्ययों के अभिज्ञान की अवधियाँ तत्परता से निर्धारणीय होती हैं अतः विनिर्दिष्ट व्ययों के रूप में मान्य अनुदानों को उसी अवधि की आय में लिया जाता है जिसमें कि संबंधित व्यय लिए जाते हैं।

6. सरकारी अनुदानों का अभिज्ञान

6.1 उद्यम को प्राप्त सरकारी अनुदान लेखों में सम्मिलित करने हेतु वहाँ विचारणीय होते हैं:

(i) जहाँ इस बात का उचित आश्वासन हो कि उद्यम उनसे जुड़ी शर्तों का अनुपालन करेगा ; और

(ii) जहाँ ऐसे लाभ उद्यम द्वारा अर्जित किये जा चुके हों और यह निश्चित हो कि अन्ततः संग्रहण किया जाएगा।

केवल अनुदान की प्राप्ति इसका आवश्यक निर्णायक साक्ष्य नहीं है कि अनुदान से जुड़ी शर्तें पूरी हो चुकी हैं या पूरी कर दी जायेंगी।

6.2 विवेकपूर्ण आधार पर अनुमानित ऐसे अर्जित लाभों की उपयुक्त रकम को वर्ष के लिए आय में क्रेडिट कर दिया जाता है यद्यपि ऐसे लाभों की वास्तविक रकम संबंधित लेखा अवधि की समाप्ति पश्चात् तय और प्राप्त हो सकेगी।

6.3 सरकारी अनुदान से संबंधित आकस्मिकताएँ जो अनुदान के अभिज्ञान के बाद उत्पन्न होती हैं उनका लेखा मानक 4, *आकस्मिकताएँ और तुलन पत्र की तारीख के पश्चात् होने वाली घटनाएँ*[15], के अनुसार प्रतिपादन किया जाता है।

6.4 कतिपय परिस्थितियों में सरकारी अनुदान किसी विशिष्ट व्यय के प्रति प्रोत्साहन के बजाए तुंरत वित्तीय सहायता देने के प्रयोजन से प्रदान किये जाते हैं। ऐसे अनुदान किसी व्यक्तिगत उद्यम तक ही सीमित रह सकते हैं और उद्यमों के सम्पूर्ण वर्ग के लिए उपलब्ध नहीं हो सकते। यह परिस्थितियाँ अनुदान को उस अवधि में जिसमें उद्यम इसे प्राप्त करने के योग्य होता है एक असाधारण मद के रूप में यदि उचित हो, आय में ले जाने की अपेक्षा कर सकती हैं (देखिए लेखा मानक 5, *अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि पूर्वाविधि मदें और लेखा नीतियों में परिवर्तन*)।

6.5 सरकारी अनुदान पूर्व लेखा अवधि में हुई हानियों या उपगत किए गए व्ययों की क्षति पूर्ति के लिए उद्यम को प्राप्य हो सकते हैं। ऐसे अनुदान उस अवधि के आय विवरण में अभिज्ञात किए जाते हैं जिसमें यह असाधारण मद के रूप में, यदि उचित हो तो प्राप्य हो सकते हैं। (देखिए लेखा मानक 5, *अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि पूर्वविधि या मदें और लेखा नीतियों में परिवर्तन*)।

7. गैर-मौद्रिक सरकारी अनुदान

7.1 सरकारी अनुदान गैर-मौद्रिक आस्तियों का रूप ले सकते हैं जैसे कि रियायती दरों पर दी गई भूमि और अन्य संसाधन। इन परिस्थितियों में ऐसी आस्तियों को सामान्यतः उनकी अर्जित लागत पर दिखाया जाता है। बिना किसी लागत के प्राप्त गैर-मौद्रिक आस्तियों को नाममात्र मूल्य पर अभिलिखित किया जाता है।

---

[15] लेखा मानक 4 के सभी पैरा, जो आकस्मिकताओं से संबंधित है, केवल उस सीमा तक लागू होते हैं, जहाँ तक वे केन्द्रीय सरकार द्वारा विहित लेखा मानकों के अन्तर्गत नहीं आते हैं, उदाहरण के लिए, वित्तीय आस्तियों के ह्रास, जैसे कि प्राप्य का ह्रास (सामान्यतः डूबंत और शंकास्पद ऋण के उपबन्ध रूप में ज्ञात है) लेखा मानक 4 द्वारा शासित होते हैं।

8. विशिष्ट स्थिर आस्तियों से संबंधित अनुदानों का प्रस्तुतिकरण

8.1 विशिष्ट स्थिर आस्तियों से संबंधित अनुदान वे सरकारी अनुदान हैं जिसकी प्राथमिक शर्त यह है कि इन्हें प्राप्त करने के लिए योग्य उद्यम उन आस्तियों का क्रय करे, निर्माण करे या अन्यथा अर्जन करें। आस्ति के प्रकार या दशा या उन अवधियों जिसमें इन्हें अर्जित करना या रखा जाना है, को सीमित करती हुई अन्य शर्तें भी जोड़ी जा सकती हैं।

8.2 वित्तीय विवरण में विशिष्ट स्थिर आस्तियों से संबंधित अनुदानों (या अनुदानों के उचित भाग) के प्रस्तुतिकरण के लिए दो आनुकल्पिक पद्धतियाँ स्वीकार्य है।

8.3 पहली पद्धति के अन्तर्गत आस्ति के पुस्तक मूल्य निकालने के लिए अनुदान को संबंधित आस्ति के सकल मूल्य से कटौती के रूप में दिखाया जाता है। इस तरह से अनुदान को कम अवक्षयण व्यय के द्वारा अवक्षयी आस्ति के उपयोगी जीवन के दौरान लाभ और हानि विवरण में अभिज्ञात किया जाता है। जहाँ अनुदान आस्ति की सम्पूर्ण या लगभग सम्पूर्ण लागत के बराबर होता है वहाँ आस्ति को तुलन पत्र में नाममात्र मूल्य पर दिखाया जाता है।

8.4 दूसरी पद्धति के अनुसार, अवक्षयी आस्तियों से संबंधित अनुदानों को आस्थगित आय के रूप में लिया जाता है जिसे आस्ति के उपयोगी जीवन के दौरान व्यवस्थित और विवेकपूर्ण आधार पर लाभ और हानि के विवरण में अभिज्ञात किया जाता है। आय के प्रति ऐसा आबंटन उन अवधियों और अनुपातों में किया जाता है जिनमें संबंधित आस्तियों पर अवक्षयण लगाया जाता है। गैर-अवक्षयी आस्तियों से संबंधित अनुदानों को इस पद्धति के अनुसार पूंजीगत आरक्षिति में क्रेडिट कर दिया जाता है क्योंकि सामान्यतः इन आस्तियों के संबंध में आय पर कोई प्रभार नहीं होता तथापि यदि गैर-अवक्षयी आस्तियों से संबंधित अनुदान के लिए कतिपय बाध्यताओं को पूर्ण करना अपेक्षित हो तो अनुदानों को उसी अवधि में आय में क्रेडिट किया जाता है जिसमें इस प्रकार की बाध्यताओं की लागत आय के प्रति प्रभारित की जाती है। आस्थगित आय लाभ और हानि के विवरण में विनियोजित होने तक तुलनपत्र में उपयुक्तता से दिखायी जाती है।

8.5 आस्तियों के क्रय और इससे संबंधित अनुदान की प्राप्तियां उद्यम के रोकड़ प्रवाह में व्यापक उतार-चढ़ाव कारित कर सकती हैं। इस कारण से और आस्तियों में सकल विनिधान दिखाने के लिए, इस उतार-चढ़ाव को वित्तीय स्थिति में परिवर्तन दिखाने वाले विवरण में अलग मद के रूप में दिखाया जाता है चाहे तुलनपत्र में प्रस्तुत करने के लिए संबंधित आस्ति में से अनुदान घटा कर दिखाएं जाएँ या नहीं।

9. राजस्व से सम्बंधित अनुदानों का प्रस्तुतिकरण

9.1 राजस्व सम्बन्धित अनुदानों को कई बार लाभ और हानि के विवरण में क्रेडिट के रूप में दिखाया जाता है या तो पृथकतः या एक साधारण शीर्ष के अधीन जैसे कि 'अन्य आय'। आनुकल्पिक रूप से इनको सम्बंधित व्यय में से घटा कर दिखाया जाता है।

9.2 पहली पद्धति के समर्थक दावा करते हैं कि आय और व्यय मदों को शुद्ध मूल्य के रूप में दिखाना अनुचित है और अनुदानों को व्यय से अलग करने से इनकी उन अन्य व्ययों के साथ, जो अनुदान से सम्बंधित नहीं होते है, तुलना करना सरल हो जाता है। दूसरी पद्धति के लिए यह तर्क दिया जाता है कि यदि अनुदान न होते तो संभवतः उद्यम इन व्ययों को उपगत न करता इसलिए बिना अनुदान के घटाए व्ययों की प्रस्तुति भ्रामक हो सकती है।

10. प्रवर्तकीय अंशदान की प्रकृति के अनुदानों का प्रस्तुतिकरण

10.1 जहाँ सरकारी अनुदान प्रवर्तकीय अंशदान की प्रकृति के होते हैं अर्थात् उद्यम के कुल विनिधान के संदर्भ में दिए जाते हैं या कुल पूंजीगत परिव्यय के प्रति अंशदान के रूप में दिये जाते हैं उदाहरणतः केन्द्रीय विनिधान आर्थिक सहायता योजना और उनके किसी प्रकार की पुर्नसंदाय की आशा नहीं की जाती, उन अनुदानों का पूँजीगत आरक्षिति के रूप में प्रतिपादन किया जाता है जिसको न तो लाभांश के रूप में वितरित किया जा सकता है और न ही आस्थगित आय माना जा सकता है।

11. सरकारी अनुदानों की वापसी

11.1 कभी-कभी सरकारी अनुदान वापसी योग्य बन जाते हैं क्योंकि उनसे जुड़ी शर्तों को पूरा नहीं किया जाता। सरकारी अनुदान जो वापसी योग्य बन जाता हैं उसका असाधारण मद के रूप में प्रतिपादन किया जाता है (देखिए लेखा मानक 5, *अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि, पूर्वावधि मदें, और लेखा नीतियों में परिवर्तन*)।

11.2 राजस्व से संबंधित किसी अनुदान के संबंध में वापसी योग्य रकम का पहले उस अनुदान के लिए शेष अपरिशोधित आस्थगित क्रेडिट के प्रति प्रयोग किया जाता है। उस सीमा तक जब वापसी योग्य रकम इस प्रकार आस्थगित क्रेडिट से अधिक है या जहाँ कोई आस्थगित क्रेडिट विद्यमान नहीं है, रकम को लाभ और हानि विवरण में प्रभारित किया जाता है।

11.3 एक विशिष्ट स्थिर आस्ति से संबंधित सरकारी अनुदान के सम्बंध में वापसी योग्य रकम को आस्ति के पुस्तक मूल्य को वापसी योग्य रकम से बढ़ा कर या पूंजीगत आरक्षिति या आस्थगित आय शेष को जैसा उपयुक्त हो इस रकम से कम करके अभिलिखित किया जाता है। पहले अनुकल्प में अर्थात् जहाँ पर आस्ति के पुस्तक मूल्य को बढ़ाया गया है, अवक्षयण को आस्ति के शेष उपयोगी जीवन के दौरान भविष्यलक्षी रूप से पुनरीक्षित पुस्तक मूल्य पर लगाया जाता है।

11.4 जब प्रवर्तक के अंशदान की प्रकृति के अनुदान इससे जुड़ी हुई निश्चित शर्तों के पूरा न करने पर सरकार के प्रति पूर्णतः या अंशतः वापसी योग्य बन जायें तो सरकार द्वारा वसूली योग्य रकम को पूंजीगत आरक्षिति में से घटा दिया जाता है।

12. प्रकटन

12.1 निम्नलिखित प्रकटन उपयुक्त हैं:

(i) वित्तीय विवरणों में प्रस्तुतिकरण की पद्धतियों सहित सरकारी अनुदानों के लिए अपनाई गई लेखा नीति;

(ii) रियायती दर पर या निर्मूल्य दी गई गैर मौद्रिक आस्तियों के अनुदानों सहित वित्तीय विवरणों में अभिज्ञात सरकारी अनुदानों की प्रकृति और रकम।

मुख्य सिद्धान्त

13. सरकारी अनुदानों को तब तक अभिज्ञात नहीं करना चाहिए जब तक इस बात का उचित आश्वासन न हो कि

(i) उद्यम उन अनुदानों से जुड़ी शर्तों का अनुपालन करेगा और

(ii) अनुदान प्राप्त होंगे।

14. विशिष्ट स्थिर आस्तियों से संबंधित सरकारी अनुदानों को, संबंधित आस्तियों के पुस्तकीय मूल्य निकालने के लिए, उनके सकल मूल्य से कटौती के रूप में दर्शाते हुए तुलन पत्र में प्रस्तुत करना चाहिये। जहाँ किसी विशिष्ट आस्ति से सम्बंधित अनुदान आस्ति की लागत की पूरी रकम या वस्तुतः पूरी रकम के बराबर हो जाये तो आस्ति को तुलन पत्र में नाममात्र मूल्य पर दर्शाया जाना चाहिये। आनुकल्पिक तौर पर, अवक्षयी स्थिर आस्तियों से सम्बंधित सरकारी अनुदान अस्थगित आय माने जा सकते हैं जिनको लाभ और हानि विवरण में आस्ति के उपयोगी जीवन के दौरान व्यवस्थित और विवेकपूर्ण आधार पर अभिज्ञात करना चाहिये अर्थात् ऐसे अनुदानों को उन अवधियों के दौरान और उस अनुपात में आय के प्रति क्रेडिट किया जाना चाहिए जिसमें उन आस्तियों पर अवक्षयण लगाया जाता है। गैर अवक्षयी आस्तियों से सम्बंधित अनुदान इस पद्धति के अन्तर्गत पूंजीगत आरक्षिति में क्रेडिट किए जाने चाहिये। लेकिन यदि किसी गैर-अवक्षयी आस्ति से संबंधित अनुदान कुछ बाध्यताओं को पूरा किये जाने की अपेक्षा करें तो अनुदान को उसी अवधि के दौरान आय के प्रति क्रेडिट किया जाना चाहिए जिसके दौरान ऐसी बाध्यताओं को पूरा करने की लागत आय के प्रति प्रभारित की जाती है। आस्थगित आय शेष को वित्तीय विवरणों में पृथकतः प्रकट किया जाना चाहिये।

15. राजस्व से संबंधित सरकारी अनुदानों को उन अवधियों के दौरान लाभ और हानि के विवरण में व्यवस्थित आधार पर अभिज्ञात करना चाहिये जो उन संबंधित लागतों जिनकी ये अनुदान क्षतिपूर्ति करना चाहते हैं, का मिलान करने लिए आवश्यक है। ऐसे अनुदानों को 'अन्य आय' के अधीन पृथकतः या संबंधित व्यय की रिपोर्टिंग में घटा कर दिखाया जाना चाहिए।

16. प्रवर्तकीय अंशदान की प्रकृति के सरकारी अनुदान पूंजीगत आरक्षिति में क्रेडिट किये जाने चाहिए और अंशधारकों की निधि का भाग माना जाना चाहिये।

17. गैर-मौद्रिक आस्तियों के रूप में सरकारी अनुदान जो रियायती दर पर दिए गए हैं उनका अर्जन लागत पर लेखाबद्ध करना चाहिए। यदि गैर-मौद्रिक आस्ति बिना किसी लागत के दी जाती है तो उसको नाममात्र मूल्य पर अभिलिखित किया जाना चाहिये।

IndiaCode

18. किसी पूर्व लेखा अवधि में उपगत किए गए व्ययों या हानियों की क्षतिपूर्ति के लिए या बिना किसी अतिरिक्त सम्बंधित लागत के उद्यम को तुरंत वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए प्राप्य सरकारी अनुदान को उस अवधि के लाभ हानि-विवरण में अभिज्ञात और प्रकट करना चाहिए जिसमें वे प्राप्य हों, यदि उपयुक्त हो तो एक असाधारण मद के रूप में। (देखिए लेखा मानक 5 अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि, पूर्वाविधि मदें और लेखा नीतियों में परिवर्तन)।

19. अनुदान के अभिज्ञान के पश्चात् उत्पन्न सरकारी अनुदान से संबंधित आकस्मिकता का लेखा मानक 4, आकस्मिकताएँ और तुलन पत्र की तारीख के पश्चात् होने वाली घटनाएँ[16], के अनुसार प्रतिपादन करना चाहिए।

20. सरकारी अनुदान जो कि वापसी योग्य बन जाते हैं उनको एक असाधारण मद के रूप में लेखाबद्ध करना चाहिए (देखिए लेखा मानक 5, अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि, पूर्वविधि मदें और लेखा नीतियों में परिवर्तन)।

21. राजस्व से संबंधित किसी अनुदान के संबंध में वापसी योग्य रकम का पहले उस अनुदान के लिए शेष अपरिशोधित आस्थगित क्रेडिट के प्रति प्रयोग करना चाहिये। उस सीमा तक जब वापसी योग्य रकम इस प्रकार आस्थगित क्रेडिट से अधिक है या जहाँ कोई आस्थगित क्रेडिट विद्यमान नहीं है, रकम को लाभ और हानि विवरण में प्रभारित करना चाहिये। एक विशिष्ट स्थिर आस्ति से संबंधित सरकारी अनुदान के सम्बंध में वापसी योग्य रकम को आस्ति के पुस्तक मूल्य को वापसी योग्य मूल्य से बढ़ा कर या पूंजीगत आरक्षिति या आस्थगित आय शेष जैसा उपयुक्त हो को इस रकम से कम करके अभिलिखित करना चाहिये। पहले अनुकल्प में अर्थात् जहाँ पर आस्ति के पुस्तक मूल्य को बढ़ाया गया है, अवक्षयण को आस्ति के शेष उपयोगी जीवन के दौरान भविष्यलक्षी रूप से पुनरीक्षित पुस्तक मूल्य पर लगाया जाना चाहिए।

22. प्रवर्तकीय अंशदान की प्रकृति के सरकारी अनुदान जो वापसी योग्य बन जाते हैं, पूँजीगत आरक्षिति से घटाये जाने चाहिए।

प्रकटन

23. निम्नलिखित का प्रकटन होना चाहिये:

(i) *वित्तीय विवरणों में प्रस्तुतिकरण की पद्धतियों सहित सरकारी अनुदानों के लिए अपनाई गयी लेखा नीति ;*

(ii) *रियायती दर पर या निर्मूल्य दी गई गैर-मौद्रिक आस्तियों के अनुदानों सहित वित्तीय विवरणों में अभिज्ञात सरकारी अनुदानों की प्रकृति और रकम।*

लेखा मानक 13

विनिधानों के लिए लेखा

(इस लेखा मानक में कुछ मोटे तिरछे टाइप और कुछ सीधे टाइप में व्यवस्थित पैरा सम्मिलित है, जिनका समान प्राधिकार है। मोटे तिरछे टाइप में दिये गए पैरा मुख्य सिद्धांत उपदर्शित करते हैं। इस लेखा मानक को अधिसूचना के प्रति उपाबंध के भाग क में अतंर्विष्ट साधारण अनुदेशों के संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिये।)

प्रस्तावना

1. यह मानक उद्यमों के वित्तीय विवरणों में विनिधानों के लिए लेखा और सम्बंधित प्रकटन अपेक्षाओं से सम्बंधित है[17]।

2. यह मानक निम्नलिखित से सम्बंधित नहीं है:

(क) विनिधानों पर अर्जित उन ब्याजों, लाभांशों और किरायों के अभिज्ञान के लिए आधार जो राजस्व अभिज्ञान पर लेखा मानक 9 में सम्मिलित है ;

---

[16] देखें फुटनोट 15

[17] व्यापारिक स्टॉक (अर्थात् कारबार के सामान्य प्रचालन में विक्रय के लिए) के रूप में धारण किए गए शेयर, ऋण-पत्र और अन्य प्रतिभूतियाँ 'विनिधान' नहीं हैं, जो कि इस मानक में परिभाषित हैं। यद्यपि, वह तरीका, जिसमें वे वित्तीय विवरणों में लेखाबद्ध तथा प्रकट की जाती हैं चालू विनिधानों के संदर्भ में लागू तरीके के समान है। तदनुसार, इस मानक के उपबन्ध, जब तक वे चालू विनिधानों से सम्बंधित होते हैं उपयुक्त संशोधनों के साथ जो कि इस मानक में विनिर्दिष्ट हैं, व्यपारिक स्टॉक के रूप में धारण किए गए शेयरों, ऋणपत्रों और अन्य प्रतिभूतियों के प्रति भी लागू हैं।

(ख) प्रचालन या वित्तीय पट्टें ;

(ग) सेवा निवृत्ति प्रसुविधा योजनाओं के और जीवन बीमा उद्यमों के विनिधान ; और

(घ) म्युचुअल फंड और उद्यम पूंजी निधि और/या सम्बंधित आस्ति प्रबंध कम्पनियाँ, केन्द्रीय या राज्य सरकार अधिनियम के अंतर्गत गठित या कम्पनी अधिनियम, 2013 के अधीन इस प्रकार घोषित बैंक और लोक वित्तीय संस्थाएँ।

परिभाषाएँ

3. इस मानक में निम्नलिखित शब्द विनिर्दिष्ट अर्थों में प्रयुक्त किए गए है:

3.1 <u>विनिधान</u> उद्यम द्वारा, लाभांशों, ब्याज तथा किरायों से आय अर्जित करने के लिए, पूँजी वृद्धि के लिए या विनिधान कर रहे उद्यम के प्रति अन्य लाभों के लिए, धारण की गई आस्तियाँ हैं। व्यापारिक स्टॉक के रूप में धारण की गई आस्तियाँ 'विनिधान' नही हैं।

3.2 <u>चालू विनिधान</u> एक ऐसा विनिधान है जो अपनी प्रकृति से तत्परता से वसूली योग्य है और यह विनिधान की तारीख से लेकर, एक वर्ष से अधिक समय के लिए धारण नहीं किया जाता है।

3.3 <u>दीर्घकालिक विनिधान</u> चालू विनिधान के अतिरिक्त अन्य विनिधान है।

3.4 <u>विनिधान सम्पत्ति</u> उन भूमि या भवनों में विनिधान हैं जो विनिधाता उद्यम द्वारा सारभूत रूप से उपयोग के लिए या उनके प्रचालनों में उपयोग के लिए धारण नहीं की जाती हैं।

3.5 <u>उचित मूल्य</u> वह रकम है जिसके लिए आस्ति को आम्स लैंग्थ संव्यवहार में सज्ञान, इच्छुक क्रेता और सज्ञान, इच्छुक विक्रेता के बीच विनिमय किया जा सके। उपयुक्त परिस्थितियों में, बाजार मूल्य या शुद्ध वसूली योग्य मूल्य, उचित मूल्य का साक्ष्य प्रदान करता है।

3.6 <u>बाजार मूल्य</u> खुले बाजार में विनिधान के विक्रय से प्राप्त होने योग्य रकम है जो, व्ययन पर या उससे पहले उपगत किए जाने वाले आवश्यक व्ययों को घटाकर मिले।

स्पष्टीकरण

विनिधानों के प्ररूप

4. उद्यम विभिन्न कारणों के लिए विनिधानों को धारण करते हैं। कुछ उद्यमों के लिए, विनिधान क्रियाकलाप प्रचालनों का एक महत्वपूर्ण तत्व है और उद्यम की निष्पादनता का निर्धारण विस्तृत रूप से या एकमात्र रूप से इस क्रियाकलाप के रिपोर्ट किए गए परिणामों पर निर्भर होता है।

5. कुछ विनिधानों का कोई भौतिक अस्तित्व नही होता और वे केवल प्रमाणपत्रों या समरूप दस्तावेजों द्वारा प्रस्तुत किए जाते हैं (उदाहरण के लिए, शेयर) जबकि अन्य भौतिक रूप में उपस्थित होते है (उदाहरण के लिए, भवन)। एक विनिधान की प्रकृति, अल्पकालिक या दीर्घकालिक ऋण या व्यापार ऋण के अतिरिक्त, धारक के प्रति देय मौद्रिक रकम को प्रस्तुत करते हुए और आमतौर पर ब्याज वाले ऋण की प्रकृति की तरह हो सकती है ; वैकल्पिक रूप से, यह एक उद्यम के परिणामों और शुद्ध आस्तियों में भाग हो सकता है, जैसे कि एक साधारण शेयर। अधिकतर विनिधान वित्तीय अधिकार का प्रतिनिधित्व करते हैं, लेकिन कुछ मूर्त होते हैं जैसे भूमि या भवनों में कुछ विनिधान।

6. कुछ विनिधानों के लिए, एक सक्रिय बाजार विद्यमान होता है जिससे एक बाजार मूल्य स्थापित किया जा सकता है। ऐसे विनिधानों के लिए साधारण तौर पर बाजार मूल्य, उचित मूल्य का सर्वोत्तम साक्ष्य प्रदान करता है। अन्य विनिधानों के लिए, एक सक्रिय बाजार विद्यमान नहीं होता और उचित मूल्य का अवधारण करने के लिए अन्य साधन प्रयोग किए जाते हैं।

विनिधानों का वर्गीकरण

7. उद्यम उन वित्तीय विवरणों को प्रस्तुत करता है जो स्थिर आस्तियों, विनिधानों और चालू आस्तियों को पृथक वर्गों में वर्गीकृत करते हैं। विनिधान दीर्घकालिक विनिधानों और चालू विनिधानों में वर्गीकृत होते हैं। चालू विनिधान चालू आस्तियों की प्रकृति के होते हैं, यद्यपि सामान्य व्यवहार में उन्हें विनिधानों में सम्मिलित किया जा सकता है।[18]

[18] व्यवसाय के सामान्य प्रचालन में विक्रय के लिए धारण किए गए शेयर, ऋणपत्र तथा अन्य प्रतिभूतियाँ, "चालू आस्तियों' के शीर्षक के अंतर्गत 'व्यापार स्टॉक' के रूप में प्रकट किए जाते है।

8. चालू विनिधानों के अतिरिक्त अन्य विनिधान, दीर्घकालिक विनिधानों के रूप में वर्गीकृत किए जा सकते है, यद्यपि वे तत्परता से बेचने योग्य हो सकते हैं।

विनिधानों की लागत

9. विनिधान की लागत में अर्जन प्रभारों कों सम्मिलित किया जाता है जैसे दलाली, फीस और शुल्क।

10. यदि एक विनिधान शेयरों या अन्य प्रतिभूतियों के निर्गमन द्वारा पूर्णतः या अंशतः अर्जित किया जाता है तो, अर्जन लागत, निर्गमित प्रतिभूतियों का उचित मूल्य होता है (जो, उपयुक्त स्थितियों में, निर्गमन कीमत द्वारा दर्शाया जा सकता है, जिसे कि कानूनी प्राधिकारियों द्वारा निर्धारित किया गया है)। उचित मूल्य अनिवार्य नहीं कि निर्गमित की गई प्रतिभूतियों के अंकित या सम मूल्य के बराबर हो।

11. यदि एक विनिधान, अन्य आस्ति के विनिमय या अंशतः विनिमय में अर्जित किया जाता है तो, विनिधान की अर्जन लागत, त्यागी गयी आस्ति के उचित मूल्य के संदर्भ में निर्धारित होती है। अर्जित विनिधान के उचित मूल्य पर ध्यान देना उपयुक्त हो सकता है यदि यह अधिक स्पष्टतः साक्ष्य हो।

12. विनिधान के संबंध में प्राप्य ब्याज लाभांश और किराए, विनिधानों पर प्रतिफल के रूप में आय माने जाते हैं। यद्यपि कुछ परिस्थितियों में, ऐसे प्रवाह, लागत की वसूली प्रस्तुत करते है और आय का भाग नहीं बनते। उदाहरण के लिए, जब असंदत ब्याज, ब्याज प्रदान कर रहे विनिधान के अर्जन से पहले प्रोदभूत होता है और इसलिए इसे विनिधान के लिए अदा की गई कीमत में शामिल किया जाता है तो, ब्याज की उत्तरवर्ती प्राप्ति, पूर्व-अर्जन तथा पश्च- अर्जन अवधियों के बीच आबंटित होती है ; पूर्व-अर्जन भाग लागत से घटाया जाता है। जब साधारण शेयर पर लाभांश, पूर्व-अर्जन लाभों से घोषित होते हैं तो, एक समरूप प्रतिपादन लागू हो सकता है। यदि स्वच्छंद आधार के अतिरिक्त ऐसा आबंटन करना कठिन होता है तो, आमतौर पर, विनिधान की लागत प्राप्य लाभाशों द्वारा केवल तभी घटाई जाती है जब वे स्पष्टतः लागत के एक भाग की वसूली का प्रतिनिधित्व करें।

13. जब आफर किए गए अधिकाराश्रित शेयर प्रतिश्रुत होते हैं तो, अधिकाराश्रित शेयरों की लागत को मूल धारिता की कैरिंग रकम में जोड़ा जाता है। यदि अधिकार प्रतिश्रुत नही बल्कि बाजार में बेचे जाते हैं तो बिक्री प्राप्तियाँ, लाभ और हानि विवरण में ले जाई जाती हैं। यद्यपि, जहाँ विनिधान अधिकार सहित आधार, पर अर्जित किए जाते हैं और विनिधानों का बाजार मूल्य उनके अधिकार रहित बनने के तुरंत बाद, उस लागत से कम होता है, जिस लागत पर विनिधान अर्जित किए गए थे, तो अधिकारों की बिक्री प्राप्तियों को ऐसे विनिधान की कैरिंग रकम को बाजार मूल्य तक कम करने के लिए लागू करना उपयुक्त हो सकता है।

विनिधानों की कैरिंग रकम

चालू विनिधान

14. चालू विनिधानों के लिए कैरिंग रकम लागत और उचित मूल्य में से जो कम हो वह होती है। उन विनिधानों के संदर्भ में जिनके लिए सक्रिय बाजार विद्यमान होता है, बाजार मूल्य आमतौर पर उचित मूल्य का सर्वोत्तम साक्ष्य प्रदान करता है। लागत और उचित मूल्य में से कम मूल्य पर चालू विनिधानों का मूल्यांकन, तुलनपत्र में व्यक्त होने वाली कैरिंग रकम को अवधारित करने के लिए विवेकशील तरीका प्रदान करता है।

15. समग्र (या सार्वभौमिक) आधार पर चालू विनिधानों का मूल्यांकन उपयुक्त नही समझा जाता। कभी-कभी, एक उद्यम का सम्बंन्ध प्रत्येक व्यक्तिगत विनिधान की बजाए सम्बंधित चालू विनिधानों के वर्ग के मूल्य के साथ हो सकता है और तदनुसार, विनिधान वर्ग के आधार पर (अर्थात् साधारण शेयर, अधिमानी शेयर, संपरिवर्तनीय ऋणपत्र) गणना की गई लागत और उचित मूल्य में से कम मूल्य पर ले जाया जाता है। यद्यपि, व्यक्तिगत रूप से विनिधानों को लागत और उचित मूल्य में से कम मूल्य पर लेने की पद्धति अधिक विवेकशील और उपयुक्त है।

16. चालू विनिधानों के लिए, उचित मूल्य में कोई भी कमी और ऐसी कमी का कोई भी उलटाव लाभ और हानि के विवरण में शामिल किया जाता है।

दीर्घकालिक विनिधान

17. दीर्घकालिक विनिधान आमतौर पर लागत पर लिए जाते हैं। यद्यपि, जब दीर्घकालीन विनिधान के मूल्य में अस्थायी गिरावट के अतिरिक्त गिरावट होती है, तो गिरावट को अभिज्ञात करने के लिए, कैरिंग रकम घटायी जाती है। विनिधान के मूल्य के सूचक इसके बाजार मूल्य, विनिधानगृहीता की आस्तियों और परिणामों तथा विनिधान के अपेक्षित नकदी प्रवाहों के संदर्भ में प्राप्त किए जाते हैं। विनिधानगृहीता में विनिधानकर्ता के हिस्से के प्रकार तथा उसका परिमाण भी ध्यान में रखा जाता है। विनिधानगृहीता द्वारा वितरणों पर और विनिधानकर्ता द्वारा व्ययन पर प्रतिबंध, विनिधान के प्रति चिन्हित मूल्य को प्रभावित कर सकते हैं।

18. दीर्घकालिक विनिधान आमतौर पर विनिधान कर रहे उद्यम के प्रति व्यक्तिगत महत्व के होते हैं। इसीलिए, दीर्घकालिक विनिधानों की कैरिंग रकम, व्यक्तिगत विनिधान के आधार पर अवधारित की जाती है।

19. जहाँ दीर्घकालिक विनिधानों की कैरिंग रकम में अस्थायी गिरावट के अतिरिक्त कोई गिरावट होती है, तो परिणामस्वरूप कैरिंग रकम में आई कमी लाभ और हानि विवरण के प्रति प्रभारित की जाती है। जब विनिधान के मूल्य में बढ़ोतरी होती है या यदि इस कमी के आने के कारण विद्यमान नही रहते तो, कैरिंग रकम में कमी को उलट दिया जाता है।

विनिधान सम्पत्तियाँ

20. एक निवेश संपत्ति का लेखा लेखा मानक 10, *संपत्ति, संयंत्र और उपस्कर*, में यथानिर्धारित लागत मॉडल के अनुसरण में किया जाता है। एक सहकारी समीति या कम्पनी में किसी भी ऐसे शेयरों की लागत जिसकी धारिता विनिधान सम्पत्ति को धारण करने के अधिकार से प्रत्यक्षतः सम्बंधित होती है विनिधान सम्पत्ति की कैरिंग रकम में जोड़ी जाती है।

विनिधानों का व्ययन

21. विनिधान के व्ययन पर, व्ययों की कटौती के बाद कैरिंग रकम और व्ययन प्राप्तियों के बीच के अंतर को लाभ और हानि के विवरण में अभिज्ञात किया जाता है।

22. जब एक व्यक्तिगत विनिधान की धारिता के एक भाग का व्ययन किया जाता है तो उस भाग को आबंटित होने वाली कैरिंग रकम, कुल धारण किए गए विनिधान की औसत कैरिंग रकम के आधार पर निर्धारित की जाती है।[19]

विनिधानों का पुनर्वर्गीकरण

23. जब दीर्घकालिक विनिधान चालू विनिधानों के रूप में पुनः वर्गीकृत किए जाते है तो अंतरण, अंतरण की तारीख पर लागत और कैरिंग रकम में से कम मूल्य पर किए जाते हैं।

24. जब विनिधान, चालू विनिधानों से दीर्घकालिक विनिधानों में पुनः वर्गीकृत होते हैं तो, अंतरण की तारीख को लागत और उचित मूल्य में से कम मूल्य पर होता है।

प्रकटन

25. वित्तीय विवरणों में विनिधान के संबंध में निम्नलिखित प्रकटीकरण उपयुक्त हैं:

(क) विनिधानों की कैरिंग रकम निर्धारित करने के लिए लेखा नीतियाँ ;

(ख) निम्नलिखित के लिए लाभ और हानि विवरण में शामिल की गई रकमें:

(i) दीर्घकालिक या चालू विनिधान से ऐसी आय को पृथकतः दर्शाते हुए विनिधान पर ब्याज, लाभांश (समनुषंगी कम्पनियों[20] से लाभाशों को पृथकतः दर्शाते हुए) और किराए। सकल आय को व्यक्त करना चाहिए, स्रोत पर आयकर कटौती की रकम को, संदत्त अग्रिम करों में शामिल किया जाता है;

(ii) चालू विनिधानों के व्ययन पर लाभ और हानियाँ और ऐसे विनिधान की कैरिंग रकम में परिवर्तन;

---

[19] व्यापारिक स्टॉक के रूप में धारण किए गए शेयरों, ऋणपत्रों तथा अन्य प्रतिभूतियों के संदर्भ में व्ययन किए गए स्टॉक की लागत उपयुक्त लागत सूत्र (उदाहरण के लिए, पहले आना पहले जाना, औसत लागत आदि) को लागू करते हुए अवधारित की जाती है। यह लागत सूत्र, सूचीबद्ध समान के मूल्यांकन के संदर्भ में लेखा मानक 2 में वर्णित सूत्रों के समान है।

[20] लेखा मानक 21 समेकित वित्तीय विवरण में यथा परिभाषित

(iii) दीर्घकालीक विनिधानों के व्ययन पर लाभ और हानियाँ और ऐसे विनिधानों की कैरिंग रकम में परिवर्तन;

(ग) स्वामित्व के अधिकार, विनिधानों की वसूली, या आय और व्ययन की प्राप्तियों के प्रेषण पर महत्वपूर्ण प्रतिबंध ;

(घ) उद्धृत विनिधानों के कुल बाजार मूल्य को देते हुए, उद्धृत तथा गैर-उद्धृत विनिधानों की कुल रकम ;

(ङ) अन्य प्रकटन, जो कि उद्यम पर विनियमित उपयुक्त परिनियम द्वारा विशिष्ट रूप से अपेक्षित है।

मुख्य सिद्धान्त

विनिधानों का वर्गीकरण

26. एक उद्यम को अपने वित्तीय विवरणों में चालू विनिधानों और दीर्घकालिक विनिधानों को पृथकतः प्रकट करना चाहिए।

27. चालू और दीर्घकालिक विनिधानों का आगे वर्गीकरण, उद्यम को विनियमित कर रहे कानून में जैसा विनिर्दिष्ट हो वैसा होना चाहिए। कानूनी अपेक्षा की अनुपस्थिति में, इस अतिरिक्त वर्गीकरण को जहाँ लागू हो, निम्नलिखित में विनिधानों को प्रकट करना चाहिए:

(क) सरकारी या न्यास प्रतिभूतियाँ;

(ख) शेयर, डिबेंचर या बंधपत्र;

(ग) विनिधान सम्पत्तियाँ;

(घ) अन्य-प्रकृति विनिर्दिष्ट करते हुए।

IndiaCode

विनिधानों की लागत

28. विनिधान की लागत में अर्जन प्रभार शामिल होने चाहिए, जैसे दलाली, फीस और शुल्क।

29. यदि एक विनिधान शेयरों या अन्य प्रतिभूतियों के निर्गमन द्वारा पूर्णतः या अंशतः अर्जित किया जाता है, तो अर्जन लागत, निर्गमित की गई प्रतिभूतियों का उचित मूल्य होनी चाहिए (जो, उपयुक्त स्थितियों में, निर्गमन कीमत द्वारा दर्शायी जा सकती है, जो कि कानूनी प्राधिकारियों द्वारा अवधारित किया गया है)। उचित मूल्य अनिवार्य नहीं कि निर्गमित की गई प्रतिभूतियों के अंकित या सम मूल्य के बराबर हो। यदि एक विनिधान, अन्य आस्ति के विनिमय में अर्जित किया गया है, तो विनिधान की अर्जन लागत, त्यागी गई आस्ति के उचित मूल्य के संदर्भ में अवधारित की जानी चाहिए। वैकल्पिक रूप से, यदि अर्जित विनिधान का उचित मूल्य अधिक स्पष्टता से साक्ष्य हो तो विनिधान की अर्जन लागत विनिधान के उचित मूल्य के संदर्भ में अवधारित की जा सकती है।

विनिधान सम्पत्तियाँ

30. जो उद्यम निवेश संपत्तियां धारित करता है वह उसका लेखा लेखा मानक 10, संपत्ति, संयंत्र और उपस्कर यथानिर्धारित लागत मॉडल के अनुसार करेगा।

विनिधानों की कैरिंग रकम

31. चालू विनिधान के रूप में वर्गीकृत विनिधानों को वित्तीय मानकों में समग्र (या सार्वभौमिक) आधार की बजाए या तो व्यक्तिगत विनिधान आधार पर या फिर विनिधान के वर्ग के आधार पर अवधारित उचित मूल्य और लागत में से कम मूल्य पर आगे ले जाया जाना चाहिए।

32. दीर्घकालिक विनिधानों के रूप में वर्गीकृत विनिधानों को वित्तीय मानकों में लागत पर ले जाया जाना चाहिए। यद्यपि, मूल्य में गिरावट के लिए उपबंध विनिधानों के मूल्य में अस्थायी कमी के अतिरिक्त कमी को अभिज्ञात करने के लिए बनाए जाएँगे, ऐसी कमी प्रत्येक विनिधान के लिए व्यक्तिगत रूप से अवधारित और व्यवस्थित किए जाएँ।

विनिधानों की कैरिंग रकमों में परिवर्तन

33. कैरिंग रकम में किसी भी कमी या ऐसी कमियों के किसी भी उलटाव को लाभ और हानि विवरण के प्रति प्रभारित या क्रेडिट किया जाना चाहिए।

विनिधानों का व्ययन

34. विनिधान के व्ययन पर, कैरिंग रकम और शुद्ध व्ययन प्राप्तियों के बीच के अंतर को लाभ और हानि विवरण के प्रति प्रभारित या उसमें क्रेडिट किया जाना चाहिए।

प्रकटन

35. निम्नलिखित जानकारी वित्तीय विवरणों में प्रकट की जानी चाहिए:

(क) विनिधानों की कैरिंग रकम अवधारित करने के लिए लेखा नीतियाँ ;

(ख) विनिधानों का वर्गीकरण जैसा कि उपरोक्त पैरा 26 और 27 में वर्णित है ;

(ग) निम्नलिखित के लिए लाभ और हानि विवरण में सम्मिलित की गई रकमें:

(i) *दीर्घकालिक या चालू विनिधानों से ऐसी आय को पृथकतः दर्शाते हुए विनिधानों पर ब्याज, लाभांश (समानुषंगी कम्पनियों से प्राप्त लाभांशों को पृथकतः दर्शाते हुए) और किराए। सकल आय को व्यक्त करना चाहिए, स्रोत पर आयकर कटौती को संदत्त अग्रिम कर में सम्मिलित किया जाता है।*

(ii) *चालू विनिधान के व्ययन पर लाभ और हानियाँ और ऐसे विनिधानों की कैरिंग रकम में परिवर्तन ; और*

(iii) *दीर्घकालीक विनिधानों के व्ययन पर लाभ और हानियाँ और ऐसे विनिधानों की कैरिंग रकम में परिवर्तन ;*

(घ) स्वामित्व के अधिकार, विनिधानों की वसूली, या आय और व्ययन की प्राप्तियों के प्रेषण पर महत्वपूर्ण प्रतिबंध ;

(ङ) उद्धत विनिधानों के कुल बाजार मूल्य को देते हुए, उद्धत तथा गैर-उद्धत विनिधानों की कुल रकम ;

(च) अन्य प्रकटन, जो कि उद्यम पर विनियमित उपयुक्त परिनियम द्वारा विशिष्ट रूप से अपेक्षित है।

लेखा मानक 14

समामेलनों के लिए लेखा

*(इस लेखा मानक में कुछ **मोटे तिरछे** टाइप और कुछ सीधे टाइप में व्यवस्थित पैरा सम्मिलित है, जिनका समान प्राधिकार है। मोटे तिरछे टाइप में दिये गए पैरा मुख्य सिद्धांत उपदर्शित करते हैं। इस लेखा मानक को अधिसूचना के प्रति उपाबंध के भाग क में अतंर्विष्ट साधारण अनुदेशों के संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिये।)*

प्रस्तावना

1. यह मानक समामेलनों के लिए लेखा और परिणामस्वरूप उत्पन्न गुडविल या आरक्षितियों के प्रतिपादन से सम्बंधित है। यह मानक मुख्यतः कम्पनियों के प्रति निर्दिष्ट है यद्यपि इसकी कुछ अपेक्षाएँ अन्य उद्यमों के वित्तीय विवरणों पर भी लागू होती हैं।

2. यह मानक अर्जन की ऐसी स्थितियों से सम्बंधित नहीं है जिसमें एक कम्पनी द्वारा (जिसे अर्जक कम्पनी कहा गया है) रोकड़ संदाय के लिए या अर्जक कम्पनी में शेयर या अन्य प्रतिभूतियों के रूप में या अंशतः एक रूप में और अंशतः अन्य रूप में प्रतिफल के लिए अन्य कम्पनी (जिसे अर्जित कम्पनी कहा गया है) के पूर्ण शेयरों या उनके एक भाग का या उसकी पूर्ण आस्तियों या उसके एक भाग क्रय जाता हैं। अर्जन की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि अर्जित कम्पनी का समापन नहीं किया जाता और इसका पृथक् आस्तित्व बना रहता है।

परिभाषाएँ

3. इस मानक में निम्नलिखित शब्द विनिर्दिष्ट अर्थों में प्रयुक्त हुए हैं:

(क) *समामेलन का अर्थ कम्पनी अधिनियम, 2013 या अन्य उन कानूनों के उपबंधों के अनुसार जो कंपनियों पर लागू है समामेलन से है तथा ये विलय पर भी लागू होते है।*

(ख) *अंतरक कम्पनी का अर्थ वह कम्पनी है जो अन्य कम्पनी में समामेलित होती हैं।*

(ग) *अंतरिती कम्पनी का अर्थ उस कम्पनी से है जिसमें अंतरक कम्पनी समामेलित की जाती है।*

(घ) *आरक्षिति का अर्थ उद्यम के अर्जन, प्रामियों या अन्य अधिशेषों के उस भाग (चाहे पूंजीगत अथवा राजस्व) से है जो आस्तियों के मूल्य में कमी या उनके अवक्षयण या ज्ञात दायित्व के लिए उपबन्धों के अतिरिक्त सामान्य या विशिष्ट उद्देश्य के लिए प्रबंधन द्वारा विनियोजित किए जाते हैं।*

(ङ) *विलयन की प्रकृति में समामेलन वह समामेलन है जो निम्नलिखित सभी शर्तों को पूरा करता है:*

(i) *समामेलन के बाद, अंतरक कम्पनी की सभी आस्तियाँ और दायित्व, अंतरिती कम्पनी की आस्तियाँ और दायित्व बन जाते है।*

(ii) *अंतरक कम्पनी में साधारण शेयरों के अंकित मूल्य के कम से कम 90 प्रतिशत धारण करने वाले शेयर धारक (उन साधारण शेयरों के अतिरिक्त जो समामेलन से ठीक पहले अंतरिती कम्पनी या इसकी समनुषंगीयों[21] या उनके नामनिर्देशितियों के पास थे), समामेलन के कारण अंतरिती कम्पनी के साधारण शेयरधारक बन जाते हैं।*

(iii) *समामेलन केलिए अंतरक कम्पनी केउन साधारण शेयरधारकों, जो अंतरिती कम्पनी के साधारण शेयरधारक बनने को तैयार हो जाते हैं, को प्राप्य प्रतिफल, अंतरिती कम्पनी द्वारा पूर्णतः अंतरिती कम्पनी में साधारण शेयरों के निर्गमन द्वारा चुकाए जाते हैं इसके अतिरिक्त कि रोक़ड़ किसी भी भागतः शेयरों के लिए दिया जा सकता है।*

(iv) *समामेलन के पश्चात्, अंतरिती कम्पनी द्वारा, अंतरक कम्पनी के व्यवसाय को चलाए जाने का प्रयोजन हो।*

(v) *अंतरक कम्पनी की आस्तियों और दायित्वों के बही मूल्यों के प्रति उस समय किसी समायोजन करने का कोई प्रयोजन नहीं हो जब वे अंतरिती कम्पनी के वित्तीय विवरणों में समाविष्ट किए जाते हैं परन्तु लेखा नीतियों की एकरूपता को सुनिश्चित करने के अतिरिक्त।*

(च) *क्रय की प्रकृति में समामेलन वह समामेलन है जो उपरोक्त उप-पैरा (ङ) में विनिर्दिष्ट किसी एक या अधिक शर्तों को पूरा नहीं करता।*

(छ) *समामेलन के लिए प्रतिफल का अर्थ अंतरिती कम्पनी द्वारा अंतरक कम्पनी के शेयरधारकों के प्रति निगर्मित शेयरों और अन्य प्रतिभूतियों और नकदी व अन्य आस्तियों के रूप में किए गए संदाय का योग है।*

(ज) *उचित मूल्य वह रकम है जिसके लिए किसी आम्स लैंग्थ संव्यवहार में सज्ञान, इच्छुक क्रेता और सज्ञान, इच्छुक विक्रेता के बीच एक आस्ति को विनिमय किया जा सके।*

(झ) *हितों का समूहीकरण समामेलन के लिए लेखा की वह पद्धति है जिसका उद्देश्य समामेलन के लिए इस प्रकार लेखा करना है जैसे कि अंतरिती कम्पनी द्वारा समामेलित हो रही कम्पनियों के समामेलित व्यवसायों को चलाए जाने का प्रयोजन था। तदनुसार, समामेलित हो रही कम्पनियों के व्यक्तिगत वित्तीय विवरणों को जोड़ते हुए केवल न्यूनतम परिवर्तन किए जाते हैं।*

[21] लेखा मानक 21 'समेकित वित्तीय विवरण' में यथा परिभाषित

स्पष्टीकरण

समामेलनों के प्रकार

4. सामान्यतः समामेलनों के दो प्रकार होते हैं। पहले वर्ग में वे समामेलन होते है जहाँ समामेलित हो रही कम्पनियों की आस्तियों और दायित्वों मात्र का ही वास्तविक समूहीकरण नहीं होता अपितु शेयरधारकों के हितों तथा इन कम्पनियों के व्यापारों का भी वास्तविक समूहीकरण होता है। ऐसे समामेलन, वह समामेलन होते है जो 'विलयन' की प्रकृति में होते है और ऐसे समामेलनों के लेखा प्रतिपादन को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि परिणामस्वरूप उत्पन्न हुए आस्तियों, दायित्वों, पूँजी और आरक्षितियों के आँकड़े, समामेलित हो रही कम्पनियों के सुसंगत आँकड़ों के जोड़ को लगभग प्रस्तुत करे। दूसरे वर्ग में वे समामेलन आते है जो वास्तव में एक ऐसा तरीका है जिसके द्वारा एक कम्पनी दूसरी कम्पनी का अर्जन करती है और परिणामस्वरूप, अर्जित कम्पनी के शेयर धारकों के पास आमतौर पर संयुक्त कम्पनी की इक्विटी में आनुपातिक भाग नही रहता या अर्जित कम्पनी के व्यवसाय को चालू रखने का प्रयोजन नहीं होता। ऐसे समामेलन 'क्रय' की प्रकृति में समामेलन होते हैं।

5. पैरा 3(ङ) में सूचीबद्ध सभी शर्तों के पूर्ण हो जाने पर ही एक समामेलन को, विलयन की प्रकृति में समामेलन के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। यद्यपि, लागू की जा सकने वाली अन्य किसी शर्तों की प्रकृति के सम्बंध में विभिन्न मत है। कुछ का मत है कि, साधारण शेयरों के विनिमय के साथ यह आवश्यक है कि अंतरक कम्पनी के शेयरधारक, अंतरिती कम्पनी में पर्याप्त शेयर प्राप्त करें चाहे उस सीमा तक कि उनमें से किसी एक अधिष्ठायी पक्षकार को पहचानना संभव न हो पाए। यह मत, इस विचार पर अंशतः आधारित है कि, एक बड़ी कम्पनी में महत्वहीन शेयर के लिए एक कम्पनी के नियंत्रण का विनिमय, जोखिमों और लाभों के पारस्परिक भागीदारी की कोटि में नहीं आता है।

6. अन्य का मत है कि विलयन की प्रकृति वाले समामेलन का सार, पक्षकारों के संबंध के संदर्भ में कुछ मापदंडों के पूरा होने पर प्रमाणित होता है, जैसे कि समामेलित हो रही कम्पनियों की भूतपूर्व स्वतंत्रता, उनके समामेलन का तरीका, नियोजित संव्यवहारों की अनुपस्थिति जो समामलनों के प्रभाव को कम करती है और समामेलन के पश्चात् अंतरिती कम्पनी के प्रबंध में अंतरक कम्पनी के प्रबंधन द्वारा अविरल भागीदारी।

समामेलनों के लिए लेखा पद्धतियाँ

7. समामेलनों के लिए लेखा की दो पद्धतियाँ है:

(क) हितों के समूहीकरण की पद्धति ; और

(ख) क्रय पद्धति।

8. हितों के समूहीकरण की पद्धति का प्रयोग उन परिस्थितियों तक सीमित है जो विलयन की प्रकृति वाले समामेलन के लिए पैरा 3(ङ) मे विनिर्दिष्ट मापदंड को पूरा करती हैं।

9. क्रय पद्धति का उद्देश्य, आस्तियों के सामान्य क्रय में लागू सिद्धांतों जैसे सिद्धांतों को लागू करते हुए समामेलन का लेखा करना है। यह पद्धति क्रय की प्रकृति वाले समामेलनों के लेखा के लिए प्रयोग की जाती है।

हितों के समूहीकरण की पद्धति

10. हितों के समूहीकरण की पद्धति के अंतर्गत, अंतरक कम्पनी की आस्तियाँ, दायित्व और उनके आरक्षितियाँ अपनी विद्यमान कैरिंग रकम पर अंतरिती कम्पनी द्वारा अभिलिखित होते है (पैरा 11 में आवश्यक समायोजना के बाद)।

11. यदि, समामेलन के समय, अंतरक और अंतरिती कम्पनियों में परस्पर विरोधी लेखा नीतियाँ अपनायी जा रही हों तो, समामेलन के बाद एकरूप लेखा नीतियाँ अपनायी जाती हैं। लेखा नीतियों में किसी भी परिवर्तनों के वित्तीय विवरणों पर प्रभाव, लेखा मानक *5, अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि, पूर्वावधि मदें और लेखा नीतियों में परिवर्तन,* के अनुसार रिपोर्ट किए जाते हैं।

क्रय पद्धति

12. क्रय पद्धति के अंतर्गत, अंतरिती कम्पनी या तो आस्तियों और दायित्वों को उनके वर्तमान बही मूल्य पर शामिल करके या समामेलन की तारीख को उचित मूल्यों के आधार पर अंतरक कम्पनी की पृथक रूप से अभिज्ञेय आस्तियाँ और दायित्वों को प्रतिफल आबंटित करते हुए समामेलन का लेखा करती है। अभिज्ञेय आस्तियों और दायित्वों में वे अस्तिया और दायित्व शामिल हो सकते हैं जो अंतरक कम्पनी के वित्तीय विवरणों में अभिलिखित नहीं हैं।

13. जहाँ अस्तियाँ और दायित्व, अपने उचित मूल्य के आधार पर पुनःव्यक्त होते हैं, वहाँ उचित मूल्यों का निर्धारण अंतरिती कम्पनी के आशयों से प्रभावित हो सकता है। उदाहरण के लिए, अंतरिती कम्पनी के पास एक आस्ति के लिए एक विशिष्ट प्रयोग हो सकता है जो अन्य संभाव्य क्रेताओं के पास उपलब्ध न हो। अंतरिती कम्पनी का प्रयोजन अंतरक कम्पनी के क्रियाकलापों में परिवर्तन लाने का हो सकता है, जो अपेक्षित लागतों के लिए विशिष्ट उपबन्धों के सृजन को आवश्यक बनाती है, जैसे कि, योजनाबद्ध कर्मचारी पर्यवसान और संयंत्र पुनःस्थापन लागतें आदि।

प्रतिफल

14. समामेलन के लिए प्रतिफल में प्रतिभूतियाँ, नकदी या अन्य आस्तियाँ शामिल हो सकती हैं। प्रतिफल के मूल्य का अवधारण करने में, इसके तत्वों के उचित मूल्य का निर्धारण किया जाता है। उचित मूल्य निकालने के लिए कई तकनीकों का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए, जब प्रतिफल में प्रतिभूतियाँ शामिल होती हैं तो, कानूनी प्राधिकारियों द्वारा निश्चित मूल्य को उचित मूल्य माना जा सकता है। अन्य आस्तियों की स्थिति में, उचित मूल्य त्यागी गई आस्तियों के बाजार मूल्य के संदर्भ में अवधारित किया जा सकता है। जहाँ त्यागी गई आस्तियों का बाजार मूल्य विश्वसनीय रूप से अवधारित नहीं किया जा सकता वहाँ ऐसी आस्तियों, अपने शुद्ध बही मूल्य पर मूल्यांकित की जाती है।

15. कई समामेलन यह स्वीकार करते हैं कि एक या अधिक भावी घटनाओं को देखते हुए प्रतिफल के प्रति समायोजन करने पड़ सकते हैं। जब अतिरिक्त संदाय संभाव्य होता है और तर्कसंगत रूप से समामेलन की तारीख पर अनुमानित किया जा सकता है, तो यह प्रतिफल की गणना में शामिल किया जाता है। अन्य सभी स्थितियों में, जैसे ही रकम अवधारण योग्य बन जाती है, समायोजन अभिज्ञात किया जाता है (देखें लेखा मानक 4. *आकस्मिकताएँ और तुलनपत्र की तारीख के पश्चात् होने वाली घटनाएँ*)।

समामेलन पर आरक्षितियों का प्रतिपादन

16. यदि समामेलन, 'विलयन की प्रकृति का समामेलन' हैं, तो आरक्षिति की पहचान बनाये रखी जाती है और वे अंतरिती कम्पनी के वित्तीय विवरणों में उसी तरह प्रकट होती हैं, जिस प्रकार वे अंतरक कम्पनी के वित्तीय विवरणों में प्रकट हुए थे। इस प्रकार, उदाहरण के लिए अंतरक कम्पनी के सामान्य आरक्षिति अंतरिती कम्पनी के समान्य आरक्षिति बन जाते हैं, अतंरक कम्पनी के पूँजीगत आरक्षिति अंतरिती कम्पनी के पूँजीगत आरक्षति बन जाते है और अंतरक कम्पनी के पुनर्मूल्यांकन आरक्षिति अंतरिती कम्पनी के पुनर्मूल्यांकन आरक्षिति बन जाते है। पहचान को बनाए रखने के परिणामस्वरूप, वे आरक्षितियाँ, जो समामेलन से पहले लाभांश के रूप में वितरण के लिए उपलब्ध हैं, समामेलन के बाद भी लाभांश के रूप में वितरण के लिए उपलब्ध होगी। निर्गमित शेयर पूँजी के रूप में अभिलिखित रकम (रोकड़ या अन्य आस्तियों के रूप में किसी अतिरिक्त प्रतिफल समेत) और अंतरक कम्पनी की शेयर पूँजी की रकम के बीच का अंतर, अंतरिती कम्पनी के वित्तीय विवरणों में आरक्षितियों में समायोजित होता है।

17. यदि समामेलन, 'क्रय की प्रकृति में समामेलन' है, तो पैरा 18 में विनिर्दिष्ट कानून द्वारा अपेक्षित अरक्षितियों के अतिरिक्त आरक्षितियों की पहचान नहीं बनाये रखी जाती है। प्रतिफल की रकम, अंतरिती कम्पनी द्वारा अर्जित अंतरक कम्पनी की शुद्ध आस्तियों के मूल्य से घटायी जाती है। यदि गणना का परिणाम ऋणात्मक निकलता है, तो अंतर समामेलन पर उत्पन्न हो रही गुडविल के प्रति डेबिट किया जाता है और उसके साथ पैरा 19-20 में कथित तरीके के अनुसार प्रतिपादन किया जाता है। यदि गणना का परिणाम धनात्मक है, तो अंतर, पूँजीगत आरक्षिति के प्रति क्रेडिट किया जाता है।

18. कुछ आरिक्षितयाँ आय-कर अधिनियम 1961 की आवश्यकताओं के अनुसार या इसके अंतर्गत लाभ उठाने के लिए, अंतरिती कम्पनी द्वारा बनाए जा सकते हैं ; उदाहरण के लिए, विकास भत्ता आरक्षिति या विनिधान भत्ता आरक्षिति। अधिनियम में यह अपेक्षित है कि आरक्षितियों की पहचान एक विशिष्ट अवधि के लिए बनाए रखनी चाहिए। इसी प्रकार, अन्य कानूनों की अपेक्षाओं के अनुसार, कुछ अन्य आरक्षितियों को अंतरक कम्पनी के वित्तीय विवरणों में सृजित किया जा सकता है। यद्यपि, आमतौर पर, क्रय प्रकृति के समामेलन में, आरक्षितियों की पहचान नहीं रखी जाती फिर भी पूर्वोक्त प्रकृति की आरिक्षितयाँ जिन्हें इसमें इसके पश्चात् कानूनी आरक्षितियाँ कहा जाएगा) के संदर्भ में अपवाद हो सकता है और ऐसी आरक्षितियाँ अंतरिती कम्पनी के वित्तीय विवरण में अपनी पहचान उसी तरह बनाये रखती है जिस तरह वे अंतरक कम्पनी के वित्तीय विवरणों में प्रकट हुई हैं जब तक कि उनकी पहचान को उपयुक्त विधान के साथ अनुपालन करने हेतु बनाए रखने की आवश्यकता होती हैं। यह अपवाद केवल उन समामेलनों में बनाया जा सकता है जहाँ अंतरिती कम्पनी की पुस्तकों में कानूनी आरक्षितियों अभिलेखन के लिए उपयुक्त विधान की अपेक्षाओं का पालन किया गया है। ऐसी स्थितियों में

आरक्षितियाँ, अंतरिती कम्पनी के वित्तीय विवरणों में उस उपयुक्त लेखा शीर्ष में (उदाहरणार्थ, 'समामेलन समायोजन प्रारक्षित निधि') तत्सम्बन्धी डेबिट के द्वारा अभिलिखित की जाती है, जिसे एक पृथक रेखीय मद के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। जब कानूनी आरक्षितियों की पहचान को बनाए रखने की आवश्यकता नहीं होती तो आरक्षिति और पूर्वोक्त लेखा उलट दिया जाता है।

समामेलन पर उत्पन्न हो रही गुडविल का प्रतिपादन

19. समामेलन पर उत्पन्न हो रही गुडविल भावी आय के पूर्वानुमान में किए गए संदाय को प्रस्तुत करती है और इसका आस्ति के रूप में प्रतिपादन उपयुक्त है जिसका आस्ति के उपयोगी जीवनकाल के दौरान एक व्यवस्थित आधार पर आय के प्रति क्रमिक अपाकरण किया जाना है। गुडविल की प्रकृति के कारण, प्रायः तर्कसंगत निश्चितता के साथ इसके उपयोगी जीवन का अनुमान लगाना मुश्किल है। इसलिए, ऐसा अनुमान विवेकशील आधार पर लगाया जाता है। तदनुसार, पाँच वर्षों से कम अवधि के दौरान गुडविल का क्रमिक अपाकरण उपयुक्त माना जाता है जब तक कि इससे लम्बी अवधि उपयुक्त न हो।

20. समामेलन पर उत्पन्न हो रही गुडविल के उपयोगी जीवनकाल को अनुमानित करने में विचारणीय कारकों में निम्नलिखित शामिल है:

(क) व्यवसाय या उद्योग का पूर्वानुमेय जीवन ;

(ख) उत्पाद अप्रचलन के प्रभाव, माँग में परिवर्तन और अन्य आर्थिक घटक;

(ग)प्रमुख व्यक्तियों या कर्मचारियों के समूहों के सेवाकाल प्रत्याशाएँ ;

(घ) प्रतिस्पर्द्धियों या सम्भाव्य प्रतिस्पर्द्धियों द्वारा अपेक्षित कार्यवाही; और

(ङ) उपयोगी जीवनकाल को प्रभावित करते विधिक, विनियामक और अनुबंधात्मक उपबन्ध।

लाभ और हानि लेखा का अतिशेष

21. 'विलयन की प्रकृति में समामेलन' के मामले में, अतंरक कम्पनी के वित्तीय विवरणों में प्रकट हो रहा लाभ और हानि लेखा का अतिशेष, अंतरिती कम्पनी के वित्तीय विवरणों में प्रकट हो रहे तत्संबंधी अतिशेष के साथ जोड़ा जाता है। आनुकल्पिक रूप से, यदि कोई सामान्य आरक्षिति हो, तो यह उसके प्रति अंतरित किया जाता है।

22. 'क्रय की प्रकृति में समामेलन' के मामले में, अंतरक कम्पनी के वित्तीय विवरणों में प्रकट हो रहा लाभ और हानि लेखा का अतिशेष, चाहे डेबिट हो या क्रेडिट, अपनी पहचान खो देता है।

समामेलन की योजना में विनिर्दिष्ट आरक्षितियों का प्रतिपादन

23[22] कम्पनी अधिनियम, 1956 के उपबन्धों या कोई अन्य कानून, के अधीन स्वीकृत समामेलन की योजना, समामेलन के बाद अंतरक कम्पनी की आरक्षितियों को दिए जाने वाले प्रतिपादन को निर्धारित कर सकती है। जहाँ ऐसा प्रतिपादन निर्धारित किया जाता है, वहाँ यही अनुसरित होता है। कुछ स्थितियों में, कानून के अधीन स्वीकृत समामेलन की योजना इस मानक की उन अपेक्षाओं की तुलना में, जिनका पालन योजना, द्वारा प्रतिपादन न निर्धारित करने की स्थिति में किया गया होता, समामेलन के बाद अंतरक कम्पनी की आरक्षितियों के अलग प्रतिपादन को निर्धारित कर सकती है। ऐसी स्थितियों में, समामेलन के बाद प्रथम वित्तीय विवरणों मे निम्नलिखित प्रकटन किए जाते हैं:

(क) आरक्षितियों के लेखा प्रतिपादन और इस मानक में निर्धारित प्रतिपादन से भिन्न प्रतिपादन का पालन करने के कारणों का वर्णन।

(ख) इस मानक में उन अपेक्षाओं के अनुसार निर्धारित प्रतिपादन जिनका पालन योजना द्वारा प्रतिपादन न निर्धारित करने की स्थिति में किया जाता, की तुलना में कानून के अंतर्गत स्वीकृत समामेलन की योजना के अनुसार निर्धारित आरक्षितियों के लेखा प्रतिपादन में विचलन।

[22] अनुच्छेद 23 कंपनी अधिनियम 2013 के अंतर्गत अनुमोदित समामेलन की किसी भी योजना में लागू नहीं होगा

(ग) ऐसे विचलन के कारण उत्पन्न हो रहा वित्तीय प्रभाव, यदि कोई हो।

प्रकटन

24. सभी समामेलनों के लिए, समामेलन के बाद प्रथम वित्तीय विवरणों में निम्नलिखित प्रकटनों को उपयुक्त समझा जाता है:

(क) समामेलित हो रही कम्पनियों के नाम और व्यवसाय की सामान्य प्रकृति;

(ख) लेखा उद्देश्यों के लिए समामेलन की प्रभावी तारीख;

(ग) समामेलन को प्रतिबिम्बित करने में प्रयुक्त लेखा पद्धति; और

(घ) कानून के अंतर्गत स्वीकृत योजना के विवरण।

25. हितों के समूहीकरण की पद्धति के अंतर्गत लेखाबद्ध किए गए समामेलनों के लिए, समामेलन के बाद प्रथम वित्तीय विवरणों में निम्नलिखित अतिरिक्त प्रकटन उपयुक्त समझे जाते हैं:

(क) समामेलन को क्रियान्वित करने के लिए प्रत्येक कम्पनी के विनिमय किए गए साधारण शेयरों के प्रतिशत के साथ निर्गमित शेयरों का वर्णन तथा संख्या ;

(ख) प्रतिफल तथा अलग से पहचानने योग्य अर्जित की गई शुद्ध आस्तियों के मूल्य के बीच किसी भी अंतर की रकम और उनका प्रतिपादन।

26. क्रय पद्धति के अंतर्गत लेखाबद्ध समामेलनों के लिए समामेलन के बाद प्रथम वित्तीय विवरणों में निम्नलिखित प्रकटन उपयुक्त समझे जाते हैं:

(क) समामेलन के लिए प्रतिफल और संदाय किए गए प्रतिफल या आकिस्मक रूप से संदेय प्रतिफल का वर्णन ; और

(ख) प्रतिफल तथा अलग से पहचानने योग्य अर्जित शुद्ध आस्तियों के मूल्य के बीच किसी भी अंतर की रकम और उनका प्रतिपादन तथा समामेलन पर उत्पन्न हो रही किसी भी गुडविल के क्रमिक अपाकरण की अवधि।

तुलनपत्र की तारीख के पश्चात् समामेलन

27. जब समामेलन, तुलनपत्र की तारीख के पश्चात् किंतु समामेलन के प्रति किसी भी पक्षकार के वित्तीय विवरणों के निर्गमन से पहले क्रियान्वित होता है, तो प्रकटन, लेखा मानक 4, *आकस्मिकताएँ तथा तुलनपत्र की तारीख के पश्चात् होने वाली घटनाएँ*, के अनुसार किया जाता है, लेकिन समामेलन वित्तीय विवरणों में समाविष्ट नहीं होता। कुछ परिस्थितियों में, समामेलन स्वयं वित्तीय विवरणों को प्रभावित करती हुई अतिरिक्त जानकारी भी प्रदान कर सकता है, उदाहरण के लिए, चलायमान समुत्थान मान्यता को बनाए रखने के लिए स्वीकृति देना।

मुख्य सिद्धान्त

28. एक समामेलन या तो-

(क) ***विलयन की प्रकृति में समामेलन हो सकता है, या***

(ख) ***क्रय की प्रकृति में समामेलन हो सकता है।***

29. एक समामेलन को विलयन की प्रकृति में समामेलन तब माना जाना चाहिए, जब निम्नलिखित सभी शर्तें पूरी हों:

(i) ***समामेलन के बाद, अंतरक कम्पनी की सभी आस्तियाँ और दायित्व, अंतरिती कम्पनी की आस्तियाँ और दायित्व बन जाए।***

(ii) ***अंतरक कम्पनी में साधारण शेयरों के अंकित मूल्य के कम से कम 90 प्रतिशत धारण करने वाले शेयरधारक (उन साधारण शेयरों के अतिरिक्त जो समामेलन से ठीक पहले अंतरिती कम्पनी या इसके समनुषंगियों या उनके नामनिर्देशितीयों के पास थे) समामेलन के कारण अंतरिती कम्पनी के साधारण शेयरधारक बन जाते हैं।***

IndiaCode

(iii) *समामेलन केलिए अंतरक कम्पनी केउन साधारण शेयरधारकों को जो अंतरिती कम्पनी के साधारण शेयरधारक बनने को तैयार हो जाते हैं, प्राप्य प्रतिफल अंतरिती कम्पनी द्वारा पूर्णतः अंतरिती कम्पनी में साधारण शेयरों के निर्गमन द्वारा चुकाए जाते है, इसके अतिरिक्त कि नकद किसी भी भागतः शेयर के संदर्भ में देय हो सके।*

(iv) *समामेलन के पश्चात् अंतरिती कम्पनी द्वारा, अंतरक कम्पनी के व्यवसाय को चलाए जाने का प्रयोजन होता है।*

(v) *अंतरक कम्पनी की आस्तियों और दायित्वों के बही मूल्यों के प्रति उस समय किसी समायोजन करने का कोई प्रयोजन नहीं हो जब वे अंतरिती कम्पनी के वित्तीय विवरणों में समाविष्ट किए जाते हैं, परन्तु लेखा नीतियों की एकरूपता को सुनिश्चित करने के अतिरिक्त।*

30. एक समामेलन को क्रय की प्रकृति में समामेलन तब माना जाना चाहिए, जब पैरा 29 में विनिर्दिष्ट एक या उससे अधिक शर्तों की पूर्ति न हो।

31. जब एक समामेलन को विलयन की प्रकृति में समामेलन माना जाता है, तो यह पैरा 33-35 में वर्णित हितों के समूहीकरण की पद्धति के अंतर्गत लेखाबद्ध होना चाहिए।

32. जब समामेलन को क्रय की प्रकृति में समामेलन माना जाता है, तो इसे पैरा 36-39 में वर्णित क्रय पद्धति के अंतर्गत लेखाबद्ध करना चाहिए।

हितों के समूहीकरण की पद्धति

33. अंतरिती कम्पनी के वित्तीय विवरणों की तैयारी में, अंतरक कम्पनी की आस्तियों, दायित्वों और अरक्षितियों (चाहे पूँजीगत या राजस्व या फिर पुनर्मूल्यांकन पर उत्पन्न हो रही हों) को उनके वर्तमान कैरिंग रकम पर और उसी रूप में अभिलिखित करना चाहिए जिस रूप में वह समामेलन की तारीख पर थे। अंतरक कम्पनी के लाभ और हानि लेखा के अतिशेष को अंतरिती कम्पनी के तत्संबंधी अति के साथ जोड़ा जाना चाहिए या कोई सामान्य आरक्षिति हो तो उसके प्रति अंतरित किया जाना चाहिए।

34. यदि, समामेलन के समय, अंतरिती और अंतरक कम्पनियों में परस्पर विरोधी लेखा नीतियाँ अपनायी जा रही हैं तो समामेलन के बाद एकरूप लेखा नीतियाँ अपनायी जानी चाहिए। लेखा नीतियों में किसी भी परिवर्तन का वित्तीय विवरणों पर प्रभाव, लेखा मानक 5, अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि, पूर्वावधि मदें और लेखा नीतियों में परिवर्तन, के अनुसार रिपोर्ट किए जाने चाहिए।

35. निर्गमित शेयर पूँजी के रूप में अभिलिखित रकम (नकदी या अन्य आस्तियों के रूप में किसी अतिरिक्त प्रतिफल समेत) और अंतरक कम्पनी की शेयर पूँजी की रकम के बीच के अंतर को आरक्षितियों में समायोजित करना चाहिए।

क्रय पद्धति

36. अंतरिती कम्पनी के वित्तीय विवरणों को तैयार करने में अंतरक कम्पनी की आस्तियाँ और दायित्व अपनी वर्तमान कैरिंग रकम पर शामिल होनी चाहिए या वैकल्पिक रूप से प्रतिफल, समामेलन की तारीख को पृथक रूप से पहचानने योग्य आस्तियों और दायित्वों को अपने उचित मूल्यों के आधार पर आबंटित किया जाना चाहिए। कानून द्वारा अपेक्षित आरक्षितियों के अतिरिक्त, अंतरक कम्पनी के आरक्षितियों (चाहे पूँजीगत हो या राजस्व या फिर पुनर्मूल्यांकन पर उत्पन्न हो रहे हो) जैसा पैरा 39 में कथित है उसको छोड़कर अंतरिती कम्पनी के वित्तीय विवरणों में शामिल नहीं किए जाने चाहिए।

37. अंतरिती कम्पनी द्वारा अर्जित अंतरक कम्पनी की शुद्ध आस्तियों के मूल्य से प्रतिफल की रकम का कोई भी आधिक्य, अंतरक कम्पनी के वित्तीय विवरणों में समामेलन पर उत्पन्न हो रही गुडविल के रूप में अभिज्ञात होना चाहिए। यदि, प्रतिफल की रकम, अर्जित शुद्ध आस्तियों के मूल्य से कम हो, तो उनके बीच के अंतर को पूँजीगत आरक्षिति माना जाना चाहिए।

38. समामेलन पर उत्पन्न हो रही गुडविल का अपने उपयोगी जीवनकाल के दौरान व्यवस्थित आधार पर आय के प्रति क्रमिक अपाकरण होना चाहिए। क्रमिक अपाकरण की अवधि पाँच वर्ष से कम होनी चाहिए जब तक कि इससे अधिक अवधि उचित न हो।

39. जहाँ अंतरिती कम्पनी की बहीयों में कानून द्वारा अपेक्षित आरक्षिति के अभिलेखन के लिए उपयुक्त कानून की अपेक्षाओं का पालन किया जाता है, वहाँ अंतरक कम्पनी के कानून द्वारा अपेक्षित आरक्षितियों को अंतरिती कम्पनी के वित्तीय विवरणों में अभिलिखित किया जाना चाहिए। उपयुक्त लेखा शीर्ष (उदाहरणतः 'समामेलन समायोजन प्रारक्षित निधि') को

तत्सम्बन्धी डेबिट किया जाना चाहिए जिसे पृथक रेखीय मद के रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए। जब कानून द्वारा अपेक्षित आरक्षितियों की पहचान को बनाए रखने की आवश्यकता नहीं हो तो, आरक्षितियों और पूर्वोक्त लेखा को उलट देना चाहिए।

सामान्य प्रक्रियाएँ

40. समामेलन के लिए प्रतिफल में, कोई भी गैर-नकदी तत्व उचित मूल्य पर शामिल होना चाहिए। प्रतिभूतियों के निर्गमन की स्थिति में, कानूनी प्राधिकारियों द्वारा निर्धारित मूल्य को उचित मूल्य माना जा सकता है। अन्य आस्तियों की स्थिति में, उचित मूल्य त्यागी गई आस्तियों के बाजार मूल्य के संदर्भ में निर्धारित किया जा सकता है। जहाँ त्यागी गई आस्तियों का बाजार मूल्य विश्वसनीय रूप से आँका नहीं जा सकता, वहाँ ऐसी आस्तियों को उनके क्रमशः शुद्ध बही मूल्य पर मूल्यांकित किया जा सकता है।

41. जहाँ समामेलन की योजना, एक या अधिक घटनाओं पर समाश्रित प्रतिफल के लिए समायोजन प्रदान करती है, तो यदि भुगतान संभाव्य है और रकम का एक तर्कसंगत अनुमान लगाया जा सकता है तो अतिरिक्त भुगतान की रकम प्रतिफल में शामिल की जानी चाहिए। अन्य सभी मामलों में, जैसे ही रकम निर्धारण योग्य बनती है, समायोजन अभिज्ञात होना चाहिए (देखें लेखा मानक 4 आकस्मिकताएँ तथा तुलनपत्र की तारीख के पश्चात् होने वाली घटनाएँ)।

समामेलन की योजना में विनिर्दिष्ट आरक्षितियों का प्रतिपादन

42.[23] जहाँ कानून के अंतर्गत स्वीकृत समामेलन की योजना, अंतरिती कम्पनी के आरक्षितियों को दिए जाने वाला प्रतिपादन निर्धारित करती है, वहाँ उसी का अनुपालन होना चाहिए। जहाँ कानून के अंतर्गत स्वीकृत समामेलन की योजना इस मानक की उन अपेक्षाओं की तुलना में जिनका पालन योजना द्वारा व्यवहार न निर्धारित करने की स्थिति में किया जाता, समामेलन के बाद अंतरक कम्पनी आरक्षितियों का एक भिन्न प्रतिपादन निर्धारित करता है, वहाँ समामेलन के बाद प्रथम वित्तीय विवरणों में निम्नलिखित प्रकटन किए जाते हैं:

(क) *आरक्षितियों के दिए गए लेखा प्रतिपादन और इस मानक में निर्धारित प्रतिपादन से भिन्न प्रतिपादन का पालन करने के कारणों का वर्णन।*

(ख) *इस मानक में उन अपेक्षाओं के अनुसार निर्धारित प्रतिपादन, जिनका पालन योजना द्वारा प्रतिपादन न निर्धारित करने की दशा में किया जाता, की तुलना में कानून के अंतर्गत स्वीकृत समामेलन की योजना द्वारा आरक्षितियों के लिए निर्धारित प्रतिपादन में विचलन।*

(ग) *ऐसे विचलन के कारण उत्पन्न रहा वित्तीय प्रभाव, यदि कोई हो।*

प्रकटन

43. सभी समामेलनों के लिए, समामेलन के बाद प्रथम वित्तीय विवरणों में निम्नलिखित प्रकटन किए जाने चाहिए:

(क) *समामेलित हो रही कम्पनियों के नाम और व्यवसाय की सामान्य प्रकृति;*

(ख) *लेखा उद्देश्यों के लिए समामेलन की प्रभावी तारीख ;*

(ग) *समामेलन को प्रतिबिम्बित करने में प्रयुक्त लेखा पद्धति ; और*

(घ) *कानून के अंतर्गत स्वीकृत योजना के विवरण।*

44. हितों के समूहीकरण की पद्धति के अंतर्गत समामेलन के लेखा के लिए, समामेलन के बाद प्रथम वित्तीय विवरणों मे निम्नलिखित अतिरिक्त प्रकटन किए जाने चाहिए:

(क) *समामेलन को क्रियान्वित करने के लिए प्रत्येक कम्पनी के विनिमय किए गए साधारण शेयरों के प्रतिशत के साथ निर्गमित शेयरों का वर्णन तथा संख्या ;*

(ख) *प्रतिफल तथा अर्जित शुद्ध अलग से पहचानने योग्य आस्तियों के मूल्य के बीच किसी भी अंतर की रकम और उसका प्रतिपादन।*

[23] कपंनी अधिनियम 2013 के अंतर्गत अनुमोदित समामेलन की किसी भी योजना के लिए अनुच्छेद 42 लागू नही होगा ।

45. क्रय पद्धति के अंतर्गत लेखाबद्ध समामेलनों के लिए, समामेलन के बाद प्रथम वित्तीय विवरणों में निम्नलिखित प्रकटन किए जाने चाहिए:

(क) ***समामेलन के लिए प्रतिफल और संदाय किए गए प्रतिफल या आकस्मिक रूप से संदेय प्रतिफल का वर्णन ; और***

(ख) ***प्रतिफल और अर्जित शुद्ध अलग से पहचानने योग्य आस्तियों के मूल्य के बीच किसी भी अंतर की रकम और उनका प्रतिपादन और समामेलन पर उत्पन्न हो रही किसी भी गुडविल के क्रमिक अपाकरण की अवधि।***

तुलनपत्र की तारीख के पश्चात् समामेलन

46. जब समामेलन, तुलनपत्र की तारीख के पश्चात्, किंतु समामेलन के प्रति किसी भी पक्षकार के वित्तीय विवरणों के निर्गमन से पहले क्रियान्वित होता है, तो प्रकटन लेखा मानक 4 'आकस्मिकताएँ तथा तुलनपत्र की तारीख के पश्चात् होने वाली घटनाएँ' के अनुसार किया जाना चाहिए, किंतु समामेलन वित्तीय विवरणों में शामिल नहीं होना चाहिए। कुछ परिस्थितियों में, समामेलन स्वयं वित्तीय विवरणों को प्रभावित करने वाली अतिरिक्त जानकारी भी प्रदान कर सकता है, उदाहरण के लिए चलायमान समुत्थान की मान्यता को बनाए रखने के लिए स्वीकृति देना।

लेखा मानक 15

कर्मचारी प्रसुविधाएँ

*(इस लेखा मानक में कुछ **मोटे तिरछे** टाइप और कुछ सीधे टाइप में व्यवस्थित पैरा सम्मिलित है, जिनका समान प्राधिकार है। मोटे तिरछे टाइप में दिये गए पैरा मुख्य सिद्धांत उपदर्शित करते हैं। इस लेखा मानक को अधिसूचना के प्रति उपाबंध के भाग क में अतंर्विष्ट साधारण अनुदेशों के संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिये।)*

IndiaCode

उद्देश्य

इस मानक का उद्देश्य कर्मचारी प्रसुविधाओं के लिए लेखा और प्रकटन को विहित करना है। यह मानक उद्यम से निम्नलिखित के अभिज्ञान की अपेक्षा करता है:

(क) कोई दायित्व जब भविष्य में भुगतान होने वाली कर्मचारी प्रसुविधाओं के लिए किसी कर्मचारी ने सेवा प्रदान की हो; और

(ख) कोई व्यय जब कोई उद्यम कर्मचारी प्रसुविधाओं के लिए किसी कर्मचारी द्वारा प्रदान की गई सेवा से उत्पन्न आर्थिक लाभों का उपभोग करता है।

कार्यक्षेत्र

1. यह मानक नियोक्ता द्वारा सभी कर्मचारी प्रसुविधाओं के लेखे में लागू होना चाहिये, कर्मचारी शेयर आधारित भुगतानों के सिवाय[24]।

2. यह मानक कर्मचारी प्रसुविधा योजनाओं के द्वारा लेखा और रिपोर्टिंग की चर्चा नहीं करता है।

3. कर्मचारी प्रसुविधाएं जिन पर यह मानक लागू होता है निम्नलिखित को सम्मिलित करते हैं परन्तु:

(क) एक उद्यम और व्यक्तिगत कर्मचारी, कर्मचारियों के समूहों या उनके प्रतिनिधियों के बीच औपचारिक योजनाओं या अन्य औपचारिक करारों के अधीन;

(ख) विधायी अपेक्षाओं के आधीन, या उद्योग समझौतों के द्वारा जहाँ पर उद्यम से यह अपेक्षा की जाती है कि वह राज्य, उद्योग या दूसरे बहु-नियोक्ता योजनओं में अंशदान दे; या

[24] इस प्रकार की प्रसुविधाओं की चर्चा भारतीय चार्टर्ड एकाउंटेन्ट संस्थान, द्वारा जारी किये गये गाइडेंस नोट 'कर्मचारी शेयर आधारित भुगतानों का लेखा' में की गयी है।

(ग) उन अनौपचारिक प्रथाओं द्वारा जो एक दायित्व को उत्पन्न करती हैं। अनौपचारिक प्रथाएँ वहाँ दायित्व उत्पन्न करती हैं जहाँ पर उद्यम के पास कर्मचारी प्रसुविधाओं के भुगतान के अतिरिक्त कोई वास्तविक विकल्प नहीं है। ऐसी बाध्यता का उदाहरण है, जहाँ पर एक उद्यम की अनौपचारिक प्रथाओं में परिवर्तन इसके कर्मचारियों के साथ संबंध में अस्वीकार्य हानि करता है।

4. कर्मचारी प्रसुविधाओं में निम्नलिखित सम्मिलित हैं:

(क) अल्पकालिक कर्मचारी प्रसुविधाएं, जैसे कि वर्तमान कर्मचारियों के लिए मज़दूरी, वेतन और सामाजिक सुरक्षा अंशदान (उदाहरणार्थ अपने कर्मचारियों को चिकित्सा सुविधा के लिए नियोक्ता द्वारा एक बीमा कम्पनी को भुगतान करने के लिए अंशदान), वेतन सहित वार्षिक अवकाश, लाभ में भागीदारी और बोनस (यदि अवधि के अंत से बारह मास के भीतर संदेय हो) तथा विद्यमान कर्मचारियों के लिये गैर-मौद्रिक प्रसुविधाएँ (जैसे कि चिकित्सीय देखरेख, आवास, कार, निःशुल्क या सहायता प्राप्त माल अथवा सेवाएँ)।

(ख) रोजगार पश्चात् प्रसुविधाएँ जैसे कि उपदान, पेंशन, अन्य सेवा-निवृत्ति प्रसुविधाएँ जीवन बीमा और रोजगार के पश्चात चिकित्सीय देख रेख।

(ग) अन्य दीर्घकालिक कर्मचारी प्रसुविधाएँ, जिनमें दीर्घ-सेवा अवकाश या विश्रामकालीन अवकाश, जयंती या अन्य दीर्घ सेवा प्रसुविधाएँ, दीर्घकालिक निःशक्तता प्रसुविधाएँ सम्मिलित हैं और, यदि अवधि की समाप्ति से बारह मास के भीतर पूर्णतः भुगतान नहीं किये जाते हैं, लाभ में भागीदारी बोनस और आस्थगित प्रतिकर; तथा

(घ) सेवा समाप्ति प्रसुविधाएं।

क्योंकि उपरोक्त (क) से (घ) तक प्रत्येक श्रेणी की विभिन्न विशेषताएँ हैं, यह मानक प्रत्येक प्रवर्ग के लिए पृथक अपेक्षाएं स्थापित करता है।

5. कर्मचारी प्रसुविधाओं में सम्मिलित हैं, वे प्रसुविधाएं जो कर्मचारियों को या उनके पति या पत्नी, बच्चों या अन्य आश्रितों को दी जाती हैं, और भुगतान द्वारा (या माल या सेवाओं के उपबंध से) निपटाये जाते हैं, जो निम्नलिखित में से किसी को किया जाता है:

(क) सीधे कर्मचारियों को उनके पति या पत्नी, बच्चों या अन्य आश्रितों या उनके विधिक उत्तराधिकारियों को या नामनिर्देशितियों को ; या

(ख) अन्यों को, जैसे कि न्यास, बीमा कम्पनियां।

6. एक कर्मचारी उद्यम को पूर्णकालिक, अंशकालिक, स्थायी, नैमित्तिक या अस्थायी आधार पर सेवाएँ दे सकता है। इस मानक के प्रयोजन से, कर्मचारियों में पूर्णकालिक निदेशक या अन्य प्रबंधन कर्मचारी भी सम्मिलित हैं।

परिभाषाएँ

7. इस मानक में निम्नलिखित शब्दों को उनके विनिर्दिष्ट अर्थों के साथ प्रयोग किया गया है:

7.1 <u>कर्मचारी प्रसुविधाएं</u> सभी प्रकार के प्रतिफल हैं जो कि उद्यम द्वारा कर्मचारियों को उनके द्वारा प्रदान की गई सेवाओं के बदले दिये जाते हैं।

7.2 <u>अल्पकालिक कर्मचारी प्रसुविधाएं</u> वे कर्मचारी प्रसुविधाएं हैं जो (सेवा समाप्ति प्रसुविधाओं के अतिरिक्त) उस अवधि के समापन से बारह मास के भीतर पूर्णतः संदेय हो जाती हैं जिसमें कर्मचारी ने सम्बन्धित सेवाएँ दी हैं।

7.3 <u>रोजगार पश्चात् प्रसुविधाएं</u> वे कर्मचारी प्रसुविधाएँ हैं (सेवा समाप्ति प्रसुविधाओं के सिवाय) जो कि रोजगार के पूर्ण होने के पश्चात् संदेय हैं।

7.4 <u>रोजगार पश्चात् प्रसुविधा योजनाएं</u> वे औपचारिक या अनौपचारिक व्यवस्थाएं हैं जिनमें उद्यम एक अथवा अधिक कर्मचारियों के लिए रोजगार के पश्चात् प्रसुविधाएं प्रदान करता है।

7.5 <u>निश्चित अंशदान योजनाएँ</u> वे रोजगार पश्चात् प्रसुविधा योजनाएँ हैं जिनमें एक उद्यम भिन्न इकाई (निधि) में नियत अंशदान देता है और उसकी अधिक अंशदान देने की बाध्यता नहीं होगी यदि निधि वर्तमान और पूर्व अवधियों में कर्मचारी सेवा से सम्बंधित कर्मचारी प्रसुविधाओं के भुगतान के लिए पर्याप्त आस्तियां न धारण कर सके।

IndiaCode

7.6 निश्चित प्रसुविधा योजनाएं निश्चित अंशदान योजनाओं से भिन्न रोजगार पश्चात् प्रसुविधा योजनाएं हैं।

7.7 बहु-नियोक्ता योजनाएं वे निश्चित अंशदान योजनाएं (राज्य योजनाओं से भिन्न), या वे निश्चित प्रसुविधा योजनाएं (राज्य योजनाओं से भिन्न) हैं जो कि :

(क) *विभिन्न उद्यमों द्वारा दी गई आस्तियों को इकट्ठा करती हैं जो सामान्य नियंत्रण में नहीं है ; और*

(ख) *आस्तियों का प्रयोग एक से अधिक उद्यमों के कर्मचारियों को प्रसुविधाएं प्रदान करने के लिए करती है, और उद्यम जो सम्बंधित कर्मचारियों को नियुक्त करता है उसकी पहचान को ध्यान में न रखते हुए योगदान और प्रसुविधाओं के स्तर का निर्धारण किया जाता हैं।*

7.8 अन्य दीर्घकालिक कर्मचारी प्रसुविधाएं वे कर्मचारी प्रसुविधाएं हैं (रोजगार पश्चात् प्रसुविधाओं और सेवा समाप्ति की प्रसुविधाओं से भिन्न) जो कि अवधि के अंत से बारह मास के भीतर जिसमें कर्मचारियों ने सम्बंधित सेवाएँ प्रदान की हैं पूर्णतः संदेय नहीं हैं।

7.9 सेवा समाप्ति लाभ कर्मचारी प्रसुविधाएं जो निम्नलिखित के परिणामस्वरूप संदेय हों:

(क) *किसी कर्मचारी की सेवा निवृत होने की सामान्य तारीख से पहले उद्यम द्वारा कर्मचारी के रोजगार को समाप्त करने का निर्णय ; या*

(ख) *किसी कर्मचारी का उन प्रसुविधाओं के बदले में ऐच्छिक बेरोजगारी स्वीकार करने का निर्णय (ऐच्छिक सेवा निवृत्ति)।*

7.10 निहित कर्मचारी प्रसुविधाएं वे कर्मचारी प्रसुविधाएं है जो भावी रोजगार पर निर्भर नहीं है।

7.11 निश्चित प्रसुविधा बाध्यता का वर्तमान मूल्य बिना किन्हीं योजनागत आस्तियों को घटाये, कर्मचारियों की चालू और विगत अवधियों में सेवा के परिणाम स्वरूप बाध्यताओं के निपटारे के लिए भावी प्रत्याशित भुगतानों का वर्तमान मूल्य है।

7.12 चालू सेवा लागत वर्तमान अवधि में कर्मचारी सेवा के परिणामस्वरूप निश्चित प्रसुविधा बाध्यता के वर्तमान मूल्य में वृद्धि।

7.13 ब्याज लागत किसी अवधि के दौरान निश्चित प्रसुविधा बाध्यता दायित्व के वर्तमान मूल्य में वृद्धि है जो कि उत्पन्न होता है क्योंकि प्रसुविधाएं निपटारे में एक अवधि अधिक निकट हैं।

7.14 योजनागत आस्तियों में निम्नलिखित सम्मिलित हैं :

(क) *दीर्घकालिक कर्मचारी प्रसुविधा निधि के द्धारा रखी जाने वाली आस्तियाँ; और*

(ख) *अर्हक बीमा नीतियाँ।*

7.15 दीर्घकालिक कर्मचारी प्रसुविधा निधि के अधिकार में आस्तियाँ वे आस्तियाँ हैं (रिपोर्टिंग उद्यम द्वारा जारी किए गए अहस्तांतरणीय वित्तीय लिखतों से भिन्न) जो कि:

(क) *किसी इकाई (एक निधि) के अधिकार में हैं जो कि विधिक रूप से रिपोर्टिंग उद्यम से भिन्न हैं और केवल कर्मचारी प्रसुविधाओं के भुगतान या निधि के लिए विद्यमान हैं; और*

(ख) *जो कर्मचारी प्रसुविधाओं के भुगतान या निधि के लिए प्रयोग किये जा सकते हैं और रिपोर्टिंग उद्यम के अपने लेनदारों के भुगतान के लिए उपलब्ध नहीं हैं (दिवालिया होने की स्थिति में भी नहीं) और उनको रिपोर्टिंग उद्यम को वापिस नहीं किया जा सकता, जब तक कि ऐसा न हो:*

(i) *निधि की शेष आस्तियाँ योजना के या रिपोर्टिंग उद्यम से सम्बंधित कर्मचारी लाभ दायित्वों को पूरा करने के लिए पर्याप्त हैं; या*

(ii) *पहले से कर्मचारी प्रसुविधाओं के लिए किए गए भुगतानों की प्रतिपूर्ति के लिए आस्तियाँ रिपोर्टिंग उद्यम को वापिस कर दी जाती हैं।*

7.16 <u>एक अर्हक बीमा पालिसी</u> एक ऐसी बीमा पालिसी है जो कि ऐसे बीमाकर्ता द्वारा जारी की गई है जो रिपोर्टिंग उद्यम का, सम्बंधित पक्षकार नहीं है (लेखा मानक 18, सम्बंधित पक्षकार के प्रकटन, में परिभाषित है) पक्षकार यदि पालिसी से प्राप्त धन :

(क) *निश्चित लाभ योजना के अधीन कर्मचारी प्रसुविधाओं के भुगतान या निधि के लिए प्रयोग किया जा सकता है; और*

(ख) *रिपोर्टिंग उद्यम के लेनदारों के लिए उपलब्ध नहीं होता (दिवालियापन की स्थिति में भी नही) और रिपोर्टिंग उद्यम को नहीं दिया जा सकता जब तक कि ऐसा न हो कि:*

(i) *प्राप्त धन अधिशेष आस्तियों का प्रतिनिधित्व करता है जिनकी पालिसी के लिए समस्त सम्बंधित कर्मचारी प्रसुविधा बाध्यताओं का भुगतान करने के लिए आवश्यकता नहीं है; या*

(ii) *पहले से कर्मचारी प्रसुविधाओं के लिए किए गए भुगतानों की प्रतिपूर्ति के लिए प्राप्त धन रिपोर्टिंग उद्यम को वापिस कर दिया जाता है।*

7.17 <u>उचित मूल्य</u> वह रकम है जिसके लिए एक आर्म्स लैंथ संव्यवहार में ज्ञानवान, इच्छुक पक्षकारों के बीच में आस्ति का विनिमय किया जाता है या दायित्व का निपटारा किया जाता है।

7.18 <u>योजनागत आस्तियों पर प्रतिफल</u> योजनागत आस्तियों से व्युत्पन्न ब्याज, लाभांश और अन्य राजस्व हैं, इसके साथ ही योजनागत आस्तियों पर वसूल किये गए और न वसूल किए गये लाभ या हानियाँ जिसमें से योजना के प्रबंध की कोई लागत तथा स्वयं योजना के द्वारा कोई संदेय कर घटाये गये हैं।

7.19 <u>बीमांकिक लाभ और हानियों में सम्मिलित हैं:</u>

(क) *अनुभव समायोजन (पूर्व बीमांकिक मान्यताओं और वास्तव में जो घटित हुआ, में अन्तर के प्रभाव) ; और*

(ख) *बीमांकिक मान्यताओं में परिवर्तन के प्रभाव।*

7.20 <u>पूर्व सेवा लागत</u>, सेवा पश्चात् प्रसुविधाओं अथवा अन्य दीर्घकालिक कर्मचारी प्रसुविधाओं को आरम्भ करने या उनमें परिवर्तन करने के परिणामस्वरूप, चालू अवधि में, पूर्व अवधियों की कर्मचारी सेवा के लिए निश्चित प्रसुविधा बाध्यताओं के वर्तमान मूल्य में परिवर्तन है। पूर्व सेवा लागत सकारात्मक हो सकती है (जहाँ प्रसुविधाओं को आरम्भ किया जाता है या उनमें सुधार किया जाता है) अथवा नकारात्मक (जहाँ विद्यमान प्रसुविधाओं को कम किया जाता है) हो सकती है।

अल्पकालिक कर्मचारी प्रसुविधाएं

8. अल्पकालिक कर्मचारी प्रसुविधाओं में ऐसी मदें सम्मिलित हैं:

(क) मजदूरी, वेतन और सामाजिक सुरक्षा अंशदान ;

(ख) अल्पकालिक प्रतिकारित अनुपस्थितियां (जैसे कि वेतन सहित वार्षिक अवकाश) कर्मचारियों द्वारा प्रदान की गई सम्बंधित कर्मचारी सेवा की अवधि की समाप्ति के पश्चात् बारह मास के भीतर जहाँ अनुपस्थितियां होने की सम्भावना है ;

(ग) कर्मचारियों द्वारा प्रदान की गई संबंधित सेवा अवधि की समाप्ति के पश्चात् बारह मास के भीतर संदेय लाभ में भागीदारी और बोनस; और

(घ) चालू कर्मचारियों के लिए गैर-मौद्रिक प्रसुविधाएँ (जैसे कि चिकित्सीय देखरेख, आवास, कार और निःशुल्क या आर्थिक सहायता प्राप्त माल और सेवाएं)।

9. कर्मचारियों की अल्पकालिक प्रसुविधाओं का लेखा सीधा और स्पष्ट होता है क्योंकि बाध्यता या लागत की माप के लिए किसी बीमांकिक मान्यताओं की आवश्यकता नहीं होती और किसी बीमांकिक लाभ या हानि की सम्भावना नहीं होती। इसके अतिरिक्त अल्पकालिक कर्मचारी प्रसुविधाओं की बाध्यताओं की माप गैर-मितिकाटा आधार पर की जाती है।

अभिज्ञान और मापन

सभी अल्पकालिक कर्मचारी प्रसुविधाएं

10. जब कोई कर्मचारी लेखा अवधि के दौरान उद्यम को सेवाएं प्रदान करता है, तो उद्यम को उसकी सेवाओं के बदले में, गैर-मितिकाटा अल्पकालिक कर्मचारी प्रसुविधाओं के लिए अपेक्षित भुगतानों की रकम को अभिज्ञात करना चाहिए:

(क) *एक दायित्व (प्रोद्भूत व्यय) के रूप में पहले के किसी रकम भुगतान को घटाते हुए। यदि पूर्व रकम भुगतान प्रसुविधाओं की गैर-बट्टागत रकम से अधिक हो तो उद्यम को उस भुगतान को उस सीमा तक एक आस्ति की तरह अभिज्ञात करना चाहिए (पूर्व संदत्त व्यय) जहाँ तक अग्रिम भुगतानों के कारण भविष्य के भुगतानों में कमी हो या रोकड़ वापसी हो;और*

(ख) *एक व्यय के रूप में जब तक कि अन्य लेखा मानक इन प्रसुविधाओं को आस्ति की लागत में सम्मिलित करने की अनुमति न दे या अपेक्षा न करें (देखिए लेखा मानक 10, संपत्ति, संयंत्र और उपस्कर) पैरा 11, पैरा 14, और पैरा 17 स्पष्ट करते हैं कि एक उद्यम इन शर्तों को कर्मचारी अल्पकालिक प्रसुविधाओं पर प्रतिकारित अनुपस्थितियां और लाभ में भागीदारी तथा बोनस योजना के रूप में कैसे लागू करे।*

अल्पकालिक प्रतिकारित अनुपस्थितियां

11. एक उद्यम को कर्मचारी की अपेक्षित लागतों को प्रतिकारित अनुपस्थितियों के रूप में और पैरा 10 के अंतर्गत इस प्रकार अभिज्ञात करना चाहिए:

(क) *प्रतिकारित अनुपस्थितियों के मामले में जब कर्मचारियों की सेवा प्रदान करने के कारण, भविष्य की प्रतिकारित अनुपस्थितियाँ बढ़ जाती हैं ; और*

(ख) *असंचयी प्रतिकारित अनुपस्थितियों के मामले में, जब अनुपस्थितियां घटित होती हैं।*

12. एक उद्यम अपने कर्मचारियों की अनुपस्थिति का प्रतिकर विभिन्न कारणों से कर सकता है जिन में अवकाश, बीमारी और अल्पकालिक निःशक्तता तथा मातृत्व या पैतृत्व। प्रतिकारित अनुपस्थितियां दो वर्गों में आती हैं:

(क) संचयी ; और

(ख) असंचयी

13. संचयी प्रतिकरित अनुपस्थितियाँ वे हैं जिनको आगे ले जाया जा सकता है और भविष्य में उनका प्रयोग किया जा सकता है यदि चालू अवधि के अधिकारों का प्रयोग पूर्ण रूप से न किया गया हो। संचयी प्रतिकर सहित अनुपस्थितियाँ निहित हो सकती है (अन्य शब्दों में उद्यम को छोड़ने पर कर्मचारियों को उनके अधिकारों का प्रयोग न करने के कारण रोकड़ भुगतान के हकदार बन जाते हैं) या अनिहित हो सकती हैं (जब कर्मचारी उद्यम को छोड़ने पर अपने अधिकारों का पूर्ण प्रयोग न करने पर रोकड़ प्राप्त करने का अधिकारी नहीं बनता)। एक बाध्यता उत्पन्न होती है जैसे ही कर्मचारी ऐसी सेवाएं प्रदान करे जिनसे उनके भविष्य की प्रतिकारित अनुपस्थितियों के अधिकार बढ़ जाते हों। बाध्यता विद्यमान होती है, और उसको अभिज्ञात किया जाता है, चाहे प्रतिकारित सहित अनुपस्थितियाँ अनिहित हों, यद्यपि इस बात की सम्भावना कि कर्मचारी अपने संचित अनिहित अधिकारों का प्रयोग करने से पहले उद्यम को छोड़ सकता है, बाध्यता के मापन को प्रभावित करते हैं।

14. एक उद्यम को संचित प्रतिकारित अनुपस्थितियों की अपेक्षित लागतों का एक ऐसी अतिरिक्त रकम के रूप में मापन करना चाहिये जो कि तुलनपत्र की तारीख पर अधिकारों के संचय के परिणाम स्वरूप उत्पन्न होते हैं और उद्यम को उनके भुगतान करने की आशा है।

15. पूर्व पैरा में विनिर्दिष्ट पद्धति बाध्यता की मापन उस अतिरिक्त भुगतान पर करती है जो कि पूर्ण रूप से प्रसुविधाओं के संचय के परिणाम स्वरूप उत्पन्न होते हैं। बहुत से मामलों में उद्यम को विस्तार पूर्वक आंकलन की आवश्यकता नहीं पड़ सकती इस बात का अनुमान लगाने के लिए कि प्रतिकारित अनुपस्थितियों के प्रयोग न करने के कारण कोई महत्वपूर्ण दायित्व तो नहीं। उदाहरण के लिए, अवकाश के प्रति बाध्यता को तभी परिपक्व माना जायेगा जब औपचारिक या अनौपचारिक रूप से यह तय हो कि अप्रयुक्त अवकाश वेतन सहित की तरह लिए जा सकती है।

पैरा 14 और पैरा 15 का दृष्टांत दे रहा उदाहरण

किसी उद्यम के पास 100 कर्मचारी हैं उन में से प्रत्येक एक कैलेंडर वर्ष में पाँच कार्यकारी दिनों के अवकाश का हकदार है। अप्रयुक्त अवकाश एक कैलेंडर वर्ष तक आगे ले जा सकते हैं। अवकाश पहले चालू वर्ष के हकदारी में ली जाती है तथा तब पिछले वर्ष के आगे लाए गए शेषों में से (लीफो आधार)। 31 दिसम्बर 2004 को

अनुपयोगित हकदारी का औसत 2 दिन प्रति कर्मचारी है। उद्यम अपने पूर्व अनुभव के आधार पर, जिस के जारी रहने की आशा की जाती है, आशा करता है कि 2005 में 92 कर्मचारी 5 दिनों से अधिक की छुट्टी नहीं लेंगे और शेष 8 कर्मचारी प्रत्येक औसतन साढ़े छः दिनों की छुट्टी लेंगे।

उद्यम को आशा है कि इसके अनुपयोगित हकदारी के परिणामस्वरूप, 12 दिन के वेतन का अतिरिक्त भुगतान करना पड़ेगा जो 31 दिसम्बर, 2004 पर संचित हो चुके हैं (8 कर्मचारियों के लिए 1½ प्रति कर्मचारी के हिसाब से) इसलिए उद्यम 31 दिसम्बर, 2004 को 12 दिन के वेतन के बराबर दायित्व को अभिज्ञात करता है।

16. असंचयी प्रतिकारित अनुपस्थितियों को आगे नहीं ले जाते: चालू अवधि के अधिकारों का पूर्ण प्रयोग नहीं किया जाता तो इनका पतन हो जाता है और उद्यम को छोड़ते समय कर्मचारी अप्रयुक्त अधिकारों के लिए रोकड़ का भुगतान प्राप्त करने का अधिकारी नहीं बनता। मातृत्व और पितृत्व के मामले में साधारणतः ऐसा ही होता है। अनुपस्थिति के समय तक उद्यम दायित्व या व्यय को मान्यता नहीं देता क्योंकि कर्मचारी की सेवा प्रसुविधा की रकम को नहीं बढ़ाती है।

परन्तु एक लघु तथा मध्यम आकार की कम्पनी के पास, जिसे कि अधिसूचना में परिभाषित किया गया है, इस मानक के पैरा 11 और पैरा 16 का पालन उस सीमा तक न करने का विकल्प है, जहाँ यह पैरा लघु अवधि संचयी अनिहित अनुपस्थितियों के मापन और अभिज्ञान का वर्णन करते हैं (उदाहरणतः अल्पकालिक संचयी अनुपस्थितियाँ जिन के लिए उद्यम छोड़ते समय कर्मचारी अप्रयुक्त अधिकारों के बदले रोकड़ के भुगतान प्राप्त करने का हकदार नहीं बनता है)।

लाभ-भागीदारी और बोनस योजनाएँ

17. पैरा 10 के अधीन लाभ-भागीदारी और बोनस के भुगतान की प्रत्याशित लागत का अभिज्ञान करना चाहिए, तब और केवल तब :

(क) ***गत घटनाओं के परिणामस्वरूप ऐसे भुगतान करने की उद्यम की वर्तमान बाध्यता है ; और***

(ख) ***बाध्यता का विश्वसनीय अनुमान लगाया जा सकता है।***

वर्तमान बाध्यता तभी और केवल तभी, विद्यमान होती है जब कि उद्यम के पास भुगतान के अतिरिक्त कोई वास्तविक विकल्प न हो।

18. कुछ लाभ भागीदारी योजनाओं के अन्तर्गत कर्मचारियों को लाभ का भाग तभी मिलता है जब वे उद्यम के साथ एक विनिर्दिष्ट अवधि तक रहते हैं। ऐसी योजनाएँ उद्यम की बाध्यता को प्रकट करती हैं जैसे ही कर्मचारी सेवाएं प्रदान करता है जिसके कारण उद्यम द्वारा भुगतान किये जाने वाली रकम में वृद्धि होती है यदि वे एक विनिर्दिष्ट अवधि के अंत तक सेवा में रहे। ऐसी बाध्यताओं की माप इस सम्भावना को प्रकट करते हैं कि कुछ कर्मचारी लाभ भागीदारी भुगतान प्राप्त किये बिना सेवा छोड़ सकते हैं।

पैरा 18 का दृष्टांत दे रहा उदाहरण

एक लाभ-भागीदारी योजना के अनुसार एक उद्यम को शुद्ध लाभ के एक निश्चित भाग का भुगतान ऐसे कर्मचारियों को करना पड़ सकता है जो उद्यम को पूरा साल सेवा प्रदान करते हैं। यदि कोई भी कर्मचारी वर्ष के दौरान (उद्यम को) नहीं छोड़ते तो वर्ष के लिए सकल लाभ भागीदारी भुगतान शुद्ध लाभ का 3 प्रतिशत होंगे। उद्यम का अनुमान है कर्मचारी आवर्त के कारण भुगतान घट कर शुद्ध लाभ का 2.5 प्रतिशत हो जाएंगे।

उद्यम शुद्ध लाभ के 2.5 प्रतिशत के बराबर दायित्व और व्यय को मान्यता देता है।

19. एक उद्यम बोनस के भुगतान के लिए विधायी रूप से बाध्य नहीं है। फिर भी, कुछ मामलों में, उद्यम द्वारा बोनस का भुगतान करने की प्रथा होती है। ऐसे मामलों में भी, उद्यम को बोनस भुगतान करने की बाध्यता होती है क्योंकि उद्यम के पास बोनस का भुगतान करने का कोई वास्तविक विकल्प नहीं है। इस बाध्यता का मापन इस ओर संकेत देता है कि कुछ कर्मचारी बोनस लिए बिना ही चले जायेंगे।

IndiaCode

20. लाभ भागीदारी या बोनस योजना के लिए एक उद्यम अपनी बाध्यता का विश्वसनीय अनुमान लगा सकता है तब और केवल तब:

(क) जबकि योजना की औपचारिक शर्तों में प्रसुविधा की रकम का निर्धारण करने के लिए एक सूत्र है; या

(ख) वित्तीय विवरणों के अनुमोदन से पूर्व उद्यम भुगतान की जाने वाली रकम का निर्धारण कर लेता है; या

(ग) पिछली प्रथाएँ उद्यम की बाध्यता की रकम का स्पष्ट साक्ष्य प्रदान करती है।

21. लाभ-भागीदारी और बोनस योजना के अन्तर्गत बाध्यता का सृजन कर्मचारी सेवा से होता है और न कि उद्यम के मालिकों के साथ संव्यवहार से। इसलिए उद्यम लाभ भागीदारी और बोनस योजनाओं की लागत को एक व्यय के रूप में अभिज्ञात किया जाता है न कि शुद्ध लाभों के विवरण के रूप में।

22. यदि लाभ भागीदारी और बोनस सम्बन्धी भुगतान, कर्मचारियों द्वारा सम्बंधित सेवाओं के प्रदान करने की अवधि की समाप्ति के 12 मास में पूर्ण रूप से संदेय नहीं हो जाते, वे भुगतान अन्य दीर्घकालिक की कर्मचारी प्रसुविधाएं हैं। (देखिए पैरा 127 - पैरा 132)

प्रकटन

23. यद्यपि यह मानक कर्मचारियों की अल्पावधि प्रसुविधाओं के विशिष्ट प्रकटन की अपेक्षा नहीं करता, अन्य लेखा मानक इस प्रकटन की अपेक्षा कर सकते हैं। उदाहरणार्थ 18 *सम्बंधित पक्षकारों के प्रकटन*, की अपेक्षा के अनुसार उद्यम प्रमुख प्रबंधन अधिकारियों की कर्मचारी प्रसुविधाओं का स्पष्टीकरण देता है।

रोजगार पश्चात् प्रसुविधाएं: निश्चित अंशदान योजनाएं तथा निश्चित प्रसुविधा योजनाएँ

24. रोजगार पश्चात् प्रसुविधाओं में सम्मिलित हैं :

(क) सेवा निवृत्ति प्रसुविधाएं, उदाहरणतः उपदान और पेंशन; और

(ख) अन्य लाभ, उदाहरणतः रोजगार के पश्चात् जीवन बीमा और रोज़गार के पश्चात् चिकित्सीय देखरेख।

ऐसी व्यवस्थाएं जिनके अनुसार उद्यम रोज़गार के पश्चात् प्रसुविधाएं प्रदान करता है, रोजगार पश्चात् प्रसुविधा योजनाएं हैं। उद्यम इस मानक को इस प्रकार की सभी व्यवस्थाओं पर लागू करता है चाहे अंशदान प्राप्त करने या प्रसुविधाओं का भुगतान करने के लिए एक भिन्न इकाई की स्थापना को सम्मिलित करे या न करें।

25. रोजगार पश्चात् प्रसुविधा योजनाओं का वर्गीकरण इसके प्रमुख निबंधनों और शर्तों से उद्धृत योजना के आर्थिक पहलू के आधार पर, परिभाषित अंशदान योजनाएँ या निश्चित प्रसुविधा योजनाओं के रूप में करना चाहिये।

(क) निश्चित योजना के अन्तर्गत उद्यम की बाध्यता उस रकम तक सीमित है जिसका वह निधि में अंशदान करने के लिए सहमत होता है। अतः इस प्रकार कर्मचारी द्वारा रोजगार पश्चात् प्रसुविधा की रकम का निर्धारण, उद्यम के अंशदान की उस रकम पर निर्भर करता है (और कर्मचारी द्वारा भी) जो वह रोजगार पश्चात् प्रसुविधा योजना या बीमा कम्पनी को देता है, उन अंशदानों से उत्पन्न विनिधान प्रतिफलों को साथ लेते हुए; और

(ख) परिणामस्वरूप बीमांकिक जोखिम (कि प्रसुविधाएं अपेक्षा से कम होंगी) और विनिधान जोखिम, (कि विनियोजित आस्तियाँ प्रसुविधाओं के भुगतान के लिए अपर्याप्त होंगी) कर्मचारी के होते हैं।

26. ऐसे मामलों के उदाहरण, जहाँ उद्यम की बाध्यता उस रकम तक सीमित नहीं हैं जो कि वह निधि में अंशदान करने के लिए सहमत हैं, वे हैं जब एक उद्यम की बाध्यता निम्नलिखित के द्वारा हो:

(क) एक योजना लाभ सूत्र जो कि पूर्ण रूप से अंशदान की रकम से जुड़ा नहीं है ; या

(ख) अंशदानों पर एक निश्चित प्रतिफल के लिए दी गयी एक गारंटी, अप्रत्यक्ष रूप से एक योजना द्वारा या प्रत्यक्षत; या

(ग) अनौपचारिक प्रथाएँ जो कि एक बाध्यता को उत्पन्न करती हैं, उदाहरणतः, एक बाध्यता उत्पन्न हो सकती है जहाँ उद्यम का इतिहास बताता है कि वह अपने पूर्व कर्मचारियों की प्रसुविधाओं को, मुद्रास्फीति के स्तर के साथ-साथ बढ़ा देता है, यद्यपि ऐसा करने के लिए उस पर कोई विधिक दायित्व नहीं है।

27. निश्चित प्रसुविधा योजनाओं के अन्तर्गत:

(क) उद्यम की बाध्यता है कि वह वर्तमान और पूर्व कर्मचारियों को स्वीकृत प्रसुविधाएँ प्रदान करे; और

(ख) बीमांकिक जोखिम (कि प्रसुविधाओं की लागत अपेक्षा से अधिक होगी) तथा विनिधान जोखिम सारतत्व, में उद्यम के होते हैं। यदि विनिधान या बीमांकिक अनुभव अपेक्षा से खराब हैं, उद्यम की बाध्यता बढ़ सकती है।

28. पैरा 29 से 43 बहु-नियोक्ता योजनाओं, राज्य योजनाओं और बीमाकृत योजनाओं के संदर्भ में निश्चित अंशदान योजनाओं तथा निश्चित प्रसुविधा योजनाओं का वर्णन करते हैं।

बहु-नियोक्ता योजनाएँ

29. एक उद्यम को योजना के निबंधनों के अधीन एक बहु-नियोक्ता योजना को एक निश्चित अंशदान योजना या एक निश्चित प्रसुविधा योजना में वर्गीकृत करना चाहिए (औपचारिक निबंधनों से परे बाध्यताओं को सम्मिलित करते हुए)। जहाँ बहु-नियोक्तता योजना एक निश्चित प्रसुविधा योजना है, एक उद्यम को चाहिए:

(क) ***कि वह निश्चित प्रसुविधा बाध्यता, योजनागत आस्तियों, और योजना से जुड़ी लागतों के अपने अनुपातिक भाग का वैसे ही लेखा दें जैसा कि वह किसी अन्य निश्चित प्रसुविधा योजना के लिए देते हैं; और***

(ख) ***पैरा 120 में अपेक्षित सूचना प्रकट करें।***

30. जब एक बहु- नियोक्ता योजना, जो कि एक निश्चित प्रसुविधा योजना है, के लिए निश्चित प्रसुविधा लेखा के प्रयोग के लिए पर्याप्त सूचना उपलब्ध न हो, तो एक उद्यम को चाहिए;

(क) ***पैरा 45-75 के अधीन योजना का लेखा करें मानों यदि यह निश्चित अंशदान योजना होती।***

(ख) ***प्रकट करें:***

(i) ***यह वास्तविकता कि योजना एक निश्चित प्रसुविधा योजना है; और***

(ii) ***वह कारण कि उद्यम के पास योजना का निश्चित प्रसुविधा योजना के रूप में लेखा करने के लिए पर्याप्त सूचना क्यों उपलब्ध नहीं है; और***

(ग) ***उस सीमा तक जो कि योजना में एक अधिशेष या कमी भावी अंशदानों की रकम को प्रभावित कर सकता है इसके अतिरिक्त प्रकट करें:***

(i) ***उस अधिशेष या कमी के बारे में कोई उपलब्ध सूचना;***

(ii) ***उस अधिशेष या कमी को निर्धारित करने में प्रयुक्त आधार; और***

(iii) ***उद्यम के लिए इससे जुड़े निहितार्थ, यदि हों तो प्रभाव।***

31. निश्चित प्रसुविधा बहु-नियोक्ता योजना का एक उदाहरण वह है जहाँ :

(क) योजना का वित्तपोषण इस प्रकार से होता है कि अंशदानों को उस स्तर तक रखा जाये कि उसी अवधि में संदेय प्रसुविधाओं के भुगतान के लिए पर्याप्त हो; और भविष्य की प्रसुविधाएं जिनको चालू वर्ष में अर्जित किया जाता है उनका भुगतान भविष्य के अंशदानों में से किया जाएगा; और

(ख) कर्मचारियों की प्रसुविधाएं उनके सेवा काल द्वारा निर्धारित होती हैं और भागीदार उद्यमों के पास कोई ऐसा वास्तविक साधन नहीं है कि कर्मचारियों द्वारा आहरण की तारीख तक अर्जित प्रसुविधाओं में अंशदान दिये बिना योजना से बाहर निकल जाये। ऐसी योजना उद्यमी के लिए बीमांकिक जोखिम उत्पन्न करती है ; यदि तुलन पत्र की तारीख पर प्रसुविधाओं की अंतिम लागत अपेक्षा से अधिक है तो नियोक्ता

को या अपना अंशदान बढ़ाना पड़ेगा या कर्मचारियों को प्रसुविधाओं में कटौती स्वीकार करने के लिए राजी करना पड़ेगा। अतः ऐसी योजना निश्चित प्रसुविधा योजना है।

32. जहां बहु-नियोक्ता योजना जो कि निश्चित प्रसुविधा योजना है के बारे में पर्याप्त सूचना उपलब्ध है, उद्यम को अपने निश्चित प्रसुविधा बाध्यता और योजना से सम्बंधित रोजगार पश्चात् लागतों के आनुपातिक भाग का लेखा उसी प्रकार से करना चाहिये जैसे किसी भी निश्चित योजना के लिए करता है। यद्यपि कुछ मामलों में उद्यम अंतर्निहित वित्तीय स्थिति और योजना के निष्पादन में अपने भाग को लेखा के उद्देश्य से पर्याप्त विश्वसनीयता के साथ न पहचान सके, यह तब घटित हो सकता है जब:

(क) इस मानक की अपेक्षा को संतुष्ट करने वाली योजना के बारे में सूचना की प्राप्ति के लिए उद्यम के पास कोई पहुँच नहीं है; या

(ख) यह योजना भागीदार उद्यमों को अन्य उद्यमों के चालू और पूर्व कर्मचारियों से जुड़े बीमांकिक जोखिमों के प्रति अनावृत करता है, जिसके परिणामस्वरूप बाध्यता, योजनागत आस्तियों और योजना में भागीदार अलग-अलग उद्यमों की लागतों को आबंटित करने के लिए कोई अनवरत तथा विश्वनीय आधार नहीं होता है।

उन मामलों में, एक उद्यम योजना का लेखा इस प्रकार करता है जैसे कि यह निश्चित अंशदान योजना थी तथा पैरा 30 के द्वारा अपेक्षित अतिरिक्त प्रकटन करता है।

33. बहु-नियोक्ता योजनाएं, सामूहिक प्रशासन योजनाओं से भिन्न हैं। एक सामूहिक प्रशासन योजना तो केवल एकल नियोक्ता योजनाओं का समूहीकरण है, जिसमें भागीदार नियोक्ताओं को अपनी आस्तियों के विनिधान के उद्देश्य के लिए इकट्ठा करने की अनुमति है और विनिधान प्रबन्ध एवं प्रशासकीय लागतों को घटाया जाता है, परन्तु विभिन्न नियोक्ताओं के दावों को उन्हीं के कर्मचारियों के एकमात्र लाभ के लिए अलग-अलग किया जाता है। समूह प्रशासन योजनाएँ कोई विशेष लेखा समस्याएँ खड़ी नहीं करती क्योंकि उनका किसी अन्य एकल नियोक्ता योजना की भांति प्रतिपादन करने के लिए पर्याप्त सूचना उपलब्ध है और इसलिए कि ऐसी योजनाएं भागीदार उद्यमों को अन्य उद्यमों के वर्तमान तथा पूर्व कर्मचारियों से सम्बंधित बीमांकिक जोखिमों के प्रति अनावृत नहीं करती है। इस मानक की परिभाषा के अनुसार उद्यम से अपेक्षा की जाती है कि वह समूह प्रशासन योजना का वर्गीकरण योजना के निबंधनों के अनुसार एक निश्चित अंशदान योजना या निश्चित प्रसुविधा योजना के रूप में करे (ऐसी बाध्यताओं सहित, जो औपचारिक निबंधनों के अतिरिक्त हों)

34. निश्चित प्रसुविधा योजनाएं जो समान नियंत्रण में विभिन्न उद्यमों के मध्य शेयर जोखिमों का बंटवारा करती हैं, उदाहरण के लिए, एक पैतृक या इसकी समनुषंगी इकाइयां, बहु-नियोक्ता योजनाएं नहीं हैं।

35. ऐसी योजना के बारे में यदि कोई संविदात्मक समझौता है या वर्णित नीति है कि योजना की शुद्ध निश्चित लागतों को पूर्ण रूप से अलग-अलग समूह उद्यमों पर प्रभारित किया जाए, तो उद्यम इस प्रकार प्रभारित निश्चित प्रसुविधा लागतों को अपने पृथक वित्तीय विवरण में अभिज्ञात करता है। यदि कोई ऐसा समझौता या नीति नहीं है, तो शुद्ध निश्चित प्रसुविधा लागत को समूह, उद्यम अपने पृथक वित्तीय विवरणों में अभिज्ञात करता है जो कि विधायी रूप से योजना का प्रायोजक है। शेष समूह उद्यम अवधि में संदेय अंशदानों की लागत के बराबर अपने पृथक वित्तीय विवरणों में अभिज्ञात करते हैं।

36. लेखा मानक 29, ***उपबंधित रकमें , आकस्मिक दायित्व और आकस्मिक आस्तियाँ***, एक उद्यम से अपेक्षा करता है कि कुछ प्रकार के आकस्मिक दायित्वों को अभिज्ञात करे या उसके विषय में सूचना प्रकट करे। बहु-नियोक्ता योजना के संदर्भ में आकस्मिक दायित्व निम्नलिखित से उत्पन्न हो सकता है; उदाहरणार्थ:

(क) अन्य भागीदार उद्यमों से सम्बंधित बीमांकिक हानि क्योंकि प्रत्येक उद्यम जो बहु-नियोक्त योजना मे भाग लेता है प्रत्येक अन्य भाग लेने वाले उद्यम के बीमांकिक जोखिम बांटता है ; या

(ख) योजना निबंधनों के अन्तर्गत अन्य उद्यमों द्वारा भागीदारी छोड़ने के परिणाम स्वरूप योजना में वित्तीय कमी को पूरा करने की कोई जिम्मेदारी।

राज्य योजनाएँ

37. एक उद्यमी को राज्य योजना का उसी पद्धति से लेखा करना चाहिए जैसे कि बहु- नियोक्ता योजना के लिए (देखिए पैरा 29 और 30) किया जाता है।

38. राज्य योजनाएं विधान द्वारा सभी उद्यमों के लिए स्थापित की जाती हैं (अथवा किसी विशेष श्रेणी में सभी उद्यम उदाहरणार्थ, एक विशेष उद्योग) और राष्ट्रीय या स्थानीय सरकार या किसी अन्य संस्था द्वारा प्रचालित होती हैं (उदाहरणार्थ, विशेष रूप से इसी उद्देश्य से बनाई गई एक स्वायत्त संस्था) जिस पर रिपोर्टिंग उद्यम का कोई नियंत्रण या प्रभाव नही हैं। एक उद्यम द्वारा स्थापित कुछ योजनाएँ दोनों अनिवार्य प्रसुविधाएँ प्रदान करती हैं जो उन प्रसुविधाओं को प्रतिस्थापित करती हैं जो कि अन्यथा राज्य योजना और अतिरिक्त ऐच्छिक प्रसुविधाओं के अधीन आती हैं ऐसी योजनाएं राज्य योजनाएं नहीं हैं।

39. राज्य योजनाएं, योजना के अन्तर्गत उद्यम की बध्यता के आधार पर प्रकृति में निश्चित प्रसुविधा या निश्चित अंशदान की श्रेणी में आती हैं। कई राज्य योजनाओं का इस प्रकार से निधिकरण किया जाता है कि अंशदान ऐसे एक स्तर पर निर्धारित किये जाते हैं जो कि उसी अवधि में संदेय अपेक्षित प्रसुविधाओं के भुगतान के लिए पर्याप्त हों, चालू अवधि में अर्जित भावी प्रसुविधाओं का भुगतान भावी अंशदानों से किया जाएगा। ऐसा होने पर भी, अधिकतर राज्य योजनाओं में, उद्यम की उन भविष्य की प्रसुविधाओं के भुगतान की कोई बाध्यता नहीं है, उसकी बाध्यता केवल अंशदानों का भुगतान करना है जब वे संदेय हो जायें और यदि उद्यम राज्य योजनाओं के सदस्यों की नियुक्ति बंद कर दे, तो ऐसे कर्मचारियों द्वारा पूर्व वर्षों में अर्जित प्रसुविधाओं के भुगतान की कोई बाध्यता नहीं होगी। इस कारण से राज्य योजनाओं को सामान्यतः अंशदान योजनाओं के रूप में परिभाषित किया जाता है। यद्यपि, दुर्लभ मामलों में जब राज्य योजना निश्चित प्रसुविधा योजना के रूप में परिभाषित की जाती है, उद्यम पैरा 29 से पैरा 30 में वर्णित प्रतिपादन लागू करता है।

बीमाकृत प्रसुविधाएँ

40. एक उद्यम रोजगार पश्चात् प्रसुविधा योजना की निधि के लिए बीमा प्रीमियम का भुगतान कर सकता है। उद्यम को ऐसी योजना को निश्चित अंशदान योजना की तरह मानना चाहिये जब तक कि उद्यम की बाध्यता हो या तो (प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष योजना के द्वारा):

(क) ***जब कर्मचारी प्रसुविधाएँ प्रत्यक्ष रूप से संदेय हो जाए तो उनका भुगतान करें ; या***

(ख) ***यदि बीमाकर्ता सब भावी कर्मचारी प्रसुविधाओं का, जो कर्मचारी की चालू और पूर्व अवधियों की सेवा से संबंधित है भुगतान नहीं करता, तो आगे की रकमों का भुगतान करें।***

यदि उद्यम ऐसी बाध्यता को अपने पास रखता है, तो उद्यम द्वारा योजना को निश्चित प्रसुविधा योजना के रूप में मानना चाहिए।

41. बीमा संविदा द्वारा बीमाकृत प्रसुविधा का कर्मचारी सुविधाओं के लिए उद्यम की बाध्यता के साथ प्रत्यक्ष या स्वचलित सम्बंध की आवश्यकता नहीं है। रोजगार पश्चात् प्रसुविधा योजनाएं, जिनमें बीमा संविदा निहित है उनके आलेखन और निधि के बीच वही अन्तर है जैसा दूसरी निधिकृत येाजनाओं में है।

42. जहां पर एक उद्यम रोजगार पश्चात् प्रसुविधा बाध्यता का बीमा पालिसी में अंशदान देकर निधिकरण करता है जिसमें उद्यम (चाहे प्रत्यक्षतः, अप्रत्यक्षतः योजना द्वारा, भावी प्रीमियम को स्थापित करने के तंत्र द्वारा, या बीमा कर्ता के साथ सम्बंधित पक्षकारों संबंधों द्वारा) एक बाध्यता को अपने पास रखता है, वहां प्रीमियम का भुगतान निश्चित अंशदान व्यवस्था नहीं बन जाता। यह अनुकरण करता है कि उद्यम:

(क) अर्हक बीमा पालिसी को एक योजनागत आस्ति मानता है (पैरा 7 देखिए); और

(ख) अन्य बीमा पालिसियों को प्रतिपूर्ति अधिकारों की तरह अभिज्ञात करता है (यदि पालिसी पैरा 103 के आधार को संतुष्ट करती है)।

43. जहाँ पर एक बीमा पॉलिसी विशिष्ट योजनागत भागीदार या योजनागत भागीदार के समूह के नाम है और उद्यम की पालिसी में किसी भी हानि को पूरा करने की बाध्यता न हो, वहां उद्यम की कर्मचारी को प्रसुविधा देने की कोई बाध्यता नहीं बनती तथा प्रसुविधाएँ देने की जिम्मेदारी पूरी तरह से बीमाकर्ता की ही है। ऐसी संविदाओं में स्थिर प्रीमियम का भुगतान, सारतत्व में बाध्यता को पूरा करने के लिए विनिधान की अपेक्षा कर्मचारी प्रसुविधा बाध्यता की निष्पत्ति है।

परिणामस्वरूप उद्यम की कोई आस्ति या दायित्व नहीं है। इसलिए उद्यम ऐसे भुगतानों को निश्चित अंशदान योजना मानता है।

रोजगार पश्चात् प्रसुविधाएँ: निश्चित प्रसुविधा योजनाएं

44. निश्चित अंशदान योजना के लिए लेखा स्पष्ट और सीधा है क्योंकि रिपोर्टिंग उद्यम की प्रत्येक अवधि के लिए बाध्यता उस अवधि के लिए अंशदान की रकम द्वारा निर्धारित होती है। परिणामस्वरूप, बाध्यता और व्यय के मापन के लिए किन्हीं बीमांकिक मान्यताओं की आवश्यकता नहीं है और किसी बीमांकिक लाभ या हानि की सम्भावना नहीं है। फिर भी, बाध्यताओं के मापन गैर-मितिकाटा आधार पर होती है, सिवाय वहां के जहाँ वे उस अवधि के अंत के पश्चात् जिसमें कर्मचारी ने सम्बंधित सेवाएं प्रदान की हैं, बारह मास के भीतर पूर्णतः संदेय नहीं होती हैं।

आभिज्ञान और मापन

45. जब एक कर्मचारी ने एक अवधि में सेवाएं प्रदान की हों, उद्यम को उस सेवा के बदले में निश्चित अंशदान योजना में संदेय अंशदान को अभिज्ञात करना चाहिए:

(क) ***किसी पहले किये गए अंशदान को घटाने के पश्चात् एक दायित्व के रूप में (प्रोद्भूत व्यय)। यदि पहले किए गए अंशदान तुलनपत्र की तारीख से पूर्व प्रदान की गई सेवाओं के लिए संदेय अंशदानों से अधिक हैं, उद्यम को उस अधिकता के लिए आस्ति (पूर्वदत्त व्यय) को अभिज्ञात करना चाहिए उस सीमा तक कि इस पूर्व भुगतान के कारण, उदाहरण के लिए भविष्य के रोकड़ भुगतानों में कमी आएगी या रोकड़ वापिसी होगी;और***

(ख) ***व्यय के रूप में, जब तक कि कोई और लेखा मानक इस अंशदान को आस्ति की लागत में सम्मिलित करने की अनुमति न दे या वांछनीय न माने। (देखिए उदाहरण के लिए, लेखा मानक 10, संपत्ति, संयंत्र और उपस्कर)***

46. जहाँ निश्चित अंशदान योजना में अंशदान कर्मचारी द्वारा संबंधित सेवा अवधि की समाप्ति के पश्चात् बारह मास में पूर्णतया संदेय नहीं होते, उनको पैरा 78 में विनिर्दिष्ट मितिकाटा दर पर मितिकाटा कर देना चाहिये :

परन्तु लघु और मध्यम आकार की कम्पनी के पास जिसे कि अधिसूचना में परिभाषित किया गया है, उन अंशदानों का मितिकाटा करने का विकल्प है जो कि तुलन पत्र की तारीख के बारह मास की अवधि से भी अधिक बाद में संदेय हैं।

प्रकटन

47. उद्यम को निश्चित अंशदान योजनाओं के लिए व्यय के रूप में अभिज्ञात रकम का प्रकटन करना चाहिए।

48. लेखा मानक 18, सम्बंधित पक्षकार के प्रकटन, की अपेक्षा के अनुसार एक उद्यम मुख्य प्रबन्ध अधिकारियों के लिए निश्चित अंशदान योजनाओं में किये अंशदानों की सूचना प्रकट करता है।

रोजगार पश्चात् प्रसुविधाएँ: निश्चित प्रसुविधा योजनाएं

49. निश्चित प्रसुविधा योजनाओं के लिए लेखा जटिल है, क्योंकि बाध्यताओं और व्ययों के मापन के लिए बीमांकिक धारणाओं की आवश्यकता होती है तथा बीमांकिक लाभों या हानियों की संभावना होती है। इसके अतिरिक्त, बाध्यताओं का मापन मितिकाटा आधार पर किया जाता है क्योंकि उनका निपटारा कर्मचारियों द्वारा सम्बंधित सेवा प्रदान करने के कई वर्षों पश्चात् किया जा सकता है। जबकि इस मानक के अनुसार, रिपोर्टिंग उद्यम का उत्तरदायित्व है कि वह निश्चित प्रसुविधा योजनाओं के अन्तर्गत बाध्यताओं का मापन करे, यह मान्य है कि ऐसा करने के लिए, उद्यम साधारणतया योग्यता प्राप्त बीमांकक की सेवाएं प्राप्त करें।

अभिज्ञान और मापन

50. निश्चित प्रसुविधा योजनाएं गैरनिधिकृत हो सकती हैं या उद्यम के अंशदानों द्वारा पूर्णतया या अंशतः निधिकृत हो सकती हैं और कई बार इसके कर्मचारी एक इकाई में अथवा निधि, जो कि विधायी रूप से रिपोर्टिंग उद्यम से भिन्न है और जिसमें से कर्मचारी प्रसुविधाओं का भुगतान किया जाता है। निधिकृत प्रसुविधाओं का भुगतान कब संदेय होता है, निधि की वित्तीय स्थिति और विनिधान निष्पादन पर ही निर्भर नहीं करता बल्कि निधि में कोई कमी आने पर उद्यम द्वारा पूरा करने की क्षमता पर भी निर्भर करता है। इस प्रकार एक उद्यम सारतत्व में, योजना से जुड़े बीमांकिक और जोखिमों का निम्नांकन भी करता है। फलस्वरूप निश्चित प्रसुविधा योजना के लिए अभिज्ञात व्यय अवधि के संदेय अंशदानों की ही रकम हो अनिवार्य नहीं है।

51. निश्चित प्रसुविधा योजनाओं के लेखा में उद्यम द्वारा निम्नलिखित कदम उठाये जाते हैं:

(क) कर्मचारियों द्वारा चालू और पूर्व अवधियों में प्रदान की गई सेवाओं के बदले अर्जित प्रसुविधाओं की रकम का विश्वसनीय अनुमान लगाने के लिए बीमांकन तकनीक का प्रयोग करते हैं। एक उद्यम से चालू और पूर्व अवधियों में प्रसुविधाओं के आबंटन के निर्धारण की अपेक्षा की जाती है (पैरा 68-72 देखिए) और जनसांख्यिकी चरों (जैसे कि कर्मचारी आवर्त और मृत्यु संख्या) और वित्तीय चरों (जैसे कि वेतन तथा चिकित्सा लागत में भावी वृद्धियां) का अनुमान लगाते हैं (बीमांकिक मान्यताएं) जो प्रसुविधा की लागत को प्रभावित करेंगी (पैरा 73-91 देखिए);

(ख) निश्चित प्रसुविधा बाध्यता और चालू सेवा लागत का वर्तमान मूल्य निर्धारित करने के लिए 'प्रोजेक्टेड यूनिट क्रेडिट पद्धति' का प्रयोग कर के प्रसुविधा को मितिकाटा करते हैं (पैरा 65-67 देखिए);

(ग) किसी योजनागत आस्तियों के उचित मूल्य का निर्धारण करते हैं (पैरा 100-102 देखिए);

(घ) बीमांकिक लाभों और हानियों की कुल रकम का निर्धारण करते हैं (पैरा 92-93 देखिए);

(ङ) जहाँ पर योजना को आरम्भ किया गया है, या परिवर्तित किया गया है, परिणामस्वरूप पूर्व सेवा लागत का निर्धारण करते हैं (पैरा 94-99 देखिए) ; और

(च) जहाँ पर योजना रद्द कर दी गई है या निपटा दी गई है, परिणामस्वरूप लाभ और हानि का निर्धारण करते हैं (पैरा 110-116 देखिए)।

जहाँ एक उद्यम के पास एक से अधिक निश्चित सुविधा योजना है, उद्यम यह प्रक्रिया प्रत्येक महत्वपूर्ण योजना के लिए पृथक रूप से लागू करता है।

52. पैरा 51 के अधीन रकमों के मापन के लिए, कुछ मामलों में अनुमान, औसत और सरल किये गए आंकलन, विस्तृत आंकलन के लिए करीब-करीब शुद्ध विश्वसनीय अनुमान प्रदान कर सकता है।

निश्चित प्रसुविधा लाभ योजना के अधीन बाध्यता के लिए लेखा

53. एक उद्यम न केवल एक निश्चित प्रसुविधा योजना की औपचारिक शर्तों के अधीन इसकी विधिक बाध्यता का लेखा करे बल्कि अन्य किसी बाध्यता का भी जो उद्यम की अनौपचारिक प्रथाओं से उत्पन्न होती हैं। अनौपचारिक प्रथाएँ एक बाध्यता उत्पन्न करती हैं जहाँ उद्यम के पास सिवाय कर्मचारी को प्रसुविधा देने के कोई वास्तविक विकल्प न हो। ऐसी बाध्यता का उदाहरण है, जहाँ उद्यम की अनौपचारिक प्रथाओं मे परिवर्तन कर्मचारी के साथ सम्बंध में अस्वीकार्य क्षति उत्पन्न करे।

54. निश्चित प्रसुविधा योजना की औपचारिक शर्त एक उद्यम को योजना के अधीन बाध्यता को समाप्त करने की आज्ञा दे सकती है। फिर भी, आमतौर पर एक उद्यम के लिए, यदि कर्मचारियों को रोक कर रखना है, यह कठिन होगा कि योजना को रद्द कर दे। इसलिए इसके विपरीत साक्ष्य की अनुपस्थिति में रोजगार पश्चात् प्रसुविधा का लेखा यह मान लेता है कि उद्यम जिन प्रसुविधाओं की वर्तमान में प्रतिज्ञा कर रहा है, कर्मचारियों के शेष कार्यकारी जीवन में भी करता रहेगा।

तुलन-पत्र

55. वह रकम जो कि निश्चित प्रसुविधा दायित्व अभिज्ञात की गई है निम्नलिखित रकमों का शुद्ध योग होना चाहिए:

(क) तुलन पत्र की तारीख पर निश्चित प्रसुविधा बाध्यता का वर्तमान मूल्य (पैरा 65 देखिए);

(ख) घटायें कोई पूर्व सेवा लागत जिसको अभी तक अभिज्ञात नहीं किया गया (पैरा 94 देखिए);

(ग) घटायें तुलनपत्र तारीख पर योजनागत आस्तियों का उचित मूल्य (यदि कोई है) जिनमें से बाध्यताओं का प्रत्यक्ष निपटान होता है। (पैरा 100-102 देखिए)।

56. निश्चित प्रसुविधा बाध्यता का वर्तमान मूल्य किसी योजनागत आस्तियों के उचित मूल्य को घटाने से पहले सकल बाध्यता है।

57. एक उद्यम को निश्चित प्रसुविधा बाध्यताओं के वर्तमान मूल्य और किसी योजनागत आस्ति के उचित मूल्य का निर्धारण पर्याप्त नियमितता के साथ करना चाहिये जिससे कि वित्तीय विवरणों में अभिज्ञात रकमें तुलन पत्र की तारीख पर निर्धारित की जाने वाली रकमों से सारवान तौर पर भिन्न न हो।

58. निश्चित प्रसुविधा बाध्यता के वर्तमान मूल्य का विस्तृत बीमांकिक मूल्यांकन अन्तरालों में किया जा सकता है जो तीन वर्षों से अधिक न हो। यद्यपि इस बात को ध्यान में रखते हुए कि वित्तीय विवरणों में अभिज्ञात रकम, तुलन पत्र तारीख पर निर्धारित की जाने वाली रकमों से सारवान तौर पर भिन्न नहीं होती है, बिल्कुल हाल के मूल्यांकनों का तुलन पत्र की तारीख पर पुनर्आवलोकन करके उनको वर्तमान स्तर पर ले आते हैं ताकि मूल्यांकन की तारीख और तुलनपत्र की तारीख के मध्य हुए महत्वपूर्ण संव्यवहारों और उनमें हुए महत्वपूर्ण परिवर्तनों (ब्याज दरों में परिवर्तन सहित) को दर्शाया जा सके। किसी योजनागत आस्ति का उचित मूल्य तुलन पत्र की तारीख पर निर्धारित किया जाता है।

59. पैरा 55 के अधीन निर्धारित रकम नकारात्मक हो सकती है (एक आस्ति)। उद्यम को परिणामजन्य आस्ति का मापन उस रकम पर करना चाहिये जो निम्नलिखित में से कम हो:

(क) पैरा 55 के अधीन निर्धारित रकम ; और

(ख) योजना से वापसी के रूप में उपलब्ध आर्थिक लाभ का वर्तमान मूल्य या योजना के भविष्य के अंशदानों में कमी। इन आर्थिक लाभों का वर्तमान मूल्यांकन पैरा 78 में विनिर्दिष्ट मितिकाटा दर का प्रयोग करते हुए करना चाहिए।

60. एक आस्ति उत्पन्न हो सकती है जहाँ एक निश्चित प्रसुविधा लाभ योजना अतिमूल्यांकित हो चुकी है या कुछ मामलों में जहाँ बीमांकिक लाभों को अभिज्ञात किया गया है। एक उद्यम ऐसे मामलों में आस्ति को अभिज्ञात करता है क्योंकि:

(क) उद्यम एक संसाधन को नियंत्रित करता है जो कि अधिशेषों का प्रयोग कर के भविष्य में लाभों के सृजन की एक योग्यता है ;

(ख) वह नियंत्रण पूर्व घटनाओं के परिणाम स्वरूप है। (उद्यम द्वारा भुगतान अंशदान और कर्मचारियों द्वारा प्रदान की गई सेवाएं) ; और

(ग) उद्यम को भविष्य के आर्थिक लाभ उपलब्ध हैं भविष्य के अंशदानों में कटौती या रोकड़ वापसी के रूप में, या तो उद्योग को प्रत्यक्ष रूप से या अप्रत्यक्ष रूप से किसी अन्य योजना को जो कि घाटे में हो।

पैरा 59 का दृष्टांत दे रहा उदाहरण

	(रकम रु. में)
निश्चित लाभ योजना की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं :	
बाध्यता का वर्तमान मूल्य	1,100
योजनागत आस्तियों का उचित मूल्य	(1,190)
	(90)
गैर-अभिज्ञात पूर्व सेवा लागत	(70)
पैरा 55 के अधीन निर्धारित नकारात्मक रकम	(160)
भविष्य की उपलब्ध वापसियों का वर्तमान मूल्य और भविष्य के अंशदानों में कटौतियां	90
पैरा 59 (ख) के अन्तर्गत सीमा	90

90 रु., 160 रु. से कम हैं। इसलिए उद्यम 90 रु. को आस्ति की तरह अभिज्ञात करता है और यह प्रकट करता है और उद्यम ने आस्ति की कैरिंग रकम को 70 रु. कम कर दिया है [देखिए पैरा 120 च (ii)]

लाभ और हानि का विवरण

61. एक उद्यम को लाभ और हानि के विवरण में निम्नलिखित रकमों के शुद्ध योग को अभिज्ञात करना चाहिये, सिवाय उस सीमा तक कि कोई अन्य लेखा मानक उनको किसी आस्ति की लागत में सम्मिलित करने की अनुमति दे या अपेक्षा करे:

(क) **चालू सेवा लागत (पैरा 64-91 देखिए);**

(ख) **ब्याज लागत (पैरा 82 देखिए);**

(ग) **किसी योजनागत आस्तियों पर प्रत्याशित प्रतिफल (पैरा 107-109 देखिए) और किसी प्रतिपूर्ति अधिकार पर प्रतिफल (पैरा 103 देखिए);**

(घ) **बीमांकिक लाभ तथा हानियां (पैरा 92-93 देखिए);**

(ङ) **पूर्व सेवा लागत उस सीमा तक कि पैरा 94 उद्यम से उसको अभिज्ञात करने की अपेक्षा करता है;**

(च) **किन्ही कटौतियों तथा निपटानों का प्रभाव (पैरा 110 और 111 देखिए) ; और**

(छ) **पैरा 59(ख) में सीमा का प्रभाव, जो कि वहाँ तक जहाँ पैरा 55 के अंतर्गत निर्धारित की गई रकम (यदि नकारात्मक हो) 59(ख) के अंतर्गत निर्धारित की गई रकम से अधिक होती है।**

62. अन्य लेखा मानक कुछ कर्मचारी प्रसुविधा लागतों को आस्ति की लागत में सम्मिलित करने की अपेक्षा करते हैं जैसे कि मूर्त स्थिर आस्तियाँ (देखिए लेखा मानक 10, *संपत्ति, संयंत्र और उपस्कर*)। इस प्रकार की आस्तियों में रोजगार पश्चात् लागतों का उचित भाग पैरा 61 में सूचीबद्ध घटकों को सम्मिलित करता है।

दृष्टांत

63. इस मानक से संलग्न दृष्टांत-I में ऐसा उदाहरण है जो व्याख्या करता है निश्चित प्रसुविधा योजनाओं से सम्बधित ऐसी रकमों के घटकों की जो तुलन पत्र तथा लाभ और हानि के विवरण में अभिज्ञात है।

अभिज्ञान और मापन: निश्चित प्रसुविधा बाध्यता का वर्तमान मूल्य और चालू सेवा लागत

64. निश्चित प्रसुविधा योजना की अंतिम लागत कई चरों से प्रभावित हो सकती है जैसे कि अंतिम वेतन, कर्मचारी की आवर्त और मृत्यु की संख्या, चिकित्सा लागतों की प्रवृति और निधिकृत योजना के लिए, योजनागत आस्तियों पर विनिधान आय। योजना की अंतिम लागत अनिश्चित है और यह अनिश्चितता समय की दीर्घ अवधि तक निरंतर रह सकती है। रोजगार पश्चात् प्रसुविधा बाध्यताओं के वर्तमान मूल्य और सम्बंधित चालू सेवा लागत की माप के लिए, यह आवश्यक है कि:

(क) बीमांकिक आंकलन पद्धति का प्रयोग करें (पैरा 65-67 देखिए);

(ख) सेवा अवधियों में प्रसुविधाओं का आबंटन करें (पैरा 68-72 देखिए); और

(ग) बीमांकिक मान्यताएं बनाएं (पैरा 73-91 देखिए)।

बीमांकिक मूल्यांकन पद्धति

65. एक उद्यम को अपने निश्चित प्रसुविधा बाध्यताओं का और संबंधित चालू सेवा लागत का और जहाँ लागू हो सके, पूर्व सेवा लागत का वर्तमान मूल्य निर्धारित करने के लिए प्रोजेक्टेड यूनिट क्रेडिट पद्धति का प्रयोग करना चाहिए।

66. प्रोजेक्टेड यूनिट क्रेडिट पद्धति (जो कि कई बार सेवा पर समानुपातिक प्रोद्भूत प्रसुविधा पद्धति या लाभ/सेवा के वर्ष पद्धति के नाम से भी जानी जाती है) मानती है कि सेवा की हर अवधि प्रसुविधा अधिकार की एक अतिरिक्त इकाई को जन्म देती है (पैरा 68-72 देखिए) और अंतिम दायित्व का निर्धारण करने के लिए प्रत्येक इकाई की अलग-अलग माप करती है (पैरा 73-91 देखिए)।

67. एक उद्यम सम्पूर्ण रोजगार पश्चात् प्रसुविधा बाध्यता को मितिकाटा करता है, चाहे बाध्यता का कोई भी भाग तुलन पत्र की तारीख के बारह मास के भीतर संदेय होता है।

पैरा 66 का दृष्टांत दे रहा उदाहरण

सेवा के प्रत्येक वर्ष के अंतिम वेतन के 1% के बराबर एकमुश्त प्रसुविधा सेवा की समाप्ति पर संदेय है। वर्ष 1 में वेतन 10,000 रु. है तथा प्रतिवर्ष 7% (मिश्रित) बढ़ने का अनुमान है जिसके परिणाम स्वरूप 5 वर्ष के अंत में 13,100 रु. हो जायेगी। प्रयोग की गयी मितिकाटा दर 10% प्रति वर्ष है। निम्न तालिका दर्शाती है कि वर्ष 5 के अंत में जिस कर्मचारी के सेवा छोड़ने की आशा है उसके प्रति बाध्यता किस प्रकार बनती है, यह मानते हुए कि बीमांकिक मान्यताओं में कोई परिवर्तन नहीं है। सरलता के लिए, यह उदाहरण इस सम्भावना के लिए अतिरिक्त समायोजन की आवश्यकता की उपेक्षा करता है, कि कर्मचारी उद्यम को इस अवधि के पहले या बाद की तारीख में भी छोड़ सकता है।

(रकम रु. में)

वर्ष	1	2	3	4	5
आबंटित प्रसुविधा:					
-पूर्व वर्ष	0	131	262	393	524
-चालू वर्ष (1% अंतिम वेतन का)	131	131	131	131	131
-चालू और पूर्व वर्ष	131	262	393	524	655
आरम्भिक बाध्यता (देखिए टिप्पण 1)	-	89	196	324	476
ब्याज 10 प्रतिशत पर	-	9	20	33	48
चालू सेवा लागत (देखिए टिप्पण 2)	89	98	108	119	131
अंतिम बाध्यता (देखिए टिप्पण 3)	89	196	324	476	655

टिप्पण:

1. आरम्भिक बाध्यता पूर्व वर्षों में आबंटित प्रसुविधा का वर्तमान मूल्य है।
2. चालू सेवा लागत चालू वर्ष में आबंटित प्रसुविधा का वर्तमान मूल्य है।
3. अंतिम बाध्यता चालू और पूर्व वर्षों में आबंटित प्रसुविधा का वर्तमान मूल्य है।

IndiaCode

सेवा की अवधियों में प्रसुविधा का आबंटन करना

68. अपने निश्चित प्रसुविधा बाध्यता और संबंधित वर्तमान सेवा लागत और जहाँ लागू हो सके, पूर्व सेवा लागत के वर्तमान मूल्य का निर्धारण करने के लिए उद्यम को योजना के प्रसुविधा सूत्र के अधीन की सेवाओं अवधि के अनुसार आबंटित करना चाहिए। यद्यपि, यदि कर्मचारी की बाद के वर्षों की सेवा, पूर्व वर्षों की सेवा की तुलना में सारवान तौर पर अधिक प्रसुविधाओं का सृजन करती है, उद्यम को प्रसुविधा का आबंटन सरल रेखा आधार पर उस तारीख से करना चाहिए:

(क) **जब कर्मचारी की सेवा पहली बार उस योजना के अंतर्गत प्रसुविधाओं तक ले जाती है (चाहे प्रसुविधाएँ आगे की सेवा के प्रति शर्तयुक्त हों) जब तक कि**

(ख) **जब सिवाय, अतिरिक्त वेतन वृद्धि के कर्मचारी की आगे की सेवा योजना के अंतर्गत और अधिक प्रसुविधाओं की किसी सारवान रकम तक नहीं ले जाती।**

69. प्रोजेक्टेड यूनिट क्रेटिड पद्धति अपेक्षा करती है कि उद्यम लाभ का आबंटन चालू अवधि पर (वर्तमान सेवा लागत का निर्धारण करने के लिए) और चालू तथा पूर्व अवधियों पर कर दे (निश्चित प्रसुविधा बाध्यताओं के वर्तमान मूल्य का निर्धारण करने के लिए)। एक उद्यम प्रसुविधाओं को उन अवधियों पर आबंटित करता है जिससे सेवा पश्चात् प्रसुविधाओं

की बाध्यताएँ उत्पन्न होती हैं। वह बाध्यता होती हैं क्योंकि कर्मचारी सेवा पश्चात् प्रसुविधाओं के बदले सेवाएं प्रदान करता है उद्यम जिनका भुगतान भावी रिपोर्टिंग अवधि में करने की आशा करता है। बीमांकिक तकनीक एक उद्यम को उस बाध्यता के अभिज्ञान को न्यायोचित ठहराने के लिए उसके पर्याप्त विश्वसनीयता के साथ मापन को अनुज्ञात करता है।

पैरा 69 के दृष्टांत दे रहे उदाहरण

1. एक निश्चित प्रसुविधा योजना सेवानिवृति पर सेवा के प्रत्येक वर्ष के लिए 100 रु. के एकमुश्त प्रसुविधा का भुगतान प्रदान करती है।

100 रु. की प्रसुविधा प्रत्येक वर्ष पर आबंटित की जाती हैं। चालू वर्ष की लागत 100 रु. का वर्तमान मूल्य है। निश्चित प्रसुविधा बाध्यता का वर्तमान मूल्य 100 रु. वर्तमान मूल्य का गुणा तुलन पत्र की तारीख तक सेवा वर्षों की संख्या के बराबर है।

यदि कर्मचारी के सेवा छोड़ने पर प्रसुविधा तुरंत संदेय होती है, चालू सेवा लागत और निश्चित प्रसुविधा बाध्यता का वर्तमान मूल्य उस तारीख को प्रदर्शित करता है जिस पर कर्मचारी के छोड़ने की आशा है। अतः बट्टे के प्रभाव के कारण वे उन रकमों से कम होंगे जो कि कर्मचारी के तुलन पत्र की तारीख पर छोड़ने पर होते।

2. एक योजना सेवा के प्रत्येक वर्ष के लिए अंतिम वेतन का 0.2% मासिक पेंशन का उपबंध करती है। पेंशन 60 वर्ष की आयु से संदेय हैं।

सेवानिवृति की प्रत्याक्षित तारीख पर अनुमानित अंतिम वेतन के 0.2% की मासिक पेंशन जो सेवा निवृति की तारीख से मृत्यु की तारीख तक दी जाती है उसके वर्तमान मूल्य के समान प्रसुविधा को सेवा के प्रत्येक वर्ष पर आबंटित कर देना चाहिये। चालू सेवा लागत उस प्रसुविधा का वर्तमान मूल्य है। निश्चित प्रसुविधा बाध्यता का वर्तमान मूल्य अंतिम वेतन के 0.2% पेंशन भुगतान के वर्तमान मूल्य को तुलन पत्र की तारीख पर सेवा के वर्षों से गुणा कर के प्राप्त रकम होती है।

चालू सेवा लागत और निश्चित प्रसुविधा बाध्यता के वर्तमान मूल्यों को मितिकाटा किया जाता है क्योंकि पेंशन भुगतान 60 वर्ष की आयु से प्रारम्भ होते हैं।

70. कर्मचारी सेवा, निश्चित प्रसुविधा योजना के अधीन बाध्यता को जन्म देती है चाहे लाभ भविष्य रोजगार पर शर्तयुक्त हों (अन्य शब्दों में ये निहित नहीं होते) निहित होने की तारीख से पूर्व कर्मचारी सेवा बाध्यता को उत्पन्न करती है, क्योंकि प्रत्येक आने वाली तुलनपत्र की तारीख पर प्रसुविधाओं का अधिकारी बनने के लिए कर्मचारी द्वारा प्रदान की जाने वाली भविष्य की सेवा की मात्रा कम हो जाती है। इसकी निश्चित प्रसुविधा बाध्यता के मापन के लिए, उद्यम इस अधिसम्भाव्यता पर विचार करता है कि कुछ कर्मचारी अधिकार सम्बन्धी किसी अपेक्षा को पूरा न कर सकें। इस प्रकार यद्यपि कुछ रोजगार पश्चात् प्रसुविधाएं, उदाहरण के लिए, रोजगार पश्चात् चिकित्सा प्रसुविधाएं, तभी संदेय होते हैं यदि कोई निश्चित घटना घटित होती है, जब कर्मचारी रोजगार में नहीं होता, एक बाध्यता उत्पन्न होती है जब कर्मचारी सेवा प्रदान करता है जो कि उसे एक विशिष्ट घटना घटने पर उसे प्रसुविधा का अधिकारी बनाती है। यह अधिसम्भाव्यता कि घटना घटेगी, बाध्यता के मापन को प्रभावित करती है परन्तु दायित्व के विद्यमान होने का निर्धारण नहीं करती।

पैरा 70 का दृष्टांत दे रहे उदाहरण

1. एक योजना सेवा के प्रत्येक वर्ष के लिए 100 रु की प्रसुविधा देती है। प्रसुविधा 10 वर्ष की सेवा के पश्चात निहित होती है।

100 रु की प्रसुविधा को प्रत्येक वर्ष में आबंटित कर दिया जाता है। प्रति पहले दस वर्षों में, प्रत्येक वर्ष चालू सेवा लागत और बाध्यता का वर्तमान मूल्य इस अधिसम्भाव्यता को दर्शाते हैं कि हो सकता है कर्मचारी सेवा के दस वर्ष पूर्ण न करे।

2. एक योजना 25 वर्ष कि आयु से पहले कि सेवा को सम्मिलित न करते हुए, प्रत्येक वर्ष कि सेवा पर 100 रु कि सुविधा देती है। प्रसुविधा तुरंत निहित होती है।

25 वर्ष कि आयु से पहले की सेवा के लिए किसी प्रसुविधा का आबंटन नहीं होता क्योंकि उस तारीख से पहले की सेवा प्रसुविधा उत्पन्न नहीं करती (शर्तयुक्त या गैर- शर्तयुक्त)। 100 रु की प्रसुविधा आने वाले प्रत्येक वर्ष पर आबंटित कर दी जाती है।

71. बाध्यता में उस तारीख तक वृद्धि होती है जब कर्मचारी द्वारा प्रदान की आगे की सेवा, प्रसुविधाओं की रकम में सारवान तौर पर वृद्धि नहीं लाती। इसलिए सारी प्रसुविधा को उस तारीख पर समाप्त होने वाली या उस तारीख से पूर्व की अवधि में आबंटित कर दिया जाता है। प्रसुविधा को योजना के प्रसुविधा सूत्र के आधार पर अलग-अलग लेखा अवधि पर आबंटित किया जाता है। यद्यपि, यदि कर्मचारी की बाद के वर्षों की सेवा पहले के वर्षों की तुलना में प्रसुविधाओं को सारवान तौर पर उच्चतर स्तर पर ले जायेगी, उद्यम प्रसुविधा का आबंटन सरल रेखा आधार पर करता है, उस तारीख तक जब कर्मचारी द्वारा प्रदान और आगे की सेवा लाभ की रकम में सारवान तौर पर वृद्धि नहीं लायेगी। यह इसलिए कि सम्पूर्ण अवधि के दौरान कर्मचारी की सेवा अंततः प्रसुविधा के उच्चतर स्तर पर ले जायेगी।

पैरा 71 के दृष्टांत दे रहे उदाहरण

1. एक योजना 1,000 रु. की एकमुश्त प्रसुविधा देती है जो कि 10 वर्षों की सेवा के पश्चात् निहित होती है। योजना आगे की सेवा के लिए प्रसुविधा नहीं देती है।

100 रु. की प्रसुविधा (1,000 रु. को दस से विभाजित करके) प्रत्येक पहले दस वर्षों में आबंटित कर दिया जाता है। पहले दस वर्षों की चालू सेवा लागत इस अधिसम्भाव्यता को दर्शाती है कि हो सकता है कर्मचारी दस वर्ष की सेवा को पूरा न कर सके।

2. एक योजना 2,000 रु. का एकमुश्त सेवा निवृति लाभ सभी कर्मचारियों को जो बीस वर्ष की सेवा के पश्चात् 50 वर्ष की आयु तक भी कार्यरत हैं, अथवा सेवा काल की उपेक्षा करते हुए जो 60 वर्ष की आयु तक कार्यरत हैं।

कर्मचारी जो 30 वर्ष की आयु से पहले कार्य से जुड़ जाते हैं , योजना के अन्तर्गत उनकी सेवा पहले 30 वर्ष की आयु पर प्रसुविधाओं की ओर ले जाती है। (एक कर्मचारी 25 वर्ष की आयु में कार्य छोड़ सकता है तथा 28 वर्ष की आयु में वापिस काम पर लौट सकता है, जिसका प्रसुविधा की रकम और समय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता)। वे प्रसुविधाएँ आगे की सेवा पर शर्तयुक्त होती हैं। साथ ही यह भी है कि 50 वर्ष की आयु के पश्चात् की सेवा आगे प्रसुविधाओं की किसी सारवान रकम की ओर नहीं ले जायेगी। इन कर्मचारियों के लिए, उद्यम 30 वर्ष की आयु से 50 वर्ष की आयु तक प्रति वर्ष 100 रु. (2,000 रु. और 20 रु. से विभाजित करके) का लाभ आबंटित करता है।

उन कर्मचारियों के लिए जो 30 और 40 वर्ष की आयु के दौरान कार्यरत होते हैं, बीस वर्षों के बाद की सेवा आगे लाभों की किसी सारवान रकम की ओर नहीं ले जायेगी। इस कर्मचारी के लिए पहले बीस वर्षों में प्रत्येक के लिए 200 रु. (2,000 रु. को 10 रु. से विभाजित करके) की प्रसुविधा आबंटित करता है।

सभी कर्मचारियों के लिए चालू सेवा लागत और बाध्यता का वर्तमान मूल्य यह अधिसम्भाव्यता दर्शाता है कि हो सकता है कर्मचारी सेवा की आवश्यक अवधि पूरी न कर सके।

3. रोजगार पश्चात् चिकित्सा योजना, द्वारा प्रतिपूर्ति कर्मचारी की रोजगार पश्चात् चिकित्सा लागत का 40%, यदि कर्मचारी दस वर्ष से अधिक बीस वर्ष से कम में सेवा छोड़ता है और 50% उन लागतों का यदि कर्मचारी बीस या सेवा के अधिक वर्षों के पश्चात् छोड़ता है, की जाती है।

योजना के प्रसुविधा सूत्र के अन्तर्गत, उद्यम प्रत्याशित चिकित्सा लागत के वर्तमान मूल्य का 4% (40% को दस से विभाजित करके) पहले दस वर्षों के प्रत्येक वर्ष को तथा 1% (10% को दस से विभाजित करके) दूसरे 10 वर्षों के प्रत्येक वर्ष को आबंटित करता है। प्रत्येक वर्ष में चालू सेवा लागत इस अधिसम्भाव्यता को प्रदर्शित करती है कि हो सकता है प्रसुविधा का भाग या सारी प्रसुविधाएँ अर्जित करने के लिए कर्मचारी सेवा की आवश्यक अवधि पूरी न कर सके। उन कर्मचारियों के लिए जिनकी दस वर्षों के अन्दर सेवा छोड़ने की प्रत्याशा है, कोई प्रसुविधा विचारणीय नहीं होती है।

4. एक रोजगार पश्चात् चिकित्सा योजना कर्मचारी की रोजगार पश्चात् चिकित्सा लागत के 10% प्रतिपूर्ति करती है। यदि कर्मचारी सेवा के दस वर्षों से अधिक और बीस वर्ष से कम सेवा प्रदान करने के पश्चात् छोड़ता है और 50% उन लागतों का यदि कर्मचारी बीस या अधिक वर्षों की सेवा के बाद छोड़ता है।

बाद के वर्षों में सेवा पहले के वर्षों की अपेक्षा सारवान तौर पर प्रसुविधा के उच्च स्तर की ओर ले जायेगी। इसलिए, उन कर्मचारियों के लिए जिनकी बीस या अधिक वर्षों के बाद सेवा छोड़ने की प्रत्याशा है, पैरा 69के अन्तर्गत उद्यम सरल रेखा आधार पर प्रसुविधा का आबंटन करता है। बीस वर्ष के बाद की सेवा आगे प्रसुविधाओं की किसी सारवान रकम की ओर नहीं ले जायेगी। अतः पहले बीस वर्षों के प्रत्येक वर्ष में आबंटित प्रसुविधा प्रत्याशित चिकित्सा लागत के

वर्तमान मूल्य का 2.5% है (50% को बीस से विभाजित करके) ।

उन कर्मचारियों के लिए जिनकी दस से बीस वर्षों के बीच में कोई छोड़ने की प्रत्याशा है, उनमें प्रसुविधा का आबंटन प्रत्याशित चिकित्सा लागत के वर्तमान मूल्य का 1% पहले दस वर्षों के प्रत्येक वर्ष में होता है। इन कर्मचारियों के लिए, दसवें वर्ष के बाद और सेवा छोड़ने की अनुमानित तारीख के बीच में सेवाओं के लिए किसी प्रसुविधा का आबंटन नहीं होता है।

उन कर्मचारियों के लिए जिनके दस वर्षों के अन्दर सेवा छोड़ने की प्रत्याशा है कोई प्रसुविधा विचारणीय नहीं होती हैं।

72. जहाँ पर प्रसुविधा की रकम सेवा के प्रत्येक वर्ष के अंतिम वेतन का सतत् अनुपात है, भावी वेतन वृद्धियाँ तुलन पत्र की तारीख से पूर्व की सेवा के लिए जो विद्यमान बाध्यता के निपटारे के लिए आवश्यक है, परन्तु अतिरिक्त बाध्यता का सृजन नहीं करती। इसलिए:

(क) पैरा 68 (ख) के उद्देश्य से, वेतन वृद्धियाँ और प्रसुविधाओं को उत्पन्न नहीं करती, चाहे प्रसुविधाओं की रकम अंतिम वेतन पर निर्भर होती है; और

(ख) प्रत्येक अवधि में आबंटित प्रसुविधा की रकम वेतन का सतत् अनुपात है जिससे प्रसुविधा जुड़ी है।

पैरा 72 का दृष्टांत दे रहा उदाहरण

55 वर्ष की आयु से पहले कर्मचारी सेवा के प्रत्येक वर्ष के लिए अंतिम वेतन के 3% के प्रसुविधा के अधिकारी हैं।

अनुमानित अंतिम वेतन का 3% की प्रसुविधा 55 वर्ष की आयु तक प्रत्येक वर्ष में आबंटित होता है। यह वह तारीख है जब कर्मचारी द्वारा आगे की सेवा योजना के अन्तर्गत लाभ की कोई सारवान रकम की ओर नहीं ले जायेगी। उस आयु के पश्चात् की सेवा पर कोई प्रसुविधा आबंटित नहीं होती है।

IndiaCode

बीमांकिक मान्यताएँ

73. बीमांकिक मान्यताएँ जिनमें जनसांख्यिकी मान्यताएँ और वित्तीय मान्यताएँ सम्मिलित हैं, पक्षपात रहित और एक दूसरे के अनुकूल होनी चाहिए। वित्तीय मान्यताएं तुलनपत्र तारीख पर बाजार की अपेक्षाओं पर आधारित होनी चाहिए, उस अवधि के लिए जिस पर बाध्यता का निपटान होता है।

74. बीमांकिक मान्याएं एक उद्यम के उन चरों के सबसे अच्छे अनुमान हैं, जो रोजगार पश्चात् प्रसुविधाओं के प्रदान करने की अंतिम लागत का निर्धारण करेंगे। बीमांकिक मान्यताओं में सम्मिलित हैं :

(क) प्रसुविधाओं के योग्य वर्तमान और पूर्व कर्मचारियों (तथा उनके आश्रितों) के भविष्य की विशेषताओं के विषय में जनसांख्यिकी मान्यताएं। जनसांख्यिकी मान्यताएं ऐसे मामलों का वर्णन करती हैं :

(i) मृत्यु संख्या, रोजगार के दौरान और बाद दोनों में ही ;

(ii) कर्मचारियों के आवर्त की दरें, अयोग्यता और अवधि के पूर्व सेवा निवृत्ति ; और

(iii) योजनागत सदस्यों का आश्रितों के साथ अनुपात जो प्रसुविधाओं के योग्य होंगे ; और

(iv) चिकित्सा योजनाओं के अन्तर्गत दावों की दरें ; तथा

(ख) वित्तीय मान्यताएँ, ऐसी मदों का वर्णन करती हैं, जैसे कि:

(i) मितिकाटा दर (पैरा 78-82 देखिए) ;

(ii) भावी वेतन और प्रसुविधा स्तर (पैरा 83-87 देखिए)

(iii) चिकित्सीय प्रसुविधाओं के मामले में, भावी चिकित्सीय लागतें, जिसमें, जहाँ महत्वपूर्ण हो, दावों और प्रसुविधा भुगतान के प्रशासन की लागतें सम्मिलित हों (पैरा 88-91 देखिए); तथा

(iv) योजनागत आस्तियों पर प्रतिफल की दर (पैरा 107-109 देखिए)।

75. बीमांकिक मान्यताएँ पक्षपात रहित हैं, यदि वे न तो अविचारित हों और न ही रूढ़िवादी।

76. बीमांकिक मान्यताएँ आपस में अनुकूल हैं, यदि वे इन तत्वों जैसे मुद्रास्फीति, वेतन वृद्धि की दर, योजनागत आस्तियों के प्रतिफल और मितिकाटा दरों में आर्थिक सम्बंध दर्शाती हैं। उदाहरणतः, सब मान्यताएँ जो एक विशेष मुद्रास्फीति स्तर पर निर्भर हैं (जैसे कि ब्याज दरों और वेतन तथा प्रसुविधा वृद्धियों के विषय में मान्यताएँ) किसी दी गई भावी अवधि में यह मानती हैं कि भविष्य में मुद्रास्फीति का स्तर समान रहेगा।

77. एक उद्यम मितिकाटा दर और अन्य वित्तीय मान्यताओं का निर्धारण सामान्य (कथित) शर्तों पर करता है, जब तक कि अनुमान वास्तविक रूप में (मुद्रास्फीति समायोजित) अधिक विश्वसनीय न हो, उदाहरण के लिए, जहां प्रसुविधा सूचकांकों से जुड़ी हो और उसी मुद्रा तथा अवधि के सूचकांक से जुड़े बॉण्ड्स का एक गहन बाजार हो।

बीमांकिक मान्यताएँ: मितिकाटा दर

78. रोजगार पश्चात् प्रसुविधा बाध्यताओं को मितिकाटा करने के लिए प्रयुक्त दर (दोनों ही निधिकृत तथा गैर-निधिकृत) सरकारी बॉन्डों पर तुलन-पत्र तारीख पर बाजार प्राप्तियों के सम्बन्ध में निर्धारित होनी चाहिए। सरकारी बॉन्ड की मुद्रा और अवधि रोज़गार पश्चात् प्रसुविधा बाध्यताओं की मुद्रा और अनुमानित अवधि के अनुकूल होनी चाहिए।

79. एक बीमांकिक मान्यता जिस का सारवान प्रभाव है, वह मितिकाटा दर है। मितिकाटा दर मुद्रा के समय मूल्य को प्रदर्शित करता है न कि बीमांकिक या विनिधान जोखिम को। इसके अतिरिक्त, बट्टा दर उद्यम के लेनदारों द्वारा वहन उद्यम से जुड़े विशिष्ट जोखिम को प्रदर्शित नहीं करता और न ही उन जोखिमों को प्रदर्शित करते हैं जो भविष्य के अनुभव के बीमांकिक मान्यताओं से अन्तर के कारण हो।

80. मितिकाटा दर प्रसुविधा भुगतानों की अपेक्षित समयविधि को प्रदर्शित करता है। व्यवहार में एक उद्यम इसको एक भारित मितिकाटा दर लागू कर के प्राप्त कर सकता है, जो कि अनुमानित तारीख, और प्रसुविधा भुगतान की रकम तथा मुद्रा जिसमें प्रसुविधाओं का भुगतान करना सकता हो, को प्रदर्शित करती हो।

81. कुछ मामलों में हो सकता है कि सभी प्रसुविधा भुगतानों की अनुमानित परिपक्वता से मेल खाते काफी लम्बी अवधि के सरकारी बॉंड न हो। ऐसे मामलों में, कम अवधि के भुगतानों के लिए एक उद्यम उचित अवधि की चालू बाजार दरों का प्रयोग करता है, और लम्बी अवधि की परिपक्वताओं के लिए चालू बाजार दरों पर प्रतिफल वक्र पर उपलब्ध आकड़ों के आधार पर तथ्यों का पूर्व आंकलन करके मितिकाटा दर का अनुमान लगाता है। निश्चित प्रसुविधा बाध्यता के कुल वर्तमान मूल्य का ऐसे मितिकाटा दर के प्रति विशेष रूप से संवेदनशील होने की कम सम्भावना है जो कि प्रसुविधाओं के उस भाग पर लागू होती हैं जो कि उपलब्ध सरकारी बॉंड की अन्तिम परिपक्वता के बाद संदेय होती हैं।

82. ब्याज लागत का आंकलन बाध्यता में किसी प्रकार के सारवान परिवर्तनों का विचार में रखते हुए अवधि के प्रारम्भ की मितिकाटा दर से अवधि के दौरान निश्चित प्रसुविधा बाध्यता के वर्तमान मूल्य को गुणा कर के किया जाता है। बाध्यता का वर्तमान मूल्य, तुलन पत्र की तारीख में अभिज्ञात बाध्यता से भिन्न होगा क्योंकि अभिज्ञात आस्तियों के उचित मूल्य को घटाने के बाद ही बाध्यताओं को अभिज्ञात किया जाता है, और इसलिए कुछ पूर्व सेवा लागत तुरंत ही अभिज्ञात नहीं होती। (इस मानक से संलग्न दृष्टांत I अन्य विषयों के बीच, ब्याज के आंकलन का उल्लेख करता है)

बीमांकिक मान्यताएँ - वेतन, प्रसुविधाएँ और चिकित्सा लागतें

83. रोजगार पश्चात् प्रसुविधा बाध्यताओं की मापन उस आधार पर करना चाहिये जो निम्नलिखित को प्रदर्शित करता है:

(क) ***भावी अनुमानित वेतन वृद्धियां ;***

(ख) ***तुलनपत्र की तारीख पर योजना के निबंधनों में गयी प्रसुविधाएं (अथवा किसी बाध्यता से उत्पन्न जो उस निबंधन से परे है); और***

(ग) ***किसी ऐसे राज्य प्रसुविधा के स्तर में अनुमानित भावी परिवर्तन जो कि निश्चित प्रसुविधा योजना के अंतर्गत संदेय प्रसुविधाओं को प्रभावित करते हैं यदि, और केवल यदि ;***

(i) ***वे परिवर्तन तुलन पत्र तारीख से पहले लागू किए गए होते ; या***

(ii) *पूर्व इतिहास अथवा अन्य विश्वसनीय साक्ष्य संकेत देता है कि वे राज्य प्रसुविधाएं किसी पूर्वानुमानित ढंग से परिवर्तित होंगे, उदाहरण के लिए सामान्य मूल्य स्तर या सामान्य वेतन स्तर के परिवर्तनों की दिशा में।*

84. भविष्य के वेतन वृद्धि का अनुमान लगाने के लिए मुद्रास्फीति, वरिष्ठता, पदोन्नति और अन्य सम्बद्ध तथ्यों जैसे रोज़गार बाजार में मांग पूर्ति की स्थिति की ओर ध्यान दिया जाता है।

85. यदि योजना के औपचारिक निबंधनों, (या बाध्यता जो इन निबंधनों के परे है) की यह अपेक्षा है कि उद्यम भविष्य की अवधि की प्रसुविधाओं में परिवर्तन करे, बाध्यताओं की माप उन परिवर्तनों को प्रदर्शित करती। यह उस मामले में होगा जबकि उदाहरण के लिए:

(क) उद्यम का प्रसुविधाओं को बढ़ाने का इतिहास है उदाहरण के लिए मुद्रास्फीति के प्रभाव को कम करने के लिए, और ऐसा कोई संकेत नहीं है कि इस प्रथा में भविष्य में कोई परिवर्तन होगा; या

(ख) बीमांकिक लाभों को पहले से ही वित्तीय विवरणों में अभिज्ञात करा गया है और उद्यम योजना की औपचारिक निबंधनों के द्वारा (अथवा एक बाध्यता द्वारा जो कि निबंधनों से परे है) या विधेयक द्वारा प्रतिबद्ध है कि योजना के किसी अधिशेष को भागीदारों की प्रसुविधा के लिए प्रयोग किया जाए देखिए पैरा 96 (ग)।

86. बीमांकिक मान्यताएँ ऐसी भविष्य की उन प्रसुविधाओं में परिवर्तन को प्रदर्शित नहीं करतीं हैं जिनका तुलन पत्र की तारीख पर योजना के औपचारिक निबंधनों में नहीं लिखा गया (या उस बाध्यता को जो उन निबंधनों से परे हैं) उन परिवर्तनों के परिणामस्वरूप ;

(क) पूर्व सेवा लागत, उस सीमा तक कि परिवर्तन से पूर्व वो सेवा के लिए प्रसुविधाओं को परिवर्तित कर दे ; और

(ख) चालू सेवा लागत परिवर्तन के बाद की अवधियों के लिए परिर्वतन के पश्चात् सेवा प्रसुविधाओं में परिवर्तन लाने की सीमा तक।

87. कुछ रोजगार पश्चात् प्रसुविधाएं ऐसे चरों से जुड़ी होते हैं जैसे कि राज्य सेवा निवृत्ति प्रसुविधाएं या राज्य चिकित्सीय देखरेख सुरक्षा। इन प्रसुविधाओं के मापन पूर्व इतिहास तथा विश्वसनीय साक्ष्यों के आधार पर ऐसे चरों में प्रत्याशित परिवर्तन प्रदर्शित करता है।

88. चिकित्सा लागतों के बारे में मान्यताओं में भविष्य में कर, मुद्रास्फीति और चिकित्सा लागतों में विशिष्ट परिवर्तनों से उत्पन्न चिकित्सीय लागतों के अनुमानों के परिवर्तनों को विचार में लेना चाहिये।

89. रोजगार पश्चात् चिकित्सा प्रसुविधा की मापन के लिए, भावी दावों का स्तर और बारम्बारता तथा उन दावों के भुगतान की लागत के सम्बन्ध में मान्यताओं की अपेक्षा है। एक उद्यम को भावी चिकित्सा लागतों का अनुमान अपने अनुभव के ऐतिहासिक आंकड़ों के आधार पर और जहाँ आवश्यक हो अन्य उद्यमों के ऐतिहासिक आंकड़ों से, बीमा कम्पनियों, चिकित्सा प्रदान करने वाले तथा अन्य स्रोतों से पूर्ण करना चाहिए। भावी चिकित्सा लागतों का अनुमान लगाने के लिए तकनीकी विकास, स्वास्थ्य देखरेख उपयोगों में परिवर्तन या वितरण पैटर्न और योजना भागीदारों की स्वास्थ्य स्थिति के प्रभाव को विचार में लेना चाहिए।

90. दावों का स्तर और उसकी बारम्बारता विशेषरूप से आयु, स्वास्थ्य स्थिति और कर्मचारियों के लिंग (तथा उनके आश्रित) के प्रति संवेदनशील होती है और अन्य तत्वों जैसे कि भौगोलिक स्थिति के प्रति भी संवेदनशील हो सकती है। इसलिए ऐतिहासिक आंकड़ों का उस सीमा तक समायोजन किया जाता है कि जनसंख्या का जनसांख्यिकी मिश्रण उस जनसंख्या से भिन्न होता है जिसे ऐतिहासिक आंकड़ों के आधार के लिए प्रयोग किया जाता है। इसे वहां भी समायोजित किया जाता है जहाँ विश्वसनीय साक्ष्य विद्यमान हों कि ऐतिहासिक प्रवृतियां निरंतर नहीं रहेगी।

91. कुछ रोजगार पश्चात् स्वास्थ्य योजनाएं योजना के अन्तर्गत चिकित्सा लागतों के लिए कर्मचारियों से अंशदान की अपेक्षा करती हैं। भविष्य की चिकित्सा लागतों के अनुमानों के लिए इस प्रकार के अंशदानों को योजना के निबंधनों के आधार पर तुलनपत्र की तारीख पर विचार में लिया जाता है (अथवा किसी बाध्यता के आधार पर जो उन निबंधनों के परे हो) उन कर्मचारियों के अंशदानों में परिवर्तन के परिणामस्वरूप पूर्व सेवा लागत या जहाँ लागू हो सके, कटौतियां उत्पन्न

होती हैं। दावों के भुगतान की लागत राज्य से या अन्य चिकित्सा प्रदान करने वालों के द्वारा प्रदान प्रसुविधाओं से कम हो जाती हैं। [पैरा 83 (ग) और 87 देखिए]

बीमांकिक लाभ तथा हानियाँ

92. बीमांकिक लाभ और हानियों को तुरंत ही लाभ और हानि के विवरण में आय और व्यय की तरह अभिज्ञात करना चाहिये (पैरा 61 देखिए)।

92क. पैरा 145(ख)(iii) पश्चात्वर्ती बीमांकिक लाभों के लेखा में संक्रमणकालीन दायित्व के किसी गैर-अभिज्ञात भाग पर विचार करने की आवश्यकता को स्पष्ट करता है।

93. बीमांकिक लाभ और हानियां निश्चित प्रसुविधा बाध्यता के वर्तमान मूल्य या किन्हीं सम्बंधित योजनागत आस्तियों के उचित मूल्य के घटने या बढ़ने से उत्पन्न होती हैं। बीमांकिक लाभ और हानि के कारणों में सम्मिलित हैं, उदाहरणतः

(क) कर्मचारी आवर्त, पूर्व सेवा-निवृति या मृत्यु संख्या या वेतनों प्रसुविधाओं मे वृद्धि की अप्रत्याशित उच्च या निम्न दर या वेतन, की (यदि योजना के निबंधनों में मुद्रास्फीति प्रसुविधाओं में वृद्धियों का प्रावधान है) अथवा चिकित्सा लागतें ;

(ख) उद्यम में भावी कर्मचारी आवर्त पूर्व सेवा-निवति या मृत्यु संख्या या वेतनों, प्रसुविधाओं में वृद्धियों के अनुमानों में परिवर्तनों के प्रभाव (यदि योजना के निबंधनों में मुद्रास्फीति प्रसुविधाओं में वृद्धियों का उपबंध है) अथवा चिकित्सा लागतें ;

(ग) मितिकाटा दर में परिवर्तनों के प्रभाव ; और

(घ) योजनागत आस्तियों के वास्तविक प्रतिफल और योजनागत आस्तियों के प्रत्याशित प्रतिफल में अन्तर (पैरा 107-109 देखिए)।

पूर्व सेवा लागत

94. पैरा 55 के अंतर्गत निश्चित प्रसुविधा दायित्व के मापन में उद्यम को, प्रसुविधाओं के निहित होने तक, पूर्व सेवा लागतों को अवधि के दौरान सरल रेखा आधार पर एक व्यय की तरह अभिज्ञात करना चाहिए। उस सीमा तक जहाँ प्रसुविधाएँ एक निश्चित प्रसुविधा योजना के चालू होने या उस में परिवर्तन के तुरंत पश्चात् पहले से ही निहित हो चुकी हों, एक उद्यम को तुरन्त ही पूर्व सेवा लागत को अभिज्ञात करना चाहिए।

95. जब कोई उद्यम निश्चित प्रसुविधा योजना शुरू करता है या एक विद्यमान निश्चित प्रसुविधा योजना में संदेय प्रसुविधाओं में परिवर्तन करता है तो पूर्व सेवा लागत उत्पन्न होती हैं। यह परिवर्तन अवधि के दौरान निहित होने तक, कर्मचारी सेवा के बदले होते हैं। इसलिए पूर्व सेवा लागत उस अवधि के दौरान अभिज्ञात होती है, इस तथ्य के होते हुए भी कि यह लागत कर्मचारी की पूर्व अवधियों की सेवा से सम्बन्धित है। पूर्व सेवा लागत को संशोधन के परिणाम स्वरूप दायित्व में परिवर्तन, की तरह मापा जाता है। (पैरा 65 देखिए)

पैरा 95 का दृष्टांत दे रहा उदाहरण

एक उद्यम एक पेंशन योजना का प्रचालन कर रहा है जो कि प्रत्येक सेवा वर्ष के लिए अंतिम वेतन का 2% पेंशन के लिए उपबंध बनाती है। लाभ 5 वर्ष की सेवा के पश्चात् निहित होते हैं। 1 जनवरी 20×5 को उद्यम पेंशन को 1 जनवरी 20×1 से आरम्भ करते हुए प्रत्येक सेवा वर्ष के लिए अन्तिम वेतन का 2.5% तक बढ़ा देता हैं। सुधार की तारीख पर 1 जनवरी 20×1 से 1 जनवरी 20×5 की सेवाओं के लिए अतिरिक्त प्रसुविधाओं के वर्तमान मूल्य 1 जनवरी 2001 से 1 जनवरी 2005 तक निम्नलिखित हैं:

कर्मचारी जिनकी सेवा 1/1/05 को 5 वर्ष	150 रु.
से अधिक है	
कर्मचारी जिनकी सेवा अवधि 1/1/05	
को 5 वर्ष से कम है	

IndiaCode

(निहित होने तक, औसत अवधि 3 वर्ष)	120 रु.
	270 रु.
उद्यम 150 रु. को तुरंत अभिज्ञात करता है क्यांकि वे प्रसुविधाएं पहले से ही निहित हैं। उद्यम 120 रु. के सरल रेखा आधार पर 1 जनवरी 2005 से 3 वर्ष में अभिज्ञात करता है।	

96. पूर्व सेवा लागत सम्मिलित नहीं करती:

(क) पूर्व वर्षों में सेवा के लिए प्रसुविधाओं के भुगतान की बाध्यता पर वास्तविक और पूर्व अनुमानित वेतन वृद्धियों में अन्तर के प्रभाव (इसमें पूर्व सेवा लागत नहीं है क्योंकि बीमांकिक मान्यताएँ प्रक्षेपित वेतन की अनुमति देती हैं) ;

(ख) वैवेकिक पेंशन वृद्धियों के अधिक या कम अनुमान जहां एक उद्यम को ऐसी वृद्धियों को प्रदान करने की बाध्यता है (इसमें पूर्व लागत नहीं होती है क्योंकि बीमांकिक मान्यताएं ऐसी वृद्धियों की अनुमति देती हैं) ;

(ग) बीमांकिक लाभों के परिणामस्वरूप प्रसुविधा सुधारों के अनुमान जिनको वित्तीय विवरणों में पहले से ही अभिज्ञात किया जा चुका है यदि उद्यम प्रतिबद्ध है, या तो योजना के औपचारिक निबंधनों के द्वारा, (या एक ऐसी बाध्यता से जो निबंधनों के परे है) या विधेयक द्वारा, कि योजना के किसी अधिशेष को योजना के भागीदारों की प्रसुविधा के लिए प्रयोग किया जाये, यद्यपि प्रसुविधा वृद्धि को औपचारिक रूप से घोषित नहीं किया गया (परिणामस्वरूप बाध्यता में वृद्धि बीमांकिक हानि है न कि पूर्व सेवा लागत, (पैरा 85 (ख) देखिए);

(घ) निहित प्रसुविधाओं में वृद्धि (नये या बढ़े हुए लाभों के कारण नहीं) जब कर्मचारी निहित होने की अनिवार्यताओं को पूरा कर दे (इसमें कोई पूर्व सेवा लागत नहीं है क्योंकि प्रसुविधाओं की अनुमानित लागत को चालू सेवा लागत के रूप में अभिज्ञात किया गया था जैसे ही सेवाएं प्रदान की गई थी) ; और

(ङ) ऐसे योजना संशोधन के प्रभाव जो भावी सेवा की प्रसुविधाओं को कम कर देते हैं (एक कटौती)।

97. जब प्रसुविधाओं को आरम्भ या परिवर्तित किया जाता है एक उद्यम पूर्व सेवा लागत के क्रमिक अपाकरण की एक अनुसूची स्थापित करता है। क्रमिक अपाकरण की अनुसूची में बाद के परिवर्तनों को पहचानने और उन्हें कार्यान्वित करने के लिए विस्तृत रूप से अभिलिखित करना अव्यवहारिक होगा। इसके अतिरिक्त प्रभाव तभी सारवान होंगे जब कोई कटौती अथवा निपटारा होगा। इसलिए एक उद्यम पूर्व सेवा लागत के क्रमिक अपाकरण की अनुसूची में तभी संशोधन करता है जब कोई कटौती या निपटारा हो।

98. जहां एक उद्यम विद्यमान निश्चित प्रसुविधा के अन्तर्गत संदेय प्रसुविधाओं को कम कर देता है, वहां परिणामिक रूप निश्चित प्रसुविधा दायित्व में कमी को औसत अवधि पर (नकारात्मक) पूर्व सेवा लागत की तरह अभिज्ञात करते है जब तक कि लाभों का घटा हुआ भाग निहित न हो जाये।

99. जब कोई उद्यम विद्यमान निश्चित प्रसुविधा योजना के अन्तर्गत कुछ संदेय प्रसुविधाओं को कम करता है, और उसी समय योजना के अन्तर्गत उन्हीं कर्मचारियों को संदेय अन्य प्रसुविधाओं में वृद्धि करता है, तो उद्यम उस परिवर्तन को एकल शुद्ध परिवर्तन मानता है।

अभिज्ञान तथा मापन: योजनागत आस्तियाँ

योजनागत आस्तियों का उचित मूल्य

100. पैरा 55 के अधीन तुलन पत्र में अभिज्ञात रकम की गणना के लिए योजनागत आस्तियों के उचित मूल्य को घटा दिया जाता है। जब कोई बाजार मूल्य उपलब्ध नहीं होता है तो उचित मूल्य का अनुमान लगाया जाता है; उदाहरण के लिए अवधि के रोकड़ प्रवाह को ऐसे मितिकाटा दर से जो कि दोनों ही, योजनागत आस्तियों से सम्बंधित जोखिम और परिपक्वता या उन आस्तियों के अन्तिम निपटारे की तारीख को दर्शाये, मितिकाटा किया जाता है (या यदि उनकी कोई परिपक्वता नहीं है, तो सम्बंधित बाध्यता के निपटान न होने तक की अवधि)।

101. योजनागत आस्तियों में रिपोर्टिंग उद्यम से शोध्य निधि को असंदत्त अंशदान को, और साथ ही साथ उद्यम द्वारा जारी किये गए और निधि के द्वारा धारित अहस्तांतरणीय वित्तीय लिखितों को भी सम्मिलित नहीं किया जाता है। योजनागत आस्तियों से ऐसे दायित्वों को जो कर्मचारी प्रसुविधाओं से सम्बंधित नहीं है, कम कर दिया जाता है, उदाहरण के लिए, व्यापारिक और अन्य संदेय धन तथा व्युत्पन्न वित्तीय लिखतों से उत्पन्न दायित्व।

102. जहाँ योजनागत आस्तियों में ऐसी अर्हक बीमा पॉलिसियां सम्मिलित हैं जो योजना के अन्तर्गत संदेय कुछ या समस्त प्रसुविधाओं की रकम और समयावधि से पूर्णतः मेल खाती हैं, उन बीमा पॉलिसी के उचित मूल्य को सम्बंधित बाध्यताओं का वर्तमान मूल्य मान लिया जाता है, जैसा कि पैरा 55 में वर्णित है (यदि बीमा पॉलिसी से प्राप्य रकम पूर्णतया वसूली योग्य नहीं है तो कटौती की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए)।

प्रतिपूर्तियां

103. जब और केवल जब यह वस्तुतः निश्चित हो जाये कि कोई दूसरा पक्षकार निश्चित प्रसुविधा बाध्यता के लिए वांछित व्यय की आंशिक अथवा पूर्ण प्रतिपूर्ति करेगा, उद्यम को प्रतिपूर्ति के अधिकार को एक पृथक आस्ति के रूप में अभिज्ञात करना चाहिए। उद्यम को आस्ति का मापन उचित मूल्य पर करना चाहिए। अन्य सभी मामलों में उद्यम को उस आस्ति का योजनागत आस्तियों की भांति अभिलेखन करना चाहिए। लाभ-हानि के विवरण में निश्चित प्रसुविधा योजना से संबंधित व्यय में से प्रतिपूर्ति के लिए अभिज्ञात रकम को कम करके दिखाना चाहिए।

104. कई बार एक उद्यम निश्चित प्रसुविधा के एक अंश या सम्पूर्ण निपटारे के लिए किसी और पक्षकार, जैसे कि एक बीमाकर्ता, की ओर देखने के योग्य हो सकता है। अर्हक बीमा पॉलिसियां, जैसा कि पैरा 7 में परिभाषित है, योजनागत आस्तियाँ हैं। एक उद्यम अर्हक बीमा पॉलिसी का लेखा वैसे ही करता है जैसे कि अन्य योजनागत आस्तियों के लिए करता है तथा पैरा 103 लागू नहीं होता है (पैरा 40-43 और 102 देखिए)।

105. जब एक बीमा पॉलिसी अर्हक बीमा पॉलिसी न हो, तो वह बीमा पॉलिसी एक योजनागत आस्ति नहीं होती है। पैरा 103 ऐसे मामलों का वर्णन करता है ; उद्यम बीमा पॉलिसी के अधीन अपने प्रतिपूर्ति के अधिकार को एक अलग आस्ति की तरह अभिज्ञात करता है, न कि पैरा 55 के अन्तर्गत अभिज्ञात करने के लिए रकम निर्धारण में एक कटौती की तरह। अन्य सभी मामलों में, उचित मूल्य के निर्धारण सहित, उद्यम उस आस्ति का लेखा योजनागत आस्तियों की भाँति करता है। पैरा 120 (ङ)(iii) उद्यम से प्रतिपूर्ति अधिकार और सम्बंधित बाध्यता के बीच की कड़ी के संक्षिप्त विवरण के प्रकटन की अपेक्षा करता है।

पैरा 103-105 का दृष्टांत दे रहा उदाहरण	(रकम रु. में)
दायित्व का वर्तमान मूल्य होने के कारण	1,258
तुलन पत्र में अभिज्ञात दायित्व	
बीमा पॉलिसी के अन्तर्गत अधिकार जो कि योजना के अन्तर्गत संदेय कुछ प्रसुविधाओं की रकम तथा समय से पूर्ण रूप से मेल खाते हैं।	
उन प्रसुविधाओं का वर्तमान मूल्य 1,092 रु. है	1,092

106. यदि प्रतिपूर्ति का अधिकार ऐसी बीमा पॉलिसी के अन्तर्गत उत्पन्न होता है जो कि निश्चित प्रसुविधा योजना के अधीन कुछ या सभी प्रसुविधाओं की संदेय रकम और समय से पूर्णतः मेल खाती है, तो प्रतिपूर्ति के अधिकार के उचित मूल्य को सम्बंधित बाध्यता का वर्तमान मूल्य मान लिया जाता है, जैसा कि पैरा 55 में वर्णित है (यदि प्रतिपूर्ति पूर्णतया वसूली योग्य नहीं है तो कटौती की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए)।

योजनागत आस्तियों पर प्रतिफल

107. योजनागत आस्तियों पर अपेक्षित प्रतिफल लाभ और हानि के विवरण और योजनागत आस्तियों के वास्तविक प्रतिफल में अन्तर एक बीमांकिक लाभ या हानि है।

108. अवधि के आरम्भ में सम्बंधित बाध्यता के सम्पूर्ण जीवन के प्रतिफल के लिए, योजनागत आस्तियों पर प्रत्याशित प्रतिफल बाजार की प्रत्याशाओं पर निर्भर करता है। योजनागत आस्तियों पर प्रत्याशित प्रतिफल अवधि के दौरान धारित योजनागत आस्तियों के उचित मूल्य में परिवर्तनों को दर्शाता है जो कि निधि में दिये गए वास्तविक अंशदान और निधि से बाहर दी गयीं वास्तविक प्रसुविधाओं का परिणाम है।

109. योजनागत आस्तियों के प्रत्याशित और वास्तविक प्रतिफल का निर्धारण करने के लिए, एक उद्यम की बाध्यता की माप करने के लिए बीमांकिक मान्यताओं में सम्मिलित की गई लागतों के अतिरिक्त प्रत्याशित प्रशासनिक लागतों को घटाता है।

पैरा 108 दृष्टांत दे रहा उदाहरण

1 जनवरी 20×1 को योजनागत आस्तियों का उचित मूल्य 10,000 रु. था। 30 जनवरी 20×1 को योजना ने 1,900 रु. की प्रसुविधाएं दीं और 4,900 रु. का अंशदान प्राप्त किया। 31 दिसम्बर, 20×1 योजनागत आस्तियों का उचित मूल्य 15,000 रु. था और निश्चित प्रसुविधा का वर्तमान मूल्य 14,792 रु. था। 20×1 के लिए बाध्यता पर बीमांकिक हानि 60 रु. थी।

1 जनवरी 20×1 को रिपोर्टिंग उद्यम ने उस तारीख पर बाजार मूल्यों पर

आधारित निम्नलिखित अनुमान लगाये:	%	
निधि द्वारा संदेय कर के पश्चात् ब्याज और लाभांश आय	9.25	
योजनागत आस्तियों पर वसूल किए गए तथा न वसूल किये गए लाभ (कर के पश्चात)	2.00	
प्रशासनिक लागतें	(1.00)	
प्रत्याशित प्रतिफल दर	10.25	

20+1 के लिए, योजनागत आस्तियों पर प्रत्याशित और वास्तविक प्रतिफल निम्नलिखित हैं:

	रकम रु. में
12 मास के लिए धारित 10,000 रु. पर प्रतिफल 10.25% पर	1,025
6 महीने के लिए धारित 3,000 रु. पर प्रतिफल 5% पर (वार्षिक 10.25% के बराबर, प्रति 6 महीनों में यौगिक)	150
20×1 के लिए योजनागत आस्तियों पर प्रत्याशित प्रतिफल	1,175
31 दिसम्बर 20×1 को योजनागत आस्तियों का उचित मूल्य	15,000
घटा: 1 जनवरी 20×2) को योजनागत आस्तियों का उचित मूल्य	(10,000)
घटा प्राप्त योगदान	(4,900)
जोड़े: भुगतान की गयी प्रसुविधाएं	(1,900)
योजनागत आस्तियों पर वास्तविक प्रतिफल	2,000

योजनागत आस्तियों के प्रत्याशित प्रतिफल (1,175 रु.) तथा योजनागत आस्तियों के वास्तविक प्रतिफल (2,000 रु.) में अन्तर 825 रु. का बीमांकिक लाभ है। इसलिए, 765 रु. के [(825 रु. - 60 रु. (बध्यता पर बीमांकिक हानि)] शुद्ध बीमांकिक लाभ को लाभ तथा हानि विवरण में अभिज्ञात किया जाएगा।

20×2 के लिए योजनागत आस्तियों पर प्रत्याशित प्रतिफल बाध्यता के सम्पूर्ण जीवन पर प्रतिफल के लिए 1/1/20×2 की बाजार प्रत्याशाओं पर आधारित होगा।

IndiaCode

कटौतियाँ और निपटारे

110. एक उद्यम को निश्चित प्रसुविधा योजना की कटौती और निपटारे पर लाभ या हानियों को तब अभिज्ञात करना चाहिए जब कटौतियां या निपटारे घटित होते हैं। कटौती तथा निपटारे पर लाभ और हानि में निम्नलिखित सम्मिलित करना चाहिये:

(क) ***निश्चित प्रसुविधा बाध्यता के वर्तमान मूल्य में परिणाम स्वरूप कोई परिवर्तन ;***

(ख) ***योजनागत आस्तियों के उचित मूल्य मे कोई परिवर्तन ;***

(ग) ***कोई संबंधित पूर्व सेवा लागत जिसको,पैरा 94 के अंतर्गत, पहले अभिज्ञात नहीं किया गया था।***

111. एक कटौती या निपटारे को निर्धारित करने से पूर्व चालू बीमांकिक मान्यताओं का प्रयोग करते हुए (चालू बाजार ब्याज दरों और अन्य चालू बाजार कीमतों को सम्मिलित करते हुए) एक उद्यम को बाध्यता की (और योजनागत आस्तियों की यदि कोई हैं) पुनः माप करनी चाहिए।

112. कटौती घटित होती है जब एक उद्यम या तो:

(क) कानून/नियंत्रक या अन्यथा की अपेक्षाओं से उत्पन्न वर्तमान योजना के अन्तर्गत कर्मचारियों की संख्या में सारवान कटौती करने के लिए, वर्तमान बाध्यता रखता है; या

(ख) निश्चित प्रसुविधा योजना के निबंधनों में इस प्रकार संशोधन करता है कि भावी सेवा का सारवान तत्व वर्तमान कर्मचारी प्रसुविधाओं के लिए और अधिक योग्य नहीं होगें या केवल कम प्रसुविधाओं के योग्य होंगे।

कटौती एकल घटना से उत्पन्न हो सकती है, जैसे कि संयत्र का बंद होना, प्रचालनों का रूकना या समाप्ति अथवा योजना का निलंबन। यदि कटौती लाभ या हानि का वित्तीय विवरणों पर सारवान प्रभाव होगा तो घटना पर्याप्त रूप से कटौती के लिए अर्हत है। कटौतियाँ बहुधा पुनर्संरचना से जुड़ी होती है। अतः उद्यम कटौती का लेखा उसी समय करता है जब सम्बंन्धित पुनर्संरचना के लिए करता है।

113. निपटारा तब घटित होता है जब उद्यम ऐसे संव्यवहारों में प्रवेश करता है जो कि निश्चित प्रसुविधा योजना के अन्तर्गत दी हुई प्रसुविधाओं के अंश या सारी प्रसुविधाओं के आगे की बाध्यताओं को समाप्त करता है, उदाहरण के लिए, जब एक एकमुश्त रोकड़ भुगतान योजना भागीदारों को या उनकी ओर से विनिर्दिष्ट रोजगार पश्चात् प्रसुविधाओं को प्राप्त करने के अधिकार के बदले में किया जाता है।

114. कुछ मामलों में, कर्मचारी की वर्तमान और पूर्व अवधि की सेवा से सम्बंधित कुछ या सारी कर्मचारी प्रसुविधाओं को निधिकृत करने के लिए उद्यम बीमा पॉलिसी प्राप्त करता है। ऐसी पॉलिसी की प्राप्ति निपटारा नहीं है यदि उद्यम आगे की रकम के भुगतान के लिए बाध्यता को अपने पास रोकता है, यदि बीमाकर्ता बीमा पॉलिसी में विनिर्दिष्ट कर्मचारी प्रसुविधाओं का भुगतान नहीं करता है (पैरा 40)। पैरा 103-106 बीमा पॉलिसी के अन्तर्गत उन प्रतिपूर्ति अधिकारों का वर्णन करते हैं जो योजनागत आस्तियाँ नहीं हैं।

115. निपटारा कटौती के साथ ही घटित होता है यदि योजना इस प्रकार से समाप्त होती है कि बाध्यता का निपटारा हो जाता है तथा योजना विद्यमान नहीं रहती। यद्यपि, योजना का रद्द होना कटौती या निपटारा नहीं है यदि योजना का स्थान नई योजना लेती है जो कि सारतत्व में समरूप प्रसुविधाएँ प्रस्तावित करती है।

116. जहां कटौती योजना के अंतर्गत आने वाले केवल कुछ कर्मचारियों से संबंधित है, या जहां केवल किसी बाध्यता के भाग का ही निपटारा हुआ है, लाभ या हानि में गैर -अभिज्ञात पूर्व सेवा लागत का (तथा पैरा 145 (ख) के अधीन गैर-अभिज्ञात रही संक्रमणकालीन रकमों का) आनुपातिक हिस्सा सम्मिलित है। आनुपातिक हिस्सा कटौती या निपटारा के पूर्व और पश्चात् की बाध्यताओं के वर्तमान मूल्य के आधार पर अवधारित होता है, जब तक कि उन परिस्थितियों में अन्य आधार अधिक विवेकपूर्ण न हो।

पैरा 116 का दृष्टांत देने वाला उदाहरण

एक उद्यम व्यापार के एक खंड को बंद करता है और बंद खंड के कर्मचारी कोई आगे प्रसुविधाओं को अर्जित नहीं करेंगे। यह निपटारे के बिना कटौती है। चालू बीमांकिक मान्यताओं का प्रयोग करते हुए, (जिसमें चालू बाजार ब्याज दरें और अन्य बाजार कीमतें सम्मिलित हैं) कटौती के तुरंत पहले, उद्यम के पास एक निश्चित प्रसुविधा बाध्यता है, जिसका शुद्ध वर्तमान मूल्य 1000 रु. है और योजनागत आस्तियों का उचित मूल्य 820रु. है और गैर-अभिज्ञात पूर्व सेवा लागत 50 रु. है। उपक्रम ने पहली बार इस मानक को एक वर्ष पूर्व अंगीकार किया था। इसने शुद्ध दायित्व को 100 रु. से बढ़ा दिया है, जिसे उपक्रम ने पांच वर्षों के दौरान अभिज्ञात करने का चुनाव किया (पैरा 145 (ख) देखें) । कटौती बाध्यता के वर्तमान मूल्य को 100 रु. से कम करके 900 रु. तक कर देती है।

पहले से गैर-अभिज्ञात पूर्व सेवा लागत का 10% (100 रु. 1000 रु.) उस बाध्यता का भाग है, जिसको कटौती करके हटा दिया गया था, इसलिए कटौती का प्रभाव इस प्रकार होगा :

(रकम रु. में)

	कटौती से पूर्व	**कटौती लाभ**	**कटौती के पश्चात्**
बाध्यता का शुद्ध वर्तमान मूल्य	1,000	(100)	900
योजनागत आस्तियों का उचित मूल्य	(820)	-	(820)
	180	(100)	80
गैर अभिज्ञात पूर्व सेवा लागत	(50)	5	(45)
गैर अभिज्ञात संक्रमणकालीन रकम (100×4/5)	(80)	8	(72)
तुलनपत्र में अभिज्ञात शुद्ध दायित्व	(50)	(87)	(37)

37रु. की एक आस्ति अभिज्ञात की जाएगी (यह माना गया है कि पैरा 59(ख) के अनुसार रकम 37रु. से अधिक है)।

IndiaCode

परन्तु लघु तथा मध्यम आकार की कम्पनी के पास, जिसे कि अधिसूचना में परिभाषित किया गया है, निश्चित प्रसुविधा योजनाओं के लेखा के लिए पैरा 50 से 116 तक के अंतर्गत अभिज्ञान और माप के सिद्धांतों को लागू करने का विकल्प है। तथापि ऐसी कम्पनी को चाहिये कि निश्चित प्रसुविधा योजना के सम्बन्ध में प्रोद्भूत दायित्व का बीमांकिक निर्धारण करें तथा उस प्रोद्भूत दायित्व का उपबंध निम्न प्रकार से करें:

- ***बीमांकिक मूल्यांकन के लिए प्रयोग की जाने वाली पद्धति प्रोजेक्टेड यूनिट क्रेडिट पद्धति होनी चाहिए; और***
- ***प्रयुक्त मितिकाटा दर का निर्धारण तुलनपत्र की तारीख पर सरकारी बॉन्डों पर बाजार प्रतिफल के संदर्भ में इस मानक के पैरा 78 के अनुसार करना चाहिए।***

प्रस्तुतीकरण

ऑफसेट

117. एक उद्यम को एक योजना से संबंधित आस्ति का किसी अन्य योजना से संबंधित दायित्व से ऑफसेट कर देना चाहिए जब, और केवल जब:

(क) ***उद्यम के पास एक योजना के अधिशेष का किसी अन्य योजना के अधीन बाध्यता के निपटान पर लागू करने का विधिक प्रवर्तनीय अधिकार प्राप्त है ; और***

(ख) ***उद्यम शुद्ध आधार पर बाध्यता का निपटारा करना चाहता है या एक योजना के अधिशेष को वसूल करके अन्य योजना के अधीन बाध्यता का निपटारा साथ ही साथ करना चाहता है।***

रोजगार पश्चात् प्रसुविधा लागतों के वित्तीय घटक

118. यह मानक यह विनिर्दिष्ट नहीं करता है कि यदि कोई उद्यम चालू सेवा लागत, ब्याज लागत और योजनागत आस्तियों पर अपेक्षित प्रतिफल को लाभ हानि विवरण के मुख पर आय या व्यय की एक मद के घटकों के रूप में प्रस्तुत करे।

परन्तु एक लघु या मध्यम आकार की कम्पनी के पास जिसे कि अधिसूचना में परिभाषित किया गया है, निश्चित प्रसुविधा योजना के लेखा के लिए इस मानक के पैरा 117 से 118 के अंतर्गत अपेक्षित प्रस्तुतीकरण को लागू करने का विकल्प है।

प्रकटन

119. एक उद्यम को सूचना का प्रकटन करना चाहिए जिससे कि वित्तीय विवरणों के उपयोक्ताओं निश्चित प्रसुविधा योजनाओं की प्रकृति का और अवधि के दौरान उन योजनाओं के परिवर्तनों के प्रभाव का मूल्यांकन कर सके।

120. एक उद्यम को निश्चित प्रसुविधा योजना के विषय में निम्न सूचनाओं का प्रकटन करना चाहिए:

(क) *बीमांकिक लाभों और हानियों के लिए उद्यम की लेखा नीति।*

(ख) *योजना के प्रकार का सामान्य वर्णन।*

(ग) *निश्चित प्रसुविधा बाध्यता के वर्तमान मूल्य के प्रारम्भिक और अन्तिम अतिशेषों का समाधान, यदि लागू हो, निम्नलिखित प्रत्येक पर आबंटित अवधि के दौरान अलग-अलग प्रभाव दिखाते हुए:*

(i) *चालू सेवा लागत,*

(ii) *ब्याज लागत,*

(iii) *योजना भागीदारों द्वारा अंशदान,*

(iv) *बीमांकिक लाभ और हानियां,*

(v) *योजनाओं में विदेशी मुद्रा विनिमय दर में परिवर्तन जिसका मापन उद्यम की रिपोर्टिंग मुद्रा की अपेक्षा, भिन्न मुद्रा में किया गया है,*

(vi) *दी गयी प्रसुविधाएं,*

(vii) *पूर्व सेवा लागत,*

(viii) *समामेलनों,*

(ix) *कटौतियां, और*

(x) *निपटारे।*

(घ) *निश्चित प्रसुविधा बाध्यता का विश्लेषण उन योजनाओं से उत्पन्न रकमों में जो कि पूर्णतः गैर-निधिकृत हैं और उन योजनाओं से उत्पन्न रकमों में जो कि पूर्णतः या अंशतः निधिकृत हैं।*

(ङ) *योजनागत आस्तियों के उचित मूल्य के प्रारम्भिक और अन्तिम अतिशेषों, और किसी प्रतिपूर्ति अधिकार, जिसको आस्ति के रूप में पैरा 103 के अंतर्गत अभिज्ञात किया गया है, के प्रारम्भिक और अन्तिम अतिशेषों का समाधान, यदि लागू हो, निम्नलिखित प्रत्येक पर आबंटित अवधि के दौरान अलग-अलग प्रभाव दिखाते हुए:*

(i) *योजनागत आस्तियों पर प्रत्याशित प्रतिफल,*

(ii) *बीमांकिक लाभ और हानियां,*

(iii) *योजनाओं में विदेशी मुद्रा विनिमय दर में परिवर्तन जिसका मापन उद्यम की रिपोर्टिंग मुद्रा से भिन्न मुद्रा में किया गया है,*

(iv) *नियोक्ता द्वारा अंशदान,*

(v) *योजना भागीदारों द्वारा अंशदान,*

IndiaCode

(vi) *दी गयी प्रसुविधाएं,*

(vii) *समामेलनों, और*

(viii) *निपटारे।*

(च) *(ग) निश्चित प्रसुविधा बाध्यता के वर्तमान मूल्य तथा (ङ) में योजनागत आस्तियों के उचित मूल्य का तुलन पत्र में अभिज्ञात आस्तियों और दायित्वों का समाधान जो कम से कम यह दर्शाए:*

(i) *पूर्व सेवा लागत जिसको तुलन पत्र में अभी अभिज्ञात नहीं किया गया है (देखिए पैरा 94) ;*

(ii) *पैरा 59(ख) की सीमा के कारण कोई रकम जिस को एक आस्ति के रूप में अभिज्ञात नहीं किया गया है ;*

(iii) *तुलनपत्र की तारीख पर ऐसे प्रतिपूर्ति अधिकार का उचित मूल्य जिसको पैरा 103 (प्रतिपूर्ति अधिकार और संबंधित बाध्यता के बीच की कड़ी के संक्षिप्त विवरण के साथ) के अंतर्गत आस्ति की तरह अभिज्ञात किया गया था ; और*

(iv) *तुलन पत्र में अभिज्ञात अन्य रकमें।*

(छ) *निम्नलिखित प्रत्येक के लिए लाभ-हानि विवरण में अभिज्ञात कुल व्यय, तथा लाभ-हानि विवरण की लाइन मद/मदें जिनमें वे सम्मिलित है:*

(i) *चालू सेवा लागत ;*

(ii) *ब्याज लागत ;*

(iii) *योजनागत आस्तियों पर प्रत्याशित प्रतिफल ;*

(iv) *पैरा 103 के अनुसार आस्ति के रूप में अभिज्ञात किसी प्रतिपूर्ति अधिकार पर प्रत्याशित प्रतिफल ;*

(v) *बीमांकिक लाभ तथा हानियां ;*

(vi) *पूर्व सेवा लागत ;*

(vii) *किसी कटौती अथवा निपटारे का प्रभाव ; और*

(viii) *पैरा 59(ख) में सीमा के प्रभाव अर्थात् वह सीमा जिससे पैरा 55 के अंतर्गत निर्धारित रकम (यदि नकारात्मक हो) पैरा 59(ख) में निर्धारित रकम से अधिक हो ।*

(ज) *योजनागत आस्तियों के प्रत्येक मुख्य वर्ग के लिए, जिसमें सम्मिलित होना चाहिये, परन्तु वहीं तक सीमित नहीं, इक्विटी लिखत, लिखत, जायदाद और अन्य सभी आस्तियाँ प्रतिशत या रकम जो योजनागत आस्तियों के प्रत्येक मुख्य वर्ग के उचित मूल्य आस्तियों का भाग बनाता है।*

(झ) *योजनागत आस्तियों के उचित मूल्य के लिए निम्नलिखित रकमें सम्मिलित की जाती है ;*

(i) *उद्यम के अपने लिखतों के प्रत्येक वर्ग ; और*

(ii) *उद्यम द्वारा अधिकृत जायदाद, और प्रयुक्त की गई अन्य आस्तियाँ।*

(ञ) *योजनागत आस्तियों के महत्वपूर्ण वर्गों के प्रभाव को सम्मिलित करते हुए आस्तियों पर कुल मिला कर प्रत्याशित प्रतिफल दर के निर्धारण के आधार का विस्तृत वर्णन।*

(ट) *योजनागत आस्तियों पर वास्तविक प्रतिफल और किसी प्रतिपूर्ति अधिकार जिसको पैरा 103 के अनुसार आस्ति की तरह अभिज्ञात किया गया था, पर प्रतिफल।*

(ठ) *तुलन पत्र की तारीख पर प्रयोग की गई प्रमुख बीमांकिक मान्यताएँ, जहाँ लागू हों, निम्नलिखित को सम्मिलित करते हुए:*

(i) *मितिकाटा दरें ;*

IndiaCode

(ii) *वित्तीय विवरणों में प्रस्तुत अवधियों के लिए किन्हीं योजनागत आस्तियों पर प्रत्याशित प्रतिफल की दरें ;*

(iii) *किसी प्रतिपूर्ति अधिकार पर वित्तीय विवरणों में प्रस्तुत अवधियों के लिए प्रत्याशित प्रतिफल दरें पैरा 103 के अनुसार जिनको आस्ति की तरह अभिज्ञात किया था ;*

(iv) *चिकित्सा लागत प्रवृत्ति दरें ; और*

(v) *अन्य कोई प्रयुक्त की गई सारवान बीमांकिक मान्यताएं।*

एक उद्यम को निरपेक्ष शब्दों में प्रत्येक बीमांकिक मान्यता को प्रकट करना चाहिये (उदाहरण के लिए एक निरपेक्ष प्रतिशत के रूप में) और न कि विभिन्न प्रतिशतों या अन्य चरों के बीच एक अन्तर की तरह।

उपरोक्त बीमांकिक मान्यताओं के अतिरिक्त एक उद्यम को इस संबंध में एक कथन को बीमांकिक मान्यताओं में सम्मिलित करना चाहिये कि बीमांकिक मूल्यांकन के द्वारा विचारी गयी भावी वेतन वृद्धियों के अनुमानों में मुद्रास्फीति, वरिष्ठता, पदोन्नति और अन्य कारक जैसे रोजगार बाजार में पूर्ति तथा मांग को ध्यान में रखा गया है।

(ङ) *अनुमानित चिकित्सा लागतों की प्रवृत्ति दरों पर एक प्रतिशत बिन्दु की वृद्धि का प्रभाव और एक प्रतिशत बिन्दु के घटने का प्रभाव, निम्नलिखित पर:*

(i) *चालू सेवा लागत और शुद्ध सावधिक रोजगार पश्चात् चिकित्सा लागतों के घटक में ब्याज लागत के कुल योग पर ; और*

(ii) *चिकित्सा लागतों के लिए संचित रोजगार पश्चात् प्रसुविधा बाध्यता।*

इस प्रकटन के उद्देश्य से अन्य सभी मान्यताओं को सतत् मान लिया जाता है। उच्च स्तर के मुद्रास्फीति वातावरण में अनुमानित चिकित्सा लागत प्रवृत्ति दर में एक महत्त्वपूर्ण प्रतिशत वृद्धि या घटाव के प्रभाव स्वरूप प्रकटन होने चाहिएं जो निम्न स्तर मुद्रा स्फीति वातावरण के एक प्रतिशत बिन्दु के समान होने चाहिए।

(ढ) *चालू वार्षिक अवधि और चार पूर्व वार्षिक अवधियों की निम्नलिखित रकमों की:*

(i) *निश्चित प्रसुविधा बाध्यता का वर्तमान मूल्य, योजनागत आस्तियों का उचित मूल्य और योजना में अधिशेष या घाटा ; और*

(ii) *अनुभव समायोजन जो निम्न से उत्पन्न हो ;*

(अ) योजनागत दायित्वों को (1) एक रकम के रूप में या (2) तुलन-पत्र की तारीख पर योजनागत दायित्वों के प्रतिशत के रूप में व्यक्त किया गया, और

(ब) योजनागत आस्तियाँ जिनको या तो (1) एक रकम के रूप में अथवा या (2) तुलन-पत्र की तारीख पर योजनागत आस्तियों के प्रतिशत के रूप में व्यक्त किया गया है।

(ण) *तुलन-पत्र तारीख के पश्चात्, प्रारम्भ होने वाली वार्षिक अवधि के दौरान योजना में भुगतान किये जाने वाले प्रत्याशित अंशदानों का नियोक्ता द्वारा सर्वोत्तम अनुमान, जितना शीघ्र उसको युक्तियुक्तरूप से निर्धारित किया जा सके।*

121. पैरा 120(ख) योजना के प्रकार के सामान्य विवरण की अपेक्षा करता है। ऐसा विवरण, उदाहरणतया समान वेतन योजनाओं को अन्तिम वेतन पेंशन योजनाओं और रोजगार पश्चात् चिकित्सा योजनाओं से अलग करता है। योजना के विवरण में अनौपचारिक प्रथाएं सम्मिलित करनी चाहिए जो पैरा 53 के अन्तर्गत निश्चित प्रसुविधा बाध्यता के मापन में सम्मिलित अन्य बाध्यताओं को जन्म देती है। अधिक विस्तार की आवश्यकता नहीं है।

122. यदि उद्यम के पास एक से अधिक निश्चित प्रसुविधा योजनाएं हैं, प्रकटन कुल मिला कर, प्रत्येक योजना के लिए अलग-अलग या ऐसे समूहों में जो सबसे अधिक उपयुक्त समझी जायें, करना चाहिए। समूहीकरण को निम्नलिखित आधारों पर पृथक करना चाहिए:

(क) योजनाओं की भौगोलिक स्थिति, उदाहरण के लिए, देशी योजनाओं को विदेशी योजनाओं से पृथक कर के; या

(ख) योजनाएं सारवान तौर पर भिन्न जोखिमों पर निर्भर हैं, उदाहरण के लिए, समतल वेतन पेंशन योजना को अंतिम वेतन पेंशन योजना और रोजगार पश्चात् चिकित्सा योजनाओं से पृथक कर के। जब उद्यम योजना के समूहों के लिए कुल प्रकटन प्रदान करता है ऐसे प्रकटन भारित औसत या तुलनात्मक दृष्टि से संकीर्ण विस्तार के रूप में प्रदान किये जाते हैं।

123. पैरा 30, बहु-नियोक्ता योजना जिनसे ऐसे व्यवहार किया जाता है जैसे कि वे निश्चित अंशदान योजनाएं हों, के विषय में अतिरिक्त स्पष्टीकरण की अपेक्षा करता है।

124. लेखा मानक 18, *सम्बन्धित पक्षकारों के प्रकटन*, के अनुसार जहां अपेक्षित हो उद्यम निम्नलिखित के विषय में सूचना प्रकट करता है:

(क) रोजगार पश्चात् प्रसुविधा योजनाओं के साथ सम्बंधित पक्षकार के संव्यवहार; और

(ख) मुख्य प्रबंध कार्मिक के लिए रोजगार पश्चात् प्रसुविधाएँ।

125. रोजगार पश्चात् प्रसुविधा दायित्वों से उत्पन्न आकस्मिक दायित्वों के विषय में, जहाँ *लेखा मानक 29, उपबंधित रकमें, आकस्मिक दायित्वों और आकस्मिक आस्तियाँ*, द्वारा अपेक्षित हो, सूचना का प्रकटन करता है।

दृष्टांतस्वरूप प्रकटन

126. इस मानक से संलग्न दृष्टांत II में दृष्टांत स्वरूप प्रकटन अंतर्विष्ट हैं।

परन्तु लघु और मध्यम आकार की कम्पनी के पास, जिसे कि अधिसूचना में परिभाषित किया गया है, निश्चित प्रसुविधा योजनाओं के लेखा के लिए मानक के पैरा 119 से 123 में दिये गए प्रकटन को करने का विकल्प है। यद्यपि, मानक के पैरा 120 (ठ) के अनुसार बीमांकिक मान्यताओं को प्रकट करना चाहिए।

अन्य दीर्घकालिक कर्मचारी प्रसुविधाएं

127. अन्य दीर्घकालिक कर्मचारी प्रसुविधाओं में सम्मिलित हैं, उदाहरण के लिए:

(क) दीर्घकालिक प्रतिकरित अनुपस्थितियां जैसे कि दीर्घ सेवा या सम्पूर्ण विश्राम अवकाश;

(ख) जुबली या अन्य दीर्घ-सेवा प्रसुविधाएं ;

(ग) दीर्घकालिक निःशक्तता प्रसुविधा ;

(घ) कर्मचारियों द्वारा प्रदान की गई सम्बंधित सेवाओं की अवधि की समाप्ति के बारह मास या उससे अधिक की अवधि के पश्चात् संदेय लाभ में भागीदारी और बोनस; और

(ङ) अर्जित की जाने वाली अवधि के बारह मास या अधिक के पश्चात् किए गए आस्थगित भुगतान।

128. अन्य दीर्घकालिक कर्मचारी प्रसुविधाओं के मामले में, अन्य दीर्घकालिक कर्मचारी प्रसुविधाओं के आरम्भ या परिवर्तन दुर्लभ ही पूर्व सेवा लागत की सारवान रकम उत्पन्न करते हैं। इस कारण से यह मानक अन्य दीर्घ-कालिक कर्मचारी प्रसुविधाओं के लेखा के लिए सरल पद्धति की अपेक्षा करता है। यह पद्धति रोजगार पश्चात् प्रसुविधाओं के लेखा की अपेक्षित पद्धति से इस प्रकार भिन्न है कि पूर्व सेवा लागत तुरन्त अभिज्ञात होती है।

अभिज्ञान और मापन

129. अन्य दीर्घकालिक कर्मचारी प्रसुविधाओं के लिए दायित्व के रूप में मानी गई रकम, निम्नलिखित रकमों का शुद्ध योग होना चाहिए:

(क) ***तुलन-पत्र पर निश्चित प्रसुविधा बाध्यता का वर्तमान मूल्य (पैरा 65 देखिए) ;***

(ख) *घटा योजनागत आस्तियों का तुलन पत्र की तारीख पर उचित मूल्य (यदि कोई है)जिनमें से बाध्यताओं का प्रत्यक्षतः निपटारा किया जाना है (पैरा 100 -102 देखिए)।*

दायित्व पैरा के लिए उद्यम को पैरा 49-91 लागू करने चाहिए पैरा 55 तथा 61 को सम्मिलित न करते हुए। किसी प्रतिपूर्ति अधिकार के अभिज्ञान तथा मापन के लिए पैरा 103 लागू करना चाहिए।

130. अन्य अभिज्ञात कर्मचारी प्रसुविधाओं के लिए उद्यम को निम्नलिखित के शुद्ध योग को व्यय (पैरा 59 के अधीन) या आय, सिवाय उस सीमा तक कि कोई अन्य लेखा मानक उनके आस्ति की लागत में सम्मिलित करने की अपेक्षा करता है या अनुमति देता है:

(क) *चालू सेवा लागत (पैरा 64-91 देखिए);*

(ख) *ब्याज लागत (पैरा 82 देखिए);*

(ग) *किसी योजनागत आस्ति पर (पैरा 107-109 देखिए) और किसी प्रतिपूर्ति जिसको आस्ति की तरह अभिज्ञात किया गया है (पैरा 103 देखिए) पर प्रत्याशित प्रतिफल;*

(घ) *बीमांकिक लाभ और हानियां, जिन सब को तुरंत ही मान्यता देनी चाहिए ;*

(ङ) *पूर्व सेवा लागत, जिन सब को तुरंत अभिज्ञात करना चाहिए; और*

(च) *किन्ही कटौतियों या निपटारों के प्रभाव (पैरा 110 और 111 देखिए)।*

131. दीर्घकालिक कर्मचारी प्रसुविधा का एक अन्य दूसरा स्वरूप दीर्घकालिक निःशक्तता प्रसुविधा है। यदि प्रसुविधा का स्तर सेवा की अवधि पर निर्भर करता है, एक बाध्यता तब उत्पन्न होती है जब सेवा प्रदान की जाती है। उस बाध्यता का मापन इस अधिसंभाव्यता को प्रदर्शित करती है कि भुगतान करना पड़ेगा और उस समय अवधि जिसके लिए भुगतान प्रत्याशित है। यदि प्रत्येक निःशक्त कर्मचारी की प्रसुविधा का स्तर समान है, सेवा काल की उपेक्षा करते हुए, उन प्रसुविधाओं की प्रत्याशित लागत को तब अभिज्ञात किया जाता है जब कोई ऐसी घटना घटित होती है जिसके कारण निःशक्तता होती है:

परन्तु अधिसूचना में परिभाषित लघु और मध्यम आकार की कम्पनी के पास अन्य दीर्घकालिक कर्मचारी प्रसुविधाओं के लेखा में इस मानक के 129 से 131 तक के पैरा में लिखित अभिज्ञान या माप के सिद्धांतों का अनुपालन करने का विकल्प है। तथापि ऐसी कम्पनी को अन्य दीर्घकालिक कर्मचारी प्रसुविधाओं से संबंधित प्रोद्भूत दायित्व का निम्नलिखित प्रकार से बीमांकिक निर्धारण और उपबंध करना चाहिए:

- *बीमांकिक मूल्यांकन के लिए प्रोजेक्टेड यूनिट क्रेडिट पद्धति का प्रयोग करना चाहिए; तथा*
- *इस मानक के पैरा 78 के अनुसार प्रयोग की जाने वाली मितिकाटा दर का निर्धारण तुलन पत्र की तारीख पर, सरकारी बॉन्ड्स पर बाजार प्रतिफल के संदर्भ में करना चाहिये।*

प्रकटन

132. यद्यपि यह मानक अन्य दीर्घकालिक कर्मचारी प्रसुविधाओं के विनिर्दिष्ट प्रकटन की अपेक्षा नहीं करता, अन्य लेखा मानक प्रकटन की अपेक्षा कर सकते हैं, उदाहरण के लिए, यदि इन प्रसुविधाओं के परिणामस्वरूप उत्पन्न व्यय ऐसे आकार, प्रकृति या आपतन का है कि इसका प्रकटन उस अवधि में उद्यम के निष्पादन की व्याख्या के लिए सार्थक है (लेखा मानक, *अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि, पूर्वावधि मदें और लेखा नीतियों में परिवर्तन* पैरा देखिए)। जहाँ लेखा मानक 18, द्वारा अपेक्षित हो एक उद्यम मुख्य प्रबंध अधिकारियों की अन्य दीर्घकालिक कर्मचारी प्रसुविधाओं का प्रकटन करता है।

सेवा समाप्ति प्रसुविधाएँ

133. यह मानक सेवा समाप्ति प्रसुविधाओं को अन्य कर्मचारी प्रसुविधाओं से अलग वर्णित करता है क्योंकि वह घटना जो बाध्यता को जन्म देती है सेवा समाप्ति है न कि कर्मचारी सेवा।

अभिज्ञान

134. उद्यम को सेवा समाप्ति बाध्यताओं को एक दायित्व तथा एक व्यय की तरह अभिज्ञात करना चाहिये, तभी और केवल तभी:

(क) *जबकि उद्यम की वर्तमान बाध्यता, पूर्व घटना के परिणाम-स्वरूप है;*

(ख) *यह अधिसम्भाव्य है कि बाध्यता के निपटारे के लिए आर्थिक लाभों के रूप में संसाधानों के बाह्य प्रवाह की आवश्यकता होगी ; और*

(ग) *बाध्यता की रकम का विश्वसनीय अनुमान लगाया जा सकता है।*

135. एक उद्यम विधान द्वारा, कर्मचारियों या उनके प्रतिनिधियों के साथ संविदात्मक या अन्य समझौतों के द्वारा या प्रतिबद्धता द्वारा जो कि व्यापार प्रथा, रीति रिवाज या समता से व्यवहार करने की इच्छा पर आधारित है, कर्मचारियों के सेवा समाप्त करने पर उन्हें भुगतान करने (या अन्य प्रसुविधाओं के प्रावधान) के लिए कटिबद्ध है। ऐसे भुगतान सेवा समाप्ति प्रसुविधाएं हैं। सेवा समाप्ति प्रसुविधाएं विशेष रूप से एकमुश्त भुगतान हैं, परन्तु कभी-कभी उनमें निम्नलिखित को भी सम्मिलित किया जाता है:

(क) सेवा-निवृति प्रसुविधाओं मे वृद्धि या अन्य सेवा पश्चात् प्रसुविधाएँ, अप्रत्यक्ष रूप से किसी कर्मचारी प्रसुविधा योजना के अन्तर्गत अथवा प्रत्यक्ष रूप से ; और

(ख) विनिर्दिष्ट सूचना-अवधि के अन्त तक वेतन, यदि कर्मचारी और आगे ऐसी सेवा प्रदान नहीं करता जिससे उद्यम को आर्थिक लाभ हो।

136. कुछ कर्मचारी प्रसुविधाएं, कर्मचारी द्वारा सेवा छोड़ने के कारण की ओर ध्यान न देते हुए, संदेय होती हैं। ऐसी प्रसुविधाओं का भुगतान निश्चित होता है (किसी निहित होने की या न्यूनतम सेवा अपेक्षाओं को पूरा करने पर) परन्तु उनके भुगतान का समय निश्चित नहीं होता है। यद्यपि ऐसी प्रसुविधाओं को सेवा समाप्ति प्रतिपूर्ति या सेवा समाप्ति उपदान वर्णित किया जाता है, वे रोजगार पश्चात् प्रसुविधाएं है न कि सेवा समाप्ति प्रसुविधाएं और उद्यम उनका रोजगार पश्चात् प्रसुविधाओं के रूप में लेखा करता है। कुछ उद्यम कर्मचारी की प्रार्थना पर ऐच्छिक सेवा समाप्ति पर (सारतत्व में एक रोजगार पश्चात् प्रसुविधा) उद्यम की प्रार्थना पर अनैच्छिक सेवा समाप्ति की अपेक्षा न्यूनतर स्तर के की प्रसुविधा का प्रावधान करते हैं। अनैच्छिक सेवा समाप्ति के कारण अतिरिक्त संदेय प्रसुविधाएं ही सेवा समाप्ति प्रसुविधाएं है।

137. सेवा समाप्ति प्रसुविधाओं को तुरंत ही व्यय की तरह अभिज्ञात किया जाता है।

138. जहाँ एक उद्यम सेवा समाप्ति प्रसुविधाओं को अभिज्ञात करता है, उद्यम को सेवा निवृत्ति प्रसुविधाओं या अन्य कर्मचारी प्रसुविधाओं में कमी का लेखा भी करना पड़ सकता है (देखिए पैरा 110)।

मापन

139. जब सेवा समाप्ति प्रसुविधाएं तुलन पत्र की तारीख के बारह मास से अधिक अवधि के पश्चात् संदेय होती हैं, पैरा 78 में निश्चित मितिकाटा दर के आधार पर उनको मितिकाटा करना चाहिए:

परन्तु एक लघु और मध्यम आकार की कम्पनी, जिसे कि अधिसूचना में परिभाषित किया गया है, के पास तुलन पत्र तारीख के बारह मास की अवधि के पश्चात् संदेय रकम को मितिकाटा करने का विकल्प है।

प्रकटन

140. जहाँ सेवा समाप्ति प्रसुविधाओं के प्रस्ताव को स्वीकार करने वाले कर्मचारियों की संख्या में अनिश्चितता होती है वहां एक आकस्मिक दायित्व विद्यमान होता है। लेखा मानक 29, ***उपबंधित रकमें, आकस्मिक दायित्व और आकस्मिक आस्तियाँ***, की अपेक्षाओं के अनुसार एक उद्यम को आकस्मिक दायित्व की जानकारी का विवरण देना चाहिए जब तक कि निपटारे में बाह्य प्रवाह की सम्भावना नगण्य न हो।

141. लेखा मानक 5, ***अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि, पूर्वावधि मदें और लेखा नीतियों में परिवर्तन***, की अपेक्षाओं के अनुसार एक उद्यम एक व्यय की रकम और प्रकृति का स्पष्टीकरण देता है यदि यह ऐसे आकार, प्रकृति या आपतन का है कि इसका प्रकटन अवधि के लिए उद्यम के निष्पादन के स्पष्टीकरण के लिए सारवान है। सेवा समाप्ति प्रसुविधाओं के परिणाम् स्वरूप ऐसा व्यय उत्पन्न हो सकता है जिसका प्रकटन इस अपेक्षा को लागू करने के लिए आवश्यक है।

142. जहां लेखा मानक 18, ***सम्बंधित पक्षकार के प्रकटन***, की अपेक्षाओं के अनुसार एक उद्यम मुख्य प्रबंध अधिकारियों की सेवा समाप्ति प्रसुविधाओं का प्रकटन करता है।

संक्रमणकालीन उपंबध[25]

142क. कोई उपक्रम पैरा 120(ढ) द्वारा अपेक्षित रकमों को भविष्यलक्षी रूप से प्रत्येक लेखा अवधि हेतु, उपक्रम द्वारा इस मानक को पहली बार अपनाने की तारीख से यथा अवधारित रकमों के रूप में प्रकट कर सकेगा।

निश्चित प्रसुविधा योजनाएँ और सेवा समाप्ति प्रसुविधाओं के अतिरिक्त कर्मचारी प्रसुविधाएं

143. जब एक उद्यम पहली बार इस मानक को कर्मचारी प्रसुविधाओं के लिए अपनाता है, निश्चित प्रसुविधा योजनाओं के अतिरिक्त अन्य कर्मचारी प्रसुविधाएं और सेवा समाप्ति प्रसुविधाएं (किसी संबंधित कर व्यय द्वारा समायोजित), इस मानक के अनुसार, जो कि इस मानक को अपनाने की तारीख पर विद्यमान थीं और दायित्व, जिनको 1995 में भारतीय चार्टर्ड एकाउंटेन्ट संस्थान द्वारा जारी किए गये संशोधन-पूर्व मानक 15 के अनुसार उसी तारीख पर अभिज्ञात किया गया होता, के अन्तर को राजस्व आरक्षिति और अधिशेष के प्रारम्भिक अतिशेष के प्रति समायोजित करना चाहिए।

निश्चित प्रसुविधा योजनाएं

144.पहली बार इस मानक को अपनाने पर, उद्यम को उस तारीख पर निश्चित प्रसुविधा योजना के संक्रमणकालीन दायित्व का निर्धारण करना चाहिए जैसे कि:

(क) *अपनाने की तारीख पर बाध्यता (पैरा 65 देखिए) का वर्तमान मूल्य में से ;*

(ख) *घटाया अपनाने की तारीख पर उन योजनागत आस्तियों (यदि कोई हो) का उचित मूल्य जिनमें से बाध्यताओं का प्रत्यक्ष निपटारा किया जाना है (पैरा 100-102 देखिए)*

(ग) *घटाया - पूर्व सेवा लागत, जिसको पैरा 94 के अंतर्गत बाद की अवधियों में अभिज्ञात किया जाना चाहिए।*

145. यदि संक्रमणकालीन दायित्व, संशोधन पूर्व लेखा मानक 15 के अनुसार उसी तारीख को उभिज्ञात होने वाले दायित्व से अधिक है तो उपक्रम को पैरा 55 के अधीन निश्चित प्रसुविधा दायित्व के भाग के रूप में इस वृद्धि को उभिज्ञात करने का निम्नलिखित रूप से अपरिवर्तनीय चयन करना चाहिए :

(क) *राजस्व आरक्षिति तथा अधिशेष के प्रारंभिक अतिशेष (किसी संबंधित कर व्यय द्वारा समायोजित करने के पश्चात्) के लिए तुरंत ही एक समायोजन के रूप में; या*

(ख) *मानक को अंगीकार करने की तारीख से पांच वर्षों तक सरल-रेखा आधार पर एक व्यय के रूप में।*

यदि उपक्रम (ख) का चुनाव करता है तो, उपक्रम को :

(i) *तुलन पत्र में अभिज्ञात किसी भी आस्ति के मापन में पैरा 59 (ख) में वर्णित सीमा को लागू करना चाहिए;*

(ii) *प्रत्येक तुलन पत्र तारीख को (1) गैर अभिज्ञात वृद्धि की रकम; और (2) चालू अवधि में अभिज्ञात रकम को प्रकट करना चाहिए;*

(iii) *पश्चात्वर्ती बीमांकिक लाभों (किंतु नकारात्मक पूर्व सेवा लागत नहीं) के अभिज्ञान को केवल इस सीमा तक अभिज्ञात करना चाहिए कि शुद्ध संचयी गैर-अभिज्ञात बीमांकिक लाभ (उस बीमांकिक लाभ के अभिज्ञान से पहले), संक्रमणकालीन दायित्व के गैर-अभिज्ञात भाग से अधिक हो; और*

(iv) *निपटारे या कटौती पर किसी भी पश्चात्वर्ती लाभ या हानि को अवधारित करने में गैर-अभिज्ञात संक्रमणकालीन दायित्व के संबंधित भाग को सम्मिलित करना चाहिए।*

यदि संक्रमणकालीन दायित्व, संशोधन पूर्व लेखा मानक 15 के अनुसार उसी तारीख को अभिज्ञात हो चुके दायित्व से कम है तो, उपक्रम को उस कटौती का राजस्व आरक्षितियों और अधिशेष के प्रारंभिक अतिशेष के लिए तुरंत समायोजन के रूप में अभिज्ञात कर लेना चाहिए।

पैरा 144 और 145 का दृष्टांत देने वाला उदाहरण

[25] अनुच्छेद 142क –146 में दिए गए संक्रमणकालील उपबंध केवल कंपनी (लेखा मानक) नियम, 2006 के अधीन अधिसूचित लेखा मानकों लिए प्रासंगिक है, जो समय के साथ संशोधित किये गए हैं।

31 मार्च, 20X7 को किसी उद्यम के तुलनपत्र में 100 रु. का पेंशन दायित्व को सम्मिलित किया जाता है जो कि 1995 में भारतीय चार्टर्ड अकाउंटेंट संस्थान द्वारा जारी किए गए पूर्व संशोधित लेखा मानक 15 के अधीन अभिज्ञात है। उद्यम इस मानक को 1 अप्रैल, 20X7 को अपनाता है, जबकि इस मानक के अधीन बाध्यताओं का वर्तमान मूल्य 1300 रु. है तथा योजनागत आस्तियों का उचित मूल्य 1000 रु. है। 1 अप्रैल, 20X1 को उद्यम ने पेंशन बढ़ा दी थीं (अनिहित प्रसुविधाओं की लागत 160 रु., तथा निहित होने तक शेष औसत अवधि उस तारीख को 10 वर्ष है)

(रकम रु. में)

संक्रमणकालीन प्रभाव निम्न प्रकार से है :	
बाध्यता का वर्तमान मूल्य	1,300
योजनागत आस्तियों का उचित मूल्य	(1,000)
घटा : पूर्व सेवा लागत जिसको पश्चात् की अवधि में अभिज्ञात किया जाएगा (160×4/10)	(64)
संक्रमणकालीन दायित्व	236
पहले से ही अभिज्ञात दायित्व	100
दायित्व में वृद्धि	136

कोई उपक्रम दायित्व में यह वृद्धि (सम्बद्ध कर व्यय द्वारा समायोजित) को या तो 1 अप्रैल, 20X7 राजस्व आरक्षिति तथा अधिशेष के प्रारंभिक अतिशेष के प्रति तुरंत एक समायोजन के रूप में या फिर से उस तारीख से पांच वर्षों तक सीधी रेखा आधार पर एक व्यय के रूप में अभिज्ञात करने का चयन कर सकता है। चयन अपरिवर्तनीय है।

31 मार्च, 20X8 को मानक के अधीन बाध्यता का वर्तमान मूल्य 1,400 रु. है तथा योजनागत आस्तियों का उचित मूल्य 1,050 रु. है। मानक को अपनाने की तारीख से शुद्ध संचयी गैर-अभिज्ञात बीमांकिक लाभ 120 रु. है। पैरा 92 के अनुसार उपक्रम सभी बीमांकिक लाभों व हानियों को तुरंत अभिज्ञात करने के लिए अपेक्षित है।

पैरा 145 (ख)(iii) में दी गई सीमा का प्रभाव, निम्नलिखित प्रकार से है :

(रकम रु. में)

शुद्ध गैर अभिज्ञात बीमांकिक लाभ	120
संक्रमणकालीन दायित्व का गैर-अभिज्ञात भाग (136×4/5) (यदि उपक्रम 5 वर्षों के दौरान इसे अभिज्ञात करने की नीति अपनाता है)	109
अभिज्ञात होने वाला अधिकतम लाभ	11

सेवा समाप्ति प्रसुविधाएं

146. यह विवरण सेवा समाप्ति प्रसुविधाओं के खर्चों के तुरंत व्ययीकरण की अपेक्षा करता है (ऐच्छिक सेवा निवृत्ति योजना (वी.आर.एस) पर किये व्ययों सहित यद्यपि), 31 मार्च 2009 पर या उससे पूर्व सेवा समाप्ति प्रसुविधाओं पर जहां उद्यम खर्च करता है, उद्यम वापसी भुगतान की अवधि (पे बैक पीरियड) पर क्रमिक अपाकरण के लिए ऐसे खर्चों को आस्थगित करने लेखा नीति चुन सकता है। यद्यपि, उद्यम ऐसे आस्थगित व्यय को 1 अप्रैल 2010 या बाद में आरम्भ होने वाली लेखा अवधियों पर आगे नहीं ले जा सकता है।

दृष्टांत-I

दृष्टांत

IndiaCode

यह दृष्टांत केवल समझाने के लिए है और मानक का भाग नहीं है। इस उदाहरण का उद्देश्य मानक के प्रयोग के अर्थ को स्पष्ट करने में सहायता देने के लिए समझाना है। नीचे दिए गए संव्यवहारों के प्रभाव को दर्शाने के लिए लाभ-हानि के विवरणों और तुलनपत्रों से उद्धरण दिये गए हैं। यह उद्धरण आवश्यक रूप से अन्य लेखा मानकों की सभी प्रकटन तथा प्रस्तुतिकरण अपेक्षाओं पर पूरे खरे नहीं उतरते हैं।

पृष्ठभूमि सूचना

निधिकृत निश्चित प्रसुविधा योजना के विषय में निम्नलिखित सूचना दी गई है। ब्याज आंकलन को सरल रखने के लिए, सभी सौदे वर्ष के अंत में घटित माने जाते हैं। दायित्व का वर्तमान मूल्य और योजनागत आस्तियों का उचित मूल्य दोनों ही 1 अप्रैल, 20×4 को 1,000 रु. था।

(रकम रु. में)

	20x4-x5	20x5-x6	20x6-x7
वर्ष के प्रारम्भ में मितिकाटा दर	10.0%	9.0%	8.0%
वर्ष के प्रारम्भ में योजनागत आस्तियों पर प्रत्याशित प्रतिफल दर	12.0%	11.1%	10.3%
चालू सेवा लागत	130	140	150
दी गयी प्रसुविधाएं	150	180	190
दिये गए अंशदान	90	100	110
31 मार्च को बाध्यता का वर्तमान मूल्य	1,141	1,197	1,295
31 मार्च को योजनागत आस्तियों का उचित मूल्य	1,092	1,109	1,093
कर्मचारियों का प्रत्याशित शेष औसत कार्यकारी जीवन	10	10	10

IndiaCode

20x5-x6 में 1 अप्रैल 20×5 से अतिरिक्त प्रसुविधा देने के लिए योजना में संशोधन किया गया था। 1 अप्रैल 20×5 को कर्मचारी सेवा के लिए अतिरिक्त प्रसुविधाओं का वर्तमान मूल्य 1 अप्रैल 20x5 से पहले निहित हुई प्रसुविधाओं का 50 रु. था और अनिहित प्रसुविधाओं का 30 रु. था। 1 अप्रैल 20x5 को उद्यम ने अनुमान लगाया कि औसत समय, जब तक अनिहित प्रसुविधाएं निहित नहीं होती अतिरिक्त अनिहित प्रसुविधाओं से उत्पन्न पूर्व सेवा लागत तीन वर्ष के लिए सरल रेखा आधार पर अभिज्ञात होती है। अतिरिक्त निहित प्रसुविधाओं से उत्पन्न पूर्व सेवा लागत को तुरंत ही अभिज्ञात किया जाता है। (मानक का पैरा 94)।

दायित्व के वर्तमान मूल्य और योजनागत आस्तियों के उचित मूल्य में परिवर्तन

पहला कदम बाध्यता के वर्तमान मूल्य और योजनागत आस्तियों के उचित मूल्य में परिवर्तन का संक्षिप्तीकरण करना है और इसका अवधि के लिए बीमांकिक लाभ और हानियों की रकम का निर्धारण करने के लिए प्रयोग करना है। जो निम्नलिखित हैं:

(रकम रु. में)

	20x4-x5	20x5-x6	20x6-x7
1 अप्रैल को बाध्यता का वर्तमान मूल्य	1,000	1,141	1,197
ब्याज लागत	100	103	96
चालू सेवा लागत	130	140	150
पूर्व सेवा लागत-(अनिहित प्रसुविधाएं)	–	30	–
पूर्व सेवा लागत-(निहित प्रसुविधाएं)	–	50	–

दी गयी प्रसुविधाएं	(150)	(180)	(190)
बीमांकिक दायित्व पर (लाभ) हानि			
(अतिशेष रकम)	61	(87)	42
31 मार्च, बाध्यता का वर्तमान मूल्य	1,141	1,197	1,295
1 अप्रैल, योजनागत आस्तियों का			
उचित मूल्य	1,000	1,092	1,109
योजनागत आस्तियों पर प्रत्याशित प्रतिफल	120	121	114
अंशदान	90	100	110
दी गयी प्रसुविधाएं	(150)	(180)	(190)
योजनागत आस्तियों पर बीमांकिक			
लाभ (हानि) (अतिशेष रकम)	32	(24)	(50)
31 मार्च, योजनागत आस्तियों का			
उचित मूल्य	1,092	1,109	1,093
मानक के अनुसार कुल			
बीमांकिक लाभ (हानि) जिनको तुरंत			
अभिज्ञात करना है	(29)	63	(92)

IndiaCode

तुलन पत्र और लाभ-हानि विवरणों में अभिज्ञात रकमें, और सम्बंधित विश्लेषण

अंतिम चरण यह है कि तुलन पत्र तथा लाभ-हानि के विवरण में अभिज्ञात रकमों का निर्धारण और इस मानक के पैरा 120 (च), (छ) तथा (ञ) के अनुसार किये जाने वाले विश्लेषण को प्रकट करना [पैरा 120 (ग) और (ङ)] के अनुसार प्रकट करने के लिए आवश्यक विश्लेषण इस दृष्टांत के बाध्यताओं के वर्तमान मूल्य में और योजनागत आस्तियों के उचित मूल्य में परिवर्तन' वाले भाग में दिये हैं)। यह निम्नलिखित हैं:

(रकम रु. में)

	20x4-x5	20x5-x6	20x6-x7
बाध्यता का वर्तमान मूल्य	1,141	1,197	1,295
योजनागत आस्तियों का उचित मूल्य	(1,092)	(1,109)	(1,093)
	49	88	202
गैर अभिज्ञात गत सेवा लागत	–	20	(10)
अनिहित प्रसुविधाएं	49	68	119
तुलन पत्र में अभिज्ञात दायित्व			
चालू सेवा लागत	130	140	150
ब्याज लागत	100	103	96

योजनागत आस्तियों पर प्रत्याशित			
प्रतिफल	(120)	(121)	(114)
वर्ष में अभिज्ञात शुद्ध बीमांकिक			
(लाभ) हानि	29	(63)	92
पूर्व सेवा लागत-अनिहित प्रसुविधाएं	–	10	10
पूर्व सेवा लागत-निहित प्रसुविधाएं	–	50	–
लाभ हानि विवरण में अभिज्ञात व्यय	139	119	234
योजनागत आस्तियों पर वास्तविक प्रतिफल:			
योजनागत आस्तियों पर प्रत्याशित प्रतिफल	120	121	114
योजनागत आस्तियों बीमांकिक लाभ	32	(24)	(50)
(हानि)			
योजनागत आस्तियों पर वास्तविक प्रतिफल	152	97	64

टिप्पण: प्रतिपूर्तियों के प्रस्तुतिकरण के लिए पैरा 103-105 को दर्शाने वाले उदाहरण देखिए।

दृष्टांत II

दृष्टांत स्वरूप प्रकटन

यह उदाहरण केवल समझाने के लिए है और मानक का भाग नहीं है। इस दृष्टांत का उद्देश्य मानक के प्रयोग के अर्थ को स्पष्ट करने में सहायता देना है। वित्तीय विवरणों टिप्पणों के उद्धरण यह स्पष्ट करते हैं कि बड़े बहु-राष्ट्रीय समूह जो कि विभिन्न कर्मचारी प्रसुविधाएं प्रदान करते हैं किस प्रकार वांछित प्रकटन किये जा सकते हैं। यह उद्धरण अनिवार्यतः वह सभी सूचनाएं प्रदान नहीं करते जो लेखा मानक 15 और अन्य लेखा मानकों के अन्तर्गत प्रकटन और प्रस्तुतिकरण के लिए वांछनीय हैं। विशेष रूप से वे निम्नलिखित के प्रकटन को नहीं दर्शाते:

(क) कर्मचारी प्रसुविधाओं के लिए लेखा नीतियां (देखिए लेखा मानक, लेखा नीतियों का प्रकटन)। विवरण का पैरा 120 (क) इस प्रकटन से बीमांकिक लाभ और हानियों को अभिज्ञात करने के लिए उद्यम की लेखा नीति को सम्मिलित करने की अपेक्षा करता है।

(ख) योजना के प्रकार का साधारण वर्णन [पैरा 120(ख)]

(ग) आस्तियों पर सम्पूर्ण रूप से प्रत्याशित प्रतिफल दर के निर्धारण के आधार का विस्तृत वर्णन (पैरा 120(ञ)।

(घ) संचालकों और मुख्य प्रबंध कर्मचारियों दी गयी गए कर्मचारी प्रसुविधाएं (देखिए लेखा मानक 18, सम्बंधित पक्षकार के प्रकटन)।

कर्मचारी प्रसुविधा बाध्याताएं

तुलन पत्र में अभिज्ञात रकमें (रु. में) निम्नलिखित हैं:

	निश्चित प्रसुविधा पेंशन योजनाएं		रोजगार पश्चात् चिकित्सा प्रसुविधाएं	
	20x5-x6	20x4-x5	20x5-x6	20x4-x5
निधिकृत बाध्यताओं				

IndiaCode

का वर्तमान मूल्य	20,300	17,400	–	–
योजनागत आस्तियों				
का उचित मूल्य	18,420	17,280	–	–
	1,880	120	–	–
गैर-निधिकृत बाध्यताओं				
का वर्तमान मूल्य	2000	1000	7,337	6,405
गैर अभिज्ञात गत सेवा	(450)	(650)	–	–
लागत				
शुद्ध दायित्व	3,430	470	7,337	6,405
तुलन पत्र में रकम:				
दायित्व	3,430	560	7,337	6,405
आस्तियाँ	–	(90)	–	–
शुद्ध दायित्व	3430	470	7337	6405

पेंशन योजना आस्तियों में (रिपोर्टिंग उद्यम का नाम) द्वारा जारी किए गए इक्विटी शेयर जिनका उचित मूल्य 317 रु. है (20x4-x5:281 रु.)। योजनागत आस्तियों में (रिपोर्टिंग उद्यम का नाम) द्वारा धारित जायदाद को भी सम्मिलित करते हुए, जिसका उचित मूल्य 200 रु. है (20x4-x5: 185 रु.)।

लाभ-हानि विवरण में अभिज्ञात रकम (रु. में) निम्नलिखित है:

	निश्चित प्रसुविधा		रोजगार पश्चात	
	2005-06	2004-05	2005-06	2004-05
चालू सेवा लागत	850	750	479	411
बाध्यता पर ब्याज	950	1,000	803	705
योजनागत आस्तियों पर				
प्रत्याशित प्रतिफल	900	(650)		
वर्ष में अभिज्ञात शुद्ध				
बीमांकिक (लाभ) हानि	2650	(650)		
पूर्व सेवा लागत	200	200	_	_
कटौतियां तथा निपटारों				
पर हानियां (लाभ)	175	(390)	_	_
'कर्मचारी प्रसुविधा खर्चे'				
में शामिल, योग	3,925	260	1,532	1,516
योजनागत आस्तियों पर				
वास्तविक प्रतिफल	600	2,250	=	=

indiaCode

निश्चित प्रसुविधा बाध्यता के वर्तमान मूल्यों में परिवर्तन उनके प्रारम्भिक और अंतिम अतिशेषों के समाधान का प्रतिनिधित्व करते हुए:

	निश्चित प्रसुविधा पेंशन योजनाएं		रोजगार पश्चात चिकित्सा प्रसुविधाएं	
	20x5-x6	20x4-x5	20x5-x6	20x4-x5
प्रारम्भिक निश्चित प्रसुविधा बाध्यता	18,400	11,600	6,405	5,439
सेवा लागत	850	750	479	411
ब्याज लागत	950	1,000	803	705
बीमांकिक हानियां (लाभ)	2,350	950	250	400
कटौतियों पर हानियां (लाभ)	(500)	–		
निपटारों पर विलुप्त दायित्व	–	(350)		
क्रय की प्रकृति में समामेलन में ग्रहण किये गए दायित्व	–	5,000		
विदेशी योजनाओं पर विनिमय अन्तर	900	(150)		
भुगतान की गयी प्रसुविधाएं	(650)	(400)	(600)	(550)
अंतिम निश्चित प्रसुविधा बाध्यता	22,300	18,400	6,405	7,337

योजनागत आस्तियों के उचित मूल्य में परिवर्तन, उसके प्रारम्भिक और अंतिम अतिशेषों के समाधान का प्रतिनिधित्व करते हुए निम्नलिखित हैं:

निश्चित प्रसुविधा

पेंशन योजनाएं

	20x5-x6	20x4-x5
योजनागत आस्तियों का आरम्भिक उचित मूल्य	17,280	9,200
प्रत्याशित प्रतिफल	900	650
बीमांकिक लाभ और (हानियां)	(300)	1,600
निपटारों पर वितरित आस्तियाँ	(400)	–
नियोक्ता द्वारा अंशदान	700	350
क्रय की प्रकृति में समामेलन में ग्रहण किये गए दायित्व	–	6,000

IndiaCode

विदेशी योजनाओं पर विनिमय अन्तर	890	(120)
भुगतान की गयी प्रसुविधाएं	(650)	(400)
	18,420	17,280

20x6-x7 में समूह अपनी निश्चित प्रसुविधा पेंशन योजनाओं को 900 रु., का अंशदान देने की आशा करता है।

योजनागत आस्तियों के मुख्य वर्ग कुल योजनागत आस्तियों के प्रतिशत के रूप में निम्नलिखित हैं:

	निश्चित प्रसुविधा पेंशन योजनाएं		**रोजगार पश्चात चिकित्सा लाभ**	
	20x5-x6	20x4-x5	20x5-x6	20x4-x5
भारत सरकार की प्रतिभूतियां	80%	82%	78%	81%
उच्च श्रेणी निगमित बाँड	11%	10%	12%	12%
सूचित कम्पनियों के साधारण शेयर	4%	3%	10%	7%
जायदाद	5%	5%	–	–

तुलन पत्र की तारीख पर मुख्य बीमांकिक मान्यताएं (भारित औसत में व्यक्त):

	20x5-x6	20x4-x5
31 मार्च को मितिकाटा दर	5.0%	6.5%
31 मार्च को योजनागत आस्तिय पर प्रत्याशित प्रतिफल	5.4%	7.0%
अवधि पूर्व सेवा निवृत्ति का चुनाव करने वाले कर्मचारियों का अनुपात	30%	30%
स्वास्थ्य देखरेख लागतों में वार्षिक वृद्धि	8%	8%
अधिकतम राज्य स्वास्थ्य देखरेख प्रसुविधाओं में भावी परिवर्तन	3%	2%

बीमांकिक मूल्यांकन में विचारणीय भावी वेतन वृद्धि के अनुमान के लिए मुद्रास्फीति, वरिष्ठता, पदोन्नति और अन्य सम्बंधित कारकों जैसे कि रोजगार बाजार में पूर्ति तथा मांग को ध्यान में रखा जाता है।

माना गया है कि स्वास्थ्य सुरक्षा लागत प्रवृत्ति दरों का लाभ हानि के विवरण में अभिज्ञात रकमों पर महत्वपूर्ण प्रभाव होता है। जैसा कि ऊपर दी गई मुख्य बीमांकिक मान्यता में विनिर्दिष्ट है वर्तमान स्वास्थ्य सुरक्षा लागतों में 8% की वृद्धि प्रत्याशित है। अनुमानित स्वास्थ्य सुरक्षा लागत प्रवृति दरों में 1% बिन्दु परिवर्तन का सेवा लागत, ब्याज लागत तथा निश्चित प्रसुविधा बाध्यता के कुल योग पर निम्नलिखित प्रभाव होंगे:

	एक प्रतिशत बिन्दु वृद्धि	**एक प्रतिशत बिन्दु की कमी**
सेवा लागत तथा ब्याज लागत के कुल योग पर प्रभाव	190	(150)
निश्चित प्रसुविधा बाध्यता पर प्रभाव	1,000	(900)

IndiaCode

चालू तथा पूर्व चार अवधियों की रकमें निम्नलिखित हैं:

			निश्चित प्रसुविधा		पेंशन योजनाएं
	2005-06	2004-05	2003-04	2002-03	2001-02
निश्चित प्रसुविधा बाध्यता	(22,300)	(18,400)	(11,600)	(10,582)	(9,144)
योजनागत आस्तियाँ	18,420	17,280	9,200	8,502	10,000
अधिशेष/(घाटा)	(3,880)	(1,120)	(2,400)	(2,080)	856
योजनागत दायित्वों पर अनुभव समायोजन	(1,111)	(768)	(69)	543	(642)
योजनागत आस्तियों पर अनुभव समायोजन	(300)	1,600	(1,078)	(2,890)	2,777
रोजगार पश्चात् चिकित्सा लाभ					
	20x5-x6	20x4-x5	20x3-x6	20x2-x3	20x1-x2
निश्चित प्रसुविधा बाध्यता	7,337	6,405	5,439	4,923	4,221
योजनागत दायित्वों पर अनुभव समायोजन	(232)	829	490	(174)	(103)

IndiaCode

यह समूह सम्पूर्ण उद्योग में फैली निश्चित प्रसुविधा योजना जो कि अंतिम वेतन के आधार पर पेंशनों का उपबंध करती है और जिसके निधिकरण के लिए अंशदान का निर्धारण उस स्तर पर किया जाता है, कि उसी अवधि में संदेय प्रसुविधाओं का भुगतान कर सके। यह व्यवहारिक नहीं है कि समूह की बाध्यता का वर्तमान मूल्य या सम्बंधित चालू सेवा लागत का निर्धारण करें जैसे कि योजना अपनी बाध्यता का आंकलन ऐसे आधार पर करती है जो (रिपोर्टिंग उद्यम का नाम) वित्तीय विवरण में प्रयोग किए गए आधार (आधार का वर्णन करें) से सारवान तौर पर भिन्न है। उस आधार पर 30 सितम्बर 2003 तक के योजना के वित्तीय विवरण 27,525 रु. के गैर-निधिकृत दायित्व दिखाते हैं। गैर-निधिकृत दायित्वों के परिणाम स्वरूप भागीदार नियोक्ताओं द्वारा भविष्य के भुगतान करने होंगे। योजना के लगभग 75,000 सदस्य हैं जिनमें से लगभग 5,000 (रिपोर्टिंग उद्यम इकाई का नाम) के वर्तमान या पूर्व कर्मचारी हैं या उनके आश्रित हैं। लाभ हानि विवरण में अभिज्ञात व्यय, जो कि वर्ष के लिए देय अंशदानों के बराबर हैं, या उपरोक्त रकमों में सम्मिलित नहीं है 230 रु. था (20×4-×5: 215 रु.)। समूह के भावी अंशदानों में पर्याप्त वृद्धि हो सकती है यदि अन्य उद्यम योजना के बाहर निकल जायें।

लेखा मानक 16

उधार लागतें

*(इस लेखा मानक में कुछ **मोटे-तिरछे** टाइप और कुछ सीधे टाइपमें व्यवस्थित पैरा सम्मिलित है, जिनका समान प्राधिकार है। मोटे तिरछे टाइप में दिये गए पैरा मुख्य सिद्धांत उपदर्शित करते हैं। इस लेखा मानक को अधिसूचना के प्रति उपाबंध के भाग क में अतंर्विष्ट साधारण अनुदेशों के संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिये।)*

उद्देश्य

इस मानक का उद्देश्य उधार लागतों के लेखा प्रतिपादन को अवधारित करना है।

कार्यक्षेत्र

1. इस मानक को उधार लागतों के लेखा पर लागू करना चाहिए।

2. यह मानक अधिमानी शेयर पूँजी जिसको दायित्व के रूप में वर्गीकृत नहीं किया गया, सहित स्वामित्व की समता की वास्तविक या अभ्यारोपित लागतों का वर्णन नहीं करता।

परिभाषाएँ

3. इस मानक में विनिर्दिष्ट अर्थों में निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग किया गया है:

3.1 <u>उधार लागतें</u> निधियों के उधार के सम्बन्ध में उद्यम द्वारा उपगत किए गए ब्याज और अन्य लागतें हैं।

3.2 <u>अर्हक आस्ति</u> एक ऐसी आस्ति है जो अपने आशयित उपयोग या विक्रय के लिए तैयार होने के लिए अनिवार्यतः सारभूत समयावधि लेती है।

स्पष्टीकरण

सारभूत समय अवधि मुख्य रूप से प्रत्येक मामले में तथ्यों और परिस्थितियों पर निर्भर करती है। यद्यपि सामान्यतः बारह मास की अवधि को सारभूत समय अवधि माना जाता है जब तक कि इससे कम या लम्बी अवधि मामले के तथ्यों या परिस्थितियों के आधार पर उचित न हो। अवधि का अनुमान लगाने के लिए उस समय पर, जो एक आस्ति तकनीकी तौर पर या वाणिज्यिक तौर पर इसके आशयित प्रयोग या विक्रय के लिए तैयार होने के लिए लेती है, विचार करना चाहिये।

4. उधार लागतों में निम्नलिखित सम्मिलित हो सकते हैं:

(क) बैंक उधारों` और अन्य अल्पकालिक तथा दीर्घकालिक उधारों पर ब्याज तथा प्रतिबद्धता प्रभार;

(ख) उधारों से संबंधित बट्टों या प्रीमियमों का क्रमिक अपाकरण;

(ग) उधारों की व्यवस्था के सम्बन्ध में उपगत आनुषंगिक लागतों का क्रमिक अपाकरण;

(घ) वित्तीय पट्टों या ऐसी ही अन्य व्यवस्थाओं के अधीन अर्जित आस्तियों के सम्बन्ध में वित्तीय प्रभार; और

(ङ) विदेशी मुद्रा उधारों से उद्भूत विनिमय अन्तर उस सीमा तक जब तक वे ब्याज लागतों के प्रति एक समायोजन के रूप में लिए जाते हैं।

स्पष्टीकरण

विदेशी मुद्रा उधारों से उत्पन्न विनिमय अन्तर और जिनको उधार लागतें माना जाता है वे विनिमय अन्तर हैं जो विदेशी मुद्रा उधारों के मूल धन पर उद्भूत होते हैं तथा इनकी अधिकतम सीमा स्थानीय मुद्रा उधारों पर ब्याज तथा विदेशी मुद्रा उधारों पर ब्याज के अन्तर के बराबर है। अतः विनिमय अन्तर की रकम, जो स्थानीय मुद्रा उधार पर ब्याज और विदेशी मुद्रा उधार पर ब्याज के अन्तर से अधिक नहीं है, को इस मानक के अन्तर्गत लेखाबद्ध करने वाली उधार लागत माना जाता है, तथा शेष विनिमय अन्तर का, यदि कोई हो तो, लेखा मानक 11, *'विदेशी मुद्रा विनिमय दरों में परिवर्तनों के प्रभाव'* के अन्तर्गत लेखा किया जाता है। इस उद्देश्य के लिए स्थानीय मुद्रा उधार के लिए ब्याज दर वह दर मानी जाती है जिस पर उद्यम ने स्थानीय स्तर पर उधार प्राप्त किया होता अगर विदेशी मुद्रा उधार लेने का निर्णय न लिया गया होता।

इस मानक से संलग्न दृष्टांत में इस स्पष्टीकरण को लागू करने को स्पष्ट किया गया है।

5. अर्हक आस्तियों के उदाहरण हैं निर्माण संयंत्र, बिजली निर्माण सुविधाएं, वे सूचीबद्ध सामान जिनको विक्रय योग्य दशा में लाने के लिए सारभूत समय लगता है तथा विनिधान सम्पत्तियाँ। अन्य विनिधान और वे सूचीबद्ध सामान जो नैत्यक तौर पर विनिर्मित किये जाते हैं या अन्यथा अल्पावधि के दौरान अधिक मात्रा में निरन्तर तौर पर उत्पादित किए जाते है, अर्हक आस्तियां नहीं हैं।

अभिज्ञान

6. उधार लागतें जिनको प्रत्यक्ष रूप से अर्हक आस्ति के अर्जन, निर्माण या उत्पादन के प्रति चिन्हित किया जा सकता है उन्हें उस आस्ति की लागत के भाग के रूप में पूंजीकृत करना चाहिए। पूंजीकरण के लिए पात्र उधार लागतों की रकम का निर्धारण इस मानक के अनुसार करना चाहिए। अन्य उधार लागतों को उस अवधि के लिए व्यय के रूप में अभिज्ञात करना चाहिये, जिसमें वे उपगत किए गए हैं।

IndiaCode

7. अर्हक आस्तियों की लागत के भाग के रूप में उधार लागतों का तभी पूंजीकरण करना चाहिए जब यह सम्भाव्य हो कि इसके परिणामस्वरूप उद्यम को आर्थिक लाभ होंगे तथा लागतों का मापन विश्वसनीय तौर पर किया जा सकता है। अन्य उधार लागतों को उस अवधि के लिए व्यय के रूप में अभिज्ञात किया जाना चाहिए, जिसमें ये उपगत की गई हैं।

पूँजीकरण के लिए पात्र उधार लागतें

8. उधार लागतें जिनको अर्हक आस्ति के अर्जन, निर्माण या उत्पादन के प्रति प्रत्यक्ष रूप से चिन्हित किया जा सकता है, वे लागते हैं जो बचाई जा सकती थीं, यदि अर्हक आस्ति पर व्यय न किया गया होता। जब उद्यम विशेषतया किसी विशिष्ट अर्हक आस्ति का अर्जन करने के लिए निधि उधार लेता है तो उस अर्हक आस्ति से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित उधार लागतों को आसानी से पहचाना जा सकता है।

9. किसी अर्हक आस्ति और विशिष्ट उधारों के बीच प्रत्यक्ष सम्बन्ध को पहचानना और ऐसे उधारों का निर्धारण जो अन्यथा न लिए जाते कठिन हो सकता है, यह कठिनाई आती है, उदाहरणार्थ जब एक उद्यम के वित्तीय क्रियाकलाप केन्द्रीय रूप से समन्वित होते है या जब निधियों का उधार लेने के लिए विभिन्न ब्याज दरों वाले अनेक प्रकार के उधार लिखतों का प्रयोग किया जाता है और इन उधारों को विशिष्ट अर्हक आस्ति के साथ आसानी से पहचाना नहीं जा सकता है। परिणामस्वरूप, उन उधार लागतों की रकम का निर्धारण, जो किसी अर्हक आस्ति के अर्जन, निर्माण या उत्पादन के प्रति चिन्हित की जा सकती है प्रायः कठिन होता है और निर्णय का प्रयोग अपेक्षित है।

10. उस सीमा तक, जहाँ अर्हक आस्ति को विशिष्टतः प्राप्त करने के लिए निधियाँ उधार ली जाती हैं, उस आस्ति पर पूंजीकरण के लिए उधार लागतों की रकम का अवधारण वास्तविक उधार लागत के आधार पर जो उस उधार पर अवधि के दौरान उपगत की गई हो और उसमें से उधार के अस्थायी विनिधान पर आय को घटा कर किया जाता है।

11. अर्हक आस्ति के लिए वित्त व्यवस्थाओं के परिणामस्वरूप उद्यम उधार निधियों को प्राप्त और उससे जुड़ी हुई सम्बंधित उधार लागतों को अर्हक आस्ति पर समस्त या आंशिक निधियों का व्यय करने से पूर्व उपगत कर सकता है। इन परिस्थितियों में अर्हक आस्तियों पर व्यय करने तक निधियों का बहुधा अस्थायी रूप से विनिधान कर दिया जाता है। अवधि के दौरान पूंजीकरण के लिए पात्र उधार लागतों की रकम का अवधारण करने के लिए उन उधारों के अस्थायी विनिधान से अर्जित आय को उपगत की गई उधार लागतों से घटा दिया जाता है।

12. उस सीमा तक जहाँ निधियों को सामान्य रूप से उधार लिया जाता है और उनका अर्हक आस्ति को प्राप्त करने के उद्देश्य से प्रयोग किया जाता है, पूंजीकरण के लिए पात्र उधार लागतों की रकम की अवधारण उस आस्ति के व्यय पर पूंजीकरण की दर लागू कर के करना चाहिए। पूंजीकरण की दर उन उधार लागतों का भारित औसत होनी चाहिए जो कि उद्यम के उधारों पर लागू होती हैं और जो अवधि के दौरान संदेय हैं लेकिन उन उधार के अतिरिक्त जो अर्हक आस्ति को विशिष्टतः प्राप्त करने के लिए उधार लिए गए हैं। एक अवधि के दौरान पूँजीकृत उधार लागतों की रकम उस अवधि के दौरान उपगत की गई उधार लागतों से अधिक नहीं होनी चाहिए।

वसूली योग्य रकम पर अर्हक आस्ति की कैरिंग रकम का आधिक्य

13. जब अर्हक आस्ति की कैरिंग रकम या अपेक्षित अंततः लागत उसकी वसूली योग्य रकम या शुद्ध वसूली योग्य मूल्य से अधिक होती है, तब अन्य लेखा मानकों की अपेक्षाओं के अनुसार कैरिंग रकम को अपलिखित अथवा अवलिखित कर दिया जाता है। कुछ परिस्थितियों में इस प्रकार अपलिखित या अवलिखित की गई रकम को उन अन्य लेखा मानकों के अनुसार प्रतिलिखित किया जाता है।

पूंजीकरण का प्रारम्भ

14. उधार लागतों का अर्हक आस्ति की लागत के भाग के रूप में पूंजीकरण का प्रारंभ तब होना चाहिए जब निम्नलिखित सभी शर्तें पूरी हो जाती है:

(क) *एक अर्हक आस्ति के अर्जन, निर्माण या उत्पादन के लिए व्यय उपगत किया जा रहा हो ;*

(ख) *उधार लागतें उपगत की जा रही हों ; और*

(ग) *क्रियाकलाप जो कि आस्ति को इसके अपेक्षित उपयोग अथवा विक्रय के लिए तैयार करने में आवश्यक हैं किए जा रहे हों।*

15. अर्हक आस्ति पर व्यय में केवल ऐसे व्यय सम्मिलित हैं जिसके परिणामस्वरूप रोकड़ के संदाय, अन्य आस्तियों के अंतरण अथवा ब्याज वाले दायित्वों का ग्रहण करना होता है। व्यय को किसी प्रगति संदाय की प्राप्ति के लिए और आस्ति से सम्बन्धित अनुदान की प्राप्ति के लिए (लेखा मानक 12, *सरकारी अनुदानों के लिए लेखा* देखिए) कम किया जाता है। एक अवधि के दौरान आस्ति की औसत कैरिंग रकम और पहले से पूंजीकृत उधार लागतें शामिल करते हुए सामान्यतः उन व्ययों का एक तर्कसंगत अनुमान होता है जिसके प्रति उस अवधि में पूंजीकरण दर लागू की जाती है।

16. अपने अपेक्षित उपयोग या विक्रय के लिए आस्ति तैयार करने के लिए आवश्यक क्रियाकलाप उस आस्ति के भौतिक निर्माण की अपेक्षा कहीं अधिक व्यापक होते हैं। इसमें शामिल हैं भौतिक निर्माण प्रारम्भ करने से पूर्व तकनीकी और प्रशासनिक कार्य जैसे भौतिक निर्माण के प्रारम्भ होने से पूर्व अनुज्ञापत्र पाने से संबंधित क्रियाकलाप। यद्यपि, इन क्रियाकलापों में आस्ति का धारण करना शामिल नहीं है जब कोई ऐसा उत्पादन या विकास कार्य नहीं हो रहा जो आस्ति की दशा में परिवर्तन ला सके। उदाहरण के लिए, उधार लागतें जो भूमि के विकास के समय उपगत की जाती हैं उनका पूँजीकरण उस अवधि में किया जाता है जिसमें विकास सम्बंधी क्रियाकलाप किए जा रहे होते हैं। यद्यपि, भवन निर्माण के उद्देश्य से अर्जित भूमि जिस पर विकास कार्य नहीं हो रहा उस पर उपगत की गई उधार लागतें पूंजीकरण के योग्य नहीं होती।

पूंजीकरण का निलंबन

17. उधार लागतों के पूंजीकरण को उस विस्तारित अवधियों के दौरान निलंबित करना चाहिए जिसमें सक्रिय विकास में व्यवधान आता हो।

18. उधार लागतें उस विस्तारित अवधि के दौरान उपगत की जा सकती हैं जिसमें आस्ति के अपेक्षित उपयोग या विक्रय के लिए तैयार करने के लिए अनिवार्य क्रियाकलापों में व्यवधान आता है। ऐसी लागतें आंशिक रूप से पूर्ण आस्तियों को धारण करने की लागतें हैं और यह पूंजीकरण के योग्य नहीं होती हैं। यद्यपि, उधार लागतों के पूँजीकरण को सामान्यतः उस अवधि में निलंबित नहीं किया जाता जब कि पर्याप्त मात्रा में तकनीकी तथा प्रशासनिक कार्य चल रहा होता है। उधार लागतों के पूंजीकरण को तब भी निलंबित नहीं किया जाता जब अस्थायी विलंब आस्ति के अपेक्षित प्रयोग या विक्रय के लिए तैयार करने की प्रक्रिया का अनिवार्य भाग है। उदाहरण के लिए, पूंजीकरण सूचीबद्ध सामान के परिपक्व होने के लिए अपेक्षित विस्तारित अवधि के दौरान या उस विस्तरित अवधि के दौरान जारी रहता है जिसमें ऊँचे जल स्तर पुल के निर्माण में विलंब करते हैं यदि ऐसे ऊँचे जल स्तर अंतर्वलित उस भौगोलिक क्षेत्र में निर्माण अवधि के दौरान सामान्य है।

पूंजीकरण का समापन

19. उधार लागतों का पूंजीकरण बन्द हो जाना चाहिए जब अर्हक आस्ति के उसके आशयित उपयोग या विक्रय के लिए तैयार करने के लिए आवश्यक सभी क्रियाकलाप सारभूत रूप से पूरे हो गए हों।

20. भौतिक निर्माण या उत्पादन के पूरे हो जाने पर सामान्यतः एक आस्ति आशयित प्रयोग या विक्रय के लिए तैयार होती है भले ही नैत्यक प्रशासनिक कार्य अभी भी जारी हों। यदि मामूली परिवर्तन जैसे उपयोगकर्ता के निर्देशानुसार आस्ति की सजावट, यही सब कुछ है जो बाकी है, यह संकेत देता है कि सभी क्रियाकलाप सारभूत रूप से पूरे हो गए है।

21. जब अर्हक आस्ति का निर्माण भागों में पूरा किया जाता है और एक पूरा भाग प्रयोग करने योग्य है जब कि दूसरे भागों का निर्माण जारी रहता है, तो उस भाग की लागतों का पूंजीकरण बंद कर देना चाहिए जब उस भाग के उपयोग करने अथवा विक्रय के लिए सभी संबंधित अनिवार्य क्रियाकलाप सारभूत रूप से पूरे कर लिए गए हों।

22. एक व्यवसायिक पार्क जिसमें अनेक भवन हैं तथा प्रत्येक को व्यक्तिगत रूप से उपयोग किया जा सकता है, ऐसी अर्हक आस्ति का उदाहरण है जिसके लिए प्रत्येक भाग उपयोग करने योग्य है जबकि अन्य भागों में निर्माण कार्य जारी रहता है। ऐसी अर्हक आस्ति जिसके किसी एक भाग को उपयोग करने से पहले उसका पूरा होना आवश्यक है का उदाहरण एक औद्योगिक संयंत्र है जिसमें अनेक प्रक्रियाएँ अंतर्वलित होती हैं जिसको संयंत्र के विभिन्न भागों में क्रमबद्ध रूप से उसी स्थल पर चलाया जाता है, जैसे कि स्टील मिल।

प्रकटन

23. वित्तीय विवरणों में निम्नलिखित प्रकट करना चाहिये:

(क) उधार लागतों के लिए अपनाई गई लेखा नीति; और

(ख) उधार लागतों की रकम जो अवधि के दौरान पूंजीकृत की गई है।

दृष्टांत

टिप्पण: यह दृष्टांत लेखा मानक का भाग नहीं है। इसका प्रयोजन मानक के पैरा 4(ङ) के अर्थ को स्पष्ट करने में सहायता करना है।

तथ्य:

1 अप्रैल 20×3 को XYZ लिमिटेड ने विशिष्ट परियोजना के लिए 5 प्रतिशत की ब्याज दर से वार्षिक भुगतान पर 10,000 यू एस डी का उधार लिया। 1 अप्रैल 20×3 को मुद्राओं की विनिमय दर 45 रु. प्रति यू एस डी थी। 31 मार्च, 20×4 को विनिमय दर 48 रु. प्रति यू एस डी है। 1 अप्रैल 20×3 को तत्संबंधी रकम का उधार स्थानीय मुद्रा में 11 प्रतिशत प्रति वर्ष ब्याज दर पर लिया जा सकता था।

पैरा 16 के पैरा 4(ङ) के प्रयोजनों के लिए उधार लागतों की रकम के अवधारण के लिए निम्नलिखित संगणना की जाएगीः

(i) अवधि के लिए ब्याज = यू एस डी 10,000 × 5% × 48 रु. यू एस डी 24,000 रु.

(ii) मूलधन रकम के प्रति दायित्व में वृद्धि = यू एस डी 10,000 × (48-45) = 30,000 रु.

(iii) यदि उधार भारतीय मुद्रा में लिया जाता तो परिणामतः ब्याज होता = यू एस डी 10,000 × 45 × 11% = 49,500 रु.

(iv) स्थानीय मुद्रा उधार तथा विदेशी मुद्रा उधार पर ब्याज में अन्तर = 49,500-24,000 = 25,500 रुपये

इसलिए, मूलधन के प्रति 30,000 रु. की रकम के दायित्व की वृद्धि में से 25,500 रु. को उधार लागत माना जाएगा। कुल उधार लागत 49,500 रु. होगी जो विदेशी मुद्रा उधार पर 24,000 रु. का ब्याज [लेखामानक 16 के अनुच्छेद 4(क) के अन्तर्गत] तथा स्थानीय मुद्रा उधार पर ब्याज तथा विदेशी मुद्रा उधार पर ब्याज के अन्तर की सीमा तक के 25,500 रु. के विनिमय अन्तरों का योग है। अतः 49,500 रु. को लेखा मानक 16 के अन्तर्गत उधार लागत माना जाएगा तथा शेष 4,500 रु. को लेखामानक 11, *विदेशी मुद्रा विनिमय दरों में परिवर्तनों के प्रभाव* के अन्तर्गत विनिमय अन्तर माना जायेगा।

उपर्युक्त उदाहरण में, स्थानीय मुद्रा उधार पर यदि ब्याज की दर 11 प्रतिशत की बजाय 13 प्रतिशत मान ली जाये तो 30,000 रु. के सम्पूर्ण विनिमय अन्तर की रकम को उधार लागत मान लिया जाएगा क्योंकि उस मामले में स्थानीय मुद्रा उधार पर ब्याज तथा विदेशी मुद्रा उधार पर ब्याज [जो कि, 34,500 रु. (58,500 रु.- 24,000 रु.)] 30,000 रु. के विनिमय अन्तर से अधिक है। अतः इस मामले में, कुल उधार लागत 54,000 रु. होगी (24,000 रु.+30,000 रु.) जिसको लेखामानक 16 के अन्तर्गत लेखाबद्ध किया जायेगा तथा लेखामानक 11, *विदेशी विनिमय मुद्रा दरों में परिवर्तनों के प्रभाव* के अन्तर्गत लेखाबद्ध करने के लिए कोई विनिमय में अन्तर नहीं होगा।

लेखा मानक 17

खण्ड रिपोर्टिंग

*(इस लेखा मानक में कुछ **मोटे-तिरछे** टाइप और कुछ सीधे टाइप में व्यवस्थित पैरा सम्मिलित है, जिनका समान प्राधिकार है। मोटे तिरछे टाइप में दिये गए पैरा मुख्य सिद्धांत उपदर्शित करते हैं। इस लेखा मानक को अधिसूचना के प्रति उपाबंध के भाग क में अतंर्विष्ट साधारण अनुदेशों के संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिये।)*

यह लेखा मानक लघु और मध्यम आकार की कम्पनियों, जो कि अधिसूचना में परिभाषित हैं, के लिए आज्ञापक नहीं है। तथापि ऐसी कम्पनियाँ मानक का अनुपालन करने के लिए प्रोत्साहित की जाती हैं।

उद्देश्य

इस मानक का उद्देश्य, उद्यम द्वारा उत्पादित भिन्न प्रकार के उत्पादों और सेवाओं के बारे में और उन विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के बारे में जिसमें यह कार्य करता है, वित्तीय जानकारी की रिपोर्टिंग के लिए सिद्धांत स्थापित करना है। ऐसी जानकारी वित्तीय विवरणों के उपयोक्ताओं को निम्नलिखित में मदद करती है:

(क) उद्यम की निष्पादनता को बेहतर रूप से समझने में ;

(ख) उद्यम के जोखिमों और प्रतिफलों को बेहतर रूप से आँकने में ; और

(ग) पूर्ण रूप से उद्यम के बारे में अधिक जानकारी के साथ निर्णयों के लेने में।

कई उद्यम उत्पादों और सेवाओं के ऐसे समूह प्रदान करते हैं या ऐसे भौगोलिक क्षेत्रों में कार्य करते हैं जो भिन्न लाभप्रदता की दरों, वृद्धि हेतु अवसरों, भावी संभावनाओं और जोखिमों के आधीन हैं। एक उद्यम के भिन्न प्रकार के उत्पादों और सेवाओं और भिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में इसके प्रचालनों के बारे में जानकारी`- अकसर खंड जानकारी कहलाती है - यह विविध या बहु-स्थितिगत उद्यम के जोखिमों और प्रतिफलों को आँकने के लिए उपयुक्त है, लेकिन यह संकलित आँकड़ों से निर्धारण योग्य नहीं हो सकती है। इसीलिए, खंड जानकारी की रिपोर्टिंग, वित्तीय विवरणों के उपयोक्ताओं की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विस्तृत रूप से आवश्यक मानी जाती है।

कार्यक्षेत्र

1. यह मानक सामान्य प्रयोजन के वित्तीय विवरणों को प्रस्तुत करने में लागू किया जाना चाहिए।

2. इस मानक की अपेक्षाएं समेकित वित्तीय विवरणों की स्थिति में भी लागू होती हैं।

3. एक उद्यम को इस मानक की अपेक्षाओं का चयनित रूप से नहीं बल्कि पूर्णतः पालन करना चाहिए।

4. यदि एकल वित्तीय रिपोर्ट में समेकित वित्तीय विवरण और मूल उद्यम के पृथक वित्तीय विवरण दोनों ही सम्मिलित होते हैं, तो खंड जानकारी केवल समेकित वित्तीय विवरणों के आधार पर प्रस्तुत की जानी चाहिए। समेकित वित्तीय विवरणों में खंड जानकारी की रिपोर्टिंग के संदर्भ में, किसी वित्तीय विवरण की मदों के प्रति इस मानक में संदर्भों को समेकित वित्तीय विवरणों में प्रकट हो रही उपयुक्त मद के अर्थों में लिया जाना चाहिए।

परिभाषाएँ

5. इस मानक में निम्नलिखित शब्द विनिर्दिष्ट अर्थों में प्रयुक्त हुए हैं :

5.1 <u>कारबारी खंड</u> एक उद्यम का पृथक्कनीय घट है, जो व्यक्तिगत उत्पाद या सेवा या फिर सम्बंधित उत्पादों या सेवाओं के एक समूह को प्रदान करने में लगा है और जो उन जोखिमों और प्रतिफलों के आधीन है जो अन्य कारबारी खंडों के जोखिमों और प्रतिफलों से भिन्न हैं। यह निर्धारित करने के लिए कि उत्पाद और सेवाएँ सम्बंधित हैं या नहीं निम्नलिखित कारकों पर ध्यान देना चाहिए:

(क) उत्पादों या सेवाओं की प्रकृति ;

(ख) उत्पादन प्रक्रियाओं की प्रकृति ;

(ग) उत्पादों या सेवाओं हेतु ग्राहकों का प्रकार या वर्ग ;

(घ) उत्पादों के वितरण या सेवाओं को प्रदान करने के लिए प्रयुक्त पद्धतियाँ ; और

(ङ) यदि लागू हो, तो विनियामक वातावरण की प्रकृति, उदाहरण के लिए, बैंककारी, बीमा या सार्वजनिक उपयोगिताएं।

5.2 <u>भौगोलिक खंड</u> एक उद्यम का पृथक्कनीय घटक है, जो एक विशिष्ट वातावरण में उत्पादों या सवाओं को प्रदान करने में लगा है और जो उन जोखिमों और प्रतिफलों के आधीन है जो आर्थिक वातावरण में प्रचालित अन्य घटकों से भिन्न हैं। भौगोलिक खंडों को पहचानने में जिन कारकों पर ध्यान दिया जाना चाहिए, उनमें सम्मिलित हैः

(क) आर्थिक और राजनैतिक दशाओं की समानता;

(ख) विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में प्रचालनों के बीच सम्बंध;

(ग) प्रचालनों की सन्निकटता;

(घ) विशिष्ट क्षेत्र में प्रचालनों से सम्बंधित विशेष जोखिम;

(ङ) विनिमय नियंत्रण विनियमन; और

(च) अंतर्निहित मुद्रा जोखिम।

5.3 <u>रिपोर्ट योग्य खंड</u> पूर्वोल्लिखित परिभाषाओं के आधार पर पहचाना गया वह कारबारी खंड या भौगोलिक खंड है जिसके लिए इस मानक द्वारा खंड जानकारी को प्रकट करना अपेक्षित है।

5.4 <u>उद्यम राजस्व</u> बाहरी ग्राहकों के प्रति बिक्रियों से प्राप्त राजस्व है जिसे कि लाभ और हानि के विवरण में रिपोर्ट किया गया है।

5.5 <u>खंड राजस्व</u> निम्नलिखित का योग है:

(i) *उद्यम राजस्व का वह भाग, जो खंड के प्रति प्रत्यक्षतः माना जा सकता है;*

(ii) *उद्यम राजस्व का वह उपयुक्त भाग जिसे युक्तियुक्त आधार पर एक खंड के प्रति आबंटित किया जा सकता है; और*

(iii) *उद्यम के अन्य खंडों के साथ संव्यवहारों से प्राप्त राजस्व।*

खंड राजस्व में निम्नलिखित सम्मिलित नहीं होते हैं:

(क) *असाधारण मदें जो कि लेखा मानक 5, 'अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि, पूर्वावधि मदें और लेखा नीतियों में परिवर्तन' में परिभाषित हैं;*

(ख) *अन्य खंडों के प्रति अग्रिमों या उधार पर अर्जित ब्याज समेत, ब्याज या लाभांश आय जब तक कि खंड के प्रचालन प्राथमिक रूप से वित्तीय प्रकृति के न हो; और*

(ग) *विनिधानों के विक्रय या उधार के निर्वापन पर लाभ, जब तक कि खंड के प्रचालन प्राथमिक रूप से वित्तीय प्रकृति के न हो।*

5.6 <u>खंड व्यय</u> निम्नलिखित का योग है:

(i) *एक खंड के प्रचालन क्रियाकलापों के परिणामस्वरूप हुआ व्यय जो खंड के प्रति प्रत्यक्षतः माना जा सकता है, और*

(ii) *उद्यम व्यय का वह सुसंगत भाग जिसे युक्तियुक्त आधार पर एक खंड के प्रति आबंटित किया जा सकता है,*

उद्यम के अन्य खंडों के साथ संव्यवहारों से सम्बंधित व्यय सहित।

खंड व्यय में निम्नलिखित सम्मिलित नहीं होते हैं:

(क) *असाधारण मदें, जो कि लेखा मानक 5, 'अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि, पूर्वावधि मदें और लेखा नीतियों में परिवर्तन' में परिभाषित हैं ;*

(ख) अन्य खण्डों से अग्रिमों या उधारों पर उपगत किए गए ब्याज सहित, ब्याज व्यय, जब तक कि खंड के प्रचालन प्राथमिक रूप से वित्तीय प्रकृति के न हो ;

स्पष्टीकरण:

ओवरड्राफ्ट और विशिष्ट खण्ड के प्रति पहचाने गये अन्य प्रचालन दायित्वों से सम्बंधित ब्याज व्यय तब तक खण्ड व्यय के भाग के रूप में सम्मिलित नहीं किए जाते जब तक कि खंड के प्रचालन प्राथमिक रूप से वित्तीय प्रकृति के न हों या जब तक कि ब्याज को सूचीबद्ध सामान की लागत के एक भाग रूप में सम्मिलित न किया जाए। यदि ब्याज को सूचीबद्ध सामान की लागत के एक भाग के रूप में सम्मिलित किया जाए, जहाँ लेखा मानक 2, सूचीबद्ध सामान का मूल्यांकन, और लेखा मानक 16, उधार लागतें, के अनुसार ऐसा करना आवश्यक हो और वह सूचीबद्ध सामान एक विशिष्ट खंड की खंड आस्तियों का भाग हो, तो ऐसे ब्याज को खंड व्यय माना जाता है। इस स्थिति में, ऐसे ब्याज की रकम और यह तथ्य कि खंड परिणाम, ऐसे ब्याज की रकम को ध्यान में रखने के बाद निकाला गया है, खंड परिणाम के प्रति टिप्पण के द्वारा प्रकट किया जाता है।

IndiaCode

(ग) विनिधानों के विक्रय पर हानियाँ या उधार के निर्वापन पर हानियाँ, जब तक कि खंड के प्रचालन प्राथमिक रूप से वित्तीय प्रकृति के न हों;

(घ) आयकर व्यय; और

(ङ) सामान्य प्रशासनिक व्यय, मुख्य-कार्यालय व्यय और अन्य व्यय जो उद्यम के स्तर पर उत्पन्न होते हैं और पूर्ण रूप से उद्यम से सम्बंधित होते हैं। तथापि कभी-कभी उद्यम के स्तर पर खंड की निमित्त लागतें उपगत की जाती हैं। ऐसी लागतें खंड व्यय का भाग होती हैं यदि वे खंड के प्रचालन क्रियाकलापों से सम्बंधित हों और यदि उन्हें एक युक्तियुक्त आधार पर खंड के प्रति प्रत्यक्षतः माना जा सके या आबंटित किया जा सके।

5.7 <u>खंड परिणाम</u> खंड राजस्व में खंड व्यय घटाकर प्राप्त होता है।

5.8 <u>खंड आस्तियाँ</u> वे प्रचालन आस्तियाँ हैं जो एक खंड द्वारा उसके प्रचालन क्रियाकलापों में नियोजित होती हैं और जो या तो खंड के प्रति प्रत्यक्षतः मानी जाती हैं या जिन्हें युक्तियुक्त आधार पर खंड के प्रति आबंटित किया जा सकता है।

यदि एक खंड के खंड परिणाम में ब्याज या लाभांश आय सम्मिलित होती है, तो इसकी खंड आस्तियों में सम्बंधित प्राप्त रकम, उधार, विनिधान या अन्य ब्याज या लाभांश उत्पन्न करने वाली आस्तियाँ सम्मिलित होती हैं।

खंड आस्तियाँ आयकर आस्तियों को सम्मिलित नहीं करती हैं।

खंड आस्तियाँ उन सम्बंधित भत्तों/उपबंधित रकमों को घटाने के बाद निर्धारित होती हैं जिन्हें उद्यम के तुलनपत्र में प्रत्यक्ष ऑफसेट के रूप में रिपोर्ट किया जाता है।

5.9 <u>खंड दायित्व</u> वह प्रचालन दायित्व हैं जो एक खंड के प्रचालन क्रियाकलापों से उत्पन्न होते हैं और जो या तो खंड के प्रति प्रत्यक्ष रूप से माने जाते हैं या युक्तियुक्त आधार पर खंड के प्रति आबंटित किए जा सकते हैं।

यदि एक खंड के खंड परिणाम में ब्याज व्यय सम्मिलित होता है, तो इसकी खंड दायित्वों में सम्बंधित ब्याज-वहन करने वाले दायित्व सम्मिलित होते हैं।

खंड दायित्वों में आयकर दायित्व सम्मिलित नहीं होते हैं।

5.10 <u>खंड लेखा नीतियाँ</u> उद्यम के वित्तीय विवरणों को तैयार करने और प्रस्तुत करने के लिए अपनाई गई लेखा नीतियों के साथ-साथ वह लेखा नीतियाँ भी हैं जो विशिष्ट रूप से खंड रिपोर्टिंग से सम्बंधित हैं।

6. कारबारी खंडों और भौगोलिक खंडों को पहचानने के लिए पैरा 5 में दिए गए कारक किसी विशिष्ट क्रम में सूचीबद्ध नहीं हैं।

7. एकल कारबारी खंड महत्वपूर्ण रूप से भिन्न-भिन्न जोखिमों और प्रतिफलों वाले उत्पादों और सेवाओं को सम्मिलित नहीं करता है। जबकि, कारबारी खडं की परिभाषा में सूचीबद्ध एक या कई कारकों के संबंध में असमानताएँ हो सकती हैं, फिर भी एकल कारबारी खंड में सम्मिलित उत्पादों और सेवाओं से अधिकतर कारकों के संबंध में समान होने की अपेक्षा की जाती है।

8. इसी प्रकार, एकल भौगोलिक खंड आर्थिक वातावरण में महत्पपूर्ण रूप से भिन्न-भिन्न जोखिमों और प्रतिफलों वाले प्रचालनों को सम्मिलित नहीं करता है। एक भौगोलिक खंड एक देश, दो या अधिक देशों का समूह या एक देश के भीतर एक क्षेत्र भी हो सकता है।

9. एक उद्यम के जोखिम और प्रतिफल, इसके प्रचालनों की भौगोलिक अवस्थिति (जहाँ इसके उत्पाद उत्पादित किए जाते हैं या जहाँ इसकी सेवाएँ प्रदान करने के क्रियाकलाप आधारित होते हैं) और इसके ग्राहकों की अवस्थिति (जहाँ इसके उत्पाद बेचे जाते हैं या सेवाएँ प्रदान की जाती हैं) दोनों से ही प्रभावित होते हैं। परिभाषा भौगोलिक खंड को निम्नलिखित में से किसी पर आधारित होने की अनुज्ञा देती है:

(क) उद्यम की उत्पादन या सेवा सुविधाओं और अन्य आस्तियों की अवस्थिति पर; या

(ख) ग्राहकों की अवस्थिति पर।

10. एक उद्यम की संगठनात्मक और आंतरिक रिपोर्टिंग संरचना आमतौर पर इस बात का साक्ष्य प्रदान करेगी कि क्या भौगोलिक जोखिमों का प्रबल स्रोत इसकी आस्तियों की अवस्थिति (इसके विक्रय का उद्गम) या इसके ग्राहकों की

अवस्थिति (इसके विक्रय का गंतव्य) से निकलता है। तद्नुसार, एक उद्यम यह निर्धारित करने के लिए अपनी संरचना की ओर देखता है कि इसके भौगोलिक खंडों को, इसकी आस्तियों की अवस्थिति पर या इसके ग्राहकों की अवस्थिति पर आधारित होना चाहिए।

11. कारबारी या भौगोलिक खंड की संरचना के अवधारण में निर्णय की कुछ मात्रा सम्मिलित होती है। ऐसा निर्णय लेने में, उद्यम प्रबंधन खंड द्वारा वित्तीय जानकारी के रिपोर्टिंग के प्रयोजन जैसा कि इस मानक में व्यक्त है और वित्तीय विवरणों की गुणात्मक विशिष्टताओं पर ध्यान देता है, जैसा कि भारतीय चार्टर्ड लेखाकार संस्थान द्वारा जारी वित्तीय विवरणों की तैयारी और प्रस्तुतिकरण हेतु फ्रेमवर्क में दिया गया है। गुणात्मक विशिष्टताओं में ऐसी वित्तीय जानकारी की प्रासंगिकता, विश्वसनीयता और समय के दौरान तुलनात्मकता सम्मिलित होती है जो एक उद्यम के उत्पादों और सेवाओं के भिन्न समूहों के बारे में और विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्रों में इसके प्रचालनों के बारे में रिपोर्ट की गई है, और पूर्ण रूप से उद्यम के जोखिमों और प्रतिफलों के आँकने के लिए उस जानकारी की उपयोगिता सम्मिलित होती है।

12. अधिकतर उद्यमों को किस प्रकार संगठित और प्रबंधित किया जाता है इसे जोखिमों के प्रबल स्रोत प्रभावित करते हैं। इसीलिए, उद्यम की संगठनात्मक संरचना और उसकी आतंरिक वित्तीय रिपोर्टिंग प्रणाली सामान्यतः उसके खंडों को पहचानने के लिए आधार है।

13. खंड राजस्व, खंड व्यय, खंड आस्तियों और खंड दायित्वों की परिभाषाओं में ऐसी मदों की रकमें सम्मिलित हैं जिन्हें खंड के प्रति प्रत्यक्षतः माना जा सकता हैं और ऐसी मदों की रकमें सम्मिलित है जिन्हें एक युक्तियुक्त आधार पर खंड को आबंटित किया जा सकता है। एक उद्यम उन मदों को पहचानने के लिए जिन्हें खंडों के प्रति प्रत्यक्ष रूप से माना जा सकता है या खंडों के प्रति आबंटित किया जा सकता है, अपनी आंतरिक वित्तीय रिपोर्टिंग प्रणाली के शुरूआती बिंदु के रूप में देखता है। इस प्रकार यहाँ एक धारणा है कि वह रकमें जो आंतरिक वित्तीय रिपोर्टिंग के प्रयोजन के लिए खंडों के साथ पहचानी गई हैं, रिपोर्टिंग योग्य खंडों के खंड राजस्व, खंड व्यय, खंड आस्तियों और खंड दायित्वों की माप के प्रयोजन हेतु खंडों के प्रति प्रत्यक्ष रूप से माने जाने योग्य या तर्कसंगत रूप से आबटंन योग्य हैं।

14. तथापि, कुछ मामलों में राजस्व, व्यय, आस्ति या दायित्व को आंतरिक वित्तीय रिपोर्टिंग प्रयोजनों के लिए, उद्यम प्रबंधन द्वारा समझे गए आधार पर खंडों के प्रति आबंटित किया जा सकता है किंतु यह आधार वित्तीय विवरणों के बाहरी उपयोक्ताओं के दृष्टिकोण में मनमाना समझा जा सकता है। ऐसा आबंटन इस मानक में खंड राजस्व, खंड व्यय, खंड आस्तियों और खंड दायित्वों की परिभाषाओं के अंतर्गत एक युक्तियुक्त आधार नहीं बनाएगा। इसके विपरीत, एक उद्यम आंतरिक वित्तीय रिपोर्टिंग के प्रयोजन के लिए राजस्व, व्यय, आस्ति या दायित्व की कुछ मदों को आबंटित न करने का चयन कर सकता है, यद्यपि ऐसा करने के लिए युक्तियुक्त आधार विद्यमान होता है। ऐसी मद, इस मानक में खंड राजस्व, खंड व्यय, खंड आस्तियों और खंड दायित्वों की परिभाषाओं के अनुसार आबंटित होती है।

15. खंड आस्तियों के उदाहरणों में वे चालू आस्तियाँ जो खंड प्रचालन क्रियाकलापों में प्रयुक्त होती है और मूर्त तथा अमूर्त आस्तियाँ सम्मिलित होती हैं। यदि अवक्षयण या क्रमिक अपाकरण की कोई विशिष्ट मद खंड व्यय में सम्मिलित होती है, तो सम्बंधित आस्ति भी खंड आस्तियों में सम्मिलित होती है। खंड आस्तियों में सामान्य उद्यम या मुख्य कार्यालय के प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त आस्तियाँ सम्मिलित नहीं होती हैं। यदि आबंटन हेतु युक्तियुक्त आधार उपस्थित होता है, तो खंड आस्तियों में दो या अधिक खंडों द्वारा बाँटी गई प्रचालन आस्तियाँ सम्मिलित होती हैं। खंड आस्तियों में वह गुडविल सम्मिलित होती है जो खंड के प्रति प्रत्यक्ष रूप से मानी जा सकती है या जिसे खंड के प्रति एक युक्तियुक्त आधार पर आबंटित किया जा सकता है और खंड व्यय में गुडविल से सम्बंधित क्रमिक अपाकरण सम्मिलित होता है। यदि खंड आस्तियाँ अर्जन के पश्चात् पुनर्मूल्यांकित की जाती हैं; तो खंड आस्तियों का माप वह पुनर्मूल्यांकन प्रतिबिम्बित करता है।

16. खंड दायित्व के उदाहरणों में कारबारी और अन्य देय रकमें प्रोद्भूत दायित्वों, ग्राहक अग्रिम, उत्पादन वांरटी की उपबंधित रकमों और वस्तुओं तथा सेवाओं के उपबंध से सम्बंधित अन्य दावे सम्मिलित होते हैं। खंड दायित्वों में ऐसे उधार और अन्य दायित्व सम्मिलित नहीं होते हैं जो प्रचालन के प्रयोजनों की बजाए वित्त प्रबंध हेतु उपगत किए जाते हैं। उन खंडों के दायित्वों में, जिनके प्रचालन प्राथमिक रूप से वित्तीय प्रकृति के नहीं होते हैं, उधार और समान दायित्व सम्मिलित नहीं होते हैं क्योंकि खंड परिणाम एक प्रचालन लाभ-हानि को प्रस्तुत करता है न कि वित्तपोषण से शुद्ध परिणाम। इसके अतिरिक्त, चूँकि उधार अकसर मुख्य कार्यालय स्तर पर सम्पूर्ण उद्यम के लिए जारी किया जाता है, इसीलिए, आमतौर पर ब्याज को वहन कर रहे दायित्वों को खंडों के प्रति प्रत्यक्ष रूप से मानना या युक्तियुक्त रूप से आंबटित करना संभव नहीं होता है।

17. खंड राजस्व, खंड व्यय, खंड आस्तियाँ और खंड दायित्व, उद्यम के वित्तीय विवरणों की तैयारी की प्रक्रिया के भाग के रूप में आंतर-उद्यम अतिशेषों और आंतर-उद्यम संव्यवहारों के निष्कासन से पहले अवधारित की जाती हैं, सिवाए इसके कि ऐसे आंतर-उद्यम शेष और संव्यवहार एक ही खंड के अंदर हों।

18. जबकि संपूर्ण रूप से उद्यम के वित्तीय विवरणों को तैयार करने और प्रस्तुत करने में प्रयुक्त लेखा नीतियाँ मूलभूत खंड लेखा नीतियाँ भी हैं, फिर भी खंड लेखा नीतियों में इसके अतिरिक्त वह नीतियाँ भी सम्मिलित होती हैं जो विनिर्दिष्ट खंड रिपोर्टिंग से सम्बंधित हैं, जैसे कि खंडों की पहचान, अंतर खंड अंतरण के मूल्यांकन की पद्धति और खंडों के प्रति राजस्वों और व्ययों के आबंटन हेतु आधार।

रिपोर्टिंग योग्य खंडों को पहचानना

प्राथमिक और द्वितीयक खंड रिपोर्टिंग प्रारूप

19. एक उद्यम के जोखिमों और प्रतिफलों के प्रबल प्रकृति द्वारा यह निर्धारित करना चाहिए कि इसका प्राथमिक खंड रिपोर्टिंग प्रारूप, कारबारी खंड होगा या भौगोलिक खंड होगा। यदि एक उद्यम के जोखिम और प्रतिफल मुख्य रूप से उसके द्वारा उत्पन्न किए जा रहे उत्पादों और सेवाओं में अंतरों द्वारा प्रभावित होते हैं, तो भौगोलिक रूप से रिपोर्ट की गई द्वितीयक जानकारी के साथ, खंड जानकारी की रिपोर्टिंग के लिए इसके प्राथमिक प्रारूप को कारबारी खंड होना चाहिए। इसी प्रकार, यदि उद्यम के जोखिम और प्रतिफल मुख्य रूप से इस तथ्य द्वारा प्रभावित होते हैं कि यह भिन्न देशों या अन्य भौगोलिक क्षेत्रों में प्रचालित होते हैं, तो सम्बंधित उत्पादों और सेवाओं के समूहों के लिए रिपोर्टेड द्वितीयक जानकारी के साथ, खंड जानकारी की रिपोर्टिंग के लिए इसका प्राथमिक प्रारूप भौगोलिक खंड होना चाहिए।

20. एक उद्यम का आंतरिक संगठन और प्रबंधन संरचना और निदेशक बोर्ड और मुख्य कार्यकारी अधिकारी के प्रति उद्यम की आंतरिक वित्तीय रिपोर्टिंग प्रणाली को, आमतौर पर उद्यम के जोखिमों और प्राप्त हो रहे प्रतिफल की भिन्न दरों, जोखिमों के प्रबल और प्रकृति को पहचानने के लिए आधार होना चाहिए और, इसीलिए, निम्नलिखित उप-पैरा (क) और उप-पैरा (ख) को छोड़कर उसे इस बात के अवधारण के लिए आधार होना चाहिए कि कौन सा रिपोर्टिंग प्रारूप प्राथमिक है और कौन सा द्वितीयक:

(क) यदि एक उद्यम के जोखिम और प्रतिफल, इसके द्वारा उत्पादित उत्पादों और सेवाओं में अंतरों और उन भौगोलिक क्षेत्रों में अंतरों, जिसमें यह प्रचालन करता है, दोनों के ही द्वारा प्रबल रूप से प्रभावित होते हैं, जैसे कि कम्पनी के प्रबंधन के लिए और निदेशक बोर्ड और मुख्य कार्यकारी अधिकारी के प्रति आंतरिक रूप से रिपोर्टिंग के लिए 'मैट्रिक्स व्यवस्था' द्वारा साक्ष्यित है, तो उद्यम को कारबारी खंडों का इसके प्राथमिक खंड रिपोर्टिंग प्रारूप के रूप में और भौगोलिक खंडों को इसके द्वितीयक रिपोर्टिंग प्रारूप के रूप में प्रयोग करना चाहिए; तथा

(ख) यदि एक उद्यम की आंतरिक संगठन और प्रबंधन संरचना और निदेशक बोर्ड और प्रमुख कार्यकारी अधिकारी के प्रति आंतरिक वित्तीय रिपोर्टिंग की इसकी प्रणाली न तो व्यक्तिगत उत्पादों या सेवाओं या सम्बंधित उत्पादों/सेवाओं के समूहों पर आधारित होती और न ही भौगोलिक क्षेत्रों पर आधारित होती हैं तो उद्यम के निदेशकों और प्रबंधन को अवधारित करना चाहिए कि उद्यम के जोखिम और प्रतिफल अधिकतर, उन उत्पादों और सेवाओं से सम्बंधित होते हैं जिन्हें ये उत्पादित करते हैं या उन भौगोलिक क्षेत्रों से सम्बंधित होते हैं जिनमें ये प्रचालन करते हैं और उन्हें तद्नुसार कारबारी खंडों या भौगोलिक खंडों में से एक को उद्यम के प्राथमिक खंड रिपोर्टिंग प्रारूप के रूप में तथा अन्य को द्वितीयक रिपोर्टिंग प्रारूप के रूप में चुनना चाहिए।

21. अधिकतर उद्यमों के लिए जोखिमों और प्रतिफलों का प्रमुख स्रोत यह अवधारित करता है कि उद्यम किस प्रकार संगठित और प्रबंधित किया जाता है। एक उद्यम की संगठनात्मक और प्रबंध संरचना और इसकी आंतरिक वित्तीय रिपोर्टिंग प्रणाली सामान्यतः इसके खण्ड रिपोर्टिंग के प्रयोजन हेतु उद्यम के जोखिमों और प्रतिफलों के प्रमुख स्रोत का सर्वोत्तम साक्ष्य प्रदान करती है। इसीलिए, दुलर्भ परिस्थितियों के सिवाय, एक उद्यम ठीक उसी समान आधार पर इसके वित्तीय विवरणों में खंड जानकारी को रिपोर्ट करेगा जिस आधार पर यह उच्च प्रबंध को आंतरिक तौर पर रिपोर्ट करता है। जोखिमों और प्रतिफलों का इसका प्रमुख स्रोत इसका प्राथमिक खंड रिपोर्टिंग प्रारूप बन जाता है। जोखिमों और प्रतिफलों का इसका द्वितीयक स्रोत इसका द्वितीयक खंड रिपोर्टिंग प्रारूप बन जाता है।

22. यदि एक उद्यम के जोखिम और प्रतिफल, इसके द्वारा उत्पन्न उत्पादों और सेवाओं में अंतरों और उस भौगोलिक क्षेत्रों में अंतरों जिनमें यह प्रचालन करता दोनों ही के द्वारा, प्रबल रूप से प्रभावित होते हैं, तो एक "मैट्रिक्स प्रस्तुतिकरण" प्रत्येक आधार पर पूर्ण खंड प्रकटनों के साथ प्राथमिक खंड रिपोर्टिंग प्रारूपों के रूप में कारबारी और

भौगोलिक दोनों ही खंड-अकसर एक उपयोगी जानकारी प्रदान करेंगे। इस मानक द्वारा एक 'मैट्रिक्स प्रस्तुतिकरण' अपेक्षित नहीं है, किंतु यह इसे प्रतिषिद्ध भीनही करता है।

23. कुछ मामलों में, उद्यम का संगठन और आंतरिक रिपोर्टिंग उसके द्वारा उत्पादित उत्पादों और सेवाओं के प्रकारों और उन भौगोलिक क्षेत्रों जिसमें वह कार्यरत है, दोनों से असम्बद्ध रेखाओं में विकसित हो सकता है। ऐसे मामलों में, आतंरिक रूप से रिपोर्टेड खंड के आँकड़े इस मानक का उद्देश्य पूरा नहीं करेगें। तद्नुसार, पैरा 20 (ख) उद्यम के निदेशकों और प्रबंध से यह अवधारित करने की अपेक्षा करता है कि उद्यम के जोखिम और प्रतिफल उत्पाद/सेवा चालित अधिक हैं या भौगोलिक रूप से चालित हैं और तद्नुसार, खंड रिपोर्टिंग के प्राथमिक आधार के रूप में कारबारी खंडों या भौगोलिक खंडों को चुने। इसका उद्देश्य, अन्य उद्यमों के साथ तुलनात्मकता की युक्तियुक्त दर प्राप्त करना, परिणामिक जानकारी की ग्राह्यता की वृद्धि करना और उत्पाद/सेवा सम्बन्धित और भौगोलिक रूप से सम्बंधित जोखिमों और प्रतिफलों के बारे में जानकारी हेतु विनिधानकर्ताओं, लेनदारों और अन्यों की आवश्यकताओं को पूरा करना है।

कारबारी और भौगोलिक खंड

24. बाहरी रिपोर्टिंग प्रयोजनों के लिए एक उद्यम के कारबारी और भौगोलिक खंड वह संगठनात्मक इकाई होनी चाहिए, जिनके लिए इकाई के निष्पादन के मूल्यांकन हेतु और संसाधनों के भावी आबंटनों के बारे में निर्णय लेने के लिए जानकारी निदेशक बोर्ड और मुख्य कार्यकारी अधिकारी को रिपोर्ट की जाती है सिवाय पैरा 25 में जो दिया गया है उसके अतिरिक्त।

25. यदि एक उद्यम का आंतरिक संगठनात्मक और प्रबंध संरचना और निदेशक बोर्ड और मुख्य-कार्यकारी अधिकारी के प्रति आंतरिक वित्तीय रिपोर्टिंग की प्रणाली न तो व्यक्तिगत उत्पादों या सेवाओं या सम्बंधित उत्पादों/सेवाओं के समूहों पर आधारित होती है और न ही भौगोलिक क्षेत्रों पर आधारित होती है, तो पैरा 20(ख) यह अपेक्षा करता है, कि उद्यम के निदेशकों और प्रबंध को अपने इस आंकलन के आधार पर, कि कौन सा खंड उद्यमों के जोखिमों और प्रतिफलों का प्राथमिक स्रोत प्रतिबिम्बित करता है, उद्यम के प्राथमिक खंड रिपोर्टिंग प्रारूप के रूप में या तो कारबारी खंडों या भौगोलिक खंडों को चुनना चाहिए और अन्य को द्वितीयक रिपोर्टिंग प्रारूप के रूप में। उस मामले में उद्यम के निदेशकों और प्रबंध को बाहरी रिपोर्टिंग के लिए इसके कारबारी खंडों और भौगोलिक खंडों को, निम्नलिखित के साथ तालमेल रखते हुए, निदेशक बोर्ड और मुख्य कार्यकारी अधिकारी के प्रति उसकी आंतरिक वित्तीय रिपोर्टिंग प्रणाली के आधार पर होने की बजाए, इस मानक के पैरा 5 में परिभाषाओं में घटकों के आधार पर अवधारित करना चाहिए, जो निम्नलिखित के अनुरूप होने चाहिएः

(क) ***यदि निदेशकों और प्रबंध के प्रति आंतरिक रूप से रिपोर्ट किए गए एक या अधिक खंड, पैरा 5 में परिभाषाओं में घटकों के आधार पर कारबारी खंड या भौगोलिक खंड हैं किंतु अन्य नही हैं, तो नीचे दिए गए उप-पैरा (ख) को केवल उन आंतरिक खंडों के प्रति लागू किया जाना चाहिए जो पैरा 5 में व्यक्त परिभाषाओं को पूरा नहीं करते (अर्थात्, एक आंतरिक रूप से रिपोर्ट किए गए खंड को, जो परिभाषा को पूरा करते है, और अधिक खंडित नहीं किया जाना चाहिए);***

(ख) ***निदेशकों और प्रबंध के प्रति आंतरिक रूप से रिपोर्ट किए गए उन खंडों के लिए, जो पैरा 5 में व्यक्त परिभाषाओं को पूरा नहीं करते, उद्यम के प्रबंध को आंतरिक प्रखंडन के उस अगले निचले स्तर की ओर देखना चाहिए जो जानकारी को उत्पाद और सेवा रेखाओं या भौगोलिक रेखाओं के साथ रिपोर्ट करते हैं, जो भी पैरा 5 में व्यक्त परिभाषाओं के अंतर्गत उपयुक्त हो, और***

(ग) ***यदि आंतरिक रूप से रिपोर्ट किया गया ऐसा निम्न-स्तर खंड, पैरा 5 में व्यक्त घटकों पर आधारित कारबारी खंड या भौगोलिक खंड की परिभाषा को पूरा करता हैं, तो रिपोर्टिंग योग्य खंडों को पहचानने के लिए पैरा 27 में व्यक्त मापदंड को उस खंड पर लागू करना चाहिए।***

26. इस मानक के अंतर्गत, अधिकतर उद्यम अपने कारबारी और भौगोलिक खंडों को उन संगठनात्मक इकाइयों के रूप में पहचानेंगे, जिसके लिए, प्रत्येक इकाई के निष्पादन के मूल्यांकन हेतु और संसाधनों के भावी आबंटनों के निर्णय लेने के लिए जानकारी निदेशक मंडल (विशेष रूप

से गैर-कार्यकारी निदेशक, यदि हों तो) और मुख्य कार्यकारी अधिकारी (वरिष्ठ प्रचालन निर्णय लेने वाला, जो कुछ स्थितियों में विभिन्न लोगों का एक समूह भी हो सकता है) के प्रति रिपोर्ट होती है। चाहे एक उद्यम को पैरा 25 लागू करना चाहिए क्योंकि इसके आतंरिक खंड उत्पाद/सेवा या भौगोलिक रेखाओं के साथ नहीं होते, तो भी इसे आंतरिक प्रखंडन का अगला निम्न स्तर देखना होगा, जो उत्पाद और सेवा रेखाओं या भौगोलिक रेखाओं के आधार पर जानकारी रिपोर्ट करते हैं न कि बाह्य रिपोर्टिंग के लिए सिर्फ खण्ड अलग से बनाए जाने चाहिए। बाह्य रिपोर्टिंग के लिए उद्यम के कारबारी और भौगोलिक खंडों को पहचानने के लिए एक उद्यम की संगठनात्मक और प्रबंध संरचना तथा इसकी आंतरिक वित्तीय रिपोर्टिंग प्रणाली की ओर देखने की यह व्यवस्था कभी-कभी 'प्रबंधन व्यवस्था' कही जाती है तथा ऐसे संगठनात्मक घटक जिनके लिए आतंरिक रूप से जानकारी रिपोर्ट होती है, कभी-कभी 'प्रचालन खंड' कहलाते हैं।

रिपोर्टिंग योग्य खंड

27. एक कारबारी खंड या भौगोलिक खंड को तभी एक रिपोर्टिंग योग्य खंड के रूप में पहचाना जाना चाहिए यदि:

(क) *बाहरी ग्राहकों के प्रति बिक्रियों से और अन्य खंडों के साथ संव्यवहारों से प्राप्त इसका राजस्व, सभी बाहरी और आतंरिक खंडों से प्राप्त कुल राजस्व का 10 प्रतिशत या अधिक हो ; या*

(ख) *इसका खंड परिणाम चाहे लाभ हो या हानि, निम्नलिखित का 10 प्रतिशत या अधिक हों-*

(i) *लाभ में सभी खंडों का संयुक्त परिणाम, या*

(ii) *हानि में सभी खंडों का संयुक्त परिणाम,*

जो भी पूर्ण मात्रा में बड़ा हो ; या

(ग) *इसकी खंड आस्तियाँ सभी खंडों की कुल आस्तियों का 10 प्रतिशत या अधिक हो।*

28. एक ऐसे कारबारी खंड या भौगोलिक खंड को जो पैरा 27 के अनुसार रिपोर्टिंग योग्य खंड नहीं है, उद्यम के प्रबंध के विवेक पर इसके आकार के बावजूद, एक रिपोर्टिंग योग्य खंड की तरह नामनिर्दिष्ट किया जा सकता है। यदि उस खंड को एक रिपोर्टिंग योग्य खंड के रूप में नामनिर्दिष्ट नहीं किया गया है, तो इसे अनाबंटित समाधान योग्य मद के रूप में सम्मिलित किया जाना चाहिए।

29. यदि रिपोर्टिंग योग्य खंडों के प्रति माने गये कुल बाहरी राजस्व में उद्यम के कुल राजस्व का 75 प्रतिशत से भी कम भाग सम्मिलित होता है, तो अतिरिक्त खंडों को पैरा 27 में 10 प्रतिशत की सीमा पूरी न करने पर भी रिपोर्टिंग योग्य खंडों की तरह तब तक पहचाना जाना चाहिए, जब तक कि, उद्यम के कुल राजस्व का कम से कम 75 प्रतिशत, रिपोर्टिंग योग्य खंडों में सम्मिलित नहीं कर लिया जाता है।

30. इस मानक में 10 प्रतिशत की सीमाओं का प्रयोजन, रिपोर्टिंग योग्य, कारबारी और भौगोलिक खंडों को पहचानने के अतिरिक्त वित्तीय रिपोर्टिंग के किसी भी पक्ष के लिए सारवानता अवधारित करने हेतु एक मार्गदर्शक होना नहीं है। इस मानक से संलग्न दृष्टांत II पैरा 27-29 के अनुसार रिपोर्टिंग योग्य खंडों के अवधारण का एक दृष्टांत प्रस्तुत करता है।

31. 10 प्रतिशत की सुसंगत सीमाओं को पूरा करने के कारण, तत्कालिक पूर्ववर्ती अवधि में एक रिपोर्टिंग योग्य खंड के रूप में पहचाने गए खंड को, इस बात की परवाह न करते हुए कि इसका राजस्व, परिणाम और आस्तियाँ अब 10 प्रतिशत सीमाओं को पूरा नहीं करते, चालू अवधि के लिए रिपोर्टिंग योग्य खंड बने रहना चाहिए।

32. यदि एक खंड चालू अवधि में रिपोर्टिंग योग्य खंड के रूप में पहचाना जाता है क्योंकि यह उपयुक्त 10 प्रतिशत की सीमाओं को पूरा करता है, तो पूर्ववर्ती अवधि के उस खंड आंकड़े को, जो तुलनात्मक के लिए प्रस्तुत किया गया है, पूर्ववर्ती अवधि में खंड द्वारा 10 प्रतिशत की सीमा पूरी न करने पर भी, एक पृथक खंड के रूप में नवीनतम रिपोर्टिंग योग्य खंड को प्रतिबिम्बित करने के लिए, पुनः व्यक्त किया जाना चाहिए, जब तक कि ऐसा करना अव्यवहारिक न हो।

खंड लेखा नीतियाँ

33. खंड जानकारी, पूर्ण रूप से उद्यम के वित्तीय विवरणों को तैयार करने और प्रस्तुत करने के लिए अपनाई गई लेखा नीतियों के साथ सहमति में तैयार की जानी चाहिए।

34. यह धारणा है कि पूर्ण रूप से उद्यम के वित्तीय विवरणों को बनाने में प्रयोग के लिए, उद्यम के निदेशकों और प्रबंध द्वारा चुनी गई लेखा नीतियाँ वह लेखा नीतियाँ हैं जिन्हें निदेशक और प्रबंध, बाहरी रिपोर्टिंग के लिए सबसे उपयुक्त समझते हैं। चूँकि खंड सूचना का प्रयोजन वित्तीय विवरणों के उपयोगकर्ताओं को सम्पूर्ण उद्यम के बारे में अधिक सूचित निर्णय लेने और उसके वित्तीय विवरणों को ठीक से समझने में सहायता करना है, इसलिए यह मानक, खंड जानकारी की तैयारी में, पूर्ण रूप से उद्यम के वित्तीय विवरणों की तैयारी और प्रस्तुति हेतु अपनाई गई लेखा नीतियों के प्रयोग की अपेक्षा करता है। यद्यपि, इसका अर्थ यह नही हैं कि उद्यम की लेखा नीतियाँ रिपोर्टिंग योग्य खंडों पर इस प्रकार लागू होंगी जैसे खंड पृथक-पृथक एकल रिपोर्टिंग इकाइयाँ हो। उद्यम के स्तर पर विशिष्ट लेखा नीति को लागू करने में की गई एक विस्तृत गणना खंडों के प्रति तब आबंटित की जा सकती है यदि ऐसा करने के लिए एक युक्तियुक्त आधार हो। उदाहरण के लिए, पेंशन गणनाएँ, अकसर संपूर्ण उद्यम के लिए की जाती हैं, लेकिन उद्यम की संख्याएँ खंडों के लिए वेतन और जनसंख्यिकी आँकड़ों के आधार पर खंडों के प्रति आंबटित की जा सकती हैं।

35. यह मानक उस अतिरिक्त खंड जानकारी के प्रकटन को प्रतिबंधित नहीं करता जो उद्यम के वित्तीय विवरणों के लिए अपनाई गई लेखा नीतियों के अतिरिक्त किसी लेखा नीति के आधार पर तैयार की जाती है, बशर्ते कि (क) जानकारी, खंड के प्रति संसाधनों के आबंटन बारे में निर्णय लेने और इसके निष्पादन के आंकलन के लिए निदेशक बोर्ड और मुख्य

कार्यकारी अधिकारी के प्रति आंतरिक रूप से रिपोर्ट की जाती है और (ख) इस अतिरिक्त जानकारी के लिए माप का आधार स्पष्ट रूप से वर्णित है।

36. उन आस्तियों और दायित्वों को जो संयुक्त रूप से दो या अधिक खंडों से सम्बंधित हैं, केवल तभी खंडों के प्रति आबंटित किया जाना चाहिए, जब उनके सम्बंधित राजस्व और व्यय भी उन खंडों के प्रति आबंटित किए जाएं।

37. वह तरीका जिसमें आस्ति, दायित्व, राजस्व और व्यय मदें खंडों के प्रति आबंटित की जाती हैं ऐसे घटकों पर निर्भर करता है जैसे कि उन मदों की प्रकृति, खंड द्वारा किये गये क्रियाकलापों और उस खंड की सापेक्ष स्वायत्तता। आबंटन के उस एकल आधार का विस्तार पूर्वक वर्णन करना संभव नहीं है या उचित नही है जिसे सभी उद्यमों द्वारा अपनाया जाना चाहिए; न ही उद्यम की उन आस्ति, दायित्व, राजस्व और व्यय मदों का जोरपूर्वक आबंटन करना उचित है, जो संयुक्त रूप से दो या अधिक खंडों से सम्बंधित हैं, यदि उन आबंटनों को करने के लिए एकमात्र आधार मनमाना है। साथ ही, खंड राजस्व, खंड व्यय, खंड आस्तियों और खंड दायित्वों की परिभाषाएँ परस्पर सम्बंधित हैं और परिणामिक आबंटन अनवरत होने चाहिए। इसीलिए, संयुक्त रूप से प्रयुक्त आस्तियाँ और दायित्व खंड के प्रति केवल तभी आबंटित होती हैं यदि, उनके सम्बंधित राजस्व और व्यय भी उन खंडों के प्रति आबंटित होते हैं। उदाहरण के लिए, एक आस्ति केवल तभी खंड आस्तियों में सम्मिलित की जाती है, जब सम्बंधित अवक्षयण या क्रमिक अपाकरण को खंड व्यय में सम्मिलित किया जाता है।

प्रकटन

38. पैरा 39-46, एक उद्यम के प्राथमिक खंड रिपोर्टिंग प्रारूप हेतु रिपोर्टिंग योग्य खंडों के लिए अपेक्षित प्रकटनों का वर्णन करते हैं। पैरा 47-51, एक उद्यम के द्वितीयक रिपोर्टिंग प्रारूप के लिए अपेक्षित प्रकटनों की पहचान करते हैं। उद्यमों को प्रत्येक रिपोर्टिंग योग्य द्वितीयक खंड के लिए पैरा 39-46 में पहचाने गए प्राथमिक-खंड प्रकटनों को देने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, यद्यपि पैरा 47-51 द्वितीयक आधार पर काफी कम प्रकटनों की अपेक्षा करते हैं। पैरा 53-59 कई अन्य खंड प्रकटन विषयों को सम्बोधित करते हैं। इस मानक से संलग्न दृष्टांत III; इन प्रकटन मानकों के लागू होने का उदाहरण देता है।

स्पष्टीकरण:

यदि 'कारबारी खंड' और 'भौगोलिक खंड' की परिभाषाओं को लागू करते हुए यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि यहाँ न तो एक से अधिक कारबारी खंड है और न ही एक से अधिक भौगोलिक खंड है, तो इस मानक के अनुसार खंड जानकारी को प्रकट करने की आवश्यकता नहीं होती है। यद्यपि, यह तथ्य, कि यहाँ केवल एक 'कारबारी खंड' और 'भौगोलिक खंड' है, टिप्पण के माध्यम से प्रकट होता है।''

प्राथमिक रिपोर्टिंग प्रारूप

39. पैरा 40-46 में प्रकटन की आवश्यकताओं को एक उद्यम के प्राथमिक रिपोर्टिंग प्रारूप पर आधारित रिपोर्टिंग योग्य प्रत्येक खंड के प्रति लागू करना चाहिए।

40. एक उद्यम को प्रत्येक रिपोर्टिंग योग्य खंड के लिए निम्नलिखित को प्रकट करना चाहिए:

(क) बाहरी ग्राहकों को बिक्रियों से प्राप्त खंड राजस्व और अन्य खंडों के साथ संव्यवहरों से प्राप्त खंड राजस्व में वर्गीकृत खण्ड राजस्व;

(ख) खंड परिणाम;

(ग) खंड आस्तियों की कुल कैरिंग रकम;

(घ) खंड दायित्वों की कुल रकम;

(ङ) उन खंड आस्तियों को ग्रहण करने के लिए अवधि के दौरान उपगत की गई कुल लागत, जिन्हें एक से अधिक अवधि के दौरान प्रयोग करने की अपेक्षा की जाती है (मूर्त और अमूर्त स्थिर आस्तियाँ);

(च) अवधि के लिए खंड आस्तियों के संदर्भ में अवक्षयण और क्रमिक अपाकरण हेतु खंड परिणाम में सम्मिलित किए गए व्यय की कुल रकम; और

(छ) खंड आस्तियों के संदर्भ में अवक्षयण और क्रमिक अपाकरण के अतिरिक्त, उन महत्वपूर्ण गैर-नकदी व्ययों की कुल रकम जो खंड व्यय में सम्मिलित की गई थी और, इसीलिए, खंड परिणाम की माप में घटाई गई थीं।

41. पैरा 40(ख) एक उद्यम से खंड परिणाम को रिपोर्ट करने की अपेक्षा करता है। यदि एक उद्यम मनमाने आबंटनों के बिना, खंड शुद्ध लाभ या हानि की या खंड परिणाम के अतिरिक्त, खंड लाभ प्रदता के कुछ अन्य मापों की गणना कर सकता है, तो खंड परिणाम के साथ-साथ रिपोर्टिंग की ऐसी रकम की रिपोर्टिंग भी प्रोत्साहित की जाती है। यदि यह

माप, उद्यम के वित्तीय विवरणों के लिए अपनाई गई लेखा नीतियों के अतिरिक्त किसी अन्य आधार पर तैयार किया जाता है, तो उद्यम अपने वित्तीय विवरणों में, मापन के आधार का स्पष्ट वर्णन सम्मिलित करेगा।

42. बिक्रियों पर सकल मार्जिन, लाभ और हानि के विवरण में खंड परिणाम के ऊपर खंड के निष्पादन के माप का एक उदाहरण है। लाभ और हानि के विवरण में खंड परिणाम से नीचे खंड के निष्पादन के मापों के उदाहरण साधारण क्रियाकलापों से प्राप्त लाभ या हानि (या तो आय करों से पूर्व या पश्चात) और शुद्ध लाभ या हानि हैं।

43. लेखा मानक 5, 'अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि, पूर्वावधि मदें और लेखा नीतियों में परिवर्तन' द्वारा अपेक्षित है कि "जब साधारण क्रियाकलापों से प्राप्त लाभ या हानि के अंतर्गत आय और व्यय की मदें इस मात्रा, प्रकृति या प्रभाव की होती है कि उनका प्रकटन, अवधि के लिए उद्यम की निष्पादन क्षमता को स्पष्ट करने के लिए उपयुक्त होता है, तो ऐसी मदों की प्रकृति और रकम को पृथक रूप से प्रकट करना चाहिए।" ऐसी मदों के उदाहरण में सूचीबद्ध सामान के अवलेखन, पुनर्संरचना हेतु उपबंध, स्थिर आस्तियों और दीर्घकालिक विनिधान, के व्ययन भूतलक्षी रूप से लागू होने वाले विधिक परिवर्तन, मुकदमेंबाजी व्यवस्थाएँ और उपबंधित रकमों का उलटाव सम्मिलित है। एक उद्यम को खंड राजस्व और खंड व्यय की ऐसी किसी भी मद की प्रकृति और रकम को प्रकट करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है किन्तु यह आवश्यक नहीं है, जो इस आकार, प्रकृति या प्रभाव की हो कि उनका प्रकटन अवधि के लिए खंड की निष्पादन क्षमता को स्पष्ट करने हेतु उपयुक्त हो, ऐसे प्रकटन का प्रयोजन राजस्व या व्यय की ऐसी किसी भी मदों के वर्गीकरण को साधारण से असाधारण में परिवर्तित करना या ऐसी मदों की माप को परिवर्तित करना नहीं है। यद्यपि, प्रकटन उस स्तर को परिवर्तित करता है जिस पर उद्यम स्तर से लेकर खंड स्तर तक प्रकटन के लिए ऐसी मदों के महत्व को मूल्यांकित किया जाता है।

44. उस उद्यम को, जो खंड के प्रचालन, विनिधान और वित्तीय क्रियाकलापों से उत्पन्न हो रहे रोकड़ प्रवाहों की रकमों को रिपोर्ट करता है, पैरा 40 के उप-पैरा (च) और (छ) के अनुसार ऐसे खंड के अवक्षयण और व्ययों के क्रमिक अपाकरण व गैर-रोकड़ व्ययों को प्रकट करने की आवश्यकता नहीं होती है।

45. लेखा मानक 3, रोकड़ प्रवाह विवरण, यह सिफारिश करता है कि एक उद्यम वह रोकड़ प्रवाह विवरण प्रस्तुत करे जो प्रचालन, विनिधान और वित्तीय क्रियाकलापों से उत्पन्न हो रहे रोकड़ प्रवाहों को पृथक रूप से रिपोर्ट करे। रिपोर्टिंग योग्य प्रत्येक खंड के प्रचालन और वित्तीय रोकड़ प्रवाहों से सम्बंधित जानकारी का प्रकटन, उद्यम की सम्पूर्ण वित्तीय स्थिति, तरलता और रोकड़ प्रवाहों को समझने के लिए उपयुक्त है। इसलिए, खंड रोकड़ प्रवाह के प्रकटन को प्रोत्साहित किया जाता है, यद्यपि यह आवश्यक नहीं है। खंड रोकड़ प्रवाह प्रकटन को प्रदान करने वाले उद्यम को पैरा 40 के उप-पैरा (च) और (छ) के अनुसार अवक्षयण और व्ययों के क्रमिक अपाकरण और गैर-रोकड़ व्ययों को प्रकट करने की आवश्यकता नहीं होती है।

46. एक उद्यम को रिपोर्टिंग योग्य खंडों के लिए रिपोर्ट की गई जानकारी और उद्यम के वित्तीय विवरणों में व्यक्त कुल जानकारी के बीच समाधान प्रस्तुत करना चाहिए। समाधान को प्रस्तुत करने में, खंड राजस्व को उद्यम राजस्व से समाधान करना चाहिए; खंड परिणाम का उद्यम के शुद्ध लाभ या हानि से समाधान करना चाहिए; खंड आस्तियों का उद्यम आस्तियों समाधान करना चाहिए; और खंड दायित्वों का उद्यम दायित्वों से समाधान करना चाहिए।

द्वितीयक खंड जानकारी

47. पैरा 39-46, एक उद्यम के प्राथमिक रिपोर्टिंग प्रारूप पर आधारित प्रत्येक रिपोर्टिंग योग्य खंड के प्रति लागू होने वाले प्रकटन आवश्यकताओं को परिलक्षित करते हैं। पैरा 48-51, एक उद्यम के द्वितीयक रिपोर्टिंग प्रारूप पर आधारित प्रत्येक रिपोर्टिंग योग्य खंड के प्रति लागू होने की प्रकटन आवश्यकताओं को इस प्रकार परिलक्षित करते हैं:

(क) यदि एक उद्यम का प्राथमिक प्रारूप कारबारी खंड है, तो अपेक्षित द्वितीयक-प्रारूप प्रकटन पैरा 48 में परिलक्षित किए गए हैं;

(ख) यदि एक उद्यम का प्राथमिक प्रारूप, आस्तियों की स्थिति पर आधारित भौगोलिक खंड है (जहाँ उद्यम के उत्पाद उत्पादित किए जाते हैं या जहाँ इसके सेवा प्रदान करने वाले प्रचालन **आधारित होते हैं) तो अपेक्षित द्वितीयक-प्रारूप प्रकटन पैरा 49 और 51 में परिलक्षित किए गए हैं;**

(ग) यदि एक उद्यम का प्राथमिक प्रारूप, इसके ग्राहकों की स्थिति पर आधारित भौगोलिक खंड है (जहाँ उत्पाद बेचे और सेवाएँ प्रदान की जाती हैं) तो अपेक्षित द्वितीयक-प्रारूप प्रकटन पैरा 49 और 51 में परिलक्षित किए गए हैं।

48. यदि खंड जानकारी की रिपोर्टिंग हेतु एक उद्यम का प्राथमिक प्रारूप कारबारी खंड है, तो इसे निम्नलिखित जानकारी को भी रिपोर्ट करना चाहिए :

(क) उद्यम ग्राहकों की भौगोलिक स्थिति पर आधारित भौगोलिक क्षेत्र द्वारा बाहरी ग्राहकों से प्राप्त खंड राजस्व, ऐसे प्रत्येक भौगोलिक खंड के लिए, जिसका बाहरी ग्राहकों के प्रति बिक्रियों से प्राप्त राजस्व उद्यम के राजस्व का 10 प्रतिशत या अधिक है;

(ख) आस्तियों की भौगोलिक स्थिति के द्वारा खण्ड आस्तियों की कुल कैरिंग रकम, ऐसे प्रत्येक भौगोलिक खंड के लिए, जिसकी खंड आस्तियाँ सभी भौगोलिक खंडों की कुल आस्तियों का 10 प्रतिशत या अधिक है; और

(ग) आस्तियों की भौगोलिक स्थिति के द्वारा उन खंड आस्तियों को अर्जित करने के लिए, जिन्हें एक अवधि से अधिक के दौरान उपयोग करने की अपेक्षा की जाती है (मूर्त या अमूर्त स्थिर आस्तियाँ) अवधि के दौरान खर्च की गई कुल लागत ऐसे प्रत्येक भौगोलिक खंड के लिए, जिसकी खंड आस्तियाँ सभी भौगोलिक खंडों की कुल आस्तियों का 10 प्रतिशत या अधिक हैं।

49. यदि खंड जानकारी की रिपोर्टिंग हेतु एक उद्यम का प्राथमिक प्रारूप भौगोलिक खंड हैं (चाहे आस्तियों की स्थिति पर आधारित हो या ग्राहकों की स्थिति पर आधारित हो) तो इसे ऐसे प्रत्येक कारबारी खंड के लिए, जिसका बाहरी ग्राहकों के प्रति बिक्रियों से प्राप्त राजस्व उद्यम राजस्व का 10 प्रतिशत या अधिक है या जिसकी खंड आस्तियाँ सभी कारबारी खंडों की कुल आस्तियों का 10 प्रतिशत या अधिक है, निम्नलिखित खंड जानकारी को भी रिपोर्ट करना चाहिए:

(क) बाहरी ग्राहकों से प्राप्त खंड राजस्व,

(ख) खंड आस्तियों की कुल कैरिंग रकम, और

(ग) उन खंड आस्तियों को अर्जित करने के लिए, जिन्हें एक से अधिक अवधि के दौरान प्रयोग करने की अपेक्षा की जाती है (मूर्त तथा अमूर्त स्थिर आस्तियाँ), अवधि के दौरान उपगत की गई कुल लागत।

50. यदि खंड जानकारी की रिपोर्टिंग हेतु एक उद्यम का प्राथमिक प्रारूप वह भौगोलिक खंड है जो आस्तियों की स्थिति पर आधारित है और यदि ग्राहक की स्थिति उसकी आस्तियों की स्थिति से भिन्न है, तो उद्यम को ऐसे प्रत्येक ग्राहक-आधारित भौगोलिक खंड के लिए, जिसका बाहरी ग्राहकों के प्रति बिक्रियों से प्राप्त राजस्व उद्यम राजस्व का 10 प्रतिशत या अधिक है, बाहरी ग्राहकों के प्रति बिक्रियों से प्राप्त राजस्व को भी रिपोर्ट करना चाहिए।

51. यदि खंड जानकारी की रिपोर्टिंग हेतु एक उद्यम के प्राथमिक प्रारूप ऐसे भौगोलिक खंड हैं जो ग्राहकों की स्थिति पर आधारित है और यदि उद्यम की आस्तियाँ इसके ग्राहकों से भिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में स्थित होती हैं, तो उद्यम को ऐसे प्रत्येक आस्ति-आधारित भौगोलिक खंड के लिए, जिसका बाहरी ग्राहकों के प्रति बिक्रियों से प्राप्त राजस्व या जिसकी खंड आस्तियाँ उद्यम की कुल रकमों का 10 प्रतिशत या अधिक होता है, निम्नलिखित खंड जानकारी को भी रिपोर्ट करना चाहिए:

(क) आस्तियों की भौगोलिक स्थिति द्वारा खंड आस्तियों की कुल कैरिंग रकम; और

(ख) उन खंड आस्तियों को अर्जित करने के लिए, जिन्हें एक अवधि से अधिक समय के दौरान प्रयोग करने की अपेक्षा की जाती है (मूर्त और अमूर्त स्थिर आस्तियाँ) आस्तियों की स्थिति द्वारा अवधि के दौरान उपगत की गई कुल लागत।

दृष्टांत स्वरूप खंड प्रकटन

52. इस मानक से संलग्न दृष्टांत III, इस मानक द्वारा अपेक्षित प्राथमिक और द्वितीयक प्रारुपों के लिए प्रकटनों का दृष्टांत देता है।

अन्य प्रकटन

53. अन्य खंडों के साथ संव्यवहारों से खंड राजस्व को मापने और उसकी रिपोर्टिंग में, अंतर-खंड अंतरणों को उस आधार पर मापा जाना चाहिए जिसका प्रयोग उद्यम उन अंतरणों के मूल्यांकन के लिए वास्तविक रूप से करता है। अंतर-खंड अंतरणों के मूल्यांकन के आधार और उसमें हुए किसी भी परिवर्तन को वित्तीय विवरणों में प्रकट करना चाहिए।

54. खंड रिपोर्टिंग के लिए अपनाई गई ऐसी लेखा नीतियों में हुए परिवर्तनों को प्रकट करना चाहिए जिनका खंड जानकारी पर महत्वपूर्ण प्रभाव होता है। यदि यह युक्तियुक्त रूप से निर्धारणीय हो तो ऐसे प्रकटन में परिवर्तन की प्रकृति और परिवर्तन के वित्तीय प्रभाव का वर्णन सम्मिलित होना चाहिए।

55. लेखा मानक 5, यह अपेक्षा करता है कि उद्यम द्वारा अपनाई गई लेखा नीतियों में परिवर्तन तभी किए जाने चाहिए यदि ऐसा करना कानून द्वारा आवश्यक हो या लेखा मानक के अनुपालन के लिए या यदि यह माना जाए कि परिवर्तन का परिणाम उद्यम के वित्तीय विवरणों में घटनाओं या संव्यवहारों के अधिक उपयुक्त प्रस्तुतिकरण में निकलेगा।

56. उद्यम स्तर पर अपनाई गई खंड जानकारी को प्रभावित करने वाली लेखा नीतियों में परिवर्तन लेखा मानक 5 के अनुसार किए जाते हैं। लेखा मानक 5 अपेक्षा करता है कि लेखा नीति में हुए किसी भी परिवर्तन को जिसका सारवान प्रभाव हो प्रकट करना चाहिए। यदि ऐसे परिवर्तन का प्रभाव और ऐसे परिवर्तन से उत्पन्न हो रहे समायोजन सारवान हो,

तो ऐसे परिवर्तन के प्रभाव को दर्शाने के लिए, इन्हें उस अवधि के दौरान वित्तीय विवरणों में दर्शाया जाना चाहिए, जिस अवधि में ऐसा परिवर्तन किया गया है। जहाँ परिवर्तन का प्रभाव पूर्णतः या अंशतः निश्चित करने योग्य नहीं है, वहाँ यह तथ्य दर्शाया जाना चाहिए। यदि उन लेखा नीतियों में परिवर्तन किया गया है, जिनका चालू अवधि हेतु वित्तीय विवरणों पर कोई सारवान प्रभाव नहीं है किंतु बाद की अवधियों में उसका महत्त्वपूर्ण प्रभाव होने की युक्तियुक्त रूप से अपेक्षा की जाती है, तो ऐसे परिवर्तन का तथ्य उस अवधि में उपयुक्त रूप से प्रकट किया जाना चाहिए जिस अवधि में यह परिवर्तन अपनाया गया है।

57. लेखा नीतियों में हुए कुछ परिवर्तन विशिष्ट रूप से खंड रिपोर्टिंग से सम्बंधित होते हैं। उदाहरणों में खंडों की पहचान में हुए परिवर्तन और खंडों के प्रति राजस्वों और व्ययों के आबंटन हेतु आधार में हुए परिवर्तन सम्मिलित हैं। ऐसे परिवर्तनों का रिपोर्ट की गई खंड जानकारी पर एक महत्वपूर्ण प्रभाव हो सकता है, पर यह उद्यम के लिए रिपोर्टेड कुल वित्तीय जानकारी को परिवर्तित नहीं करेंगें। ऐसे परिवर्तनों के प्रभाव को समझने में प्रयोगकर्ताओं को सक्षम बनाने के लिए, यह मानक, यदि तर्कसंगत रूप से निर्धारणीय हो तो, परिवर्तन की प्रकृति और परिवर्तन के वित्तीय प्रभाव के प्रकटन की अपेक्षा करता है।

58. यदि वित्तीय विवरणों में अन्यथा प्रकट न हो, तो एक उद्यम को प्रत्येक रिपोर्ट किए गए कारबारी खंड में सम्मिलित उत्पादों और सेवाओं के प्रकारों को और प्रत्येक रिपोर्ट किए गए भौगोलिक खंड की संयोजना, प्राथमिक और द्वितीयक दोनों ही को दर्शाना चाहिए।

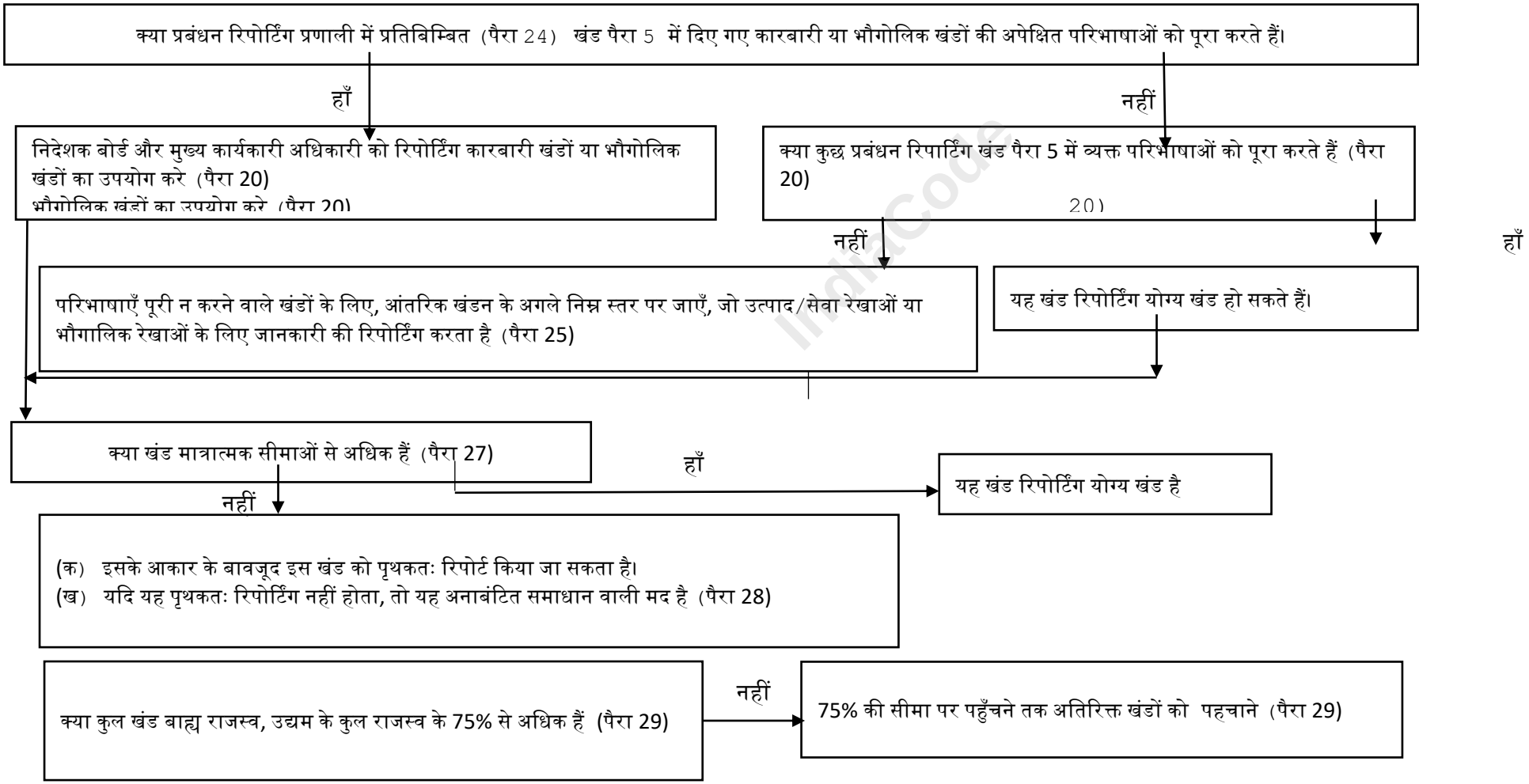
59. माँग में परिवर्तन, इनपुट या उत्पादन के अन्य घटकों की कीमतों में परिवर्तनों और एक कारबारी खंड पर वैकल्पिक उत्पादों और प्रक्रियाओं के विकास, जैसे विषयों के प्रभाव को आँकने के लिए खंड द्वारा किए जाने वाले क्रियाकलापों को जानना आवश्यक है। इसीप्रकार, भौगोलिक खंड के जोखिमों और प्रतिफलों पर आर्थिक और राजनैतिक वातावरण में परिवर्तनों के प्रभाव को आँकने के लिए, उस भौगोलिक खंड की संयोजना को जानना महत्वपूर्ण है।

IndiaCode

दृष्टांत I

खंड परिभाषा विनिश्चय वृक्ष

इस दृष्टांत का प्रयोजन लेखा मानक के पैरा 24-32 के लागू होने का उदाहरण देना है।



दृष्टांत II

रिपोर्टिंग योग्य खंडों के अवधारण पर दृष्टांत (पैरा 27-29)

यह दृष्टांत लेखा मानक का भाग नहीं है। इसका प्रयोजन लेखा मानक के पैरा 27-29 के लागू होने का उदाहरण देना है।

एक उद्यम आठ खंडों, यथा, क, ख, ग, घ, ङ, च, छ और ज के जरिए प्रचालन करता है। इन खंडों के बारे में उपयुक्त जनकारी निम्नलिखित तालिका में दी ('000 रु में रकम):

	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	कुल (खंड)	कुल (उद्यम)
1. खंड राजस्व										
(क) बाह्य बिक्रियाँ	-	255	15	10	15	50	20	35	400	
(ख) अंतर-खंड बिक्रियाँ	100	60	30	5	-	-	5	-	200	
(ग) कुल राजस्व	100	315	45	15	15	50	25	35	600	400
2. सभी खंडों के कुल राजस्व के प्रतिशत के रूप में प्रत्येक खंड का कुल राजस्व	16.7	52.5	7.5	2.5	2.5	8.3	4.2	5.8		
3. खंड परिणाम [लाभ/(हानि)]	5	(90)	15	(5)	8	(5)	5	7		
4. लाभों में सभी खंडों का संयुक्त परिणाम	5		15		8		5	7	40	
5. हानियों में सभी खंडों का संयुक्त परिणाम		(90)		(5)		(5)			(100)	
6. पूर्ण रकम में उपरोक्त 4 तथा 5 पर आए योगों में अपेक्षाकृत बड़े योग के प्रतिशत के रूप में खंड परिणाम (अर्थात् 100)	5	90	15	5	8	5	5	7		
7. खंड आस्तियाँ	15	47	5	11	3	5	5	9	100	
8. सभी खंडों की कुल आस्तियों के प्रतिशत के रूप में खंड आस्तियाँ	15	47	5	11	3	5	5	9		

IndiaCode

उद्यम के रिपोर्टिंग योग्य खंड निम्नलिखित प्रकार से पहचाने जाएगें:

(क) पैरा 27(क) के अनुसार, ऐसे खंडों को रिपोर्टिंग योग्य खंडों के रूप में पहचाना जाना चाहिए, जिनका बाहरी बिक्रियों और अंतर-खंड बिक्रियों से प्राप्त राजस्व बाहरी या आंतरिक सभी खंडों के कुल राजस्व का 10% या अधिक है। इसीलिए, खंड क और ख रिपोर्टिंग योग्य खंड हैं।

(ख) पैरा 27(ख) की आवश्यकताओं के अनुसार, इसको पहले पहचाना जाना चाहिए कि लाभ में सभी खंडों को संयुक्त परिणाम या हानि में सभी खंडों की संयुक्त परिणाम पूर्ण मात्रा में अपेक्षाकृत बड़ा/अधिक है या नहीं। सारणी से, यह स्पष्ट है कि हानि में संयुक्त परिणाम (अर्थात् 100,000 रु) बडा है। इसीलिए, 100,000 रु के प्रतिशत के रूप में व्यक्तिगत खंड परिणाम के परीक्षण की आवश्यकता होती है। पैरा 27(ख) के अनुसार, खंड ख और ग रिपोर्टिंग योग्य खंड हैं क्योंकि उनका खंड परिणाम 10% की सीमा की तुलना में अधिक है।

(ग) पैरा 27(ग) के अनुसार खंड क, ख और घ रिपोर्टिंग योग्य खंड है क्योंकि उनकी खंड आस्तियाँ कुल खंड आस्तियों के 10% से अधिक है। इस प्रकार, पैरा 27 में व्यक्त मापदंड की शर्तों के अनुसार खंड क, ख, ग और घ रिपोर्टिंग योग्य खंड है।

मानक का पैरा 28, उद्यम के प्रबंध को एक रिपोर्टिंग योग्य खंड के रूप में किसी भी खंड को नियुक्त करने के लिए एक विकल्प प्रदान करता है। प्रस्तुत स्थिति में, यह माना गया है कि प्रबंधन खंड ड को रिपोर्टिंग योग्य खंड के रूप में नियुक्त करने का निर्णय लेता है।

पैरा 29 अपेक्षा करता है कि यदि पहचाने गए रिपोर्टिंग योग्य खंडों से सम्बंधित कुल बाह्य राजस्व, जैसा कि पहले कहा गया है, कुल उद्यम राजस्व के 75% से कम भाग को सम्मिलित करता है, तो अतिरिक्त खंडों को पैरा 27 में व्यक्त 10% की सीमाओं को पूरा न करने पर भी तब तक रिपोर्टिंग योग्य खंडों के रूप में पहचाना जाना चाहिए, जब तक कि कुल उद्यम राजस्व का कम से कम 75% भाग रिपोर्टिंग योग्य खंडों में शामिल नहीं किया जाता है।

उपरोक्त रिपोर्टिंग योग्य खंडों के रूप में पहचाने गए क, ख, ग, घ और ङ खंडों का कुल बाहरी राजस्व 2,95,000 रु है। यह 400,000 रु के कुल उद्यम राजस्व के 75% से कम है। उद्यम के प्रबंधन को किसी एक या अधिक शेष खंडों को रिपोर्टिंग योग्य खंड (खंडों) के रूप में नियुक्त करने की आवश्यकता होती है, ताकि रिपोर्टिंग योग्य खडों का बाहरी राजस्व, कुल उद्यम राजस्व का कम से कम 75% हो। मान लें, कि उद्यम इस प्रयोजन के लिए खंड ज को नियुक्त करता है। अब रिपोर्टिंग योग्य खंड का बाहरी राजस्व कुल उद्यम राजस्व के 75% से अधिक है।

खंड क, ख, ग, घ, ङ और ज रिपोर्टिंग योग्य खंड है। खंड च और छ समाधान मदों के रूप में दर्शाए जाँएगें।

दृष्टांत III

दृष्टांत स्वरूप खंड प्रकटन

यह दृष्टांत लेखा मानक का भाग नही है। इसका प्रयोजन लेखा मानक के पैरा 38-59 के लागू होने का उदाहरण देना है।

यह दृष्टांत उन खंड प्रकटनों का दृष्टांत देता है जिनकी इस मानक को विविधीकृत बहुस्थितिगत कारबारी उद्यम के लिए आवश्यकता होगी। यह उदाहरण, इस मानक के अधिकतर उपबंधों को स्पष्ट करने के प्रयोजन से जटिल बनाया गया है।

कारबारी खंडों के बारे में जानकारी (टिप्पण XX)

(सभी रकमें लाख रु. में)

	कागजी उत्पाद		**कार्यालय उत्पाद**		**प्रकाशन**		**अन्य प्रचालन**		**निष्कासन**		**समेकित योग**	
	चालू वर्ष	*पूर्ववर्ती वर्ष*	*चालू वर्ष*	*पूर्ववर्ती वर्ष*	*चालू वर्ष*	*पूर्ववर्ती वर्ष*	*चालू वर्ष*	*पूर्ववर्ती वर्ष*	*चालू वर्ष*	*पूर्ववर्ती वर्ष*	*चालू वर्ष*	*पूर्ववर्ती वर्ष*
राजस्व												
बाहरी बिक्रियाँ	55	50	20	17	19	16	7	7				
अंतर खंड बिक्रियाँ	15	10	10	14	2	4	2	2	(29)	(30)		
कुल राजस्व	70	60	30	31	21	20	9	9	(29)	(30)	101	90
परिणाम												
खंड परिणाम	20	17	9	7	2	1	0	0	(1)	(1)	30	24
अनाबंटित निगमित व्यय											(7)	(9)
प्रचालन लाभ											23	15
ब्याज व्यय											(4)	(4)
ब्याज आय											2	3
आय कर											(7)	(4)

	कागजी उत्पाद		कार्यालय उत्पाद		प्रकाशन		अन्य प्रचालन		निष्कासन		समेकित योग	
	चालू वर्ष	*पूर्ववर्ती वर्ष*	*चालू वर्ष*	*पूर्ववर्ती वर्ष*	*चालू वर्ष*	*पूर्ववर्ती वर्ष*	*चालू वर्ष*	*पूर्ववर्ती वर्ष*	*चालू वर्ष*	*पूर्ववर्ती वर्ष*	*चालू वर्ष*	*पूर्ववर्ती वर्ष*
साधारण क्रियाकलापों से लाभ											14	10
असाधारण हानि : कारखाने के प्रति गैर बीमित भूकंप क्षति		(3)										(3)
शुद्ध लाभ											14	7
अन्य जानकारी												
खंड आस्तियाँ	54	50	34	30	10	10	10	9			108	99
अनाबंटित निगमित आस्तियाँ											67	56
कुल आस्तियाँ											175	155
खंड दायित्व	25	15	8	11	8	8	1	1			42	35
अनाबंटित निगमित दायित्व											40	55
कुल दायित्व											82	90
पूँजीगत व्यय	12	10	3	5	5		4	3				
अवक्षयण	9	7	9	7	5	3	3	4				
अवक्षयण के अतिरिक्त अन्य गैर-नकदी व्यय	8	2	7	3	2	2	2	1				

IndiaCode

टिप्पण xx- कारबारी और भौगोलिक खंड (लाख रु. में रकमें)

कारबारी खंड : प्रबंध प्रयोजनों के लिए उद्यम विश्वव्यापी आधार पर तीन बड़े प्रचालन विभागों-कागजी उत्पादों, कार्यालय उत्पादों और प्रकाशन में संगठित होता है प्रत्येक की अध्यक्षता वरिष्ठ उप-अध्यक्ष करता है। विभाग वह आधार है जिस पर उद्यम अपनी प्राथमिक खंड जानकारी को रिपोर्ट करता है। कागजी उत्पाद खंड विस्तृत श्रेणी के लेखन और प्रकाशन कागज और अखबारी कागजों का उत्पादन करता है। कार्यालय उत्पाद खंड लेबल (नामचिप्पियों), बाइंडरों (जिल्दसाजों), कलमों और मार्करों का उत्पादन करते है और अन्य द्वारा बनाए गए कार्यालय उत्पादों का वितरण भी करता है। प्रकाशन खंड करों, कानून और लेखा के क्षेत्रों में पुस्तकों को विकसित करता और बेचता है। अन्य प्रचालनों में मानक और विशिष्ट कारबारी प्रयोज्यताओं हेतू कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर का विकास सम्मिलित है। काराबारी खंडों के बारे में वित्तीय जानकारी उपरोक्त तालिका में प्रस्तुत की गई है।

भौगोलिक खंड : यद्यपि उद्यम के अधिकतर प्रचालन विभाग विश्वव्यापी आधार पर प्रबंधित होते हैं, फिर भी वह विश्व के चार प्रमुख भौगोलिक क्षेत्रों में कार्य करते हैं। अपने देश भारत में कागजों और कार्यालय उत्पादों की विस्तृत श्रेणी उत्पादित करता तथा बेचता है। साथ ही, उद्यम के प्रकाशन और कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर विकसित करने के सभी प्रचालन भारत में किए जाते हैं। यूरोपीयन संघ में, कम्पनी कागजी और कार्यालयी उत्पादों की निर्माण सुविधाओं में प्रचालन करती है और बिक्री कार्यालयों को निम्नलिखित देशों में कार्यान्वित करती है : फ्रांस, बेल्जियम, जर्मनी और यूके। कनाडा और संयुक्त राष्ट्र में प्रचालन अनिवार्य रूप से समान है और उनमें वह कागज तथा न्यूजप्रिंट (अखबारी कागज) निहित है जो पूर्णतः इन दो देशों में बेचे जाता हैं। इन्डोनेशिया के प्रचालनों में लुगदी का उत्पादन और लेखन और प्रकाशन कागजों तथा कार्यालयी उत्पादों का निर्माण सम्मिलित है, जिसमें से लगभग सभी, उद्यम के अन्य खंडों और बाहरी संयुक्त कनाडा और संयुक्त राष्ट्र में प्रचालन अनिवार्य रूप से समान है और उनमें वह कागज तथा न्यूजप्रिंट (अखबारी कागज) निहित है जो पूर्णतः इन दो देशों में बेचे जाते हैं। इन्डोनेशिया के प्रचालनों में लुगदी का उत्पादन और लेखन और प्रकाशन कागजों तथा कार्यालयी उत्पादों का निर्माण सम्मिलित है, जिसमें से लगभग सभी, उद्यम के अन्य खंडों और बाहरी ग्राहकों दोनों के ही प्रति इन्टोजनेशिया के बाहर बेचे जाते हैं।

बाजार द्वारा विक्रय : निम्नलिखित सारणी इस बात की परवाह न करते हुए कि वस्तुएँ कहाँ उत्पादित की गयी थीं, भौगोलिक बाजार द्वारा उद्यम की समेकित बिक्रियों के वितरण को दर्शाती है:

भौगोलिक बाजार द्वारा बिक्री राजस्व

	चालू वर्ष	पूर्ववर्ती वर्ष
भारत	19	22
यूरोपीय संघ	30	31
कनाडा और संयुक्त राष्ट्र	28	21
मैक्सिकों और दक्षिण अमरीका	6	2
दक्षिणतम ऐशिया (मुख्तः जापान और तायवान)	18	14
	101	90

भौगोलिक क्षेत्रा आस्तियाँ और भौगोलिक क्षेत्रा द्वारा मूर्त और अमूर्त स्थिर आस्तियों के प्रति वृद्धियाँ : निम्नलिखित सारणी भौगोलिक क्षेत्रा द्वारा जिसमें आस्तियाँ स्थित आस्तियों की कैरिंग रकम और मूर्त और अमूर्त स्थिर आस्तियों के प्रति वृद्धियों को दर्शाती है :

	खंड आस्तियों की कैरिंग रकम		**स्थिर आस्तियों और अमूर्त आस्तियों के प्रति वृद्धियाँ**	
	चालू वर्ष	**पूर्ववर्ती वर्ष**	**चालू वर्ष**	**पूर्ववर्ती वर्ष**
भारत	72	78	8	5
यूरोपीयन संघ	47	37	5	4
कनाडा और संयुक्त राष्ट्र	34	20	4	3
इन्डोनेशिया	22	20	7	6
	175	155	24	18

IndiaCode

खंड राजस्व और व्यय : भारत में कागजी और कार्यालय उत्पाद संयुक्त सुविधाओं द्वारा विनिर्मित किए जाते हैं और संयुक्त बिक्री विभाग द्वारा बेचे जाते हैं। संयुक्त राजस्व और व्यय युक्तियुक्त आधार पर दो कारबारी खंडों के प्रति आबंटित किए जाते हैं। अन्य सभी खंड राजस्व और व्यय प्रत्यक्षतः खंडों के प्रति माने जाने के योग्य होते हैं।

खंड आस्तियाँ और दायित्व : खंड आस्तियों में खंड द्वारा प्रयुक्त सभी प्रचालन आस्तियाँ सम्मिलित होती हैं और इसमें विशिष्ट रूप से प्रचालन रोकड़, देनदार, सूचिबद्ध सामान तथा स्थिर आस्तियाँ जो उन भत्ते और उपबंधित रकमें घटाने के बाद होती हैं, जो तुलनपत्र में प्रत्यक्ष आफसेंटों के रूप में रिपोर्टेड है। जबकि, ऐसी अधिकतर आस्तियों को प्रत्यक्षतः व्यक्तिगत खंडो के प्रति चिन्हित किया जा सकता है, फिर भी एक या दो खंडों द्वारा संयुक्त रूप से प्रयुक्त कुछ आस्तियों की कैरिंग रकम युक्तियुक्त आधार पर खंडों को आबंटित की जाती है। खंड दायित्वों में सभी प्रचालन दायित्व सम्मिलित हैं और इसमें विशिष्ट रूप से लेनदार और प्रोद्भूत दायित्व निहित हैं। खंड आस्तियों और दायित्वों आस्थगित आयकर सम्मिलित नहीं करती हैं।

अंतर खंड अंतरण : खंड राजस्व, खंड व्यय और खंड परिणाम में कारबारी खंडों के बीच और भौगोलिक खंडों के बीच अंतरण सम्मिलित है। ऐसे अंतरण, समरूप वस्तुओं के लिए गैर सम्बंधित ग्राहकों के प्रति प्रभारित बाजार कीमत पर लेखाबद्ध किए जाते हैं। यह अंतरण समेकन में निष्कासित किए जाते हैं।

असमान्य मदें: चालू वर्ष में बाहरी ग्राहकों के प्रति कार्यालय उत्पादों की बिक्रियाँ भारत में परिवहन कर्मचारियों की लम्बी हड़ताल द्वारा प्रतिकूलतः प्रभावित हुई थीं, जिसने लगभग चार वर्षों के लिए उत्पाद के पोत-लदान में व्यवधान उत्पन्न किया था। उद्यम ने अनुमान लगाया कि चार-महीने की अवधि के दौरान कार्यालय उत्पादों की बिक्रियाँ उन बिक्रियों से लगभग आधी थी जितनी वह अन्यथा रही होती।

असाधारण हानि: जैसा कि टिप्पण में अधिक पूर्णता से विवेचित किया गया है, कि कम्पनी ने भारत में पूर्ववर्ती वर्ष के दौरान एक कागज के कारखाने के प्रति भूकंप क्षति के कारण 3,00,000 रु की बीमारहित हानि उपगत की थी।

दृष्टांत IV

अपेक्षित प्रकटन का सारांश

यह दृष्टांत लेखा मानक का भाग नही है। इसका प्रयोजन तीनों प्रत्येक संभाव्य प्राथमिक खंड रिपोर्टिंग प्रारूपों के लिए पैरा 38-59 द्वारा अपेक्षित प्रकटनों का संक्षेपण करना है।

कोष्ठकों में दी गई संख्याओं का संदर्भ मूल पाठ में दिए गए उपयुक्त पैरा की पैरा संख्या से है।

प्राथमिक प्रारूप कारबारी खंड है	**प्राथमिक प्रारूप, आस्तियों की स्थिति द्वारा भौगोलिक खंड है**	**प्राथमिक प्रारूप, ग्राहकों की स्थिति द्वारा भौगोलिक खंड है**
अपेक्षित प्राथमिक प्रकटन	***अपेक्षित प्राथमिक प्रकटन***	***अपेक्षित प्राथमिक प्रकटन***
कारबारी खंड द्वारा बाहरी ग्राहकों से प्राप्त राजस्व [40(क)]	आस्तियों की स्थिति द्वारा बाहरी ग्राहकों से प्राप्त राजस्व [40(क)]	ग्राहकों की स्थिति द्वारा बाहरी ग्राहकों से प्राप्त राजस्व [40(क)]
कारबारी खंड द्वारा अन्य खंडों के साथ लेनदेन से प्राप्त राजस्व [40(क)]	आस्तियों की स्थिति द्वारा अन्य खंडों के साथ लेनदेन से प्राप्त राजस्व [40(क)]	ग्राहकों की स्थिति द्वारा अन्य खंडों के साथ लेनदेन से प्राप्त राजस्व [40(क)]
कारबारी खंड द्वारा खंड परिणाम [40(ख)]	आस्तियों की स्थिति द्वारा खंड परिणाम [40(ख)]	ग्राहकों की स्थिति द्वारा खंड परिणाम [40(ख)]
कारबारी खंड द्वारा खंड आस्तियों की कैरिंग रकम [40(ग)]	आस्तियों की स्थिति द्वारा खंड आस्तियों की कैरिंग रकम [40(ग)]	ग्राहकों कीं स्थिति द्वारा खंड आस्तियों की कैरिंग रकम [40(ग)]
कारबारी खंड द्वारा दायित्व [40(घ)]	आस्तियों की स्थिति द्वारा खंड दायित्व [40(घ)]	ग्राहकों की स्थिति द्वारा खंड दायित्व [40(घ)]
प्राथमिक प्रारूप कारबारी खंड है	प्राथमिक प्रारूप, आस्तियों की स्थिति द्वारा भौगोलिक खंड है	प्राथमिक प्रारूप, ग्राहकों की स्थिति द्वारा भौगोलिक खंड है

IndiaCode

प्राथमिक प्रारूप कारबारी खंड है	**प्राथमिक प्रारूप, आस्तियों की स्थिति द्वारा भौगोलिक खंड है**	**प्राथमिक प्रारूप, ग्राहकों की स्थिति द्वारा भौगोलिक खंड है**
अपेक्षित प्राथमिक प्रकटन	***अपेक्षित प्राथमिक प्रकटन***	***अपेक्षित प्राथमिक प्रकटन***
अपेक्षित प्राथमिक प्रकटन	अपेक्षित प्राथमिक प्रकटन	अपेक्षित प्राथमिक प्रकटन
कारबारी खंड द्वारा मूर्त और अमूर्त स्थिर आस्तियों को अर्जित करने के लिए लागत [40(ङ)]	आस्तियों की स्थिति द्वारा मूर्त और अमूर्त स्थिर आस्तियों को अर्जित करने के लिए लागत [40(ङ)]	ग्राहकों की स्थिति द्वारा मूर्त और अमूर्त स्थिर आस्तियों को अर्जित करने के लिए लागत [40(ङ)]
कारबारी खंड द्वारा अवक्षयण और क्रमिक अपाकरण व्यय [40(च)]	आस्तियों की स्थिति द्वारा अवक्षयण और क्रमिक अपाकरण व्यय [40(च)]	ग्राहकों की स्थिति द्वारा अवक्षयण और क्रमिक अपाकरण व्यय [40(च)]
कारबारी खंड द्वारा अवक्षयण और क्रमिक अपाकरण के अतिरिक्त गैर-नकदी व्यय [40(छ)]	आस्तियों की स्थिति द्वारा अवक्षयण और क्रमिक अपाकरण के अतिरिक्त गैर-नकदी व्यय [40(छ)]	ग्राहकों की स्थिति द्वारा अवक्षयण और क्रमिक अपाकरण के अतिरिक्त गैर-नकदी व्यय [40(छ)]
कारबारी खंड द्वारा राजस्व, परिणाम, आस्तियों और दायित्व का समाधान [46]	राजस्व, परिणाम, आस्तियों और दायित्व का समाधान [46]	राजस्व, परिणाम, आस्तियों और दायित्व का समाधान [46]
अपेक्षित द्वितीयक प्रकटन	***अपेक्षित द्वितीयक प्रकटन***	***अपेक्षित द्वितीयक प्रकटन***
ग्राहकों की स्थिति द्वारा बाहरी ग्राहकों से प्राप्त राजस्व [48]	कारबारी खंड द्वारा बाहरी ग्राहकों से प्राप्त राजस्व [48]	कारबारी खंड द्वारा बाहरी ग्राहकों से प्राप्त राजस्व [48]
प्राथमिक प्रारूप कारबारी खंड है	प्राथमिक प्रारूप, आस्तियों की स्थिति द्वारा भौगोलिक खंड है	प्राथमिक प्रारूप, ग्राहकों की स्थिति द्वारा भौगोलिक खंड है
अपेक्षित द्वितीयक प्रकटन	अपेक्षित द्वितीयक प्रकटन	अपेक्षित द्वितीयक प्रकटन
आस्तियों की स्थिति द्वारा खंड आस्तियों की कैरिंग रकम [48]	कारबारी खंड द्वारा आस्तियों की कैरिंग रकम [49]	कारबारी खंड द्वारा आस्तियों की कौरिंग रकम [49]
आस्तियों की स्थिति द्वारा मूर्त और अमूर्त स्थिर आस्तियों को अर्जित करने के लिए लागत [48]	कारबारी खंड द्वारा मूर्त और अमूर्त स्थिर आस्तियों को अर्जित करने के लिए लागत [49]	कारबारी खंड द्वारा मूर्त और अमूर्त स्थिर आस्तियों को अर्जित करने के लिए लागत [49]
	यदि आस्तियों की स्थिति से भिन्न हो तो भौगोलिक ग्राहकों की स्थिति द्वारा बाह्य ग्राहकों से राजस्व [50]	
		यदि ग्राहकों की स्थिति से भिन्न हो तो आस्तियों की स्थिति द्वारा खण्ड आस्तियों की कैरिंग रकम [51]
		यदि ग्राहकों की स्थिति से भिन्न है तो, आस्तियों की स्थिति द्वारा मूर्त और अमूर्त स्थिर आस्तियों को अर्जित करने के लिए लागत [51]
प्राथमिक प्रारूप कारबारी खंड है	प्राथमिक प्रारूप, आस्तियों की स्थिति द्वारा भौगोलिक खंड है	प्राथमिक प्रारूप, ग्राहकों की स्थिति द्वारा भौगोलिक खंड है
अन्य अपेक्षित प्रकटन	अन्य अपेक्षित प्रकटन	अन्य अपेक्षित प्रकटन
अंतर-खंड अंतरणों के मूल्यन का आधार और उसमें हुआ कोई भी	अंतरणों के मूल्यन का आधार और उसमें	अंतर-खंड अंतरणों के मूल्यन का आधार

IndiaCode

प्राथमिक प्रारूप कारबारी खंड है	**प्राथमिक प्रारूप, आस्तियों की स्थिति द्वारा भौगोलिक खंड है**	**प्राथमिक प्रारूप, ग्राहकों की स्थिति द्वारा भौगोलिक खंड है**
अपेक्षित प्राथमिक प्रकटन	***अपेक्षित प्राथमिक प्रकटन***	***अपेक्षित प्राथमिक प्रकटन***
परिवर्तन [53]	हुआ कोई भी परिवर्तन [53]	और उसमें हुआ कोई भी परिवर्तन [53]
खंड लेखा नीतियों में परिवर्तन [54]	खंड लेखा नीतियों में परिवर्तन [54]	खंड लेखा नीतियों में परिवर्तन [54]
प्रत्येक कारबारी खंड में उत्पादों और सेवाओं के प्रकार [58]	प्रत्येक कारबारी खंड में उत्पादों और सेवाओं के प्रकार [58]	प्रत्येक कारबारी खंड में उत्पादों और सेवाओं के प्रकार [58]
प्रत्येक भौगोलिक खंड की संरचना [58]	प्रत्येक भौगोलिक खंड की संरचना [58]	प्रत्येक भौगोलिक खंड की संरचना [58]

लेखा मानक 18

संबंधित पक्षकार के प्रकटन

(इस लेखा मानक में कुछ **मोटे-तिरछे** टाइप और कुछ सीधे टाइप में व्यवस्थित पैरा सम्मिलित है, जिनका समान प्राधिकार है। मोटे तिरछे टाइप में दिये गए पैरा मुख्य सिद्धांत उपदर्शित करते हैं। इस लेखा मानक को अधिसूचना के प्रति उपाबंध के भाग क में अतंर्विष्ट साधारण अनुदेशों के संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिये।)

उद्देश्य

इस मानक का उद्देश्य निम्नलिखित के प्रकटन के लिए अपेक्षाएँ स्थापित करना है:

(क) सम्बन्धित पक्षकार के सम्बन्ध ; और

(ख) रिपोर्टिंग उद्यम तथा इसके सम्बन्धित पक्षकारों के बीच संव्यवहार।

कार्यक्षेत्र

1. इस मानक को सम्बन्धित पक्षकार के संबंधों और रिपोर्टिंग उद्यम तथा उसके सम्बन्धित पक्षकारों के बीच संव्यवहारों की रिपोर्टिंग में लागू करना चाहिये। इस मानक की आवश्यकताएँ प्रत्येक रिपोर्टिंग उद्यम के वित्तीय विवरण पर लागू होती हैं और ऐसे ही एक नियंत्री कम्पनी द्वारा प्रस्तुत किए गए समेकित वित्तीय विवरणों पर भी लागू होता है।

2. यह मानक केवल पैरा 3 में वर्णित सम्बन्धित पक्षकार के संबंधों पर लागू होता है।

3. यह मानक निम्नलिखित (क) से (ङ) में वर्णित संबंधित पक्षकारों के संबंधों का ही केवल वर्णन करता है:

(क) उद्यम, जो प्रत्यक्षतः या एक या अधिक मध्यवर्तियों के माध्यम से अप्रत्यक्षतः रिपोर्टिंग उद्यम पर नियंत्रण करते हैं या उनके द्वारा नियंत्रित होते हैं या उसके साथ सामान्य नियंत्रण में हैं (इसमें शामिल हैं नियंत्री कम्पनियाँ, समनुषंगी तथा साथी समनुषंगी कम्पनियाँ);

(ख) रिपोर्टिंग उद्यम के सहयुक्त तथा सहउद्यम एवं विनिधानकर्ता पक्षकार या उद्यमी जिनके सम्बंध में रिपोर्टिंग उद्यम एक सहयुक्त या एक सहउद्यम है;

(ग) वे व्यक्ति जिनका एक रिपोर्टिंग उद्यम की मतदान शक्ति में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हित होता है जो उसे उद्यम पर नियंत्रण या महत्वपूर्ण प्रभाव देता है, और इसी प्रकार के किसी व्यक्ति के सम्बन्धी;

(घ) प्रमुख प्रबंधकीय कार्मिक तथा इस प्रकार के कार्मिक के सम्बन्धी; और

(ङ) वे उद्यम जिन पर (ग) अथवा (घ) में वर्णित कोई भी व्यक्ति महत्वपूर्ण प्रभाव डालने में समर्थ हो। इसमें रिपोर्टिंग उद्यम के मुख्य शेयर धारकों या निदेशकों के स्वामित्व वाले उद्यम होते हैं और वे उद्यम जिनमें प्रमुख प्रबंध के सदस्य रिपोर्टिंग उद्यम के साथ साझे होते हैं।

IndiaCode

4. इस मानक के संदर्भ में, निम्नलिखित को संबंधित पक्षकार नहीं समझा जाता :

(क) दो कम्पनियाँ मात्र इस कारण कि उनका निदेशक एक ही हैं, उपरोक्त 3(घ) या (ङ) के होते हुए भी जब तक की निदेशक आपसी व्यवहार में दोनों कम्पनियों की नीतियों को, प्रभावित करने में समर्थ न हो);

(ख) एक एकल ग्राहक, पूर्तिकार, फ्रैन्चाईज़र, वितरक या सामान्य अभिकर्ता जिसके साथ एक उद्यम एक महत्वपूर्ण मात्रा के कारबार का संव्यवहार करता है केवल परिणामिक आर्थिक निर्भरता के आधार पर; और

(ग) निम्नलिखित सूचीबद्ध पक्ष को, उनके उद्यम के साथ सामान्य व्यवहार के अनुक्रम में केवल उन्हीं व्यवहारों के आधार पर (यद्यपि वे उद्यम के क्रियाकलापों की स्वतंत्रता को सीमित करते हैं या उसकी विनिश्चय प्रक्रिया में भाग लेते हैं):

(i) वित्त प्रदानकर्ता रिपोर्टिंग ;

(ii) व्यापार संघ;

(iii) लोक उपयोगताएँ

(iv) सरकारी विभाग तथा सरकार द्वारा प्रायोजित निकायों सहित सरकारी अभिकरण।

5. इस मानक में अधिकथित संबंधित पक्षकार के प्रकटनों की आवश्यकताएँ उन परिस्थितियों में लागू नहीं होती जब इस प्रकार के प्रकटन रिपोर्टिंग उद्यम की गोपनीयता के कर्तव्यों से विरोध में हो जैसा कि परिनियम के निबंधनों के अनुसार या किसी विनियामक या इसी प्रकार के सक्षम प्राधिकारी द्वारा विशिष्टतः अपेक्षित हो।

6. यदि परिनियम या विनियामक या वैसे ही सक्षम प्राधिकारी जो एक उद्यम को विनियमित करते हैं, उद्यम द्वारा किसी सूचना, जिसका इस मानक के अनुसार प्रकटन अपेक्षित है, के प्रकटनों का प्रतिषेध करते हैं, ऐसी सूचना का प्रकटन आवश्यक नहीं है। उदाहरणतः बैंक विधि द्वारा ग्राहकों के संव्यवहारों के सम्बन्ध में गोपनीयता बनाये रखने के लिए बाध्य होते हैं तथा यह मानक ग्राहकों के संव्यवहारों की गोपनीयता बनाये रखने की बाध्यता पर अभिभावी नहीं होता।

7. समेकित वित्तीय विवरणों में समूहों के बीच के संव्यवहारों के सम्बन्ध में किसी प्रकटन की आवश्यकता नहीं होती है।

8. एक समूह के सदस्यों के बीच संव्यवहारों का समेकित वित्तीय विवरणों में प्रकटन अनावश्यक है क्योंकि समेकित वित्तीय विवरण नियंत्री और समनुषंगी कम्पनियों के विषय में सूचना एकल रिपोर्टिंग उद्यम के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

9. राज्य नियंत्रित उद्यमों के वित्तीय विवरणों में, अन्य राज्य नियंत्रित उद्यमों के साथ संबंधित पक्षकार सम्बन्धों तथा ऐसे उद्यमों के साथ संव्यवहारों के किसी प्रकटन की आवश्यकता नहीं होती है।

परिभाषाएँ

10. इस मानक के उद्देश्य के लिए विनिर्दिष्ट अर्थों में निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग किया गया है:

10.1 ***संबंधित पक्षकार -*** *पक्षकारों को संबंधित समझा जाता है यदि रिपोर्टिंग अवधि के दौरान किसी भी समय एक पक्षकार के पास वित्तीय तथा/अथवा प्रचालन विनिश्चयों को लेने में अन्य पक्षकार पर नियंत्रण करने या महत्वपूर्ण प्रभाव डालने की योग्यता है।*

10.2 ***संबंधित पक्षकार संव्यवहार -*** *संबंधित पक्षकारों में संसाधनों या बाध्यताओं का अंतरण, चाहे कीमत को प्रभारित किया गया है या नहीं।*

10.3 ***नियंत्रण –*** *(क) एक उद्यम को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, मतदान शक्ति का आधे से अधिक का स्वामित्व; या*

(ख) कम्पनी के मामले में निदेशक बोर्ड के गठन का नियंत्रण या किसी अन्य उद्यम के मामले में तत्समान शासी निकाय के गठन पर नियंत्रण;

(ग) मतदान शक्ति में सारवान हित और परिनियमों द्वारा या करार द्वारा उद्यम की वित्तीय और/अथवा प्रचालन नीतियों को विनिर्दिष्ट करने का अधिकार।

10.4 ***महत्वपूर्ण प्रभाव -*** *एक उद्यम की वित्तीय और/अथवा प्रचालन नीति विनिश्चय में सहभागिता, परन्तु उन नीतियों पर नियंत्रण नहीं।*

10.5 ***सहयुक्त -*** *वह उद्यम जिसमें एक विनिधानकर्ता रिपोर्टिंग पक्षकार का महत्वपूर्ण प्रभाव है और जो उस पक्षकार की न तो समनुषंगी है न ही सहउद्यम है।*

10.6 ***सहउद्यम -*** *एक संविदात्मक समझौता है जहाँ पर दो या अधिक पक्षकार एक आर्थिक क्रियाकलाप करते हैं जो संयुक्त नियंत्रण के अधीन है।*

10.7 ***संयुक्त नियंत्रण -*** *एक आर्थिक क्रियाकलाप की वित्तीय तथा प्रचालन नीतियों के प्रबंध के लिए संविदात्मक रूप से सहमत अधिकार का बंटवारा ताकि इससे लाभ प्राप्त किए जा सके।*

10.8 ***प्रमुख प्रबंध कार्मिक -*** *वे व्यक्ति जिनके पास रिपोर्टिंग उद्यम के क्रियाकलापों की योजना, निदेशक और नियंत्रण के लिए और अधिकार तथा उत्तरदायित्व है।*

10.9 ***सम्बन्धी -*** *एक व्यक्ति के सम्बन्ध में सम्बन्धी का अर्थ पति या पत्नी, पुत्र, पुत्री, भाई, बहन, पिता और माता जो उसके रिपोर्टिंग उद्यम के साथ व्यवहारों में ऐसे व्यक्ति को प्रभावित कर सकते हैं या उससे प्रभावित हो सकते हैं।*

10.10 ***नियंत्री कम्पनी -*** *एक कम्पनी जिसकी एक या अधिक समनुषंगी कम्पनियाँ हैं।*

10.11 ***समनुषंगी -*** *एक कम्पनी:*

(क) *जिसमें एक अन्य कम्पनी (नियंत्री कम्पनी) स्वयं के द्वारा और/या एक अथवा अधिक समनुषंगियों के द्वारा इसकी साधारण शेयर पूंजी के अभिहित मूल्य के आधे से अधिक का मूल्य धारण करते है; या*

(ख) *जिसमें एक अन्य कम्पनी (नियंत्री कम्पनी) स्वयं और/या एक या अधिक समनुषंगी के द्वारा निदेशक बोर्ड के गठन का नियंत्रण करती है।*

10.12 ***साथी समनुषंगी -*** *एक कम्पनी को किसी अन्य कम्पनी की साथी समनुषंगी माना जाएगा यदि दोनों एक ही नियंत्री कम्पनी की समनुषंगी कम्पनियाँ है।*

10.13 ***राज्य-नियंत्रित उद्यम -*** *एक उद्यम जो कि केन्द्रीय सरकार और/या किसी राज्य सरकार (सरकारों) के नियंत्रण में है।*

11. इस मानक के उद्देश्य के लिए, एक उद्यम को निम्नलिखित की संरचना का नियंत्रक माना जाता है:

(i) एक कम्पनी का निदेशक बोर्ड, यदि इसके पास बिना किसी अन्य व्यक्ति की सम्मति या सहमति के कम्पनी के सभी या अधिकांश निदेशकों को नियुक्त करने और हटाने की शक्ति है। एक उद्यम के पास एक निदेशक को नियुक्त करने की शक्ति तब समझी जायेगी यदि निम्न में से किसी एक शर्त को पूरा किया जाता है:

(क) उद्यम, द्वारा पूर्वोक्त शक्तियों का प्रयोग उसके पक्ष में करे बिना एक व्यक्ति निदेशक के रूप में नियुक्त नहीं किया जा सकता;

(ख) एक व्यक्ति की निदेशक के रूप में नियुक्ति आवश्यक रूप से उस उद्यम में उसके द्वारा धारित एक पद पर नियुक्ति के कारण है ; या

(ग) निदेशक उस उद्यम द्वारा नामनिर्दिष्ट होता है; यदि उद्यम एक कम्पनी है, तो निदेशक उस कम्पनी/उसकी समनुषंगी द्वारा नामनिर्दिष्ट होता है।

(ii) एक उद्यम जो एक कम्पनी नहीं है, के शासी निकाय यदि इसके पास, किसी अन्य व्यक्ति की सम्मति या सहमति के बिना उस अन्य उद्यम के शासी निकाय के सभी या अधिकांश सदस्यों को नियुक्त करने या हटाने का शास्ति है। एक उद्यम के पास एक सदस्य को नियुक्त करने की शक्ति होती है यदि निम्नलिखित में से किसी भी शर्त को पूरा किया जाता है:

(क) एक व्यक्ति के पक्ष में उस अन्य उद्यम द्वारा पूर्वोक्त शक्ति के उपयोग के बिना उसे शासी निकाय के सदस्य के रूप में नियुक्त नहीं किया जा सकता; या

(ख) एक व्यक्ति की शासी निकाय के सदस्य के रूप में नियुक्ति आवश्यक रूप से उस अन्य उद्यम में उसके द्वारा धारित एक पद पर नियुक्ति के कारण है; या

(ग) शासी निकाय के सदस्य को उस अन्य उद्यम द्वारा नामनिर्दिष्ट किया जाता है।

12. एक उद्यम का अन्य उद्यम में सारभूत हित समझा जाता है, यदि वह उद्यम अन्य उद्यम में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मतदान शक्ति में 20 प्रतिशत या अधिक का हित रखता हो। इसी प्रकार किसी व्यक्ति को एक उद्यम में सारभूत हित रखते हुए समझा जायेगा यदि वह व्यक्ति प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उस उद्यम की मतदान शक्ति में 20 प्रतिशत या अधिक हित, में स्वामित्व रखता है।

13. महत्त्वपूर्ण प्रभाव अनेक तरीकों से डाले जा सकते हैं, उदाहरणार्थ, शासी निकाय में प्रतिनिधित्व द्वारा, नीति निर्माण प्रक्रिया में भागीदारी, सारवान अन्तः कम्पनी संव्यवहार, प्रबन्धकीय कार्मिकों का अन्तः परिवर्तन, या तकनीकी सूचनाओं पर निर्भरता द्वारा। महत्वपूर्ण प्रभाव अंश स्वामित्व, परिनियम या करार द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। अंश स्वामित्व के सम्बन्ध में यदि एक विनिधानकर्ता पक्षकार प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्षतः मध्यस्थों के माध्यम से, उद्यम में मतदान शक्ति का 20 प्रतिशत या अधिक धारण करता है तो यह समझा जाता है कि विनिधानकर्ता पक्षकार का महत्त्वपूर्ण प्रभाव है जब तक कि यह स्पष्ट रूप में प्रदर्शित नहीं किया जाता कि यह तथ्य नहीं है। इसके विपरीत, यदि विनिधानकर्ता पक्षकार प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्षतः मध्यस्थों के माध्यम से उद्यम में मतदान शक्ति के 20 प्रतिशत से कम का धारण करता है तो यह समझा जाता है कि विनिधानकर्ता पक्षकार का महत्त्वपूर्ण प्रभाव नहीं है जब तक कि ऐसे प्रभाव को स्पष्टतः प्रदर्शित नहीं किया जाता। किसी अन्य विनिधानकर्ता पक्षकार द्वारा पर्याप्त या बहुसंख्यक स्वामित्व अनिवार्यतः एक विनिधानकर्ता पक्षकार को महत्वपूर्ण प्रभाव रखने से वंचित नहीं करता।

स्पष्टीकरण

मध्यवर्ती का अर्थ समनुषंगी है जो कि लेखा मानक 21, समेकित वित्तीय विवरण, में परिभाषित है।

14. प्रमुख प्रबंधकीय कार्मिक वे व्यक्ति हैं जिनको उद्यम के क्रियाकलापों की योजना, निदेशन और नियंत्रण करने का उत्तरदायित्व और अधिकार है। उदाहरणतः, कम्पनी के मामले में प्रबंधकीय निदेशक, पूर्ण कालिक निदेशक, प्रबंधक तथा कोई भी व्यक्ति, जिसके आदेशों या निदेशों के अनुसार कम्पनी के निदेशक बोर्ड कार्य करने के लिए अभ्यस्त है, उनको प्रायः प्रमुख प्रबंधकीय कार्मिक समझा जाता है।

स्पष्टीकरण

केवल एक निदेशक होने के नाते एक गैर-कार्यपालक निदेशक को इस मानक के अनुसार कम्पनी का प्रमुख प्रबंधकीय व्यक्ति नहीं समझा जाता जब तक उसके पास रिपोर्टिंग उद्यम के क्रियाकलापों की योजना, निदेशन और नियंत्रण का अधिकार तथा उत्तरदायित्व न हो। इस मानक की आवश्यकताओं को गैर-कार्यपालक निदेशकों पर लागू नहीं किया जाता चाहे वह कम्पनी के वित्तीय और/या प्रचालन नीतियों के निर्णय में भागीदार है जब तक कि वह इस मानक के पैरा 3 की किसी श्रेणी के अधीन न आए।

सम्बंधित पक्षकार का मुद्दा

15. सम्बंधित पक्षकार के सम्बंध वाणिज्य और व्यवसाय के सामान्य लक्षण हैं। उदाहरणतः, उद्यम कई बार अपनी समनुषगियों या सहयुक्तों के माध्यम से अपनी क्रियाओं के अलग-अलग भागों को चलाते हैं और अन्य उद्यमों में हितों का अर्जन करते हैं - विनिधान के उद्देश्य से या व्यापारिक कारणों - से जो विनिधाता उद्यम के लिए पर्याप्त अनुपात में होते हैं ताकि वह विनिधानगृहीता उद्यम के वित्तीय और/या प्रचालन विनिश्चयों पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डाल सके तथा उन पर नियंत्रण करने में समर्थ हो सके।

16. सम्बंधित पक्षकारों के प्रकटन न होने पर यह सामान्यतः समझा जाता है कि वित्तीय विवरणों में परिलक्षित संव्यवहार आर्म्स लैंग्थ आधार पर स्वतंत्र पक्षकारों के मध्य पूर्ण होते हैं यद्यपि यह धारणा तब मान्य नहीं हो सकती है जब सम्बंधित पक्षकार सम्बंध विद्यमान होते हैं क्योंकि सम्बंधित पक्षकार ऐसे संव्यवहार कर सकते हैं जो कि गैर-सम्बंधित पक्षकार नहीं करते। यह भी हो सकता है कि संबंधित पक्षकारों के मध्य संव्यवहार उन्हीं निबंधनों और शर्तों पर क्रियान्वित न हो जिन पर गैर सम्बंधित पक्षकारों के मध्य हों। कई बार सम्बंधित पक्षकारों में हुए संव्यवहारों में कोई कीमत प्रभारित नहीं की जाती है। उदाहरणतः निःशुल्क प्रबंधकीय सेवाएं प्रदान करना, और किसी ऋणि के लिए निःशुल्क उधार देना। पूर्वोक्त को ध्यान में रखते हुए परिणामिक लेखा माप वे सब प्रस्तुत नहीं करेंगे जिसकी उनसे सामान्यतः अपेक्षा की जाती है। अतः एक सम्बंधित पक्षकार संबंध रिपोर्टिंग उद्यम की वित्तीय स्थिति और प्रचालन परिणामों को प्रभावित कर सकते हैं।

17. सम्बंधित पक्षकार संबंध, एक उद्यम की वित्तीय स्थिति और प्रचालन परिणामों को प्रभावित कर सकते हैं चाहे सम्बंधित पक्षकारों के बीच संव्यवहार न हों। इस सम्बंध का विद्यमान होना मात्र ही रिपोर्टिंग उद्यम के अन्य पक्षकार के साथ संव्यवहारों को प्रभावित करने के लिए पर्याप्त है। उदाहरणतः एक समनुषंगी कम्पनी नियंत्री कम्पनी द्वारा उसी व्यापार में लगी किसी और समनुषंगी कम्पनी के अर्जन पर व्यापारिक भागीदार से सम्बंध समाप्त कर सकती है। अनुकल्प के तौर पर, एक पक्षकार, दूसरे के नियंत्रण या महत्वपूर्ण प्रभाव के कारण, क्रियाकलापों से विरत हो सकता है उदाहरणतः एक नियंत्री कम्पनी अपनी समनुषंगी कम्पनी को अनुसंधान तथा विकास में संलगन न होने का आदेश दे सकती है।

18. चूंकि प्रबंध के लिए ऐसे प्रभावों के परिणाम का अवधारण करना जो संव्यवहार में नहीं निकलते अन्तर्निहित रूप से कठिन है। अतः ऐसे परिणामों का प्रकटन इस मानक के द्वारा अपेक्षित नहीं है।

19. कई बार, संव्यवहार ही न होते यदि सम्बन्धित पक्षकार सम्बंध विद्यमान न होते। उदाहरणार्थ, एक कम्पनी को जिसने अपनी नियंत्री कम्पनी को अपने उत्पादन का एक बड़ा भाग लागत पर बेचा है आनुकल्पिक ग्राहक न मिल पाता यदि नियंत्री कम्पनी ने वे वस्तुएँ क्रय न की होती।

प्रकटन

20. उद्यमों को विनियमित करने वाले कानून बहुधा वित्तीय विवरणों में संबंधित पक्षकारों के कुछ वर्गों के साथ हुए संव्यवहारों के प्रकटन की अपेक्षा करते हैं। विशेष रूप से एक उद्यम के निदेशकों या इस प्रकार के प्रमुख प्रबंधकीय कार्मिक के साथ संव्यवहारों पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है, मुख्य रूप से उनके पारिश्रमिक तथा उधारों पर - क्योंकि उद्यम के साथ उनके सम्बन्ध वैश्वासिक की प्रकृति के होते हैं।

21. जहां नियंत्रण विद्यमान होता है वहाँ संबंधित पक्षकार का नाम और संबंधित पक्षकार के सम्बन्धों की प्रकृति को प्रकट करना चाहिए, चाहे संबंधित पक्षकारों के साथ संव्यवहार हुए हैं या नहीं हुए हैं।

22. जहाँ रिपोर्टिंग उद्यम अन्य पक्षकार को नियंत्रित करता है या इसके द्वारा नियंत्रित होता है, यह सूचना वित्तीय विवरणों के उपयोगकर्ता के लिए महत्त्वपूर्ण है चाहे उस पक्षकार के साथ संव्यवहार हुए या नहीं। यह इसलिए क्योंकि नियंत्रण संबंधों की विद्यमानता रिपोर्टिंग उद्यम को वित्तीय या/और प्रचालन विनिश्चयों को स्वतंत्र रूप से लेने में रोक सकती है। पक्षकार का नाम तथा सम्बंधित पक्षकार के संबंधों की प्रकृति का प्रकटन, जहाँ नियंत्रण विद्यमान होते हैं, कभी-कभी किसी उद्यम की भावी सम्भावनाओं के मूल्यांकन में कम से कम उतना महत्वपूर्ण तो हो सकता है जितनी उसके वित्तीय विवरणों में प्रस्तुत वित्तीय स्थिति तथा प्रचालन परिणाम होते है। ऐसा एक सम्बंधित पक्षकार उद्यम की साख प्रतिष्ठा को स्थापित कर सकता है, उसके कच्चे माल के स्रोत और मूल्य का अवधारण कर सकता है तथा यह अवधारण कर सकता है कि किसको और किस मूल्य पर उत्पाद बेचा जाये।

23. संबंधित पक्षकारों के सम्बन्धों की विद्यमानता के दौरान यदि संबंधित पक्षकारों में कोई संव्यवहार हुए हों तो रिपोर्टिंग उद्यम को निम्नलिखित का प्रकटन करना चाहिए:

(i) ***संव्यवहार कर रहे संबंधित पक्षकार का नाम ;***

(ii) ***पक्षकारों के बीच संबंधों का वर्णन ;***

(iii) ***संव्यवहार की प्रकृति का वर्णन ;***

(iv) ***संव्यवहार की मात्रा रकम के रूप में या उपयुक्त अनुपात के तौर पर ;***

(v) ***संबंधित पक्षकार संव्यवहार के अन्य तत्व जो वित्तीय विवरणों को समझने के लिए आवश्यक हैं ;***

(vi) ***तुलन पत्र तारीख को संबंधित पक्षकारों द्वारा असंदत्त मदों की रकमें अथवा उनके उपयुक्त अनुपात तथा उस तारीख को पर ऐसे पक्षकारों द्वारा संदेय शंकास्पद ऋणों के लिए प्रावधान ;***

(vii) ***संबंधित पक्षकारों द्वारा संदेय या उनको प्राप्य ऋणि के लिए अवधि में अपलिखित की गई अथवा प्रतिलिखित की गई रकमें।***

24. निम्नलिखित सम्बंधित पक्षकार के संव्यवहारों के उदाहरण हैं जिनके संबंध में रिपोर्टिंग उद्यम द्वारा प्रकटन किए जा सकते है:

(क) माल के क्रय या विक्रय (तैयार या अधूरा);

(ख) स्थिर आस्तियों का क्रय या विक्रय;

(ग) सेवाओं को प्रदान करना या प्राप्त करना;

(घ) अभिकरण के समझौते;

(ङ) पट्टे या अवक्रय समझौते;

(च) अनुसंधान और विकास का अंतरण;

(छ) अनुज्ञप्ति करार;

(ज) वित्त ऋणि और रोकड़ या वस्तु के रूप में इक्विटी अंशदान

सहित);

(झ) गारंटी और संपार्श्विक; और

(ञ) प्रबंधकीय अनुबंध, कर्मचारी प्रतिनियुक्ति सहित।

25. पैरा 23 (V) वित्तीय विवरणों को समझने के लिए आवश्यक सम्बंधित पक्षकार के संव्यवहारों के किन्हीं अन्य तत्वों के प्रकटन की अपेक्षा करता है। ऐसे किसी प्रकटन का एक उदाहरण इस बात का संकेत देना होगा कि एक प्रमुख आस्ति का अंतरण ऐसी रकम पर हुआ है जो साधारणतः वाणिज्यिक शर्तों पर वसूल होने वाली रकम से बहुत भिन्न है।

26. एक ही प्रकृति की मदों के योग को संबंधित पक्षकार के प्रकार के द्वारा प्रकट किया जा सकता है जब तक कि रिपोर्टिंग उद्यम के वित्तीय विवरणों पर संबंधित पक्षकर के संव्यवहार के प्रभाव को समझने के लिए पृथक्क प्रकटन आवश्यक न हो।

स्पष्टीकरण:

संबंधित पक्षकार के प्रकार का अर्थ उपर्युक्त पैरा 3 में वर्णित प्रत्येक संबंधित पक्षकार के संबंध हैं।

27. व्यक्तिगत सम्बंधित पक्षकार के साथ विशेष संव्यवहार के वर्णन का प्रकटन बहुधा इतनी अधिक मात्रा का हो जाता है कि उनको समझना सरल नहीं होता। तद्नुसार एक ही प्रकृति की मदों को सम्बंधित पक्षकार के प्रकार द्वारा कुल रकम में प्रकट किया जा सकता है। लेकिन यह एक ऐसे तरीके से नहीं किया जाता कि महत्त्वपूर्ण संव्यवहारों का महत्व अस्पष्ट हो जाये। अतः माल के क्रय या विक्रय को स्थिर आस्तियों के क्रयों तथा विक्रयों में नहीं जोड़ा जाता। न ही किसी व्यक्तिगत पक्षकार के साथ कोई सारवान सम्बंधित पक्षकार संव्यवहार को एक समेकित प्रकटन में जोड़ा जाता है।

स्पष्टीकरण:

(क) सारवानता प्राथमिक रूप से प्रत्येक मामले के तथ्यों और परिस्थितियों पर निर्भर करती है। यह निर्णय लेने में कि क्या एक मद या मदों का योग सारवान है, मद (मदों) की प्रकृति तथा आकार का आंकलन एक साथ किया जाता है। परिस्थितियों पर निर्भर करते हुए मद की प्रकृति या आकार निर्धारक तत्व हो सकता है। आकार के संबंध में इस पैरा के अनुसार सारवानता के परीक्षण को लागू करने के उद्देश्य से साधारणतः एक सम्बंधित पक्षकार संव्यवहार जिसकी रकम जो कि उसी प्रकार के सम्बंधित पक्षकार संव्यवहार के योग के 10 % से अधिक हो (जैसे कि माल का क्रय), उसे सारवान माना जाता है जब तक तथ्यों तथा परिस्थितियों के आधार पर यह निष्कर्ष न निकाला जाए कि 10 % से भी कम के संव्यवहार भी सारवान हो सकते हैं। जहाँ तक प्रकृति का संबंध है सामान्यतयः सम्बंधित पक्षकार संव्यवहार जिनको रिपोर्टिंग उद्यम के व्यापार के सामान्य अनुक्रम में नहीं लिया जाता को सारवान माना जाता हैं, मामले के तथ्यों तथा परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए।

(ख) पैरा 23 तथा पैरा 26 में अपेक्षित प्रकटन का तरीके को इस मानक से संलग्न दृष्टांत में स्पष्ट किया गया है।

दृष्टांत

टिप्पण: *यह दृष्टांत लेखा मानक का भाग नहीं है। इसका उद्देश्य लेखा मानक के अर्थ को स्पष्ट करने में सहायता देना है।*

लेखा मानक 18 के पैरा 23 और 26 द्वारा अपेक्षित प्रकटन का तरीका नीचे दिया गया है। यह नोट किया जा सकता है कि नीचे दिया गया प्रारूप केवल एक उदाहरण मात्र है सम्पूर्ण नहीं है।

	नियंत्री कम्पनी	समनुषंगी	साथी समनुषंगी	प्रमुख प्रबंधन कार्मिक	प्रमुख प्रबंधन कार्मिक के सम्बन्धी	कुल
माल का क्रय						
माल का विक्रय						
स्थिर आस्तियों का क्रय						
स्थिर आस्तियों का विक्रय						
सेवाओं को प्रदान करना						
सेवाओं को प्राप्त करना						
अभिकरण समझौते						
पट्टा या अवक्रय समझौते						
अनुसंधान और विकास का अंतरण						
अनुज्ञप्ति करार						
वित्त (उधार तथा रोकड़ अथवा वस्तु रूप में इक्विटी अंशदान सहित)गारंटी और संपार्श्विक						
कर्मचारियों की प्रतिनियुक्ति सहित प्रबन्धकीय संविदा						

IndiaCode

टिप्पण

सम्बन्धित पक्षकारों के नाम तथा संबंधों का वर्णन:

1. नियंत्री कम्पनी	ए. लि.
2. समनुषंगी	वि. लि. और सी (प्रा.) लि.
3. साथी समनुषंगी	डी लि. और क्यू लि.
4. सहयुक्त	एक्स. लि., वाई लि. और जैड (प्रा.) लि.
5. प्रमुख प्रबंधकीय कार्मिक	श्री वाई और श्री जैड
6. प्रमुख प्रबन्धकीय कार्मिक के सम्बन्धी	श्रीमति वाई (श्री वाई की पत्नी), श्री एफ (श्री जैड के पिता)

लेखा मानक 19

पट्टे*

*(इस लेखा मानक में कुछ **मोटे-तिरछे** टाइप और कुछ सीधे टाईप में व्यवस्थित पैरा सम्मिलित है, जिनका समान प्राधिकार है। मोटे तिरछे टाइप में दिये गए पैरा मुख्य सिद्धांत उपदर्शित करते हैं। इस लेखा मानक को अधिसूचना के प्रति उपाबंध के भाग क में अतंर्विष्ट साधारण अनुदेशों के संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिये।)*

उद्देश्य

इस मानक का प्रयोजन पट्टेदारों तथा पट्टाकर्ताओं द्वारा वित्त पट्टे और प्रचालन पट्टों के संबंध में अपनायी जाने वाली समुचित लेखा नीतियाँ और प्रकटनों को विहित करना है।

कार्यक्षेत्र

1. यह मानक सभी पट्टों के लेखा में निम्नलिखित से भिन्न पर लागू होना चाहिए:

(क) प्राकृतिक संसाधन जैसे गैस, तेल, काष्ठ, धातु और अन्य खनिज अधिकारों की खोज और प्रयोग के लिए पट्टा करार; और

(ख) चलचित्रों, वीडियो रिकोर्डिंग, नाटकों, पांडुलिपियों, पेटेंट तथा प्र प्रतिलिप्यिधिकार जैसी मदों के अनुज्ञापन करार; और

(ग) भूमि के उपयोग हेतु पट्टा करार।

2. यह मानक ऐसे करारों पर लागू होता है जिसके द्वारा आस्तियों के प्रयोग का अधिकार अंतरित होता है यद्यपि, इन आस्तियों के प्रचालन या रखरखाव से सम्बंधित पर्याप्त सेवाओं की पट्टेदार से अपेक्षा है। इसके विपरीत यह मानक ऐसे करारों पर लागू नहीं होता जो सेवाओं के लिए ऐसे संविदा है जो आस्तियों के प्रयोग के अधिकार का अंतरण संविदा के एक पक्षकार से दूसरे पक्षकार को नहीं करता।

परिभाषाएँ

3. इस मानक में निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग, विनिर्दिष्ट अर्थों में किया गया है:

3.1 <u>पट्टा</u> एक ऐसा करार है जिसके द्वारा पट्टाकर्ता, एक संदाय या संदायों की एक श्रृंखला के बदले, किसी आस्ति के प्रयोग करने का अधिकार करार की गई अवधि के लिए पट्टेदार को अंतरित करता है।

3.2 <u>वित्त पट्टा</u> ऐसा पट्टा है जो आस्ति के स्वामित्व से संबंधित सभी जोखिमों और प्रतिफलों को सारभूत रूप से अंतरित कर देता है।

3.3 <u>प्रचालन पट्टा</u> वित्तीय पट्टा से भिन्न एक पट्टा है।

3.4 <u>गैर-रद्दकरणीय पट्टा</u> वह पट्टा है जो कि निम्नलिखित दशाओं में ही रद्द किया जा सकता है:

(क) किसी दूरस्थ आकस्मिक घटना के उत्पन्न होने पर; या

(ख) पट्टेदार की अनुमति से; या

(ग) यदि पट्टेदार उसी पट्टाकर्ता से उसी या समतुल्य आस्ति के लिए नया पट्टा करता है; या

(घ) पट्टेदार द्वारा अतिरिक्त रकम के संदाय पर जिससे कि प्रारंभ में ही पट्टा जारी रहना युक्तियुक्त रूप से निश्चित हो।

3.5 <u>पट्टे का प्रारंभ</u>, एक पट्टा करार की तारीख और पट्टे के मुख्य उपबन्धों के पक्षकारों द्वारा प्रतिबद्धता की तारीख से पूर्वतर तारीख होती है।

---

* लेखा मानक 19 को कम्पनी (लेखा मानक) नियम, 2006 के भाग के रूप में विहित करने की अधिसूचना की प्रभावी तारीख से पूर्व पट्टों पर आस्तियों के संबंध में इस मानक का लागू होना, 2001 में भारतीय चार्टर्ड एकाउंटेन्ट संस्थान द्वारा जारी लेखा मानक 19 के आधार पर अवधारित होगा।

3.6 पट्टा अवधि, वह गैर-रद्दकरणीय अवधि जिसके लिए पट्टेदार ने पट्टे पर आस्ति को लेने के लिए करार किया है और कोई आगे की अवधि है जिसके लिए पट्टेदार के पास आस्ति के पट्टे को, एक निश्चित संदाय पर अथवा संदाय के बिना, जारी रखने का विकल्प है, ऐसा विकल्प जिसके लिए पट्टे के आरम्भ में यह युक्तियुक्त रूप से निश्चित है कि पट्टेदार उसका उपयोग करेगा।

3.7 न्यूनतम पट्टा संदाय पट्टा अवधि में वे संदाय हैं जो पट्टेदार को करने हैं अथवा उससे करने की अपेक्षा की जा सकती है, जिसमें पट्टेदार द्वारा चुकाई जाने वाले आकस्मिकता किराया, सेवाओं की लागतें तथा और उनकी प्रतिपूर्ति सम्मिलित नही है, और इनके साथ हैं:

(क) पट्टेदार के मामले में, पट्टेदार द्वारा या उसकी ओर से प्रत्याभूत कोई अवशिष्ट मूल्य; या

(ख) पट्टाकर्ता के मामले में, कोई अवशिष्ट मूल्य जिसकी प्रत्याभूति पट्टाकर्ता को निम्नलिखित द्वारा दी गई है:

(i) *पट्टेदार द्वारा या उसकी ओर से; या*

(ii) *एक स्वतंत्र तृतीय पक्षकार द्वारा जो इस प्रत्याभूति की पूर्ति करने के लिए वित्तीय रूप से समर्थ है।*

तथापि, यदि पट्टेदार के पास आस्ति को ऐसी कीमत पर क्रय करने का विकल्प है जो कि विकल्प प्रयोग करने की तारीख को पर उचित मूल्य से काफी कम है और पट्टे के आरंभ पर यह युक्तियुक्त रूप में निश्चित है कि विकल्प का प्रयोग किया जाएगा तो न्यूनतम पट्टा संदाय में पट्टा अवधि में संदेय न्यूनतम संदाय और इस क्रय विकल्प का प्रयोग करने के लिए अपेक्षित संदाय समाविष्ट है।

3.8 उचित मूल्य वह रकम हैं जिसके लिए एक आर्म्स लैंथ संव्यवहार में जानकार तथा इच्छुक पक्षकारों के बीच आस्ति का विनिमय या दायित्व का निपटान किया जा सके।

3.9 आर्थिक जीवन:

(क) या तो वह अवधि है जिसमें किसी आस्ति का एक या अधिक उपयोगकर्ता द्वारा आर्थिक रूप से उपयोग करना प्रत्याशित है; या

(ख) उत्पादन या इसी प्रकार की इकाइयों की संख्या हैं जिनको एक या अधिक उपयोगकर्ता द्वारा आस्ति से प्राप्त करना प्रत्याशित है।

3.10 पट्टाधीन आस्ति का उपयोगी जीवन:

(क) या तो वह अवधि है जिसमें पट्टेदार द्वारा पट्टा आस्ति का उपयोग करना प्रत्याशित है; या

(ख) उत्पादन या इसी प्रकार की इकाइयों की संख्या जिसे पट्टेदार द्वारा आस्ति के उपयोग से प्राप्त करना प्रत्याशित है।

3.11 पट्टाधीन आस्ति का अविशिष्ट मूल्य पट्टा अवधि के अंत में आस्ति का अनुमानित उचित मूल्य है।

3.12 प्रत्याभूत अवशिष्ट मूल्य:

(क) पट्टेदार के मामले में, अवशिष्ट मूल्य का वह भाग है जिसे पट्टेदार द्वारा या उस की ओर से एक पक्षकार द्वारा प्रत्याभूत किया गया है (प्रत्याभूत रकम वह अधिकतम रकम है जो कि किसी भी स्थिति में संदेय हो सकती है); और

(ख) पट्टाकर्ता के मामले में, अवशिष्ट मूल्य का वह भाग है जिसकी, पट्टेदार द्वारा या उसकी ओर से, अथवा अन्य स्वतंत्र तृतीय पक्षकार द्वारा जो प्रत्याभूति के अधीन दायित्वों के निपटारे में वित्तीय रूप से समर्थ हो, प्रत्याभूति दी गयी है।

3.13 पट्टाधीन आस्ति का अप्रत्याभूत अवशिष्ट मूल्य वह रकम है जिससे आस्ति का अवशिष्ट मूल्य उसकी प्रत्याभूत अवशेष मूल्य से अधिक हो।

3.14 पट्टे में सकल विनिधान पट्टाकर्ता के दृष्टिकोण से वित्त पट्टे के अन्तर्गत न्यूनतम पट्टा संदायों और पट्टाकर्ता को प्रोद्भूत होने वाले किन्ही अप्रत्याभूत अवशिष्ट मूल्य का योग है।

3.15 <u>अनर्जित वित्त आय</u> निम्नलिखित के बीच अन्तर है:

(क) पट्टे में सकल विनिधान; और

(ख) निम्नलिखित का वर्तमान मूल्य

(i) पट्टाकर्ता के दृष्टिकोण से एक वित्त पट्टे के अधीन न्यूनतम पट्टा संदेय ; और

(ii) पट्टाकर्ता को प्रोद्भूत कोई अप्रत्याभूत अवशिष्ट मूल्य, पट्टे में निहित ब्याज दर पर।

3.16 पट्टे में शुद्ध विनिधान अनर्जित वित्त आय घटाकर पट्टे में सकल विनिधान है।

3.17 पट्टे में निहित ब्याज दर पट्टे के आरंभ पर, मितिकाटे की वह दर है जो निम्नलिखित के वर्तमान मूल्य के योग को:

(क) पट्टाकर्ता के दृष्टिकोण से वित्त पट्टा के अधीन न्यूनतम पट्टा संदाय ; और

(ख) पट्टाकर्ता को प्रोद्भूत कोई अप्रत्याभूत अवशिष्ट मूल्य, पट्टाधीन आस्ति के उचित मूल्य के बराबर करती है।

3.18 <u>पट्टेदार की वृद्धिगत ऋणि ब्याज दर</u> ब्याज की वह दर है जिसका पट्टेदार को समान प्रकार के पट्टे पर संदाय करना पड़ता है या यदि वह अवधारित नहीं हो सकती है तो वह दर जो पट्टे के प्रारंभ पर उन्हीं शर्तों और वैसी ही प्रतिभूतियों पर आस्ति के क्रय के लिए आवश्यक निधि उधार लेने के लिए पट्टेदार को उपगत करनी होगी।

3.19 <u>आकस्मिक किराया</u> पट्टा संदायों का वह भाग है जो रकम के रूप से नियत नहीं होता परन्तु केवल समय के बीतने से भिन्न किसी अन्य बात पर आधारित होता है (उदाहरणतः विक्रय के प्रतिशत, प्रयोग की रकम, मूल्य सूचकांक, ब्याज की बाजार दरें)।

4. एक पट्टे की परिभाषा में, किसी आस्ति को किराये पर लेने के करार भी सम्मिलित है जिसमें एक ऐसा उपबन्ध सम्मिलित होता है जो किरायेदार को करार शर्तों को पूरा करने पर आस्ति को अर्जित करने का विकल्प देता है। ये करार सामान्यतः अवक्रय करार के नाम से ज्ञात हैं। अवक्रय करार में ऐसे करार सम्मिलित होते हैं जिसके अन्तर्गत अस्तियों का स्वत्व किराएदार को अंतिम किश्त का संदाय होने पर अंतरित होता है और किराएदार को स्वत्व के इस प्रकार के अंतरण से पूर्व किसी भी समय इस करार को रद्द करने का अधिकार होता है।

पट्टों का वर्गीकरण

5. इस मानक में अपनाया गया पट्टों का वर्गीकरण उस परिमाण पर आधारित होता है जिस पर पट्टेदार या पट्टाकर्ता के लिए पट्टे पर ली गई आस्ति के स्वामित्व के साथ जोखिम तथा पारिश्रमिक आनुषंगिक होते हैं। जोखिमों में निष्क्रिय क्षमता या प्रौद्योगिकी अप्रचलन से उत्पन्न हानि तथा बदलती आर्थिक परिस्थितियों के कारण आवर्त्त में परिवर्तन की सम्भावनाएँ, सम्मिलित होती हैं। पारिश्रमिक को आस्ति के आर्थिक जीवन के दौरान लाभकारी क्रियाकलाप की सम्भावना तथा अवशिष्ट मूल्य की वसूली या मूल्य में वृद्धि से लाभ की सम्भावना के रूप में लिया जा सकता है।

6. एक पट्टे को वित्त पट्टे के रूप में तब वर्गीकृत किया जाता है जब यह स्वामित्व से जुड़े सभी पुरस्कारों तथा जोखिमों को पर्याप्त रूप में अंतरित करता है। हक का अंतरण अन्ततः हो भी सकता है और नहीं भी। एक पट्टे को प्रचालन पट्टे के रूप में तब वर्गीकृत किया जाता है जब यह पर्याप्त रूप में स्वामित्व से जुड़ी सभी जोखिमों तथा पुरस्कारों को अंतरित नहीं करता।

7. चूँकि पट्टाकर्ता और पट्टेदार के बीच संव्यवहार दोनों पक्षकारों के लिए एक ही करार पर आधारित होते हैं इसलिए सतत् परिभाषाओं को प्रयोग करना उपयुक्त है। दोनों पक्षकारों की अलग-अलग परिस्थितियों के प्रति इन परिभाषाओं को लागू करने के परिणामस्वरूप कभी-कभी पट्टाकर्ता तथा पट्टेदार द्वारा एक ही पट्टे को अलग-अलग तरीके से वर्गीकृत किया जा सकता है।

8. कोई पट्टा वित्त पट्टा है या एक प्रचालन पट्टा यह उसके प्रारूप पर निर्भर न हो कर संव्यवहार के सार पर निर्भर करता है। ऐसी परिस्थितियों के उदाहरण जो सामान्यतः एक पट्टे को किसी वित्त पट्टे के रूप में वर्गीकृत करेंगी इस प्रकार हैं:

(क) पट्टे में, पट्टा अवधि के अन्त पर पट्टेदार को आस्ति के स्वामित्व का अंतरण होता है;

(ख) पट्टेदार के पास विकल्प की प्रव्योक्तव्य तारीख को पर उचित मूल्य से पर्याप्त रूप से कम मूल्य पर आस्ति को क्रय करने का इस प्रकार विकल्प है कि पट्टे के आरम्भ पर यह युक्तियुक्त रूप से निश्चित है कि विकल्प का उपयोग किया जाएगा;

(ग) पट्टा अवधि, आस्ति के आर्थिक जीवन के अधिकांश भाग के लिए है भले ही हक का अंतरण नहीं किया गया हो;

(घ) पट्टे के आरम्भ में, न्यूनतम पट्टा संदायों का वर्तमान मूल्य कम से कम पट्टा आस्ति के उचित मूल्य के सारभूत रूप से बराबर है; और

(ङ) पट्टा आस्ति विशिष्ट प्रकृति की है जिसको केवल पट्टेदार ही बड़े उपांतरण के बिना उपयोग कर सकता है।

9. परिस्थितियों के ऐसे संकेत जो पृथक रूप से या संयोजन में एक पट्टे को वित्त पट्टे के रूप वर्गीकृत भी कर सकते हैं, इस प्रकार हैं:

(क) यदि पट्टेदार, पट्टे को रद्द कर सकता है, तो रद्दकरण से सहबद्ध पट्टाकर्ता की हानि पट्टेदार द्वारा ही वहन की जाएगी;

(ख) अवशिष्ट के उचित मूल्य में उतार-चढ़ाव से उत्पन्न हानि या लाभ पट्टेदार, पर आता है, (उदाहारणार्थ किराया कटौती के रूप में जो पट्टे के अंत में अधिकांश विक्रय आगम के बराबर है); और

(ग) पट्टेदार बाजार किराये से सारभूत रूप से कम किराये पर द्वितीयक अवधि के लिए पट्टे को जारी रख सकता है।

10. पट्टे के प्रारंभ पर ही पट्टे का वर्गीकरण किया जाता है। यदि किसी समय पट्टेदार और पट्टाकर्ता पट्टे का नवीनीकरण करने से भिन्न रूप में पट्टे के उपबंधों में परिवर्तन करने के लिए सहमत हो जिससे पट्टे के प्रारम्भ में पैरा 5 से 9 में मानदण्डों के अन्तर्गत पट्टे के एक विभिन्न वर्गीकरण का अस्तित्व सामने आता यदि परिवर्तित शर्तें प्रारम्भ से ही प्रभावी होती तो पुनरीक्षित करार को उसकी पुनरीक्षित अवधि के लिए नये करार के रूप में माना जाता है। प्राक्कलनों में परिवर्तन (उदाहरणार्थ पट्टाधृत आस्ति के आर्थिक जीवन या मूल्य के अनुमानों में परिवर्तन) या परिस्थितियों में परिवर्तन से (उदाहरण के लिए, पट्टेदार की व्यतिक्रम) लेखा उद्देश्यों के लिए किसी पट्टे का नया

वर्गीकरण नहीं होता है।

पट्टेदारों के वित्तीय विवरणों में पट्टे

वित्त पट्टे

11. वित्त पट्टे के आरम्भ पर पट्टेदार को पट्टे को एक आस्ति और दायित्व के रूप में अभिज्ञात करना चाहिए। यह अभिज्ञान पट्टे के प्रारंभ पर पट्टाधृत आस्ति के उचित मूल्य की रकम के बराबर होना चाहिए। तथापि, यदि पट्टाधृत आस्ति का उचित मूल्य पट्टेदार के दृष्टिकोण से न्यूनतम पट्टा भुगतानों के वर्तमान मूल्य से अधिक हो, तो आस्ति तथा दायित्व की अभिलिखित रकम पट्टेदार के दृष्टिकोण से पट्टे के न्यूनतम भुगतानों के वर्तमान मूल्य के बराबर होनी चाहिए। न्यूनतम पट्टा भुगतानों के वर्तमान मूल्य की गणना के लिए मितिकाटा दर, पट्टे में निहित ब्याज दर होती है यदि यह अवधारण व्यावहारिक हो और यदि नहीं तो पट्टेदार की वृद्धिगत उधार दर का प्रयोग करना चाहिए।

उदाहरण

(क) एक उद्यमी (पट्टेदार) 1 जनवरी, 2000 को पट्टा कम्पनी (पट्टाकर्ता) से पट्टे पर एक मशीनरी लेता है। पट्टे की अवधि में, मशीनरी का सम्पूर्ण आर्थिक जीवन जो कि 3 वर्ष है, आ जाता है। 1 जनवरी, 2000 को मशीन का उचित मूल्य 2,35,500 रु. है। पट्टा करार में पट्टेदार से 31 दिसम्बर, 2000 से प्रारम्भ कर के प्रतिवर्ष 1,00,000 रु. की रकम का भुगतान अपेक्षित है। पट्टेदार ने पट्टाकर्ता को 31 दिसम्बर, 2002 को 17,000 रु. के अवशिष्ट मूल्य की गारण्टी दी है। लेकिन पट्टाकर्ता अनुमान लगाता है कि 31 दिसम्बर, 2002 को मशीन का अवशिष्ट मूल्य केवल 3,500 रु. होगा।

पट्टे में निहित ब्याज दर 16 प्रतिशत (लगभग) है। इसकी गणना निम्न सूत्र का प्रयोग करके की जाती है:

उचित मूल्य= $\frac{ALR}{(1+r)^1} + \frac{ALR}{(1+r)^2} + ... + \frac{ALR}{(1+r)^n} + \frac{ALR}{(1+r)^m}$

जहाँ ALR है वार्षिक पट्टा किराया,

RV अवशिष्ट मूल्य है (प्रत्याभूत और अप्रत्याभूत दोनों),

n पट्टा अवधि है

r पट्टे में निहित ब्याज दर है।

पट्टेदार के दृष्टिकोण से पट्टा भुगतानों का न्यूनतम वर्तमान मूल्य 2,35,500 रु. है।

पट्टेदार पट्टा अवधि के दौरान संदायों के वर्तमान मूल्य (प्रत्याभूत अवशिष्ट मूल्य सहित) को दर्शित मशीनरी को 2,35,500 रु. की आस्ति के रूप में अभिलिखित करने के साथ तत्समान दायित्व के रूप में अभिलिखित करेगा।

(ख) उपरोक्त उदाहरण में, मान लें पट्टाकर्ता अनुमान लगाता है कि 31 दिसम्बर, 2002 को मशीन का अवशिष्ट मूल्य 17,000 रु. होगा। परन्तु, पट्टेदार, केवल 5,000 रु. के अवशिष्ट मूल्य की प्रत्याभूति देता है।

इस स्थिति में पट्टे में निहित ब्याज दर 16 प्रतिशत (लगभग) में कोई परिवर्तन नहीं होगा। पट्टे में निहित ब्याज दर का प्रयोग करके, पट्टेदार के दृष्टिकोण से पट्टा भुगतानों का न्यूनतम वर्तमान मूल्य 2,27,805 रु. होगा। चूँकि यह रकम पट्टाधृत आस्ति के उचित मूल्य से (2,35,500 रु.) से कम है, पट्टेदार आस्ति को तथा पट्टे से उत्पन्न दायित्व को 2,27,805 रु. पर अभिज्ञात करेगा।

यदि पट्टे में निहित ब्याज दर का पट्टेदार को ज्ञान नहीं है, तो पट्टेदार के दृष्टिकोण से पट्टा भुगतानों का न्यूनतम वर्तमान मूल्य पट्टेदार की वृद्धिगत उधार दर का प्रयोग कर के संगणित किया जायेगा।

12. संव्यवहार तथा अन्य घटनाओं को उनके सार तथा वित्तीय वास्तविकता के अनुसार लेखाबद्ध तथा प्रस्तुत किया जाएगा न कि मात्र उनके विधिक स्वरूप के अनुसार। यदि एक पट्टा करार का विधिक स्वरूप ऐसा हो कि पट्टेदार को पट्टा आस्ति पर कोई विधिक अधिकार प्राप्त न हो परन्तु वित्त पट्टों में सारभूत तथा वित्तीय वास्तविकता यह है कि पट्टेदार पट्टाधृत आस्ति के उपयोग के आर्थिक लाभ उनके आर्थिक जीवन के अधिकांश भाग के लिए उस अधिकार के लिए उतनी रकम का संदाय करने की बाध्यता लेने के बदले अर्जित करता है जो आस्ति के उचित मूल्य और संबंधित वित्तीय प्रभार के लगभग है।

13. यदि ऐसे पट्टा संव्यवहारों को पट्टेदार के तुलनपत्र में नहीं दर्शाया जाता है, तो उद्यम के आर्थिक संसाधनों तथा बाध्यताओं का स्तर कम दिखाया जाता है, जिससे वित्तीय अनुपात विकृत होते है। अतः उचित होगा कि भावी पट्टा भुगतानों का संदाय करने के लिए पट्टेदार के तुलन पत्र में वित्त पट्टा को आस्ति तथा दायित्व दोनों के रूप में अभिज्ञात किया जाना चाहिए। पट्टे के प्रारम्भ होने पर, भावी पट्टा भुगतानों के लिए आस्ति तथा दायित्व को तुलन पत्र में एक ही रकम पर अभिज्ञात किया जाता है।

14. पट्टाधृत आस्ति के लिए दायित्व को वित्तीय विवरणों में पट्टाधृत आस्ति से कटौती के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जाना चाहिए। पट्टाधृत आस्ति के लिए दायित्व को यथास्थिति चालू दायित्व या दीर्घकालीन दायित्व, तुलनपत्र में पृथक रूप से प्रस्तुत करना चाहिए।

15. प्रारम्भिक प्रत्यक्ष लागतें बहुधा विशिष्ट पट्टा क्रियाकलापों के सम्बंध में उपगत होती हैं जैसे पट्टे की व्यवस्था की बातचीत करने और सुनिश्चित करने में होती है। वित्त पट्टे के लिए पट्टेदार द्वारा किए गए क्रियाकलापों के कारण प्रत्यक्षतः पहचानी जा सकने वाली लागत पट्टे के अन्तर्गत एक आस्ति के रूप में अभिज्ञात रकम के एक भाग के रूप में सम्मिलित की जाती है।

16. पट्टा भुगतानों को वित्त प्रभार तथा बकाया दायित्व में कमी के बीच आबंटित करना चाहिए। वित्तीय प्रभारों को पट्टा अवधि के दौरान इस प्रकार से अवधियों में आबंटित किया जाना चाहिए जिससे कि प्रत्येक अवधि के लिए दायित्व की अतिशेष रकम पर ब्याज की सतत् आवधिक दर प्रस्तुत हो सके।

उदाहरण

पैरा 11 में दिखाए गए उदाहरण (क) में, पट्टा संदायों को इस प्रकार से वित्त प्रभार तथा बकाया दायित्व में कमी के बीच पट्टेदार द्वारा आबंटित किया जायेगा:

वर्ष	वित्त प्रभार (रु.)	संदाय (रु.)	बकाया दायित्व में कमी (रु.)	बकाया दायित्व (रु.)
वर्ष 1 (जनवरी 1)				2,35,500
(दिसम्बर 31)	37,680	1,00,000	62,320	1,73,180
वर्ष 2 (दिसम्बर 31)	27,709	1,00,000	72,291	1,00,889
4 वर्ष 3 (दिसम्बर 31)	16,142	1,00,000	83,858	17,031*

17. व्यवहार में पट्टा अवधि के दौरान अवधियों पर वित्त प्रभार के आबंटन में गणनाओं को सरल करने के लिए लगभग राशिकारण का उपयोग किया जा सकता है।

18. एक वित्त पट्टा प्रत्येक लेखा अवधि के लिए आस्ति पर अवक्षयण व्यय तथा वित्त व्यय को जन्म देता है। पट्टाधृत आस्ति की अवक्षयण नीति, स्वामित्वाधीन अवक्षयी आस्ति की अवक्षयण नीति के अनुरूप होनी चाहिए तथा अभिज्ञात अवक्षयण की गणना, लेखामानक 10, संपत्ति, संयंत्र और उपस्कर, द्वारा प्रदत्त आधार पर करनी चाहिए। यदि इस बात की युक्तियुक्त रूप से निश्चितता नहीं है कि पट्टा अवधि की समाप्ति पर पट्टेदार स्वामित्व प्राप्त कर लेगा तो आस्ति को पट्टे की अवधि या इसके उपयोगी जीवन पर, इनमें से जो भी कम हो पूर्ण रूप से अवक्षयित कर देना चाहिए।

19. पट्टाधृत आस्ति की अवक्षयी रकम को अपेक्षित उपयोग की अवधि के दौरान स्वामित्वाधीन अवक्षयी आस्तियों पर अपनाई गयी अवक्षयण की नीति के अनुरूप व्यवस्थित आधार पर प्रत्येक लेखा अवधि पर आबंटित कर देना चाहिए। यदि यह युक्तियुक्त रूप में निश्चित है कि पट्टा अवधि के अंत में पट्टेदार स्वामित्व प्राप्त कर लेगा, तो आस्ति के प्रयोग की अवधि ही आस्ति का उपयोगी जीवन है अन्यथा आस्ति को पट्टा अवधि या उपयोगी जीवन इनमें से जो भी कम हो, उनके दौरान अवक्षयित किया जाता है।

20. किसी एक अवधि में आस्ति के अवक्षयण व्यय तथा वित्त व्यय का योग शायद ही उस अवधि के लिए संदेय पट्टे के भुगतानों के समान होता है। अतः संदेय पट्टा भुगतानों को लाभ और हानि विवरण में व्यय के रूप में अभिज्ञात करना अनुपयुक्त होगा। इसी प्रकार से पट्टे के प्रारंभ के पश्चात् आस्ति तथा सम्बंधित दायित्व की रकम बराबर नहीं होती है।

21. यह अवधारित करने के लिए कि क्या एक पट्टा आस्ति ह्रासित हो चुकी है, एक उद्यम लेखा मानक 28, आस्तियों के ह्रास को लागू करता है जो उन अपेक्षाओं को उपवर्णित करता है कि किस प्रकार उद्यम को किसी आस्ति की कैरिंग रकम की समीक्षा करनी चाहिए, कैसे उसको एक आस्ति की वसूली योग्य रकम का अवधारण करना चाहिए तथा कब ह्रास हानि को अभिज्ञात करना चाहिये या उलटना चाहिए।

22. पट्टेदार को लेखा मानक 10, की अपेक्षाओं के अतिरिक्त संपत्ति, संयंत्र और उपस्कर, तथा शासी परिनियम वित्त पट्टों के लिए निम्नलिखित प्रकटन करने चाहिए:

(क) स्वामित्वाधीन आस्तियों से अलग की गई वित्त पट्टे के अन्तर्गत अर्जित आस्तियाँ;

(ख) आस्तियों की प्रत्येक श्रेणी के लिए तुलन पत्र तारीख को शुद्ध कैरिंग रकम;

---

* इस अंक और प्रत्याभूत अवशिष्ट मूल्य के बीच अन्तर (17,000 रु.) पट्टा में निहित ब्याज दर की संगणना में लगभग राशिकरण के कारण है।

(ग) तुलनपत्र तारीख को न्यूनतम पट्टा संदाय तथा उसके वर्तमान मूल्य के बीच समाधान। इसके अतिरिक्त एक उद्यम को तुलन पत्र की तारीख को निम्न अवधियों में से प्रत्येक के लिए न्यूनतम पट्टा संदाय का योग तथा उसके वर्तमान मूल्य को प्रकट करना चाहिए:

(i) जो एक वर्ष के पश्चात् न हो;

(ii) जो एक वर्ष के पश्चात् किन्तु पांच वर्षों के पश्चात् न हो;

(iii) जो पांच वर्षों के पश्चात् हो;

(घ) अवधि के लाभ और हानि के विवरण में व्यय के रूप में अभिज्ञात आकस्मिक किराये।

(ङ) तुलन-पत्र तारीख को गैर-रद्दकरणीय उपपट्टा के अधीन प्राप्त किए जाने के लिए प्रत्याशित उपपट्टा संदायों का योग; और

(च) पट्टेदार की महत्वपूर्ण पट्टा व्यवस्था का सामान्य वर्णन जिसमें निम्नलिखित सम्मिलित हैं, परन्तु निम्नलिखित तक सीमित नहीं हैं;

(i) वह आधार जिस पर आकस्मिक किराया संदाय अवधारित किए जाते है;

(ii) नवीनीकरण या क्रय विकल्प के निबंधन और विद्यमान तथा वृद्धिकरण खंड;

(iii) *पट्टा ठहराव द्वारा अधिरोपित गए निबंधन जैसे, लाभांश, अतिरिक्त ऋणि तथा आगे के पट्टा से संबंधित निबंधन:*

परन्तु लघु और मध्यम आकार कम्पनी के पास, जिसे कि अधिसूचना में परिभाषित किया गया है उप-पैरा (ग), (ङ) और (च) का पालन न करने का विकल्प है।

प्रचालन पट्टे

23. प्रचालन पट्टे के अन्तर्गत पट्टा संदाय को लाभ और हानि के विवरण में पट्टा अवधि के दौरान सरल रेखा आधार पर एक व्यय के रूप में अभिज्ञात किया जाना चाहिए जब तक कि उपयोगकर्ता के लाभ के काल पैटर्न का और अधिक प्रतिनिधित्व करने वाला अन्य व्यवस्थित आधार न हो।

24. प्रचालन पट्टों के लिए पट्टा संदायों (सेवाओं की लागतें जैसे कि बीमा तथा रख रखाव को छोड़ते हुए) को लाभ और हानि विवरण में पट्टा अवधि के दौरान सरल रेखा आधार पर एक व्यय के रूप में अभिज्ञात किया जाना चाहिए जब तक कि उपयोगकर्ता के लाभ के काल पैटर्न को और अधिक प्रतिनिधित्व करता हुआ अन्य व्यवस्थित आधार न हो, भले ही संदाय उस आधार पर न हो।

25. पट्टेदार को प्रचालन पट्टों के लिए निम्नलिखित प्रकटन करने चाहिए:

(क) निम्नलिखित प्रत्येक अवधि के लिए गैर-रद्दकरणीय प्रचालन पट्टे के अधीन भावी न्यूनतम पट्टा संदाय का योग:

(i) जो एक वर्ष के पश्चात् नहीं,

(ii) जो एक वर्ष के पश्चात् किन्तु पांच वर्षों के पश्चात् न हो;

(iii) जो पांच वर्षों के पश्चात् हो;

(ख) तुलनपत्र की तारीख को गैर-रद्दकरणीय उपपट्टा के अन्तर्गत प्राप्त किए जाने के लिए प्रत्याशित भावी न्यूनतम उपपट्टा संदाय का योग;

(ग) अवधि के लिए लाभ और हानि के विवरण में अभिज्ञात पट्टा संदाय, न्यूनतम पट्टा संदाय और आकस्मिक किराया की पृथक रकम के साथ;

(घ) अवधि के लिए लाभ और हानि के विवरण में अभिज्ञात किए गए प्राप्त, (या प्राप्य) उपपट्टा संदाय।

(ङ) पट्टेदार की महत्वपूर्ण पट्टा व्यवस्था का सामान्य विवरण जिसमें निम्नलिखित सम्मिलित हैं, परन्तु वहीं तक सीमित नहीं हैं:

IndiaCode

(i) आधार जिस पर आकस्मिक किराया संदाय को निश्चित किया जाता है;

(ii) नवीनीकरण या क्रय विकल्प की शर्तें और विद्यमानता और वृद्धिगत खण्ड; और

(iii) पट्टा व्यवस्था द्वारा लगाये गए प्रतिबन्ध जैसे कि लाभांश, अतिरिक्त ऋण और आगे के पट्टा से संबंधित प्रतिबंधित।

परन्तु लघु तथा मध्यम आकार कम्पनी के पास जिसे कि अधिसूचना में परिभाषित किया गया है उप-पैरा (क), (ख) और (ङ) का पालन न करने का विकल्प है।

पट्टाकर्ता के वित्तीय विवरणों में पट्टे

वित्त पट्टे

26. पट्टाकर्ता को एक वित्त पट्टे के अधीन दी गई आस्तियों को अपने तुलनपत्र में पट्टे में शुद्ध विनिधान के बराबर रकम पर एक प्राप्य रकम के रूप में अभिज्ञात करना चाहिए।

27. वित्त पट्टा के अधीन विधिक स्वामित्व से सम्बंधित सभी जोखिम और पुरस्कार पर्याप्त रूप से पट्टाकर्ता द्वारा अंतरित कर दिये जाते हैं। अतः प्राप्य पट्टा संदायों को पट्टाकर्ता द्वारा अपने मूलधन अर्थात पट्टे में शुद्ध विनिधान का पुनर्भुगतान माना जाता है, और पट्टाकर्ता को विनिधान और सेवाओं की प्रतिपूर्ति और पुरस्कार के लिए वित्त आय माना जाता है।

28. वित्त आय का अभिज्ञान एक ऐसे पैटर्न पर आधारित होना चाहिए जो वित्त पट्टे के सम्बन्ध में पट्टाकर्ता के बकाया शुद्ध विनिधान पर सतत् अवधिगत प्रतिफल दर को प्रदर्शित करे।

29. एक पट्टाकर्ता वित्त आय को पट्टे की अवधि पर विधि पूर्वक एवं तर्कसंगत आधार पर आबंटित करता है। यह आय आबंटन उस पैटर्न पर आधारित होता है जो कि वित्त पट्टे के सम्बंध में पट्टाकर्ता के शुद्ध बकाया विनिधान पर सतत् तथा अवधिगत प्रतिफल को प्रदर्शित करे। लेखा अवधि से संबंधित पट्टा संदाय, सेवाओं की लागत को अपवर्जित करते हुए मूलधन तथा अनर्जित वित्त आय में से घटाए जाते हैं।

30. पट्टे में पट्टाकर्ता के सकल विनिधान का आंकलन करने के लिए प्रयोग किए गए अनुमानित अप्रत्याभूत अवशिष्ट मूल्यों का निरंतर पुनर्विलोकन किया जाता है। यदि अनुमानित अप्रत्याभूत अवशिष्ट मूल्य में कमी आती है तो शेष पट्टा अवधि पर आय के आबंटन को संशोधित किया जाता है और पहले से प्रोद्भूत रकमों के संबंध में कमी को तुरंत अभिज्ञात किया जाता है। अनुमानित अवशिष्ट मूल्य का ऊपर की ओर समायोजन नहीं किया जाता।

31. प्रारम्भिक प्रत्यक्ष लागतें जैसे कि कमीशन और विधिक फीस, पट्टे को तय करने तथा व्यवस्थित करने के लिए पट्टाकर्ता द्वारा उपगत की जाती है। वित्त पट्टे के लिए ये प्रारम्भिक प्रत्यक्ष लागतें वित्तीय आय सृजन के लिए उपगत की जाती हैं और उनको तुरन्त ही लाभ और हानि विवरण में अभिज्ञात किया जाता है या पट्टा अवधि के दौरान वित्त आय के प्रति उनको आबंटित किया जाता है।

32. उद्यम द्वारा एकमुश्त विक्रय के लिए अपनायी गई नीति के अनुसार विनिर्माता अथवा व्योहारी पट्टाकर्ता को विक्रय के संव्यवहार को अवधि के लाभ और हानि विवरण में अभिज्ञात करना चाहिए। यदि कृत्रिम रूप से ब्याज की कम दर कोट की जाती है तो विक्रय पर लाभ उसी सीमा तक निर्बंधित करना चाहिये जो कि ब्याज की वाणिज्यिक दर प्रभारित करने पर लागू होता है। प्रारंभिक प्रत्यक्ष लागतों को पट्टे के आरंभ पर लाभ और हानि के विवरण में व्यय के रूप में अभिज्ञात करना चाहिए।

33. निर्माता या व्यौहारी पट्टेकर्ता ग्राहकों को आस्ति के क्रय करने या पट्टे पर देने का चयन प्रस्तावित कर सकते हैं। विनिर्माता या व्यौहारी पट्टाकर्ता द्वारा आस्ति के वित्त पट्टे से दो प्रकार की आय उत्पन्न होती है:

(क) किसी प्रयोज्य मात्रा या व्यापारिक बट्टे को दर्शित करते हुए सामान्य विक्रय मूल्यों पर पट्टे पर दी गई आस्ति के एकमुश्त विक्रय से उत्पन्न लाभ या हानि के बराबर लाभ या हानि; और

(ख) पट्टा अवधि के दौरान वित्त आय।

34. एक विनिर्माता या व्यौहारी पट्टाकर्ता द्वारा वित्त पट्टे की अवधि के प्रारम्भ में अभिलिखित किया गया बिक्री राजस्व आस्ति का उचित मूल्य होता है। लेकिन यदि ब्याज की वाणिज्यिक दर पर निकाली गई पट्टाकर्ता को प्रोद्भूत होने वाले न्यूनतम पट्टा संदायों का वर्तमान मूल्य उचित मूल्य की अपेक्षा कम होता है, तो विक्रय राजस्व के रूप में अभिलिखित की

गई रकम इस प्रकार निकाला गया वर्तमान मूल्य होती है। पट्टा अवधि के प्रारम्भ में अभिज्ञात की गई विक्रय की लागत पट्टाधृत आस्ति की लागत, या कैरिंग रकम यदि भिन्न हो, घटाये अवशिष्ट अप्रत्याभूत अवशिष्ट मूल्य का वर्तमान मूल्य होती है। विक्रय आगम और विक्रय की लागत के बीच का अन्तर विक्रय लाभ होता है, जिसे विक्रय हेतु उद्यम द्वारा अपनाई गई नीति के अनुसार अभिज्ञात किया जाता है।

35. विनिर्माता या व्यौहारी पट्टाकर्ता कभी-कभी ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए कृत्रिम तौर पर ब्याज की कम दरों को कोट करते हैं। ऐसी दर का उपयोग विक्रय के समय पर संव्यवहार से कुल आय के अत्यधिक भाग के अभिज्ञान के परिणाम में निकलेगा। यदि कृत्रिम तौर पर ब्याज की कम दरों को कोट किया जाता है तो विक्रय लाभ को ऐसे स्तर तक सीमित किया जाएगा जो ब्याज की एक वाणिज्यिक दर के लगाने पर लागू होता है।

36. पट्टा अवधि के प्रारम्भ होने पर आरम्भिक प्रत्यक्ष लागतें व्यय के रूप में अभिज्ञात की जाती हैं क्योंकि वे मुख्य रूप से विनिर्माता या व्यौहारी के विक्रय लाभ अर्जित करने से सम्बंधित है।

37. वित्त पट्टों के लिए पट्टाकर्ता को निम्नलिखित प्रकटन करने चाहिए:

(क) तुलन पत्र की तारीख को पट्टे में कुल सकल विनिधान और तुलन पत्र की तारीख को प्राप्य न्यूनतम पट्टा भुगतानों के वर्तमान मूल्य के बीच समाधान। इसके अतिरिक्त, उद्यम द्वारा निम्नलिखित अवधि में से प्रत्येक के लिए तुलन पत्र की तारीख को प्राप्य न्यूनतम पट्टा संदायों के वर्तमान मूल्य और पट्टे में कुल सकल विनिधान को प्रकट करना चाहिए:

(i) जो एक वर्ष के पश्चात् न हो;

(ii) जो एक वर्ष के पश्चात् किन्तु पांच वर्षों के पश्चात् न हो,

(iii) जो पांच वर्षों के पश्चात् हो;

(ख) गैर-अर्जित वित्त आय;

(ग) पट्टाकर्ता के लाभ में प्रोद्दभूत अप्रत्याभूत अतिशेष मूल्य;

(घ) अवसूलनीय न्यूनतम पट्टा संदायों की प्राप्य रकमों के लिए संचित उपबंध;

(ङ) आकस्मिक किराये जिन्हें अवधि के लाभ और हानि के विवरण में अभिज्ञात किया गया है;

(च) पट्टाकर्ता के महत्वपूर्ण पट्टा कारारों का सामान्य वर्णन; और

(झ) आरम्भिक प्रत्यक्ष लागतों के संबंध में अपनायी गई लेखा नीति:

परन्तु अधिसूचना में परिभाषित लघु और मध्यम आकार की कम्पनी के पास उप-पैरा (क) और (च) का अनुपालन न करने का विकल्प है।

38. प्रगति के संकेतक के रूप में यह बहुधा उपयोगी होता है कि रद्द किए गए पट्टे की सम्बद्ध रकम घटाने के पश्चात् लेखा अवधि के दौरान जोड़े गए नए व्यवसायों में सकल विनिधान की रकम को, अनर्जित आय घटा कर प्रकट किया जाए।

प्रचालन पट्टे

39. पट्टाकर्ता को प्रचालन पट्टे के अधीन दी गई आस्ति को तुलनपत्र में स्थिर आस्तियों के अन्तर्गत दर्शित करना चाहिए।

40. प्रचालन पट्टों से पट्टा आय पट्टा अवधि के दौरान सरल रेखा आधार पर लाभ और हानि के विवरण में अभिज्ञात की जानी चाहिए, जब तक कि एक अन्य व्यवस्थित आधार उस समय पैटर्न का अधिक प्रतिनिधित्व न करे जिसमें पट्टाधृत आस्ति के उपयोग से व्युत्पन्न लाभ कम होते है।

41. पट्टा आय अर्जित करने के लिए अवक्षयण सहित उपगत की गई लागतों को व्यय के रूप में अभिज्ञात किया जाता है। पट्टा आय (बीमा तथा रखरखाव जैसी सेवाएँ प्रदान करने के लिए प्राप्तियों को अपवर्जित करते हुए) को पट्टा अवधि के दौरान सरल रेखा आधार पर लाभ और हानि के विवरण में अभिज्ञात किया जाता है चाहे प्राप्तियाँ किसी ऐसे आधार पर नहीं हो, जब तक कि कोई और व्यवस्थित आधार ऐसे समय पैटर्न का अधिक प्रतिनिधित्व न करे जिसमें पट्टाधृत आस्ति के प्रयोग से व्युत्पन्न लाभ कम हो जाता है।

IndiaCode

42. प्रचालन पट्टा से राजस्व अर्जित करने के लिए विशेष रूप से उपगत की गई प्रारम्भिक प्रत्यक्ष लागतें आस्थगित कर के पट्टा अवधि के दौरान आय के प्रति, किराया आय के अभिज्ञान के अनुपात में, आबंटित की जाती हैं या उनको उसी अवधि के लाभ और हानि विवरण में व्यय के रूप में अभिज्ञात किया जाता है जिस अवधि में वे उपगत की गई हैं।

43. पट्टाधृत आस्ति पर अवक्षयण का आधार पट्टाकर्ता द्वारा अपनी ऐसी ही अन्य आस्तियों के प्रति अपनाई गई सामान्य अवक्षयण नीति के अनुरूप, होना चाहिए, और अवक्षयण के प्रभार की गणना 'लेखा मानक 10 संपत्ति, संयंत्र और उपस्कर' के आधार पर करनी चाहिए।

44. यह निर्धारण करने के लिए कि क्या एक पट्टाधृत आस्ति ह्रासित हो चुकी है, एक उद्यम लेखा मानक 28, आस्तियों के ह्रास को लागू करता है जो उन अपेक्षाओं को उपवर्णित करता है कि कैसे उद्यम को किसी आस्ति की कैरिंग रकम का पुर्विलोकन किस प्रकार करना चाहिए, कैसे उसको एक आस्ति की वसूली योग्य रकम का निर्धारण करना चाहिए और कब ह्रास हानि को अभिज्ञात करना या उलटना चाहिए।

45. एक विनिर्माता या व्यौहारी पट्टाकर्ता एक प्रचालन पट्टा में प्रवेश करने पर किसी विक्रय लाभ को अभिज्ञात नही करता क्योंकि यह विक्रय के समतुल्य नहीं है।

46. लेखा मानक 10, संपत्ति, संयंत्र और उपस्कर, तथा शासकीय परिनियम की अपेक्षाओं के अतिरिक्त एक पट्टाकर्ता को प्रचालन पट्टा के लिए निम्नलिखित प्रकटन करने चाहिए:

(क) आस्तियों की प्रत्येक श्रेणी के लिए, तुलन पत्र की तारीख को सकल कैरिंग रकम, संचित अवक्षयण और संचित ह्रास हानि; और

(i) अवधि के लिए लाभ और हानि के विवरण में अभिज्ञात अवक्षयण;

(ii) अवधि के लिए लाभ और हानि के विवरण में अभिज्ञात ह्रास हानियाँ;

(iii) अवधि के लिए लाभ और हानि के विवरण में उलट दी गई ह्रास हानियाँ;

(ख) निम्नलिखित में से प्रत्येक अवधि के लिए और कुल मिलाकर गैर-रद्दकरणीय प्रचालन पट्टों के अधीन भावी न्यूनतम पट्टा संदाय:

(i) जो एक वर्ष के पश्चात् न हो;

(ii) जो एक वर्ष के पश्चात् परन्तु पांच वर्षों के पश्चात् न हो;

(iii) जो पांच वर्षों के पश्चात् हो;

(ग) अवधि के लाभ और हानि के विवरण में आय के रूप में अभिज्ञात कुल आकस्मिक किराये;

(घ) पट्टाकर्ता के महत्त्वपूर्ण पट्टा व्यवस्थाओं का सामान्य वर्णन;

(ङ) आरम्भिक प्रत्यक्ष लागतों के सम्बन्ध में अपनायी लेखा नीति।

परन्तु अधिसूचना में परिभाषित लघु और मध्यम आकार की कम्पनी के पास उप-पैरा (ख) और (घ) का पालन न करने का विकल्प है।

विक्रय और पट्टा वापसी संव्यवहार

47. एक विक्रय और पट्टा वापसी संव्यवहार में विक्रेता द्वारा किसी आस्ति के विक्रय और उसी आस्ति को वापस विक्रेता को पट्टा पर देना अंतर्वलित है। पट्टा संदाय और विक्रय मूल्य प्रायः अन्तः निर्भर होते हैं क्योंकि उन्हें एक ही पैकेज के रूप में तय किया जाता है। एक विक्रय और पट्टा वापसी संव्यवहार का लेखा प्रतिपादन करना अंतर्वलित पट्टे के प्रकार पर निर्भर करता है।

48. यदि एक विक्रय तथा पट्टा वापसी संव्यवहार का परिणाम एक वित्त पट्टा हो तो विक्रय रकमों का कैरिंग रकम पर कोई आधिक्य या कमी को तुरंत विक्रेता पट्टेदार के वित्तीय विवरणों में आय या हानि के रूप में अभिज्ञात नहीं किया जाना चाहिए। इसके विपरीत इसको आस्थगित किया जाये और पट्टाधृत आस्ति के अवक्षयण के अनुपात में पट्टा अवधि के दौरान इसका क्रमिक अपाकरण किया जाना चाहिए।

49. यदि पट्टा वापसी एक वित्त पट्टा है तो यह उपयुक्त नहीं रहता कि कैरिंग रकम पर विक्रय की रकम के आधिक्य को आय के रूप में अभिज्ञात किया जाए। ऐसी आधिक्य रकम को आस्थगित किया जाता है और पट्टाधृत आस्ति के अवक्षयण के अनुपात में पट्टा अवधि के दौरान इसका क्रमिक अपाकरण किया जाता है। इसी तरह यह भी उपयुक्त नहीं है कि एक कमी को हानि माना जाये। ऐसी कमी आस्थगित की जाती है और पट्टा अवधि के दौरान इसका क्रमिक अपाकरण किया जाता है।

50. यदि कोई विक्रय और पट्टा वापसी संव्यवहार का परिणाम एक प्रचालन पट्टा हो और यह स्पष्ट हो कि संव्यवहार को उचित मूल्य पर स्थापित किया गया है तो किसी भी लाभ या हानि को तुरंत अभिज्ञात करना चाहिए। यदि विक्रय मूल्य उचित मूल्य से कम है तो किसी भी लाभ या हानि को तुरंत अभिज्ञात किया जाना चाहिए इस बात के सिवाय कि यदि हानि की क्षतिपूर्ति बाजार मूल्य से कम मूल्य पर भावी पट्टा संदायों द्वारा कर दी जाती है, तो उसको आस्थगित किया जाना चाहिए और उस अवधि के दौरान जिसके लिए आस्ति का प्रयोग अपेक्षित हो संदायों के अनुपात में उसका क्रमिक अपाकरण किया जाना चाहिए। यदि विक्रय मूल्य उचित मूल्य से अधिक है तो उचित मूल्य से अधिक आधिक्य को आस्थगित किया जाना चाहिए और उस अवधि के दौरान उसका क्रमिक अपाकरण किया जाए जिसके लिए आस्ति का उपयोग अपेक्षित है।

51. यदि पट्टा वापसी संव्यवहार एक प्रचालन पट्टा है और पट्टा संदाय एवं विक्रय मूल्य को उचित मूल्य पर स्थापित किया जाता है तो यह वास्तव में एक सामान्य विक्रय संव्यवहार होता है और किसी भी लाभ अथवा हानि को तुरंत अभिज्ञात किया जाता है।

52. प्रचालन पट्टों के लिए, यदि विक्रय और पट्टा वापसी संव्यवहार के समय उचित मूल्य आस्ति की कैरिंग रकम की अपेक्षा कम है, तो कैरिंग रकम और उचित मूल्य के बीच के अन्तर की रकम के बराबर हानि को तुरंत अभिज्ञात किया जाना चाहिए।

53. वित्त पट्टों के लिए ऐसे समायोजन की आवश्यकता नहीं है जब तक कि मूल्य में कोई ह्रास न हो, जिस दशा में आस्तियों में ह्रास से संबंधित लेखा मानक के अनुसार कैरिंग रकम को वसूली योग्य रकम तक घटाया जाता है।

54. पट्टेदार तथा पट्टाकर्ता के लिए प्रकटन की आवश्यकताएँ विक्रय और पट्टा वापसी संव्यवहारों पर समान रूप से लागू होती हैं। महत्वपूर्ण पट्टा व्यवस्थाओं के लिए अपेक्षित विवरण विक्रय और पट्टा वापसी संव्यवहारों की शर्तों तथा करार के असामान्य तथा अन्य उपबन्धों के प्रकटन की ओर ले जाते हैं।

55. विक्रय और पट्टा वापसी संव्यवहार लेखा मानक 5, ***अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि, पूर्वावधि मदें या लेखा नीतियों में परिवर्तन,*** के पैरा 12 में उपवर्णित पृथक प्रकटन मानदण्डों को पूरा कर सकते हैं।

दृष्टांत

विक्रय और पट्टा वापसी संव्यवहार जिनका परिणाम प्रचालन पट्टे हैं

यह दृष्टांत लेखा मानक का भाग नहीं है। इसका उद्देश्य लेखा मानक के लागू होने का दृष्टांत देना है।

एक विक्रय और पट्टा वापसी संव्यवहार जो एक प्रचालन पट्टे में निकले लाभ या हानि को उत्पन्न कर सकता है, जिसका निर्धारण तथा प्रतिपादन पट्टाधृत आस्ति की कैरिंग रकम, उचित मूल्य और विक्रय मूल्य पर निर्भर करता है। निम्नलिखित सारणी विभिन्न परिस्थितियों में लेखा मानक की अपेक्षाओं को दर्शित करती हैं:

उचित मूल्य पर स्थापित विक्रय मूल्य (पैरा 50)	**उचित मूल्य के बराबर कैरिंग रकम**	**उचित मूल्य से कम कैरिंग रकम**	**उचित मूल्य से अधिक कैरिंग रकम**
लाभ	कोई लाभ नहीं	लाभ तुरंत अभिज्ञात करें	लागू नहीं
हानि	कोई हानि नहीं	लागू नहीं	हानि तुरंत अभिज्ञात करें
उचित मूल्य से कम विक्रय मूल्य			
लाभ	कोई लाभ नहीं	लाभ तुरंत अभिज्ञात करें	कोई लाभ नहीं (टिप्पण 1)

बाजार मूल्य से नीचे भावी पट्टा संदायों द्वारा हानि की क्षतिपूर्ति नहीं	हानि को तुरंत अभिज्ञात करें	हानि को तुरंत अभिज्ञात करें	(टिप्पण 1)
बाजार मूल्य से नीचे भावी पट्टा संदायों द्वारा हानि की क्षतिपूर्ति	हानि को आस्थगित तथा उसका क्रमिक अपाकरण करें	हानि को आस्थगित तथा उसका क्रमिक अपाकरण करें	(टिप्पण 1)
उचित मूल्य से अधिक विक्रय मूल्य से अधिक विक्रय मूल्य (पैरा 50)			
लाभ	लाभ को आस्थगित और उसका क्रमिक अपाकरण करें	लाभ को आस्थगित तथा उसका क्रमिक अपाकरण करें	लाभ को आस्थगित तथा उसका क्रमिक अपाकरण करें (टिप्पण 2)
हानि	कोई हानि नहीं	कोई हानि नहीं	(टिप्पण 1)

टिप्पण 1. - सारणी के ये भाग उन परिस्थितियों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनका इस मानक के पैरा 52 के अनुसार व्यावहार किया जाएगा। पैरा 52 आस्ति की कैरिंग रकम को उचित मूल्य तक अवलिखित करने की अपेक्षा करता है जहाँ पर यह विक्रय तथा पट्टा वापसी से सम्बंधित है।

टिप्पण 2. - लाभ उचित मूल्य तथा विक्रय मूल्य के बीच अन्तर होगा क्योंकि कैरिंग रकम का पैरा 52 के अनुसार उचित मूल्य तक अवलेखन किया गया होगा।

IndiaCode

लेखा मानक 20

प्रति शेयर उपार्जन

*(इस लेखा मानक में कुछ **मोटे-तिरछे** टाइप और कुछ सीधे टाईप में व्यवस्थित पैरा सम्मिलित है, जिनका समान प्राधिकार है। मोटे तिरछे टाइप में दिये गए पैरा मुख्य सिद्धांत उपदर्शित करते हैं। इस लेखा मानक को अधिसूचना के प्रति उपाबंध के भाग क में अतंर्विष्ट साधारण अनुदेशों के संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिये।)*

यह लेखा मानक सभी कम्पनियों के लिए आज्ञापक है। तथापि अविमिश्रित प्रति शेयर उपार्जन का प्रकटन (असाधारण मदों को सम्मिलित करके और उनको छोड़ते हुए) लघु और मध्यम आकार की कम्पनियों के लिए आज्ञापक नहीं है, जो कि अधिसूचना में परिभाषित है। तथापि ऐसी कम्पनियाँ इन प्रकटनों को करने के लिए प्रोत्साहित की जाती हैं।

उद्देश्य

इस मानक का उद्देश्य प्रति शेयर उपार्जन के निर्धारण और प्रस्तुतिकरण के लिए सिद्धांत विहित करना है, जो समान अवधि के लिए भिन्न उद्यमों के बीच और समान उद्यम के लिए भिन्न लेखा अवधियों के बीच निष्पादनता की तुलना को बेहतर बनाएंगे। इस मानक का केन्द्र, प्रति शेयर उपार्जन गणना के हर (न्यूमरेटार) पर है। उपार्जन निर्धारित करने के लिए प्रयोग की जाने वाली भिन्न लेखा नीतियों के कारण प्रति शेयर उपार्जन की सीमाएँ होती हैं, फिर भी अनवरत रूप से अवधारित सामान्य वित्तीय रिपोर्ट की गुणवत्ता को बढ़ाता है।

कार्यक्षेत्र

1. ***यह मानक सभी कम्पनियों द्वारा लागू होना चाहिए। परन्तु एक लघु तथा मध्यम आकार की कम्पनी, जो अधिसूचना में परिभाषित है द्वारा अविमिश्रित (डाइल्युटिड) प्रति शेयर उपार्जन का प्रकटन करना आज्ञापक नहीं है (असाधारण मदों को सम्मिलित करके और उनको उपवर्जित करते हुए)।***

2. समेकित वित्तीय विवरणों में, इस मानक द्वारा अपेक्षित जानकारी, समेकित जानकारी के आधार पर प्रस्तुत की जानी चाहिए।[26]

3. मूल उद्यम (नियंत्री उद्यम) की दशा में, वित्तीय विवरणों के उपयोगकर्ता आमतौर पर स्वयं उद्यम और पूरे समूह दोनों ही के प्रचालनों के परिणामों से प्रभावित होते हैं और उन्हें इस बारे में सूचित करने की आवश्यकता होती है। तदनुसार, ऐसे उद्यमों की दशा में, इस मानक द्वारा समेकित वित्तीय विवरणों और मूल उद्यम के पृथक वित्तीय विवरणों के आधार पर प्रति शेयर उपार्जन के प्रकटन की अपेक्षा होती है। समेकित वित्तीय विवरणों में, ऐसी जानकारी समेकित जानकारी के आधार पर प्रस्तुत की जाती है।

परिभाषाएँ

4. इस मानक के उद्देश्य के लिए, निम्नलिखित शब्दों को उनके विनिर्दिष्ट अर्थों के साथ प्रयोग किया गया है:

4.1 <u>एक साधारण शेयर</u>, अधिमानी शेयर से भिन्न एक शेयर है।

4.2 <u>एक अधिमानी शेयर</u> एक ऐसा शेयर है जो लाभांश तथा पूंजी के प्रतिदाय के प्रति अधिमानी अधिकार धारण करता है।

4.3 <u>एक वित्तीय लिखत</u> ऐसी संविदा है जो एक उद्यम की वित्तीय आस्ति और अन्य उद्यम के वित्तीय दायित्व या साधारण शेयर दोनेनों को ही उत्पन्न करता है।

4.4 <u>संभाव्य साधारण शेयर</u> एक वित्तीय लिखत या अन्य संविदा है जो इसके धारक को साधारण शेयर का अधिकार दे सकता है।

4.5 <u>शेयर अधिपत्र या विकल्प</u> वे वित्तीय लिखत हैं जो धारक को साधारण शेयर अर्जित करने का अधिकार देते हैं।

4.6 <u>उचित मूल्य</u> वह रकम जिसके लिऐ एक आर्म्स लेंग्थ संव्यवहार में ज्ञानवान, इच्छुक पक्षकारों के बीच किसी आस्ति का विनिमय या किसी दायित्व का निपटारा किया जाता है।

5. साधारण शेयर, केवल अधिमानी शेयरों के बाद अवधि के लिए शुद्ध लाभ में भागीदारी करते हैं। एक उद्यम के पास साधारण शेयरों के एक से अधिक वर्ग हो सकते हैं। एक वर्ग के साधारण शेयरों के पास लाभांश प्राप्त करने के लिए समान अधिकार होते हैं।

6. ऐसी कोई भी संविदा, एक वित्तीय लिखत है जो एक उद्यम की वित्तीय आस्ति और अन्य उद्यम के वित्तीय दायित्व या साधारण शेयर दोनों को ही बढ़ाता है। इस प्रयोजन के लिए, वित्तीय आस्ति ऐसी कोई भी आस्ति है, जैसे कि

(क) रोकड़;

(ख) अन्य उद्यम से रोकड़ या अन्य वित्तीय आस्ति प्राप्त करने के लिए संविदात्मक अधिकार;

(ग) सम्भाव्य रूप से उपयुक्त स्थितियों के अंतर्गत अन्य उद्यम के साथ वित्तीय लिखतों के विनिमय के लिए संविदात्मक अधिकार; या

(घ) अन्य उद्यम का साधारण शेयर।

ऐसा कोई भी दायित्व, वित्तीय दायित्व है, जो संभाव्य रूप से अनुपयुक्त स्थितियों के अंतर्गत अन्य उद्यम को रोकड़ या अन्य वित्तीय आस्ति प्रदान करने के लिए या अन्य उद्यम के साथ वित्तीय लिखतों का विनिमय करने के लिए एक संविदात्मक बाध्यता है।

7. संभाव्य साधारण शेयरों के उदाहरण हैं:

(क) उधार लिखत या अधिमानी शेयर, जो साधारण शेयरों में संपरिवर्तनीय हैं;

(ख) शेयर अधिपत्र;

---

[26] लेखा मानक 21, 'समेकित वित्तीय विवरण', समेकित वित्तीय विवरण से संबंधित अपेक्षाएँ विनिर्दिष्ट करता है।

IndiaCode

(ग) कर्मचारी शेयर विकल्प योजनाओं को सम्मिलित करते हुए विकल्प, जिसके अंतर्गत उद्यम के कर्मचारी, अपने परिश्रमिक के भाग के रूप में साधारण शेयरों को प्राप्त करने के अधिकारी हैं और अन्य समान योजनाएँ; और

(घ) वे शेयर जो संविदात्मक व्यवस्थाओं (समाश्रित रूप से जारी करने योग्य शेयर) के परिणाम स्वरूप कुछ स्थितियों के पूरा होने पर जारी होगें, जैसे कि कारबार या अन्य आस्तियों का उपार्जन या मूलधन या ब्याज के भुगतान में चूक होने पर ऋण संविदा के अंतर्गत जारी होने योग्य शेयर, यदि संविदा में ऐसा हो तो।

प्रस्तुतिकरण

8. एक उद्यम को साधारण शेयरों के उन प्रत्येक वर्ग के लिए, जिनके पास एक अवधि के लिए शुद्ध लाभ में शेयर के प्रति भिन्न अधिकार हैं, लाभ और हानि के विवरण के मुख्य पर मूल और अविमिश्रित प्रति शेयर उपार्जन प्रस्तुत करने चाहिएं। एक उद्यम को मूल तथा अविमिश्रित प्रति शेयर उपार्जन को प्रस्तुत सभी अवधियों के लिए एक ही महत्व के साथ प्रस्तुत करना चाहिए।

9. यदि प्रकट की गई मात्रा नगण्य हो तो भी (प्रति शेयर हानि), एक उद्यम के लिए इस मानक के लिए मूल और अविमिश्रित प्रति शेयर उपार्जन को प्रस्तुत करना अपेक्षित है।

मापन

प्रति शेयर मूलभूत उपार्जन

10. प्रति शेयर मूलभूत उपार्जन की गणना, साधारण शेयरधारकों के प्रति एक अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि को उसी अवधि के दौरान बकाया साधारण शेयरों की भारित औसत संख्या से भाग करके की जानी चाहिए।

उपार्जन-मूलभूत

11. प्रति शेयर मूल उपार्जन की गणना के लिए, साधारण शेयरधारकों के प्रति एक अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि अधिमानी लाभाशों और अवधि के लिए किसी कर को घटाने के बाद उस अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि होना चाहिए।

12. जब तक कि किसी लेखा मानक के अनुसार अन्यथा की अनुमति न हो या अपेक्षा न हो तब तक कर व्यय और असाधारण मदों समेत एक अवधि में अभिज्ञात आय और व्यय, उस अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि के निर्धारण में सम्मिलित होते है (लेखा मानक 5, अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि, पूर्वावधि मदें और लेखा नीतियों में परिवर्तन)। साधारण शेयर धारकों के प्रति एक अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि की गणना करने के लिए, अधिमानी लाभांशों की रकम और उस अवधि के लिए कोई कर, अवधि के लिए शुद्ध लाभ से घटाया जाता है (या अवधि के लिए शुद्ध हानि में जोड़ा जाता है)।

13. एक अवधि के लिए अधिमानी लाभांशों की रकम जिसे अवधि के लिए शुद्ध लाभ से घटाया जाता है:

(क) अवधि के संबंध में प्रदान किए गए असंचित अधिमानी शेयरों पर किसी भी अधिमानी लाभांशों की रकम ; और

(ख) अवधि के लिए संचित अधिमानी शेयरों हेतु अपेक्षित अधिमानी लाभांशों की पूरी रकम चाहे लाभांश प्रदान किए गये हों या नहीं। एक अवधि के लिए अधिमानी लाभाशों की रकम में, पूर्ववर्ती अवधियों के संबंध में चालू अवधि के दौरान संदत्त या घोषित संचित अधिमानी शेयरों के लिए किसी भी अधिमानी लाभांशों की रकम सम्मिलित नहीं होती।

14. यदि एक उद्यम के पास साधारण शेयरों के एक वर्ग से अधिक वर्ग हैं, तो अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि उनके लाभांश अधिकारों के अनुसार शेयरों के विभिन्न वर्गों पर प्रभाजित किये जाते हैं।

प्रति शेयर-मूल

15. प्रति शेयर मूल उपार्जन की गणना के प्रयोजन के लिए, साधारण शेयरों की संख्या, अवधि के दौरान बकाया साधारण शेयरों की भारित औसत संख्या होनी चाहिए।

16. अवधि के दौरान बकाया साधारण शेयरों की भारित औसत संख्या यह तथ्य प्रतिबिंबित करती है कि किसी भी समय बकाया शेयरों की अधिक या कम संख्या के परिणामस्वरूप, अवधि के दौरान शेयरधारकों की पूँजी की रकम में परिवर्तन हुए हैं, यह अवधि की शुरूआत में बकाया साधारण शेयरों की संख्या, को उस अवधि के दौरान पुनः खरीदे गये या जारी किये गये साधारण शेयरों की संख्या से समायोजित करके, समयभारित घटक से गुणनफल है। समय-भारित घटक उन दिनों की संख्या, जिनके लिए विनिर्दिष्ट शेयर बकाया थे, का उस अवधि में दिनों की कुल संख्या के साथ अनुपात है ; भारित औसत का एक युक्तियुक्त अनुमान कई परिस्थितियों में पर्याप्त है।

इस मानक से संलग्न दृष्टांत I शेयरों की भारित औसत संख्या की गणना को स्पष्ट करता है।

17. अधिकतर स्थितियों में, शेयर प्रतिफल प्राप्त होने की तारीख से, शेयरों की भारित औसत संख्या में सम्मिलित किए जाते हैं, उदाहरण के लिए:

(क) रोकड़ के विनिमय में जारी शेयर तब सम्मिलित किए जाते हैं जब रोकड़ प्राप्य हो;

(ख) साधारण शेयरों के प्रति ऋण लिखत के संपरिवर्तन के परिणामस्वरूप जारी साधारण शेयर, संपरिवर्तन की तारीख से सम्मिलित होते हैं;

(ग) अन्य वित्तीय लिखतों पर ब्याज या मूलधन के स्थान पर जारी साधारण शेयर, ऐसी तारीख से सम्मिलित होते हैं जब ब्याज प्रोद्भूत होना बंद हो जाता है।

(घ) उद्यम के दायित्व की व्यवस्था के लिए विनिमय में जारी साधारण शेयर ऐसी तारीख से सम्मिलित होते हैं जब व्यवस्था प्रभावी होती है;

(ड.) रोकड़ से भिन्न अन्य आस्ति के अर्जन के लिए प्रतिफल के रूप में जारी साधारण शेयर ऐसी तारीख से सम्मिलित किए जाते हैं, जिस पर उपार्जन अभिज्ञात होता है; और

(च) उद्यम को प्रदान की गयी सेवाओं के लिए जारी साधारण शेयर, सम्मिलित होते हैं जैसे ही सेवाएं प्रदान की जाती हैं।

इन और अन्य स्थितियों में साधारण शेयरों के समावेश को निश्चित करने का समय, जारी होने से जुड़े विनिर्दिष्ट निर्बंधनों और शर्तों द्वारा निर्धारित होते हैं। जारी होने से जुड़ी किसी भी संविदा के किसी भी सार के प्रति अपेक्षित ध्यान देना चाहिए।

18. क्रय की प्रकृति में समामेलन में प्रतिफल के हिस्से के रूप में जारी साधारण शेयर, शेयरों की भारित औसत संख्या में अर्जन की तारीख से सम्मिलित होते हैं क्योंकि स्थानांतरी स्थानांतरणकर्ता के प्रचालनों के परिणामों को अर्जन तारीख से अपने लाभ और हानि के विवरण में सम्मिलित करता है। विलयन की प्रकृति में समामेलन में प्रतिफल के हिस्से के रूप में एक अवधि के दौरान जारी साधारण शेयर, उस अवधि के प्रारम्भ से शेयरों की भारित औसत संख्या की गणना में सम्मिलित होते हैं क्योंकि उस अवधि के लिए सहउद्यम के वित्तीय विवरण इस प्रकार बनाए जाते हैं जैसे कि उस अवधि की शुरूआत से ही संयुक्त इकाई उपस्थित थी। इसलिए, विलयन की प्रकृति में समामेलन में प्रति शेयर मूल उपार्जन की गणना के लिए प्रयुक्त साधारण शयरों की संख्या, संयुक्त उद्यमों के शेयरों की भारित औसत संख्या का कुल योग होता है, उस उद्यम के समतुल्य शेयरों को समायोजित करके जिसके शेयर विलयन के बाद बकाया हैं।

19. अशंतः संदत्त साधारण शेयर उस सीमा तक साधारण शेयर के अंश के रूप में रिपोर्ट होते है जहाँ तक कि वे रिपोर्टिंग अवधि के दौरान पूर्णतः संदत्त साधारण शेयर के सापेक्ष लाभांशों में भाग लेने के हकदार थे ।

इस मानक से सलग्न दृष्टांत-II अंशतः संदत्त साधारण शेयर के संबंध में गणना को स्पष्ट करता है।

20. जहाँ एक उद्यम के पास भिन्न अंकित मूल्य किंतु समान लाभांश अधिकारों के साधारण शेयर होते हैं, वहाँ साधारण शेयरों की संख्या की गणना, ऐसे सभी साधारण शेयरों को समान अंकित मूल्य के शेयरों की समतुल्य संख्या में संपरिवर्तित करके की जाती है।

21. वे साधारण शेयर जो संविदात्मक समझौतों के परिणामस्वरूप कुछ स्थितियों की संतुष्टि पर जारी होने योग्य होते हैं (आकस्मिक रूप से जारी होने योग्य शेयर) बकाया समझे जाते हैं, और उस तारीख से प्रति शेयर मूल उपार्जन की गणना में सम्मिलित किए जाते हैं, जब से संविदा के अंतर्गत आवश्यक सभी स्थितियाँ संतुष्ट होती हैं।

22. एक अवधि और सभी अवधियों के दौरान प्रस्तुत बकाया साधारण शेयरों की भारित औसत संख्या, उन संभाव्य साधारण शेयरों के संपरिवर्तन के अतिरिक्त घटनाओं के लिए समायोजित होनी चाहिए, जिन्होंने संसाधनों में किसी समरूप परिवर्तन के बिना, बकाया साधारण शेयरों की संख्या को बदल दिया है।

23. संसाधनों में समरूप परिवर्तन के बिना, साधारण शेयर जारी किए जा सकते हैं या बकाया शेयरों की संख्या घटाई जा सकती है। उदाहरण में सम्मिलित हैं:

(क) बोनस निर्गम;

(ख) किसी अन्य निर्गम में बोनस का तत्व, उदाहरण के लिए विद्यमान शेयरधारकों के प्रति अधिकार निर्गम में बोनस का तत्व;

(ग) शेयर विखंडन; और

(घ) प्रतिकूल शेयर विखंडन (शेयरों का समेकन)।

24. बोनस निर्गम या शेयर विखंडन की स्थिति में किसी साधारण शेयर बिना किसी अतिरिक्त प्रतिफल के विद्यमान शेयर धारकों के प्रति जारी किये जाते हैं। इसलिए, बकाया साधारण शेयर संसाधनों में किसी वृद्धि के बिना बढ़ते हैं। घटना से पहले बकाया साधारण शेयरों की संख्या, बकाया साधारण शेयरों की संख्या में अनुपातीय परिवर्तन के लिए ऐसे समायोजित की जाती है, जैसे कि घटना अवधि की शुरूआत में घटित हुई है। उदाहरण के लिए एक के लिए दो बोनस निर्गम में, निर्गम के पहले बकाया शेयरों की संख्या को तीन के घटक से गुणा करते हैं ताकि शेयरों की नई कुल संख्या प्राप्त या अतिरिक्त शेयरों की संख्या प्राप्त करने के लिए, दो के घटक से गुणा करते हैं।

इस मानक से संलग्न दृष्टांत III अवधि के दौरान बोनस निर्गम की स्थिति में साधारण शेयरों की भारित औसत संख्या की गणना का दृष्टांत देता है।

25. संभाव्य साधारण शेयरों के प्रयोग या संपरिवर्तन के समय साधारण शेयरों का निर्गम, आमतौर पर बोनस तत्व को उत्पन्न नहीं करता है, क्योंकि संभाव्य साधारण शेयर आमतौर पर पूरे मूल्य के लिए जारी किये जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप उद्यम के पास उपलब्ध संसाधनों में अनुपातीय परिवर्तन होता है। दूसरी ओर अधिकार निर्गम में प्रयोग मूल्य अकसर शेयरों के उचित मूल्य से कम होता है। इसलिए, एक अधिकार निर्गम में आमतौर पर बोनस तत्व सम्मिलित होता है। अधिकार निर्गम से पूर्व की सभी अवधियों के लिए प्रति शेयर मूल उपार्जन की गणना में प्रयोग किए जाने वाले साधारण शेयरों की संख्या, अधिकार निर्गम से पूर्व बकाया साधारण शेयरों की संख्या को निम्नलिखित घटक से गुणा करके प्राप्त करते हैं:

$$\frac{\text{अधिकारों के प्रयोग से ठीक पूर्व प्रति शेयर उचित मूल्य}}{\text{सैद्धांतिक अधिकार रहित प्रति शेयर उचित मूल्य}}$$

सैद्धांतिक अधिकार रहित प्रति शेयर उचित मूल्य की गणना, अधिकारों के प्रयोग के ठीक पूर्व शेयरों के कुल उचित मूल्य को अधिकारों के प्रयोग से प्राप्त आगम में जोड़कर, और अधिकारों के प्रयोग के बाद बकाया शेयरों की कुल संख्या से भाग करके की जाती है। जब स्वयं अधिकार प्रयोग की तारीख के पूर्व शेयरों से पृथकतः सार्वजनिक रूप से खरीदे-बेचे जाते हैं, तो इस गणना के उद्देश्यों के लिए उचित मूल्य उस अंतिम दिन की समाप्ति पर स्थापित होता है, जिसको शेयरों को अधिकारों के साथ खरीदा-बेचा गया हो।

इस मानक से संलग्न दृष्टांत IV अवधि के दौरान अधिकार निर्गम की स्थिति में साधारण शेयरों की भारित औसत संख्या की गणना का उदाहरण देता है।

प्रति शेयर अविमिश्रित उपार्जन

26. प्रति शेयर अविमिश्रित उपार्जन की गणना के प्रयोजन के लिए, साधारण शेयरधारकों से सम्बंधित अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि और अवधि के दौरान बकाया शेयरों की भारित औसत संख्या को सभी अविमिश्रित संभाव्य साधारण शेयरों के प्रभावों के लिए समायोजित किया जाना चाहिए।

27. प्रति शेयर अविमिश्रित उपार्जन की गणना में, उन सब अविमिश्रित संभाव्य साधारण शेयरों को प्रभाव दिया जाता है जो अवधि के दौरान बकाया थे, अर्थात्:

(क) साधारण शेयरों से संबंधित अवधि के लिए शुद्ध लाभ को:

(i) अविमिश्रित संभाव्य साधारण शेयरों के संबंध में, अवधि में अभिज्ञात लाभांशों की रकम से बढ़ाया जाता है, जैसे कि अवधि के लिए कर व्यय में किसी सम्बंधित परिवर्तन के लिए समायोजित किया गया है;

(ii) अविमिश्रित संभाव्य साधारण शेयरों के संदर्भ में, अवधि में अभिज्ञात ब्याज की रकम से बढ़ाया जाता है, जैसे कि अवधि के लिए कर व्यय में किसी परिवर्तन के लिए समायोजन किया जाता है; और

(iii) व्ययों या आय में किन्हीं अन्य परिवर्तनों की कर पश्चात् रकम के लिए समायोजित किया जाता है, जो अविमिश्रित संभाव्य साधारण शेयरों के संपरिवर्तन के परिणाम स्वरूप उत्पन्न होता है ।

(ख) अवधि के दौरान बकाया साधारण शेयरों की भारित औसत संख्या में ऐसे अतिरिक्त साधारण शेयरों की भारित औसत संख्या द्वारा वृद्धि की जाती है जो सभी अविमिश्रित संभाव्य साधारण शेयरों के संपरिवर्तन की धारणा से बकाया रह गए हों।

28. इस मानक के लिए आबंटन के लंबित रहते शेयर आवेदन रकम या तुलन-पत्र की तारीख पर कोई अग्रिम शेयर आवेदन रकम, जिसको पृथक रखने की कोई कानूनी अपेक्षा नहीं है और जिसे उद्यम के व्यापार में प्रयोग किया जा रहा है, उसी प्रकार रिपोर्ट किया जाएगा जैसा कि प्रति शेयर अविमिश्रित उपार्जन की गणना करने के लिए अविमिश्रित संभाव्य साधारण शेयरों के साथ होता है।

उपार्जन-अविमिश्रित

29. प्रति शेयर अविमिश्रित उपार्जन की गणना के लिए, साधारण शेयर धारकों से संबंधित पैरा 11 के अनुसार निकाले गए अवधि के लिए, शुद्ध लाभ या हानि को, अवधि के लिए कर व्यय में किसी सम्बंधित परिवर्तन पर ध्यान देने के बाद निम्नलिखित द्वारा समायोजित किया जाना चाहिए:

(क) अविमिश्रित संभाव्य साधारण शेयरों पर ऐसे कोई भी लाभांश जो पैरा 11 के अनुसार निकाले गए साधारण शेयर धारकों से सम्बंधित शुद्ध लाभ तक पहुंचने में घटाए गये हों:

(ख) अविमिश्रित संभाव्य साधारण शेयरों के लिए अवधि में अभिज्ञात ब्याज; और

(ग) अविमिश्रित संभाव्य साधारण शेयरों के संपरिवर्तन के परिणामस्वरूप व्ययों या आय में कोई अन्य परिवर्तन।

30. संभाव्य साधारण शेयरों के साधारण शेयरों में संपरिवर्तित हो जाने के बाद, उन संभाव्य साधारण शेयरों से संबंधित लाभांश, ब्याज और अन्य व्यय या आय और ज्यादा घटित (या उपार्जित) नहीं होगें। इसके बजाए, नए साधारण शेयर साधारण शेयरों से संबंधित शुद्ध लाभ में भागीदारी के हकदार होंगे। इसलिए, पैरा II के अनुसार निकाले गए साधारण शेयर धारकों से सम्बंधित अवधि के लिए शुद्ध लाभ, अविमिश्रित संभाव्य साधारण शेयरों के साधारण शेयरों में संपरिवर्तित होने पर लाभांश, ब्याज और अन्य व्ययों की उस रकम से बढ़ता है जो बचाए जाएँगें और आय की उस रकम से कम किए जाएंगे जो प्रोद्भूत होना बंद कर देगी। लाभाशों, ब्याज और अन्य व्ययों या आय की रकम किसी भी सम्बंधित कर के लिए समायोजित की जाती है।

इस मानक से संलग्न दृष्टांत V संपरिवर्तनीय ऋण-पत्रों की स्थिति में अविमिश्रित उपार्जन की गणना को उदाहरण की तरह समझाता है।

31. कुछ संभाव्य साधारण शेयरों का संपरिवर्तन आय या व्यय की अन्य मदों में परिणामजन्य संपरिवर्तनों की ओर ले जा सकता है। उदाहरण के लिए, संभाव्य साधारण शेयरों से सम्बंधित ब्याज व्यय में कमी और इसके परिणामस्वरूप अवधि के लिए, शुद्ध लाभ में बढ़ोतरी, गैर-वैवेकिक कर्मचारी लाभ-भागीदारी योजना से सम्बंधित व्यय में बढ़ोतरी की ओर ले जा सकती है। प्रति शेयर अविमिश्रित उपार्जन की गणना के लिए, अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि, आय या व्ययों में ऐसे परिणामजन्य परिवर्तनों के लिए समायोजित किये जाते हैं।

प्रति शेयर-अविमिश्रित

32. प्रति शेयर अविमिश्रित उपार्जन की गणना के लिए साधारण शेयरों की संख्या, पैरा 15 और 22 के अनुसार निकाले गए साधारण शेयरों की भारित औसत संख्या और उन साधारण शेयरों की भारित औसत संख्या का कुल योग होना चाहिए, जो अविमिश्रित संभाव्य साधारण शेयरों के साधारण शेयरों में संपरिवर्तित होने पर जारी होंगे। अविमिश्रित संभाव्य साधारण शेयर अवधि की शुरुआत में साधारण शेयरों में संपरिवर्तित समझे जाने चाहिए या यदि बाद में जारी हो तो संभाव्य साधारण शेयरों के जारी होने की तारीख पर।

33. साधारण शेयरों की संख्या, जो अवमिश्रित संभाव्य शेयरों के संपरिवर्तन पर जारी होगें, संभाव्य साधारण शेयरों के निबंधनों से निर्धारित होती है। यह गणना, संभाव्य साधारण शेयरों के धारकों के दृष्टिकोण से सर्वाधिक लाभकारी संपरिवर्तन दर या प्रयोग मूल्य को मान्यता देती है।

34. संविदात्मक व्यवस्थाओं के परिणामस्वरूप उत्पन्न कुछ शर्तों की संतुष्टि पर जो साधारण शेयर जारी होने योग्य होते हैं वे (आकस्मिक रूप से जारी होने योग्य शेयर) बकाया समझे जाते हैं और संविदा के अंतर्गत आने वाली शर्तों के पूरे हो जाने की तारीख से प्रति शेयर मूल उपार्जन तथा प्रति शेयर अविमिश्रित उपार्जन दोनों की ही गणना में सम्मिलित किये जाते हैं। यदि शर्तें पूरी न हुई हों तो प्रति शेयर अविमिश्रित उपार्जन की गणना के लिए, अवधि की शुरूआत के रूप में (या यदि बाद में हो, आकस्मिक शेयर संविदा की तारीख से) आकस्मिक रूप से जारी होने योग्य शेयर सम्मिलित किए जाते हैं। प्रति शेयर अविमिश्रित उपार्जन की गणना करने की स्थिति में सम्मिलित आकस्मिक रूप से जारी होने योग्य शेयरों की संख्या उन शेयरों की संख्या पर आधारित है जो तब जारी होते यदि रिपोर्टिंग अवधि की समाप्ति आकस्मिक अवधि की समाप्ति होती। जब रिपोर्टिंग अवधि की समाप्ति के पश्चात् आकस्मिक अवधि के वास्तविक रूप से समाप्त होने पर भी शर्ते पूरी नहीं होती तो पुनः विवरण की अनुमति नहीं दी जाती है। इस पैरा के उपबंध उन संभाव्य साधारण शेयरों पर समान रूप से लागू होते हैं जो कुछ शर्तों की संतुष्टि पर जारी होने योग्य होते है (आकस्मिक रूप से जारी होने योग्य संभाव्य साधारण शेयर)।

35. प्रति शेयर अविमिश्रित उपार्जन की गणना करने के लिए, एक उद्यम को, अविमिश्रित विकल्पों के प्रयोग और उद्यम के अन्य अविमिश्रित संभाव्य साधारण शेयरों के प्रयोग की कल्पना करनी चाहिए। इन निर्गमों से प्राप्त प्राप्तियों को उचित मूल्य पर शेयरों के निर्गम से प्राप्त समझा जाना चाहिए। जारी होने योग्य शेयरों की संख्या और उन शेयरों की संख्या, जो उचित मूल्य पर जारी हो रहे हैं, के बीच का अन्तर, बिना किसी प्राप्ति के साधारण शेयरों के निर्गम की तरह माना जाना चाहिए।

36. इस प्रयोजन के लिए उचित मूल्य, अवधि के दौरान साधारण शेयरों का औसत मूल्य है। सैद्धांतिक रूप से, उद्यम के साधारण शेयरों के औसत मूल्य के लिए प्रत्येक बाजार संव्यवहार को सम्मिलित किया जा सकता है। तथापि, व्यवहारिक विषय के रूप में औसत कीमत की गणना में पिछले छह मास के साप्ताहिक समाप्ति कीमतों का साधारण औसत आमतौर पर पर्याप्त होता है।

37. विकल्प और अन्य शेयर क्रय व्यवस्थाएँ तब अविमिश्रित होती हैं जब उनका परिणाम उचित मूल्य से कम के लिए साधारण शेयरों के निर्गम में निकलता है। अविमिश्रण की रकम निर्गम मूल्य से उचित मूल्य घटाकर प्राप्त करते हैं। इसीलिए, प्रति शेयर अविमिश्रित उपार्जन की गणना करने के लिए, यह मानना चाहिए कि ऐसी प्रत्येक व्यवस्था में सम्मिलित है:

(क) अवधि के दौरान अपने औसत उचित मूल्य पर साधारण शेयरों की कतिपय संख्या जारी करने के लिए, एक संविदा। जारी किए जाने वाले शेयर की कीमत उचित रूप से आँकी जाती है और वे न तो अवमिश्रित और न ही गैर-अविमिश्रित माने गए हैं। वे प्रति शेयर अविमिश्रित उपार्जन की गणना में नजर-अंदाज किए जाते हैं; और

(ख) किसी प्रतिफल के बिना, बाकी बचे साधारण शेयरों को जारी करने के लिए संविदा। ऐसे साधारण शेयर कोई आगम उत्पन्न नहीं करते और इनका बकाया साधारण शेयरों से सम्बंधित शुद्ध लाभ पर कोई प्रभाव नहीं होता है। इसीलिए, ऐसे शेयर अविमिश्रित है और प्रति शेयर अविमिश्रित उपार्जन की गणना में बकाया साधारण शेयरों की संख्या में जोड़े जाते हैं।

इस मानक से संलग्न दृष्टांत VI प्रति शेयर अविमिश्रित उपार्जन पर शेयर विकल्पों के प्रभावों को उदाहरणों के साथ समझाता है।

38. जब तक अंशतः संदत्त शेयर, रिपोर्टिंग अवधि के दौरान लाभांशों में भागीदारी के हकदार नहीं होते, तब तक वे अधिपत्रों या विकल्पों के समतुल्य माने जाते हैं।

अविमिश्रित संभाव्य साधारण शेयर

39. संभाव्य साधारण शेयर तब और केवल तब अविमिश्रित माने जाने चाहिएं, जब साधारण शेयरों में उनका संपरिवर्तन निरंतर सामान्य प्रचालन से प्रति शेयर शुद्ध लाभ को कम करे।

40. एक उद्यम निरंतर सामान्य क्रियाकलापों से शुद्ध लाभ का प्रयोग 'नियंत्रण संख्या' के रूप में करता है जो यह स्थापित करने के लिए प्रयोग की जाती है कि संभाव्य साधारण शेयर अविमिश्रित है या गैर-अविमिश्रित। निरंतर सामान्य क्रियाकलापों से प्राप्त शुद्ध लाभ, अधिमानी लाभाशों को और उस से संबंधित किसी भी कर को घटाने के बाद और प्रचालनों की समाप्ति से सम्बंधित मदों को निकालने के बाद, सामान्य क्रियाकलापों (जैसे कि लेखा मानक 5 में परिभाषित किया गया है), से प्राप्त शुद्ध लाभ है।[27]

41. संभाव्य साधारण शेयर गैर-अविमिश्रित तब होते हैं जब साधारण शेयरों में उनका संपरिवर्तन निरंतर सामान्य क्रियाकलापों से प्रति शेयर उपार्जन बढ़ाता है या निरंतर सामान्य क्रियाकलापों से प्रति शेयर हानि कम करता है। गैर-अविमिश्रित संभाव्य साधारण शेयरों के प्रभाव, प्रति शेयर अविमिश्रित उपार्जन की गणना में नजरअंदाज किए जाते हैं।

42. यह विचार करने के लिए कि संभाव्य साधारण शेयर अविमिश्रित है या गैर-अविमिश्रित है, संभाव्य साधारण शेयरों का प्रत्येक निर्गम या श्रृंखला पृथकतः देखा जाता है न कि कुल योग में। वह अनुक्रम जिसमें संभाव्य साधारण शेयरों पर विचार किया जाता है, वह इसे प्रभावित कर सकता है कि वे अविमिश्रित हैं या नहीं इसलिए, प्रति शेयर मूल उपार्जन के अविमिश्रिण को अधिकतम करने के लिए, संभाव्य साधारण शेयरों के प्रत्येक निर्गम या श्रृंखला पर, अनुक्रम में अत्यधिक अविमिश्रित से लेकर न्यूनतम अविमिश्रित की ओर ध्यान दिया जाता है। अत्यधिक अविमिश्रित साधारण शेयरों से लेकर न्यूनतम अविमिश्रित साधारण शेयर के अनुक्रम के निर्धारण के लिए प्रति वृद्धिगत सम्भाव्य साधारण शेयर उपार्जन की गणना की जाती है। जहाँ प्रति वृद्धिगत शेयर उपार्जन न्यूनतम होता है वहाँ संभाव्य साधारण शेयर अत्यधिक अविमिश्रित माना जाता है और विपर्ययेन।

इस मानक से संलग्न दृष्टांत VII वह क्रम निर्धारित करने का तरीका उदाहरण के साथ समझाता है जिसमें अविमिश्रित प्रतिभूतियों को शेयरों की भारित औसत संख्या की गणना में सम्मिलित किया जाना चाहिए।

43. संभाव्य साधारण शेयर उस अवधि के लिए भारित होते हैं जब वे बकाया थे। वे संभाव्य साधारण शेयर जो रिपोर्टिंग अवधि के दौरान निरस्त होते थे या जिन्हें रद्द होने दिया जाता था, केवल अवधि के उस भाग में प्रति शेयर अवमिश्रित उपार्जन की गणना में सम्मिलित होते हैं, जिसके दौरान वे बकाया थे। वे संभाव्य साधारण शेयर जो रिपोर्टिंग अवधि के दौरान साधारण शेयरों में संपरिवर्तित हुए हैं, अवधि के आरम्भ से संपरिवर्तन की तारीख तक प्रति शेयर अविमिश्रित उपार्जन की गणना में सम्मिलित किए जाते हैं; (संपरिवर्तन की तारीख से, परिणामस्वरूप उत्पन्न साधारण शेयर दोनों प्रति शेयर मूल और अविमिश्रित उपार्जन की गणना में सम्मिलित होते हैं।

पुनर्कथन

44. यदि बकाया साधारण या संभाव्य साधारण शेयरों की संख्या बोनस निर्गम या शेयर विखंडन के परिणाम स्वरूप बढ़ती है या प्रतिकूल शेयर विखंडन (शेयरों का समेकन) के परिणाम स्वरूप घटती है, तो प्रति शेयर मूल और प्रति शेयर अविमिश्रित उपार्जन की गणना प्रस्तुत की गई सभी अवधियों के लिए समायोजित की जानी चाहिए। यदि यह संपरिवर्तन तुलन पत्र की तारीख के बाद किंतु निदेशक बोर्ड द्वारा वित्तीय विवरणों के अनुमोदन की तारीख से पहले घटित होते हैं तो उन वित्तीय विवरणों के लिए प्रति शेयर गणनाएँ और अवधि से पूर्व प्रस्तुत कोई भी वित्तीय विवरण, शेयरों की नई संख्या पर आधारित होना चाहिए। यदि प्रति शेयर गणनाएं, शेयरों की संख्या में ऐसे संपरिवर्तन प्रतिबिंबित करती हैं तो ऐसे तथ्य प्रकट किये जाने चाहिएं।

45. एक उद्यम प्रयोग की गई धारणाओं में परिवर्तन के लिए या संभाव्य साधारण शेयरों के बकाया साधारण शेयरों में संपरिवर्तन के लिए, किसी अवधि के प्रति शेयर अविमिश्रित उपार्जन का पुनः विवरण नहीं है।

46. एक उद्यम को बोनस निर्गमों, शेयर विखंडनों और प्रतिकूल शेयर विखंडनों (शेयरों का समेकन) के अतिरिक्त साधारण शेयर संव्यवहारों या संभाव्य साधारण शेयर संव्यवहारों का विवरण प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता

---

[27] लेखा मानक 24, *बंद हो रहे प्रचालन*, प्रचालनों की समाप्ति के संबंध में अपेक्षाएं निर्दिष्ट करता है।

है, जब वे तुलनपत्र की तारीख के बाद घटित होते हैं और जब उनका इतना महत्व होता है कि उनका अप्रकटन वित्तीय विवरणों के प्रयोगकर्ताओं की उचित मूल्यांकन और निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित करता है। ऐसे संव्यवहारों के उदाहरण हैं:

(क) रोकड़ के लिए शेयरों का निर्गम;

(ख) शेयरों का निर्गम जब आगम ऋण या तुलनपत्र की तारीख पर बकाया अधिमानी शेयरों के प्रतिसंदाय के लिए प्रयोग की जाएँ;

(ग) तुलनपत्र की तारीख पर बकाया साधारण शेयरों का रद्दकरण ।

(घ) तुलनपत्र की तारीख पर बकाया संभाव्य साधारण शेयरों का साधारण शेयरों में संपरिवर्तन या प्रयोग;

(ङ) अधिपत्रों, विकल्पों या संपरिवर्तनीय प्रतिभूतियों का निर्गम; और

(च) स्थितियों की संतुष्टि जिसका परिणाम आकस्मिक रूप से जारी होने योग्य शेयरों में निकलेगा।

47. तुलनपत्र की तारीख के बाद घटित होने वाले ऐसे संव्यवहारों के लिए प्रति शेयर उपार्जन की रकमें समायोजित नहीं की जाती हैं क्योंकि ऐसे संव्यवहार अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि उत्पन्न करने के लिए प्रयोग की गई पूँजी की रकम को प्रभावित नहीं करते।

प्रकटन

48. इस मानक के पैरा 8, 9 और 44 द्वारा अपेक्षित प्रकटन के अतिरिक्त, एक उद्यम को निम्नलिखित को प्रकट करना चाहिए:

(i) जहाँ लाभ और हानि के विवरण में असाधारण मदें सम्मिलित होती हैं लेखा मानक 5, अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि, पूर्वविधि मदें और लेखा नीतियों में परिवर्तन के अर्थ में वहाँ उद्यम को असाधारण मदों को निकालते हुए, उपार्जन (कर व्यय से शुद्ध) के आधार पर निकले गए प्रति शेयर मूल और अविमिश्रित उपार्जन को प्रकट करना चाहिए; और

(ii) (क) प्रति शेयर मूल और अविमिश्रित उपार्जन की गणना में अंश के रूप में प्रयोग की गई रकम, और अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि के प्रति उन रकमों का समाधान;

(ख) प्रति शेयर मूल और अविमिश्रित उपार्जन की गणना में हर के रूप में प्रयोग की गई रकम और उन रकमों का एक दूसरे के प्रति समाधान; और

(ग) प्रति शेयर उपार्जन आंकड़ों के साथ शेयरों का अंकित मूल्य।

49. संभाव्य साधारण शेयरों को उत्पन्न कर रही संविदा उन निबंधनों और शर्तों को निगमित कर सकते हैं जो प्रति शेयर मूल और अविमिश्रित उपार्जन की माप को प्रभावित करती हैं। यह निबंधन व शर्तें यह निर्धारित कर सकती हैं कि कोई संभाव्य साधारण शेयर अविमिश्रित है या नहीं और, यदि है तो बकाया शेयरों की भारित औसत संख्या पर उसका प्रभाव और साधारण शेयर धारकों से संबंधित शुद्ध लाभ के प्रति किसी परिणामजन्य समायोजनों को निर्धारित कर सकते हैं। ऐसी संविदाओं के निबंधनों और शर्तों के प्रकटन को इस मानक द्वारा प्रोत्साहित किया गया है।

50. यदि कोई उद्यम प्रति शेयर मूल और अविमिश्रित उपार्जन के साथ साधारण शेयर धारकों से सम्बंधित अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि के अतिरिक्त शुद्ध लाभ के एक रिपोर्टेड घटक का प्रयोग करते हुए प्रति शेयर रकमों को प्रकट करता है, तो ऐसी रकमों की इस मानक के अनुसार साधारण शेयरों की भारित औसत संख्या का प्रयोग करते हुए गणना की जानी चाहिए। यदि शुद्ध लाभ के एक ऐसे घटक का प्रयोग किया जाता है जो लाभ और हानि के विवरण में लाइन मद के रूप में सूचित नहीं है, तो प्रयुक्त घटक और लाभ व हानि के विवरण में सूचित लाइन मद के बीच एक समाधान उपलब्ध कराया जाना चाहिए। प्रति शेयर मूल और अविमिश्रित रकमें समान महत्व के साथ प्रकट किये जाने चाहिए।

51. कोई उद्यम इस मानक में अपेक्षित जानकारी की तुलना में अधिक जानकारी प्रकट करने की इच्छा भी रख सकता है। ऐसी जानकारी, उद्यम की निष्पादनता के मूल्यांकन के लिए प्रयोगकर्ता की मदद कर सकती है और शुद्ध लाभ के विभिन्न घटकों के लिए प्रति शेयर रकमों का रूप ले सकती है। ऐसे प्रकटन प्रोत्साहित किये जाते हैं। तथापि, जब ऐसी रकमें प्रकट

की जाती हैं तो, प्रकट की गई प्रति शेयर रकमों की तुलनात्मकता को सुनिश्चित करने के लिए, हर (न्यूमरेटर) की इस मानक के अनुसार गणना करने की आवश्यकता है।

दृष्टांत

टिप्पण: *ये दृष्टांत लेखा मानक का भाग नहीं हैं। इनका उद्देश्य लेखा मानक के लागू होने को स्पष्ट करना है।*

दृष्टांत I

उदाहरण शेयरों की भारित औसत संख्या

(लेखा-वर्ष 01-01-20×1 से 31-12-20×1)

		निर्गमित शेयरों की संख्या	वापस खरीदे गए शेयरों की संख्या	बकाया शेयरों की संख्या
1 जनवरी, 20×1	वर्ष के आरंभ में शेष	1,800	-	1,800
31 मई, 20×1	रोकड़ हेतु शेयरों का निर्गम	600	-	2,400
1 नवंबर, 20×1	शेयरों को वापस खरीदना	-	300	2,100
31 दिसंबर, 20×1	वर्ष के अंत में अतिशेष	2,400	300	2,100
भारित औसत की गणना : (1,800 × 5/12) + (2,400 × 5/12) + (2,100 × 2/12) = 2,100 शेयर शेयरों की भारित औसत संख्या की वैकल्पिक रूप से गणना निम्न प्रकार से की जा सकती हैं: (1,800 × 2/12) + (600 × 7/12) - (300 × 2/12) = 2,100 शेयर				

दृष्टांत II

उदाहरण-अंशतः संदत्त शेयर

(लेखा-वर्ष 01-01-20×1 से 31-12-20×1)

		निर्गमित शेयरों की संख्या	शेयरों का अंकित मूल्य	संदत्त रकम
1 जनवरी, 20×1	वर्ष के आरंभ पर अतिशेष	1,800	10 रु.	10 रु.
31 अक्तूबर, 20×1	शेयरों का निर्गम	600	10 रु.	5 रु.

यह मानते हुए कि अंशतः संदत्त शेयर, संदत्त रकम की सीमा तक लाभांश में भागीदारी के अधिकारी हैं, प्रति शेयर उपार्जन की गणना के लिए अंशतः संदत्त साधारण शेयरों की संख्या 300 ली जाएगी।

भारित औसत की गणना इस प्रकार होगी:

(1,8000 × 12/12) + (300 × 2/12) = 1,850 शेयर

उदाहरण III

उदाहरण-बोनस निर्गम

(लेखा-वर्ष 01-01-20X से 31-12-20X)

वर्ष 20X0 के लिए शुद्ध लाभ	18,00,000 रु.
वर्ष 20X1 के लिए शुद्ध लाभ	60,00,000 रु.
30 सितंबर, 20X1 तक बकाया साधारण शेयरों की संख्या	20,00,000 रु.
बोनस निर्गम 1 अक्तूबर, 20X1	30 सितंबर, 20X1 पर प्रत्येक बकाया साधारण शेयर के लिए 2 साधारण शेयर (20,00,000 × 2 = 40,00,000)
वर्ष 2001 के लिए प्रति शेयर	60,00,000 रु. 20,00,000 × 2 = 40,00,000 = 1.00 18,00,000 रु.
वर्ष 2001 के लिए समायोजित उपार्जन प्रतिशेयर उपार्जन	(20,00,000 + 40,00,000) =0.30
क्योंकि बोनस निर्गम बिना किसी मूल्य के निर्गमित होता है, इसलिए निर्गम के साथ ऐसे व्यवहार होना चाहिए जैसे कि यह सबसे पहले सूचित अवधि, वर्ष 20X0 के आरंम्भ से पहले घटित हो चुका है।	

उदाहरण IV

उदाहरण अधिकार निर्गम

(लेखा-वर्ष 01-01-20X0 से 31-12-20X0)

शुद्ध लाभ	वर्ष 20X0 : 11,00,000 रु. वर्ष 20X1 : 15,00,000 रु.
अधिकार निर्गम से पूर्व बकाया शेयरों की संख्या	5,00,000 शेयर
अधिकार निर्गम	प्रत्येक पाँच बकाया शेयरों के लिए एक नया शेयर (अर्थात् 1,00,000 नए शेयर) अधिकार निर्गम मूल्य: 15.00 रु. अधिकार प्रयोग करने की अंतिम तारीख: 1 मार्च 20X1
1 मार्च 20X1 पर अधिकारों के प्रयोग से तुरन्त पूर्व एक साधारण शेयर का उचित मूल्य	21.00 रु.
सैद्धांतिक पूर्व-अधिकार उचित मूल्य प्रति शेयर की गणना अधिकारों के प्रयोग से तुरन्त पूर्व सभी बकाया शेयरों का उचित-मूल्य + प्रयोग से प्राप्त कुल रकम	
प्रयोग से पूर्व बकाया शयरों की संख्या + प्रयोग में निर्गमित शेयरों की संख्या (21.00 रु. × 5,00,000 शेयर) + (15.00 रु. × 1,00,000 शेयर)	

5,00,000 शेयर + 1,00,000 शेयर सैद्धांतिक पूर्व-अधिकार उचित मूल्य प्रति शेयर = 20.00 रु.		
समायोजन घटक की गणना		
अधिकार के प्रयोग से पूर्व उचित मूल्य (21.00) रु. प्रति शेयर = 1.05		
सैद्धांतिक पूर्व-अधिकार मूल्य प्रति शेयर (20.00)रु.		
प्रति शेयर उपार्जन की गणना		
	वर्ष 2010	वर्ष 2011
वर्ष 20X0 के लिए, मूल रूप से रिपोर्ट किया गया प्रति शेयर उपार्जन: 11,00,000 रु./5,00,000 शेयर	2.20 रु.	
अधिकार निर्गम के लिए पुर्नकथित, 20X0 के लिए प्रति शेयर उपार्जन: 11,00,000रु. (5,00,000 शेयर × 1.05)	2.10 रु.	
अधिकार निर्गम के प्रभाव समेत वर्ष 20X1 के लिए प्रति शेयर उपार्जन : 15,00,000 रु. (5,00,000 × 1.05 × 2/12) × (6,00,000 × 10/12)		2.55 रु.

IndiaCode

उदाहरण V

संपरिवर्तनीय ऋण पत्र

(लेखा वर्ष 01-01-20X0 से 31-12-20X0)

चालू वर्ष के लिए शुद्ध लाभ	1,00,00,000 रु.
बकाया साधारण शेयरों की संख्या	50,00,000
प्रति शेयर मूल उपार्जन	2.00 रु.
प्रत्येक 100रु. के 12% संपरिवर्तनीय ऋण पत्रों की संख्या प्रत्येक ऋणपत्र 10 साधारण शेयरों में संपरिवर्तनीय है।	1,00,000
चालू वर्ष के लिए ब्याज व्यय	12,00,000
ब्याज व्यय के सम्बंधित कर (30%)	3,60,000 रु.
चालू वर्ष के लिए समायोजित शुद्ध लाभ	(1,00,00,000 - 12,00,000 - 3,60,000) रु. = 1,08,40,000 रु.

ऋणपत्रों के संपरिवर्तन के परिणाम स्वरूप साधारण शेयरों की संख्या	10,00,000
प्रति शेयर अविमिश्रित उपार्जन की गणना के लिए प्रयुक्त	50,00,000 + 10,00,000 = 60,00,000
साधारण शेयरों की संख्या प्रति शेयर अविमिश्रित उपार्जन	1,08,40,000/60,00,000 = 1.81 रु.

उदाहरण VI

उदाहरण- प्रति शेयर अविमिश्रित उपार्जन पर शेयर विकल्पों के प्रभाव

(लेखा-वर्ष 01-01-20×0 से 31-12-20×0)

वर्ष 20X1 के लिए शुद्ध लाभ	12,00,000 रु.
वर्ष 20X1 के दौरान बकाया साधारण शेयरों की भारित औसत संख्या	5,00,000 शेयर
वर्ष 20X1 के दौरान एक साधारण शेयर का औसत उचित मूल्य	20.00 रु.
वर्ष 20X1 के दौरान विकल्प के अंतर्गत शेयरों की भारित औसत संख्या	1,00,000 शेयर
वर्ष 20X1 के दौरान विकल्प के अंतर्गत शेयरों के लिए प्रयोग कीमत	15.00 रु.

IndiaCode

प्रति शेयर उपार्जन की गणना

	उपार्जन	शेयर	प्रति शेयर
वर्ष 20X1 के लिए शुद्ध लाभ	12,00,000 रु.		
वर्ष 20X1 के दौरान बकाया शेयरों की भारित औसत संख्या		5,00,000	
प्रति शेयर मूल उपार्जन			2.40 रु.
विकल्प के अंतर्गत शेयरों की संख्या		1,00,000	
ऐसे शेयरों की संख्या जो उचित मूल्य पर निर्गमित हो रहे होंगे: (1,00,000 × 15.00)/20.00	*	(75,000)	

प्रति शेयर अविमिश्रित उपार्जन	12,00,000 रु.	5,25,000	2.21 रु.
*उपार्जन नहीं बढ़ रहा है क्योंकि शेयरों की कुल संख्या केवल गणना के प्रयोजन के लिए समझने जाने वाले शेयरों (25,000) की संख्या द्वारा बढ़ रही है (पैरा 37 (ख) देखें)			

दृष्टांत VII

उदाहरण वह क्रम निर्धारित करना जिसमें अविमिश्रित प्रतिभूतियों कोशेयरों की भारित औसत संख्या की गणना में सम्मिलित करना चाहिए।

(लेखा-वर्ष 01-01-2010 से 31-12-2020)

उपार्जन, अर्थात, साधारण शेयर धारकों से सम्बन्धित शुद्ध लाभ	1,00,00,000 रु.
बकाया साधारण शेयरों की संख्या	20,00,000
वर्ष के दौरान एक साधारण शेयर का औसत उचित मूल्य	75.00 रु.
संभाव्य साधारण शेयर	
विकल्प	60 रु. की प्रयोग कीमत के साथ 1,00,000
संपरिवर्तनीय अधिमानी शेयर	8,00,000 शेयर, 8 रु. प्रति शेयर के संचयी लाभाशों के अधिकारी हैं। प्रत्येक अधिमानी शेयर, 2 साधारण *शेयरों में संपरिवर्तनीय* है।
सम्बधिंत कर, उदाहरण, कंपनी लाभांश कर प्रत्येक 100रु. के 12% संपरिवर्तनीय ऋण पत्र	10% 10,00,00,000 रु. की अंकित रकम। प्रत्येक ऋण पत्र 4 साधारण शेयरों में संपरिवर्तनीय है।
कर की दर	30%

संभाव्य साधारण शेयरों के संपरिवर्तन पर साधारण शेयरधारकों केप्रति सम्बंधित अर्जन में बढ़ोतरी

	उपार्जन में बढ़ोतरी	साधारण शेयरों की संख्या में बढ़ोतरी	प्रति वृद्धिशील शेयर उपार्जन
विकल्प			
उपार्जन में बढ़ोतरी	शून्य		
बिना किसी सोच मूल्य के लिए निर्गमित वृद्धिगत शेयरों की संख्या [1,00,000 × (75-60)/75]		20,000	शून्य
संपरिवर्तनीय अधिमानी शेयर			
साधारण शेयर धारकों से संबंधित शुद्ध लाभ में बढ़ोतरी, जैसा कि संबंधित कर द्वारा	70,40,000 रु.		

IndiaCode

समायोजित होता है [(8 रु. × 8,00,000) + 10% (8 × 8,00,000,			
वृद्धिगत शेयरों की संख्या [2 × 8,00,000]		16,00,000	4.40 रु.
12% संपरिवर्तनीय ऋण पत्र			
शुद्ध लाभ में बढ़ोतरी [10,00,00,000 रु. × 0.12(1-0.30)]	84,00,000 रु.		
वृद्धिशील शेयरों की संख्या [10,00,000 × 4]		40,00,000	2.10रु.

उपरोक्त से यह देखा जा सकता है कि विकल्प अत्यधिक अविमिश्रित है क्योंकि उनका प्रति शेयर उपार्जन शून्य है। इस प्रकार, प्रति शेयर अविमिश्रित उपार्जन की गणना के लिए, पहले विकल्प पर ध्यान दिया जाएगा । 12% संपरिवर्तनीय ऋण पत्रों पर दूसरे नम्बर पर अत्याधिक अविमिश्रित होने के कारण बाद में ध्यान दिया जाएगा और इसके बाद संपरिवर्तनीय अधिमानी शेयरों पर ध्यान दिया जाएगा (पैरा 42 देखें)।

प्रति शेयर अविमिश्रित उपार्जन की गणना

	संबंधित शुद्ध लाभ (रु.)	साधारण शेयरों की संख्या	प्रति शेयर संबंधित शुद्ध लाभ (रु.)
जैसा रिपोर्ट किया गया है	1,00,000	20,00,000	5.00
विकल्प		20,000	
	1,00,000	20,00,000	4.95 अविमिश्रित
12% संपरिवर्तनीय ऋण पत्र	84,00,000	40,00,000	
	1,84,00,000	60,00,000	3.06 अविमिश्रित
संपरिवर्तनीय अधिमानी शेयर	70,40,000	16,00,000	
गैर-अविमिश्रित	2,54,40,000	76,20,000	3.34

चूँकि संपरिवर्तनीय अधिमानी शेयरों पर ध्यान देने पर प्रति शेयर अविमिश्रित उपार्जन बढ़ता है (3.06 रु. से 3.42 रु. तक), इसलिए संपरिवर्तनीय अधिमानी शेयर गैर-अविमिश्रित है और प्रति शेयर अविमिश्रित उपार्जन की गणना में नजरअंदाज किए जाते हैं। इसीलिए, प्रति शेयर अविमिश्रित उपार्जन 3.06 रु. है।

लेखा मानक 21

समेकित वित्तीय विवरण[28]

(इस लेखा मानक में कुछ मोटे तिरछे टाइप और कुछ सीधे टाइप में व्यवस्थित पैरा सम्मिलित है, जिनका समान प्राधिकार है। मोटे तिरछे टाइप में दिये गए पैरा मुख्य सिद्धांत उपदर्शित करते हैं। इस लेखा मानक को अधिसूचना के प्रति उपाबंध के भाग क में अतंर्विष्ट साधारण अनुदेशों के संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिये।)

[28] यह स्पष्ट किया जाता है कि, यदि एक उद्यम समेकित वित्तीय विवरण प्रस्तुत करता है तो लेखा मानक 21 आज्ञापक है। दूसरे शब्दों में, लेखा मानक एक उद्यम को समेकित वित्तीय विवरण प्रस्तुत करने का आदेश नहीं देता लेकिन, यदि कोई उद्यम किसी कानून की आवश्यकताओं के साथ अनुपालन के लिए या अन्यथा समेकित वित्तीय विवरण प्रस्तुत करता है, तो इसे समेकित वित्तीय विवरण लेखा मानक 21 के अनुसार तैयार और प्रस्तुत करने चाहिए।

IndiaCode

उद्देश्य

इस मानक का उद्देश्य समेकित वित्तीय विवरणों की तैयारी और प्रस्तुतिकरण के लिए सिद्धांतों और प्रक्रियाओं को स्थापित करना है। मूल कंपनी (जो नियंत्री उद्यम के नाम से भी ज्ञात है) द्वारा उसके समूह के आर्थिक क्रियाकलापों के बारे में वित्तीय जानकारी प्रदान करने के लिए, समेकित वित्तीय विवरण, प्रस्तुत किए जाते हैं। इन विवरणों का उद्देश्य मूल और इसकी समनुषंगियों के बारे में एक एकल आर्थिक इकाई के रूप में समूह द्वारा नियंत्रित आर्थिक संसाधनों, समूह के दायित्वों और अपने संसाधनों से समूह को प्राप्त परिणामों को दर्शित करने के लिए वित्तीय जानकारी प्रस्तुत करना होता है।

कार्यक्षेत्र

1. यह मानक मूल कंपनी के नियंत्रण के अधीन उद्यमों के समूह के लिए समेकित वित्तीय विवरणों की तैयारी और प्रस्तुतिकरण में लागू होना चाहिए।

2. यह मानक, मूल कंपनी के पृथक वित्तीय विवरणों में समनुषंगियों में विनिधान के लेखा में भी लागू किया जाना चाहिए।

3. समेकित वित्तीय विवरणों की तैयारी में, अन्य लेखा मानक भी उसी तरह लागू होते है जैसे वे पृथक वित्तीय विवरणों में लागू होते हैं।

4. यह मानक निम्नलिखित से संबंधित नहीं है:

(क) समामेलन पर उद्भूत गुडविल सहित, समामेलनों के लेखा के लिए पद्धतियाँ और समेकन पर उनके प्रभाव, *(लेखा मानक 14, समामेलनों के लिए लेखा, देखें) ;*

(ख) सहयुक्तों में विनिधानों के लिए लेखा (वर्तमान में लेखा मानक 13, *विनिधानों के लिए लेखा*[29] द्वारा शासित हैं) ; और

(ग) सहउद्यमों में विनिधानों के लिए लेखा (वर्तमान में लेखा मानक 13, *विनिधानों के लिए लेखा*[30] द्वारा शासित है)

परिभाषाएँ

5. इस मानक के प्रयोजन के लिए, निम्नलिखित शब्द विनिर्दिष्ट अर्थों में प्रयोग किए गए हैं:

5.1 <u>नियंत्रण</u>:

(क) ***प्रत्यक्ष रूप से या अप्रत्यक्ष रूप से, समनुषंगी (समनुषंगियों) के माध्यम एक उद्यम की आधी से अधिक मतदान शक्ति का स्वामित्व ; या***

(ख) ***किसी कम्पनी की दशा में निदेशक बोर्ड की संरचना का नियंत्रण या किसी अन्य उद्यम की दशा में तत्समान शासी निकाय की संरचना का नियंत्रण जिससे कि इसके क्रियाकलापों से आर्थिक लाभ प्राप्त किए जा सके।***

5.2 <u>एक समनुषंगी</u> एक उद्यम है, जो अन्य उद्यम (जो मूल के नाम से जाने जाते है) द्वारा नियंत्रित होता है।

5.3 <u>मूल</u> एक उद्यम है जिसकी एक या अधिक समनुषंगी कंपनी होती हैं।

5.4 <u>समूह,</u> मूल और इसकी सभी समनुषंगी है।

5.5 <u>समेकित वित्तीय विवरण</u> समूह के वित्तीय विवरण होते हैं, जो कि एकल उद्यम के रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं।

5.6 <u>इक्विटी</u> एक उद्यम की आस्तियों में इसके सभी दायित्वों को घटा देने के बाद, उपस्थित अवशिष्ट हित हैं।

5.7. <u>अल्पसंख्यक हित</u> प्रचालनों के शुद्ध परिणामों और शुद्ध आस्तियों का वह भाग है, जो उन हितों से संबंधित है जिन पर प्रत्यक्ष रूप से या अप्रत्यक्ष रूप से समनुषंगी के माध्यम से मूल का कोई स्वामित्व नहीं है।

---

[29] लेखा मानक 23, सहयुक्तों में विनिधानों के लिए समेकित वित्तीय विवरणों में लेखा, समेकित वित्तीय विवरणों में सहयुक्तों में विनिधानों के लिए लेखा से संबंधित अपेक्षाओं को विनिर्दिष्ट करता है।

[30] लेखा मानक 27, सहउद्यमों में हितों की वित्तीय रिपोर्टिंग, सहउद्यमों में विनिधानों के लिए लेखा संबंधित अपेक्षाओं को विनिर्दिष्ट करता है।

IndiaCode

6. समेकित वित्तीय विवरणों में आमतौर पर समेकित तुलनपत्र, लाभ और हानि का समेकित विवरण, और टिप्पण, अन्य विवरण और स्पष्टीकारक सामग्री सम्मिलित होती है, जो उसका एक समाकलित भाग बनता है। यदि मूल अपना रोकड़ प्रवाह विवरण प्रस्तुत करता है तो समेकित रोकड़ प्रवाह विवरण प्रस्तुत किया जाता है। जहाँ तक संभव हो समेकित वित्तीय विवरण उसी प्रारूप में प्रस्तुत किए जाते है, जो मूल द्वारा इसके पृथक वित्तीय विवरणों के लिए अपनाया जाता है।

स्पष्टीकरण:

मूल उद्यम और इसकी समनुषंगियों के पृथक वित्तीय विवरणों में प्रकट हो रहे सभी टिप्पणों को समेकित वित्तीय विवरणों के लिए टिप्पणों में सम्मिलित करना आवश्यक नहीं है। समेकित वित्तीय विवरणों को बनाने के लिए, टिप्पणों और अन्य स्पष्टीकारक सामग्री जो उनका एक अभिन्न भाग बनती है, के संदर्भ में निम्नलिखित सिद्धांतों का अनुपालन किया जा सकता है:

(क) वे टिप्पण जो समेकित वित्तीय विवरणों का सही और ऋजु चित्र प्रस्तुत करने के लिए आवश्यक हैं, उनके अभिन्न भाग के रूप में समेकित वित्तीय विवरणों में सम्मिलित किए जाते हैं।

(ख) केवल सारवान मदों वाले टिप्पणों को प्रकट करने की आवश्यकता होती है। इस उद्देश्य के लिए सारवानता समेकित वित्तीय विवरणों में निहित जानकारी के संबंध में अवधारित होती है। इसको देखते हुए, यह संभव हो सकता है कि जब सारवानता का परीक्षण समेकित वित्तीय विवरणों के संदर्भ में लागू होता है तो मूल या समनुषंगी के पृथक वित्तीय विवरणों में प्रकट कुछ टिप्पणों की समेकित वित्तीय विवरणों में प्रकटन की आवश्यकता न हो।

(ग) समनुषंगी और/या मूल के पृथक वित्तीय विवरणों में अतिरिक्त कानूनी जानकारी को समेकित वित्तीय विवरणों के सही और ऋजु चित्र से कोई प्रासंगिकता न रखने के कारण, समेकित वित्तीय विवरणों में प्रकट करने की आवश्यकता नहीं होती।

समेकित वित्तीय विवरणों का प्रस्तुतिकरण

7. एक मूल जो समेकित वित्तीय विवरण प्रस्तुत करता है, उसे यह विवरण उसकी पृथक वित्तीय विवरणों के साथ प्रस्तुत करना चाहिए।

8. मूल के वित्तीय विवरणों के प्रयोगकर्ता प्रायः न केवल उद्यम अपितु पूरे समूह की वित्तीय स्थिति और प्रचालनों के परिणामों से सम्बंध रखते हैं और उन्हें इस बारे में सूचित भी किया जाना चाहिए। यह आवश्यकता प्रयोगकर्ताओं को निम्नलिखित प्रदान करके होती है:

(क) मूल के पृथक वित्तीय विवरण ; और

(ख) समेकित वित्तीय विवरण, जो पृथक विधिक इकाइयों की विधिक सीमाओं को ध्यान में न रखते हुए एकल उद्यम की तरह समूह के बारे में वित्तीय जानकारी प्रस्तुत करते है।

समेकित वित्तीय विवरणों का कार्यक्षेत्र

9. एक मूल उद्यम को, जो समेकित वित्तीय विवरण प्रस्तुत करता है, पैरा 11 में निर्दिष्ट समनुषंगियों के अतिरिक्त, देशी साथ ही साथ विदेशी, सभी समनुषंगियों को समेकित करना चाहिए। जहां उद्यम को कोई समनुषंगी नहीं है किंतु सहयुक्त और/या सहउद्यम है, वहां उद्यम को क्रमशः लेखा मानक 23, सहयुक्तों में विनिधानों हेतु समेकित वित्तीय विवरणों में लेखा तथा लेखा मानक 27, सहउद्यमों में हितों की वित्तीय रिपोर्टिंग के अनुसार समेकित वित्तीय विवरण भी तैयार करना चाहिए।

10. समेकित वित्तीय विवरण, मूल उद्यम के और पैरा 11 में दिए गए कारणों के लिए अपवर्जित समनुषंगियों के अतिरिक्त उन सभी उद्यमों के वित्तीय विवरणों के आधार पर तैयार होते हैं जो मूल द्वारा नियंत्रित किए जाते हैं। नियंत्रण तब विद्यमान होता है जब प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्षतः समनुषंगियों के द्वारा, मूल उद्यम के पास एक उद्यम की आधी से अधिक मतदान शक्ति का स्वामित्व होता है। नियंत्रण तब भी विद्यमान होता है जब एक उद्यम, निदेशक बोर्ड की संरचना पर नियंत्रण रखता हो (एक कम्पनी की दशा में) या तत्समान शासी निकाय पर नियंत्रण रखता हो (एक उद्यम के कम्पनी न होने की दशा में) ताकि इसके क्रियाकलापों से आर्थिक लाभ प्राप्त कर सके। एक उद्यम इकाइयों की शासी निकायों की संरचना को नियंत्रित कर सकता है जैसे कि उपदान न्यास, भविष्य निधि न्यास आदि। क्योंकि ऐसी इकाइयों पर नियंत्रण

का उद्देश्य उनके क्रियाकलापों से आर्थिक लाभ प्राप्त करना नहीं होता, इसलिए समेकित वित्तीय विवरणों की तैयारी के लिए इन पर विचार नहीं किया जाता। इस मानक के उद्देश्य के लिए, एक उद्यम को निम्नलिखित की संरचना का नियंत्रक माना जाता है:

(i) एक कम्पनी का निदेशक बोर्ड, यदि इसके पास किसी अन्य व्यक्ति की सम्मति या सहमति के बिना उस कम्पनी के सभी या अधिकांश निदेशकों को नियुक्त करने या हटाने की शक्ति है एक उद्यम के पास निदेशक को नियुक्ति करने की शक्ति तब समझी जाती है, यदि निम्नलिखित में से कोई भी शर्त पूरी होती है:

(क) उद्यम द्वारा पूर्वोक्त शक्तियों का प्रयोग उसके पक्ष में करें बिना एक व्यक्ति निदेशक के रूप में नियुक्त नहीं किया सकता ; या

(ख) एक व्यक्ति की निदेशक के रूप में नियुक्ति आवश्यक रूप से उद्यम में उसके द्वारा धारित पद पर नियुक्ति के कारण होती है; या

(ग) निदेशक उस उद्यम या उसकी समनुषंगी द्वारा नामनिर्दिष्ट होता है।

(ii) एक उद्यम का शासी निकाय जो एक कम्पनी नहीं है, यदि इसके पास किसी अन्य व्यक्ति की सम्मति या सहमति के बिना उस अन्य उद्यम के शासी निकाय के सभी या अधिकांश सदस्यों को नियुक्त करने या हटाने की शक्ति है। एक उद्यम के पास एक सदस्य को नियुक्त करने की शक्ति होती है यदि निम्नलिखित में से किसी भी शर्त को पूरा किया जाता है:

(क) एक व्यक्ति के पक्ष में उस अन्य उद्यम द्वारा पूर्वोक्त शक्ति के उपयोग के बिना, उसे शासी निकाय के सदस्य के रूप में नियुक्त नहीं किया जा सकता है; या

(ख) एक व्यक्ति की शासी निकाय के सदस्य के रूप में नियुक्ति, आवश्यक रूप से उस अन्य उद्यम में उसके द्वारा धारित पद की नियुक्ति के कारण है; या

(ग) शासी निकाय के सदस्य को उस अन्य उद्यम द्वारा नामनिर्दिष्ट किया जाता है।

IndiaCode

स्पष्टीकरण:

यह संभव है कि एक उद्यम, दो उद्यमों द्वारा नियंत्रित हो पहला, उस उद्यमों की बहुसंख्यक मतदान शक्ति के स्वामित्व के आधार पर नियंत्रित करता है और दूसरा एक करार के आधार पर या अन्यथा इसके क्रियाकलापों से आर्थिक लाभों को प्राप्त करने के लिए, निदेशक बोर्ड की संरचना को नियंत्रित करता है। ऐसी दुर्लभ स्थिति में, जब एक उद्यम, 'नियंत्रण' की परिभाषा के अनुसार दो उद्यमों द्वारा नियंत्रित होता है, पहला उल्लिखित उद्यम, इस मानक के अर्थ में, नियंत्रण करने वाले दोनों उद्यमों का समनुषंगी माना जाएगा और, इसलिए, दोनों उद्यमों को इस मानक की आवश्यकताओं के अनुसार उस उद्यम के वित्तीय विवरणों को समेकित करने की आवश्यकता होती है।

11. एक समनुषंगी को समेकन से तब अपवर्जित करना चाहिए जब:

(क) **नियंत्रण अस्थाई हो, क्योंकि समनुषंगी को अनन्य रूप से निकट भविष्य में इसके पश्चात्वर्ती व्ययन की दृष्टि से अर्जित या धारित किया जाता है ; या**

(ख) **यह ऐसे कठोर दीर्घकालिक निर्बंधनों में प्रचालन करती है जो महत्वपूर्ण रूप से मूल उद्यम को निधि अंतरित करने की उसकी क्षमता का ह्रास करते हैं।**

समेकित वित्तीय विवरणों में, ऐसी समनुषंगियों में विनिधानों का लेखा लेखा मानक 13, विनिधानों के लिए लेखा, के अनुसार होना चाहिए। समनुषंगियों को समेकित न करने के कारणों को समेकित वित्तीय विवरणों में प्रकट किया जाना चाहिए।

स्पष्टीकरण:

(क) ***जहाँ एक उद्यम, अन्य उद्यम के शेयरों के स्वामित्व के आधार पर बहुसंख्यक मतदान शक्ति का अधिकारी होता है और सभी शेयर 'व्यापार स्टाक' के रूप में धारण किए जाते है और निकट भविष्य में उन्हें उनके अनन्य रूप से पश्चात्वर्ती व्ययन की दृष्टि से अर्जित तथा धारण किए जाते हैं, प्रथम उल्लिखित उद्यम द्वारा नियंत्रण पैरा 11 (क) के अर्थ में अस्थाई समझा जाएगा।***

(ख) *वह समयावधि, जो इस मानक के उद्देश्य के लिए निकट भविष्य समझी जाती है, प्राथमिक रूप से प्रत्येक मामले के तथ्यों और परिस्थितियों पर निर्भर करती है। यद्यपि, आमतौर पर 'निकट भविष्य' शब्दों का अर्थ सुसंगत विनिधानों के अर्जन से बारह मास से अधिक नहीं माना जाता, जब तक कि इससे लम्बी अवधि मामले के तथ्यों और परिस्थितियों के आधार पर न्यायोचित न हो। आशय विनिधानों के व्ययन से सम्बंधित आशय पर विनिधान के अर्जन के समय विचार किया जाता है। तदनुसार, यदि सुसंगत विनिधान, निकट भविष्य में इसके पश्चात्वर्ती व्ययन के आशय के बिना अर्जित किया जाता है और पश्चात्वर्ती रूप से, विनिधान के व्ययन का निर्णय लिया जाता है, तो एक वास्तविक रूप से विनिधान के व्ययन होने तक, ऐसे विनिधान समेकन से अपवर्जित नहीं किए जाते हैं। इसके विपरीत, यदि आशय विनिधान, निकट भविष्य में इसके पश्चातवर्ती व्ययन के आशय के साथ अर्जित किया जाता है, लेकिन, कुछ मान्य कारणों से इसका उस समयाविधि में व्ययन नहीं जा सकता तो, आशय में कोई परिवर्तन न होने तक यह समेकन से अपवर्जित होता रहेगा।*

12. इस आधार पर समेकन से समनुषंगी का अपवर्जन कि इसके व्यावसायिक क्रियाकलापों, समूह के अंदर अन्य उद्यम के व्यावसायिक क्रियाकलापों से असमान है, उचित नहीं है क्योंकि ऐसी समनुषंगियों के समेकन द्वारा और समनुषंगियों के भिन्न व्यावसायिक क्रियाकलापों के बारे में समेकित वित्तीय विवरणों में अतिरिक्त जानकारी प्रकट करते हुए बेहतर जानकारी प्रदान की जाती है। उदाहरण के लिए, लेखा मानक 17, खंड रिपोर्टिंग, द्वारा अपेक्षित प्रकटन समूह के भीतर भिन्न व्यापारिक क्रियाकलापों के महत्व को स्पष्ट करने में मदद करते हैं।

समेकन प्रक्रियाएँ

13. समेकित वित्तीय विवरणों को तैयार करने में, मूल उद्यम और इसकी समनुषंगियों के वित्तीय विवरण को आस्तियों, दायित्वों, आय और व्यय की एक समान मदों को एक साथ जोड़ते हुए, पंक्ति दर पंक्ति के आधार पर सम्मिलित किया जाना चाहिए। समेकित वित्तीय विवरणों द्वारा समूह की वित्तीय जानकारी को एकल उद्यम के रूप में प्रस्तुत करने के लिए, निम्नलिखित कदम उठाए जाने चाहिए:

(क) *प्रत्येक समनुषंगी में विनिधान करने की तारीख पर, प्रत्येक समनुषंगी में मूल के विनिधान की लागत और प्रत्येक समनुषंगी की इक्विटी में मूल-उद्यम का भाग, हटा देना चाहिए;*

(ख) *समनुषंगी में किए गए विनिधान की तारीख पर समनुषंगी की इक्विटी में मूल के भाग पर समनुषंगी में मूल के विनिधान की लागत के किसी आधिक्य को, समेकित वित्तीय विवरणों में एक आस्ति के रूप में अभिज्ञात करने के लिए गुडविल के रूप में वर्णित किया जाना चाहिए;*

(ग) *समनुषंगी में किए गए विनिधान की तारीख पर, जब समनुषंगी में मूल के विनिधान की लागत, समनुषंगियों की इक्विटी में मूल के भाग की तुलना में कम होती है, तो समेकित वित्तीय विवरणों में अंतर को पूँजी आरक्षिति माना जाना चाहिए;*

(घ) *मूल उद्यम के स्वामियों के प्रति चिन्हित की जाने वाली शुद्ध आय निकालने के लिए, रिपोर्टिंग अवधि हेतु समेकित समनुषंगियों की शुद्ध आय में अल्पसंख्यक हित को पहचानना और समूह की आय के प्रति समायोजित किया जाना चाहिए; और*

(ङ) *समेकित समनुषंगियों के शुद्ध आस्तियों में अल्पसंख्यक हित, पहचाने और मूल उद्यम के शेयर धारकों की इक्विटी और उसके दायित्वों से अलग, समेकित तुलनपत्र में प्रस्तुत किए जाने चाहिए। शुद्ध आस्तियों में अल्पसंख्यक शामिल करते हैं:*

(i) समनुषंगी में किए गए विनिधान की तारीख पर अल्पसंख्यकों के प्रति चिन्हित की जा सकने वाली समता की रकम; और

(ii) मूल-समनुषंगी संबंध के अस्तित्व में आने की तारीख से समता के संचलन में अल्पसंख्यकों का भाग।

जहाँ समनुषंगी में विनिधान की कैरिंग रकम इसकी लागत से भिन्न होती है वहाँ उपरोक्त गणनाओं के लिए कैरिंग रकम पर विचार किया जाता है।

स्पष्टीकरण:

(क) *समेकित वित्तीय विवरणों में दर्शाने के लिए कर व्यय (चालू कर और आस्थगित कर सहित), मूल उद्यम और इसकी समनुषंगियों के पृथक वित्तीय विवरणों में प्रकट हो रहे कर व्यय की रकमों का योग होनी चाहिए।*

(ख) *यह ध्यान में रखते हुए कि समेकित वित्तीय विवरणों का, उद्देश्य समूह की पूर्ण रूप से वित्तीय जानकारी को प्रस्तुत करना है, समनुषंगी के अर्जन के पश्चात् की आरक्षितियों में मूल के शेयर को, जो समेकित तुलनपत्र में तत्संबंधी आरक्षितियों का एक भाग होता है, पृथक समेकित तुलनपत्र में पृथकतः प्रकट करने की आवश्यकता नहीं होती। यह देखते हुए, समेकित तुलनपत्र में प्रकट समेकित आरक्षितियाँ, समनुषंगी के अर्जन के पश्चात् की आरक्षितियों में मूल के शेयर सहित होते है।*

14. विनिधान किए जाने की तारीख पर, समनुषंगी की समता में मूल उद्यम का भाग, विनिधान तारीख पर समनुषंगी के वित्तीय विवरणों में निहित जानकारी के आधार पर अवधारित होता है। यद्यपि, अगर विनिधान तारीख पर समनुषंगी के वित्तीय विवरण उपलब्ध न हों और यदि उस तारीख पर समनुषंगी के वित्तीय विवरण बनाना अव्यवहारिक हो तो, समेकन के लिए, तत्कालिक पूर्ववती अवधि हेतु समनुषंगी के वित्तीय विवरण आधार के रूप में प्रयोग किए जाते हैं। इन वित्तीय विवरणों में, महत्वपूर्ण संव्यवहारों के या उन अन्य घटनाओं के प्रभाव के लिए समायोजानाएँ की जाती हैं, जो ऐसे वित्तीय विवरणों की तारीख और समनुषंगी में विनिधान की तारीख के बीच घटित होती हैं।

15. यदि एक उद्यम भिन्न तारीखों पर अन्य उद्यम में दो या अधिक बार विनिधान करता है और अन्ततः अन्य उद्यम का नियंत्रण प्राप्त करता है तो, समेकित वित्तीय विवरण केवल उस तारीख से ही प्रस्तुत होते हैं जिस तारीख से नियंत्री समनुषंगी संबंध अस्तित्व में आता है। यदि एक समयावधि के दौरान दो या दो से अधिक विनिधान किए जाते हैं, तो उपरोक्त पैरा 13 के उद्देश्य के लिए, विनिधान की तारीख पर समनुषंगी की समता प्रायः पर एक-एक करके निर्धारित होती है ; यद्यपि, यदि एक समयावधि में छोटे विनिधान किए जाते हैं और तब एक ऐसा विनिधान किया जाता है जिसका परिणाम नियंत्रण में निकलता है, तो विनिधान की पश्चात् की तारीख, व्यावहारिक उपाय के रूप में, विनिधान की तारीख मानी जा सकती है।

16. आंतर समूह शेष और आंतर समूह संव्यवहार और परिणामस्वरूप उत्पन्न अप्राप्त लाभों को पूर्णतः हटा देना चाहिए। जब तक कि लागत प्राप्त न की जा सके, तब तक आंतर समूह संव्यवहारों से उत्पन्न अप्राप्त हानियों को भी हटा देना चाहिए।

17. बिक्री, व्यय और लाभांशों समेत आंतर समूह शेष और आंतर समूह संव्यवहार, पूर्णतः हटाए जाते हैं। आंतर समूह संव्यवहारों से उत्पन्न वे अप्राप्त लाभ जो आस्तियों की कैरिंग रकम में शामिल किए जाते हैं, जैसे कि सूचीबद्ध सामान और स्थिर आस्तियाँ पूर्णतः हटाए जाते हैं। आंतर समूह संव्यवहारों से उत्पन्न वे अप्राप्त हानियाँ जो आस्तियों की कैरिंग रकम निकालने में घटाई जाती हैं, वे भी जब तक कि लागत वसूल न की जा सके, तब तक हटाई जाती हैं।

18. समेकन में प्रयुक्त वित्तीय विवरण, समान रिपोर्टिंग तारीख तक आरेखित होने चाहिए। यदि ऐसी तारीख तक एक या अधिक समनुषंगियों के वित्तीय विवरणों को तैयार करना व्यावहारिक नहीं है और तदनुसार, वे वित्तीय विवरण भिन्न रिपोर्टिंग तारीखों तक आरेखित होते हैं तो उन महत्वपूर्ण संव्यवहारों और अन्य घटनाओं के प्रभावों के लिए समायोजन किए जाने चाहिए, जो उन तारीखों और मूल उद्यम के वित्तीय विवरणों के बीच घटित हुई हैं। किसी भी दशा में, रिपोर्टिंग तारीखों के बीच का अन्तर छः मास से अधिक नहीं होना चाहिए।

19. समेकित वित्तीय विवरणों की तैयारी में प्रयुक्त मूल और समनुषंगियों के वित्तीय विवरण सामान्यतः समान तारीख तक आरेखित होते हैं। जब रिपोर्टिंग तारीखें भिन्न होती हैं तो, समनुषंगी बहुधा समेकन उद्देश्यों के लिए मूल वाली तारीख पर विवरण तैयार करती है। जब ऐसा करना अव्यवहारिक होता है तो, भिन्न रिपोर्टिंग तारीखों तक आरेखित वित्तीय विवरणों का प्रयोग किया जा सकता है, परन्तु यह तब जब कि रिपोर्टिंग तारीखों के बीच का अंतर छः मास से अधिक न हो। संगतता के सिद्धांत द्वारा यह अपेक्षित होता है कि एक अवधि से दूसरी अवधि में रिपोर्टिंग अवधियों की समय अवधि और रिपोर्टिंग तारीखों में कोई भी अंतर समान होना चाहिए।

20. समेकित वित्तीय विवरण, एक जैसे संव्यवहारों और समान परिस्थितियों में अन्य घटनाओं के लिए, समरूप लेखा नीतियों का प्रयोग करके तैयार किए जाने चाहिए। यदि समेकित वित्तीय विवरणों को तैयार करते हुए समरूप लेखा नीतियों का प्रयोग व्यवहारिक नहीं हो तो, यह तथ्य समेकित वित्तीय विवरणों में उन मदों के अनुपातों के साथ प्रकट किए जाने चाहिए जिनके लिए भिन्न लेखा नीतियाँ लागू की गई है।

21. यदि समूह का एक सदस्य, एक जैसे संव्यवहारों और एक जैसी परिस्थितियों में घटनाओं के लिए समेकित वित्तीय विवरणों में अपनाई गई लेखा नीतियों के अतिरिक्त अन्य लेखा नीतियों का प्रयोग करता है तो, समेकित वित्तीय विवरणों को तैयार करने में इसके वित्तीय विवरणों का प्रयोग करते हुए, इसके वित्तीय विवरणों के प्रति उचित समायोजन किए जाते हैं।

22. समनुषंगी के प्रचालनों के परिणाम उस तारीख से समेकित वित्तीय विवरणों में शामिल किए जाते हैं, जिस तारीख पर मूल-समनुषंगी संबंध अस्तित्व में आते हैं। उस समनुषंगी के प्रचालनों के परिणाम जिसके साथ मूल के संबंध समाप्त हो गए हों, संबंध की समाप्ति की तारीख तक, लाभ और हानि के समेकित विवरण में शामिल होते हैं। समनुषंगी में विनिधान के व्ययन से प्राप्त आगम और व्ययन की तारीख पर इसकी आस्तियों की कैरिंग रकम घटा दायित्वों के बीच का अंतर लाभ और हानि के समेकित विवरण में, समनुषंगी में विनिधान के व्ययन पर लाभ या हानि के रूप में अभिज्ञात होते हैं। एक लेखा अवधि से अगली लेखा अवधि तक वित्तीय विवरणों की तुलनात्मकता को सुनिश्चित करने के लिए, रिपोर्टिंग तारीख पर वित्तीय स्थिति और प्रतिवेदित अवधि के परिणामों पर तथा पूर्ववर्ती अवधि के लिए तत्संबंधी रकमों पर समनुषंगी के अर्जन और व्ययन के प्रभाव के बारे में बहुधा अनुपूरक जानकारी प्रदान की जाती है।

23. उद्यम में विनिधान को, उस तारीख से, लेखा मानक 13, विनिधानों के लिए लेखा, के अनुसार लेखाबद्ध करना चाहिए, जिस तारीख से एक उद्यम, समनुषंगी नही रहता और एक सहयुक्त नही बनता।[31]

24. विनिधान की उस तारीख पर जब यह (उद्यम) समनुषंगी नहीं रहती, कैरिंग रकम उसके बाद से लागत मानी जाती है।

25. अल्पसंख्यकों के हितों को मूल उद्यम के शेयर धारकों की समता और दायित्वों से अलग समेकित तुलनपत्र में प्रस्तुत किया जाना चाहिए। समूह की आय में अल्पसंख्यकों के हितों को भी पृथकतः प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

26. समेकित समनुषंगी में अल्पसंख्यकों के प्रति प्रयोज्य हानियाँ, समनुषंगी की समता में अल्पसंख्यकों के हित से अधिक हो सकती हैं। आधिक्य और अल्पसंख्यकों के प्रति प्रयोज्य अन्य अतिरिक्त हानियाँ बहुसंख्यकों के हित के प्रति समायोजित होती है, केवल इस सीमा तक कि अल्पसंख्यकों के पास हानि की पूर्ति करने के लिए आबद्धकर बाध्यता है और वे ऐसा करने में सक्षम है। यदि समनुषंगी उत्तरगामी रूप से लाभ रिपोर्ट करती है तो, जब तक कि अल्पसंख्यकों के हिस्से की उन हानियों, जो पहले बहुसंख्यकों द्वारा आमेलित किए गए थे, की पूर्ति न हो जाए, तब तक ऐसे सभी लाभ बहुसंख्यक हितों को आबंटित किए जाते हैं।

27. यदि एक समनुषंगी के पास ऐसे बकाया संचित अधिमानी शेयर हैं जो समूह के बाहर धारित हैं, तो लाभांश घोषित हुए हो या नहीं, मूल उद्यम, समनुषंगी के अधिमानी लाभांशों के लिए समायोजित करने के बाद अपने लाभों या हानियों के हिस्से की गणना करता है।

मूल उद्यम के पृथक वित्तीय विवरणों में समनुषंगियों में विनिधानों के लिए लेखा

28. मूल उद्यम के पृथक वित्तीय विवरणों में समनुषंगी में विनिधान को लेखा मानक 13, विनिधानों के लिए लेखा, के अनुसार लेखाबद्ध करना चाहिए।

प्रकटन

29. पैरा 11 और 20 द्वारा अपेक्षित प्रकटनों के साथ, निम्नलिखित प्रकटन भी किए जाने चाहिएं:

(क) ***समेकित वित्तीय विवरणों में, नाम, निगमन या निवास का देश, स्वामित्व हित के अनुपात और यदि भिन्न है तो धारित मतदान शक्ति का अनुपात सहित सभी समनुषंगियों की सूची।***

(ख) ***जहाँ लागू हो, वहाँ समेकित वित्तीय विवरणों में:***

(i) ***यदि मूल उद्यम प्रत्यक्ष रूप से या अप्रत्यक्ष रूप से समनुषंगियों के द्वारा समनुषंगी की आधे से अधिक मतदान शक्ति का स्वामित्व नहीं रखता है तो मूल और समनुषंगी के बीच संबंध की प्रकृति ;***

(ii) ***रिपोर्टिंग तारीख पर वित्तीय स्थिति रिपोर्टिंग अवधि के परिणामों और पूर्ववर्ती अवधि के लिए तत्समान रकमों पर समनुषंगियों के अर्जन और व्ययन के प्रभाव ; और***

(iii) ***उन समनुषंगियों के नाम जिनकी रिपोर्टिंग तारीख मूल उद्यम से भिन्न है और रिपोर्टिंग तारीखों में अंतर।***

संक्रमणकालीन उपबन्ध[32]

---

[31] लेखा मानक, 23, सहयुक्तों में विनिधानों हेतु समेकित वित्तीय विवरणों में लेखा 'सहयुक्त' शब्द को परिभाषित करता है तथा समेकित वित्तीय विवरणों में विनिधान के लिए लेखा से संबंधित आवश्यकताओं को विनिर्दिष्ट करता है।

30. पहली बार समेकित वित्तीय विवरणों के प्रस्तुत किए जाने पर पूर्ववर्ती अवधि के लिए तुलनात्मक संख्याओं को प्रस्तुत करने की आवश्यकता नही होती है। सभी उत्तरगामी वर्षों में, पूर्ववर्त्ती अवधि के लिए, पूर्ण तुलनात्मक संख्याएँ समेकित वित्तीय विवरणों में प्रस्तुत की जानी चाहिए।

लेखा मानक 22

आय पर करों के लिए लेखा

*(इस लेखा मानक में कुछ **मोटे तिरछे** टाइप और कुछ सीधे टाइप में व्यवस्थित पैरा सम्मिलित है, जिनका समान प्राधिकार है। मोटे तिरछेटाइप में दिये गए पैरा मुख्य सिद्धांत उपदर्शित करते हैं। इस लेखा मानक को अधिसूचना के प्रति उपाबंध के भाग क में अतंर्विष्ट साधारण अनुदेशों के संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिये।)*

उद्देश्य

इस मानक का उद्देश्य आय पर करों के लिए लेखा प्रतिपादन विहित करना है। किसी उद्यम के लाभ और हानि के विवरण में एक महत्त्वपूर्ण मद आय पर कर हैं। मिलान धारण के अनुसार, आय पर कर उस अवधिमें प्रोद्भूत होते हैं। जिसमें संबंधित राजस्व और व्यय होते है। ऐसे करों का, किसी अवधि के लिए राजस्व के साथ मिलान इस तथ्य से उद्भूत विशेष समस्याओं को प्रस्तुत करता है कि अनेक दशाओं में कराधेय आय लेखा आय से अत्यधिक भिन्न हो सकती है। कराधेय आय और लेखा आय के बीच यह अन्तर दो मुख्य कारणों से उत्पन्न होता है। प्रथमतः लाभ और हानि के विवरण में यथा उपदर्शित राजस्व और व्ययों की मदों और उन मदों में, जो कर के प्रयोजनों के लिए राजस्व, व्ययों या कटौतियों के रूप में मानी जाती हैं, भिन्नताएँ हैं। दूसरा, लाभ और हानि के विवरण में यथा अभिज्ञात राजस्व या व्ययों की विशिष्ट मद से संबंधित रकम और उस तत्समान रकम जो कराधेय आय की संगणना के लिए अभिज्ञात की जाती है, के बीच अंतर है।

कार्यक्षेत्र

1. **यह मानक आय पर करों का लेखा देने के लिए लागू किया जाना चाहिए। इसके अंतर्गत लेखा अवधि के संबंध में आय पर करों से संबंधित व्यय या बचत की रकम का निर्धारण और वित्तीय विवरणों में ऐसी रकम का प्रकटन शामिल है।**

2. इस मानक के प्रयोजनों के लिए, आय पर करों के अंतर्गत वे सभी घरेलू और विदेशी कर भी सम्मिलित हैं जो कराधेय आय पर आधारित होते हैं।

3. इस मानक में यह विनिर्दिष्ट नहीं होगा कि, किसी उद्यम को कब या कैसे उन करों का लेखा देना चाहिए जो उद्यम द्वारा लाभांशों के वितरण और अन्य वितरणों पर देय है।

परिभाषाएँ

4. इस मानक के प्रयोजन के लिए निम्नलिखित शब्द विनिर्दिष्ट अर्थों में प्रयुक्त हुए हैं:

4.1. <u>लेखा आय (हानि)</u> किसी अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि है जो आय कर व्यय घटाने या आय कर बचत जोड़ने से पूर्व लाभ और हानि के विवरण में रिपोर्ट किया गया है।

4.2. <u>कराधेय आय (कर हानि)</u> कर नियमों के अनुसार निर्धारित एक अवधि के लिए आय (हानि) की वह रकम है, जिसके आधार पर देय आय कर (वसूली योग्य आयकर) अवधारित किया जाता है।

4.3. <u>कर व्यय (कर बचत)</u> किसी अवधि के लिए लाभ और हानि के विवरण में प्रभारित या जमा किए गए चालू कर और आस्थगित कर का योग है।

4.4. <u>चालू कर</u> किसी अवधि के लिए कराधेय आय (कर हानि) के सम्बन्ध में संदेय (वसूलनीय) अवधारित आयकर की रकम है।

4.5. <u>आस्थगित कर</u> समय अंतरों का कर प्रभाव है।

---

[32] अनुच्छेद 30 में दिए गए संक्रमणकालील उपबंध कंपनी (लेखा मानक) नियम, 2006 (जो समय के साथ संशोधित किये गए हैं) तथा कंपनी (लेखा मानक) नियम, 2021 के अन्तर्गत्त अधिसूचित लेखा मानकों लिए प्रासंगिक है ।

4.6. <u>समय अंतर</u> एक अवधि के लिए कराधेय आय और लेखा आय के मध्य ऐसे अंतर हैं जो एक अवधि में उत्पन्न होते हैं और एक या अधिक पश्चात्वर्ती अवधियों में उलटने योग्य हैं।

4.7. <u>स्थाई अंतर</u> एक अवधि के लिए कराधेय और लेखा आय के बीच वे अंतर हैं जो एक अवधि में उत्पन्न होते हैं और पश्चात्वर्ती रूप से उलटते नहीं हैं।

5. कराधेय आय की गणना कर विधियों के अनुसार की जाती है। कुछ परिस्थितियों में कराधेय आय की गणना करने के लिए इन विधियों की अपेक्षाएँ लेखा आय अवधारित करने के लिए लागू लेखा नीतियों से भिन्न होती हैं। इस अंतर का प्रभाव यह है कि कराधेय आय और लेखा आय एक समान नहीं हो सकेगी।

6. कराधेय आय और लेखा आय के बीच अंतर, स्थाई अंतरों और समय अंतरों में वर्गीकृत किए जा सकते है। स्थाई अंतर, कराधेय आय और लेखा आय के बीच वे अंतर हैं जो एक अवधि में उत्पन्न होते हैं और पश्चात्वर्ती रूप से उलटते नहीं हैं। उदाहरण के लिए यदि कराधेय आय की गणना के प्रयोजन के लिए कर विधियाँ व्यय की मद के केवल एक भाग को ही अनुज्ञात करती है तो, गैर-अनुज्ञात रकम स्थायी अंतर का कारण बनेगी।

7. समय अंतर कराधेय आय और लेखा आय के बीच वे अंतर हैं जो एक अवधि में उत्पन्न होते और एक या अधिक पश्चात्वर्ती अवधियों में उलटने योग्य है। समय अंतर इसलिए उद्‌भूत होते हैं क्योंकि जिस अवधि में राजस्व और व्ययों की कुछ मदें कराधेय आय की गणना में सम्मिलित की जाती है वह उस अवधि से मेल नहीं खाती जिसमें ये राजस्व और व्ययों की मदें लेखा आय की गणना में शामिल की जाती है या उन पर ध्यान दिया जाता है।उदाहरण के लिए, कारबार से संबंधित वैज्ञानिक अनुसन्धान के लिए खरीदी गई मशीनरी, कर प्रयोजनों के लिए प्रथम वर्ष में कटौती के रूप में पूर्णतः अनुज्ञात की जाती है, जबकि यही लाभ और हानि के विवरण में इसके उपयोगी जीवन के दौरान अवक्षयण के रूप में प्रभारित होगी। लेखा प्रयोजनों के लिए मशीनरी पर प्रभारित कुल अवक्षयण और कर के लिए कटौती के रूप में स्वीकार्य रकम अंततः समान होगी, लेकिन वे अवधियाँ जिसके दौरान अवक्षयण प्रभारित होता है और कटौती स्वीकार्य होती है, भिन्न होंगी। समय अंतर का एक अन्य उदाहरण वह स्थिति है, जहाँ कराधेय आय की

गणना के प्रयोजन के लिए कर विधि अवलिखित मूल्य पद्धति के आधार पर अवक्षयण अनुज्ञात होता है जबकि लेखा प्रयोजनों के लिए सरल रेखा पद्धति का प्रयोग होता है। भारतीय कर विधियों के अधीन उत्पन्न हो रहे समय अंतरों के कुछ अन्य उदाहरण, दृष्टांत I में दिए गए हैं।

8. अनवशोषित अवक्षयण और हानियों का अग्रनयन जिन्हें भावी कराधेय आय के साथ सैट आफ किया जा सकता है, समय अंतरों के रूप में माने जाते हैं और विवेक के विचार के अध्यधीन आस्थगित कर आस्तियों के परिणाम में निकलते हैं। (पैरा 15-18 देखें)।

अभिज्ञान

9. चालू कर और आस्थगित कर समेत, एक अवधि के लिए कर व्यय किसी अवधि हेतु शुद्ध लाभ या हानि के अवधारण में सम्मिलित होना चाहिए।

10. आय पर कर, आय अर्जन में उद्यम द्वारा उपगत व्यय माने जाते हैं और ये उसी अवधि में प्रोद्‌भूत होते हैं जिसमें वे राजस्व और व्यय प्रोद्‌भूत होते हैं जिनसे ये संबंधित हैं। ऐसे मिलान का परिणाम समय अंतरों में निकल सकता है। समय अंतरों के कर प्रभाव लाभ और हानि के विवरण में कर व्यय में और तुलनपत्र में, आस्थगित कर आस्तियों के रूप में (पैरा 15-18 में यथावर्णित विवेक के विचार के अध्यधीन) या आस्थगित कर दायित्वों के रूप में शामिल होते हैं।

11. समय अंतर के कर प्रभाव, जिसका परिणाम आस्थगित कर आस्तियों में निकलता है, का एक उदाहरण, लाभ और हानि के विवरण में उपबन्धित व्यय है किन्तु जो आय कर अधिनियम, 1961 की धारा 43ख के अधीन कटौती के रूप में अनुज्ञात नहीं है। यह समय अंतर तब उलट जाएगा जब पश्चातवर्ती वर्ष (वर्षों) में धारा 43ख के अधीन यह व्यय अनुज्ञात किया जाता है। ऐसे समय अंतर का कर प्रभाव, जिसका परिणाम आस्थगित कर दायित्व में निकलता है, का एक उदाहरण लाभ और हानि के विवरण में उपबन्धित अवक्षयण की तुलना में आय-कर अधिनियम, 1961 के अधीन अनुज्ञेय अवक्षयण का उच्च प्रभारण है। पश्चात्वर्ती वर्षों में, विभेदक तब उलट जाएगा जब कर प्रयोजनों के लिए तुलनात्मक रूप से कम अवक्षयण अनुज्ञात होगें।

12. स्थायी अंतर आस्थगित कर आस्तियों या आस्थगित कर दायित्वों के परिणाम में नहीं निकलते हैं।

13. *आस्थागित कर को सभी समय अंतरों के लिए पैरा 15-18 में यथावर्णित आस्थगित कर आस्तियों के संबंध में विवेक की विचारणा के अध्यधीन अभिज्ञात किया जाना चाहिए।*

स्पष्टीकरण:

(क) कर अवकाश की अवधि के दौरान उलटने वाले समय अंतरों के सम्बंध में आस्थगित कर को उस सीमा तक अभिज्ञात नहीं किया जाता है जिस तक उद्यम की कुल सकल आय, आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 80-I क/80- I ख की अपेक्षा के अनुसार कर अवकाश की अवधि के दौरान कटौती के अधीन हैं। आयकर अधिनियम, 1961 की धाराओं 10क /10 ख की स्थिति में (जो कुल आय का भाग न बनने वाली आयों से सम्बंधित आयकर अधिनियम, 1961 के अध्याय 3 के अंतर्गत आता है) कर अवकाश की अवधि के दौरान उलटे होने वाले समय अंतरों के संबंध में आस्थगित कर को,उस सीमा तक अभिज्ञात नहीं किया जाता है जहाँ तक उक्त धाराओं के उपबन्धों के अनुसार कर अवकाश अवधि के दौरान किसी उद्यम की कुल आय से कटौती अनुज्ञात होते है।

(ख) ऐसे समय अंतरों के संबंध में आस्थगित कर को,जो कर अवकाश अवधि के बाद उलटे जाते हैं, उस वर्ष में अभिज्ञात किया जाता जिसमें समय अंतर उत्पन्न होते है। तथापि, आस्थगित कर आस्तियों का अभिज्ञान पैरा 15 से 18 में यथा अभिकथित विवेक के विचार के अधीन होता है।

(ग) उपरोक्त प्रयोजनों के लिए समय अंतर जो पहले उत्पन्न होते हैं पहले उलटे हुए माने जाते हैं।

उपरोक्त स्पष्टीकरण के उपयोजन का दृष्टांत साथ इस मानक से संलग्न दृष्टांत में दिया गया है।

14. यह मानक सभी समय अंतरों के लिए आस्थगित कर के अभिज्ञान की अपेक्षा रखता है। यह इस सिद्धांत पर आधारित है कि किसी एक अवधि के लिए वित्तीय विवरणों को उस अवधि में घटित हो रहे सभी संव्यवहारों के कर प्रभावों को चाहे चालू हो या आस्थगित, अभिज्ञात करना चाहिए।

15. पैरा 17 में कथित स्थितियों को छोड़कर, आस्थगित कर आस्तियोंको केवल उस सीमा तक अभिज्ञात और अग्रनीत करना चाहिएकि वहाँ एक तर्कसंगत निश्चितता हो कि पर्याप्त भावी कराधेयआय उपलब्ध होगी जिसके प्रति ऐसी आस्थगित कर अस्तियोंको वसूल किया जा सकता है।

16. समय अंतरों के कर प्रभावों को अभिज्ञात करते समय, विवेक के विचार को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। इसीलिए, आस्थगित कर आस्तियों को केवल इस सीमा तक अभिज्ञात और अग्रनीत किया जाता है कि उनकी वसूली की तर्कसंगत निश्चितता है। निश्चितता का यह तर्कसंगत स्तर साधारणतया उपक्रम के पूर्व अभिलेख का परीक्षण करके और भविष्य के लिए लाभों का वास्तविक अनुमान लगाते हुए, प्राप्त किया जाएगा।

17. जहाँ किसी उद्यम के पास कर विधियों के अधीन अनवशोषित अवक्षयण या अग्रनीत हानियाँ होती हैं; वहाँ आस्थगित कर आस्तियों को केवल इस सीमा तक अभिज्ञात किया जाना चाहिए जहाँ तक विश्वसनीय साक्ष्य द्वारा समर्थित यह वास्तविक निश्चितता हो कि पर्याप्त भावी कराधेय आय उपलब्ध होगी जिसके प्रति ऐसी आस्थागित कर आस्तियाँ वसूल की जा सकती है।

स्पष्टीकरण:

1. इस वास्तविक निश्चितता का अवधारण कि पर्याप्त भावी कराधेय आय उपलब्ध होगी, विश्वसनीय साक्ष्य के आधार पर निर्णय शक्ति का विषय है और इसका भिन्न-भिन्न स्थितियों के आधार पर मूल्यांकन करना होगा। वास्तविक निश्चितता उस निश्चितता की सीमा के प्रति निर्देश करती है, जो सभी व्यवहारिक प्रयोजनों के लिए निश्चित मानी जा सकती है। वास्तविक निश्चितता, कारबार योजनाओं की तरह केवल निष्पादन के पूर्वानुमान पर आधारित नहीं हो सकती। वास्तविक निश्चितता ज्ञान का विषय नहीं है और यह विश्वसनीय साक्ष्य द्वारा समर्थित होनी चाहिए। साक्ष्य तथ्य की बात है। विश्वसनीय होने के लिए, साक्ष्य प्रत्यक्ष रूप में रिपोर्टिंग तारीख पर उपलब्ध होना चाहिए, उदाहरण के लिए बाध्यकारी लाभदायक निर्यात आदेश, जिसके रद्द होने का परिणाम चूककर्ता पार्टी द्वारा भारी नुकसानों की अदायगी होगी। दूसरी ओर किसी उद्यम द्वारा भावी पूंजीगत व्यय या भावी पुनर्संरचना आदि के आधार पर लगाया गया भावी लाभों के अनुमान को, जो चाहे बाहरी अभिकरण को प्रस्तुत किया गया हो, उदाहरण के लिए ऋण प्रदान करने वाले अभिकरण को ऋण प्राप्त करने के लिए प्रस्तुत किया गया हो और उस अभिकरण द्वारा स्वीकार कर लिया गया हो, तो इसे निस्संगता में विश्वसनीय साक्ष्य नहीं माना जा सकता है।

2(क). आय-कर अधिनियम, 1961 के सुसंगत उपबन्धों के अनुसार 'पूंजीगत लाभ' शीर्षक के अधीन उद्भूत 'हानि' आयकर अधिनियम, 1961 की अपेक्षाओं के अनुसार भावी वर्षों में अग्रनीत की जा सकती है और केवल उसी शीर्षक के अधीन उद्भूत आय के प्रति सैट आफ की जा सकती है।

(ख). जहाँ किसी उद्यम के लाभ और हानि के विवरण में 'हानि' की ऐसी मद शामिल होती है जो आयकर अधिनियम, 1961 की अपेक्षाओं के अनुसार केवल 'पूंजीगत लाभ' शीर्ष के अधीन उद्भूत आय के प्रति कराधेय प्रयोजनों के लिए भविष्य में सैट आफ की जा सकती है, वहाँ यह मद उस सीमा तक समय अंतर है जब तक यह चालू वर्ष में समायोजित नहीं की जाती है और आयकर अधिनियम, 1961 के उपबन्धों के अधीन पश्चातवर्ती वर्षों में 'पूंजीगत लाभ' नामक शीर्ष के अधीन उत्पन्न हो रही आय के साथ सैट आफ होने के लिए अनुज्ञेय है। ऐसी 'हानि' के सम्बन्ध में, आस्थगित कर आस्ति को विवेक के विचार के अधीन अभिज्ञात और अग्रनीत किया जाता है। तद्नुसार ऐसी 'हानि' के संबंध में, आस्थगित कर आस्ति को केवल उस सीमा तक अभिज्ञात और अग्रनीत किया जाता है, जहाँ तक इसमें विश्वसनीय साक्ष्य द्वारा समर्थित यह वास्तविक निश्चितता है, कि 'पूंजीगत लाभ' शीर्ष के अधीन पर्याप्त भावी कराधेय आय उपलब्ध होगी जिसके प्रति आयकर अधिनियम, 1961 के उपबन्धों के अनुसार हानि सैट आफ की जा सकती है।वास्तविक निश्चितता का परीक्षण पूरा किया गया है या नहीं,यह प्रत्येक मामलेके तथ्यों और परिस्थितियों पर निर्भर करता है। तुलनपत्र की तारीख के पश्चात् किंतु वित्तीय विवरणों के अनुमोदन से पूर्व आस्ति का विक्रय जिससे 'पूंजीगत लाभ' (जो आयकर अधिनियम, 1961 के उपबन्धों के अनुसार पूंजीगत हानि को सैट आफ करने के लिए उपयुक्त है) उत्पन्न होते हैं और ऐसे बाध्यकारी बिक्री करार जो पूंजीगत लाभ को उत्पन्न करेगें (जो आयकर अधिनियम, 1961 के उपबन्धों के अनुसार पूंजीगत हानि को सैट आफ करने के लिए उपयुक्त हैं) ऐसी स्थितियों के, उदाहरण हैं जिनमें 'पूंजीगत लाभ' शीर्ष के अधीन उत्पन्न हो रही हानि के संबंध में आस्थगित कर आस्ति के अभिज्ञान के लिए, विश्वसनीय साक्ष्य द्वारा समर्थित वास्तविक निश्चितता का परीक्षण पूरा होता है।

(ग) उन स्थितियों में जहाँ दीर्घकालिक पूंजीगत आस्तियों के संबंध में आयकर अधिनियम, 1961 के अधीन लागत सूचकांक के कारण लेखा प्रयोजनों के लिए और कर प्रयोजनों के लिए अभिज्ञात 'हानि' की रकमों के बीच अंतर होता है, वहाँ आस्थगित कर आस्ति उस रकम पर अग्रनीत की जाती है और अभिज्ञात होती है (विवेक के विचार के अधीन) जिसे आयकर अधिनियम, 1961 के उपबन्धों के अनुसार आने वाले वर्षों में आगे ले जाया और सैट आफ किया जा सकता है।

18. कर विधियों के अधीन अनवशोषित अवक्षयण या अग्रनीत हानियों का विद्यमान होना इस बात का मजबूत साक्ष्य है कि भावी कराधेय आय उपलब्ध नहीं हो सकेगी। इसलिए जब किसी उद्यम का पूर्ववृत हाल ही की हानियों का होता है, तो ऐसा उद्यम केवल इस सीमा तक आस्थगित कर आस्तियों को अभिज्ञात करता है कि इसके पास समय अंतर है जिसके विपरीत होने का परिणाम पर्याप्त आय में निकलेगा या ऐसा अन्य विश्वसनीय साक्ष्य है कि ऐसी पर्याप्त कराधेय आय उपलब्ध होगी जिसके प्रति ऐसी आस्थगित कर आस्तियाँ वसूल की जा सकती हैं। ऐसी परिस्थितियों में इसके अभिज्ञान का समर्थन करने वाले साक्ष्य की प्रकृति का प्रकटन किया जाता है।

गैर-अभिज्ञात आस्थगित कर आस्तियों का पुनर्निधारण

19. प्रत्येक तुलनपत्र की तारीख पर कोई उद्यम गैर-अभिज्ञात आस्थगित कर आस्तियों का पुनर्निधारण करता है। कोई उद्यम पूर्ववर्ती गैर-अभिज्ञात आस्थगित कर आस्तियों को उस सीमा तक अभिज्ञात करता है, जहाँ तक तर्कसंगत रूप से या वास्तविक रूप से यह निश्चित हो गया है (पैरा 15 से 18 तक देखें), कि पर्याप्त भावी कराधेय आय उपलब्ध होगी जिसके प्रति ऐसी आस्थागित कर आस्तियाँ वसूली जा सकती है। उदाहरण के लिए, व्यापारिक स्थितियों में सुधार इसे तर्कसंगत रूप से निश्चित बना सकता है कि उद्यम भविष्य में पर्याप्त कराधेय आय उत्पन्न करने में सक्षम होगा।

मापन

20. चालू कर लागू कर दरों और कर विधियों का प्रयोग करते हुए, कर प्राधिकारियों को संदत्त की जाने वाली (से वसूलनीय) अपेक्षित रकम के आधार पर मापा जाना चाहिए।

21. आस्थगित कर आस्तियों और दायित्यों को ऐसी कर दरों और कर विधियों का प्रयोग करते हुए मापा जाना चाहिए जो तुलन-पत्र की तारीख पर अधिनियमित की जा चुकी हो या सारभूत रूप से अधिनियमित हो चुकी हो।

स्पष्टीकरण:

(क) आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 115 ञ ख के अधीन कर का संदाय उस अवधि के लिए चालू कर है।

(ख) उस अवधि में, जिसमें कोई कम्पनी आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 115 ञ ख के अधीन कर का संदाय करती है, अवधि के दौरान उत्पन्न हो रहे समय अंतरों के सम्बंध में वे आस्थगित कर आस्तियाँ और दायित्व जिनके कर प्रभाव को इस मानक के अधीन अभिज्ञात करने की आवश्यकता है, को आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 115 ञ ख के अधीन कर दर का प्रयोग करते हुए नहीं अपितु नियमित कर दरों का प्रयोग करते हुए मापा जाता है।

(ग) यदि कोई उद्यम यह अपेक्षा करता है कि चालू अवधि में उत्पन्न हो रहे समय अंतर उस अवधि में विपरीत हो जाएगें जिसमें यह आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 115 ञ ख के अधीन कर का संदाय करेगा, तो चालू अवधि के दौरान उत्पन्न हो रहे समय अंतरों के सम्बंध में आस्थगित कर आस्तियाँ और दायित्व, जिनके कर प्रभाव को लेखा मानक 22 के अंतर्गत अभिज्ञात करने की आवश्यकता है, को आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 115 ञ ख के अधीनकर दर का प्रयोग करते हुए नहीं अपितु नियमित कर दरों का प्रयोग करते हुए मापा जाता है।

22. आस्थगित कर आस्तियाँ और दायित्व आमतौर पर उन पर दरों और कर विधियों का प्रयोग करते हुए मापे जाते हैं जो अधिनियमित हुए हो। तथापि, सरकार द्वारा कर दरों और कर विधियों की कतिपय घोषणाओं में वास्तविक अधिनियमन का सारवान प्रभाव हो सकता है । इन परिस्थितियों में, आस्थगित कर आस्तियाँ और दायित्व ऐसी घोषित कर दर और कर विधियों का प्रयोग करते हुए मापी जाती हैं।

23. जब भिन्न कर दरें, कराधेय आय के भिन्न स्तरों पर लागू होती है तो आस्थगित कर आस्तियों और दायित्वों को औसत दरों का प्रयोग करते हुए मापा जाता है।

24. आस्थगित कर आस्तियों और दायित्वों को, उनके वर्तमान मूल्य के प्रति मितिकाटा नहीं किया जाना चाहिए।

25. मितिकाटे आधार पर आस्थगित कर आस्तियों और दायित्वों का विश्वसनीय अवधारण करने के लिए प्रत्येक समय अंतर के उलटने के समय-निर्धारण का विवरण अपेक्षित है। अनेक दशाओं में ऐसी समय सारणी अव्यवाहारिक या काफी जटिल होती है। इसलिए, आस्थगित कर आस्तियों और दायित्वों के मितिकाटे की अपेक्षा अनुपयुक्त है। मितिकाटे की अपेक्षा नहीं अपितु अनुमति देने के लिए मितिकाटे का परिणाम उन आस्थगित कर आस्तियों और दायित्वों में निकलेगा जो उद्यमों के बीच तुलनीय नहीं होंगे। इसलिए, यह मानक आस्थगित कर आस्तियों और दायित्वों के मितिकाटन की नहीं अपेक्षा करता है या न ही उसकी आज्ञा देता है।

आस्थगित कर आस्तियों का पुनर्विलोकन

26. आस्थगित कर आस्तियों की कैरिंग रकम का पुनर्विलोकन प्रत्येक तुलनपत्र तारीख पर किया जाना चाहिए। किसी उद्यम को आस्थगित कर आस्तियों की कैरिंग रकम को उस सीमा तक अवलिखित करना चाहिए जहाँ तक कि यह तर्कसंगत रूप से निश्चित या वास्तविक रूप से निश्चित न रह जाए (पैरा 15 से 18 देखें) कि पर्याप्त भावी कराधेय आय उपलब्ध होगी जिसके प्रति आस्थगित कर आस्ति वसूल की जा सकती है । ऐसे किसी भी अवलेखन को उस सीमा तक उलटा जा सकेगा जहाँ तक, यथास्थिति तर्कसंगत रूप से या वास्तविक रूप से यह निश्चित हो (पैरा 15 से 18 देखें) कि पर्याप्त भावी कराधेय आय उपलब्ध होगी।

प्रस्तुतिकरण तथा प्रकटन

27. किसी उद्यम को चालू कर का प्रतिनिधित्व करने वाली आस्तियों और दायित्वों का प्रतिकार करना चाहिए, यदि उस उद्यम:

(क) के पास अभिज्ञात रकम के प्रतिकार का विधिक रूप से प्रवर्तनीय अधिकार है; और

(ख) का आशय शुद्ध आधार पर आस्ति और दायित्व का निपटारा करने का है।

28. सामान्यतया किसी उद्यम को चालू कर का प्रतिनिधित्व करने वाली किसी आस्ति और दायित्व का प्रतिकार करने का विधिक रूप से प्रवर्तनीय अधिकार तब होगा जब वे वैसे ही विनियमित कराधान विधियों के अधीन उद्ग्रहीत आयकर के सम्बन्ध में हो और कर विधियाँ किसी उद्यम को एकल शुद्ध रकम अदा करने या प्राप्त करने की अनुज्ञा देता हो।

29. किसी उद्यम को आस्थगित कर आस्तियों और आस्थगित करbदायित्वों का प्रतिकार करना चाहिए यदि:

(क) उद्यम के पास चालू कर का प्रतिनिधित्व करने वाले दायित्वों के प्रति आस्तियों का प्रतिकार करने के लिए विधिक रूप से प्रवर्तनीय अधिकार है; और

(ख) आस्थगित कर आस्तियाँ और आस्थगित कर दायित्व वैसी ही विनियमित कराधान विधियों द्वारा उद्ग्रहीन आय पर लगाए करों से संबंधित है।

30. आस्थगित कर आस्तियों और दायित्वों को, किसी अवधि के लिए चालू कर का प्रतिनिधित्व करने वाली आस्तियों और दायित्वों से भिन्न माना जाना चाहिए। आस्थगित कर आस्तियों और दायित्वों को उद्यम के तुलनपत्र में चालू आस्तियों और चालू दायित्वों से पृथक एक पृथक शीर्ष के अधीन प्रकट किया जाना चाहिए।

31. आस्थगित कर आस्तियों और आस्थगित कर दायित्वों के क्रमिक अतिशेषों के मुख्य घटकों में विखण्डन को लेखाओं के प्रति टिप्पणों में प्रकट किया जाना चाहिए।

32. यदि किसी उद्यम के पास कर विधियों के अधीन अनवशोषित अवक्षयण या अग्रनीत हानियाँ है तो आस्थगित कर आस्तियों के अभिज्ञान का समर्थन करने वाले साक्ष्य की प्रकृति प्रकट की जानी चाहिए।

संक्रमणकालीन उपबन्ध[33]

33. इस मानक के अनुसार आय पर कर के लेखा के प्रथम अवसर पर, उद्यम को वित्तीय विवरणों में इस मानक को लागू करने से पहले संचित हुए आस्थगित कर अतिशेष को, आस्थगित कर आस्ति या दायित्व के रूप में तत्सम्बन्धी राजस्व आरक्षिति के प्रति प्रभारण या जमा के साथ अभिज्ञात कर लेना चाहिए, आस्थगित कर आस्तियों की दशा में विवेक के विचार के अधीन (पैरा 15-18 देखिए) । राजस्व आरक्षितियों के प्रति इस प्रकार के प्रभारण या जमा की रकम ठीक वही होनी चाहिए जैसी की तब होती यदि मानक आरम्भ से ही प्रभाव में रहा होता।

34. उस अवधि में संचित आस्थगित कर का आवधारण करने के लिए जिसमें पहली बार इस मानक को लागू किया गया है, लेखा उद्देश्यों के लिए और कर उद्देश्यों के लिए आस्तियों और दायित्वों के प्रारम्भिक अतिशेषों की तुलना की जाती हैं और यदि उनमें कुछ अंतर है तो वे निर्धारित किए जाते है। इन अंतरों के कर प्रभाव यदि कोई हो तो, उन्हें आस्थगित आस्तियों या आस्थगित कर दायित्वों के रूप में अभिज्ञात किया जाना चाहिए यदि ये अंतर समय अंतर है। उदाहरण के लिए, उस वर्ष में जिसमें कोई उद्यम इस मानक को अपनाता है, लेखा प्रयोजनों के लिए स्थिर आस्ति का प्रारम्भिक अतिशेष 100रु॰ और कर प्रयोजनों के लिए 60 रु॰ है। यह अंतर इसलिए है क्योंकि उद्यम ने कराधेय आय की गणना के लिए अवक्षयण की अवलिखित मूल्य पद्धति लागू करता है जबकि लेखा प्रयोजनों के लिए सरल रेखा पद्धति का प्रयोग किया गया है। यह अंतर भविष्य में तब उलट जाएगा जब कर उद्देश्य के लिए अवक्षयण लेखा प्रयोजनों के लिए अवक्षयण की तुलना में कम होगा। उपरोक्त स्थिति में, यह मानते हुए कि सालभर के लिए अधिनियमित करदर 40 प्रतिशत है और कोई अन्य समय अंतर नहीं है, 16रु॰[(100रु॰-60रु॰) x 40%] का आस्थगित कर दायित्व अभिज्ञात होगा । अन्य उदाहरण वह व्यय है जो इसके उपगत होने के वर्ष में लेखा प्रयोजनों के लिए पहले से ही अपलिखित किया जा चुका है लेकिन वह कर प्रयोजनों के लिए एक समय अवधि के दौरान अनुज्ञात होता है। इस दशा में उस व्यय का प्रतिनिधित्व करने वाली आस्ति का केवल कर प्रयोजनों के लिए अतिशेष होगा न कि लेखा प्रयोजनों के लिए। कर प्रयोजनों के लिए आस्ति के अतिशेष और लेखा प्रयोजनों के लिए अतिशेष (जो शून्य है) के बीच का अंतर समय अंतर होगा जो भविष्य में तब उलट जाएगा जब यह व्यय कर प्रयोजनों के लिए अनुज्ञेय होगा। इसलिए एक आस्थगित कर आस्ति विवेक के विचार के अधीन इस अंतर के संबंध में अभिज्ञात होगी (पैरा 15-18 देखें)।

दृष्टांत I

समय अंतरों के उदाहरण

टिप्पण: *यह दृष्टांत लेखा मानक का भाग नहीं है। इस दृष्टांत का प्रयोजन, लेखा मानक के अर्थ को स्पष्ट करने में सहायता करना है। नीचे उल्लिखित धाराएँ, वित्तीय अधिनियम, 2001 द्वारा यथा संशोधित आय कर अधिनियम, 1961 की धाराओं के प्रति निर्देश है।*

1. लाभ और हानि के विवरण में लेखा प्रयोजनों के लिए विकलित किए गए किंतु कर प्रयोजनों के लिए पश्चातवर्ती वर्षों में अनुज्ञात व्यय, अर्थात्

[33] पैरा 33-34 में दिए गए संक्रमणकालीन उपबंध केवल कंपनी (लेखा मानक) नियम, 2006 के अधीन अधिसूचित लेखा मानकों लिए प्रासंगिक है, जो समय के साथ संशोधित किये गए हैं।

(क) धारा 43ख में उल्लिखित प्रकृति (उदाहरण के लिए कर, शुल्क, उपकार, फीस आदि) के व्यय जो वाणिज्यिक आधार पर लाभ और हानि के विवरण में प्रोद्भूत किंतु कर प्रयोजनों के लिए संदाय के आधार पर पश्चातवर्ती वर्षों में अनुज्ञात होते हैं।

(ख) अनिवासियों के प्रति संदाय के जो वाणिज्यिक आधार पर लाभ और हानि के विवरण में प्रोद्भूत, किंतु धारा 40 (क)(i) के अधीन कर प्रयोजनों के लिए अननुज्ञात होते हैं और पश्चात्वर्ती वर्षों में, उपयुक्त कर की कटौती या संदाय करने पर, कर प्रयोजनों के लिए अनुज्ञात होते है।

(ग) दायित्वों के पूर्वानुमान में लाभ और हानि के विवरण में बनाए गए उपबन्ध जहाँ पश्चात्वर्ती वर्षों में सुसंगत दायित्व अनुज्ञात होते हैं जब वे वास्तवकि हो जाते हैं।

2. ऐसे व्यय, जिनका वर्ष की एक अवधि के दौरान पुस्तकों में क्रमिक अपाकरण होता हैं किंतु कर प्रयोजन हेतु पूरा व्यय प्रथम वर्ष में अनुज्ञात होता है (उदाहरण, एक उत्पाद की शुरुआत के लिए विशाल विज्ञापन संबंधी व्यय आदि पुस्तक में आस्थागित राजस्व व्यय के रूप में व्यवहारित होते हैं) या यदि कर प्रयोजन के लिए क्रमिक अपाकरण अपेक्षाकृत एक लम्बी अवधि या छोटी अवधि के दौरान होता है (उदाहरण के लिए धारा 35घ के अधीन प्रारम्भिक व्यय, धारा 35घघ के अधीन समामेलन हेतु किए गए व्यय, धारा 35ङ के अधीन खनिजों की खोजबीन हेतु किया गया व्यय)।

3. जहाँ पुस्तकीय और कर अवक्षयण भिन्न होते है। यह निम्न के कारण उत्पन्न हो सकता हैः

(क) अवक्षयण दरों में अंतर ;

(ख) अवक्षयण की पद्धति में अंतर, उदाहरण के लिए एस एल एम (सरल रेखा पद्धति) या डब्ल्यू डी वी (अवलिखित मूल्य पद्धति)।

(ग) गणना की पद्धति में अंतर, अर्थात् पुस्तकों में व्यक्तिगत आस्तियों के संबंध में किंतु कर प्रयोजनों के लिए प्रखंड आधार पर अवक्षयण की गणना और पुस्तकों में समय के संबंध में किंतु कर प्रयोजनों के लिए प्रखंड आधार के अंतर्गत पूरे या आधे अवक्षयण के आधार पर गणना।

(घ) आस्तियों की वास्तविक लागत की संयोजना में अंतर।

4. जहाँ एक स्वीकार्य जमा योजना (उदाहरण के लिए धारा 33 क ख के अधीन चाय विकास लेखा योजना या धारा 33 क ख क के अधीन कार्यस्थल पुर्नस्थापना निधि योजना) के अधीन की गई जमा के आधार पर कर प्रयोजनों के लिए एक वर्ष में कटौती अनुज्ञात हो और ऐसे जमा में से निकाली गई रकम में से व्यय पश्चातवर्ती वर्षों में लाभ और हानि के विवरण में डेबिट किया जाता है।

5. लाभ और हानि के विवरण में जमा की गई आय लेकिन कर जिस पर केवल पश्चातवर्ती वर्षों में लगता है उदाहरण के लिए पूंजीगत आस्तियों का सूचीबद्ध सामान में परिवर्तन।

6. यदि किसी कारण से आय का अभिज्ञान लेखा में कुछ वर्षों में बाँटा हो लेकिन आय पर पूर्णतः कर प्राप्ति के वर्ष लगा हो।

दृष्टांत II

टिप्पण: *यह दृष्टांत लेखा मानक का भाग नहीं है। इसका प्रयोजन लेखा मानक की प्रयोज्यता को स्पष्ट करना है। निम्नलिखित वर्णित संव्यवहारों के प्रभावों को दर्शाने के लिए, लाभ और हानि के विवरण से उदाहरण दिए गए हैं।*

दृष्टांत I

एक कम्पनी ए.बी.सी. लिमिटेड 31 मार्च को अपने वार्षिक लेखा तैयार करती है। 1 अप्रैल, 20×1 को उसने 1,50,000 रु॰ मूल्य की एक मशीन खरीदी। मशीन का उपयोगी जीवन तीन वर्ष और अपेक्षित अवशिष्ट मूल्य शून्य है। यद्यपि यह कर प्रयोजनों के लिए 100% प्रथम वर्ष अवक्षयण भत्ते के लिए योग्य है, फिर भी लेखा प्रयोजन के लिए सरल रेखा पद्धति उपयुक्त समझी जाती है। अवक्षयण और करों से पहले ए.बी.सी. लिमिटेड का लाभ 2,00,000 रु. प्रति वर्ष हैं और निगम कर दर 40 प्रतिशत प्रतिवर्ष है।

IndiaCode

20×1 में 1,50,000 रु॰ की लागत पर मशीन का क्रय से 60,000 रु. की कर बचत होती है। यदि मशीन की लागत लेखा प्रयोजनों के लिए इसके जीवन के तीन वर्षों पर व्याप्त है, तो कर बचत की रकम भी इसी अवधि पर व्याप्त होनी चाहिए जैसा कि नीचे दर्शित किया गया है:

लाभ और हानि का विवरण

(31 मार्च को समाप्त हो रहे तीन वर्षों 20×1, 20×2, 20×3 के लिए)

(रुपये हजार में)

	20×1	20×2	20×3
अवक्षयण और करों से पूर्व लाभ	200	200	200
घटायेः लेखा प्रयोजनों के लिए अवक्षयण	50	50	50
करों से पूर्व लाभ	150	150	150
घटायेः कर व्ययचालू कर			
0.40 (200-150)	20	80	80
0.40 (200)			
आस्थगित कर			
वर्ष भर में उत्पन्न हो रहे समय	40		
अंतरों का कर प्रभाव			
0.40 (150-50)			
वर्ष के दौरान उलटे हो रहे समयअंतरों का कर प्रभाव			
0.40 (0-50)		(20)	(20)
कर व्यय	60	60	60
कर पश्चात् लाभ	90	90	90
शुद्ध समय अंतर	100	50	0
आस्थगित कर दायित्व	40	20	0

IndiaCode

20×1 में, कर प्रयोजनों के लिए अनुज्ञात अवक्षयण की रकम, लेखाप्रयोजनों के लिए प्रभारित अवक्षयण की रकम से 1,00,000 रु. अधिकहै और इसीलिए कराधेय आय, लेखा आय से कम है। यह 40,000 रु.के आस्थगित कर दायित्व को उत्पन्न करता है। 20×2 और 20×3 मेंलेखा आय, कराधेय आय से कम है क्योंकि लेखा प्रयोजनों के लिएप्रभारित अवक्षयण की रकम, कर प्रयोजनों के लिए अनुज्ञात अवक्षयणकी रकम से 50,000 रु॰ प्रति वर्ष अधिक है। तदनुसार प्रत्येक वर्ष में आस्थगित कर दायित्व 20,000 रु॰ से घटता है। जैसा कि देखा जा सकता है कि, कर व्यय प्रत्येक अवधि की लेखा आय पर आधारित है।

20×1 में 1,00,000 रु. के उत्पन्न हो रहे समय अंतर पर कर की रकम के साथ, लाभ और हानि लेखा डेबिट किया गया तथा आस्थगित कर दायित्व लेखा क्रेडिट किया गया, जबकि प्रत्येक आने वाले दो वर्षों में 50,000 रु॰ के उलट रहे समय अंतरो पर कर की रकम के साथ, आस्थगित कर दायित्व लेखा डेबिट किया गया और लाभ और हानि लेखा क्रेडिट किया गया।

निम्नलिखित जर्नल-प्रविष्टियाँ पारित की जाएगीः

वर्ष 20×1

लाभ और हानि लेखा	(डेबिट) 20,000
चालू कर लेखा	(क्रेडिट) 20,000

(जो वर्ष 20×1 के लिए उपबंधित संदेय कर की रकम है)

लाभ और हानि लेखा	(डेबिट) 40,000
आस्थगित कर लेखा	(क्रेडिट) 40,000

(जो 1,00,000 रु0 के प्रारम्भिक समय अंतरों के लिए सृजित आस्थगित कर दायित्व है)

वर्ष 20×2

लाभ और हानि लेखा	(डेबिट) 80,000
चालू कर लेखा	(क्रेडिट) 80,000

(वर्ष 20×2 के लिए संदेय कर की उपबंधित रकम)

आस्थगित कर लेखा	(डेबिट) 20,000
लाभ और हानि लेखा	(क्रेडिट) 20,000

(जो 50,000 रु. के उलटे हो रहे समय अंतर के लिए समायोजित आस्थगित कर दायित्व है)

वर्ष 20×3

लाभ और हानि लेखा	(डेबिट) 80,000
चालू कर लेखा	(क्रेडिट) 80,000

(जो वर्ष 20×3 के लिए संदेय कर की उपबंधित रकम है) 20,000

आस्थगित कर लेखा	(डेबिट) 20,000
लाभ और हानि लेखा	(क्रेडिट) 20,000

(जो 50,000 रु. के उलटे हो रहे समय अंतर के लिए समायोजित आस्थगित कर दायित्व है)

वर्ष 20×1 में, आस्थगित कर लेखा का अतिशेष अर्थात् 40,000 रु. मानक के पैरा 30 के अनुसार, वर्ष के लिए देय चालू कर से पृथक दर्शाया जाएगा। वर्ष 20×2 में, आस्थगित कर लेखा का अतिशेष 20,000 रु. होगा और वर्ष 20×1 की भांति वर्ष के लिए देय चालू कर से अलग दर्शाया जाएगा, वर्ष 20×3 में, आस्थागित कर दायित्व का अतिशेष शून्य हो जाएगा।

दृष्टांत 2

उपरोक्त दृष्टांत में, निगम कर दर प्रत्येक तीन वर्षों में समान मानी गयी है। यदि कर की दर में परिवर्तन होता है तो उद्यम के लिए उस कर दर को जो तुलनपत्र की तारीख पर अधिनियमित या सारभूत रूप से अधिनियमित हुई है, लेखा वर्ष के अंत पर संचित समय अंतरों पर लागू करते हुए, अग्रनित आस्थगित कर दायित्व की रकम को समायोजित करना आवश्यक होगा (पैरा 21 और 22 देखें)। उदाहरण के लिए, यदि दृष्टांत 1 में, 20×1, 20×2 और 20×3 के लिए सारभूत रूप से अधिनियमित कर दरें क्रमशः 40%, 35% और 38% है, तो आस्थगित कर दायित्व की रकम की निम्नलिखित रूप में गणना की जाएगीः

IndiaCode

प्रत्येक वर्ष में अग्रनीत आस्थगित कर दायित्व तुलनपत्र में इस प्रकार उपदर्शित किया जाएगा:

31 मार्च, 20×1 =0.40 (1,00,000) = 40,000 रु.

31 मार्च, 20×2 = 0.35 (50,000) = 17,500 रु.

31 मार्च, 20×3 = 0.38 (0) = शून्य रु.

तद्नुसार, प्रत्येक वर्ष के लिए लाभ और हानि लेखा में डेबिट/ (क्रेडिट) की गई रकम (आस्थगित कर दायित्व में तत्संबन्धी डेबिट या क्रेडिट हुई रकम के साथ) इस प्रकार होगीः

31 मार्च, 20×1 डेबिट = 40,000 रु.

31 मार्च, 20×2 (क्रेडिट) = (22,500) रु.

31 मार्च, 20×3 (क्रेडिट) = (17,500) रु.

दृष्टांत 3

एक कम्पनी ए.बी.सी. लिमिटेड वार्षिक रूप से 31 मार्च को अपने लेखे तैयार करती है। कम्पनी को वर्ष 20×1 में 1,00,000 रु. की हानि हुई और वर्ष 20×2 और वर्ष 20×3 में क्रमशः 50,000 रु. और 60,000 रु. का लाभ हुआ। यह माना गया है कि कर विधियों के अधीन, हानि 8 वर्षों के लिए अग्रनीत की जा सकती है और कर दर 40% है और वर्ष 2001 के अंत पर, विश्वसनीय साक्ष्य द्वारा समर्थित, यह वास्तवकि रूप से निश्चित था कि कम्पनी के पास भावी वर्षों में पर्याप्त कराधेय आय होगी जिसके प्रति अनवशोषित अवक्षयण और अग्रनीत हानियाँ सैट आफ की जा सकती है। यह भी माना गया कि कराधेय आय और लेखा आय के बीच कोई अंतर नहीं है, केवल इसके अतिरिक्त कि कर प्रयोजनों के लिए वर्ष 20×2 और 20×3 में हानि का सैट आफ अनुज्ञात है।

लाभ और हानि का विवरण

(31 मार्च 20×1, 20×2, 20×3 को समाप्त हो रहे तीन वर्षों के लिए)

(हजार में रुपए)

	20×1	20×2	20×3
लाभ (हानि)	(100)	50	60
घटायें: चालू कर	-	-	(4)
आस्थगित कर			
वर्ष के दौरान उत्पन्न हो रहे समय अंतरों का कर प्रभाव	40		
वर्ष के दौरान उलट रहेसमय अंतरों का कर प्रभाव	-	(20)	(20)
कर प्रभाव के पश्चात् लाभ (हानि)	(60)	30	36

दृष्टांत 4

टिप्पण: इस दृष्टांत का प्रयोजन मानक के पैरा 13 के स्पष्टीकरण के अर्थ को स्पष्ट करने में सहायता करना है।

तथ्य:

1. लेखा बही के अनुसार और आयकर प्रयोजनों के लिए किसी उद्यम की अवक्षयण और कर से पूर्व की 15 वर्ष के लिए आय 1000 लाख रु॰ प्रति वर्ष है।
2. धारा 80-झ क के अधीन उद्यम पहले 10 वर्षों के लिए 100 प्रतिशत कर-अवकाश के अधीन है। कर दर 30 प्रतिशत मानी गयी है।

3. वर्ष 1 की शुरुआत में, उद्यम ने एक मशीन 1500 लाख रु. की खरीदी। अवशिष्ट मूल्य शून्य माना गया है।

4. लेखा प्रयोजनों के लिए उद्यम सरल-रेखा पद्धति पर, 15 वर्षों के लिए मशीन पर अवक्षयण प्रदान करने के लिए एक लेखा नीति का पालन करता है।

5. कर प्रयोजन के लिए अवलिखित मूल्य पद्धति आधार पर मशीन के लिए अवक्षयण की उपयुक्त दर 25% है।

इस संबंध में, धारा 115 ञ ख (एम.ए.टी) के उपबंधों पर ध्यान न देते हुए, निम्नलिखित संगणनाएँ की जाएगीः

सारणी 1

लेखा और कर प्रयोजनों के लिए मशीन पर अवक्षयण की संगणना

(लाख रु0 में रकम)

वर्ष	लेखा प्रयोजनों के लिए अवक्षयण	कर प्रयोजनों के लिए अवक्षयण
1.	100	375
2.	100	281
3.	100	211
4.	100	158
5.	100	119
6.	100	89
7.	100	67
8.	100	50
9.	100	38
10.	100	28
11.	100	21
12.	100	16
13.	100	12
14.	100	9
15.	100	7

15वें वर्ष की समाप्ति पर लेखा प्रयोजनों के लिए मशीन की कैरिंग रकम शून्य होगी जबकि कर प्रयोजनों के लिए कैरिंग रकम 19 लाख रु. है जो पश्चात्वर्ती वर्षों में अनुज्ञात होने के लिए पात्र है।

IndiaCode

सारणी 2

समय अंतरों की संगणना

(लाख रु॰ में रकम)

1	2	3	4	5	6	7	8	9
वर्ष	अवक्षयण और कर से पूर्व आय (लेखा और कर दोनों प्रयोजनों के लिए)	अवक्षयण के पश्चात् लेखा आय	कुल सकल आय (कर विधियों के अधीन अवक्षयण की कटौती के पश्चात्)	धारा 81 झ क के अधीन कटौती	कराधेय आय (4-5)	लेखा आय और कराधेय आय के बीच कुल अंतर (3-6)	स्थायी अंतर (धारा 80 झ क के प्रति कटौती	समय अंतर (लेखा और कर प्रयोजनों के लिए अवक्षयण की भिन्न रकमों के कारण (ओ-उत्पन्न हो रहे हैं और आर-उलट रहे हैं)
1.	1000	900	625	625	0	900	625	275(ओ)
2.	1000	900	719	719	0	900	719	181(ओ)
3.	1000	900	789	789	0	900	789	111(ओ)
4.	1000	900	842	842	0	900	842	58 (ओ)
5.	1000	900	881	881	0	900	881	19 (ओ)
6.	1000	900	911	911	0	900	911	11 (आर)
7.	1000	900	933	933	0	900	933	33 (आर)
8.	1000	900	950	950	0	900	950	50 (आर)
9.	1000	900	962	962	0	900	962	62 (आर)
10.	1000	900	972	972	0	900	972	72 (आर)
11.	1000	900	979	0	979	-79	0	79 (आर)
12.	1000	900	984	0	984	-84	0	84 (आर)
13.	1000	900	988	0	988	-88	0	88 (आर)
14.	1000	900	991	0	991	-91	0	91 (आर)
15.	1000	900	993	0	993	-93	0	74 (आर)
								19 (ओ)

IndiaCode

टिप्पण:

1. कर अवकाश को अवधि के दौरान उत्पन्न हो रहे समय अंतर 644 लाख रु. है, जिनमें से 228 लाख रु. कर अवकाश की अवधि के दौरान उलटे हो रहे है और 416 लाख रु॰ कर अवकाश की अवधि के बाद उलटे हो रहे हैं। 19 लाख रु॰ के समय अंतर 15वें वर्ष में उत्पन्न हो रहे हैं जो पश्चातवर्ती वर्षों में तब उलटे होंगे जब लेखा प्रयोजनों के लिए अवक्षयण शून्य होगा लेकिन कर प्रयोजनों के लिए मशीन का 19 लाख रु॰ का अवलिखित मूल्य, अवक्षयण के रूप में अनुज्ञेय होगा।

2. मानक के अनुसार, समय अंतर पर वह आस्थगित कर जो कर अवकाश की अवधि के दौरान उलटते है, अभिज्ञात नहीं किया जाना चाहिए। इसके लिए, पहले उत्पन्न हुए समय अंतर के बारे में माना जाता है कि वे पहले उलटते हैं। इसलिए, कर अवकाश की अवधि के दौरान 228 लाख रु॰ के समय अंतर का उलटान उस समय अंतर में से समझा जाएगा जो वर्ष 1 में उत्पन्न हुए। वर्ष 1 में उत्पन्न हो रहे बाकी बचे समय अंतर और 2 से 5 वर्षों में उत्पन्न हो रहे समय अंतर कर अवकाश की अवधि के बाद उलटे हो रहे समझे जाएगें। इसलिए, वर्ष 1 में, आस्थगित कर 47 लाख रु॰ (275 लाख रु॰-228 लाख रु॰) के समय अंतरपर अभिज्ञात होगा जो कर अवकाश की अवधि के बाद उलट जाएगा। ऐसी ही संगणनाएँ पश्चात्वर्ती वर्षों के लिए की जाएगी। भिन्न वर्षों के दौरान अभिज्ञात होने वाली आस्थगित कर आस्तियों/ दायित्वों की निम्नलिखित सारणी के अनुसार संगणना की जाएगी।

सारणी 3

चालू कर तथा आस्थगित कर की संगणना

(लाखों रु. में रकम)

वर्ष	चालू कर (कराधेय आय ×30%)	आस्थगित कर (समय अंतर ×30%)	संचित आस्थगित कर (एल=दायित्व और ए=आस्ति	कर व्यय
1.	0	47×30%=14 (उपरोक्त टिप्पण 2 देखें)	14 (एल)	14
2.	0	181×30%=54	68 (एल)	54
3.	0	111×30%=33	101 (एल)	33
4.	0	58×30%=17	118 (एल)	17
5.	0	19×30%=6	124(एल)	6
6.	0	0[1]	124 (एल)	0
7.	0	0[1]	124 (एल)	0
8.	0	0[1]	124 (एल)	0
9.	0	0[1]	124 (एल)	0
10.	0	0[1]	124 (एल)	0
11.	294	-79×30%=-24	100 (एल)	270
12.	295	-84×30%=-25	75 (एल)	270
13.	296	-88×30%=-26	49 (एल)	270
14.	297	-91×30%=-27	22 (एल)	270
15.	298	-74×30%=22	0	270
		-19×30%=-6	6 (ए)[2]	

टिप्पण:

1. किसी भी आस्थगित कर को अभिज्ञात नहीं किया गया है क्योंकि कर अवकाश की अवधि के दौरान उल्टे हो रहे समय अंतरों के संबंध में किसी भी आस्थगित कर को उनकी उत्पत्ति पर अभिज्ञात नहीं किया गया था।

2. लेखामानक 22 के अनुसार 6 लाख रु. की आस्थगित कर आस्ति को विवेक के विचार के अधीन रहते हुए 15वें वर्ष के अंत पर अभिज्ञात किया जाएगा। यदि इसे ऐसे अभिज्ञात किया जाता है तो उक्त आस्थगित कर आस्ति पश्चात्वर्ती अवधियों में वसूल होगी जब कर प्रयोजनों के लिए अवक्षयण अनुज्ञात होगा, लेकिन लेखा प्रयोजनों के लिए कोई अवक्षयण अभिज्ञात नहीं किया जाएगा।

IndiaCode

लेखा मानक 23

सहयुक्तों में विनिधानों हेतु समेकित वित्तीय विवरणों में लेखा[34]

(इस लेखा मानक में कुछ मोटे तिरछे टाइप और कुछ सीधे टाइप में व्यवस्थित पैरा सम्मिलित हैं, जिनका समान प्राधिकार है। मोटे तिरछे टाइप में दिये गए पैरा मुख्य सिद्धांत उपदर्शित करते हैं। इस लेखा मानक को अधिसूचना के प्रति उपाबंध के भाग क में अतंर्विष्ट साधारण अनुदेशों के संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिये।)

उद्देश्य

इस मानक का उद्देश्य, समेकित वित्तीय विवरणों में, सहयुक्तों में विनिधानों के समूह की वित्तीय स्थिति और प्रचालन परिणामों पर प्रभावों के अभिज्ञान के लिए सिद्धांत और प्रक्रियाएँ निर्धारित करना है।

कार्यक्षेत्र

1. यह मानक विनिधानकर्ता द्वारा समेकित वित्तीय विवरणों की तैयारी और प्रस्तुतिकरण में सहयुक्तों में विनिधानों के लेखा में लागू होना चाहिए।

2. यह मानक विनिधानकर्ता द्वारा पृथक वित्तीय विवरणों की तैयारी और प्रस्तुतिकरण में सहयुक्तों में विनिधानों के लेखा से सम्बंधित नहीं है।[35]

परिभाषाएँ

3. इस मानक के लिए, निम्नलिखित शब्द विनिर्दिष्ट अर्थों के साथ प्रयुक्त किए गए हैं:

3.1 <u>सहयुक्त</u> एक उद्यम है जिसमें विनिधानकर्ता का महत्वपूर्ण प्रभाव होता है और जो ना तो विनिधानकर्ता की समनुषंगी है और न ही सहउद्यम है।[36]

3.2 <u>महत्वपूर्ण प्रभाव</u> विनिधानगृहीता के वित्तीय और/या प्रचालन नीति विनिश्चयों में भाग लेने का अधिकार है किन्तु इन नीतियों पर नियंत्रण होना नहीं है।

3.3 <u>नियंत्रण</u> :

(क) प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्षतः समनुषंगी (समनुषंगियों) के माध्यम से एक उद्यम के आधी से अधिक मताधिकार का स्वामित्व; या

(ख) किसी कम्पनी की दशा में निदेशक बोर्ड के संयोजन या किसी अन्य उद्यम की दशा में इसके क्रियाकलापों से आर्थिक लाभ प्राप्त करने के लिए शासी संस्था के संयोजन का नियंत्रण ।

3.4 <u>समनुषंगी</u> एक उद्यम है जो किसी अन्य उद्यम (जो मूल उद्यम कहलाता है) द्वारा नियंत्रित होता है।

3.5 <u>मूल उद्यम</u> वह उद्यम है जिसकी एक या अधिक समनुषंगियाँ होती हैं।

3.6 <u>समूह</u> मूल उद्यम और इसकी सभी समनुषंगियाँ हैं।

3.7 <u>समेकित वित्तीय विवरण</u> एकल उद्यम की तरह प्रस्तुत समूह के वित्तीय विवरण हैं।

3.8 <u>इक्विटी पद्धति</u> एक लेखा पद्धति है जिसके द्वारा अर्जन के समय उत्पन्न हो रही किसी भी गुडविल/पूंजी आरक्षिति को पहचानते हुए, प्रारंभिक विनिधान लागत की तरह अभिलेखित करते हैं। तत्पश्चात विनिधान की कैरिंग राशि, विनिधानगृहीता की शुद्ध आस्तियों में विनिधानकर्ता के भाग में अर्जन के बाद परिवर्तन के लिए समायोजित की जाती है। लाभ तथा हानि का समेकित विवरण, विनिधानगृहीता के प्रचालनों के परिणामों में विनिधानकर्ता के भाग को प्रतिबिंबित करता है।

---

[34] यह स्पष्ट है कि कोई एक उद्यम समेकित वित्तीय विवरण प्रस्तुत करता है तो लेखा मानक 23 आज्ञापक है। दूसरे शब्दों में, यदि कोई उद्यम समेकित वित्तीय विवरण प्रस्तुत करता है तो इसे लेखा मानक 23 के अनुसार समेकित वित्तीय विवरणों में सहयुक्तों में विनिधानों का लेखा देना चाहिए।

[35] लेखा मानक 13, 'विनिधानों हेतु लेखा', एक विनिधानकर्ता के पृथक वित्तीय विवरणों में सहयुक्तों में विनिधानों के लिए लेखा पर लागू होता है।

[36] लेखा मानक 27, 'सहउद्यमों में हितों की वित्तीय रिपोर्टिंग' शब्द सहउद्यमको परिभाषित करता है और सहउद्यमों में विनिधान के लेखा से सम्बंधितअपेक्षाओं का विस्तारपूर्ण वर्णन करता है।

IndiaCode

3.9 इक्विटी एक उद्यम की सभी देनदारियों को घटाने के बाद उद्यम की आस्तियों में अवशिष्ट ब्याज/हित है।

4. इस मानक के प्रयोजन लिए महत्वपूर्ण प्रभाव का विस्तार एक उद्यम की वित्तीय और/या प्रचालन नीतियों को शासित करने की शक्ति तक नहीं होता है। महत्वपूर्ण प्रभाव शेयर स्वामित्व, कानून या करार द्वारा अर्जित किया जा सकता है। शेयर स्वामित्व के विषय में यदि एक विनिधानकर्ता के पास, प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्षतः समनुषंगी (समनुषंगियों) के माध्यम से, विनिधानगृहीता के 20 प्रतिशत या अधिक मताधिकार होते हैं, तो यह मान लिया जाता है कि विनिधानकर्ता के पास महत्वपूर्ण प्रभाव है, जब तक कि यह स्पष्टतः प्रदर्शित न किया जा सके कि ऐसी स्थिति नहीं है। इसके विपरीत, यदि एक विनिधानकर्ता के पास प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्षतः समनुषंगी (समनुषंगियों) के माध्यम से, विनिधानगृहीता के 20% से कम मताधिकार हो तो, जब तक कि ऐसा प्रभाव स्पष्टतः प्रदर्शित न किया जाए यह मान लिया जाता है कि विनिधानकर्ता का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है, एक अन्य विनिधानकर्ता द्वारा एक महत्वपूर्ण या बहुमत स्वामित्व, रखना एक विनिधानकर्ता को महत्वपूर्ण प्रभाव रखने से, आवश्यक रूप से नहीं रोकता है।

स्पष्टीकरण

शेयर स्वामित्व पर विचार करते हुए, विनिधानकर्ता की मतदान शक्ति के अवधारण हेतु, विनिधानकर्ता द्वारा धारित विनिधानगृहीता के संभावित इक्विटी शेयरों की क्षमता पर ध्यान नहीं दिया जाता है।

5. एक विनिधानकर्ता द्वारा महत्वपूर्ण प्रभाव की विद्यमानता आमतौर पर निम्नलिखित एक या अधिक तरीके में स्पष्ट होती है:

(क) विनिधानगृहीता के निदेशक बोर्ड या समरूप शासी निकाय पर प्रतिनिधित्व;

(ख) नीति बनाने की प्रक्रियाओं में भागीदारी;

(ग) विनिधानकर्ता और विनिधानगृहीता के बीच सारवान संव्यवहार;

(घ) प्रबंधन-कर्मियों की अदली बदली; या

(ङ) अनिवार्य तकनीकी जानकारी का उपबन्ध ।

6. इक्विटी/पद्धति के अधीन, अर्जन के समय उत्पन्न हो रही किसी भीगुडविल/पूँजी अरक्षिति की पहचान करते हुए, आरम्भिक रूप से विनिधान को लागत पर अभिलिखित किया जाता है और अर्जन की तारीख के बाद विनिधानगृहीता के लाभों या हानियों में विनिधानकर्ता के भाग को अभिज्ञान करने के लिए कैरिंग रकम को बढ़ाया या घटाया जाता है। विनिधानगृहीता से प्राप्त वितरण विनिधान की कैरिंग रकम को घटाते हैं। कैरिंग रकम के प्रति समायोजन, लाभ और हानि के विवरण में सम्मिलित नहीं किए जा रहे विनिधानगृहीता की इक्विटी में परिवर्तनों से उत्पन्न हो रहे विनिधानगृहीता में विनिधानकर्ता के अनुपातीय हित में परिवर्तनों के लिए भी आवश्यक हो सकती है। ऐसे परिवर्तनों में, स्थिर आस्तियों और विनिधानों के पुनर्मूल्यांकन से, विदेशी मुद्रा विनिमय अनुवाद के अंतरों और समामेलनों पर उत्पन्न हो रहे अंतरों के समायोजन से उत्पन्न हो रहे परिवर्तन सम्मिलित हैं।

स्पष्टीकरण

(क) विनिधानगृहीता के लाभ या हानि के विवरण में सम्मिलित नहीं की जा रही विनिधानगृहीता की इक्विटी में परिवर्तनों से उद्भूत विनिधानगृहीता में विनिधान की कैरिंग रकम के प्रति समायोजन, को लाभ और हानि के समेकित विवरण में सम्मिलित किए बिना प्रत्यक्षतः विनिधान की कैरिंग रकम में समायोजित किया जाता हैं। समरूप डेबिट/क्रेडिट समेकित तुलन पत्र में इक्विटीहित के सुसंगत शीर्ष में की जाती है। उदाहरण के लिए, यदि विनिधानगृहीता द्वारा स्थिर आस्तियों के पुनर्मूल्यांकन के कारण समायोजन उद्भूत होता है तो विनिधान की कैरिंग रकम को, पुनर्मूल्यांकित मात्रा में विनिधानकर्ता के अनुपातिक भाग तक समायोजित करने के अतिरिक्त, पुनर्मूल्यांकन आरक्षिति की समरूप मात्रा समेकित तुलनपत्र में दर्शायी जाती है।

(ख) यदि किसी सहयुक्त ने अपने वित्तीय विवरण में प्रस्तावित लाभांश का उपबंध किया गया है तो, सहयुक्त के प्रचालनों के परिणामों में विनिधानकर्ता के भाग की गणना, प्रस्तावित लाभांश पर ध्यान दिए बिना की जाएगी ।

IndiaCode

विनिधानों के लिए लेखा इक्विटी पद्धति

7. किसी सहयुक्त में विनिधान का इक्विटी पद्धति के अंतर्गत निम्नलिखित स्थितियों को छोड़कर, समेकित वित्तीय विवरण में लेखा होना चाहिए:

(क) जब विनिधान निकट भविष्य में इसके पश्चातवर्ती व्ययन को ध्यान में रखते हुए अनन्य रूप से अर्जित किया और धारण किया जाए; या

(ख) जब सहयुक्त ऐसे कठोर दीर्घकालिक निबंधनों के अधीन काम करे जिससे विनिधानकर्ता को निधि हस्तांतरित करने की इसकी क्षमता का महत्वपूर्ण रूप से ह्रास होताहै ।

ऐसे सहयुक्तों में विनिधान का लेखा, लेखा मानक 13, विनिधानों के लिए लेखा, के अनुसार होना चाहिए। सहयुक्तों में विनिधानों के लिए लेखा में इक्विटी पद्धति को लागू न करने का कारण समेकित वित्तीय विवरणों में प्रकट किया जाना चाहिए।

स्पष्टीकरण

समयावधि, जो इस मानक के लिए निकट भविष्य मानी जाती है, प्राथमिक रूप से प्रत्येक मामले के तथ्यों और परिस्थितियों पर निर्भर करती है। तथापि, साधारणतया 'निकट भविष्य' शब्द का अर्थ, सम्बंधित विनिधानों के अर्जन के बारह मास से अधिक नहीं माना जाता, जब तक कि, मामले के तथ्यों और परिस्थितियों के आधार पर एक लम्बी अवधि को न्यायोचित न ठहराया जाए। सम्बंधित विनिधान के निपटान से सम्बंधित आशय पर विनिधान के अर्जन के समय विचार किया जाता है। तद्नुसार, यदि सम्बंधित विनिधान, निकट भविष्य में इसके पश्चातवर्ती व्ययन के इरादे बिना अर्जित किया गया है और पश्चातवर्ती रूप से, विनिधान के व्ययन का निर्णय लिया जाए तो, जब तक विनिधान का वास्तविक रूप से व्ययन नहीं होता तब तक ऐसे विनिधान को इक्विटी पद्धति के उपयोजन से अपवर्जित नहीं किया जाता है। इसके विपरीत, यदि सुसंगत विनिधान, निकट भविष्य में इसके पश्चातवर्ती व्ययन के आशय से अर्जित किया जाए, यद्यपि कुछ विधिमान्य कारणों से इसका उस अवधि के दौरान व्ययन न किया जा सके तो इस पर इक्विटी पद्धति लागू नहीं होगी परन्तु आशय में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए ।

8. प्राप्त वितरणों के आधार पर आय का अभिज्ञान, विनिधानकर्ता द्वारा सहयुक्त में विनिधान पर अर्जित आय का पर्याप्त मापदण्ड नहीं भी हो सकता है क्योंकि सम्भवतः प्राप्त वितरणों का सहयुक्त की निष्पादनता से बहुत कम सम्बंध हो। चूँकि विनिधानकर्ता का सहयुक्त पर महत्वपूर्ण प्रभाव होता है, इसीलिए विनिधानकर्ता की सहयुक्त की निष्पादनता और परिणाम स्वरूप इसके विनिधान पर प्रतिफल का दायित्व होता है। विनिधानकर्ता, इस प्रबंधन का लेखा, ऐसे सहयोगी के परिणामों के भाग को सम्मिलित करने के लिए, अपनी समेकित वित्तीय विवरणों के कार्यक्षेत्र को विस्तृत करके देता है और इस प्रकार अर्जन तथा विनिधान का एक विश्लेषण प्रदान करता है जिससे और अधिक उपयोगी अनुपातों की गणना की जा सकती है। परिणाम स्वरूप, समेकित वित्तीय विवरणों में इक्विटी पद्धति का उपयोजन विनिधानकर्ता की शुद्ध आस्तियों और शुद्ध आय की अधिक ज्ञानवर्धक रिपोर्टिंग प्रदान करता है।

9. एक विनिधानकर्ता को उस तारीख से इक्विटी पद्धति का प्रयोग बंद कर देना चाहिए जिसमें:

(क) इसका सहयुक्त में महत्वपूर्ण प्रभाव समाप्त हो जाता है किन्तु यह अपने विनिधान पूर्णतः या अंशतः प्रतिधारित किए रहता है; या

(ख) इक्विटी पद्धति का उपयोग समुचित नहीं रह गया क्योंकि सहयोगी कठोर दीर्घकालिक प्रतिबंधों के अंतर्गत कार्य करता है और विनिधानकर्ता के लिए निधि हस्तांतरण की इसकी क्षमता का महत्वपूर्ण रूप से ह्रास होता है।

इक्विटी पद्धति के प्रयोग बंद होने की तारीख से ऐसे, सहयुक्तों में विनिधानों का लेखा, लेखा मानक 13, विनिधानों के लिए लेखा, के अनुसार होना चाहिए। इस प्रयोजन के लिए, उस तारीख पर, कैरिंग रकम को उस तारीख के तत्पश्चात लागत की तरह मानना चाहिए।

इक्विटी पद्धति का उपयोजन

10. इक्विटी पद्धति के उपयोजन के लिए उपयुक्त अनेक प्रक्रियाएँ, लेखा मानक 21, समेकित वित्तीय विवरण, में व्यक्त समेकित प्रक्रियाओं के समान हैं। इसके अतिरिक्त, समनुषंगियों के अर्जन में प्रयुक्त समेकित प्रक्रियाओं में अंतर्निहित विस्तृत अवधारणाएँ सहयुक्तों में विनिधान के

अर्जन पर अपनायी गयी हैं।

11. एक सहयुक्त में विनिधान, इक्विटी पद्धति के अधीन उस तारीख से लेखा किया जाता है जिस पर यह सहयुक्त की परिभाषा में सम्मिलित होता है। विनिधान के अर्जन पर, अर्जन की लागत और सहयुक्त की विनिधानकर्ता के इक्विटी में विनिधान कर्ता के सहयुक्त हिस्से के बीच का कोई भी अंतर गुडविल या पूँजी आरक्षिति की तरह वर्णित होता है।

12. एक विनिधानकर्ता द्वारा सहयुक्त के अर्जन पर उत्पन्न हो रही गुडविल या पूंजी आरक्षिति को, सहयुक्त में विनिधान की कैरिंग रकम में सम्मिलित करना चाहिए, लेकिन पृथक रूप से प्रकट करना चाहिए।

13. सहयुक्त में विनिधान के लिए लेखा हेतु इक्विटी पद्धति का प्रयोग करते हुए, विनिधानकर्ता (या इसकी समेकित समनुषंगियों औरसहयुक्त के बीच संव्यवहारों से उत्पन्न हो रहे अप्राप्त लाभ तथा हानियों को सहयुक्त में विनिधानकर्ता के हित की सीमा तक सम्मिलित नहीं किया जाना चाहिए। यदि और उस सीमा तक जब तक, स्थानातंरित आस्ति की लागत वसूल न की जा सके तो अप्राप्त हानियाँ निष्कासित नहीं की जानी चाहिए ।

14. सहयुक्त के सबसे नये उपलब्ध वित्तीय विवरणों का प्रयोग विनिधानकर्ता द्वारा इक्विटी पद्धति को लागू करते हुए किया जाता है; वे सामान्यतया विनिधानकर्ता के वित्तीय विवरण की तरह ही समान तारीख तक के लिए तैयार किए जाते हैं। जब विनिधानकर्ता और सहयुक्तों की रिपोर्टिंग तारीखें भिन्न होती हैं, तो सहयुक्त सामान्यतया, विनिधानकर्ता के लिए, विनिधानकर्ता के वित्तीय विवरणों की तरह समान तारीख पर विवरण तैयार करता है। जब यह करना अव्यवहारिक होता है, तो भिन्न रिपोर्टिंग तारीख पर तैयार वित्तीय विवरण प्रयोग किए जा सकते हैं। अनवरतता के सिद्धांत यह अपेक्षा करता है कि रिपोर्टिंग अवधियों की लम्बाई और रिपोर्टिंग तारीखों में कोई भी अंतर, अवधि दर अवधि एकरूप हो ।

15. जब भिन्न रिपोर्टिंग तारीख के साथ वित्तीय विवरणों का प्रयोग किया जाता है तो, विनिधानकर्ता (या इसकी समेकित समनुषंगियों) और सहयुक्त के बीच किसी ऐसी महत्वपूर्ण घटना या संव्यवहारों के प्रभावों के लिए समायोजन किए जाते हैं जो सहयुक्त के वित्तीय विवरणों की तारीख़ और विनिधानकर्ता के समेकित वित्तीय विवरणों की तारीख के बीच घटित होते हैं।

16. प्रायः विनिधानकर्ता, समान परिस्थितियों में एक जैसे संव्यवहारों और घटनाओं के लिए, एकरूप लेखा नीतियों का प्रयोग करते हुए समेकित वित्तीय विवरण तैयार करता है। यदि सहयुक्त, समान परिस्थितियों में एक जैसे संव्यवहारों और घटनाओं के लिए समेकित वित्तीय विवरण हेतु अपनायी गयी लेखा नीतियों के अतिरिक्त अन्य लेखा नीतियों का प्रयोग करता है तो, जब विनिधानकर्ता द्वारा उनमें इक्विटी पद्धति लागू की जाए तो सहयुक्त के वित्तीय विवरण में उपयुक्त समायोजन किए जाते हैं। यदि ऐसा करना व्यवहारिक न हो तो लेखा नीतियों के बीच अंतरों के संक्षिप्त विवरण के साथ यह तथ्य प्रकट किया जाता है।

17. यदि एक सहयुक्त के पास समूह से बाहर बकाया संचयी अधिमानी शेयर हों तो विनिधानकर्ता अपने हिस्से के लाभ या हानियों की गणना अधिमानी लाभांशों के समायोजन के बाद करता है, चाहे लाभांश घोषित किए गये हों या नहीं।

18. यदि इक्विटी पद्धति के अधीन, सहयुक्त की हानियों में विनिधानकर्ता का हिस्सा विनिधान की कैरिंग रकम के बराबर या अधिक होता है तो, सामान्यता विनिधानकर्ता आगे होने वाली और हानियों में अपने हिस्से को अभिज्ञात करना बंद कर देता है और विनिधान की शून्य मूल्य के आधार पर रिपोर्ट की जाती है। अतिरिक्त हानियाँ उस सीमा तक प्रदान की जाती हैं जहाँ तक विनिधानकर्ता ने सहयुक्त के उन दायित्वों की पूर्ति के लिए, जिसके प्रति विनिधानकर्ता ने प्रत्याभूति दी हो या जिसके प्रति विनिधानकर्ता प्रतिबद्ध हो, सहयुक्त की जगह पर दायित्व वहन किए हों या भुगतान किए हों । यदि सहयोगी पश्चातवर्ती रूप से लाभ को रिपोर्ट करता है, तो विनिधानकर्ता उन लाभों के अपने हिस्से को सम्मिलित करना केवल तभी पुनः आरम्भ करता है जब इसके लाभों के भाग उन शुद्ध हानियों के भाग के बराबर होते हैं जो अभिज्ञात न की जा रही हों ।

19. जब कोई सहयुक्त समेकित वित्तीय विवरण प्रस्तुत करता है तो, ध्यान में लिए जाने वाले परिणाम और शुद्ध आस्तियाँ वे हैं जो सहयुक्त के समेकित वित्तीय विवरणों में रिपोर्ट हुई हैं।

20. एक सहयुक्त में विनिधान की मात्रा से स्थायी पतन को अभिज्ञात करने के लिए, विनिधान की कैरिंग रकम को घटाया जाना चाहिए, ऐसी कटौती प्रत्येक विनिधान के लिए अलग-अलग निर्धारित की जाती है।

आकस्मिकताएँ

21. लेखा मानक 4, अकस्मिकताएँ तथा तुलनपत्र की तारीख के पश्चात् होने वाली घटनाएँ [37], के अनुसार विनिधानकर्ता समेकित वित्तीय विवरण में प्रकट करता है:

(क) किसी सहयुक्त की आकस्मिकताओं और पूँजीगत प्रतिबद्धताओं में उसका हिस्सा जिसके लिए वह भी आकस्मिक रूप से उत्तरदायी है; और

(ख) वे आकस्मिकताएं जो इसलिए उद्भूत होती हैं क्योंकि विनिधानकर्ता गम्भीर रूप से सहयुक्त के दायित्वों के लिए उत्तरदायी है।

प्रकटन

22. पैरा 7 और 12 द्वारा अपेक्षित प्रकटन के अतिरिक्त, स्वामित्वहितों के अनुपात को सम्मिलित करते हुए सहयुक्तों की उपयुक्त सूची और उनका वर्णन और यदि भिन्न है तो, धारण की गयी मतदान शक्ति का अनुपात भी समेकित वित्तीय विवरणों में प्रकट होना चाहिए।

23. इक्विटी पद्धति का प्रयोग करते हुए सहयुक्तों में विनिधानों को दीर्घकालिक विनिधानों की तरह वर्गीकृत किया जाना चाहिए और समेकित तुलनपत्र में पृथक रूप से प्रकट किया जाना चाहिए। ऐसे विनिधानों के लाभों या हानियों में विनिधानकर्ता का भाग भी लाभ और हानि के समेकित विवरण में पृथक रूप से प्रकट किया जाना चाहिए। किसी भी असाधारण या पूर्वावधि मदों में विनिधानकर्ता के भाग को भी पृथक रूप से प्रकट किया जाना चाहिए।

24. ऐसे सहयुक्त (सहयुक्तों) का (के) नाम, जिसकी (जिनकी) रिपोर्टिंग तारीखें, विनिधानकर्ता के वित्तीय विवरणों से भिन्न हैं तथा रिपोर्टिंग तारीखों में अंतर भी समेकित वित्तीय विवरणों में प्रकट किए जाने चाहिए।

25. यदि सहयुक्त, समान परिस्थितियों में समान संव्यवहारों और घटनाओं के लिए समेकित वित्तीय विवरणों में प्रयुक्त लेखा नीतियों से अलग अन्य लेखा नीतियों का प्रयोग करता है और सहयुक्त के वित्तीय विवरणों के लिए उपयुक्त समायोजन करना अव्यवहारिक होता है तो, लेखा नीतियों में अंतरों के संक्षिप्त विवरण के साथ यह तथ्य भी प्रकट किया जाना चाहिए।

***संक्रमणकालीन उपबंध*[38]**

26. ऐसे प्रथम अवसर पर जब इस मानक के अनुसार, सहयुक्त में विनिधान का लेखा समेकित वित्तीय विवरणों में दिया जाता है, तो सहयुक्त में विनिधान की कैरिंग रकम उस सीमा तक लानी चाहिए जो सहयुक्त के अर्जन से, इस मानक के अनुसार लेखा की इक्विटी पद्धति का अनुसरण करने पर उद्भुत हुई होती। इस संबंध में समरूप समायोजन, समेकित वित्तीय विवरणों में प्रतिधारित उपार्जनों में किए जाने चाहिए।

लेखा मानक 24

बंद हो रहे प्रचालन

(इस लेखा मानक में कुछ मोटे तिरछे टाइप और कुछ सीधे टाइप में व्यवस्थित पैरा सम्मिलित है, जिनका समान प्राधिकार है। मोटे तिरछे टाइप में दिये गए पैरा मुख्य सिद्धांत उपदर्शित करते हैं। इस लेखा मानक को अधिसूचना के प्रति उपाबंध के भाग 'क' में अतंर्विष्ट साधारण अनुदेशों के संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिये।)

---

[37] लेखा मानक 4 के सभी पैरा, जो आकस्मिकताओं से संबंधित है, केवल उस सीमा तक लागू होते हैं, जहाँ तक वे केन्द्रीय सरकार द्वारा विहित लेखा मानकों के अन्तर्गत नहीं आते हैं, उदाहरण के लिए, वित्तीय आस्तियों के ह्रास, जैसे कि प्राप्य का ह्रास (सामान्यतः डूबंत और शंकास्पद ऋण के उपबन्ध रूप में ज्ञात है) लेखा मानक 4 द्वारा शासित होते हैं।

[38] पैरा 26 में दिए गए संक्रमणकालील उपबंध कंपनी (लेखा मानक) नियम, 2006 (जो समय के साथ संशोधित किये गए हैं) तथा कंपनी (लेखा मानक) नियम, 2021 के अन्तर्गत्त अधिसूचित लेखा मानकों लिए प्रासंगिक है ।

उद्देश्य

इस मानक का उद्देश्य बंद हो रहे प्रचालनों के बारे में जानकारी की रिपोर्टिंग के लिए सिद्धांत स्थापित करना, और इसके द्वारा जारी प्रचालनों की जानकारी से बंद हो रहे प्रचालनों की जानकारी को अलग करके, वित्तीय विवरणों के उपयोगकर्ताओं की, उद्यम की रोकड़ प्राप्तियों, उपार्जन-उत्पन्न करने की क्षमता और वित्तीय स्थिति के प्रक्षेपण करने की क्षमता को बढ़ाना है।

कार्यक्षेत्र

1. यह मानक किसी उद्यम के बंद हो रहे सभी प्रचालनों पर लागू होता है।

2. इस मानक में अंतर्विष्ट रोकड़ प्रवाह विवरण से सम्बंधित अपेक्षाएँ वहाँ लागू होती है जहाँ एक उद्यम रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार और प्रस्तुत करता है।

परिभाषाएँ

बन्द हो रहे प्रचालन

3. बंद हो रहे प्रचालन किसी उद्यम का एक घटक है:

(क) जिसे एकमात्र योजना के अनुसार उद्यम:

(i) अपने पूर्ण रूप में सारभूत रूप से जैसे कि एकल संव्यवहार में घटक का विक्रय करके या उद्यम के शेयर धारकों को घटक के स्वामित्व के विपरीत विलयन (डिमर्जर) या स्पिन ऑफ द्वारा व्ययित कर रहा हो; या

(ii) खंडों में जैसे कि घटक की आस्तियों को बेच कर और अलग-अलग रूप से इसके दायित्वों को व्यवस्थित करके व्ययनित कर रहा हो; या

(iii) परित्याग के माध्यम से समापन कर रहा हो।

(ख) जो कारबार की एक पृथक महत्वपूर्ण शृंखला या प्रचालनों के एक भौगोलिक क्षेत्र की प्रस्तुति करता हो; और

(ग) जो प्रचालनात्मक रूप से और वित्तीय प्रयोजनों के लिए अलगकिया जा सकता हो।

4. परिभाषा की कसौटी (क) के अंतर्गत [पैरा 3 (क)], एक बंद हो रहे प्रचालन को पूर्णतः या खंड में व्ययनित किया जा सकता है, किंतु यह हमेशा से पूर्ण घटक को बंद करने के लिए सम्पूर्ण योजना के अनुसार होता है।

5. यदि एक उद्यम अपनी पूर्णता में एक घटक का सारभूत रूप में विक्रय करता है, तो परिणाम शुद्ध लाभ या शुद्ध हानि हो सकता है। ऐसे बंद होने के लिए, एक विशिष्ट तारीख को एक आबद्धकर विक्रय संविदा होती है यद्यपि बंद हो रही गतिविधि के स्वामित्व और नियंत्रण का वास्तविक अंतरण बाद में घटित हो सकता है। विक्रेता को भुगतान भी, संविदा के समय, अंतरण के समय या बढ़ाई गई भावी अवधि पर घटित हो सकते हैं।

6. अपने पूर्ण रूप में एक घटक को सारभूत रूप से व्ययनित करने के बजाए, एक उद्यम अपनी आस्तियों का विक्रय करके और एक-एक करके अपने दायित्वों को व्यवस्थित करके (अलग-अलग रूप से या छोटे समूहों में), घटक को बंद कर सकता है और व्ययनित कर सकता है। खंड में व्ययनित करने के लिए, यद्यपि सम्पूर्ण परिणाम शुद्ध लाभ या शुद्ध हानि हो सकती है, फिर भी अलग-अलग आस्ति के विक्रय या दायित्व की व्यवस्था का प्रभाव विपरीत हो सकता है। इसके अतिरिक्त, ऐसी कोई विशिष्ट तारीख नहीं है जिसमें एक सम्पूर्ण बाध्यकर विक्रय संविदा में प्रवेश किया जाता है। बल्कि, आस्तियों की बिक्री और दायित्वों के निपटारे महीनों तक या शायद इससे भी अधिक पर घटित हो सकते हैं। अतः, घटक का व्ययन वित्तीय रिपोर्टिंग अवधि के अंत में भी प्रगतिशील हो सकता है। एक बंद हो रहे प्रचालन के अर्हित होने के लिए व्ययन एकल समन्वित योजना के अनुसरण में होना चाहिए ।

7. एक उद्यम आस्तियों के सारभूत विक्रय के बिना परित्याग द्वारा एक प्रचालन को समाप्त कर सकता है। एक परित्याग किया गया प्रचालन एक बंद हो रहा प्रचालन माना जा सकता है यदि यह परिभाषा की कसौटी पर खरा उतरता है। यद्यपि एक प्रचालन के कार्यक्षेत्र में परिवर्तन या उसे चलाने के तरीके में परिवर्तन परित्याग नहीं है क्योंकि यद्यपि प्रचालन बदला है किन्तु चल रहा है।

8. कारबार उद्यम, बाजार की शक्तियों की प्रतिक्रिया में प्रायः सुविधाओं को बंद करते है, उत्पादों या यहाँ तक कि उत्पाद रेखाओं का परित्याग करते हैं और अपनी कार्य शक्ति के आकार को बदलते हैं। जबकि सामान्यतः उस प्रकार के समापन अपने आप में बंद हो रहे प्रचालन नहीं है, जैसा कि यह मद इस मानक के पैरा 3 में परिभाषित है, वे बंद हो रहे प्रचालन के सम्बन्ध में घटित हो सकते हैं।

9. उन क्रियाकलापों, जो आवश्यक रूप से पैरा 3 की कसौटी (क) पर तो खरे नहीं उतरते, लेकिन जो अन्य परिस्थितियों के संयोजन में ऐसा कर सकते हैं, के उदाहरणों में सम्मिलित हैं:

(क) एक उत्पादक रेखा या सेवा के वर्ग का क्रमिक या विकासात्मक निष्कासन ;

(ख) यदि सापेक्षतः अकस्मात् हो तो भी, कारबार की अविरल पंक्ति में से कई उत्पादों को बंद करना ;

(ग) कारबार की एक विशिष्ट पंक्ति के कुछ उत्पादन या विपणन क्रियाकलापों का एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरण; और

(घ) उत्पादकता समृद्धि या अन्य लागत बचतों को प्राप्त करने के लिए सुविधा को बंद करना ।

समेकित वित्तीय विवरणों के सम्बंध में एक उदाहरण ऐसी समनुषंगी का विक्रय है जिसके क्रियाकलाप मूल या अन्य समनुषंगी के समान हैं।

10. जैसा कि लेखा मानक 17, खंड रिपोर्टिंग, में परिभाषित है, एकरिपोर्ट योग्य कारबारी खंड या भौगोलिक खंड, सामान्यतः बंद हो रहे प्रचालन की परिभाषा (पैरा 3) की कसौटी (ख) पर खरे उतरेंगे, अर्थात्, यह व्यापार की पृथक प्रमुख पंक्ति या प्रचालनों के भौगोलिक क्षेत्र को प्रस्तुत करेगा। ऐसे खंड का एक भाग भी परिभाषा की कसौटी (ख) को संतुष्ट कर सकता है। एक ऐसे उद्यम के लिए जो एकमात्र कारबार में या भौगोलिक खंड में कार्य करता है और इसीलिए खंड जानकारी को रिपोर्ट नहीं करता, एक प्रमुख उत्पाद या सेवा पंक्ति भी परिभाषा की कसौटी को संतुष्ट कर सकती है।

11. एक घटक को प्रचालनात्मक रूप से और वित्तीय रिपोर्टिंग के प्रयोजन के लिए सुभिन्न किया जा सकता है - बंद हो रहे प्रचालन की परिभाषा की कसौटी (ग) (पैरा 3) - यदि निम्नलिखित सभी शर्तें पूर्ण हो तो:

(क) घटक की प्रचालन आस्तियाँ और दायित्व इससे प्रत्यक्षतः जोड़े जा सकते हैं ;

(ख) इसका राजस्व इससे प्रत्यक्षतः जोड़ा जा सकता है ;

(ग) कम से कम इसके अधिकतर प्रचालन व्यय इससे प्रत्यक्षतः जोड़े जा सकते हैं।

12. आस्तियों, दायित्व, राजस्व और व्यय एक घटक से प्रत्यक्षतः जुड़े हुए माने जा सकते हैं यदि उनका निराकरण तब होगा जब घटक को बेचा जाता है, परित्यागा जाता है अथवा व्ययनित किया जाता है। यदि एक उधार एक घटक से जुड़ा होता है तो सम्बंधित ब्याज और अन्य वित्तीय लागतें भी इससे जुड़ी मानी जाती है।

13. जैसा कि इस मानक में परिभाषित है बंद हो रहे प्रचालन सापेक्षतः कभी-कभी घटित होने के लिए प्रत्याशित हैं। कभी-कभी घटित हो रही सभी घटनाएँ आवश्यक रूप से बंद हो रहे प्रचालन नहीं होते हैं। कभी-कभी घटित होने वाली सभी घटनाएँ जो, बंद हो रहें प्रचालनों के रूप में अर्हित नहीं होते, का परिणाम आय या व्यय की ऐसी मदों के रूप में निकल सकता है जिनके लिए लेखा मानक 5, *अवधि के लिए शुद्धलाभ या हानि, पूर्वावधि मदें और लेखा नीतियों में परिवर्तन*, के अनुसार पृथक प्रकटन की अपेक्षा होती है, क्योंकि उनका आकार, प्रकृति या प्रसंग उन्हें एक अवधि के लिए उद्यम की निष्पादनता को स्पष्ट करने के लिए उपयुक्त बना देता है।

14. यह तथ्य कि एक उद्यम के घटक का व्ययन इस मानक के अंतर्गत बंद हो रहे प्रचालन की तरह वर्गीकृत है, अपने आप में एक चलायमान समुत्थान के रूप में उद्यम के समनुरूप रहने की क्षमता को संदेह में नहीं लाता है।

प्रारम्भिक प्रकटन घटना

15. बंद हो के प्रचालनों के संदर्भ में, **प्रारम्भिक प्रकटन घटना** निम्नलिखित में से कोई एक घटना है, जो भी पहले घटित हो:

(क) उद्यम ने बंद हो रहे प्रचालनों के प्रति जुड़ने वाली सारभूत रूप से सभी आस्तियों के लिए एक आबद्धकर विक्रय संविदा की हो ; या

(ख) उद्यम के निदेशक बोर्ड या समान शासी निकाय ने: (i) बंद करने के लिए एक विस्तृत औपचारिक योजना का अनुमोदन और (ii) योजना की घोषणा दोनों ही कर दिये हों।

16. बंद करने के लिए एक विस्तृत औपचारिक योजना में प्रायः निम्नलिखित सम्मिलित होते हैं:

(क) व्ययनित की जाने वाली प्रमुख आस्तियों की पहचान ;

(ख) व्ययन का प्रत्याशित तरीका ;

(ग) व्ययन को पूर्ण करने के लिए आवश्यक प्रत्याशित अवधि ;

(घ) प्रभावित प्रमुख अवस्थान ;

(ङ) अवस्थान, कार्य और कर्मचारियों की अनुमानित संख्या जिन्हें उनकी सेवाओं की समाप्ति के लिए मुआवजा दिया जाएगा; और

(च) व्ययन द्वारा वसूल होने वाले अनुमानित आगम या कबाड़ माल।

17. यदि उद्यम को बंद करने के प्रति प्रदर्शनीय रूप से प्रतिबद्ध बनाने के लिए, पर्याप्त रूप से विशिष्ट तरीके में उन लोगों के प्रति योजना के मुख्य लक्षणों को घोषित करते हैं, जो इनके द्वारा प्रभावित होते हैं, जैसे कि ऋणदाता, शेयर बाजार, लेनदार, मजदूर संघ आदि, तो यह माना जाता है कि उद्यम के निदेशक बोर्ड या समान शासी निकाय ने बंद करने के लिए विस्तृत औपचारिक योजना की घोषणा कर दी है।

अभिज्ञान और मापन

18. एक उद्यम को यह निश्चित करने के लिए कि बंद हुए प्रचालनों से सम्बन्धित आस्तियों और दायित्वों में बदलावों और राजस्व, व्ययों, लाभों, हानियों और रोकड़ प्राप्तियों का कब और कैसे अभिज्ञान करें और उन्हें कब और कैसे मापें, अन्य लेखा मानकों में व्यक्त अभिज्ञान तथा मापन के सिद्धांतों को लागू करना चाहिए।

19. यह मानक अभिज्ञान और मापन के लिए किसी भी सिद्धांत को स्थापित नहीं करता है। इसके अतिरिक्त, यह आवश्यक है कि एक उद्यम अन्य लेखा मानकों जैसे कि लेखा मानक 4, आकस्मिकताएँ और तुलनपत्र की तारीख के पश्चात् होने वाली घटनाएँ[39] तथा लेखा मानक 28, आस्तियों के ह्रास , में स्थापित अभिज्ञान तथा मापन के सिद्धांतों का अनुसरण करे।

प्रस्तुतिकरण और प्रकटन

प्रारम्भिक प्रकटन

20. एक उद्यम को अवधि के लिए उन वित्तीय विवरणों से शुरूआत करते हुए, जिनमें प्रारम्भिक प्रकटन घटना (जैसा कि पैरा 15 में परिभाषित है) घटित होती है, अपने वित्तीय विवरणों में बंद हो रहे प्रचालनों से सम्बंधित निम्नलिखित जानकारी को सम्मिलित करना चाहिए:

(क) बंद हो रहे प्रचालनों का वर्णन ;

(ख) कारबार या भौगोलिक खंड (खंडों) जिनमें उसकी लेखा मानक 17, खंड रिपोर्टिंग, के अनुसार रिपोर्टिंग होती है ;

(ग) प्रारम्भिक प्रकटन घटना की तारीख और प्रकृति ;

(घ) वह तारीख या अवधि जिसमें उसके बंद होने के पूर्ण होने की प्रत्याशा है, यदि यह ज्ञात या अवधारणीय हो ;

(ङ) तुलन पत्र की तारीख को व्ययनित होने वाली कुल आस्तियों और निपटाने वाले कुल दायित्वों की कैरिंग रकमें ;

---

[39] लेखा मानक 4 के सभी पैरा, जो आकस्मिकताओं से संबंधित है, केवल उस सीमा तक लागू होते हैं, जहाँ तक वे केन्द्रीय सरकार द्वारा विहित लेखा मानकों के अन्तर्गत नहीं आते हैं, उदाहरण के लिए, वित्तीय आस्तियों के ह्रास, जैसे कि प्राप्य का ह्रास (सामान्यतः डूबंत और शंकास्पद ऋण के उपबन्ध रूप में ज्ञात है) लेखा मानक 4 द्वारा शासित होते हैं।

(च) चालू वित्तीय रिपोर्टिंग अवधि के दौरान बंद हो रहे प्रचालनों से सम्बंधित सामान्य क्रियाकलापों के संदर्भ में राजस्व और व्ययों की रकमें ;

(छ) चालू वित्तीय रिपोर्टिंग अवधि के दौरान बंद हो रहे प्रचालनों से सामान्य क्रियाकलापों से पूर्व-कर लाभ या हानि की रकम और उनसे सम्बंधित आय कर व्यय[40]; और

(ज) चालू वित्तीय रिपोर्टिंग अवधि के दौरान बंद हो रहे प्रचालनों के प्रचालन, विनिधान और वित्तीय क्रियाकलापों से सम्बंधित शुद्ध रोकड़ प्रवाहों की रकमें।

21. इस मानक द्वारा अपेक्षित प्रस्तुतिकरण और प्रकटन के लिए, आस्तियों, दायित्वों, राजस्वों, व्ययों, लाभों, हानियों और रोकड़ प्रवाहों की मदों को बंद हो रहे प्रचालनों से केवल तभी जुड़ा माना जा सकता है यदि वे बंद होने के पूर्ण होने पर व्ययित, निपटायी, घटायी या खत्म की जायें। बंद होने के पूर्ण होने के बाद ऐसी मदों के जारी रहने पर, वे बंद हो रहे प्रचालन के प्रति आबंटित नहीं होते, उदाहरण के लिए, बंद हो रहे प्रचालन के जारी रहने वाली कर्मचारीवृन्द का वेतन ।

22. यदि प्रारम्भिक प्रकटन घटना तुलन पत्र की तारीख और उस तारीख के बीच में घटित होती है जिस तारीख पर कम्पनी की स्थिति में उस अवधि के लिए वित्तीय विवरण निदेशक बोर्ड द्वारा या किसी अन्य उद्यम की स्थिति में समरूप अनुमोदन प्राधिकारी द्वारा अनुमोदित होते हैं, तो लेखा मानक 4, आकस्मिकताएँ और तुलन पत्र की तारीख के पश्चात् होने वाली घटनाएँ, द्वारा अपेक्षित प्रकटन किए जाते है।

अन्य प्रकटन

23. जब एक उद्यम बंद हो रहे प्रचालनों से जुड़ी माने जाने योग्य आस्तियों को व्ययनित करता है या दायित्वों का निपटारा करता है या ऐसी आस्तियों के व्ययन के लिए या ऐसे दायित्वों के निपटारे के लिए आबद्धकर करार में प्रवेश करता है, तो इसे अपने वित्तीय विवरणों में उस समय निम्नलिखित जानकारी को सम्मिलित करना चाहिए, जब घटनाएँ घटित होती हैं:

(क) बंद हो रहे प्रचालनों से सम्बंधित आस्तियों के व्ययन या दायित्वों के निपटारे पर अभिज्ञात किसी भी लाभ या हानि के लिए (i) कर-पूर्व लाभ या हानि की रकम और (ii) लाभ या हानि से सम्बंधित आय कर व्यय ; और

(ख) उन शुद्ध आस्तियों की शुद्ध बिक्री कीमत या कीमतों की श्रेणी (जो प्रत्याशित व्ययन की कीमतों को घटाने के बाद है) जिसके लिए उद्यम ने एक या अधिक आबद्धकर विक्रय संविदाएँ किए हैं, उन रोकड़ प्रवाहों की प्राप्ति का प्रत्याशित समय और तुलनपत्र की तारीख पर उन शुद्ध आस्तियों की कैरिंग रकम ।

24. पिछले पैरा में विनिर्दिष्ट आस्तियों का व्ययन दायित्वों के निपटारे और आबद्धकर विक्रय करार, प्रारम्भिक प्रकटन घटना के साथ या उस अवधि में जिसमें प्रारम्भिक घटना घटित हो या उसके बाद की अवधि में हो सकते हैं।

25. यदि बंद हो रहे प्रचालन से सम्बंधित कुछ आस्तियाँ वास्तव में बेची जा चुकी हों या तुलनपत्र की तारीख और उस तारीख के बीच, जब कम्पनी के मामले में वित्तीय विवरण निदेशक बोर्ड या किसी अन्य उद्यम की स्थिति में समरूप अनुमोदन प्राधिकारी द्वारा अनुमोदित होती है, हुए एक या अधिक आबद्धकर विक्रय करार के अधीन है, तो लेखा मानक 4, द्वारा अपेक्षित प्रकटन किए जाते हैं।

प्रकटनों का अद्यतन

26. उस अवधि की पश्चात्वर्ती अवधि के लिए जिसमें प्रारम्भिक प्रकटन घटना घटित होती है, उद्यम को अपने वित्तीय विवरणों में, पैरा 20 और 23 में प्रकटनों के अतिरिक्त, व्ययनित की जाने वाली आस्तियों या निपटाने वाले दायित्वों से सम्बंधित रोकड़ प्रवाहों की रकम या उस समय में आए किसी भी महत्वपूर्ण परिवर्तनों और उन परिवर्तनों को उत्पन्न कर रही घटनाओं का वर्णन भी सम्मिलित होना चाहिए।

---

[40] जैसा कि लेखा मानक 22, आय पर करों के लिए लेखा, में परिभाषित है।

27. उन घटनाओं और क्रिया कलापों के उदाहरणों में, जो प्रकट किए जाएगें, आस्तियों के लिए आबद्धकर विक्रय करार की प्रकृति और निबंधन, एक विपरीत विलयन (डिमर्जर) या स्पिन ऑफ के लिए उद्यमों के शेयर धारकों के प्रति नयी कम्पनी के साधारण शेयरों को जारी करते हुए और कानूनी या विनियामक अनुमोदन सम्मिलित हैं।

28. पैरा 20, 23 और 26 द्वारा अपेक्षित प्रकटन, उस अवधि तक और उस अवधि को सम्मिलित करते हुए जिनमें बंद होना पूर्ण होता है, वित्तीय विवरणों में जारी रहने चाहिए। बंद होना तब पूर्ण होता है जब योजना सारभूत रूप से पूरी हो गयी हो या परित्याग दी गयी हो, यद्यपि ऐसा हो सकता है कि खरीददार (खरीददारों) से पूर्ण भुगतान प्राप्त न हुए हों।

29. यदि एक उद्यम ऐसी योजना का परित्याग करता है या उसे वापस ले लेता है जो पहले एक बंद हो रहे प्रचालन के रूप में रिपोर्ट की गयी थी तो, यह तथ्य, इसके कारण और इसके प्रभाव के साथ प्रकट किया जाना चाहिए।

30. पैरा 29 को लागू करने के लिए, प्रभाव के प्रकटन में, किसी पूर्वह्रास हानि(देखें लेखा मानक 28, *आस्तियों का ह्रास*) का उलटाव या ऐसी उपबंधित रकम जो बंद हो रहे प्रचालनों के संदर्भ में अभिज्ञात हो, का प्रकटन भी सम्मिलित होता है।

बंद हो रहे प्रत्येक प्रचालन के लिए पृथक प्रकटन

31. इस मानक द्वारा अपेक्षित किसी भी प्रकटन को बंद हो रहे प्रत्येक प्रचालन के लिए पृथक रूप से प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

आवश्यक प्रकटन का प्रस्तुतिकरण

32. पैरा 20, 23, 26, 28, 29 और 31 द्वारा अपेक्षित प्रकटनों को, वित्तीय विवरणों के प्रति टिप्पणों में, निम्नलिखित को छोड़कर,प्रस्तुत किया जाना चाहिए, जिन्हें लाभ और हानि के विवरण मुखपर दर्शाया जाना चाहिए:

(क) चालू वित्तीय रिपोर्टिंग अवधि के दौरान बंद हो रहे प्रचालनों से सम्बंधित सामान्य क्रियाकलापों से कर-पूर्व लाभ या हानि की रकम, और उनसे सम्बंधित, आय कर व्यय [पैरा 20(छ)] ; और

(ख) बंद हो रहे प्रचालन से सम्बंधित आस्तियों के व्ययन या दायित्वों के निपटान पर अभिज्ञात पूर्व कर लाभ या हानि की रकम (पा[रा 23(क)]।

दृष्टांतस्वरूप प्रस्तुतिकरण और प्रकटन

33. मानक से सलंग्न दृष्टांत 1, इस मानक द्वारा अपेक्षित प्रस्तुतिकरण और प्रकटन का दृष्टांत देता है।

पूर्व अवधियों का पुर्नकथन

34. प्रारम्भिक प्रकटन घटना के पश्चात् तैयार वित्तीय विवरणों में प्रस्तुत पूर्व अवधियों के लिए तुलनात्मक जानकारी पैरा 20, 23, 26,28, 29, 31 और 32 द्वारा अपेक्षित तरीकों से पृथक आस्तियों, दायित्वों, राजस्व, व्ययों और रोकड़ प्रवाहों के जारी तथा बंद हो रहे प्रचालनों के सम्बंध में अलग करने के लिए पुनः कथित की जानी चाहिए।

35. मानक से सलंग्न दृष्टांत 2 पैरा 34 के लागू करने का दृष्टांत देता है।

अंतरिम वित्तीय रिपोर्टों में प्रकटन

36. बंद हो रहे प्रचालन के संदर्भ में एक अंतरिम वित्तीय रिपोर्ट में प्रकटन लेखा मानक 25, अंतरिम वित्तीय रिपोर्टिंग के अनुसार, निम्नलिखित को सम्मिलित करते हुए किया जाना चाहिए:

(क) बंद हो रहे प्रचालन से सम्बंधित हाल ही की वार्षिक रिपोर्टिंग की अवधि के अंत से कोई महत्वपूर्ण क्रियाकलाप घटना ; और

(ख) व्ययन किये जाने वाली आस्तियों या निपटाने वाले दायित्वों से सम्बंधित रोकड़ प्रवाहों की रकमों या उसके समय में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन।

दृष्टांत 1

दृष्टांतस्वरूप प्रकटन

यह दृष्टांत लेखा मानक का भाग नहीं है। इसका उद्देश्य लेखा मानक केअर्थ के स्पष्टीकरण में सहायता करने के लिए, इसके लागू करने कोस्पष्ट करना है।

तथ्य

- डेल्टा कम्पनी के तीन खंड है, खाद्य विभाग, पेय विभाग और वस्त्र विभाग।
- वस्त्र विभाग, कम्पनी की दीर्घकालिक नीति के साथ असंगत समझा जाता है। इसलिए, प्रबंधन ने वस्त्र विभाग के व्ययन का निर्णय लिया है।
- 15 नवम्बर 20X1 को, डेल्टा कम्पनी के निदेशक बोर्ड ने वस्त्र विभाग के व्ययन के लिए एक विस्तृत, औपचारिक योजना का अनुमोदन और घोषणा की। उस तारीख पर वस्त्र विभाग की शुद्ध आस्तियों की कैरिंग रकम 90 लाख रु. थी (105 लाख रु. की आस्तियों में से 15 लाख रु. के दायित्वों को घटाकर)।
- 105 लाख रु. पर ले जायी गयी आस्तियों की वसूली योग्य रकम 85 लाख रु. प्राक्कलित की गयी और कम्पनी ने निष्कर्ष निकाला कि 20 लाख रु. की पूर्व-कर ह्रास हानि अभिज्ञात होनी चाहिए।
- 31 दिसम्बर 20X1 पर, वस्त्र विभाग की शुद्ध आस्तियों की कैरिंग रकम 70 लाख रु. थी (85 लाख रु. की आस्तियों में से 15 लाखरु. के दायित्वों को घटाकर)। जब वित्तीय विवरण तैयार किए गएतो 15 नवम्बर 20X1 और 31 दिसम्बर 20X1 के बीच आस्तियों में और कोई ह्रास नहीं था।
- 30 सितम्बर 20X2 पर, वस्त्र विभाग की शुद्ध आस्तियों की कैरिंग रकम 70 लाख रु. थी। उस दिन, डेल्टा कम्पनी ने वस्त्र विभाग को बेचने के लिए एक विधिक रूप से बाध्य संविदा पर हस्ताक्षर किए।
- बिक्री के 31 जनवरी 20X3 तक समाप्त होने की प्रत्याशा की गयी है। शुद्ध आस्तियों की वसूल योग्य रकम 60 लाख रु. है। इस रकम के आधार पर 10 लाख रु. की अतिरिक्त ह्रास हानि अभिज्ञात की गयी।
- इसके अतिरिक्त, 31 जनवरी 20X3 से पहले बिक्री संविदा डेल्टा कम्पनी को, वस्त्र विभाग के कुछ कर्मचारियों के रोजगार को समाप्त करने को बाध्य करता है, जिसका परिणाम 30 जून 20X3 तक संदेय, 30 लाख रु. की समाप्ति लागत में निकालेगा। इस संदर्भ में दायित्व और सम्बंधित व्यय भी अभिज्ञात किये गये है।
- कम्पनी पूरे 20X2 में वस्त्र विभाग का प्रचालन करती रही।
- 80 लाख रु. की आस्तियों में से 35 लाख रु. के दायित्वों को घटाकर आई रकम समेत, 31 दिसम्बर 20X2 पर, वस्त्र विभाग की शुद्ध आस्तियों की कैरिंग रकम 45 लाख रु. है (30 लाख रु. की प्रत्याशित समाप्ति लागत के लिए उपबन्ध सहित)।
- डेल्टा कम्पनी 31 दिसम्बर को वार्षिक रूप से अपने वित्तीय विवरण तैयार करती है। यह रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार नहीं करती है।
- निम्नलिखित वित्तीय विवरणों में अन्य सख्याएँ, मानक द्वारा अपेक्षित प्रस्तुतिकरण और प्रकटन को स्पष्ट करती मानी जाती है।

I. 20X1 के लिए वित्तीय विवरण

1.1. 20X1 के लिए लाभ तथा हानि का विवरण

वर्ष 20X1 के लिए डेल्टा कम्पनी का लाभ तथा हानि का विवरण निम्नलिखित प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है:

(रकम लाख रु. में)

	20X1	20X0
आवर्त	140	150
प्रचालन व्यय	(92)	(105)
ह्रास हानि	*(20)*	*(-)*
प्रचालन क्रियाकलापों से पूर्व-कर लाभ	28	45
ब्याज व्यय	*(15)*	*(20)*
कर से पहले लाभ	*13*	*25*
कर से पहले जारी प्रचालनों से लाभ (टिप्पण 5 देखें)	*15*	*12*
आयकर व्यय	*(7)*	*(6)*
कर के बाद जारी प्रचालनों से लाभ	8	6
कर पूर्व बंद हो रहे प्रचालनों से लाभ (हानि) (टिप्पण 5 देखें)	*(2)*	*13*
आयकर व्यय	*1*	*(7)*
कर के बाद बंद हो रहे प्रचालनों से लाभ (हानि)	*(1)*	*6*
कर के बाद प्रचालन क्रियाकलापों से लाभ	**7**	**12**

IndiaCode

1.2. 20X1 के लिए वित्तीय विवरणों के प्रति टिप्पण

निम्नलिखित डेल्टा कम्पनी के वित्तीय विवरणों के प्रति, टिप्पण 5 है:

15 नवम्बर 20X1 को, कम्पनी के निदेशक बोर्ड ने वस्त्र विभाग को व्ययनित करने के लिए एक योजना की घोषणा की है, जो लेखा मानक 17, **खंड रिपोर्टिंग**, के अनुसार एक पृथक खंड भी है। यह व्ययन खाद्य, और पेय के उत्पादन और वितरण के क्षेत्र में क्रियाकलापों को केंद्रित करने के लिए और असम्बंधित क्रियाकलापों को छोड़ने के लिए, कम्पनी की दीर्घकालिक नीति के साथ संगत है। कम्पनी, वस्त्र विभाग के लिए सक्रिय रूप से खरीददार ढूँढ रही है और वह 20X2 के अंत तक बिक्री के पूर्ण होने की प्रत्याशा करती है। 31 दिसम्बर 20X1 पर, वस्त्र विभाग की आस्तियों की कैरिंग रकम 85 लाख रु. थी (पिछले वर्ष 120 लाख रु.) और इसके दायित्व 15 लाख रु. थे (पिछले वर्ष 20 लाख रु.)। निम्नलिखित विवरण जारी और बंद हो रहे प्रचालन के राजस्व और व्यय को दर्शाता है:

(लाख रु. में मात्रा)

	जारी प्रचालन *(खाद्य तथा पेय विभाग)*		बंद हो रहे प्रचालन *(वस्त्र विभाग)*		कुल	
	20X1	20X0	20X1	20X0	20X1	20X0
आवर्त	90	80	50	70	140	150
प्रचालन व्यय	(65)	(60)	(27)	(45)	(92)	(105)
ह्रास हानि	*(-)*	*(-)*	*(20)*	*(-)*	*(20)*	*(-)*
प्रचालन क्रियाकलापों से कर पूर्व लाभ	25	20	3	25	28	45
ब्याज व्यय	*(10)*	*(8)*	*(5)*	*(12)*	*(15)*	*(20)*
कर से पूर्व लाभ (हानि)	15	12	(2)	13	13	25
आयकर व्यय	*(7)*	*(6)*	*1*	*(7)*	*(6)*	*(13)*
कर के पश्चात् प्रचालन क्रियाकलापों से लाभ (हानि)	8	6	(1)	6	7	12

IndiaCode

2. 20X2 के लिए वित्तीय विवरण

2.1 20X2 के लिए लाभ तथा हानि का विवरण

वर्ष 20X2 के लिए डेल्टा कम्पनी के लाभ तथा हानि का विवरण निम्नलिखित रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है:

(रकम लाख रु. में)

	20X2	20X1
आवर्त	140	140
प्रचालन व्यय	(90)	(92)
ह्रास हानि	(10)	(20)
कर्मचारी सेवा-समाप्ति प्रसुविधाओं के लिए उपबन्ध	*(30)*	-
प्रचालन क्रियाकलापों से पूर्व-कर लाभ	**10**	**28**
ब्याज व्यय	*(25)*	*(15)*
कर से पूर्व लाभ (हानि)	*(15)*	*13*
कर से पूर्व जारी प्रचालनों से लाभ (टिप्पण 5 देखें)	20	15
आयकर व्यय	*(6)*	*(7)*

(रकम लाख रु. में)

	20X2	20X1
कर के बाद जारी		
प्रचालनों से लाभ	14	8
कर से पूर्व बंद हो रहे		
प्रचालनों से हानि (टिप्पण 5 देखें)	(35)	(2)
आयकर व्यय	10	1
कर के बाद बंद हो रहे प्रचालनों		
से हानि	*(25)*	*(1)*
कर के बाद प्रचालन क्रियाकलापों		
से लाभ (हानि)	***(11)***	7

IndiaCode

2.2. 20X2 के लिए वित्तीय विवरणों के प्रति टिप्पण

डेल्टा कम्पनी के वित्तीय विवरणों के प्रति निम्नलिखित टिप्पण 5 हैः

15 नवम्बर 20X1 को, निदेशक बोर्ड ने कम्पनी के वस्त्र विभाग को व्ययनित करने के लिए एक योजना की घोषणा की, जो लेखा मानक 17, खंड रिपोर्टिंग, के अनुसार एक पृथक खंड भी है। व्ययन, खाद्य और पेय के उत्पादन तथा वितरण के क्षेत्र में इसके (कम्पनी के) क्रियाकलापों को केन्द्रित करने के लिए और असम्बंधित क्रियाकलापों को छोड़ने के लिए कम्पनी की दीर्घकालिक नीति के साथ सुसंगत है। 30 सितम्बर 20X2 को कम्पनी ने 60 लाख रु. के लिए ज़ेड कार्पोरेशन को वस्त्र विभाग बेचने के लिए एक संविदा पर हस्ताक्षर किए हैं।

वस्त्र विभाग की आस्तियाँ अपनी वसूली योग्य रकम के प्रति, 3 लाख रु. की आयकर बचत (पिछले वर्ष 6 लाख रु.) से पहले 10 लाख रु. (पिछले वर्ष 20 लाख रु.) तक अवलिखित हुई है।

कम्पनी ने, वस्त्र विभाग के उन कुछ कर्मचारियों के लिए, जिनके रोजगार बिक्री के परिणामस्वरूप समाप्त कर दिए जाएंगे, 30 जून 20X3 तक संदेय 9 लाख रु. की आय कर से पूर्व बचत (पिछले वर्ष शून्य) के पहले 30 लाख रु. के सेवा समाप्ति प्रसुविधाओं (पूर्ववर्ती वर्ष शून्य) के लिए उपबन्ध को अभिज्ञात किया है।

31 दिसम्बर 20X2 पर, 30 लाख रु. की प्रत्याशित सेवा समाप्ति लागत (पिछले वर्ष शून्य) के लिए उपबन्ध समेत, वस्त्र विभाग की आस्तियों की कैरिंग रकम 80 लाख रु. थी (पिछले वर्ष 85 लाख रु.) और इसके दायित्व 35 लाख रु. थे (पिछले वर्ष 15 लाख रु.)। वस्त्र विभाग को बेचने की प्रक्रिया संभवतः 31 जनवरी 20X3 तक पूर्ण हो जाएगी।

निम्नलिखित विवरण, जारी और बंद हो रहे प्रचालनों के राजस्व तथा व्ययों को दर्शाता हैः

(राशि लाख रु. में)

	जारी प्रचालन *(खाद्य तथा पेय विभाग)*		बंद हो रहे प्रचालन *(वस्त्र विभाग)*		कुल	
	20X2	20X1	20X2	20X1	20X2	20X1
आवर्त	100	90	40	50	140	140
प्रचालन व्यय	(60)	(65)	(30)	(27)	(90)	(92)
ह्रास हानि	-	-	(10)	(20)	(10)	(20)
कर्मचारी सेवा समाप्ति	-	-	*(30)*	-	*(30)*	-

के लिए उपबन्ध						
प्रचालन क्रियाकलापों से						
कर पूर्व लाभ (हानि)	40	25	(30)	3	10	28
ब्याज व्यय	*(20)*	*(10)*	*(5)*	*(5)*	*(25)*	*(15)*
कर पूर्व लाभ (हानि)	20	15	(35)	(2)	(15)	13
आयकर व्यय	*(6)*	*(7)*	*10*	*1*	*4*	*(6)*
कर के बाद प्रचालन						
क्रियाकलापों से लाभ (हानि)	14	8	(25)	(1)	(11)	7

III 20X3 के लिए वित्तीय विवरण

20X3 के लिए वित्तीय विवरण, बंद होने की समाप्ति के तथ्य समेत 20X2 की तरह ही बंद हो रहे प्रचालनों से सम्बंधित जानकारी को प्रकट करेंगे।

दृष्टांत 2

पूर्वावधि प्रचालनों का वर्गीकरण

यह दृष्टांत लेखा मानक का हिस्सा नहीं है। इसका प्रयोजन लेखा मानक के अर्थ के स्पष्टीकरण में सहायता करने के लिए, इसकी प्रयोज्यता को स्पष्ट करना है।

तथ्य

1. पैरा 34 द्वारा यह अपेक्षित है कि पूर्व अवधियों के लिए ऐसी तुलनात्मक जानकारी जिन्हें प्रारम्भिक प्रकटन घटना के बाद तैयार वित्तीय विवरणों में प्रस्तुत किया गया है को पैरा 20, 23, 26, 28, 29, 31 और 32 द्वारा अपेक्षित तरीकों के अनुसार जारी और बंद हो रहे प्रचालनों की आस्तियों, दायित्वों, राजस्व, व्ययों और रोकड़ प्रवाहों के पृथक करने के लिए पुनर्कथित किया जाए।

2. निम्नलिखित तथ्यों पर ध्यान दें:

(क) प्रचालन क, ख, ग और घ सभी वर्ष 1 और 2 में जारी थे।

(ख) प्रचालन घ वर्ष 3 में व्ययन के लिए अनुमोदित और घोषित किया गया किंतु इसे वास्तविक रूप में वर्ष 4 में व्ययनित किया गया।

(ग) प्रचालन ख वर्ष 4 में बंद किया गया है (व्ययन के लिए अनुमोदित और घोषित और वास्तव में व्ययनित किया गया) और प्रचालन ङ अर्जित किया गया और

(घ) प्रचालन च वर्ष 5 में अर्जित किया गया ।

3. निम्नलिखित तालिका वर्ष 3 से लेकर वर्ष 5 में जारी और बंद हो रहे प्रचालनों के वर्गीकरण का दृष्टांत देती है:

वर्ष 3 के लिए वित्तीय विवरण (वर्ष 4 की शुरुआत में अनुमोदित तथा प्रकाशित)			
वर्ष 2 तुलनाएँ		वर्ष 3	
जारी	बंद हो रहे	जारी	बंद हो रहे
क		क	
ख		ख	
ग		ग	
	घ		घ

वर्ष 4 के लिए वित्तीय विवरण (वर्ष 5 की शुरुआत में अनुमोदित तथा प्रकाशित)			
वर्ष 3 तुलनाएँ		वर्ष 4	
जारी	बंद हो रहे	जारी	बंद हो रहे
क		क	
	ख		ख
ग		ग	
	घ		घ
		ङ	

वर्ष 5 के लिए वित्तीय विवरण (वर्ष 6 की शुरूआत में अनुमोदित तथा प्रकाशित)			
वर्ष 4 तुलनाएँ		वर्ष 5	
जारी	बंद हो रहे	जारी	बंद हो रहे
क		क	
	ख		
ग		ग	
	घ		
ङ		ङ	
		च	

4. यदि किसी भी कारणवश, पाँच वर्षीय तुलनात्मक वित्तीय विवरण वर्ष 5 में तैयार किए गए थे, तो जारी तथा बंद हो रहे प्रचालनों का वर्गीकरण इस प्रकार होगा:

वर्ष 5 के लिए वित्तीय विवरण									
वर्ष 1 तुलनाएँ		वर्ष 2 तुलनाएँ		वर्ष 3 तुलनाएँ		वर्ष 4 तुलनाएँ		वर्ष 5	
जारी	बंद हो रहे	जारी	बंद हो रहे	जारी	बंद हो रहे	जारी	बंद हो रहे	जारी	बंद हो रहे
क		क		क		क		क	
	ख		ख		ख		ख		
ग		ग		ग		ग		ग	
	घ		घ		घ		घ		
						ङ		ङ	
								च	

IndiaCode

लेखा मानक 25

अंतरिम वित्तीय रिपोर्टिंग

(इस लेखा मानक में कुछ मोटे तिरछे टाइप और कुछ सीधे टाइप में व्यवस्थित पैरा सम्मिलित है, जिनका समान प्राधिकार है। मोटे तिरछे टाइप में दिये गए पैरा मुख्य सिद्धांत उपदर्शित करते हैं। इस लेखा मानक को अधिसूचना के प्रति उपाबंध के भाग क में अतंर्विष्ट साधारण अनुदेशों के संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिये।)

उद्देश्य

इस मानक का उद्देश्य एक अंतरिम वित्तीय रिपोर्ट की न्यूनतम विषय-वस्तु को निर्धारित करना है और अंतरिम अवधि के लिए पूर्ण या संघनित वित्तीय विवरणों में अभिज्ञान और मापन के लिए सिद्धांत निर्धारित करना है। यथासमय और विश्वसनीय अंतरिम वित्तीय रिपोर्टिंग, उद्यम के उपार्जन और रोकड़ प्रवाहों को उत्पन्न करने की क्षमता, इसकी वित्तीय स्थिति और तरलता को समझने की विनिधानकर्ताओं, लेनदारों और अन्यों की क्षमता को बढ़ाती है।

कार्यक्षेत्र

1. यह मानक ऐसा आदेश नहीं देता कि अंतरिम वित्तीय रिपोर्टों को प्रस्तुत करना किन उद्यमों के लिए अपेक्षित होना चाहिए, कितनी बार या अंतरिम अवधि के अंत के बाद कितनी जल्दी अंतरिम वित्तीय रिपोर्ट प्रस्तुत करनी चाहिए। यदि किसी उद्यम द्वारा अंतरिम वित्तीय रिपोर्टिंग तैयार करना या प्रस्तुत करना अपेक्षित है या कोई उद्यम ऐसा करने का चयन करता है, तो उसे इस मानक का अनुपालन करना चाहिए।

2. किसी उद्यम को शासित करने वाले परिनियम या विनियामक द्वारा एक उद्यम के लिए अंतरिम तारीख पर अमुक जानकारी तैयार करना तथा प्रस्तुत करना अपेक्षित हो सकता है जो इस मानक द्वारा अपेक्षित प्ररूप और/या विषय वस्तु में भिन्न हो सकती है। ऐसी दशा में, इस मानक में यथा अधिकथित अभिज्ञान और मापन सिद्धांत, ऐसी जानकारी के संदर्भ में तब तक लागू होते हैं जब तक कि परिनियम में या विनियामक द्वारा अन्यथा विनिर्दिष्ट न हो।

3. इस मानक में अंर्तविष्ट, पूर्ण या संघनित रोकड़ प्रवाह विवरण से सम्बंधित अपेक्षाएँ वहाँ लागू होती हैं जहाँ एक उद्यम अपनी वार्षिक वित्तीय रिपोर्ट के लिए रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार तथा प्रस्तुत करता है।

परिभाषाएँ

4. इस मानक में निम्नलिखित शब्द विनिर्दिष्ट अर्थों के साथ प्रयुक्त हुए हैं:

4.1 अंतरिम अवधि एक वित्तीय रिपोर्टिंग अवधि है जो एक पूर्ण वित्तीय वर्ष से छोटी होती है।

4.2 अंतरिम वित्तीय रिपोर्ट से एक ऐसी वित्तीय रिपोर्ट अभिप्रेत है जिसमें अंतरिम अवधि के लिए या तो वित्तीय विवरणों का पूर्ण सैट, या फिर संघनित वित्तीय विवरणों का सैट (जैसा कि इस मानक में वर्णित है) सम्मिलित होता है।

5. किसी उद्यम के प्रचालन के पहले वर्ष के दौरान, इसकी वार्षिक वित्तीय रिपोर्टिंग अवधि, एक वित्तीय वर्ष से छोटी हो सकती है। ऐसी दशा में, उस छोटी अवधि को एक अंतरिम अवधि के रूप नहीं माना जाता है।

अंतरिम वित्तीय रिपोर्ट की विषय-वस्तु

6. वित्तीय विवरणों के पूर्ण सैट में सामान्यतः निम्नलिखित सम्मिलित होते हैं:

(क) तुलनपत्र ;

(ख) लाभ और हानि का विवरण ;

(ग) रोकड़ प्रवाह विवरण; और

(घ) लेखा नीतियों से संबंधित टिप्पण सहित अन्य टिप्पण और अन्य विवरण व स्पष्टीकारक सामग्री जो वित्तीय विवरणों का अभिन्न भाग है।

7. समयबद्धता तथा लागत विचारों के हित में तथा पहले रिपोर्ट की गई जानकारी की पुनरावृत्ति से बचने के लिए, एक उद्यम के लिए अपने वार्षिक वित्तीय विवरणों की तुलना में, अंतरिम तारीखों पर कम जानकारी प्रस्तुत करना अपेक्षित हो सकता है या वह ऐसा करने का चयन कर सकता है। प्रस्तुतिकरण की समयबद्धता का लाभ, आंशिक तौर पर

उपलब्ध जानकारी के वर्णन में कमी द्वारा प्रतिकार किया जा सकता है। इसलिए यह मानक ऐसी अंतरिम वित्तीय रिपोर्ट को तैयार करने अथवा प्रस्तुत करने की अपेक्षा करता है, जिसमें न्यूनतम तौर पर संघनित वित्तीय विवरणों का सैट सम्मिलित होता है। संघनित वित्तीय विवरणों को सम्मिलित करते हुए अंतरिम वित्तीय रिपोर्ट का प्रयोजन, नवीनतम वार्षिक वित्तीय विवरणों पर अद्यतन प्रदान करना है। तद्नुसार, यह नए क्रियाकलापों, घटनाओं और परिस्थितियों पर ध्यान केन्द्रित करता है और पहले रिपोर्ट की गई जानकारी को नहीं दोहराता।

8. यह मानक एक उद्यम को इसकी अंतरिम वित्तीय रिपोर्ट में, संघनित वित्तीय विवरणों के सैट की बजाए वित्तीय विवरणों के पूर्ण सैट को प्रस्तुत करने से प्रतिषिद्ध या निरूत्साहित नहीं करता है। यह मानक एक उद्यम को संघनित अंतरिम वित्तीय विवरणों में, न्यूनतम रेखा मदों से अधिक मदों या चयनित स्पष्टीकारक टिप्पणों जो कि इस मानक में उपवर्णित हैं, को शामिल करने से प्रतिबिद्ध या निरूत्साहित नहीं करता। इस मानक में व्यक्त अभिज्ञान तथा मापन सिद्धांत, अंतरिम अवधि के लिए पूर्ण वित्तीय विवरणों पर भी लागू होते हैं और ऐसे विवरणों में, इस मानक द्वारा अपेक्षित सभी प्रकटन (विशिष्टतः पैरा 16 में चयनित प्रकटन) और साथ ही साथ अन्य लेखा मानकों द्वारा आवश्यक सभी प्रकटन भी सम्मिलित होंगे।

अंतरिम वित्तीय रिपोर्ट के न्यूनतम घटक

9. एक अंतरिम वित्तीय रिपोर्ट में कम से कम, निम्नलिखित घटक सम्मिलित होने चाहिए:

(क) *संघनित तुलनपत्र;*

(ख) *लाभ तथा हानि का संघनित विवरण ;*

(ग) *संघनित रोकड़ प्रवाह विवरण ; और*

(घ) *चयनित स्पष्टीकारक टिप्पण।*

अंतरिम वित्तीय विवरणों का प्ररूप और विषय-वस्तु

10. यदि कोई उद्यम अपनी अंतरिम वित्तीय रिपोर्ट में वित्तीय विवरणों का पूर्ण सैट तैयार और प्रस्तुत करता है, तो उन विवरणों का प्ररूप तथा उनकी विषय-वस्तु, वित्तीय विवरणों के वार्षिक पूर्ण सैट के प्रति प्रयोज्य अपेक्षाओं के अनुरूप होनी चाहिए।

11. यदि एक उद्यम, अपनी अंतरिम वित्तीय रिपोर्ट में संघनित वित्तीय विवरणों के सैट को तैयार तथा प्रस्तुत करता है, तो उन संघनित विवरणों में कम से कम, उन प्रत्येक शीर्षों और उप-शीर्षों जो इसके नवीनतम वार्षिक वित्तीय विवरणों में सम्मिलित थे तथा इस मानक द्वारा अपेक्षित चयनित स्पष्टीकारक टिप्पणों को सम्मिलित करना चाहिए। अतिरिक्त रेखा मदों या टिप्पणों को संघनित अंतरिम वित्तीय विवरणों में सम्मिलित करना चाहिए यदि उनको छोड़ना संघनित अंतरिम वित्तीय विवरणों को भ्रामक बनाता है।

12. यदि कोई उद्यम लेखा मानक 20, प्रति शेयर उपार्जन, के अनुसार अपने वार्षिक वित्तीय विवरणों में मूल और अविमिश्रित अर्जन प्रतिशेयर को प्रस्तुत करता है, तो मूल और अविमिश्रित अर्जन प्रतिशेयर को, अंतरिम अवधि के लिए, पूर्ण या संघनित, लाभ और हानि के विवरण के मुख पर लेखा मानक 20 के अनुसार प्रस्तुत करना चाहिए।

13. यदि किसी उद्यम की वार्षिक वित्तीय रिपोर्ट में मूल उद्यम के पृथक वित्तीय विवरणों के अतिरिक्त समेकित वित्तीय विवरण सम्मिलित होते हैं, तो अंतरिम वित्तीय रिपोर्ट में समेकित वित्तीय विवरण तथा पृथक वित्तीय विवरण पूर्ण या संघनित दोनों को सम्मिलित किया जाता है।

14. मानक से संलग्न दृष्टांत 1 संघनित वित्तीय विवरणों का उदाहरण स्वरूप प्रारूप प्रदान करता है।

चयनित स्पष्टीकारक टिप्पण

15. उद्यम की अंतरिम वित्तीय रिपोर्ट के प्रयोगकर्ता के पास सामान्यतः उस उद्यम की हाल ही की वार्षिक वित्तीय रिपोर्ट तक पहुँच होगी। इसलिए, एक अंतरिम वित्तीय रिपोर्ट के टिप्पणों के लिए उस जानकारी के सापेक्षतः महत्वहीन अद्यतनों को प्रदान करना आवश्यक नहीं है, जिनको हाल के वार्षिक वित्तीय रिपोर्ट टिप्पणों में पहले से ही रिपोर्ट किया गया है। एक अंतरिम तारीख पर, उन घटनाओं और संव्यवहारों का स्पष्टीकरण, जो पिछली वार्षिक रिपोर्टिंग तारीख से उद्यम की वित्तीय स्थिति तथा निष्पादनता में परिवर्तनों को समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं, अधिक उपयोगी होता है।

IndiaCode

16. किसी उद्यम को अपने अंतरिम वित्तीय विवरणों के प्रति टिप्पणों में कम-से-कम निम्नलिखित जानकारी को यदि सारवान हो और यदि अंतरिम वित्तीय रिपोर्ट में कहीं और प्रकट न की गई हो, सम्मिलित करना चाहिए:

(क) *यह विवरण कि अंतरिम वित्तीय विवरणों में, सर्वाधिक अद्यतन वार्षिक वित्तीय विवरणों में अपनायी गई लेखा नीतियों का ही पालन किया गया है या, यदि वे नीतियाँ परिवर्तित हो गई हैं, तो परिवर्तन की प्रकृति तथा प्रभाव का वर्णन ;*

(ख) *अंतरिम क्रियाकलापों की मौसमीय प्रकृति के बारे में स्पष्टीकारक टिप्पण ;*

(ग) *आस्तियों, दायित्वों, इक्विटी, शुद्ध आय या रोकड़ प्रवाहों को प्रभावित कर रही ऐसी मदों की प्रकृति और रकम, जो अपनी प्रकृति, आकार या आपतन के कारण अप्रायिक हैं (लेखा मानक 5, अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि, पूर्वाविधि मदें और लेखा नीतियों में परिवर्तन, के पैरे 12 से 14 देखें) ;*

(घ) *चालू वित्तीय वर्ष की पूर्व अंतरिम अवधियों में रिपोर्ट की गई रकमों के प्राक्कलनों में परिवर्तनों या पूर्व वित्तीय वर्षों में रिपोर्ट की गई रकमों के प्राक्कलनों में परिवर्तनों, की प्रकृति और रकम यदि उन परिवर्तनों का चालू अंतरिम अवधि पर सारवान प्रभाव है ;*

(ङ) *ऋण, साधारण शेयर और संभाव्य साधारण शेयरों का निर्गमन, क्रय द्वारा वापसी और उनकी पुनर्संरचना ;*

(च) *साधारण शेयरों और अन्य शेयरों के लिए पृथकतः कुल या प्रति शेयर लाभांश (पूर्ण या प्रतिशत रूपों में) ;*

(छ) *व्यवसायिक खण्ड या भौगोलिक खण्ड जो भी उद्यम के खंड रिपोर्टिंग का प्राथमिक आधार हो, के लिए खण्ड राजस्व, खण्ड नियोजित पूँजी (खण्ड आस्तियों में से खण्ड दायित्वों को घटाकर) और खण्ड परिणाम (उद्यम के अंतरिम वित्तीय रिपोर्ट में खण्ड जानकारी के प्रकटन की आवश्यकता तभी होती है जब लेखा मानक 17, खण्ड रिपोर्टिंग, के अनुसार एक उद्यम को इसके वार्षिक वित्तीय विवरणों में खण्ड जानकारी प्रकट करने की आवश्यकता होती है ;*

(ज) *अंतरिम अवधि के अंत के बाद की वे सारवान घटनाएँ जो अंतरिम अवधि के लिए वित्तीय विवरणों में प्रतिबिम्बित नहीं की गई हैं ;*

(झ) *अंतरिम अवधि के दौरान उद्यम की संयोजना में परिवर्तनों का प्रभाव, जैसे कि समामेलन, समनुषंगियों और दीर्घकालिक विनिधानों का अर्जन या निपटान, पुनर्संरचना और बंद हो रहे प्रचालन; और*

(ण) *पिछले वार्षिक तुलनपत्र की तारीख से दायित्वों में सारवान परिवर्तन।*

उपरोक्त जानकारी को आमतौर पर वित्तीय वर्ष-से-तारीख के आधार पर रिपोर्ट किया जाना चाहिए। यद्यपि एक उद्यम को ऐसी किसी भी घटना या संव्यवहार को भी प्रकट करना चाहिए जो चालू अंतरिम अवधि को समझने के लिए सारवान हैं।

17. अन्य लेखा मानक उन प्रकटनों को विनिर्दिष्ट करते हैं जो वित्तीय विवरणों में किए जाने चाहिए। इस संदर्भ में, वित्तीय विवरणों का अर्थ आमतौर पर वार्षिक वित्तीय रिपोर्ट और कभी-कभी अन्य रिपोर्टों में शामिल वित्तीय विवरणों का पूर्ण सैट है। यदि किसी उद्यम की अंतरिम वित्तीय रिपोर्ट में वित्तीय विवरणों के पूर्ण सैट की बजाए केवल संघनित वित्तीय विवरण और चयनित स्पष्टीकारक टिप्पण सम्मिलित होती हैं तो अन्य लेखा मानकों द्वारा अपेक्षित प्रकटनों की आवश्यकता नहीं होती है।

वे अवधियाँ जिनके लिए अंतरिम वित्तीय विवरणों को प्रस्तुत करना अपेक्षित है

18. अंतरिम रिपोर्टों में निम्नलिखित अवधियों के लिए अंतरिम वित्तीय विवरणों (संघनित या पूर्ण) को किया जाना चाहिए

(क) *चालू अंतरिम अवधि के अंत पर तुलनपत्र और ठीक पूर्ववर्ती वित्तीय वर्ष के अंत पर तुलनात्मक तुलनपत्र;*

(ख) *चालू अंतरिम अवधि तथा संचयी तौर पर चालू वित्तीय वर्ष-से-तारीख के लिए लाभ और हानि के विवरण, ठीक पूर्ववर्ती वित्तीय वर्ष की तुल्य अंतरिम अवधियों (चालू और वर्ष से तारीख तक) के लिए लाभ और हानि के तुलनात्मक विवरणों सहित ;*

(ग) *चालू वित्तीय वर्ष से तारीख के लिए संचयी तौर पर रोकड़ प्रवाह विवरण, ठीक पूर्ववर्ती वित्तीय वर्ष की तुल्य वर्ष-से तारीख की अवधि के लिए तुलनात्मक विवरण के साथ।*

19. एक ऐसे उद्यम के लिए, जिसका व्यवसाय अत्यधिक मौसमीय प्रकृति का है, अंतरिम रिपोर्टिंग तारीख पर समाप्त हो रहे बारह मास के लिए वित्तीय जानकारी और पिछले बारह मास की अवधि के लिए तुलनात्मक जानकारी उपयोगी हो सकती है। तदनुसार, अत्यधिक मौसमीय प्रकृति वाले व्यवसाय के उद्यम, पूर्ववर्ती पैरा में माँगी गई जानकारी के अतिरिक्त ऐसी जानकारी की रिपोर्टिंग के लिए प्रोत्साहित किए जाते हैं।

20. मानक से संलग्न दृष्टांत 2, ऐसी अवधियों का दृष्टांत देता है, जिन्हें प्रस्तुत करना छह मास के आधार पर रिपोर्ट देने वाले उद्यम और तिमाही आधार पर रिपोर्ट देने वाले उद्यम द्वारा आवश्यक होता है।

सारवानता

21. यह अवधारित करने के लिए कि अंतरिम वित्तीय रिपोर्टिंग उद्देश्यों के लिए एक मद को कैसे अभिज्ञात, मापा, वर्गीकृत या प्रकट किया जाए, सारवानता को अंतरिम अवधि वित्तीय आँकड़ों के सम्बंध में निर्धारित किया जाना चाहिए। सारवानता का निर्धारण करने में, यह स्वीकार करना चाहिए कि अंतरिम मापन, वार्षिक वित्तीय आकँड़ों के मापों की तुलना में प्राक्कलनों पर कहीं अधिक निर्भर हो सकते हैं।

22. लेखा मानकों के विवरणों की प्रस्तावना व्यक्त करती है कि "लेखा मानकों का आशय केवल उन मदों पर लागू होना है जो सारवान हैं"। वित्तीय विवरणों की तैयारी और प्रस्तुतिकरण के लिए भारतीय चार्टर्ड एकाउंटेट संस्थान द्वारा जारी फ्रेमवर्क व्यक्त करता है कि "यदि जानकारी का अयथार्थ कथन (अर्थात् लोप या गलत कथन) वित्तीय जानकारी के आधार पर प्रयोगकर्ताओं द्वारा लिए गए आर्थिक निर्णयों को प्रभवित कर सकता है, तो जानकारी सारवान है।"

23. वित्तीय रिपोर्टिंग उद्देश्यों के लिए सारवानता निर्धारित करने में सदैव निर्णय की आवश्यकता होती है। अंतरिम आंकड़ों को समझने के उद्देश्य के लिए अभिज्ञान और प्रकटन निर्णय लेने के लिए सारवनता, अंतरिम अवधि वित्तीय आँकड़ों के सम्बंध में आँकी जाती है। अतः, उदाहरण के लिए, असामान्य या आसाधारण मदों, लेखा नीतियों या प्राक्कलनों में परिवर्तनों तथा पूर्वावधि मदों को अंतरिम अवधि आंकड़ों के सम्बन्ध में सारवानता के आधार पर अभिज्ञात तथा प्रकट किया जाता है। अभिभावी उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि एक अंतरिम वित्तीय रिपोर्ट में वे सभी जानकारी सम्मिलित हो जो अंतरिम अवधि के दौरान उद्यम की वित्तीय स्थिति और निष्पादनता को समझने के लिए उपयुक्त है।

वार्षिक वित्तीय विवरणों में प्रकटन

24. एक उद्यम को अंतिम अंतरिम अवधि के लिए एक पृथक वित्तीय रिपोर्ट तैयार और प्रस्तुत करना अपेक्षित नहीं भी हो सकता है क्योंकि वार्षिक वित्तीय विवरण प्रस्तुत किए जाते हैं। ऐसी स्थिति में, पैरा 25 द्वारा उस वित्तीय वर्ष के लिए वार्षिक वित्तीय विवरणों में कुछ प्रकटन अपेक्षित होते हैं।

25. यदि वित्तीय वर्ष की अंतिम अंतरिम अवधि के दौरान एक अंतरिम अवधि में रिपोर्टेड रकम का प्राक्कलन महत्वपूर्ण रूप से परिवर्तित होता है किंतु उस अंतिम अंतरिम अवधि के लिए एक पृथक वित्तीय रिपोर्ट तैयार या प्रस्तुत नहीं की जाती, तो प्राक्कलनों में ऐसे परिवर्तन की प्रकृति तथा रकम, उस वित्तीय वर्ष के लिए वार्षिक वित्तीय विवरणों के प्रति टिप्पणों में प्रकट होनी चाहिए।

26. लेखा मानक 5, *'अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि, पूर्वविधि मदें और लेखा नीतियों में परिवर्तन,'* वित्तीय विवरणों में लेखा प्राक्कलनों के उन परिवर्तनों की प्रकृति और (यदि व्यवहारिक हो तो) उनकी रकम के प्रकटन की अपेक्षा करता है, जिनका चालू अवधि में सारवान प्रभाव है, या जिनके उत्तरगामी अवधियों में सारवान प्रभाव होने की अपेक्षा है। इस मानक के पैरा 16 (घ) द्वारा भी अंतरिम वित्तीय रिपोर्ट में समान प्रकटन अपेक्षित हैं। उदाहरणों में, सूचीबद्ध सामान अवलेखन, पुनर्संरचना या ह्रास हानियों के सम्बंध में अंतिम अंतरिम अवधि में प्राक्कलन में परिवर्तन शामिल हैं, जो वित्तीय वर्ष की पिछली अंतरिम अवधि में रिर्पोट किए गए थे। पूर्ववर्ती पैरा द्वारा अपेक्षित प्रकटन लेखा मानक 5 की आवश्यकताओं के समरूप है और इसका प्रयोजन अपने क्षेत्र में प्रतिबंधित रहने का है ताकि यह केवल प्राक्कलनों में परिवर्तन से सम्बंधित रहे। किसी उद्यम को इसके वार्षिक वित्तीय विवरणों में अतिरिक्त अंतरिम अवधि वित्तीय जानकारी शामिल करने की आवश्यकता नहीं होती है।

अभिज्ञान और मापन

वार्षिक लेखा नीतियों के समान लेखा नीतियाँ

27. एक उद्यम को, अपने अंतरिम वित्तीय विवरणों में वैसी ही लेखा नीतियाँ लागू करनी चाहिए जैसी उसके वार्षिक वित्तीय विवरणों में लागू होती हैं, सिवाय हाल ही के वार्षिक वित्तीय विवरणों की तारीख के बाद किए गए उन लेखा नीति परिवर्तनों के जो अगले वार्षिक वित्तीय विवरणों में प्रतिबिम्बित होने हैं यद्यपि, उद्यम की रिपोर्टिंग की आवृत्ति (वार्षिक, छमाही, या तिमाही) को इसके वार्षिक परिणामों के मापन को प्रभावित नहीं करना चाहिए। इस उद्देश्य के लिए, अंतरिम रिपोर्टिंग उद्देश्यों के लिए मापों को वर्ष-से-तारीख के आधार पर बनाया जाना चाहिए।

28. इस बात की अपेक्षा करने से कि कोई उद्यम अपने अंतरिम वित्तीय विवरणों में, अपने वार्षिक वित्तीय विवरणों के समान लेखा नीतियों को लागू करे, यह सुझाना प्रतीत होता है कि अंतरिम अवधि माप ऐसे बनाए जाते हैं जैसे कि प्रत्येक अंतरिम अवधि एकाकी स्वतंत्र रिपोर्टिंग अवधि के रूप में है। तथपि, यह अपेक्षित करते हुए कि एक उद्यम की रिपोर्टिंग की आवृति को इसके वार्षिक परिणामों के माप को प्रभावित नहीं करना चाहिए, पैरा 27 यह स्वीकार करता है कि अंतरिम अवधि वित्तीय वर्ष का भाग है। वर्ष-से-तारीख माप में चालू वित्तीय वर्ष की पूर्व अंतरिम अवधियों में रिपोर्ट की गई रकमों के प्राक्कलनों में परिवर्तन सम्मिलित हो सकते हैं। किंतु अंतरिम अवधि के लिए आस्तियों, दायित्वों, आय तथा व्यय के अभिज्ञान के सिद्धांत, वार्षिक वित्तीय विवरणों के समरूप हैं।

29. उदाहरण के लिए:

(क) अंतरिम अवधि में सूचीबद्ध सामान अवलेखन, पुनर्संरचना या ह्रास से उत्पन्न हानियों के अभिज्ञान और मापन के लिए सिद्धांत उन्हीं सिद्धांतों के समरूप होते हैं जिनका पालन उद्यम तब करता है जब वह केवल वार्षिक वित्तीय विवरणों को तैयार करता है। तथापि, यदि ऐसी मदें, एक अंतरिम अवधि में अभिज्ञात और मापी जाती हैं और उस वित्तीय वर्ष की उत्तरगामी अंतरिम अवधि में प्राक्कलन परिवर्तित हो जाता है, तो उत्तरगामी अंतरिम अवधि में मौलिक प्राक्कलन, या तो हानि की अतिरिक्त रकम के प्रोद्भवन द्वारा या फिर पूर्ववर्ती रूप से अभिज्ञात रकम के उलटाव द्वारा परिवर्तित किया जाता है।

(ख) एक लागत जो अंतरिम अवधि के अंत पर आस्ति की परिभाषा में नहीं आती वह, या तो इस भावी सूचना की प्रतीक्षा करने के लिए क्या यह आस्ति की परिभाषा में आती है या नहीं, या फिर एक वित्तीय वर्ष में अंतरिम अवधि के दौरान उपार्जन को समान बनाने के लिए, तुलनपत्र की तारीख पर आस्थगित नहीं होती; और

(ग) प्रत्येक अंतरिम अवधि में, आयकर व्यय का अभिज्ञान पूर्ण वित्तीय वर्ष के लिए अपेक्षित भारित औसत वार्षिक आयकर के सर्वोत्तम प्राक्कलन पर आधारित होता है यदि वार्षिक आयकर दर का प्राक्कलन परिवर्तित होता है, तो एक अंतरिम अवधि में आयकर व्यय के लिए प्रोद्भूत रकमों को उस वित्तीय वर्ष की उत्तरगामी अंतरिम अवधि में समायोजित करना पड़ सकता है।

30. वित्तीय विवरणों की तैयारी और प्रस्तुतिकरण के लिए फ्रेमवर्क के अधीन अभिज्ञान, ''तुलनपत्र या लाभ और हानि के विवरण में एक ऐसी मद को सम्मिलित करने की प्रक्रिया है जो एक तत्व की परिभाषा को पूरा करती हो तथा अभिज्ञान हेतु मानदंड को संतुष्ट करती हो''। आस्तियों, दायित्वों, आय तथा व्ययों की परिभाषाएँ, वार्षिक तथा आंतरिक वित्तीय रिपोर्टिंग दोनों तारीखों पर ही, अभिज्ञान के लिए मूलभूत हैं।

31. आस्तियों के लिए अंतरिम तारीखों पर भावी आर्थिक लाभों के वही परीक्षण लागू होते हैं जो एक उद्यम के वित्तीय वर्ष के अंत पर लागू होते हैं। वे लागतें जो अपनी प्रकृति के अनुसार, वित्तीय वर्ष के अंत पर आस्तियों के रूप में अर्हित नहीं होंगी, वह अंतरिम तारीखों पर भी उपयुक्त नहीं होंगी। इसी प्रकार, अंतरिम रिपोर्टिंग तारीख पर एक दायित्व को उस तारीख पर विद्यमान बाध्यता का प्रतिनिधित्व करना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसा कि इसे वार्षिक रिपोर्टिंग तारीख पर करना चाहिए।

32. लाभ और हानि विवरण में आय तब अभिज्ञात होती है, जब एक आस्ति में वृद्धि और दायित्व में कटौती से सम्बंधित भावी आर्थिक लाभों में ऐसी बढ़ोतरी उत्पन्न हुई हो, जिसे विश्वसनीय रूप से मापा जा सकता है। लाभ और हानि के विवरण में व्यय तब अभिज्ञात होते हैं, जब आस्ति में कमी या दायित्व में वृद्धि से सम्बंधित भावी आर्थिक लाभों में ऐसी कमी उत्पन्न हुई हो, जिसे विश्वसनीय रूप से मापा जा सकता है। तुलनपत्र में उन मदों के अभिज्ञान की अनुमति नहीं है जो आस्तियों या दायित्वों की परिभाषा में नहीं आते।

33. अपने वित्तीय विवरणों में रिपोर्ट की गई आस्तियों, दायित्वों, आय, व्ययों और रोकड़ प्रवाहों के मापन में, केवल वार्षिक आधार पर रिपोर्ट करने वाला उद्यम उस जानकारी पर ध्यान देने में समर्थ होता है, जो पूरे वित्तीय वर्ष के दौरान उपलब्ध होती है। वास्तव में इसके माप वर्ष-से-तारीख के आधार पर होते हैं।

34. छमाही आधार पर रिपोर्ट करने वाला उद्यम, अपने वित्तीय विवरणों में मापन के लिए, पहली छमाही अवधि हेतु, मध्य-वर्ष तक या इससे थोड़े समय बाद उपलब्ध जानकारी का प्रयोग करता है, और बारह मास की अवधि के लिए वर्ष के अंत तक या इससे थोड़े समय बाद उपलब्ध जानकारी का प्रयोग करता है। बारह-मास-माप, पहली छमाही अवधि के लिए रिपोर्ट की गई रकमों के प्राक्कलनों में हुए किसी भी परिवर्तन को प्रतिबिम्बित करेंगे। पहली छमाही अवधि के लिए, अंतरिम वित्तीय रिपोर्ट में रिपोर्ट की गई रकमें भूतलक्षी रूप से समायोजित नहीं होती। यद्यपि, पैरा 16(घ) और 25, प्राक्कलनों में किसी भी महत्वपूर्ण परिवर्तन की प्रकृति और रकम को प्रकट करने की अपेक्षा करते हैं।

35. छमाही की बजाए अधिक जल्दी रिपोर्ट करने वाला उद्यम, वित्तीय विवरणों का प्रत्येक सैट तैयार करने के समय उपलब्ध जानकारी का प्रयोग करते हुए प्रत्येक अंतरिम अवधि के लिए, वर्ष-से-तारीख आधार पर आय तथा व्ययों को मापता है। चालू अंतरिम अवधि में रिपोर्ट कोई आय तथा व्ययों की रकमें, वित्तीय वर्ष की पूर्व अंतरिम अवधियों में रिपोर्ट की गई रकमों के प्राक्कलनों में आए किसी भी परिवर्तन को प्रतिबिम्बित करेगी। पूर्व अंतरिम अवधियों में रिपोर्टिंग रकमें भूतलक्षी रूप से समायोजित नहीं होती। यद्यपि, पैरा 16(5) और 25 प्राक्कलनों में किसी भी महत्वपूर्ण परिवर्तन की प्रकृति और रकम को प्रकट करने की अपेक्षा करते है।

मौसमीय आधार पर या विशेष अवसरों पर प्राप्त होने वाले राजस्व

36. किसी वित्तीय वर्ष में मौसमीय आधार पर या विशेष अवसर पर प्राप्त होने वाले राजस्वों को एक अंतरिम तारीख पर पूर्वानुमानित या आस्थगित नहीं करना चाहिए, यदि पूर्वानुमान या आस्थगन, उद्यम के वित्तीय वर्ष के अंत पर उपयुक्त न हो।

37. उदाहरणों में लाभांश, राजस्व, रायल्टियाँ और सरकारी अनुदान सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त, कुछ उद्यम, वित्तीय वर्ष की कुछ अंतरिम अवधियों में अन्य अंतरिम अवधियों की तुलना में अनवरत रूप से अधिक राजस्व अर्जित करते हैं, उदाहरण के लिए, फुटकर विक्रेताओं के मौसमीय राजस्व। ऐसे राजस्व तब अभिज्ञात होते हैं जब वे घटित होते हैं।

वित्तीय वर्ष के दौरान असमान रूप से उपगत की गयी लागतें

38. उद्यम के वित्तीय वर्ष के दौरान असमान रूप से खर्च की गयी लागतें, अंतरिम रिपोर्टिंग उद्देश्यों के लिए केवल तभी पूर्वानुमानित या आस्थगित होनी चाहिए, जब इस प्रकार की लागतों को वित्तीय वर्ष के अंत पर भी पूर्वानुमानित तथा आस्थगित करना उपयुक्त हो।

अभिज्ञान तथा मापन सिद्धांतों को लागू करना

39. मानक से संलग्न दृष्टांत 3, पैरा 27 से 38 में व्यक्त अभिज्ञान और माप के सामान्य सिद्धांतों को लागू करने का दृष्टांत प्रस्तुत करता है।

प्राक्कलनों का प्रयोग

40. एक अंतरिम वित्तीय रिपोर्ट में अनुसरित होने वाली मापन प्रक्रियाएँ यह सुनिश्चित करने के लिए अभिकल्पित होनी चाहिए कि परिणामस्वरूप उत्पन्न हो रहीं जानकारी विश्वसनीय है और एक उद्यम की वित्तीय स्थिति तथा निष्पादनता को समझने के लिए उपयुक्त सभी सारवान वित्तीय जानकारी, उपयुक्त रूप से प्रकट की गयी है। जबकि वार्षिक और अंतरिम वित्तीय रिपोर्टों दोनों में ही मापन बहुधा युक्तियुक्त प्राक्कलनों पर आधारित होते हैं, फिर भी अंतरिम वित्तीय रिपोर्टों की तैयारी में आमतौर पर वार्षिक वित्तीय रिपोर्टों की तुलना में प्राक्कलन पद्धति के प्रयोग की कहीं अधिक आवश्यकता होगी।

41. मानक से संलग्न दृष्टांत 4, अंतरिम अवधियों में प्राक्कलनों के प्रयोग के उदाहरण प्रदान करता है।

पहले रिपोर्ट की गई अंतरिम अवधियों का पुनर्कथन

42. लेखा नीतियों में उस परिवर्तन के अतिरिक्त, जिसके लिए लेखा मानक द्वारा संक्रमणकालीन उपबन्ध विनिर्दिष्ट होता है, अन्य परिवर्तन को, चालू वित्तीय वर्ष की पूर्व अंतरिम अवधियों के वित्तीय विवरणों को पुनर्कथित करते हुए प्रतिबिम्बित करना चाहिए।

43. पूर्ववर्ती सिद्धांत का एक उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि, पूरे एक वित्तीय वर्ष में संव्यवहारों के विशिष्ट वर्ग के प्रति, एकाकी लेखा नीति लागू होती है। पैरा 42 में सिद्धांत का प्रभाव यह अपेक्षा करना है कि चालू वित्तीय वर्ष के अंदर, लेखा नीति में किसी भी प्रकार के परिवर्तन को भूतलक्षी रूप से वित्तीय वर्ष के प्रारम्भ से लागू होना चाहिए।

संक्रमणकालीन उपबन्ध[41]

44. इस मानक के अनुसार अंतरिम वित्तीय रिपोर्ट प्रस्तुत होने के प्रथम अवसर पर, चालू वित्तीय वर्ष की सभी अंतरिम अवधियों के संदर्भ में निम्नलिखित को प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं होती:

(क) *ठीक पूर्ववर्ती वित्तीय वर्ष की तुल्य अंतरिम अवधियों (चालू और वर्ष-से-तारीख) के लिए लाभ तथा हानि के तुलनात्मक विवरण ; और*

(ख) *ठीक पूर्ववर्ती वित्तीय वर्ष की तुल्य वर्ष-से-तारीख अवधि के लिए तुलनात्मक रोकड़ प्रवाह विवरण।*

दृष्टांत 1

संघनित वित्तीय विवरणों का दृष्टांत स्वरूप प्रारूप

यह दृष्टांत जो लेखा मानक का भाग नहीं है, संघनित वित्तीय विवरणों का दृष्टांत स्वरूप प्रारूप प्रदान करता है। इसका प्रयोजन लेखा मानक का अर्थ स्पष्ट करने के लिए, लेखा मानक की प्रयोज्यता का दृष्टांत देना है।

लेखा मानक का पैरा 11 व्यक्त करता है कि यदि एक उद्यम, अपनी अंतरिम वित्तीय रिपोर्ट में संघनित वित्तीय विवरणों के सैट को तैयार तथा प्रस्तुत करता है, तो उन संघनित विवरणों में, कम से कम, उन प्रत्येक शीर्षों तथा उप-शीर्षों को जो इसके हाल ही के वार्षिक वित्तीय विवरणों में सम्मिलित थे और इस मानक द्वारा अपेक्षित चयनित स्पष्टीकारक टिप्पणों को सम्मिलित करना चाहिए। अतिरिक्त रेखा मदों या टिप्पणों को सम्मिलित करना चाहिए यदि उनको छोड़ना संघनित अंतरिम वित्तीय विवरणों को भ्रामक बनाता है।

निम्नलिखित दृष्टांत स्वरूपी प्रारूप का उद्देश्य मुख्य रूप से, मानक के पैरा 11 की अपेक्षाओं को स्पष्ट करना है। इस पर गौर किया जा सकता है कि यह दृष्टांत स्वरूप प्रारूप, पैरा 11 समेत मानक में व्यक्त अपेक्षाओं के अधीन हैं।

बैंक से भिन्न किसी उद्यम के लिए संघनित वित्तीय विवरणों कादृष्टांत स्वरूप प्रारूप

(क) संघनित तुलनपत्र

विवरण	चालू अन्तरिम अवधि के अन्त में आंकड़े (रुपये) (तारीख/माह/वर्ष)	पूर्ववर्ती लेखा-वर्ष के अन्त में आंकड़े (रुपये) (तारीख/माह/वर्ष)
1 'ईक्विटी' एवं दायित्व		
(i) शेयर धारकों की निधियां		
(क) शेयर पूंजी		
(ख) आरक्षित निधियां व अधिशेष		
(ग) शेयर वारंटो पर प्राप्त धन		
(2) शेयर आवेदन धन जिसका आबंटन अभी होना है।		
(3) अल्प संख्यक हित (समेकित वित्तीय विवरणों की स्थिति में)		
(4) गैर-चालू दायित्व (क) दीर्घावधि उधार		

[41] पैरा 44 में दिए गए संक्रमणकालील उपबंध कंपनी (लेखा मानक) नियम, 2006 (जो समय के साथ संशोधित किये गए हैं) तथा कंपनी (लेखा मानक) नियम, 2021 के अधीन अधिसूचित लेखा मानकों लिए प्रासंगिक है ।

(ख) आस्थगित कर दायित्व (शुद्ध)		
(ग) अन्य दीर्घवधि दायित्व		
(घ) दीर्घावधि प्रावधान		
(5) चालू दायित्व		
(क) लघु अवधि उधार		
(ख) देय व्यापार राशियां		
[क] सूक्ष्म उद्यमों एवं लघु उद्यमों की कुल देय बकाया राशियां; एवं		
[ख] सूक्ष्म उद्यमों एवं लघु उद्यमों से भिन्न अन्य लेनदारों की कुल देय बकाया राशियां		
(ग) अन्य चालू दायित्व		
(घ) लघु-अवधि प्रावधान		
कुल		
II आस्तियां		
(1) गैर चालू आस्तियां		
(क) सम्पत्ति, सयंत्र एवं उपस्कर		
(i) मूर्त्त आस्तियां		
(ii) अमूर्त्त आस्तियां		
(iii) प्रगतिशील कार्य पूंजी		
(iv) विकासाधीन अमूर्त्त आस्तियां		
(ख) गैर-चालू निवेश		
(ग) अस्थगित कर आस्तियां (शुद्ध)		
(घ) दीर्घावधि ऋण एवं अग्रिम		
(ङ) अन्य गैर-चालू आस्तियां		
(2) चालू आस्तियां		
(क) चालू निवेश (विनिधान)		
(ख) इन्वेंट्रीज		
(ग) प्राप्य व्यापार राशियां		
(घ) नकदी व नकदी-तुल्य		
(ङ) लघु-अवधि ऋण एवं अग्रिम		
(च) अन्य चालू आस्तियां		
कुल		

संघनित वित्तीय विवरणों के साथ टिप्पणियां देखें।

IndiaCode

(ख) लाभ तथा हानि का संघनित विवरण

विवरण	तिमाही समाप्ति पर (रुपये) तारीख/माह/वर्ष से तारीख/माह/वर्ष तक	पूर्ववर्ती लेखा-वर्ष के तत्संबंधी तीन मास (रुपये) तारीख/माह/वर्ष से तारीख/माह/वर्ष तक	चालू अवधि के वर्ष से तारीख तक आँकड़े (रुपये) तारीख/माह/वर्ष से तारीख/माह/वर्ष तक	पूर्ववर्ती वर्ष के लिए वर्ष से तारीख तक आंकड़े (रुपये) तारीख/माह/वर्ष से तारीख/माह/वर्ष तक
I परिचालनों से राजस्व				
II अन्य आय				
III कुल राजस्व (I+II)				
IV व्ययः				
प्रयुक्त सामग्री की लागत				
व्यापार में स्टाक की खरीद				
तैयार माल की इन्वेंट्री में परिवर्तन				
प्रगतिशील कार्य एवं व्यापार में स्टाक				
कर्मचारियों के फायदों के लिए व्यय				
वित्तीय लागतें				
मूल्यह्रास एवं परिशोधन व्यय				
अन्य व्यय				
कुल व्यय				
V अपवादात्मक एवं असाधारण मदों और कर से पूर्व लाभ (III-IV)				
VI अपवादात्मक मदें				
VII असाधारण मदों एवं कर से पूर्व लाभ (V-VI)				
VIII असाधारण मदें				
IX कर पूर्व लाभ (VII-VIII)				
X कर व्यय				
(1) चालू कर				

IndiaCode

(2) आस्थगित कर				
XI चालू परिचालनों से अवधि का लाभ/ (हानि) (VII-VIII)				
XII बंद परिचालनों से लाभ/(हानि)				
XIII बंद परिचालनों का कर व्यय				
XIV बंद परिचालनों से लाभ/(हानि) (कर के बाद) (XII-XIII)				
XV लाभ/(हानि) (XI+XIV)				
XVI अल्प संख्यक हित (समेकित वित्तीय विवरणों की स्थिति में)				
XVII इक्विटी शेयरधारकों को उपलब्ध अवधि का शुद्ध लाभ (हानि)				
XVIII प्रति इक्विटी शेयर अर्जनः (1) मूल				
(2) अविभिग्रित				

IndiaCode

संघनित वित्तीय विवरणों के साथ टिप्पणियां देखें।

(ग) संघनित रोकड़ प्रवाह विवरण

	चालू अवधि के लिए वर्ष-से-तारीख आंकड़े (रुपये) (तारीख/माह/वर्ष) से (तारीख/माह/वर्ष)	**पूर्ववर्ती वर्ष के लिए वर्ष-से तारीख आंकड़े** (रुपये) (तारीख/माह/वर्ष) से (तारीख/माह/वर्ष)
1. प्रचालन क्रियाकलापों से उत्पन्न रोकड़ प्रवाह		
2. विनिधान क्रियाकलापों से उत्पन्न रोकड़ प्रवाह		
3. वित्तीय क्रियाकलापों से उत्पन्न रोकड़ प्रवाह		

4. रोकड़ और रोकड़ समतुल्यों में शुद्ध वृद्धि/(कमी)		
5. अवधि के प्रारम्भ पर रोकड़ तथा रोकड़ समतुल्य		
6. अवधि के अंत पर रोकड़ तथा रोकड़ समतुल्य		

(घ) चयनित स्पष्टीकारक टिप्पण

इस भाग में चयनित स्पष्टीकारक टिप्पण अंर्तविष्ट होनी चाहिए जैसा कि इस मानक के पैरा 16 द्वारा अपेक्षित है।

बैंक के लिए संघनित वित्तीय विवरणों का दृष्टांत स्वरूप प्रारूप

(क) संघनित तुलनपत्र

	चालू अंतरिम अवधि के अंत पर आंकड़े (रुपये) (तारीख/माह/वर्ष)	**पूर्ववर्ती लेखा वर्ष के अंत पर आंकडे** (रुपये) (तारीख/माह/वर्ष)
I. पूँजी और दायित्व		
1. पूँजी 2. आरक्षिति तथा अधिशेष		
3. अल्पसंख्यक हित (समेकित वित्तीय विवरणों की स्थिति में)		
4. जमा रकमें		
5. उधार		
6. अन्य दायित्व और उपबंधित रकमें		
कुल		
II. आस्तियाँ		
1. भारतीय रिजर्व बैंक के साथ रोकड़ तथा अतिशेष		
2. बैंको के साथ अतिशेष तथा अल्प सूचना और मांग पर धन रकम		
3. विनिधान		
4. अग्रिम		
5. स्थिर आस्तियाँ (क) मूर्त स्थिर आस्तियाँ		
(ख) अमूर्त स्थिर आस्तियाँ		
6. अन्य आस्तियाँ कुल		

संघनित वित्तीय विवरणों के साथ टिप्पणियां देखें।

IndiaCode

(ख) लाभ तथा हानि का संघनित विवरण

	तिमाही समाप्ति (रुपये) (तारीख/माह/वर्ष) से (तारीख/माह/वर्ष)	**पूर्ववर्ती लेखा वर्ष के तत्संबंधी तीन महीने** (रुपये) (तारीख/माह/वर्ष) से (तारीख/माह/वर्ष)	**चालू अवधि के लिए वर्ष-से-तारीख आंकड़े** (रुपये) (तारीख/माह/वर्ष) से (तारीख/माह/वर्ष)	**पूर्ववती वर्ष के लिए वर्ष-से-तारीख आंकडे** (रुपये) (तारीख/माह/वर्ष) से (तारीख/माह/वर्ष)
आय				
1. अर्जित ब्याज (क)अग्रिमों/बिलों पर ब्याज/छूट (ख)विनिधानों पर ब्याज (ग) भारतीय रिज़र्व बैंक के साथ अतिशेष रकम तथा अन्य अंतः बैंक फंडों पर ब्याज (घ) अन्य				
2. अन्य आय				
कुल आय				
व्यय				
1. व्यय किए गए ब्याज				
2. प्रचालन व्यय				
(क) कर्मचारियों को भुगतान तथा उनके लिए उपबन्ध (ख)अन्य प्रचालन व्यय				
3. उपबंधित रकमें और आकिस्मकताएँ				
4. कुल व्यय				
5. कर से पूर्व साधारण क्रियाकलापों से उत्पन्न लाभ या हानि				
6. असाधारण मदें				
7. कर से पूर्व लाभ या हानि				
8. कर व्यय				
9. कर पश्चात् लाभ या हानि				

IndiaCode

10. अल्पसंख्यक हित (समेकित वित्तीय विवरणों की स्थिति में)				
11. इक्विटी शेयर धारकों को उपलब्ध अवधि का शुद्ध लाभ या हानि				
उपार्जन प्रति शेयर 1. प्रति शेयर मूल उपार्जन 2. प्रति शेयर अविमिश्रित उपार्जन				

संघनित वित्तीय विवरणों के साथ टिप्पणियां देखें

(ग) संघनित रोकड़ प्रवाह विवरण

	चालू अवधि के लिए वर्ष-से-तारीख आंकड़े (रुपये) (तारीख/माह/वर्ष) से (तारीख/माह/वर्ष)	पूर्ववर्ती वर्ष के लिए वर्ष-से-तारीख आंकड़े (रुपये) (तारीख/माह/वर्ष) से (तारीख/माह/वर्ष)
1. प्रचालन क्रियाकलापों से उत्पन्न रोकड़ प्रवाह		
2. विनिधान क्रियाकलापों से उत्पन्न रोकड़ प्रवाह		
3. वित्तीय क्रियाकलापों से उत्पन्न रोकड़ प्रवाह		
4. रोकड़ और रोकड़ समतुल्यों में शुद्ध वृद्धि/(कमी)		
5. अवधि के प्रारम्भ पर रोकड़ तथा रोकड़ समतुल्य		
6. अवधि के अंत पर रोकड़ तथा रोकड़ समतुल्य		

IndiaCode

(घ) चयनित स्पष्टीकारक टिप्पण

इस भाग में चयनित स्पष्टीकारक टिप्पण अन्तर्विष्ट होने चाहिए जैसा कि इस मानक के पैरा 16 द्वारा अपेक्षित है।

दृष्टांत 2

प्रस्तुत की जाने वाली अवधियों के दृष्टांत

यह दृष्टांत जो लेखा मानक का भाग नहीं हैं, पैरा 18 और 19 में सिद्धांतों की प्रयोज्यता का दृष्टांत देता है। इसका उद्देश्य इस लेखा मानक के अर्थ को स्पष्ट करने में सहायता के लिए इसकी प्रयोज्यता का दृष्टांत देना है।

अर्ध वार्षिक आधार पर अंतरिम वित्तीय रिर्पोट तैयार तथा प्रस्तुत करने वाला उद्यम

1. एक उद्यम जिसका वित्तीय वर्ष 31 मार्च को समाप्त होता है, 30 सितम्बर 2001 को अपनी अर्ध वार्षिक वित्तीय रिपोर्ट में निम्नलिखित अवधियों के लिए वित्तीय विवरणों (संघनित या पूर्ण) को प्रस्तुत करता है:

तुलनपत्र :

तारीख	30 सितम्बर 2001	31 मार्च 2001

लाभ और हानि का विवरण:

6 मास समाप्ति	30 सितम्बर 2001	30 सितम्बर 2000

रोकड़ प्रवाह विवरण[42]:

6 मास समाप्ति	30 सितम्बर 2001	30 सितम्बर 2000

तिमाही आधार पर अंतरिम वित्तीय रिपोर्ट को तैयार तथा प्रस्तुत करने वाला उद्यम

2. एक उद्यम जिसका वित्तीय वर्ष 31 मार्च को समाप्त होता है, 30 सितम्बर 2001 को समाप्त हो रही दूसरी तिमाही के लिए अपनी अंतरिम वित्तीय रिपोर्ट में निम्नलिखित अवधियों के लिए वित्तीय विवरण (संघनित या पूर्ण) प्रस्तुत करता है:

तुलनपत्र :

तारीख	30 सितम्बर 2001	31 मार्च 2001

लाभ और हानि का विवरण:

6 मास समाप्ति	30 सितम्बर 2001	30 सितम्बर 2000
3 मास समाप्ति	30 सितम्बर 2001	30 सितम्बर 2000

रोकड़ प्रवाह विवरण:

6 मास समाप्ति	30 सितम्बर 2001	30 सितम्बर 2000

तिमाही आधार पर अंतरिम वित्तीय रिपोर्ट तैयार तथा प्रस्तुत करने वाला ऐसा उद्यम जिसका व्यवसाय मुख्यतः मौसमीय है।

3. एक उद्यम जिसका वित्तीय वर्ष 31 मार्च को समाप्त होता है, 30 सितम्बर 2001 को खत्म हो रही दूसरी तिमाही के लिए इसकी अंतरिम वित्तीय रिपोर्ट में निम्नलिखित अवधियों के लिए वित्तीय विवरणों (संघनित या पूर्ण) को प्रस्तुत कर सकता है:

तुलनपत्र :

तारीख	30 सितम्बर 2001	31 मार्च 2001
		30 सितम्बर 2000

लाभ और हानि का विवरण :

6 मास समाप्ति	30 सितम्बर 2001	30 सितम्बर 2000
3 मास समाप्ति	30 सितम्बर 2001	30 सितम्बर 2000
12 मास समाप्ति	30 सितम्बर 2001	30 सितम्बर 2000

रोकड़ प्रवाह विवरण :

6 मास समाप्ति	30 सितम्बर 2001	30 सितम्बर 2000
12 मास समाप्ति	30 सितम्बर 2001	30 सितम्बर 2000

[42] यह माना गया है कि उद्यम अपनी वार्षिक रिपोर्ट के लिए रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार करता है।

IndiaCode

उदाहरण 3

अभिज्ञान और मापन सिद्धांतों को लागू करने के दृष्टांत

यह दृष्टांत, जो लेखा मानक का भाग नहीं है, इस मानक के पैरा 27-38 में व्यक्त अभिज्ञान तथा मापन के सामान्य सिद्धांतों को लागू करने का दृष्टांत देता है। इसका उद्देश्य इस लेखा मानक को स्पष्ट करने में सहायता के लिए लेखा मानक की प्रयोज्यता का दृष्टांत देना है।

उपदान तथा अन्य निश्चित प्रसुविधा योजनाएँ

1. एक अंतरिम अवधि के लिए उपदान और अन्य निश्चित प्रसुविधा योजनाओं के सम्बन्ध में उपबन्धित रकमों की गणना, उस समय से महत्वपूर्ण बाज़ार उतार-चढ़ावों और महत्वपूर्ण कटौतियों, व्यवस्थाओं या अन्य महत्वपूर्ण एकावधिक घटनाओं के लिए समायोजित करके पूर्व वित्तीय वर्ष के अंत पर बीमाकिंक रूप से निर्धारित दरों का प्रयोग करते हुए वर्ष-से-तारीख आधार पर की जाती है।

प्रमुख सुनियोजित आवधिक अनुरक्षण या ओवरहाल

2. प्रमुख सुनियोजित आवधिक अनुरक्षण या ओवरहाल या अन्य मौसमीय व्यय, जिसके वर्ष में बाद में घटित होने की अपेक्षा होती है, की लागत अंतरिम रिपोर्टिंग के लिए तब तक प्राक्कलित नहीं होती जब तक कि घटना के कारण उद्यम के पास वर्तमान दायित्व नहीं आ जाता है। भविष्य से सम्बंधित खर्च करने का इरादा या आवश्यकता मात्रा एक दायित्व को उत्पन्न करने के लिए पर्याप्त नहीं होती।

उपबन्धित रकमें

3. इस मानक के अनुसार एक उद्यम अंतरिम तारीख पर किसी उपबन्धित रकम के अभिज्ञान तथा मापन के लिए वही मानदंड लागू करने के लिए अपेक्षित है, जिन्हें यह इसके वित्तीय वर्ष के अंत पर लागू करता। आर्थिक लाभों के अंतरण के लिए दायित्व की उपस्थिति या अनुपस्थिति, रिपोर्टिंग अवधि काल का विषय नहीं है। यह रिपोर्टिंग तारीख पर विद्यमान तथ्य का प्रश्न है।

वर्ष-अंत बोनस

4. वर्ष अंत बोनस की प्रकृति व्यापाक तौर पर भिन्न होती है। कुछ बोनस सामान्यतः समयावधि के दौरान अविरल रोजगार द्वारा अर्जित होते हैं। कुछ बोनस, प्रचालन परिणाम के मासिक, तिमाही या वार्षिक माप के आधार पर अर्जित होते हैं। वे विशुद्ध रूप से, वैवेकिक, सविंदात्मक या ऐतिहासिक उदाहरणों के वर्षों पर आधारित हो सकते हैं।

5. अंतरिम रिपोर्टिंग उद्देश्यों के लिए कोई बोनस केवल तभी पूर्वानुमानित होता है, जब (क) बोनस एक विधिक बाध्यता या पिछले व्यवहार से उत्पन्न हो रहा एक ऐसा दायित्व हो जिसके लिए एक उद्यम के पास भुगतान करने के अतिरिक्त कोई और वास्तविक विकल्प न हो और (ख) बाध्यता का एक विश्वसनीय प्राक्कलन किया जा सके।

अमूर्त आस्तियाँ

6. कोई उद्यम, एक अंतरिम अवधि में अमूर्त आस्ति के लिए परिभाषा और अभिज्ञान के मानदंड को वार्षिक अवधि की तरह ही लागू करता है। अमूर्त अस्ति के लिए अभिज्ञान मानदंड के पूरे होने से पहले उपगत की गई लागतें, व्यय के रूप में अभिज्ञात होती हैं। समय के एक विशिष्ट बिंदु, जब मानदंड लागू होते है, के बाद उपगत की गई लागतें, अमूर्त आस्ति की लागत के एक भाग के रूप में अभिज्ञात होती हैं। "आस्थगन" लागतें अंतरिम तुलनपत्र में आस्तियों के रूप में इस आशा में कि अभिज्ञान मानदंड वित्तीय वर्ष में बाद में पूरा कर लिया जाएगा न्यायोचित नहीं है।

अन्य सुनियोजित किंतु अनियमित रूप से घटित हो रही लागतें

7. एक उद्यम के बजट में, वित्तीय वर्ष के दौरान अनियमित रूप से उपगत की जाने वाली कुछ अपेक्षित लागतें सम्मिलित हो सकती हैं, जैसे कि कर्मचारी प्रशिक्षण लागतें। सुनियोजित तथा वर्ष दर वर्ष पुनः घटित होने के प्रति प्रवृत होने के बावजूद भी आमतौर पर यह लागतें वैवेकिक होती हैं। एक अंतरिम वित्तीय रिपोर्टिंग तारीख पर ऐसी लागतों के लिए, जो अभी तक उपगत नहीं की गई है किसी दायित्व को अभिज्ञात करना, दायित्व की परिभाषा के अनुरूप नहीं है।

अंतरिम अवधि के लिए आयकर व्यय का मापन

8. अंतरिम अवधि आयकर व्यय उस कर दर का प्रयोग करते हुए प्रादेभूत होते हैं, जो अपेक्षित कुल वार्षिक अर्जन के प्रति प्रयोज्य होगी, अर्थात, अंतरिम अवधि की पूर्व-कर आय के प्रति प्रयोज्य प्राक्कलित औसत वार्षिक प्रभावी आय कर दर।

9. यह पैरा 27 में व्यक्त इस आधारभूत अवधारणा के अनुरूप है कि अंतरिम वित्तीय रिपोर्ट में वार्षिक वित्तीय विवरणों के समान ही लेखा अभिज्ञान और मापन सिद्धांत लागू होने चाहिए। आय कर वार्षिक आधार पर निर्धारित किए जाते हैं। इसलिए, अंतरिम अवधि आयकर व्यय की गणना अंतरिम अवधि की कर पूर्व आय के प्रति, ऐसी कर दर लागू करते हुए की जाती है, जो अपेक्षित कुल वार्षिक अर्जनों के प्रति लागू होगी अर्थात् प्राक्कलित औसत वार्षिक प्रभावी आय कर दर। यह प्राक्कलित औसत वार्षिक आय कर दर उस कर दर संरचना को प्रतिबिम्बित करेगी जो, वित्तीय वर्ष में बाद में प्रभावित होने वाली आय कर दरों में हुए अधिनियमित या सारभूत रूप से अधिनियमित परिवर्तनों समेत पूर्ण वर्ष के अर्जन के प्रति प्रयोज्य होने के लिए अपेक्षित हैं। प्राक्कलित औसत वार्षिक आय कर दर, इस मानक के पैरा 27 के साथ संगत, वर्ष-से-तारीख आधार पर पुर्नअनुमानित होगी। पैरा 16(घ), अनुमान में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन के प्रकटन की अपेक्षा करता है।

10. जहाँ तक व्यवहारिक हो, प्रत्येक शासी कराधान विधि के लिए एक पृथक प्राक्कलित औसत वार्षिक प्रभावी आय कर दर निर्धारित की जाती है और ऐसी विधियों के अंतर्गत अंतरिम अवधि पूर्व-कर आय के प्रति व्यक्तिगत रूप से लागू की जाती है। इसी प्रकार, यदि आय के भिन्न वर्गों के प्रति (जैसे कि, पूँजीगत लाभ या विशिष्ट उद्योगों में अर्जित आय) भिन्न आयकर दरें लागू होती हैं ; तो जहाँ तक व्यवहारिक हो, अंतरिम अवधि पूर्व-कर आय के प्रत्येक व्यक्तिगत वर्ग के प्रति एक पृथक दर लागू होती है। यद्यपि परिशुद्धता की इतनी मात्रा वांछनीय है, परन्तु इसे सभी स्थितियों में प्राप्त नहीं किया जा सकता, और ऐसी शासी कराधान विधियों के लिए या आय के वर्गों के लिए दरों का एक भारित औसत प्रयोग किया जाता है, यदि यह अधिक विशिष्ट दरों को प्रयोग करने के प्रभाव का एक युक्तियुक्त अनुमान हो।

11. दृष्टांत के रूप में, तिमाही आधार रिपोर्ट करने वाला उद्यम प्रथम तिमाही में 150 लाख रु. पूर्व-कर लाभ अर्जित करता है लेकिन बाकी बची प्रत्येक तीन तिमाहियों में 50 लाख रु. की हानि होने की अपेक्षा करता है (इस प्रकार वर्ष के लिए शून्य आय), और ऐसी कराधान विधियों द्वारा शासित होता है, जिसके अनुसार इसकी अनुमानित औसत वार्षिक आयकर दर 35% अपेक्षित की जाती है। निम्नलिखित तालिका, प्रत्येक तिमाही में रिपोर्टेड आयकर व्यय की रकम दर्शाती है:

(रकम लाख रु. में)

	प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही	तृतीय तिमाही	चतुर्थ तिमाही	वार्षिक
कर व्यय	52.5	(17.5)	(17.5)	(17.5)	0

वित्तीय रिपोर्टिंग वर्ष तथा कर वर्ष में अंतर

12. यदि वित्तीय रिपोर्टिंग वर्ष तथा आय कर वर्ष भिन्न होते हैं, तो उस वित्तीय रिपोर्टिंग वर्ष की अंतरिम अवधियों के लिए आय कर व्यय, उन प्रत्येक आयकर वर्षों में अर्जित पूर्व-कर आय के भाग के प्रति प्रयोज्य प्रत्येक आयकर वर्ष के लिए पृथक भारित औसत अनुमानित प्रभावी कर दरों का प्रयोग करते हुए मापा जाता है।

13. दृष्टांत के लिए, किसी उद्यम का वित्तीय रिपोर्टिंग वर्ष 30 सितम्बर को समाप्त होता है और यह तिमाही आधार पर रिपोर्ट करता है। कराधान विधि के अनुसार इसका वर्ष 31 मार्च को समाप्त होता है। 1 अक्टूबर को शुरू होने वाले वित्तीय वर्ष के लिए प्रथम वर्ष, द्वितीय वर्ष के 30 सितम्बर को समाप्त होता है, उद्यम प्रत्येक तिमाही 100 लाख रु. कर पूर्व अर्जन करता है। प्राक्कलित भारित औसत वार्षिक आय कर दर, प्रथम वर्ष में 30 प्रतिशत और द्वितीय वर्ष में 40 प्रतिशत है।

(लाख रु. में रकम)

	31 दिसम्बर को समाप्त हो रही तिमाही वर्ष 1	31 मार्च को समाप्त हो रही तिमाही वर्ष 1	30 जून को समाप्त हो रही तिमाही वर्ष 2	30 सितम्बर को समाप्त हो रही तिमाही वर्ष 2	30 सितम्बर को समाप्त हो रही तिमाही वर्ष 2
कर व्यय	30	30	40	40	140

कर कटौतियाँ/छूटें

14. कर कानून, संदेय कर निर्धारित करने के लिए, आय की गणना में कटौतियाँ/ छूटें प्रदान कर सकता है। पूर्ण वर्ष के लिए, इस प्रकार के प्राक्कलित कर लाभ आमतौर पर अनुमानित वार्षिक प्रभावी आय कर दर की गणना में प्रतिबिम्बित होते हैं, क्योंकि कटौतियों/छूटों की गणना कर कानूनों के सामान्य उपबन्धों के अधीन वार्षिक आधार पर होती हैं। दूसरी ओर, एकावाधिक घटना से सम्बंधित कर लाभ, इस अंतरिम अवधि में आय कर व्यय की गणना में इस प्रकार अभिज्ञात होते हैं कि आय के विशिष्ट वर्गों के प्रति प्रयोज्य विशिष्ट कर दरें, एकाकी प्रभावी वार्षिक कर दर में सम्मिश्र न हो।

कर हानि का अग्रनयन

15. कर हानियों के अग्रनयन के सम्बन्ध में आस्थगित कर आस्ति को उस सीमा तक अभिज्ञात करना चाहिए जिस सीमा तक विश्वसनीय साक्ष्यों के समर्थन द्वारा यह वास्तविक रूप से निश्चित हो कि, भावी कर योग्य आय उपलब्ध होगी जिसके प्रति आस्थगित कर आस्तियाँ वसूल की जा सकती हैं। मापदंड, प्रत्येक अंतरिम अवधि के अंत पर लागू किए जाते हैं और, यदि वे पूरे हो जाते हैं, तो कर हानि अग्रनयन का प्रभाव प्राक्कलित औसत वार्षिक प्रभावी आयकर दर की गणना में प्रतिबिम्बित होता है।

16. उदाहरण के लिए, तिमाही आधार पर रिपोर्ट करने वाले उद्यम के पास चालू वित्तीय वर्ष के प्रारम्भ पर आय कर उद्देश्यों के लिए 100 लाख रु. की अग्रनयन प्रचालन हानि है, जिसके लिए एक आस्थगित कर आस्ति अभिज्ञात नहीं की गई है। उद्यम चालू वर्ष की पहली तिमाही में 100 लाख रु. अर्जित करता है और बाकी बचे प्रत्येक तीन तिमाहियों में 100 लाख रु. अर्जित करने की अपेक्षा करता है। अग्रनयन हानि को अपवर्जित करते हुए, अनुमानित औसत वार्षिक आय कर दर के 40 प्रतिशत होने की अपेक्षा है। चालू वर्ष के लिए अर्जन के 400 लाख रु. पर वार्षिक कर का प्राक्कलित भुगतान 120 लाख रु. होगा [(400 लाख रु. 100 लाख रु.) × 40%)]। अग्रनयन हानि पर ध्यान देते हुए, प्राक्कलित औसत वार्षिक प्रभावी आय कर दर 30% [(120 लाख रु./400 लाख रु.) × 100] होगी। यह औसत वार्षिक प्रभावी आय कर दर प्रत्येक तिमाही के अर्जन के प्रति प्रयोज्य होगी। तदनुसार, कर व्यय इस प्रकार होगा:

(लाख रु. में रकम)

	प्रथम तिमाही	**द्वितीय तिमाही**	**तृतीय तिमाही**	**चतुर्थ तिमाही**	**वार्षिक**
कर व्यय	30.00	30.00	30.00	30.00	120.00

संविदात्मक या प्रत्याशित क्रय मूल्य परिवर्तन

17. मात्रा रिबेट या छूट और वस्तुओं और सेवाओं के मूल्यों में अन्य संविदात्मक परिवर्तन अंतरिम अवधियों में प्रत्याशित होते हैं, यदि यह सभाव्य हो कि वे प्रभावी होंगे। इस प्रकार, संविदात्मक छूटें तथा रिबेट प्रत्याशित होती हैं लेकिन वैवेकिक रिबेट और छूटे प्रत्यांशित नहीं होती, क्योंकि परिणाम स्वरूप उत्पन्न दायित्व अभिज्ञान की शर्तों को पूरा नहीं करेंगे, अर्थात, कि एक दायित्व ऐसी वर्तमान बाध्यता होना चाहिए जिसके व्ययन के परिणाम स्वरूप संसाधनों का बहिर्गमन अपेक्षित हो।

अवक्षयण तथा क्रमिक अपाकरण

18. अंतरिम अवधि के लिए अवक्षयण और अपाकरण, उस अंतरिम अवधि के दौरान स्वामित्वाधीन आस्तियों पर आधारित होता है। यह वित्तीय वर्ष में बाद के लिए नियोजित आस्ति के अर्जनों या व्ययनों पर ध्यान नहीं देता।

सूचीबद्ध सामान

19. अंतरिम वित्तीय रिपोर्टिंग के लिए सूचीबद्ध सामान को वित्तीय वर्ष के अंत जैसे सिद्धांतों द्वारा ही मापा जाता है। सूचीबद्ध सामान के मूल्यांकन पर लेखा मानक 2 सूचीबद्ध सामान के अभिज्ञान और मापन के लिए मानक स्थापित करता है। सूचीबद्ध सामान किसी भी वित्तीय रिपोर्टिंग तारीख पर, सूचीबद्ध सामान की मात्राओं, लागतों और शुद्ध वसूली योग्य मूल्यों को निर्धारित करने की आवश्यकता के कारण, विशिष्ट समस्याएँ उत्पन्न करते हैं। यही नहीं, अंतरिम सूचीबद्ध समान के लिए समान मापन सिद्धांत लागू होते हैं। लागत और समय बचाने के लिए, उद्यम बहुधा वार्षिक रिपोर्टिंग तारीखों की अपेक्षा अंतरिम तारीखों पर सूचीबद्ध सामान के मापन हेतु अधिक मात्रा में प्राक्कलनों का प्रयोग करते हैं। नीचे दिया गया पैरा 20 इस बात का उदाहरण देता है कि एक अंतरिम तारीख पर शुद्ध वसूली योग्य मूल्य को कैसे लागू करें।

सूचीबद्ध सामान का शुद्ध वसूली योग्य मूल्य

20. सूचीबद्ध सामान का शुद्ध वसूली योग्य मूल्य, विक्रय मूल्यों और सामान को पूर्ण करने और बेचने से सम्बंधित लागतों के संदर्भ में निर्धारित होता है। एक उद्यम उत्तरगामी अंतरिम अवधि में शुद्ध वसूली योग्य मूल्य के अवलेखन को उसी प्रकार उलट देगा, जैसे कि वह अपने वित्तीय वर्ष के अंत पर करेगा।

विदेशी मुद्रा अनुवाद लाभ तथा हानियाँ

21. अंतरिम वित्तीय रिपोर्टिंग के लिए विदेशी मुद्रा अनुवाद लाभ और हानियाँ, लेखा मानक 11 विदेशी मुद्रा विनियम दरों में परिवर्तनों के प्रभाव में अनुबंधित सिद्धांतों के अनुसार, वित्तीय वर्ष के अंत पर प्रयोग किए जाने वाले ही सिद्धांतों द्वारा मापे जाते हैं।

आस्तियों का ह्रास

22. लेखा मानक 28, *आस्तियों के ह्रास* यह अपेक्षा करता है कि यदि वसूली योग्य रकम, कैरिंग रकम से नीचे गिर गयी हो तो ह्रास हानि अभिज्ञात की जानी चाहिए।

23. एक उद्यम अंतरिम तारीख पर वही ह्रास परीक्षण, अभिज्ञान और उलटाव मापदंड लागू करता है जैसे वह अपने वित्तीय वर्ष के अंत पर लागू करता। यद्यपि, इसका यह अर्थ नहीं है, कि एक उद्यम को प्रत्येक अंतरिम अवधि के अंत पर आवश्यक रूप से ह्रास की विस्तृत गणना करनी ही पड़े। इसके बजाए, एक उद्यम यह निर्धारित करने के लिए कि ऐसी गणना की आवश्यकता है या नहीं, हाल ही के वित्तीय वर्ष के अंत से महत्वपूर्ण ह्रास के लक्षणों का आँकलन करेगा।

दृष्टांत 4

प्राक्कलनों के प्रयोग के उदाहरण

यह दृष्टांत जो लेखा मानक का भाग नहीं है, इस मानक में सिद्धांतों की प्रयोज्यता को स्पष्ट करने का दृष्टांत देता है। इसका उद्देश्य इस लेखा मानक का अर्थ स्पष्ट करने में सहायता हेतु लेखा मानक की प्रयोज्यता का दृष्टांत देना है।

1. **उपबन्ध:** उपबन्ध (जैसे कि वारंटी, पुनर्संरचना लागतों, उपदान आदि के लिए उपबन्ध) की उपयुक्त रकम का निर्धारण जटिल हो सकता है और यह प्रायः महँगा तथा अधिक समय लेता है। कभी कभी उद्यम वार्षिक गणनाओं में मदद करने के लिए बाहरी विशेषज्ञों को नियुक्त करते हैं। अंतरिम तारीखों पर इसी प्रकार के प्राक्कलन में नई गणना करने के लिए बाहरी विशेषज्ञों को नियुक्त करने की बजाए, अकसर पूर्ववर्ती वार्षिक वित्तीय विवरणों में बनाए गए उपबन्ध को अद्यतन करना सम्मिलित होता है।

2. **आकस्मिकताएँ:** आकस्मिकताओं के मापन में विधिक विशेषज्ञों या अन्य सलाहकारों के विचार प्राप्त करना सम्मिलित हो सकता है। कभी-कभी अकस्मिकताओं के संदर्भ में स्वतंत्र विशेषज्ञों से औपचारिक रिपोर्ट प्राप्त की जाती है। मुकदमेबाजी, दावों, आंकलनों और अन्य अकस्मिकताओं तथा अनिश्चितताओं के बारे मे ऐसे विचारों की अंतरिम तारीख पर आवश्यकता हो भी सकती है या नहीं भी हो सकती।

3. **विशेष उद्योग:** जटिलता, मँहगेपन तथा समय के कारण, विशेष उद्योगों में अंतरिम अवधि मापं, वित्तीय वर्ष के अंत की तुलना में कम प्रमित हो सकते हैं। बीमा कंपनियों द्वारा बीमा आरक्षितियों की गणना इसका एक उदाहरण है।

लेखा मानक 26

अमूर्त आस्तियाँ

(इस लेखा मानक में कुछ मोटे तिरछे टाइप और कुछ सीधे टाइप में व्यवस्थित पैरा सम्मिलित है, जिनका समान प्राधिकार है। मोटे तिरछे टाइप में दिये गए पैरा मुख्य सिद्धांत उपदर्शित करते हैं। इस लेखा मानक को अधिसूचना के प्रति उपाबंध के भाग क में अतंर्विष्ट साधारण अनुदेशों के संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिये।)

उद्देश्य

इस मानक का उद्देश्य उन अमूर्त आस्तियों के लिए लेखा विहित करना है, जिन पर किसी और लेखा मानक में विचार नहीं किया गया है। इस मानक के अनुसार एक अमूर्त आस्ति को अभिज्ञात करने के लिए एक उद्यम को आवश्यकता होती है यदि, और केवल यदि वह कतिपय कसौटियों पर खरा उतरता है। मानक यह भी स्पष्ट करता है कि अर्मूत आस्तियों की कैरिंग रकम को कैसे मापें और यह मानक अमूर्त आस्तियों के लिए कुछ प्रकटनों की भी अपेक्षा करता है।

कार्यक्षेत्र

1. यह मानक निम्नलिखित के सिवाय, अमूर्त आस्तियों के लिए लेखा में सभी उद्यमों द्वारा लागू किया जाना चाहिए:

(क) ***अमूर्त आस्तियाँ जो अन्य लेखा मानक के अन्तर्गत हैं ;***

(ख) ***वित्तीय आस्तियाँ***[43] ***;***

(ग) ***खनिजों, तेल, प्राकृतिक गैस और समरूप गैर-पुनरूत्पादक संसाधनों के अन्वेषण के लिए या उनके विकास और उद्धरण के लिए खनिज अधिकार और व्यय ; और***

(घ) ***पॉलिसीधारकों के साथ संविदाओं से बीमा उद्यमों में उत्पन्न हो रही अमूर्त आस्तियाँ।***

यह मानक सेवा समाप्ति प्रसुविधाओ[44] के संबंध में किए गए व्यय के प्रति भी लागू नहीं होना चाहिए।

2. यदि अन्य लेखा मानक अमूर्त आस्ति से विशिष्ट प्रकार से सम्बंधित होता है, तो एक उद्यम इस मानक की बजाय उस लेखा मानक को लागू करता है। उदाहरण के लिए, यह मानक निम्नलिखित के प्रति लागू नहीं होता है:

(क) व्यापार के साधारण अनुक्रम में बिक्री के लिए उद्यम द्वारा धारित अमूर्त आस्तियाँ (लेखा मानक 2, सूचिबद्ध सामान का मूल्यांकन और लेखा मानक 7, निर्माण ठेके देखिये) ;

(ख) आस्थगित कर आस्तियाँ (देखिए लेखा मानक 22, आय पर करों के लिए लेखा) ;

(ग) पट्टे जो लेखा मानक 19, पट्टे, के कार्यक्षेत्र में आते हैं ; और

(घ) समामेलन पर उत्पन्न होने वाली गुडविल (लेखा मानक 14, समामेलनों के लिए लेखा और समेकन पर उत्पन्न होने वाली गुडविल (देखिए, लेखा मानक 21, समेकित वित्तीय विवरण देखिए)

---

[43] एक वित्तीय आस्ति ऐसी कोई भी आस्ति है जो :

(क) रोकड़ है ;

(ख) अन्य उद्यम से रोकड़ या अन्य वित्तीय आस्ति प्राप्त करने का संविदात्मक अधिकार है ;

(ग) अन्य उद्यम के साथ संभाव्य रूप से अनुकूल शर्तों के आधीन वित्तीय लिखतों के विनिमय का संविदात्मक अधिकार है; या

(घ) अन्य उद्यम में स्वामित्व हित है।

[44] सेवा समाप्ति प्रसुविधा, निम्नलिखित में से किसी के परिणामस्वरूप उत्पन्न कर्मचारी प्रसुविधा है :

(क) एक कर्मचारी की सामान्य सेवानिवृत्ति की तारीख से पहले उसके रोजगार को समाप्त कर देने का उद्यम का निर्णय; या

(ख) उन प्रसुविधाओं (ऐच्छिक सेवानिवृति) के बदले में ऐच्छिक स्वीकार्यता करने का कर्मचारी का निर्णय।

3. यह मानक, अन्य बातों के साथ, विज्ञापन, प्रशिक्षण, शुरुआती, अनुसंधान और विकास क्रियाकलापों पर हुए व्यय पर लागू होता है। अनुसंधान और विकास क्रियाकलाप, ज्ञान के विकास के लिए निदेशित किए गए है। अतः यद्यपि इन क्रियाकलापों का परिणाम भौतिक तत्व वाली आस्ति में निकल सकता है (उदाहरण के लिए, कोई आदिप्ररूप) फिर भी आस्ति का भौतिक तत्व, इसके अमूर्त घटक के प्रति गौण है, अर्थात् उसमें सन्निविष्ट ज्ञान। यह मानक ऐसी मदों के लिए अनुज्ञापन करारों के अधीन अधिकारों के प्रति भी लागू होता है, जैसे कि, चलचित्र, वीडियो रिकार्डिंग, नाटक, हस्तलिपियाँ, पेटेंट और कापीराइट। यह मदें लेखा मानक 19 के कार्यक्षेत्र से अपवर्जित कर दिये गये हैं।

4. वित्तीय पट्टे की स्थिति में, अन्तर्निहित आस्ति मूर्त या अमूर्त हो सकती है। प्रारंभिक अभिज्ञान के बाद, पट्टेदार इस मानक के अंतर्गत वित्तीय पट्टे के अधीन धारण की गई अमूर्त आस्ति के साथ व्यवहार करता है।

5. लेखा मानक के कार्य क्षेत्र से अपवर्जन तब घटित हो सकता है, जब कुछ क्रियाकलाप या संव्यवहार इतने विशिष्ट होते हैं कि वे उन लेखा मुद्दों को उत्पन्न कर सकते हैं जिनके लिए भिन्न तरीके से व्यवहार करने की आवश्यकता हो सकती है। ऐसे मुद्दे उद्धरण उद्योगों में तेल, गैस और खनिज जमाओं के लिए अन्वेषण या उनके विकास और उद्धरण के व्यय में और बीमा उद्यमों तथा उनके पॉलिसीधारकों के बीच संविदाओं की स्थिति में उत्पन्न होते हैं। अतः यह मानक ऐसे क्रियाकलापों पर हुए व्यय पर लागू नहीं होता। तथापि, यह मानक उद्धरण उद्योगों में या बीमा उद्यमों द्वारा प्रयुक्त अमूर्त आस्तियों (जैसे कि कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर) और अन्य व्यय (जैसे कि शुरूआती लागतें) पर लागू होता है। विशिष्ट प्रकार के लेखा मुद्दे, उधारों से सम्बंधित बट्टे या प्रीमियम और उधारों की व्यवस्था, शेयर निर्गम व्ययों के सम्बंध में उपगत सहायक लागतों और शेयर निर्गम पर अनुज्ञात बट्टे के लिए लेखा के संदर्भ में भी उत्पन्न होते हैं। तदनुसार, यह मानक ऐसी मदों पर भी लागू नहीं होता है।

परिभाषाएँ

6. इस मानक में निम्नलिखित शब्द विनिर्दिष्ट अर्थों के साथ प्रयुक्त हुए हैं:

6.1 कोई अमूर्त आस्ति दूसरों को किराए पर देने के लिए, या प्रशासनिक प्रयोजनों के लिए, वस्तुओं या सेवाओं के उत्पादन या पूर्ति में प्रयोग के लिए धारण की गई, भौतिक तत्व के बिना एक पहचाने जाने योग्य गैर-मौद्रिक आस्ति है।

6.2 कोई आस्ति, एक ऐसा संसाधन है ;

(क) जो पूर्व घटनाओं के परिणामस्वरूप एक उद्यम द्वारा नियंत्रित किया जाता है; और

(ख) जिससे भावी आर्थिक लाभों के उद्यम के प्रति प्रवाहित होने की प्रत्याशा की जाती है।

6.3 मौद्रिक आस्तियाँ, धारण की गयी मुद्रा और निश्चित या निर्धारण योग्य रकमों में प्राप्त होने वाली आस्तियाँ हैं।

6.4 गैर-मौद्रिक आस्तियाँ, मौद्रिक आस्तियों से भिन्न आस्तियाँ हैं।

6.5 अनुसंधान, नई वैज्ञानिक या तकनीकी जानकारी और बोध को प्राप्त करने की संभाव्यता के साथ किया गया मौलिक और योजनागत अन्वेषण है।

6.6 विकास, व्यापारिक उत्पादन या प्रयोग के प्रारम्भ से पहले नई या सारभूत रूप से विकसित पदार्थों, उपकरणों, उत्पादों, प्रक्रियाओं, प्रणालियों या सेवाओं के लिए योजना या परिकल्पना के लिए अनुसंधान की खोजों या अन्य जानकारी का लागू होना है।

6.7 क्रमिक अपाकरण, अमूर्त अस्ति के उपयोगी जीवनकाल के दौरान इसकी अवक्षयण योग्य रकम का क्रमबद्ध आबंटन है।

6.8 अवक्षयण योग्य रकम, किसी आस्ति के अवशिष्ट मूल्य घटा देने के पश्चात् प्राप्त आस्ति की लागत है।

6.9 उपयोगी जीवन, या तो:

(क) एक ऐसी समयावधि है जिसके दौरान एक आस्ति की उद्यम द्वारा प्रयोग करने की प्रत्याशा की जाती है ; या

(ख) उत्पादन की या समान इकाइयों की वह संख्या है जिनकी उद्यम द्वारा आस्ति से प्राप्त करने की प्रत्याशा होती है।

6.10 अवशिष्ट मूल्य, वह रकम है जिसकी कोई उद्यम व्ययन की प्रत्याशित लागत को घटाने के बाद अपने उपयोगी जीवन के अंत में आस्ति से प्राप्त करने की प्रत्याशा करता है।

6.11 <u>उचित मूल्य</u> वह रकम है जिसमें एक आर्म्स लेंग्थ संव्यवहार में ज्ञानवान, इच्छुक पक्षकारों के बीच आस्ति का विनिमय किया जाता है या दायित्व का निपटारा किया जाता है।

6.12 <u>एक सक्रिय बाजार</u> वह बाजार होता है जहाँ निम्नलिखित सभी स्थितियाँ उपस्थित हों:

(क) बाजार के अंतर्गत व्यापार में प्रयुक्त सभी मदें समरूप हों ;

(ख) इच्छुक क्रेता और विक्रेता, सामान्यतः किसी भी समय पाए जाते हों ; और

(ग) कीमतें जनता के लिए उपलब्ध हों।

6.13 <u>एक ह्रास हानि</u> वह रकम है जिसके द्वारा एक आस्ति की कैरिंग रकम इसकी वसूली योग्य रकम से बढ़ जाती है (देखें लेखा मानक 28 *आस्तियों का ह्रास*)।

6.14 <u>कैरिंग रकम</u> वह रकम है जिस पर एक आस्ति तुलनपत्र में अभिज्ञात होती है, यह उस पर संचित क्रमिक अपाकरण और संचित ह्रास हानियों को घटाकर प्राप्त होती है।

अमूर्त आस्तियाँ

7. उद्यम, प्रायः अमूर्त संसाधनों के अर्जन, विकास, प्रबंधन या वृद्धि पर संसाधन खर्च करते हैं या दायित्व उपगत करते हैं जैसे कि वैज्ञानिक या तकनीकी ज्ञान, नई प्रक्रियाओं या प्रणालियों के नमूने और उनका कार्यान्वयन, अनुज्ञापन, बौद्धिक सम्पदा, बाज़ार ज्ञान और ट्रेडमार्क (ब्रांड नाम और प्रकाशन शीर्षकों सहित)। इन विस्तृत शीर्षकों द्वारा सम्मिलित मदों के सामान्य उदाहरण हैं कम्प्यूटर साफ्टवेयर, पेटेंट, कॉपीराइट, चलचित्र, ग्राहक सूचियाँ, बंधक सेवा अधिकार, फिशिंग लाइसेन्स, आयात कोटे, विशेषाधिकार, ग्राहक या आपूर्तिकर्ता सम्बंध, ग्राहक की भक्ति, बाजार शेयर और विपणन अधिकार। गुडविल अमूर्त प्रकृति की मद का एक अन्य उदाहरण है जो या तो अर्जन पर उत्पादित होती है या आंतरिक तौर पर उत्पादित होती है।

8. पैरा 7 में वर्णित सभी मदें, अमूर्त आस्ति की परिभाषा अर्थात, पहचाने जाने की योग्यता, संसाधन पर नियंत्रण और उद्यम के प्रति भावी आर्थिक लाभों के प्रवाह की प्रत्याशा पर खरी नहीं उतरती हैं । यदि इस मानक के अन्तर्गत कोई मद अमूर्त आस्ति की परिभाषा पर खरी नहीं उतरती है, तो उसे अर्जित करने या उसके आंतरिक तौर से उत्पादित होने में हुए व्यय को उस समय व्यय के रूप में अभिज्ञात किया जाता है जब यह उपगत होता है। यद्यपि, यदि एक मद क्रय की प्रकृति में समामेलन में अर्जित होती है, तो यह समामेलन की तारीख पर अभिज्ञात गुडविल का एक भाग बनाती है (पैरा 55 देखिए)।

9. कुछ अमूर्त आस्तियों में या इस पर भौतिक तत्व अंतर्विष्ट हो सकता है जैसे कि कॉम्पैक्ट डिस्क (कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर की स्थिति में), कानूनी दस्तावेज (लाइसेन्स या पेटेंट की स्थिति में)। या फिल्म (चलचित्र की स्थिति में)। अमूर्त आस्तियों को सम्मिलित किए हुए भौतिक तत्व की लागत सामान्यतः महत्वपूर्ण नहीं होती है। तदनुसार, अमूर्त आस्ति को सम्मिलित किये हुए भौतिक तत्व यद्यपि प्रकृति में मूर्त हो सकता है, किंतु सामान्यतः यह इसमें या इस पर अंतर्विष्ट अमूर्त आस्ति का एक भाग माना जाता है।

10. कुछ मामलों में, एक आस्ति अमूर्त और मूर्त दोनों तत्वों को सम्मिलित कर सकती है जो व्यवहार में अपृथकनीय होती है। यह निर्धारित करने में, कि ऐसी आस्ति को लेखा मानक 10, संपत्ति, संयंत्र और उपस्कर, के अधीन माना जाना चाहिए या इस मानक के अधीन अमूर्त आस्ति के रूप में माना जाना चाहिए, निर्णय की आवश्यकता होती है कि कौन सा तत्व महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, कम्प्यूटर द्वारा नियंत्रित ऐसे मशीन उपकरण के लिए कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर जो उस सॉफ्टवेयर के बिना कार्य नहीं कर सकता, सम्बंधित हार्डवेयर का एक अभिन्न अंग है और यह स्थिर आस्ति के रूप में माना जाता है और इसका स्थिर आस्ति की तरह प्रतिपादन किया जाता है । यही कम्प्यूटर के आपरेटिंग सिस्टम पर लागू होता है। जहाँ सॉफ्टवेयर सम्बंधित हार्डवेयर का अभिन्न अंग नहीं है, वहाँ कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर अमूर्त आस्ति माना जाता है।

पहचाने जाने की योग्यता

11. अमूर्त आस्ति की परिभाषा अपेक्षा करती है कि अमूर्त आस्ति में पहचाने जाने की योग्यता हो। पहचाने जाने के योग्य होने के लिए, यह आवश्यक है कि अमूर्त आस्ति, गुडविल से स्पष्टतः पृथक हो। क्रय की प्रकृति में समामेलन पर उत्पन्न हो रही गुडविल, भावी आर्थिक लाभों के पूर्वानुमान में अर्जनकर्ता द्वारा किए गए संदाय को प्रस्तुत करती है। भावी आर्थिक लाभ अर्जित पहचाने जाने के योग्य आस्तियों के बीच सहक्रिया से या उन आस्तियों से उत्पन्न हो सकते हैं, जो व्यक्तिगत रूप से वित्तीय विवरणों में अभिज्ञान के लिए उपयुक्त नहीं होते, लेकिन जिसके लिए अर्जनकर्ता, समामेलन में संदाय के लिए तैयार होता है।

12. यदि आस्ति पृथकनीय हो तो किसी अमूर्त आस्ति को गुडविल से स्पष्टतः पृथक किया जा सकता है। एक आस्ति तब पृथकनीय होती है, जब उद्यम उन भावी आर्थिक लाभों को व्ययनित किये बिना, जो समान राजस्व सृजन क्रियाकलाप में प्रयुक्त अन्य आस्तियों से प्रवाहित होते हैं, आस्ति से सम्बंधित विशिष्ट भावी आर्थिक लाभों को किराए पर दे सकता है, बेच सकता है, विनिमय या उनका वितरण कर सकता है।

13. पृथकनीयता पहचाने जाने की योग्यता की आवश्यक शर्त नहीं है क्योंकि एक उद्यम आस्ति को किसी अन्य तरीके से पहचानने में भी समर्थ हो सकता है। उदाहरण के लिए, यदि एक अमूर्त आस्ति, आस्तियों के समूह के साथ अर्जित की गयी है, तो संव्यवहार में उन विधिक अधिकारों का हस्तांतरण सम्मिलित हो सकता है जो एक उद्यम को अमूर्त आस्ति को पहचानने में समर्थ बनाते हैं। इसी प्रकार, यदि एक आंतरिक परियोजना का लक्ष्य उद्यम के लिए विधिक अधिकार बनाना है, तो इन अधिकारों की प्रकृति, आंतरिक तौर पर उत्पन्न अंतर्हित अमूर्त आस्ति को पहचानने में उद्यम की सहायता कर सकेगी। यदि एक आस्ति केवल अन्य आस्तियों के संयोजन में भावी आर्थिक लाभ उत्पन्न करे तो भी उद्यम उन पहचाने जाने योग्य उन भावी आर्थिक लाभों को पहचान सकेगा जो आस्ति से प्रवाहित होंगे।

नियंत्रण

14. एक उद्यम आस्ति को तभी नियंत्रित करता है, जब उद्यम के पास अंतर्हित संसाधन से प्रवाहित हो रहे भावी आर्थिक लाभों को प्राप्त करने की शक्ति हो और वह उन लाभों के प्रति अन्य की पहुंच को प्रतिबंधित कर सकता हो। एक अमूर्त आस्ति से उत्पन्न भावी आर्थिक लाभों को नियंत्रित करने की उद्यम की क्षमता, सामान्यतः उन विधिक अधिकारों से उत्पन्न होगी जो अदालत में प्रवर्तनीय है। विधिक अधिकारों की अनुपस्थिति में, नियंत्रण को प्रदर्शित करना अधिक कठिन होता है। तथापि, अधिकार की विधिक प्रवर्तनीयता नियंत्रण के लिए एक आवश्यक शर्त नहीं है, क्योंकि एक उद्यम किसी अन्य तरीके से भी भावी आर्थिक लाभों को नियंत्रित करने में समर्थ हो सकता है।

15. बाज़ार और तकनीकी ज्ञान, भावी आर्थिक लाभों को उत्पन्न कर सकते हैं। एक उद्यम उन लाभों को नियंत्रित करता है, उदाहरण के लिए, यदि विधिक अधिकारों द्वारा ज्ञान संरक्षित होता है जैसे कि कॉपीराइट, व्यापार पर रोक संविदा (जहाँ अनुमति हो), या कर्मचारियों के विधिक कर्तव्य द्वारा गोपनीयता बनाये रखना।

16. एक उद्यम के पास कुशल कर्मचारियों (स्टाफ) का दल हो सकता है और वह प्रशिक्षण से भावी आर्थिक लाभों की ओर ले जा रहे वृद्धिगत स्टाफ कौशल को भी पहचान सकता है। उद्यम यह भी प्रत्याशा कर सकता है कि स्टाफ उद्यम के प्रति अपने कौशल को उपलब्ध कराता रहेगा। तथापि, इस बात पर विचार करने के लिए कि ये मदें, एक अमूर्त आस्ति की परिभाषा पर खरी उतरती हैं या नही, आमतौर पर उद्यम के पास कुशल स्टाफ के दल और प्रशिक्षण से उत्पन्न हो रहे प्रत्याशित भावी आर्थिक लाभों पर अपर्याप्त नियंत्रण होता है। इसी कारणवश, विनिर्दिष्ट प्रबंधन या तकनीकी दक्षता तब तक अमूर्त आस्ति की परिभाषा पर खरी नहीं उतरती जब तक कि इसके प्रयोग के लिए और इससे प्रत्याशित भावी लाभों को प्राप्त करने के लिए यह विधिक अधिकारों द्वारा संरक्षित न हो, और जब तक यह परिभाषा के अन्य भागों पर भी खरी न उतरे।

17. एक उद्यम के पास ग्राहकों का या बाज़ार शेयरों का संविभाग हो सकता है और यह ग्राहकों से संबंध बनाने और उनकी भक्ति प्राप्त करने के अपने प्रयासों के कारण यह प्रत्याशा कर सकता है कि ग्राहक, उद्यम के साथ व्यापार करते रहेंगे। तथापि, संरक्षण के विधिक अधिकारों या नियंत्रण के अन्य तरीकों, ग्राहकों के साथ संबंधों या उद्यम के प्रति उपभोक्ताओं की अनुपस्थिति में, इस बात पर विचार करने के लिए कि ऐसी मदें (ग्राहकों, बाजार शेयरों, ग्राहक से संबंधों, उपभोक्ता की भक्ति का संविभाग) अर्मूत आस्तियों की परिभाषा पर खरी उतरती है या नहीं, प्रायः उद्यम के पास ग्राहक संबंधों और भक्ति पर अपर्याप्त नियंत्रण होता है।

भावी आर्थिक लाभ

18. अमूर्त आस्तियों से प्रवाहित हो रहे भावी आर्थिक लाभों में उत्पादों के विक्रय या सेवाओं, लागत बचतों या उद्यम द्वारा आस्तियों के प्रयोग से उत्पन्न हो रहे अन्य लाभों से प्राप्त राजस्व सम्मिलित हो सकता है। उदाहरण के लिए, उत्पादन प्रक्रिया में बौद्धिक सम्पदा का प्रयोग भावी राजस्वों को बढ़ाने की बजाए भावी उत्पादन लागतों को कम कर सकता है।

किसी अमूर्त आस्ति का अभिज्ञान और प्रारंभिक मापन

19. अमूर्त आस्ति के रूप में एक मद के अभिज्ञान के लिए यह अपेक्षित है कि उद्यम यह प्रदर्शित करे कि मद निम्नलिखित को पूरा करता है:

(क) अमूर्त आस्ति की परिभाषा (पैरा 6-18 देखिए) और

(ख) इस मानक में व्यक्त अभिज्ञान की कसौटी (पैरा 20-54 देखिए)।

20. एक अमूर्त आस्ति केवल तभी अभिज्ञात होनी चाहिए, यदि, और केवल यदि:

(क) **यह अधिसंभाव्य हो कि आस्ति से सम्बंधित भावी आर्थिक लाभ उद्यम की ओर प्रवाहित होंगे ; और**

(ख) **आस्ति की लागत विश्वसनीय रूप से मापी जा सकती है।**

21. एक उद्यम को ऐसी युक्तियुक्त और समर्थनकारी धारणाओं का प्रयोग करते हुए भावी आर्थिक लाभों की अधिसंभाव्यता को आँकना चाहिए जो उन आर्थिक स्थितियों के समुच्चय का सर्वोत्तम अनुमान प्रस्तुत करे जो आस्ति के उपयोगी जीवनकाल के दौरान उपस्थित होंगी।

22. एक उद्यम आस्ति के प्रयोग से सम्बंधित भावी आर्थिक लाभों के प्रवाह से जुड़ी निश्चितता की मात्र को आँकने के लिए, बाहरी साक्ष्यों को अधिक महत्व देते हुए, प्रारंभिक अभिज्ञान के समय उपलब्ध साक्ष्य के आधार पर निर्णय का प्रयोग करता है।

23. एक अमूर्त आस्ति, प्रारंभिक तौर पर लागत पर मापी जानी चाहिए।

पृथक अर्जन

24. यदि एक अमूर्त आस्ति पृथक रूप से अर्जित होती है, तो अमूर्त आस्ति की लागत प्रायः विश्वसनीय रूप से मापी जा सकती है। ऐसा विशिष्टरूप से तब होता है, जब क्रय प्रतिफल रोकड़ के रूप में या अन्य मौद्रिक आस्तियों के रूप में होता है।

25. अमूर्त आस्ति की लागत में आयात शुल्कों और अन्य करों (उन करों से भिन्न जो कर प्राधिकारियों से उद्यम द्वारा पश्चात्वर्ती रूप से वसूली योग्य हैं) सहित इसकी क्रय कीमत और आस्ति को इसके अपेक्षित प्रयोग के लिए तैयार करने पर किया गया कोई भी प्रत्यक्षतः आरोप्य व्यय निहित होता है। उदाहरण के लिए, प्रत्यक्षतः आरोप्य व्यय में विधिक सेवाओं के लिए व्यवसायिक फीस सम्मिलित होती है। लागत तक पहुँचने में किसी भी प्रकार की व्यापार छूटें और रिबेटें घटाई जाती हैं।

26. यदि एक अमूर्त आस्ति शेयरों या रिपोर्टिंग उद्यम की अन्य प्रतिभूतियों के लिए विनिमय में अर्जित होती है, तो आस्ति अपने उचित मूल्य या निर्गमित प्रतिभूतियों के उचित मूल्य, जो भी अधिक स्पष्ट हो, पर रिपोर्ट की जाती है।

समामेलन के भाग के रूप में अर्जन

27. क्रय प्रकृति के समामेलन में अर्जित अमूर्त आस्ति का लेखा, लेखा मानक 14, समामेलनों के लिए लेखा, के अनुसार होता है। जहाँ अंतरिती कम्पनी के वित्तीय विवरणों को बनाने में व्यक्तिगत रूप से पहचाने जाने योग्य आस्तियों और दायित्वों के प्रति समामेलन की तारीख पर उनके उचित मूल्यों के आधार पर प्रतिफल आबंटित किया जाता है, वहाँ इस मानक के पैरा 28 से 32 पर विचार करने की आवश्यकता होती है।

28. यह निर्धारित करने के लिए निर्णय अपेक्षित है कि समामेलन में अर्जित अमूर्त आस्ति की लागत (अर्थात उचित मूल्य), पृथक अभिज्ञान के लिए पर्याप्त विश्वसनीयता के साथ मापा जा सकता है। सक्रिय बाजार में उद्धरित बाज़ार कीमत, उचित मूल्य का अत्यधिक विश्वसनीय मापन प्रदान करती है। उपयुक्त बाजार कीमत प्रायः चालू बोली मूल्य होती है। यदि चालू बोली कीमतें उपलब्ध नहीं होती हैं, तो सबसे नये समान संव्यवहार की कीमत उचित मूल्य का अनुमान लगाने के लिए एक आधार प्रदान कर सकती है, परन्तु, संव्यवहार की तारीख और उस तारीख जिसको आस्ति के उचित मूल्य का अनुमान लगाया गया है के बीच आर्थिक परिस्थितियों मे कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन न हो रहा हो।

29. यदि आस्ति के लिए कोई सक्रिय बाज़ार उपस्थित नहीं है, तो इसकी लागत वह रकम प्रतिबिम्बित करती है, जो आर्म्स लेंग्थ संव्यवहार में जानकार और इच्छुक पक्षों के बीच, सर्वोत्तम उपलब्ध जानकारी के आधार पर, अर्जन की तारीख पर आस्ति के लिए दी गई होगी। इस रकम को निर्धारित करने में, उद्यम समरूप आस्तियों के लिए अद्यतन संव्यवहारों के परिणामों पर ध्यान देता है।

30. नियमित रूप से अर्मूत आस्तियों के क्रय और विक्रय में सम्मिलित कतिपय उद्यमों ने अप्रत्यक्ष रूप से अपने उचित मूल्य का अनुमान लगाने के लिए तकनीकें विकसित की हैं। यदि तकनीकों का प्रयोजन उचित मूल्य का अनुमान लगाना है, जैसा कि इस मानक में परिभाषित है और यदि वे उद्योग में आस्तियों से सम्बंधित चालू संव्यवहारों और व्यवहारों को प्रतिबिम्बित करती हैं, तो इन तकनीकों का, क्रय की प्रकृति वाले समामेलन में अर्जित एक अमूर्त आस्ति के प्रारंभिक मापन के लिए प्रयोग किया जा सकता है। जहाँ उपयुक्त हो, वहाँ इन तकनीकों में, आस्ति की लाभप्रदता को परिलक्षित करते कतिपय सूचकों के प्रति चालू बाजार संव्यवहारों को प्रतिबिम्बित करते हुए गुणक (जैसे कि राजस्व, बाजार शेयर, प्रचालन लाभ आदि) या आस्ति से मितिकाटा अनुमानित भावी शुद्ध रोकड़ प्रवाह सम्मिलित होते हैं।

31. इस मानक के अनुसार:

(क) एक अंतरिती उस अमूर्त आस्ति को अभिज्ञात करता है जो पैरा 20 और 21 में दी गयी अभिज्ञान की कसौटी पर खरी उतरती है, चाहे वह अमूर्त आस्ति, अंतरक के वित्तीय विवरणों मे अभिज्ञात न हो ; और

(ख) यदि क्रय की प्रकृति वाले समामेलन के भाग के रूप में अर्जित अमूर्त आस्ति की लागत (अर्थात् उचित मूल्य) का मापन विश्वसनीय रूप से न किया जा सकता हो तो उसे एक पृथक आस्ति के रूप में अभिज्ञात नहीं किया जाता है बल्कि गुडविल में सम्मिलित किया जाता है (पैरा 55 देखिए)।

32. जब तक क्रय की प्रकृति वाले समामेलन में अर्जित एक अमूर्त आस्ति के लिए एक सक्रिय बाजार उपलब्ध नहीं होता है, तब तक अमूर्त आस्ति के लिए अभिज्ञात प्रारंभिक लागत उस रकम तक सीमित रहती है जो समामेलन की तारीख पर उत्पन्न हो रही किसी भी पूँजी आरक्षिति को बनाती या बढ़ाती नहीं है।

सरकारी अनुदान द्वारा अर्जन

33. कुछ मामलों में, एक अमूर्त आस्ति को निशुल्क या सरकारी अनुदान द्वारा नाम मात्र के प्रतिफल पर अर्जित किया जा सकता है। यह तब हो सकता है जब सरकार एक उद्यम को अमूर्त आस्ति अंतरित या आबंटित करती है, जैसे कि हवाई अड्डा उतराई अधिकार, रेडियो या टेलीविजन स्टेशन चलाने के लाइसेन्स, आयात लाइसेंस या कोटे या अन्य प्रतिबंधित संसाधनों को आँकने के लिए अधिकार । लेखा मानक 12, 'सरकारी अनुदानों के लिए लेखा', यह अपेक्षा करता है कि गैर-मौद्रिक आस्ति के रूप में, रियायती दर पर दिये गये सरकारी अनुदानों का उनकी अर्जन लागत के आधार पर लेखा करना चाहिए। लेखा मानक 12 यह भी अपेक्षा करता है कि निशुल्क दी गई गैर-मौद्रिक आस्ति के मामले में इसे अभिहित मूल्य पर रिपोर्ट करना चाहिए। तदनुसार, निशुल्क या सरकारी अनुदान द्वारा प्रतिफल के लिए अमूर्त आस्ति, अभिहित मूल्य या अर्जन लागत, जो भी उपयुक्त हो, पर अभिज्ञात होती है; आस्ति को इसके उद्दिष्ट प्रयोग के लिए तैयार करने में प्रत्यक्ष रूप से सम्बंधित कोई व्यय भी आस्ति की लागत में सम्मिलित किया जाता है।

आस्तियों के विनिमय

34. एक अमूर्त आस्ति को अन्य आस्ति के लिए विनिमय में या आंशिक विनिमय में अर्जित किया जा सकता है। ऐसे मामले में, अर्जित आस्ति की लागत, इस संदर्भ में लेखा मानक 10 *संपत्ति, संयंत्र और उपस्कर*, में अधिव्यक्त सिद्धांतों के अनुसार निर्धारित होती है।

आंतरिक रूप से उत्पादित गुडविल

35. आंतरिक रूप से उत्पादित गुडविल को एक आस्ति को रूप में अभिज्ञात नहीं किया जाना चाहिए।

36. कुछ मामलों में, भावी आर्थिक लाभ उत्पादित करने के लिए व्यय उपगत किया जाता है, किंतु इसका परिणाम एक अमूर्त आस्ति के निर्माण में नही निकलता है जो इस मानक में दी गई अभिज्ञान की कसौटी पर खरी उतरती है। ऐसे व्यय प्रायः आंतरिक रूप से उत्पादित गुडविल के प्रति योगदान देते हुए वर्णित किए जाते हैं। आंतरिक रूप से उत्पादित गुडविल को एक आस्ति के रूप में इसलिए अभिज्ञात नही किया जाता क्योंकि यह उद्यम द्वारा नियंत्रित एक पहचाने जाने योग्य संसाधन नहीं है जिसे विश्वसनीय रूप से लागत पर मापा जा सकता है।

37. किसी भी समय बिंदु पर, उद्यम के बाजार मूल्य और इसकी पहचाने जाने योग्य शुद्ध आस्ति की कैरिंग रकम के बीच अंतर, कारकों की एक श्रेणी के कारण हो सकते है जो उद्यम के मूल्य को प्रभावित करते हैं। तथापि, उद्यम द्वारा नियंत्रित अमूर्त आस्तियों की लागत को प्रस्तुत करने के लिए ऐसे अंतरों पर विचार नहीं किया जा सकता है।

आंतरिक रूप से उत्पादित अमूर्त आस्तियाँ

38. कभी-कभी यह निर्धारित करना कठिन हो जाता है कि एक आंतरिक रूप से उत्पादित आस्ति अभिज्ञान योग्य होती है। प्रायः यह कठिन होता है:

(क) पहचानना, कि क्या, और समय का वह बिन्दु जब एक पहचाने जाने योग्य आस्ति है जो अधिसम्भाव्य भावी आर्थिक लाभ उत्पादित करेगी ; और

(ख) विश्वसनीय रूप से आस्ति की लागत को निर्धारित करना। कुछ मामलों में, आंतरिक रूप से उत्पादित हो रही अमूर्त आस्ति की लागत और उद्यम की आतंरिक रूप से उत्पादित गुडविल को बनाए रखने या बढ़ाने की लागत या दैनिक प्रचालनों को चलाने की लागत के बीच भेद नहीं किया जा सकता है।

अतः एक अमूर्त आस्ति के अभिज्ञान और प्रारंभिक मापन के लिए सामान्य अपेक्षाओं के अनुपालन के अतिरिक्त, एक उद्यम आंतरिक रूप से उत्पादित अमूर्त आस्तियों के प्रति निम्नलिखित पैरा 39-54 की अपेक्षाओं तथा निर्देशों को लागू करता है।

39. यह निर्धारित करने के लिए कि एक आंतरिक रूप से उत्पादित अमूर्त आस्ति अभिज्ञान हेतु कसौटी को पूरा करती है या नही, एक उद्यम आस्ति के उत्पादन को निम्नलिखित में वर्गीकृत करता है:

(क) अनुसंधान चरण; और

(ख) विकास चरण।

यद्यपि शब्द 'अनुसंधान' और 'विकास' परिभाषित हैं, पर शब्द 'अनुसंधान चरण' और 'विकास चरण' का इस मानक के लिए विस्तृत अर्थ है।

40. यदि एक उद्यम, अमूर्त आस्ति के निर्माण के लिए आंतरिक परियोजना के अनुसंधान चरण और विकास चरण के बीच भेद न कर सके, तो उद्यम उस परियोजना पर उपगत किए गए व्यय के साथ ऐसे व्यवहार करता है जैसे कि वे केवल अनुसंधान चरण में उपगत किए गए थे।

IndiaCode

अनुसंधान चरण

41. अनुसंधान (या आंतरिक परियोजना के अनुसंधान चरण) से उत्पन्न हो रही किसी भी अमूर्त आस्ति को अभिज्ञात नहीं करना चाहिए। अनुसंधान (या आंतरिक परियोजना के अनुसंधान चरण) पर किए गए व्यय को जिस समय उपगत किया जाता है उस समय व्यय रूप में अभिज्ञात करना चाहिए।

42. यह मानक इस विचार को मानता है कि, परियोजना के अनुसंधान चरण में, एक उद्यम यह प्रदर्शित नहीं कर सकता कि एक ऐसी अमूर्त आस्ति विद्यमान है जिससे भावी आर्थिक लाभ अधिसंभाव्य हैं। इसलिए, यह व्यय जब उपगत होता है, तो व्यय रूप में अभिज्ञात होता है।

43. अनुसंधान क्रियाकलापों के उदाहरण हैं:

(क) नए ज्ञान को प्राप्त करने के उद्देश्य से किये गये क्रियाकलाप,

(ख) अनुसंधान परिणामों या अन्य जानकारी के मूल्यांकन व उनके अंतिम चयन और उनके प्रयोग के लिए खोज ;

(ग) सामग्रियों, उपकरणों, उत्पादों, प्रक्रियाओं, प्रणालियों या सेवाओं के लिए विकल्पों की खोज; और

(घ) नई या परिष्कृत सामग्रियों, उपकरणों, उत्पादों, प्रक्रियाओं प्रणालियों या सेवाओं के लिए संभाव्य विकल्पों का सूत्रीकरण, डिजाइन मूल्यांकन और अंतिम चयन।

विकास चरण

44. विकास (या आंतरिक परियोजना के विकास चरण) से उत्पन्न हो रही अमूर्त आस्ति को केवल तभी अभिज्ञात करना चाहिए, जब एक उद्यम निम्नलिखित सभी को प्रदर्शित कर सके:

(क) ***अमूर्त आस्ति को पूरा करने की तकनीकी साध्यता ताकि यह प्रयोग या विक्रय के लिए उपलब्ध हो ;***

(ख) *अमूर्त आस्ति को पूरा करने और इसके प्रयोग या विक्रय की इसकी धारणा ;*

(ग) *अमूर्त आस्ति के प्रयोग या विक्रय की इसकी योग्यता ;*

(घ) *अमूर्त आस्ति अधिसंभाव्य भावी आर्थिक लाभ कैसे उत्पन्न करेगी। अन्य बातों के बीच, उद्यम को अमूर्त आस्ति के उत्पाद हेतु बाजार की उपस्थिति या स्वयं अमूर्त आस्ति या यदि इसका आंतरिक रूप से प्रयोग किया जाना है, तो अमूर्त आस्ति की उपयोगिता को प्रदर्शित करना चाहिए ;*

(ङ) *विकास को पूर्ण करने के लिए और अमूर्त आस्ति के प्रयोग या विक्रय के लिए पर्याप्त तकनीकी, वित्तीय और अन्य संसाधनों की उपलब्धता ; और*

(च) *इसके विकास के दौरान अमूर्त आस्ति से सम्बंधित व्यय को विश्वसनीय रूप से मापने की इसकी क्षमता।*

45. कुछ मामलों में, परियोजना के विकास चरण में एक उद्यम अमूर्त आस्ति की पहचान कर सकता है और यह प्रदर्शित कर सकता है कि आस्ति से उत्पन्न भावी आर्थिक लाभ अधिसंभाव्य है। यह इसलिए है क्योंकि परियोजना का विकास चरण, अनुसंधान चरण की तुलना में कही अधिक विकसित है।

46. विकास क्रियाकलापों के उदाहरण हैं:

(क) उत्पादन-पूर्व या उपयोग पूर्व प्रारूपों और मॉडलों की डिज़ाइन, निर्माण और परीक्षण ;

(ख) नई तकनीक सम्मिलित किए हुए उपकरणों, जिग्स, साँचों और डाइयों की डिज़ाइन;

(ग) पायलट संयंत्र की डिज़ाइन, निर्माण और प्रचालन जो कारबारी उत्पादन के लिए आर्थिक आर्थिक रूप से साध्य पैमाने का नहीं है; और

(घ) नई या विकसित सामग्रियों, उपकरणों, उत्पादों, प्रक्रियाओं, प्रणालियों या सेवाओं के लिए चयनित विकल्प की डिज़ाइन, निर्माण और परीक्षण।

47. यह प्रदर्शित करने के लिए कि एक अमूर्त आस्ति भावी आर्थिक लाभ कैसे उत्पन्न करेगी, एक उद्यम लेखा मानक 28, *आस्तियों के ह्रास* में अधिकथित सिद्धांतों का प्रयोग करते हुए आस्ति से प्राप्त होने वाले भावी आर्थिक लाभों को निर्धारित करता है। यदि आस्ति केवल अन्य आस्तियों के संयोजन में आर्थिक लाभ उत्पादित करेगी, तो उद्यम रोकड़ उत्पादित कर रही इकाइयों की अवधारणा को लागू करता है, जैसा कि लेखा मानक 28, *आस्तियों के ह्रास* में अधिकथित है।

48. अमूर्त आस्ति से आर्थिक लाभों को पूर्ण करने, प्रयोग करने और प्राप्त करने के लिए संसाधनों की उपलब्धता, उदाहरणतया, आवश्यक तकनीकी, वित्तीय और अन्य संसाधनों तथा उन संसाधनों को सुरक्षित रखने की उद्यम की क्षमता को दर्शाती हुई कारबारी योजना द्वारा प्रदर्शित की जा सकती है। कतिपय मामलों में, एक उद्यम योजना को निधि प्रदान करने की ऋणदाता की इच्छा का संकेत प्राप्त करके बाहरी वित्त की उपलब्धता दर्शाता है।

49. एक उद्यम की लागत प्रणालियाँ प्रायः आंतरिक रूप से उत्पन्न हो रही अमूर्त आस्ति की लागत को विश्वसनीय रूप से माप सकती है, जैसे कि वेतन और कापीराइट या लाइसेंस सुरक्षित करने में या कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर विकसित करने में उपगत किया गया अन्य व्यय।

50. आंतरिक रूप से उत्पादित ब्रांड, मास्टहेड्स, प्रकाशन शीर्षक, ग्राहक सूचियाँ और सारतत्व में समरूप मदों को अमूर्त आस्तियों के रूप में अभिज्ञात नहीं करना चाहिए।

51. यह मानक इस विचार को मानता है कि, आंतरिक रूप से उत्पादित ब्रांड, मास्टहेड्स, प्रकाशन शीर्षक, ग्राहक सूचियाँ और सारतत्व में समरूप मदों पर किए गए व्यय को पूर्ण रूप से कारबार विकसित करने में उपगत लागत से पृथक नहीं किया जा सकता है । इसलिए, ऐसी मदें, अमूर्त आस्ति के रूप में अभिज्ञात नहीं की जाती हैं।

आंतरिक रूप से उत्पादित अमूर्त आस्ति की लागत

52. पैरा 23 के प्रयोजन के लिए आंतरिक रूप से उत्पन्न अमूर्त आस्ति की लागत, उस समय से उपगत किए गए व्यय का योग है जब अमूर्त आस्ति पहली बार पैरा 20-21 और 44 में दिए अभिज्ञान मापदंड पर खरी उतरती है। पैरा 58, पूर्ववर्ती वार्षिक वित्तीय विवरणों या अंतरिम वित्तीय रिपोर्टों में व्यय रूप में अभिज्ञात खर्च के पुनर्कथन को निर्बंधित करता है।

53. आंतरिक रूप से उत्पादित अमूर्त आस्ति की लागत में वह सभी व्यय सम्मिलित होते हैं, जिन्हें आस्ति के निर्माण, उत्पादन और उन्हें उनके उद्दिष्ट प्रयोग के लिए तैयार करने के लिए, तर्क संगत और एकरूप आधार पर प्रत्यक्षतः सम्बंधित या आबंटित किया जा सकता है। यदि उपयोजन हो, तो लागत में सम्मिलित होता है:

(क) अमूर्त आस्ति को उत्पन्न करने में प्रयुक्त या प्रभोग की गई सामग्रियों और सेवाओं पर उपगत ;

(ख) आस्ति को उत्पादित करने मे प्रत्यक्षतः लगे वेतन, मज़दूरियाँ और कर्मचारी की अन्य सम्बंधित लागतें ;

(ग) आस्ति के उत्पादन के प्रति प्रत्यक्ष रूप से चिन्हित कोई भी व्यय, जैसे कि विधिक अधिकार को पंजीकृत करने के लिए शुल्क और उन पेटेंट और लाइसेन्सों का क्रमिक अपाकरण जो आस्ति को उत्पन्न करने में प्रयुक्त होते हैं ; और

(घ) वे उपरिव्यय जो आस्ति को उत्पन्न करने के लिए आवश्यक हैं और जिनका आस्ति पर आबंटन एक युक्तियुक्त और समनुरूप आधार पर किया जा सकता है (उदाहरण के लिए, स्थिर आस्तियों के अवक्षयण का आबंटन, बीमा प्रीमियम और किराया)। उपरिव्यय के आबंटन, सूचिबद्ध सामान को उपरिव्यय आबंटित करने में प्रयुक्त आधारों के समरूप आधार पर किए जाते हैं (देखिए, लेखा मानक 2, *सूचीबद्ध सामान का मूल्यांकन*)। लेखा मानक 16, उधार लागतें, अर्हक आस्ति की लागत के घटक रूप में ब्याज के अभिज्ञान हेतु कसौटी स्थापित करता है। यह कसौटी, आंतरिक रूप से उत्पादित आस्ति की लागत के घटक रूप में ब्याज के अभिज्ञान हेतु भी लागू होती है।

54. निम्नलिखित, आंतरिक रूप से उत्पादित अमूर्त आस्ति की लागत के घटक नहीं हैं:

(क) बिक्री, प्रशासनिक और अन्य सामान्य उपरिव्यय जब तक कि ऐसे व्ययों को उपयोग हेतु आस्ति को तैयार करने के लिए प्रत्यक्ष रूप से चिन्हित न किया जा सके ;

(ख) स्पष्टतः पहचानी गई अक्षमताएँ और एक आस्ति के योजनागत निष्पादनता की प्राप्ति से पहले उपगत प्रारम्भिक प्रचालन हानियाँ ; और

(ग) आस्ति को प्रचालित करने के लिए कर्मचारिवृंद के प्रशिक्षण पर व्यय।

पैरा 52 को दृष्टांत दे रहा उदाहरण

एक उद्यम नई उत्पादन प्रक्रिया विकसित कर रहा है। वर्ष 20×1 के दौरान, उपगत व्यय 10 लाख रु. और जिसमें से 9 लाख रु. 1 दिसम्बर 2001 से पहले खर्च किए गए थे और 1 लाख रु. 1 दिसम्बर 20×1 और 31 दिसम्बर 20×1 के बीच उपगत किए गए थे। उपक्रम यह दर्शाने में सक्षम है, कि 1 दिसम्बर 20×1 पर, उत्पादन प्रक्रिया ने एक अमूर्त आस्ति के अभिज्ञान की कसौटी को पूरा कर लिया है। प्रक्रिया में तकनीकी ज्ञान की वसूली योग्य रकम (इसके प्रयोग हेतु उपलब्ध होने से पहले प्रक्रिया को पूरा करने के लिए भावी रोकड़ बहिर्गमनों सहित) का अनुमान 5 लाख रु. लगाया गया है।

20×1 के अंत पर, उत्पादन प्रक्रिया को अमूर्त आस्ति के रूप में 1 लाख रु. की लागत पर (उस तारीख से उपगत किया गया व्यय, जब अभिज्ञान की कसौटी को पूरा किया गया था, अर्थात, 1 दिसम्बर 20×1) अभिज्ञात किया गया। 1 दिसम्बर 20×1 से पहले उपगत किया गया 9 लाख रु. का व्यय, व्यय रुप में अभिज्ञात किया गया क्योंकि 1 दिसम्बर 20×1 तक अभिज्ञान की कसौटी पूरी नहीं हुई थी। यह व्यय, तुलनपत्र में अभिज्ञात उत्पादन प्रक्रिया की लागत का भाग कभी नहीं बनेगा।

वर्ष 20×2 के दौरान उपगत किया गया व्यय 20 लाख रु. है। 20×2 के अंत पर, प्रक्रिया में तकनीकी ज्ञान की रकम (इसके प्रयोग हेतु उपलब्ध होने से पहले प्रक्रिया को पूरा करने के लिए भावी रोकड़ बहिर्गमनों समेत) 19 लाख रु. अनुमानित की गई है।

वर्ष 20×2 के अंत पर, उत्पादन प्रक्रिया की लागत 21 लाख रु. है (20×1 के अंत पर अभिज्ञात 1 लाख रु. का व्यय समेत 20×2 में अभिज्ञात 20 लाख रु. का व्यय)। ह्रास हानि (21 लाख रु.) से पहले इसकी वसूली योग्य रकम (19 लाख रु.) के प्रति, प्रक्रिया की कैरिंग रकम को समायोजित करने के लिए 2 लाख रु. की ह्रास हानि को अभिज्ञात करता है। यदि लेखा मानक 28, आस्तियों के ह्रास में ह्रास हानि के उलटाव हेतु व्यक्त अपेक्षाएँ पूरी हो जाती है, तो यह ह्रास हानि पश्चात्वर्ती अवधि में उलटी हो जाएगी।

IndiaCode

व्यय का अभिज्ञान

55. अमूर्त मद पर किए गए व्यय को व्यय रूप में जब उपगत किया जाए तब अभिज्ञात करना चाहिए, जब तक ऐसा न हो कि:

(क) **यह उस अमूर्त आस्ति की लागत का भाग न बन जाए जो अभिज्ञान की कसौटी पर खरी उतरती है (पैरा 19-54 देखिए); या**

(ख) **क्रय की प्रकृति वाले समामेलन में मद अर्जित न हो जाए और इसे अमूर्त आस्ति के रूप में अभिज्ञात न किया जा सके। यदि ऐसा मामला हो, तो इस व्यय (समामेलन की लागत समेत) को समामेलन की तारीख पर गुडविल (पूँजी आरक्षिति) से संबंधित रकम का एक भाग बनाना चाहिए (लेखा मानक 14, समामेलनों के लिए लेखा देखिए)।**

56. कुछ मामलों में, उद्यम को भावी आर्थिक लाभ प्रदान करने के लिए व्यय उपगत किया जाता है, लेकिन ऐसी कोई अमूर्त आस्ति या अन्य आस्ति अर्जित या निर्मित नहीं होती है जिसे अभिज्ञात किया जा सके। इन मामलों में, व्यय उस समय व्यय रूप में अभिज्ञात होता है जब यह उपगत किया जाता है। उदाहरण के लिए, अनुसंधान पर किया गया व्यय हमेशा तब एक व्यय रूप में अभिज्ञात होता है जब यह उपगत किया जाता है (पैरा 41 देखें)। निम्नलिखित उन अन्य व्ययों के उदाहरण हैं जो तब व्यय रूप में अभिज्ञात होते है जब उपगत किए जाते हैं:

(क) प्रारम्भिक क्रियाकलापों पर व्यय (प्रारम्भिक लागतें), जब तक कि यह व्यय, लेखा मानक 10 के अंतर्गत स्थिर आस्ति की एक मद की लागत में सम्मिलित नहीं होता है। प्रारम्भिक लागतों में विधिक इकाई को स्थापित करने में खर्च किए गए प्रारम्भिक व्यय सम्मिलित हो सकते हैं, जैसे कि विधिक और सचिवीय लागतें, नई सुविधा या व्यापार शुरू करने में लगा व्यय (प्रारंभ होने से पूर्व की लागतें) या नए प्रचालन शुरू करने के लिए व्यय या नए उत्पादों या प्रक्रियाओं को प्रारंभ करने के लिए व्यय ;

(ख) प्रशिक्षण क्रियाकलापों पर व्यय;

(ग) विज्ञापन और प्रचार क्रियाकलापों पर व्यय; और

(घ) एक उद्यम के सभी या आंशिक तौर पर पुर्नस्थापना और पुनर्संरचना पर व्यय।

57. पैरा 55, वस्तुओं और सेवाओं की सुपुर्दगी के पूर्व वस्तुओं या सेवाओं की सुपुर्दगी के लिए किए गए भुगतान के प्रति लागू नहीं होता। ऐसे पूर्व भुगतान आस्तियों के रूप में अभिज्ञात होते हैं।

आस्ति के रूप में अभिज्ञात न होने वाले पूर्व व्यय

58. एक अमूर्त मद पर किए गए उस व्यय को पश्चात् की तारीख पर अमूर्त आस्ति की लागत के भाग के रूप में अभिज्ञात नही करना चाहिए, जो प्रांरभिक तौर पर रिपोर्टिंग उद्यम द्वारा पूर्ववर्ती वार्षिक वित्तीय विवरणों या अंतरिम वित्तीय रिपोर्टों में एक व्यय रूप में अभिज्ञात था।

पश्चात्वर्ती व्यय

59. अमूर्त आस्ति के क्रय या इसके पूर्ण होने के पश्चात् इस पर किए गए व्यय को इसके उपगत होने पर, व्यय के रूप में तब तक अभिज्ञात किया जाना चाहिए, जब तक कि:

(क) ***यह अधिसंभाव्य न हो कि व्यय आस्ति को इसके निष्पादन के आरम्भिक निर्धारित स्तर की अधिकता में भावी आर्थिक लाभ उत्पन्न करने में सक्षम बनाएगा ; और***

(ख) ***व्यय को आस्ति के प्रति विश्वसनीय रूप से मापा या चिन्हित न किया जा सके।***

यदि यह शर्तें पूरी होती हैं, तो पश्चात्वर्ती व्यय को अमूर्त आस्ति की लागत में जोड़ा जाना चाहिए।

60. अभिज्ञात अमूर्त आस्ति पर किया गया व्यय, एक व्यय रूप में तभी अभिज्ञात होता है जब आस्ति को इसके आरम्भिक रूप से निर्धारित निष्पादनता के स्तर पर बनाए रखने के लिए व्यय प्रत्याशित होता है। कई मामलों में, अमूर्त आस्ति की प्रकृति ऐसी होती है, कि यह निर्धारित करना संभव नहीं होता कि क्या पश्चात्वर्ती व्यय उन आर्थिक लाभों की वृद्धि करेंगे या उन्हें बनाए रखेंगे, जो उन आस्तियों से उद्यम की ओर प्रवाहित होंगे। इसके अतिरिक्त, ऐसे व्यय को पूर्ण रूप

से व्यापार की बजाए विशिष्ट अमूर्त आस्ति के प्रति प्रत्यक्ष रूप से चिन्हित करना प्रायः कठिन होता है। इसीलिए, एक क्रय की गयी अमूर्त आस्ति के प्रारंभिक अभिज्ञान के पश्चात् या आतंरिक रूप से उत्पादित अमूर्त आस्ति के पूर्ण होने के पश्चात् दुर्लभ रूप से उपगत किए गए व्यय का परिणाम अमूर्त आस्ति की लागत की बढ़ोतरी के रूप में निकलता है।

61. पैरा 50 के समरूप, ब्रांड, मास्टहेड्स, प्रकाशन शीर्षक, ग्राहक सूचियाँ और सारतत्व में समरूप मदें (चाहे बाहरी रूप से खरीदी हो या आंतरिक रूप से उत्पादित हों), आंतरिक रूप से उत्पादित गुडविल के अभिज्ञान से बचने के लिए हमेशा व्यय रूप से अभिज्ञात होती हैं।

प्रारंभिक अभिज्ञान के पश्चात्वर्ती मापन

62. प्रारंभिक अभिज्ञान के पश्चात् एक अमूर्त आस्ति को, किसी भी संचित क्रमिक अपाकरण और किसी भी संचित ह्रास हानि को घटाकर इसकी लागत पर ले जाया जाना चाहिए।

क्रमिक अपाकरण

क्रमिक अपाकरण अवधि

63. अमूर्त आस्ति की अवक्षयण योग्य रकम को, इसके उपयोगी जीवनकाल के सर्वोत्तम अनुमान पर एक क्रमबद्ध आधार पर आबंटित किया जाना चाहिए। यहाँ एक खण्डनीय धारणा है कि एक अमूर्त आस्ति का उपयोगी जीवनकाल, आस्ति के प्रयोग हेतु उपलब्ध होने की तारीख से दस साल से अधिक नहीं होगा। क्रमिक अपाकरण तब प्रारम्भ होना चाहिए जब आस्ति उपयोग के लिए उपलब्ध हो।

64. चूँकि एक अमूर्त आस्ति में अंतर्निहित भावी आर्थिक लाभों का एक समय के दौरान उपभोग होता है, इसलिए उस उपभोग को प्रतिबिम्बित करने के लिए आस्ति की कैरिंग रकम घटायी जाती है। यह आस्ति के उपयोगी जीवनकाल के दौरान एक व्यय रूप में, किसी भी अवशिष्ट मूल्य को आस्ति की लागत से घटाकर उसके क्रमबद्ध आबंटन द्वारा प्राप्त किया जाता है। क्रमिक अपाकरण अभिज्ञात होता है, चाहे उदाहरण के लिए, आस्ति के उचित मूल्य या उसकी वसूली योग्य रकम में बढ़ोतरी हो रही हो या नहीं। निम्नलिखित सहित, अमूर्त आस्ति के उपयोगी जीवनकाल के निर्धारण में कई घटकों पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है :

(क) उद्यम द्वारा आस्ति का प्रत्याशित प्रयोग और अन्य प्रबंधन दल द्वारा आस्ति को दक्षता पूर्वक प्रबंधित किया जा सकता है या नही ;

(ख) आस्ति के लिए विशिष्ट उत्पाद जीवन चक्र और समरूप प्रकार से प्रयुक्त उस आस्ति के समरूप प्रकारों के उपयोगी जीवनकाल के अनुमानों पर सार्वजनिक सूचनाएँ ;

(ग) तकनीकी, प्रौद्योगिकी या अन्य प्रकार के अप्रचलन ;

(घ) उस उद्योग में स्थिरता जिसमें आस्ति प्रचालित होती है और आस्ति से उत्पादित उत्पादों या सेवाओं हेतु बाज़ार माँग में परिवर्तन ;

(ङ) प्रतिस्पर्द्धियों या संभावित प्रतिस्पर्द्धियों द्वारा प्रत्याशित कार्य ;

(च) आस्ति से प्रत्याशित भावी आर्थिक लाभ प्राप्त करने के लिए अपेक्षित अनुरक्षण व्यय का स्तर और ऐसे स्तर को प्राप्त करने की उद्यम की क्षमता और आशय ;

(छ) आस्ति पर नियंत्रण की अवधि और आस्ति के प्रयोग पर विधिक या समरूप सीमाएँ, जैसे कि सम्बंधित पट्टों की समापन तारीख ; और

(ज) आस्ति का उपयोगी जीवनकाल, उद्यम की अन्य आस्तियों के उपयोगी जीवन काल पर निर्भर है या नहीं।

65. प्रौद्योगिकी में तीव्र परिवर्तनों के उल्लिखित इतिहास को देखते हुए, कम्प्यूटर सॉफटवेयर और कई अन्य अमूर्त आस्तियों का प्रौद्योगिकी अप्रचलन संभव है। इसलिए, यह संभव है कि उनका उपयोगी जीवनकाल छोटा होगा।

66. जैसे-जैसे उपयोगी जीवनकाल की अवधि बढ़ती है, वैसे-वैसे एक अमूर्त आस्ति के उपयोगी जीवनकाल के अनुमान प्रायः कम विश्वसनीय बन जाते हैं। यह मानक इस विचार को मानता है कि अमूर्त आस्ति का उपयोगी जीवनकाल का दस साल से अधिक होना अनापेक्षित है।

67. कुछ मामलों में, यह प्रेरित करने वाले साक्ष्य हो सकते हैं, कि एक अमूर्त आस्ति का उपयोगी जीवनकाल, दस साल से लम्बी एक विनिर्दिष्ट अवधि होगा। इन मामलों में, इस धारणा का खण्डन होता है कि उपयोगी जीवनकाल सामान्यतः दस वर्ष से अधिक नहीं होता और उद्यम:

(क) आस्ति के उपयोगी जीवनकाल के सर्वोत्तम अनुमान पर अमूर्त आस्ति का क्रमिक अपाकरण करता है ;

(ख) किसी भी ह्रास हानि को पहचानने के लिए कम से कम वार्षिक तौर पर अमूर्त आस्ति की वसूली योग्य रकम का अनुमान लगाता है [पैरा 83 देखिए]; और

(ग) इसके कारणों को प्रकट करता है कि धारणा खण्डनीय क्यों है और उन घटक (घटकों) को प्रकट करता है, जो आस्ति के उपयोगी जीवनकाल के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं [पैर 94 (क) देखिए]

उदाहरण

(क) एक उद्यम ने साठ सालों तक जल-विद्युत पावर को उत्पादित करने का अनन्य अधिकार खरीद लिया है। जल-विद्युत उत्पादित करने की लागत वैकल्पिक स्रोत से खरीदने से काफी कम है। यह प्रत्याशित है कि पॉवर स्टेशन के आसपास का भौगोलिक क्षेत्र, कम से कम साठ वर्षों के लिए पॉवर स्टेशन से पावर की महत्वपूर्ण मात्रा की माँग करेगा।

उद्यम, साठ सालों के दौरान पावर उत्पादित करने के अधिकार का तब तक क्रमिक अपाकरण करता है, जब तक कि यह साक्ष्य न हो कि इसका उपयोगी जीवनकाल छोटा है।

(ख) एक उद्यम ने तीस वर्षों के लिए टोल मोटर मार्ग को प्रचालित करने का अनन्य अधिकार खरीद लिया है। मोटर मार्ग द्वारा किए गए क्षेत्र में वैकल्पिक मार्गों के निर्माण की कोई योजना नहीं है। यह प्रत्याशित है कि मोटर मार्ग, कम से कम तीस वर्षों तक प्रयोग में रहेगा।

उद्यम तीस वर्षों के दौरान मोटरमार्ग को प्रचालित करने के अधिकार का तब तक क्रमिक अपाकरण करता है, जब तक कि यह साक्ष्य न हो कि इसका उपयोगी जीवनकाल छोटा है।

68. अमूर्त आस्ति का उपयोगी जीवनकाल बहुत अधिक लम्बा तो हो सकता है लेकिन यह हमेशा सीमित होता है। अनिश्चितता, विवेकशील आधार पर एक अमूर्त आस्ति के उपयोगी जीवनकाल को अनुमानित करना उचित ठहराती है, किंतु यह एक ऐसे जीवन को चुनना उचित नही ठहराती जो अवास्तविक रूप से छोटा हो।

69. यदि एक अमूर्त आस्ति से उत्पन्न भावी आर्थिक लाभों पर नियंत्रण उन विधिक अधिकारों द्वारा प्राप्त होता है जो एक सीमित अवधि के लिए प्रदान किए जाते हैं, तो अमूर्त आस्ति का उपयोगी जीवनकाल विधिक अधिकारों की अवधि से तब तक अधिक नहीं होना चाहिए, जब तक कि:

(क) **विधिक अधिकार नवीनीकृत कराने योग्य हों ; और**

(ख) **नवीनीकरण करीब-करीब निश्चित हो।**

70. अमूर्त आस्ति के उपयोगी जीवनकाल को प्रभावित कर रहे घटक आर्थिक और विधिक दोनों ही घटक हो सकते हैं । आर्थिक घटक वह अवधि निर्धारित करते हैं जिसके दौरान भावी आर्थिक लाभ उत्पन्न होंगे; विधिक घटक उस अवधि को प्रतिबंधित कर सकते हैं जिसके दौरान उद्यम इन लाभों को नियंत्रित करता है। उपयोगी जीवनकाल इन घटकों द्वारा निर्धारित अवधियों में से छोटी वाली होती है।

71. अन्य घटकों के साथ निम्नलिखित घटक दर्शाते हैं कि कानूनी अधिकारों का नवीनीकरण करीब-करीब निश्चित है:

(क) जैसे-जैसे प्रारम्भिक अवसान की अवधि निकट आती है वैसे-वैसे अमूर्त आस्ति के उचित मूल्य के घटने की प्रत्याशा नहीं होती है या अंतर्हित अधिकार के नवीनीकरण की लागत की तुलना में इसके अधिक घटने की प्रत्याशा नहीं होती है ;

(ख) इसका साक्ष्य है (संभवतः पिछले अनुभव पर आधारित) कि विधिक अधिकार नवीकृत होंगे ; और

(ग) इसका साक्ष्य है कि विधिक अधिकार के नवीनीकरण को प्राप्त करने के लिए अपेक्षित स्थितियाँ (यदि हों तो) पूरी की जाऐगी।

क्रमिक अपाकरण पद्धति

72. प्रयुक्त क्रमिक अपाकरण पद्धति को वह पैटर्न प्रतिबिम्बित करना चाहिए, जिसमें उद्यम द्वारा आस्ति के आर्थिक लाभ उपभोग किए जाते हैं। यदि वह पैटर्न विश्वसनीय रूप से निर्धारित न किया जा सके, तो सीधी रेखा पद्धति का प्रयोग करना चाहिए। प्रत्येक अवधि के लिए क्रमिक अपाकरण प्रभार को तब तक व्यय रूप में अभिज्ञात करना चाहिए जब तक कि कोई अन्य लेखा मानक इसे अन्य आस्ति की कैरिंग रकम में सम्मिलित करने की अनुमति न दे या अपेक्षा न करे।

73. एक आस्ति के उपयोगी जीवनकाल के दौरान, क्रमबद्ध आधार पर, आस्ति की अवक्षयण योग्य रकम को आबंटित करने के लिए कई प्रकार की क्रमिक अपाकरण पद्धतियों का प्रयोग किया जा सकता हैं। इन पद्धतियों में सरल रेखा पद्धति, अवलिखित मूल्य पद्धति और उत्पादन की इकाई पद्धति सम्मिलित हैं। एक आस्ति के लिए प्रयुक्त उत्पादन को आर्थिक लाभों के उपभोग के प्रत्याशित तरीके के आधार पर चुना जाता है और यह अवधि दर अवधि तब तक समानुरूप से लागू किया जाता है, जब तक कि उस आस्ति से उत्पन्न होने वाले आर्थिक लाभों के उपभोग के अपेक्षित तरीके में परिवर्तन नहीं हो जाता। अमूर्त आस्तियों के लिए एक क्रमिक अपाकरण पद्धति का समर्थन करने के लिए, शायद ही प्रोत्साहित करने वाले साक्ष्य होंगे, जिनका परिणाम सरल रेखा पद्धति की तुलना में संचित क्रमिक अपाकरण की कम रकम के रूप में निकलता है।

74. प्रायः क्रमिक अपाकरण एक व्यय रूप में अभिज्ञात होता है। यद्यपि, कभी-कभी आस्ति में अंतर्निहित आर्थिक लाभ, व्यय को बढ़ाने की बजाए अन्य आस्तियों के उत्पादन में उद्यम द्वारा प्रयोग होते हैं। इन मामलों में, क्रमिक अपाकरण प्रभार अन्य आस्ति की लागत का भाग बनाता है और उसकी कैंरिग रकम में सम्मिलित किया जाता है। उदाहरण के लिए, उत्पादन प्रक्रिया में प्रयुक्त अमूर्त आस्तियों का क्रमिक अपाकरण, सूचिबद्ध सामानों की कैरिंग रकम में सम्मिलित किया जाता है (लेखा मानक 2, सूचिबद्ध सामान का मूल्यांकन देखिए)।

अवशिष्ट मूल्य

75. एक अमूर्त आस्ति का अवशिष्ट मूल्य तब तक शून्य माना जाना चाहिए, जब तक कि:

(क) *तृतीय पक्षकार द्वारा आस्ति के उपयोगी जीवन के अंत पर इसे खरीद लेने की प्रतिबद्धता ना हो ; या*

(ख) *आस्ति हेतु सक्रिय बाज़ार न हो और ;*

(i) *उस बाज़ार के संदर्भ द्वारा अवशिष्ट मूल्य निर्धारित न किया जा सके; और*

(ii) *यह अधिसंभाव्य न हो कि ऐसा बाज़ार आस्ति के उपयोगी जीवनकाल के अंत पर उपस्थित होगा।*

76. शून्य के अतिरिक्त किसी अन्य अवशिष्ट मूल्य का अर्थ होता है कि उद्यम के आर्थिक जीवन के अंत से पहले अमूर्त आस्ति को व्ययनित करने की प्रत्याशा करता है।

77. आस्ति के अर्जन की तारीख पर विद्यमान कीमतों का प्रयोग करते हुए उस समरूप आस्ति की बिक्री के लिए अवशिष्ट मूल्य का अनुमान लगाया जाता है जो अपने अनुमानित उपयोगी जीवनकाल के अंत पर पहुँच चुकी हो और जो उन स्थितियों के समरूप स्थितियों के अधीन प्रचालित हुई हो जिनमें आस्ति प्रयोग की जाएगी। अवशिष्ट मूल्य, कीमतों या मूल्य में परिवर्तनों के लिए पश्चात्वर्ती रूप से नहीं बढ़ाया जाता है।

क्रमिक अपाकरण अवधि और क्रमिक अपाकरण पद्धति का पुनर्विलोकन

78. क्रमिक अपाकरण अवधि और क्रमिक अपाकरण पद्धति को कम से कम प्रत्येक वित्तीय वर्ष के अंत पर पुनर्विलोकित किया जाना चाहिए। यदि आस्ति का प्रत्याशित उपयोगी जीवनकाल, पूर्व अनुमानों से काफी भिन्न होता है, तो क्रमिक अपाकरण अवधि तदनुसार परिवर्तित होनी चाहिए। यदि आस्ति से प्राप्त आर्थिक लाभों के प्रत्याशित पैटर्न में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहा हो, तो परिवर्तित पैटर्न को प्रतिबिम्बित करने के लिए, क्रमिक अपाकरण पद्धति परिवर्तित की जानी चाहिए। ऐसे परिवर्तनों का लेखा मानक 5 अवधि के लिए शुद्ध लाभ या हानि, पूर्वावधि मदें और लेखा नीतियों में परिवर्तन के अनुसार लेखा करना चाहिए।

79. अमूर्त आस्ति के जीवनकाल के दौरान, यह प्रतीत हो सकता है कि इसके उपयोगी जीवनकाल का अनुमान अनुपयुक्त है। उदाहरण के लिए, उपयोगी जीवनकाल उस पश्चात्वर्ती व्यय के द्वारा बढ़ाया जा सकता है, जो आस्ति के मौलिक रूप से आंकलित निष्पादनता के स्तर से परे आस्ति की स्थिति को सुधारता है। ह्रास हानि का अभिज्ञान भी यह दर्शा सकता है कि क्रमिक अपाकरण अवधि को बदलने की आवश्यकता है।

80. समय के साथ एक अमूर्त आस्ति से प्राप्त उन भावी आर्थिक लाभों का पैटर्न भी बदल सकता है, जिनके एक उद्यम की ओर प्रवाहित होने की प्रत्याशा की जाती है। उदाहरण के लिए, यह प्रतीत हो सकता है कि सरल रेखा पद्धति के बजाय, क्रमिक अपाकरण की मूल्य में कमी पद्धति उपयुक्त हैं। एक अन्य उदाहरण है कि यदि लाइसेंस द्वारा प्रस्तुत अधिकारों का प्रयोग, कारबारी योजना के अन्य घटकों पर आधारित कार्य के लम्बित होने के कारण आस्थगित है। इस मामले में आस्ति में प्रवाहित हो रहे आर्थिक लाभ बाद की अवधियों तक प्राप्त नहीं किए जा सकते हैं।

कैरिंग रकम की वसूली-ह्रास हानि

81. यह निर्धारित करने के लिए कि एक आस्ति ह्रासित है या नहीं, एक उद्यम लेखा मानक 28, *आस्तियों के ह्रास* को लागू करता है। यह मानक स्पष्ट करता है कि एक उद्यम इसकी आस्तियों की कैरिंग रकम की समीक्षा कैसे करता है, यह एक आस्ति की वसूली योग्य रकम को कैसे निर्धारित करता है और यह एक ह्रास हानि को कैसे अभिज्ञात करता है या उलटता है।

82. यदि एक ह्रास हानि, क्रय की प्रकृति वाले समामेलन में अर्जित अमूर्त आस्ति हेतु अर्जन के बाद शुरू होने वाली पहली वार्षिक लेखा अवधि से पहले घटित होती है, तो ह्रास हानि को, अमूर्त आस्ति और समामेलन की तारीख पर अभिज्ञात गुडविल (पूँजी आरक्षिति) के प्रति आबंटित दोनों रकमों के प्रति समायोजन के रूप में अभिज्ञात किया जाता है यद्यपि, यदि ह्रास हानि विनिर्दिष्ट घटनाओं या अर्जन की तारीख के बाद घटित हो रही परिस्थितियों में परिवर्तनों से सम्बंधित होती है, तो ह्रास हानि अर्जन की तारीख पर अभिज्ञात गुडविल (पूँजी आरक्षिति) के प्रति आबंटित रकम के प्रति समायोजन के रूप में नहीं, बल्कि लेखा मानक 28, *आस्तियों के ह्रास* के अधीन अभिज्ञात होती है।

83. लेखा मानक 28, आस्तियों के ह्रास की अपेक्षाओं के साथ, एक उद्यम को, ऐसी कोई सूचना न होने पर भी कि आस्ति ह्रासित हुई है, कम से कम प्रत्येक वित्तीय वर्ष के अंत पर निम्नलिखित अमूर्त आस्तियों की वसूली योग्य रकम का अनुमान लगाना चाहिए:

(क) ***एक अमूर्त आस्ति जो अभी तक उपयोग के लिए उपलब्ध नहीं है ; और***

(ख) ***एक अमूर्त आस्ति जो आस्ति के उपयोग हेतु उपलब्ध होने की तारीख से दस वर्ष से अधिक लम्बी अवधि के दौरान क्रमिक अपाकरण होता है।***

वसली योग्य रकम, लेखा मानक 28, आस्तियों के ह्रास के अधीन निर्धारित की जानी चाहिए और ह्रास हानियाँ तद्नुसार अभिज्ञात होनी चाहिए।

84. अपनी लागत को वसूल करने के लिए, सारभूत भावी अर्थिक लाभ उत्पन्न करने की एक अमूर्त आस्ति की क्षमता प्रायः तब तक बड़ी अनिश्चितता के प्रति अधीन होती है जब तक कि आस्ति प्रयोग हेतु उपलब्ध नहीं होती हैं। इसीलिए, यह मानक अपेक्षा करता है कि एक उद्यम, कम से कम वार्षिक तौर पर ह्रास के लिए उस अमूर्त अस्ति की कैरिंग रकम का परीक्षण करे जो अभी उपयोग के लिए उपलब्ध नहीं है।

85. कभी-कभी यह पहचानना कठिन होता है कि क्या एक अमूर्त आस्ति ह्रासित हो सकती है या नही, क्योंकि, अन्य बातों के अलावा, यह आवश्यक नहीं है कि अप्रचलन का कोई स्पष्ट साक्ष्य हो। यह कठिनाई विशेषकर तब उत्पन्न होती है जब आस्ति के पास लम्बा उपयोगी जीवनकाल होता है। परिणामस्वरूप, यह मानक कम से कम, तब एक अमूर्त आस्ति की वसूली योग्य रकम की वार्षिक गणना की अपेक्षा करता है, जब इसके प्रयोग हेतू उपलब्ध होने की तारीख से इसका उपयोगी जीवनकाल दस साल अधिक हो जाता है।

86. जब भी एक अमूर्त आस्ति का वर्तमान अनुमानित कुल उपयोगी जीवन, इसके प्रयोग हेतु उपलब्ध होने के समय से दस वर्ष से अधिक होता है, तो अमूर्त आस्ति पर वार्षिक ह्रास परीक्षण की आवश्यकता लागू होती है। इसीलिए, यदि एक अमूर्त आस्ति का उपयोगी जीवनकाल, प्रारंभिक अभिज्ञान पर 10 वर्ष से कम आँका गया था, किन्तु पश्चात्वर्ती व्यय द्वारा इसके प्रयोग हेतु उपलब्ध होने से लेकर उपयोगी जीवनकाल बढ़कर कर दस वर्ष से अधिक हो जाता है, तो उद्यम पैरा 83 (ख) के अंतर्गत अपेक्षित ह्रास परीक्षण का निष्पादन करता है और पैरा 94 (क) के अधीन अपेक्षाओं को प्रकट भी करता है।

निवृत्तियाँ और व्ययन

87. एक अमूर्त आस्ति के व्ययन पर या जब इसके प्रयोग और उत्तरगामी व्ययन से कोई भावी आर्थिक लाभ प्रत्याशित न हो तो, उसको गैर-अभिज्ञात कर देना (तुलनपत्र से हटा देना) चाहिए।

88. अमूर्त आस्ति की निवृत्तियों या व्ययन से उत्पन्न हो रहे लाभों या हानियों को शुद्ध व्ययन प्राप्तियों और आस्ति की कैरिंग रकम के बीच अंतर के रूप में निर्धारित करना चाहिए और लाभ और हानि के विवरण में आय या व्यय के रूप में अभिज्ञात करना चाहिए।

89. एक ऐसी अमूर्त आस्ति को जो सक्रिय प्रयोग से निवृत्त हो गयी है और व्ययन के लिए धारित की गई है, तब इसे उस तारीख पर जब आस्ति को सक्रिय प्रयोग से निवृत्त किया गया है इसकी कैरिंग रकम पर ले जाया जाता है। कम से कम, प्रत्येक वित्तीय वर्ष के अंत पर, उद्यम लेखा मानक 28, *आस्तियों के ह्रास* के अधीन लेखा के लिए आस्ति का परीक्षण करता है और किसी भी ह्रास हानि के तद्नुसार अभिज्ञात करता है।

प्रकटन

सामान्य

90. वित्तीय विवरणों को अमूर्त आस्ति के प्रत्येक वर्ग के लिए, आंतरिक रूप से उत्पादित अमूर्त आस्तियों और अन्य अमूर्त आस्तियों के बीच अंतर स्पष्ट करते हुए निम्नलिखित को प्रकट करना चाहिए :

(क) उपयोगी जीवनकाल या प्रयुक्त क्रमिक अपाकरण दरें ;

(ख) प्रयुक्त क्रमिक अपाकरण पद्धति ;

(ग) अवधि के प्रारम्भ और अंत पर सकल कैरिंग रकम और संचित क्रमिक अपाकरण (सचित ह्रास हानियों के साथ जोड़कर) ;

(घ) अवधि के प्रारम्भ और अंत पर, निम्नलिखित दर्शाते हुए कैरिंग रकम का समाधान:

(i) आंतरिक विकास और समामेलन से उत्पन्न वृद्धियों को पृथक रूप से इंगित करते हुए ;

(ii) निवृत्तियाँ और व्ययन ;

(iii) अवधि के दौरान लाभ और हानि के विवरण में अभिज्ञात ह्रास हानियाँ (यदि हों तो) ;

(iv) अवधि के दौरान लाभ और हानि विवरण में उलटी गयी ह्रास हानियाँ (यदि हो तो);

(v) अवधि के दौरान अभिज्ञात क्रमिक अपाकरण ; और

(vi) अवधि के दौरान कैरिंग रकम में अन्य परिवर्तन।

91. अमूर्त आस्तियों का एक वर्ग, उद्यम के प्रचालनों में समान प्रकृति और प्रयोग की आस्तियों का समूहीकरण है। पृथक वर्ग के उदाहरणों में निम्नलिखित हो सकते हैं:

(क) ब्रांड नाम ;

(ख) मास्टहेड्स तथा प्रकाशन शीर्षक ;

(ग) कम्प्यूटर सॉफटवेयर ;

(घ) अनुज्ञप्ति और विशेषाधिकार ;

(ङ) कॉपीराइट और पेटेंट और अन्य औद्योगिक सम्पदा अधिकार, सेवा और प्रचालन अधिकार ;

(च) बनाने का तरीका, सूत्र, मॉडल, नमूने और प्रारूप; तथा

(छ) विकास के अंतर्गत अमूर्त आस्तियाँ।

उपरोक्त उल्लिखित वर्गों को छोटे-छोटे (बड़े) वर्गों में बाँटा (एकत्र) किया जाता है, यदि इसका परिणाम, वित्तीय विवरणों के प्रयोगकर्ताओं के लिए अधिक उपयुक्त जानकारी में निकलता है।

92. एक उद्यम पैरा 90 (घ); (iii) और; (iv) में अपेक्षित जानकारी के साथ लेखा मानक 28, *आस्तियों के ह्रास* के अंतर्गत ह्रासित अमूर्त आस्तियों की जानकारी प्रकट करता है।

93. एक उद्यम, लेखा मानक 5, 'अवधि हेतु शुद्ध लाभ या हानि, पूर्वावधि मदें और लेखा नीतियों में परिवर्तन', के अनुसार लेखा अनुमान या लेखा नीति में परिवर्तन को प्रकट करता है जैसे कि वह परिवर्तन, जो क्रमिक अपाकरण पद्धति, क्रमिक अपाकरण अवधि या अनुमानित अवशिष्ट मूल्यों में परिवर्तनों से उत्पन्न होते हैं।

94. वित्तीय विवरणों को निम्नलिखित को भी प्रकट करना चाहिए :

(क) ***यदि एक अमूर्त आस्ति का क्रमिक अपाकरण दस साल से अधिक अवधि के दौरान होता है, तो इसका कारण कि यह क्यों माना गया कि अमूर्त आस्ति का उपयोगी जीवनकाल, आस्ति के प्रयोग हेतु उपलब्ध होने की तारीख से दस वर्ष से अधिक होगा। यह कारण देने में उद्यम को उस घटक (घटकों) का वर्णन करना चाहिए जो आस्ति के उपयोगी जीवनकाल के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं ;***

(ख) ***किसी भी व्यक्तिगत अमूर्त आस्ति जो पूर्ण रूप में उद्यम के वित्तीय विवरणों के प्रति महत्वपूर्ण है, उसका एक वर्णन, उसकी कैरिंग रकम और बाकी बची क्रमिक अपाकरण की अवधि ; और***

(ग) ***उस अमूर्त आस्ति की विद्यमानता और कैरिंग रकम जिसका स्वामित्व निर्बंधित है और दायित्वों के लिए प्रतिभूति रूप में निवेदित अमूर्त आस्तियों की कैरिंग रकम;***

(घ) ***अमूर्त आस्तियों के अर्जन के लिए प्रतिबद्धता की रकम।***

95. जब उद्यम दस साल से अधिक अवधि के दौरान क्रमिक अपाकरण की गयी अमूर्त आस्ति के उपयोगी जीवनकाल के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले घटक (घटकों) का वर्णन करता है, तो उद्यम पैरा 64 में दिए गए घटकों की सूची पर विचार करता है।

अनुसंधान तथा विकास व्यय

96. वित्तीय विवरणों को अवधि के दौरान, एक व्यय के रूप में अभिज्ञात अनुसंधान और विकास व्यय की कुल रकम को प्रकट करना चाहिए।

97. अनुसंधान तथा विकास व्यय में वे सभी व्यय निहित हैं, जो अनुसंधान और विकास के क्रियाकलापों से प्रत्यक्षतः सम्बंधित हैं या जो एक युक्तियुक्त और सुसंगत आधार पर ऐसे क्रियाकलापों को आबंटित किए जा सकते हैं (पैरा 96 में अपेक्षित प्रकटन के लिए सम्मिलित किए जाने वाले व्यय के प्रकार पर मार्गदर्शन के लिए पैरा 53-54 देखें)।

अन्य जानकारी

98. ऐसी किसी भी पूरी तरह क्रमिक अपाकरण की गयी अमूर्त आस्ति के वर्णन के लिए जो अभी भी प्रयोग में है, एक उद्यम को प्रोत्साहित किया जाता है, पर यह अपेक्षित नहीं है।

संक्रमणकालीन उपबंध[45]

99. जहाँ, इस मानक के प्रभाव में आने की तारीख पर, एक उद्यम अमूर्त मद का क्रमिक अपाकरण न करने की या इस मानक के पैरा 63 के अधीन निर्धारित अवधि की तुलना में अधिक लम्बी अवधि के दौरान एक अमूर्त मद के क्रमिक अपाकरण की नीति का पालन कर रहा हो और इस मानक के प्रभाव में आने की तारीख पर पैरा 63 में निर्धारित अवधि समाप्त हो गई हो, वहाँ उस मद के संदर्भ में तुलनपत्र में प्रकट हो रही कैरिंग रकम को, राजस्व आरक्षिति के आरंभिक अतिशेष के प्रति समरूप समायोजन के साथ समाप्त कर देना चाहिए।

इस मानक के प्रभाव में आने की तारीख पर, पैरा 63 में निर्धारित अवधि के समाप्त न होने की स्थिति में और:

(क) ***यदि उद्यम अमूर्त मद का क्रमिक अपाकरण न करने की लेखा नीति का पालन कर रहा हो, तो अमूर्त मद की कैरिंग रकम का इस प्रकार पुनर्कथन करना चाहिए, जैसे कि संचित क्रमिक अपाकरण हमेशा से ही, राजस्व आरक्षिति के आरंभिक अतिशेष के प्रति समरूप समायोजन के साथ, इस मानक के अंतर्गत निर्धारित हुआ हो। पुनर्कथित कैरिंग रकम का अतिशेष का अवधि के दौरान क्रमिक अपाकरण किया जाना चाहिए, जैसा कि पैरा 63 में निर्धारित है।***

[45] पैरा 99-100 में दिए गए संक्रमणकालीन उपबंध केवल कंपनी (लेखा मानक) नियम, 2006 के अधीन अधिसूचित लेखा मानकों लिए प्रासंगिक है, जो समय के साथ संशोधित किये गए हैं।

IndiaCode

(ख) *यदि उद्यम द्वारा अनुसरित लेखा नीति के अनुसार शेष अवधिः*

(i) *पैरा 63 के अंतर्गत निर्धारित शेष अवधि की तुलना में छोटी है, तो अमूर्त मद की कैरिंग रकम का उद्यम द्वारा अनुसरित लेखा नीति के अनुसार शेष अवधि के दौरान क्रमिक अपाकरण चाहिए ;*

(ii) *पैरा 63 के अंतर्गत निर्धारित शेष अवधि की तुलना में लम्बी है, तो अमूर्त मद की कैरिंग रकम का इस प्रकार पुनर्कथन करना चाहिए, जैसे कि, संचित क्रमिक अपाकरण हमेशा से ही, राजस्व आरक्षिति के आरम्भिक अतिशेष के प्रति समरूप समायोजन के साथ इस मानक के अंतर्गत निर्धारित हो रहा था। पुनर्कथित कैरिंग रकम का अतिशेष अवधि के दौरान क्रमिक अपाकरण करना चाहिए, जैसा कि पैरा 63 में निर्धारित है।*

100. मानक से संलग्न दृष्टांत ख पैरा 99 के लागू होने का दृष्टांत देता है।

दृष्टांत क

यह दृष्टांत, जो लेखा मानक का भाग नही है, आंतरिक रूप से प्रयुक्त सॉफटवेयर और वेब-साइट लागतों के प्रति मानक में अधिकथित सिद्धांतों की दृष्टांत स्वरूप प्रयोज्यता प्रदान करता है। इसका प्रयोजन, लेखा मानक के अर्थ को स्पष्ट करने में सहायता हेतु लेखा मानक के लागू होने को दृष्टांतों से स्पष्ट करना है।

I. आंतरिक रूप से प्रयुक्त कम्प्यूटर सॉफटवेयर के प्रति लेखा मानक की दृष्टांत स्वरूप प्रयोज्यता

आंतरिक उपयोग के लिए कम्प्यूटर सॉफटवेयर आंतरिक रूप से उत्पादित या अर्जित किया जा सकता है।

आंतरिक रूप से अर्जित कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर

1. आंतरिक उपयोग के लिए, आंतरिक रूप से उत्पादित किया गया कम्प्यूटर सॉफटवेयर, एकमात्र रूप से उद्यम द्वारा उद्यम की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विकसित या संशोधित किया जाता है और किसी भी अवस्था पर इसके विक्रय की योजना नहीं होती है।

2. आंतरिक रूप से उत्पादित सॉफ्टवेयर के विकास की अवस्थाओं को निम्नलिखित दो चरणों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

- प्रारंभिक परियोजना प्रक्रम, अर्थात्, अनुसंधान चरण
- विकास चरण

प्रारंभिक परियोजना प्रक्रम

3. प्रारंभिक परियोजना प्रक्रम पर आंतरिक रूप से उत्पादित सॉफ्टवेयर को आस्ति रूप में अभिज्ञात नहीं करना चाहिए। प्रारंभिक परियोजना प्रक्रम में उपगत किए गए व्यय को उस समय व्यय रूप में अभिज्ञात करना चाहिए जब यह उपगत किया जाता है। ऐसे प्रतिपादन का कारण यह है कि सॉफटवेयर परियोजना के इस प्रक्रम पर एक उद्यम यह नही प्रदर्शित सकता है कि ऐसी कोई आस्ति विद्यमान है जिसमें भावी आर्थिक लाभ अधिसम्भाव्य हैं।

4. जब कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर परियोजना, प्रारंभिक परियोजना में होती है, तो उद्यम:

(क) एक विनिर्दिष्ट समय पर वैकल्पिक परियोजनाओं के बीच संसाधनों के आबंटन का नीतिगत निर्णय लेता है। उदाहरण के लिए, कार्यक्रमक को एक नई वेतन पत्रक प्रणाली विकसित करनी चाहिए या अपने प्रयासों को प्रचालित वेतन पत्रक प्रणाली की समस्याओं को सुधारने की ओर लगाना चाहिए।

(ख) उस कम्प्यूटर सॉफटवेयर परियोजना की निष्पादनता प्रत्याशाओं (अर्थात्, वह क्या है जिसे यह सॉफ्टवेयर से करवाना चाहते हैं) और प्रणाली की प्रत्याशाओं को निर्धारित करता है, जिसका इसे जिम्मा लेना है।

(ग) विनिर्दिष्ट निष्पादन प्रत्याशा को प्राप्त करने के लिए वैकल्पिक साधनों को ढूँढता है। उदाहरण के लिए, क्या एक इकाई को सॉफ्टवेयर बनाना चाहिए या खरीदना चाहिए? क्या सॉफटवेयर को मेनफ्रेम प्रणाली पर या क्लाइंट सर्वर प्रणाली पर चलाना चाहिए।

(घ) यह निर्धारित करता है कि निष्पादनता की प्रत्याशाओं को प्राप्त करने के लिए आवश्यक तकनीक विद्यमान है।

(ङ) सॉफ्टवेयर के विकास और/या उसके संस्थापन में मदद के लिए परामर्शी का चयन कर सकता है।

विकास प्रक्रम

5. विकास चरण पर उत्पादित हो रहे आंतरिक रूप से उत्पादित सॉफ्टवेयर को तब और केवल तभी एक आस्ति के रूप में अभिज्ञात किया जाना चाहिए, जब कोई उद्यम निम्नलिखित सभी को प्रदर्शित कर सके:

(क) आं तरिक रूप से उत्पादित सॉफ्टवेयर को पूर्ण करने की तकनीकी साध्यता, ताकि यह आंतरिक उपयोग के लिए उपलब्ध हो सके;

(ख) आंतरिक रूप से उत्पन्न सॉफ्टवेयर को पूर्ण करने का और आशयित कार्यों के निष्पादन का उद्यम का आशय। उदाहरण के लिए, आंतरिक रूप से उत्पादित सॉफ्टवेयर को पूरा करने का आशय तभी प्रदर्शित होता है यदि उद्यम सॉफ्टवेयर परियोजना की वित्त पोषण के प्रति वचनबद्ध हो ;

(ग) सॉफ्टवेयर के उपयोग करने की उद्यम की सामर्थ्य ;

(घ) सॉफ्टवेयर अधिसंभाव्य भावी आर्थिक लाभ कैसे उत्पन्न करेगा। अन्य बातों के साथ, उद्यम को सॉफ्टवेयर की उपयोगिता भी दर्शानी चाहिए ;

(ङ) विकास को पूरा करने और सॉफ्टवेयर का प्रयोग करने के लिए पर्याप्त तकनीकी, वित्तीय और अन्य संसाधनों की उपलब्धता ; और

(च) सॉफ्टवेयर के विकास के दौरान, इससे प्रति चिन्हित किए जाने योग्य व्यय को विश्वसनीय रूप से मापने की उद्यम की क्षमता।

6. आंतरिक रूप से उत्पादित सॉफ्टवेयर के संदर्भ में विकास के क्रियाकलापों के उदाहरणों में निम्नलिखित सम्मिलित हैं:

(क) अभिकल्पना जिसमें प्रोग्राम के ब्यौरे की अभिकल्पना सम्मिलित है जो कि एक प्रक्रिया है, जो अपने अत्याधिक व्यापक, तर्कसंगत रूप के प्रति, उत्पाद कार्य, लक्षण और तकनीकी अपेक्षाएँ पूरी करती है और कोडिंग के लिए तत्पर रहती है।

(ख) कोडिंग, जिसमें व्यापक प्रोग्राम अभिकल्पना में वर्णित अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए कम्प्यूटर भाषा में व्यापक अनुदेश उत्पादित करना सम्मिलित है। कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर की कोडिंग, व्यापक प्रोग्राम अभिकल्पना से पहले, या इसके साथ-साथ या इसके बाद आरम्भ हो सकती है।

विकास क्रियाकलाप की इन प्रक्रमों के अंत पर, उद्यम के पास एक कार्यकारी मॉडल होता है, जो सभी बड़े योजनागत कार्यों के निष्पादन में सक्षम कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर का एक प्रवर्तनशील प्रारूप है और प्रारंभिक परीक्षण के लिए तैयार है (''बीटा'' प्रारूप)।

(ग) परीक्षण, जो यह निर्धारित करने के लिए आवश्यक उपाय करने की प्रक्रिया है, कि कोडेड कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर उत्पाद, उत्पाद अभिकल्पना में व्यक्त कार्य, विशेषता और तकनीकी अपेक्षाओं को पूरा करता है।

परीक्षण प्रक्रिया के अंत में, उद्यम के पास आंतरिक उपयोग करने के लिए सॉफ्टवेयर का मास्टर प्रारूप होता है, जो संबद्ध उपयोक्ता प्रलेखीकरण और प्रशिक्षण सामग्रियों के साथ एक संपूर्ण प्रारूप होता है।

आंतरिक रूप से उत्पादित सॉफ्टवेयर की लागत

7. आंतरिक रूप से उत्पन्न सॉफ्टवेयर की लागत उस समय से उपगत व्यय का योग है जब सॉफ्टवेयर ने पहली बार, इस मानक के पैरा 20 और 21 और उपरोक्त पैरा 5 में यथाकथित अमूर्त आस्ति हेतु अभिज्ञान की कसौटी को पूरा किया था। ऐसा व्यय जो यथापूर्वोक्त कथित अभिज्ञान मापदंड को पूरा नहीं करता और जो पूर्ववर्ती वित्तीय विवरणों में उपगत किया गया है, बाद में अभिज्ञान मापदण्ड को पूरा करने पर भी, पुनः स्थापित नहीं किया जाना चाहिए।

8. आंतरिक रूप से उत्पादित कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर की लागत में वे सभी व्यय सम्मिलित होते हैं, जिन्हें तर्कसंगत और संगत आधार पर, सॉफ्टवेयर के आशयित उपयोग के लिए इसके निर्माण के प्रति प्रत्यक्षतः चिन्हित या आबंटित किया जा सकता है। लागत में सम्मिलित हैं:

(क) सॉफ्टवेयर को विकसित करने में प्रयुक्त और उपभोग की गई सामग्रियों और सेवाओं पर व्यय ;

(ख) सॉफ्टवेयर को विकसित करने में प्रत्यक्षतः लगे कर्मचारियों के वेतन, मज़दूरियाँ और अन्य रोज़गार संबंधित लागतें ;

(ग) ऐसा कोई भी व्यय जो सॉफ्टवेयर को उत्पादित करने में प्रत्यक्षतः चिन्हित किया जा सकता है ; और

(घ) वे उपरिव्यय जो सॉफ्टवेयर को उत्पन्न करने के लिए आवश्यक हैं और जिन्हें तर्कसंगत और संगत आधार पर सॉफ्टवेयर के प्रति आबंटित किया जा सकता है (उदाहरण के लिए, स्थिर आस्तियों के अवक्षयण, बीमा प्रीमियमों और किराए का आबंटन)। उपरिव्ययों का आबंटन, सूचीबद्ध सामानों के प्रति उपरिव्यय के आबंटन में प्रयुक्त आधारों के समरूप आधारों पर किया जाता है।

9. निम्नलिखित आंतरिक रूप से उत्पादित सॉफ्टवेयर की लागत के घटक नही हैं:

(क) बिक्री, प्रशासन और अन्य सामान्य उपरिव्यय व्यय जब तक कि इस व्यय को सॉफ्टवेयर के विकास के प्रति प्रत्यक्षतः चिन्हित न किया जा सके ;

(ख) स्पष्टतः पहचानी गई अक्षमताएँ और प्रारंभिक प्रचालन हानियाँ जो सॉफ्टवेयर के योजनागत निष्पादन प्राप्त करने से पहले उपगत की गई थीं ; और

(ग) आंतरिक रूप से उत्पन्न सॉफ्टवेयर के प्रयोग के लिए स्टॉफ के प्रशिक्षण पर किया गया व्यय।

आंतरिक उपयोग के लिए अर्जित सॉफ्टवेयर

10. आंतरिक उपयोग के लिए अर्जित सॉफ्टवेयर की लागत को आस्ति रूप में तभी अभिज्ञात करना चाहिए, यदि यह इस मानक के पैरा 20 और 21 में विहित अभिज्ञान की कसौटी को पूरा करे।

11. आंतरिक उपयोग के लिए खरीदे गए सॉफ्टवेयर की लागत में, किसी भी आयात शुल्क और अन्य करों (उन करों से भिन्न जो उद्यम द्वारा कर प्राधिकारियों से तत्पश्चात् वसूली योग्य होते हैं) सहित इसकी क्रय कीमत और सॉफ्टवेयर को उपयोग हेतु तैयार करने के लिए कोई भी प्रत्यक्षतः चिन्हित व्यय सम्मिलित होता है। लागत निकालने में किसी भी प्रकार की व्यापार छूटों और रिबेटों को घटाया जाता है। लागत के निर्धारण में, मानक के पैरा 24 से 34 तक, जो भी उपयुक्त है, उन पर विचार करने की आवश्यकता होती है।

पश्चात्वर्ती व्यय

12. उद्यम, विद्यमान सॉफ्टवेयर प्रणालियों के संशोधन में पर्याप्त लागत उपगत कर सकता है। सॉफ्टवेयर के क्रय या इसके पूर्ण होने के बाद सॉफ्टवेयर पर किए गए पश्चात्वर्ती व्यय को व्यय रूप में तब अभिज्ञात करना चाहिए जब यह उपगत किया जाता है, जब तक:

(क) यह अधिसंभाव्य न हो कि व्यय सॉफ्टवेयर को इसके मूलतः आँकलित निष्पादन के स्तर की तुलना में अधिक भावी आर्थिक लाभ उत्पन्न करने के लिए सक्षम बनाएगा; और

(ख) व्यय सॉफ्टवेयर के प्रति विश्वसनीयता से मापा और चिह्नित किया जा सकता है।

यदि ये शर्तें पूरी होती हैं, तो पश्चात्वर्ती व्यय को सॉफ्टवेयर की कैरिंग रकम में जोड़ा जाना चाहिए। उन भावी आर्थिक लाभों, जिनका एक उद्यम, विद्यमान सॉफ्टवेयर प्रणालियों के मूलतः आंकलित निष्पादन के स्तर से अपेक्षा कर सकता है, को प्रत्यावर्तित करने या बनाए रखने के लिए उपगत की गई लागतों को केवल तभी व्यय रूप में अभिज्ञात किया जाता है, जब प्रत्यावर्तित या अनुरक्षण कार्य कार्यान्वित हुआ हो।

क्रमिक अपाकरण अवधि

13. सॉफ्टवेयर की अवक्षयण योग्य रकम को इसके उपयोगी जीवनकाल के सर्वोत्तम अनुमान के दौरान एक क्रमबद्ध आधार पर आबंटित किया जाना चाहिए। क्रमिक अपाकरण तब प्रारंभ होना चाहिए जब सॉफ्टवेयर उपयोग के लिए उपलब्ध हो।

14. इस मानक के अनुसार, एक खण्डनीय उपधारणा है कि अमूर्त आस्ति का उपयोगी जीवनकाल, आस्ति के उपयोग हेतु उपलब्ध होने की तारीख से दस वर्ष से अधिक नहीं होगा। तथापि, प्रौद्योगिकी में तीव्र परिवर्तनों के उल्लिखित इतिहास को देखते हुए, कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर, तकनीकी अप्रचलन के प्रति ग्रहणशील है। इसीलिए, यह अधिसंभाव्य है कि सॉफ्टवेयर का उपयोगी जीवन काल काफी छोटा होगा, जैसे कि 3 से 5 वर्ष तक।

क्रमिक अपाकरण पद्धति

15. प्रयुक्त क्रमिक अपाकरण पद्धति को वह पैंटर्न प्रतिबिम्बित करना चाहिए जिसमें उद्यम द्वारा सॉफ्टवेयर के आर्थिक लाभों का उपभोग किया जाता है। यदि यह पैंटर्न विश्वसनीय रूप से निर्धारित न किया जा सके, तो सरल-रेखा पद्धति का प्रयोग करना चाहिए। प्रत्येक अवधि के लिए क्रमिक अपाकरण प्रभार को व्यय के रूप में तब तक अभिज्ञात करना चाहिए जब तक कि अन्य लेखा मानक इसको अन्य आस्ति की कैरिंग रकम में सम्मिलित करने की अनुमति न दे या अपेक्षा न करे। उदाहरण के लिए, उत्पादन प्रक्रिया में प्रयुक्त सॉफ्टवेयर का क्रमिक अपाकरण, सूचिबद्ध सामान की कैरिंग रकम में सम्मिलित किया जाता है।

II. वेब-साइट लागतों के प्रति लेखा मानक के लागू करने का दृष्टांत

1. एक उद्यम अपनी वेबसाइट को विकसित करते हुए, इसकी वृद्धि और उसका अनुरक्षण करते हुए आंतरिक व्ययों को उपगत कर सकता है। वेबसाइट विभिन्न प्रयोजनों के लिए प्रयोग की जा सकती है जैसे कि उत्पादों और सेवाओं का प्रोत्साहन और विज्ञापन, इलेक्ट्रोनिक सेवाएँ प्रदान करना और उत्पादों तथा सेवाओं को बेचना।

2. वेब साइट के विकास की प्रक्रमों को निम्नलिखित रूप से वर्णित किया जा सकता है:

(क) **योजना** - इसमें उद्यम के लिए उपयुक्तता का अध्ययन, प्रयोजनों और विनिर्देशों को परिभाषित करना, विकल्पों का मूल्यांकन तथा प्राथमिकताओं का चयन सम्मिलित होता है ;

(ख) **उपयोजन और आधार-तंत्र विकास** - इसमें किसी कार्यक्षेत्र का नाम प्राप्त करना, हार्डवेयर और आपरेटिंग साफ्टवेयर क्रय करना और विकसित करना, विकसित उपायोजनों का संस्थापन और तनाव परीक्षण सम्मिलित होता है ; और

(ग) **ग्राफिकल अभिकल्पना और विषय-वस्तु संबंधी विकास** - इसमें वेब पृष्ठों के रूप की अभिकल्पना तैयार करना और वेब साइट के प्रयोग हेतु उपलब्ध होने से पहले वेब-साइट पर या तो प्रकृति में पाठीय या ग्राफिकल जानकारी को सृजित करना, खरीदना, तैयार करना और अपलोडिंग सम्मिलित होता है। यह जानकारी या तो उन पृथक डाटाबेसों में संचय की जा सकती है जो वेब साइट में जोड़े जाते हैं (या वेब साइट से पहुँचते हैं) या वेब पेजों में प्रत्यक्षतः कोड की जाती है।

3. एक बार वेबसाइट का विकास पूरा हो जाने और वेब साइट के प्रयोग हेतु उपलब्ध हो जाने पर, वेब साइट एक प्रचालन प्रक्रम प्रारंभ करती है। इस प्रक्रम के दौरान, एक उद्यम इस वेबसाइट की उपयोजनों, आधार-तंत्र, ग्राफिकल अभिकल्पना और विषय-वस्तु को बनाए रखता है तथा उनकी वृद्धि करता है।

4. वेब साइट से संबंधित हार्डवेयर (उदाहरण, वैब सर्वर, स्टेजिंग सर्वर, उत्पादन सर्वर और इन्टरनेट कनेक्शन्स) को क्रय करने, विकसित करने, बनाए रखने और वृद्धि करने के लिए व्ययों को इस मानक के अधीन नहीं बल्कि लेखा मानक 10ए *स्थिर आस्तियों के लिए लेखा*, के अधीन स्पष्टीकृत होते हैं। इसके अतिरिक्त, जब एक उद्यम एक इन्टरनेट सेवा प्रदाता से उसके निजी सर्वर पर अपनी वेब साइट होस्ट करने के लिए व्यय करता है, तो इसको व्यय की तरह अभिज्ञात करते हैं।

5. इस मानक के पैरा 6 में एक अमूर्त आस्ति को वस्तुओं या सेवाओं के उत्पादन या पूर्ति में प्रयोग के लिए, अन्य के लिए किराए के लिए या प्रशासनिक प्रयोजनों के लिए धारण की गई है, भौतिक सारतत्व के बिना, एक पहचाने जाने योग्य गैर-मौद्रिक आस्ति के रूप में परिभाषित किया गया है। इस मानक का पैरा 7, अमूर्त आस्ति के सामान्य उदाहरण के रूप में कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर है। सादृश्यतः, एक वेबसाइट, अमूर्त आस्ति का एक अन्य उदाहरण है। तदनुसार, एक उद्यम द्वारा स्वयं अपने प्रयोग के लिए विकसित वेब साइट, आंतरिक रूप से उत्पादित वह अमूर्त आस्ति है जो इस मानक की आवश्यकताओं के अध्यधीन है।

6. एक उद्यम को इस मानक की अपेक्षओं को स्वयं अपनी वेबसाइट के विकास, उसकी वृद्धि और उसे बनाए रखने के लिए किए गए आंतरिक व्यय के प्रति लागू करना चाहिए। इस मानक का पैरा 55 उपबंध करता है कि अमूर्त आस्ति पर किए गए व्यय को, उपगत किए जाने पर, तब तक एक व्यय आस्ति के रूप में अभिज्ञात किया जाना चाहिए जब तक कि यह उस अमूर्त आस्ति की लागत का भाग नहीं बनता, जो मानक के पैरा 19-54 में व्यक्त अभिज्ञान कसौटी पर खरी उतरती है। इस मानक का पैरा 56, शुरूआती क्रियाकलापों पर किए गए व्यय को, उनके उपगत किए जाने पर, व्यय रूप में अभिज्ञात करने की अपेक्षा करता है। उद्यम द्वारा इसके अपने प्रयोग के लिए एक वेबसाइट का विकास करना उस सीमा तक एक शुरूआती

क्रियाकलाप नहीं है जब तक कि आंतरिक रूप से उत्पादित एक अमूर्त आस्ति का निर्माण किया जाता है। किसी उद्यम पर स्वयं अपनी वेब साइट को विकसित करने के लिए उपगत किए गए व्यय के प्रति, एक अमूर्त आस्ति के अभिज्ञान और प्रारंभिक माप हेतु सामान्य अपेक्षाओं के साथ इस मानक के 39-54 पैरा में व्यक्त अपेक्षाओं और मार्गदर्शन भी लागू होते है। जैसा कि इस मानक के 52-54 पैरा में वर्णित है, वेबसाइट की लागत में वे सभी व्यय सम्मिलित होते हैं, जो एक युक्तियुक्त और संगत आधार पर, इसके आशयित प्रयोग के लिए आस्ति के निर्माण, उत्पादन और इसे तैयार करने के लिए प्रत्यक्षतः चिन्हित या आबंटित किये जा सकते हैं।

उद्यम को उस प्रत्येक क्रियाकलाप की प्रकृति का जिसके लिए व्यय उपगत किया गया है (जैसे कि, कर्मचारियों का प्रशिक्षण और वेबसाइट का अनुरक्षण) और वेबसाइट के विकास की या विकास के पश्चात् के प्रक्रम का मूल्यांकन करना चाहिए:

(क) इस मानक का पैरा 41, अनुसंधान पर किए गए व्यय को (या आंतरिक परियोजना के अनुसंधान प्रक्रम पर किए गए व्यय को) उनके उपगत किए जाने पर एक व्यय रूप में अभिज्ञात करने की अपेक्षा करता हैं। इस मानक के पैरा 43 में दिए गए उदाहरण वेब साइट के विकास के योजना प्रक्रम में किये गये क्रियाकलापों के समरूप है। परिणामस्वरूप, वेबसाइट के विकास के योजना प्रक्रम में उपगत किए गए व्ययों को उनके उपगत किए जाने पर व्यय रूप में अभिज्ञात किया जाता है।

(ख) इस मानक का पैरा 44, एक आंतरिक परियोजना के विकास प्रक्रम से उत्पन्न हो रही अमूर्त आस्ति के रूप में अभिज्ञान किए जाने की अपेक्षा करता है यदि कोई उद्यम यह प्रदर्शित कर सके कि वह विनिर्दिष्ट छः कसौटियों को पूरा करता है। उपयोजन और आधार-तंत्र विकास और ग्राफिकल अभिकल्पना तथा विषय-वस्तु विकास, विकास प्रक्रम के समरूप हैं। अतः इन प्रक्रमों में उपगत किए गए व्यय को अमूर्त आस्ति के रूप में तब, और केवल तभी अभिज्ञात करना चाहिए, यदि कोई अमूर्त आस्ति के अभिज्ञान और प्रारंभिक मापन हेतु सामान्य अपेक्षाओं को पूरा करने के अतिरिक्त, कोई उद्यम इस मानक के पैरा 44 में अधिकथित उन मदों को प्रदर्शित कर सकता है। इसके साथ ही :

(i) एक उद्यम लेखा मानक 28, *आस्तियों का ह्रास* में व्यक्त सिद्धांतों का प्रयोग करके यह दर्शाने में सक्षम हो सकता है कि इसकी वेबसाइट पैरा 44 (घ) के अधीन अधिसम्भाव्य भावी आर्थिक लाभ कैसे उत्पन्न करेगी। इसमें वह परिस्थितियाँ सम्मिलित होती हैं जिनकी वेबसाइट एकमात्र या प्राथमिक रूप से उद्यम के उत्पादों और सेवाओं के प्रोत्साहन तथा विज्ञापन के लिए विकसित की जाती है। वेबसाइट से प्राप्त होने वाले भावी आर्थिक लाभों को आँकते हुए और लेखा मानक 28, *आस्तियों का ह्रास* में वर्णित सिद्धांतों का प्रयोग करते हुए, यह प्रदर्शित करना कि वेबसाइट पैरा 44 (घ) के अधीन अधिसंभाव्य भावी आर्थिक लाभ कैसे उत्पन्न करेगी, विशेष रूप से उस उद्यम के लिए कठिन हो सकता है जो वेबसाइट को एकमात्र या प्राथमिक रूप से अपने उत्पादों और सेवाओं के विज्ञापन के लिए और संवर्धन के लिए विकसित करता है; यह संभव हो सकता है कि आर्म्थ लेंग्थ संव्यवहार में वेबसाइट के विक्रय से प्राप्त होने योग्य रकम का या इसके सतत् प्रयोग और अंततः व्ययन से उत्पन्न होने वाले भावी रोकड़ प्राप्तियाँ और निर्गमों, का विश्वसनीय रूप से अनुमान लगाने में जानकारी उपलब्ध न हो। ऐसी परिस्थिति में, एक उद्यम रोकड़-उत्पन्न करने वाली उस इकाई के भावी आर्थिक लाभों को निर्धारित करता है जिससे वेबसाइट संबंधित होती है, यदि इसका संबध एक उद्दम से न हो। यदि वेबसाइट को निगम आस्ति माना जाता है (वह जो अन्य आस्तियों से स्वतंत्रतापूर्वक रोकड़ प्राप्तियाँ उत्पन्न नहीं करती और उनकी कैरिंग रकम को पूर्णतः रोकड़ उत्पन्न कर रही इकाई से सम्बंधित नहीं किया जा सकता है) तो किसी उद्यम की लेखा मानक 28, *आस्तियों का ह्रास* के अंतर्गत 'बाटम-अप' और/या 'टाप-डाउन' परीक्षण लागू होता है।

(ii) एक उद्यम उस विषय वस्तु के प्रयोग को समर्थ बनाने के लिए व्यय कर सकता है, जो किसी अन्य प्रयोजन के लिए इसकी वेबसाइट पर क्रय की गई या बनाई गयी है (उदाहरण, जानकारी पुनः छापने के लिए अनुज्ञप्ति अर्जित करना) या वेबसाइट के उपयोग हेतु उपलब्ध होने से पहले अपनी वेबसाइट पर प्रयोग के लिए विशिष्ट रूप से विषय-वस्तु को क्रय या उसका सृजन कर सकता है। ऐसी परिस्थितियों में, एक उद्यम को यह निर्धारित करना चाहिए कि एक पृथक आस्ति ऐसी विषय वस्तु

(उदाहरणार्थ कॉपीराइट और अनुज्ञप्ति) के संदर्भ में पहचाने जाने योग्य है या नहीं, और यदि पृथक आस्ति पहचाने जाने योग्य नहीं है, तो व्यय के, इस मानक के पैरा 44 में व्यक्त शर्तों पर खरे उतर जाने पर, वेबसाइट को विकसित करने में उपगत लागत में सम्मिलित किया जाना चाहिए। इस मानक के पैरा 20 के अनुसार, यदि एक अमूर्त आस्ति, परिभाषा सहीत विनिर्दिष्ट कसौटी को पूरा करती है, तभी उसे अभिज्ञात किया जाता है। पैरा 52 दर्शाता है कि आंतरिक रूप से उत्पन्न अमूर्त आस्ति की लागत, अमूर्त आस्ति के पहली बार अभिज्ञान की कसौटी को पूरा करने के समय से उपगत किए गए व्यय का योग है। जब एक उद्यम विषय वस्तु को अर्जित या उसका सृजन करता है, तो एक वेबसाइट से पृथक अमूर्त आस्ति (जैसे कि, अनुज्ञप्ति या कॉपीराइट) को पहचानना संभव हो सकता है। परिणामस्वरूप, एक उद्यम निर्धारित करता है कि क्या उस विषय वस्तु को उपयोग के लिए में समर्थ बनाने के लिए उपगत किए गए व्यय, जो किसी अन्य प्रयोजन के लिए बनायी गई है, वेबसाइट के उपगत हेतु उपलब्ध होने पर उसका परिणाम पृथक रूप से पहचाने जाने के योग्य आस्ति के रूप में निकलता है या व्यय को वेब साइट को विकसित करने की लागत में सम्मिलित किया जाता है।

(ग) एक बार वेबसाइट के प्रयोग हेतु उपलब्ध हो जाने पर प्रचालन प्रक्रम प्रारंभ हो जाता है, और इसीलिए विकास के पूरा हो जाने के बाद वेबसाइट के अनुरक्षण और इसकी वृद्धि के लिए किए गए व्यय को इसके उपगत किए जाने पर, एक व्यय रूप में तब तक अभिज्ञात किया जाना चाहिए जब तक कि यह इस मानक के पैरा 59 में दी गयी कसौटी को पूरा न करे। पैरा 60 स्पष्ट करता है कि यदि आस्ति को इसके मूलतः निर्धारित निष्पादन के स्तर पर बनाए रखने के लिए व्यय की आवश्यकता है, तो व्यय के उपगत किए जाने पर यह (व्यय), व्यय के रूप में अभिज्ञात होता है।

7. एक अमूर्त आस्ति को इस मानक के पैरा 62 में दी गई अपेक्षाओं को लागू करके प्रारंभिक अभिज्ञान के बाद मापा जाता है। इसके अतिरिक्त, चूँकि इस मानक का पैरा 68 व्यक्त करता है कि एक अमूर्त आस्ति का उपयोगी जीवनकाल हमेशा सीमित होता है, अतः आस्ति रूप में अभिज्ञात एक वेबसाइट का इसके उपयोगी जीवनकाल के सर्वोत्तम अनुमान के दौरान क्रमिक अपाकरण होता है। जैसा कि पैरा 65 में दर्शाया गया है, वेबसाइट प्रौद्योगिकीय अप्रचलन के प्रति ग्रहणशील होती है और प्रौद्योगिकी में तीव्र परिवर्तनों के इतिहास को देखते हुए, उनका उपयोगी जीवनकाल छोटा होगा।

8. निम्नलिखित सारणी ऐसे व्ययों के दृष्टांत स्वरूप उदाहरण प्रस्तुत करती है जो उपरोक्त पैरा 2 और 3 में वर्णित प्रत्येक प्रक्रम के भीतर उद्भूत होते हैं और उपरोक्त पैरा 5 और 6 का प्रयोग करते हैं। ऐसे व्ययों की विस्तृत जाँच-सूची बनाना आशयित नहीं है, जिन्हें उपगत किया जा सकता है।

व्ययों की प्रकृति	**लेखा प्रतिपादन**
योजना	
• साध्यता संबंधी अध्ययन का जिम्मा लेना • हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर विशिष्टताओं को परिभाषित करना • वैकल्पिक उत्पादों और आपूर्तिकर्ताओं का मूल्यांकन करना • प्राथमिकताओं का चयन करना	व्यय के रूप में, जब उपगत किया जाता है।
प्रयोज्यता और आधार-तंत्र विकास	
• हार्डवेयर का क्रय करना या उसे विकसित करना • कार्य क्षेत्र नाम प्राप्त करना • आपरेटिंग सॉफ्टवेयर विकसित करना (उदाहरणार्थ आपरेटिंग प्रणाली और सर्वर-सॉफ्टवेयर) • प्रयोज्यता के लिए कोड विकसित करना • वेब सर्वर पर विकसित प्रयोज्यताओं का संस्थापन करना • तनाव परीक्षण	लेखा मानक 10 की अपेक्षाओं का लागू होना व्यय के रूप में, जब उपगत किया जाता है, जब तक कि यह पैरा 20 और 44 के अंतर्गत अभिज्ञान की कसौटी को पूरा नहीं करता है।

व्ययों की प्रकृति	लेखा प्रतिपादन
ग्राफिकल अभिकल्पन और विषय- वस्तु विकास	
• वेब पृष्ठों के रूप (उदाहरणार्थ ले-आउट और रंग) की अभिकल्पना करना • वेब साइट के उपयोग हेतु उपलब्ध होने से पहले वेबसाइट पर या तो पाठीय या फिर ग्राफिक प्रकृति की जानकारी का निर्माण, क्रय, तैयार करना (जैसे कि, लिंकों का सृजन और टैग की पहचान) और उसे अपलोड करना। विषय वस्तु के उदाहरण में उद्यम के बारे में जानकारी, विक्रय के लिए उत्पाद या सेवाएँ और वह शीर्षक सम्मिलित होते हैं जिन्हें अभिदायकर्ता आंकता है।	यदि एक पृथक आस्ति पहचाने जाने योग्य नहीं है, तो व्यय के रूप जब यह उपगत होता है, जब तक कि यह पैरा 20 और 44 के अंतर्गत अभिज्ञान की कसौटी पर खरा नहीं उतरता है।
प्रचालन	
• ग्राफिक्स को अद्यतन करना और विषय वस्तु को संशोधित करना • नए कार्य, लक्षण और विषय वस्तु जोड़ना • खोज इन्जनों के साथ वेबसाइट पंजीकृत करना • डाटा का बैकअप करना • सुरक्षा मार्ग का पुनर्विलोकन करना • वेब साइट के प्रयोग की समीक्षा करना	व्यय के रूप में, जब उपगत किए जाते है जब तक कि दुलर्भ परिस्थितियों में यह पैरा 59 में व्यक्त कसौटी को पूरा नहीं करता, जिस में व्यय को वेबसाइट की लागत में सम्मिलित किया जाना है।
अन्य	
• बिक्री, प्रशासन और अन्य सामान्य उपरिव्यय जब तक कि यह प्रयोग के लिए वेबसाइट को तैयार करने के प्रति प्रत्यक्षतः चिन्हित न किया जा सके • स्पष्टतः पहचानी गई अक्षमताएँ और वेबसाइट निष्पादन को प्राप्त करने से पहले उपगत की गई प्रारंभिक प्रचालन हानियाँ (उदाहरणार्थ, फल्स स्टार्ट परिक्षण) • वेबसाइट को प्रचालित करने के लिए कर्मचारियों को प्रक्षिक्षित करना	व्यय के रूप में, जब उपगत किया जाता है।

दृष्टांत ख

यह दृष्टांत जो लेखा मानक का भाग नहीं है, संक्रमणकालीन उपबंधों के संबंध में इस लेखा मानक के पैरा 99 में निहित अपेक्षाओं के लागू होने का दृष्टांत देता है।

दृष्टांत 1 - अमूर्त मद का क्रमिक अपाकरण नहीं किया गया था तथा पैरा 63 के अधीन निर्धारित क्रमिक अपाकरण अवधि समाप्त हो गई है।

एक अमूर्त मद अ लिमिटेड के तुलन-पत्र में 1-4-2003 को 10 लाख रु. पर प्रकट की गई है। मद 1 अप्रैल, 1990 को 10 लाख रु. के लिए अर्जित की गई थी और उस तारीख से प्रयोग हेतु उपलब्ध थी। उद्यम, मद का क्रमिक अपाकरण न करने की लेखा नीति का पालन कर रहा है। पैरा 63 को लागू करते हुए, उद्यम निर्धारित करता है कि जिस तारीख से मद प्रयोग के लिए उपलब्ध थी अर्थात् 1 अप्रैल, 1990 से 10 वर्ष की अवधि के दौरान मद का क्रमिक अपाकरण हो रहा होगा।

चूँकि पैरा 63 के लागू करने से निर्धारित क्रमिक अपाकरण अवधि पहले ही 1-4-2003 को समाप्त हो चुकी है अतः 10 लाख रु. की अमूर्त मद की कैरिंग रकम 1-4-2003 को राजस्व आरक्षिती के आरम्भिक अतिशेष के प्रति समरूप समायोजन किया जाना अपेक्षित होगा।

IndiaCode

दृष्टांत 2 - अमूर्त मद का क्रमिक अपाकरण हो रहा है तथा पैरा 63 के अंतर्गत निर्धारित क्रमिक अपाकरण अवधि समाप्त हो गई है।

एक अमूर्त मद अ-लिमिटेड के तुलनपत्र में 1-4-2003 को 8 लाख रु. पर प्रकट हो रही है। मद 1 अप्रैल, 1991 को 20 लाख रु. के लिए अर्जित की गई थी और उसी तारीख से प्रयोग हेतु उपलब्ध थी। उद्यम, सरल-रेखा आधार पर 20 वर्ष की अवधि के दौरान मद के क्रमिक अपाकरण की नीति का पालन कर रहा है। पैरा 63 को लागू करते हुए, उद्यम निर्धारित करता है कि मद के प्रयोग हेतु उपलब्ध होने की तारीख से अर्थात् 1 अप्रैल, 1991 से 10 वर्ष की अवधि के दौरान मद क्रमिक अपाकरण हुआ होगा।

चूँकि पैरा 63 के लागू होने से निर्धारित क्रमिक अपाकरण अवधि पहले ही 1-4-2003 को समाप्त हो चुकी है अतः 8 लाख रु. की अमूर्त मद की कैरिंग रकम, 1-4-2003 को राजस्व आरक्षितियों के आरम्भिक अतिशेष के प्रति समरूप समायोजन के रूप में लेना अपेक्षित होगा।

दृष्टांत 3 - पैरा 63 के अधीन निर्धारित क्रमिक अपाकरण अवधि समाप्त नहीं हुई है और उद्यम द्वारा अपनाई गई लेखा नीति के अनुसार शेष क्रमिक अपाकरण अवधि अपेक्षाकृत छोटी है।

एक अमूर्त मद अ लिमिटेड के तुलनपत्र में 1-4-2003 को 8 लाख रु. पर प्रकट हो रही है। मद 1 अप्रैल, 2000 को 20 लाख रु. के लिए अर्जित की गई थी और उसी तारीख से प्रयोग हेतु उपलब्ध थी। उद्यम सरल रेखा आधार पर 5 वर्ष की अवधि के दौरान, अमूर्त मद के क्रमिक अपाकरण की नीति का पालन कर रहा है। पैरा 63 को लागू करते हुए, उद्यम, मद के उपयोग के लिए उपलब्ध होने की तारीख से अर्थात् 1 अप्रैल, 2000 से क्रमिक अपाकरण अवधि को 8 वर्ष का निर्धारित करता है, जो इसके उपयोगी जीवनकाल का सर्वोत्तम अनुमान है।

1-4-2003 को उद्यम द्वारा अनुसरण की गई लेखा नीति के अनुसार क्रमिक अपाकरण की शेष अवधि 2 वर्ष है, जो पैरा 63 को लागू करके निर्धारित की गई शेष क्रमिक अपाकरण अवधि अर्थात् 5 वर्ष से अपेक्षाकृत छोटी है। तद्नुसार, उद्यम द्वारा, अपने द्वारा अपनाई जा रही लेखा नीति के अनुसार शेष 2 वर्षों के दौरान अमूर्त मद का क्रमिक अपाकरण करने की अपेक्षा होगी।

दृष्टांत 4 - पैरा 63 के अधीन निर्धारित क्रमिक अपाकरण अवधि समाप्त नहीं हुई है और उद्यम द्वारा अपनाई गई लेखांकन नीति के अनुसार शेष क्रमिक अपाकरण अवधि अपेक्षाकृत लम्बी है।

एक अमूर्त मद अ लिमिटेड के तुलनपत्र में 1-4-2003 को 18 लाख रु. पर प्रकट हो रही है। मद 1 अप्रैल 2000 को 24 लाख रु. के लिए अर्जित की गई थी और उसी तारीख से प्रयोग हेतु उपलब्ध है। उद्यम सरल रेखा आधार पर 12 वर्ष की अवधि के दौरान अमूर्त मद के क्रमिक अपाकरण की नीति का अनुसरण कर रहा है। पैरा 63 को लागू करते हुए, उद्यम निर्धारित करता है कि उद्यम, मद के प्रयोग हेतु उपलब्ध होने की तारीख अर्थात् 1 अप्रैल, 2000 से, सरल रेखा आधार पर 10 वर्षों की अवधि के दौरान मद का क्रमिक अपाकरण हो चुका होगा।

1-4-2003 को, उद्यम द्वारा अनुसरण की गई लेखा नीति के अनुसार क्रमिक अपाकरण की शेष अवधि 9 वर्ष है, जो पैरा 63 में कथित शेष अवधि अर्थात 7 वर्ष की तुलना में लम्बी है। तद्नुसार, उद्यम को 1-4-2003 को 16.8 लाख रु. पर अमूर्त मद की कैरिंग रकम को पुनः कथित करने (24 लाख रु. - 3 × 2.4 लाख रु., अर्थात् क्रमिक अपाकरण जो मानक के अनुसार प्रभारित किया गया होगा) की आवश्यकता होगी और 1.2 लाख रु. के अंतर (18 लाख रु. - 16.8 लाख रु.) को राजस्व आरक्षितियों के प्रारम्भिक अतिशेष के प्रति समायोजित करने की आवश्यकता होगी। 16.8 लाख रु. की कैरिंग रकम का 7 वर्षों तक क्रमिक अपाकरण होगा जो पैरा 63 के अनुसार क्रमिक अपाकरण अवधि का शेष भाग है।

दृष्टांत 5 - अमूर्त मद का क्रमिक अपाकरण नहीं हुआ है और पैरा 63 के अधीन निर्धारित क्रमिक अपाकरण अवधि समाप्त नहीं हुई है।

एक अमूर्त मद अ लिमिटेड के तुलन-पत्र में 1-4-2003 को 20 लाख रु. पर प्रकट हो रही है। मद 1 अप्रैल को 20 लाख रु. के लिए अर्जित की गई थी और उसी तारीख से प्रयोग हेतु उपलब्ध है। उद्यम मद को क्रमिक अपाकरण न करने की लेखा नीति का अनुसरण कर रहा है। पैरा 63 को लागू करते हुए, उद्यम निर्धारित करता है कि मद के प्रयोग हेतु उपलब्ध होने की तारीख अर्थात् 1 अप्रैल, 2000 से सरल-रेखा आधार पर 10 वर्षों की अवधि के दौरान मद का क्रमिक अपाकरण हो चुका होगा।

1-4-2003 को, उद्यम द्वारा 14 लाख रु. पर अमूर्त मद की कैरिंग रकम को पुनः कथित करने की अपेक्षा होगी (20 लाख रु. - 3 × 2 लाख रु. अर्थात्, क्रमिक अपाकरण जो मानक के अनुसार प्रभारित किया गया होगा) और 6 लाख रु. के अंतर को (20 लाख रु. - 14 लाख रु.) राजस्व आरिक्षितियों के प्रारम्भिक अतिशेष के विरूद्ध समायोजित करने की आवश्यकता होगी। 14 लाख रु. की राजस्व आरक्षितियों का 7 वर्षों पर क्रमिक अपाकरण होगा जो पैरा 63 के अनुसार क्रमिक अपाकरण अवधि का शेष भाग है।

लेखा मानक 27

सहउद्यमों में हितों की वित्तीय रिपोर्टिंग

(इस लेखा मानक में कुछ मोटे तिरछे टाइप और कुछ सीधे टाइप में व्यवस्थित पैरा सम्मिलित हैं, जिनका समान प्राधिकार है। मोटे तिरछे टाइप में दिये गए पैरा मुख्य सिद्धांत उपदर्शित करते हैं। इस लेखा मानक को अधिसूचना के प्रति उपाबंध के भाग क में अतंर्विष्ट साधारण अनुदेशों के संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिये।)

यह मानक एक उद्यम के पृथक वित्तीय विवरणों के संबंध में आज्ञापक है। एक उद्यम के समेकित वित्तीय विवरणों के संबंध में, यह मानक वहाँ आज्ञापक प्रकृति का होता है जहाँ उद्यम समेकित वित्तीय विवरण तैयार तथा प्रस्तुत करता है।

उद्देश्य

इस मानक का उद्देश्य सहउद्यमों में हितों के लेखा हेतु और उद्यमी और विनिधानकर्ताओं के वित्तीय विवरणों में सहउद्यम आस्तियों, दायित्वों, आय और व्ययों की रिपोर्टिंग के लिए सिद्धांत तथा प्रक्रियाएँ व्यक्त करना है।

कार्यक्षेत्र

1. यह मानक उन संरचनाओं या रूपों पर ध्यान दिए बिना जिनके अंतर्गत सहउद्यम गतिविधियाँ घटित होती हैं, सहउद्यम में हितों के लेखा में तथा उद्यमियों और विनिधानकर्ताओं के वित्तीय विवरणों में सहउद्यम आस्तियों, दायित्वों, आय तथा व्ययों की रिपोर्टिंग में लागू होना चाहिए।

2. इस मानक में अंतर्विष्ट, समेकित वित्तीय विवरणों में सहउद्यमों के लेखा से सम्बंधित अपेक्षाएँ केवल वही लागू होती हैं जहाँ उद्यमी द्वारा समेकित वित्तीय विवरण तैयार तथा प्रस्तुत किए जाते हैं।

परिभाषाएँ

3. इस मानक के प्रयोजन के लिए निम्नलिखित शब्द विनिर्दिष्ट अर्थों में प्रयुक्त हुए हैं:

3.1 <u>सहउद्यम</u> एक संविदात्मक समझौता है, जिसमें दो या अधिक पक्षकार, संयुक्त नियंत्रण के अधीन, एक आर्थिक क्रियाकलाप करते हैं।

3.2 <u>संयुक्त नियंत्रण</u> एक आर्थिक गतिविधि पर नियंत्रण में संविदात्मक रूप से सहमत भागीदारी है।

3.3 <u>नियंत्रण</u> आर्थिक क्रियाकलाप से लाभ प्राप्त करने के लिए, उसकी (आर्थिक क्रियाकलाप की) वित्तीय तथा प्रचालन नीतियों को शासित करने की शक्ति है।

3.4 <u>उद्यमी</u> सहउद्यम का एक पक्षकार है और इसका, उस सहउद्यम पर संयुक्त नियंत्रण होता है।

3.5 <u>सहउद्यम</u> में विनिधानकर्ता सहउद्यम में एक ऐसा पक्षकार है जिसका उस सहउद्यम पर संयुक्त नियंत्रण नहीं होता।

3.6 <u>आनुपातिक समेकन</u> लेखा और रिपोर्टिंग की एक पद्धति है, जिसके द्वारा एक संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई की आस्तियों, दायित्वों, आय तथा व्ययों में एक उद्यमी के भाग को उद्यमी के वित्तीय विवरणों में पृथक रेखा मदों के रूप में रिर्पोट किया जाता है।

सहउद्यम के रूप

4. सहउद्यमों के कई भिन्न-भिन्न रूप तथा संरचनाएँ होती हैं। यह मानक तीन विस्तृत प्रकारों की पहचान करता है संयुक्त रूप से नियंत्रित प्रचालन, संयुक्त रूप से नियंत्रित आस्तियाँ और संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाइयाँ जो सामान्यतः सहउद्यम के रूप में वर्णित हैं, और सहउद्यम की परिभाषा पर खरी उतरती हैं। निम्नलिखित विशेषताएँ, सभी सहउद्यमों में सामान्य हैं:

(क) दो या अधिक उद्यमी संविदात्मक समझौते द्वारा आबद्ध होते हैं और

(ख) संविदात्मक समझौता संयुक्त नियंत्रण स्थापित करता है।

संविदात्मक समझौता

5. संविदात्मक समझौते की विद्यमानता संयुक्त नियंत्रण को शामिल करने वाले हितों को सहयुक्तों में ऐसे विनिधानों से पृथक करती है जिनमें विनिधानकर्ता का महत्वपूर्ण प्रभाव होता है (लेखा मानक 23, समेकित वित्तीय विवरणों में सहयुक्तों में विनिधानों के लिए लेखा, देखें)। वे गतिविधियाँ जिनमें संयुक्त नियंत्रण स्थापित करने के लिए कोई संविदात्मक समझौता नहीं होता, इस मानक के लिए सहउद्यम नहीं हैं।

6. कुछ आपवादिक मामलों में, एक उद्यम संविदात्मक समझौते द्वारा, एक ऐसी इकाई पर संयुक्त नियंत्रण स्थापित करता है, जो लेखा मानक 23, समेकित वित्तीय विवरण, के अर्थ के अंतर्गत उस उपक्रम की समनुषंगी है। ऐसे मामलों में, कथित उद्यम द्वारा उक्त इकाई, लेखा मानक 21 के अंतर्गत, समेकित होती है, और इसे इस मानक के अनुसार सहउद्यम नहीं माना जाता। ऐसी इकाई का समेकन आवश्यक रूप से अन्य उद्यमी (उद्यमियों) को ऐसी इकाई के साथ सहउद्यम की तरह व्यवहार करने से नहीं रोकता।

7. संविदात्मक समझौता कई तरीकों में दिखाई दे सकता है, उदाहरण के लिए, उद्यमियों के बीच संविदा से या उद्यमियों के बीच विचार विमर्श के कार्यवृत्तों से। कुछ स्थितियों में, समझौता सहउद्यम के अंतर्नियमों या अन्य उप-विधियों में शामिल होता है। इसका रूप कुछ भी हो, पर संविदात्मक समझौता आमतौर पर लिखित रूप में होता है और निम्नलिखित विषयों के संबंध में होता है:

(क) सहउद्यम की गतिविधि, समयावधि तथा रिपोर्टिंग दायित्व ;

(ख) सहउद्यम के निदेशक मंडल या उसके समतुल्य शासी निकाय की नियुक्ति तथा उद्यमियों के मताधिकार ;

(ग) उद्यमियों द्वारा पूँजी अंशदान ; और

(घ) सहउद्यम के उत्पादन, आय, व्यय या परिणामों में उद्यमियों द्वारा भागीदारी।

8. संविदात्मक समझौता सहउद्यम पर संयुक्त नियंत्रण स्थापित करता है। ऐसा समझौता सुनिश्चित करता है कि कोई एकल उद्यमी गतिविधि को एकपक्षीय रूप से नियंत्रित करने की स्थिति में नहीं है। समझौता, सहउद्यम के लक्ष्यों के लिए आवश्यक क्षेत्रों में उन निर्णयों को पहचानता है जिन्हें सभी उद्यमियों की सहमति की आवश्यकता होती है और जिन्हें उद्यमियों के विनिर्दिष्ट बहुमत की सहमति की आवश्यकता हो सकती है।

9. संविदात्मक समझौता एक उद्यमी को सहउद्यम के प्रचालक या प्रबंधक के रूप में भी पहचान सकता है। प्रचालक सहउद्यम को नियंत्रित नहीं करता किंतु उन आर्थिक तथा प्रचालन नीतियों के अंतर्गत कार्य करता है जो संविदात्मक समझौते के अनुसार उद्यमियों द्वारा सहमत हुई हैं और प्रचालक को सौंपी गई हैं।

संयुक्त रूप से नियंत्रित प्रचालन

10. कुछ सहउद्यमों के प्रचालन में, निगम, भागीदारी या अन्य इकाई या स्वयं उद्यमियों से पृथक वित्तीय संरचना की स्थापना की बजाए उद्यमियों की आस्तियों तथा अन्य संसाधनों का प्रयोग शामिल होता है। प्रत्येक उद्यमी स्वयं अपनी स्थिर आस्तियों का प्रयोग करता है तथा अपना सूचीबद्ध सामान रखता है। यह अपने स्वयं के व्यय और दायित्व भी उपगत करता है और स्वयं अपने वित्त जुटाता है जो इसके दायित्वों को प्रस्तुत करते हैं। सहउद्यम की गतिविधियाँ, उद्यमियों की समान गतिविधियों के साथ-साथ उद्यमियों के कर्मचारियों द्वारा क्रियान्वित की जा सकती हैं। सहउद्यम करार आमतौर पर ऐसे साधन प्रदान करता है, जिसके द्वारा संयुक्त रूप से नियंत्रित प्रचालनों से प्राप्त राजस्व तथा सामान्य रूप से उपगत किए गए किसी भी व्ययों को उद्यमियों के बीच बाँटा जाता है।

11. संयुक्त रूप से नियंत्रित प्रचालन का उदाहरण है जब दो या अधिक उद्यमी, एक विशिष्ट उत्पाद जैसे कि वायुयान, को संयुक्त रूप से बनाने, विपणन तथा वितरण के लिए, अपने प्रचालनों, संसाधनों तथा दक्षता को एकजुट करते हैं। प्रत्येक उद्यमी द्वारा विनिर्माण प्रक्रिया के विभिन्न भाग क्रियान्वित होते हैं। प्रत्येक उद्यमी स्वयं अपनी लागत वहन करता है और वायुयान की बिक्री से प्राप्त राजस्व का एक भाग लेता है, यह भाग संविदात्मक समझौते के अनुसार अवधारित होता है।

12. संयुक्त रूप से नियंत्रित प्रचालनों में अपने हितों के संबंध में, एक उद्यमी को अपने पृथक वित्तीय विवरणों में और परिणामस्वरूप अपने समेकित वित्तीय विवरणों में निम्नलिखित को अभिज्ञात करना चाहिए :

(क) **आस्तियाँ जो वह नियंत्रित करता है तथा दायित्व जो वह उपगत करता है ; और**

(ख) **व्यय जो वह उपगत करता है तथा आय में अपना भाग जो वह सहउद्यम से अर्जित करता है।**

13. क्योंकि आस्तियाँ, दायित्व, आय और व्यय, उद्यमी के पृथक वित्तीय विवरणों तथा परिणामस्वरूप इसके समेकित वित्तीय विवरणों में पहले ही अभिज्ञात हैं, इसलिए जब उद्यमी समेकित वित्तीय विवरण प्रस्तुत करता है तो इन मदों के संदर्भ में समायोजनों तथा अन्य समेकन प्रक्रियाओं की आवश्यकता नहीं होती।

14. स्वयं सहउद्यम के लिए पृथक लेखा अभिलेख रखने की आवश्यकता नहीं भी हो सकती तथा सहउद्यम के लिए वित्तीय विवरण तैयार करना आवश्यक नहीं है। तथापि, उद्यमी आंतरिक प्रबंधन रिपोर्टिंग के प्रयोजन के लिए लेखा तैयार कर सकता है, ताकि वे सहउद्यम की निष्पादनता निर्धारित कर सके।

संयुक्त रूप से नियंत्रित आस्तियाँ

15. कुछ सहउद्यमों में, सहउद्यम को अभिदत्त या इसके उद्देश्य के लिए अर्जित और सहउद्यम के प्रयोजन लिए समर्पित गयी एक या अधिक आस्तियों के उद्यमियों द्वारा संयुक्त नियंत्रण और बहुधा संयुक्त स्वामित्व शामिल होता है। ये आस्तियाँ उद्यमियों के लिए आर्थिक लाभ प्राप्त करने के लिए प्रयोग की जाती हैं। प्रत्येक उद्यमी आस्तियों से प्राप्त उत्पादन का एक भाग ले सकता है और प्रत्येक उद्यमी उपगत किए गए व्ययों का सहमत भाग वहन करता है।

16. इन सहउद्यमों में निगम, भागीदारी या अन्य इकाई या स्वयं उद्यमियों से पृथक वित्तीय संरचना स्थापित करना शामिल नहीं होता। प्रत्येक उद्यमी संयुक्त रूप से नियंत्रित आस्ति में अपने भाग के माध्यम से भावी आर्थिक लाभों के अपने भाग पर नियंत्रण रखता है।

17. कई तेल उत्पादन कम्पनियों द्वारा संयुक्त रूप से नियंत्रित तथा प्रचालित तेल पाइप लाइन, संयुक्त रूप से नियंत्रित आस्ति का उदाहरण है। प्रत्येक उद्यमी, अपने निजी उत्पाद के परिवहन के लिए पाइप लाइन का प्रयोग करता है, जिसके बदले में, यह पाइप लाइन के प्रचालन के व्यय का एक सहमत भाग वहन करता है। संयुक्त रूप से नियंत्रित आस्ति का एक अन्य उदाहरण है, जब दो उद्यम संयुक्त रूप से एक सम्पत्ति को नियंत्रित करते हैं तथा प्रत्येक उद्यम प्राप्त किराए का एक भाग लेता है और व्ययों के एक भाग का वहन करता है।

18. संयुक्त रूप से नियंत्रित आस्तियों में अपने हितों के संबंध में, एक उद्यमी को अपने पृथक वित्तीय विवरणों तथा परिणामस्वरूप समेकित वित्तीय विवरणों में, निम्नलिखित को अभिज्ञात करना चाहिए:

(क) *संयुक्त रूप से नियंत्रित आस्तियों में उसका भाग, आस्तियों की प्रकृति के अनुसार वर्गीकृत ;*

(ख) ऐसे कोई भी दायित्व जो वह उपगत कर चुका है ;

(ग) सहउद्यम के सम्बंध में अन्य उद्यमियों के साथ संयुक्त रूप से उपगत किए गए किसी भी दायित्व में इसका भाग ;

(घ) सहउद्यम द्वारा उपगत किए गए किसी भी व्यय में अपने हिस्से के साथ, सहउद्यम के उत्पादन में अपने हिस्से की बिक्री या प्रयोग से प्राप्त कोई भी आय ; और

(ङ) ऐसे कोई भी व्यय जो सहउद्यम में उसके हितों के संबंध में उपगत किए गए हों।

19. संयुक्त रूप से नियंत्रित आस्तियों में अपने हित के संबंध में, प्रत्येक उद्यमी, अपने लेखा अभिलेख में निम्नलिखित को शामिल करता है तथा अपने पृथक वित्तीय विवरणों में और परिणामस्वरूप अपने समेकित वित्तीय विवरणों में निम्नलिखित को अभिज्ञात करता है:

(क) विनिधान की बजाए आस्तियों की प्रकृति के अनुसार वर्गीकृत, संयुक्त रूप से नियंत्रित आस्तियों में उसका भाग, उदाहरण के लिए, संयुक्त रूप से नियंत्रित तेल पाईप लाइन, स्थिर आस्ति के रूप में वर्गीकृत की जाती है ;

(ख) ऐसे कोई भी दायित्व जो वह उपगत कर चुका हो, उदाहरण के लिए, आस्तियों में अपने भाग की वित्त व्यवस्था में उपगत किए गए दायित्व ;

(ग) सहउद्यम के सम्बंध में अन्य उद्यमियों के साथ संयुक्त रूप से उपगत किए गए किसी भी दायित्व में उसका भाग ;

(घ) सहउद्यम द्वारा उपगत किए गए किसी भी व्यय में अपने हिस्से के साथ, सहउद्यम के उत्पादन में अपने भाग की बिक्री से या उसके प्रयोग से प्राप्त कोई भी आय ; और

(ङ) ऐसे कोई भी व्यय जो सहउद्यम में इसके हितों के संबंध में उपगत किए गए हों, उदाहरण के लिए, आस्तियों में उद्यमी के हित की वित्त व्यवस्था तथा उत्पादन में उसके भाग के विक्रय के सम्बंध में व्यय।

क्योंकि आस्तियाँ, दायित्व, आय और व्यय, उद्यमी के पृथक वित्तीय विवरणों तथा परिणामस्वरूप इसके समेकित वित्तीय विवरणों में पहले ही अभिज्ञात किए जा चुके हैं, इसलिए जब उद्यमी समेकित वित्तीय विवरणों को प्रस्तुत करता है, तो इन मदों के संबंध में किसी समायोजन या अन्य समेकन प्रक्रियाओं की आवश्यकता नहीं होती।

20. संयुक्त रूप से नियंत्रित आस्तियों का प्रतिपादन, सहउद्यम के सार और आर्थिक रूप तथा आमतौर पर इसका विधिक रूप प्रतिबिम्बित करता है। स्वयं सहउद्यम के लिए पृथक लेखा अभिलेख उन व्ययों के लिए सीमित हो सकता है जो सामान्यतः उद्यमियों द्वारा सामान्य रूप से उपगत किए जाते हैं और अन्ततः उनके सहमत भागों के अनुसार उद्यमियों द्वारा वहन किए जाते हैं। सहउद्यम के लिए वित्तीय विवरण तैयार करना आवश्यक नहीं है यद्यपि उद्यमी आंतरिक प्रबंधन रिपोर्टिंग के लिए लेखा तैयार कर सकता है ताकि वे सहउद्यम की निष्पादनता को आँक सके।

संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाइयाँ

21. एक संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई वह सहउद्यम है जिसमें निगम, भागीदारी या अन्य इकाई जिसमें प्रत्येक उद्यमी का हित होता है, की स्थापना शामिल होती है। इकाई अन्य उपक्रमों की तरह ही कार्य करती है, सिवाए इसके कि उद्यमियों के बीच संविदात्मक समझौता, इकाई की आर्थिक गतिविधि पर संयुक्त नियंत्रण स्थापित करता है।

22. एक संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई सहउद्यम की आस्तियों को नियंत्रित करती है, दायित्व तथा व्यय उपगत करती है और आय अर्जित करती है। यह स्वयं अपने नाम से संविदाएँ कर सकती है और सहउद्यम गतिविधि के उद्देश्यों के लिए वित्त की व्यवस्था कर सकती है। प्रत्येक उद्यमी, संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई के परिणामों के एक भाग का अधिकारी होता है, यद्यपि कुछ संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाइयों में, सह उद्यम के उत्पाद की भागीदारी भी शामिल होती है।

23. संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई का उदाहरण है, जब दो उद्यम उपयुक्त आस्तियों और दायित्वों को संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई में अंतरित करते हुए, विशिष्ट व्यापार रेखा में अपनी गतिविधियों को जोड़ते हैं। इसका एक अन्य उदाहरण है - जब एक उद्यम, विदेश में सरकार या अन्य एजेन्सी के साथ वहाँ एक ऐसी पृथक इकाई स्थापित करके, एक व्यापार शुरू करता है, जो उद्यम और सरकार या एजेन्सी द्वारा संयुक्त रूप से नियंत्रित होती है।

24. कई संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाइयाँ, संयुक्त रूप से नियंत्रित प्रचालनों या संयुक्त रूप से नियंत्रित आस्तियों के रूप में उल्लिखित सहउद्यम के समान होती हैं। उदाहरण के लिए, उद्यमी संयुक्त रूप से नियंत्रित आस्ति, जैसे कि एक तेल पाइपलाइन, को संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई में अंतरित कर सकते हैं। इसी प्रकार, उद्यमी, संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई में आस्तियों का अभिदाय कर सकते हैं, जो संयुक्त रूप से प्रचालित होंगी। कुछ संयुक्त रूप से नियंत्रित प्रचालनों में, गतिविधि के कुछ विशिष्ट पहलुओं जैसे कि उत्पाद का डिज़ाइन, विपणन, वितरण या विक्रयोपरान्त सेवा, से व्यवहार करने के लिए, संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई की स्थापना भी शामिल होती है।

25. एक संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई, स्वयं अपने लेखा अभिलेख रखती है तथा वित्तीय विवरण उसी रूप में तैयार और प्रस्तुत करती है जिसमें संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई को लागू अपेक्षाओं के अनुरूप अन्य उद्यमों के लेखा तैयार तथा प्रस्तुत किये जाते हैं।

किसी उद्यमी के पृथक वित्तीय विवरण

26. किसी उद्यमी के पृथक वित्तीय विवरणों में, संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई में हित को एक विनिधान के रूप में, लेखा मानक 13, विनिधानों के लिए लेखा, के अनुसार लेखाबद्ध किया जाना चाहिए।

27. प्रत्येक उद्यमी आमतौर पर संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई के लिए नकदी या अन्य संसाधनों का अभिदाय करता है। यह अभिदाय उद्यमी के लेखा अभिलेखों में शामिल किए जाते हैं और इसके पृथक वित्तीय विवरणों में, संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई में किए गए विनिधान के रूप में अभिज्ञात होते हैं।

किसी उद्यमी के समेकित वित्तीय विवरण

28. अपने समेकित वित्तीय विवरणों में, किसी उद्यमी को निम्नलिखित को छोड़कर, आनुपातिक समेकन का प्रयोग करते हुए एक संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई में अपने हित को रिपोर्ट करना चाहिए:

(क) संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई में हित, जो निकट भविष्य में इसके उत्तरगामी व्ययन के लिए अर्जित और अनन्य रूप से धारण किया जाता है ; और

(ख) *संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई में हित, जो ऐसे कठोर दीर्घकालिक निर्बंधनों के अंतर्गत क्रियान्वित होता है, जो उद्यमी को निधि अंतरित करने की इसकी क्षमता को महत्वपूर्ण रूप से कम करता है।*

संयुक्त रूप से नियंत्रित ऐसी इकाई में हित को विनिधान के रूप में, लेखा मानक 13, विनिधानों के लिए लेखा, के अनुसार लेखाबद्ध करना चाहिए।

स्पष्टीकरण :

वह समयावधि, जो इस मानक के उद्देश्यों के लिए निकट भविष्य समझी जाती है, प्राथमिक रूप से प्रत्येक मामले के तथ्यों तथा परिस्थितियों पर निर्भर करती है। यद्यपि, आमतौर पर, 'निकट भविष्य' शब्दों का अर्थ उपयुक्त विनिधानों के अर्जन के बाद से 12 महीनों से **अधिक तब तक नहीं समझा जाता, जब तक कि इससे अधिक लम्बी अवधि मामले के तथ्यों और परिस्थितियों के आधार पर न्यायोचित न हो। सुसंगत विनिधान के व्ययन के संबंध में आशय पर ध्यान विनिधान के अर्जन के समय दिया जाता है। तदनुसार, यदि सुसंगत विनिधान निकट भविष्य में इसके पश्चात्वर्ती व्ययन के आशय के बिना अर्जित किया जाता है, और पश्चात्वर्ती रूप से, विनिधान के व्ययन का निर्णय लिया जाता है, तो ऐसा विनिधान आनुपातिक समेकन पद्धति के लागू होने से विवर्जित तब तक नहीं किया जाता, जब तक कि विनिधान का वास्तविक रूप से व्ययन नहीं किया जाता। इसके विपरीत, यदि सुसंगत विनिधान निकट भविष्य में इसके पश्चात्वर्ती व्ययन के उद्देश्य के साथ अर्जित किया जाता है, तथापि, कुछ मान्य कारणों से इसका उस समयावधि में व्ययन नहीं किया जा सका, तो यह आनुपातिक समेकन पद्धति के लागू होने से विवर्जित होता रहेगा, बशर्ते कि आशय में कोई परिवर्तन न हो ।**

29. समेकित वित्तीय विवरणों में संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई में हित का प्रतिवेदन करते हुए, यह अनिवार्य है, कि उद्यमी, संयुक्त उद्यम की विशिष्ट संरचना या रूप की बजाए समझौते का सार तथा उसका आर्थिक रूप प्रतिबिम्बित करे। संयुक्त रूप से नियंत्रित एक इकाई में, एक उद्यमी का, उद्यमी की आस्तियों और दायित्वों में इसके भाग के माध्यम से, भावी आर्थिक लाभों के इसके भाग पर नियंत्रण होता है। यह सार और आर्थिक रूप उद्यमी के समेकित वित्तीय विवरणों में तब प्रतिबिम्बित होता है, जब उद्यमी आनुपातिक समेकन का प्रयोग करते हुए, संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई की आस्तियों, दायित्वों, आय और व्ययों में अपने हितों को रिपोर्ट करता है।

30. आनुपातिक समेकन के लागू होने का अर्थ है कि उद्यमी के समेकित तुलनपत्र में उन आस्तियों का वह भाग जो वह संयुक्त रूप से नियंत्रित करता है और दायित्वों का वह भाग जिसके लिए वह संयुक्त रूप से उत्तरदायी है, शामिल होता है। उद्यमी के लाभ और हानि के समेकित विवरण में, संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई की आय और व्यय में इसका भाग शामिल होता है। आनुपातिक समेकन के लागू होने के लिए उपयुक्त कई प्रक्रियाएँ, समनुषंगियों में विनिधानों के समेकन हेतू लेखा मानक 21, समेकित वित्तीय विवरण, में व्यक्त प्रक्रियाओं के समान हैं।

31. आनुपातिक समेकन को लागू करने के प्रयोजन के लिए, उद्यमी संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई के समेकित वित्तीय विवरणों का प्रयोग करता है।

32. आनुपातिक समेकन में, उद्यमी अपने समेकित वित्तीय विवरणों में, संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई की आस्तियों, दायित्वों, आय तथा व्ययों के अपने भाग के लिए पृथक रेखा मदें शामिल करता है। उदाहरण के लिए, वह संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई के सूचीबद्ध सामान में अपने भाग को समेकित समूह के सूचीबद्ध सामान के भाग के रूप में पृथकतः दर्शाता है ; वह संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई की स्थिर आस्तियों में अपने भाग को समेकित समूह की समान मदों के भाग के रूप में पृथकतः दर्शाता है।

स्पष्टीकरण:

आनुपातिक समेकन पद्धति को लागू करते हुए संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई के अर्जन के पश्चात् की आरक्षितियों में उद्यमी का भाग, समेकित वित्तीय विवरणों में सुसंगत आरक्षितियों के अंतर्गत पृथकतः दर्शाया जाता हैं।

33. आनुपातिक समेकन लागू करने में प्रयुक्त संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई के वित्तीय विवरण आमतौर पर उद्यमी के वित्तीय विवरणों की तरह समान तारीख तक बनाए जाते हैं । जब रिपोर्टिंग तारीखें भिन्न-भिन्न होती हैं, तो आनुपातिक समेकन लागू करने के लिए संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई बहुधा, उद्यमी की तरह एक ही तारीख पर विवरण तैयार करती है । जब ऐसा करना अव्यवहारिक हो, तो भिन्न-भिन्न रिपोर्टिंग तारीखों पर बनाए गए वित्तीय विवरण प्रयोग किए जा सकते हैं, बशर्ते कि रिपोर्टिंग तारीखों में अंतर छः मास से अधिक न हो । ऐसी स्थिति में, महत्वपूर्ण संव्यवहारों तथा उन अन्य घटनाओं के प्रभावों के लिए समायोजन किए जाते हैं जो संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई के वित्तीय विवरणों की तारीख और उद्यमी के वित्तीय विवरणों की तारीख के बीच घटित होते हैं । संगतता का सिद्धांत अपेक्षा करता है कि रिपोर्टिंग अवधियों की लम्बाई और रिपोर्टिंग तारीखों का कोई भी अन्तर अवधि दर अवधि समनुरूप रहे ।

34. सामान्यतः उद्यमी समान परिस्थितियों में एक जैसे संव्यवहारों और घटनाओं के लिए, समरूप लेखा नीतियो का प्रयोग करते हुए समेकित वित्तीय विवरण तैयार करता है । यदि संयुक्त रूप से नियंत्रित एक इकाई, समान परिस्थितियों में एक जैसे संव्यवहारों तथा घटनाओं के लिए अपनायी गयी लेखा नीतियों के अलावा अन्य लेखा नीतियों का प्रयोग करती है, तो ऐसी स्थिति में, जब उद्यमी आनुपातिक समेकन लागू करने के लिए संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई के वित्तीय विवरणों का प्रयोग करता है, तो उनमें उपयुक्त समायोजन किए जाते हैं। यदि ऐसा करना व्यवहारिक न हो, तो यह तथ्य समेकित वित्तीय विवरणों में उन मदों के अनुपातों के साथ प्रकट किया जाता है, जिनके प्रति भिन्न लेखा नीतियाँ लागू हुई हैं ।

35. आनुपातिक समेकन को क्रियान्वित करते हुए, अन्य दायित्वों या आस्तियों की कटौती से किसी आस्ति या दायित्व को या अन्य व्ययों तथा आय की कटौती से किसी आय या व्ययों को ऑफसैट करना तब तक अनुपयुक्त है जब तक कि सैट-ऑफ करने का विधिक अधिकार विद्यमान न हो तथा ऑफसैटिंग आस्ति की प्राप्ति या दायित्व के निपटान के विषय में अपेक्षा न रखे करें ।

36. संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई की शुद्ध आस्तियों के अपने भाग पर, संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई में उद्यमी के लिए उस तारीख को जब संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई में हित अर्जित किया जाता है, उसके हित की लागत का आधिक्य गुडविल रूप में अभिज्ञात होता है और समेकित वित्तीय विवरणों में पृथकतः प्रकट होता है । जब संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई में उद्यमी के लिए उसके हित की लागत, संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई की शुद्ध आस्तियों में उसके भाग से कम होती है, तो उसके बीच का अंतर, समेकित वित्तीय विवरणों में पूँजीगत आरक्षिति माना जाता है। जहाँ संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई में उद्यमी के हित की कैरिंग रकम इसकी लागत से भिन्न होती है, वहाँ उपरोक्त गणनाओं के लिए कैरिंग रकम पर ध्यान दिया जाता है ।

37. संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई में एक या अधिक विनिधानकर्ताओं से सम्बंधित हानियाँ, संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई की इक्विटी[46] में उनके हित से अधिक हो सकती हैं । ऐसे आधिक्य और ऐसे विनिधानकर्ताओं को लागू अतिरिक्त हानियाँ, इस सीमा को छोड़कर कि विनिधानकर्ताओं के पास हानियों की भरपाई के प्रति बाध्यकारी दायित्व होता है या वे ऐसा करने में सक्षम होते हैं, उद्यमियों द्वारा उद्यम में उनके हितों के अनुपात में अभिज्ञात होती हैं। यदि संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई उत्तरगामी रूप से लाभ रिपोर्ट करती है, तो ऐसे सभी लाभ उद्यमियों को तब तक आबंटित होते हैं जब तक कि उद्यमियों द्वारा पहले से समामेलित हानियों में विनिधान के भाग को वसूल नहीं किया जाता ।

38. एक उद्यमी को आनुपातिक समेकन का प्रयोग उस तारीख से बंद कर देना चाहिए, जब:

(क) यह संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई पर इसका संयुक्त नियंत्रण समाप्त हो जाए किंतु इकाई में पूर्णतः या अंशतः अपना हित बनाए रखें; या

(ख) आनुपातिक समेकन का उपयोग अब उपयुक्त न हो क्योंकि संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई उन दीर्घकालिक प्रतिबंधों, जो महत्वपूर्ण रूप से, उद्यमी को निधि अंतरित करने की उसकी क्षमता को कम करते हैं, के अंतर्गत कार्य करती हैं।

39. आनुपातिक समेकन के उपयोग के बंद होने की तारीख से, संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई में हित को निम्नलिखित के अनुसार लेखाबद्ध करना चाहिए:

(क) लेखा मानक 21, 'समेकित वित्तीय विवरण', के अनुसार, यदि उद्यमी इकाई पर एकपक्षीय नियंत्रण धारण करे और इस मानक के अर्थ में मूल कम्पनी बन जाए;

---

[46] 'इक्विटी' उद्यम के सभी दायित्वों को घटाने के बाद उसकी आस्तियों में अवशेष हित है।

(ख) अन्य सभी मामलों में लेखा मानक 13, 'विनिधानों के लिए लेखा', के अनुसार विनिधान के रूप में, या लेखा मानक 23, समेकित वित्तीय विवरणों में सहयुक्तों में विनिधान हेतू लेखा' के अनुसार, जो भी उपयुक्त हो। इस उद्देश्य के लिए, विनिधान की लागत निम्न प्रकार से निर्धारित होनी चाहिए:

(i) आनुपातिक समेकन की समाप्ति की तारीख पर संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई की शुद्ध आस्तियों में उद्यमी का भाग सुनिश्चित होना चाहिए, और

(ii) इस प्रकार सुनिश्चित शुद्ध आस्तियों की रकम आनुपातिक समेकन की समाप्ति की तारीख पर उपयुक्त गुडविल/पूँजी आरक्षिति की कैरिंग रकम के साथ (पैरा 36 देखें) समायोजित करनी चाहिए।

किसी उद्यमी तथा सहउद्यम के बीच संव्यवहार

40. जब एक उद्यमी, सहउद्यम को आस्तियाँ अभिदाय करता है या बेचता है, तो संव्यवहार से हुए लाभ या हानि के किसी भी भाग का अभिज्ञान, संव्यवहार के सार में प्रतिबिम्बित होना चाहिए। जबकि आस्तियाँ, सहउद्यम द्वारा रखी जाती हैं, और बशर्ते उद्यमी स्वामित्व के महत्वपूर्ण जोखिम तथा प्रतिफल को अंतरित कर चुका है, तो उद्यमी को लाभ या हानि के केवल उस भाग को अभिज्ञात करना चाहिए जो अन्य उद्यमियों के हितों के प्रति है। जब अभिदाय या बिक्री चालू आस्तियों के शुद्ध वसूली योग्य मूल्य में कटौती या एक ह्रास हानि का साक्ष्य प्रदान करे, तो उद्यमी को किसी हानि की पूर्ण रकम को अभिज्ञात करना चाहिए।

41. जब एक उद्यमी, सहउद्यम से आस्तियाँ खरीदता है, तो उद्यमी को संव्यवहार से सहउद्यम के लाभों में अपने भाग को तब तक अभिज्ञात नही करना चाहिए जब तक कि यह आस्तियों को एक स्वतंत्र पक्षकार को न बेच दे। एक उद्यमी को इन संव्यवहारों से उत्पन्न हो रही हानियों में अपने भाग को, लाभों की तरह ही अभिज्ञात करना चाहिए, सिवाए इसके कि, हानियों को उस समय तुरंत अभिज्ञात किया जाना चाहिए जब वे चालू आस्तियों के शुद्ध वसूली योग्य मूल्य में कटौती और ह्रास हानि प्रस्तुत करें।

42. यह आँकने के लिए कि, उद्यमी और सहउद्यम के बीच एक संव्यवहार आस्ति के ह्रास का साक्ष्य प्रदान करता है या नहीं, उद्यमी लेखा मानक 28, *आस्तियों का ह्रास* के अनुसार आस्ति की वसूली योग्य रकम निर्धारित करता है। प्रयोग से मूल्य का निर्धारण करने में, सहउद्यम द्वारा आस्ति के अविरल प्रयोग और इसके अंततः व्ययन के आधार पर आस्तियों से प्राप्त भावी नकदी प्रवाहों का अनुमान लगाया जाता है।

43. एक उद्यमी और संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई के रूप में सहउद्यम के बीच संव्यवहारों की स्थिति में, पैरा 40 और 41 की अपेक्षाएँ उद्यमी के पृथक वित्तीय विवरणों की तैयारी और प्रस्तुति में न लागू करके केवल समेकित वित्तीय विवरणों की तैयारी और प्रस्तुतिकरण में लागू होनी चाहिए।

44. उद्यमी के पृथक वित्तीय विवरणों में, उद्यमी और संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाई के बीच संव्यवहारों पर प्राप्त लाभ या हानि की पूर्ण मात्र अभिज्ञात होती है। यद्यपि, समेकित वित्तीय विवरण बनाते हुए, अप्राप्त लाभ या हानि में उद्यमी का भाग निकाल दिया जाता है। यदि और जिस सीमा तक अप्राप्त हानियाँ चालू आस्तियों के शुद्ध वसूली योग्य मूल्य में कटौती या ह्रास हानि प्रस्तुत करती है, वे निकाली नहीं जाती हैं । वस्तुतः, उद्यमी समेकित वित्तीय विवरणों में लाभ या हानि का केवल वह भाग अभिज्ञात करता है जो अन्य उद्यमियों के हितों से सम्बंधित है।

किसी विनिधानकर्ता के वित्तीय विवरणों में सहउद्यमों में हितों की रिपोर्टिंग

45. एक सहउद्यम में ऐसे विनिधानकर्ता को जिसका संयुक्त नियंत्रण नहीं होता, सहउद्यम में अपने हित को, इसके समेकित वित्तीय विवरण में लेखा मानक 13, विनिधानों के लिए लेखा, या लेखा मानक 21, समेकित वित्तीय विवरण या लेखा मानक 23, समेकित वित्तीय विवरणों में सहयुक्तों में विनिधान हेतु लेखा, जो भी उपयुक्त हो, के अनुसार रिर्पोट करना चाहिए।

46. विनिधानकर्ता के पृथक वित्तीय विवरणों में, सहउद्यमों के हितों का लेखा मानक 13, 'विनिधानों के लिए लेखा', के अनुसार लेखा करना चाहिए।

सहउद्यम के प्रचालक

47. सहउद्यम के प्रचालक तथा प्रबंधक, को लेखा मानक 9, राजस्व अभिज्ञान, के अनुसार किसी भी फीस को लेखाबद्ध करना चाहिए ।

48. एक या अधिक उद्यमी, एक सहउद्यम के प्रचालक या प्रबंधक के रूप में कार्य कर सकते हैं। सामान्यतः प्रचालकों को ऐसे कार्यों के लिए प्रबंधन फीस दी जाती है। फीस को एक व्यय के रूप में सहउद्यम द्वारा लेखाबद्ध किया जाता हैं।

प्रकटन

49. एक उद्यमी को पैरा 50, 51 और 52 द्वारा अपेक्षित जानकारी को अपने पृथक वित्तीय विवरणों के साथ ही समेकित वित्तीय विवरणों में प्रकट करना चाहिए।

50. एक उद्यमी को निम्नलिखित आकस्मिक दायित्वों की कुल रकम को अन्य आकस्मिक दायित्वों से अलग तब तक प्रकट करना चाहिए, जब तक कि हानि की संभावना काफी कम न हो:

(क) ऐसा कोई भी आकस्मिक दायित्व जिसे उद्यमी सहउद्यमों में अपने हितों के संदर्भ में उपगत कर चुका है और प्रत्येक ऐसे आकस्मिक दायित्व में इसका भाग जो संयुक्त रूप से अन्य उद्यमियों द्वारा उपगत किया जा चुका है;

(ख) स्वयं सहउद्यमों के आकस्मिक दायित्वों में इसका भाग, जिसके लिए वह आकस्मिक रूप से बाध्य है; और

(ग) वे आकस्मिक दायित्व जो इसलिए उत्पन्न होते हैं क्योंकि उद्यमी, एक सहउद्यम के अन्य उद्यमियों के दायित्वों के लिए आकस्मिक रूप से बाध्य है।

51. एक उद्यमी को अन्य सहउद्यम में अपने हितों के सम्बन्ध में निम्नलिखित प्रतिबद्धताओं की कुल रकम को, अन्य प्रतिबद्धताओं से पृथकतः प्रकट करना चाहिए:

(क) सहउद्यमों में अपने हितों के सम्बंध में उद्यमी की कोई भी पूँजीगत प्रतिबद्धता और उन पूँजीगत प्रतिबद्धताओं में उसका भाग जो संयुक्त रूप से अन्य उद्यमियों के साथ उपगत किए जा चुके हैं; और

(ख) स्वयं सहउद्यमों की पूंजीगत प्रतिबद्धताओं में इसका भाग।

52. एक उद्यमी को सभी सहउद्यमों की सूची और महत्वपूर्ण सहउद्यमों में हितों के वर्णन को प्रकट करना चाहिए। संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाइयों के संबंध में, उद्यमी को स्वामित्व हित के अनुपात, नाम और समामेलन या निवास के देश को भी प्रकट करना चाहिए।

53. एक उद्यमी को अपने पृथक वित्तीय विवरणों में, संयुक्त रूप से नियंत्रित इकाइयों में अपने हितों से सम्बंधित प्रत्येक आस्तियों, दायित्वों, आय और व्ययों की कुल रकमों को प्रकट करना चाहिए।

लेखा मानक 28

आस्तियों का ह्रास

(इस लेखा मानक में कुछ मोटे तिरछे टाइप और कुछ सीधे टाईप में व्यवस्थित पैरा सम्मिलित है, जिनका समान प्राधिकार है। मोटे तिरछे टाइप में दिये गए पैरा मुख्य सिद्धांत उपदर्शित करते हैं। इस लेखा मानक को अधिसूचना के प्रति उपाबंध के भाग क में अतंर्विष्ट साधारण अनुदेशों के संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिये।)

उद्देश्य

इस 'मानक' का उद्देश्य ऐसी प्रक्रियाएँ विहित करना है जिनको उद्यम यह सुनिश्चित करने के लिए लागू करे कि उसकी आस्तियों को वसूली योग्य रकम से अधिक पर नहीं आगे ले जाया गया। एक आस्ति को वसूली योग्य रकम से अधिक पर लिया माना जायेगा यदि उसकी कैरिंग रकम उसके विक्रय या प्रयोग द्वारा वसूल की जाने वाली रकम से अधिक है। इस स्थिति में आस्ति ह्रासित कही जाती है और यह मानक उद्यम द्वारा ह्रास हानि को अभिज्ञात करने की अपेक्षा करता है। यह मानक यह भी विनिर्दिष्ट करता है कि किसी उद्यम को ह्रास हानि को कब उलटना चाहिए और ह्रासित आस्ति के लिए कतिपय प्रकटन भी विनिर्दिष्ट करता है।

कार्यक्षेत्र

1. इस मानक को सभी आस्तियों के ह्रास के लेखा पर लागू करना चाहिये, सिवाय निम्नलिखित के:

(क) सूचीबद्ध सामान (देखिए लेखा मानक 2, सूचीबद्ध सामान का मूल्यांकन);

(ख) निर्माण ठेकों से उत्पन्न आस्तियाँ (देखिए लेखा मानक 7, निर्माण ठेके);

(ग) वित्तीय आस्तियाँ[47], उन विनिधानों को सम्मिलित करते हुए जो लेखा मानक 13, विनिधानों के लिए लेखा, के क्षेत्र में आते हैं, और

(घ) आस्थगित कर आस्तियाँ (देखिए लेखा मानक 22, आय पर करों के लिए लेखा)

2. यह मानक सूचीबद्ध सामान, निर्माण ठेकों द्वारा उत्पन्न आस्तियों, आस्थगित कर आस्तियों अथवा विनिधानों पर लागू नहीं होता क्योंकि वर्तमान लेखा मानक जो इन आस्तियों पर लागू होता है पहले से ही इन आस्तियों से संबंधित ह्रास को अभिज्ञात करने तथा मापने की अपेक्षाओं को विनिर्दिष्ट करता है।

3. यह मानक उन आस्तियों पर लागू होता है जो लागत पर ले जाई जाती हैं। यह उन आस्तियों पर भी लागू होता है जिनको अन्य लेखा मानकों के अनुसार पुनर्मूल्यांकन रकम पर लिया जाता है। तथापि, यह पहचानना कि पुनर्मूल्यांकित आस्ति ह्रासित हो सकती है, उसका उचित मूल्य अवधारित करने में प्रयुक्त आधार पर निर्भर करता है :

(क) यदि आस्ति का उचित मूल्य उसका बाज़ार मूल्य है, तो आस्ति के उचित मूल्य तथा इसके शुद्ध विक्रय मूल्य में केवल आस्ति के व्ययन की प्रत्यक्ष वृद्धिगत लागत का अन्तर होता है:

(i) यदि व्ययन लागत नगण्य है, तो पुनर्मूल्यांकित आस्ति की वसूली योग्य रकम आवश्यक रूप से इसके पुनर्मूल्यांकित रकम (उचित मूल्य) के लगभग बराबर या उससे अधिक होती है। इस स्थिति में पुनर्मूल्यांकन अपेक्षाएँ लागू करने के पश्चात् यह सम्भावना नहीं रहती कि पुनर्मूल्यांकित आस्ति में ह्रास हो तथा वसूली योग्य रकम के प्राक्कलन की आवश्यकता नहीं होती है, और

(ii) यदि व्ययन लागतें नगण्य नहीं हैं तो पुनर्मूल्यांकित आस्ति का शुद्ध विक्रय मूल्य आवश्यक रूप से उसके उचित मूल्य से कम होता है। अतः पुनर्मूल्यांकित आस्ति ह्रासित होगी यदि इसका प्रयोग से मूल्य, इसकी पुनर्मूल्यांकित रकम (उचित मूल्य) से कम है। इस परिस्थिति में, पुर्नमूल्यांकन अपेक्षाओं को लागू करने के बाद यह अवधारित करने के लिए कि आस्ति ह्रासित हो सकती है या नहीं उद्यम यह मानक लागू करता है; और

(ख) यदि आस्ति का उचित मूल्य इसके बाज़ार मूल्य की अपेक्षा किसी अन्य आधार पर अवधारित किया जाता है, तो इसकी पुनर्मूल्यांकित रकम (उचित मूल्य) इसके वसूली योग्य रकम से अधिक या कम हो सकती है। अतः पुनर्मूल्यांकन अपेक्षाओं को पूरा करने के पश्चात्, उद्यम यह अवधारित करने के लिए कि आस्ति ह्रासित हो सकती है या नहीं इस मानक को लागू करता है।

परिभाषाएँ

4. इस मानक में निम्नलिखित शब्दों को विनिर्दिष्ट अर्थों में प्रयोग किया गया है:

4.1 <u>वसूली योग्य रकम</u> आस्ति के शुद्ध विक्रय मूल्य तथा प्रयोग से मूल्य में जो अधिक हो वह होती है।

4.2 <u>प्रयोग से मूल्य</u> आस्ति के लगातार उपयोग तथा उसके उपयोगी जीवन के अन्त पर व्ययन से प्राप्त होने के लिए प्रत्याशित प्राक्कलित भावी रोकड़ प्रवाह का वर्तमान मूल्य होता है।

परन्तु लघु तथा मध्यम आकार कम्पनियों के संदर्भ में, जिन्हें कि अधिसूचना में परिभाषित किया गया है, 'प्रयोग से मूल्य' शब्द की परिभाषा निम्नलिखित होगी:

"प्रयोग से मूल्य" आस्ति के लगातार उपयोग तथा उसके उपयोगी जीवन के अन्त पर व्ययन से उत्पन्न होने के लिए प्रत्याशित प्राक्कलित भावी रोकड़ प्रवाहों का वर्तमान मूल्य अथवा उसका उचित प्राक्कलन होता है"

---

[47] 'वित्तीय आस्ति' ऐसी कोई आस्ति है जो निम्नलिखित है:

(क) रोकड़;

(ख) किसी अन्य उद्यम से रोकड़ अथवा कोई अन्य वित्तीय आस्ति प्राप्त करने के संविदात्मक अधिकार;

(ग) किसी अन्य उद्यम से वित्तीय प्रपत्र विनिमय करने के संविदात्मक अधिकार जिसकी शर्तें मुख्यतः अनुकूल हैं;

(घ) किसी अन्य उद्यम में स्वामित्व हित।

स्पष्टीकरण:

इस परन्तुक के अनुसार 'प्रयोग से मूल्य' की परिभाषा दर्शाती है कि वर्तमान मूल्य तकनीक का प्रयोग करने की बजाय 'प्रयोग से मूल्य' का उचित प्राक्कलन लगाया जा सकता है। परिणामतः यदि एक लघु तथा मध्यम आकार कम्पनी वर्तमान मूल्य तकनीक का प्रयोग न करके 'प्रयोग से मूल्य' को मापना चुनती है तो ऐसी लघु तथा मध्यम आकार की कम्पनी पर लेखा मानक 28 के संबंधित उपबन्ध जैसे कि मितिकाटा दर इत्यादि लागू नहीं होंगे।

4.3 शुद्ध विक्रय मूल्य व्ययन लागतों को घटाने के पश्चात् दो जानकार तथा इच्छुक पक्षकारों के बीच आर्म्स लेंग्थ संव्यवहार में अभिप्राप्त रकम होती है।

4.4 व्ययन लागतें वित्तीय लागतें तथा आयकर व्यय को छोड़कर एक आस्ति के व्ययन के प्रति प्रत्यक्ष रूप से चिन्हित वृद्धिगत लागतें हैं।

4.5 ह्रास हानि वह रकम है जिससे किसी आस्ति की कैरिंग रकम इसकी वसूली योग्य रकम से अधिक होती है।

4.6 कैरिंग रकम तुलन पत्र में दिखायी गई आस्ति की वह रकम है जिस पर एक आस्ति को उसके किसी संचित अवक्षयण (क्रमिक अपाकरण) तथा संचित ह्रास हानि के घटाने के बाद तुलन पत्र में अभिज्ञात किया जाता है।

4.7 अवक्षयण (क्रमिक अपाकरण) एक आस्ति के अवक्षयण योग्य रकम का उसके उपयोगी जीवन पर व्यवस्थित आबंटन है।[48]

4.8 अवक्षयण योग्य रकम आस्ति की लागत अथवा वित्तीय विवरणों में लागत के लिए प्रतिस्थापित अन्य मूल्य में से आस्ति के अविशष्ट मूल्य घटाने के पश्चात् की रकम होती है।

4.9 उपयोगी जीवन होता है या तो:

(क) उद्यम द्वारा आस्ति के प्रयोग की अपेक्षित समयावधि; या

(ख) उद्यम द्वारा आस्ति से अभिप्राप्त होने वाली अपेक्षित उत्पादन अथवा इसी प्रकार की इकाइयों की संख्या।

4.10 रोकड़ सृजन इकाई आस्तियों का अलग से पहचानने योग्य सबसे छोटा समूह है जो लगातार उपयोग से रोकड़ अंतर्प्रवाहों का सृजन करता है जो मुख्यतः अन्य आस्तियों या आस्तियों के समूह से रोकड़ अंतर्प्रवाहों से स्वतंत्र होते हैं।

4.11 निगम आस्तियाँ गुडविल के अतिरिक्त वे आस्तियाँ हैं जो पुनर्विलोकन के अधीन रोकड़ सृजन इकाई तथा अन्य रोकड़ सृजन इकाइयों से उत्पन्न भावी रोकड़ प्रवाह में योगदान देते हैं।

4.12 सक्रिय बाज़ार वह बाज़ार है जहाँ सभी निम्नलिखित परिस्थितियाँ विद्यमान होती हैं:

(क) बाज़ार में क्रय-विक्रय की जाने वाली मदें समरूप हैं ;

(ख) इच्छुक क्रेता और विक्रेता सामान्य रूप से हर समय पाये जा सकते हैं; और

(ग) पब्लिक को कीमतों की जानकारी है।

ऐसी आस्ति को पहचानना जो ह्रासित हो सकती है

5. यदि आस्ति की कैरिंग रकम उसकी वसूली योग्य रकम से अधिक होती है तो आस्ति ह्रासित होती है। 6 से 13 तक के पैरा विनिर्दिष्ट करते हैं कि कब वसूली योग्य रकम का अवधारण करना चाहिये। यद्यपि इन अपेक्षाओं में 'आस्ति' शब्द का प्रयोग किया गया है परन्तु यह शब्द, एक 'व्यक्तिगत आस्ति' तथा 'रोकड़ सृजन इकाई' दोनों पर ही लागू होता है।

6. प्रत्येक तुलन-पत्र की तारीख पर एक उद्यम को यह निर्धारण करना चाहिये कि क्या आस्ति में ह्रास होने का कोई संकेत है। यदि कोई ऐसा संकेत है, तो उद्यम को आस्ति की वसूली योग्य रकम का प्राक्कलन करना चाहिये।

7. पैरा 8 से 10 कुछ ऐसे संकेतों का वर्णन करते हैं कि ह्रास हानि हो सकती है यदि उनमें से कोई संकेत विद्यमान है, तो उद्यम के लिए वसूली योग्य रकम का औपचारिक अनुमान लगाना आवश्यक होता है। यदि संभावित ह्रास हानि का कोई संकेत नहीं है, उद्यम को इस मानक के अनुसार वसूली योग्य रकम के औपचारिक प्राक्कलन की आवश्यकता नहीं होती है।

---

[48] अमूर्त आस्ति के अलावा गुडविल के संदर्भ में 'अवक्षयण', के स्थान पर सामान्यतः 'क्रमिक अपाकरण' शब्द का प्रयोग किया जाता है। दोनों शब्दों का अर्थ एक ही है।

8. आस्ति में ह्रास होने के संकेतों का अवधारण करने के लिए एक उद्यम को कम से कम निम्नलिखित संकेतों पर विचार करना चाहिये:

सूचना के बाह्य स्रोत

(क) सम्बंधित अवधि के दौरान एक आस्ति के बाज़ार मूल्य में महत्वपूर्ण कमी आई है जो समय के बीतने अथवा सामान्य प्रयोग से मूल्य में होने वाली अनुमानित कमी से अधिक है ।

(ख) अवधि के दौरान प्रौद्योगिकी, बाज़ार, आर्थिक अथवा विधिक परिस्थिति में जिसमें उद्यम प्रचालन करता है या उस बाज़ार में जिससे आस्ति जुड़ी हुई हैं, उद्यम पर प्रतिकूल प्रभाव वाले महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं या निकट भविष्य में होने की सम्भावना है।

(ग) बाज़ार ब्याज दर अथवा विनिधानों पर प्रतिफल की अन्य ब्याज दरों में अवधि के दौरान वृद्धि हुई है तथा इस बढ़ोतरी द्वारा आस्ति के प्रयोग से मूल्य की गणना में प्रयुक्त मितिकाटा दर को प्रभावित करने तथा आस्तियों की वसूली योग्य रकम में सारवान रूप से कमी लाने की सम्भावना है।

(घ) रिपोर्टिंग उद्यम की शुद्ध आस्तियों की कैरिंग रकम उसके बाज़ार पूंजीकृत मूल्य से अधिक है।

सूचना के आन्तरिक स्रोत

(ङ) आस्ति के अप्रचलन या भौतिक क्षति से सम्बंधित साक्ष्य उपलब्ध है;

(च) अवधि के दौरान, उद्यम पर प्रतिकूल प्रभाव के साथ, उस परिमाण में या उस तरीके में जिसमें आस्ति को प्रयुक्त किया है अथवा प्रयुक्त करने की प्रत्याशा है, महत्वपूर्ण परिवर्तन हो चुके हैं या निकट भविष्य में होने की अपेक्षा है। इन परिवर्तनों में उस प्रचालन को जिनसे यह आस्ति संबंधित है, बंद करना अथवा पुनर्रचना अथवा पूर्व प्रत्याशित तारीख से पहले ही उस आस्ति के व्ययन की योजनाएँ सम्मिलित हैं; और

(छ) आंतरिक रिपोर्टिंग से साक्ष्य प्राप्त है जो यह संकेत देता है कि आस्ति का आर्थिक निष्पादन प्रत्याशा से अधिक खराब है अथवा अधिक खराब होगा।

9. पैरा 8 में दी गई सूची संपूर्ण नहीं है। एक उद्यम कई अन्य संकेतों की पहचान कर सकता है जो कि यह संकेत दे कि आस्ति में ह्रास हो सकता है तथा ये उद्यम से उस आस्ति के वसूली योग्य रकम के निर्धारण की अपेक्षा करेंगे।

10. आंतरिक रिपोर्टिंग द्वारा साक्ष्य में, जो आस्ति के ह्रासित होने की संभावना का संकेत देते हैं, निम्नलिखित की विद्यमानता सम्मिलित है:

(क) आस्ति के अर्जन के लिए रोकड़ प्रवाह या तत्पश्चात् आस्ति को चलाने अथवा उसके रखरखाव के लिए रोकड़ की आवश्यकता जो मूलतः बजट की रकम से बहुत अधिक है;

(ख) आस्ति से वास्तविक शुद्ध रोकड़ प्रवाह अथवा प्रचालन लाभ या हानि जो मूलतः बजट रकम से बहुत खराब है;

(ग) आस्ति से प्रवाहित होने वाले बजट शुद्ध रोकड़ प्रवाह या प्रचालन लाभ में बहुत अधिक कमी अथवा बजट हानि में बहुत अधिक वृद्धि; या

(घ) आस्ति के लिए प्रचालन हानियाँ या रोकड़ बर्हिप्रवाह जब वर्तमान अवधि के आंकड़ों को भविष्य के लिए बजट आंकड़ों में जोड़ा जाता है।

11. सारवानता की अवधारणा का प्रयोग यह जानने के लिए किया जाता है कि आस्ति के वसूली योग्य रकम के प्राक्कलन की आवश्यकता है या नहीं। उदाहरणतः यदि पूर्व गणना दर्शाती है कि आस्ति की वसूली योग्य रकम उसकी कैरिंग रकम से बहुत अधिक है तो उद्यम को आस्ति की वसूली योग्य रकम के पुनः प्राक्कलन की आवश्यकता नहीं है यदि ऐसी कोई घटनाएँ नहीं घटीं जो इस अन्तर को समाप्त करें। इसी प्रकार पूर्व विश्लेषण यह दर्शा सकते हैं कि आस्ति की वसूली योग्य रकम पैरा 8 की सूची में दिए गए एक (या अधिक) संकेतों से प्रभावित नहीं होती है।

12. पैरा 11 के दृष्टांत के रूप में, यदि बाज़ार की ब्याज दरें, या विनिधानों के प्रतिफल की अन्य बाज़ार दरों में अवधि के दौरान वृद्धि हुई है, तो एक उद्यम को निम्नलिखित परिस्थितियों में औपचारिक रूप से वसूली योग्य रकम के प्राक्कलन की आवश्यकता नहीं है:

(क) यदि आस्ति के प्रयोग से मूल्य की गणना के लिए जिस मितिकाटा दर का प्रयोग किया गया है, उसके बाज़ार दरों में वृद्धि से प्रभावित होने की सम्भावना नहीं है। उदाहरणार्थ ऐसी आस्ति जिसका शेष उपयोगी जीवन लम्बा है उसके लिए जिस मितिकाटा दर का प्रयोग किया गया है उस पर अल्प अवधि की ब्याज दरों की वृद्धि का कोई सारवान प्रभाव नहीं होगा; या

(ख) यदि आस्ति के प्रयोग से मूल्य की गणना करने के लिए प्रयुक्त मितिकाटा दर, के बाज़ार दरों में वृद्धि से प्रभावित होने की सम्भावना है परन्तु वसूली योग्य रकम का पूर्व संवेदनशीलता विश्लेषण दर्शाता है कि;

(i) वसूली योग्य रकम में कोई विशेष कमी आने की सम्भावना नहीं है क्योंकि भावी रोकड़ प्रवाहों में वृद्धि होने की सम्भावना है। उदाहरणतः, कुछ परिस्थितियों में, एक उद्यम यह प्रदर्शित कर सकता है कि वह बाज़ार दरों में कोई वृद्धि के प्रतिकर के लिए अपने राजस्व को समायोजित करता है; या

(ii) वसूली योग्य रकम में कमी के परिणामस्वरूप सारवान ह्रास हानि की सम्भावना नहीं है।

13. यदि आस्ति में ह्रास होने का कोई भी संकेत है तो यह उपदर्शित कर सकता है कि आस्ति के शेष उपयोगी जीवन, अवक्षयण (क्रमिक अपाकरण) पद्धति अथवा आस्ति के अवशेष मूल्य के आस्ति पर लागू लेखा मानक, जैसे कि लेखा मानक 10, संपत्ति, संयंत्र और उपस्कर,[49] के अधीन पुनर्विलोकन, तथा समायोजन की आवश्यकता है। चाहे आस्ति का कोई ह्रास अभिज्ञात नहीं किया गया है।

वसूली योग्य रकम का माप

14. यह मानक परिभाषित करता है कि 'वूसली योग्य रकम' आस्ति के 'शुद्ध विक्रय मूल्य' तथा 'प्रयोग से मूल्य' में से जो अधिक हो वह होती है। पैरा 15 से 55 वसूली योग्य रकम को मापने की अपेक्षाओं का निर्धारण करते हैं। ये अपेक्षाएँ 'एक आस्ति' शब्द का प्रयोग करती हैं परन्तु एक व्यक्तिगत आस्ति अथवा रोकड़-सृजन इकाई पर समान रूप से लागू होती हैं।

15. आस्ति के शुद्ध विक्रय मूल्य तथा इसके प्रयोग से मूल्य दोनों को ही अवधारित करना सदैव आवश्यक नहीं है। उदाहरणतः दोनों में से यदि कोई भी रकम आस्ति की कैरिंग रकम से अधिक है, तो आस्ति ह्रासित नहीं है तथा दूसरी रकम का अनुमान लगाने की आवश्यकता नहीं है।

16. यदि एक आस्ति का सौदा सक्रिय बाज़ार में नहीं होता, तथापि इसका शुद्ध विक्रय मूल्य अवधारित करना सम्भव हो सकता है। यद्यपि कभी-कभी शुद्ध विक्रय मूल्य को अवधारित करना सम्भव नहीं होगा क्योंकि संज्ञान तथा इच्छुक पक्षकारों के बीच आर्म्स लेंग्थ संव्यवहार में आस्ति के विक्रय से प्राप्य रकम के विश्वस्त प्राक्कलन का कोई आधार नहीं है। इस परिस्थिति में आस्ति की वसूली योग्य रकम को इसके प्रयोग से मूल्य लिया जा सकता है।

17. यदि यह विश्वास करने का कोई कारण नहीं है कि आस्ति का प्रयोग से मूल्य इसके शुद्ध विक्रय मूल्य से सारवान रूप से अधिक है, आस्ति की वसूली योग्य रकम को ही इसका शुद्ध विक्रय मूल्य मानना चाहिये। यह अक्सर ऐसी आस्ति के संदर्भ में होगा जिसको व्ययन के लिए रखा गया है। यह इसलिए होगा क्योंकि व्ययन के लिए रखी गई आस्ति का प्रयोग से मूल्य मुख्यतः शुद्ध व्ययन आगम ही होता है क्योंकि आस्ति के निरंतर प्रयोग से आस्ति के विक्रय तक भावी रोकड़ प्रवाह नगण्य संभावित होते हैं।

18. जब तक एक आस्ति दूसरी आस्तियों या आस्ति के समूह से स्वतंत्र रह कर निरंतर उपयोग से रोकड़ अंतर्प्रवाह सृजित नहीं करती, एक एकल आस्ति की वूसली योग्य रकम अवधारित की जाती है। यदि यह स्थिति है तो आस्ति से संबंधित रोकड़ सृजन इकाई (पैरा 63 से 86 देखिए) की वसूली योग्य रकम अवधारित की जाती है जब तक कि:

(क) आस्ति का शुद्ध विक्रय मूल्य उसकी कैरिंग रकम से अधिक न हो; या

(ख) आस्ति का प्रयोग से मूल्य उसके शुद्ध विक्रय मूल्य के लगभग बराबर अनुमानित न किया जा सकता हो तथा शुद्ध विक्रय मूल्य अवधारित न किया जा सकता हो।

---

[49] अर्मूत आस्तियों के क्रमिक अपाकरण (अवक्षयण) का अध्ययन लेखा मानक 26, अर्मूत आस्तियाँ, में किया गया है।

19. कुछ परिस्थितियों में अनुमान, औसत तथा सरल किए हुए आंकलन, शुद्ध विक्रय मूल्य अथवा प्रयोग से मूल्य का अवधारण करने के लिए इस मानक में दृष्टांत स्वरूप दी गई विस्तृत संगणना का उचित प्राक्कलन प्रदान कर सकते हैं।

शुद्ध विक्रय मूल्य

20. आस्ति के शुद्ध विक्रय मूल्य का सर्वोत्तम साक्ष्य, आर्म्स लेंग्थ संव्यवहार में अस्ति के व्ययन से प्रत्यक्षतः सम्बन्धित वृद्धिगत लागतों को समायोजित करने के बाद बाध्य बिक्री करार में मूल्य होता है।

21. यदि कोई बाध्य बिक्री करार नहीं है, किन्तु एक आस्ति का सौदा सक्रिय बाज़ार में होता है, तो आस्ति का शुद्ध विक्रय मूल्य बाज़ार कीमत में से व्ययन लागतें घटाने के बराबर होगा। उचित बाज़ार कीमत साधारणतः चालू बोली कीमत है। जब चालू बोली कीमतें उपलब्ध न हों तो बहुत हाल ही के संव्यवहार के मूल्य के आधार पर शुद्ध विक्रय मूल्य का प्राक्कलन लगाया जा सकता है, परन्तु, संव्यवहार की तारीख तथा प्राक्कलन की तारीख के बीच आर्थिक परिस्थितियों में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन न हुए हों।

22. यदि कोई बाध्य बिक्री करार नहीं है और न ही आस्ति का कोई सक्रिय बाज़ार है तो शुद्ध विक्रय मूल्य उपलब्ध सर्वोत्तम सूचना पर निर्भर करेगा जो ऐसी रकम को दर्शाये जो कि एक उद्यम को, तुलनपत्र की तारीख पर दो जानकार और इच्छुक पक्षकारों के बीच आर्म्स लेंग्थ संव्यवहार में आस्ति के व्ययन से प्राप्त रकम में से व्ययन लागत घटाने के पश्चात् प्राप्य हो। ऐसी रकम के अवधारण के लिए उद्यम इसी प्रकार के उद्योग में इस प्रकार की आस्तियों के लिए हाल ही में हुए संव्यवहारों के परिणाम का अध्ययन करेगा। शुद्ध विक्रय मूल्य, बाध्य विक्रय को नहीं दर्शाता जब तक कि प्रबंध तुरन्त विक्रय के लिए बाध्य न हो।

23. शुद्ध विक्रय मूल्य निर्धारित करने में व्ययन लागतें, उनके अतिरिक्त जो पहले से ही दायित्वों के रूप में अभिज्ञात की जा चुकी हैं, घटायी जाती हैं। एक आस्ति को बेचने की दशा में लाने के लिए प्रत्यक्ष वृद्धिगत लागतें, विधिक लागतें, आस्ति को हटाने की लागतें, ऐसी लागतों के उदाहरण हैं। यद्यपि, आस्ति के व्ययन के लिए समापन लाभ तथा एक व्यवसाय के घटाने या पुनर्गठन से संबंधित लागतें प्रत्यक्ष वृद्धिगत लागतें नहीं हैं।

24. कभी-कभी, एक आस्ति के व्ययन में क्रेता को दायित्व उठाने की आवश्यकता होगी तथा आस्ति और दायित्व दोनों के लिए केवल एक शुद्ध विक्रय मूल्य उपलब्ध होता है। पैरा 76 स्पष्ट करता है कि इस स्थिति से कैसे निपटा जाये।

प्रयोग से मूल्य

25. एक आस्ति के प्रयोग से मूल्य के प्राक्कलन में निम्नलिखित कदम उठाये जाते हैं:

(क) आस्ति के निरंतर प्रयोग तथा अंतिम व्ययन से उत्पन्न भावी रोकड़ अंतर्प्रवाहों तथा बाह्य प्रवाहों का प्रक्कलन करना; और

(ख) इन भावी रोकड़ प्रवाहों पर उचित मितिकाटा दर लगाना।

भावी रोकड़ प्रवाहों के प्राक्कलनों का आधार

26. प्रयोग से मूल्य मापने में:

(क) रोकड़ प्रवाह प्रायोजनों को युक्तियुक्त तथा समर्थन योग्य मान्यताओं पर आधारित होना चाहिए जो प्रबंधतंत्र की उन आर्थिक परिस्थितियों के सर्वोत्तम प्रक्कलन का प्रतिनिधित्व करते हैं जो आस्ति के शेष उपयोगी जीवन के दौरान उपस्थित रहेंगी। बाह्य साक्ष्य पर अधिक जोर दिया जाना चाहिये;

(ख) रोकड़ प्रवाह प्रायोजनों को प्रबन्धतंत्र द्वारा अनुमोदित सर्वाधिक नवीनतम वित्तीय बजट/पूर्वानुमान पर आधारित होना चाहिये। जब तक दीर्घ अवधि का औचित्य न हो, बजट/पूर्वानुमान पर आधारित प्रायोजनों की अधिकतम अवधि पाँच वर्ष की होनी चाहिये; और

(ग) सर्वाधिक नवीनतम बजट/पूर्वानुमानों से संबंधित अवधि के बाद के रोकड़ प्रवाह प्रायोजनों का बाद के वर्षों के लिए सतत् या गिरती विकास दर का उपयोग करते हुए बजटों/पूर्वानुमानों पर आधारित प्रायोजनों की बहिर्गणना करके प्राक्कलन करना चाहिए जब तक कि वृद्धिगत दर उचित न हो। यह विकास दर उत्पादों, उद्योगों या देश अथवा देशों जिसमें उद्यम प्रचालन करता है, अथवा बाज़ार जिसमें आस्ति का प्रयोग किया जाता है के लिए, दीर्घकालीन औसत विकास दर से अधिक नहीं होनी चाहिये जब तक कि उच्चतर दर उचित न हो।

27. पाँच वर्ष की अवधि से अधिक अवधि के लिए भावी रोकड़ प्रवाहों के विस्तृत, स्पष्ट तथा विश्वस्त वित्तीय बजटों/पूर्वानुमानों, सामान्यतः उपलब्ध नहीं होते हैं। इस कारण से, प्रबंधतंत्र के भावी रोकड़ प्रवाहों के प्राक्कलन सबसे अधिक हाल के, अधिकतम पाँच वर्षों के बजटों/पूर्वानुमानों पर आधारित होते हैं। प्रबंधतंत्र पांच वर्ष से अधिक अवधि के वित्तीय बजटों/पूर्वानुमानों पर आधारित रोकड़ प्रवाह प्रायोजनों का प्रयोग कर सकता है यदि प्रबंधक को यह विश्वास है कि ये प्रायोजन विश्वसनीय हैं तथा उस लम्बी अवधि के दौरान रोकड़ प्रवाहों के पूर्वानुमान के लिए पिछले अनुभव के आधार पर अपनी योग्यता का ठीक-ठीक प्रदर्शन कर सकता है।

28. एक आस्ति के उपयोगी जीवन के अंत तक रोकड़ प्रवाह के प्रायोजन आने वाले वर्षों के लिए विकास दर को प्रयोग करते हुए वित्तीय बजटों/पूर्वानुमानों पर आधारित रोकड़ प्रवाह प्रायोजनों की बहिर्गणना करके प्राक्कलित किए जाते हैं। यह दर स्थिर अथवा घटती हुई होती है जब तक कि दर में वृद्धि उत्पाद के पैटर्न या उद्योग के जीवन चक्र के बारे में वस्तुनिष्ठ सूचनाओं से मेल न खायें। यदि उचित हो तो विकास दर शून्य या ऋणात्मक होती है।

29. जहाँ परिस्थितियाँ बहुत अनुकूल हों, प्रतियोगियों के बाज़ार में प्रवेश करने की तथा विकास निर्बंधित करने की सम्भावना रहती है। अतः उद्यम को उत्पादों, उद्योगों, या देश अथवा देशों जिनमें यह उद्यम परिचालन करता है अथवा उस बाज़ार जिसमें यह आस्ति प्रयोग में लाई जाती है, के लिए दीर्घ अवधि में (कह सकते हैं, 20 वर्ष) ऐतिहासिक विकास दर से अधिक विकास दर लाने में कठिनाई होगी।

30. वित्तीय बजटों/पूर्वानुमानों से सूचना का प्रयोग करने में, एक उद्यम यह विचार करता है कि सूचना उचित तथा समर्थक मान्यताओं को दर्शाती है और प्रबंधतंत्र की उन आर्थिक परिस्थितियों, जो कि आस्ति के शेष उपयोगी जीवन में विद्यमान रहेंगी के उत्तम प्राक्कलन का प्रतिनिधित्व करती है।

भावी रोकड़ प्रवाहों के प्राक्कलनों की संरचना

31. भावी रोकड़ प्रवाहों के प्राक्कलनों में निम्नलिखित सम्मिलित होने चाहियेः

(क) आस्ति के निरंतर प्रयोग से रोकड़ अंतर्प्रवाहों के प्रायोजन;

(ख) आस्ति के निरंतर उपयोग से रोकड़ प्रवाहों को सृजित करने के लिए आवश्यक रूप से उपगत रोकड़ बाह्य प्रवाह प्रायोजन (आस्ति को प्रयोग के योग्य बनाने के लिए रोकड़ बाह्य प्रवाह सहित) तथा जिसे आस्ति के प्रति उचित तथा सतत् आधार पर प्रत्यक्ष रूप से चिन्हित तथा आबंटित किया जा सकता है; और

(ग) आस्ति के उपयोगी जीवन काल के अन्त में उसके व्ययन के लिए प्राप्य (अथवा संदेय) शुद्ध रोकड़ प्रवाह, यदि कोई है।

32. भावी रोकड़ प्रवाहों के प्राक्कलनों तथा मितिकाटा दर सामान्य मुद्रास्फीती के कारण मूल्य वृद्धि की सतत् मान्यताओं को दर्शाते हैं। अतः यदि मितिकाटा दर सामान्य मुद्रा स्फीती के कारण हुई मूल्य वृद्धि के प्रभाव को सम्मिलित करती है तो भावी रोकड़ प्रवाहों का प्राक्कलन अभिहित शर्तों पर किया जाता है। यदि मितिकाटा दर सामान्य मुद्रा स्फीती के कारण हुई मूल्य वृद्धि के प्रभाव को अपवर्जित करती है तो भावी रोकड़ प्रवाहों को वास्तविक शर्तों पर प्राक्कलित किया जाता है किन्तु भविष्य में होने वाले विशिष्ट कीमत बढ़ोतरी या कमी को सम्मिलित किया जाता है।

33. रोकड़ के बाह्य प्रवाहों के प्रायोजनों में भावी उपरिव्ययों को भी सम्मिलित किया जाता है जिनको आस्ति के प्रति प्रत्यक्ष रूप से चिन्हित अथवा युक्तियुक्त तथा सतत् आधार पर आंबटित किया जा सकता है।

34. यदि आस्ति की कैरिंग रकम में आस्ति के विक्रय अथवा प्रयोग के लिए तैयार होने तक उपगत होने वाले सभी बाह्य रोकड़ प्रवाहों को सम्मिलित नहीं किया जाता है तो भावी बाह्य रोकड़ प्रवाहों का प्राक्कलन उन सभी अन्य बाह्य रोकड़ प्रवाहों को सम्मिलित करेगा जो आस्ति के विक्रय अथवा प्रयोग के लिए तैयार होने तक उपगत होने के लिए प्रत्याशित हैं। उदाहरणार्थ एक निर्माणाधीन भवन अथवा विकास योजना, जो कि अभी पूरा नहीं हुआ है, के मामले में यह होता है।

35. दोहरी गणना को दूर करने के लिए, भावी रोकड़ प्रवाहों के प्राक्कलन में निम्नलिखित को शामिल नहीं करते हैं:

(क) ऐसी आस्ति से रोकड़ अंतर्प्रवाह जो कि निरंतर प्रयोग से ऐसे रोकड़ अंतर्प्रवाहों का सृजन करते हैं जो पुनर्विलोकन में आस्ति के रोकड़ अंतर्प्रवाहों से स्वतंत्र हैः (उदाहरणतः, वित्तीय आस्तियाँ जैसे कि प्राप्य रकम); और

(ख) रोकड़ के बाह्य प्रवाह जो ऐसी बाध्यताओं से संबंधित हैं, जिनको दायित्व के रूप में अभिज्ञात किया जा चुका है (उदाहरणतः संदेय रकम, पेंशन अथवा उपबन्धित रकमें)।

36. भावी रोकड़ प्रवाहों का प्राक्कलन आस्ति की वर्तमान दशा के आधार पर करना चाहिये। भावी रोकड़ प्रवाहों के प्राक्कलनों में ऐसे रोकड़ अंतर्प्रवाह तथा बाह्य प्रवाह सम्मिलित नहीं करने चाहिये जिनकी निम्नलिखित से उत्पन्न होने की प्रत्याशा होः

(क) **भावी पुनर्संरचना जिसके लिए उद्यम वचनबद्ध नहीं है; या**

(ख) भावी पूंजीगत व्यय जो कि आस्ति में उसके मूलभूत अवधारित निष्पादन के प्रमाप से अधिक अभिवृद्धि अथवा वृद्धि लाएगें।

37. क्योंकि भावी रोकड़ प्रवाहों का प्राक्कलन आस्ति की वर्तमान दशा में किया जाता है, प्रयोग से मूल्य निम्नलिखित प्रदर्शित नहीं करताः

(क) भावी पुनर्संरचना, जिसके लिए उद्यम वचनबद्ध नहीं है, से प्रत्याशित भावी रोकड़ बाह्य प्रवाह, संबंधित लागत बचतें (उदाहरणतः स्टाफ लागतों में कमी) तथा अन्य लाभ; या

(ख) भावी पूंजीगत व्यय जो कि आस्ति के मूलतः अवधारित निष्पादन प्रमाप की तुलना में अधिक वृद्धि या अभिवृद्धि लाएगा अथवा इस भावी व्यय से संबंधित भावी लाभ।

38. पुनर्संरचना एक ऐसा कार्यक्रम है जिसका नियोजन तथा नियंत्रण प्रबंधतंत्र करता है और जो उद्यम द्वारा किये गये व्यवसाय के क्षेत्र को अथवा व्यवसाय की संचालन पद्धति में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाता है।[50]

39. जब कोई उद्यम पुनर्संरचना के लिए वचनबद्ध हो जाता है, तो इस पुनर्संरचना से कुछ आस्तियों पर प्रभाव पड़ने की सम्भावना होती है। एक बार उद्यम पुनर्संरचना के लिए वचनबद्ध हो जाता है, तो प्रयोग से मूल्य का अवधारण करने के लिए भावी रोकड़ अंतर्प्रवाह तथा बाह्य प्रवाह, लागत बचतें तथा पुनर्संरचना सम्बन्धी अन्य लाभों को (प्रबंधतंत्र द्वारा हाल ही में अनुमोदित किये वित्तीय बजटों/पूर्वानुमानों के आधार पर) दर्शाते हैं।

मानक से संलग्न दृष्टांत में दिया गया दृष्टांत 5 प्रयोग से मूल्य की गणना में भावी पुनर्संरचना के प्रभावों का दृष्टांत देता है।

40. जब तक कि उद्यम ऐसा पूंजीगत व्यय उपगत न करे जिससे कि आस्ति में मूलतः अवधारित निष्पादन प्रमाप की अपेक्षा अधिक अभिवृद्धि अथवा वृद्धि हो, भावी रोकड़ प्रवाहों के प्राक्कलनों में इस व्यय से उत्पन्न होने के लिए अपेक्षित रोकड़ अंतर्प्रवाह सम्मिलित नहीं किये जाते (दृष्टातों में दिये गए उदाहरण 6 को देखिए)।

41. भावी रोकड़ प्रवाहों के प्राक्कलनों में आस्ति की मूलतः अवधारित कार्यकुशलता को बनाये रखने अथवा कायम रखने के लिए आवश्यक भावी पूंजीगत व्यय सम्मिलित किये जाते हैं।

42. भावी रोकड़ प्रवाहों के अनुमानों में निम्नलिखित सम्मिलित नहीं किए जाने चाहियेः

(क) वित्तीय क्रियाकलापों से रोकड़ के आन्तरिक अथवा बाह्य प्रवाह; या

(ख) आयकर की प्राप्तियाँ अथवा संदाय।

43. भावी रोकड़ प्रवाह के प्राक्कलन उन मान्यताओं को दर्शाते हैं जो मितिकाटा दर के अवधारण की पद्धति के अनुरूप हैं। अन्यथा कुछ मान्यताओं के प्रभावों की गणना दो बार हो जायेगी तथा कुछ की रह जाएगी। क्योंकि मुद्रा का समय मूल्य अनुमानित भावी रोकड़ प्रवाह को मितिकाटा करके किया जाता है यह रोकड़ प्रवाह वित्तीय क्रियाकलाप से रोकड़ के आन्तरिक और बाह्य प्रवाह को अपवर्जित करते हैं। इसी प्रकार से, क्योंकि मितिकाटा दर कर पूर्व आधार पर अवधारित की जाती है, भावी रोकड़ प्रवाह भी पूर्व कर आधार पर भी प्राक्कलित किए जाते हैं।

44. एक आस्ति के उपयोगी जीवन के अन्त पर उसके व्ययन के लिए प्राप्त (अथवा भुगतान) शुद्ध रोकड़ प्रवाहों का प्राक्कलन उस मूल्य के बराबर होना चाहिये जिसकी उद्यम आस्ति के व्ययन पर जानकार और इच्छुक पक्षों में आर्म्स लेंग्थ संव्यवहार में प्राक्कलित व्ययन की लागत घटाने के पश्चात् प्राप्त करने की अपेक्षा करता है।

---

[50] 'पुनर्संरचना' के और अधिक स्पष्टीकरण के लिए देखिए लेखा मानक 29, उपबंधित रकमें, आकस्मिक दायित्व और आकस्मिक आस्तियाँ।

45. एक आस्ति के उपयोगी जीवन के अंत पर उसके व्ययन से प्राप्त (अथवा भुगतान) होने वाले शुद्ध रोकड़ प्रवाहों का अवधारण एक आस्ति के शुद्ध विक्रय मूल्य के अवधारण के अनुरूप ही किया जाता है सिवाय इसके कि उन शुद्ध रोकड़ प्रवाहों के प्राक्कलन में:

(क) एक उद्यम प्राक्कलन की तारीख पर विद्यमान उसी प्रकार की आस्तियों के मूल्यों का प्रयोग करता है जिनका उपयोगी जीवन काल समाप्त हो चुका है और जिनको उन्हीं दशाओं में प्रयोग किया गया है जिसमें आस्ति का उपयोग होगा; और

(ख) उन मूल्यों को सामान्य मुद्रा-स्फीती के कारण भावी मूल्य वृद्धि तथा भावी विनिर्दिष्ट मूल्य वृद्धि (कमी) के लिए समायोजित किया जाता है। तथापि यदि आस्ति के निरंतर प्रयोग से भावी रोकड़ प्रवाहों के प्राक्कलन और मितिकाटा दर सामान्य मुद्रा स्फीती के प्रभाव को अपवर्जित करते हैं, तो यह प्रभाव व्ययन पर शुद्ध रोकड़ प्रवाहों के अनुमान से भी अपवर्जित किया जाता है।

विदेशी मुद्रा भावी रोकड़ प्रवाह

46. भावी रोकड़ प्रवाहों का प्राक्कलन उसी मुद्रा में किया जाता है जिसमें उनका सृजन होगा तथा तब उस मुद्रा के लिए उचित मितिकाटा दर के आधार पर उन्हें मितिकाटा किया जाता है। एक उद्यम तुलनपत्र की तारीख पर विनिमय दर (लेखा मानक 11, विदेशी मुद्रा विनिमय दरों में परिवर्तनों के प्रभाव, में अंतिम दर के रूप में वर्णित) का प्रयोग करते हुए प्राप्त वर्तमान मूल्य का अनुवाद करता है।

मितिकाटा दर

47. मितिकाटा दर (दरें) कर पूर्व दर (दरें) होनी चाहिये जो कि मुद्रा के समय मूल्य तथा किसी आस्ति से सम्बंधित जोखिमों के वर्तमान बाज़ार आंकलनों को दर्शाती हैं। मितिकाटा दर (दरें) को उन जोखिमों को नहीं दर्शाना चाहिए जिसके लिए भावी रोकड़ प्रवाहों का समायोजन किया जा चुका है।

48. वह दर जो मुद्रा के समय मूल्य तथा आस्ति के प्रति विशिष्ट जोखिम के वर्तमान बाज़ार निर्धारण को परिलक्षित करती है वह प्रतिफल है जिसकी विनिधानकर्ता अपेक्षा करते यदि उन्हें वह विनिधान चुनना होता जो ऐसे रोकड़ प्रवाह सृजित करते हैं जो रकम, समय तथा जोखिम छवि में उन रोकड़ प्रवाहों के समान हैं जिनकी उद्यम, आस्ति द्वारा प्रत्याशा करता है। इस दर का प्राक्कलन इसी प्रकार की आस्तियों के लिए वर्तमान बाज़ार संव्यवहारों में अन्तर्निहित दर अथवा एक ऐसे सूचीबद्ध उद्यम की भारित औसत लागत से लगाया जाता है जिसके पास एक आस्ति (अथवा आस्तियों का संविभाग) है जो पुनर्विलोकन के अधीन आस्ति के प्रति सेवाओं की शर्तों तथा जोखिमों के सामान है।

49. जब किसी आस्ति की विशिष्ट दर बाज़ार से प्रत्यक्ष रूप से उपलब्ध न हो, एक उद्यम मितिकाटा दर का प्राक्कलन लगाने के लिए दूसरे आधार का प्रयोग करता है। यथासंभव, अनुमान लगाने का उद्देश्य निम्नलिखित का बाज़ार आंकलन है:

(क) आस्ति के उपयोगी जीवन के अन्त तक की अवधि के लिए मुद्रा का समय मूल्य; और

(ख) इस बात का जोखिम कि भावी रोकड़ प्रवाह रकम या समय में अनुमानों से भिन्न होंगे।

50. प्रारम्भ में उद्यम को निम्नलिखित दरों को ध्यान में रखना चाहिये:

(क) पूंजी आस्ति मूल्यन मॉडल जैसी तकनीकों का प्रयोग करते हुए निर्धारित उद्यम की पूँजी की भारित औसत लागत;

(ख) उद्यम के लिए वृद्धिगत उधार दर ; और

(ग) अन्य बाज़ार उधार दरें।

51. इन दरों का निम्नलिखित के लिए समायोजन किया जाता है:

(क) उस पद्धति को प्रदर्शित करने के लिए जिसमें बाज़ार प्रायोजित रोकड़ प्रवाहों से संबंधित विनिर्दिष्ट जोखिमों का अवधारण करेगा; और

(ख) उन जोखिमों को अपवर्जित करने के लिए जो प्रायोजित रोकड़ प्रवाहों से सुसंगत नहीं हैं।

जोखिम जैसे, देश का जोखिम, मुद्रा जोखिम, कीमत जोखिम, रोकड़ प्रवाह जोखिम को, ध्यान में रखना चाहिए।

52. दोहरी गणना दूर करने के लिए, मितिकाटा दर उन जोखिमों को प्रदर्शित नहीं करती जिनके लिए भावी रोकड़ प्रवाह प्राक्कलनों को समायोजित कर दिया गया है।

53. उद्यम की पूंजी संरचना तथा आस्ति के क्रय में जिस तरीके से उद्यम ने वित्तपोषण किया मितिकाटा दर उससे स्वतंत्र होती है क्योंकि एक आस्ति से प्रत्याशित भावी रोकड़ प्रवाह इस पर निर्भर नहीं करते कि उद्यम ने किस तरीके से आस्ति के क्रय के लिए वित्तपोषण किया।

54. दर का आधार पश्चात् कर का है, तो यह आधार पूर्व-कर दर को प्रदर्शित करने के लिए समायोजित किया जाता है।

55. एक आस्ति के प्रयोग से मूल्य के प्राक्कलन के लिए एक उद्यम सामान्यतः एक ही मितिकाटा दर का उपयोग करता है। तथापि, विभिन्न भावी अवधियों में जहाँ प्रयोग से मूल्य विभिन्न अवधियों के लिए जोखिमों में अन्तर या ब्याज दरों की अवधि संरचना से संवेदनशील है, वहाँ एक उद्यम अलग मितिकाटा दर का उपयोग करता है।

ह्रास हानि का अभिज्ञान तथा मापन

56. पैरा 57 से 62 एक पृथक आस्ति की ह्रास हानियों के अभिज्ञान तथा मापन की अपेक्षाएँ निर्धारित करते हैं। रोकड़ सृजन इकाई की ह्रास हानियों के अभिज्ञान तथा मापन का वर्णन पैरा 87 से 92 में किया गया है।

57. यदि आस्ति की वसूली योग्य रकम उसकी कैरिंग रकम से कम है, तो आस्ति की कैरिंग रकम को उसकी वसूली योग्य रकम तक घटाना चाहिये। यह कमी ह्रास हानि है।

58. लाभ और हानि के विवरण में ह्रास हानि को तुरंत एक व्यय के रूप में अभिज्ञात करना चाहिये, जब तक कि आस्ति किसी दूसरे लेखा मानक के अनुसार पुनर्मूल्यांकित मूल्य पर नहीं ली जाती (लेखा मानक 10, *संपत्ति, संयंत्र और उपस्कर* देखें), उस परिस्थिति में उस लेखा मानक के अधीन पुनर्मूल्यांकित आस्ति की कोई ह्रास हानि पुनर्मूल्यांकन कमी समझी जाती है।

59. पुनर्मूल्यांकित आस्ति पर ह्रास हानि, लाभ और हानि के विवरण में एक व्यय के रूप में अभिज्ञात की जाती है। तथापि, ह्रास हानि प्रत्यक्ष रूप से आस्ति के किसी पुनर्मूल्यांकन अधिशेष के प्रति उस सीमा तक अभिज्ञात की जाती है जब तक कि ह्रास हानि उसी आस्ति के लिए पुनर्मूल्यांकन अधिशेष में रखी गई रकम से अधिक न हो जाए।

60. जब एक ह्रास हानि के लिए प्राक्कलित रकम उस आस्ति जिससे वह संबंधित है की कैरिंग रकम से अधिक है तो एक उद्यम को केवल तब ही दायित्व अभिज्ञात करना चाहिये यदि यह किसी दूसरे लेखा मानक द्वारा अपेक्षित है।

61. ह्रास हानि को अभिज्ञात करने के पश्चात् आस्ति के लिए अवक्षयण (क्रमिक अपाकरण) प्रभार, पुनरीक्षित कैरिंग रकम को, अवशेष मूल्य घटाने के बाद (यदि कोई है) आस्ति के बाकी उपयोगी जीवन के ऊपर क्रमबद्ध आधार पर आबंटित करने के लिए, भावी अवधियों में समायोजित किया जाना चाहिए।

62. यदि ह्रास हानि को अभिज्ञात किया गया है, तो उससे संबंधित कोई आस्थगित कर आस्ति या दायित्व लेखा मानक 22, आय पर करों के लिए लेखा (दृष्टांतों में दिये उदाहरण 3 को देखिए) में निर्धारित की जाती है।

रोकड़-सृजन इकाईयाँ

63. पैरा 64 से 92 उन रोकड़ सृजन इकाइयों को, जिनसे आस्ति जुड़ी हुई है पहचानने के लिए, रोकड़ सृजन इकाइयों की कैरिंग रकम का निर्धारण, तथा ह्रास हानि को अभिज्ञात करने के लिए आवश्यकताओं को उपवर्णित करते हैं।

रोकड़ सृजन इकाई की पहचान जिससे एक आस्ति संबंधित है

64. यदि ऐसा कोई संकेत है कि एक आस्ति ह्रासित हो सकती है, तो एक पृथक्क आस्ति की वसूली योग्य रकम का प्राक्कलन करना चाहिये। यदि पृथक्क आस्ति की वसूली योग्य रकम का प्राक्कलन सम्भव नहीं है, तो उद्यम को रोकड़ सृजन इकाई, जिससे कि यह पृथक्क आस्ति संबंधित है, की वसूली योग्य रकम का निर्धारण करना चाहिये (आस्ति की रोकड़ सृजन इकाई)।

65. पृथक आस्ति की वसूली योग्य रकम का अवधारण नहीं किया जा सकता यदि:

(क) आस्ति का प्रयोग से मूल्य उसके शुद्ध विक्रय मूल्य के निकट प्राक्कलित नहीं हो सकता (उदाहरणार्थ जब आस्ति के निरंतर प्रयोग से भावी रोकड़ प्रवाहों का अनुमान नगण्य नहीं हो सकता); और

(ख) निरंतर प्रयोग से आस्ति ऐसे रोकड़ अंतर्प्रवाह, जो अन्य आस्तियों से मुख्य रूप से स्वतंत्र है, सृजित नहीं करती। इन मामलों में प्रयोग से मूल्य और इसलिए वसूली योग्य रकम को केवल आस्ति की रोकड़-सृजन इकाई के लिए अवधारित किया जा सकता है।

उदाहरण

किसी खनन उद्यम के पास अपनी खनन क्रियाकलापों को चलाने के लिए प्राइवेट रेलवे है। प्राइवेट रेलवे को केवल अवशेष मूल्य के रूप में बेचा जा सकता है तथा प्राइवेट रेलवे निरंतर प्रयोग से ऐसे रोकड़ अंतर्प्रवाह सृजित नहीं करते जो खनन की अन्य आस्तियों के रोकड़ अंतर्प्रवाह से पूर्णतः स्वतंत्र हैं।

प्राइवेट रेलवे की वसूली योग्य रकम का प्राक्कलन संभव नहीं है क्योंकि प्राइवेट रेलवे का प्रयोग से मूल्य निर्धारित नहीं किया जा सकता तथा यह संभवतः अवशेष मूल्य से भिन्न है। अतः उद्यम उस रोकड़ सृजन इकाई की जिससे प्राइवेट रेलवे संबंधित हैं जो कि सम्पूर्ण रूप से खान है वसूली योग्य रकम का निर्धारण करता है।

66. जैसा कि पैरा 4 में परिभाषित किया गया है, एक आस्ति की रोकड़ सृजन इकाई आस्तियों का सबसे लघु समूह है जिसमें आस्ति सम्मिलित है तथा जो कि निरंतर प्रयोग से रोकड़ अंतर्प्रवाह सृजित करता हैं जो अन्य आस्तियों अथवा आस्तियों के समूह के रोकड़ अंतर्प्रवाह से पूर्णतः स्वतंत्र हैं। एक आस्ति को रोकड़ सृजन इकाई की पहचान में निर्णय की आवश्यकता है। यदि एक पृथक आस्ति की वसूली योग्य रकम निर्धारित नहीं किया जा सकती, तो एक उद्यम आस्तियों के सबसे छोटे समूह की पहचान करता है जो कि निरंतर प्रयोग से पूर्णतः स्वतंत्र रूप से रोकड़ अंतर्प्रवाह सृजित करते हैं।

उदाहरण

एक बस कम्पनी नगरपालिका के साथ संविदा के अधीन सेवाएं प्रदान करती है जिसमें पाँच अलग-अलग मार्गों पर न्यूनतम रूप से सेवा की आवश्यकता है। प्रत्येक मार्ग पर दी गई आस्तियाँ तथा प्रत्येक मार्ग से रोकड़ प्रवाह पृथक रूप से पहचाने जा सकते हैं। उनमें से एक मार्ग अत्यधिक हानि पर चलता है।

क्योंकि उद्यमी के पास किसी बस मार्ग को घटाने का विकल्प नहीं है, तो पहचानने योग्य निरंतर प्रयोग से रोकड़ प्रवाहों जो अन्य आस्तियों या आस्तियों के समूह के रोकड़ प्रवाहों से अलग है का निम्नतम स्तर इकट्ठे पाँचों मार्गों द्वारा सृजित रोकड़ प्रवाह है। प्रत्येक रुट की रोकड़ सृजन इकाई संपूर्ण रूप से बस कम्पनी है।

67. निरंतर प्रयोग से रोकड़ अंतर्प्रवाह, रोकड़ तथा रोकड़ समतुल्यों के वे अंतर्प्रवाह हैं जो कि रिपोर्टिंग उद्यम के बाहर के पक्षों से प्राप्त होते हैं। यह पहचानने में कि एक आस्ति (या आस्तियों के समूह) से रोकड़ प्रवाह दूसरी आस्ति (या आस्तियों के समूह) से पूर्णतः स्वतंत्र है, एक उद्यम विभिन्न तत्वों को ध्यान में रखता है जिसमें प्रबंधतंत्र कैसे उद्यम के प्रचालनों (जैसे उपोत्पाद रेखा, व्यवसाय, व्यक्तिगत अवस्थितियाँ, जिला अथवा प्रादेशिक क्षेत्र या कुछ अन्य तरीकों में) का अनुश्रवण करता है अथवा प्रबंधतंत्र उद्यम की आस्तियों तथा प्रचालनों को जारी रखने अथवा व्ययन के विनिश्चय कैसे लेता है। दृष्टांतों में दिया गया उदाहरण 1 रोकड़ सृजन इकाई की पहचान का उदाहरण देता है।

68. यदि एक आस्ति अथवा आस्तियों के समूह से उत्पादित उत्पाद के लिए सक्रिय बाज़ार उपस्थित है, तो इस आस्ति अथवा आस्तियों के समूह को एक पृथक्क रोकड़ सृजन इकाई के रूप में पहचाना जाना चाहिये, चाहे उसका कुछ अथवा सारा उत्पाद आंतरिक रूप से ही प्रयोग किया जाता है। यदि यह स्थिति है, तो प्रबंधतंत्र द्वारा उत्पाद के लिए भावी बाज़ार कीमत के सर्वोत्तम प्राक्कलन निम्नलिखित में प्रयोग करना चाहियेः

(क) इस रोकड़ सृजन इकाई के प्रयोग से मूल्य निर्धारित करने के लिए जब भावी रोकड़ अंतर्प्रवाह, जो कि उत्पाद के आन्तरिक प्रयोग से संबंधित हैं, प्राक्कलित किए जाते हैं, और

(ख) रिपोर्टिंग उद्यम की दूसरी रोकड़ सृजन इकाइयों के प्रयोग से मूल्य निर्धारण में, जब भावी रोकड़ बाह्य प्रवाह का, जो उत्पाद के आन्तरिक प्रयोग से सम्बंधित है, प्राक्कलन किया जाता है।

69. चाहे एक आस्ति अथवा आस्तियों के समूह द्वारा उत्पादित उत्पाद अंशतः या पूर्णतः रिपोर्टिंग उद्यम की दूसरी इकाइयों द्वारा प्रयोग किया जाता है (उदाहरणतः उत्पादन प्रक्रिया में मध्यवर्ती अवस्था में उत्पाद) तो यह आस्ति अथवा आस्तियों का समूह एक अलग रोकड़ सृजन इकाई बनाता है यदि उद्यम इस उत्पाद को सक्रिय बाज़ार में बेच सके। ऐसा इसलिए है क्योंकि यह आस्ति अथवा आस्तियों का समूह निरंतर प्रयोग से ऐसे रोकड़ प्रवाह का सृजन कर सकते हैं जो कि दूसरी आस्तियों अथवा आस्तियों के समूह से मुख्य रूप से स्वतंत्र होंगे। इस रोकड़ सृजन इकाई से संबंधित वित्तीय बजटों/पूर्वानुमानों के आधार पर सूचना का प्रयोग करने में एक उद्यम इस सूचना का समायोजन करता है यदि आन्तरिक अंतरण कीमत रोकड़ सृजन इकाई के उत्पाद के लिए भावी बाज़ार कीमतों के लिए प्रबंधक के सर्वोत्तम प्राक्कलन को नहीं दर्शाती।

70. जब तक कि कोई परिवर्तन न्यायोचित न हो, उसी प्रकार की आस्ति या आस्तियों के समूह के लिए अवधि दर अवधि रोकड़ सृजन इकाई की सतत् रूप से पहचान करनी चाहिये।

71. यदि एक उद्यम यह निर्धारित करता है कि पूर्व अवधियों की अपेक्षा एक आस्ति किसी दूसरी रोकड़ सृजन इकाई से संबंधित है, अथवा जोड़ी गई आस्तियों के प्रकार आस्ति की रोकड़ सृजन इकाई के लिए बदल चुके हैं, तो रोकड़ सृजन इकाई के विषय में पैरा 121 में कुछ प्रकटन अपेक्षित है यदि रोकड़ सृजन इकाई के लिए ह्रास हानि अभिज्ञात अथवा उलटी जाती है तथा यह संपूर्ण रूप से रिपोर्टिंग उद्यम के वित्तीय विवरण के लिए सारवान है,

रोकड़ सृजन इकाई की वसूली योग्य रकम तथा कैरिंग रकम

72. एक रोकड़ सृजन इकाई की वूसली योग्य रकम उसके शुद्ध विक्रय मूल्य तथा प्रयोग से मूल्य में से जो अधिक हो वह होती है। एक रोकड़ सृजन इकाई की वसूली योग्य रकम का निर्धारण करने के उद्देश्य से पैरा 15 से 55, में एक आस्ति के निर्देश को एक रोकड़ सृजन इकाई के संदर्भ में पढ़ा जाता है।

73. एक रोकड़ सृजन इकाई की कैरिंग रकम सतत् रूप से उसी प्रकार निर्धारित होनी चाहिये जिस प्रकार से रोकड़ सृजन इकाई की वसूली योग्य रकम निर्धारित होती है।

74. रोकड़ सृजन इकाई की कैरिंग रकमः

(क) केवल उन आस्तियों की कैरिंग रकम को सम्मिलित करती है जिसे रोकड़ सृजन इकाई पर प्रत्यक्ष रूप से जोड़ा अथवा सतत् तथा युक्तियुक्त आधार पर आबंटित किया जा सकता है तथा जो रोकड़ सृजन इकाई के प्रयोग से मूल्य के निर्धारण में प्राक्कलित भावी रोकड़ अंतर्प्रवाह का सृजन करेंगे; और

(ग) किसी अभिज्ञात दायित्व की कैरिंग रकम को सम्मिलित नहीं करती जब तक कि रोकड़ सृजन इकाई की वसूली योग्य रकम को इस दायित्व पर विचार किये बिना निर्धारित नहीं किया जा सकता है।

ऐसा इसलिए है क्योंकि एक रोकड़ सृजन इकाई का शुद्ध विक्रय मूल्य तथा प्रयोग से मूल्य उन रोकड़ प्रवाहों को अपवर्जित करके निर्धारित होता है जो ऐसी आस्तियों से संबंधित है जो उस रोकड़ सृजन इकाई का भाग नहीं हैं तथा ऐसे दायित्वों जो कि पहले से ही वित्तीय विवरणों में अभिज्ञात किए जा चुके हैं से संबंधित है जैसा कि पैरा 23 और 35 में दिया गया है।

75. जब वसूली निर्धारणों के लिए आस्तियों का समूह बनाया जाता है, तो रोकड़ सृजन इकाई में उन सभी आस्तियों को सम्मिलित करना महत्वपूर्ण है जो निरंतर प्रयोग से सुसंगत रोकड़ प्रवाहों का सृजन करती है। अन्यथा रोकड़ सृजन इकाई पूरी तरह वसूली योग्य दिखाई देगी जबकि वास्तव में ह्रास हानि हो चुकी है। कुछ मामलों में, यद्यपि कुछ आस्तियाँ एक रोकड़ सृजन इकाई के भावी रोकड़ प्रवाहों में योगदान देती हैं, वे रोकड़ सृजन इकाई में उचित तथा सतत् आधार पर आबंटित नहीं की जा सकती। यह गुडविल अथवा निगम आस्तियों जैसे कि मुख्य कार्यालय की आस्तियों के मामले में हो सकता है। पैरा 78 से 86 स्पष्ट करते हैं कि एक रोकड़ सृजन इकाई के ह्रास के परीक्षण के लिए इन आस्तियों से कैसे निपटा जाये।

76. रोकड़ सृजन इकाई की वसूली योग्य रकम के निर्धारण के लिए कुछ अभिज्ञात दायित्वों पर विचार करना आवश्यक हो सकता है। यह तभी होगा यदि रोकड़ सृजन इकाई का व्ययन क्रेता से दायित्व लेने की प्रत्याशा करेगा। ऐसी स्थिति में रोकड़ सृजन इकाई का शुद्ध विक्रय मूल्य (अथवा अन्ततः व्ययन से रोकड़ प्रवाह) रोकड़ सृजन इकाई की आस्तियों का प्राक्कलित विक्रय मूल्य तथा दायित्व में से व्ययन की लागत घटाने के बाद निर्धारित व्ययन होता है। किसी रोकड़ सृजन

IndiaCode

इकाई की कैरिंग रकम और उसकी वसूली योग्य रकम में ठीक से तुलना के लिए रोकड़ सृजन इकाई के प्रयोग से मूल्य तथा उसकी कैरिंग रकम के निर्धारण में दायित्व की कैरिंग रकम को घटाया जाता है।

उदाहरण

एक कम्पनी किसी ऐसे देश में खान चलाती है जहाँ पर विधान द्वारा यह अपेक्षित है कि मालिक को खनन प्रचालनों के पूर्ण होने पर उस स्थान को पूर्व स्थिति में लाना चाहिये। प्रत्यावर्तन की लागत में अतिभार का प्रतिस्थापन, जो खान प्रचालनों के प्रारम्भ होने से पहले, हटा देना चाहिये सम्मिलित होता है। जैसे ही अतिभार को हटा दिया गया वैसे ही अतिभार की प्रतिस्थापन की लागत के उपबन्ध को अभिज्ञात किया गया था। अभिज्ञात की गई रकम खान की लागत का भाग मानी गई तथा खान के उपयोगी जीवन के दौरान अवक्षयित होती है। प्रत्यावर्तन लागत के उपबन्ध की कैरिंग रकम 50,00,000 रु. है जो कि प्रत्यावर्तन लागत के वर्तमान मूल्य के बराबर है।

उद्यम ह्रास के लिए खान का परीक्षण कर रहा है। खान के लिए रोकड़ सृजन इकाई संपूर्ण खान ही है। उद्यम को लगभग 80,00,000 रु. के मूल्य पर खान खरीदने के विभिन्न प्रस्ताव मिले हैं, यह मूल्य इस तथ्य को ध्यान में रखता है कि उद्यम अतिभार को पूर्व स्थिति में लाने का दायित्व लेगा। खान की व्ययन लागतें नगण्य हैं। प्रत्यावर्तन लागत को छोड़ कर खान का प्रयोग से मूल्य लगभग 1,20,00,000 रु. है। खान की कैरिंग रकम 1,00,00,000 रु. है। रोकड़ सृजन इकाई का शुद्ध विक्रय मूल्य 80,00,000 रु. है। इस रकम में प्रत्यावर्तन लागतें भी है जिसका पहले से ही उपबन्ध किया जा चुका है। परिणामस्वरूप, रोकड़ सृजन इकाई का प्रयोग से मूल्य का निर्धारण, प्रत्यावर्तन लागत को ध्यान में रखते हुए किया जाता है तथा 70,00,000 (1,20,00,000 रु. घटा 50,00,000 रु.) प्राक्कलित किया गया है रोकड़ सृजन ईकाई की कैरिंग रकम 50,00,000 रु. है, जो कि खान की कैरिंग रकम (1,00,00,000 रु.) घटा प्रत्यावर्तन लागत के लिए उपबन्ध की कैरिंग रकम (50,00,000 रु.) हैं।

77. व्यवहारिक कारणों से, एक रोकड़ सृजन इकाई की वसूली योग्य रकम का निर्धारण कई बार उन आस्तियों जो रोकड़ सृजन इकाई का भाग नहीं है (उदाहरणतः प्राप्य रकमें अथवा अन्य वित्तीय आस्तियाँ) अथवा दायित्वों जिनको पहले से ही वित्तीय विवरणों में अभिज्ञात किया गया है (उदाहरणतः, देयराशियाँ, पेंशनें और अन्य उपबन्ध) को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। ऐसे मामलों में, रोकड़ सृजन इकाई की कैरिंग रकम उन आस्तियों की कैरिंग रकम से बढ़ा दी जाती है और उन दायित्वों की कैरिंग रकम से घटा दी जाती है।

गुडविल

78. ह्रास के लिए एक रोकड़ सृजन इकाई के परीक्षण में एक उद्यम को पहचानना चाहिए कि क्या रोकड़ सृजन इकाई से सम्बंधित गुडविल को वित्तीय विवरण में अभिज्ञात किया गया है। यदि ऐसी स्थिति है, तो उद्यम को चाहिये कि:

(क) वह 'बाटम-अप' टेस्ट लागू करे, अर्थात् उद्यम को चाहिये:

(i) वह पहचान करे कि क्या गुडविल की कैरिंग रकम को पुनर्विलोकन में रोकड़ सृजन इकाई पर युक्तियुक्त तथा सतत् आधार पर आबंटित किया जा सकता है; और

(ii) पुनर्विलोकन में रोकड़ सृजन इकाई की वसूली योग्य रकम की उसकी कैरिंग रकम (जिसमें आबंटित गुडविल यदि कोई है, की कैरिंग रकम को सम्मिलित करते हुए) से तुलना करें तथा पैरा 87 के अनुसार किसी भी ह्रास हानि को अभिज्ञात करे।

उद्यम को उपरोक्त चरण (ii) को पूरा करना चाहिये चाहे गुडविल की किसी भी कैरिंग रकम को पुनर्विलोकन के अधीन रोकड़ सृजन इकाई पर युक्तियुक्त तथा सतत् आधार पर आबंटित नहीं किया जा सकता; और

(ख) यदि 'बॉटम-अप' परीक्षण करते हुए उद्यम गुडविल की कैरिंग रकम को युक्तियुक्त तथा सतत् आधार पर पुनर्विलोकन में रोकड़ सृजन इकाई पर आबंटित नहीं कर सका, उद्यम को 'टॉप डाउन' परीक्षण करना चाहिये, अर्थात उद्यम को चाहिए कि:

(i) वह रोकड़ सृजन इकाई की सबसे छोटी इकाई जो कि पुनर्विलोकन में इकाई को सम्मिलित करती है और जिसके प्रति गुडविल की कैरिंग रकम को सम्मिलित तथा सतत् आधार पर आबंटित किया जा सकता है, की पहचान करे (बड़ी रोकड़ सृजन इकाई); और

(ii) तब, बड़ी रोकड़ सृजन इकाई की वसूली योग्य रकम की उसकी कैरिंग रकम से तुलना करें (आबंटित गुडविल की कैरिंग रकम को सम्मिलित करते हुए) तथा पैरा 87 के अनुसार किसी ह्रास हानि को अभिज्ञात करें।

79. अर्जन के परिणामस्वरूप उत्पन्न गुडविल भावी आर्थिक लाभों के पूर्वानुमान में अर्जनकर्ता द्वारा किये गए भुगतान का प्रतिनिधित्व करती है। भावी आर्थिक लाभ अलग से पहचानने योग्य अर्जित आस्तियों अथवा उन आस्तियों जिनको पृथक रूप से वित्तीय विवरण में अभिज्ञात नहीं किया जा सकता के समन्वय का परिणाम हो सकते हैं। गुडविल अन्य आस्तियों अथवा आस्तियों के समूह से स्वतंत्र रूप से रोकड़ प्रवाह सृजित नहीं करती अतः गुडविल की वसूली योग्य रकम का निर्धारण व्यक्तिगत आस्ति के रूप में नहीं किया जा सकता। परिणामस्वरूप यदि ऐसा कोई संकेत है कि गुडविल में ह्रास हो सकता है तो ऐसी रोकड़ सृजन इकाई, जिसके अन्तर्गत गुडविल आती है, की वसूली योग्य रकम का निर्धारण किया जाता है। तब इस रकम की रोकड़ सृजन इकाई की कैरिंग रकम से तुलना की जाती है और ह्रास हानि को पैरा 87 के अनुसार अभिज्ञात किया जाता है।

80. जब भी रोकड़ सृजन इकाई का ह्रास के लिए परीक्षण किया जाता है एक उद्यम रोकड़ सृजन इकाई द्वारा भावी रोकड़ प्रवाहों से संबंधित किसी गुडविल का विचार करता है। यदि गुडविल का आबंटन युक्तियुक्त तथा सतत् आधार पर किया जा सकता है तो उद्यम उसके लिए केवल बॉटम-अप परीक्षण करता है। यदि गुडविल का आबंटन युक्तियुक्त एवं सतत् आधार पर नहीं किया जा सकता तो उद्यम बॉटम-अप तथा टॉप-डाउन दोनों परीक्षण करता है (मानक से संलग्न दृष्टांत में दिए गए दृष्टांत 7 को देखिए)।

81. बॉटम-अप परीक्षण यह सुनिश्चित करता है कि उद्यम किसी भी ऐसी सत्रास हानि को अभिज्ञात करता है, जो रोकड़ सृजन इकाई के लिए उत्पन्न होती है, गुडविल सहित जिसको युक्तियुक्त तथा सतत् आधार पर आबंटित किया जा सकता है। जब कभी भी बॉटम-अप परीक्षण में गुडविल को युक्तियुक्त तथा सतत् आधार पर आबंटित करना अव्यवहारिक हो, तो दोनों 'बॉटम-अप' तथा 'टॉप-डाउन' परीक्षण का संयोजन यह सुनिश्चित करता है कि उद्यम निम्नलिखित को अभिज्ञात करता हैः

(क) प्रथम, कोई भी ह्रास हानि जो रोकड़ सृजन इकाई में गुडविल के विचार को छोड़ कर विद्यमान हो; और

(ख) तब वह उस ह्रास हानि जो गुडविल के लिए विद्यमान है। क्योंकि उद्यम पहले उन सभी आस्तियों के लिए 'बाटम-अप' परीक्षण करता है जिनमें ह्रास हो सकता है, 'टॉप-डाउन' परीक्षण में बड़ी रोकड़ सृजन इकाई के लिए ज्ञात हानि का संबंध केवल उस गुडविल से होता है, जो बड़ी रोकड़ सृजन इकाई के लिए आबंटित की जा सकती है।

82. यदि 'टॉप-डाउन' परीक्षण किया जाता है तो एक उद्यम बड़ी रोकड़ सृजन इकाई की वसूली योग्य रकम का निर्धारण करता है, जब तक कि ऐसा विश्वसनीय साक्ष्य न हो कि बड़ी रोकड़ सृजन इकाई के ह्रासित होने का कोई जोखिम नहीं है।

निगम आस्तियाँ

83. निगम आस्तियों में समूह या विभागीय आस्तियाँ सम्मिलित हैं जैसे कि उद्यम के मुख्यालयों या प्रभाग का भवन, ई. डी. पी. संरचना अथवा अनुसंधान केन्द्र । एक उद्यम की संरचना यह निर्धारित करती है कि कोई आस्ति किसी विशेष रोकड़ सृजन इकाई के लिए निगम आस्तियों की परिभाषा में आती है (पैरा 4 देखिए)। निगम आस्ति की मुख्य विशेषताएँ हैं कि वे अन्य आस्तियों अथवा आस्तियों के समूह से स्वतंत्र रहते हुए रोकड़ अंतर्प्रवाह का सृजन नहीं कर सकती तथा उनकी कैरिंग रकम को पूर्ण रूप से पुनर्विलोकन में रोकड़ सृजन इकाई में नहीं जोड़ा जा सकता है।

84. क्योंकि निगम आस्तियाँ पृथक रोकड़ अंतर्प्रवाह सृजित नहीं करती, एक पृथक निगम आस्ति की वसूली योग्य रकम का निर्धारण नहीं किया जा सकता जब तक कि प्रबंधन ने आस्ति के व्ययन का विनिश्चय न कर लिया हो। परिणामतः यदि ऐसा संकेत है कि निगम आस्ति ह्रासित हो सकती है उस रोकड़ सृजन इकाई की वसूली योग्य रकम का निर्धारण किया

जाता है जिससे निगम आस्ति जुड़ी है तब इसकी रोकड़-सृजन इकाई की कैरिंग रकम से तुलना की जाती है तथा पैरा 87 के अनुसार ह्रास हानि को अभिज्ञात किया जाता है।

85. एक रोकड़ सृजन इकाई के ह्रास के लिए परीक्षण करने के लिए उद्यम को सभी निगम आस्तियों को पहचानना चाहिये जिनका पुनर्विलोकन में रोकड़ सृजन इकाई से संबंध है। प्रत्येक पहचानी गई निगम आस्ति के लिए उद्यम को पैरा 78 लागू करना चाहिये अर्थात् –

(क) यदि निगम आस्ति की कैरिंग रकम का आबंटन युक्तियुक्त तथा सतत् आधार पर पुनर्विलोकन में रोकड़ सृजन इकाई के प्रति किया जा सकता, उद्यम को केवल बॉटम-अप परीक्षण करना चाहिये; और

(ख) यदि निगम आस्ति की कैरिंग रकम का आबंटन युक्तियुक्त तथा सतत् आधार पर पुनर्विलोकन में रोकड़ सृजन इकाई के प्रति नहीं किया जा सकता, उद्योग को 'बॉटम-अप' तथा 'टॉप-डाउन' दोनों ही परीक्षण करने चाहिये।

86. निगम आस्तियों से कैसे व्यवहार करना चाहिये उसका उदाहरण दृष्टांतों में उदाहरण 8 के रूप में दिया गया है।

रोकड़-सृजन इकाई के लिए ह्रास हानि

87. एक ह्रास हानि को रोकड़ सृजन इकाई के लिए, केवल तब ही अभिज्ञात करना चाहिये यदि वसूली योग्य रकम कैरिंग रकम से कम है। ह्रास हानि को निम्नलिखित क्रम में इकाई की आस्तियों की कैरिंग रकम को कम करने में आबंटित करना चाहियेः

(क) प्रथम, रोकड़ सृजन इकाई को आबंटित गुडविल (यदि कोई है); और

(ख) तब, इकाई में प्रत्येक आस्ति की कैरिंग रकम पर आधारित आनुपातिक आधार पर इकाई की अन्य आस्तियों को ।

कैरिंग रकम में इन कटौतियों को पृथक्क आस्ति पर ह्रास हानि मानना चाहिये तथा पैरा 58 के अनुसार अभिज्ञात करना चाहिये।

88. पैरा 87 के अधीन ह्रास हानि को आबंटित करने में, एक आस्ति की कैरिंग रकम को निम्नलिखित के अधिकतम से कम नहीं करना चाहिए:

(क) *इसका शुद्ध विक्रय मूल्य (यदि निर्धारण योग्य हो);*

(ख) *इसका प्रयोग से मूल्य (यदि निर्धारण योग्य हो); और*

(ग) *शून्य।*

ह्रास हानि की रकम, जिसे अन्यथा आस्ति को आबंटित किया गया होता, को आनुपातिक आधार पर इकाई की अन्य आस्तियों में आबंटित करना चाहिये ।

89. एक रोकड़ सृजन इकाई को आंबंटित गुडविल, इसकी प्रकृति के कारण, अन्य आस्तियों की कैरिंग रकम को कम करने से पहले कम कर दी जाती है।

90. यदि एक रोकड़ सृजन इकाई की प्रत्येक आस्ति के लिए अलग वसूली योग्य रकम के प्राक्कलन का कोई व्यवहारिक तरीका नहीं है, तो इस मानक के अनुसार गुडविल के अतिरिक्त उस इकाई की आस्तियों, में ह्रास हानि को आनुपातिक आधार पर आबंटित करना चाहिये, क्योंकि एक रोकड़ सृजन इकाई की सभी आस्तियाँ एक साथ कार्य करती हैं।

91. यदि एक आस्ति की वसूली योग्य रकम निर्धारित नहीं की जा सकती (पैरा 65 देखिए) तोः

(क) आस्ति के लिए ह्रास हानि अभिज्ञात की जाती है यदि आस्ति की कैरिंग रकम उसके शुद्ध विक्रय मूल्य तथा पैरा 87 और 88 में वर्णित आबंटन प्रक्रियाओं के परिणामों की रकम में से जो अधिक हो उससे अधिक है; और

(ख) आस्ति के लिए कोई ह्रास हानि अभिज्ञात नहीं की जाती है यदि संबंधित रोकड़ सृजन इकाई ह्रासित नहीं हुई है। यदि आस्ति का शुद्ध विक्रय मूल्य उसकी कैरिंग रकम से कम है तो भी यह लागू होता है।

IndiaCode

उदाहरण

एक मशीन में भौतिक नुकसान हुआ है किन्तु फिर भी काम कर रही है, यद्यपि उतना अच्छा नहीं जैसा यह करती थी। मशीन का शुद्ध विक्रय मूल्य उसकी कैरिंग रकम से कम है। मशीन निरंतर प्रयोग से स्वतंत्र रूप से रोकड़ अंतर्प्रवाह सृजित नहीं करती। आस्तियों का सबसे छोटा पहचानने योग्य समूह जिसमें मशीन सम्मिलित है और जो निरंतर प्रयोग से ऐसे रोकड़ अंतर्प्रवाह सृजित करता है जो कि दूसरी आस्तियों के रोकड़ अंतर्प्रवाह से पूर्णतः स्वतंत्र है, वह उत्पादन रेखा है जिससे मशीन संबंधित है। उत्पादन रेखा की वसूली योग्य रकम यह प्रदर्शित करती है कि उत्पादन रेखा में, सम्पूर्ण रूप से ह्रास नहीं है।

मान्यता 1: प्रबंधतंत्र द्वारा स्वीकृत बजट/पूर्वानुमान प्रबंधक की मशीन को बदलने की किसी वचनबद्धता को नहीं दर्शाते।

केवल मशीन की वसूली योग्य रकम प्राक्कलित नहीं की जा सकती क्योंकि मशीन का प्रयोग से मूल्य:

(क) इसके शुद्ध विक्रय मूल्य से भिन्न हो सकता है; और

(ख) केवल उस रोकड़ सृजन इकाई के लिए निर्धारित हो सकता है जिससे मशीन संबंधित है, (उत्पादन रेखा)।

उत्पादन रेखा ह्रासित नहीं है अतः मशीन के लिए कोई ह्रास अभिज्ञात नहीं किया जाता। तथापि उद्यम के लिए मशीन की अवक्षयण पद्धति या अवक्षयण अवधि का फिर से अनुमान लगाने की आवश्यकता हो सकती है। मशीन के प्रत्याशित शेष उपयोगी जीवन को अथवा उद्यम द्वारा आर्थिक लाभों के उपयोग के पैटर्न को दर्शाने के लिए संभवतः एक छोटी अवक्षयण अवधि अथवा तीव्र अवक्षयण पद्धति की आवश्यकता है।

मान्यता 2: प्रबंधतंत्र द्वारा अनुमोदित बजट/पूर्वानुमान मशीन को बदलने की तथा निकट भविष्य में बेचने की प्रबंधतंत्र वचनबद्धता को दर्शाते हैं। मशीन के व्ययन तक इसके (मशीन के) निरंतर प्रयोग से रोकड़ प्रवाह नगण्य प्राक्कलित होते हैं।

मशीन का प्रयोग से मूल्य इसके शुद्ध विक्रय मूल्य के निकट प्राक्कलित हो सकता है इसलिए, मशीन की वसूली योग्य रकम निर्धारित हो सकती है तथा जिस रोकड़ सृजन इकाई से यह संबंधित है उसका उस पर कोई विचार नहीं किया जाता (उत्पादन रेखा)। क्योंकि मशीन का शुद्ध विक्रय मूल्य उसकी कैरिंग रकम से कम है, मशीन की ह्रास हानि को अभिज्ञात किया जाता है।

92. पैरा 87 और 88 की आवश्यकताओं को लागू करने के पश्चात् एक रोकड़ सृजन इकाई के लिए किसी शेष ह्रास हानि की रकम के लिए देनदारी को अभिज्ञात करना चाहिये यदि किसी अन्य लेखा मानक द्वारा इसकी आवश्यकता है।

ह्रास हानि का उलटाव

93. पैरा 94 से 100 उस ह्रास हानि को उलटने की अपेक्षा को उपवर्णित करते हैं जो एक आस्ति या रोकड़ सृजन इकाई के लिए पूर्व लेखा अवधियों में अभिज्ञात की गई है। यह अपेक्षाएँ 'एक आस्ति' शब्द का प्रयोग करती हैं परन्तु एक पृथक आस्ति तथा रोकड़ सृजन इकाई पर समान रूप से लागू होती हैं। पैरा 101 से 105 में व्यक्तिगत आस्ति के लिए, पैरा 106 से 107 में रोकड़ सृजन इकाई के लिए तथा पैरा 108 से 111 में गुडविल के लिए अतिरिक्त आवश्यकताएँ उपवर्णित की गई हैं।

94. प्रत्येक तुलन पत्र की तारीख पर एक उद्यम को यह निर्धारित करना चाहिये कि क्या कोई ऐसा संकेत है कि पूर्व लेखा अवधियों में आस्ति के लिए अभिज्ञात ह्रास हानि अब विद्यमान नहीं है अथवा कम हो गई है। यदि, ऐसा कोई संकेत है तो उद्यम को उस आस्ति की वसूली योग्य रकम का प्राक्कलन करना चाहिये।

95. यह निर्धारण करने में कि क्या कोई ऐसा संकेत है कि पूर्व लेखा अवधियों में आस्ति के लिए जो ह्रास हानि अभिज्ञात की गई है अब विद्यमान नहीं है अथवा कम हो गई है उद्यम को न्यूनतम रूप से पर निम्नलिखित संकेतों को ध्यान में रखना चाहिये :

सूचना के बाह्य स्रोत :

(क) अवधि के दौरान आस्ति के बाज़ार मूल्य में महत्वपूर्ण वद्धि हुई है ;

(ख) प्रौद्योगिकी, बाज़ार, आर्थिक अथवा विधिक पर्यावरण जिसमें उद्यम प्रचालन करता है अथवा बाज़ार जिसमें आस्ति प्रतिबद्ध है, में उद्यम पर अनुकूल प्रभाव के साथ महत्वपूर्ण परिवर्तन अवधि के दौरान हो चुके हैं या निकट भविष्य में होने की अपेक्षा है;

(ग) अवधि के दौरान बाज़ार ब्याज दरों अथवा विनिधानों पर अन्य बाज़ार-प्रतिफल की दरों में कमी हुई है तथा उस कमी की उद्योग में आस्ति के प्रयोग से मूल्य की गणना में प्रयुक्त मितिकाटा दर को प्रभावित करने की संभावना है तथा सारवान रूप से आस्ति की वसूली योग्य रकम को बढ़ाती है।

सूचना के आंतरिक स्रोत :

(घ) अवधि के दौरान उद्यम पर अनुकूल प्रभाव के साथ महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं अथवा निकट भविष्य में ऐसे अनुकूल परिवर्तन हो सकते हैं, उस सीमा तक अथवा तरीके में जिसमें आस्ति का उपयोग किया जाता है अथवा उपयोग करने की अपेक्षा है। इन परिवर्तनों में वे पूंजीगत व्यय जिसे अवधि के दौरान आस्ति की कार्य-कुशलता के मूल निर्धारित स्तर से बढ़ाने अथवा सुधारने में उपगत किया जाता है अथवा ऐसे प्रचालन, जिससे आस्ति सम्बन्धित है को बंद करने या पुनर्गठन के लिए वचनबद्धता सम्मिलित है; और

(ङ) आंतरिक रिपोर्टिंग से उपलब्ध साक्ष्य संकेत देता है कि आस्ति की आर्थिक कार्यकुशलता अपेक्षा से बेहतर है अथवा होगी।

96. पैरा 95 में ह्रास हानि में संभाव्य गिरावट के संकेत मुख्य रूप से पैरा 8 में संभाव्य ह्रास हानि संकेतों को प्रतिबिम्बित करते हैं। सारवानता की धारणा यह पहचानने के लिए लागू की जाती है कि एक आस्ति पर ह्रास हानि जिसको पूर्व लेखा अवधि में अभिज्ञात किया गया है उसको उलटने तथा आस्ति की वसूली योग्य रकम को निर्धारण करने की आवश्यकता है।

97. यदि ऐसा संकेत है कि किसी आस्ति में अभिज्ञात ह्रास हानि अब विद्यमान नहीं रहेगी अथवा कम हो जायेगी, यह इस ओर संकेत कर सकता है कि आस्ति के शेष उपयोगी जीवन, अवक्षयण (क्रमिक अपाकरण) पद्धति अथवा अवशिष्ट मूल्य का आस्ति पर लागू लेखा मानक के अनुसार पुनर्विलोकन तथा समायोजन करना चाहिये चाहे उस आस्ति पर ह्रास हानि को नहीं उलटा जाता।

98. पूर्व लेखा अवधी में एक आस्ति के लिए अभिज्ञात ह्रास हानि को उलटना चाहिये, यदि रोकड़ अंतर्प्रवाह, रोकड़ बाह्य प्रवाह, अथवा मितिकाटा दर के प्राक्कलनों में जिनका आस्ति के वसूली योग्य रकम के निर्धारण में प्रयोग किया गया है, पिछली ह्रास हानि को अभिज्ञात करने के बाद से परिवर्तन हुए हैं। यदि ऐसी स्थिति है तो, आस्ति की कैरिंग रकम को उसकी वसूली योग्य रकम तक बढ़ा देना चाहिये। यह वृद्धि ह्रास हानि का उलटाव है।

99. ह्रास हानि का उलटाव आस्ति की प्राक्कलित सेवा क्षमता में वृद्धि को प्रदर्शित करता है, विक्रय अथवा प्रयोग द्वारा, उस तारीख से जब उद्यम ने उस आस्ति की ह्रास हानि को अभिज्ञात किया था। एक उद्यम द्वारा उन प्राक्कलनों में जिसके कारण प्राक्कलित सेवा-क्षमता में वृद्धि होती है परिवर्तन को पहचानने की अपेक्षा की जाती है। प्राक्कलनों में परिवर्तनों के उदाहरण में निम्नलिखित सम्मिलित हैं:

(क) वसूली योग्य रकम के लिए आधार में परिवर्तन (अर्थात् वसूली योग्य रकम क्या शुद्ध विक्रय मूल्य पर आधारित है अथवा प्रयोग से मूल्य पर);

(ख) यदि वसूली योग्य रकम प्रयोग से मूल्य पर आधारित थीः प्राक्कलित रोकड़ प्रवाहों की रकम या समय में अथवा मितिकाटा दर में परिवर्तन; या

(ग) यदि वसूली योग्य रकम शुद्ध विक्रय मूल्य पर आधारित थीः शुद्ध विक्रय मूल्य के घटकों के प्राक्कलन में परिवर्तन।

100. एक आस्ति का प्रयोग से मूल्य उस आस्ति की कैरिंग रकम से अधिक हो सकता है क्योंकि भावी रोकड़ अंतर्प्रवाहों का वर्तमान मूल्य, जैसे वे समीप आते हैं, बढ़ता है। तथापि आस्ति की सेवा क्षमता में वृद्धि नहीं हुई है। अतः ह्रास हानि को केवल समय के व्यतीत होने पर नहीं उलटा जा सकता (कभी-कभी उसको मितिकाटा का खुल जाना भी कहते हैं), चाहे आस्ति की वसूली योग्य रकम कैरिंग रकम से अधिक हो जाए।

एक पृथक आस्ति की ह्रास हानि का उलटाव

101. ह्रास हानि के उलटने के कारण आस्ति की बढ़ी हुई कैरिंग रकम आस्ति की उस कैरिंग रकम से अधिक नहीं होनी चाहिये जिसका निर्धारण (क्रमिक अपाकरण अथवा अवक्षयण घटाने के बाद) किया जाता यदि पूर्व लेखा अवधियों में उस आस्ति के लिए किसी ह्रास हानि को अभिज्ञात नहीं किया गया है।

102. आस्ति की कैरिंग रकम में ऐसी कैरिंग रकम (अवक्षयण या क्रमिक अपाकरण घटाने के बाद) की अपेक्षा वृद्धि जो अवधारित होती यदि पूर्व अवधि में ह्रास हानि को अभिज्ञात न किया गया होता, आस्ति का पुनर्मूल्यांकन हैं। ऐसे पुनर्मूल्यांकन के लेखा के लिए उद्यम आस्ति पर लागू होने वाले संबंधित लेखा मानक लागू करता है।

103. एक आस्ति की ह्रास हानि के उलटाव को लाभ और हानि विवरण में तुरंत आय के रूप में अभिज्ञात करना चाहिए जब तक कि आस्ति को किसी अन्य लेखा मानक के अनुसार पुनर्मूल्यांकित रकम पर न लिया गया हो (लेखा मानक 10, संपत्ति, संयंत्र और उपस्कर देखें) उस स्थिति में पुनर्मूल्यांकित आस्ति के लिए ह्रास हानि के उलटाव को उस लेखा मानक के अधीन पुनर्मूल्यांकन वृद्धि मानना चाहिये।

104. एक पुनर्मूल्यांकित आस्ति पर ह्रास हानि के उलटाव को सीधे ही पुनर्मूल्यांकन अधिशेष के शीर्षक के अधीन इक्विटी में क्रेडिट कर दिया जाता है। तथापि लाभ और हानि के विवरण में उस पुनर्मूल्यांकन आस्ति की ह्रास हानि को जिस सीमा तक व्यय अभिज्ञात किया गया था ऐसी हानि के उलटाव को आय के रूप में लाभ और हानि विवरण में अभिज्ञात किया जाता है।

105. ह्रास हानि के उलटाव को अभिज्ञात कर देने के पश्चात् आस्ति अवक्षयण (क्रमिक अपाकरण) प्रभार को आस्ति की पुनरीक्षित कैरिंग रकम में से अवशिष्ट मूल्य (यदि कोई हो) घटाने पर जो रकम बचे उसको व्यवस्थित आधार पर आस्ति के शेष उपयोगी जीवन काल पर आबंटित करने के लिए भावी अवधियों में समायोजित कर देना चाहिये।

रोकड़-सृजन इकाई के लिए ह्रास हानि का उलटाव

106. रोकड़-सृजन इकाई की ह्रास हानि के उलटाव को इकाई की आस्ति की कैरिंग रकम को बढ़ाने के लिए निम्नलिखित क्रम में आबंटित करना चाहिये:

(क) पहला, गुडविल के अतिरिक्त अन्य आस्तियों के प्रति इकाई में प्रत्येक आस्ति की कैरिंग रकम पर आधारित आनुपातिक आधार पर; और

(ख) तब, रोकड़ सृजन इकाई को आबंटित गुडविल (यदि कोई है) के प्रति, यदि पैरा 108 की आवश्यकताएँ पूरी कर दी गई हैं

कैरिंग रकमों में ये वृद्धियाँ पृथक्क आस्तियों के लिए ह्रास हानि का उलटाव मानी जानी चाहिये तथा पैरा 103 के अनुसार अभिज्ञात की जानी चाहिये।

107. पैरा 106 के अधीन एक रोकड़ सृजन इकाई की ह्रास हानि के उलटाव को आबंटित करने में, एक आस्ति की कैरिंग रकम निम्न में से जो कम हो उससे अधिक नहीं बढ़नी चाहिये:

(क) इसकी वसूली योग्य रकम (यदि निर्धारण योग्य है) ; और

(ख) कैरिंग रकम जिसका निर्धारण किया गया होता (अवक्षयण अथवा क्रमिक अपाकरण के पश्चात्) यदि पूर्व लेखा अवधियों में आस्ति के लिए किसी ह्रास हानि को अभिज्ञात नहीं किया जाता।

ह्रास हानि के उलटाव की रकम जो अन्यथा आस्ति को आबंटित होती उसका आबंटन उस इकाई की अन्य आस्तियों पर आनुपातिक आधार पर कर देना चाहिये।

गुडविल के लिए ह्रास हानि का उलटाव

108. पैरा 98 की आवश्यकता के अपवाद के रूप में, गुडविल के लिए अभिज्ञात ह्रास हानि को पश्चात्वर्ती अवधि में नहीं उलटना चाहिए, जब तक कि:

(क) ह्रास हानि आपवादिक प्रकृति की ऐसी विशिष्ट बाह्य घटनाओं के कारण हुई है जिसके फिर से घटित होने की कोई अपेक्षा नहीं है; और

(ख) पश्चात्वर्ती बाहरी घटनाएँ घट चुकी हैं जो उस घटना के प्रभाव को उलटती है।

109. लेखा मानक 26, अमूर्त आस्तियाँ, आंतरिक रूप से सृजित गुडविल के अभिज्ञात का प्रतिषेध करती है। गुडविल की वूसली योग्य रकम में पश्चात्वर्ती वृद्धि आन्तरिक सृजित गुडविल में वृद्धि मानी जाती है, जब तक कि यह वृद्धि स्पष्ट रूप से आपवादिक प्रकृति की विशिष्ट बाह्य घटना के उलटने के प्रभाव से संबंधित न हो।

110. यह मानक प्राक्कलनों में परिवर्तन के कारण गुडविल के लिए ह्रास हानि को उलटने की अनुज्ञा नही देता है (उदाहरण के लिए, मितिकाटा दर में परिवर्तन अथवा रोकड़ सृजन इकाई जिससे गुडविल संबंधित है भावी रोकड़ प्रवाहों की रकम अथवा समय में परिवर्तन)

111. विशिष्ट बाहरी घटना वह घटना है जो उद्यम के नियंत्रण से बाहर है। आपवादिक प्रकृति की बाह्य घटनाओं के उदाहरण सम्मिलित करते हैं, नये विनियमों को जो महत्वूपर्ण रूप से उस व्यवसाय जिससे गुडविल संबंधित है के प्रचालन क्रियाकलापों को कम करते हैं, अथवा उसके लाभ को घटाते हैं।

बंद हो रहे प्रचालनों के मामले में ह्रास

112. बंद[51] करने की योजना का अनुमोदन तथा उद्घोषणा इस बात का संकेत है कि बंद हो रहे प्रचालनों से जुड़ी आस्तियों में ह्रास हो सकता है अथवा इन आस्तियों के लिए पहले से अभिज्ञात ह्रास हानि को बढ़ाना चाहिये अथवा उलटना चाहिये। अतः इस मानक के अनुसार, एक उद्यम बंद हो रहे प्रचालनों की प्रत्येक आस्ति की वसूली योग्य रकम का प्राक्कलन करता है और ह्रास हानि को या पूर्व ह्रास हानि के उलटाव यदि कोई हो, को अभिज्ञात करता है।

113. इस मानक को बंद हो रहे प्रचालन पर लागू करने के लिए उद्यम यह निर्धारित करता है कि बंद हो रहे प्रचालन की आस्ति की वसूली योग्य रकम का अनुमान पृथक आस्ति के लिए किया गया है अथवा आस्ति की रोकड़ सृजन इकाई के लिए। उदाहरणार्थः

(क) यदि उद्यम बंद हो रहे प्रचालन का पर्यास रूप से पूर्णतः विक्रय करता है तो बंद हो रहे प्रचालन की कोई भी आस्ति, बंद हो रहे प्रचालन में अन्य आस्तियों से स्वतंत्र रूप से रोकड़ अन्तर्प्रवाहों का सृजन नहीं करती। इसलिए बंद हो रहे प्रचालन की वसूली योग्य रकम का निर्धारण सम्पूर्ण रूप से किया जाता है और ह्रास हानि यदि कोई हो, को इस मानक के अनुसार बंद हो रहे प्रचालन की आस्तियों में आबंटित कर दिया जाता है।

(ख) यदि उद्यम बंद हो रहे प्रचालन का निपटान किसी अन्य तरीके से करना चाहता है जैसे भागशः विक्रय, तो वसूली योग्य रकम का निर्धारण पृथक आस्तियों के लिए किया जाता है जब तक आस्तियों को समूहों में नहीं बेचा जाता; और

(ग) यदि उद्यम बंद हो रहे प्रचालन का परित्याग करना चाहता है तो पृथक आस्तियों की वसूली योग्य रकम का निर्धारण इस मानक के अनुसार किया जाता है।

114. योजना की घोषणा के पश्चात् बंद हो रहे प्रचालन के भावी क्रेताओं के साथ समझौता या वास्तविक बाध्य विक्रय करार यह संकेत दे सकते है कि बंद हो रहे प्रचालन की आस्तियों में और अधिक ह्रास हानि हो सकती है, अथवा पूर्व अवधियों में इन आस्तियों पर अभिज्ञात ह्रास हानि में कमी आ सकती है। परिणाम स्वरूप, जब ऐसी घटनाएँ होती हैं, उद्यम बंद हो रहे प्रचालन की आस्तियों की वसूली योग्य रकम का पुनः प्राक्कलन करता है, तथा परिणामिक ह्रास हानि अथवा ह्रास हानि के उलटाव को इस मानक के अनुसार अभिज्ञात किया जाता है।

115. आस्ति के (रोकड़ सृजन इकाई के) प्रयोग से मूल्य निर्धारित करने में बाध्य विक्रय करार का मूल्य एक आस्ति के (रोकड़ सृजन इकाई के) शुद्ध विक्रय मूल्य अथवा अंततः व्ययन के प्राक्कलित रोकड़ अंतर्प्रवाह का सर्वोत्तम साक्ष्य है।

116. बंद हो रहे प्रचालन की कैरिंग रकम (वसूली योग्य रकम) में किसी गुडविल की कैरिंग रकम (वसूली योग्य रकम) सम्मिलित होती है जो कि युक्तियुक्त तथा सतत् आधार पर उस बंद हो रहे प्रचालन पर आबंटित हो सकती है।

[51] लेखा मानक 24, *बंद हो रहे प्रचालन* देखिए

प्रकटन

117. आस्ति के प्रत्येक वर्ग के लिए, वित्तीय विवरणों में निम्नलिखित प्रकट करना चाहिये :

(क) अवधि के दौरान लाभ तथा हानि के विवरण में अभिज्ञात ह्रास हानि की रकम तथा लाभ और हानि के विवरण की लाइन मद (मदें) जिसमें उन ह्रास हानियों को सम्मिलित किया गया है ;

(ख) अवधि के दौरान लाभ तथा हानि के विवरण में अभिज्ञात की गई ह्रास हानि की उलटाव की रकम तथा लाभ तथा हानि के विवरण की लाइन मद (मदें) जिसमें इस प्रकार की ह्रास हानियों को उलटा गया है ;

(घ) *अवधि के दौरान पुनर्मूल्यांकन अधिशेष के विरूद्ध प्रत्यक्षतः अभिज्ञात ह्रास हानि की रकम ; और*

(घ) अवधि के दौरान पुनर्मूल्यांकन अधिशेष के प्रति प्रत्यक्षतः अभिज्ञात ह्रास हानियों के उलटाव की रकम।

118. आस्तियों के वर्ग उद्यम के प्रचालनों में एक जैसी प्रकृति तथा प्रयोग वाली आस्तियों का समूह है।

119. पैरा 117 में अपेक्षित सूचना को आस्तियों के वर्ग के लिए प्रकट की गई अन्य सूचना के साथ प्रस्तुत किया जा सकता है। उदाहरणतः यह सूचना अवधि के आरम्भ में और अन्त में स्थिर आस्तियों की कैरिंग रकम के समाधान में सम्मिलित की जा सकती है, जैसा कि लेखा मानक 10, *संपत्ति, संयंत्र और उपस्कर*, में अपेक्षित है।

120. एक उद्यम जो 'खण्ड रिपोर्टिंग' लेखा मानक 17 लागू करता है को उद्यम के प्राथमिक प्रारूप (जैसा कि लेखा मानक 17 में परिभाषित किया गया है) पर आधारित प्रत्येक रिपोर्ट योग्य खण्ड के लिए निम्नलिखित को प्रकट करना चाहिये:

(क) अवधि के दौरान पुनर्मूल्यांकन अधिशेष के विरुद्ध प्रत्यक्षतः तथा लाभ और हानि के विवरण में अभिज्ञात ह्रास हानि की रकम; और

(ख) अवधि के दौरान पुनर्मूल्यांकन अधिशेष के विरुद्ध प्रत्यक्षतः तथा लाभ और हानि के विवरण में अभिज्ञात ह्रास हानि के उलटाव की रकम।

121. यदि एक व्यक्तिगत आस्ति अथवा एक रोकड़ सृजन इकाई के लिए ह्रास हानि को अवधि के दौरान अभिज्ञात किया गया अथवा उलटा गया है और वह सम्पूर्ण रूप से रिपोर्टिंग उद्यम के लिए सारवान है, तो एक उद्यम को निम्न प्रकट करना चाहिये:

(क) घटनाएँ तथा परिस्थितियाँ जो ह्रास हानि के अभिज्ञान अथवा उलटाव में निकलती हैं;

(ख) अभिज्ञात अथवा उलटी गई ह्रास हानि की रकम;

(ग) एक पृथक्क आस्ति के लिए:

(i) आस्ति की प्रकृति; और

(ii) उद्यम के प्राथमिक प्रारूप (जैसा कि लेखा मानक 17, खण्ड रिपोर्टिंग, में परिभाषित है,) पर आधारित 'रिपोर्ट योग्य' खण्ड जिससे आस्ति सम्बंधित हैं;

(घ) रोकड़-सृजन इकाई के लिए:

(i) रोकड़-सृजन इकाई का वर्णन (जैसे कि क्या यह उत्पाद लाइन, एक संयत्र, एक व्यवसाय प्रचालन, एक भौगोलिक क्षेत्र, लेखा मानक 17 में परिभाषित रिपोर्ट योग्य खण्ड अथवा अन्य है);

(ii) उद्यम के प्राथमिक प्रारूप (जैसे लेखा मानक 17 में परिभाषित) पर आधारित रिपोर्ट योग्य खण्ड द्वारा तथा आस्तियों के वर्ग द्वारा अभिज्ञात अथवा उलटी गई ह्रास हानि की रकम; और

(iii) यदि रोकड़ सृजन इकाई की पहचान के लिए आस्तियों का संकलन रोकड़ सृजन इकाई की वसूली योग्य रकम (यदि कोई है तो) के पूर्व प्राक्कलन के पश्चात् परिवर्तित किया गया है तो उद्यम को आस्तियों के संकलन के पूर्व तथा चालू रीति का तथा रोकड़ सृजन इकाई की पहचान की रीति में परिवर्तन का वर्णन करना चाहिये;

(ङ) क्या आस्ति (रोकड़- सृजन इकाई) की वसूली योग्य रकम उसका शुद्ध विक्रय मूल्य है अथवा प्रयोग से मूल्य है;

(च) यदि वसूली योग्य रकम उसका शुद्ध विक्रय मूल्य है, तो शुद्ध विक्रय मूल्य के निर्धारण के लिए प्रयुक्त आधार (जैसे कि क्या विक्रय मूल्य को एक सक्रिय बाज़ार अथवा किसी अन्य रीति के संदर्भ में निर्धारित किया गया है); और

(छ) यदि वसूली योग्य रकम प्रयोग से मूल्य है, तो प्रयोग से मूल्य के चालू प्राक्कलन तथा पूर्व प्राक्कलन (यदि कोई है तो) में प्रयुक्त मितिकाटा दर।

परन्तु यदि लघु तथा मध्यम आकार कम्पनी, जिसे कि सामान्य अनुदेशों में परिभाषित किया गया है, मानक के पैरा 4.2 के परंतुक के अनुसार 'प्रयोग से मूल्य' मापना चुनती है तो ऐसी लघु तथा मध्यम आकार कम्पनी को मानक के पैरा 121 द्वारा अपेक्षित सूचना को प्रकट करने की आवश्यकता नहीं है।

122. यदि अवधि के दौरान अभिज्ञात (उलटी गई) ह्रास हानियाँ संकलित रूप से सम्पूर्ण रिपोर्टिंग उद्यम के वित्तीय विवरण के लिए सारवान है, उद्यम को निम्नलिखित का संक्षिप्त वर्णन प्रकट करना चाहिये:

(क) *ह्रास हानियों (ह्रास हानि का उलटाव) द्वारा प्रभावित आस्तियों के मुख्य वर्ग जिसके लिए पैरा 121 में कोई सूचना प्रकट नहीं की गई है; और*

(ख) मुख्य घटनाएँ तथा परिस्थितियाँ जिनके कारण ये ह्रास हानियाँ अभिज्ञात (उलटी) की गई जिनके लिए पैरा 121 में कोई सूचना प्रकट नहीं की गई।

123. अवधि के दौरान एक उद्यम आस्तियों (रोकड़-सृजन इकाई) की वसूली योग्य रकम के निर्धारण में प्रयुक्त मुख्य मान्यताएँ प्रकट करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

संकम्रणकालीन उपबन्ध[52]

124. इस मानक के आज्ञापक होने की तारीख पर एक उद्यम को यह निर्धारित करना चाहिये कि किसी आस्ति में ह्रास होने का संकेत है (पैरा 5 से 13 देखिए)। यदि कोई ऐसा संकेत विद्यमान है तो उद्यम को इस मानक के अनुसार ह्रास हानि का (यदि कोई है) निर्धारण करना चाहिये। इस प्रकार से निर्धारित ह्रास हानि को इस मानक के आज्ञापक होने से पहले की अवधियों के लिए संचित ह्रास हानि लेते हुए राजस्व आरक्षितियों के प्रारम्भिक अतिशेष में समायोजित करना चाहिये जब तक कि यह ह्रास हानि पुनर्मूल्यांकित आस्ति पर न हो। पुनर्मूल्यांकित आस्ति पर ह्रास हानि को आस्ति के पुनर्मूल्यांकन अधिशेष के प्रति प्रत्यक्ष रूप से उस सीमा तक अभिज्ञात करना चाहिये कि उस आस्ति पर ह्रास हानि उस के लिए रखे गए पुनर्मूल्यांकन अधिशेष से अधिक न हो। यदि ह्रास हानि उस आस्ति के लिए रखे गए पुनर्मूल्यांकन अधिशेष की रकम से अधिक है तो उस आधिक्य को राजस्व आरक्षितियों के प्रारभिक अतिशेष से समायोजित करना चाहिये।

125. इस मानक के आज्ञापक होने की तारीख के पश्चात् उत्पन्न हुई ह्रास हानि को इस मानक के अनुसार अभिज्ञात करना चाहिये (अर्थात् लाभ-हानि विवरण में, जब तक कि आस्ति को पुनर्मूल्यांकित मूल्य पर न दिखाया गया हो। पूनर्मूल्यांकित आस्ति पर ह्रास हानि को पुनर्मूल्यांकन हानि मान लेना चाहिये)।

दृष्टांत

ये दृष्टांत लेखा मानक का भाग नहीं है। इन दृष्टांतों का उद्देश्य लेखा मानक की प्रयोज्यता का उदाहरण देते हुए उसका अर्थ स्पष्ट करना है।

ये दृष्टांत इस मान्यता पर आधारित हैं कि सम्बंधित उद्यम वर्णित संव्यवहारों के अतिरिक्त और कोई अन्य संव्यवहार नहीं करता।

दृष्टांत 1 - रोकड़-सृजन इकाइयों की पहचान

इस दृष्टांत का उद्देश्य है:

(क) विभिन्न स्थितियों में रोकड़ सृजन इकाइयों को कैसे पहचाना जाये इसका संकेत देना; और

(ख) ऐसे कुछ तत्वों पर प्रकाश डालना जिन पर उद्यम, उस रोकड़ सृजन इकाई जिससे आस्ति संबंधित है, की पहचान करने के लिए विचार कर सके।

[52] अनुच्छेद 124-125 में दिए गए संक्रमणकालीन उपबंध केवल कंपनी (लेखा मानक) नियम, 2006 के अन्तर्गत्त अधिसूचित लेखा मानकों लिए प्रासंगिक है, जो समय के साथ संशोधित किये गए हैं।

क - खुदरा भंडार दुकान

पृष्ठभूमि

क 1. स्टोर X फुटकर स्टोर M का भाग है। X अपने सभी फुटकर क्रय M के क्रय केन्द्र द्वारा करता है। मूल्य निर्धारण, विपणन, विज्ञापन तथा मानव संसाधन नीतियाँ (रोकड़िया तथा विक्रयकर्ता की नियुक्ति के अतिरिक्त) का निर्णय M करता है। इसी नगर में M के X जैसे 5 अन्य स्टोर भी हैं (यद्यपि भिन्न निकटवर्ती क्षेत्रों में) तथा 20 और स्टोर अन्य नगरों में है। सभी स्टोरों का प्रबन्ध X की भांति ही किया जाता है। X तथा 4 अन्य स्टोर 4 साल पहले क्रय किये गए थे तथा गुडविल अभिज्ञात की गई थी।

X के लिए रोकड़ सृजन इकाई कौन सी है (X की रोकड़ सृजन इकाई) ?

विश्लेषण

क 2. X की रोकड़ सृजन इकाई की पहचान करने के लिए उद्योग को विचार करना पड़ता है कि क्या, उदाहरण के लिए:

(क) आन्तरिक प्रबन्धतंत्र रिपोर्टिंग को स्टोर-दर-स्टोर आधार पर कार्य निष्पादन के मापन के लिए संगठित किया जाता है; और

(ख) व्यवसाय का संचालन नगर/क्षेत्र के अथवा हर स्टोर के लाभ के आधार पर किया जाता है।

क 3. M के सभी स्टोर आसपास के भिन्न क्षेत्रों में हैं तथा उनके अलग-अलग ग्राहक आधार हैं। अतः यद्यपि X का प्रबंध निगमित आधार पर किया जाता है, X ऐसे रोकड़ अंतर्प्रवाहों का सृजन करता है जो कि M के अन्य स्टोर से स्वतंत्र है। अतः यह सम्भावना है कि X एक रोकड़ सृजन इकाई है।

क 4. यदि गुडविल की कैरिंग रकम का आबंटन युक्तियुक्त तथा सतत् आधार पर X की रोकड़ सृजन इकाई पर किया जा सकता है M इस मानक के पैरा 78 में वर्णित 'बाटम-अप' परीक्षण लागू करता है। यदि गुडविल की कैरिंग रकम का आबंटन युक्तियुक्त तथा सतत् आधार पर X की रोकड़ सृजन इकाई पर नहीं किया जा सकता, M 'बॉटम-अप' तथा 'टॉप-डाउन' दोनों परीक्षण लागू करता है।

ख - उत्पादन प्रक्रिया में मध्यवर्ती चरण के लिए संयंत्र

पृष्ठभूमि

क 5.Y संयंत्र के अन्तिम उत्पाद के लिए प्रयोग किये जाने वाला महत्वपूर्ण कच्चा माल उसी उद्यम के संयत्र X से क्रय किया हुआ मध्यवर्ती उत्पाद है। X के उत्पाद Y को ऐसे अन्तरण मूल्य पर बेचे जाते हैं जिसके सम्पूर्ण लाभ X को प्राप्त होते हैं। Y के अंतिम उत्पादन का 80% रिपोर्टिंग उद्यम के बाहर के ग्राहकों को बेचा जाता है। X के अंतिम उत्पादन का 60% Y को बेचा जाता है तथा शेष 40% रिपोर्टिंग उद्योग के बाहर के ग्राहकों को बेचा जाता है।

निम्नलिखित प्रत्येक स्थिति में X तथा Y की रोकड़ सृजन इकाइयाँ कौन सी हैं ?

स्थिति 1: X जो उत्पाद Y को बेचता है उनको सक्रिय बाज़ार में बेच सकता है। आन्तरिक अंतरण मूल्य बाज़ार मूल्य से अधिक है।

स्थिति 2: X द्वारा Y को बेचे गए माल के लिए कोई सक्रिय बाज़ार नहीं है।

विश्लेषण

स्थिति 1 :

क 6 X अपने उत्पाद को सक्रिय बाज़ार में बेच सकता है, तथा, इसलिए, निरंतर प्रयोग से ऐसे रोकड़ अंतर्प्रवाह सृजित करता है जो कि Y के रोकड़ अंतर्प्रवाह से मुख्यतः स्वतंत्र होंगे। अतः यह सम्भावना है कि X एक अलग रोकड़ सृजन इकाई है यद्यपि इसके उत्पादन का एक भाग Y द्वारा प्रयोग किया जाता है (इस मानक का पैरा 68 देखिए)

क 7 यह सम्भावना है कि Y भी एक अलग रोकड़ सृजन इकाई है। Y अपने उत्पाद का 80% रिपोर्टिंग उद्यम के बाहर के ग्राहकों को बेचता है। अतः निरंतर प्रयोग से इसके रोकड़ अंतर्प्रवाह मुख्य रूप से स्वतंत्र माने जा सकते हैं।

क 8 आन्तरिक अन्तरण मूल्य X के उत्पाद के बाज़ार मूल्य को नहीं दर्शाते। अतः X और Y दोनों के प्रयोग से मूल्य को निर्धारित करने में उद्यम X के उत्पाद, जिनका आंतरिक प्रयोग किया जाता है, उनके भावी बाज़ार मूल्य के प्रबंधतंत्र के सर्वोत्तम प्राक्कलन को दर्शाने के लिए उद्यम वित्तीय बजट/पूर्वानुमानों का समायोजन करता है। (इस मानक के पैरा 68 देखिए)

स्थिति 2 :

क 9 ऐसा संभव है कि अन्य संयंत्रों के वसूली योग्य रकम से स्वंतत्र रहते हुए प्रत्येक संयंत्र की वसूली योग्य रकम निर्धारित नहीं हो सकती क्योंकि:

(क) X का अधिकांश उत्पाद आंतरिक रूप से प्रयोग किया जाता है तथा सक्रिय बाज़ार में नहीं बेचा जा सकता। अतः X के रोकड़ अंतर्प्रवाह Y के उत्पाद की मांग पर निर्भर हैं। अतः यह नहीं समझा जा सकता कि X ऐसे रोकड़ अन्तर्प्रवाह सृजित करता है जो Y के रोकड़ अंतर्प्रवाह से मुख्य रूप से स्वतंत्र हैं ; और

(ख) दोनों संयंत्रों का संयुक्त रूप से प्रबन्ध होता है।

क10 परिणामस्वरूप, यह संभावना है कि X और Y संयुक्त रूप से आस्तियों का सबसे छोटा समूह है जो निरंतर प्रयोग से ऐसे रोकड़ अंतर्प्रवाह सृजित करता है जो कि मुख्य रूप से स्वतंत्र हैं।

ग - एकल उत्पाद उद्यम

पृष्ठभूमि

क 11. उद्यम M सिर्फ एक उत्पाद का उत्पादन करता है तथा A, B और C संयंत्रों का स्वामित्व रखता है। प्रत्येक संयंत्र भिन्न-भिन्न द्वीप में स्थित है। A ऐसे घटक का उत्पादन करता है जो B या C में एकत्र किया जाता है। B तथा C की कुल क्षमता पूर्णतः प्रयोग नहीं होती। M के उत्पाद B या C से सम्पूर्ण विश्व में बेचे जाते हैं। उदाहरणतः B के उत्पाद को C के द्वीप में बेचा जा सकता है यदि B से उत्पादों की सुपुर्दगी C की अपेक्षा शीघ्र की जा सकती है। B तथा C के उपयोग स्तर दोनों स्थानों के बीच विक्रय के आबंटन पर निर्भर हैं ।

निम्न प्रत्येक स्थिति में A, B और C के लिए रोकड़ सृजन इकाई क्या है ?

स्थिति 1 : A के उत्पादों के लिए सक्रिय बाज़ार है।

स्थिति 2 : A के उत्पादों के लिए सक्रिय बाज़ार नहीं है।

विश्लेषण

स्थिति 1 :

क 12. यह संभावना है कि A एक अलग रोकड़ सृजन इकाई है क्योंकि इसके उत्पाद के लिए सक्रिय बाज़ार है (देखिए उदाहरण B - उत्पादन प्रक्रिया में मध्यवर्ती चरण के लिए संयंत्र, स्थिति 1)।

क 13. यद्यपि B तथा C द्वारा एकत्र उत्पादों के लिए सक्रिय बाज़ार है, B तथा C के लिए रोकड़ अंतर्प्रवाह दोनों स्थानों के उत्पादन के आबंटन पर निर्भर करते हैं। यह सम्भव नहीं है कि B तथा C के लिए भावी रोकड़ अंतर्प्रवाह व्यक्तिगत रूप से निर्धारित किये जा सकते हैं। अतः यह सम्भव है कि B तथा C दोनों मिल कर आस्तियों का सबसे छोटा पहचानने योग्य समूह है जो कि निरंतर प्रयोग से रोकड़ अंतर्प्रवाह सृजित करता है जो कि मुख्य रूप से स्वतंत्र हैं।

क 14. A और B जमा C का प्रयोग में मूल्य निर्धारित करने में A के उत्पाद का भावी बाज़ार मूल्यों का सर्वोत्तम प्राक्कलन प्रदर्शित करने के लिए M बजट/पूर्वानुमानों का समायोजन करता है। (इस मानक के पैरा 68 को देखिए)

IndiaCode

स्थिति 2 :

क 15. यह सम्भव है कि प्रत्येक संयंत्र की वसूली योग्य रकम स्वतंत्र रूप से नहीं आंकी जा सकती क्योंकि:

(क) A के उत्पादों के लिए सक्रिय बाज़ार नहीं है। अतः A के रोकड़ अंतर्प्रवाह B तथा C के अन्तिम उत्पाद के विक्रय पर निर्भर करते हैं; और

(ख) यद्यपि B तथा C द्वारा एकत्र उत्पादों का सक्रिय बाज़ार है, B और C के रोकड़ का अंतर्प्रवाह दोनों संयंत्रों पर आबंटित उत्पादन पर निर्भर करता है। इस बात की संभावना नहीं है कि B और C के रोकड़ के अंतर्प्रवाह को स्वतंत्र रूप से निर्धारित किया जा सकता है।

क 16. परिणामस्वरूप, इस बात की सम्भावना है कि A, B, और C संयुक्त रूप से (अर्थात् M सम्पूर्ण रूप से) आस्तियों का सबसे छोटा पहचानने योग्य समूह है जो निरंतर प्रयोग से ऐसे रोकड़ अन्तर्प्रवाह सृजित करता है जो मुख्य रूप से स्वतंत्र हैं।

घ - पत्रिका शीर्षक

पृष्ठभूमि

क 17. एक प्रकाशक के पास 150 पत्रिका शीर्षकों का स्वामित्व है जिसमें से 80 स्वयं सृजित हैं तथा शेष 70 को क्रय किया गया है। क्रय किए गए पत्रिका शीर्षक के लिए संदत्त मूल्य अमूर्त आस्ति के रूप में अभिज्ञात किया गया है। पत्रिका शीर्षक सृजन करने की लागत तथा विद्यमान शीर्षक को बनाये रखने की लागत को व्यय के रूप में अभिज्ञात किया जाता है जब वे उपगत की जाती है। प्रत्यक्ष बिक्री तथा विज्ञापन से रोकड़ अंतर्प्रवाह प्रत्येक पत्रिका शीर्षक के लिए पहचान योग्य है। शीर्षकों का प्रबन्ध ग्राहक खण्डों द्वारा किया जाता है। एक पत्रिका शीर्षक के लिए विज्ञापन आय का स्तर उस ग्राहक खण्ड में शीर्षक की श्रेणी पर निर्भर करता है जिससे यह पत्रिका शीर्षक सम्बंधित है। प्रबन्धतंत्र की पुरानी शीर्षकों को उसकी आर्थिक जीवन के अन्त से पूर्व परित्याग करने तथा उसे उसी ग्राहक खण्ड के लिए नए शीर्षक के तुरन्त प्रतिस्थापन की नीति है।

एक व्यक्तिगत पत्रिका शीर्षक की रोकड़ सृजन इकाई क्या है?

विश्लेषण

क 18. एक व्यक्तिगत पत्रिका शीर्षक के वसूली योग्य रकम का निर्धारण किया जा सकता है। यद्यपि किसी एक शीर्षक के विज्ञापन आय का स्तर, कुछ सीमा तक ग्राहक खण्ड के अन्य शीर्षकों पर निर्भर करता है, तथापि प्रत्येक शीर्षक के लिए प्रत्यक्ष विक्रय तथा विज्ञापन से अंतर्प्रवाह पहचानने योग्य है। इसके अतिरिक्त यद्यपि शीर्षकों का प्रबंध ग्राहक खण्डों द्वारा किया जाता है शीर्षक परित्याग के विनिश्चय व्यक्तिगत शीर्षकों के आधार पर किये जाते हैं।

क 19. अतः यह संभावना है कि प्रत्येक पत्रिका शीर्षक व्यक्तिगत रूप से रोकड़ अंतर्प्रवाह सृजित करते हैं जो कि मुख्य रूप से एक दूसरे से स्वतंत्र हैं तथा प्रत्येक पत्रिका शीर्षक एक अलग रोकड़ सृजन इकाई है।

ङ भवनः आधा भाग अन्य को किराये पर दिया गया तथा आधा भाग स्वयं प्रयोग के लिए अपने कब्ज़े में रखा गया

पृष्ठभूमि

क 20. M एक विनिर्माण कम्पनी है। उसके पास एक मुख्यालय भवन है जो कि आन्तरिक प्रयोग के लिए पूर्णतया प्रयुक्त है। स्तर घटा देने पर भवन का आधा भाग आन्तरिक प्रयोग के लिए रखा गया है तथा आधा भाग तीसरे पक्षों को किराये पर दिया गया है। किरायेदार के साथ 5 वर्ष के लिए पट्टा करार है।

भवन की रोकड़-सृजन इकाई क्या है?

विश्लेषण

क21. भवन का प्रमुख उद्देश्य M की विनिर्माण क्रियाओं में सहायता देने के लिए निगम आस्ति के रूप में उपयोग में आना है। अतः भवन को सम्पूर्ण रूप से ऐसे रोकड़ के अंतर्प्रवाह सृजन के लिए नहीं लिया जा सकता जो कि उद्यम के सम्पूर्ण रूप से रोकड़ के अंतर्प्रवाह सृजन से मुख्यतः स्वतंत्र हो । अतः यह सम्भावना है कि M कुल मिला कर भवन की रोकड़ सृजन इकाई है।

क22. भवन को एक विनिधान के रूप में नहीं रखा गया। इसलिए भावी बाज़ार संबंधी किराये के अनुमानों के आधार पर भवन का प्रयोग से मूल्य का निर्धारण करना उचित न होगा।

दृष्टांत 2 - प्रयोग से मूल्य की संगणना तथा ह्रास हानि का अभिज्ञान

इस दृष्टांत में, कर प्रभावों को छोड़ दिया गया है।

पृष्ठभूमि तथा प्रयोग से मूल्य की संगणना

क 23. 20X0 के अन्त में T उद्यम M उद्यम को 10,000 लाख रुपये में अर्जित करता है। M के पास 3 देशों में विनिर्माण संयंत्र हैं। परिणामिक सम्मिलित क्रियाओं का अनुमानित उपयोगी जीवन 15 वर्ष है।

अनुसूची 1. 20X0 के अन्त में आंकड़े (रकम लाख रुपये में)

	20X0 का अंत	*क्रय मूल्य का आबंटन*	*पहचानने योग्य आस्तियों का उचित मूल्य*	*गुडविल*
देश A में क्रियाएँ		3,000	2,000	1,000
देश B में क्रियाएँ		2,000	1,500	500
देश C में क्रियाएँ		5,000	3,500	1,500
योग		**10,000**	**7,000**	**3,000**

(1) प्रत्येक देश में क्रियाएं वे सबसे छोटी रोकड़ सृजन इकाइयाँ हैं जिन पर गुडविल को युक्तियुक्त तथा सतत् आधार पर आबंटित किया जा सकता है। (आबंटन प्रत्येक देश में क्रियाओं के क्रय मूल्य पर आधारित है, जैसा कि क्रय करार में निश्चित किया गया है)।

क 24. T उद्यम देश A की आस्तियों के लिए 15 वर्ष के जीवन के दौरान सरल रेखा अवक्षयण प्रयोग करता है तथा किसी अवशिष्ट मूल्य का पूर्वानुमान नहीं है। गुडविल के लिए, T उद्यम 5 वर्ष की जीवन अवधि के दौरान सरल-रेखा क्रमिक अपाकरण का प्रयोग करता है।

क 25. 20X4 में नई सरकार निर्वाचित की जाती है। यह T के मुख्य उत्पाद के निर्यातों पर प्रतिबंध के लिए महत्वपूर्ण रूप से कानून पास करती है। परिणाम स्वरूप, तथा निकट भविष्य के लिए T का उत्पादन 40% घट जायेगा।

क 26. महत्वपूर्ण निर्यात प्रतिबंध तथा परिणाम स्वरूप उत्पादन में कमी के कारण T से देश A की क्रियाओं की शुद्ध आस्तियों तथा गुडविल की वसूली योग्य रकम का अनुमान लगाने की अपेक्षा की जाती है।

क 27. देश A की रोकड़ सृजन इकाई का शुद्ध विक्रय मूल्य निर्धारण योग्य नहीं है क्योंकि यह सम्भव नहीं है कि उस इकाई की सभी आस्तियों के लिए तैयार क्रेता विद्यमान हों।

क 28. देश A की रोकड़ सृजन इकाई का प्रयोग में मूल्य निर्धारित करने के लिए (अनुसूची 2 देखिए), T ;

(क) अगले 5 वर्षों के लिए (वर्ष 20X5 - 20X9) प्रबंधतंत्र द्वारा अनुमोदित हाल ही के वित्तीय बजटों/ पूर्वानुमानों से व्युत्पन्न रोकड़ प्रवाह पूर्वानुमान तैयार करता है;

(ख) घटी विकास दर पर आधारित उत्तरवर्ती रोकड़ प्रवाहों (वर्ष 20X10 - 20X15) का प्राक्कलन करता है। 20X10 की वृद्धि दर 3% प्राक्कलित की गई है। यह दर देश A के बाज़ार के लिए औसत दीर्घकालीक वृद्धि दर से कम है; और

(ख) 15% मितिकाटा दर चुनता है जो पूर्वकर दर का प्रतिनिधित्व करती है जो कि मुद्रा के समय मूल्य के वर्तमान बाज़ार निधारणों को तथा देश A की रोकड़ सृजन इकाई से जुड़े जोखिमों को प्रदर्शित करती है।

ह्रास हानि का अभिज्ञान तथा माप

क 29. देश A रोकड़ सृजन इकाई की वसूली योग्य रकम 1,360 लाख हैः देश A की रोकड़ सृजन इकाई (जो अवधारण के योग्य नहीं है) के शुद्ध विक्रय मूल्य तथा उसके प्रयोग से मूल्य (1,360 लाख रु.) दोनों में से जो अधिक है।

क30. T देश A की रोकड़ सृजन इकाई की वसूली योग्य रकम की इसकी कैरिंग रकम से तुलना करता है (अनुसूची 3 देखिए)

क31. T 307 लाख रु. की ह्रास हानि को लाभ हानि विवरण में तुरन्त अभिज्ञात करता है। देश A की रोकड़ सृजन इकाई के भीतर अन्य पहचान योग्य आस्तियों की कैरिंग रकम को कम करने से पहले उस गुडविल की कैरिंग रकम जो कि देश A की क्रियाओं से सम्बंधित है, हटा दी जाती है। (इस मानक का पैरा 87 देखिए)

क 32. कर प्रभावों को पृथक रूप से से लेखा मानक AS 22 ***आय पर करों के लिए लेखा***, के अनुसार लेखाबद्ध किया जाता है;

अनुसूची 2. 20X4 के अन्त में देश A की रोकड़ सृजन इकाई के प्रयोग से मूल्य की संगणना (रकम लाख रु. में)

वर्ष	दीर्घ-कालीन वृद्धि दरें	भावी रोकड़ प्रवाह	वर्तमान मूल्य गुणन 15% मितिकाटा[3] दर पर	मितिकाटे पर भावी रोकड़ प्रवाह
20X5(n=1)		230	0.86957	200
20X6		253 (1)	0.75614	191
20X7		273(1)	0.65752	180
20X8		290(1)	0.57175	166
20X9		304(1)	0.49718	151
20X10	3%	313(2)	0.43233	135
20X11	(-)2%	307(2)	0.37594	115
20X12	(-)6%	289(2)	0.32690	94
20X13	(-)15%	245(2)	0.28426	70
20X14	(-)25%	184(2)	0.24719	45
20X15	(-)67%	61(2)	0.21494	13
प्रयोग से मूल्य				**1,360**

(1) प्रबंधतंत्र के शुद्ध रोकड़ प्रवाह आंकलनों के सर्वोत्तम प्राक्कलन के आधार पर (40% कटौती के पश्चात्)

(2) पूर्ववर्ती वर्ष के रोकड़ प्रवाह के पूर्व अनुमानों के आधार पर घटती हुई वृद्धि दर को प्रयोग करते हुए।

(3) वर्तमान मूल्य गुणनखंड इस प्रकार संगणित किया जाता है जैसे $k=1/(1+a)^n$, जहाँ पर a= मितिकाटा दर तथा n= मितिकाटा की अवधि

अनुसूची 3. 20X4 के अन्त में देश a की रोकड़ सृजन इकाई के लिए ह्रास हानि की संगणना तथा आबंटन (रकम लाख रु. में)

20X4 का अन्त गुडविल		पहचानी जाने योग्य आस्तियाँ	योग
ऐतिहासिक लागत संचित अवक्षयण/ क्रमिक अपाकरण	1,000	2,000	3,000
(20X1-20X4)	(800)	(533)	(1,333)
कैरिंग रकम	200	1,467	1,667

IndiaCode

ह्रास हानि	(200)	(107)	(307)
ह्रास हानि के पश्चात कैरिंग रकम	0	1,360	1,360

दृष्टांत 3 - आस्थगित कर प्रभाव

क 33. एक उद्यम के पास एक आस्ति है जिसकी कैरिंग रकम 1,000 लाख रुपये है। इसकी वसूली योग्य रकम 650 लाख रुपये है। कर की दर 30% तथा कर उद्देश्यों के लिए आस्ति की कैरिंग रकम 800 लाख रु. है। कर उद्देश्यों के लिए ह्रास हानि कटौती के रूप में अनुज्ञेय नहीं है। ह्रास हानि का प्रभाव निम्नलिखित रूप में है:

	रकम लाख रु. में
लाभ-हानि विवरण में अभिज्ञात ह्रास हानि	350
कर उद्देश्यों के लिए स्वीकृत ह्रास हानि	–
समय अन्तर	350
उपरोक्त समय अन्तर का 30% पर कर प्रभाव (आस्थगित कर आस्ति)	105
घटा: लेखा उद्देश्यों तथा कर उद्देश्यों के लिए अवक्षयण में अन्तर के कारण आस्थगित कर दायित्व [(1000-800) X 30%]	60
आस्थगित कर आस्ति	45

IndiaCode

क 34. लेखा मानक 22 आय पर करों के लिए लेखा के अनुसार, उद्यम आस्थगित कर आस्ति को लेखा मानक 22 में उपवर्णित विवेक को विचारते हुए, अभिज्ञात करता है।

दृष्टांत 4 - ह्रास हानि का उलटाव

इस दृष्टांत में दी गई परिपूरक सूचना के साथ दृष्टांत 2 में प्रस्तुत आंकड़ों को उद्यम T के लिए प्रयोग करें। इस दृष्टांत में कर प्रभावों को छोड़ दिया गया है।

पृष्ठभूमि

क 35. 20X6 में सरकार देश A में अभी भी सत्ता में है, किन्तु व्यवसाय में सुधार हो रहा है। निर्यात विधियों का T के उत्पादन पर प्रभाव उतने गम्भीर सिद्ध नहीं हुए जितनी प्रबन्धतंत्र को आशा थी। परिणामस्वरूप प्रबन्धतंत्र का प्राक्कलन है कि उत्पादन में 30% की वृद्धि होगी। यह अनुकूल परिवर्तन T से अपेक्षा करते हैं कि वह A देश की क्रियाओं की शुद्ध आस्तियों की वसूली योग्य रकम का पुनः प्राक्कलन करे (इस मानक के पैरा 94-95 देखिए)। देश A की क्रियाओं के शुद्ध आस्तियों के लिए रोकड़ सृजन इकाई अभी भी देश A की क्रियाएं हैं।

क 36. उदाहरण 2 के प्रकार की संगणनाएँ दिखाती हैं कि A देश की रोकड़ सृजन इकाई की वसूली योग्य रकम अब 1,710 लाख रु. है।

ह्रास हानि का उलटाव

क 37. T देश A की रोकड़ सृजन इकाई की वसूली योग्य रकम तथा शुद्ध कैरिंग रकम की तुलना करता है।

अनुसूची 1. 20X6 के अन्त में देश A की रोकड़ सृजन इकाई की कैरिंग रकम की संगणना (रकम लाख रु. में)

	गुडविल	*पहचानने योग्य आस्तियाँ*	*योग*
20X4 का अन्त			
(उदाहरण 2)			
ऐतिहासिक लागत	1,000	2,000	3,000
संचित अवक्षयण/			
क्रमिक अपाकरण (4 वर्ष)	(800)	(533)	(1,333)
ह्रास हानि	(200)	(107)	(307)
ह्रास हानि के पश्चात्			
कैरिंग रकम	0	1,360	1,360
20X6 का अन्त			
अतिरिक्त अवक्षयण			
(2 वर्ष)[1]	-	(247)	(247)
कैरिंग रकम	0	1,113	1,113
वसूली योग्य रकम			1,710
कैरिंग रकम पर वसूली योग्य			
रकम का आधिक्य			**597**

IndiaCode

(1) संशोधित कैरिंग रकम तथा शेष उपयोगी जीवन (11 वर्ष) के आधार पर 2004 के अन्त में ह्रास हानि को अभिज्ञात करने के पश्चात् T ने देश A की पहचानने योग्य आस्तियों के अवक्षयण व्यय का संशोधान किया (133.3 लाख रु. प्रतिवर्ष से 123.7 लाख रु. प्रतिवर्ष)।

क 38. पूर्व ह्रास हानि के अभिज्ञान के पश्चात् देश A की शुद्ध आस्तियों की वसूली योग्य रकम का निर्धारण करने में प्रयुक्त प्राक्कलनों में अनुकूल परिवर्तन हुए हैं। अतः इस मानक के पैरा 98 के अनुसार T 20X4 में अभिज्ञात की गई ह्रास हानि के उलटाव को अभिज्ञात करता है।

क 39. इस मानक के पैरा 106 तथा 107 के अनुसार, T देश A की पहचानने योग्य आस्तियों की कैरिंग रकम को 87 लाख रुपये से बढ़ा देता है (देखिए अनुसूची 3), अर्थात वसूली योग्य रकम (1,710 लाख रु.) और पहचानने योग्य आस्तियों की अवक्षयित ऐतिहासिक लागत (1,200 लाख रु.) (देखिए अनुसूची 2) में से न्यूनतम है। इस वृद्धि को तुरंत ही लाभ-हानि विवरण में अभिज्ञात किया जाता है।

अनुसूची 2. 20X6 के अन्त में देश A की पहचानने योग्य आस्तियों की ह्रासित ऐतिहासिक लागत का निर्धारण (रकम लाख रु. में)

20X6 का अन्त	*पहचानने योग्य आस्तियाँ*	
ऐतिहासिक लागत		2,000
संचित अवक्षयण (133.3* 6 वर्ष)	(800)	
अवक्षयित ऐतिहासिक लागत		1,200
कैरिंग रकम (अनुसूची1)	1,113	
अन्तर		87

अनुसूची 3. 20X6 के अन्त में देश A की आस्तियों के लिए कैरिंग रकम (रकम लाख रु. में)

20X6 का अन्त	*गुडविल*	*पहचानने योग्य आस्तियाँ*	*योग*
20X6 का अन्त	1,000	2,000	3,000
संचित अवक्षयण/			
क्रमिक अपाकरण	(800)	(780)	(1,580)
संचित ह्रास हानि	(200)	(107)	(307)
कैरिंग रकम	0	1,113	1,113
ह्रास हानि का उलटाव	0	87	87
ह्रास हानि के उलटाव			
के पश्चात् कैरिंग रकम	0	1,200	1,200

दृष्टांत 5 - भावी पुनर्संरचना का प्रतिपादन

इस दृष्टांत में, कर प्रभावों को छोड़ दिया गया है।

पृष्ठभूमि

क 40. 20X0 के अन्त में, उद्यम ज्ञ संयंत्र के ह्रास के लिए परीक्षण करता है। संयंत्र रोकड़ सृजन इकाई है। संयंत्र की आस्तियाँ अवक्षयित ऐतिहासिक लागत पर ली जाती हैं। संयंत्र की कैरिंग रकम 3,000 लाख रु. है तथा शेष उपयोगी जीवन 10 वर्ष है।

क 41. संयंत्र इतना विशेष है कि इसके शुद्ध विक्रय मूल्य को निर्धारित करना सम्भव नहीं है। अतः संयंत्र की वसूली योग्य रकम इसका प्रयोग से मूल्य है। प्रयोग से मूल्य की संगणना 14% की पूर्व कर मितिकाटा दर का प्रयोग करके की जाती है।

क 42. प्रबंधतंत्र द्वारा अनुमोदित बजट दर्शाता है कि:

(क) 20X3 के अन्त में संयंत्र में 100 लाख रु. की प्राक्कलित लागत की पुनर्संरचना होगी। क्योंकि K अभी तक पुनर्संरचना के लिए वचनबद्ध नहीं है, अतः भावी पुनर्संरचना लागतों के लिए उपबन्ध अभी अभिज्ञात नहीं किया गया है; और

(ख) इस पुनर्संरचना से भविष्य में कम भावी रोकड़ बाह्य प्रवाहों के रूप में लाभ होंगे।

क 43. 20X2 के अन्त में K पुनर्संरचना के लिए वचनबद्ध हो जाता है। लागत का प्राक्कलन अभी भी 100 लाख रु. है तथा तदनुसार उपबन्ध को अभिज्ञात किया गया है। अभी हाल ही के प्रबंध द्वारा अनुमोदित बजट में दर्शाये गए संयंत्र के प्राक्कलित भावी रोकड़ प्रवाह पैरा क 47 में दिए गए हैं तथा वर्तमान मितिकाटा दर वही हैं जो 20X0 में थी।

क 44. 20X3 के अन्त में पुनर्संरचना लागत 100 लाख रु. का भुगतान किया गया। प्रबंधतंत्र अभी हाल ही में के अनुमोदित बजट में दिखाए गए संयंत्र के भावी प्रक्कलित रोकड़ प्रवाह में तथा मितिकाटा दर वही हैं जैसा कि 20X2 के अंत में प्रक्कलित की गई थी।

IndiaCode

20X0 के अन्त में

अनुसूची 1. 20X0 के अन्त में संयंत्र के प्रयोग से मूल्य की संगणना (रकम लाख रु. में)

वर्ष	*भावी रोकड़ प्रवाह*	*14% पर मितिकाटा मूल्य*
20X1	300	263
20X2	280	215
20X3	420(1)	283
20X4	520(2)	308
20X5	350(2)	182
20X6	420(2)	191
20X7	480(2)	192
20X8	480(2)	168
20X9	460(2)	141
20X10	400(2)	108
प्रयोग से मूल्य		**2,051**

(1) प्रबंधतंत्र के बजट में दर्शायी गई प्राक्कलित पुनर्संरचना लागतों को सम्मलित नहीं करता ।

(2) प्रबंधतंत्र के बजट में दशार्यी गई पुनर्संरचना से प्रत्याशित प्राक्कलित लाभों को सम्मिलित नहीं करता।

क 45. संयंत्र की वसूली योग्य रकम (प्रयोग से मूल्य) इसकी कैरिंग रकम से कम है। अतः K संयंत्र के लिए ह्रास हानि को अभज्ञात करता है।

अनुसूची 2. 20X0 के अन्त में ह्रास हानि की संगणना (रकम लाख रु. में)

	संयंत्र
ह्रास हानि से पहले कैरिंग रकम	3,000
वसूली योग्य रकम (अनुसूची 1)	2,051
ह्रास हानि	(949)
ह्रास हानि के बाद कैरिंग रकम	2,051

20X1 के अन्त में

क 46. ऐसी कोई घटना नहीं घटती जिससे कि वसूली योग्य रकम के पुनः प्राक्कलन करने की आवश्यकता हो। अतः वसूली योग्य रकम की संगणना करने की आवश्यकता नहीं होती।

20X2 के अन्त में

क 47. उद्यम अब पुनर्संरचना के लिए वचनबद्ध है। अतः संयंत्र के प्रयोग से मूल्य का निर्धारण करने में पुनर्संरचना से प्रत्याशित लाभों को रोकड़ प्रवाहों के पूर्वानुमानों को लिया जाता है। परिणामस्वरूप 20X0 के अन्त में प्रयोग से मूल्य निर्धारण करने के लिए प्रयुक्त प्राक्कलित भावी रोकड़ प्रवाहों में वृद्धि होती है। इस मानक के पैरा 94-95 के अनुसार, 20X7 के अन्त में संयंत्र की वसूली योग्य रकम पुनः निर्धारित होती है।

IndiaCode

अनुसूची 3. 20X2 के अन्त में संयंत्र के प्रयोग से मूल्य की संगणना (रकम लाख रु. में)

वर्ष	*भावी रोकड़ प्रवाह*	*14% पर मितिकाटा मूल्य*
20X3	420(1)	368
20X4	570(2)	439
20X5	380(2)	256
20X6	450(2)	266
20X7	510(2)	265
20X8	510(2)	232
20X9	480(2)	192
20X10	410(2)	144
प्रयोग से मूल्य		2,162

(1) पुनर्संरचना की प्राक्कलित लागतें सम्मलित नहीं करता क्योंकि दायित्व को पहले से ही अभिज्ञात कर लिया गया है।

(2) प्रबंधतंत्र के बजट में दर्शाये गए पुनर्संरचना से प्राक्कलित अपेक्षित लाभ सम्मिलित होते हैं।

क 48. संयंत्र की वसूली योग्य रकम (प्रयोग से मूल्य) इसकी कैरिंग रकम से अधिक है (अनुसूची 4 देखिए)। अतः, K 20X0 के अंत में संयत्र के लिए अभिज्ञात, ह्रास हानि को उलटा देता है।

अनुसूची 4. 20X2 के अन्त में ह्रास हानि के उलटाव की संगणना (रकम लाख रु. में)

	संयंत्र
20X0 के अन्त में कैरिंग रकम	2,051
(अनुसूची 2)	
20X2 के अन्त में	
अवक्षयण प्रभार	
(20X1 तथा 20X2 के लिए अनुसूची 5)	(410)
उलटाव से पूर्व कैरिंग रकम	1,641
वसूली योग्य रकम (अनुसूची 3)	2,162
ह्रास हानि का उलटाव	521
उलटाव के पश्चात् कैरिंग रकम	2,162
कैरिंग रकम: अवक्षयित ऐतिहासिक लागत	2,400(1)
(अनुसूची 5)	

(1) उलटाव के कारण संयंत्र की कैरिंग रकम उस कैरिंग रकम से अधिक नहीं होती जो कि अवक्षयित ऐतिहासिक लागत पर होती। अतः ह्रास हानि के पूर्ण उलटाव को अभिज्ञात किया जाता है।

20X3 के अंत में

क 49. जब पुनर्संरचना लागतों का भुगतान किया गया है, 100 लाख रु. का रोकड़ बाह्य प्रवाह हुआ है। यद्यपि रोकड़ के बाह्यप्रवाह हुए हैं तथापि 20X2 के अन्त में प्रयोग से मूल्य का निर्धारण करने के लिए प्रयोग किए गए प्राक्कलित भावी रोकड़ प्रवाह में कोई परिवर्तन नहीं है। अतः, 20X3 के अंत में संयंत्र की वसूली योग्य रकम की संगणना नहीं की गई।

अनुसूची 5. संयंत्र की कैरिंग रकम का संक्षिप्त विवरण (रकम लाख रु. में)

वर्ष का अन्त	*अवक्षयित ऐतिहासिक लागत*	*वसूली योग्य रकम*	*समायोजित ह्रास प्रभार*	*ह्रास हानि*	*ह्रास के पश्चात् कैरिंग रकम*
20X0	3,000	2,051	0	(949)	2,051
20X1	2,700	ग.न.	(205)	0	1,846
20X2	2,400	2,162	(205)	521	2,162
20X3	2,100	ग.न.	(270)	0	1,892

ग.न. = संगणना नहीं की गई क्योंकि ऐसा कोई संकेत नहीं है कि ह्रास हानि में कोई वृद्धि/कमी हुई है।

दृष्टांत 6 - भावी पूंजीगत व्यय का प्रतिपादन

इस दृष्टांत में कर प्रभावों को छोड़ा गया है।

पृष्ठभूमि

क 50. 20X0 के अन्त में उद्यम F ह्रास के लिए एक जहाज का परीक्षण करता है। जहाज रोकड़ सृजन इकाई है। इसको ह्रासित ऐतिहासिक लागत पर आगे लिया जाता है तथा इसकी कैरिंग रकम 1,500 लाख रु. है। इसका प्राक्कलित शेष उपयोगी जीवन 10 वर्ष है।

क 51. इस दृष्टांत के उद्देश्य से, यह माना गया है कि जहाज का शुद्ध विक्रय मूल्य निर्धारण योग्य नहीं है। अतः जहाज का वसूली योग्य रकम उसका प्रयोग से मूल्य है। 14% कर पूर्व मितिकाटा दर का प्रयोग कर के 'प्रयोग से मूल्य' की संगणना की जाती है।

क 52. प्रबन्धतंत्र द्वारा अनुमोदित बजट दर्शाते हैं कि:

(क) 20X4 में, 250 लाख रु. का पूंजीगत व्यय जहाज के इंजन के नवीनीकरण करने में उपगत किया जायेगा।

(ख) यह पूंजीगत व्यर्य इंधन के उपभोग को कम करके जहाज के निष्पादन में सुधार लायेगा।

क 53. 20X4 के अंत में, नवीनीकरण लागतें उपगत की जाती हैं। प्रबन्धतंत्र द्वारा हाल ही में अनुमोदित बजट में दिखाए गए जहाज के भावी प्राक्कलित रोकड़ प्रवाह पैरा A 56 में दिए गए हैं तथा वर्तमान मितिकाटा दर वही है जो 20X0 के अंत में थी।

20X0 के अन्त में

अनुसूची 1. 20X0 के अन्त में जहाज के 'प्रयोग से मूल्य' की संगणना (रकम लाख रु. में)

वर्ष	*भावी रोकड़ प्रवाह*	*14% दर पर मितिकाटा मूल्य*
20X1	221.65	194.43
20X2	214.50	165.05
20X3	205.50	138.71

20X4	247.25(1)	146.39
20X5	253.25(2)	131.53
20X6	248.25(2)	113.10
20X7	241.23(2)	96.40
20X8	255.33(2)	89.51
20X9	242.34(2)	74.52
20X10	228.50(2)	61.64
प्रयोग से मूल्य		**1,211.28**

(1) प्रबंधतंत्र के बजट में दिखाई गई प्राक्कलित नवीनीकरण लागतों को सम्मिलित नहीं करता।

(2) प्रबंधतंत्र के बजट में दिखाए गए इंजन की नवीनीकरण से प्राक्कलित प्रत्याशित लाभों को सम्मिलित नहीं करता।

क 54. जहाज की कैरिंग रकम उसके वसूली योग्य रकम (प्रयोग से मूल्य) से कम है। अतः F जहाज के लिए ह्रास हानि को अभिज्ञात करता है।

अनुसूची 2. 20X0 के अंत में ह्रास हानि की संगणना (रकम लाख रु. में)

	जहाज
ह्रास हानि से पूर्व कैरिंग रकम	1,500.00
वसूली योग्य रकम (अनुसूची 1)	1,211.28
ह्रास हानि	(288.72)
ह्रास हानि के पश्चात् कैरिंग रकम	1,211.28

IndiaCode

वर्ष 20X1 - 20X3

क 55. कोई ऐसी घटना नहीं हुई जिससे कि जहाज की वसूली योग्य रकम का पुनः प्राक्कलन करने की आवश्यकता हो। अतः वसूली योग्य रकम की संगणना करने की आवश्यकता नहीं हैं।

20X4 के अंत में

क 56. पूँजीगत व्यय उपगत किया जाता है। अतः जहाज के 'प्रयोग से मूल्य' के निर्धारण में, इंजन के नवीनीकरण से प्रत्याशित भावी लाभों को रोकड़ प्रवाहों के पूर्वानुमानों को ध्यान में रखा जाता है। परिणाम स्वरूप 20X0 के अंत में 'प्रयोग से मूल्य' निर्धारित करने के लिए प्रयुक्त प्राक्कलित भावी रोकड़ प्रवाहों में वृद्धि होती है। परिणाम स्वरूप, इस मानक के पैरा 94-95 के अनुसार, 20X4 के अन्त में जहाज की वसूली योग्य रकम की पुनः संगणना की गई है।

अनुसूची 3. 20X4 के अन्त में जहाज के प्रयोग से मूल्य की संगणना (रकम लाख रु. में)

वर्ष	भावी रोकड़ प्रवाह(1)	14% पर मितिकाटा मूल्य
20X5	303.21	265.97
20X6	327.50	252.00
20X7	317.21	214.11
20X8	319.50	189.17
20X9	331.00	171.91
20X10	279.99	127.56
प्रयोग से मूल्य		1,220.72

(1) प्रबंधतंत्र के बजट में दशाये गए इंजन के नवीनीकरण से प्रत्याशित प्राक्कलित लाभ सम्मिलित होते हैं।

क 57. जहाज की वसूली योग्य रकम (प्रयोग से मूल्य) जहाज की कैरिंग रकम तथा अवक्षयित ऐतिहासिक लागत से अधिक है (अनुसूची 4 देखिए)। अतः 20X0 के अन्त में K, जहाज के लिए अभिज्ञात ह्रास हानि को उलट देता है जिससे कि जहाज ह्रासित ऐतिहासिक लागत पर लिया जाता है।

अनुसूची 4. 20X4 के अन्त में ह्रास हानि के उलटाव की संगणना (रकम लाख रु. में)

	जहाज
20X0 के अंत में कैरिंग रकम (अनुसूची 2)	1,211.28
20X4 का अंत	
अवक्षयण प्रभार (20X1 से 20X4 -अनुसूची 5)	(484.52)
नवीनीकरण व्यय	250.00
उलटाव से पहले कैरिंग रकम	976.76
वसूली योग्य रकम (अनुसूची 3)	1,220.72
ह्रास हानि का उलटाव	173.24
उलटाव के पश्चात् कैरिंग रकम	1150.00
कैरिंग रकम: ह्रासित ऐतिहासिक लागत	1,150.00(1)
(अनुसूची 5)	

(1) अवक्षयित ऐतिहासिक लागत पर जो कैरिंग रकम होती उससे जहाज का प्रयोग से मूल्य अधिक है। अतः उलटाव उस रकम तक सीमित है जिस तक जहाज की कैरिंग रकम जहाज की अवक्षयित ऐतिहासिक लागत से अधिक नहीं होती।

अनूसूची 5. जहाज की कैरिंग रकम का संक्षिप्त वर्णन (रकम लाख रु. में)

वर्ष	अवक्षयित ऐतिहासिक लागत	वसूली योग्य रकम	समायोजित अवक्षयण प्रभार	ह्रास हानि	ह्रास के पश्चात् कैरिंग रकम
20X0	1,500.00	1,211.28	0	(288.72)	1,211.28
20X1	1,350.00	ग.न.	(121.13)	0	1,090.15
20X2	1,200.00	ग.न.	(121.13)	0	969.02
20X3	1,050.00	ग.न.	(121.13)	0	847.89
20X4	900.00		(121.13)		
नवीनीकरण	250.00		-		
	1,150.00	1,220.72	**(121.13)**	173.24	1,150.00
20X5		ग.न.	(191.67)	0	958.33

ग.न. = संगणना नहीं की गई क्योंकि ऐसा कोई संकेत नहीं है कि ह्रास हानि में वृद्धि/कमी हुई है।

IndiaCode

दृष्टांत 7 - गुडविल पर 'बॉटम-अप' तथा 'टॉप- डाउन' परिक्षणों को लागू करना

इस दृष्टांत में, कर प्रभावों को छोड़ा गया है।

क 58. 20X0 के अन्त में, उद्यम M, उद्यम Z को 3,000 लाख रु. में 100% अर्जित कर लेता है। Z की तीन रोकड़ सृजन इकाई A, B तथा C हैं। तीनों के पास क्रमशः 1,200 लाख रु., 800 लाख तथा 400 लाख रु. का शुद्ध उचित मूल्य है। M 600 लाख रु. (3,000 लाख रु. घटा 2400 लाख रु.) की गुडविल को अभिज्ञात करता है जो Z से सम्बंधित है।

क 59. 20X4 के अंत में, A को बहुत अधिक हानि होती है। इसकी वसूली योग्य रकम का प्राक्कलन 1,350 लाख रु. है। कैरिंग रकम का विस्तृत विवरण निम्नलिखित है।

अनुसूची 1. 20X4 के अन्त में कैरिंग रकम (रकम लाख रु. में)

20X4 का अंत	*A*	*B*	*C*	*गुडविल*	*योग*
शुद्ध कैरिंग रकम	1,300	1,200	800	120	3,420

क - गुडविल का आबंटन युक्तियुक्त तथा सतत् आधार पर किया जा सकता है।

क 60. Z के अर्जन की तारीख पर, A, B तथा C के शुद्ध उचित मूल्यों को A, B तथा C की गुडविल के आनुपातिक आबंटन में उचित आधार माना जाता है।

अनुसूची 2. 20X4 के अंत में गुडविल का आबंटन

	A	*B*	*C*	*योग*
20X0 का अन्त शुद्ध उचित मूल्य	1,200	800	400	2,400
आनुपातिक	50%	33%	17%	100%
20X4 का अंत शुद्ध कैरिंग रकम (गुडविल का आबंटन) (उपरोक्त अनुपात का प्रयोग करते हुए)	60	40	20	120
शुद्ध कैरिंग रकम (गुडविल के आबंटन के पश्चात्)	1,360	1,240	820	3,420

क 61. इस मानक के पैरा 78(क) में 'बॉटम-अप' परीक्षण के अनुसार, M गुडविल की कैरिंग रकम के आबंटन के पश्चात् A की वसूली योग्य रकम की तुलना इसकी कैरिंग रकम से करता है।

अनुसूची 3. 'बॉटम अप' परीक्षण का लागू करना (रकम लाख रु. में)

20X4 का अंत	*A*
गुडविल के आबंटन के पश्चात् कैरिंग रकम (अनुसूची 2)	1,360
वसूली योग्य रकम	1,350
ह्रास हानि	10

IndiaCode

क 62. M, A के लिए 10 लाख रु. की ह्रास हानि को अभिज्ञात करता है इस मानक के पैरा 87 के अनुसार ह्रास हानि गुडविल पर पूर्णतया आबंटित कर दी जाती है।

ख - गुडविल को युक्तियुक्त तथा सतत् आधार पर आबंटित नहीं किया जा सकता

क 63. Z के अर्जन से उत्पन्न गुडविल को A, B तथा C पर आबंटित करने का कोई युक्तियुक्त तरीका नहीं है। 20X4 के अंत में की वसूली योग्य रकम 3,400 लाख रु. प्राक्कलित की गई है।

क 64. M, 204 के अंत में इस मानक के पैरा 78(क) के अनुसार पहले 'बॉटम-अप' परीक्षण लागू करता है। गुडविल को छोड़कर यह A की वसूली योग्य रकम की इसकी कैरिंग रकम से तुलना करता है।

अनुसूची 4. 'बॉटम-अप' परीक्षण का प्रयोग (रकम लाख रु. में)

20X4 का अंत	*A*
कैरिंग रकम	1,300
वसूली योग्य रकम	1,350
ह्रास हानि	0

क 65. अतः 'बॉटम-अप' परीक्षण के परिणाम स्वरूप A के लिए कोई ह्रास हानि अभिज्ञात नहीं की जाती है।

क 66. क्योंकि A पर गुडविल का आबंटन युक्तियुक्त तथा सतत् आधार पर नहीं हो सका, इस मानक के पैरा 78(ख) के अनुसार M 'टॉप-डाउन' परीक्षण भी करता है। यह की कैरिंग रकम की पूर्ण रूपेण इसकी वसूली योग्य रकम से तुलना करता है (संपूर्ण रूप से Z सबसे छोटी रोकड़ सृजन इकाई है जिसमें A शामिल है और जिस पर गुडविल का युक्तियुक्त तथा सतत् आधार पर आबंटन किया जा सकता है)।

अनुसूची 5. टॉप-डाउन परीक्षण का प्रयोग (रकम लाख रु. में)

20X4 का अंत	*A*	*B*	*C*	*गुडविल*	*Z*
कैरिंग रकम	1,300	1,200	800	120	3,420
'बॉटम-अप' परीक्षण से उत्पन्न ह्रास हानि	0	-	-	-	0
'बॉटम-अप' परीक्षण के पश्चात् कैरिंग रकम	1,300	1,200	800	120	3,420
वसूली योग्य रकम					3,400
'टाप-डाउन' परीक्षण से उत्पन्न ह्रास हानि					20

क 67. अतः M, 20 लाख रु. की ह्रास हानि को अभिज्ञात करता है जो इस मानक के पैरा 87 के अनुसार पूर्णतया गुडविल पर आबंटित करता है।

दृष्टांत 8 - निगम आस्तियों का आबंटन

इस दृष्टांत में, कर प्रभावों को छोड़ा गया है।

पृष्ठभूमि

क 68. उद्यम M की तीन रोकड़ सृजन इकाइयां हैं: A, B तथा C। तकनीकी वातावरण में जिसमें M कार्य करता है प्रतिकूल परिवर्तन हुए हैं। अतः M अपनी प्रत्येक रोकड़ सृजन इकाइयों के लिए ह्रास परीक्षण करता है। 20X0 के अंत में A, B तथा C की कैरिंग रकम 100 लाख रु. 150 लाख रु. तथा 200 लाख रु. क्रमशः है।

क 69. क्रियाओं का संचालन मुख्यालय से होता है। मुख्यालय की आस्तियों की कैरिंग रकम 200 लाख रु. है: मुख्यालय भवन 150 लाख रु. तथा अनुसंधान केन्द्र 50 लाख रु. है। रोकड़ सृजन इकाईयों की सापेक्ष कैरिंग रकमें मुख्यालय के भवन की प्रत्येक रोकड़ सृजन इकाई के प्रति अनुपात का उचित संकेत है। अनुसंधान केन्द्र की कैरिंग रकम को युक्तियुक्त आधार पर व्यक्तिगत रोकड़ सृजन इकाइयों पर आबंटित नहीं किया जा सकता है।

क 70. रोकड़-सृजन इकाई A का शेष प्राक्कलित उपयोगी जीवन 10 वर्ष है। B, C तथा मुख्यालय की आस्तियों का शेष उपयोगी जीवन 20 वर्ष है। मुख्यालय की आस्तियाँ सरल रेखा आधार पर अवक्षयित होती है।

क 71. प्रत्येक रोकड़ सृजन इकाई के लिए शुद्ध विक्रय मूल्य की संगणना करने का कोई आधार नहीं है। अतः प्रत्येक रोकड़ सृजन इकाई की वसूली योग्य रकम उसके 'प्रयोग से मूल्य' पर आधारित है। प्रयोग से मूल्य की संगणना पूर्व कर मितिकाटा दर 15% का प्रयोग कर के होती है।

निगम आस्तियों की पहचान

क 72. इस मानक के पैरा 85 के अनुसार, M पहले सभी निगम आस्तियों को पहचानता है जिनका संबंध पुनर्विलोकन में, व्यक्तिगत रोकड़ सृजन इकाइयों से है। निगम आस्तियाँ मुख्यालय भवन तथा अनुसंधान केन्द्र हैं।

क 73. M तब विनिश्चय करता है कि प्रत्येक निगम आस्तियों का प्रतिपादन कैसे किया जाये:

(क) मुख्यालय के भवन की कैरिंग रकम को पुनर्विलोकन में रोकड़ सृजन इकाई पर उचित तथा सतत् आधार पर आबंटित किया जा सकता है। अतः केवल 'बॉटम-अप' परीक्षण ही आवश्यक है; और

(ख) शोध केन्द्र की कैरिंग रकम को युक्तियुक्त तथा सतत् आधार पर पुनर्विलोकन में व्यक्तिगत रोकड़ सृजन इकाइयों में आबंटित नहीं किया जा सकता। अतः 'बॉटम-अप' परीक्षण के साथ 'टाप-डाउन' परीक्षण भी किया जायेगा।

निगम आस्तियों का आबंटन

क 74. मुख्यालय भवन की कैरिंग रकम प्रत्येक व्यक्तिगत रोकड़ सृजन इकाई की कैरिंग रकम में आबंटित की जाती है। भारित आबंटन आधार का प्रयोग किया जाता है क्योंकि A की रोकड़ सृजन इकाई का प्राक्कलित शेष उपयोगी जीवन 10 वर्ष है जबकि B और C की रोकड़ सृजन इकाइयों का प्राक्कलित शेष उपयोगी जीवन 20 वर्ष है।

अनुसूची 1. मुख्यालय भवन की कैरिंग रकम के भारित आबंटन की संगणना (रकम लाख रु. में)

20X0 का अन्त	*A*	*B*	*C*	*योग*
कैरिंग रकम	100	150	200	450
उपयोगी जीवन	10 वर्ष	20 वर्ष	20 वर्ष	
उपयोगी जीवन के आधार पर भार	1	2	2	

भारित करने के पश्चात् कैरिंग रकम	100	300	400	800
भवन का आनुपातिक आबंटन	12.5% (100/800)	37.5% (300/800)	50% (400/800)	100%
भवन की कैरिंग रकम का आबंटन (उपरोक्त अनुपात के आधार पर)	19	56	75	150
कैरिंग रकम (भवन के आबंटन के पश्चात्)	119	206	275	600

वसूली योग्य रकम का निर्धारण

क 75. 'बॉटम-अप' परीक्षण के लिए प्रत्येक व्यक्तिगत रोकड़-सृजन इकाई के लिए वसूली योग्य रकम की संगणना की आवश्यकता होती है। 'टॉप-डाउन' परीक्षण के लिए पूर्ण रूपेण M की (सबसे छोटी रोकड़ सृजन इकाई जिसमें अनुसंधान केन्द्र शामिल है) वसूली योग्य रकम की संगणना की आवश्यकता होती है।

अनुसूची 2. 20X0 के अंत में A, B, C तथा M के 'प्रयोग से मूल्य' की संगणना (रकम लाखों रु. में)

	A		B		C		D	
वर्ष	भावी रोकड़ प्रवाह	15% पर मितिकाटा मूल्य	भावी रोकड़ प्रवाह	15% पर मितिकाटा मूल्य	भावी रोकड़ प्रवाह	15% पर मितिकाटा मूल्य	भावी रोकड़ प्रवाह	15% पर मितिकाटा मूल्य
1	18	16	9	8	10	9	39	34
2	31	23	16	12	20	15	72	54
3	37	24	24	16	34	22	105	69
4	42	24	29	17	44	25	128	73
5	47	24	32	16	51	25	143	71
6	52	22	33	14	56	24	155	67
7	55	21	34	13	60	22	162	61
8	55	18	35	11	63	21	166	54
9	53	15	35	10	65	18	167	48
10	48	12	35	9	66	16	169	42
11			36	8	66	14	132	28
12			35	7	66	12	131	25
13			35	6	66	11	131	21
14			33	5	65	9	128	18
15			30	4	62	8	122	15

16	26	3	60	6	115	12
17	22	2	57	5	108	10
18	18	1	51	4	97	8
19	14	1	43	3	85	6
20	10	1	35	2	71	4
प्रयोग से मूल्य	199	164	271			720

(1) यह माना गया है कि अनुसंधान केन्द्र पूर्ण रूप से उद्यम के लिए अतिरिक्त भावी रोकड़ प्रवाहों का सृजन करता है। अतः प्रत्येक व्यक्तिगत रोकड़ सृजन इकाई के प्रयोग से मूल्य की रकम व्यवसाय के पूर्ण रूपेण प्रयोग से मूल्य से कम होती है। अतिरिक्त रोकड़ प्रवाह मुख्यालय भवन के प्रति चिन्हित नहीं किए जाते हैं।

ह्रास हानियों की संगणना

क 76. 'बॉटम-अप' परीक्षण के अनुसार, M प्रत्येक रोकड़ सृजन इकाई की कैरिंग रकम की (भवन की कैरिंग रकम के आबंटन के पश्चात्) इसके वसूली योग्य रकम से तुलना करता है।

अनुसूची 3. 'बॉटम-अप' परीक्षण का प्रयोग (रकम लाखों रु. में)

20X0 का अंत	*A*	*B*	*C*
कैरिंग रकम (भवन के आबंटन के पश्चात्) (अनुसूची 1)	119	206	275
वसूली योग्य रकम [अनुसूची(2)]	119	164	271
ह्रास हानि	0	(42)	(4)

क 77. अगला चरण ह्रास हानियों को रोकड़ सृजन इकाई की आस्तियों तथा मुख्यालय भवन में आबंटित करना हैं।

अनुसूची 4. रोकड सृजन इकाइयों B तथा C के लिए ह्रास हानियों का आबंटन (रकम लाख रु. में)

रोकड़ सृजन इकाई		*B*	*C*
मुख्यालय भवन को	(12)	(42*56/206)	(1)(4*75/275)
रोकड़ सृजित इकाई में आस्तियों को	(30)	(42*150/206)	(3)(4*200/275)
	(42)		(4)

क 78. 'टॉप-डाउन' परीक्षण के अनुसार, क्योंकि अनुसंधान केन्द्र को युक्तियुक्त तथा सतत् आधार पर A,B तथा C की रोकड़ सृजन इकाइयों पर आबंटित नहीं किया जा सकता है, M सबसे छोटी रोकड़ सृजन इकाई की कैरिंग रकम की, जिस पर अनुसंधान केन्द्र की कैरिंग रकम का आबंटन किया जा सकता है (अर्थात् M पूर्ण रूप से) इसकी वसूली योग्य रकम से तुलना करता है।

IndiaCode

अनुसूची 5. 'टॉप-डाउन' परीक्षण का प्रयोग (रकम लाख रु. में)

20X0 का अंत	A	B	C	भवन	अनुसंधान केन्द्र	M
कैरिंग रकम	100	150	200	150	50	650
'बॉटम-अप परीक्षण से उत्पन्न ह्रास हानि	-	(30)	(3)	(13)	-	(46)
बॉटम-अप परीक्षण के पश्चात् कैरिंग रकम	100	120	197	137	50	604
वसूली योग्य रकम	-	-	-	-	-	-
(अनुसूची 2)						720
'टॉप-डाउन' परीक्षण से उत्पन्न ह्रास हानि						0

क 79. अतः 'टॉप-डाउन' परीक्षण लागू करने के कारण कोई अतिरिक्त ह्रास हानि नहीं होती है। 'बॉटम-अप' परीक्षण के लागू करने के कारण केवल 46 लाख रु. की ह्रास हानि को अभिज्ञात किया जाता है।

लेखा मानक 29

उपबंधित रकमेंए आकस्मिक दायित्व और आकस्मिक आस्तियाँ

(इस लेखा मानक में कुछ मोटे तिरछे टाइप और कुछ सीधे टाइप में व्यवस्थित पैरा सम्मिलित है, जिनका समान प्राधिकार है। मोटे तिरछे टाइप में दिये गए पैरा मुख्य सिद्धांत उपदर्शित करते हैं। इस लेखा मानक को अधिसूचना के प्रति उपाबंध के भाग क में अतंर्विष्ट साधारण अनुदेशों के संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिये।)

लेखा मानक 29 के प्रभाव में आने से लेखा मानक 4, *आकस्मिकताएँ और तुलनपत्र की तारीख के पश्चात् होने वाली घटनाएँ,* के सभी पैरा जो आकस्मिकताओं से संबंधित है (जैसे कि पैरा 1(क), 2, 3.1, 4 (4.1 से 4.4), 5 (5.1 से 5.6), 6, 7 (7.1 से 7.3), 9.1 (सम्बंधित अनुभाग), 9.2, 10, 11, 12 और 16) को वापिस ले लिया गया है सिवाय उनके जो उन आस्तियों के ह्रास से सम्बंधित हैं जो अन्य भारतीय लेखा मानकों के अंतर्गत नहीं हैं।

उद्देश्य

इस मानक का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि उपयुक्त अभिज्ञान की कसौटियों और माप आधारों को उपबंधित रकमों और आकस्मिक दायित्वों पर लागू किया जाए और वित्तीय विवरणों में दी गई टिप्पणियों में पर्याप्त सूचना प्रकट की जाए ताकि प्रयोगकर्त्ता उनकी प्रकृति, समय और रकम को समझ सकें। इस मानक का प्रयोजन आकस्मिक आस्तियों के लिए उपयुक्त लेखा अधिकथित करना भी है।

कार्यक्षेत्र

1. ***इस मानक को उपबंधित रकमों और आकस्मिक दयित्वों तथा आकस्मिक आस्तियों के लेखे में लागू करना चाहिये, सिवाय निम्नलिखित के:***

   (क) जो वित्तीय लिखतों[53] के परिणामस्वरूप होते हैं और जिनको उचित मूल्य पर दिखाया गया है ;

   (ख) निष्पादन योग्य संविदा का परिणाम सिवाय जहाँ संविदा दुर्भर है।

[53] इस मानक के प्रयोजन के लिए, 'वित्तीय लिखत' का वही अर्थ होगा जैसा कि लेखा मानक 20, प्रति शेयर उपार्जन, में है।

स्पष्टीकरण

(i) *'दुर्भर संविदा' वह संविदा है जिसमें संविदा की बाध्यताओं को पूरा करने के लिए अपरिहार्य लागत, उस संविदा से प्राप्त होने वाले लाभों से अधिक है। अतः एक संविदा को दुर्भर संविदा तभी कहा जायेगा यदि संविदा के अधीन उसे पूरा करने की अनिवार्य लागतें उससे प्राप्त होने वाले आर्थिक लाभों से अधिक हों। इस संविदा के आधीन अपरिहार्य लागतें इस संविदा से निकलने की शुद्ध न्यूनतम लागत को प्रदर्शित करती है जो कि संविदा को पूरा करने की लागत और संविदा को पूरा न करने की स्थिति में दी जाने वाली क्षतिपूर्ति या दण्ड में से कम है।*

(ii) *यदि किसी उद्यम के पास ऐसी संविदा है जो दुर्भर है, इस मानक के अधीन वर्तमान बध्यता अभिज्ञात की जाती है और उपबंधित रकम की तरह, उसकी माप की जाती है।*

उपरोक्त स्पष्टीकरण को लागू करना इस मानक से संलग्न दृष्टांत ग के दृष्टांत 10 में स्पष्ट किया गया है।

(ग) जो बीमा धारकों के साथ संविदा से बीमा उद्यम में उत्पन्न होते हैं ; और

(घ) जो दूसरे लेखा मानकों के अधीन हैं।

2. यह मानक उन वित्तीय लिखतों पर (गारंटियों को सम्मिलित करते हुए) लागू होता है जिनको उचित मूल्य पर नहीं दिखाया जाता है।

3. निष्पादन योग्य संविदाएं वे संविदाएं हैं जिनके अधीन या तो किसी पक्ष ने अपनी बाध्यताओं को पूरा नहीं किया या दोनों पक्षों ने समान सीमा तक अपनी बाध्यताओं को आंशिक रूप से पूरा किया है। यह मानक निष्पादन योग्य संविदाओं पर तब तक लागू नहीं होता जब तक कि वे दुर्भर न हों।

4. यह मानक बीमा उद्यमों की उपबंधित रकमों, आकस्मिक दायित्वों और आकस्मिक आस्तियों पर लागू होता है सिवाय बीमाधारियों से उत्पन्न संविदाओं के।

5. यदि कोई अन्य लेखा मानक विशेष प्रकार की उपबंधित रकम, आकस्मिक दायित्व और आकस्मिक आस्ति का वर्णन करता है, उद्यम इस मानक की बजाय उसी मानक को लागू करता है। उदाहरणतः कुछ विशेष प्रकार की उपबंधित रकमों को निम्नलिखित लेखा मानकों में सम्बोधित किया गया है:

(क) निर्माण ठेके (लेखा मानक 7, *निमार्ण ठेके* देखिए) ;

(ख) आय पर कर (लेखा मानक 22, *आय पर करों के लिए लेखा* देखिए) ;

(ग) पट्टे (लेखा मानक 19, *पट्टे* देखिए) यद्यपि क्योंकि लेखा मानक 19 में प्रचालन पट्टे जो दुर्भर बन चुके हैं उनका प्रतिपादन करने के लिए कोई विशेष अनिवार्यताएं नहीं हैं, यह मानक ऐसे मामलों पर लागू होता है; और

(घ) कर्मचारी प्रसुविधाएं (लेखा मानक 15, *कर्मचारी प्रसुविधाएं* देखिए)

6. कुछ रकमें जिनको उपबंधित रकमों की तरह प्रतिपादित किया जाता है, राजस्व के अभिज्ञान से सम्बंधित हो सकती हैं, उदाहरण के लिए जहाँ एक उद्यम फीस के बदले में गारंटी देता है। यह मानक राजस्व के अभिज्ञान को सम्बोधित नहीं करता है। लेखा मानक 9, ऐसी परिस्थितियों की पहचान करता है जहाँ राजस्व को अभिज्ञात किया जाता है और अभिज्ञान के आधार को लागू करने के लिए व्यवहारिक मार्ग दर्शन करता है। यह मानक लेखा मानक 9, की अपेक्षाओं को नहीं बदलता है।

7. यह मानक उपबंधित रकमों को ऐसे दायित्वों की तरह परिभाषित करता है जिनकी माप सारभूत डिग्री का उपयोग करके किया जा सकता है। उपबंधित रकम शब्द का प्रयोग कुछ ऐसे मदों के लिए भी किया जाता है जैसे कि अवक्षयण, आस्तियों का ह्रास और संदिग्ध उधार, ये आस्तियों की कैरिंग रकम पर समायोजन हैं और इनको इस मानक में सम्बोधित नहीं किया गया है।

8. अन्य लेखा मानक निश्चित करते हैं कि व्ययों को आस्तियाँ माना जाए या खर्च । इस मानक में इन विषयों को सम्बोधित नहीं किया गया है। तदनुसार जब उपबन्ध किया जाता है तो यह मानक न तो पहचानी गई लागतों के पूंजीकरण को आवश्यक मानता है न ही इस पर रोक लगाता है।

9. यह मानक पुनर्निमाण के लिए उपबंधित रकमों पर लागू होता है (बंद हो रहे प्रचालनों सहित) । जहाँ पुनर्निमाण बंद हो रहे प्रचालनों की परिभाषा को पूरा करता है वहाँ लेखा मानक 24, *बंद हो रहे प्रचालन,* के द्वारा अतिरिक्त प्रकटन की अपेक्षा होती है।

परिभाषाएँ

10. इस मानक में निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग विनिर्दिष्ट अर्थों के साथ किया गया है:

10.1. <u>उपबंधित रकम</u> ऐसा दायित्व है जिसे प्राक्कलन की सारभूत डिग्री का उपयोग करके मापा जा सकता है।

10.2. <u>दायित्व पूर्व</u> घटनाओं से उत्पन्न उद्यम की वर्तमान बाध्यता है जिसके व्ययन से आर्थिक लाभ वाले संसाधन से उद्यम के बाहरी प्रवाह की अपेक्षा है।

10.3. <u>बाध्यबद्ध घटना</u> वह घटना है जो ऐसी बाध्यता को सृजित करती है जिसका परिणाम एक ऐसा उद्यम है जिसके पास उस बाध्यता को निपटाने का कोई वास्तविक विकल्प नहीं है।

10.4. <u>आकस्मिक दायित्व:</u>

(क) ***एक संभव बाध्यता जो पूर्व घटनाओं से उत्पन्न होती है और जिसकी विद्यमानता एक या अधिक अनिश्चित भविष्य की घटनाओं के होने या न होने से पुष्ट होगी जो कि उद्यम के पूर्णतः नियंत्रण में नहीं है ; या***

(ख) ***एक वर्तमान बाध्यता जो पूर्व घटनाओं से उत्पन्न होती है जो अभिज्ञात नहीं की जाती है क्योंकि :***

(i) ***यह अधिसंभाव्य नहीं है कि आर्थिक लाभों वाले संसाधनों के बाह्य प्रवाह की बाध्यता का निपटारा करने के लिए आवश्यकता होगी ; या***

(ii) ***दायित्व की रकम का विश्वसनीय प्राक्कलन नहीं किया जा सकता है।***

10.5 <u>आकस्मिक आस्ति</u> एक संभव आस्ति है जो पूर्व घटनाओं से उत्पन्न होती है, जिसकी विद्यमानता एक या अधिक अनिश्चित भविष्य की घटनाओं के होने या न होने से पुष्ट होगी जो कि उद्यम के पूर्णतः नियंत्रण में नहीं है।

10.6 <u>वर्तमान बाध्यता</u>-कोई बाध्यता तब वर्तमान बाध्यता है यदि, उपलब्ध साक्ष्य के आधार पर तुलन पत्र की तारीख पर इसकी विद्यमानता को सम्भाव्य माना गया है, अर्थात न होने से होने की संभावना अधिक है।

10.7 <u>संभव बाध्यता</u>-कोई बाध्यता तब संभव बाध्यता है यदि, उपलब्ध साक्ष्य के आधार पर है, तुलन पत्र की तारीख पर जिसकी विद्यमानता को अधिसंभाव्य नहीं माना गया है।

10.8 <u>पुनर्संरचना</u> एक कार्यक्रम है जिसे प्रबंधन द्वारा योजनाबद्ध और नियंत्रित किया जाता है, और यह महत्वपूर्ण रूप से बदलता है या तो:

(क) ***एक उद्यम द्वारा किये गए व्यापार के कार्यक्षेत्र को, या***

(ख) ***एक तरीके को जिससे व्यापार का संचालन किया जाता है।***

11. बाध्यता एक निश्चित तरीके से निष्पादन या कार्य करने का कर्त्तव्य या उत्तदायित्व है। बाध्यता बाध्यकारी संविदा या कानूनी अपेक्षा के परिणामस्वरूप विधि द्वारा प्रवर्तनीय हो सकती है। बाध्यता सामान्य कारबारी व्यवहार, परम्परा और अच्छे कारबारी संबंध को बनाये रखने की इच्छा या एक साम्यापूर्ण रीति से कार्य करने के कारण भी उत्पन्न होती है।

12. उपबंधित रकमों को अन्य दायित्वों से जैसे कि व्यापारिक देयताओं और प्रोद्भवनों से अलग किया जा सकता है क्योंकि भविष्य के खर्चों के निपटारे के लिए उपबंधित रकमों के मापन में सारभूत डिग्री तक प्राक्कलन सम्मिलित होता है। इसके विपरीत:

(क) व्यापारिक देयताएं उन मालों या सेवाओं के भुगतान के दायित्व हैं जो प्राप्त हो चुकी हैं या जिनकी आपूर्ति हो चुकी है और उनका बीजक कट चुका हो या औपचारिक ढंग से विक्रेता से समझौता हो चुका हो ; और

(ख) प्रोद्भवन उन माल और सेवाओं के भुगतान के दायित्व हैं जो प्राप्त किये जा चुके हैं या जिनकी आपूर्ति हो चुकी है लेकिन भुगतान नहीं किया गया है, न बीजक कटा है या औपचारिक ढंग से विक्रेता से समझौता

नहीं हुआ है, और इसमें कर्मचारियों को संदेय रकम को सम्मिलित करना। यद्यपि, कई बार प्रोद्भवनों का प्राक्कलन करना पड़ता है, परन्तु प्राक्कलन की डिग्री उपबंधित रकम की तुलना में बहुत कम होती है।

13. इस मानक में 'आकस्मिक' शब्द दायित्वों और आस्तियों के लिए प्रयोग होता है जो अभिज्ञात नहीं किये गये हैं क्योंकि उनके विद्यमान होने की पुष्टि भविष्य की अनिश्चित घटनाओं जो कि पूर्णतः उद्यम के नियंत्रण में नहीं है, के होने या न होने से होगी। इसके अतिरिक्त, शब्द 'आकस्मिक दायित्व' उन दायित्वों के लिए प्रयोग होता है जो अभिज्ञान की कसौटियों पर खरे नहीं उतरते हैं।

अभिज्ञान

उपबंधित रकमें

14. किसी उपबंधित रकम को अभिज्ञात कर देना चाहिये जब:

(क) ***किसी पूर्व घटना के परिणामस्वरूप किसी उद्यम के पास वर्तमान दायित्व है;***

(ख) ***यह अधिसम्भाव्य है कि दायित्व के निपटारे में आर्थिक लाभ वाले संसाधनों के बाह्य प्रवाह की आवश्यकता होगी ; और***

(ग) ***दायित्व की रकम का विश्वसनीय प्राक्कलन किया जा सकता है।***

यदि ये शर्तें पूरी नहीं होती है तो किसी उपबंधित रकम को अभिज्ञात नहीं करना चाहिये।

वर्तमान बाध्यता

15. प्रायः सभी मामलों में यह स्पष्ट होगा कि क्या पूर्व घटना वर्तमान बाध्यता को जन्म दे चुकी है। कुछ विरले मामलों में, उदाहरणतः एक कानूनी मुकद्दमें में, यह विवाद का विषय है कि या तो कुछ घटनाएँ घटी हैं या उन घटनाओं का परिणाम वर्तमान दायित्व है। इस प्रकार के मामले में, एक उद्यम यह निश्चित करता है कि क्या कोई दायित्व सभी उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर, उदाहरणार्थ विशेषज्ञों की राय का समावेश करते हुए, तुलन-पत्र की तारीख पर विद्यमान है। विचार किये गये साक्ष्य तुलन-पत्र की तारीख के पश्चात् घटनाओं द्वारा प्रदत्त किन्हीं अतिरिक्त साक्ष्य को भी सम्मिलित करते हैं। ऐसे साक्ष्य के आधार पर:

(क) जहाँ न होने की अपेक्षा इस बात के होने की अधिक संभावना हो कि तुलन-पत्र की तारीख पर वर्तमान बाध्यता विद्यमान है, उद्यम किसी उपबंधित रकम को अभिज्ञात करता है (यदि अभिज्ञान के मानदंडों को पूरा किया जाता है); और

(ख) इस बात की अधिक संभावना हो कि तुलन-पत्र की तारीख को कोई वर्तमान बाध्यता विद्यमान नहीं है, उद्यम आकस्मिक दायित्व प्रकट करता है, जब तक कि आर्थिक लाभों वाले संसाधनों के बाह्य प्रवाह की संभावना बहुत कम न हो (पैरा 68, देखिए)

पूर्व घटना

16. कोई पूर्व घटना जिसका परिणाम एक वर्तमान बाध्यता है एक बाध्यबद्ध घटना कहलाती है। एक घटना के बाध्यबद्ध घटना होने के लिए यह अनिवार्य है कि उस घटना से उत्पन्न दायित्व के निपटारे के अतिरिक्त उद्यम के पास कोई वास्तविक विकल्प न हो।

17. वित्तीय विवरण एक उद्यम की रिपोर्टिंग अवधि के अन्त में वित्तीय स्थिति को सम्बोधित करते हैं न कि इसकी भविष्य की सम्भावित स्थिति को । इसलिए वे लागतें जिनकी भविष्य में प्रचालन के लिए आवश्यकता है उनके लिए उपबंधित रकम को अभिज्ञात नहीं किया जाता है। उद्यम तुलन-पत्र में केवल उन्हीं दायित्वों को अभिज्ञात करता है जो तुलन-पत्र की तारीख को विद्यमान होते हैं।

18. केवल एक उद्यम की भावी कार्यवाही (अर्थात् इसके व्यापार का भावी व्यवहार) से स्वतंत्र रूप से विद्यमान पूर्व घटनाओं से उत्पन्न बाध्यताओं को उपबंधित रकम के रूप में अभिज्ञात किया जाता है। इस प्रकार की बाध्यताओं के उदाहरण है, गैर-विधिक पर्यावरण क्षति के लिए सफाई लागतें या शास्तियाँ, दोनों उद्यम की भावी कार्यवाही पर विचार किये बगैर निपटारे में आर्थिक लाभ वाले संसाधन को बाह्य प्रवाह की तरफ ले जायेंगे। इसी प्रकार एक उद्यम को एक तेल स्थापना की

डिकमिशनिंग लागत की उपबंधित रकम को उस सीमा तक अभिज्ञात करना चाहिये जहाँ तक एक उद्यम पहले से हुई क्षति को ठीक करने के लिए उत्तरदायी है। इसके विपरीत, कुछ मामलों में वाणिज्यिक दबाव या विधिक अपेक्षाओं के कारण एक उद्यम को भविष्य में एक विशेष तरीके से प्रचालन पर व्यय करने का आशय हो सकता है या आवश्यकता हो सकती है (उदाहरणतः एक विशेष प्रकार की फैक्टरी में धुँआ छन्नी के द्वारा)। क्योंकि एक उद्यम अपनी भावी कार्यवाही द्वारा भविष्य के व्यय से बच सकता है, उदाहरण के लिए, प्रचालन के तरीके को बदल कर, तो उसके पास भावी व्यय के लिए वर्तमान बाध्यता नहीं है और किसी उपबंधित रकम को अभिज्ञात नहीं किया जाता है।

19. बाध्यता में हमेशा एक अन्य पक्षकार होता है जिसके प्रति बाध्यता होती है। यद्यपि उस पक्षकार की पहचान करना जरूरी नहीं है जिस पक्ष के प्रति बाध्यता है-वास्तव में यह जनता के प्रति भी हो सकती है।

20. विधि में परिवर्तन के कारण एक घटना जो तुरंत उसी समय ही बाध्यता को उत्पन्न न कर सकी हो, भविष्य में भी बाध्यता को उत्पन्न कर सकती है । उदाहरणतः जब पर्यावरण में क्षति हुई हो, हो सकता है उस समय क्षति की पूर्ति की कोई बाध्यता न हो। तथापि यह क्षति एक बाध्यता बन जाएगी जब नयी विधि के अनुसार वर्तमान घटना के कारण हुई क्षति को सुधारना अनिवार्य हो जाये।

21. जहाँ प्रस्तावित नयी विधि के प्रस्ताव को अन्तिम स्वरूप देना शेष है, बाध्यता तभी उत्पन्न होगी जब विधान का लागू होना वास्तव में निश्चित हो जाए। लागू करने की परिस्थितियों में अन्तर आ जाने से यह पहचानना असम्भव सा हो जाता है कि कौन सी एक निश्चित घटना विधि का लागू होना सुनिश्चित कर सकती है। अनेक मामलों में तो जब तक विधि अधिनियमित न हो जाये तब तक इसके लागू होने के बारे में वास्तव में सुनिश्चित होना असंभव हो जाता है।

आर्थिक लाभों वाले संसाधनों के अधिसम्भाव्य बाह्य प्रवाह

22. एक दायित्व को अभिज्ञान के लिए अर्हित होने के लिए न केवल एक वर्तमान बाध्यता का होना आवश्यक है बल्कि उस बाध्यता के निपटारे के लिए आर्थिक लाभों वाले संसाधनों के बाह्य प्रवाह का होना भी अधिसम्भाव्य आवश्यक है। इस मानक[54] के प्रयोजन के लिए संसाधनों के बाह्य प्रवाह या एक घटना को अधिसम्भाव्य माना जायेगा यदि घटना घटने की संभावना घटना न घटने की संभावना की अपेक्षा अधिक हो अर्थात इस बात की अधिसम्भाव्यता कि घटना घटेगी, घटना के न घटने की अधिसम्भाव्यता से अधिक होगी। जब यह अधिसम्भाव्य न हो कि कोई वर्तमान बाध्यता विद्यमान है, उद्यम आकस्मिक हानि का प्रकटन करता है, जब तक कि आर्थिक लाभों वाले संसाधनों के बाह्य प्रवाह की सम्भावना नगण्य न हो। (पैरा 68 देखिए)

23. जहाँ पर समान प्रकार की कई बाध्यताएं हैं (उदाहरणतः उत्पाद वारंटी या इसी प्रकार की संविदाएं) यह अधिसम्भाव्यता कि निपटारे में बाह्य प्रवाह आवश्यक होगा कुल मिलाकर बाध्यताओं की श्रेणी पर विचार करते हुए निश्चित की जानी चाहिए। यद्यपि किसी एक मद के बाह्य प्रवाह की सम्भावना बहुत कम हो सकती है तो भी यह सम्भव है कि बाध्यताओं की श्रेणी के निपटारे के लिए कुछ संसाधनों के बाह्य प्रवाह की आवश्यकता हो। यदि यह मामला है तो उपबंधित रकम को अभिज्ञात किया जाता है (यदि अभिज्ञान की अन्य कसौटी को पूरा कर दिया गया हो)।

बाध्यता का विश्वसनीय अनुमान

24. वित्तीय विवरण को तैयार करने में अनुमानों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है तथापि यह इनकी विश्वसनीयता को कम नहीं करते हैं। यह उन उपबंधित रकमों के सम्बंध में तो विशेषरूप से सत्य है जो अपनी प्रकृति के कारण अन्य मदों की अपेक्षा अनुमानों पर अधिक निर्भर हैं। सिवाय बहुत दुर्लभ मामलों में एक उद्यम सम्भावित परिणामों के परास को निश्चित करने में समर्थ होगा और इसलिए बाध्यता का अनुमान लगा सकता है जिसको उपबंधित रकम के अभिज्ञान के लिए विश्वास के साथ प्रयोग किया जा सकता है।

25. अत्यंत दुर्लभ मामले में जहाँ कोई विश्वसनीय अनुमान नहीं लगाया जा सकता, एक दायित्व विद्यमान होता है जिसको अभिज्ञात नहीं किया जा सकता है। उस दायित्व को एक आकस्मिक दायित्व के रूप में प्रकट किया जाता है। (पैरा 68, देखिए)

---

[54] इस मानक के 'अधिसम्भाव्य' शब्द की व्याख्या न होने के की अपेक्षा, होने की अधिक सम्भावना' अन्य लेखा मानकों में आवश्यक रूप से लागू नहीं होती है।

आकस्मिक दायित्व

26. एक उद्यम को आकस्मिक दायित्व को अभिज्ञात नहीं करना चाहिए।

27. पैरा 68 की अपेक्षा के अनुसार, एक आकस्मिक हानि को प्रकट किया जाता है जब तक कि आर्थिक लाभ वाले संसाधन के बाह्य प्रवाह की सम्भावना नगण्य न हो।

28. जहाँ कोई उद्यम एक दायित्व के लिए संयुक्त और पृथक रूप से उत्तरदायी है, दायित्व के उस भाग को जिसे अन्य पक्षकारों द्वारा पूरा किये जाने की अपेक्षा है आकस्मिक दायित्व माना जाता है। उद्यम बाध्यता के उस भाग के लिए उपबंधित रकम को अभिज्ञात करता है जिसके लिए आर्थिक लाभ वाले संसाधनों का बाह्य प्रवाह अधिसम्भाव्य होता है, सिवाय उन अत्यधिक दुर्लभ परिस्थितियों के जहाँ कोई विश्वसनीय अनुमान नहीं लगाया जा सकता (पैरा 14 देखिए)।

29. आकस्मिक दायित्व ऐसे तरीके से विकसित हो सकते हैं जैसी आरम्भ में आशा नहीं थी। इसलिए निरंतर यह निर्धारित करने के लिए अनुमान लगाया जाता है कि क्या आर्थिक लाभों वाले संसाधनों के बाह्य प्रवाह की अधिसम्भाव्यता हो गयी है। यदि यह अधिसम्भाव्यता है कि किसी ऐसी मद के लिए जिसको पूर्व अवधि में आकस्मिक दायित्व माना गया था, उसके लिए भावी आर्थिक लाभों के बाह्य प्रवाह की आवश्यकता होगी तो पैरा 14 के अनुसार उस अवधि के वित्तीय विवरणों में जिसमें कि अधिसम्भाव्यता में परिवर्तन हुआ है, उपबंधित रकम को अभिज्ञात किया जाता है (सिवाय अत्यंत दुलर्भ परिस्थितियों के जहाँ पर कोई विश्वसनीय अनुमान नहीं लगाया जा सकता है)।

आकस्मिक आस्तियाँ

30. एक उद्यम को आकस्मिक आस्ति को अभिज्ञात नहीं करना चाहिये।

31. आकस्मिक आस्तियाँ आमतौर पर गैर योजनागत या अप्रत्याशित घटनाओं से उत्पन्न होती हैं जो उद्यम के लिए आर्थिक लाभों के अर्न्तप्रवाह की सम्भावना को उत्पन्न करती हैं। इसका उदाहरण, एक ऐसा दावा है जिसका उद्यम विधिक प्रक्रिया द्वारा अनुसरण कर रहा है जहाँ पर परिणाम निश्चित नहीं है।

32. आकस्मिक आस्तियों को वित्तीय विवरणों में अभिज्ञात नहीं किया जाता है क्योंकि इसके परिणाम स्वरूप उस आय को अभिज्ञात कर सकते हैं जिसे कभी वसूल नहीं किया जा सकता है। यद्यपि जब आय का प्राप्त करना वस्तुतः निश्चित है, तब सम्बंधित आस्ति आकस्मिक आस्ति नहीं है, इसका अभिज्ञान उचित है।

33. आकस्मिक आस्ति को वित्तीय विवरणों में प्रकट नहीं किया जाता है। साधारणतः इसको अनुमोदक प्राधिकारी की रिपोर्ट में प्रकट किया जाता है (कम्पनी के मामले में निदेशक बोर्ड और, अन्य किसी उद्यम के मामले में तत्संबंधी अनुमोदक प्राधिकारी), जहाँ पर आर्थिक लाभों का अर्न्तप्रवाह अधिसंभाव्य है।

34. आकस्मिक आस्तियों का निर्धारण निरंतर किया जाता है और यदि यह वास्तव में निश्चित हो जाता है कि आर्थिक लाभों का अर्न्तप्रवाह उत्पन्न होगा, आस्ति और सम्बंधित आय को उस अवधि के वित्तीय विवरणों में अभिज्ञात किया जाता है जिस अवधि में परिवर्तन हुआ है।

मापन

सर्वोत्तम अनुमान

35. उपबंधित रकम की मात्रा तुलनपत्र की तारीख पर वर्तमान बाध्यता के निपटारे के लिए आवश्यक व्यय का सर्वोत्तम अनुमान होना चाहिए। उपबंधित रकम को वर्तमान मूल्य तक मितिकाटा नहीं करना चाहिये, डिकमिशनिंग, प्रत्यावर्तन तथा समरूप दायित्वों को छोड़कर जो संपत्ति, संयंत्र तथा उपस्कर की लागत के रूप में अभिज्ञात हैं। मितिकाटा दर (या दरें) कर पूर्व दर (या दरें) होनी चाहिए जो मुद्रा के समय मूल्य तथा दायित्व के विशिष्ट जोखिमों के वर्तमान बाजार मूल्यांकन को प्रतिबिंबित करता (ते) है (हैं)। मितिकाटा दर (दरें) को उन जोखिमों को प्रतिबिंबित नही करना चाहिए जिसके लिए भावी नकदी प्रवाह अनुमानों (प्राक्कलनों) को समयोजित की गई हैं। बट्टा (मितिकाटा) को लाभ-हानि विवरण में आवधिक पड़ताल (अनवाइंडिंग) को अभिज्ञात किया जाना चाहिए।

36. परिणाम के अनुमानों और वित्तीय प्रभाव का निर्धारण उद्यम के प्रबंधन के निर्णय पर होता है, जिसको इसी प्रकार के संव्यवहारों के अनुभव से अनुपूरित किया जाता है, कुछ मामलों में, स्वतंत्र विशेषज्ञों की रिपोर्ट से अनुपूरित किया जाता

है। विचार किए गए साक्ष्यों में तुलनपत्र की तारीख के पश्चात् घटनाओं द्वारा उपलब्ध कराए गए कोई अतिरिक्त साक्ष्य भी सम्मिलित होते हैं।

37. उपबंधित रकम को कर पूर्व मापा जाता है (उपबंधित रकम पर कर के परिणाम और उसमें परिवर्तनों को लेखा मानक 22, आय पर करों के लिए लेखा, के अधीन सम्बोधित किया जाता है।

जोखिम और अनिश्चितताएँ

38. किसी उपबंधित रकम के सर्वोत्तम अनुमान प्राप्त करने के लिए उन जोखिमों और अनिश्चितताओं को ध्यान में रखना चाहिये जो अनिवार्य रूप से कई घटनाओं तथा परिस्थितियों को घेरे रहते हैं।

39. जोखिम परिणाम की परिवर्तनशीलता का वर्णन करता है। जोखिम का समायोजन उस रकम को बढ़ा सकता है जिस पर दायित्व को मापा गया है। अनिश्चितता की स्थिति में निर्णय करने में सावधानी की आवश्यकता होती है ताकि आय या आस्तियों को ज्यादा वर्णित न किया जाये और व्यय तथा दायित्व को कम वर्णित न किया जाय। यद्यपि अनिश्चितता अत्यधिक उपबंधित रकम या दायित्व के जानबूझ कर अत्यधिक वर्णन को न्याय संगत नहीं ठहराती है। उदाहरणार्थ, किसी विशेष प्रतिकूल परिणाम की आँकी गयी अनुमानित लागत, विवेक के आधार पर अनुमानित की जाती है, उस परिणाम को जानबूझ कर जो स्थिति की वास्तविकता है उससे अधिक अधिसम्भाव्य नहीं माना जाता है। जोखिम और अनिश्चितता के समायोजन के दोहराव, जिससे उपबंधित रकमें बढ़ती हैं, से बचने के लिए सावधानी की आवश्यकता होती है।

40. व्यय की रकम को घेरने वाली अनिश्चितताओं का प्रकटन पैरा 67(ख) के अधीन किया जाता है।

भावी घटनाएँ

41. भावी घटनाएँ जो एक बाध्यता के निपटारे के लिए आवश्यक रकम को प्रभावित कर सकती हैं, को उपबंध की रकम में परिलक्षित होना चाहिये बशर्ते इस बात के वस्तुनिष्ठ साक्ष्य हों कि वे घटेंगी।

42. प्रत्याशित भावी घटनाएँ उपबन्धित रकमों को मापने में विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो सकती हैं। उदाहरणतः एक उद्यम यह विश्वास कर सकता है कि भविष्य में तकनीकी परिवर्तनों के कारण संयंत्र के उपयोगी जीवन के अंत में सफाई की लागतें कम हो जायेंगी। इसके लिए जिस रकम को अभिज्ञात किया गया है वह तकनीकी योग्यता प्राप्त, वस्तुनिष्ठ निरीक्षकों के द्वारा साक्ष्यों के आधार पर सफाई के समय उपलब्ध होने वाली तकनीक को ध्यान में रख कर लगाये गए अनुमानों को प्रदर्शित करती है। अतः उनको सम्मिलित करना उचित होगा, उदाहरण के लिए, वर्तमान तकनीक को लागू करने में अधिक अनुभव के कारण प्रत्याशित लागत में कमी या पहले की अपेक्षा बड़े या अधिक जटिल सफाई कार्यक्रम में वर्तमान तकनीक को लागू करने की लागत। यद्यपि उद्यम पूरी तरह नई तकनीक के विकास की पहले से ही आशा नहीं करता है जब तक कि यह पर्याप्त वस्तुनिष्ठ साक्ष्य द्वारा समर्थित न हो।

43. विद्यमान बाध्यता के मापन में सम्भावित नये विधान पर विचार किया जाता है जब नये विधान के वास्तव में लागू होने के पर्याप्त वस्तुनिष्ठ साक्ष्य उपलब्ध हों । व्यवहार में उत्पन्न होने वाली अनेकों भिन्न-भिन्न परिस्थितियों के कारण किसी एकल घटना जो प्रत्येक मामले में वस्तुनिष्ठ साक्ष्य प्रदान कर सके, को निश्चित करना असम्भव हो जाता है। साक्ष्य की आवश्यकता दोनों में है कि विधान की क्या मांग है और क्या यह वास्तव में निश्चित है कि यह उचित समय में विधान बन जायेगा और लागू हो जायेगा। बहुत से मामलों में विधान के लागू होने तक भी साक्ष्य उपलब्ध नहीं होते हैं।

आस्तियों का प्रत्याशित व्ययन

44. उपबंधित रकम को मापने के लिए आस्तियों के प्रत्याशित व्ययन से हुए लाभों को विचार में नहीं लेना चाहिये।

45. आस्तियों के प्रत्याशित व्ययन से हुए लाभों को उपबंधित रकम के मापन के लिए विचार में नहीं लिया जाता है, चाहे प्रत्याशित व्ययन उपबंधित रकम को उत्पन्न करने वाली घटना से निकटता से जुड़ा है। इसके विपरीत, एक उद्यम उस लेखा मानक के द्वारा जो संबंधित आस्तियों को सम्बोधित करते हैं, दिये गए निश्चित समय पर आस्तियों के प्रत्याशित व्ययन के लाभों को अभिज्ञात करता है।

प्रतिपूर्तियाँ

46. जहां पर उपबंधित रकम का निपटारा करने के लिए आवश्यक कुछ या संपूर्ण व्यय की दूसरे पक्षकार द्वारा प्रतिपूर्ति होने की आशा है, तो प्रतिपूर्ति को तब और केवल तभी अभिज्ञात किया जाएगा जब यह वास्तव में निश्चित हो जाये कि उद्यम

द्वारा बाध्यता का निपटारा कर देने पर प्रतिपूर्ति प्राप्त हो जायेगी। प्रतिपूर्ति को अलग आस्ति मानना चाहिये। प्रतिपूर्ति के लिए अभिज्ञात रकम को उपबंधित रकम की मात्रा से अधिक नहीं होना चाहिये।

47. लाभ-हानि के विवरण में, उपबंधित रकम से संबंधित व्यय को प्रतिपूर्ति की अभिज्ञात रकम से शुद्ध करके दिखाना चाहिए।

48. कई बार एक उद्यम उपबंधित रकम के निपटारे के लिए व्यय के पूर्णतया या अंशतः दायित्व के भुगतान के लिए अन्य पक्षकार पर निर्भर हा सकता है (उदाहरणतः, बीमा संविदाएं, क्षतिपूर्ति धारा या विक्रेताओं की वारंटी)। अन्य पक्षकार उद्यम द्वारा दी गई रकम की प्रतिपूर्ति कर सकते हैं या प्रत्यक्ष भुगतान कर सकते हैं।

49. अधिकांश मामलों में उद्यम जिक्र की गयी सम्पूर्ण रकम के लिए उत्तरदायी होता है जिससे कि उद्यम को सम्पूर्ण रकम का निपटारा करना पड़ेगा यदि तीसरा पक्षकार किसी कारण से भुगतान ना कर सके। इस स्थिति में दायित्व की सम्पूर्ण रकम के लिए उपबंध को अभिज्ञात किया जाता है और प्रत्याशित प्रतिपूर्ति के लिए एक अलग आस्ति को भी अभिज्ञात किया जाता है जब यह निश्चित हो जाये कि प्रतिपूर्ति हो जायेगी यदि उद्यम दायित्व का भुगतान कर दे।

50. कुछ मामलों में उद्यम जिक्र की गयी लागतों के लिए उत्तरदायी नहीं होगा यदि तीसरा पक्षकार भुगतान करने में असमर्थ हो। इस प्रकार के मामलों में उद्यम का उन लागतों के लिए दायित्व नहीं है इसलिए उनको उपबंधित रकम में सम्मिलित नहीं किया जाता है।

51. जैसा कि पैरा 28 में दिया गया है कि एक दायित्व जिसके लिए उद्योग संयुक्त रूप से और पृथक रूप से उत्तरदायी है अन्य पक्षकारों द्वारा बाध्यता के निपटारे की अपेक्षित सीमा तक आकस्मिक आस्ति है।

उपबंधित रकमों में परिवर्तन

52. प्रत्येक तुलनपत्र की तारीख को उपबंधित रकम का पुनर्विलोकन करना चाहिए और वर्तमान सर्वोत्तम अनुमान को परिलक्षित करने के लिए समायोजित किये जाने चाहिये। यदि यह और अधिक अधिसम्भाव्य नहीं है कि आर्थिक लाभ वाले संसाधनों का बाह्य प्रवाह दायित्व के निपटारा करने के लिए आवश्यक होगा, तो उपबंध को उलटना चाहिये।

उपबंधित रकमों का उपयोग

53. एक उपबंधित रकम का उपयोग केवल उन्हीं खर्चों के लिए करना चाहिये जिनके लिए उपबंधित रकम को मूल रूप से अभिज्ञात किया गया था।

54. केवल मूल उपबंधित रकमों से सम्बंधित व्ययों को ही उसके विरुद्ध समायोजित किया जाता है। व्ययों को किसी ऐसी उपबंधित रकम से समायोजित करना जिसको मूलतः किसी और प्रयोजन के लिए अभिज्ञात किया गया था, दो अलग-अलग घटनाओं के प्रभाव को छुपा देगा ।

अभिज्ञान तथा मापन नियमों का लागू होना

भावी प्रचालन हानियाँ

55. भावी प्रचालन हानियों के लिए उपबंधित रकमों को अभिज्ञात नहीं करना चाहिये।

56. भावी प्रचालन हानियाँ पैरा 10 में दायित्व की परिभाषा के और उपबंधित रकमों को निर्धारित करने के पैरा 14 में सामान्य अभिज्ञान कसौटियों को पूरा नहीं करती हैं ।

57. भावी प्रचालन हानियों की प्रत्याशा इस बात का संकेत है कि प्रचालन की कुछ आस्तियों का ह्रास हो सकता है। एक उद्यम इन आस्तियों के ह्रास का परीक्षण लेखा मानक 28, *आस्तियों का ह्रास*, के अनुसार में करता है।

पुनर्संरचना

58. वे घटनाएँ जो पुनर्संरचना की परिभाषा में आ सकती हैं उनके उदाहरण निम्नलिखित हैः

(क) व्यवसाय की एक रेखा का विक्रय या समापन ;

(ख) एक देश में या क्षेत्र में अवस्थानों का बंद होना या एक देश या क्षेत्र से दूसरे देश अथवा क्षेत्र में पुनर्स्थापित करना ;

(ग) प्रबंधतंत्र संरचना में परिवर्तन, उदाहरण के लिए प्रबंधतंत्र के एक स्तर को समाप्त कर देना ; और

(घ) आधारभूत पुनर्संगठन जिनका उद्यम के प्रचालनों की प्रकृति और क्रियाओं के फोकस पर सारभूत प्रभाव है।

59. पुनर्संरचना लागतों के लिए उपबंधित रकम को केवल तभी अभिज्ञात किया जाता है जब पैरा 14 में दी गयीं उपबंधित रकमों के अभिज्ञान के लिए दी कसौटियाँ पूरी होती हैं।

60. एक प्रचालन के विक्रय से कोई दायित्व उत्पन्न नहीं होता जब तक कि उद्यम विक्रय के लिए वचनबद्ध नहीं है अर्थात वहाँ एक बाध्य विक्रय करार है।

61. एक उद्यम एक विक्रय के लिए वचनबद्ध नहीं हो सकता जब तक कि क्रेता की पहचान न हो जाय और बाध्य विक्रय करार न हो। जब तक बाध्य विक्रय करार नहीं है, तो उद्यम के विचार में परिवर्तन आ सकता है, और वास्तव में उसे दूसरा रास्ता अपनाना पड़ेगा यदि उसे स्वीकार्य शर्तों पर क्रेता न मिल सके । जब एक प्रचालन के विक्रय को पुनर्संरचना का भाग माना जाता है, तो लेखा मानक 28, *आस्तियों का ह्रास*, के अधीन प्रचालन की आस्तियों के ह्रास का पुनर्विलोकन किया जाता है।

62. पुनर्संरचना की उपबंधित रकम में केवल पुनर्संरचना से उत्पन्न प्रत्यक्ष व्ययों को सम्मिलित करना चाहिये, वह जो कि निम्नलिखित दोनों हैं:-

(क) ***आवश्यक रूप से पुनर्संरचना पर हुए हैं ; और***

(ख) ***उद्यम के चल रहे क्रियाकलापों से जुड़े नहीं है।***

63. पुनर्संरचना की उपबंधित रकम ऐसी लागतें सम्मिलित नहीं करती है जैसे कि:

(क) बने रहने वाले कर्मचारियों की पुनर्स्थापना या पुनर्प्रशिक्षण;

(ख) विपणन; या

(ग) नये प्रणाली और वितरण नेटवर्क में विनिधान ;

इन व्ययों का संबंध व्यवसाय के भविष्य के संचालन से है और तुलन पत्र की तारीख पर पुनर्संरचना के लिए दायित्व नहीं है। ऐसे व्ययों को उसी आधार पर अभिज्ञात किया जाता है जैसे कि वे पुनर्संरचना से स्वतंत्र रूप से उत्पन्न हुए हों।

64. पुनर्संरचना की तारीख तक पहचान योग्य भावी प्रचालन हानियाँ उपबंधित रकम में सम्मिलित नहीं की जाती है।

65. पैरा 44 की अपेक्षा के अनुसार, आस्तियों के अपेक्षित व्ययन पर लाभों को सम्मिलित नहीं किया जाता है चाहे आस्तियों के व्ययन को पुनर्संरचना के भाग के रूप में परिकल्पित किया गया हो।

प्रकटन

66. उपबंधित रकम की प्रत्येक श्रेणी के लिए किसी उद्यम को निम्नलिखित को प्रकट करना चाहिए:

(क) ***अवधि के आरम्भ और अंत पर कैरिंग रकम ;***

(ख) ***अवधि में किये गए अतिरिक्त उपबंध, विद्यमान उपबंधित रकमों में वृद्धि सहित ;***

(ग) ***अवधि के दौरान प्रयुक्त रकम (अर्थात् उपबंधित रकम के विरूद्ध उत्पन्न और प्रभारित) ; और***

(घ) ***अवधि के दौरान अप्रयुक्त रकम का उलटाव।***

परन्तु एक लघु और मध्यम आकार की कम्पनी, जिसे अधिसूचना में परिभाषित किया गया है, के पास उपरोक्त पैरा 66 का अनुपालन करने का विकल्प है।

67. उपबंधित रकम की प्रत्येक श्रेणी के लिए उद्यम को निम्नलिखित को प्रकट करना चाहिये:

(क) ***बाध्यता की प्रकृति का संक्षिप्त विवरण और किन्ही परिणामिक आर्थिक लाभों के बाह्य प्रवाह का अपेक्षित समय ;***

(ख) *इन बाह्य प्रवाहों के बारे में अनिश्चितता का संकेत। जैसा कि पैरा 41 में कहा गया है, किसी उद्यम को सम्बन्धित भावी घटनाओं के बारे में की गयी मुख्य मान्यताओं को प्रकट करना चाहिये, यदि पर्याप्त सूचना को प्रदान करना अपेक्षित है ; और*

(ग) *किसी प्रत्याशित प्रतिपूर्ति की रकम, उस आस्ति की रकम को बताते हुए जिसको उस प्रत्याशित प्रतिपूर्ति के लिए अभिज्ञात किया गया है।*

परन्तु एक लघु और मध्यम माध्यम आकार की कम्पनी, जिसे अधिसूचना में परिभाषित किया गया है, के पास उपरोक्त पैरा 67 का अनुपालन करने का विकल्प है।

68. जब तक निपटारे में किसी बाह्य प्रवाह की संभावना नगण्य न हो, किसी उद्यम को तुलन पत्र की तारीख पर आकस्मिक दायित्व की प्रत्येक श्रेणी के लिए आकस्मिक दायित्व की प्रकृति के संक्षिप्त विवरण का प्रकटन करना चाहिये और, जहाँ व्यवहारिक हो:

(क) *पैरा 35-45 के अधीन मापा गया, इसके वित्तीय प्रभाव का अनुमान ;*

(ख) *किसी बाह्य प्रवाह से सम्बंधित अनिश्चितताओं का संकेत ; और*

(ग) *किसी प्रतिपूर्ति की संभावना।*

69. यह निर्धारित करने के लिए किस उपबंधित रकम या आकस्मिक दायित्व को एक श्रेणी बनाने के लिए जोड़ा जा सकता है, यह विचार करना आवश्यक है कि मदों की प्रकृति उनके बारे में एकल विवरण के लिए पैरा 67 (क) और (ख) और 68 के (क) और (ख) की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए, पर्याप्त रूप से समान है। इस प्रकार विभिन्न उत्पादों की वारंटी से संबंधित उपबंध की रकम को एकल श्रेणी में मानना उपयुक्त होगा, परन्तु कानूनी कार्यवाही के तहत रकमों और सामान्य वारंटी से संबंधित रकमों को एकल श्रेणी रकम में मानना उपयुक्त नहीं होगा।

70. जहाँ उपबंधित रकम और आकस्मिक दायित्व एक ही प्रकार की परिस्थितियों से उत्पन्न होते हैं, कोई उद्यम पैरा 66-68 की अपेक्षा के अनुसार प्रकटन इस तरीके से करता है जो उपबंधित रकम और आकस्मिक दायित्व के मध्य की कड़ी को दिखाता है।

71. जहाँ पर पैरा 68 द्वारा अपेक्षित किसी सूचना को प्रकट नहीं किया गया है क्योंकि वहाँ ऐसा करना व्यवहारिक नहीं है, तो उस तथ्य को बताना चाहिये।

72. बहुत ही दुर्लभ मामलों में आकस्मिक दायित्वों की उपबंधित रकम के विषय में पैरा 66-70 में अपेक्षित सभी या कुछ सूचनाओं का प्रकटन अन्य पक्षकारों के साथ विवाद में, उद्यम के विरोध में धारणा उत्पन्न कर सकता है। ऐसे मामलों में, उद्यम को जानकारी प्रकट करना अपेक्षित नहीं है, परन्तु विवाद की सामान्य प्रकृति के साथ यह तथ्य और कारण कि क्यों सूचना को प्रकट नहीं किया गया है, को प्रकट करना चाहिए।

संक्रमणकालीन उपबंध[55]

73.डिकमिशनिंग, प्रत्यावर्तन तथा समरूप दायित्वों (देखें अनुच्छेद 35) के मौजूदा सभी उपबंधों को संपत्ति, संयंत्र और उपस्कर के संबंधित मद में तत्संबंधी प्रभाव के साथ प्रत्याशित रूप से मितिकाटा करना चाहिए।

दृष्टांत क

सारणी - उपबंधित रकम, आकस्मिक दायित्व और प्रतिपूर्तियां

इस दृष्टांत का प्रयोजन मानक की मुख्य अपेक्षाओं को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करना है। यह लेखा मानक का भाग नहीं है और इसे लेखा मानक के सम्पूर्ण मूल पाठ के संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिये।

[55] पैरा 73 में दिए गए संक्रमणकालीन उपबंध केवल कंपनी (लेखा मानक) नियम, 2006 के अधीन अधिसूचित लेखा मानकों लिए प्रासंगिक है, जो समय के साथ संशोधित किये गए हैं।

उपबंधित रकम और आकस्मिक दायित्व

जहां, पूर्व घटनाओं के परिणामस्वरूप, भावी आर्थिक लाभों वाले संसाधनों का निम्नलिखित के निपटारे के लिए बाह्य प्रवाह हो सकता हैः (क) ऐसा वर्तमान दायित्व जिसका अस्तित्व तुलन पत्रा की तारीख पर अधिसम्भाव्य माना जाता है; (ख) ऐसी वर्तमान बाध्यता जिसका अस्तित्व तुलन पत्र की तारीख पर अधिसम्भाव्य नहीं माना जाता है।		
एक वर्तमान बाध्यता है जिससे सम्भवतः संसाधनों के बाह्य प्रवाह की अपेक्षा है और दायित्व की रकम का विश्वसनीय अनुमान लगाया जा सकता है।	**एक सम्भव बाध्यता है या वर्तमान बाध्यता है जिसके लिए बाह्य संसाधनों की आवश्यकता हो सकती है, परन्तु अधिसम्भाव्य रूप से होगी नहीं।**	**एक सम्भव बाध्यता है या वर्तमान बाध्यता है जहां पर संसाधनों के बाह्य प्रवाहों की संभावना नगण्य है।**
उपबंधित रकम को अभिज्ञात किया जाता है (पैरा 14)। उपबंधित रकम के लिए प्रकटन की अपेक्षा है (पैरा 66 और 67)।	किसी उपबंधित रकम को अभिज्ञात नहीं किया जाता है (पैरा 26)। आकस्मिक दायित्व के लिए प्रकटन की अपेक्षा है (पैरा 68)।	किसी उपबंधित रकम को अभिज्ञात नहीं किया जाता है (पैरा 26)। किसी प्रकटन की अपेक्षा नहीं है (पैरा 68)।

प्रतिपूर्तियाँ

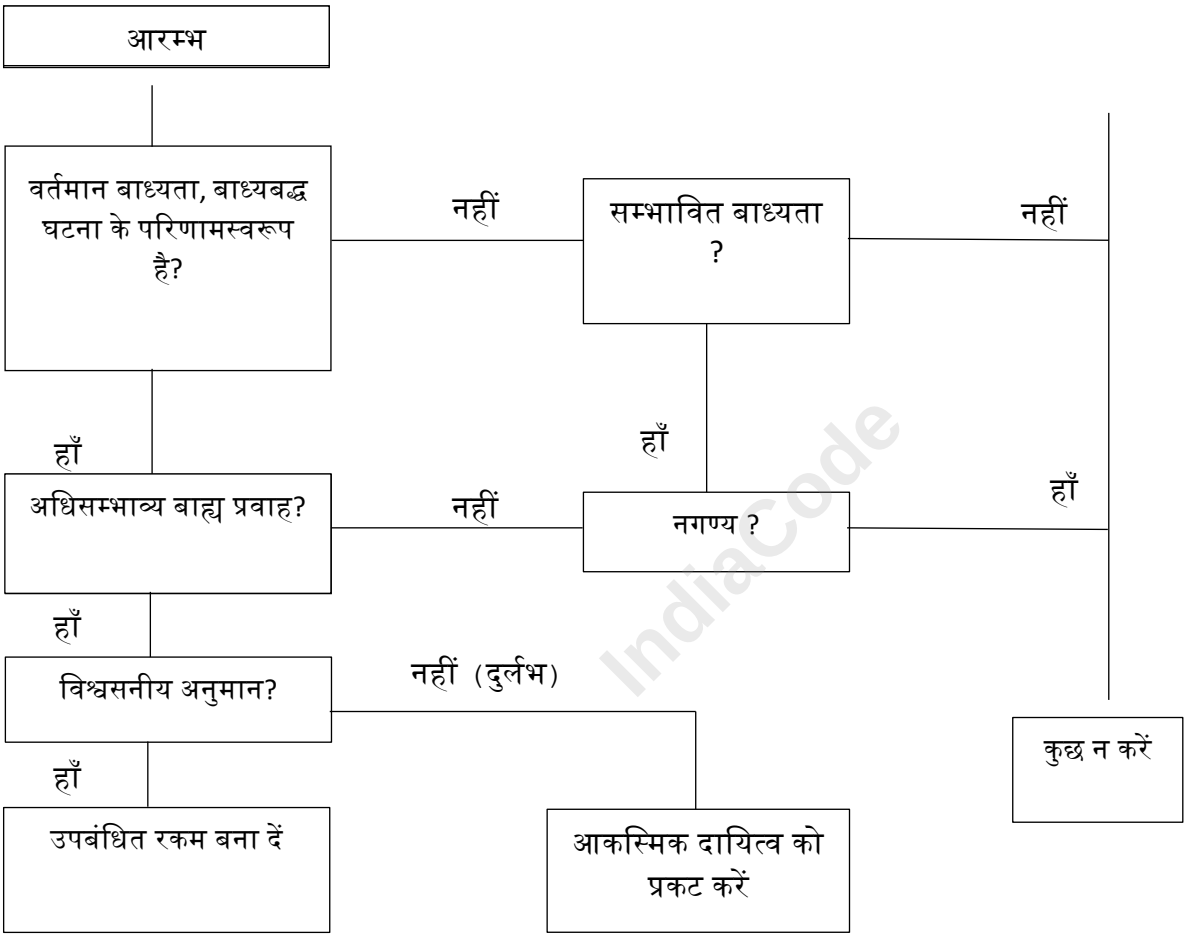
किसी उपबंधित रकम के निपटारे के लिए आवश्यक सभी या कुछ व्यय की प्रतिपूर्ति की प्रत्याशा है।		
अन्य पक्षकार द्वारा प्रतिपूर्ति किये जाने वाले व्यय के भाग के लिए उद्यम की कोई बाध्यता नहीं है।	वह रकम जिसकी प्रतिपूर्ति की प्रत्याश है उसकी बाध्यता उद्यम के पास रह जाती है और यह वास्तव में निश्चित है कि यदि उद्यम उपबंधित रकम का निपटारा करता है तो प्रतिपूर्ति की प्राप्ति होगी।	वह रकम जिसकी प्रतिपूर्ति की प्रत्याशा है उसकी बाध्यता उद्यम के पास रह जाती है और यह वास्तव में निश्चित नहीं है कि यदि उद्यम उपबंधित रकम का निपटारा करता है तो प्रतिपूर्ति की प्राप्ति होगी।
प्रतिपूर्ति की जाने वाली रकम के लिए उद्यम का कोई दायित्व नहीं है (पैरा 50)।	तुलन पत्र में प्रतिपूर्ति को एक अलग आस्ति की तरह अभिज्ञात किया जाता है जो कि लाभ-हानि खाते के विवरण में व्यय के पूर्ण रूप से बराबर हो सकती है। प्रत्याशित प्रतिपूर्ति के लिए अभिज्ञात रकम दायित्व से अधिक नहीं होती है (पैरा 46 और 47)।	प्रत्याशित प्रतिपूर्ति को आस्ति की तरह अभिज्ञात नहीं किया जाता है (पैरा 46)।
किसी प्रकटन की आवश्यकता नहीं ।	प्रतिपूर्ति को प्रतिपूर्ति के लिए अभिज्ञात रकम के साथ ही प्रकट किया जाता है [पैरा 67(ग)]।	प्रत्याष्ठित प्रतिपूर्ति प्रकट की जाती है (पैरा 67 (क))।

IndiaCode

दृष्टांत ख

निर्णय वृक्ष

निर्णय वृक्ष का उद्देश्य उपबंधित रकमों और आकस्मिक दायित्वों के लिए लेखा मानक की मुख्य अभिज्ञान अपेक्षाओं को संक्षिप्त रूप देना है। निर्णय वृक्ष लेखा मानक का भाग नहीं है और लेखा मानक के सम्पूर्ण मूल पाठ के संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिये।



टिप्पण: दुर्लभ परिस्थितियों में, यह स्पष्ट नहीं होता है कि वर्तमान बाध्यता है इस मामले में यह मान लिया जाता है कि एक पूर्व घटना वर्तमान बाध्यता को उत्पन्न करता है यदि, सभी प्राप्त साक्ष्य को ध्यान में रखते हुए, तुलन पत्र की तारीख पर वर्तमान दायित्व विद्यमान होने की सम्भावना न होने की अपेक्षा अधिक है (मानक का पैरा 15)।

दृष्टांत ग

दृष्टांत: अभिज्ञान

यह दृष्टांत लेखा मानक को लागू करने के दृष्टांत देता है जो इसको समझने के लिए सहायक हैं। यह लेखा मानक का भाग नहीं है।

दृष्टांतों में सभी उद्यमों के वर्ष का अंत 31 मार्च माना गया है। सभी मामलों में, यह माना जाता है कि किसी भी प्रत्याशित बाह्य प्रवाह का विश्वसनीय अनुमान लगाया जा सकता है। कुछ उदाहरणों में वर्णित परिस्थितियों के परिणामस्वरूप आस्तियों का ह्रास हुआ है - इन दृष्टांतों में इस पहलू पर विचार नहीं किया गया है।

दृष्टांतों में दिए गए अंतर्प्रसंग लेखा मानक के ऐसे पैरा की ओर संकेत करते हैं जो विशेष रूप से प्रासंगिक हैं। इस दृष्टांत को सम्पूर्ण मूल पाठ के संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिए।

दृष्टांत 1: वारंटी

एक निर्माता अपने उत्पाद के विक्रय के समय क्रेताओं को वारंटी देता है। विक्रय संविदा की शर्तों के अनुसार निर्माता विक्रय की तारीख से तीन साल के भीतर होने वाले निर्माण दोषों को उत्पाद की मरम्मत द्वारा या बदल कर हानि को पूरा करने का वादा करता है। गत अनुभव के आधार पर यह अधिसंभाव्य है (अर्थात न होने से होने की अधिक संभावना है) कि वारंटी के कुछ दावे होंगे।

पूर्व बाध्यबद्ध घटना के परिणामस्वरूप वर्तमान बाध्यता

– बाध्यबद्ध घटना वारंटी के साथ उत्पाद का विक्रय है जो किसी बाध्यता को उत्पन्न करती है।

निपटारे के लिए आर्थिक लाभों वाले संसाधनों के बाह्य प्रवाह

– सभी वारंटी पर अखंड रूप से अधिसम्भाव्य है (देखिए पैरा 23)।

निष्कर्ष - तुलन पत्र की तारीख से पूर्व वारंटी पर बेचे गए उत्पाद की हानि को पूरा करने की लागतों के सर्वोत्तम अनुमान के लिए उपबंधित रकम को अभिज्ञात किया जाता है (पैरा 14 और 23 देखिए)।

दृष्टांत 2: प्रदूषित भूमि-विधान का लागू होना वास्तव में निश्चित

तेल उद्योग में एक उद्यम प्रदूषण फैला रहा है परन्तु सफाई नहीं करता है क्योंकि सफाई के बारे में कोई अधिनियम नहीं है, और उद्यम कई वर्षों से भूमि को प्रदूषित कर रहा है। 31 मार्च, 2005 को यह वास्तव में निश्चित है कि पहले से प्रदूषित भूमि की सफाई को अनिवार्य बनाने वाला अधिनियम वर्ष के समाप्त होने के कुछ ही समय में लागू हो जायेगा।

पूर्व बाध्यबद्ध घटना के परिणामस्वरूप उत्पन्न वर्तमान बाध्यता - बाध्यबद्ध घटना भूमि प्रदूषण है, क्योंकि सफाई के लिए विधान वास्तव में निश्चित है।

निपटारे के लिए आर्थिक लाभों वाले संसाधनों के बाह्य प्रवाह - अधिसम्भाव्य।

निष्कर्ष: सफाई की लागत के सर्वोत्तम अनुमान के लिए एक उपबंधित रकम को अभिज्ञात किया जाता है (पैरा 14 और 21 देखिए)

दृष्टांत 3: अपतट तेल क्षेत्र

कोई उद्यम अपतटीय तेल क्षेत्र का प्रचालन करता है जहाँ अनुज्ञप्ति की शर्तों के अनुसार उत्पादन की समाप्ति पर तेल मस्तूल को हटाना और समुद्र तल को पूर्व स्थिति में लाना अनिवार्य है। अंतिम लागतों में कुल लागत का नब्बे प्रतिशत तेल मस्तूल को हटाने और उसके बनाने के कारण हुई क्षति को पूरा करने, और दस प्रतिशत तेल को निकालने के लिए खर्च होता है। तुलन-पत्र की तारीख पर तेल मस्तूल बनाया जा चुका है परन्तु तेल नहीं निकाला गया है।

IndiaCode

पूर्व बाध्यबद्ध घटना से उत्पन्न वर्तमान बाध्यता - तेल मस्तूल का निर्माण अनुज्ञप्ति की शर्तों के अनुसार मस्तूल को हटाने और समुद्र तल को पूर्व स्थिति में लाने की बाध्यता को उत्पन्न करता है अतः यह एक बाध्यबद्ध घटना है। तुलन पत्र की तारीख पर, यद्यपि उस क्षति में सुधार के लिए कोई बाध्यता नहीं है जो कि तेल निकालने के कारण होगी।

निपटारे के लिए आर्थिक लाभों वाले संसाधनों के बाह्य प्रवाह - अधिसम्भाव्य।

निष्कर्ष - अंतिम लागत के नब्बे प्रतिशत के सर्वोत्तम अनुमान जिनका संबंध मस्तूल को हटाने और मस्तूल के निर्माण के कारण हुई क्षति को दूर करने से संबंधित है, इसके लिए उपबंधित रकम को अभिज्ञात किया जाता है (पैरा 14 देखिए) । यह लागतें तेल मस्तूल की लागत में एक भाग के रूप में सम्मिलित होती हैं। लागत के दस प्रतिशत जो तेल निकालने के कारण उत्पन्न होती है, उसको दायित्व की तरह तब अभिज्ञात करते हैं जब तेल निकाला जाता है।

दृष्टांत 4 : प्रतिदाय की नीति

एक फुटकर दुकान की नीति है कि वह असंतुष्ट ग्राहक के क्रय किये गए माल का प्रतिदाय करती है, हालांकि ऐसा करने के लिए कोई विधिक बाध्यता नहीं है। उसकी इस प्रतिदाय की नीति की जानकारी सामान्यतः सब को है।

पूर्व बाध्यबद्ध घटना के परिणामस्वरूप वर्तमान बाध्यता - बाध्यबद्ध घटना माल का विक्रय है, जो कि बाध्यता को उत्पन्न करती है क्योंकि बाध्यता सामान्य व्यापारिक क्रियाओं, रीतियों, अच्छे व्यापारिक संबंधों और साम्यता के आधार पर कार्य करने की इच्छा से भी उत्पन्न होती है।

निपटारे के लिए आर्थिक लाभों वाले संसाधनों के बाह्य प्रवाह-अधिसम्भाव्य, बेचे हुए माल का कुछ भाग प्रतिदाय के लिए वापस होता है। (पैरा 23 देखिए)

निष्कर्ष - प्रतिदाय की लागतों के सर्वोत्तम अनुमान के लिए उपबंधित रकम को अभिज्ञात किया जाता है (पैरा 11, 14 तथा 23 देखिए)

दृष्टांत 5: धुआं छन्नी को लगाने की विधिक अपेक्षा

नये विधान के अनुसार 30 सितम्बर, 2005 तक एक उद्यम को अपनी फैक्टरी में धुआं छन्नी लगाना अनविार्य है। उद्यम ने धुआं छन्नी नहीं लगायी है।

(क) 31 मार्च, 2005 की तुलन पत्र की तारीख पर

पूर्व बाध्यबद्ध घटना के परिणामस्वरूप वर्तमान बाध्यता- कोई बाध्यता नहीं है क्योंकि धुआं छन्नी को लगाने या विधान के आधीन दण्ड के लिए कोई दायित्व सृजक घटना नहीं हुई है।

निष्कर्ष- धुआं छन्नी की लागतों के लिए किसी उपबंधित रकम को अभिज्ञात नहीं किया जाता है (पैरा 14 और 16-18 देखिए)।

(ख) 31 मार्च, 2005 की तुलन पत्र की तारीख पर

पूर्व बाध्यबद्ध घटना के परिणामस्वरूप वर्तमान बाध्यता - धुआं छन्नी को लगाने की लागतों की अभी भी कोई बाध्यता नहीं है क्योंकि कोई बाध्यबद्ध घटना नहीं घटी है। (छन्नी को लगाना)। यद्यपि विधान के अधीन जुर्माने या शास्तियों के भुगतान की बाध्यता उत्पन्न हो सकती है क्योंकि बाध्यबद्ध घटना घट चुकी है (फैक्टरी का प्रचालन बगैर नियमों का पालन किये)।

निपटारे के लिए आर्थिक लाभों वाले संसाधनों के बाह्य प्रवाह - नियमों का पालन न करने के कारण दंड या अर्थ दंड की लागत की अधिसम्भाव्यता विधान के विस्तृत विवरण और सरकार की नियमों को लागू करने की सख्ती पर निर्भर करता है।

निष्कर्ष - धुंआ छन्नी लगाने के लिए उपबंधित रकम को अभिज्ञात नहीं किया जाता है। यद्यपि दंड या अर्थ दंड, जिसके लगने की संभावना न लगने से बहुत अधिक है, उसके सर्वोत्तम अनुमान के लिए उपबंधित रकम अभिज्ञात किया जाता है (पैरा 14 और 16-18 देखिए)।

IndiaCode

दृष्टांत 6 : आयकर व्यवस्था में परिवर्तन के कारण कर्मचारियों का पुनः प्रशिक्षण

सरकार आयकर व्यवस्था में अनेक परिवर्तनों को प्रारंभ करती है। इन परिवर्तनों के परिणामस्वरूप वित्तीय सेवा क्षेत्र में लिप्त एक उद्योग को वित्तीय सेवा नियमावली के निरंतर पालन के लिए अपने प्रशासन और विक्रय विभाग के कर्मचारियों के बड़े भाग को पुनः प्रशिक्षित करना पड़ता है। तुलन पत्र की तारीख पर कर्मचारियों का कोई प्रशिक्षण नहीं हुआ है।

पूर्व बाध्यबद्ध घटना के परिणामस्वरूप वर्तमान बाध्यता - कोई बाध्यता नहीं है क्योंकि कोई बाध्यबद्ध घटना (पुनः प्रशिक्षण) नहीं घटी है ।

निष्कर्ष - किसी उपबंधित रकम को अभिज्ञात नहीं किया जाता है (पैरा 14 और 16 - 18)

दृष्टांत 7: एकल गारंटी

2004-05 में उद्योग क किसी उद्योग ख के कुछ उधारों की गारंटी देता है जिसकी वित्तीय स्थिति उस समय सुदृढ़ है। 2005-06 में उद्योग ख की वित्तीय स्थिति बिगड़ जाती है और 30 सितम्बर, 2005 को उद्योग ख समापन की ओर चला जाता है।

(क) 31 मार्च, 2005 को

पूर्व बाध्यबद्ध घटनाओं के परिणामस्वरूप वर्तमान बाध्यता- बाध्यबद्ध घटना ऐसी गारंटी का देना है जो बाध्यता को उत्पन्न करती है।

निपटारे के लिए आर्थिक लाभों वाले संसाधनों के बाह्य प्रवाह- 31 मार्च, 2005 को लाभों का बाह्य प्रवाह अधिसंभाव्य नहीं है।

निष्कर्ष- किसी उपबंधित रकम को अभिज्ञात किया जाता है (पैरा 14 और 22 देखिए)। गारंटी को आकस्मिक दायित्व के रूप में प्रकट किया जाता है जब तक कि किसी बाह्य प्रवाह की संभावना नगण्य न हो (पैरा 68 देखिए) ।

(ख) 31 मार्च, 2006 को

पूर्व बाध्यबद्ध घटनाओं के परिणामस्वरूप वर्तमान बाध्यता - बाध्यबद्ध घटना ऐसी गारंटी का देना है जो विधिक रूप से बाध्य दायित्व को उत्पन्न करती है।

निपटारे के लिए आर्थिक लाभों करने वाले संसाधनों के बाह्य प्रवाह- 31 मार्च, 2006 को अधिसम्भाव्य है कि बाध्यता के निपटारे के लिए आर्थिक लाभों वाले संसाधनों के बाह्य प्रवाह की आवश्यकता होगी।

निष्कर्ष- दायित्व के सर्वोत्तम अनुमान के लिए उपबंधित रकम को अभिज्ञात किया जाता है (पैरा 14 से 22 देखिए)

टिप्पण: यह उदाहरण एकल गारंटी को सम्बोधित करता है। यदि उद्यम के पास ऐसी गारंटी का संविभाग है तो आर्थिक लाभों वाले संसाधनों के बाह्य प्रवाह की अधिसम्भाव्यता का निर्धारण करने के लिए सम्पूर्ण संविभाग को एक साथ लेकर अनुमान लगाया जाएगा (पैरा 23 देखिए)। यदि एक उद्यम फीस के बदले गारंटी देता है, तो राजस्व को लेखा मानक 9, *राजस्व अभिज्ञान* के अधीन अभिज्ञात किया जाता है।

दृष्टांत 8: एक अदालती मामला

2004-05 में एक विवाह के उपरांत उद्यम द्वारा बेचे गए उत्पाद से सम्भवतः विषैले भोजन के कारण दस व्यक्तियों की मृत्यु हो गई। उद्यम से हरजाना प्राप्त करने के लिए विधिक कार्यवाही प्रारम्भ हो गई है परन्तु उद्यम ने इस दायित्व को चुनौती दी है। 31 मार्च, 2005 को समाप्त होने वाले वित्तीय विवरणों के अनुमोदन के समय तक उद्यम के वकीलों के मतानुसार यह अधिसम्भाव्य है कि उद्यम को उत्तरदायी न माना जाये। यद्यपि, जब उद्यम 31 मार्च, 2006 के लिए वित्तीय विवरण तैयार करता है, उसके वकीलों के मतानुसार मुकदमें के आगे बढ़ने के कारण यह अधिसम्भाव्य है कि उद्यम को उत्तरदायी माना जाये।

(क) 31 मार्च, 2005 को

पूर्व बाध्यबद्ध घटना के परिणामस्वरूप वर्तमान बाध्यता - वित्तीय विवरणों के अनुमोदन के समय उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर गत घटनाओं के कारण कोई वर्तमान बाध्यता नहीं है।

निष्कर्ष - किसी उपबंधित रकम को अभिज्ञात नहीं किया जाता है। ('वर्तमान बाध्यता' की परिभाषा और पैरा 15 देखिए) । इस मामले को आकस्मिक दायित्व के रूप में प्रकट किया जाता है जब तक किसी बाह्य प्रवाह की सम्भाव्यता नगण्य न हो (पैरा 68)।

(ख) 31 मार्च, 2006 को

पूर्व बाध्यबद्ध घटना के परिणामस्वरूप वर्तमान दायित्व - उपलब्ध साक्ष्य के आधार पर वर्तमान बाध्यता विद्यमान है।

निपटारे के लिए आर्थिक लाभों वाले संसाधनों के बाह्य प्रवाह- अधिसम्भाव्य।

निष्कर्ष - बाध्यता के निपटारे के लिए रकम के सर्वोत्तम अनुमान के लिए उपबंध को अभिज्ञात किया जाता है (पैरा 14 – 15 देखिए)।

दृष्टांत 9 क : नवीनीकरण की लागतें - विधिक आवश्यकता नहीं

एक भट्टी का एक अस्तर होता है जिसको हर पाँच वर्ष के पश्चात् तकनीकी कारणों से बदलने की आवश्यकता होती है। तुलन पत्रा की तारीख पर अस्तर तीन वर्ष से प्रयोग में है।

पूर्व बाध्यबद्ध घटना के परिणामस्वरूप वर्तमान बाध्यता - कोई वर्तमान बाध्यता नहीं हैं।

निष्कर्ष - किसी उपबंधित रकम को अभिज्ञात नहीं किया जाता है (देखिए पैरा 14 और 16-18 देखिए)।

अस्तर को प्रतिस्थापित करने की लागत को अभिज्ञात नहीं किया गया है क्योंकि, तुलन पत्र की तारीख पर, कम्पनी की भविष्य की क्रियाओं से अस्तर को प्रतिस्थापित करने की कोई बाध्यता स्वतंत्र रूप से विद्यमान नहीं है - यहाँ तक कि व्यय करने का आशय भी कम्पनी के निर्णय पर निर्भर करती है कि भट्टी को चलाने का कार्य जारी रखे या अस्तर को बदले।

दृष्टांत 9 ख: नवीनीकरण की लागतें - विधिक आवश्यकता

एक हवाई जहाज कम्पनी को कानून के अनुसार अपने वायुयान की हर तीन वर्ष में एक बार पूरी तरह जांच और मरम्मत करने की आवश्यकता है।

पूर्व बाध्यबद्ध घटना के परिणामस्वरूप वर्तमान् दायित्व- कोई वर्तमान बाध्यता नहीं है।

निष्कर्ष - किसी उपबंधित रकम को अभिज्ञात नहीं किया गया है (पैरा 14 और 16 - 18 देखिए) ।

वायुयान की जांच और पूर्ण मरम्मत की लागत की उपबंधित रकम को उसी कारण से अभिज्ञात नहीं किया जाता है जिससे कि उदाहरण 9 क में अस्तर को बदलने की लागत के लिए उपबंधित रकम को अभिज्ञात नहीं किया जाता हैं । यहाँ तक कि पूर्ण मरम्मत कराने की विधिक अनिवार्यता भी पूर्ण मरम्मत की लागत को बाध्यता नहीं बनाती है क्योकि वायुयान की पूर्ण मरम्मत के लिए उद्यम के भविष्य की कार्यवाही से स्वतंत्र रहते हुए कोई बाध्यता विद्यमान नहीं है - उद्यम अपने भविष्य की कार्यवाही से भविष्य के खर्चों से बच सकता है, उदाहरण के लिए, वायुयान को बेच कर ।

दृष्टांत 10: एक दुर्भर संविदा

एक उद्यम लाभ अर्जन करते हुए एक फैक्टरी चला रहा है जो इसने प्रचालन पट्टे के अन्तर्गत पट्टे पर ली है। 2005 में उद्यम प्रचालनों को नई फैक्टरी में पुनर्स्थापित करता है। पुरानी फैक्टरी पर पट्टा 4 साल तक चलता रहता है, इसको खारिज नहीं किया जा सकता और न ही फैक्टरी को किसी और को प्रयोग करने के लिए पुनः किराये पर दिया जा सकता है।

पूर्व बाध्यबद्ध घटना के परिणामस्वरूप वर्तमान् बाध्यता - जब उद्यम पट्टे की संविदा से बाध्य हो जाता है बाध्यता सृजित करने वाली घटना घटित होती है जो कि विधिक बाध्यता उत्पन्न करती है।

निपटारे के लिए आर्थिक लाभों वाले संसाधनों के बाह्य प्रवाह- जब पट्टा दुर्भर हो जाता है तो आर्थिक लाभों वाले संसाधनों का बाह्य प्रवाह अधिसम्भाव्य हो जाता है (पट्टे के दुर्भर होने तक उद्यम पट्टे का लेखा मानक 19, *पट्टे*, के अधीन लेखा करता है)।

निष्कर्ष - अनिवार्य पट्टा भुगतानों के सर्वोत्तम अनुमान के लिए उपबंधित रकम को अभिज्ञात किया जाता है।

दृष्टांत घ

दृष्टांत : प्रकटन

यह दृष्टांत लेखा मानक का भाग नहीं है। इसका प्रयोजन लेखा मानक के लागू करने के लिए इसका अर्थ स्पष्ट करने में सहायता देने के लिए दृष्टांत देना है।

पैरा 67 द्वारा आवश्यक प्रकटनों का दृष्टांत नीचे दिया गया है।

दृष्टांत 1: वारंटी

एक निर्माता विक्रय के समय अपने क्रेताओं को तीन उत्पाद रेखाओं पर वारंटी देता है। वारंटी के अनुसार निर्माता विक्रय की तारीख से दो वर्षों तक वस्तु के ठीक प्रकार से काम न करने पर उसकी मरम्मत या बदलने का वादा करता है। तुलन पत्र की तारीख पर 60,000 रू. उपबंधित रकम अभिज्ञान है। निम्नलिखित सूचना प्रकट की जाती है:

पिछले तीन वित्तीय वर्षों में उत्पाद की वारंटी दावों के लिए 60,000 रुपयों की उपबंधित रकमों को अभिज्ञात किया गया है। यह आशा की जाती है कि व्यय का अधिकांश भाग अगले वित्तीय वर्ष में किया जायेगा, और सभी व्यय तुलन पत्र की तारीख के दो वर्ष के अन्दर होंगे।

पैरा 72 द्वारा अपेक्षित प्रकटन का एक दृष्टांत नीचे दिया गया है जहां कुछ अपेक्षित आवश्यक सूचना नहीं दी गई क्योंकि इससे उद्यम की स्थिति को बहुत क्षति हो सकती है।

दृष्टांत 2 : प्रकटन में छूट

एक उद्यम का अपने प्रतियोगी से विवाद है, जिसके आरोप है कि उद्यम ने पेटेंट का उल्लंघन किया है और उसने 1000 लाख रुपयों का हर्जाना माँगा है । उद्यम बाध्यता के सर्वोत्तम अनुमान की उपबंधित रकम को अभिज्ञात करता है, परन्तु मानक के पैरा 66, और 67 की मांगी गई किसी भी सूचना को प्रकट नहीं करता। निम्न सूचना प्रकट की गई है:

एक प्रतियोगी के साथ विवाद से सम्बंधित मुकदमा कम्पनी के विरूद्व प्रक्रिया में है, कम्पनी के विरूद्ध दिवालिया की प्रक्रिया चल रही है। जिसका आरोप है कि कम्पनी ने पेटेंट का उल्लंधन किया है और 1000 लाख रुपये का हर्जाना मांगा जा रहा है। लेखा मानक 29, उपबंधित रकमें, आकस्मिक दायित्व और आकस्मिक आस्तियाँ, में साधारणतया मांगी जाने वाली सूचना को प्रकट नहीं किया गया क्योंकि यह प्रत्याशित है कि यह प्रकटन कम्पनी के हितों को क्षति पहुँचायेगा । निदेशकों का मत है कि दावे का सफलता पूर्वक प्रतिरोध किया जाएगा।

MINISTRY OF CORPORATE AFFAIRS

NOTIFICATION

New Delhi, the 23rd June, 2021

G.S.R. 432(E).—In exercise of the powers conferred by section 133 read with section 469 of the Companies Act, 2013 (18 of 2013) and in supersession of the Companies (Accounting Standards) Rules, 2006, published in the Gazette of India, Extraordinary, Part II, Section 3, Sub-section (i), vide number G.S.R. 739 (E), dated the 07th December, 2006 [and amended from time to time vide numbers G.S.R. No. 212(E), dated the 27th March, 2008, G.S.R. 225(E), dated the 31st March, 2009, G.S.R. 378(E), dated the 11th May, 2011, G.S.R. 913(E), dated the 29th December, 2011, G.S.R. 914(E), dated the 29th December, 2011, G.S.R. 364(E), dated the 30th March, 2016 and G.S.R. 569(E) dated the 18th June, 2018], except as respects things done or omitted to be done before such supersession, the Central Government, after consultation with the National Financial Reporting Authority constituted under section 132 of the said Act, hereby makes the following rules, namely:—

1. **Short title and commencement.-** (1) These rules may be called the **Companies (Accounting Standards) Rules, 2021.**

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. **Definitions.-** (1) In these rules, unless the context otherwise requires,-

(a) "Accounting Standards" means the standards of accounting or any addendum thereto as specified in rule 3;

(b) "Act" means the Companies Act, 2013 (18 of 2013);

(c) "Annexure" in relation to these rules means the Annexure containing the Accounting Standards (AS) appended to these rules;

(d) "Enterprise" means a 'company' as defined in clause (20) of section 2 of the Act;

(e) "Small and Medium Sized Company" (SMC) means, a company-

(i) whose equity or debt securities are not listed or are not in the process of listing on any stock exchange, whether in India or outside India;

(ii) which is not a bank, financial institution or an insurance company;

(iii) whose turnover (excluding other income) does not exceed two hundred and fifty crore rupees in the immediately preceding accounting year;

(iv) which does not have borrowings (including public deposits) in excess of fifty crore rupees at any time during the immediately preceding accounting year; and

(v) which is not a holding or subsidiary company of a company which is not a small and medium-sized company.

Explanation.- For the purposes of this clause, a company shall qualify as a Small and Medium Sized Company, if the conditions mentioned therein are satisfied as at the end of the relevant accounting period.

(2) Words and expressions used and not defined in these rules but defined in the Act shall have the meanings respectively assigned to them in the Act.

3. **Accounting Standards.-** (1) The Central Government hereby specifies Accounting Standards 1 to 5, 7 and 9 to 29 as recommended by the Institute of Chartered Accountants of India, which are specified in the Annexure to these rules.

(2) The Accounting Standards shall come into effect in respect of accounting periods commencing on or after the 1st day of April, 2021.

4. **Obligation to comply with Accounting Standards.-** (1) Every company, other than companies on which Indian Accounting Standards as notified under Companies (Indian Accounting Standards) Rules, 2015 are applicable, and its auditor(s) shall comply with the Accounting Standards in the manner specified in the Annexure.

(2) The Accounting Standards shall be applied in the preparation of Financial Statements.

5. Qualification for exemption or relaxation in respect of SMC.—An existing company, which was proviously not a Small and Medium Sized Company (SMC) an subsequently becomes a SMC, shall not be qualified for exemption or relaxation in respect of Accounting Standards available to a SMC until the company remains a SMC for two consecutive accounting periods.

[F. No. 17/151/2013-CL-V (Pt.)]

K. V. R. MURTY, Jt. Secy.

IndiaCode

ANNEXURE

(See rule 3)

ACCOUNTING STANDARDS

A. General Instructions

1. SMCs shall follow the following instructions while complying with Accounting Standards under these rules:-

1.1 the SMC which does not disclose certain information pursuant to the exemptions or relaxations given to it shall disclose (by way of a note to its financial statements) the fact that it is an SMC and has complied with the Accounting Standards insofar as they are applicable to an SMC on the following lines:

"The Company is a Small and Medium Sized Company (SMC) as defined in the Companies (Accounting Standards) Rules, 2021 notified under the Companies Act, 2013. Accordingly, the Company has complied with the Accounting Standards as applicable to a Small and Medium Sized Company."

1.2 Where a company, being a SMC, has qualified for any exemption or relaxation previously but no longer qualifies for the relevant exemption or relaxation in the current accounting period, the relevant standards or requirements become applicable from the current period and the figures for the corresponding period of the previous accounting period need not be revised merely by reason of its having ceased to be an SMC. The fact that the company was an SMC in the previous period and it had availed of the exemptions or relaxations available to SMCs shall be disclosed in the notes to the financial statements.

1.3 If an SMC opts not to avail of the exemptions or relaxations available to an SMC in respect of any but not all of the Accounting Standards, it shall disclose the standard(s) in respect of which it has availed the exemption or relaxation.

1.4 If an SMC desires to disclose the information not required to be disclosed pursuant to the exemptions or relaxations available to the SMCs, it shall disclose that information in compliance with the relevant accounting standard.

1.5 The SMC may opt for availing certain exemptions or relaxations from compliance with the requirements prescribed in an Accounting Standard: Provided that such a partial exemption or relaxation and disclosure shall not be permitted to mislead any person or public.

2. Accounting Standards, which are prescribed, are intended to be in conformity with the provisions of applicable laws. However, if due to subsequent amendments in the law, a particular accounting standard is found to be not in conformity with such law, the provisions of the said law will prevail and the financial statements shall be prepared in conformity with such law.

3. Accounting Standards are intended to apply only to items which are material.

4. The accounting standards include paragraphs set in bold italic type and plain type, which have equal authority. Paragraphs in bold italic type indicate the main principles. An individual accounting standard shall be read in the context of the objective, if stated, in that accounting standard and in accordance with these General Instructions.

B. Accounting Standards

Accounting Standard (AS) 1

Disclosure of Accounting Policies

*(This Accounting Standard includes paragraphs set in **bold italic** type and plain type, which have equal authority. Paragraphs in bold italic type indicate the main principles. This Accounting Standard should be read in the context of the General Instructions contained in part A of the Annexure to the Notification.)*

Introduction

1. This Standard deals with the disclosure of significant accounting policies followed in preparing and presenting financial statements.

2. The view presented in the financial statements of an enterprise of its state of affairs and of the profit or loss can be significantly affected by the accounting policies followed in the preparation and presentation of the financial statements. The accounting policies followed vary from enterprise to enterprise. Disclosure of significant accounting policies followed is necessary if the view presented is to be properly appreciated.

3. The disclosure of some of the accounting policies followed in the preparation and presentation of the financial statements is required by law in some cases.

4. Accounting Standards require the disclosure of certain accounting policies, e.g., translation policies in respect of foreign currency items.

5. In recent years, a few enterprises in India have adopted the practice of including in their annual reports to shareholders a separate statement of accounting policies followed in preparing and presenting the financial statements.

6. In general, however, accounting policies are not at present regularly and fully disclosed in all financial statements. Many enterprises include in the Notes on the Accounts, descriptions of some of the significant accounting policies. But the nature and degree of disclosure vary considerably between the corporate and the non-corporate sectors and between units in the same sector.

7. Even among the few enterprises that presently include in their annual reports a separate statement of accounting policies, considerable variation exists. The statement of accounting policies forms part of accounts in some cases while in others it is given as supplementary information.

8. The purpose of this Standard is to promote better understanding of financial statements by establishing through an accounting standard the disclosure of significant accounting policies and the manner in which accounting policies are disclosed in the financial statements. Such disclosure would also facilitate a more meaningful comparison between financial statements of different enterprises.

Explanation

Fundamental Accounting Assumptions

9. Certain fundamental accounting assumptions underlie the preparation and presentation of financial statements. They are usually not specifically stated because their acceptance and use are assumed. Disclosure is necessary if they are not followed.

10. The following have been generally accepted as fundamental accounting assumptions:—

a. Going Concern

The enterprise is normally viewed as a going concern, that is, as continuing in operation for the foreseeable future. It is assumed that the enterprise has neither the intention nor the necessity of liquidation or of curtailing materially the scale of the operations.

b. Consistency

It is assumed that accounting policies are consistent from one period to another.

c. Accrual

Revenues and costs are accrued, that is, recognised as they are earned or incurred (and not as money is received or paid) and recorded in the financial statements of the periods to which they relate. (The considerations affecting the process of matching costs with revenues under the accrual assumption are not dealt with in this Standard.)

Nature of Accounting Policies

11. The accounting policies refer to the specific accounting principles and the methods of applying those principles adopted by the enterprise in the preparation and presentation of financial statements.

12. There is no single list of accounting policies which are applicable to all circumstances. The differing circumstances in which enterprises operate in a situation of diverse and complex economic activity make alternative accounting principles and methods of applying those principles acceptable. The choice of the appropriate accounting principles and the methods of applying those principles in the specific circumstances of each enterprise calls for considerable judgement by the management of the enterprise.

13. The Accounting Standards combined with the efforts of government and other regulatory agencies and progressive managements have reduced in recent years the number of acceptable alternatives particularly in the case of corporate enterprises. While continuing efforts in this regard in future are likely to reduce the number still further, the availability of alternative accounting principles and methods of applying those principles is not likely to be eliminated altogether in view of the differing circumstances faced by the enterprises.

Areas in Which Differing Accounting Policies are Encountered

14. The following are examples of the areas in which different accounting policies may be adopted by different enterprises:

(a) Methods of depreciation, depletion and amortisation

(b) Treatment of expenditure during construction

IndiaCode

(c) Conversion or translation of foreign currency items

(d) Valuation of inventories

(e) Treatment of goodwill

(f) Valuation of investments

(g) Treatment of retirement benefits

(h) Recognition of profit on long-term contracts

(i) Valuation of fixed assets

(j) Treatment of contingent liabilities.

15. The above list of examples is not intended to be exhaustive.

Considerations in the Selection of Accounting Policies

16. The primary consideration in the selection of accounting policies by an enterprise is that the financial statements prepared and presented on the basis of such accounting policies should represent a true and fair view of the state of affairs of the enterprise as at the balance sheet date and of the profit or loss for the period ended on that date.

17. For this purpose, the major considerations governing the selection and application of accounting policies are:—

a. Prudence

In view of the uncertainty attached to future events, profits are not anticipated but recognised only when realised though not necessarily in cash. Provision is made for all known liabilities and losses even though the amount cannot be determined with certainty and represents only a best estimate in the light of available information.

b. Substance over Form

The accounting treatment and presentation in financial statements of transactions and events should be governed by their substance and not merely by the legal form.

c. Materiality

Financial statements should disclose all "material" items, i.e. items the knowledge of which might influence the decisions of the user of the financial statements.

Disclosure of Accounting Policies

18. To ensure proper understanding of financial statements, it is necessary that all significant accounting policies adopted in the preparation and presentation of financial statements should be disclosed.

19. Such disclosure should form part of the financial statements.

20. It would be helpful to the reader of financial statements if they are all disclosed as such in one place instead of being scattered over several statements, schedules and notes.

21. Examples of matters in respect of which disclosure of accounting policies adopted will be required are contained in paragraph 14. This list of examples is not, however, intended to be exhaustive.

22. Any change in an accounting policy which has a material effect should be disclosed. The amount by which any item in the financial statements is affected by such change should also be disclosed to the extent ascertainable. Where such amount is not ascertainable, wholly or in part, the fact should be indicated. If a change is made in the accounting policies which has no material effect on the financial statements for the current period but which is reasonably expected to have a material effect in later periods, the fact of such change should be appropriately disclosed in the period in which the change is adopted.

23. Disclosure of accounting policies or of changes therein cannot remedy a wrong or inappropriate treatment of the item in the accounts.

Main Principles

24. All significant accounting policies adopted in the preparation and presentation of financial statements should be disclosed.

25. The disclosure of the significant accounting policies as such should form part of the financial statements and the significant accounting policies should normally be disclosed in one place.

26. Any change in the accounting policies which has a material effect in the current period or which is reasonably expected to have a material effect in later periods should be disclosed. In the case of a change in

accounting policies which has a material effect in the current period, the amount by which any item in the financial statements is affected by such change should also be disclosed to the extent ascertainable. Where such amount is not ascertainable, wholly or in part, the fact should be indicated.

27. If the fundamental accounting assumptions, viz. Going Concern, Consistency and Accrual are followed in financial statements, specific disclosure is not required. If a fundamental accounting assumption is not followed, the fact should be disclosed

Accounting Standard (AS) 2

Valuation of Inventories

(This Accounting Standard includes paragraphs set in ***bold italic*** *type and plain type, which have equal authority. Paragraphs in bold italic type indicate the main principles. This Accounting Standard should be read in the context of its objective and the General Instructions contained in part A of the Annexure to the Notification.)*

Objective

A primary issue in accounting for inventories is the determination of the value at which inventories are carried in the financial statements until the related revenues are recognised. This Standard deals with the determination of such value, including the ascertainment of cost of inventories and any write-down thereof to net realisable value.

Scope

1. This Standard should be applied in accounting for inventories other than:

(a) work in progress arising under construction contracts, including directly related service contracts (see Accounting Standard (AS) 7, Construction Contracts);

(b) work in progress arising in the ordinary course of business of service providers;

(c) shares, debentures and other financial instruments held as stock-in-trade; and

(d) producers' inventories of livestock, agricultural and forest products, and mineral oils, ores and gases to the extent that they are measured at net realisable value in accordance with well established practices in those industries.

2. The inventories referred to in paragraph 1(d) are measured at net realisable value at certain stages of production. This occurs, for example, when agricultural crops have been harvested or mineral oils, ores and gases have been extracted and sale is assured under a forward contract or a government guarantee, or when a homogenous market exists and there is a negligible risk of failure to sell. These inventories are excluded from the scope of this Standard.

Definitions

3. The following terms are used in this Standard with the meanings specified:

3.1. Inventories are assets:

(a) held for sale in the ordinary course of business;

(b) in the process of production for such sale; or

(c) in the form of materials or supplies to be consumed in the production process or in the rendering of services.

3.2. Net realisable value is the estimated selling price in the ordinary course of business less the estimated costs of completion and the estimated costs necessary to make the sale.

4 Inventories encompass goods purchased and held for resale, for example, merchandise purchased by a retailer and held for resale, computer software held for resale, or land and other property held for resale. Inventories also encompass finished goods produced, or work in progress being produced, by the enterprise and include materials, maintenance supplies, consumables and loose tools awaiting use in the production process. Inventories do not include spare parts, servicing equipment and standby equipment which meet the definition of property, plant and equipment as per AS 10, *Property, Plant and Equipment*. Such items are accounted for in accordance with Accounting Standard (AS) 10, *Property, Plant and Equipment*.

Measurement of Inventories

5. Inventories should be valued at the lower of cost and net realisable value.

Cost of Inventories

6. The cost of inventories should comprise all costs of purchase, costs of conversion and other costs incurred in bringing the inventories to their present location and condition.

Costs of Purchase

7. The costs of purchase consist of the purchase price including duties and taxes (other than those subsequently recoverable by the enterprise from the taxing authorities), freight inwards and other expenditure directly attributable to the acquisition. Trade discounts, rebates, duty drawbacks and other similar items are deducted in determining the costs of purchase.

Costs of Conversion

8. The costs of conversion of inventories include costs directly related to the units of production, such as direct labour. They also include a systematic allocation of fixed and variable production overheads that are incurred in converting materials into finished goods. Fixed production overheads are those indirect costs of production that remain relatively constant regardless of the volume of production, such as depreciation and maintenance of factory buildings and the cost of factory management and administration. Variable production overheads are those indirect costs of production that vary directly, or nearly directly, with the volume of production, such as indirect materials and indirect labour.

9. The allocation of fixed production overheads for the purpose of their inclusion in the costs of conversion is based on the normal capacity of the production facilities. Normal capacity is the production expected to be achieved on an average over a number of periods or seasons under normal circumstances, taking into account the loss of capacity resulting from planned maintenance. The actual level of production may be used if it approximates normal capacity. The amount of fixed production overheads allocated to each unit of production is not increased as a consequence of low production or idle plant. Unallocated overheads are recognised as an expense in the period in which they are incurred. In periods of abnormally high production, the amount of fixed production overheads allocated to each unit of production is decreased so that inventories are not measured above cost. Variable production overheads are assigned to each unit of production on the basis of the actual use of the production facilities.

10. A production process may result in more than one product being produced simultaneously. This is the case, for example, when joint products are produced or when there is a main product and a by-product. When the costs of conversion of each product are not separately identifiable, they are allocated between the products on a rational and consistent basis. The allocation may be based, for example, on the relative sales value of each product either at the stage in the production process when the products become separately identifiable, or at the completion of production. Most by-products as well as scrap or waste materials, by their nature, are immaterial. When this is the case, they are often measured at net realisable value and this value is deducted from the cost of the main product. As a result, the carrying amount of the main product is not materially different from its cost.

Other Costs

11. Other costs are included in the cost of inventories only to the extent that they are incurred in bringing the inventories to their present location and condition. For example, it may be appropriate to include overheads other than production overheads or the costs of designing products for specific customers in the cost of inventories.

12. Interest and other borrowing costs are usually considered as not relating to bringing the inventories to their present location and condition and are, therefore, usually not included in the cost of inventories.

Exclusions from the Cost of Inventories

13. In determining the cost of inventories in accordance with paragraph 6, it is appropriate to exclude certain costs and recognise them as expenses in the period in which they are incurred. Examples of such costs are:

(a) abnormal amounts of wasted materials, labour, or other production costs;

(b) storage costs, unless those costs are necessary in the production process prior to a further production stage;

(c) administrative overheads that do not contribute to bringing the inventories to their present location and condition; and

(d) selling and distribution costs.

Cost Formulas

14. The cost of inventories of items that are not ordinarily interchangeable and goods or services produced and segregated for specific projects should be assigned by specific identification of their individual costs.

15. Specific identification of cost means that specific costs are attributed to identified items of inventory. This is an appropriate treatment for items that are segregated for a specific project, regardless of whether they have been purchased or produced. However, when there are large numbers of items of inventory which are ordinarily interchangeable, specific identification of costs is inappropriate since, in such circumstances, an enterprise could obtain predetermined effects on the net profit or loss for the period by selecting a particular method of ascertaining

the items that remain in inventories.

16. The cost of inventories, other than those dealt with in paragraph 14, should be assigned by using the first-in, first-out (FIFO), or weighted average cost formula. The formula used should reflect the fairest possible approximation to the cost incurred in bringing the items of inventory to their present location and condition.

17. A variety of cost formulas is used to determine the cost of inventories other than those for which specific identification of individual costs is appropriate. The formula used in determining the cost of an item of inventory needs to be selected with a view to providing the fairest possible approximation to the cost incurred in bringing the item to its present location and condition. The FIFO formula assumes that the items of inventory which were purchased or produced first are consumed or sold first, and consequently the items remaining in inventory at the end of the period are those most recently purchased or produced. Under the weighted average cost formula, the cost of each item is determined from the weighted average of the cost of similar items at the beginning of a period and the cost of similar items purchased or produced during the period. The average may be calculated on a periodic basis, or as each additional shipment is received, depending upon the circumstances of the enterprise.

Techniques for the Measurement of Cost

18. Techniques for the measurement of the cost of inventories, such as the standard cost method or the retail method, may be used for convenience if the results approximate the actual cost. Standard costs take into account normal levels of consumption of materials and supplies, labour, efficiency and capacity utilisation. They are regularly reviewed and, if necessary, revised in the light of current conditions.

19. The retail method is often used in the retail trade for measuring inventories of large numbers of rapidly changing items that have similar margins and for which it is impracticable to use other costing methods. The cost of the inventory is determined by reducing from the sales value of the inventory the appropriate percentage gross margin. The percentage used takes into consideration inventory which has been marked down to below its original selling price. An average percentage for each retail department is often used.

Net Realisable Value

20. The cost of inventories may not be recoverable if those inventories are damaged, if they have become wholly or partially obsolete, or if their selling prices have declined. The cost of inventories may also not be recoverable if the estimated costs of completion or the estimated costs necessary to make the sale have increased. The practice of writing down inventories below cost to net realisable value is consistent with the view that assets should not be carried in excess of amounts expected to be realised from their sale or use.

21. Inventories are usually written down to net realisable value on an item-by-item basis. In some circumstances, however, it may be appropriate to group similar or related items. This may be the case with items of inventory relating to the same product line that have similar purposes or end uses and are produced and marketed in the same geographical area and cannot be practicably evaluated separately from other items in that product line. It is not appropriate to write down inventories based on a classification of inventory, for example, finished goods, or all the inventories in a particular business segment.

22. Estimates of net realisable value are based on the most reliable evidence available at the time the estimates are made as to the amount the inventories are expected to realise. These estimates take into consideration fluctuations of price or cost directly relating to events occurring after the balance sheet date to the extent that such events confirm the conditions existing at the balance sheet date.

23. Estimates of net realisable value also take into consideration the purpose for which the inventory is held. For example, the net realisable value of the quantity of inventory held to satisfy firm sales or service contracts is based on the contract price. If the sales contracts are for less than the inventory quantities held, the net realisable value of the excess inventory is based on general selling prices. Contingent losses on firm sales contracts in excess of inventory quantities held and contingent losses on firm purchase contracts are dealt with in accordance with the principles enunciated in Accounting Standard (AS) 4, *Contingencies and Events Occurring After the Balance Sheet Date*[1].

24. Materials and other supplies held for use in the production of inventories are not written down below cost if the finished products in which they will be incorporated are expected to be sold at or above cost. However, when there has been a decline in the price of materials and it is estimated that the cost of the finished products will exceed net realisable value, the materials are written down to net realisable value. In such circumstances, the replacement cost

[1] All paragraphs of AS 4 deal with contingencies are applicable only to the extent not covered by other Accounting Standards prescribed by the Central Government. For example, the impairment of financial assets such as impairment of receivables (commonly known as provision for bad and doubtful debts) is governed by AS 4.

of the materials may be the best available measure of their net realisable value.

25. An assessment is made of net realisable value as at each balance sheet date.

Disclosure

26. The financial statements should disclose:

(a) the accounting policies adopted in measuring inventories, including the cost formula used; and

(b) the total carrying amount of inventories and its classification appropriate to the enterprise.

27. Information about the carrying amounts held in different classifications of inventories and the extent of the changes in these assets is useful to financial statement users. Common classifications of inventories are:

(a) Raw materials and components

(b) Work-in-progress

(c) Finished goods

(d) Stock-in-trade (in respect of goods acquired for trading)

(e) Stores and spares

(f) Loose tools

(g) Others (specify nature)

Accounting Standard (AS) 3

Cash Flow Statements

*(This Accounting Standard includes paragraphs set in **bold italic** type and plain type, which have equal authority. Paragraphs in bold italic type indicate the main principles. This Accounting Standard should be read in the context of its objective and the General Instructions contained in part A of the Annexure to the Notification.)*

As per the definition of 'financial statements' under the Companies Act, 2013, financial statements include cash flow statement. In case of one person company, small company and dormant company, financial statements may not include cash flow statements.

Objective

Information about the cash flows of an enterprise is useful in providing users of financial statements with a basis to assess the ability of the enterprise to generate cash and cash equivalents and the needs of the enterprise to utilise those cash flows. The economic decisions that are taken by users require an evaluation of the ability of an enterprise to generate cash and cash equivalents and the timing and certainty of their generation.

The Standard deals with the provision of information about the historical changes in cash and cash equivalents of an enterprise by means of a cash flow statement which classifies cash flows during the period from operating, investing and financing activities.

Scope

1. An enterprise should prepare a cash flow statement and should present it for each period for which financial statements are presented.

2. Users of an enterprise's financial statements are interested in how the enterprise generates and uses cash and cash equivalents. This is the case regardless of the nature of the enterprise's activities and irrespective of whether cash can be viewed as the product of the enterprise, as may be the case with a financial enterprise. Enterprises need cash for essentially the same reasons, however different their principal revenue-producing activities might be. They need cash to conduct their operations, to pay their obligations, and to provide returns to their investors.

Benefits of Cash Flow Information

3. A cash flow statement, when used in conjunction with the other financial statements, provides information that enables users to evaluate the changes in net assets of an enterprise, its financial structure (including its liquidity and solvency) and its ability to affect the amounts and timing of cash flows in order to adapt to changing circumstances and opportunities. Cash flow information is useful in assessing the ability of the enterprise to generate cash and cash equivalents and enables users to develop models to assess and compare the present value of the future cash flows of different enterprises. It also enhances the comparability of the reporting of operating performance by different enterprises because it eliminates the effects of using different accounting treatments for the same transactions and events.

4. Historical cash flow information is often used as an indicator of the amount, timing and certainty of future cash

flows. It is also useful in checking the accuracy of past assessments of future cash flows and in examining the relationship between profitability and net cash flow and the impact of changing prices.

Definitions

5. The following terms are used in this Standard with the meanings specified:

5.1. Cash comprises cash on hand and demand deposits with banks.

5.2. Cash equivalents are short term, highly liquid investments that are readily convertible into known amounts of cash and which are subject to an insignificant risk of changes in value.

5.3. Cash flows are inflows and outflows of cash and cash equivalents.

5.4. Operating activities are the principal revenue-producing activities of the enterprise and other activities that are not investing or financing activities.

5.5 Investing activities are the acquisition and disposal of long-term assets and other investments not included in cash equivalents.

5.6 Financing activities are activities that result in changes in the size and composition of the owners' capital (including preference share capital in the case of a company) and borrowings of the enterprise.

Cash and Cash Equivalents

6. Cash equivalents are held for the purpose of meeting short-term cash commitments rather than for investment or other purposes. For an investment to qualify as a cash equivalent, it must be readily convertible to a known amount of cash and be subject to an insignificant risk of changes in value. Therefore, an investment normally qualifies as a cash equivalent only when it has a short maturity of, say, three months or less from the date of acquisition. Investments in shares are excluded from cash equivalents unless they are, in substance, cash equivalents; for example, preference shares of a company acquired shortly before their specified redemption date (provided there is only an insignificant risk of failure of the company to repay the amount at maturity).

7. Cash flows exclude movements between items that constitute cash or cash equivalents because these components are part of the cash management of an enterprise rather than part of its operating, investing and financing activities. Cash management includes the investment of excess cash in cash equivalents.

Presentation of a Cash Flow Statement

8. The cash flow statement should report cash flows during the period classified by operating, investing and financing activities.

9. An enterprise presents its cash flows from operating, investing and financing activities in a manner which is most appropriate to its business. Classification by activity provides information that allows users to assess the impact of those activities on the financial position of the enterprise and the amount of its cash and cash equivalents. This information may also be used to evaluate the relationships among those activities.

10. A single transaction may include cash flows that are classified differently. For example, when the instalment paid in respect of a fixed asset acquired on deferred payment basis includes both interest and loan, the interest element is classified under financing activities and the loan element is classified under investing activities.

Operating Activities

11. The amount of cash flows arising from operating activities is a key indicator of the extent to which the operations of the enterprise have generated sufficient cash flows to maintain the operating capability of the enterprise, pay dividends, repay loans and make new investments without recourse to external sources of financing. Information about the specific components of historical operating cash flows is useful, in conjunction with other information, in forecasting future operating cash flows.

12. Cash flows from operating activities are primarily derived from the principal revenue-producing activities of the enterprise. Therefore, they generally result from the transactions and other events that enter into the determination of net profit or loss. Examples of cash flows from operating activities are:

(a) cash receipts from the sale of goods and the rendering of services;

(b) cash receipts from royalties, fees, commissions and other revenue;

(c) cash payments to suppliers for goods and services;

(d) cash payments to and on behalf of employees;

(e) cash receipts and cash payments of an insurance enterprise for premiums and claims, annuities and

other policy benefits;

(f) cash payments or refunds of income taxes unless they can be specifically identified with financing and investing activities; and

(g) cash receipts and payments relating to futures contracts, forward contracts, option contracts and swap contracts when the contracts are held for dealing or trading purposes.

13. Some transactions, such as the sale of an item of plant, may give rise to a gain or loss which is included in the determination of net profit or loss. However, the cash flows relating to such transactions are cash flows from investing activities.

14. An enterprise may hold securities and loans for dealing or trading purposes, in which case they are similar to inventory acquired specifically for resale. Therefore, cash flows arising from the purchase and sale of dealing or trading securities are classified as operating activities. Similarly, cash advances and loans made by financial enterprises are usually classified as operating activities since they relate to the main revenue-producing activity of that enterprise.

Investing Activities

15. The separate disclosure of cash flows arising from investing activities is important because the cash flows represent the extent to which expenditures have been made for resources intended to generate future income and cash flows. Examples of cash flows arising from investing activities are:

(a) cash payments to acquire fixed assets (including intangibles).These payments include those relating to capitalized research and development costs and self-constructed fixed assets;

(b) cash receipts from disposal of fixed assets (including intangibles) ;

(c) cash payments to acquire shares, warrants or debt instruments of other enterprises and interests in joint ventures (other than payments for those instruments considered to be cash equivalents and those held for dealing or trading purposes);

(d) cash receipts from disposal of shares, warrants or debt instruments of other enterprises and interests in joint ventures (other than receipts from those instruments considered to be cash equivalents and those held for dealing or trading purposes);

(e) cash advances and loans made to third parties (other than advances and loans made by a financial enterprise);

(f) cash receipts from the repayment of advances and loans made to third parties (other than advances and loans of a financial enterprise);

(g) cash payments for futures contracts, forward contracts, option contracts and swap contracts except when the contracts are held for dealing or trading purposes, or the payments are classified as financing activities; and

(h) cash receipts from futures contracts, forward contracts, option contracts and swap contracts except when the contracts are held for dealing or trading purposes, or the receipts are classified as financing activities.

16. When a contract is accounted for as a hedge of an identifiable position, the cash flows of the contract are classified in the same manner as the cash flows of the position being hedged.

Financing Activities

17. The separate disclosure of cash flows arising from financing activities is important because it is useful in predicting claims on future cash flows by providers of funds (both capital and borrowings) to the enterprise. Examples of cash flows arising from financing activities are:

(a) cash proceeds from issuing shares or other similar instruments;

(b) cash proceeds from issuing debentures, loans, notes, bonds, and other short or long-term borrowings; and

(c) cash repayments of amounts borrowed.

Reporting Cash Flows from Operating Activities

18. An enterprise should report cash flows from operating activities using either:

(a) the direct method, whereby major classes of gross cash receipts and gross cash payments are disclosed; or

(b) the indirect method, whereby net profit or loss is adjusted for the effects of transactions of a non-cash nature, any deferrals or accruals of past or future operating cash receipts or payments, and items

India Code

of income or expense associated with investing or financing cash flows.

19. The direct method provides information which may be useful in estimating future cash flows and which is not available under the indirect method and is, therefore, considered more appropriate than the indirect method. Under the direct method, information about major classes of gross cash receipts and gross cash payments may be obtained either:

(a) from the accounting records of the enterprise; or

(b) by adjusting sales, cost of sales (interest and similar income and interest expense and similar charges for a financial enterprise) and other items in the statement of profit and loss for:

i) changes during the period in inventories and operating receivables and payables;

ii) other non-cash items; and

iii) other items for which the cash effects are investing or financing cash flows.

20. Under the indirect method, the net cash flow from operating activities is determined by adjusting net profit or loss for the effects of:

(a) changes during the period in inventories and operating receivables and payables;

(b) non-cash items such as depreciation, provisions, deferred taxes, and unrealised foreign exchange gains and losses; and

(c) all other items for which the cash effects are investing or financing cash flows.

Alternatively, the net cash flow from operating activities may be presented under the indirect method by showing the operating revenues and expenses excluding non-cash items disclosed in the statement of profit and loss and the changes during the period in inventories and operating receivables and payables.

Reporting Cash Flows from Investing and Financing Activities

21. An enterprise should report separately major classes of gross cash receipts and gross cash payments arising from investing and financing activities, except to the extent that cash flows described in paragraphs 22 and 24 are reported on a net basis.

Reporting Cash Flows on a Net Basis

22. Cash flows arising from the following operating, investing or financing activities may be reported on a net basis:

(a) cash receipts and payments on behalf of customers when the cash flows reflect the activities of the customer rather than those of the enterprise; and

(b) cash receipts and payments for items in which the turnover is quick, the amounts are large, and the maturities are short.

23. Examples of cash receipts and payments referred to in paragraph 22(a) are:

(a) the acceptance and repayment of demand deposits by a bank;

(b) funds held for customers by an investment enterprise; and

(c) rents collected on behalf of, and paid over to, the owners of properties.

Examples of cash receipts and payments referred to in paragraph 22(b) are advances made for, and the repayments of:

(a) principal amounts relating to credit card customers;

(b) the purchase and sale of investments; and

(c) other short-term borrowings, for example, those which have a maturity period of three months or less.

24. Cash flows arising from each of the following activities of a financial enterprise may be reported on a net basis:

(a) cash receipts and payments for the acceptance and repayment of deposits with a fixed maturity date;

(b) the placement of deposits with and withdrawal of deposits from other financial enterprises; and

(c) cash advances and loans made to customers and the repayment of those advances and loans.

Foreign Currency Cash Flows

25. Cash flows arising from transactions in a foreign currency should be recorded in an enterprise's reporting currency by applying to the foreign currency amount the exchange rate between the reporting currency and the foreign currency at the date of the cash flow. A rate that approximates the actual rate may be used if the result is substantially the same as would arise if the rates at the dates of the cash flows were used. The effect of changes in exchange rates on cash and cash equivalents held in a foreign currency should be reported as a separate part of the reconciliation of the changes in cash and cash equivalents during the period.

26. Cash flows denominated in foreign currency are reported in a manner consistent with Accounting Standard (AS) 11, *The Effects of Changes in Foreign Exchange Rates*. This permits the use of an exchange rate that approximates the actual rate. For example, a weighted average exchange rate for a period may be used for recording foreign currency transactions.

27. Unrealised gains and losses arising from changes in foreign exchange rates are not cash flows. However, the effect of exchange rate changes on cash and cash equivalents held or due in a foreign currency is reported in the cash flow statement in order to reconcile cash and cash equivalents at the beginning and the end of the period. This amount is presented separately from cash flows from operating, investing and financing activities and includes the differences, if any, had those cash flows been reported at the end-of-period exchange rates.

Extraordinary Items

28. The cash flows associated with extraordinary items should be classified as arising from operating, investing or financing activities as appropriate and separately disclosed.

29. The cash flows associated with extraordinary items are disclosed separately as arising from operating, investing or financing activities in the cash flow statement, to enable users to understand their nature and effect on the present and future cash flows of the enterprise. These disclosures are in addition to the separate disclosures of the nature and amount of extraordinary items required by Accounting Standard (AS) 5, *Net Profit or Loss for the Period, Prior Period Items and Changes in Accounting Policies.*

Interest and Dividends

30. Cash flows from interest and dividends received and paid should each be disclosed separately. Cash flows arising from interest paid and interest and dividends received in the case of a financial enterprise should be classified as cash flows arising from operating activities. In the case of other enterprises, cash flows arising from interest paid should be classified as cash flows from financing activities while interest and dividends received should be classified as cash flows from investing activities. Dividends paid should be classified as cash flows from financing activities.

31. The total amount of interest paid during the period is disclosed in the cash flow statement whether it has been recognised as an expense in the statement of profit and loss or capitalised in accordance with Accounting Standard (AS) 16, *Borrowing Costs*.

32. Interest paid and interest and dividends received are usually classified as operating cash flows for a financial enterprise. However, there is no consensus on the classification of these cash flows for other enterprises. Some argue that interest paid and interest and dividends received may be classified as operating cash flows because they enter into the determination of net profit or loss. However, it is more appropriate that interest paid and interest and dividends received are classified as financing cash flows and investing cash flows respectively, because they are cost of obtaining financial resources or returns on investments.

33. Some argue that dividends paid may be classified as a component of cash flows from operating activities in order to assist users to determine the ability of an enterprise to pay dividends out of operating cash flows. However, it is considered more appropriate that dividends paid should be classified as cash flows from financing activities because they are cost of obtaining financial resources.

Taxes on Income

34. Cash flows arising from taxes on income should be separately disclosed and should be classified as cash flows from operating activities unless they can be specifically identified with financing and investing activities.

35. Taxes on income arise on transactions that give rise to cash flows that are classified as operating, investing or financing activities in a cash flow statement. While tax expense may be readily identifiable with investing or financing activities, the related tax cash flows are often impracticable to identify and may arise in a different period from the cash flows of the underlying transactions. Therefore, taxes paid are usually classified as cash flows from operating activities. However, when it is practicable to identify the tax cash flow with an individual transaction that gives rise to cash flows that are classified as investing or financing activities, the tax cash flow is classified as an

investing or financing activity as appropriate. When tax cash flow are allocated over more than one class of activity, the total amount of taxes paid is disclosed.

Investments in Subsidiaries, Associates and Joint Ventures

36. When accounting for an investment in an associate or a subsidiary or a joint venture, an investor restricts its reporting in the cash flow statement to the cash flows between itself and the investee/joint venture, for example, cash flows relating to dividends and advances.

Acquisitions and Disposals of Subsidiaries and Other Business Units

37. The aggregate cash flows arising from acquisitions and from disposals of subsidiaries or other business units should be presented separately and classified as investing activities.

38. An enterprise should disclose, in aggregate, in respect of both acquisition and disposal of subsidiaries or other business units during the period each of the following:

(a) the total purchase or disposal consideration; and

(b) the portion of the purchase or disposal consideration discharged by means of cash and cash equivalents.

39. The separate presentation of the cash flow effects of acquisitions and disposals of subsidiaries and other business units as single line items helps to distinguish those cash flows from other cash flows. The cash flow effects of disposals are not deducted from those of acquisitions.

Non-cash Transactions

40. Investing and financing transactions that do not require the use of cash or cash equivalents should be excluded from a cash flow statement. Such transactions should be disclosed elsewhere in the financial statements in a way that provides all the relevant information about these investing and financing activities.

41. Many investing and financing activities do not have a direct impact on current cash flows although they do affect the capital and asset structure of an enterprise. The exclusion of non-cash transactions from the cash flow statement is consistent with the objective of a cash flow statement as these items do not involve cash flows in the current period. Examples of non-cash transactions are:

(a) the acquisition of assets by assuming directly related liabilities;

(b) the acquisition of an enterprise by means of issue of shares; and

(c) the conversion of debt to equity.

Components of Cash and Cash Equivalents

42. An enterprise should disclose the components of cash and cash equivalents and should present a reconciliation of the amounts in its cash flow statement with the equivalent items reported in the balance sheet.

43. In view of the variety of cash management practices, an enterprise discloses the policy which it adopts in determining the composition of cash and cash equivalents.

44. The effect of any change in the policy for determining components of cash and cash equivalents is reported in accordance with Accounting Standard (AS) 5, Net Profit or Loss for the Period, Prior Period Items and Changes in Accounting Policies.

Other Disclosures

45. An enterprise should disclose, together with a commentary by management, the amount of significant cash and cash equivalent balances held by the enterprise that are not available for use by it.

46. There are various circumstances in which cash and cash equivalent balances held by an enterprise are not available for use by it. Examples include cash and cash equivalent balances held by a branch of the enterprise that operates in a country where exchange controls or other legal restrictions apply as a result of which the balances are not available for use by the enterprise.

47. Additional information may be relevant to users in understanding the financial position and liquidity of an enterprise. Disclosure of this information, together with a commentary by management, is encouraged and may include:

(a) the amount of undrawn borrowing facilities that may be available for future operating activities and to settle capital commitments, indicating any restrictions on the use of these facilities; and

(b) the aggregate amount of cash flows that represent increases in operating capacity separately from those

cash flows that are required to maintain operating capacity.

48. The separate disclosure of cash flows that represent increases in operating capacity and cash flows that are required to maintain operating capacity is useful in enabling the user to determine whether the enterprise is investing adequately in the maintenance of its operating capacity. An enterprise that does not invest adequately in the maintenance of its operating capacity may be prejudicing future profitability for the sake of current liquidity and distributions to owners.

Illustration I

Cash Flow Statement for an Enterprise other than a Financial Enterprise

This illustration does not form part of the accounting standard. Its purpose is to illustrate the application of the accounting standard.

1. The illustration shows only current period amounts.

2. Information from the statement of profit and loss and balance sheet is provided to show how the statements of cash flows under the direct method and the indirect method have been derived. Neither the statement of profit and loss nor the balance sheet is presented in conformity with the disclosure and presentation requirements of applicable laws and accounting standards. The working notes given towards the end of this illustration are intended to assist in understanding the manner in which the various figures appearing in the cash flow statement have been derived. These working notes do not form part of the cash flow statement and, accordingly, need not be published.

3. The following additional information is also relevant for the preparation of the statement of cash flows (figures are in Rs.'000).

(a) An amount of 250 was raised from the issue of share capital and a further 250 was raised from long term borrowings.

(b) Interest expense was 400 of which 170 was paid during the period. 100 relating to interest expense of the prior period was also paid during the period.

(c) Dividends paid were 1,200.

(d) Tax deducted at source on dividends received (included in the tax expense of 300 for the year) amounted to 40.

(e) During the period, the enterprise acquired fixed assets for 350. The payment was made in cash.

(f) Plant with original cost of 80 and accumulated depreciation of 60 was sold for 20.

(g) Foreign exchange loss of 40 represents the reduction in the carrying amount of a short-term investment in foreign-currency designated bonds arising out of a change in exchange rate between the date of acquisition of the investment and the balance sheet date.

(h) Sundry debtors and sundry creditors include amounts relating to credit sales and credit purchases only.

Balance Sheet as at 31.12.1996

(Rs. '000)

	1996	*1995*
Assets		
Cash on hand and balances with banks	200	25
Short-term investments	670	135
Sundry debtors	1,700	1,200
Interest receivable	100	–
Inventories	900	1,950
Long-term investments	2,500	2,500

Fixed assets at cost	2,180		1,910	
Accumulated depreciation	(1,450)		(1,060)	
Fixed assets (net)		730		850
Total assets		6,800		6,660
Liabilities		150		1,890
Interest payable		230		100
Income taxes payable		400		1,000
Long-term debt		1,110		1,040
Total liabilities		1,890		4,030
Shareholders' Funds		1,500		1,250
Reserves		3,410		1,380
Total shareholders' funds		4,910		2,630
Total liabilities and shareholders' funds		6,800		6,660

Statement of Profit and Loss for the period ended 31.12.1996

(Rs. '000)

Sales	30,650
Cost of sales	(26,000)
Gross profit	4,650
Depreciation	(450)
Administrative and selling expenses	(910)
Interest expense	(400)
Interest income	300
Dividend income	200
Foreign exchange loss	(40)
Net profit before taxation and extraordinary item	3,350
Extraordinary item – Insurance proceeds from earthquake disaster settlement	180
Net profit after extraordinary item	3,530
Income-tax	(300)
Net profit	3,230

Direct Method Cash Flow Statement [Paragraph 18(a)]

(Rs. '000)

	1996
Cash flows from operating activities	
Cash receipts from customers	30,150
Cash paid to suppliers and employees	(27,600)
Cash generated from operations	2,550
Income taxes paid	(860)
Cash flow before extraordinary item	1,690

IndiaCode

Proceeds from earthquake disaster settlement	180	
Net cash from operating activities		1,870
Cash flows from investing activities		
Purchase of fixed assets	(350)	
Proceeds from sale of equipment	20	
Interest received	200	
Dividends received	160	
Net cash from investing activities		30
Cash flows from financing activities		
Proceeds from issuance of share capital	250	
Proceeds from long-term borrowings	250	
Repayment of long-term borrowings	(180)	
Interest paid	(270)	
Dividends paid	(1,200)	
Net cash used in financing activities		(1,150)
Net increase in cash and cash equivalents		750
Cash and cash equivalents at beginning of period (see Note 1)		160
Cash and cash equivalents at end of period (see Note 1)		910

IndiaCode

Indirect Method Cash Flow Statement [Paragraph 18(b)]

		(Rs. '000)
		1996
Cash flows from operating activities		
Net profit before taxation, and extraordinary item	3,350	
Adjustments for:		
Depreciation	450	
Foreign exchange loss	40	
Interest income	(300)	
Dividend income	(200)	
Interest expense	400	
Operating profit before working capital changes	3,740	
Increase in sundry debtors	(500)	
Decrease in inventories	1,050	
Decrease in sundry creditors	(1,740)	
Cash generated from operations	2,550	
Income taxes paid	(860)	
Cash flow before extraordinary item	1,690	
Proceeds from earthquake disaster settlement	180	
Net cash from operating activities		1,870

Cash flows from investing activities		
Purchase of fixed assets	(350)	
Proceeds from sale of equipment	20	
Interest received	200	
Dividends received	160	
Net cash from investing activities		30
Cash flows from financing activities		
Proceeds from issuance of share capital	250	
Proceeds from long-term borrowings	250	
Repayment of long-term borrowings	(180)	
Interest paid	(270)	
Dividends paid	(1,200)	
Net cash used in financing activities		(1,150)
Net increase in cash and cash equivalents		750
Cash and cash equivalents at beginning of period (see Note 1)		160
Cash and cash equivalents at end of period (see Note 1)	910	

Notes to the cash flow statement

(direct method and indirect method)

1. *Cash and Cash Equivalents*

Cash and cash equivalents consist of cash on hand and balances with banks, and investments in money-market instruments. Cash and cash equivalents included in the cash flow statement comprise the following balance sheet amounts.

	1996	**1995**
Cash on hand and balances with banks	200	25
Short-term investments	670	135
Cash and cash equivalents	870	160
Effect of exchange rate changes	40	–
Cash and cash equivalents as restated	910	160

Cash and cash equivalents at the end of the period include deposits with banks of 100 held by a branch which are not freely remissible to the company because of currency exchange restrictions.

The company has undrawn borrowing facilities of 2,000 of which 700 may be used only for future expansion.

2. Total tax paid during the year (including tax deducted at source on dividends received) amounted to 900.

Alternative Presentation (indirect method)

As an alternative, in an indirect method cash flow statement, operating profit before working capital changes is sometimes presented as follows:

Revenues excluding investment income		30,650
Operating expense excluding depreciation	(26,910)	
Operating profit before working capital changes		3,740

Working Notes

The working notes given below do not form part of the cash flow statement and, accordingly, need not be published. The purpose of these working notes is merely to assist in understanding the manner in which various figures in

IndiaCode

the cash flow statement have been derived. (Figures are in Rs. '000.)

1. Cash receipts from customers

Sales		30,650
Add: Sundry debtors at the beginning of the year		1,200
		31,850
Less : Sundry debtors at the end of the year		1,700
		30,150

2. Cash paid to suppliers and employees

Cost of sales		26,000	
Administrative and selling expenses		910	
			26,910
Add: Sundry creditors at the beginning of the year	1,890		
Inventories at the end of the year	900		2,790
			29,700
Less:Sundry creditors at the end of the year	150		
Inventories at the beginning of the year	1,950		2,100
			27,600

3. Income taxes paid (including tax deducted at source from dividends received)

Income tax expense for the year (including tax deducted at source from dividends received)	300
Add : Income tax liability at the beginning of the year	1,000
	1,300
Less: Income tax liability at the end of the year	400
	900

Out of 900, tax deducted at source on dividends received (amounting to 40) is included in cash flows from investing activities and the balance of 860 is included in cash flows from operating activities (see paragraph 34).

4. Repayment of long-term borrowings

Long-term debt at the beginning of the year	1,040
Add : Long-term borrowings made during the year	250
	1,290
Less : Long-term borrowings at the end of the year	1,110
	180

5. Interest paid

Interest expense for the year	400
Add: Interest payable at the beginning of the year	100
	500
Less: Interest payable at the end of the year	230
	270

IndiaCode

Illustration II

Cash Flow Statement for a Financial Enterprise

This illustration does not form part of the accounting standard. Its purpose is to illustrate the application of the accounting standard.

1. The illustration shows only current period amounts.

2. The illustration is presented using the direct method.

Cash flows from operating activities	**(Rs. '000)**	
		1996
Interest and commission receipts		28,447
Interest payments		(23,463)
Recoveries on loans previously written off		237
Cash payments to employees and suppliers		(997)
Operating profit before changes in operating assets		4,224
(Increase) decrease in operating assets:		(650)
Short-term funds		
Deposits held for regulatory or monetary control purposes	234	
Funds advanced to customers		(288)
Net increase in credit card receivables		(360)
Other short-term securities		(120)
Increase (decrease) in operating liabilities:		
Deposits from customers	600	
Certificates of deposit		(200)
Net cash from operating activities before income tax		3,440
Income taxes paid		(100)
Net cash from operating activities		3,340
Cash flows from investing activities		
Dividends received	250	
Interest received	300	
Proceeds from sales of permanent investments		1,200
Purchase of permanent investments		(600)
Purchase of fixed assets		(500)
Net cash from investing activities		650
Cash flows from financing activities		
Issue of shares	1,800	
Repayment of long-term borrowings		(200)
Net decrease in other borrowings	(1,000)	
Dividends paid	(400)	
Net cash from financing activities		200
Net increase in cash and cash equivalents		4,190
Cash and cash equivalents at beginning of period		4,650
Cash and cash equivalents at end of period		8,840

IndiaCode

Accounting Standard (AS) 4*

Contingencies and Events Occurring After the Balance Sheet Date

*(This Accounting Standard includes paragraphs set in **bold italic** type and plain type, which have equal authority. Paragraphs in bold italic type indicate the main principles. This Accounting Standard should be read in the context of the General Instructions contained in part A of the Annexure to the Notification.)*

Introduction

1. This Standard deals with the treatment in financial statements of

(a) contingencies, and

(b) events occurring after the balance sheet date.

2. The following subjects, which may result in contingencies, are excluded from the scope of this Standard in view of special considerations applicable to them:

(a) liabilities of life assurance and general insurance enterprises arising from policies issued;

(b) obligations under retirement benefit plans; and

(c) commitments arising from long-term lease contracts.

Definitions

3. The following terms are used in this Standard with the meanings specified:

3.1 A contingency is a condition or situation, the ultimate outcome of which, gain or loss, will be known or determined only on the occurrence, or non-occurrence, of one or more uncertain future events.

3.2 Events occurring after the balance sheet date are those significant events, both favourable and unfavourable, that occur between the balance sheet date and the date on which the financial statements are approved by the Board of Directors in the case of a company, and, by the corresponding approving authority in the case of any other entity.

Two types of events can be identified:

(a) those which provide further evidence of conditions that existed at the balance sheet date; and

(b) those which are indicative of conditions that arose subsequent to the balance sheet date.

Explanation

4. Contingencies

4.1 The term "contingencies" used in this Standard is restricted to conditions or situations at the balance sheet date, the financial effect of which is to be determined by future events which may or may not occur.

4.2 Estimates are required for determining the amounts to be stated in the financial statements for many on-going and recurring activities of an enterprise. One must, however, distinguish between an event which is certain and one which is uncertain. The fact that an estimate is involved does not, of itself, create the type of uncertainty which characterises a contingency. For example, the fact that estimates of useful life are used to determine depreciation, does not make depreciation a contingency; the eventual expiry of the useful life of the asset is not uncertain. Also, amounts owed for services received are not contingencies as defined in paragraph 3.1, even though the amounts may have been estimated, as there is nothing uncertain about the fact that these obligations have been incurred.

4.3 The uncertainty relating to future events can be expressed by a range of outcomes. This range may be presented as quantified probabilities, but in most circumstances, this suggests a level of precision that is not supported by the available information. The possible outcomes can, therefore, usually be generally described except where reasonable quantification is practicable.

4.4 The estimates of the outcome and of the financial effect of contingencies are determined by the judgement of the management of the enterprise. This judgement is based on consideration of information available up to the date on which the financial statements are approved and will include a review of events occurring after the balance sheet date,

* All paragraphs of this Standard that deal with contingencies are applicable only to the extent not covered by other Accounting Standards prescribed by the Central Government. For example, the impairment of financial assets such as impairment of receivables (commonly known as provision for bad and doubtful debts) is governed by this Standard.

supplemented by experience of similar transactions and, in some cases, reports from independent experts.

5. Accounting Treatment of Contingent Losses

5.1 The accounting treatment of a contingent loss is determined by the expected outcome of the contingency. If it is likely that a contingency will result in a loss to the enterprise, then it is prudent to provide for that loss in the financial statements.

5.2 The estimation of the amount of a contingent loss to be provided for in the financial statements may be based on information referred to in paragraph 4.4.

5.3 If there is conflicting or insufficient evidence for estimating the amount of a contingent loss, then disclosure is made of the existence and nature of the contingency.

5.4 A potential loss to an enterprise may be reduced or avoided because a contingent liability is matched by a related counter-claim or claim against a third party. In such cases, the amount of the provision is determined after taking into account the probable recovery under the claim if no significant uncertainty as to its measurability or collectability exists. Suitable disclosure regarding the nature and gross amount of the contingent liability is also made.

5.5 The existence and amount of guarantees, obligations arising from discounted bills of exchange and similar obligations undertaken by an enterprise are generally disclosed in financial statements by way of note, even though the possibility that a loss to the enterprise will occur, is remote.

5.6 Provisions for contingencies are not made in respect of general or unspecified business risks since they do not relate to conditions or situations existing at the balance sheet date.

6. Accounting Treatment of Contingent Gains

Contingent gains are not recognised in financial statements since their recognition may result in the recognition of revenue which may never be realised. However, when the realisation of a gain is virtually certain, then such gain is not a contingency and accounting for the gain is appropriate.

7. Determination of the Amounts at which Contingencies are included in Financial Statements

7.1 The amount at which a contingency is stated in the financial statements is based on the information which is available at the date on which the financial statements are approved. Events occurring after the balance sheet date that indicate that an asset may have been impaired, or that a liability may have existed, at the balance sheet date are, therefore, taken into account in identifying contingencies and in determining the amounts at which such contingencies are included in financial statements.

7.2 In some cases, each contingency can be separately identified, and the special circumstances of each situation considered in the determination of the amount of the contingency. A substantial legal claim against the enterprise may represent such a contingency. Among the factors taken into account by management in evaluating such a contingency are the progress of the claim at the date on which the financial statements are approved, the opinions, wherever necessary, of legal experts or other advisers, the experience of the enterprise in similar cases and the experience of other enterprises in similar situations.

7.3 If the uncertainties which created a contingency in respect of an individual transaction are common to a large number of similar transactions, then the amount of the contingency need not be individually determined, but may be based on the group of similar transactions. An example of such contingencies may be the estimated uncollectable portion of accounts receivable. Another example of such contingencies may be the warranties for products sold. These costs are usually incurred frequently and experience provides a means by which the amount of the liability or loss can be estimated with reasonable precision although the particular transactions that may result in a liability or a loss are not identified. Provision for these costs results in their recognition in the same accounting period in which the related transactions took place.

8. Events Occurring after the Balance Sheet Date

8.1 Events which occur between the balance sheet date and the date on which the financial statements are approved, may indicate the need for adjustments to assets and liabilities as at the balance sheet date or may require disclosure.

8.2 Adjustments to assets and liabilities are required for events occurring after the balance sheet date that provide additional information materially affecting the determination of the amounts relating to conditions existing at the balance sheet date. For example, an adjustment may be made for a loss on a trade receivable account which is confirmed by the insolvency of a customer which occurs after the balance sheet date.

8.3 Adjustments to assets and liabilities are not appropriate for events occurring after the balance sheet date, if such

IndiaCode

events do not relate to conditions existing at the balance sheet date. An example is the decline in market value of investments between the balance sheet date and the date on which the financial statements are approved. Ordinary fluctuations in market values do not normally relate to the condition of the investments at the balance sheet date, but reflect circumstances which have occurred in the following period.

8.4 Events occurring after the balance sheet date which do not affect the figures stated in the financial statements would not normally require disclosure in the financial statements although they may be of such significance that they may require a disclosure in the report of the approving authority to enable users of financial statements to make proper evaluations and decisions.

8.5 There are events which, although they take place after the balance sheet date, are sometimes reflected in the financial statements because of statutory requirements or because of their special nature. For example, if dividends are declared after the balance sheet date but before the financial statements are approved for issue, the dividends are not recognised as a liability at the balance sheet date because no obligation exists at that time unless a statute requires otherwise. Such dividends are disclosed in the notes.

8.6 Events occurring after the balance sheet date may indicate that the enterprise ceases to be a going concern. A deterioration in operating results and financial position, or unusual changes affecting the existence or substratum of the enterprise after the balance sheet date (e.g., destruction of a major production plant by a fire after the balance sheet date) may indicate a need to consider whether it is proper to use the fundamental accounting assumption of going concern in the preparation of the financial statements.

9. Disclosure

9.1 The disclosure requirements herein referred to apply only in respect of those contingencies or events which affect the financial position to a material extent.

9.2 If a contingent loss is not provided for, its nature and an estimate of its financial effect are generally disclosed by way of note unless the possibility of a loss is remote (other than the circumstances mentioned in paragraph 5.5). If a reliable estimate of the financial effect cannot be made, this fact is disclosed.

9.3 When the events occurring after the balance sheet date are disclosed in the report of the approving authority, the information given comprises the nature of the events and an estimate of their financial effects or a statement that such an estimate cannot be made.

IndiaCode

Main Principles

Contingencies

10. The amount of a contingent loss should be provided for by a charge in the statement of profit and loss if:

(a) it is probable that future events will confirm that, after taking into account any related probable recovery, an asset has been impaired or a liability has been incurred as at the balance sheet date, and

(b) a reasonable estimate of the amount of the resulting loss can be made.

11. The existence of a contingent loss should be disclosed in the financial statements if either of the conditions in paragraph 10 is not met, unless the possibility of a loss is remote.

12. Contingent gains should not be recognised in the financial statements.

Events Occurring after the Balance Sheet Date

13. Assets and liabilities should be adjusted for events occurring after the balance sheet date that provide additional evidence to assist the estimation of amounts relating to conditions existing at the balance sheet date or that indicate that the fundamental accounting assumption of going concern (i.e., the continuance of existence or substratum of the enterprise) is not appropriate.

14. If an enterprise declares dividends to shareholders after the balance sheet date, the enterprise should not recognise those dividends as a liability at the balance sheet date unless a statute requires otherwise. Such dividends should be disclosed in notes.

15. Disclosure should be made in the report of the approving authority of those events occurring after the balance sheet date that represent material changes and commitments affecting the financial position of the enterprise.

Disclosure

16. If disclosure of contingencies is required by paragraph 11 of this Standard, the following information should be provided:

(a) the nature of the contingency;

(b) the uncertainties which may affect the future outcome;

(c) an estimate of the financial effect, or a statement that such an estimate cannot be made.

17. If disclosure of events occurring after the balance sheet date in the report of the approving authority is required by paragraph 15 of this Standard, the following information should be provided:

(a) the nature of the event;

(b) an estimate of the financial effect, or a statement that such an estimate cannot be made.

Accounting Standard (AS) 5

Net Profit or Loss for the Period, Prior Period Items and

Changes in Accounting Policies

*(This Accounting Standard includes paragraphs set in **bold italic** type and plain type, which have equal authority. Paragraphs in bold italic type indicate the main principles. This Accounting Standard should be read in the context of its objective and the General Instructions contained in part A of the Annexure to the Notification.)*

Objective

The objective of this Standard is to prescribe the classification and disclosure of certain items in the statement of profit and loss so that all enterprises prepare and present such a statement on a uniform basis. This enhances the comparability of the financial statements of an enterprise over time and with the financial statements of other enterprises. Accordingly, this Standard requires the classification and disclosure of extraordinary and prior period items, and the disclosure of certain items within profit or loss from ordinary activities. It also specifies the accounting treatment for changes in accounting estimates and the disclosures to be made in the financial statements regarding changes in accounting policies.

Indiacode

Scope

1. This Standard should be applied by an enterprise in presenting profit or loss from ordinary activities, extraordinary items and prior period items in the statement of profit and loss, in accounting for changes in accounting estimates, and in disclosure of changes in accounting policies.

2. This Standard deals with, among other matters, the disclosure of certain items of net profit or loss for the period. These disclosures are made in addition to any other disclosures required by other Accounting Standards.

3. This Standard does not deal with the tax implications of extraordinary items, prior period items, changes in accounting estimates, and changes in accounting policies for which appropriate adjustments will have to be made depending on the circumstances.

Definitions

4. The following terms are used in this Standard with the meanings specified:

4.1 Ordinary activities are any activities which are undertaken by an enterprise as part of its business and such related activities in which the enterprise engages in furtherance of, incidental to, or arising from, these activities.

4.2 Extraordinary items are income or expenses that arise from events or transactions that are clearly distinct from the ordinary activities of the enterprise and, therefore, are not expected to recur frequently or regularly.

4.3 Prior period items are income or expenses which arise in the current period as a result of errors or omissions in the preparation of the financial statements of one or more prior periods.

4.4 Accounting policies are the specific accounting principles and the methods of applying those principles adopted by an enterprise in the preparation and presentation of financial statements.

Net Profit or Loss for the Period

5. All items of income and expense which are recognised in a period should be included in the determination of net profit or loss for the period unless an Accounting Standard requires or permits otherwise.

6. Normally, all items of income and expense which are recognised in a period are included in the determination of the net profit or loss for the period. This includes extraordinary items and the effects of changes in accounting estimates.

7. The net profit or loss for the period comprises the following components, each of which should be disclosed on the face of the statement of profit and loss:

(a) profit or loss from ordinary activities; and

(b) extraordinary items.

Extraordinary Items

8. Extraordinary items should be disclosed in the statement of profit and loss as a part of net profit or loss for the period. The nature and the amount of each extraordinary item should be separately disclosed in the statement of profit and loss in a manner that its impact on current profit or loss can be perceived.

9. Virtually all items of income and expense included in the determination of net profit or loss for the period arise in the course of the ordinary activities of the enterprise. Therefore, only on rare occasions does an event or transaction give rise to an extraordinary item.

10. Whether an event or transaction is clearly distinct from the ordinary activities of the enterprise is determined by the nature of the event or transaction in relation to the business ordinarily carried on by the enterprise rather than by the frequency with which such events are expected to occur. Therefore, an event or transaction may be extraordinary for one enterprise but not so for another enterprise because of the differences between their respective ordinary activities. For example, losses sustained as a result of an earthquake may qualify as an extraordinary item for many enterprises. However, claims from policyholders arising from an earthquake do not qualify as an extraordinary item for an insurance enterprise that insures against such risks.

11. Examples of events or transactions that generally give rise to extraordinary items for most enterprises are:

– attachment of property of the enterprise; or

– an earthquake.

Profit or Loss from Ordinary Activities

12. When items of income and expense within profit or loss from ordinary activities are of such size, nature or incidence that their disclosure is relevant to explain the performance of the enterprise for the period, the nature and amount of such items should be disclosed separately.

13. Although the items of income and expense described in paragraph 12 are not extraordinary items, the nature and amount of such items may be relevant to users of financial statements in understanding the financial position and performance of an enterprise and in making projections about financial position and performance. Disclosure of such information is sometimes made in the notes to the financial statements.

14. Circumstances which may give rise to the separate disclosure of items of income and expense in accordance with paragraph 12 include:

(a) the write-down of inventories to net realisable value as well as the reversal of such write-downs;

(b) a restructuring of the activities of an enterprise and the reversal of any provisions for the costs of restructuring;

(c) disposals of items of fixed assets;

(d) disposals of long-term investments;

(e) legislative changes having retrospective application;

(f) litigation settlements; and

(g) other reversals of provisions.

Prior Period Items

15. The nature and amount of prior period items should be separately disclosed in the statement of profit and loss in a manner that their impact on the current profit or loss can be perceived.

16. The term 'prior period items', as defined in this Standard, refers only to income or expenses which arise in the current period as a result of errors or omissions in the preparation of the financial statements of one or more prior periods. The term does not include other adjustments necessitated by circumstances, which though related to prior periods, are determined in the current period, e.g., arrears payable to workers as a result of revision of wages with retrospective effect during the current period.

17. Errors in the preparation of the financial statements of one or more prior periods may be discovered in the current period. Errors may occur as a result of mathematical mistakes, mistakes in applying accounting policies, misinterpretation of facts, or oversight.

18. Prior period items are generally infrequent in nature and can be distinguished from changes in accounting estimates. Accounting estimates by their nature are approximations that may need revision as additional information

becomes known. For example, income or expense recognised on the outcome of a contingency which previously could not be estimated reliably does not constitute a prior period item.

19. Prior period items are normally included in the determination of net profit or loss for the current period. An alternative approach is to show such items in the statement of profit and loss after determination of current net profit or loss. In either case, the objective is to indicate the effect of such items on the current profit or loss.

Changes in Accounting Estimates

20. As a result of the uncertainties inherent in business activities, many financial statement items cannot be measured with precision but can only be estimated. The estimation process involves judgments based on the latest information available. Estimates may be required, for example, of bad debts, inventory obsolescence or the useful lives of depreciable assets. The use of reasonable estimates is an essential part of the preparation of financial statements and does not undermine their reliability.

21. An estimate may have to be revised if changes occur regarding the circumstances on which the estimate was based, or as a result of new information, more experience or subsequent developments. The revision of the estimate, by its nature, does not bring the adjustment within the definitions of an extraordinary item or a prior period item.

22. Sometimes, it is difficult to distinguish between a change in an accounting policy and a change in an accounting estimate. In such cases, the change is treated as a change in an accounting estimate, with appropriate disclosure.

23. The effect of a change in an accounting estimate should be included in the determination of net profit or loss in:

(a) the period of the change, if the change affects the period only; or

(b) the period of the change and future periods, if the change affects both.

24. A change in an accounting estimate may affect the current period only or both the current period and future periods. For example, a change in the estimate of the amount of bad debts is recognised immediately and therefore affects only the current period. However, a change in the estimated useful life of a depreciable asset affects the depreciation in the current period and in each period during the remaining useful life of the asset. In both cases, the effect of the change relating to the current period is recognised as income or expense in the current period. The effect, if any, on future periods, is recognised in future periods.

25. The effect of a change in an accounting estimate should be classified using the same classification in the statement of profit and loss as was used previously for the estimate.

26. To ensure the comparability of financial statements of different periods, the effect of a change in an accounting estimate which was previously included in the profit or loss from ordinary activities is included in that component of net profit or loss. The effect of a change in an accounting estimate that was previously included as an extraordinary item is reported as an extraordinary item.

27. The nature and amount of a change in an accounting estimate which has a material effect in the current period, or which is expected to have a material effect in subsequent periods, should be disclosed. If it is impracticable to quantify the amount, this fact should be disclosed.

Changes in Accounting Policies

28. Users need to be able to compare the financial statements of an enterprise over a period of time in order to identify trends in its financial position, performance and cash flows. Therefore, the same accounting policies are normally adopted for similar events or transactions in each period.

29. A change in an accounting policy should be made only if the adoption of a different accounting policy is required by statute or for compliance with an accounting standard or if it is considered that the change would result in a more appropriate presentation of the financial statements of the enterprise.

30. A more appropriate presentation of events or transactions in the financial statements occurs when the new accounting policy results in more relevant or reliable information about the financial position, performance or cash flows of the enterprise.

31. The following are not changes in accounting policies:

(a) the adoption of an accounting policy for events or transactions that differ in substance from previously occurring events or transactions, e.g., introduction of a formal retirement gratuity scheme by an employer in place of adhoc ex-gratia payments to employees on retirement; and

(b) the adoption of a new accounting policy for events or transactions which did not occur previously or that were immaterial.

32. Any change in an accounting policy which has a material effect should be disclosed. The impact of, and the adjustments resulting from, such change, if material, should be shown in the financial statements of the period in which such change is made, to reflect the effect of such change. Where the effect of such change is not ascertainable, wholly or in part, the fact should be indicated. If a change is made in the accounting policies which has no material effect on the financial statements for the current period but which is reasonably expected to have a material effect in later periods, the fact of such change should be appropriately disclosed in the period in which the change is adopted.

33. A change in accounting policy consequent upon the adoption of an Accounting Standard should be accounted for in accordance with the specific transitional provisions, if any, contained in that Accounting Standard. However, disclosures required by paragraph 32 of this Standard should be made unless the transitional provisions of any other Accounting Standard require alternative disclosures in this regard.

Accounting Standard (AS) 7

Construction Contracts*

*(This Accounting Standard includes paragraphs set in **bold italic** type and plain type, which have equal authority. Paragraphs in bold italic type indicate the main principles. This Accounting Standard should be read in the context of its objective and the General Instructions contained in part A of the Annexure to the Notification.)*

Objective

The objective of this Standard is to prescribe the accounting treatment of revenue and costs associated with construction contracts. Because of the nature of the activity undertaken in construction contracts, the date at which the contract activity is entered into and the date when the activity is completed usually fall into different accounting periods. Therefore, the primary issue in accounting for construction contracts is the allocation of contract revenue and contract costs to the accounting periods in which construction work is performed. This Standard uses the recognition criteria established in the Framework for the Preparation and Presentation of Financial Statements to determine when contract revenue and contract costs should be recognised as revenue and expenses in the statement of profit and loss. It also provides practical guidance on the application of these criteria.

Scope

1. This Standard should be applied in accounting for construction contracts in the financial statements of contractors.

Definitions

2. The following terms are used in this Standard with the meanings specified:

2.1 A construction contract is a contract specifically negotiated for the construction of an asset or a combination of assets that are closely interrelated or interdependent in terms of their design, technology and function or their ultimate purpose or use.

2.2 A fixed price contract is a construction contract in which the contractor agrees to a fixed contract price, or a fixed rate per unit of output, which in some cases is subject to cost escalation clauses.

2.3 A cost plus contract is a construction contract in which the contractor is reimbursed for allowable or otherwise defined costs, plus percentage of these costs or a fixed fee.

3. A construction contract may be negotiated for the construction of a single asset such as a bridge, building, dam, pipeline, road, ship or tunnel. A construction contract may also deal with the construction of a number of assets which are closely interrelated or interdependent in terms of their design, technology and function or their ultimate purpose or use; examples of such contracts include those for the construction of refineries and other complex pieces of plant or equipment.

4. For the purposes of this Standard, construction contracts include:

(a) contracts for the rendering of services which are directly related to the construction of the asset, for example, those for the services of project managers and architects; and

(b) contracts for destruction or restoration of assets, and the restoration of the environment following the demolition of assets.

5. Construction contracts are formulated in a number of ways which, for the purposes of this Standard, are

* In respect of contracts entered into prior to the effective date of the notification prescribing Accounting Standard (AS) 7 as part of Companies (Accounting Standards) Rules, 2006, the applicability of this Standard would be determined on the basis of the Accounting Standard (AS) 7, revised by the ICAI in 2002.

classified as fixed price contracts and cost plus contracts. Some construction contracts may contain characteristics of both a fixed price contract and a cost plus contract, for example, in the case of a cost plus contract with an agreed maximum price. In such circumstances, a contractor needs to consider all the conditions in paragraphs 22 and 23 in order to determine when to recognise contract revenue and expenses.

Combining and Segmenting Construction Contracts

6. The requirements of this Standard are usually applied separately to each construction contract. However, in certain circumstances, it is necessary to apply the Standard to the separately identifiable components of a single contract or to a group of contracts together in order to reflect the substance of a contract or a group of contracts.

7. When a contract covers a number of assets, the construction of each asset should be treated as a separate construction contract when:

(a) separate proposals have been submitted for each asset;

(b) each asset has been subject to separate negotiation and the contractor and customer have been able to accept or reject that part of the contract relating to each asset; and

(c) the costs and revenues of each asset can be identified.

8. A group of contracts, whether with a single customer or with several customers, should be treated as a single construction contract when:

(a) the group of contracts is negotiated as a single package;

(b) the contracts are so closely interrelated that they are, in effect, part of a single project with an overall profit margin; and

(c) the contracts are performed concurrently or in a continuous sequence.

9. A contract may provide for the construction of an additional asset at the option of the customer or may be amended to include the construction of an additional asset. The construction of the additional asset should be treated as a separate construction contract when:

(a) the asset differs significantly in design, technology or function from the asset or assets covered by the original contract; or

(b) the price of the asset is negotiated without regard to the original contract price.

Contract Revenue

10. Contract revenue should comprise:

(a) the initial amount of revenue agreed in the contract; and

(b) variations in contract work, claims and incentive payments:

(i) to the extent that it is probable that they will result in revenue; and

(ii) they are capable of being reliably measured.

11. Contract revenue is measured at the consideration received or receivable. The measurement of contract revenue is affected by a variety of uncertainties that depend on the outcome of future events. The estimates often need to be revised as events occur and uncertainties are resolved. Therefore, the amount of contract revenue may increase or decrease from one period to the next. For example:

(a) a contractor and a customer may agree to variations or claims that increase or decrease contract revenue in a period subsequent to that in which the contract was initially agreed;

(b) the amount of revenue agreed in a fixed price contract may increase as a result of cost escalation clauses;

(c) the amount of contract revenue may decrease as a result of penalties arising from delays caused by the contractor in the completion of the contract; or

(d) when a fixed price contract involves a fixed price per unit of output, contract revenue increases as the number of units is increased.

12. A variation is an instruction by the customer for a change in the scope of the work to be performed under the contract. A variation may lead to an increase or a decrease in contract revenue. Examples of variations are changes in the specifications or design of the asset and changes in the duration of the contract. A variation is included in contract revenue when:

(a) it is probable that the customer will approve the variation and the amount of revenue arising from the

variation; and

(b) the amount of revenue can be reliably measured.

13. A claim is an amount that the contractor seeks to collect from the customer or another party as reimbursement for costs not included in the contract price. A claim may arise from, for example, customer caused delays, errors in specifications or design, and disputed variations in contract work. The measurement of the amounts of revenue arising from claims is subject to a high level of uncertainty and often depends on the outcome of negotiations. Therefore, claims are only included in contract revenue when:

(a) negotiations have reached an advanced stage such that it is probable that the customer will accept the claim; and

(b) the amount that it is probable will be accepted by the customer can be measured reliably.

14. Incentive payments are additional amounts payable to the contractor if specified performance standards are met or exceeded. For example, a contract may allow for an incentive payment to the contractor for early completion of the contract. Incentive payments are included in contract revenue when:

(a) the contract is sufficiently advanced that it is probable that the specified performance standards will be met or exceeded; and

(b) the amount of the incentive payment can be measured reliably.

Contract Costs

15. Contract costs should comprise:

(a) costs that relate directly to the specific contract;

(b) costs that are attributable to contract activity in general and can be allocated to the contract; and

(c) such other costs as are specifically chargeable to the customer under the terms of the contract.

16. Costs that relate directly to a specific contract include:

(a) site labour costs, including site supervision;

(b) costs of materials used in construction;

(c) depreciation of plant and equipment used on the contract;

(d) costs of moving plant, equipment and materials to and from the contract site;

(e) costs of hiring plant and equipment;

(f) costs of design and technical assistance that is directly related to the contract;

(g) the estimated costs of rectification and guarantee work, including expected warranty costs; and

(h) claims from third parties.

These costs may be reduced by any incidental income that is not included in contract revenue, for example, income from the sale of surplus materials and the disposal of plant and equipment at the end of the contract.

17. Costs that may be attributable to contract activity in general and can be allocated to specific contracts include:

(a) insurance;

(b) costs of design and technical assistance that is not directly related to a specific contract; and

(c) construction overheads.

Such costs are allocated using methods that are systematic and rational and are applied consistently to all costs having similar characteristics. The allocation is based on the normal level of construction activity. Construction overheads include costs such as the preparation and processing of construction personnel payroll. Costs that may be attributable to contract activity in general and can be allocated to specific contracts also include borrowing costs as per Accounting Standard (AS) 16, *Borrowing Costs*.

18. Costs that are specifically chargeable to the customer under the terms of the contract may include some general administration costs and development costs for which reimbursement is specified in the terms of the contract.

19. Costs that cannot be attributed to contract activity or cannot be allocated to a contract are excluded from the costs of a construction contract. Such costs include:

(a) general administration costs for which reimbursement is not specified in the contract;

IndiaCode

(b) selling costs;

(c) research and development costs for which reimbursement is not specified in the contract; and

(d) depreciation of idle plant and equipment that is not used on a particular contract.

20. Contract costs include the costs attributable to a contract for the period from the date of securing the contract to the final completion of the contract. However, costs that relate directly to a contract and which are incurred in securing the contract are also included as part of the contract costs if they can be separately identified and measured reliably and it is probable that the contract will be obtained. When costs incurred in securing a contract are recognised as an expense in the period in which they are incurred, they are not included in contract costs when the contract is obtained in a subsequent period.

Recognition of Contract Revenue and Expenses

21. When the outcome of a construction contract can be estimated reliably, contract revenue and contract costs associated with the construction contract should be recognised as revenue and expenses respectively by reference to the stage of completion of the contract activity at the reporting date. An expected loss on the construction contract should be recognised as an expense immediately in accordance with paragraph 35.

22. In the case of a fixed price contract, the outcome of a construction contract can be estimated reliably when all the following conditions are satisfied:

(a) total contract revenue can be measured reliably;

(b) it is probable that the economic benefits associated with the contract will flow to the enterprise;

(c) both the contract costs to complete the contract and the stage of contract completion at the reporting date can be measured reliably; and

(d) the contract costs attributable to the contract can be clearly identified and measured reliably so that actual contract costs incurred can be compared with prior estimates.

23. In the case of a cost plus contract, the outcome of a construction contract can be estimated reliably when all the following conditions are satisfied:

(a) it is probable that the economic benefits associated with the contract will flow to the enterprise; and

(b) the contract costs attributable to the contract, whether or not specifically reimbursable, can be clearly identified and measured reliably.

24. The recognition of revenue and expenses by reference to the stage of completion of a contract is often referred to as the percentage of completion method. Under this method, contract revenue is matched with the contract costs incurred in reaching the stage of completion, resulting in the reporting of revenue, expenses and profit which can be attributed to the proportion of work completed. This method provides useful information on the extent of contract activity and performance during a period.

25. Under the percentage of completion method, contract revenue is recognised as revenue in the statement of profit and loss in the accounting periods in which the work is performed. Contract costs are usually recognised as an expense in the statement of profit and loss in the accounting periods in which the work to which they relate is performed. However, any expected excess of total contract costs over total contract revenue for the contract is recognised as an expense immediately in accordance with paragraph 35.

26. A contractor may have incurred contract costs that relate to future activity on the contract. Such contract costs are recognised as an asset provided it is probable that they will be recovered. Such costs represent an amount due from the customer and are often classified as contract work in progress.

27. When an uncertainty arises about the collectability of an amount already included in contract revenue, and already recognised in the statement of profit and loss, the uncollectable amount or the amount in respect of which recovery has ceased to be probable is recognised as an expense rather than as an adjustment of the amount of contract revenue.

28. An enterprise is generally able to make reliable estimates after it has agreed to a contract which establishes:

(a) each party's enforceable rights regarding the asset to be constructed;

(b) the consideration to be exchanged; and

(c) the manner and terms of settlement.

It is also usually necessary for the enterprise to have an effective internal financial budgeting and reporting system. The enterprise reviews and, when necessary, revises the estimates of contract revenue and contract costs as the contract progresses. The need for such revisions does not necessarily indicate that the outcome of the contract

cannot be estimated reliably.

29. The stage of completion of a contract may be determined in a variety of ways. The enterprise uses the method that measures reliably the work performed. Depending on the nature of the contract, the methods may include:

(a) the proportion that contract costs incurred for work performed upto the reporting date bear to the estimated total contract costs; or

(b) surveys of work performed; or

(c) completion of a physical proportion of the contract work.

Progress payments and advances received from customers may not necessarily reflect the work performed.

30. When the stage of completion is determined by reference to the contract costs incurred upto the reporting date, only those contract costs that reflect work performed are included in costs incurred upto the reporting date. Examples of contract costs which are excluded are:

(a) contract costs that relate to future activity on the contract, such as costs of materials that have been delivered to a contract site or set aside for use in a contract but not yet installed, used or applied during contract performance, unless the materials have been made specially for the contract; and

(b) payments made to subcontractors in advance of work performed under the subcontract.

31. When the outcome of a construction contract cannot be estimated reliably:

(a) revenue should be recognised only to the extent of contract costs incurred of which recovery is probable; and

(b) contract costs should be recognised as an expense in the period in which they are incurred.

An expected loss on the construction contract should be recognised as an expense immediately in accordance with paragraph 35.

32. During the early stages of a contract it is often the case that the outcome of the contract cannot be estimated reliably. Nevertheless, it may be probable that the enterprise will recover the contract costs incurred. Therefore, contract revenue is recognised only to the extent of costs incurred that are expected to be recovered. As the outcome of the contract cannot be estimated reliably, no profit is recognised. However, even though the outcome of the contract cannot be estimated reliably, it may be probable that total contract costs will exceed total contract revenue. In such cases, any expected excess of total contract costs over total contract revenue for the contract is recognised as an expense immediately in accordance with paragraph 35.

33. Contract costs recovery of which is not probable are recognised as an expense immediately. Examples of circumstances in which the recoverability of contract costs incurred may not be probable and in which contract costs may, therefore, need to be recognised as an expense immediately include contracts:

(a) which are not fully enforceable, that is, their validity is seriously in question;

(b) the completion of which is subject to the outcome of pending litigation or legislation;

(c) relating to properties that are likely to be condemned or expropriated;

(d) where the customer is unable to meet its obligations; or

(e) where the contractor is unable to complete the contract or otherwise meet its obligations under the contract.

34. When the uncertainties that prevented the outcome of the contract being estimated reliably no longer exist, revenue and expenses associated with the construction contract should be recognised in accordance with paragraph 21 rather than in accordance with paragraph 31.

Recognition of Expected Losses

35. When it is probable that total contract costs will exceed total contract revenue, the expected loss should be recognised as an expense immediately.

36. The amount of such a loss is determined irrespective of:

(a) whether or not work has commenced on the contract;

(b) the stage of completion of contract activity; or

(c) the amount of profits expected to arise on other contracts which are not treated as a single construction contract in accordance with paragraph 8.

Changes in Estimates

37. The percentage of completion method is applied on a cumulative basis in each accounting period to the current estimates of contract revenue and contract costs. Therefore, the effect of a change in the estimate of contract revenue or contract costs, or the effect of a change in the estimate of the outcome of a contract, is accounted for as a change in accounting estimate (see Accounting Standard (AS) 5, *Net Profit or Loss for the Period, Prior Period Items and Changes in Accounting Policies*). The changed estimates are used in determination of the amount of revenue and expenses recognised in the statement of profit and loss in the period in which the change is made and in subsequent periods.

Disclosure

38. An enterprise should disclose:

(a) the amount of contract revenue recognised as revenue in the period;

(b) the methods used to determine the contract revenue recognised in the period; and

(c) the methods used to determine the stage of completion of contracts in progress.

39. An enterprise should disclose the following for contracts in progress at the reporting date:

(a) the aggregate amount of costs incurred and recognised profits (less recognised losses) upto the reporting date;

(b) the amount of advances received; and

(c) the amount of retentions.

40. Retentions are amounts of progress billings which are not paid until the satisfaction of conditions specified in the contract for the payment of such amounts or until defects have been rectified. Progress billings are amounts billed for work performed on a contract whether or not they have been paid by the customer. Advances are amounts received by the contractor before the related work is performed.

41. An enterprise should present:

(a) the gross amount due from customers for contract work as an asset; and

(b) the gross amount due to customers for contract work as a liability.

42. The gross amount due from customers for contract work is the net amount of:

(a) costs incurred plus recognised profits; less

(b) the sum of recognised losses and progress billings

for all contracts in progress for which costs incurred plus recognised profits (less recognised losses) exceeds progress billings.

43. The gross amount due to customers for contract work is the net amount of:

(a) the sum of recognised losses and progress billings; less

(b) costs incurred plus recognised profits

for all contracts in progress for which progress billings exceed costs incurred plus recognised profits (less recognised losses).

44. An enterprise discloses any contingencies in accordance with Accounting Standard (AS) 4, *Contingencies and Events Occurring After the Balance Sheet Date*[2]. Contingencies may arise from such items as warranty costs, penalties or possible losses.

Illustration

This illustration does not form part of the Accounting Standard. Its purpose is to illustrate the application of the Accounting Standard to assist in clarifying its meaning.

Disclosure of Accounting Policies

[2] All paragraphs of AS 4 that deal with contingencies are applicable only to the extent not covered by other Accounting Standards prescribed by the Central Government. For example, the impairment of financial assets such as impairment of receivables (commonly known as provision for bad and doubtful debts) is governed by AS 4.

The following are illustrations of accounting policy disclosures:

Revenue from fixed price construction contracts is recognised on the percentage of completion method, measured by reference to the percentage of labour hours incurred upto the reporting date to estimated total labour hours for each contract.

Revenue from cost plus contracts is recognised by reference to the recoverable costs incurred during the period plus the fee earned, measured by the proportion that costs incurred upto the reporting date bear to the estimated total costs of the contract.

The Determination of Contract Revenue and Expenses

The following illustration illustrates one method of determining the stage of completion of a contract and the timing of the recognition of contract revenue and expenses (see paragraphs 21 to 34 of the Standard). (Amounts shown herein below are in Rs. lakhs)

A construction contractor has a fixed price contract for Rs. 9,000 to build a bridge. The initial amount of revenue agreed in the contract is Rs. 9,000. The contractor's initial estimate of contract costs is Rs. 8,000. It will take 3 years to build the bridge.

By the end of year 1, the contractor's estimate of contract costs has increased to Rs. 8,050.

In year 2, the customer approves a variation resulting in an increase in contract revenue of Rs. 200 and estimated additional contract costs of Rs. 150. At the end of year 2, costs incurred include Rs. 100 for standard materials stored at the site to be used in year 3 to complete the project.

The contractor determines the stage of completion of the contract by calculating the proportion that contract costs incurred for work performed upto the reporting date bear to the latest estimated total contract costs. A summary of the financial data during the construction period is as follows:

IndiaCode

(amount in Rs. lakhs)

	Year 1	Year 2	Year 3
Initial amount of revenue agreed in contract	9,000	9,000	9,000
Variation	—	200	200
Total contract revenue	9,000	9,200	9,200
Contract costs incurred upto the reporting date	2,093	6,168	8,200
Estimated Profit	950	1,000	1,000
Stage of completion	26%	74%	100%

The stage of completion for year 2 (74%) is determined by excluding from contract costs incurred for work performed upto the reporting date, Rs. 100 of standard materials stored at the site for use in year 3.

The amounts of revenue, expenses and profit recognised in the statement of profit and loss in the three years are as follows:

	Upto the Reporting Date	Recognised in prior years	Recognised in current year
Year 1			

Revenue (9,000x .26)	2,340	—	2,340
Expenses (8,050x .26)	2,093	—	2,093
Profit	247	—	247

Year 2

Revenue (9,200 x .74)	6,808	2,340	4,468
Expenses (8,200 x .74)	6,068	2,093	3,975
Profit	740	247	493

Year 3

Revenue (9,200 x 1.00)	9,200	6,808	2,392
Expenses	8,200	6,068	2,132
Profit	1,000	740	260

Contract Disclosures

A contractor has reached the end of its first year of operations. All its contract costs incurred have been paid for in cash and all its progress billings and advances have been received in cash. Contract costs incurred for contracts B, C and E include the cost of materials that have been purchased for the contract but which have not been used in contract performance upto the reporting date. For contracts B, C and E, the customers have made advances to the contractor for work not yet performed.

The status of its five contracts in progress at the end of year 1 is as follows:

IndiaCode

	Contract (amount in Rs. lakhs)					
	A	B	C	D	E	Total
Contract Revenue recognised in accordance with paragraph 21	145	520	380	200	55	1,300
Contract Expenses recognised in accordance with paragraph 21	110	450	350	250	55	1,215
Expected Losses recognised in accordance with paragraph 35	—	—	—	40	30	70
Recognised profits less recognised losses	35	70	30	(90)	(30)	15
Contract Costs incurred in the period	110	510	450	250	100	1,420
Contract Costs incurred recognised as contract expenses in the period in accordance with paragraph 21	110	450	350	250	55	1,215
Contract Costs that relate to future activity recognised as an asset in accordance with paragraph 26	—	60	100	—	45	205
Contract Revenue (see above)	145	520	380	200	55	1,300
Progress Billings (paragraph 40)	100	520	380	180	55	1,235
Unbilled Contract Revenue	45	—	—	20	—	65
Advances (paragraph 40)	—	80	20	—	25	125

The amounts to be disclosed in accordance with the Standard are as follows:

Contract revenue recognised as revenue in the period [paragraph 38(a)]	1,300
Contract costs incurred and recognised profits (less recognised losses) upto the reporting date [paragraph 39(a)]	1,435
Advances received [paragraph 39(b)]	125
Gross amount due from customers for contract work— presented as an asset in accordance with paragraph 41(a)	220
Gross amount due to customers for contract work— presented as a liability in accordance with paragraph 41(b)	(20)

The amounts to be disclosed in accordance with paragraphs 39(a), 41(a) and 41(b) are calculated as follows:

(amount in Rs. lakhs)

A	B	C	D	E	Total			
Contract Costs incurred			110	510	450	250	100	1,420
Recognised profits less recognised losses			35	70	30	(90)	(30)	15
Progress billings								
Due from customers		145	580	480	160	70	1,435	
Due to customers		100	520	380	180	55	1,235	
		45	60	100	—	15	220	
		—	—	—	(20)	—	(20)	

IndiaCode

The amount disclosed in accordance with paragraph 39(a) is the same as the amount for the current period because the disclosures relate to the first year of operation.

Accounting Standard (AS) 9

Revenue Recognition[3]

*(This Accounting Standard includes paragraphs set in **bold italic** type and plain type, which have equal authority. Paragraphs in bold italic type indicate the main principles. This Accounting Standard should be read in the context of the General Instructions contained in part A of the Annexure to the Notification.)*

Introduction

1. This Standard deals with the bases for recognition of revenue in the statement of profit and loss of an enterprise. The Standard is concerned with the recognition of revenue arising in the course of the ordinary activities of the enterprise from

— the sale of goods,

— the rendering of services, and

— the use by others of enterprise resources yielding interest, royalties and dividends.

[3] It is reiterated that this Accounting Standard (as is the case of other accounting standards) assumes that the three fundamental accounting assumptions i.e., going concern, consistency and accrual have been followed in the preparation and presentation of financial statements.

2. This Standard does not deal with the following aspects of revenue recognition to which special considerations apply:

(i) Revenue arising from construction contracts;[4]

(ii) Revenue arising from hire-purchase, lease agreements;

(iii) Revenue arising from government grants and other similar subsidies;

(iv) Revenue of insurance companies arising from insurance contracts.

3. Examples of items not included within the definition of "revenue" for the purpose of this Standard are:

(i) Realised gains resulting from the disposal of, and unrealised gains resulting from the holding of, non-current assets e.g. appreciation in the value of fixed assets;

(ii) Unrealised holding gains resulting from the change in value of current assets, and the natural increases in herds and agricultural and forest products;

(iii) Realised or unrealised gains resulting from changes in foreign exchange rates and adjustments arising on the translation of foreign currency financial statements;

(iv) Realised gains resulting from the discharge of an obligation at less than its carrying amount;

(v) Unrealised gains resulting from the restatement of the carrying amount of an obligation.

Definitions

4. The following terms are used in this Standard with the meanings specified:

4.1 Revenue is the gross inflow of cash, receivables or other consideration arising in the course of the ordinary activities of an enterprise from the sale of goods, from the rendering of services, and from the use by others of enterprise resources yielding interest, royalties and dividends. Revenue is measured by the charges made to customers or clients for goods supplied and services rendered to them and by the charges and rewards arising from the use of resources by them. In an agency relationship, the revenue is the amount of commission and not the gross inflow of cash, receivables or other consideration.

4.2 Completed service contract method is a method of accounting which recognises revenue in the statement of profit and loss only when the rendering of services under a contract is completed or substantially completed.

4.3 Proportionate completion method is a method of accounting which recognises revenue in the statement of profit and loss proportionately with the degree of completion of services under a contract.

Explanation

5. Revenue recognition is mainly concerned with the timing of recognition of revenue in the statement of profit and loss of an enterprise. The amount of revenue arising on a transaction is usually determined by agreement between the parties involved in the transaction. When uncertainties exist regarding the determination of the amount, or its associated costs, these uncertainties may influence the timing of revenue recognition.

6. Sale of Goods

6.1 A key criterion for determining when to recognise revenue from a transaction involving the sale of goods is that the seller has transferred the property in the goods to the buyer for a consideration. The transfer of property in goods, in most cases, results in or coincides with the transfer of significant risks and rewards of ownership to the buyer. However, there may be situations where transfer of property in goods does not coincide with the transfer of significant risks and rewards of ownership. Revenue in such situations is recognised at the time of transfer of significant risks and rewards of ownership to the buyer. Such cases may arise where delivery has been delayed through the fault of either the buyer or the seller and the goods are at the risk of the party at fault as regards any loss which might not have occurred but for such fault. Further, sometimes the parties may agree that the risk will pass at a time different from the time when ownership passes.

6.2 At certain stages in specific industries, such as when agricultural crops have been harvested or mineral ores have been extracted, performance may be substantially complete prior to the execution of the transaction generating revenue. In such cases when sale is assured under a forward contract or a government guarantee or where market exists and there is a negligible risk of failure to sell, the goods involved are often valued at net realisable value. Such amounts, while not revenue as defined in this Standard, are sometimes recognised in the statement of profit and loss

[4] Refer to AS 7 on '*Construction Contracts*'.

and appropriately described.

7. Rendering of Services

7.1 Revenue from service transactions is usually recognised as the service is performed, either by the proportionate completion method or by the completed service contract method.

(i) ***Proportionate completion method*—**Performance consists of the execution of more than one act. Revenue is recognised proportionately by reference to the performance of each act. The revenue recognised under this method would be determined on the basis of contract value, associated costs, number of acts or other suitable basis. For practical purposes, when services are provided by an indeterminate number of acts over a specific period of time, revenue is recognised on a straight line basis over the specific period unless there is evidence that some other method better represents the pattern of performance.

(ii) ***Completed service contract method*—**Performance consists of the execution of a single act. Alternatively, services are performed in more than a single act, and the services yet to be performed are so significant in relation to the transaction taken as a whole that performance cannot be deemed to have been completed until the execution of those acts. The completed service contract method is relevant to these patterns of performance and accordingly revenue is recognised when the sole or final act takes place and the service becomes chargeable.

8. The Use by Others of Enterprise Resources Yielding Interest, Royalties and Dividends

8.1 The use by others of such enterprise resources gives rise to:

(i) interest—charges for the use of cash resources or amounts due to the enterprise;

(ii) royalties—charges for the use of such assets as know-how, patents, trademarks and copyrights;

(iii) dividends—rewards from the holding of investments in shares.

8.2 Interest accrues, in most circumstances, on the time basis determined by the amount outstanding and the rate applicable. Usually, discount or premium on debt securities held is treated as though it were accruing over the period to maturity.

8.3 Royalties accrue in accordance with the terms of the relevant agreement and are usually recognised on that basis unless, having regard to the substance of the transactions, it is more appropriate to recognise revenue on some other systematic and rational basis.

8.4 Dividends from investments in shares are not recognised in the statement of profit and loss until a right to receive payment is established.

8.5 When interest, royalties and dividends from foreign countries require exchange permission and uncertainty in remittance is anticipated, revenue recognition may need to be postponed.

9. Effect of Uncertainties on Revenue Recognition

9.1 Recognition of revenue requires that revenue is measurable and that at the time of sale or the rendering of the service it would not be unreasonable to expect ultimate collection.

9.2 Where the ability to assess the ultimate collection with reasonable certainty is lacking at the time of raising any claim, e.g., for escalation of price, export incentives, interest etc., revenue recognition is postponed to the extent of uncertainty involved. In such cases, it may be appropriate to recognise revenue only when it is reasonably certain that the ultimate collection will be made. Where there is no uncertainty as to ultimate collection, revenue is recognised at the time of sale or rendering of service even though payments are made by instalments.

9.3 When the uncertainty relating to collectability arises subsequent to the time of sale or the rendering of the service, it is more appropriate to make a separate provision to reflect the uncertainty rather than to adjust the amount of revenue originally recorded.

9.4 An essential criterion for the recognition of revenue is that the consideration receivable for the sale of goods, the rendering of services or from the use by others of enterprise resources is reasonably determinable. When such consideration is not determinable within reasonable limits, the recognition of revenue is postponed.

9.5 When recognition of revenue is postponed due to the effect of uncertainties, it is considered as revenue of the period in which it is properly recognised.

Main Principles

10. Revenue from sales or service transactions should be recognised when the requirements as to performance set out in paragraphs 11 and 12 are satisfied, provided that at the time of performance it is not unreasonable to expect ultimate collection. If at the time of raising of any claim it is unreasonable to expect ultimate collection, revenue recognition should be postponed.

IndiaCode

Explanation:

The amount of revenue from sales transactions (turnover) should be disclosed in the following manner on the face of the statement of profit or loss:

Turnover (Gross)	*XX*	
Less: Excise Duty	*XX*	
Turnover (Net)		*XX*

The amount of excise duty to be deducted from the turnover should be the total excise duty for the year except the excise duty related to the difference between the closing stock and opening stock. The excise duty related to the difference between the closing stock and opening stock should be recognised separately in the statement of profit or loss, with an explanatory note in the notes to accounts to explain the nature of the two amounts of excise duty.

11. In a transaction involving the sale of goods, performance should be regarded as being achieved when the following conditions have been fulfilled:

(i) the seller of goods has transferred to the buyer the property in the goods for a price or all significant risks and rewards of ownership have been transferred to the buyer and the seller retains no effective control of the goods transferred to a degree usually associated with ownership; and

(ii) no significant uncertainty exists regarding the amount of the consideration that will be derived from the sale of the goods.

12. In a transaction involving the rendering of services, performance should be measured either under the completed service contract method or under the proportionate completion method, whichever relates the revenue to the work accomplished. Such performance should be regarded as being achieved when no significant uncertainty exists regarding the amount of the consideration that will be derived from rendering the service.

13. Revenue arising from the use by others of enterprise resources yielding interest, royalties and dividends should only be recognised when no significant uncertainty as to measurability or collectability exists. These revenues are recognised on the following bases:

(i) Interest	***:***	***on a time proportion basis taking into account the amount outstanding and the rate applicable.***
(ii) Royalties	***:***	***on an accrual basis in accordance with the terms of the relevant agreement.***
(iii) Dividends from investments in shares	***:***	***when the owner's right to receive payment is established.***

Disclosure

14. In addition to the disclosures required by Accounting Standard (AS) 1, Disclosure of Accounting Policies, an enterprise should also disclose the circumstances in which revenue recognition has been postponed pending the resolution of significant uncertainties.

Illustrations

These illustrations do not form part of the Accounting Standard. Their purpose is to illustrate the application of the Standard to a number of commercial situations in an endeavour to assist in clarifying application of the Standard.

A. Sale of Goods

1. Delivery is delayed at buyer's request and buyer takes title and accepts billing

Revenue should be recognised notwithstanding that physical delivery has not been completed so long as there is every expectation that delivery will be made. However, the item must be on hand, identified and ready for delivery to the buyer at the time the sale is recognised rather than there being simply an intention to acquire or manufacture the goods in time for delivery.

2. Delivered subject to conditions

(a) installation and inspection i.e. goods are sold subject to installation, inspection etc.

Revenue should normally not be recognised until the customer accepts delivery and installation and inspection are complete. In some cases, however, the installation process may be so simple in nature that it may be appropriate to recognise the sale notwithstanding that installation is not yet completed (e.g. installation of a factory-tested television receiver normally only requires unpacking and connecting of power and antennae).

(b) on approval

Revenue should not be recognised until the goods have been formally accepted by the buyer or the buyer has done an act adopting the transaction or the time period for rejection has elapsed or where no time has been fixed, a reasonable time has elapsed.

(c) guaranteed sales i.e. delivery is made giving the buyer an unlimited right of return

Recognition of revenue in such circumstances will depend on the substance of the agreement. In the case of retail sales offering a guarantee of "money back if not completely satisfied" it may be appropriate to recognise the sale but to make a suitable provision for returns based on previous experience. In other cases, the substance of the agreement may amount to a sale on consignment, in which case it should be treated as indicated below.

(d) consignment sales i.e. a delivery is made whereby the recipient undertakes to sell the goods on behalf of the consignor

Revenue should not be recognised until the goods are sold to a third party.

(e) cash on delivery sales

Revenue should not be recognised until cash is received by the seller or his agent.

3. Sales where the purchaser makes a series of instalment payments to the seller, and the seller delivers the goods only when the final payment is received

Revenue from such sales should not be recognised until goods are delivered. However, when experience indicates that most such sales have been consummated, revenue may be recognised when a significant deposit is received.

4. Special order and shipments i.e. where payment (or partial payment) is received for goods not presently held in stock e.g. the stock is still to be manufactured or is to be delivered directly to the customer from a third party

Revenue from such sales should not be recognised until goods are manufactured, identified and ready for delivery to the buyer by the third party.

5. Sale/repurchase agreements i.e. where seller concurrently agrees to repurchase the same goods at a later date

For such transactions that are in substance a financing agreement, the resulting cash inflow is not revenue as defined and should not be recognised as revenue.

6. Sales to intermediate parties i.e. where goods are sold to distributors, dealers or others for resale

Revenue from such sales can generally be recognised if significant risks of ownership have passed; however in some situations the buyer may in substance be an agent and in such cases the sale should be treated as a consignment sale.

7. Subscriptions for publications

Revenue received or billed should be deferred and recognised either on a straight line basis over time or, where the items delivered vary in value from period to period, revenue should be based on the sales value of the item delivered in relation to the total sales value of all items covered by the subscription.

8. Instalment sales

When the consideration is receivable in instalments, revenue attributable to the sales price exclusive of interest should be recognised at the date of sale. The interest element should be recognised as revenue, proportionately to the unpaid balance due to the seller.

9. Trade discounts and volume rebates

Trade discounts and volume rebates received are not encompassed within the definition of revenue, since they represent a reduction of cost. Trade discounts and volume rebates given should be deducted in determining revenue.

B. Rendering of Services

1. Installation Fees

In cases where installation fees are other than incidental to the sale of a product, they should be recognised as revenue only when the equipment is installed and accepted by the customer.

2. Advertising and insurance agency commissions

Revenue should be recognised when the service is completed. For advertising agencies, media commissions will normally be recognised when the related advertisement or commercial appears before the public and the necessary intimation is received by the agency, as opposed to production commission, which will be recognised when the project is completed. Insurance agency commissions should be recognised on the effective commencement or renewal dates of the related policies.

3. Financial service commissions

A financial service may be rendered as a single act or may be provided over a period of time. Similarly, charges for such services may be made as a single amount or in stages over the period of the service or the life of the transaction to which it relates. Such charges may be settled in full when made or added to a loan or other account and settled in stages. The recognition of such revenue should therefore have regard to:

(a) whether the service has been provided "once and for all" or is on a "continuing" basis;

(b) the incidence of the costs relating to the service;

(c) when the payment for the service will be received.

In general, commissions charged for arranging or granting loan or other facilities should be recognised when a binding obligation has been entered into. Commitment, facility or loan management fees which relate to continuing obligations or services should normally be recognised over the life of the loan or facility having regard to the amount of the obligation outstanding, the nature of the services provided and the timing of the costs relating thereto.

4. Admission fees

Revenue from artistic performances, banquets and other special events should be recognised when the event takes place. When a subscription to a number of events is sold, the fee should be allocated to each event on a systematic and rational basis.

5. Tuition fees

Revenue should be recognised over the period of instruction.

6. Entrance and membership fees

Revenue recognition from these sources will depend on the nature of the services being provided. Entrance fee received is generally capitalised. If the membership fee permits only membership and all other services or products are paid for separately, or if there is a separate annual subscription, the fee should be recognised when received. If the membership fee entitles the member to services or publications to be provided during the year, it should be recognised on a systematic and rational basis having regard to the timing and nature of all services provided.

Accounting Standard (AS) 10

Property, Plant and Equipment

*(This Accounting Standard includes paragraphs set in **bold italic** type and plain type, which have equal authority. Paragraphs in bold italic type indicate the main principles. This Accounting Standard should be read in the context of General Instructions contained in part A of the Annexure to the Notification.)*

Objective

1. The objective of this Standard is to prescribe the accounting treatment for property, plant and equipment so that users of the financial statements can discern information about investment made by an enterprise in its property, plant and equipment and the changes in such investment. The principal issues in accounting for property, plant and equipment are the recognition of the assets, the determination of their carrying amounts and the depreciation charges and impairment losses to be recognised in relation to them.

Scope

2. This Standard should be applied in accounting for property, plant and equipment except when another Accounting Standard requires or permits a different accounting treatment.

3. This Standard does not apply to:

(a) biological assets related to agricultural activity other than bearer plants. This Standard applies to bearer plants but it does not apply to the produce on bearer plants; and

(b) wasting assets including mineral rights, expenditure on the exploration for and extraction of minerals, oil, natural gas and similar non-regenerative resources.

India Code

However, this Standard applies to property, plant and equipment used to develop or maintain the assets described in (a) and (b) above.

4. Other Accounting Standards may require recognition of an item of property, plant and equipment based on an approach different from that in this Standard. For example, AS 19, *Leases,* requires an enterprise to evaluate its recognition of an item of leased property, plant and equipment on the basis of the transfer of risks and rewards. However, in such cases other aspects of the accounting treatment for these assets, including depreciation, are prescribed by this Standard.

5. Investment property, as defined in AS 13, *Accounting for Investments*, should be accounted for only in accordance with the cost model prescribed in this standard.

Definitions

6. The following terms are used in this Standard with the meanings specified:

Agricultural Activity is the management by an enterprise of the biological transformation and harvest of biological assets for sale or for conversion into agricultural produce or into additional biological assets.

Agricultural Produce is the harvested product of biological assets of the enterprise.

Bearer plant is a plant that

(a) is used in the production or supply of agricultural produce;

(b) is expected to bear produce for more than a period of twelve months; and

(c) has a remote likelihood of being sold as agricultural produce, except for incidental scrap sales.

The following are not bearer plants:

(i) plants cultivated to be harvested as agricultural produce (for example, trees grown for use as lumber);

(ii) plants cultivated to produce agricultural produce when there is more than a remote likelihood that the entity will also harvest and sell the plant as agricultural produce, other than as incidental scrap sales (for example, trees that are cultivated both for their fruit and their lumber); and

(iii) annual crops (for example, maize and wheat).

When bearer plants are no longer used to bear produce they might be cut down and sold as scrap, for example, for use as firewood. Such incidental scrap sales would not prevent the plant from satisfying the definition of a bearer plant.

Biological Asset is a living animal[5] or plant.

Carrying amount is the amount at which an asset is recognised after deducting any accumulated depreciation and accumulated impairment losses.

Cost is the amount of cash or cash equivalents paid or the fair value of the other consideration given to acquire an asset at the time of its acquisition or construction or, where applicable, the amount attributed to that asset when initially recognised in accordance with the specific requirements of other Accounting Standards.

Depreciable amount is the cost of an asset, or other amount substituted for cost, less its residual value.

Depreciation is the systematic allocation of the depreciable amount of an asset over its useful life.

Enterprise-specific value is the present value of the cash flows an enterprise expects to arise from the continuing use of an asset and from its disposal at the end of its useful life or expects to incur when settling a liability.

Fair value is the amount for which an asset could be exchanged between knowledgeable, willing parties in an arm's length transaction.

Gross carrying amount of an asset is its cost or other amount substituted for the cost in the books of account, without making any deduction for accumulated depreciation and accumulated impairment

[5] An Accounting Standard on Agriculture is under formulation, which will, inter alia, cover accounting for livestock. Till the time, the Accounting Standard on Agriculture is issued, accounting for livestock meeting the definition of Property, Plant and Equipment, will be covered as per AS 10, *Property, Plant and Equipment.*

losses.

An impairment loss is the amount by which the carrying amount of an asset exceeds its recoverable amount.

Property, plant and equipment are tangible items that:

(a) are held for use in the production or supply of goods or services, for rental to others, or for administrative purposes; and

(b) are expected to be used during more than a period of twelve months.

Recoverable amount is the higher of an asset's net selling price and its value in use.

The residual value of an asset is the estimated amount that an enterprise would currently obtain from disposal of the asset, after deducting the estimated costs of disposal, if the asset were already of the age and in the condition expected at the end of its useful life.

Useful life is:

(a) the period over which an asset is expected to be available for use by an enterprise; or

(b) the number of production or similar units expected to be obtained from the asset by an enterprise.

Recognition

7. The cost of an item of property, plant and equipment should be recognised as an asset if, and only if:

(a) it is probable that future economic benefits associated with the item will flow to the enterprise; and

(b) the cost of the item can be measured reliably.

8. Items such as spare parts, stand-by equipment and servicing equipment are recognised in accordance with this Standard when they meet the definition of property, plant and equipment. Otherwise, such items are classified as inventory.

9. This Standard does not prescribe the unit of measure for recognition, i.e., what constitutes an item of property, plant and equipment. Thus, judgement is required in applying the recognition criteria to specific circumstances of an enterprise. An example of a 'unit of measure' can be a 'project' of construction of a manufacturing plant rather than individual assets comprising the project in appropriate cases for the purpose of capitalisation of expenditure incurred during construction period. Similarly, it may be appropriate to aggregate individually insignificant items, such as moulds, tools and dies and to apply the criteria to the aggregate value. An enterprise may decide to expense an item which could otherwise have been included as property, plant and equipment, because the amount of the expenditure is not material.

10. An enterprise evaluates under this recognition principle all its costs on property, plant and equipment at the time they are incurred. These costs include costs incurred:

(a) initially to acquire or construct an item of property, plant and equipment; and

(b) subsequently to add to, replace part of, or service it.

Initial Costs

11. The definition of 'property, plant and equipment' covers tangible items which are held for use or for administrative purposes. The term 'administrative purposes' has been used in wider sense to include all business purposes other than production or supply of goods or services or for rental for others. Thus, property, plant and equipment would include assets used for selling and distribution, finance and accounting, personnel and other functions of an enterprise. Items of property, plant and equipment may also be acquired for safety or environmental reasons. The acquisition of such property, plant and equipment, although not directly increasing the future economic benefits of any particular existing item of property, plant and equipment, may be necessary for an enterprise to obtain the future economic benefits from its other assets. Such items of property, plant and equipment qualify for recognition as assets because they enable an enterprise to derive future economic benefits from related assets in excess of what could be derived had those items not been acquired. For example, a chemical manufacturer may install new chemical handling processes to comply with environmental requirements for the production and storage of dangerous chemicals; related plant enhancements are recognised as an asset because without them the enterprise is unable to manufacture and sell chemicals. The resulting carrying amount of such an asset and related assets is reviewed for impairment in accordance with AS 28, *Impairment of Assets*.

Subsequent Costs

12. Under the recognition principle in paragraph 7, an enterprise does not recognise in the carrying amount of an item of property, plant and equipment the costs of the day-to-day servicing of the item. Rather, these costs are recognised in the statement of profit and loss as incurred. Costs of day-to-day servicing are primarily the costs of labour and

consumables, and may include the cost of small parts. The purpose of such expenditures is often described as for the 'repairs and maintenance' of the item of property, plant and equipment.

13. Parts of some items of property, plant and equipment may require replacement at regular intervals. For example, a furnace may require relining after a specified number of hours of use, or aircraft interiors such as seats and galleys may require replacement several times during the life of the airframe. Similarly, major parts of conveyor system, such as, conveyor belts, wire ropes, etc., may require replacement several times during the life of the conveyor system. Items of property, plant and equipment may also be acquired to make a less frequently recurring replacement, such as replacing the interior walls of a building, or to make a non-recurring replacement. Under the recognition principle in paragraph 7, an enterprise recognises in the carrying amount of an item of property, plant and equipment the cost of replacing part of such an item when that cost is incurred if the recognition criteria are met. The carrying amount of those parts that are replaced is derecognised in accordance with the derecognition provisions of this Standard (see paragraphs 74-80).

14. A condition of continuing to operate an item of property, plant and equipment (for example, an aircraft) may be performing regular major inspections for faults regardless of whether parts of the item are replaced. When each major inspection is performed, its cost is recognised in the carrying amount of the item of property, plant and equipment as a replacement if the recognition criteria are satisfied. Any remaining carrying amount of the cost of the previous inspection (as distinct from physical parts) is derecognised.

15. The derecognition of the carrying amount as stated in paragraphs 13-14 occurs regardless of whether the cost of the previous part / inspection was identified in the transaction in which the item was acquired or constructed. If it is not practicable for an enterprise to determine the carrying amount of the replaced part/ inspection, it may use the cost of the replacement or the estimated cost of a future similar inspection as an indication of what the cost of the replaced part/ existing inspection component was when the item was acquired or constructed.

Measurement at Recognition

16. An item of property, plant and equipment that qualifies for recognition as an asset should be measured at its cost.

Elements of Cost

17. The cost of an item of property, plant and equipment comprises:

(a) its purchase price, including import duties and non–refundable purchase taxes,, after deducting trade discounts and rebates.

(b) any costs directly attributable to bringing the asset to the location and condition necessary for it to be capable of operating in the manner intended by management.

(c) the initial estimate of the costs of dismantling, removing the item and restoring the site on which it is located, referred to as 'decommissioning, restoration and similar liabilities', the obligation for which an enterprise incurs either when the item is acquired or as a consequence of having used the item during a particular period for purposes other than to produce inventories during that period.

18. Examples of directly attributable costs are:

(a) costs of employee benefits (as defined in AS 15, *Employee Benefits*) arising directly from the construction or acquisition of the item of property, plant and equipment;

(b) costs of site preparation;

(c) initial delivery and handling costs;

(d) installation and assembly costs;

(e) costs of testing whether the asset is functioning properly, after deducting the net proceeds from selling any items produced while bringing the asset to that location and condition (such as samples produced when testing equipment); and

(f) professional fees.

19. An enterprise applies AS 2, *Valuation of Inventories,* to the costs of obligations for dismantling, removing and restoring the site on which an item is located that are incurred during a particular period as a consequence of having used the item to produce inventories during that period. The obligations for costs accounted for in accordance with AS 2 or AS 10 are recognised and measured in accordance with AS 29, *Provisions, Contingent Liabilities and Contingent Assets.*

20. Examples of costs that are not costs of an item of property, plant and equipment are:

(a) costs of opening a new facility or business, such as, inauguration costs;

(b) costs of introducing a new product or service (including costs of advertising and promotional activities);

(c) costs of conducting business in a new location or with a new class of customer (including costs of staff training); and

(d) administration and other general overhead costs.

21. Recognition of costs in the carrying amount of an item of property, plant and equipment ceases when the item is in the location and condition necessary for it to be capable of operating in the manner intended by management. Therefore, costs incurred in using or redeploying an item are not included in the carrying amount of that item. For example, the following costs are not included in the carrying amount of an item of property, plant and equipment:

(a) costs incurred while an item capable of operating in the manner intended by management has yet to be brought into use or is operated at less than full capacity;

(b) initial operating losses, such as those incurred while demand for the output of an item builds up; and

(c) costs of relocating or reorganising part or all of the operations of an enterprise.

22. Some operations occur in connection with the construction or development of an item of property, plant and equipment, but are not necessary to bring the item to the location and condition necessary for it to be capable of operating in the manner intended by management. These incidental operations may occur before or during the construction or development activities. For example, income may be earned through using a building site as a car park until construction starts. Because incidental operations are not necessary to bring an item to the location and condition necessary for it to be capable of operating in the manner intended by management, the income and related expenses of incidental operations are recognised in the statement of profit and loss and included in their respective classifications of income and expense.

23. The cost of a self-constructed asset is determined using the same principles as for an acquired asset. If an enterprise makes similar assets for sale in the normal course of business, the cost of the asset is usually the same as the cost of constructing an asset for sale (see AS 2). Therefore, any internal profits are eliminated in arriving at such costs. Similarly, the cost of abnormal amounts of wasted material, labour, or other resources incurred in self-constructing an asset is not included in the cost of the asset. AS 16, *Borrowing Costs*, establishes criteria for the recognition of interest as a component of the carrying amount of a self-constructed item of property, plant and equipment.

24. Bearer plants are accounted for in the same way as self-constructed items of property, plant and equipment before they are in the location and condition necessary to be capable of operating in the manner intended by management. Consequently, references to 'construction' in this Standard should be read as covering activities that are necessary to cultivate the bearer plants before they are in the location and condition necessary to be capable of operating in the manner intended by management.

Measurement of Cost

25. The cost of an item of property, plant and equipment is the cash price equivalent at the recognition date. If payment is deferred beyond normal credit terms, the difference between the cash price equivalent and the total payment is recognised as interest over the period of credit unless such interest is capitalised in accordance with AS 16.

26. One or more items of property, plant and equipment may be acquired in exchange for a non-monetary asset or assets, or a combination of monetary and non-monetary assets. The following discussion refers simply to an exchange of one non-monetary asset for another, but it also applies to all exchanges described in the preceding sentence. The cost of such an item of property, plant and equipment is measured at fair value unless (a) the exchange transaction lacks commercial substance or (b) the fair value of neither the asset(s) received nor the asset(s) given up is reliably measurable. The acquired item(s) is/are measured in this manner even if an enterprise cannot immediately derecognise the asset given up. If the acquired item(s) is/are not measured at fair value, its/their cost is measured at the carrying amount of the asset(s) given up.

27. An enterprise determines whether an exchange transaction has commercial substance by considering the extent to which its future cash flows are expected to change as a result of the transaction. An exchange transaction has commercial substance if:

(a) the configuration (risk, timing and amount) of the cash flows of the asset received differs from the configuration of the cash flows of the asset transferred; or

(b) the enterprise-specific value of the portion of the operations of the enterprise affected by the transaction changes as a result of the exchange;

(c) and the difference in (a) or (b) is significant relative to the fair value of the assets exchanged.

For the purpose of determining whether an exchange transaction has commercial substance, the enterprise-specific value of the portion of operations of the enterprise affected by the transaction should reflect post-tax cash flows. In certain cases, the result of these analyses may be clear without an enterprise having to perform detailed calculations.

28. The fair value of an asset is reliably measurable if (a) the variability in the range of reasonable fair value measurements is not significant for that asset or (b) the probabilities of the various estimates within the range can be reasonably assessed and used when measuring fair value. If an enterprise is able to measure reliably the fair value of either the asset received or the asset given up, then the fair value of the asset given up is used to measure the cost of the asset received unless the fair value of the asset received is more clearly evident.

29. Where several items of property, plant and equipment are purchased for a consolidated price, the consideration is apportioned to the various items on the basis of their respective fair values at the date of acquisition. In case the fair values of the items acquired cannot be measured reliably, these values are estimated on a fair basis as determined by competent valuers.

30. The cost of an item of property, plant and equipment held by a lessee under a finance lease is determined in accordance with AS 19, Leases.

31. The carrying amount of an item of property, plant and equipment may be reduced by government grants in accordance with AS 12, Accounting for Government Grants.

Measurement after Recognition

32. An enterprise should choose either the cost model in paragraph 33 or the revaluation model in paragraph 34 as its accounting policy and should apply that policy to an entire class of property, plant and equipment.

Cost Model

33. After recognition as an asset, an item of property, plant and equipment should be carried at its cost less any accumulated depreciation and any accumulated impairment losses.

Revaluation Model

34. After recognition as an asset, an item of property, plant and equipment whose fair value can be measured reliably should be carried at a revalued amount, being its fair value at the date of the revaluation less any subsequent accumulated depreciation and subsequent accumulated impairment losses. Revaluations should be made with sufficient regularity to ensure that the carrying amount does not differ materially from that which would be determined using fair value at the balance sheet date.

35. The fair value of items of property, plant and equipment is usually determined from market-based evidence by appraisal that is normally undertaken by professionally qualified valuers.

36. If there is no market-based evidence of fair value because of the specialised nature of the item of property, plant and equipment and the item is rarely sold, except as part of a continuing business, an enterprise may need to estimate fair value using an income approach (for example, based on discounted cash flow projections) or a depreciated replacement cost approach which aims at making a realistic estimate of the current cost of acquiring or constructing an item that has the same service potential as the existing item.

37. The frequency of revaluations depends upon the changes in fair values of the items of property, plant and equipment being revalued. When the fair value of a revalued asset differs materially from its carrying amount, a further revaluation is required. Some items of property, plant and equipment experience significant and volatile changes in fair value, thus necessitating annual revaluation. Such frequent revaluations are unnecessary for items of property, plant and equipment with only insignificant changes in fair value. Instead, it may be necessary to revalue the item only every three or five years.

38. When an item of property, plant and equipment is revalued, the carrying amount of that asset is adjusted to the revalued amount. At the date of the revaluation, the asset is treated in one of the following ways:

(a) the gross carrying amount is adjusted in a manner that is consistent with the revaluation of the carrying amount of the asset. For example, the gross carrying amount may be restated by reference to observable market data or it may be restated proportionately to the change in the carrying amount. The accumulated depreciation at the date of the revaluation is adjusted to equal the difference between the gross carrying amount and the carrying amount of the asset after taking into account accumulated impairment losses; or

(b) the accumulated depreciation is eliminated against the gross carrying amount of the asset.

The amount of the adjustment of accumulated depreciation forms part of the increase or decrease in carrying amount that is accounted for in accordance with paragraphs 42 and 43.

39. If an item of property, plant and equipment is revalued, the entire class of property, plant and equipment to

which that asset belongs should be revalued.

40. A class of property, plant and equipment is a grouping of assets of a similar nature and use in operations of an enterprise. The following are examples of separate classes:

(a) land;

(b) land and buildings;

(c) machinery;

(d) ships;

(e) aircraft;

(f) motor vehicles;

(g) furniture and fixtures;

(h) office equipment; and

(i) bearer plants.

41. The items within a class of property, plant and equipment are revalued simultaneously to avoid selective revaluation of assets and the reporting of amounts in the financial statements that are a mixture of costs and values as at different dates. However, a class of assets may be revalued on a rolling basis provided revaluation of the class of assets is completed within a short period and provided the revaluations are kept up to date.

42. An increase in the carrying amount of an asset arising on revaluation should be credited directly to owners' interests under the heading of revaluation surplus. However, the increase should be recognised in the statement of profit and loss to the extent that it reverses a revaluation decrease of the same asset previously recognised in the statement of profit and loss.

43. A decrease in the carrying amount of an asset arising on revaluation should be charged to the statement of profit and loss. However, the decrease should be debited directly to owners' interests under the heading of revaluation surplus to the extent of any credit balance existing in the revaluation surplus in respect of that asset.

44. The revaluation surplus included in owners' interests in respect of an item of property, plant and equipment may be transferred to the revenue reserves when the asset is derecognised. This may involve transferring the whole of the surplus when the asset is retired or disposed of. However, some of the surplus may be transferred as the asset is used by an enterprise. In such a case, the amount of the surplus transferred would be the difference between depreciation based on the revalued carrying amount of the asset and depreciation based on its original cost. Transfers from revaluation surplus to the revenue reserves are not made through the statement of profit and loss.

Depreciation

45. Each part of an item of property, plant and equipment with a cost that is significant in relation to the total cost of the item should be depreciated separately.

46. An enterprise allocates the amount initially recognised in respect of an item of property, plant and equipment to its significant parts and depreciates each such part separately. For example, it may be appropriate to depreciate separately the airframe and engines of an aircraft, whether owned or subject to a finance lease.

47. A significant part of an item of property, plant and equipment may have a useful life and a depreciation method that are the same as the useful life and the depreciation method of another significant part of that same item. Such parts may be grouped in determining the depreciation charge.

48. To the extent that an enterprise depreciates separately some parts of an item of property, plant and equipment, it also depreciates separately the remainder of the item. The remainder consists of the parts of the item that are individually not significant. If an enterprise has varying expectations for these parts, approximation techniques may be necessary to depreciate the remainder in a manner that faithfully represents the consumption pattern and/or useful life of its parts.

49. An enterprise may choose to depreciate separately the parts of an item that do not have a cost that is significant in relation to the total cost of the item.

50. The depreciation charge for each period should be recognised in the statement of profit and loss unless it is included in the carrying amount of another asset.

51. The depreciation charge for a period is usually recognised in the statement of profit and loss. However, sometimes, the future economic benefits embodied in an asset are absorbed in producing other assets. In this case, the depreciation charge constitutes part of the cost of the other asset and is included in its carrying amount. For

example, the depreciation of manufacturing plant and equipment is included in the costs of conversion of inventories (see AS 2). Similarly, the depreciation of property, plant and equipment used for development activities may be included in the cost of an intangible asset recognised in accordance with AS 26, *Intangible Assets*.

Depreciable Amount and Depreciation Period

52. The depreciable amount of an asset should be allocated on a systematic basis over its useful life.

53. The residual value and the useful life of an asset should be reviewed at least at each financial year-end and, if expectations differ from previous estimates, the change(s) should be accounted for as a change in an accounting estimate in accordance with AS 5, Net Profit or Loss for the Period, Prior Period Items and Changes in Accounting Policies.

54. Depreciation is recognised even if the fair value of the asset exceeds its carrying amount, as long as the asset's residual value does not exceed its carrying amount. Repair and maintenance of an asset do not negate the need to depreciate it.

55. The depreciable amount of an asset is determined after deducting its residual value.

56. The residual value of an asset may increase to an amount equal to or greater than its carrying amount. If it does, depreciation charge of the asset is zero unless and until its residual value subsequently decreases to an amount below its carrying amount.

57. Depreciation of an asset begins when it is available for use, *i.e.*, when it is in the location and condition necessary for it to be capable of operating in the manner intended by management. Depreciation of an asset ceases at the earlier of the date that the asset is retired from active use and is held for disposal and the date that the asset is derecognised. Therefore, depreciation does not cease when the asset becomes idle or is retired from active use (but not held for disposal) unless the asset is fully depreciated. However, under usage methods of depreciation, the depreciation charge can be zero while there is no production.

58. The future economic benefits embodied in an asset are consumed by an enterprise principally through its use. However, other factors, such as technical or commercial obsolescence and wear and tear while an asset remains idle, often result in the diminution of the economic benefits that might have been obtained from the asset. Consequently, all the following factors are considered in determining the useful life of an asset:

(a) expected usage of the asset. Usage is assessed by reference to the expected capacity or physical output of the asset.

(b) expected physical wear and tear, which depends on operational factors such as the number of shifts for which the asset is to be used and the repair and maintenance programme, and the care and maintenance of the asset while idle.

(c) technical or commercial obsolescence arising from changes or improvements in production, or from a change in the market demand for the product or service output of the asset. Expected future reductions in the selling price of an item that was produced using an asset could indicate the expectation of technical or commercial obsolescence of the asset, which, in turn, might reflect a reduction of the future economic benefits embodied in the asset.

(d) legal or similar limits on the use of the asset, such as the expiry dates of related leases.

59. The useful life of an asset is defined in terms of its expected utility to the enterprise. The asset management policy of the enterprise may involve the disposal of assets after a specified time or after consumption of a specified proportion of the future economic benefits embodied in the asset. Therefore, the useful life of an asset may be shorter than its economic life. The estimation of the useful life of the asset is a matter of judgement based on the experience of the enterprise with similar assets.

60. Land and buildings are separable assets and are accounted for separately, even when they are acquired together. With some exceptions, such as quarries and sites used for landfill, land has an unlimited useful life and therefore is not depreciated. Buildings have a limited useful life and therefore are depreciable assets. An increase in the value of the land on which a building stands does not affect the determination of the depreciable amount of the building.

61. If the cost of land includes the costs of site dismantlement, removal and restoration, that portion of the land asset is depreciated over the period of benefits obtained by incurring those costs. In some cases, the land itself may have a limited useful life, in which case it is depreciated in a manner that reflects the benefits to be derived from it.

Depreciation Method

62. The depreciation method used should reflect the pattern in which the future economic benefits of the asset are expected to be consumed by the enterprise.

63. The depreciation method applied to an asset should be reviewed at least at each financial year-end and, if there

has been a significant change in the expected pattern of consumption of the future economic benefits embodied in the asset, the method should be changed to reflect the changed pattern. Such a change should be accounted for as a change in an accounting estimate in accordance with AS 5.

64. A variety of depreciation methods can be used to allocate the depreciable amount of an asset on a systematic basis over its useful life. These methods include the straight-line method, the diminishing balance method and the units of production method. Straight-line depreciation results in a constant charge over the useful life if the residual value of the asset does not change. The diminishing balance method results in a decreasing charge over the useful life. The units of production method results in a charge based on the expected use or output. The enterprise selects the method that most closely reflects the expected pattern of consumption of the future economic benefits embodied in the asset. That method is applied consistently from period to period unless there is a change in the expected pattern of consumption of those future economic benefits or that the method is changed in accordance with the statute to best reflect the way the asset is consumed.

65. A depreciation method that is based on revenue that is generated by an activity that includes the use of an asset is not appropriate. The revenue generated by an activity that includes the use of an asset generally reflects factors other than the consumption of the economic benefits of the asset. For example, revenue is affected by other inputs and processes, selling activities and changes in sales volumes and prices. The price component of revenue may be affected by inflation, which has no bearing upon the way in which an asset is consumed.

Changes in Existing Decommissioning, Restoration and Other Liabilities

66. The cost of property, plant and equipment may undergo changes subsequent to its acquisition or construction on account of changes in liabilities, price adjustments, changes in duties, changes in initial estimates of amounts provided for dismantling, removing, restoration and similar factors and included in the cost of the asset in accordance with paragraph 16. Such changes in cost should be accounted for in accordance with paragraphs 67–68 below.

67. If the related asset is measured using the cost model:

(a) subject to (b), changes in the liability should be added to, or deducted from, the cost of the related asset in the current period.

(b) the amount deducted from the cost of the asset should not exceed its carrying amount. If a decrease in the liability exceeds the carrying amount of the asset, the excess should be recognised immediately in the statement of profit and loss.

(c) if the adjustment results in an addition to the cost of an asset, the enterprise should consider whether this is an indication that the new carrying amount of the asset may not be fully recoverable. If it is such an indication, the enterprise should test the asset for impairment by estimating its recoverable amount, and should account for any impairment loss, in accordance with AS 28.

68. If the related asset is measured using the revaluation model:

(a) changes in the liability alter the revaluation surplus or deficit previously recognised on that asset, so that:

(i) a decrease in the liability should (subject to (b)) be credited directly to revaluation surplus in the owners' interest, except that it should be recognised in the statement of profit and loss to the extent that it reverses a revaluation deficit on the asset that was previously recognised in the statement of profit and loss;

(ii) an increase in the liability should be recognised in the statement of profit and loss, except that it should be debited directly to revaluation surplus in the owners' interest to the extent of any credit balance existing in the revaluation surplus in respect of that asset.

(b) in the event that a decrease in the liability exceeds the carrying amount that would have been recognised had the asset been carried under the cost model, the excess should be recognised immediately in the statement of profit and loss.

(c) a change in the liability is an indication that the asset may have to be revalued in order to ensure that the carrying amount does not differ materially from that which would be determined using fair value at the balance sheet date. Any such revaluation should be taken into account in determining the amounts to be taken to the statement of profit and loss and the owners' interest under (a). If a revaluation is necessary, all assets of that class should be revalued.

69. The adjusted depreciable amount of the asset is depreciated over its useful life. Therefore, once the related asset has reached the end of its useful life, all subsequent changes in the liability should be recognised in the statement of profit and loss as they occur. This applies under both the cost model and the revaluation model.

Impairment

70. To determine whether an item of property, plant and equipment is impaired, an enterprise applies AS 28, *Impairment of Assets*. AS 28 explains how an enterprise reviews the carrying amount of its assets, how it determines the recoverable amount of an asset, and when it recognises, or reverses the recognition of, an impairment loss.

Compensation for Impairment

71. Compensation from third parties for items of property, plant and equipment that were impaired, lost or given up should be included in the statement of profit and loss when the compensation becomes receivable.

72. Impairments or losses of items of property, plant and equipment, related claims for or payments of compensation from third parties and any subsequent purchase or construction of replacement assets are separate economic events and are accounted for separately as follows:

(a) impairments of items of property, plant and equipment are recognised in accordance with AS 28;

(b) derecognition of items of property, plant and equipment retired or disposed of is determined in accordance with this Standard;

(c) compensation from third parties for items of property, plant and equipment that were impaired, lost or given up is included in determining profit or loss when it becomes receivable; and

(d) the cost of items of property, plant and equipment restored, purchased or constructed as replacements is determined in accordance with this Standard.

Retirements

73. Items of property, plant and equipment retired from active use and held for disposal should be stated at the lower of their carrying amount and net realisable value. Any write-down in this regard should be recognised immediately in the statement of profit and loss.

Derecognition

74. The carrying amount of an item of property, plant and equipment should be derecognised

(a) on disposal; or

(b) when no future economic benefits are expected from its use or disposal.

75. The gain or loss arising from the derecognition of an item of property, plant and equipment should be included in the statement of profit and loss when the item is derecognised (unless AS 19, Leases, requires otherwise on a sale and leaseback). Gains should not be classified as revenue, as defined in AS 9, Revenue Recognition.

76. However, an enterprise that in the course of its ordinary activities, routinely sells items of property, plant and equipment that it had held for rental to others should transfer such assets to inventories at their carrying amount when they cease to be rented and become held for sale. The proceeds from the sale of such assets should be recognised in revenue in accordance with AS 9, Revenue Recognition.

77. The disposal of an item of property, plant and equipment may occur in a variety of ways (e.g. by sale, by entering into a finance lease or by donation). In determining the date of disposal of an item, an enterprise applies the criteria in AS 9 for recognising revenue from the sale of goods. AS 19, *Leases*, applies to disposal by a sale and leaseback.

78. If, under the recognition principle in paragraph 7, an enterprise recognises in the carrying amount of an item of property, plant and equipment the cost of a replacement for part of the item, then it derecognises the carrying amount of the replaced part regardless of whether the replaced part had been depreciated separately. If it is not practicable for an enterprise to determine the carrying amount of the replaced part, it may use the cost of the replacement as an indication of what the cost of the replaced part was at the time it was acquired or constructed.

79. The gain or loss arising from the derecognition of an item of property, plant and equipment should be determined as the difference between the net disposal proceeds, if any, and the carrying amount of the item.

80. The consideration receivable on disposal of an item of property, plant and equipment is recognised in accordance with the principles enunciated in AS 9.

Disclosure

81. The financial statements should disclose, for each class of property, plant and equipment:

(a) the measurement bases (i.e., cost model or revaluation model) used for determining the gross carrying amount;

(b) the depreciation methods used;

(c) the useful lives or the depreciation rates used. In case the useful lives or the depreciation rates used are

IndiaCode

different from those specified in the statute governing the enterprise, it should make a specific mention of that fact;

(d) the gross carrying amount and the accumulated depreciation (aggregated with accumulated impairment losses) at the beginning and end of the period; and

(e) a reconciliation of the carrying amount at the beginning and end of the period showing:

(i) additions;

(ii) assets retired from active use and held for disposal;

(iii) acquisitions through business combinations;

(iv) increases or decreases resulting from revaluations under paragraphs 34, 42 and 43 and from impairment losses recognised or reversed directly in revaluation surplus in accordance with AS 28;

(v) impairment losses recognised in the statement of profit and loss in accordance with AS 28;

(vi) impairment losses reversed in the statement of profit and loss in accordance with AS 28;

(vii) depreciation;

(viii) the net exchange differences arising on the translation of the financial statements of a non-integral foreign operation in accordance with AS 11, The Effects of Changes in Foreign Exchange Rates; and

(ix) other changes.

82. The financial statements should also disclose:

(a) the existence and amounts of restrictions on title, and property, plant and equipment pledged as security for liabilities;

(b) the amount of expenditure recognised in the carrying amount of an item of property, plant and equipment in the course of its construction;

(c) the amount of contractual commitments for the acquisition of property, plant and equipment;

(d) if it is not disclosed separately on the face of the statement of profit and loss, the amount of compensation from third parties for items of property, plant and equipment that were impaired, lost or given up that is included in the statement of profit and loss; and

(e) the amount of assets retired from active use and held for disposal.

83. Selection of the depreciation method and estimation of the useful life of assets are matters of judgement. Therefore, disclosure of the methods adopted and the estimated useful lives or depreciation rates provides users of financial statements with information that allows them to review the policies selected by management and enables comparisons to be made with other enterprises. For similar reasons, it is necessary to disclose:

(a) depreciation, whether recognised in the statement of profit and loss or as a part of the cost of other assets, during a period; and

(b) accumulated depreciation at the end of the period.

84. In accordance with AS 5, an enterprise discloses the nature and effect of a change in an accounting estimate that has an effect in the current period or is expected to have an effect in subsequent periods. For property, plant and equipment, such disclosure may arise from changes in estimates with respect to:

(a) residual values;

(b) the estimated costs of dismantling, removing or restoring items of property, plant and equipment;

(c) useful lives; and

(d) depreciation methods.

85. If items of property, plant and equipment are stated at revalued amounts, the following should be disclosed:

(a) the effective date of the revaluation;

(b) whether an independent valuer was involved;

(c) the methods and significant assumptions applied in estimating fair values of the items;

(d) the extent to which fair values of the items were determined directly by reference to observable

IndiaCode

prices in an active market or recent market transactions on arm's length terms or were estimated using other valuation techniques; and

(e) the revaluation surplus, indicating the change for the period and any restrictions on the distribution of the balance to shareholders.

86. In accordance with AS 28, an enterprise discloses information on impaired property, plant and equipment in addition to the information required by paragraph 81(e)(iv), (v) and (vi).

87. An enterprise is encouraged to disclose the following:

(a) the carrying amount of temporarily idle property, plant and equipment;

(b) the gross carrying amount of any fully depreciated property, plant and equipment that is still in use;

(c) for each revalued class of property, plant and equipment, the carrying amount that would have been recognised had the assets been carried under the cost model;

(d) the carrying amount of property, plant and equipment retired from active use and not held for disposal.

Transitional Provisions[6]

88. Where an entity has in past recognized an expenditure in the statement of profit and loss which is eligible to be included as a part of the cost of a project for construction of property, plant and equipment in accordance with the requirements of paragraph 9, it may do so retrospectively for such a project. The effect of such retrospective application of this requirement, should be recognised net-of-tax in revenue reserves.

89. The requirements of paragraphs 26-28 regarding the initial measurement of an item of property, plant and equipment acquired in an exchange of assets transaction should be applied prospectively only to transactions entered into after this Standard becomes mandatory.

90. On the date of this Standard becoming mandatory, the spare parts, which hitherto were being treated as inventory under AS 2, Valuation of Inventories, and are now required to be capitalised in accordance with the requirements of this Standard, should be capitalised at their respective carrying amounts. The spare parts so capitalised should be depreciated over their remaining useful lives prospectively as per the requirements of this Standard.

91. The requirements of paragraph 32 and paragraphs 34 – 44 regarding the revaluation model should be applied prospectively. In case, on the date of this Standard becoming mandatory, an enterprise does not adopt the revaluation model as its accounting policy but the carrying amount of item(s) of property, plant and equipment reflects any previous revaluation it should adjust the amount outstanding in the revaluation reserve against the carrying amount of that item. However, the carrying amount of that item should never be less than residual value. Any excess of the amount outstanding as revaluation reserve over the carrying amount of that item should be adjusted in revenue reserves.

Accounting Standard (AS) 11[*]

The Effects of Changes in Foreign Exchange Rates

*(This Accounting Standard includes paragraphs set in **bold italic** type and plain type, which have equal authority. Paragraphs in bold italic type indicate the main principles. This Accounting Standard should be read in the context of its objective and the General Instructions contained in part A of the Annexure to the Notification.)*

Objective

An enterprise may carry on activities involving foreign exchange in two ways. It may have transactions in foreign currencies or it may have foreign operations. In order to include foreign currency transactions and foreign operations in the financial statements of an enterprise, transactions must be expressed in the enterprise's reporting currency and the financial statements of foreign operations must be translated into the enterprise's reporting currency.

[6] Transitional Provisions given in Paragraphs 88-91 are relevant only for standards notified under Companies (Accounting Standards) Rules, 2006, as amended from time to time.

[*] In respect of accounting for transactions in foreign currencies entered into by the reporting enterprise itself or through its branches before the effective date of the notification prescribing Accounting Standard (AS) 11 as part of Companies (Accounting Standards) Rules, 2006, the applicability of this Standard would be determined on the basis of the Accounting Standard (AS) 11 revised by the ICAI in 2003.

The principal issues in accounting for foreign currency transactions and foreign operations are to decide which exchange rate to use and how to recognise in the financial statements the financial effect of changes in exchange rates.

Scope

1. This Standard should be applied:

(a) in accounting for transactions in foreign currencies; and

(b) in translating the financial statements of foreign operations.

2. This Standard also deals with accounting for foreign currency transactions in the nature of forward exchange contracts.[1]

3. This Standard does not specify the currency in which an enterprise presents its financial statements. However, an enterprise normally uses the currency of the country in which it is domiciled. If it uses a different currency, this Standard requires disclosure of the reason for using that currency. This Standard also requires disclosure of the reason for any change in the reporting currency.

4. This Standard does not deal with the restatement of an enterprise's financial statements from its reporting currency into another currency for the convenience of users accustomed to that currency or for similar purposes.

5. This Standard does not deal with the presentation in a cash flow statement of cash flows arising from transactions in a foreign currency and the translation of cash flows of a foreign operation (see AS 3, *Cash Flow Statements*).

6. This Standard does not deal with exchange differences arising from foreign currency borrowings to the extent that they are regarded as an adjustment to interest costs (see paragraph 4(e) of AS 16, *Borrowing Costs*).

Definitions

7. The following terms are used in this Standard with the meanings specified:

7.1 Average rate is the mean of the exchange rates in force during a period.

7.2 Closing rate is the exchange rate at the balance sheet date.

7.3 Exchange difference is the difference resulting from reporting the same number of units of a foreign currency in the reporting currency at different exchange rates.

7.4 Exchange rate is the ratio for exchange of two currencies.

7.5 Fair value is the amount for which an asset could be exchanged, or a liability settled, between knowledgeable, willing parties in an arm's length transaction.

7.6 Foreign currency is a currency other than the reporting currency of an enterprise.

7.7 Foreign operation is a subsidiary[7], associate[8], joint venture[9] or branch of the reporting enterprise, the activities of which are based or conducted in a country other than the country of the reporting enterprise.

7.8 Forward exchange contract means an agreement to exchange different currencies at a forward rate.

7.9 Forward rate is the specified exchange rate for exchange of two currencies at a specified future date.

7.10 Integral foreign operation is a foreign operation, the activities of which are an integral part of those of the reporting enterprise.

---

[1] This Standard is applicable to exchange differences on all forward exchange contracts including those entered into to hedge the foreign currency risk of existing assets and liabilities and is not applicable to exchange difference arising on forward exchange contracts entered into to hedge the foreign currency risk of future transactions in respect of which a firm commitments are made or which are highly probable forecast transactions. A 'firm commitment' is a binding agreement for the exchange of a specified quantity of resources at a specified price on a specified future date or dates and a 'forecast transaction' is an uncommitted but anticipated future transaction.

[7] As defined in AS 21, *Consolidated Financial Statements*.

[8] As defined in AS 23, *Accounting for Investments in Associates in Consolidated Financial Statements*.

[9] As defined in AS 27, *Financial Reporting of Interests in Joint Ventures*.

7.11 Monetary items are money held and assets and liabilities to be received or paid in fixed or determinable amounts of money.

7.12 Net investment in a non-integral foreign operation is the reporting enterprise's share in the net assets of that operation.

7.13 Non-integral foreign operation is a foreign operation that is not an integral foreign operation.

7.14 Non-monetary items are assets and liabilities other than monetary items.

7.15 Reporting currency is the currency used in presenting the financial statements.

Foreign Currency Transactions

Initial Recognition

8. A foreign currency transaction is a transaction which is denominated in or requires settlement in a foreign currency, including transactions arising when an enterprise either:

(a) buys or sells goods or services whose price is denominated in a foreign currency;

(b) borrows or lends funds when the amounts payable or receivable are denominated in a foreign currency;

(c) becomes a party to an unperformed forward exchange contract; or

(d) otherwise acquires or disposes of assets, or incurs or settles liabilities, denominated in a foreign currency.

9. A foreign currency transaction should be recorded, on initial recognition in the reporting currency, by applying to the foreign currency amount, the exchange rate between the reporting currency and the foreign currency at the date of the transaction.

10. For practical reasons, a rate that approximates the actual rate at the date of the transaction is often used, for example, an average rate for a week or a month might be used for all transactions in each foreign currency occurring during that period. However, if exchange rates fluctuate significantly, the use of the average rate for a period is unreliable.

IndiaCode

Reporting at Subsequent Balance Sheet Dates

11. At each balance sheet date:

(a) foreign currency monetary items should be reported using the closing rate. However, in certain circumstances, the closing rate may not reflect with reasonable accuracy the amount in reporting currency that is likely to be realised from, or required to disburse, a foreign currency monetary item at the balance sheet date, e.g., where there are restrictions on remittances or where the closing rate is unrealistic and it is not possible to effect an exchange of currencies at that rate at the balance sheet date. In such circumstances, the relevant monetary item should be reported in the reporting currency at the amount which is likely to be realised from, or required to disburse, such item at the balance sheet date;

(b) non-monetary items which are carried in terms of historical cost denominated in a foreign currency should be reported using the exchange rate at the date of the transaction; and

(c) non-monetary items which are carried at fair value or other similar valuation denominated in a foreign currency should be reported using the exchange rates that existed when the values were determined.

12. Cash, receivables and payables are examples of monetary items. Fixed assets, inventories and investments in equity shares are examples of non-monetary items. The carrying amount of an item is determined in accordance with the relevant Accounting Standards. For example, certain assets may be measured at fair value or other similar valuation (e.g., net realisable value) or at historical cost. Whether the carrying amount is determined based on fair value or other similar valuation or at historical cost, the amounts so determined for foreign currency items are then reported in the reporting currency in accordance with this Standard. The contingent liability denominated in foreign currency at the balance sheet date is disclosed by using the closing rate.

Recognition of Exchange Differences

13. Exchange differences arising on the settlement of monetary items or on reporting an enterprise's monetary items at rates different from those at which they were initially recorded during the period, or reported in previous financial statements, should be recognised as income or as expenses in the period in which they arise, with the exception of exchange differences dealt with in accordance with paragraph 15.

14. An exchange difference results when there is a change in the exchange rate between the transaction date and the

date of settlement of any monetary items arising from a foreign currency transaction. When the transaction is settled within the same accounting period as that in which it occurred, all the exchange difference is recognised in that period. However, when the transaction is settled in a subsequent accounting period, the exchange difference recognised in each intervening period up to the period of settlement is determined by the change in exchange rates during that period.

Net Investment in a Non-integral Foreign Operation

15. Exchange differences arising on a monetary item that, in substance, forms part of an enterprise's net investment in a non-integral foreign operation should be accumulated in a foreign currency translation reserve in the enterprise's financial statements until the disposal of the net investment, at which time they should be recognised as income or as expenses in accordance with paragraph 31.

16. An enterprise may have a monetary item that is receivable from, or payable to, a non-integral foreign operation. An item for which settlement is neither planned nor likely to occur in the foreseeable future is, in substance, an extension to, or deduction from, the enterprise's net investment in that non-integral foreign operation. Such monetary items may include long-term receivables or loans but do not include trade receivables or trade payables.

Financial Statements of Foreign Operations

Classification of Foreign Operations

17. The method used to translate the financial statements of a foreign operation depends on the way in which it is financed and operates in relation to the reporting enterprise. For this purpose, foreign operations are classified as either "integral foreign operations" or "non-integral foreign operations".

18. A foreign operation that is integral to the operations of the reporting enterprise carries on its business as if it were an extension of the reporting enterprise's operations. For example, such a foreign operation might only sell goods imported from the reporting enterprise and remit the proceeds to the reporting enterprise. In such cases, a change in the exchange rate between the reporting currency and the currency in the country of foreign operation has an almost immediate effect on the reporting enterprise's cash flow from operations. Therefore, the change in the exchange rate affects the individual monetary items held by the foreign operation rather than the reporting enterprise's net investment in that operation.

19. In contrast, a non-integral foreign operation accumulates cash and other monetary items, incurs expenses, generates income and perhaps arranges borrowings, all substantially in its local currency. It may also enter into transactions in foreign currencies, including transactions in the reporting currency. When there is a change in the exchange rate between the reporting currency and the local currency, there is little or no direct effect on the present and future cash flows from operations of either the non-integral foreign operation or the reporting enterprise. The change in the exchange rate affects the reporting enterprise's net investment in the non-integral foreign operation rather than the individual monetary and non-monetary items held by the non-integral foreign operation.

20. The following are indications that a foreign operation is a non-integral foreign operation rather than an integral foreign operation:

(a) while the reporting enterprise may control the foreign operation, the activities of the foreign operation are carried out with a significant degree of autonomy from those of the reporting enterprise;

(b) transactions with the reporting enterprise are not a high proportion of the foreign operation's activities;

(c) the activities of the foreign operation are financed mainly from its own operations or local borrowings rather than from the reporting enterprise;

(d) costs of labour, material and other components of the foreign operation's products or services are primarily paid or settled in the local currency rather than in the reporting currency;

(e) the foreign operation's sales are mainly in currencies other than the reporting currency;

(f) cash flows of the reporting enterprise are insulated from the day-to-day activities of the foreign operation rather than being directly affected by the activities of the foreign operation;

(g) sales prices for the foreign operation's products are not primarily responsive on a short-term basis to changes in exchange rates but are determined more by local competition or local government regulation; and

(h) there is an active local sales market for the foreign operation's products, although there also might be significant amounts of exports.

The appropriate classification for each operation can, in principle, be established from factual information related to the indicators listed above. In some cases, the classification of a foreign operation as either a non-integral foreign operation or an integral foreign operation of the reporting enterprise may not be clear, and judgement is necessary to

determine the appropriate classification.

Integral Foreign Operations

21. The financial statements of an integral foreign operation should be translated using the principles and procedures in paragraphs 8 to 16 as if the transactions of the foreign operation had been those of the reporting enterprise itself.

22. The individual items in the financial statements of the foreign operation are translated as if all its transactions had been entered into by the reporting enterprise itself. The cost and depreciation of tangible fixed assets is translated using the exchange rate at the date of purchase of the asset or, if the asset is carried at fair value or other similar valuation, using the rate that existed on the date of the valuation. The cost of inventories is translated at the exchange rates that existed when those costs were incurred. The recoverable amount or realisable value of an asset is translated using the exchange rate that existed when the recoverable amount or net realisable value was determined. For example, when the net realisable value of an item of inventory is determined in a foreign currency, that value is translated using the exchange rate at the date as at which the net realisable value is determined. The rate used is therefore usually the closing rate. An adjustment may be required to reduce the carrying amount of an asset in the financial statements of the reporting enterprise to its recoverable amount or net realisable value even when no such adjustment is necessary in the financial statements of the foreign operation. Alternatively, an adjustment in the financial statements of the foreign operation may need to be reversed in the financial statements of the reporting enterprise.

23. For practical reasons, a rate that approximates the actual rate at the date of the transaction is often used, for example, an average rate for a week or a month might be used for all transactions in each foreign currency occurring during that period. However, if exchange rates fluctuate significantly, the use of the average rate for a period is unreliable.

Non-integral Foreign Operations

24. In translating the financial statements of a non-integral foreign operation for incorporation in its financial statements, the reporting enterprise should use the following procedures:

(a) the assets and liabilities, both monetary and non-monetary, of the non-integral foreign operation should be translated at the closing rate;

(b) income and expense items of the non-integral foreign operation should be translated at exchange rates at the dates of the transactions; and

(c) all resulting exchange differences should be accumulated in a foreign currency translation reserve until the disposal of the net investment.

25. For practical reasons, a rate that approximates the actual exchange rates, for example an average rate for the period, is often used to translate income and expense items of a foreign operation.

26. The translation of the financial statements of a non-integral foreign operation results in the recognition of exchange differences arising from:

(a) translating income and expense items at the exchange rates at the dates of transactions and assets and liabilities at the closing rate;

(b) translating the opening net investment in the non-integral foreign operation at an exchange rate different from that at which it was previously reported; and

(c) other changes to equity in the non-integral foreign operation. These exchange differences are not recognised as income or expenses for the period because the changes in the exchange rates have little or no direct effect on the present and future cash flows from operations of either the non-integral foreign operation or the reporting enterprise. When a non- integral foreign operation is consolidated but is not wholly owned, accumulated exchange differences arising from translation and attributable to minority interests are allocated to, and reported as part of, the minority interest in the consolidated balance sheet.

27. Any goodwill or capital reserve arising on the acquisition of a non- integral foreign operation is translated at the closing rate in accordance with paragraph 24.

28. A contingent liability disclosed in the financial statements of a non- integral foreign operation is translated at the closing rate for its disclosure in the financial statements of the reporting enterprise.

29. The incorporation of the financial statements of a non-integral foreign operation in those of the reporting enterprise follows normal consolidation procedures, such as the elimination of intra-group balances and intra- group transactions of a subsidiary (see AS 21, *Consolidated Financial Statements*, and AS 27, *Financial Reporting of Interests in Joint Ventures*). However, an exchange difference arising on an intra-group monetary item, whether

short-term or long-term, cannot be eliminated against a corresponding amount arising on other intra-group balances because the monetary item represents a commitment to convert one currency into another and exposes the reporting enterprise to a gain or loss through currency fluctuations. Accordingly, in the consolidated financial statements of the reporting enterprise, such an exchange difference continues to be recognised as income or an expense or, if it arises from the circumstances described in paragraph 15, it is accumulated in a foreign currency translation reserve until the disposal of the net investment.

30. When the financial statements of a non-integral foreign operation are drawn up to a different reporting date from that of the reporting enterprise, the non-integral foreign operation often prepares, for purposes of incorporation in the financial statements of the reporting enterprise, statements as at the same date as the reporting enterprise. When it is impracticable to do this, AS 21, *Consolidated Financial Statements*, allows the use of financial statements drawn up to a different reporting date provided that the difference is no greater than six months and adjustments are made for the effects of any significant transactions or other events that occur between the different reporting dates. In such a case, the assets and liabilities of the non-integral foreign operation are translated at the exchange rate at the balance sheet date of the non-integral foreign operation and adjustments are made when appropriate for significant movements in exchange rates up to the balance sheet date of the reporting enterprises in accordance with AS 21. The same approach is used in applying the equity method to associates and in applying proportionate consolidation to joint ventures in accordance with AS 23, *Accounting for Investments in Associates in Consolidated Financial Statements* and AS 27, *Financial Reporting of Interests in Joint Ventures*.

Disposal of a Non-integral Foreign Operation

31. On the disposal of a non-integral foreign operation, the cumulative amount of the exchange differences which have been deferred and which relate to that operation should be recognised as income or as expenses in the same period in which the gain or loss on disposal is recognised.

32. An enterprise may dispose of its interest in a non-integral foreign operation through sale, liquidation, repayment of share capital, or abandonment of all, or part of, that operation. The payment of a dividend forms part of a disposal only when it constitutes a return of the investment. Remittance from a non-integral foreign operation by way of repatriation of accumulated profits does not form part of a disposal unless it constitutes return of the investment. In the case of a partial disposal, only the proportionate share of the related accumulated exchange differences is included in the gain or loss. A write- down of the carrying amount of a non-integral foreign operation does not constitute a partial disposal. Accordingly, no part of the deferred foreign exchange gain or loss is recognised at the time of a write-down.

Change in the Classification of a Foreign Operation

33. When there is a change in the classification of a foreign operation, the translation procedures applicable to the revised classification should be applied from the date of the change in the classification.

34. The consistency principle requires that foreign operation once classified as integral or non-integral is continued to be so classified. However, a change in the way in which a foreign operation is financed and operates in relation to the reporting enterprise may lead to a change in the classification of that foreign operation. When a foreign operation that is integral to the operations of the reporting enterprise is reclassified as a non-integral foreign operation, exchange differences arising on the translation of non-monetary assets at the date of the reclassification are accumulated in a foreign currency translation reserve. When a non-integral foreign operation is reclassified as an integral foreign operation, the translated amounts for non-monetary items at the date of the change are treated as the historical cost for those items in the period of change and subsequent periods. Exchange differences which have been deferred are not recognised as income or expenses until the disposal of the operation.

All Changes in Foreign Exchange Rates

Tax Effects of Exchange Differences

35. Gains and losses on foreign currency transactions and exchange differences arising on the translation of the financial statements of foreign operations may have associated tax effects which are accounted for in accordance with AS 22, *Accounting for Taxes on Income*.

Forward Exchange Contracts[10]

36. An enterprise may enter into a forward exchange contract or another financial instrument that is in substance a forward exchange contract, which is not intended for trading or speculation purposes, to establish the amount of the reporting currency required or available at the settlement date of a transaction. The premium or discount arising at the inception of such a forward exchange contract should be amortised as expense or income over the life of the contract. Exchange differences on such a contract should be recognised in the statement of profit and loss in the reporting period in which the exchange rates change. Any profit or loss

[10] See footnote 1 of AS 11.

arising on cancellation or renewal of such a forward exchange contract should be recognised as income or as expense for the period.

37. The risks associated with changes in exchange rates may be mitigated by entering into forward exchange contracts. Any premium or discount arising at the inception of a forward exchange contract is accounted for separately from the exchange differences on the forward exchange contract. The premium or discount that arises on entering into the contract is measured by the difference between the exchange rate at the date of the inception of the forward exchange contract and the forward rate specified in the contract. Exchange difference on a forward exchange contract is the difference between (a) the foreign currency amount of the contract translated at the exchange rate at the reporting date, or the settlement date where the transaction is settled during the reporting period, and (b) the same foreign currency amount translated at the latter of the date of inception of the forward exchange contract and the last reporting date.

38. A gain or loss on a forward exchange contract to which paragraph 36 does not apply should be computed by multiplying the foreign currency amount of the forward exchange contract by the difference between the forward rate available at the reporting date for the remaining maturity of the contract and the contracted forward rate (or the forward rate last used to measure a gain or loss on that contract for an earlier period). The gain or loss so computed should be recognised in the statement of profit and loss for the period. The premium or discount on the forward exchange contract is not recognised separately.

39. In recording a forward exchange contract intended for trading or speculation purposes, the premium or discount on the contract is ignored and at each balance sheet date, the value of the contract is marked to its current market value and the gain or loss on the contract is recognised.

Disclosure

40. An enterprise should disclose:

(a) the amount of exchange differences included in the net profit or loss for the period; and

(b) net exchange differences accumulated in foreign currency translation reserve as a separate component of shareholders' funds, and a reconciliation of the amount of such exchange differences at the beginning and end of the period.

41. When the reporting currency is different from the currency of the country in which the enterprise is domiciled, the reason for using a different currency should be disclosed. The reason for any change in the reporting currency should also be disclosed.

42. When there is a change in the classification of a significant foreign operation, an enterprise should disclose:

(a) the nature of the change in classification;

(b) the reason for the change;

(c) the impact of the change in classification on shareholders' funds; and

(d) the impact on net profit or loss for each prior period presented had the change in classification occurred at the beginning of the earliest period presented.

43. The effect on foreign currency monetary items or on the financial statements of a foreign operation of a change in exchange rates occurring after the balance sheet date is disclosed in accordance with AS 4, *Contingencies and Events Occurring After the Balance Sheet Date.*

44. Disclosure is also encouraged of an enterprise's foreign currency risk management policy.

Transitional Provisions[11]

45. On the first time application of this Standard, if a foreign branch is classified as a non-integral foreign operation in accordance with the requirements of this Standard, the accounting treatment prescribed in paragraphs 33 and 34 of the Standard in respect of change in the classification of a foreign operation should be applied.

46. In respect of accounting periods commencing on or after 7th December, 2006 and ending on or before 31st

[11] Transitional Provisions given in Paragraphs 45 are relevant only for standards notified under Companies (Accounting Standards) Rules, 2006, as amended from time to time. Transitional Provisions given in Paragraphs 46-46A are relevant for standards notified under Companies (Accounting Standards) Rules, 2006 (as amended from time to time) as well as Companies (Accounting Standards) Rules, 2021.

March, 2020[12], at the option of the enterprise (such option to be irrevocable and to be exercised retrospectively for such accounting period, from the date this transitional provision comes into force or the first date on which the concerned foreign currency monetary item is acquired, whichever is later, and applied to all such foreign currency monetary items), exchange differences arising on reporting of long-term foreign currency monetary items at rates different from those at which they were initially recorded during the period, or reported in previous financial statements, in so far as they relate to the acquisition of a depreciable capital asset, can be added to or deducted from the cost of the asset and shall be depreciated over the balance life of the asset, and in other cases, can be accumulated in a "Foreign Currency Monetary Item Translation Difference Account" in the enterprise's financial statements and amortized over the balance period of such long-term asset/liability but not beyond 31st March, 2020[13], by recognition as income or expense in each of such periods, with the exception of exchange differences dealt with in accordance with paragraph 15. For the purposes of exercise of this option, an asset or liability shall be designated as a long-term foreign currency monetary item, if the asset or liability is expressed in a foreign currency and has a term of 12 months or more at the date of origination of the asset or liability. Any difference pertaining to accounting periods which commenced on or after 7th December, 2006, previously recognized in the profit and loss account before the exercise of the option shall be reversed in so far as it relates to the acquisition of a depreciable capital asset by addition or deduction from the cost of the asset and in other cases by transfer to "Foreign Currency Monetary Item Translation Difference Account" in both cases, by debit or credit, as the case may be, to the general reserve. If the option stated in this paragraph is exercised, disclosure shall be made of the fact of such exercise of such option and of the amount remaining to be amortized in the financial statements of the period in which such option is exercised and in every subsequent period so long as any exchange difference remains unamortized.

46A. (1) In respect of accounting periods commencing on or after the 1st April, 2011, for an enterprise which had earlier exercised the option under paragraph 46 and at the option of any other enterprise (such option to be irrevocable and to be applied to all such foreign currency monetary items), the exchange differences arising on reporting of long- term foreign currency monetary items at rates different from those at which they were initially recorded during the period, or reported in previous financial statements, in so far as they relate to the acquisition of a depreciable capital asset, can be added to or deducted from the cost of the asset and shall be depreciated over the balance life of the asset, and in other cases, can be accumulated in a ''Foreign Currency Monetary Item Translation Difference Account" in the enterprise's financial statements and amortized over the balance period of such long term asset or liability, by recognition as income or expense in each of such periods, with the exception of exchange differences dealt with in accordance with the provisions of paragraph 15 of the said rules.

(2) To exercise the option referred to in sub-paragraph (1), an asset or liability shall be designated as a long-term foreign currency monetary item, if the asset or liability is expressed in a foreign currency and has a term of twelve months or more at the date of origination of the asset or the liability:

Provided that the option exercised by the enterprise shall disclose the fact of such option and of the amount remaining to be amortized in the financial statements of the period in which such option is exercised and in every subsequent period so long as any exchange difference remains unamortized.

Accounting Standard (AS) 12

Accounting for Government Grants

*(This Accounting Standard includes paragraphs set in **bold italic** type and plain type, which have equal authority. Paragraphs in bold italic type indicate the main principles. This Accounting Standard should be read in the context of the General Instructions contained in part A of the Annexure to the Notification.)*

Introduction

1. This Standard deals with accounting for government grants. Government grants are sometimes called by other names such as subsidies, cash incentives, duty drawbacks, etc.

2. This Standard does not deal with:

(i) the special problems arising in accounting for government grants in financial statements reflecting the effects

[12] Initially the period mentioned was "31st March, 2011" which was substituted by "31st March, 2012" by Notification dated 11th May, 2011, published by Ministry of Corporate Affairs, Government of India. Subsequently, "31st March, 2012" was substituted by "31st March, 2020" by Notification dated 29th December, 2011, published by Ministry of Corporate Affairs, Government of India.

[13] ibid

of changing prices or in supplementary information of a similar nature;

(ii) government assistance other than in the form of government grants;

(iii) government participation in the ownership of the enterprise.

Definitions

3. The following terms are used in this Standard with the meanings specified:

3.1 Government refers to government, government agencies and similar bodies whether local, national or international.

3.2. Government grants are assistance by government in cash or kind to an enterprise for past or future compliance with certain conditions. They exclude those forms of government assistance which cannot reasonably have a value placed upon them and transactions with government which cannot be distinguished from the normal trading transactions of the enterprise.

Explanation

4. The receipt of government grants by an enterprise is significant for preparation of the financial statements for two reasons. Firstly, if a government grant has been received, an appropriate method of accounting therefor is necessary. Secondly, it is desirable to give an indication of the extent to which the enterprise has benefited from such grant during the reporting period. This facilitates comparison of an enterprise's financial statements with those of prior periods and with those of other enterprises.

Accounting Treatment of Government Grants

5. Capital Approach versus Income Approach

5.1 Two broad approaches may be followed for the accounting treatment of government grants: the 'capital approach', under which a grant is treated as part of shareholders' funds, and the 'income approach', under which a grant is taken to income over one or more periods.

5.2 Those in support of the 'capital approach' argue as follows:

(i) Many government grants are in the nature of promoters' contribution, i.e., they are given with reference to the total investment in an undertaking or by way of contribution towards its total capital outlay and no repayment is ordinarily expected in the case of such grants. These should, therefore, be credited directly to shareholders' funds.

(ii) It is inappropriate to recognise government grants in the profit and loss statement, since they are not earned but represent an incentive provided by government without related costs.

5.3 Arguments in support of the 'income approach' are as follows:

(i) Government grants are rarely gratuitous. The enterprise earns them through compliance with their conditions and meeting the envisaged obligations. They should therefore be taken to income and matched with the associated costs which the grant is intended to compensate.

(ii) As income tax and other taxes are charges against income, it is logical to deal also with government grants, which are an extension of fiscal policies, in the profit and loss statement.

(iii) In case grants are credited to shareholders' funds, no correlation is done between the accounting treatment of the grant and the accounting treatment of the expenditure to which the grant relates.

5.4 It is generally considered appropriate that accounting for government grant should be based on the nature of the relevant grant. Grants which have the characteristics similar to those of promoters' contribution should be treated as part of shareholders' funds. Income approach may be more appropriate in the case of other grants.

5.5 It is fundamental to the 'income approach' that government grants be recognised in the profit and loss statement on a systematic and rational basis over the periods necessary to match them with the related costs. Income recognition of government grants on a receipts basis is not in accordance with the accrual accounting assumption (see Accounting Standard (AS) 1, *Disclosure of Accounting Policies*).

5.6 In most cases, the periods over which an enterprise recognises the costs or expenses related to a government grant are readily ascertainable and thus grants in recognition of specific expenses are taken to income in the same period as the relevant expenses.

6. Recognition of Government Grants

6.1 Government grants available to the enterprise are considered for inclusion in accounts:

(i) where there is reasonable assurance that the enterprise will comply with the conditions attached to them; and

India Code

(ii) where such benefits have been earned by the enterprise and it is reasonably certain that the ultimate collection will be made.

Mere receipt of a grant is not necessarily a conclusive evidence that conditions attaching to the grant have been or will be fulfilled.

6.2 An appropriate amount in respect of such earned benefits, estimated on a prudent basis, is credited to income for the year even though the actual amount of such benefits may be finally settled and received after the end of the relevant accounting period.

6.3 A contingency related to a government grant, arising after the grant has been recognised, is treated in accordance with Accounting Standard (AS) 4, *Contingencies and Events Occurring After the Balance Sheet Date*[14].

6.4 In certain circumstances, a government grant is awarded for the purpose of giving immediate financial support to an enterprise rather than as an incentive to undertake specific expenditure. Such grants may be confined to an individual enterprise and may not be available to a whole class of enterprises. These circumstances may warrant taking the grant to income in the period in which the enterprise qualifies to receive it, as an extraordinary item if appropriate (see Accounting Standard (AS) 5, *Net Profit or Loss for the Period, Prior Period Items and Changes in Accounting Policies*).

6.5 Government grants may become receivable by an enterprise as compensation for expenses or losses incurred in a previous accounting period. Such a grant is recognised in the income statement of the period in which it becomes receivable, as an extraordinary item if appropriate (see Accounting Standard (AS) 5, *Net Profit or Loss for the Period, Prior Period Items and Changes in Accounting Policies*).

7. Non-monetary Government Grants

7.1 Government grants may take the form of non-monetary assets, such as land or other resources, given at concessional rates. In these circumstances, it is usual to account for such assets at their acquisition cost. Non-monetary assets given free of cost are recorded at a nominal value.

8. Presentation of Grants Related to Specific Fixed Assets

8.1 Grants related to specific fixed assets are government grants whose primary condition is that an enterprise qualifying for them should purchase, construct or otherwise acquire such assets. Other conditions may also be attached restricting the type or location of the assets or the periods during which they are to be acquired or held.

8.2 Two methods of presentation in financial statements of grants (or the appropriate portions of grants) related to specific fixed assets are regarded as acceptable alternatives.

8.3 Under one method, the grant is shown as a deduction from the gross value of the asset concerned in arriving at its book value. The grant is thus recognised in the profit and loss statement over the useful life of a depreciable asset by way of a reduced depreciation charge. Where the grant equals the whole, or virtually the whole, of the cost of the asset, the asset is shown in the balance sheet at a nominal value.

8.4 Under the other method, grants related to depreciable assets are treated as deferred income which is recognised in the statement of profit and loss on a systematic and rational basis over the useful life of the asset. Such allocation to income is usually made over the periods and in the proportions in which depreciation on related assets is charged. Grants related to non-depreciable assets are credited to capital reserve under this method, as there is usually no charge to income in respect of such assets. However, if a grant related to a non-depreciable asset requires the fulfillment of certain obligations, the grant is credited to income over the same period over which the cost of meeting such obligations is charged to income. The deferred income is suitably disclosed in the balance sheet pending its apportionment to statement of profit and loss.

8.5 The purchase of assets and the receipt of related grants can cause major movements in the cash flow of an enterprise. For this reason and in order to show the gross investment in assets, such movements are often disclosed as separate items in the statement of changes in financial position regardless of whether or not the grant is deducted from the related asset for the purpose of balance sheet presentation.

9. Presentation of Grants Related to Revenue

9.1 Grants related to revenue are sometimes presented as a credit in the profit and loss statement, either separately or under a general heading such as 'Other Income'. Alternatively, they are deducted in reporting the related expense.

[14] All paragraphs of AS 4 that deal with contingencies are applicable only to the extent not covered by other Accounting Standards prescribed by the Central Government. For example, the impairment of financial assets such as impairment of receivables (commonly known as provision for bad and doubtful debts) is governed by AS 4.

9.2 Supporters of the first method claim that it is inappropriate to net income and expense items and that separation of the grant from the expense facilitates comparison with other expenses not affected by a grant. For the second method, it is argued that the expense might well not have been incurred by the enterprise if the grant had not been available and presentation of the expense without offsetting the grant may therefore be misleading.

10. Presentation of Grants of the nature of Promoters' contribution

10.1 Where the government grants are of the nature of promoters' contribution, i.e., they are given with reference to the total investment in an undertaking or by way of contribution towards its total capital outlay (for example, central investment subsidy scheme) and no repayment is ordinarily expected in respect thereof, the grants are treated as capital reserve which can be neither distributed as dividend nor considered as deferred income.

11. Refund of Government Grants

11.1 Government grants sometimes become refundable because certain conditions are not fulfilled. A government grant that becomes refundable is treated as an extraordinary item (see Accounting Standard (AS) 5, *Net Profit or Loss for the Period, Prior Period Items and Changes in Accounting Policies*).

11.2 The amount refundable in respect of a government grant related to revenue is applied first against any unamortised deferred credit remaining in respect of the grant. To the extent that the amount refundable exceeds any such deferred credit, or where no deferred credit exists, the amount is charged immediately to profit and loss statement.

11.3 The amount refundable in respect of a government grant related to a specific fixed asset is recorded by increasing the book value of the asset or by reducing the capital reserve or the deferred income balance, as appropriate, by the amount refundable. In the first alternative, i.e., where the book value of the asset is increased, depreciation on the revised book value is provided prospectively over the residual useful life of the asset.

11.4 Where a grant which is in the nature of promoters' contribution becomes refundable, in part or in full, to the government on non-fulfillment of some specified conditions, the relevant amount recoverable by the government is reduced from the capital reserve.

12. Disclosure

12.1 The following disclosures are appropriate:

(i) the accounting policy adopted for government grants, including the methods of presentation in the financial statements;

(ii) the nature and extent of government grants recognised in the financial statements, including grants of non-monetary assets given at a concessional rate or free of cost.

Main Principles

13. Government grants should not be recognised until there is reasonable assurance that (i) the enterprise will comply with the conditions attached to them, and (ii) the grants will be received.

14. Government grants related to specific fixed assets should be presented in the balance sheet by showing the grant as a deduction from the gross value of the assets concerned in arriving at their book value. Where the grant related to a specific fixed asset equals the whole, or virtually the whole, of the cost of the asset, the asset should be shown in the balance sheet at a nominal value. Alternatively, government grants related to depreciable fixed assets may be treated as deferred income which should be recognised in the profit and loss statement on a systematic and rational basis over the useful life of the asset, i.e., such grants should be allocated to income over the periods and in the proportions in which depreciation on those assets is charged. Grants related to non-depreciable assets should be credited to capital reserve under this method. However, if a grant related to a non-depreciable asset requires the fulfillment of certain obligations, the grant should be credited to income over the same period over which the cost of meeting such obligations is charged to income. The deferred income balance should be separately disclosed in the financial statements.

15. Government grants related to revenue should be recognised on a systematic basis in the profit and loss statement over the periods necessary to match them with the related costs which they are intended to compensate. Such grants should either be shown separately under 'other income' or deducted in reporting the related expense.

16. Government grants of the nature of promoters' contribution should be credited to capital reserve and treated as a part of shareholders' funds.

17. Government grants in the form of non-monetary assets, given at a concessional rate, should be accounted for on the basis of their acquisition cost. In case a non-monetary asset is given free of cost, it should be recorded at a nominal value.

18. Government grants that are receivable as compensation for expenses or losses incurred in a previous accounting period or for the purpose of giving immediate financial support to the enterprise with no further

related costs, should be recognised and disclosed in the profit and loss statement of the period in which they are receivable, as an extraordinary item if appropriate (see Accounting Standard (AS) 5, Net Profit or Loss for the Period, Prior Period Items and Changes in Accounting Policies).

19. A contingency related to a government grant, arising after the grant has been recognised, should be treated in accordance with Accounting Standard (AS) 4, Contingencies and Events Occurring After the Balance Sheet Date. [15]

20. Government grants that become refundable should be accounted for as an extraordinary item (see Accounting Standard (AS) 5, Net Profit or Loss for the Period, Prior Period Items and Changes in Accounting Policies).

21. The amount refundable in respect of a grant related to revenue should be applied first against any unamortised deferred credit remaining in respect of the grant. To the extent that the amount refundable exceeds any such deferred credit, or where no deferred credit exists, the amount should be charged to profit and loss statement. The amount refundable in respect of a grant related to a specific fixed asset should be recorded by increasing the book value of the asset or by reducing the capital reserve or the deferred income balance, as appropriate, by the amount refundable. In the first alternative, i.e., where the book value of the asset is increased, depreciation on the revised book value should be provided prospectively over the residual useful life of the asset.

22. Government grants in the nature of promoters' contribution that become refundable should be reduced from the capital reserve.

Disclosure

23. The following should be disclosed:

(i) the accounting policy adopted for government grants, including the methods of presentation in the financial statements;

(ii) the nature and extent of government grants recognised in the financial statements, including grants of non-monetary assets given at a concessional rate or free of cost

India Code

Accounting Standard (AS) 13

Accounting for Investments

*(This Accounting Standard includes paragraphs set in **bold italic** type and plain type, which have equal authority. Paragraphs in bold italic type indicate the main principles. This Accounting Standard should be read in the context of the General Instructions contained in part A of the Annexure to the Notification.)*

Introduction

1. This Standard deals with accounting for investments in the financial statements of enterprises and related disclosure requirements.[1]

2. This Standard does not deal with:

(a) the bases for recognition of interest, dividends and rentals earned on investments which are covered by Accounting Standard 9 on *Revenue Recognition*;

(b) operating or finance leases;

(c) investments of retirement benefit plans and life insurance enterprises; and

(d) mutual funds and venture capital funds and/or the related asset management companies, banks and public financial institutions formed under a Central or State Government Act or so declared under the Companies Act, 2013.

Definitions

3. The following terms are used in this Standard with the meanings assigned:

[15] See footnote 14.

[1] Shares, debentures and other securities held as stock-in-trade (i.e., for sale in the ordinary course of business) are not 'investments' as defined in this Standard. However, the manner in which they are accounted for and disclosed in the financial statements is quite similar to that applicable in respect of current investments. Accordingly, the provisions of this Standard, to the extent that they relate to current investments, are also applicable to shares, debentures and other securities held as stock-in-trade, with suitable modifications as specified in this Standard.

3.1 Investments are assets held by an enterprise for earning income by way of dividends, interest, and rentals, for capital appreciation, or for other benefits to the investing enterprise. Assets held as stock-in-trade are not 'investments'.

3.2 A current investment is an investment that is by its nature readily realisable and is intended to be held for not more than one year from the date on which such investment is made.

3.3 A long term investment is an investment other than a current investment.

3.4 An investment property is an investment in land or buildings that are not intended to be occupied substantially for use by, or in the operations of, the investing enterprise.

3.5 Fair value is the amount for which an asset could be exchanged between a knowledgeable, willing buyer and a knowledgeable, willing seller in an arm's length transaction. Under appropriate circumstances, market value or net realisable value provides an evidence of fair value.

3.6 Market value is the amount obtainable from the sale of an investment in an open market, net of expenses necessarily to be incurred on or before disposal.

Explanation

Forms of Investments

4. Enterprises hold investments for diverse reasons. For some enterprises, investment activity is a significant element of operations, and assessment of the performance of the enterprise may largely, or solely, depend on the reported results of this activity.

5. Some investments have no physical existence and are represented merely by certificates or similar documents (e.g., shares) while others exist in a physical form (e.g., buildings). The nature of an investment may be that of a debt, other than a short or long term loan or a trade debt, representing a monetary amount owing to the holder and usually bearing interest; alternatively, it may be a stake in the results and net assets of an enterprise such as an equity share. Most investments represent financial rights, but some are tangible, such as certain investments in land or buildings.

6. For some investments, an active market exists from which a market value can be established. For such investments, market value generally provides the best evidence of fair value. For other investments, an active market does not exist and other means are used to determine fair value.

Classification of Investments

7. Enterprises present financial statements that classify fixed assets, investments and current assets into separate categories. Investments are classified as long term investments and current investments. Current investments are in the nature of current assets, although the common practice may be to include them in investments.[16]

8. Investments other than current investments are classified as long term investments, even though they may be readily marketable.

Cost of Investments

9. The cost of an investment includes acquisition charges such as brokerage, fees and duties.

10. If an investment is acquired, or partly acquired, by the issue of shares or other securities, the acquisition cost is the fair value of the securities issued (which, in appropriate cases, may be indicated by the issue price as determined by statutory authorities). The fair value may not necessarily be equal to the nominal or par value of the securities issued.

11. If an investment is acquired in exchange, or part exchange, for another asset, the acquisition cost of the investment is determined by reference to the fair value of the asset given up. It may be appropriate to consider the fair value of the investment acquired if it is more clearly evident.

12. Interest, dividends and rentals receivables in connection with an investment are generally regarded as income, being the return on the investment. However, in some circumstances, such inflows represent a recovery of cost and do not form part of income. For example, when unpaid interest has accrued before the acquisition of an interest-bearing investment and is therefore included in the price paid for the investment, the subsequent receipt of

---

[16] Shares, debentures and other securities held for sale in the ordinary course of business are disclosed as 'stock-in-trade' under the head 'current assets'.

interest is allocated between pre-acquisition and post-acquisition periods; the pre-acquisition portion is deducted from cost. When dividends on equity are declared from pre-acquisition profits, a similar treatment may apply. If it is difficult to make such an allocation except on an arbitrary basis, the cost of investment is normally reduced by dividends receivable only if they clearly represent a recovery of a part of the cost.

13. When right shares offered are subscribed for, the cost of the right shares is added to the carrying amount of the original holding. If rights are not subscribed for but are sold in the market, the sale proceeds are taken to the profit and loss statement. However, where the investments are acquired on cum-right basis and the market value of investments immediately after their becoming ex-right is lower than the cost for which they were acquired, it may be appropriate to apply the sale proceeds of rights to reduce the carrying amount of such investments to the market value.

Carrying Amount of Investments

Current Investments

14. The carrying amount for current investments is the lower of cost and fair value. In respect of investments for which an active market exists, market value generally provides the best evidence of fair value. The valuation of current investments at lower of cost and fair value provides a prudent method of determining the carrying amount to be stated in the balance sheet.

15. Valuation of current investments on overall (or global) basis is not considered appropriate. Sometimes, the concern of an enterprise may be with the value of a category of related current investments and not with each individual investment, and accordingly the investments may be carried at the lower of cost and fair value computed category-wise (i.e. equity shares, preference shares, convertible debentures, etc.). However, the more prudent and appropriate method is to carry investments individually at the lower of cost and fair value.

16. For current investments, any reduction to fair value and any reversals of such reductions are included in the profit and loss statement.

Long-term Investments

17. Long-term investments are usually carried at cost. However, when there is a decline, other than temporary, in the value of a long term investment, the carrying amount is reduced to recognise the decline. Indicators of the value of an investment are obtained by reference to its market value, the investee's assets and results and the expected cash flows from the investment. The type and extent of the investor's stake in the investee are also taken into account. Restrictions on distributions by the investee or on disposal by the investor may affect the value attributed to the investment.

18. Long-term investments are usually of individual importance to the investing enterprise. The carrying amount of long-term investments is therefore determined on an individual investment basis.

19. Where there is a decline, other than temporary, in the carrying amounts of long term investments, the resultant reduction in the carrying amount is charged to the profit and loss statement. The reduction in carrying amount is reversed when there is a rise in the value of the investment, or if the reasons for the reduction no longer exist.

Investment Properties

20. An investment property is accounted for in accordance with cost model as prescribed in Accounting Standard (AS) 10, *Property, Plant and Equipment.* The cost of any shares in a co-operative society or a company, the holding of which is directly related to the right to hold the investment property, is added to the carrying amount of the investment property.

Disposal of Investments

21. On disposal of an investment, the difference between the carrying amount and the disposal proceeds, net of expenses, is recognised in the profit and loss statement.

22. When disposing of a part of the holding of an individual investment, the carrying amount to be allocated to that part is to be determined on the basis of the average carrying amount of the total holding of the investment.[3]

Reclassification of Investments

23. Where long-term investments are reclassified as current investments, transfers are made at the lower of cost and carrying amount at the date of transfer.

---

[3] In respect of shares, debentures and other securities held as stock-in-trade, the cost of stocks disposed of is determined by applying an appropriate cost formula (e.g. first-in, first-out; average cost, etc.). These cost formulae are the same as those specified in Accounting Standard (AS) 2, in respect of Valuation of Inventories.

IndiaCode

24. Where investments are reclassified from current to long-term, transfers are made at the lower of cost and fair value at the date of transfer.

Disclosure

25. The following disclosures in financial statements in relation to investments are appropriate:—

(a) the accounting policies for the determination of carrying amount of investments;

(b) the amounts included in profit and loss statement for:

(i) interest dividends (showing separately dividends from subsidiary companies[4]), and rentals on investments showing separately such income from long term and current investments. Gross income should be stated, the amount of income tax deducted at source being included under Advance Taxes Paid;

(ii) profits and losses on disposal of current investments and changes in carrying amount of such investments;

(iii) profits and losses on disposal of long term investments and changes in the carrying amount of such investments;

(c) significant restrictions on the right of ownership, realisability of investments or the remittance of income and proceeds of disposal;

(d) the aggregate amount of quoted and unquoted investments, giving the aggregate market value of quoted investments;

(e) other disclosures as specifically required by the relevant statute governing the enterprise.

Main Principles

Classification of Investments

26. An enterprise should disclose current investments and long term investments distinctly in its financial statements.

27. Further classification of current and long-term investments should be as specified in the statute governing the enterprise. In the absence of a statutory requirement, such further classification should disclose, where applicable, investments in:

(a) Government or Trust securities

(b) Shares, debentures or bonds

(c) Investment properties

(d) Others—specifying nature.

Cost of Investments

28. The cost of an investment should include acquisition charges such as brokerage, fees and duties.

29. If an investment is acquired, or partly acquired, by the issue of shares or other securities, the acquisition cost should be the fair value of the securities issued (which in appropriate cases may be indicated by the issue price as determined by statutory authorities). The fair value may not necessarily be equal to the nominal or par value of the securities issued. If an investment is acquired in exchange for another asset, the acquisition cost of the investment should be determined by reference to the fair value of the asset given up. Alternatively, the acquisition cost of the investment may be determined with reference to the fair value of the investment acquired if it is more clearly evident.

Investment Properties

30. An enterprise holding investment properties should account for them in accordance with cost model as prescribed in AS 10, Property, Plant and Equipment.

Carrying Amount of Investments

31. Investments classified as current investments should be carried in the financial statements at the lower of cost and fair value determined either on an individual investment basis or by category of investment, but not on an overall (or global) basis.

[4] As defined in AS 21, *Consolidated Financial Statements*.

IndiaCode

32. Investments classified as long term investments should be carried in the financial statements at cost. However, provision for diminution shall be made to recognise a decline, other than temporary, in the value of the investments, such reduction being determined and made for each investment individually.

Changes in Carrying Amounts of Investments

33. Any reduction in the carrying amount and any reversals of such reductions should be charged or credited to the profit and loss statement.

Disposal of Investments

34. On disposal of an investment, the difference between the carrying amount and net disposal proceeds should be charged or credited to the profit and loss statement.

Disclosure

35. The following information should be disclosed in the financial statements:

(a) the accounting policies for determination of carrying amount of investments;

(b) classification of investments as specified in paragraphs 26 and 27 above;

(c) the amounts included in profit and loss statement for:

(i) interest, dividends (showing separately dividends from subsidiary companies), and rentals on investments showing separately such income from long-term and current investments. Gross income should be stated, the amount of income tax deducted at source being included under Advance Taxes Paid;

(ii) profits and losses on disposal of current investments and changes in the carrying amount of such investments; and

(iii) profits and losses on disposal of long-term investments and changes in the carrying amount of such investments;

(d) significant restrictions on the right of ownership, realisability of investments or the remittance of income and proceeds of disposal;

(e) the aggregate amount of quoted and unquoted investments, giving the aggregate market value of quoted investments;

(f) other disclosures as specifically required by the relevant statute governing the enterprise.

Accounting Standard (AS) 14

Accounting for Amalgamations

*(This Accounting Standard includes paragraphs set in **bold italic** type and plain type, which have equal authority. Paragraphs in bold italic type indicate the main principles. This Accounting Standard should be read in the context of the General Instructions contained in part A of the Annexure to the Notification.)*

Introduction

1. This standard deals with accounting for amalgamations and the treatment of any resultant goodwill or reserves. This Standard is directed principally to companies although some of its requirements also apply to financial statements of other enterprises.

2. This standard does not deal with cases of acquisitions which arise when there is a purchase by one company (referred to as the acquiring company) of the whole or part of the shares, or the whole or part of the assets, of another company (referred to as the acquired company) in consideration for payment in cash or by issue of shares or other securities in the acquiring company or partly in one form and partly in the other. The distinguishing feature of an acquisition is that the acquired company is not dissolved and its separate entity continues to exist.

Definitions

3. The following terms are used in this standard with the meanings specified:

(a) Amalgamation means an amalgamation pursuant to the provisions of the Companies Act, 2013 or any other statute which may be applicable to companies and includes 'merger'.

(b) Transferor company means the company which isamalgamated into another company.

(c) Transferee company means the company into which a transferor company is amalgamated.

(d) Reserve means the portion of earnings, receipts or other surplus of an enterprise (whether

IndiaCode

capital or revenue) appropriated by the management for a general or a specific purpose other than a provision for depreciation or diminution in the value of assets or for a known liability.

(e) Amalgamation in the nature of merger is an amalgamation which satisfies all the following conditions.

(i) All the assets and liabilities of the transferor company become, after amalgamation, the assets and liabilities of the transferee company.

(ii) Shareholders holding not less than 90% of the face value of the equity shares of the transferor company (other than the equity shares already held therein, immediately before the amalgamation, by the transferee company or its subsidiaries[1] or their nominees) become equity shareholders of the transferee company by virtue of the amalgamation.

(iii) The consideration for the amalgamation receivable by those equity shareholders of the transferor company who agree to become equity shareholders of the transferee company is discharged by the transferee company wholly by the issue of equity shares in the transferee company, except that cash may be paid in respect of any fractional shares.

(iv) The business of the transferor company is intended to be carried on, after the amalgamation, by the transferee company.

(v) No adjustment is intended to be made to the book values of the assets and liabilities of the transferor company when they are incorporated in the financial statements of the transferee company except to ensure uniformity of accounting policies.

(f) Amalgamation in the nature of purchase is an amalgamation which does not satisfy any one or more of the conditions specified in sub-paragraph (e) above.

(g) Consideration for the amalgamation means the aggregate of the shares and other securities issued and the payment made in the form of cash or other assets by the transferee company to the shareholders of the transferor company.

(h) Fair value is the amount for which an asset could be exchanged between a knowledgeable, willing buyer and a knowledgeable, willing seller in an arm's length transaction.

(i) Pooling of interests is a method of accounting for amalgamations the object of which is to account for the amalgamation as if the separate businesses of the amalgamating companies were intended to be continued by the transferee company. Accordingly, only minimal changes are made in aggregating the individual financial statements of the amalgamating companies.

Explanation

Types of Amalgamations

4. Generally speaking, amalgamations fall into two broad categories. In the first category are those amalgamations where there is a genuine pooling not merely of the assets and liabilities of the amalgamating companies but also of the shareholders' interests and of the businesses of these companies. Such amalgamations are amalgamations which are in the nature of 'merger' and the accounting treatment of such amalgamations should ensure that the resultant figures of assets, liabilities, capital and reserves more or less represent the sum of the relevant figures of the amalgamating companies. In the second category are those amalgamations which are in effect a mode by which one company acquires another company and, as a consequence, the shareholders of the company which is acquired normally do not continue to have a proportionate share in the equity of the combined company, or the business of the company which is acquired is not intended to be continued. Such amalgamations are amalgamations in the nature of 'purchase'.

5. An amalgamation is classified as an 'amalgamation in the nature of merger' when all the conditions listed in paragraph 3(e) are satisfied. There are, however, differing views regarding the nature of any further conditions that may apply. Some believe that, in addition to an exchange of equity shares, it is necessary that the shareholders of the transferor company obtain a substantial share in the transferee company even to the extent that it should not be possible to identify any one party as dominant therein. This belief is based in part on the view that the exchange of control of one company for an insignificant share in a larger company does not amount to a mutual sharing of risks and benefits.

6. Others believe that the substance of an amalgamation in the nature of merger is evidenced by meeting certain

[1] As defined in AS 21, *Consolidated Financial Statements.*

criteria regarding the relationship of the parties, such as the former independence of the amalgamating companies, the manner of their amalgamation, the absence of planned transactions that would undermine the effect of the amalgamation, and the continuing participation by the management of the transferor company in the management of the transferee company after the amalgamation.

Methods of Accounting for Amalgamations

7. There are two main methods of accounting for amalgamations:

(a) the pooling of interests method; and

(b) the purchase method.

8. The use of the pooling of interests method is confined to circumstances which meet the criteria referred to in paragraph 3(e) for an amalgamation in the nature of merger.

9. The object of the purchase method is to account for the amalgamation by applying the same principles as are applied in the normal purchase of assets. This method is used in accounting for amalgamations in the nature of purchase.

The Pooling of Interests Method

10. Under the pooling of interests method, the assets, liabilities and reserves of the transferor company are recorded by the transferee company at their existing carrying amounts (after making the adjustments required in paragraph 11).

11. If, at the time of the amalgamation, the transferor and the transferee companies have conflicting accounting policies, a uniform set of accounting policies is adopted following the amalgamation. The effects on the financial statements of any changes in accounting policies are reported in accordance with Accounting Standard (AS) 5, *Net Profit or Loss for the Period, Prior Period Items and Changes in Accounting Policies*.

The Purchase Method

12. Under the purchase method, the transferee company accounts for the amalgamation either by incorporating the assets and liabilities at their existing carrying amounts or by allocating the consideration to individual identifiable assets and liabilities of the transferor company on the basis of their fair values at the date of amalgamation. The identifiable assets and liabilities may include assets and liabilities not recorded in the financial statements of the transferor company.

13. Where assets and liabilities are restated on the basis of their fair values, the determination of fair values may be influenced by the intentions of the transferee company. For example, the transferee company may have a specialised use for an asset, which is not available to other potential buyers. The transferee company may intend to effect changes in the activities of the transferor company which necessitate the creation of specific provisions for the expected costs, e.g. planned employee termination and plant relocation costs.

Consideration

14. The consideration for the amalgamation may consist of securities, cash or other assets. In determining the value of the consideration, an assessment is made of the fair value of its elements. A variety of techniques is applied in arriving at fair value. For example, when the consideration includes securities, the value fixed by the statutory authorities may be taken to be the fair value. In case of other assets, the fair value may be determined by reference to the market value of the assets given up. Where the market value of the assets given up cannot be reliably assessed, such assets may be valued at their respective net book values.

15. Many amalgamations recognise that adjustments may have to be made to the consideration in the light of one or more future events. When the additional payment is probable and can reasonably be estimated at the date of amalgamation, it is included in the calculation of the consideration. In all other cases, the adjustment is recognised as soon as the amount is determinable [see Accounting Standard (AS) 4, *Contingencies and Events Occurring After the Balance Sheet Date*].

Treatment of Reserves on Amalgamation

16. If the amalgamation is an 'amalgamation in the nature of merger', the identity of the reserves is preserved and they appear in the financial statements of the transferee company in the same form in which they appeared in the financial statements of the transferor company. Thus, for example, the General Reserve of the transferor company becomes the General Reserve of the transferee company, the Capital Reserve of the transferor company becomes the Capital Reserve of the transferee company and the Revaluation Reserve of the transferor company becomes the Revaluation Reserve of the transferee company. As a result of preserving the identity, reserves which are available for distribution as dividend before the amalgamation would also be available for distribution as dividend after the amalgamation. The difference between the amount recorded as share capital issued (plus any additional

consideration in the form of cash or other assets) and the amount of share capital of the transferor company is adjusted in reserves in the financial statements of the transferee company.

17. If the amalgamation is an 'amalgamation in the nature of purchase', the identity of the reserves, other than the statutory reserves dealt with in paragraph 18, is not preserved. The amount of the consideration is deducted from the value of the net assets of the transferor company acquired by the transferee company. If the result of the computation is negative, the difference is debited to goodwill arising on amalgamation and dealt with in the manner stated in paragraphs 19-20. If the result of the computation is positive, the difference is credited to Capital Reserve.

18. Certain reserves may have been created by the transferor company pursuant to the requirements of, or to avail of the benefits under, the Income-tax Act, 1961; for example, Development Allowance Reserve, or Investment Allowance Reserve. The Act requires that the identity of the reserves should be preserved for a specified period. Likewise, certain other reserves may have been created in the financial statements of the transferor company in terms of the requirements of other statutes. Though, normally, in an amalgamation in the nature of purchase, the identity of reserves is not preserved, an exception is made in respect of reserves of the aforesaid nature (referred to hereinafter as 'statutory reserves') and such reserves retain their identity in the financial statements of the transferee company in the same form in which they appeared in the financial statements of the transferor company, so long as their identity is required to be maintained to comply with the relevant statute. This exception is made only in those amalgamations where the requirements of the relevant statute for recording the statutory reserves in the books of the transferee company are complied with. In such cases the statutory reserves are recorded in the financial statements of the transferee company by a corresponding debit to a suitable account head (e.g., 'Amalgamation Adjustment Reserve') which is presented as a separate line item. When the identity of the statutory reserves is no longer required to be maintained, both the reserves and the aforesaid account are reversed.

Treatment of Goodwill Arising on Amalgamation

19. Goodwill arising on amalgamation represents a payment made in anticipation of future income and it is appropriate to treat it as an asset to be amortised to income on a systematic basis over its useful life. Due to the nature of goodwill, it is frequently difficult to estimate its useful life with reasonable certainty. Such estimation is, therefore, made on a prudent basis. Accordingly, it is considered appropriate to amortise goodwill over a period not exceeding five years unless a somewhat longer period can be justified.

20. Factors which may be considered in estimating the useful life of goodwill arising on amalgamation include:

(a) the foreseeable life of the business or industry;

(b) the effects of product obsolescence, changes in demand and other economic factors;

(c) the service life expectancies of key individuals or groups of employees;

(d) expected actions by competitors or potential competitors; and

(e) legal, regulatory or contractual provisions affecting the useful life.

Balance of Profit and Loss Account

21. In the case of an 'amalgamation in the nature of merger', the balance of the Profit and Loss Account appearing in the financial statements of the transferor company is aggregated with the corresponding balance appearing in the financial statements of the transferee company. Alternatively, it is transferred to the General Reserve, if any.

22. In the case of an 'amalgamation in the nature of purchase', the balance of the Profit and Loss Account appearing in the financial statements of the transferor company, whether debit or credit, loses its identity.

Treatment of Reserves Specified in A Scheme of Amalgamation

23[2]. The scheme of amalgamation sanctioned under the provisions of the Companies Act, 1956 or any other statute may prescribe the treatment to be given to the reserves of the transferor company after its amalgamation. Where the treatment is so prescribed, the same is followed. In some cases, the scheme of amalgamation sanctioned under a statute may prescribe a different treatment to be given to the reserves of the transferor company after amalgamation as compared to the requirements of this Standard that would have been followed had no treatment been prescribed by the scheme. In such cases, the following disclosures are made in the first financial statements following the amalgamation:

(a) A description of the accounting treatment given to the reserves and the reasons for following the treatment different from that prescribed in this Standard.

[2] Paragraph 23 shall not apply to any scheme of amalgamation approved under the Companies Act, 2013.

(b) Deviations in the accounting treatment given to the reserves as prescribed by the scheme of amalgamation sanctioned under the statute as compared to the requirements of this Standard that would have been followed had no treatment been prescribed by the scheme.

(c) The financial effect, if any, arising due to such deviation.

Disclosure

24. For all amalgamations, the following disclosures are considered appropriate in the first financial statements following the amalgamation:

(a) names and general nature of business of the amalgamating companies;

(b) effective date of amalgamation for accounting purposes;

(c) the method of accounting used to reflect the amalgamation; and

(d) particulars of the scheme sanctioned under a statute.

25. For amalgamations accounted for under the pooling of interests method, the following additional disclosures are considered appropriate in the first financial statements following the amalgamation:

(a) description and number of shares issued, together with the percentage of each company's equity shares exchanged to effect the amalgamation;

(b) the amount of any difference between the consideration and the value of net identifiable assets acquired, and the treatment thereof.

26. For amalgamations accounted for under the purchase method, the following additional disclosures are considered appropriate in the first financial statements following the amalgamation:

(a) consideration for the amalgamation and a description of the consideration paid or contingently payable; and

(b) the amount of any difference between the consideration and the value of net identifiable assets acquired, and the treatment thereof including the period of amortisation of any goodwill arising on amalgamation.

IndiaCode

Amalgamation after the Balance Sheet Date

27. When an amalgamation is effected after the balance sheet date but before the issuance of the financial statements of either party to the amalgamation, disclosure is made in accordance with AS 4, *Contingencies and Events Occurring After the Balance Sheet Date*, but the amalgamation is not incorporated in the financial statements. In certain circumstances, the amalgamation may also provide additional information affecting the financial statements themselves, for instance, by allowing the going concern assumption to be maintained.

Main Principles

28. An amalgamation may be either –

(a) an amalgamation in the nature of merger, or

(b) an amalgamation in the nature of purchase.

29. An amalgamation should be considered to be an amalgamation in the nature of merger when all the following conditions are satisfied:

(i) All the assets and liabilities of the transferor company become, after amalgamation, the assets and liabilities of the transferee company.

(ii) Shareholders holding not less than 90% of the face value of the equity shares of the transferor company (other than the equity shares already held therein immediately before the amalgamation, by the transferee company or its subsidiaries or their nominees) become equity shareholders of the transferee company by virtue of the amalgamation.

(iii) The consideration for the amalgamation receivable by those equity shareholders of the transferor company who agree to become equity shareholders of the transferee company is discharged by the transferee company wholly by the issue of equity shares in the transferee company, except that cash may be paid in respect of any fractional shares.

(iv) The business of the transferor company is intended to be carried on, after the amalgamation, by the transferee company.

(v) No adjustment is intended to be made to the book values of the assets and liabilities of the transferor company when they are incorporated in the financial statements of the transferee company except to ensure

uniformity of accounting policies.

30. An amalgamation should be considered to be an amalgamation in the nature of purchase, when any one or more of the conditions specified in paragraph 29 is not satisfied.

31. When an amalgamation is considered to be an amalgamation in the nature of merger, it should be accounted for under the pooling of interests method described in paragraphs 33–35.

32. When an amalgamation is considered to be an amalgamation in the nature of purchase, it should be accounted for under the purchase method described in paragraphs 36–39.

The Pooling of Interests Method

33. In preparing the transferee company's financial statements, the assets, liabilities and reserves (whether capital or revenue or arising on revaluation) of the transferor company should be recorded at their existing carrying amounts and in the same form as at the date of the amalgamation. The balance of the Profit and Loss Account of the transferor company should be aggregated with the corresponding balance of the transferee company or transferred to the General Reserve, if any.

34. If, at the time of the amalgamation, the transferor and the transferee companies have conflicting accounting policies, a uniform set of accounting policies should be adopted following the amalgamation. The effects on the financial statements of any changes in accounting policies should be reported in accordance with Accounting Standard (AS) 5 Net Profit or Loss for the Period, Prior Period Items and Changes in Accounting Policies.

35. The difference between the amount recorded as share capital issued (plus any additional consideration in the form of cash or other assets) and the amount of share capital of the transferor company should be adjusted in reserves.

The Purchase Method

36. In preparing the transferee company's financial statements, the assets and liabilities of the transferor company should be incorporated at their existing carrying amounts or, alternatively, the consideration should be allocated to individual identifiable assets and liabilities on the basis of their fair values at the date of amalgamation. The reserves (whether capital or revenue or arising on revaluation) of the transferor company, other than the statutory reserves, should not be included in the financial statements of the transferee company except as stated in paragraph 39.

37. Any excess of the amount of the consideration over the value of the net assets of the transferor company acquired by the transferee company should be recognised in the transferee company's financial statements as goodwill arising on amalgamation. If the amount of the consideration is lower than the value of the net assets acquired, the difference should be treated as Capital Reserve.

38. The goodwill arising on amalgamation should be amortised to income on a systematic basis over its useful life. The amortisation period should not exceed five years unless a somewhat longer period can be justified.

39. Where the requirements of the relevant statute for recording the statutory reserves in the books of the transferee company are complied with, statutory reserves of the transferor company should be recorded in the financial statements of the transferee company. The corresponding debit should be given to a suitable account head (e.g., 'Amalgamation Adjustment Reserve') which should be presented as a separate line item. When the identity of the statutory reserves is no longer required to be maintained, both the reserves and the aforesaid account should be reversed.

Common Procedures

40. The consideration for the amalgamation should include any non-cash element at fair value. In case of issue of securities, the value fixed by the statutory authorities may be taken to be the fair value. In case of other assets, the fair value may be determined by reference to the market value of the assets given up. Where the market value of the assets given up cannot be reliably assessed, such assets may be valued at their respective net book values.

41. Where the scheme of amalgamation provides for an adjustment to the consideration contingent on one or more future events, the amount of the additional payment should be included in the consideration if payment is probable and a reasonable estimate of the amount can be made. In all other cases, the adjustment should be recognised as soon as the amount is determinable [see Accounting Standard (AS) 4, Contingencies and Events Occurring After the Balance Sheet Date].

Treatment of Reserves Specified in A Scheme of Amalgamation

42.[3] Where the scheme of amalgamation sanctioned under a statute prescribes the treatment to be given to the reserves of the transferor company after amalgamation, the same should be followed. Where the scheme of amalgamation sanctioned under a statute prescribes a different treatment to be given to the reserves of the transferor company after amalgamation as compared to the requirements of this Standard that would have been followed had no treatment been prescribed by the scheme, the following disclosures should be made in the first financial statements following the amalgamation:

(a) A description of the accounting treatment given to the reserves and reasons for following the treatment different from that prescribed in this Standard.

(b) Deviations in the accounting treatment given to the reserves as prescribed by the scheme of amalgamation sanctioned under the statute as compared to the requirements of this Standard that would have been followed had no treatment been prescribed by the scheme.

(c) The financial effect, if any, arising due to such deviation.

Disclosure

43. For all amalgamations, the following disclosures should be made in the first financial statements following the amalgamation:

(a) names and general nature of business of the amalgamating companies;

(b) effective date of amalgamation for accounting purposes;

(c) the method of accounting used to reflect the amalgamation; and

(d) particulars of the scheme sanctioned under a statute.

44. For amalgamations accounted for under the pooling of interests method, the following additional disclosures should be made in the first financial statements following the amalgamation:

(a) description and number of shares issued, together with the percentage of each company's equity shares exchanged to effect the amalgamation;

(b) the amount of any difference between the consideration and the value of net identifiable assets acquired, and the treatment thereof.

45. For amalgamations accounted for under the purchase method, the following additional disclosures should be made in the first financial statements following the amalgamation:

(a) consideration for the amalgamation and a description of the consideration paid or contingently payable; and

(b) the amount of any difference between the consideration and the value of net identifiable assets acquired, and the treatment thereof including the period of amortisation of any goodwill arising on amalgamation.

Amalgamation after the Balance Sheet Date

46. When an amalgamation is effected after the balance sheet date but before the issuance of the financial statements of either party to the amalgamation, disclosure should be made in accordance with AS 4, Contingencies and Events Occurring After the Balance Sheet Date, but the amalgamation should not be incorporated in the financial statements. In certain circumstances, the amalgamation may also provide additional information affecting the financial statements themselves, for instance, by allowing the going concern assumption to be maintained

Accounting Standard (AS) 15

Employee Benefits

*(This Accounting Standard includes paragraphs set in **bold italic** type and plain type, which have equal authority. Paragraphs in bold italic type indicate the main principles. This Accounting Standard should be read in the context of its objective and the General Instructions contained in part A of the Annexure to the Notification.)*

Objective

The objective of this Standard is to prescribe the accounting and disclosure for employee benefits. The Standard requires an enterprise to recognise:

[3] Paragraph 42 shall not apply to any scheme of amalgamation approved under the Companies Act, 2013.

India Code

(a) a liability when an employee has provided service in exchange for employee benefits to be paid in the future; and

(b) an expense when the enterprise consumes the economic benefit arising from service provided by an employee in exchange for employee benefits.

Scope

1. This Standard should be applied by an employer in accounting for all employee benefits, except employee share-based payments[17].

2. This Standard does not deal with accounting and reporting by employee benefit plans.

3. The employee benefits to which this Standard applies include those provided:

(a) under formal plans or other formal agreements between an enterprise and individual employees, groups of employees or theirrepresentatives;

(b) under legislative requirements, or through industry arrangements, whereby enterprises are required to contribute to state, industry or other multi-employer plans; or

(c) by those informal practices that give rise to an obligation. Informal practices give rise to an obligation where the enterprise has no realistic alternative but to pay employee benefits. An example of such an obligation is where a change in the enterprise's informal practices would cause unacceptable damage to its relationship with employees.

4. Employee benefits include:

(a) short-term employee benefits, such as wages, salaries and social security contributions (e.g., contribution to an insurance company by an employer to pay for medical care of its employees), paid annual leave, profit-sharing and bonuses (if payable within twelve months of the end of the period) and non-monetary benefits (such as medical care, housing, cars and free or subsidised goods or services) for current employees;

(b) post-employment benefits such as gratuity, pension, other retirement benefits, post-employment life insurance and post-employment medical care;

(c) other long-term employee benefits, including long-service leave or sabbatical leave, jubilee or other long-service benefits, long-term disability benefits and, if they are not payable wholly within twelve months after the end of the period, profit-sharing, bonuses and deferred compensation; and

(d) termination benefits.

Because each category identified in (a) to (d) above has different characteristics, this Standard establishes separate requirements for each category.

5. Employee benefits include benefits provided to either employees or their spouses, children or other dependants and may be settled by payments (or the provision of goods or services) made either:

(a) directly to the employees, to their spouses, children or other dependants, or to their legal heirs or nominees; or

(b) to others, such as trusts, insurance companies.

6. An employee may provide services to an enterprise on a full-time, part-time, permanent, casual or temporary basis. For the purpose of this Standard, employees include whole-time directors and other management personnel.

Definitions

7. The following terms are used in this Standard with the meanings specified:

7.1 <u>Employee benefits</u> are all forms of consideration given by an enterprise in exchange for service rendered by employees.

7.2 <u>Short-term employee benefits</u> are employee benefits (other than termination benefits) which fall due wholly within twelve months after the end of the period in which the employees render the related service.

7.3 <u>Post-employment benefits</u> are employee benefits (other than termination benefits) which are payable after the completion of employment.

[17] The accounting for such benefits is dealt with in the Guidance Note on Accounting for Employee Share-based Payments issued by the Institute of Chartered Accountants of India.

7.4 Post-employment benefit plans are formal or informal arrangements under which an enterprise provides post-employment benefits for one or more employees.

7.5 Defined contribution plans are post-employment benefit plans under which an enterprise pays fixed contributions into a separate entity (a fund) and will have no obligation to pay further contributions if the fund does not hold sufficient assets to pay all employee benefits relating to employee service in the current and prior periods.

7.6 Defined benefit plans are post-employment benefit plans other than defined contribution plans.

7.7 Multi-employer plans are defined contribution plans (other than state plans) or defined benefit plans (other than state plans) that:

(a) pool the assets contributed by various enterprises that are not under common control; and

(b) use those assets to provide benefits to employees of more than one enterprise, on the basis that contribution and benefit levels are determined without regard to the identity of the enterprise that employs the employees concerned.

7.8 Other long-term employee benefits are employee benefits (other than post-employment benefits and termination benefits) which do not fall due wholly within twelve months after the end of the period in which the employees render the related service.

7.9 Termination benefits are employee benefits payable as a result of either:

(a) an enterprise's decision to terminate an employee's employment before the normal retirement date; or

(b) an employee's decision to accept voluntary redundancy in exchange for those benefits (voluntary retirement).

7.10 Vested employee benefits are employee benefits that are not conditional on future employment.

7.11 The present value of a defined benefit obligation is the present value, without deducting any plan assets, of expected future payments required to settle the obligation resulting from employee service in the current and prior periods.

7.12 Current service cost is the increase in the present value of the defined benefit obligation resulting from employee service in the current period.

7.13 Interest cost is the increase during a period in the present value of a defined benefit obligation which arises because the benefits are one period closer to settlement.

7.14 Plan assets comprise:

(a) assets held by a long-term employee benefit fund; and

(b) qualifying insurance policies.

7.15 Assets held by a long-term employee benefit fund are assets (other than non-transferable financial instruments issued by the reporting enterprise) that:

(a) are held by an entity (a fund) that is legally separate from the reporting enterprise and exists solely to pay or fund employee benefits; and

(b) are available to be used only to pay or fund employee benefits, are not available to the reporting enterprise's own creditors (even in bankruptcy), and cannot be returned to the reporting enterprise, unless either:

(i) the remaining assets of the fund are sufficient to meet all the related employee benefit obligations of the plan or the reporting enterprise; or

(ii) the assets are returned to the reporting enterprise to reimburse it for employee benefits already paid.

7.16 A qualifying insurance policy is an insurance policy issued by an insurer that is not a related party (as defined in AS 18, Related Party Disclosures) of the reporting enterprise, if the proceeds of the policy:

(a) can be used only to pay or fund employee benefits under a defined benefit plan; and

(b) are not available to the reporting enterprise's own creditors (even in bankruptcy) and cannot be paid to the reporting enterprise, unless either:

(i) the proceeds represent surplus assets that are not needed for the policy to meet all the related employee benefit obligations; or

(ii) the proceeds are returned to the reporting enterprise to reimburse it for employee benefits already

IndiaCode

paid.

7.17 Fair value is the amount for which an asset could be exchanged or a liability settled between knowledgeable, willing parties in an arm's length transaction.

7.18 The return on plan assets is interest, dividends and other revenue derived from the plan assets, together with realised and unrealised gains or losses on the plan assets, less any costs of administering the plan and less any tax payable by the plan itself.

7.19 Actuarial gains and losses comprise:

(a) experience adjustments (the effects of differences between the previous actuarial assumptions and what has actually occurred); and

(b) the effects of changes in actuarial assumptions.

7.20 Past service cost is the change in the present value of the defined benefit obligation for employee service in prior periods, resulting in the current period from the introduction of, or changes to, post-employment benefits or other long-term employee benefits. Past service cost may be either positive (where benefits are introduced or improved) or negative (where existing benefits are reduced).

Short-term Employee Benefits

8. Short-term employee benefits include items such as:

(a) wages, salaries and social security contributions;

(b) short-term compensated absences (such as paid annual leave) where the absences are expected to occur within twelve months after the end of the period in which the employees render the related employee service;

(c) profit-sharing and bonuses payable within twelve months after the end of the period in which the employees render the related service; and

(d) non-monetary benefits (such as medical care, housing, cars and free or subsidised goods or services) for current employees.

9. Accounting for short-term employee benefits is generally straight- forward because no actuarial assumptions are required to measure the obligation or the cost and there is no possibility of any actuarial gain or loss. Moreover, short-term employee benefit obligations are measured on an undiscounted basis.

Recognition and Measurement

All Short-term Employee Benefits

10. When an employee has rendered service to an enterprise during an accounting period, the enterprise should recognise the undiscounted amount of short-term employee benefits expected to be paid in exchange for that service:

(a) as a liability (accrued expense), after deducting any amount already paid. If the amount already paid exceeds the undiscounted amount of the benefits, an enterprise should recognise that excess as an asset (prepaid expense) to the extent that the prepayment will lead to, for example, a reduction in future payments or a cash refund; and

(b) as an expense, unless another Accounting Standard requires or permits the inclusion of the benefits in the cost of an asset (see, for example, AS 10, Property, Plant and Equipment).

Paragraphs 11, 14 and 17 explain how an enterprise should apply this requirement to short-term employee benefits in the form of compensated absences and profit-sharing and bonus plans.

Short-term Compensated Absences

11. An enterprise should recognise the expected cost of short-term employee benefits in the form of compensated absences under paragraph 10 as follows:

(a) in the case of accumulating compensated absences, when the employees render service that increases their entitlement to future compensated absences; and

(b) in the case of non-accumulating compensated absences, when the absences occur.

12. An enterprise may compensate employees for absence for various reasons including vacation, sickness and short-term disability, and maternity or paternity. Entitlement to compensated absences falls into two categories:

(a) accumulating; and

(b) non-accumulating.

IndiaCode

13. Accumulating compensated absences are those that are carried forward and can be used in future periods if the current period's entitlement is not used in full. Accumulating compensated absences may be either vesting (in other words, employees are entitled to a cash payment for unused entitlement on leaving the enterprise) or non-vesting (when employees are not entitled to a cash payment for unused entitlement on leaving). An obligation arises as employees render service that increases their entitlement to future compensated absences. The obligation exists, and is recognised, even if the compensated absences are non-vesting, although the possibility that employees may leave before they use an accumulated non-vesting entitlement affects the measurement of that obligation.

14. An enterprise should measure the expected cost of accumulating compensated absences as the additional amount that the enterprise expects to pay as a result of the unused entitlement that has accumulated at the balance sheet date.

15. The method specified in the previous paragraph measures the obligation at the amount of the additional payments that are expected to arise solely from the fact that the benefit accumulates. In many cases, an enterprise may not need to make detailed computations to estimate that there is no material obligation for unused compensated absences. For example, a leave obligation is likely to be material only if there is a formal or informal understanding that unused leave may be taken as paid vacation.

Example Illustrating Paragraphs 14 and 15

An enterprise has 100 employees, who are each entitled to five working days of leave for each year. Unused leave may be carried forward for one calendar year. The leave is taken first out of the current year's entitlement and then out of any balance brought forward from the previous year (a LIFO basis). At 31 December 20X4, the average unused entitlement is two days per employee. The enterprise expects, based on past experience which is expected to continue, that 92 employees will take no more than five days of leave in 20X5 and that the remaining eight employees will take an average of six and a half days each.

The enterprise expects that it will pay an additional 12 days of pay as a result of the unused entitlement that has accumulated at 31 December 20X4 (one and a half days each, for eight employees). Therefore, the enterprise recognises a liability, as at 31 December 20X4, equal to 12 days of pay.

16. Non-accumulating compensated absences do not carry forward: they lapse if the current period's entitlement is not used in full and do not entitle employees to a cash payment for unused entitlement on leaving the enterprise. This is commonly the case for maternity or paternity leave. An enterprise recognises no liability or expense until the time of the absence, because employee service does not increase the amount of the benefit.

Provided that a Small and Medium-sized Company, as defined in the Notification, may not comply with paragraphs 11 to 16 of the Standard to the extent they deal with recognition and measurement of short-term accumulating compensated absences which are non-vesting (i.e., short-term accumulating compensated absences in respect of which employees are not entitled to cash payment for unused entitlement on leaving).

Profit-sharing and Bonus Plans

17. An enterprise should recognise the expected cost of profit-sharing and bonus payments under paragraph 10 when, and only when:

(a) the enterprise has a present obligation to make such payments as a result of past events; and

(b) a reliable estimate of the obligation can be made.

A present obligation exists when, and only when, the enterprise has no realistic alternative but to make the payments.

18. Under some profit-sharing plans, employees receive a share of the profit only if they remain with the enterprise for a specified period. Such plans create an obligation as employees render service that increases the amount to be paid if they remain in service until the end of the specified period. The measurement of such obligations reflects the possibility that some employees may leave without receiving profit-sharing payments.

Example Illustrating Paragraph 18

A profit-sharing plan requires an enterprise to pay a specified proportion of its net profit for the year to employees who serve throughout the year. If no employees leave during the year, the total profit-sharing payments for the year will be 3% of net profit. The enterprise estimates that staff turnover will reduce the payments to 2.5% of net profit.

The enterprise recognises a liability and an expense of 2.5% of net profit.

19. An enterprise may have no legal obligation to pay a bonus. Nevertheless, in some cases, an enterprise has a practice of paying bonuses. In such cases also, the enterprise has an obligation because the enterprise has no realistic alternative but to pay the bonus. The measurement of the obligation reflects the possibility that some employees may

leave without receiving a bonus.

20. An enterprise can make a reliable estimate of its obligation under a profit-sharing or bonus plan when, and only when:

(a) the formal terms of the plan contain a formula for determining the amount of the benefit; or

(b) the enterprise determines the amounts to be paid before the financial statements are approved; or

(c) past practice gives clear evidence of the amount of the enterprise's obligation.

21. An obligation under profit-sharing and bonus plans results from employee service and not from a transaction with the enterprise's owners. Therefore, an enterprise recognises the cost of profit-sharing and bonus plans not as a distribution of net profit but as an expense.

22. If profit-sharing and bonus payments are not due wholly within twelve months after the end of the period in which the employees render the related service, those payments are other long-term employee benefits (see paragraphs 127-132).

Disclosure

23. Although this Standard does not require specific disclosures about short-term employee benefits, other Accounting Standards may require disclosures. For example, where required by AS 18, *Related Party Disclosures* an enterprise discloses information about employee benefits for key management personnel.

Post-employment Benefits: Defined Contribution Plans and Defined Benefit Plans

24. Post-employment benefits include:

(a) retirement benefits, e.g., gratuity and pension; and

(b) other benefits, e.g., post-employment life insurance and post- employment medical care.

Arrangements whereby an enterprise provides post-employment benefits are post-employment benefit plans. An enterprise applies this Standard to all such arrangements whether or not they involve the establishment of a separate entity to receive contributions and to pay benefits.

IndiaCode

25. Post-employment benefit plans are classified as either defined contribution plans or defined benefit plans, depending on the economic substance of the plan as derived from its principal terms and conditions. Under defined contribution plans:

(a) the enterprise's obligation is limited to the amount that it agrees to contribute to the fund. Thus, the amount of the post-employment benefits received by the employee is determined by the amount of contributions paid by an enterprise (and also by the employee) to a post-employment benefit plan or to an insurance company, together with investment returns arising from the contributions; and

(b) in consequence, actuarial risk (that benefits will be less than expected) and investment risk (that assets invested will be insufficient to meet expected benefits) fall on the employee.

26. Examples of cases where an enterprise's obligation is not limited to the amount that it agrees to contribute to the fund are when the enterprise has an obligation through:

(a) a plan benefit formula that is not linked solely to the amount of contributions; or

(b) a guarantee, either indirectly through a plan or directly, of a specified return on contributions; or

(c) informal practices that give rise to an obligation, for example, an obligation may arise where an enterprise has a history of increasing benefits for former employees to keep pace with inflation even where there is no legal obligation to do so.

27. Under defined benefit plans:

(a) the enterprise's obligation is to provide the agreed benefits to current and former employees; and

(b) actuarial risk (that benefits will cost more than expected) and investment risk fall, in substance, on the enterprise. If actuarial or investment experience are worse than expected, the enterprise's obligation may be increased.

28. Paragraphs 29 to 43 below deal with defined contribution plans and defined benefit plans in the context of multi-employer plans, state plans and insured benefits.

Multi-employer Plans

29. An enterprise should classify a multi-employer plan as a defined contribution plan or a defined benefit plan under the terms of the plan (including any obligation that goes beyond the formal terms). Where a multi-

employer plan is a defined benefit plan, an enterprise should:

(a) account for its proportionate share of the defined benefit obligation, plan assets and cost associated with the plan in the same way as for any other defined benefit plan; and

(b) disclose the information required by paragraph 120.

30. When sufficient information is not available to use defined benefit accounting for a multi-employer plan that is a defined benefit plan, an enterprise should:

(a) account for the plan under paragraphs 45-47 as if it were a defined contribution plan;

(b) disclose:

(i) the fact that the plan is a defined benefit plan; and

(ii) the reason why sufficient information is not available to enable the enterprise to account for the plan as a defined benefit plan; and

(c) to the extent that a surplus or deficit in the plan may affect the amount of future contributions, disclose in addition:

(i) any available information about that surplus or deficit;

(ii) the basis used to determine that surplus or deficit; and

(iii) the implications, if any, for the enterprise.

31. One example of a defined benefit multi-employer plan is one where:

(a) the plan is financed in a manner such that contributions are set at a level that is expected to be sufficient to pay the benefits falling due in the same period; and future benefits earned during the current period will be paid out of future contributions; and

(b) employees' benefits are determined by the length of their service and the participating enterprises have no realistic means of withdrawing from the plan without paying a contribution for the benefits earned by employees up to the date of withdrawal. Such a plan creates actuarial risk for the enterprise; if the ultimate cost of benefits already earned at the balance sheet date is more than expected, the enterprise will have to either increase its contributions or persuade employees to accept a reduction in benefits. Therefore, such a plan is a defined benefit plan.

32. Where sufficient information is available about a multi-employer plan which is a defined benefit plan, an enterprise accounts for its proportionate share of the defined benefit obligation, plan assets and post-employment benefit cost associated with the plan in the same way as for any other defined benefit plan. However, in some cases, an enterprise may not be able to identify its share of the underlying financial position and performance of the plan with sufficient reliability for accounting purposes. This may occur if:

(a) the enterprise does not have access to information about the plan that satisfies the requirements of this Standard; or

(b) the plan exposes the participating enterprises to actuarial risks associated with the current and former employees of other enterprises, with the result that there is no consistent and reliable basis for allocating the obligation, plan assets and cost to individual enterprises participating in the plan.

In those cases, an enterprise accounts for the plan as if it were a defined contribution plan and discloses the additional information required by paragraph 30.

33. Multi-employer plans are distinct from group administration plans. A group administration plan is merely an aggregation of single employer plans combined to allow participating employers to pool their assets for investment purposes and reduce investment management and administration costs, but the claims of different employers are segregated for the sole benefit of their own employees. Group administration plans pose no particular accounting problems because information is readily available to treat them in the same way as any other single employer plan and because such plans do not expose the participating enterprises to actuarial risks associated with the current and former employees of other enterprises. The definitions in this Standard require an enterprise to classify a group administration plan as a defined contribution plan or a defined benefit plan in accordance with the terms of the plan (including any obligation that goes beyond the formal terms).

34. Defined benefit plans that share risks between various enterprises under common control, for example, a parent and its subsidiaries, are not multi-employer plans.

35. In respect of such a plan, if there is a contractual agreement or stated policy for charging the net defined benefit cost for the plan as a whole to individual group enterprises, the enterprise recognises, in its separate

financial statements, the net defined benefit cost so charged. If there is no such agreement or policy, the net defined benefit cost is recognised in the separate financial statements of the group enterprise that is legally the sponsoring employer for the plan. The other group enterprises recognise, in their separate financial statements, a cost equal to their contribution payable for the period.

36. AS 29, *Provisions, Contingent Liabilities and Contingent Assets* requires an enterprise to recognise, or disclose information about, certain contingent liabilities. In the context of a multi-employer plan, a contingent liability may arise from, for example:

(a) actuarial losses relating to other participating enterprises because each enterprise that participates in a multi-employer plan shares in the actuarial risks of every other participating enterprise; or

(b) any responsibility under the terms of a plan to finance any shortfall in the plan if other enterprises cease to participate.

State Plans

37. An enterprise should account for a state plan in the same way as for a multi-employer plan (see paragraphs 29 and 30).

38. State plans are established by legislation to cover all enterprises (or all enterprises in a particular category, for example, a specific industry) and are operated by national or local government or by another body (for example, an autonomous agency created specifically for this purpose) which is not subject to control or influence by the reporting enterprise. Some plans established by an enterprise provide both compulsory benefits which substitute for benefits that would otherwise be covered under a state plan and additional voluntary benefits. Such plans are not state plans.

39. State plans are characterised as defined benefit or defined contribution in nature based on the enterprise's obligation under the plan. Many state plans are funded in a manner such that contributions are set at a level that is expected to be sufficient to pay the required benefits falling due in the same period; future benefits earned during the current period will be paid out of future contributions. Nevertheless, in most state plans, the enterprise has no obligation to pay those future benefits: its only obligation is to pay the contributions as they fall due and if the enterprise ceases to employ members of the state plan, it will have no obligation to pay the benefits earned by such employees in previous years. For this reason, state plans are normally defined contribution plans. However, in the rare cases when a state plan is a defined benefit plan, an enterprise applies the treatment prescribed in paragraphs 29 and 30.

Insured Benefits

40. An enterprise may pay insurance premiums to fund a post-employment benefit plan. The enterprise should treat such a plan as a defined contribution plan unless the enterprise will have (either directly, or indirectly through the plan) an obligation to either:

(a) pay the employee benefits directly when they fall due; or

(b) pay further amounts if the insurer does not pay all future employee benefits relating to employee service in the current and prior periods.

If the enterprise retains such an obligation, the enterprise should treat the plan as a defined benefit plan.

41. The benefits insured by an insurance contract need not have a direct or automatic relationship with the enterprise's obligation for employee benefits. Post-employment benefit plans involving insurance contracts are subject to the same distinction between accounting and funding as other funded plans.

42. Where an enterprise funds a post-employment benefit obligation by contributing to an insurance policy under which the enterprise (either directly, indirectly through the plan, through the mechanism for setting future premiums or through a related party relationship with the insurer) retains an obligation, the payment of the premiums does not amount to a defined contribution arrangement. It follows that the enterprise:

(a) accounts for a qualifying insurance policy as a plan asset (see paragraph 7); and

(b) recognises other insurance policies as reimbursement rights (if the policies satisfy the criteria in paragraph 103).

43. Where an insurance policy is in the name of a specified plan participant or a group of plan participants and the enterprise does not have any obligation to cover any loss on the policy, the enterprise has no obligation to pay benefits to the employees and the insurer has sole responsibility for paying the benefits. The payment of fixed premiums under such contracts is, in substance, the settlement of the employee benefit obligation, rather than an investment to meet the obligation. Consequently, the enterprise no longer has an asset or a liability. Therefore, an enterprise treats such payments as contributions to a defined contribution plan.

Post-employment Benefits: Defined Contribution Plans

44. Accounting for defined contribution plans is straightforward because the reporting enterprise's obligation for each period is determined by the amounts to be contributed for that period. Consequently, no actuarial assumptions are required to measure the obligation or the expense and there is no possibility of any actuarial gain or loss. Moreover, the obligations are measured on an undiscounted basis, except where they do not fall due wholly within twelve months after the end of the period in which the employees render the related service.

Recognition and Measurement

45. When an employee has rendered service to an enterprise during a period, the enterprise should recognise the contribution payable to a defined contribution plan in exchange for that service:

(a) as a liability (accrued expense), after deducting any contribution already paid. If the contribution already paid exceeds the contribution due for service before the balance sheet date, an enterprise should recognise that excess as an asset (prepaid expense) to the extent that the prepayment will lead to, for example, a reduction in future payments or a cash refund; and

(b) as an expense, unless another Accounting Standard requires or permits the inclusion of the contribution in the cost of an asset (see, for example, AS 10, Property, Plant and Equipment).

46. Where contributions to a defined contribution plan do not fall due wholly within twelve months after the end of the period in which the employees render the related service, they should be discounted using the discount rate specified in paragraph 78.

Provided that a Small and Medium-sized Company, as defined in the Notification, may not discount contributions that fall due more than 12 months after the balance sheet date.

Disclosure

47. An enterprise should disclose the amount recognised as an expense for defined contribution plans.

48. Where required by AS 18, *Related Party Disclosures* an enterprise discloses information about contributions to defined contribution plans for key management personnel.

Post-employment Benefits: Defined Benefit Plans

49. Accounting for defined benefit plans is complex because actuarial assumptions are required to measure the obligation and the expense and there is a possibility of actuarial gains and losses. Moreover, the obligations are measured on a discounted basis because they may be settled many years after the employees render the related service. While the Standard requires that it is the responsibility of the reporting enterprise to measure the obligations under the defined benefit plans, it is recognised that for doing so the enterprise would normally use the services of a qualified actuary.

Recognition and Measurement

50. Defined benefit plans may be unfunded, or they may be wholly or partly funded by contributions by an enterprise, and sometimes its employees, into an entity, or fund, that is legally separate from the reporting enterprise and from which the employee benefits are paid. The payment of funded benefits when they fall due depends not only on the financial position and the investment performance of the fund but also on an enterprise's ability to make good any shortfall in the fund's assets. Therefore, the enterprise is, in substance, underwriting the actuarial and investment risks associated with the plan. Consequently, the expense recognised for a defined benefit plan is not necessarily the amount of the contribution due for the period.

51. Accounting by an enterprise for defined benefit plans involves the following steps:

(a) using actuarial techniques to make a reliable estimate of the amount of benefit that employees have earned in return for their service in the current and prior periods. This requires an enterprise to determine how much benefit is attributable to the current and prior periods (see paragraphs 68-72) and to make estimates (actuarial assumptions) about demographic variables (such as employee turnover and mortality) and financial variables (such as future increases in salaries and medical costs) that will influence the cost of the benefit (see paragraphs 73-91);

(b) discounting that benefit using the Projected Unit Credit Method in order to determine the present value of the defined benefit obligation and the current service cost (see paragraphs 65-67);

(c) determining the fair value of any plan assets (see paragraphs 100-102);

(d) determining the total amount of actuarial gains and losses (see paragraphs 92-93);

(e) where a plan has been introduced or changed, determining the resulting past service cost (see paragraphs 94-99); and

(f) where a plan has been curtailed or settled, determining the resulting gain or loss (see paragraphs 110-116).

Where an enterprise has more than one defined benefit plan, the enterprise applies these procedures for each material plan separately.

52. For measuring the amounts under paragraph 51, in some cases, estimates, averages and simplified computations may provide a reliable approximation of the detailed computations.

Accounting for the Obligation under a Defined Benefit Plan

53. An enterprise should account not only for its legal obligation under the formal terms of a defined benefit plan, but also for any other obligation that arises from the enterprise's informal practices. Informal practices give rise to an obligation where the enterprise has no realistic alternative but to pay employee benefits. An example of such an obligation is where a change in the enterprise's informal practices would cause unacceptable damage to its relationship with employees.

54. The formal terms of a defined benefit plan may permit an enterprise to terminate its obligation under the plan. Nevertheless, it is usually difficult for an enterprise to cancel a plan if employees are to be retained. Therefore, in the absence of evidence to the contrary, accounting for post-employment benefits assumes that an enterprise which is currently promising such benefits will continue to do so over the remaining working lives of employees.

Balance Sheet

55. The amount recognised as a defined benefit liability should be the net total of the following amounts:

(a) the present value of the defined benefit obligation at the balance sheet date (see paragraph 65);

(b) minus any past service cost not yet recognised (see paragraph 94);

(c) minus the fair value at the balance sheet date of plan assets (if any) out of which the obligations are to be settled directly (see paragraphs 100-102).

56. The present value of the defined benefit obligation is the gross obligation, before deducting the fair value of any plan assets.

57. An enterprise should determine the present value of defined benefit obligations and the fair value of any plan assets with sufficient regularity that the amounts recognised in the financial statements do not differ materially from the amounts that would be determined at the balance sheet date.

58. The detailed actuarial valuation of the present value of defined benefit obligations may be made at intervals not exceeding three years. However, with a view that the amounts recognised in the financial statements do not differ materially from the amounts that would be determined at the balance sheet date, the most recent valuation is reviewed at the balance sheet date and updated to reflect any material transactions and other material changes in circumstances (including changes in interest rates) between the date of valuation and the balance sheet date. The fair value of any plan assets is determined at each balance sheet date.

59. The amount determined under paragraph 55 may be negative (an asset). An enterprise should measure the resulting asset at the lower of:

(a) the amount determined under paragraph 55; and

(b) the present value of any economic benefits available in the form of refunds from the plan or reductions in future contributions to the plan. The present value of these economic benefits should be determined using the discount rate specified in paragraph 78.

60. An asset may arise where a defined benefit plan has been overfunded or in certain cases where actuarial gains are recognised. An enterprise recognises an asset in such cases because:

(a) the enterprise controls a resource, which is the ability to use the surplus to generate future benefits;

(b) that control is a result of past events (contributions paid by the enterprise and service rendered by the employee); and

(c) future economic benefits are available to the enterprise in the form of a reduction in future contributions or a cash refund, either directly to the enterprise or indirectly to another plan in deficit.

IndiaCode

Example Illustrating Paragraph 59

(Amount in Rs.)

A defined benefit plan has the following characteristics:		
Present value of the obligation		1,100
Fair value of plan assets		(1,190)
		(90)
Unrecognised past service cost		(70)
Negative amount determined under paragraph 55		(160)
Present value of available future refunds and reductions in future contributions	90	
Limit under paragraph 59 (b)	90	

Rs. 90 is less than Rs. 160. Therefore, the enterprise recognises an asset of Rs. 90 and discloses that the limit reduced the carrying amount of the asset by Rs. 70 (see paragraph 120(f)(ii)).

Statement of Profit and Loss

61. An enterprise should recognise the net total of the following amounts in the statement of profit and loss, except to the extent that another Accounting Standard requires or permits their inclusion in the cost of an asset:

(a) current service cost (see paragraphs 64-91);

(b) interest cost (see paragraph 82);

(c) the expected return on any plan assets (see paragraphs 107-109) and on any reimbursement rights (see paragraph 103);

(d) actuarial gains and losses (see paragraphs 92-93);

(e) past service cost to the extent that paragraph 94 requires an enterprise to recognise it;

(f) the effect of any curtailments or settlements (see paragraphs 110 and 111); and

(g) the effect of the limit in paragraph 59 (b), i.e., the extent to which the amount determined under paragraph 55 (if negative) exceeds the amount determined under paragraph 59 (b).

62. Other Accounting Standards require the inclusion of certain employee benefit costs within the cost of assets such as tangible fixed assets (see AS 10, *Property, Plant and Equipment*). Any post-employment benefit costs included in the cost of such assets include the appropriate proportion of the components listed in paragraph 61.

Illustration

63. Illustration I attached to the Standard illustrates describing the components of the amounts recognised in the balance sheet and statement of profit and loss in respect of defined benefit plans.

Recognition and Measurement: Present Value of Defined Benefit Obligations and Current Service Cost

64. The ultimate cost of a defined benefit plan may be influenced by many variables, such as final salaries, employee turnover and mortality, medical cost trends and, for a funded plan, the investment earnings on the plan assets. The ultimate cost of the plan is uncertain and this uncertainty is likely to persist over a long period of time. In order to measure the present value of the post-employment benefit obligations and the related current service cost, it is necessary to:

(a) apply an actuarial valuation method (see paragraphs 65-67);

(b) attribute benefit to periods of service (see paragraphs 68-72); and

(c) make actuarial assumptions (see paragraphs 73-91).

Actuarial Valuation Method

65. An enterprise should use the Projected Unit Credit Method to determine the present value of its defined benefit obligations and the related current service cost and, where applicable, past service cost.

66. The Projected Unit Credit Method (sometimes known as the accrued benefit method pro-rated on service or as the benefit/years of service method) considers each period of service as giving rise to an additional unit of benefit entitlement (see paragraphs 68-72) and measures each unit separately to build up the final obligation (see paragraphs 73-91).

IndiaCode

67. An enterprise discounts the whole of a post-employment benefit obligation, even if part of the obligation falls due within twelve months of the balance sheet date.

Example Illustrating Paragraph 66

A lump sum benefit, equal to 1% of final salary for each year of service, is payable on termination of service. The salary in year 1 is Rs. 10,000 and is assumed to increase at 7% (compound) each year resulting in Rs. 13,100 at the end of year 5. The discount rate used is 10% per annum. The following table shows how the obligation builds up for an employee who is expected to leave at the end of year 5, assuming that there are no changes in actuarial assumptions. For simplicity, this example ignores the additional adjustment needed to reflect the probability that the employee may leave the enterprise at an earlier or later date.

(Amount in Rs.)

Year		*1*	*2*	*3*	*4*	*5*
Benefit attributed to:						
- prior years	*0*	*131*	*262*	*393*	*524*	
- current year (1% of final salary)		*131*	*131*	*131*	*131*	*131*
- current and prior years		*131*	*262*	*393*	*524*	*655*
Opening Obligation (see note 1)		*-*	*89*	*196*	*324*	*476*
Interest at 10%	*-*	*9*	*20*	*33*	*48*	
Current Service Cost (see note 2)		*89*	*98*	*108*	*119*	*131*
Closing Obligation (see note 3)		*89*	*196*	*324*	*476*	*655*

Notes:

1. The Opening Obligation is the present value of benefit attributed to prior years.

2. The Current Service Cost is the present value of benefit attributed to the current year.

3. The Closing Obligation is the present value of benefit attributed to current and prior years.

IndiaCode

Attributing Benefit to Periods of Service

68. In determining the present value of its defined benefit obligations and the related current service cost and, where applicable, past service cost, an enterprise should attribute benefit to periods of service under the plan's benefit formula. However, if an employee's service in later years will lead to a materially higher level of benefit than in earlier years, an enterprise should attribute benefit on a straight-line basis from:

(a) the date when service by the employee first leads to benefits under the plan (whether or not the benefits are conditional on further service); until

(b) the date when further service by the employee will lead to no material amount of further benefits under the plan, other than from further salary increases.

69. The Projected Unit Credit Method requires an enterprise to attribute benefit to the current period (in order to determine current service cost) and the current and prior periods (in order to determine the present value of defined benefit obligations). An enterprise attributes benefit to periods in which the obligation to provide post-employment benefits arises. That obligation arises as employees render services in return for post-employment benefits which an enterprise expects to pay in future reporting periods. Actuarial techniques allow an enterprise to measure that obligation with sufficient reliability to justify recognition of a liability.

Examples Illustrating Paragraph 69

1. A defined benefit plan provides a lump-sum benefit of Rs. 100 payable on retirement for each year of service.

A benefit of Rs. 100 is attributed to each year. The current service cost is the present value of Rs. 100. The present value of the defined benefit obligation is the present value of Rs. 100, multiplied by the number of years of service up to the balance sheet date.

If the benefit is payable immediately when the employee leaves the enterprise, the current service cost and the present value of the defined benefit obligation reflect the date at which the employee is expected to leave. Thus, because of the effect of discounting, they are less than the amounts that would be determined if the employee left at the balance sheet date.

2. A plan provides a monthly pension of 0.2% of final salary for each year of service. The pension is payable from the age of 60.

Benefit equal to the present value, at the expected retirement date, of a monthly pension of 0.2% of the estimated final salary payable from the expected retirement date until the expected date of death is attributed to each year of service. The current service cost is the present value of that benefit. The present value of the defined benefit obligation is the present value of monthly pension payments of 0.2% of final salary, multiplied by the number of years of service up to the balance sheet date. The current service cost and the present value of the defined benefit obligation are discounted because pension payments begin at the age of 60.

70. Employee service gives rise to an obligation under a defined benefit plan even if the benefits are conditional on future employment (in other words they are not vested). Employee service before the vesting date gives rise to an obligation because, at each successive balance sheet date, the amount of future service that an employee will have to render before becoming entitled to the benefit is reduced. In measuring its defined benefit obligation, an enterprise considers the probability that some employees may not satisfy any vesting requirements. Similarly, although certain post- employment benefits, for example, post-employment medical benefits, become payable only if a specified event occurs when an employee is no longer employed, an obligation is created when the employee renders service that will provide entitlement to the benefit if the specified event occurs. The probability that the specified event will occur affects the measurement of the obligation, but does not determine whether the obligation exists.

Examples Illustrating Paragraph 70

1. A plan pays a benefit of Rs. 100 for each year of service. The benefits vest after ten years of service.

A benefit of Rs. 100 is attributed to each year. In each of the first ten years, the current service cost and the present value of the obligation reflect the probability that the employee may not complete ten years of service.

2. A plan pays a benefit of Rs. 100 for each year of service, excluding service before the age of 25. The benefits vest immediately.

No benefit is attributed to service before the age of 25 because service before that date does not lead to benefits (conditional or unconditional). A benefit of Rs. 100 is attributed to each subsequent year.

71. The obligation increases until the date when further service by the employee will lead to no material amount of further benefits. Therefore, all benefit is attributed to periods ending on or before that date. Benefit is attributed to individual accounting periods under the plan's benefit formula. However, if an employee's service in later years will lead to a materially higher level of benefit than in earlier years, an enterprise attributes benefit on a straight-line basis until the date when further service by the employee will lead to no material amount of further benefits. That is because the employee's service throughout the entire period will ultimately lead to benefit at that higher level.

Examples Illustrating Paragraph 71

1. A plan pays a lump-sum benefit of Rs. 1,000 that vests after ten years of service. The plan provides no further benefit for subsequent service.

A benefit of Rs. 100 (Rs. 1,000 divided by ten) is attributed to each of the first ten years. The current service cost in each of the first ten years reflects the probability that the employee may not complete ten years of service. No benefit is attributed to subsequent years.

2. A plan pays a lump-sum retirement benefit of Rs. 2,000 to all employees who are still employed at the age of 50 after twenty years of service, or who are still employed at the age of 60, regardless of their length of service.

For employees who join before the age of 30, service first leads to benefits under the plan at the age of 30 (an employee could leave at the age of 25 and return at the age of 28, with no effect on the amount or timing of benefits). Those benefits are conditional on further service. Also, service beyond the age of 50 will lead to no material amount of further benefits. For these employees, the enterprise attributes benefit of Rs. 100 (Rs. 2,000 divided by 20) to each year from the age of 30 to the age of 50.

For employees who join between the ages of 30 and 40, service beyond twenty years will lead to no material amount of further benefits. For these employees, the enterprise attributes benefit of Rs. 100 (Rs. 2,000 divided by 20) to each of the first twenty years.

For an employee who joins at the age of 50, service beyond ten years will lead to no material amount of further benefits. For this employee, the enterprise attributes benefit of Rs. 200 (Rs. 2,000 divided by 10) to each of the first ten years.

For all employees, the current service cost and the present value of the obligation reflect the probability that the employee may not complete the necessary period of service.

3. A post-employment medical plan reimburses 40% of an employee's post-employment medical costs if the employee leaves after more than ten and less than twenty years of service and 50% of those costs if the employee leaves after twenty or more years of service.

Under the plan's benefit formula, the enterprise attributes 4% of the present value of the expected medical costs (40% divided by ten) to each of the first ten years and 1% (10% divided by ten) to each of the second ten years. The current service cost in each year reflects the probability that the employee may not complete the necessary period of service to earn part or all of the benefits. For employees expected to leave within ten years, no benefit is attributed.

4. A post-employment medical plan reimburses 10% of an employee's post-employment medical costs if the employee leaves after more than ten and less than twenty years of service and 50% of those costs if the employee leaves after twenty or more years of service.

Service in later years will lead to a materially higher level of benefit than in earlier years. Therefore, for employees expected to leave after twenty or more years, the enterprise attributes benefit on a straight-line basis under paragraph 69. Service beyond twenty years will lead to no material amount of further benefits. Therefore, the benefit attributed to each of the first twenty years is 2.5% of the present value of the expected medical costs (50% divided by twenty).

For employees expected to leave between ten and twenty years, the benefit attributed to each of the first ten years is 1% of the present value of the expected medical costs. For these employees, no benefit is attributed to service between the end of the tenth year and the estimated date of leaving.

For employees expected to leave within ten years, no benefit is attributed.

72. Where the amount of a benefit is a constant proportion of final salary for each year of service, future salary increases will affect the amount required to settle the obligation that exists for service before the balance sheet date, but do not create an additional obligation. Therefore:

(a) for the purpose of paragraph 68(b), salary increases do not lead to further benefits, even though the amount of the benefits is dependent on final salary; and

(b) the amount of benefit attributed to each period is a constant proportion of the salary to which the benefit is linked.

Example Illustrating Paragraph 72

Employees are entitled to a benefit of 3% of final salary for each year of service before the age of 55.

Benefit of 3% of estimated final salary is attributed to each year up to the age of 55. This is the date when further service by the employee will lead to no material amount of further benefits under the plan. No benefit is attributed to service after that age.

Actuarial Assumptions

73. Actuarial assumptions comprising demographic assumptions and financial assumptions should be unbiased and mutually compatible. Financial assumptions should be based on market expectations, at the balance sheet date, for the period over which the obligations are to be settled.

74. Actuarial assumptions are an enterprise's best estimates of the variables that will determine the ultimate cost of providing post-employment benefits. Actuarial assumptions comprise:

(a) demographic assumptions about the future characteristics of current and former employees (and their dependants) who are eligible for benefits. Demographic assumptions deal with matters such as:

(i) mortality, both during and after employment;

(ii) rates of employee turnover, disability and early retirement;

(iii) the proportion of plan members with dependants who will be eligible for benefits; and

(iv) claim rates under medical plans; and

(b) financial assumptions, dealing with items such as:

(i) the discount rate (see paragraphs 78-82);

(ii) future salary and benefit levels (see paragraphs 83-87);

(iii) in the case of medical benefits, future medical costs, including, where material, the cost of administering claims and benefit payments (see paragraphs 88-91); and

(iv) the expected rate of return on plan assets (see paragraphs 107- 109).

75. Actuarial assumptions are unbiased if they are neither imprudent nor excessively conservative.

76. Actuarial assumptions are mutually compatible if they reflect the economic relationships between factors such as inflation, rates of salary increase, the return on plan assets and discount rates. For example, all assumptions which depend on a particular inflation level (such as assumptions about interest rates and salary and benefit increases) in any given future period assume the same inflation level in that period.

77. An enterprise determines the discount rate and other financial assumptions in nominal (stated) terms, unless estimates in real (inflation- adjusted) terms are more reliable, for example, where the benefit is index- linked and there is a deep market in index-linked bonds of the same currency and term.

Actuarial Assumptions: Discount Rate

78. The rate used to discount post-employment benefit obligations (both funded and unfunded) should be determined by reference to market yields at the balance sheet date on government bonds. The currency and term of the government bonds should be consistent with the currency and estimated term of the post-employment benefit obligations.

79. One actuarial assumption which has a material effect is the discount rate. The discount rate reflects the time value of money but not the actuarial or investment risk. Furthermore, the discount rate does not reflect the enterprise-specific credit risk borne by the enterprise's creditors, nor does it reflect the risk that future experience may differ from actuarial assumptions.

80. The discount rate reflects the estimated timing of benefit payments. In practice, an enterprise often achieves this by applying a single weighted average discount rate that reflects the estimated timing and amount of benefit payments and the currency in which the benefits are to be paid.

81. In some cases, there may be no government bonds with a sufficiently long maturity to match the estimated maturity of all the benefit payments. In such cases, an enterprise uses current market rates of the appropriate term to discount shorter term payments, and estimates the discount rate for longer maturities by extrapolating current market rates along the yield curve. The total present value of a defined benefit obligation is unlikely to be particularly sensitive to the discount rate applied to the portion of benefits that is payable beyond the final maturity of the available government bonds.

82. Interest cost is computed by multiplying the discount rate as determined at the start of the period by the present value of the defined benefit obligation throughout that period, taking account of any material changes in the obligation. The present value of the obligation will differ from the liability recognised in the balance sheet because the liability is recognised after deducting the fair value of any plan assets and because some past service cost are not recognised immediately. [Illustration I attached to the Standard illustrates the computation of interest cost, among other things]

Actuarial Assumptions: Salaries, Benefits and Medical Costs

83. Post-employment benefit obligations should be measured on a basis that reflects:

(a) estimated future salary increases;

(b) the benefits set out in the terms of the plan (or resulting from any obligation that goes beyond those terms) at the balance sheet date; and

(c) estimated future changes in the level of any state benefits that affect the benefits payable under a defined benefit plan, if, and only if, either:

(i) those changes were enacted before the balance sheet date; or

(ii) past history, or other reliable evidence, indicates that those state benefits will change in some predictable manner, for example, in line with future changes in general price levels or general salary levels.

84. Estimates of future salary increases take account of inflation, seniority, promotion and other relevant factors, such as supply and demand in the employment market.

85. If the formal terms of a plan (or an obligation that goes beyond those terms) require an enterprise to change benefits in future periods, the measurement of the obligation reflects those changes. This is the case when, for example:

(a) the enterprise has a past history of increasing benefits, for example, to mitigate the effects of inflation, and there is no indication that this practice will change in the future; or

(b) actuarial gains have already been recognised in the financial statements and the enterprise is obliged, by either the formal terms of a plan (or an obligation that goes beyond those terms) or legislation, to use any surplus in the plan for the benefit of plan participants (see paragraph 96(c)).

86. Actuarial assumptions do not reflect future benefit changes that are not set out in the formal terms of the plan (or an obligation that goes beyond those terms) at the balance sheet date. Such changes will result in:

(a) past service cost, to the extent that they change benefits for service before the change; and

(b) current service cost for periods after the change, to the extent that they change benefits for service after the change.

87. Some post-employment benefits are linked to variables such as the level of state retirement benefits or state medical care. The measurement of such benefits reflects expected changes in such variables, based on past history and other reliable evidence.

88. Assumptions about medical costs should take account of estimated future changes in the cost of medical services, resulting from both inflation and specific changes in medical costs.

89. Measurement of post-employment medical benefits requires assumptions about the level and frequency of future claims and the cost of meeting those claims. An enterprise estimates future medical costs on the basis of historical data about the enterprise's own experience, supplemented where necessary by historical data from other enterprises, insurance companies, medical providers or other sources. Estimates of future medical costs consider the effect of technological advances, changes in health care utilisation or delivery patterns and changes in the health status of plan participants.

90. The level and frequency of claims is particularly sensitive to the age, health status and sex of employees (and their dependants) and may be sensitive to other factors such as geographical location. Therefore, historical data is adjusted to the extent that the demographic mix of the population differs from that of the population used as a basis for the historical data. It is also adjusted where there is reliable evidence that historical trends will not continue.

91. Some post-employment health care plans require employees to contribute to the medical costs covered by the plan. Estimates of future medical costs take account of any such contributions, based on the terms of the plan at the balance sheet date (or based on any obligation that goes beyond those terms). Changes in those employee contributions result in past service cost or, where applicable, curtailments. The cost of meeting claims may be reduced by benefits from state or other medical providers (see paragraphs 83(c) and 87).

Actuarial Gains and Losses

92. Actuarial gains and losses should be recognised immediately in the statement of profit and loss as income or expense (see paragraph 61).

92A. Paragraph 145(b)(iii) explains the need to consider any unrecognised part of the transitional liability in accounting for subsequent actuarial gains.

93. Actuarial gains and losses may result from increases or decreases in either the present value of a defined benefit obligation or the fair value of any related plan assets. Causes of actuarial gains and losses include, for example:

(a) unexpectedly high or low rates of employee turnover, early retirement or mortality or of increases in salaries, benefits (if the terms of a plan provide for inflationary benefit increases) or medical costs;

(b) the effect of changes in estimates of future employee turnover, early retirement or mortality or of increases in salaries, benefits (if the terms of a plan provide for inflationary benefit increases) or medical costs;

(c) the effect of changes in the discount rate; and

(d) differences between the actual return on plan assets and the expected return on plan assets (see paragraphs 107-109).

Past Service Cost

94. In measuring its defined benefit liability under paragraph 55, an enterprise should recognise past service cost as an expense on a straight- line basis over the average period until the benefits become vested. To the extent that the benefits are already vested immediately following the introduction of, or changes to, a defined benefit plan, an enterprise should recognise past service cost immediately.

95. Past service cost arises when an enterprise introduces a defined benefit plan or changes the benefits payable under an existing defined benefit plan. Such changes are in return for employee service over the period until the

benefits concerned are vested. Therefore, past service cost is recognised over that period, regardless of the fact that the cost refers to employee service in previous periods. Past service cost is measured as the change in the liability resulting from the amendment (see paragraph 65).

Example Illustrating Paragraph 95

An enterprise operates a pension plan that provides a pension of 2% of final salary for each year of service. The benefits become vested after five years of service. On 1 January 20X5 the enterprise improves the pension to 2.5% of final salary for each year of service starting from 1

January 20X1. At the date of the improvement, the present value of the additional benefits for service from 1 January 20X1 to 1 January 20X5 is as follows:

Employees with more than five years' service at 1/1/X5	Rs.150
Employees with less than five years' service at 1/1/X5	
(average period until vesting: three years)	Rs. 120
	Rs. 270

The enterprise recognises Rs. 150 immediately because those benefits are already vested. The enterprise recognises Rs. 120 on a straight-line basis over three years from 1 January 20X5.

96. Past service cost excludes:

(a) the effect of differences between actual and previously assumed salary increases on the obligation to pay benefits for service in prior years (there is no past service cost because actuarial assumptions allow for projected salaries);

(b) under and over estimates of discretionary pension increases where an enterprise has an obligation to grant such increases (there is no past service cost because actuarial assumptions allow for such increases);

(c) estimates of benefit improvements that result from actuarial gains that have already been recognised in the financial statements if the enterprise is obliged, by either the formal terms of a plan (or an obligation that goes beyond those terms) or legislation, to use any surplus in the plan for the benefit of plan participants, even if the benefit increase has not yet been formally awarded (the resulting increase in the obligation is an actuarial loss and not past service cost, see paragraph 85(b));

(d) the increase in vested benefits (not on account of new or improved benefits) when employees complete vesting requirements (there is no past service cost because the estimated cost of benefits was recognised as current service cost as the service was rendered); and

(e) the effect of plan amendments that reduce benefits for future service (a curtailment).

97. An enterprise establishes the amortisation schedule for past service cost when the benefits are introduced or changed. It would be impracticable to maintain the detailed records needed to identify and implement subsequent changes in that amortisation schedule. Moreover, the effect is likely to be material only where there is a curtailment or settlement. Therefore, an enterprise amends the amortisation schedule for past service cost only if there is a curtailment or settlement.

98. Where an enterprise reduces benefits payable under an existing defined benefit plan, the resulting reduction in the defined benefit liability is recognised as (negative) past service cost over the average period until the reduced portion of the benefits becomes vested.

99. Where an enterprise reduces certain benefits payable under an existing defined benefit plan and, at the same time, increases other benefits payable under the plan for the same employees, the enterprise treats the change as a single net change.

Recognition and Measurement: Plan Assets

Fair Value of Plan Assets

100. The fair value of any plan assets is deducted in determining the amount recognised in the balance sheet under paragraph 55. When no market price is available, the fair value of plan assets is estimated; for example, by discounting expected future cash flows using a discount rate that reflects both the risk associated with the plan assets and the maturity or expected disposal date of those assets (or, if they have no maturity, the expected period until the settlement of the related obligation).

101. Plan assets exclude unpaid contributions due from the reporting enterprise to the fund, as well as any non-transferable financial instruments issued by the enterprise and held by the fund. Plan assets are reduced by any liabilities of the fund that do not relate to employee benefits, for example, trade and other payables and liabilities

resulting from derivative financial instruments.

102. Where plan assets include qualifying insurance policies that exactly match the amount and timing of some or all of the benefits payable under the plan, the fair value of those insurance policies is deemed to be the present value of the related obligations, as described in paragraph 55 (subject to any reduction required if the amounts receivable under the insurance policies are not recoverable in full).

Reimbursements

103. When, and only when, it is virtually certain that another party will reimburse some or all of the expenditure required to settle a defined benefit obligation, an enterprise should recognise its right to reimbursement as a separate asset. The enterprise should measure the asset at fair value. In all other respects, an enterprise should treat that asset in the same way as plan assets. In the statement of profit and loss, the expense relating to a defined benefit plan may be presented net of the amount recognised for a reimbursement.

104. Sometimes, an enterprise is able to look to another party, such as an insurer, to pay part or all of the expenditure required to settle a defined benefit obligation. Qualifying insurance policies, as defined in paragraph 7, are plan assets. An enterprise accounts for qualifying insurance policies in the same way as for all other plan assets and paragraph 103 does not apply (see paragraphs 40-43 and 102).

105. When an insurance policy is not a qualifying insurance policy, that insurance policy is not a plan asset. Paragraph 103 deals with such cases: the enterprise recognises its right to reimbursement under the insurance policy as a separate asset, rather than as a deduction in determining the defined benefit liability recognised under paragraph 55; in all other respects, including for determination of the fair value, the enterprise treats that asset in the same way as plan assets. Paragraph 120(f)(iii) requires the enterprise to disclose a brief description of the link between the reimbursement right and the related obligation.

Example Illustrating Paragraphs 103-105

	(Amount in Rs.)
Liability recognised in balance sheet being the present value of obligation	1,258
Rights under insurance policies that exactly match the amount and timing of some of the benefits payable under the plan.	1,092
Those benefits have a present value of Rs. 1,092	

106. If the right to reimbursement arises under an insurance policy that exactly matches the amount and timing of some or all of the benefits payable under a defined benefit plan, the fair value of the reimbursement right is deemed to be the present value of the related obligation, as described in paragraph 55 (subject to any reduction required if the reimbursement is not recoverable in full).

Return on Plan Assets

107. The expected return on plan assets is a component of the expense recognised in the statement of profit and loss. The difference between the expected return on plan assets and the actual return on plan assets is an actuarial gain or loss.

108. The expected return on plan assets is based on market expectations, at the beginning of the period, for returns over the entire life of the related obligation. The expected return on plan assets reflects changes in the fair value of plan assets held during the period as a result of actual contributions paid into the fund and actual benefits paid out of the fund.

109. In determining the expected and actual return on plan assets, an enterprise deducts expected administration costs, other than those included in the actuarial assumptions used to measure the obligation.

Example Illustrating Paragraph 108

At 1 January 20X1, the fair value of plan assets was Rs. 10,000. On 30 June 20X1, the plan paid benefits of Rs. 1,900 and received contributions of Rs. 4,900. At 31 December 20X1, the fair value of plan assets was Rs. 15,000 and the present value of the defined benefit obligation was Rs. 14,792. Actuarial losses on the obligation for 20X1 were Rs. 60.

At 1 January 20X1, the reporting enterprise made the following estimates, based on market prices at that date:

% Interest and dividend income, after tax payable by the fund 9.25

Realised and unrealised gains on plan assets (after tax)	2.00
Administration costs	(1.00)
Expected rate of return	10.25

For 20X1, the expected and actual return on plan assets are as follows: *(Amount in Rs.)*

Return on Rs. 10,000 held for 12 months at 10.25%	*1,025*
Return on Rs. 3,000 held for six months at 5%	*150*
(equivalent to 10.25% annually, compounded every six months)	
Expected return on plan assets for 20X1	*1,175*
Fair value of plan assets at 31 December 20X1	*15,000*
Less fair value of plan assets at 1 January 20X1	*(10,000)*
Less contributions received	*(4,900)*
Add benefits paid	*1,900*
Actual return on plan assets	*2,000*

The difference between the expected return on plan assets (Rs. 1,175) and the actual return on plan assets (Rs. 2,000) is an actuarial gain of Rs. 825. Therefore, the net actuarial gain of Rs. 765 (Rs. 825 – Rs. 60 (actuarial loss on the obligation)) would be recognised in the statement of profit and loss.

The expected return on plan assets for 20X2 will be based on market expectations at 1/1/X2 for returns over the entire life of the obligation.

IndiaCode

Curtailments and Settlements

110. An enterprise should recognise gains or losses on the curtailment or settlement of a defined benefit plan when the curtailment or settlement occurs. The gain or loss on a curtailment or settlement should comprise:

(a) any resulting change in the present value of the defined benefit obligation;

(b) any resulting change in the fair value of the plan assets;

(c) any related past service cost that, under paragraph 94, had not previously been recognised.

111. Before determining the effect of a curtailment or settlement, an enterprise should remeasure the obligation (and the related plan assets, if any) using current actuarial assumptions (including current market interest rates and other current market prices).

112. A curtailment occurs when an enterprise either:

(a) has a present obligation, arising from the requirement of a statute/ regulator or otherwise, to make a material reduction in the number of employees covered by a plan; or

(b) amends the terms of a defined benefit plan such that a material element of future service by current employees will no longer qualify for benefits, or will qualify only for reduced benefits.

A curtailment may arise from an isolated event, such as the closing of a plant, discontinuance of an operation or termination or suspension of a plan. An event is material enough to qualify as a curtailment if the recognition of a curtailment gain or loss would have a material effect on the financial statements. Curtailments are often linked with a restructuring. Therefore, an enterprise accounts for a curtailment at the same time as for a related restructuring.

113. A settlement occurs when an enterprise enters into a transaction that eliminates all further obligations for part or all of the benefits provided under a defined benefit plan, for example, when a lump-sum cash payment is made to, or on behalf of, plan participants in exchange for their rights to receive specified post-employment benefits.

114. In some cases, an enterprise acquires an insurance policy to fund some or all of the employee benefits relating to employee service in the current and prior periods. The acquisition of such a policy is not a settlement if the enterprise retains an obligation (see paragraph 40) to pay further amounts if the insurer does not pay the employee benefits specified in the insurance policy. Paragraphs 103-106 deal with the recognition and measurement of

reimbursement rights under insurance policies that are not plan assets.

115. A settlement occurs together with a curtailment if a plan is terminated such that the obligation is settled and the plan ceases to exist. However, the termination of a plan is not a curtailment or settlement if the plan is replaced by a new plan that offers benefits that are, in substance, identical.

116. Where a curtailment relates only to some of the employees covered by a plan, or where only part of an obligation is settled, the gain or loss includes a proportionate share of the previously unrecognised past service cost (and of transitional amounts remaining unrecognised under paragraph 145(b)). The proportionate share is determined on the basis of the present value of the obligations before and after the curtailment or settlement, unless another basis is more rational in the circumstances.

Example Illustrating Paragraph 116

An enterprise discontinues a business segment and employees of the discontinued segment will earn no further benefits. This is a curtailment without a settlement. Using current actuarial assumptions (including current market interest rates and other current market prices) immediately

before the curtailment, the enterprise has a defined benefit obligation with a net present value of Rs. 1,000 and plan assets with a fair value of Rs. 820 and unrecognised past service cost of Rs. 50. The enterprise had first adopted this Standard one year before. This increased the net liability by Rs. 100, which the enterprise chose to recognise over five years (see paragraph 145(b)). The curtailment reduces the net present value of the obligation by Rs. 100 to Rs. 900.

Of the previously unrecognised past service cost and transitional amounts, 10% (Rs. 100/Rs. 1000) relates to the part of the obligation that was eliminated through the curtailment. Therefore, the effect of the curtailment is as follows:

(Amount in Rs.)

	Before curtailment	*Curtailment gain*	*After curtailment*
Net present value of obligation	*1,000*	*(100)*	*900*
Fair value of plan assets	*(820)*	*-*	*(820)*
	180	*(100)*	*80*
Unrecognised past service cost	*(50)*	*5*	*(45)*
Unrecognised transitional amount (100x4/5)	*(80)*	*8*	*(72)*
Net liability recognised in balance sheet	*(50)*	*(87)*	*(37)*

An asset of Rs. 37 will be recognised (it is assumed that the amount under paragraph 59(b) is higher than Rs. 37).

Provided that a Small and Medium-sized Company as defined in the Notification, may not apply the recognition and measurement principles laid down in paragraphs 50 to 116 in respect of accounting for defined benefit plans. However, such company should actuarially determine and provide for the accrued liability in respect of defined benefit plans as follows:

- ***The method used for actuarial valuation should be the Projected Unit Credit Method ; and***
- ***The discount rate used should be determined by reference to market yields at the balance sheet date on government bonds as per paragraph 78 of the Standard.***

Presentation

Offset

117. An enterprise should offset an asset relating to one plan against a liability relating to another plan when, and only when, the enterprise:

(a) has a legally enforceable right to use a surplus in one plan to settle obligations under the other plan; and

(b) intends either to settle the obligations on a net basis, or to realise the surplus in one plan and settle its obligation under the other plan simultaneously.

Financial Components of Post-employment Benefit Costs

India Code

118. This Standard does not specify whether an enterprise should present current service cost, interest cost and the expected return on plan assets as components of a single item of income or expense on the face of the statement of profit and loss.

Provided that a Small and Medium-sized company, as defined in the Notification, may not apply the presentation requirements laid down in paragraphs 117 to 118 of the Standard in respect of accounting for defined benefit plans.

Disclosure

119. An enterprise should disclose information that enables users of financial statements to evaluate the nature of its defined benefit plans and the financial effects of changes in those plans during the period.

120. An enterprise should disclose the following information about defined benefit plans:

(a) the enterprise's accounting policy for recognising actuarial gains and losses.

(b) a general description of the type of plan.

(c) a reconciliation of opening and closing balances of the present value of the defined benefit obligation showing separately, if applicable, the effects during the period attributable to each of the following:

(i) current service cost,

(ii) interest cost,

(iii) contributions by plan participants,

(iv) actuarial gains and losses,

(v) foreign currency exchange rate changes on plans measured in a currency different from the enterprise's reporting currency,

(vi) benefits paid,

(vii) past service cost,

(viii) amalgamations,

(ix) curtailments, and

(x) settlements.

(d) an analysis of the defined benefit obligation into amounts arising from plans that are wholly unfunded and amounts arising from plans that are wholly or partly funded.

(e) a reconciliation of the opening and closing balances of the fair value of plan assets and of the opening and closing balances of any reimbursement right recognised as an asset in accordance with paragraph 103 showing separately, if applicable, the effects during the period attributable to each of the following:

(i) expected return on plan assets,

(ii) actuarial gains and losses,

(iii) foreign currency exchange rate changes on plans measured in a currency different from the enterprise's reporting currency,

(iv) contributions by the employer,

(v) contributions by plan participants,

(vi) benefits paid,

(vii) amalgamations, and

(viii) settlements.

(f) a reconciliation of the present value of the defined benefit obligation in (c) and the fair value of the plan assets in (e) to the assets and liabilities recognised in the balance sheet, showing at least:

(i) the past service cost not yet recognised in the balance sheet (see paragraph 94);

(ii) any amount not recognised as an asset, because of the limit in paragraph 59(b);

(iii) the fair value at the balance sheet date of any reimbursement right recognised as an asset in accordance with paragraph 103 (with a brief description of the link between the reimbursement right and the related obligation); and

IndiaCode

(iv) the other amounts recognised in the balance sheet.

(g) the total expense recognised in the statement of profit and loss for each of the following, and the line item(s) of the statement of profit and loss in which they are included:

(i) current service cost;

(ii) interest cost;

(iii) expected return on plan assets;

(iv) expected return on any reimbursement right recognised as an asset in accordance with paragraph 103;

(v) actuarial gains and losses;

(vi) past service cost;

(vii) the effect of any curtailment or settlement; and

(viii) the effect of the limit in paragraph 59 (b), i.e., the extent to which the amount determined in accordance with paragraph 55 (if negative) exceeds the amount determined in accordance with paragraph 59 (b).

(h) for each major category of plan assets, which should include, but is not limited to, equity instruments, debt instruments, property, and all other assets, the percentage or amount that each major category constitutes of the fair value of the total plan assets.

(i) the amounts included in the fair value of plan assets for:

(i) each category of the enterprise's own financial instruments; and

(ii) any property occupied by, or other assets used by, the enterprise.

(j) a narrative description of the basis used to determine the overall expected rate of return on assets, including the effect of the major categories of plan assets.

(k) the actual return on plan assets, as well as the actual return on any reimbursement right recognised as an asset in accordance with paragraph 103.

(l) the principal actuarial assumptions used as at the balance sheet date, including, where applicable:

(i) the discount rates;

(ii) the expected rates of return on any plan assets for the periods presented in the financial statements;

(iii) the expected rates of return for the periods presented in the financial statements on any reimbursement right recognised as an asset in accordance with paragraph 103;

(iv) medical cost trend rates; and

(v) any other material actuarial assumptions used.

An enterprise should disclose each actuarial assumption in absolute terms (for example, as an absolute percentage) and not just as a margin between different percentages or other variables.

Apart from the above actuarial assumptions, an enterprise should include an assertion under the actuarial assumptions to the effect that estimates of future salary increases, considered in actuarial valuation, take account of inflation, seniority, promotion and other relevant factors, such as supply and demand in the employment market.

(m) the effect of an increase of one percentage point and the effect of a decrease of one percentage point in the assumed medical cost trend rates on:

(i) the aggregate of the current service cost and interest cost components of net periodic post-employment medical costs; and

(ii) the accumulated post-employment benefit obligation for medical costs.

For the purposes of this disclosure, all other assumptions should be held constant. For plans operating in a high inflation environment, the disclosure should be the effect of a percentage increase or decrease in the assumed medical cost trend rate of a significance similar to one percentage point in a low inflation environment.

(n) the amounts for the current annual period and previous four annual periods of:

(i) the present value of the defined benefit obligation, the fair value of the plan assets and the surplus or deficit in the plan; and

(ii) the experience adjustments arising on:

(A) the plan liabilities expressed either as (1) an amount or (2) a percentage of the plan liabilities at the balance sheet date, and

(B) the plan assets expressed either as (1) an amount or (2) a percentage of the plan assets at the balance sheet date.

(o) the employer's best estimate, as soon as it can reasonably be determined, of contributions expected to be paid to the plan during the annual period beginning after the balance sheet date.

121. Paragraph 120(b) requires a general description of the type of plan. Such a description distinguishes, for example, flat salary pension plans from final salary pension plans and from post-employment medical plans. The description of the plan should include informal practices that give rise to other obligations included in the measurement of the defined benefit obligation in accordance with paragraph 53. Further detail is not required.

122. When an enterprise has more than one defined benefit plan, disclosures may be made in total, separately for each plan, or in such groupings as are considered to be the most useful. It may be useful to distinguish groupings by criteria such as the following:

(a) the geographical location of the plans, for example, by distinguishing domestic plans from foreign plans; or

(b) whether plans are subject to materially different risks, for example, by distinguishing flat salary pension plans from final salary pension plans and from post-employment medical plans.

When an enterprise provides disclosures in total for a grouping of plans, such disclosures are provided in the form of weighted averages or of relatively narrow ranges.

123. Paragraph 30 requires additional disclosures about multi-employer defined benefit plans that are treated as if they were defined contribution plans.

124. Where required by AS 18, *Related Party Disclosures,* an enterprise discloses information about:

(a) related party transactions with post-employment benefit plans; and

(b) post-employment benefits for key management personnel.

125. Where required by AS 29, *Provisions, Contingent Liabilities and Contingent Assets* an enterprise discloses information about contingent liabilities arising from post-employment benefit obligations.

Illustrative Disclosures

126. Illustration II attached to the Standard contains illustrative disclosures.

Provided that a Small and Medium-sized Company, as defined in the Notification, may not apply the disclosure requirements laid down in paragraphs 119 to 123 of the Standard in respect of accounting for defined benefit plans. However, such company should disclose actuarial assumptions as per paragraph 120(l) of the Standard.

Other Long-term Employee Benefits

127. Other long-term employee benefits include, for example:

(a) long-term compensated absences such as long-service or sabbatical leave;

(b) jubilee or other long-service benefits;

(c) long-term disability benefits;

(d) profit-sharing and bonuses payable twelve months or more after the end of the period in which the employees render the related service; and

(e) deferred compensation paid twelve months or more after the end of the period in which it is earned.

128. In case of other long-term employee benefits, the introduction of, or changes to, other long-term employee benefits rarely causes a material amount of past service cost. For this reason, this Standard requires a simplified method of accounting for other long-term employee benefits. This method differs from the accounting required for post-employment benefits insofar as that all past service cost is recognised immediately.

Recognition and Measurement

129. The amount recognised as a liability for other long-term employee benefits should be the net total of the following amounts:

(a) the present value of the defined benefit obligation at the balance sheet date (see paragraph 65);

IndiaCode

(b) minus the fair value at the balance sheet date of plan assets (if any) out of which the obligations are to be settled directly (see paragraphs 100-102).

In measuring the liability, an enterprise should apply paragraphs 49-91, excluding paragraphs 55 and 61. An enterprise should apply paragraph 103 in recognising and measuring any reimbursement right.

130. For other long-term employee benefits, an enterprise should recognise the net total of the following amounts as expense or (subject to paragraph 59) income, except to the extent that another Accounting Standard requires or permits their inclusion in the cost of an asset:

(a) current service cost (see paragraphs 64-91);

(b) interest cost (see paragraph 82);

(c) the expected return on any plan assets (see paragraphs 107-109) and on any reimbursement right recognised as an asset (see paragraph 103);

(d) actuarial gains and losses, which should all be recognised immediately;

(e) past service cost, which should all be recognised immediately; and

(f) the effect of any curtailments or settlements (see paragraphs 110 and 111).

131. One form of other long-term employee benefit is long- term disability benefit. If the level of benefit depends on the length of service, an obligation arises when the service is rendered. Measurement of that obligation reflects the probability that payment will be required and the length of time for which payment is expected to be made. If the level of benefit is the same for any disabled employee regardless of years of service, the expected cost of those benefits is recognised when an event occurs that causes a long-term disability.

Provided that a Small and Medium-sized Company, as defined in the Notification, may not apply the recognition and measurement principles laid down in paragraphs 129 to 131 of the Standard in respect of accounting for other long-term employee benefits. However, such a company should actuarially determine and provide for the accrued liability in respect of other long-term employee benefits as follows:

- ***The method used for actuarial valuation should be the Projected Unit Credit Method ; and***
- ***The discount rate used should be determined by reference to market yields at the balance sheet date on government bonds as per paragraph 78 of the Standard.***

Disclosure

132. Although this Standard does not require specific disclosures about other long-term employee benefits, other Accounting Standards may require disclosures, for example, where the expense resulting from such benefits is of such size, nature or incidence that its disclosure is relevant to explain the performance of the enterprise for the period (see AS 5, *Net Profit or Loss for the Period, Prior Period Items and Changes in Accounting Policies*). Where required by AS 18 *Related Party Disclosures* an enterprise discloses information about other long-term employee benefits for key management personnel.

Termination Benefits

133. This Standard deals with termination benefits separately from other employee benefits because the event which gives rise to an obligation is the termination rather than employee service.

Recognition

134. An enterprise should recognise termination benefits as a liability and an expense when, and only when:

(a) the enterprise has a present obligation as a result of a past event;

(b) it is probable that an outflow of resources embodying economic benefits will be required to settle the obligation; and

(c) a reliable estimate can be made of the amount of the obligation.

135. An enterprise may be committed, by legislation, by contractual or other agreements with employees or their representatives or by an obligation based on business practice, custom or a desire to act equitably, to make payments (or provide other benefits) to employees when it terminates their employment. Such payments are termination benefits. Termination benefits are typically lump-sum payments, but sometimes also include:

(a) enhancement of retirement benefits or of other post-employment benefits, either indirectly through an employee benefit plan or directly; and

(b) salary until the end of a specified notice period if the employee renders no further service that provides economic benefits to the enterprise.

136. Some employee benefits are payable regardless of the reason for the employee's departure. The payment of such benefits is certain (subject to any vesting or minimum service requirements) but the timing of their payment is uncertain. Although such benefits may be described as termination indemnities, or termination gratuities, they are post-employment benefits, rather than termination benefits and an enterprise accounts for them as post-employment benefits. Some enterprises provide a lower level of benefit for voluntary termination at the request of the employee (in substance, a post-employment benefit) than for involuntary termination at the request of the enterprise. The additional benefit payable on involuntary termination is a termination benefit.

137. Termination benefits are recognised as an expense immediately.

138. Where an enterprise recognises termination benefits, the enterprise

may also have to account for a curtailment of retirement benefits or other employee benefits (see paragraph 110).

Measurement

139. Where termination benefits fall due more than 12 months after the balance sheet date, they should be discounted using the discount rate specified in paragraph 78.

Provided that a Small and Medium-sized Company, as defined in the Notification , may not discount amounts that fall due more than 12 months after the balance sheet date.

Disclosure

140. Where there is uncertainty about the number of employees who will accept an offer of termination benefits, a contingent liability exists. As required by AS 29, *Provisions, Contingent Liabilities and Contingent Assets* an enterprise discloses information about the contingent liability unless the possibility of an outflow in settlement is remote.

141. As required by AS 5, *Net Profit or Loss for the Period, Prior Period Items and Changes in Accounting Policies* an enterprise discloses the nature and amount of an expense if it is of such size, nature or incidence that its disclosure is relevant to explain the performance of the enterprise for the period. Termination benefits may result in an expense needing disclosure in order to comply with this requirement.

142. Where required by AS 18, *Related Party Disclosures* an enterprise discloses information about termination benefits for key management personnel.

Transitional Provisions[18]

142A. An enterprise may disclose the amounts required by paragraph 120(n) as the amounts are determined for each accounting period prospectively from the date the enterprise first adopts this Standard.

Employee Benefits other than Defined Benefit Plans and Termination Benefits

143. Where an enterprise first adopts this Standard for employee benefits, the difference (as adjusted by any related tax expense) between the liability in respect of employee benefits other than defined benefit plans and termination benefits, as per this Standard, existing on the date of adopting this Standard and the liability that would have been recognised at the same date, as per the pre-revised AS 15 issued by the ICAI in 1995, should be adjusted against opening balance of revenue reserves and surplus.

Defined Benefit Plans

144. On first adopting this Standard, an enterprise should determine its transitional liability for defined benefit plans at that date as:

- ***(a) the present value of the obligation (see paragraph 65) at the date of adoption;***
- ***(b) minus the fair value, at the date of adoption, of plan assets (if any) out of which the obligations are to be settled directly (see paragraphs 100-102);***
- ***(c) minus any past service cost that, under paragraph 94, should be recognised in later periods.***

145. If the transitional liability is more than the liability that would have been recognised at the same date as per the pre-revised AS 15, the enterprise should make an irrevocable choice to recognise that increase as part of its defined benefit liability under paragraph 55:

- ***(a) immediately as an adjustment against the opening balance of revenue reserves and surplus (as adjusted by any related tax expense), or***

[18] Transitional Provisions given in Paragraphs 142A-146 are relevant only for standards notified under Companies (Accounting Standards) Rules, 2006, as amended from time to time.

(b) as an expense on a straight-line basis over up to five years from the date of adoption.

If an enterprise chooses (b), the enterprise should:

(i) apply the limit described in paragraph 59(b) in measuring any asset recognised in the balance sheet;

(ii) disclose at each balance sheet date (1) the amount of the increase that remains unrecognised; and (2) the amount recognised in the current period;

(iii) limit the recognition of subsequent actuarial gains (but not negative past service cost) only to the extent that the net cumulative unrecognised actuarial gains (before recognition of that actuarial gain) exceed the unrecognised part of the transitional liability; and

(iv) include the related part of the unrecognised transitional liability in determining any subsequent gain or loss on settlement or curtailment.

If the transitional liability is less than the liability that would have been recognised at the same date as per the pre-revised AS 15, the enterprise should recognise that decrease immediately as an adjustment against the opening balance of revenue reserves and surplus.

Example Illustrating Paragraphs 144 and 145

At 31st March 20X7, an enterprise's balance sheet includes a pension liability of Rs. 100, recognised as per the pre-revised AS 15 issued by the ICAI in 1995. The enterprise adopts the Standard as of 1st April 20X7, when the present value of the obligation under the Standard is Rs. 1,300 and the fair value of plan assets is Rs. 1,000. On 1st April 20X1, the enterprise had improved pensions (cost for non-vested benefits: Rs. 160; and average remaining period at that date until vesting: 10 years).

(Amount in Rs.)

The transitional effect is as follows:	
Present value of the obligation	*1,300*
Fair value of plan assets	*(1,000)*
Less: past service cost to be recognised in later periods (160 x 4/10)	*(64)*
Transitional liability	*236*
Liability already recognised	*100*
Increase in liability	*136*

An enterprise may choose to recognise the increase in liability (as adjusted by any related tax expense) either immediately as an adjustment against the opening balance of revenue reserves and surplus as on 1 April 20X7 or as an expense on straight line basis over up to five years from that date. The choice is irrevocable.

At 31 March 20X8, the present value of the obligation under the Standard is Rs. 1,400 and the fair value of plan assets is Rs. 1,050. Net cumulative unrecognised actuarial gains since the date of adopting the Standard are Rs. 120. The enterprise is required, as per paragraph 92, to recognise all actuarial gains and losses immediately.

(Amount in Rs.)

The effect of the limit in paragraph 145 (b) (iii) is as follows:	
Net unrecognised actuarial gain	*120*
Unrecognised part of the transitional liability (136 × 4/5)	*109*
(If the enterprise adopts the policy of recognising it over 5 years)	
Maximum gain to be recognised	*11*

Termination Benefits

146. This Standard requires immediate expensing of expenditure on termination benefits (including expenditure incurred on voluntary retirement scheme (VRS)). However, where an enterprise incurs expenditure on termination benefits on or before 31st March, 2009, the enterprise may choose to follow the accounting policy of deferring such expenditure for amortisation over its pay-back period. However, the expenditure so deferred cannot be carried forward to accounting periods commencing on or after 1st April, 2010.

Illustration I

IndiaCode

Illustration

This illustration is illustrative only and does not form part of the Standard. The purpose of this illustration is to illustrate the application of the Standard to assist in clarifying its meaning. Extracts from statements of profit and loss and balance sheets are provided to show the effects of the transactions described below. These extracts do not necessarily conform with all the disclosure and presentation requirements of other Accounting Standards.

Background Information

The following information is given about a funded defined benefit plan. To keep interest computations simple, all transactions are assumed to occur at the year end. The present value of the obligation and the fair value of the plan assets were both Rs. 1,000 at 1 April, 20X4.

(Amount in Rs.)

	20X4-X5	20X5-X6	20X6-X7
Discount rate at start of year	10.0%	9.0%	8.0%
Expected rate of return on plan assets at start of year	12.0%	11.1%	10.3%
Current service cost	130	140	150
Benefits paid	150	180	190
Contributions paid	90	100	110
Present value of obligation at 31 March	1,141	1,197	1,295
Fair value of plan assets at 31 March	1,092	1,109	1,093
Expected average remaining working lives of employees (years)	10	10	10

IndiaCode

In 20X5-X6, the plan was amended to provide additional benefits with effect from 1 April 20X5. The present value as at 1 April 20X5 of additional benefits for employee service before 1 April 20X5 was Rs. 50 for vested benefits and Rs. 30 for non-vested benefits. As at 1 April 20X5, the enterprise estimated that the average period until the non-vested benefits would become vested was three years; the past service cost arising from additional non-vested benefits is therefore recognised on a straight-line basis over three years. The past service cost arising from additional vested benefits is recognised immediately (paragraph 94 of the Standard).

Changes in the Present Value of the Obligation and in the Fair Value of the Plan Assets

The first step is to summarise the changes in the present value of the obligation and in the fair value of the plan assets and use this to determine the amount of the actuarial gains or losses for the period. These are as follows:

(Amount in Rs.)

	20X4-X5	20X5-X6	20X6-X7
Present value of obligation, 1 April	1,000	1,141	1,197
Interest cost	100	103	96
Current service cost	130	140	150
Past service cost – (non vested benefits)	-	30	-
Past service cost – (vested benefits)	-	50	-
Benefits paid	(150)	(180)	(190)
Actuarial (gain) loss on obligation (balancing figure)	61	(87)	42

Present value of obligation, 31 March	1,141	1,197	1,295
Fair value of plan assets, 1 April	1,000	1,092	1,109
Expected return on plan assets	120	121	114
Contributions	90	100	110
Benefits paid	(150)	(180)	(190)
Actuarial gain (loss) on plan assets (balancing figure)	32	(24)	(50)
Fair value of plan assets, 31 March	1,092	1,109	1,093
Total actuarial gain (loss) to be recognised immediately as per the Standard	(29)	63	(92)

Amounts Recognised in the Balance Sheet and Statements of Profit and Loss, and Related Analyses

The final step is to determine the amounts to be recognised in the balance sheet and statement of profit and loss, and the related analyses to be disclosed in accordance with paragraphs 120 (f), (g) and (j) of the Standard (the analyses required to be disclosed in accordance with paragraph 120(c) and (e) are given in the section of this Illustration 'Changes in the Present Value of the Obligation and in the Fair Value of the Plan Assets'). These are as follows:

(Amount in Rs.)

		20X4-X5	20X5-X6	20X6-X7
Present value of the obligation	1,141	1,197	1,295	
Fair value of plan assets	(1,092)	(1,109)	(1,093)	
	49	88	202	
Unrecognised past service cost – non vested benefits		-	(20)	(10)
Liability recognised in balance sheet		**49**	**68**	**192**
Current service cost		130	140	150
Interest cost		100	103	96
Expected return on plan assets		(120)	(121)	(114)
Net actuarial (gain) loss recognised in year		29	(63)	92
Past service cost - non-vested benefits		-	10	10
Past service cost - vested benefits		-	50	-
Expense recognised in the statement of profit and loss		**139**	**119**	**234**
Actual return on plan assets:				
Expected return on plan assets		120	121	114
Actuarial gain (loss) on plan assets		32	(24)	(50)
Actual return on plan assets		152	97	64

Note: see example illustrating paragraphs 103-105 for presentation of reimbursements.

Illustration II

Illustrative Disclosures

This illustration is illustrative only and does not form part of the Standard. The purpose of this illustration is to illustrate the application of the Standard to assist in clarifying its meaning. Extracts from notes to the financial statements show how the required disclosures may be aggregated in the case of a large multi-national group that provides a variety of employee benefits. These extracts do not necessarily provide all the information required under the disclosure and presentation requirements of AS 15 and other Accounting Standards. In particular, they do not illustrate the disclosure of:

(a) accounting policies for employee benefits (see AS 1 Disclosure of Accounting Policies). Paragraph 120(a) of the Standard requires this disclosure to include the enterprise's accounting policy for recognising actuarial gains and losses.

(b) a general description of the type of plan (paragraph 120(b)).

(c) a narrative description of the basis used to determine the overall expected rate of return on assets (paragraph 120(j)).

(d) employee benefits granted to directors and key management personnel (see AS 18 Related Party Disclosures).

Employee Benefit Obligations

The amounts (in Rs.) recognised in the balance sheet are as follows:

	Defined benefit pension plans		Post-employment medical benefits	
	20X5-X6	20X4-X5	20X5-X6	20X4-X5
Present value of funded obligations	20,300	17,400	-	-
Fair value of plan assets	18,420	17,280	-	-
	1,880	120	-	-
Present value of unfunded obligations	2000	1000	7,337	6,405
Unrecognised past service cost	(450)	(650)	-	-
Net liability	3,430	470	7,337	6,405
Amounts in the balance sheet:				
Liabilities	3,430	560	7,337	6,405
Assets	-	(90)	-	-
Net liability	3,430	470	7,337	6,405

The pension plan assets include equity shares issued by [name of reporting enterprise] with a fair value of Rs. 317 (20X4-X5: Rs. 281). Plan assets also include property occupied by [name of reporting enterprise] with a fair value of Rs. 200 (20X4-X5: Rs. 185).

The amounts (in Rs.) recognised in the statement of profit and loss are as follows:

	Defined benefit benefits		Post-employment pension plans		medical
	20X5-X6	20X4-X5	20X5-X6	20X4-X5	
Current service cost	850	750	479	411	
Interest on obligation	950	1,000	803	705	
Expected return on plan assets	(900)	(650)			
Net actuarial losses (gains)					

IndiaCode

recognised in year	2,650	(650)	250	400
Past service cost	200	200	-	-
Losses (gains) on curtailments and settlements	175	(390)	-	-
Total, included in 'employee benefit expense'	3,925	260	1,532	1,516
Actual return on plan assets	600			
2,250	-			

Changes in the present value of the defined benefit obligation representing reconciliation of opening and closing balances thereof are as follows:

	Defined benefit pension plans		Post-employment medical benefits	
	20X5-X6	20X4-X5	20X5-X6	20X4-X5
Opening defined benefit obligation	18,400	11,600	6,405	5,439
Service cost	850	750	479	411
Interest cost	950	1,000	803	705
Actuarial losses (gains)	2,350	950	250	400
Losses (gains) on curtailments	(500)	-		
Liabilities extinguished on settlements	-	(350)		
Liabilities assumed in an amalgamation in the nature of purchase	-	5,000		
Exchange differences on foreign plans	900	(150)		
Benefits paid	(650)	(400)	(600)	(550)
Closing defined benefit obligation	22,300			
18,400				
7,337				
6,405				

Changes in the fair value of plan assets representing reconciliation of the opening and closing balances thereof are as follows:

	Defined benefit pension plans	
	20X5-X6	20X4-X5
Opening fair value of plan assets	17,280	9,200
Expected return	900	650

IndiaCode

Actuarial gains and (losses)	(300)	1,600
Assets distributed on settlements	(400)	-
Contributions by employer	700	350
Assets acquired in an amalgamation in the nature of purchase	-	6,000
Exchange differences on foreign plans	890	(120)
Benefits paid	(650)	(400)
	18,420	17,280

The Group expects to contribute Rs. 900 to its defined benefit pension plans in 20X6-X7.

The major categories of plan assets as a percentage of total plan assets are as follows:

	Defined benefit pension plans		Post-employment medical benefits	
	20X5-X6	20X4-X5	20X5-X6	20X4-X5
Government of India Securities	80%	82%	78%	81%
High quality corporate bonds	11%	10%	12%	12%
Equity shares of listed companies	4%	3%	10%	7%
Property	5%	5%	-	-

IndiaCode

Principal actuarial assumptions at the balance sheet date (expressed as weighted averages):

	20X5-X6	20X4-X5
Discount rate at 31 March	5.0%	6.5%
Expected return on plan assets at 31 March	5.4%	7.0%
Proportion of employees opting for early retirement	30%	30%
Annual increase in healthcare costs	8%	8%
Future changes in maximum state health care benefits	3%	2%

The estimates of future salary increases, considered in actuarial valuation, take account of inflation, seniority, promotion and other relevant factors, such as supply and demand in the employment market.

Assumed healthcare cost trend rates have a significant effect on the amounts recognised in the statement of profit and loss. At present, healthcare costs, as indicated in the principal actuarial assumption given above, are expected to increase at 8% p.a. A one percentage point change in assumed healthcare cost trend rates would have the following effects on the aggregate of the service cost and interest cost and defined benefit obligation:

	one percentage point increase	one percentage point decrease
Effect on the aggregate of the service cost and interest cost	190	(150)
Effect on defined benefit obligation	1,000	(900)

Amounts for the current and previous four periods are as follows:

	20X5-X6	20X4-X5	20X3-X4	20X2-X3	20X1-X2
Defined benefit pension plans					
Defined benefit obligation	(22,300)	(18,400)	(11,600)	(10,582)	(9,144)
Plan assets	18,420	17,280	9,200	8,502	10,000
Surplus/(deficit)	(3,880)	(1,120)	(2,400)	(2,080)	856
Experience adjustments on plan liabilities	(1,111)	(768)	(69)	543	(642)
Experience adjustments on plan assets	(300)	1,600	(1,078)	(2,890)	2,777
Post-employment medical benefits					

	20X5-X6	20X4-X5	20X3-X4	20X2-X3	20X1-X2
Defined benefit obligation	7,337	6,405	5,439	4,923	4,221
Experience adjustments on plan liabilities	(232)	829	490	(174)	(103)

The group also participates in an industry-wide defined benefit plan which provides pensions linked to final salaries and is funded in a manner such that contributions are set at a level that is expected to be sufficient to pay the benefits falling due in the same period. It is not practicable to determine the present value of the group's obligation or the related current service cost as the plan computes its obligations on a basis that differs materially from the basis used in [name of reporting enterprise]'s financial statements. [describe basis] On that basis, the plan's financial statements to 30 September 20X3 show an unfunded liability of Rs. 27,525. The unfunded liability will result in future payments by participating employers. The plan has approximately 75,000 members, of whom approximately 5,000 are current or former employees of [name of reporting enterprise] or their dependants. The expense recognised in the statement of profit and loss, which is equal to contributions due for the year, and is not included in the above amounts, was Rs. 230 (20X4-X5: Rs. 215). The group's future contributions may be increased substantially if other enterprises withdraw from the plan.

Accounting Standard (AS) 16

Borrowing Costs

*(This Accounting Standard includes paragraphs set in **bold italic** type and plain type, which have equal authority. Paragraphs in bold italic type indicate the main principles. This Accounting Standard should be read in the context of its objective and the General Instructions contained in part A of the Annexure to the Notification.)*

Objective

The objective of this Standard is to prescribe the accounting treatment for borrowing costs.

Scope

1. This Standard should be applied in accounting for borrowing costs.

2. This Standard does not deal with the actual or imputed cost of owners' equity, including preference share capital not classified as a liability.

Definitions

3. The following terms are used in this Standard with the meanings specified:

3.1 Borrowing costs are interest and other costs incurred by an enterprise in connection with the borrowing of funds.

3.2 A qualifying asset is an asset that necessarily takes a substantial period of time to get ready for its intended use or sale.

Explanation:

What constitutes a substantial period of time primarily depends on the facts and circumstances of each case. However, ordinarily, a period of twelve months is considered as substantial period of time unless a shorter or

longer period can be justified on the basis of facts and circumstances of the case. In estimating the period, time which an asset takes, technologically and commercially, to get it ready for its intended use or sale is considered.

4. Borrowing costs may include:

(a) interest and commitment charges on bank borrowings and other short-term and long-term borrowings;

(b) amortisation of discounts or premiums relating to borrowings;

(c) amortisation of ancillary costs incurred in connection with the arrangement of borrowings;

(d) finance charges in respect of assets acquired under finance leases or under other similar arrangements; and

(e) exchange differences arising from foreign currency borrowings to the extent that they are regarded as an adjustment to interest costs.

Explanation:

Exchange differences arising from foreign currency borrowing and considered as borrowing costs are those exchange differences which arise on the amount of principal of the foreign currency borrowings to the extent of the difference between interest on local currency borrowings and interest on foreign currency borrowings. Thus, the amount of exchange difference not exceeding the difference between interest on local currency borrowings and interest on foreign currency borrowings is considered as borrowings cost to be accounted for under this Standard and the remaining exchange difference, if any, is accounted for under AS 11, *The Effect of Changes in Foreign Exchange Rates*. For this purpose, the interest rate for the local currency borrowings is considered as that rate at which the enterprise would have raised the borrowings locally had the enterprise not decided to raise the foreign currency borrowings.

The application of this explanation is illustrated in the Illustration attached to the Standard.

5. Examples of qualifying assets are manufacturing plants, power generation facilities, inventories that require a substantial period of time to bring them to a saleable condition, and investment properties. Other investments, and those inventories that are routinely manufactured or otherwise produced in large quantities on a repetitive basis over a short period of time, are not qualifying assets. Assets that are ready for their intended use or sale when acquired also are not qualifying assets.

IndiaCode

Recognition

6. Borrowing costs that are directly attributable to the acquisition, construction or production of a qualifying asset should be capitalised as part of the cost of that asset. The amount of borrowing costs eligible for capitalisation should be determined in accordance with this Standard. Other borrowing costs should be recognised as an expense in the period in which they are incurred.

7. Borrowing costs are capitalised as part of the cost of a qualifying asset when it is probable that they will result in future economic benefits to the enterprise and the costs can be measured reliably. Other borrowing costs are recognised as an expense in the period in which they are incurred.

Borrowing Costs Eligible for Capitalisation

8. The borrowing costs that are directly attributable to the acquisition, construction or production of a qualifying asset are those borrowing costs that would have been avoided if the expenditure on the qualifying asset had not been made. When an enterprise borrows funds specifically for the purpose of obtaining a particular qualifying asset, the borrowing costs that directly relate to that qualifying asset can be readily identified.

9. It may be difficult to identify a direct relationship between particular borrowings and a qualifying asset and to determine the borrowings that could otherwise have been avoided. Such a difficulty occurs, for example, when the financing activity of an enterprise is co-ordinated centrally or when a range of debt instruments are used to borrow funds at varying rates of interest and such borrowings are not readily identifiable with a specific qualifying asset. As a result, the determination of the amount of borrowing costs that are directly attributable to the acquisition, construction or production of a qualifying asset is often difficult and the exercise of judgement is required.

10. To the extent that funds are borrowed specifically for the purpose of obtaining a qualifying asset, the amount of borrowing costs eligible for capitalisation on that asset should be determined as the actual borrowing costs incurred on that borrowing during the period less any income on the temporary investment of those borrowings.

11. The financing arrangements for a qualifying asset may result in an enterprise obtaining borrowed funds and incurring associated borrowing costs before some or all of the funds are used for expenditure on the qualifying asset. In such circumstances, the funds are often temporarily invested pending their expenditure on the qualifying asset. In determining the amount of borrowing costs eligible for capitalisation during a period, any income earned on the temporary investment of those borrowings is deducted from the borrowing costs incurred.

12. To the extent that funds are borrowed generally and used for the purpose of obtaining a qualifying asset, the amount of borrowing costs eligible for capitalisation should be determined by applying a capitalisation rate to the expenditure on that asset. The capitalisation rate should be the weighted average of the borrowing costs applicable to the borrowings of the enterprise that are outstanding during the period, other than borrowings made specifically for the purpose of obtaining a qualifying asset. The amount of borrowing costs capitalised during a period should not exceed the amount of borrowing costs incurred during that period.

Excess of the Carrying Amount of the Qualifying Asset over Recoverable Amount

13. When the carrying amount or the expected ultimate cost of the qualifying asset exceeds its recoverable amount or net realisable value, the carrying amount is written down or written off in accordance with the requirements of other Accounting Standards. In certain circumstances, the amount of the write-down or write-off is written back in accordance with those other Accounting Standards.

Commencement of Capitalisation

14. The capitalisation of borrowing costs as part of the cost of a qualifying asset should commence when all the following conditions are satisfied:

(a) expenditure for the acquisition, construction or production of a qualifying asset is being incurred;

(b) borrowing costs are being incurred; and

(c) activities that are necessary to prepare the asset for its intended use or sale are in progress.

15. Expenditure on a qualifying asset includes only such expenditure that has resulted in payments of cash, transfers of other assets or the assumption of interest-bearing liabilities. Expenditure is reduced by any progress payments received and grants received in connection with the asset (see Accounting Standard 12, *Accounting for Government Grants*). The average carrying amount of the asset during a period, including borrowing costs previously capitalised, is normally a reasonable approximation of the expenditure to which the capitalisation rate is applied in that period.

16. The activities necessary to prepare the asset for its intended use or sale encompass more than the physical construction of the asset. They include technical and administrative work prior to the commencement of physical construction, such as the activities associated with obtaining permits prior to the commencement of the physical construction. However, such activities exclude the holding of an asset when no production or development that changes the asset's condition is taking place. For example, borrowing costs incurred while land is under development are capitalised during the period in which activities related to the development are being undertaken. However, borrowing costs incurred while land acquired for building purposes is held without any associated development activity do not qualify for capitalisation.

Suspension of Capitalisation

17. Capitalisation of borrowing costs should be suspended during extended periods in which active development is interrupted.

18. Borrowing costs may be incurred during an extended period in which the activities necessary to prepare an asset for its intended use or sale are interrupted. Such costs are costs of holding partially completed assets and do not qualify for capitalisation. However, capitalisation of borrowing costs is not normally suspended during a period when substantial technical and administrative work is being carried out. Capitalisation of borrowing costs is also not suspended when a temporary delay is a necessary part of the process of getting an asset ready for its intended use or sale. For example, capitalisation continues during the extended period needed for inventories to mature or the extended period during which high water levels delay construction of a bridge, if such high water levels are common during the construction period in the geographic region involved.

Cessation of Capitalisation

19. Capitalisation of borrowing costs should cease when substantially all the activities necessary to prepare the qualifying asset for its intended use or sale are complete.

20. An asset is normally ready for its intended use or sale when its physical construction or production is complete even though routine administrative work might still continue. If minor modifications, such as the decoration of a property to the user's specification, are all that are outstanding, this indicates that substantially all the activities are complete.

21. When the construction of a qualifying asset is completed in parts and a completed part is capable of being used while construction continues for the other parts, capitalisation of borrowing costs in relation to a part should cease when substantially all the activities necessary to prepare that part for its intended use or sale are complete.

22. A business park comprising several buildings, each of which can be used individually, is an example of a qualifying asset for which each part is capable of being used while construction continues for the other parts. An example of a qualifying asset that needs to be complete before any part can be used is an industrial plant involving several processes which are carried out in sequence at different parts of the plant within the same site, such as a steel mill.

Disclosure

23. The financial statements should disclose:

(a) the accounting policy adopted for borrowing costs; and

(b) the amount of borrowing costs capitalised during the period.

Illustration

Note: This illustration does not form part of the Accounting Standard. Its purpose is to assist in clarifying the meaning of paragraph 4(e) of the Standard.

Facts:

XYZ Ltd. has taken a loan of USD 10,000 on April 1, 20X3, for a specific project at an interest rate of 5% p.a., payable annually. On April 1, 20X3, the exchange rate between the currencies was Rs. 45 per USD. The exchange rate, as at March 31, 20X4, is Rs. 48 per USD. The corresponding amount could have been borrowed by XYZ Ltd. in local currency at an interest rate of 11 per cent annum as on April 1, 20X3.

The following computation would be made to determine the amount of borrowing costs for the purposes of paragraph 4(e) of AS 16:

(i) Interest for the period = USD 10,000 × 5% × Rs. 48/USD = Rs. 24,000.

(ii) Increase in the liability towards the principal amount = USD 10,000 × (48–45) = Rs. 30,000.

(iii) Interest that would have resulted if the loan was taken in Indian currency = USD 10,000 × 45 × 11% = Rs. 49,500.

(iv) Difference between interest on local currency borrowing and foreign currency borrowing = Rs. 49,500 – Rs. 24,000 = Rs. 25,500.

Therefore, out of Rs. 30,000 increase in the liability towards principal amount, only Rs. 25,500 will be considered as the borrowing cost. Thus, total borrowing cost would be Rs. 49,500 being the aggregate of interest of Rs. 24,000 on foreign currency borrowings [covered by paragraph 4(a) of AS 16] plus the exchange difference to the extent of difference between interest on local currency borrowing and interest on foreign currency borrowing of Rs. 25,500. Thus, Rs. 49,500 would be considered as the borrowing cost to be accounted for as per AS 16 and the remaining Rs. 4,500 would be considered as the exchange difference to be accounted for as per Accounting Standard (AS) 11, *The Effects of Changes in Foreign Exchange Rates.*

In the above example, if the interest rate on local currency borrowings is assumed to be 13% instead of 11%, the entire exchange difference of Rs. 30,000 would be considered as borrowing costs, since in that case the difference between the interest on local currency borrowings and foreign currency borrowings [i.e. Rs. 34,500 (Rs. 58,500 – Rs. 24,000)] is more than the exchange difference of Rs. 30,000. Therefore, in such a case, the total borrowing cost would be Rs. 54,000 (Rs. 24,000 + Rs. 30,000) which would be accounted for under AS 16 and there would be no exchange difference to be accounted for under AS 11, *The Effects of Changes in Foreign Exchange Rates.*

Accounting Standard (AS) 17

Segment Reporting

*(This Accounting Standard includes paragraphs set in **bold italic** type and plain type, which have equal authority. Paragraphs in bold italic type indicate the main principles. This Accounting Standard should be read in the context of its objective and the General Instructions contained in part A of the Annexure to the Notification.)*

This Accounting Standard is not mandatory for Small and Medium Sized Companies, as defined in the Notification. Such Companies are however encouraged to comply with the Standard.

Objective

The objective of this Standard is to establish principles for reporting financial information, about the different types of products and services an enterprise produces and the different geographical areas in which it operates. Such information helps users of financial statements:

(a) better understand the performance of the enterprise;

IndiaCode

(b) better assess the risks and returns of the enterprise; and

(c) make more informed judgements about the enterprise as a whole.

Many enterprises provide groups of products and services or operate in geographical areas that are subject to differing rates of profitability, opportunities for growth, future prospects, and risks. Information about different types of products and services of an enterprise and its operations in different geographical areas - often called segment information - is relevant to assessing the risks and returns of a diversified or multi-locational enterprise but may not be determinable from the aggregated data. Therefore, reporting of segment information is widely regarded as necessary for meeting the needs of users of financial statements.

Scope

1. This Standard should be applied in presenting general purpose financial statements.

2. The requirements of this Standard are also applicable in case of consolidated financial statements.

3. An enterprise should comply with the requirements of this Standard fully and not selectively.

4. If a single financial report contains both consolidated financial statements and the separate financial statements of the parent, segment information need be presented only on the basis of the consolidated financial statements. In the context of reporting of segment information in consolidated financial statements, the references in this Standard to any financial statement items should construed to be the relevant item as appearing in the consolidated financial statements.

Definitions

5. The following terms are used in this Standard with the meanings specified:

5.1 A business segment is a distinguishable component of an enterprise that is engaged in providing an individual product or service or a group of related products or services and that is subject to risks and returns that are different from those of other business segments. Factors that should be considered in determining whether products or services are related include:

(a) the nature of the products or services;

(b) the nature of the production processes;

(c) the type or class of customers for the products or services;

(d) the methods used to distribute the products or provide the services; and

(e) if applicable, the nature of the regulatory environment, for example, banking, insurance, or public utilities.

5.2 A geographical segment is a distinguishable component of an enterprise that is engaged in providing products or services within a particular economic environment and that is subject to risks and returns that are different from those of components operating in other economic environments. Factors that should be considered in identifying geographical segments include:

(a) similarity of economic and political conditions;

(b) relationships between operations in different geographical areas;

(c) proximity of operations;

(d) special risks associated with operations in a particular area;

(e) exchange control regulations; and

(f) the underlying currency risks.

5.3 A reportable segment is a business segment or a geographical segment identified on the basis of foregoing definitions for which segment information is required to be disclosed by this Standard.

5.4 Enterprise revenue is revenue from sales to external customers as reported in the statement of profit and loss.

5.5 Segment revenue is the aggregate of

(i) the portion of enterprise revenue that is directly attributable to a segment,

(ii) the relevant portion of enterprise revenue that can be allocated on a reasonable basis to a segment, and

(iii) revenue from transactions with other segments of the enterprise.

Segment revenue does not include:

(a) extraordinary items as defined in AS 5, Net Profit or Loss for the Period, Prior Period Items and Changes in Accounting Policies;

(b) interest or dividend income, including interest earned on advances or loans to other segments unless the operations of the segment are primarily of a financial nature; and

(c) gains on sales of investments or on extinguishment of debt unless the operations of the segment are primarily of a financial nature.

5.6 Segment expense is the aggregate of

(i) the expense resulting from the operating activities of a segment that is directly attributable to the segment, and

(ii) the relevant portion of enterprise expense that can be allocated on a reasonable basis to the segment, including expense relating to transactions with other segments of the enterprise.

Segment expense does not include:

(a) extraordinary items as defined in AS 5, Net Profit or Loss for the Period, Prior Period Items and Changes in Accounting Policies;

(b) interest expense, including interest incurred on advances or loans from other segments, unless the operations of the segment are primarily of a financial nature;

Explanation:

The interest expense relating to overdrafts and other operating liabilities identified to a particular segment are not included as a part of the segment expense unless the operations of the segment are primarily of a financial nature or unless the interest is included as a part of the cost of inventories. In case interest is included as a part of the cost of inventories where it is so required as per AS 16, Borrowing Costs, read with AS 2, Valuation of Inventories, and those inventories are part of segment assets of a particular segment, such interest is considered as a segment expense. In this case, the amount of such interest and the fact that the segment result has been arrived at after considering such interest is disclosed by way of a note to the segment result.

(c) losses on sales of investments or losses on extinguishment of debt unless the operations of the segment are primarily of a financial nature;

(d) income tax expense; and

(e) general administrative expenses, head-office expenses, and other expenses that arise at the enterprise level and relate to the enterprise as a whole. However, costs are sometimes incurred at the enterprise level on behalf of a segment. Such costs are part of segment expense if they relate to the operating activities of the segment and if they can be directly attributed or allocated to the segment on a reasonable basis.

5.7 Segment result is segment revenue less segment expense.

5.8 Segment assets are those operating assets that are employed by a segment in its operating activities and that either are directly attributable to the segment or can be allocated to the segment on a reasonable basis.

If the segment result of a segment includes interest or dividend income, its segment assets include the related receivables, loans, investments, or other interest or dividend generating assets.

Segment assets do not include income tax assets.

Segment assets are determined after deducting related allowances/ provisions that are reported as direct offsets in the balance sheet of the enterprise.

5.9 Segment liabilities are those operating liabilities that result from the operating activities of a segment and that either are directly attributable to the segment or can be allocated to the segment on a reasonable basis.

If the segment result of a segment includes interest expense, its segment liabilities include the related interest-bearing liabilities.

Segment liabilities do not include income tax liabilities.

5.10 Segment accounting policies are the accounting policies adopted for preparing and presenting the financial statements of the enterprise as well as those accounting policies that relate specifically to segment reporting.

6. The factors in paragraph 5 for identifying business segments and geographical segments are not listed in any particular order.

7. A single business segment does not include products and services with significantly differing risks and returns. While there may be dissimilarities with respect to one or several of the factors listed in the definition of business segment, the products and services included in a single business segment are expected to be similar with respect to a majority of the factors.

8. Similarly, a single geographical segment does not include operations in economic environments with significantly differing risks and returns. A geographical segment may be a single country, a group of two or more countries, or a region within a country.

9. The risks and returns of an enterprise are influenced both by the geographical location of its operations (where its products are produced or where its service rendering activities are based) and also by the location of its customers (where its products are sold or services are rendered). The definition allows geographical segments to be based on either:

(a) the location of production or service facilities and other assets of an enterprise; or

(b) the location of its customers.

10. The organisational and internal reporting structure of an enterprise will normally provide evidence of whether its dominant source of geographical risks results from the location of its assets (the origin of its sales) or the location of its customers (the destination of its sales). Accordingly, an enterprise looks to this structure to determine whether its geographical segments should be based on the location of its assets or on the location of its customers.

11. Determining the composition of a business or geographical segment involves a certain amount of judgement. In making that judgement, enterprise management takes into account the objective of reporting financial information by segment as set forth in this Standard and the qualitative characteristics of financial statements as identified in the Framework for the Preparation and Presentation of Financial Statements issued by the Institute of Chartered Accountants of India. The qualitative characteristics include the relevance, reliability, and comparability over time of financial information that is reported about the different groups of products and services of an enterprise and about its operations in particular geographical areas, and the usefulness of that information for assessing the risks and returns of the enterprise as a whole.

12. The predominant sources of risks affect how most enterprises are organised and managed. Therefore, the organisational structure of an enterprise and its internal financial reporting system are normally the basis for identifying its segments.

13. The definitions of segment revenue, segment expense, segment assets and segment liabilities include amounts of such items that are directly attributable to a segment and amounts of such items that can be allocated to a segment on a reasonable basis. An enterprise looks to its internal financial reporting system as the starting point for identifying those items that can be directly attributed, or reasonably allocated, to segments. There is thus a presumption that amounts that have been identified with segments for internal financial reporting purposes are directly attributable or reasonably allocable to segments for the purpose of measuring the segment revenue, segment expense, segment assets, and segment liabilities of reportable segments.

14. In some cases, however, a revenue, expense, asset or liability may have been allocated to segments for internal financial reporting purposes on a basis that is understood by enterprise management but that could be deemed arbitrary in the perception of external users of financial statements. Such an allocation would not constitute a reasonable basis under the definitions of segment revenue, segment expense, segment assets, and segment liabilities in this Standard. Conversely, an enterprise may choose not to allocate some item of revenue, expense, asset or liability for internal financial reporting purposes, even though a reasonable basis for doing so exists. Such an item is allocated pursuant to the definitions of segment revenue, segment expense, segment assets, and segment liabilities in this Standard.

15. Examples of segment assets include current assets that are used in the operating activities of the segment and tangible and intangible fixed assets. If a particular item of depreciation or amortisation is included in segment expense, the related asset is also included in segment assets. Segment assets do not include assets used for general enterprise or head-office purposes. Segment assets include operating assets shared by two or more segments if a reasonable basis for allocation exists. Segment assets include goodwill that is directly attributable to a segment or that can be allocated to a segment on a reasonable basis, and segment expense includes related amortisation of goodwill. If segment assets have been revalued subsequent to acquisition, then the measurement of segment assets reflects those revaluations.

16. Examples of segment liabilities include trade and other payables, accrued liabilities, customer advances, product warranty provisions, and other claims relating to the provision of goods and services. Segment liabilities do not include borrowings and other liabilities that are incurred for financing rather than operating purposes. The liabilities

of segments whose operations are not primarily of a financial nature do not include borrowings and similar liabilities because segment result represents an operating, rather than a net-of-financing, profit or loss. Further, because debt is often issued at the head-office level on an enterprise-wide basis, it is often not possible to directly attribute, or reasonably allocate, the interest- bearing liabilities to segments.

17. Segment revenue, segment expense, segment assets and segment liabilities are determined before intra-enterprise balances and intra-enterprise transactions are eliminated as part of the process of preparation of enterprise financial statements, except to the extent that such intra-enterprise balances and transactions are within a single segment.

18. While the accounting policies used in preparing and presenting the financial statements of the enterprise as a whole are also the fundamental segment accounting policies, segment accounting policies include, in addition, policies that relate specifically to segment reporting, such as identification of segments, method of pricing inter-segment transfers, and basis for allocating revenues and expenses to segments.

Identifying Reportable Segments

Primary and Secondary Segment Reporting Formats

19. The dominant source and nature of risks and returns of an enterprise should govern whether its primary segment reporting format will be business segments or geographical segments. If the risks and returns of an enterprise are affected predominantly by differences in the products and services it produces, its primary format for reporting segment information should be business segments, with secondary information reported geographically. Similarly, if the risks and returns of the enterprise are affected predominantly by the fact that it operates in different countries or other geographical areas, its primary format for reporting segment information should be geographical segments, with secondary information reported for groups of related products and services.

20. Internal organisation and management structure of an enterprise and its system of internal financial reporting to the board of directors and the chief executive officer should normally be the basis for identifying the predominant source and nature of risks and differing rates of return facing the enterprise and, therefore, for determining which reporting format is primary and which is secondary, except as provided in sub-paragraphs (a) and (b) below:

(a) if risks and returns of an enterprise are strongly affected both by differences in the products and services it produces and by differences in the geographical areas in which it operates, as evidenced by a 'matrix approach' to managing the company and to reporting internally to the board of directors and the chief executive officer, then the enterprise should use business segments as its primary segment reporting format and geographical segments as its secondary reporting format; and

(b) if internal organisational and management structure of an enterprise and its system of internal financial reporting to the board of directors and the chief executive officer are based neither on individual products or services or groups of related products/services nor on geographical areas, the directors and management of the enterprise should determine whether the risks and returns of the enterprise are related more to the products and services it produces or to the geographical areas in which it operates and should, accordingly, choose business segments or geographical segments as the primary segment reporting format of the enterprise, with the other as its secondary reporting format.

21. For most enterprises, the predominant source of risks and returns determines how the enterprise is organised and managed. Organisational and management structure of an enterprise and its internal financial reporting system normally provide the best evidence of the predominant source of risks and returns of the enterprise for the purpose of its segment reporting. Therefore, except in rare circumstances, an enterprise will report segment information in its financial statements on the same basis as it reports internally to top management. Its predominant source of risks and returns becomes its primary segment reporting format. Its secondary source of risks and returns becomes its secondary segment reporting format.

22. A 'matrix presentation' — both business segments and geographical segments as primary segment reporting formats with full segment disclosures on each basis — will often provide useful information if risks and returns of an enterprise are strongly affected both by differences in the products and services it produces and by differences in the geographical areas in which it operates. This Standard does not require, but does not prohibit, a 'matrix presentation'.

23. In some cases, organisation and internal reporting of an enterprise may have developed along lines unrelated to both the types of products and services it produces, and the geographical areas in which it operates. In such cases, the internally reported segment data will not meet the objective of this Standard. Accordingly, paragraph 20(b) requires the directors and management of the enterprise to determine whether the risks and returns of the enterprise are more product/service driven or geographically driven and to accordingly choose business segments or geographical segments as the primary basis of segment reporting. The objective is to achieve a reasonable degree of comparability with other enterprises, enhance understandability of the resulting information, and meet the needs of investors, creditors, and others for information about product/service-related and geographically- related risks and returns.

Business and Geographical Segments

24. Business and geographical segments of an enterprise for external reporting purposes should be those organisational units for which information is reported to the board of directors and to the chief executive officer for the purpose of evaluating the unit's performance and for making decisions about future allocations of resources, except as provided in paragraph 25.

25. If internal organisational and management structure of an enterprise and its system of internal financial reporting to the board of directors and the chief executive officer are based neither on individual products or services or groups of related products/services nor on geographical areas, paragraph 20(b) requires that the directors and management of the enterprise should choose either business segments or geographical segments as the primary segment reporting format of the enterprise based on their assessment of which reflects the primary source of the risks and returns of the enterprise, with the other as its secondary reporting format. In that case, the directors and management of the enterprise should determine its business segments and geographical segments for external reporting purposes based on the factors in the definitions in paragraph 5 of this Standard, rather than on the basis of its system of internal financial reporting to the board of directors and chief executive officer, consistent with the following:

(a) if one or more of the segments reported internally to the directors and management is a business segment or a geographical segment based on the factors in the definitions in paragraph 5 but others are not, sub-paragraph (b) below should be applied only to those internal segments that do not meet the definitions in paragraph 5 (that is, an internally reported segment that meets the definition should not be further segmented);

(b) for those segments reported internally to the directors and management that do not satisfy the definitions in paragraph 5, management of the enterprise should look to the next lower level of internal segmentation that reports information along product and service lines or geographical lines, as appropriate under the definitions in paragraph 5; and

(c) if such an internally reported lower-level segment meets the definition of business segment or geographical segment based on the factors in paragraph 5, the criteria in paragraph 27 for identifying reportable segments should be applied to that segment.

26. Under this Standard, most enterprises will identify their business and geographical segments as the organisational units for which information is reported to the board of the directors (particularly the non-executive directors, if any) and to the chief executive officer (the senior operating decision maker, which in some cases may be a group of several people) for the purpose of evaluating each unit's performance and for making decisions about future allocations of resources. Even if an enterprise must apply paragraph 25 because its internal segments are not along product/service or geographical lines, it will consider the next lower level of internal segmentation that reports information along product and service lines or geographical lines rather than construct segments solely for external reporting purposes. This approach of looking to organisational and management structure of an enterprise and its internal financial reporting system to identify the business and geographical segments of the enterprise for external reporting purposes is sometimes called the 'management approach', and the organisational components for which information is reported internally are sometimes called 'operating segments'.

Reportable Segments

27. A business segment or geographical segment should be identified as a reportable segment if:

(a) its revenue from sales to external customers and from transactions with other segments is 10 per cent or more of the total revenue, external and internal, of all segments; or

(b) its segment result, whether profit or loss, is 10 per cent or more of -

(i) the combined result of all segments in profit, or

(ii) the combined result of all segments in loss,

whichever is greater in absolute amount; or

(c) its segment assets are 10 per cent or more of the total assets of all segments.

28. A business segment or a geographical segment which is not a reportable segment as per paragraph 27, may be designated as a reportable segment despite its size at the discretion of the management of the enterprise. If that segment is not designated as a reportable segment, it should be included as an unallocated reconciling item.

29. If total external revenue attributable to reportable segments constitutes less than 75 per cent of the total enterprise revenue, additional segments should be identified as reportable segments, even if they do not meet the 10 per cent thresholds in paragraph 27, until at least 75 per cent of total enterprise revenue is included in reportable segments.

30. The 10 per cent thresholds in this Standard are not intended to be a guide for determining materiality for any aspect of financial reporting other than identifying reportable business and geographical segments.

Illustration II attached to this Standard presents an illustration of the determination of reportable segments as per paragraphs 27-29.

31. A segment identified as a reportable segment in the immediately preceding period because it satisfied the relevant 10 per cent thresholds should continue to be a reportable segment for the current period notwithstanding that its revenue, result, and assets all no longer meet the 10 per cent thresholds.

32. If a segment is identified as a reportable segment in the current period because it satisfies the relevant 10 per cent thresholds, preceding-period segment data that is presented for comparative purposes should, unless it is impracticable to do so, be restated to reflect the newly reportable segment as a separate segment, even if that segment did not satisfy the 10 per cent thresholds in the preceding period.

Segment Accounting Policies

33. Segment information should be prepared in conformity with the accounting policies adopted for preparing and presenting the financial statements of the enterprise as a whole.

34. There is a presumption that the accounting policies that the directors and management of an enterprise have chosen to use in preparing the financial statements of the enterprise as a whole are those that the directors and management believe are the most appropriate for external reporting purposes. Since the purpose of segment information is to help users of financial statements better understand and make more informed judgements about the enterprise as a whole, this Standard requires the use, in preparing segment information, of the accounting policies adopted for preparing and presenting the financial statements of the enterprise as a whole. That does not mean, however, that the enterprise accounting policies are to be applied to reportable segments as if the segments were separate stand-alone reporting entities. A detailed calculation done in applying a particular accounting policy at the enterprise-wide level may be allocated to segments if there is a reasonable basis for doing so. Pension calculations, for example, often are done for an enterprise as a whole, but the enterprise-wide figures may be allocated to segments based on salary and demographic data for the segments.

35. This Standard does not prohibit the disclosure of additional segment information that is prepared on a basis other than the accounting policies adopted for the enterprise financial statements provided that (a) the information is reported internally to the board of directors and the chief executive officer for purposes of making decisions about allocating resources to the segment and assessing its performance and (b) the basis of measurement for this additional information is clearly described.

36. Assets and liabilities that relate jointly to two or more segments should be allocated to segments if, and only if, their related revenues and expenses also are allocated to those segments.

37. The way in which asset, liability, revenue, and expense items are allocated to segments depends on such factors as the nature of those items, the activities conducted by the segment, and the relative autonomy of that segment. It is not possible or appropriate to specify a single basis of allocation that should be adopted by all enterprises; nor is it appropriate to force allocation of enterprise asset, liability, revenue and expense items that relate jointly to two or more segments, if the only basis for making those allocations is arbitrary. At the same time, the definitions of segment revenue, segment expense, segment assets and segment liabilities are interrelated, and the resulting allocations should be consistent. Therefore, jointly used assets and liabilities are allocated to segments if, and only if, their related revenues and expenses also are allocated to those segments. For example, an asset is included in segment assets if, and only if, the related depreciation or amortisation is included in segment expense.

Disclosure

38. Paragraphs 39-46 specify the disclosures required for reportable segments for primary segment reporting format of an enterprise. Paragraphs 47-51 identify the disclosures required for secondary reporting format of an enterprise. Enterprises are encouraged to make all of the primary-segment disclosures identified in paragraphs 39-46 for each reportable secondary segment although paragraphs 47-51 require considerably less disclosure on the secondary basis. Paragraphs 53-59 address several other segment disclosure matters. Illustration III attached to this Standard illustrates the application of these disclosure standards.

Explanation:

In case, by applying the definitions of 'business segment' and 'geographical segment', it is concluded that there is neither more than one business segment nor more than one geographical segment, segment information as per this Standard is not required to be disclosed. However, the fact that there is only one 'business segment' and 'geographical segment' is disclosed by way of a note.

Primary Reporting Format

39. The disclosure requirements in paragraphs 40-46 should be applied to each reportable segment based on primary reporting format of an enterprise.

40. An enterprise should disclose the following for each reportable segment:

(a) segment revenue, classified into segment revenue from sales to external customers and segment revenue from transactions with other segments;

(b) segment result;

(c) total carrying amount of segment assets;

(d) total amount of segment liabilities;

(e) total cost incurred during the period to acquire segment assets that are expected to be used during more than one period (tangible and intangible fixed assets);

(f) total amount of expense included in the segment result for depreciation and amortisation in respect of segment assets for the period; and

(g) total amount of significant non-cash expenses, other than depreciation and amortisation in respect of segment assets, that were included in segment expense and, therefore, deducted in measuring segment result.

41. Paragraph 40 (b) requires an enterprise to report segment result. If an enterprise can compute segment net profit or loss or some other measure of segment profitability other than segment result, without arbitrary allocations, reporting of such amount(s) in addition to segment result is encouraged. If that measure is prepared on a basis other than the accounting policies adopted for the financial statements of the enterprise, the enterprise will include in its financial statements a clear description of the basis of measurement.

42. An example of a measure of segment performance above segment result in the statement of profit and loss is gross margin on sales. Examples of measures of segment performance below segment result in the statement of profit and loss are profit or loss from ordinary activities (either before or after income taxes) and net profit or loss.

43. Accounting Standard 5, *Net Profit or Loss for the Period, Prior Period Items and Changes in Accounting Policies* requires that "when items of income and expense within profit or loss from ordinary activities are of such size, nature or incidence that their disclosure is relevant to explain the performance of the enterprise for the period, the nature and amount of such items should be disclosed separately". Examples of such items include write- downs of inventories, provisions for restructuring, disposals of fixed assets and long-term investments, legislative changes having retrospective application, litigation settlements, and reversal of provisions. An enterprise is encouraged, but not required, to disclose the nature and amount of any items of segment revenue and segment expense that are of such size, nature, or incidence that their disclosure is relevant to explain the performance of the segment for the period. Such disclosure is not intended to change the classification of any such items of revenue or expense from ordinary to extraordinary or to change the measurement of such items. The disclosure, however, does change the level at which the significance of such items is evaluated for disclosure purposes from the enterprise level to the segment level.

44. An enterprise that reports the amount of cash flows arising from operating, investing and financing activities of a segment need not disclose depreciation and amortisation expense and non-cash expenses of such segment pursuant to sub-paragraphs (f) and (g) of paragraph 40.

45. AS 3 *Cash Flow Statements* recommends that an enterprise present a cash flow statement that separately reports cash flows from operating, investing and financing activities. Disclosure of information regarding operating,

IndiaCode

investing and financing cash flows of each reportable segment is relevant to understanding the enterprise's overall financial position, liquidity, and cash flows. Disclosure of segment cash flow is, therefore, encouraged, though not required. An enterprise that provides segment cash flow disclosures need not disclose depreciation and amortisation expense and non-cash expenses pursuant to sub-paragraphs (f) and (g) of paragraph 40.

46. An enterprise should present a reconciliation between the information disclosed for reportable segments and the aggregated information in the enterprise financial statements. In presenting the reconciliation, segment revenue should be reconciled to enterprise revenue; segment result should be reconciled to enterprise net profit or loss; segment assets should be reconciled to enterprise assets; and segment liabilities should be reconciled to enterprise liabilities.

Secondary Segment Information

47. Paragraphs 39-46 identify the disclosure requirements to be applied to each reportable segment based on primary reporting format of an enterprise. Paragraphs 48-51 identify the disclosure requirements to be applied to each reportable segment based on secondary reporting format of an enterprise, as follows:

(a) if primary format of an enterprise is business segments, the required secondary-format disclosures are identified in paragraph 48;

(b) if primary format of an enterprise is geographical segments based on location of assets (where the products of the enterprise are produced or where its service rendering operations are based), the required secondary-format disclosures are identified in paragraphs 49 and 50;

(c) if primary format of an enterprise is geographical segments based on the location of its customers (where its products are sold or services are rendered), the required secondary-format disclosures are identified in paragraphs 49 and 51.

IndiaCode

48. If primary format of an enterprise for reporting segment information is business segments, it should also report the following information:

(a) segment revenue from external customers by geographical area based on the geographical location of its customers, for each geographical segment whose revenue from sales to external customers is 10 per cent or more of enterprise revenue;

(b) the total carrying amount of segment assets by geographical location of assets, for each geographical segment whose segment assets are 10 per cent or more of the total assets of all geographical segments; and

(c) the total cost incurred during the period to acquire segment assets that are expected to be used during more than one period (tangible and intangible fixed assets) by geographical location of assets, for each geographical segment whose segment assets are 10 per cent or more of the total assets of all geographical segments.

49. If primary format of an enterprise for reporting segment information is geographical segments (whether based on location of assets or location of customers), it should also report the following segment information for each business segment whose revenue from sales to external customers is 10 per cent or more of enterprise revenue or whose segment assets are 10 per cent or more of the total assets of all business segments:

(a) segment revenue from external customers;

(b) the total carrying amount of segment assets; and

(c) the total cost incurred during the period to acquire segment assets that are expected to be used during more than one period (tangible and intangible fixed assets).

50. If primary format of an enterprise for reporting segment information is geographical segments that are based on location of assets, and if the location of its customers is different from the location of its assets, then the enterprise should also report revenue from sales to external customers for each customer-based geographical segment whose revenue from sales to external customers is 10 per cent or more of enterprise revenue.

51. If primary format of an enterprise for reporting segment information is geographical segments that are based on location of customers, and if the assets of the enterprise are located in different geographical areas from its customers, then the enterprise should also report the following segment information for each asset-based geographical segment whose revenue from sales to external customers or segment assets are 10 per cent or more of total enterprise amounts:

(a) the total carrying amount of segment assets by geographical location of the assets; and

(b) the total cost incurred during the period to acquire segment assets that are expected to be used during more than one period (tangible and intangible fixed assets) by location of the assets.

Illustrative Segment Disclosures

52. Illustration III attached to this Standard Illustrates the disclosures for primary and secondary formats that are required by this Standard.

Other Disclosures

53. In measuring and reporting segment revenue from transactions with other segments, inter-segment transfers should be measured on the basis that the enterprise actually used to price those transfers. The basis of pricing inter-segment transfers and any change therein should be disclosed in the financial statements.

54. Changes in accounting policies adopted for segment reporting that have a material effect on segment information should be disclosed. Such disclosure should include a description of the nature of the change, and the financial effect of the change if it is reasonably determinable.

55. AS 5 requires that changes in accounting policies adopted by the enterprise should be made only if required by statute, or for compliance with an accounting standard, or if it is considered that the change would result in a more appropriate presentation of events or transactions in the financial statements of the enterprise.

56. Changes in accounting policies adopted at the enterprise level that affect segment information are dealt with in accordance with AS 5. AS 5 requires that any change in an accounting policy which has a material effect should be disclosed. The impact of, and the adjustments resulting from, such change, if material, should be shown in the financial statements of the period in which such change is made, to reflect the effect of such change. Where the effect of such change is not ascertainable, wholly or in part, the fact should be indicated. If a change is made in the accounting policies which has no material effect on the financial statements for the current period but which is reasonably expected to have a material effect in later periods, the fact of such change should be appropriately disclosed in the period in which the change is adopted.

57. Some changes in accounting policies relate specifically to segment reporting. Examples include changes in identification of segments and changes in the basis for allocating revenues and expenses to segments. Such changes can have a significant impact on the segment information reported but will not change aggregate financial information reported for the enterprise. To enable users to understand the impact of such changes, this Standard requires the disclosure of the nature of the change and the financial effect of the change, if reasonably determinable.

58. An enterprise should indicate the types of products and services included in each reported business segment and indicate the composition of each reported geographical segment, both primary and secondary, if not otherwise disclosed in the financial statements.

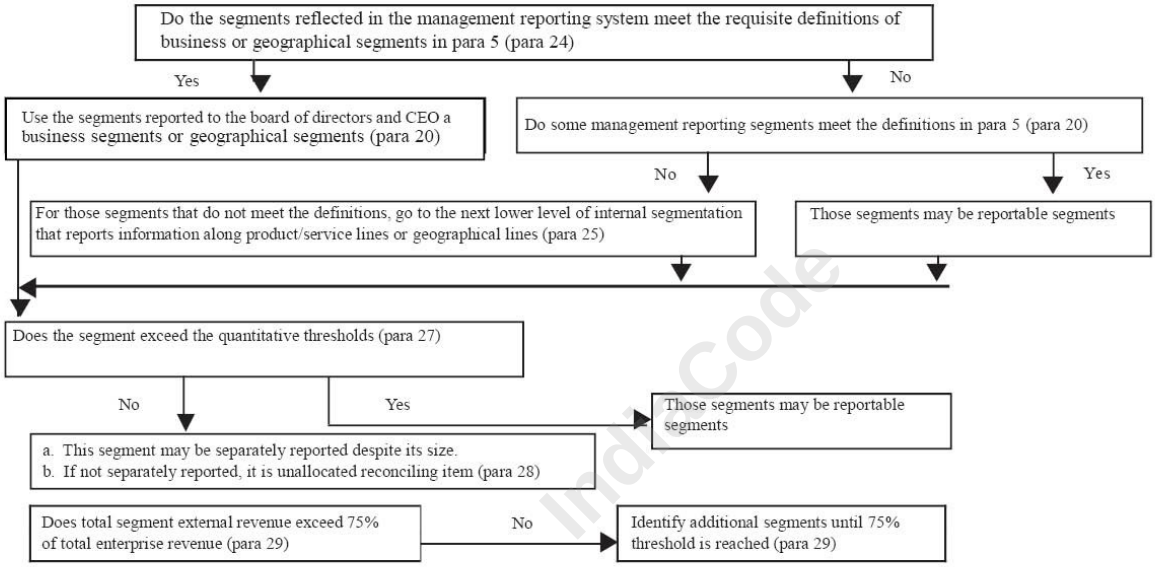
IndiaCode

59. To assess the impact of such matters as shifts in demand, changes in the prices of inputs or other factors of production, and the development of alternative products and processes on a business segment, it is necessary to know the activities encompassed by that segment. Similarly, to assess the impact of changes in the economic and political environment on the risks and returns of a geographical segment, it is important to know the composition of that geographical segment.

Illustration I

Segment Definition Decision Tree

The purpose of this illustration is to illustrate the application of paragraphs 24-32 of the Accounting Standard.



IndiaCode

Illustration II

Illustration on Determination of Reportable Segments [Paragraphs 27-29]

This illustration does not form part of the Accounting Standard. Its purpose is to illustrate the application of paragraphs 27-29 of the Accounting Standard.

An enterprise operates through eight segments, namely, A, B, C, D, E, F, G and H. The relevant information about these segments is given in the following table (amounts in Rs.'000):

	A	B	C	D	E	F	G	H	Total (Segments)	Total (Enterprise)
1. SEGMENT REVENUE (a) External Sales	-	255	15	10	15	50	20	35	400	
(b) Inter-segment Sales	100	60	30	5	-	-	5	-	200	
(c) Total Revenue	100	315	45	15	15	50	25	35	600	400

2. Total Revenue of each segment as a percentage of total revenue of all segments	16.7	52.5	7.5	2.5	2.5	8.3	4.2	5.8		

	A	B	C	D	E	F	G	H	Total (Segments)	Total (Enterprise)
3. SEGMENT RESULT [Profit/(Loss)]	5	(90)	15	(5)	8	(5)	5	7		
4. Combined Result of all Segments in profits	5		15		8		5	7	40	
5. Combined Result of all Segments in loss		(90)		(5)		(5)			(100)	
6. Segment Result as a percentage of the greater of the totals arrived at 4 and 5 above in absolute amount(i.e., 100)	5	90	15	5	8	5	5	7		
7. SEGMENT ASSETS	15	47	5	11	3	5	5	9	100	
8. Segment assets as a percentage of total assets of all segments	15	47	5	11	3	5	5	9		

IndiaCode

The reportable segments of the enterprise will be identified as below:

(a) In accordance with paragraph 27(a), segments whose total revenue from external sales and inter-segment sales is 10% or more of the total revenue of all segments, external and internal, should be identified as reportable segments. Therefore, Segments A and B are reportable segments.

(b) As per the requirements of paragraph 27(b), it is to be first identified whether the combined result of all segments in profit or the combined result of all segments in loss is greater in absolute amount. From the table, it is evident that combined result in loss (i.e., Rs.1,00,000) is greater. Therefore, the individual segment result as a percentage of Rs.1,00,000 needs to be examined. In accordance with paragraph 27(b), Segments B and C are reportable segments as their segment result is more than the threshold limit of 10%.

(c) Segments A, B and D are reportable segments as per paragraph 27(c), as their segment assets are more than 10% of the total segment assets.

Thus, Segments A, B, C and D are reportable segments in terms of the criteria laid down in paragraph 27.

Paragraph 28 of the Standard gives an option to the management of the enterprise to designate any segment as a reportable segment. In the given case, it is presumed that the management decides to designate Segment E as a reportable segment.

Paragraph 29 requires that if total external revenue attributable to reportable segments identified as aforesaid constitutes less than 75% of the total enterprise revenue, additional segments should be identified as reportable segments even if they do not meet the 10% thresholds in paragraph 27, until at least 75% of total enterprise revenue is included in reportable segments.

The total external revenue of Segments A, B, C, D and E, identified above as reportable segments, is Rs.2,95,000. This is less than 75% of total enterprise revenue of Rs.4,00,000. The management of the enterprise is required to designate any one or more of the remaining segments as reportable segment(s) so that the external revenue of reportable segments is at least 75% of the total enterprise revenue. Suppose, the management designates Segment H for this purpose. Now the external revenue of reportable segments

is more than 75% of the total enterprise revenue.

Segments A, B, C, D, E and H are reportable segments. Segments F and G will be shown as reconciling items.

Illustration III

Illustrative Segment Disclosures

This illustration does not form part of the Accounting Standard. Its purpose is to illustrate the application of paragraphs 38-59 of the Accounting Standard.

This illustration illustrates the segment disclosures that this Standard would require for a diversified multi-locational business enterprise. This example is intentionally complex to illustrate most of the provisions of this Standard.

INFORMATION ABOUT BUSINESS SEGMENTS (NOTE xx)

(All amounts in Rs. lakhs)

	Paper Products		Office Products		Publishing		Other Operations		Eliminations		Consolidated Total	
	Current Year	*Previous Year*	*Current Year*	*Previous Year*	*Current Year*	*Previous Year*	*Current Year*	*Previous Year*	*Current Year*	*Previous Year*	*Current Year*	*Previous Year*
External sales	55	50	20	17	19	16	7	7				
Inter-segment sales	15	10	10	14	2	4	2	2	(29)	(30)		
Total Revenue	70	60	30	31	21	20	9	9	(29)	(30)	101	90

	Paper Products		Office Products		Publishing		Other Operations		Eliminations		Consolidated Total	
	Current Year	*Previous Year*	*Current Year*	*Previous Year*	*Current Year*	*Previous Year*	*Current Year*	*Previous Year*	*Current Year*	*Previous Year*	*Current Year*	*Previous Year*
RESULT												
Segment result	20	17	9	7	2	1	0	0	(1)	(1)	30	24
Unallocated corporate expenses											(7)	(9)
Operating profit											23	15
Interest expense											(4)	(4)
Interest income											2	3
Income taxes											(7)	(4)

IndiaCode

Profit from ordinary activities											14	10

	Paper Products		Office Products		Publishing		Other Operations		Eliminations		Consolidated Total	
	Current Year	*Previous Year*	*Current Year*	*Previous Year*	*Current Year*	*Previous Year*	*Current Year*	*Previous Year*	*Current Year*	*Previous Year*	*Current Year*	*Previous Year*
Extraordinary loss: uninsured earthquake damage to factory		(3)										(3)
Net profit											14	7
OTHER INFORMATION												
Segment assets	54	50	34	30	10	10	10	9			108	99
Unallocated corporate assets											67	56
Total assets											175	155
Segment liabilities	25	15	8	11	8	8	1	1			42	35

IndiaCode

	Paper Products		Office Products		Publishing		Other Operations		Eliminations		Consolidated Total	
	Current Year	*Previous Year*	*Current Year*	*Previous Year*	*Current Year*	*Previous Year*	*Current Year*	*Previous Year*	*Current Year*	*Previous Year*	*Current Year*	*Previous Year*
Unallocated corporate liabilities											40	55
Total liabilities											82	90
Capital expenditure	12	10	3	5	5		4	3				
Depreciation	9	7	9	7	5	3	3	4				
Non-cash expenses other than depreciation	8	2	7	3	2	2	2	1				

Note xx-Business and Geographical Segments (amounts in Rs. lakhs)

Business segments: For management purposes, the Company is organised on a worldwide basis into three major operating divisions-paper products, office products and publishing — each headed by a senior vice president. The divisions are the basis on which the company reports its primary segment information. The paper products segment produces a broad range of writing and publishing papers and newsprint. The office products segment manufactures labels, binders, pens, and markers and also distributes office products made by others. The publishing segment develops and sells books in the fields of taxation, law and accounting. Other operations include development of computer software for standard and specialised business applications. Financial information about business segments is presented in the above table.

Geographical segments: Although the Company's major operating divisions are managed on a worldwide basis, they operate in four principal geographical areas of the world. In India, its home country, the Company produces and sells a broad range of papers and office products. Additionally, all of the Company's publishing and computer software development operations are conducted in India. In the European Union, the Company operates paper and office products manufacturing facilities and sales offices in the following countries: France, Belgium, Germany and the U.K. Operations in Canada and the United States are essentially similar and consist of manufacturing papers and newsprint that are sold entirely within those two countries. Operations in Indonesia include the production of paper pulp and the manufacture of writing and publishing papers and office products, almost all of which is sold outside Indonesia, both to other segments of the company and to external customers.

Sales by market: The following table shows the distribution of the Company's consolidated sales by geographical market, regardless of where the goods were produced:

IndiaCode

	Sales Revenue by *Geographical Market*	
	Current Year	Previous Year
India	19	22
European Union	30	31
Canada and the United States	28	21
Mexico and South America	6	2
Southeast Asia (principally Japan and Taiwan)	18	14
	101	90

Assets and additions to tangible and intangible fixed assets by geographical area: The following table shows the carrying amount of segment assets and additions to tangible and intangible fixed assets by geographical area in which the assets are located:

Assets	**Carrying Amount of Segment Assets**		**Additions to Fixed Assets and Intangible Assets**	
	Current Year	**Previous Year**	**Current Year**	**Previous Year**
India	72	78	8	5
European Union	47	37	5	4
Canada and the United States	34	20	4	3
Indonesia	22	20	7	6

	175	155	24	18

Segment revenue and expense: In India, paper and office products are manufactured in combined facilities and are sold by a combined sales force. Joint revenues and expenses are allocated to the two business segments on a reasonable basis. All other segment revenue and expense are directly attributable to the segments.

Segment assets and liabilities: Segment assets include all operating assets used by a segment and consist principally of operating cash, debtors, inventories and fixed assets, net of allowances and provisions which are reported as direct offsets in the balance sheet. While most such assets can be directly attributed to individual segments, the carrying amount of certain assets used jointly by two or more segments is allocated to the segments on a reasonable basis. Segment liabilities include all operating liabilities and consist principally of creditors and accrued liabilities. Segment assets and liabilities do not include deferred income taxes.

Inter-segment transfers: Segment revenue, segment expenses and segment result include transfers between business segments and between geographical segments. Such transfers are accounted for at competitive market prices charged to unaffiliated customers for similar goods. Those transfers are eliminated in consolidation.

Unusual item: Sales of office products to external customers in the current year were adversely affected by a lengthy strike of transportation workers in India, which interrupted product shipments for approximately four months. The Company estimates that sales of office products during the four-month period were approximately half of what they would otherwise have been.

Extraordinary loss: As more fully discussed in Note x, the Company incurred an uninsured loss of Rs.3,00,000 caused by earthquake damage to a paper mill in India during the previous year.

Illustration IV

Summary of Required Disclosure

This illustration does not form part of the Accounting Standard. Its purpose is to summarise the disclosures required by paragraphs 38-59 for each of the three possible primary segment reporting formats.

Figures in parentheses refer to paragraph numbers of the relevant paragraphs in the text.

IndiaCode

PRIMARY FORMAT IS BUSINESS SEGMENTS	**PRIMARY FORMAT IS GEOGRAPHICAL SEGMENTS BY LOCATION OF ASSETS**	**PRIMARY FORMAT IS GEOGRAPHICAL SEGMENTS BY LOCATION OF CUSTOMERS**
Required Primary Disclosures	***Required Primary Disclosures***	***Required Primary Disclosures***
Revenue from external customers by business segment [40(a)]	Revenue from external customers by location of assets [40(a)]	Revenue from external customers by location of customers [40(a)]
Revenue from transactions with other segments by business segment [40(a)]	Revenue from transactions with other segments by location of assets [40(a)]	Revenue from transactions with other segments by location of customers [40(a)]
Segment result by business segment [40(b)]	Segment result by location of assets [40(b)]	Segment result by location of customers [40(b)]
Carrying amount of segment assets by business segment [40(c)]	Carrying amount of segment assets by location of assets [40(c)]	Carrying amount of segment assets by location of customers [40(c)]
Segment liabilities by business segment [40(d)]	Segment liabilities by location of assets [40(d)]	Segment liabilities by location of customers [40(d)]
Cost to acquire tangible and intangible fixed assets by business segment [40(e)]	Cost to acquire tangible and intangible fixed assets by location of assets [40(e)]	Cost to acquire tangible and intangible fixed assets by location of customers [40(e)]

Depreciation and amortisation expense by business segment [40(f)]	Depreciation and amortisation expense by location of assets[40(f)]	Depreciation and amortisation expense by location of customers[40(f)]
Non-cash expenses other than depreciation and amortisation by business segment [40(g)]	Non-cash expenses other than depreciation and amortisation by location of assets [40(g)]	Non-cash expenses other than depreciation and amortisation by location of customers [40(g)]
Reconciliation of revenue, result, assets, and liabilities by business segment [46]	Reconciliation of revenue, result, assets, and liabilities [46]	Reconciliation of revenue, result, assets, and liabilities [46]
PRIMARY FORMAT IS BUSINESS SEGMENTS	**PRIMARY FORMAT IS GEOGRAPHICAL SEGMENTS BY LOCATION OF ASSETS**	**PRIMARY FORMAT IS GEOGRAPHICAL SEGMENTS BY LOCATION OF CUSTOMERS**
Required Secondary Disclosures	***Required Secondary Disclosures***	***Required Secondary Disclosures***
Revenue from external customers by location of customers [48]	Revenue from external customers by business segment [49]	Revenue from external customers by business segment [49]
Carrying amount of segment assets by location of assets [48]	Carrying amount of segment assets by business segment [49]	Carrying amount of segment assets by business segment [49]
Cost to acquire tangible and intangible fixed assets by location of assets [48]	Cost to acquire tangible and intangible fixed assets by business segment [49]	Cost to acquire tangible and intangible fixed assets by business segment [49]
	Revenue from external customers by geographical customers if different from location of assets [50]	
		Carrying amount of segment assets by location of assets if different from location of customers [51]
		Cost to acquire tangible and intangible fixed assets by location of assets if different from location of customers [51]
Other Required Disclosures	***Other Required Disclosures***	***Other Required Disclosures***
Basis of pricing inter- segment transfers and any change therein [53]	Basis of pricing inter- segment transfers and any change therein [53]	Basis of pricing inter- segment transfers and any change therein [53]
Changes in segment accounting policies [54]	Changes in segment accounting policies [54]	Changes in segment accounting policies [54]
Types of products and services in each business segment [58]	Types of products and services in each business segment [58]	Types of products and services in each business segment [58]
Composition of each geographical segment [58]	Composition of each geographical segment [58]	Composition of each geographical segment [58]

Incode

Accounting Standard (AS) 18

Related Party Disclosures

*(This Accounting Standard includes paragraphs set in **bold italic** type and plain type, which have equal authority. Paragraphs in bold italic type indicate the main principles. This Accounting Standard should be read in the context of its objective and the General Instructions contained in part A of the Annexure to the Notification.)*

Objective

The objective of this Standard is to establish requirements for disclosure of:

(a) related party relationships; and

(b) transactions between a reporting enterprise and its related parties.

Scope

1. This Standard should be applied in reporting related party relationships and transactions between a reporting enterprise and its related parties. The requirements of this Standard apply to the financial statements of each reporting enterprise as also to consolidated financial statements presented by a holding company.

2. This Standard applies only to related party relationships described in paragraph 3.

3. This Standard deals only with related party relationships described in (a) to (e) below:

(a) enterprises that directly, or indirectly through one or more intermediaries, control, or are controlled by, or are under common control with, the reporting enterprise (this includes holding companies, subsidiaries and fellow subsidiaries);

(b) associates and joint ventures of the reporting enterprise and the investing party or venturer in respect of which the reporting enterprise is an associate or a joint venture;

(c) individuals owning, directly or indirectly, an interest in the voting power of the reporting enterprise that gives them control or significant influence over the enterprise, and relatives of any such individual;

(d) key management personnel and relatives of such personnel; and

(e) enterprises over which any person described in (c) or (d) is able to exercise significant influence. This includes enterprises owned by directors or major shareholders of the reporting enterprise and enterprises that have a member of key management in common with the reporting enterprise.

4. In the context of this Standard, the following are deemed not to be related parties:

(a) two companies simply because they have a director in common, notwithstanding paragraph 3(d) or (e) above (unless the director is able to affect the policies of both companies in their mutual dealings);

(b) a single customer, supplier, franchiser, distributor, or general agent with whom an enterprise transacts a significant volume of business merely by virtue of the resulting economic dependence; and

(c) the parties listed below, in the course of their normal dealings with an enterprise by virtue only of those dealings (although they may circumscribe the freedom of action of the enterprise or participate in its decision-making process):

(i) providers of finance;

(ii) trade unions;

(iii) public utilities;

(iv) government departments and government agencies including government sponsored bodies.

5. Related party disclosure requirements as laid down in this Standard do not apply in circumstances where providing such disclosures would conflict with the reporting enterprise's duties of confidentiality as specifically required in terms of a statute or by any regulator or similar competent authority.

6. In case a statute or a regulator or a similar competent authority governing an enterprise prohibit the enterprise to disclose certain information which is required to be disclosed as per this Standard, disclosure of such information is not warranted. For example, banks are obliged by law to maintain confidentiality in respect of their customers' transactions and this Standard would not override the obligation to preserve the confidentiality of customers' dealings.

7. No disclosure is required in consolidated financial statements in respect of intra-group transactions.

8. Disclosure of transactions between members of a group is unnecessary in consolidated financial statements because consolidated financial statements present information about the holding and its subsidiaries as a single reporting enterprise.

9. No disclosure is required in the financial statements of state-controlled enterprises as regards related party relationships with other state-controlled enterprises and transactions with such enterprises.

Definitions

10. For the purpose of this Standard, the following terms are used with the meanings specified:

10.1 Related party - parties are considered to be related if at any time during the reporting period one party has the ability to control the other party or exercise significant influence over the other party in making financial and/or operating decisions.

10.2 Related party transaction - a transfer of resources or obligations between related parties, regardless of whether or not a price is charged.

10.3 Control – (a) ownership, directly or indirectly, of more than one half of the voting power of an enterprise, or

(b) control of the composition of the board of directors in the case of a company or of the composition of the corresponding governing body in case of any other enterprise, or

(c) a substantial interest in voting power and the power to direct, by statute or agreement, the financial and/or operating policies of the enterprise.

10.4 Significant influence - participation in the financial and/or operating policy decisions of an enterprise, but not control of those policies.

10.5 An Associate - an enterprise in which an investing reporting party has significant influence and which is neither a subsidiary nor a joint venture of that party.

10.6 A Joint venture - a contractual arrangement whereby two or more parties undertake an economic activity which is subject to joint control.

10.7 Joint control - the contractually agreed sharing of power to govern the financial and operating policies of an economic activity so as to obtain benefits from it.

10.8 Key management personnel - those persons who have the authority and responsibility for planning, directing and controlling the activities of the reporting enterprise.

10.9 Relative – in relation to an individual, means the spouse, son, daughter, brother, sister, father and mother who may be expected to influence, or be influenced by, that individual in his/her dealings with the reporting enterprise.

10.10 Holding company - a company having one or more subsidiaries.

10.11 Subsidiary - a company:

(a) in which another company (the holding company) holds, either by itself and/or through one or more subsidiaries, more than one-half in nominal value of its equity share capital; or

(b) of which another company (the holding company) controls, either by itself and/or through one or more subsidiaries, the composition of its board of directors.

10.12 Fellow subsidiary - a company is considered to be a fellow subsidiary of another company if both are subsidiaries of the same holding company.

10.13 State-controlled enterprise - an enterprise which is under the control of the Central Government and/or any State Government(s).

11. For the purpose of this Standard, an enterprise is considered to control the composition of

(i) the board of directors of a company, if it has the power, without the consent or concurrence of any other person, to appoint or remove all or a majority of directors of that company. An enterprise is deemed to have the power to appoint a director if any of the following conditions is satisfied:

(a) a person cannot be appointed as director without the exercise in his favour by that enterprise of such a power as aforesaid; or

(b) a person's appointment as director follows necessarily from his appointment to a position held by him in that enterprise; or

(c) the director is nominated by that enterprise; in case that enterprise is a company, the director is nominated by that company/subsidiary thereof.

(ii) the governing body of an enterprise that is not a company, if it has the power, without the consent or the concurrence of any other person, to appoint or remove all or a majority of members of the governing body of that other enterprise. An enterprise is deemed to have the power to appoint a member if any of the following conditions is satisfied:

(a) a person cannot be appointed as member of the governing body without the exercise in his favour by

IndiaCode

that other enterprise of such a power as aforesaid; or

(b) a person's appointment as member of the governing body follows necessarily from his appointment to a position held by him in that other enterprise; or

(c) the member of the governing body is nominated by that other enterprise.

12. An enterprise is considered to have a substantial interest in another enterprise if that enterprise owns, directly or indirectly, 20 per cent or more interest in the voting power of the other enterprise. Similarly, an individual is considered to have a substantial interest in an enterprise, if that individual owns, directly or indirectly, 20 per cent or more interest in the voting power of the enterprise.

13. Significant influence may be exercised in several ways, for example, by representation on the board of directors, participation in the policy making process, material inter-company transactions, interchange of managerial personnel, or dependence on technical information. Significant influence may be gained by share ownership, statute or agreement. As regards share ownership, if an investing party holds, directly or indirectly through intermediaries, 20 per cent or more of the voting power of the enterprise, it is presumed that the investing party does have significant influence, unless it can be clearly demonstrated that this is not the case. Conversely, if the investing party holds, directly or indirectly through intermediaries, less than 20 per cent of the voting power of the enterprise, it is presumed that the investing party does not have significant influence, unless such influence can be clearly demonstrated. A substantial or majority ownership by another investing party does not necessarily preclude an investing party from having significant influence.

Explanation

An intermediary means a subsidiary as defined in AS 21, *Consolidated Financial Statements.*

14. Key management personnel are those persons who have the authority and responsibility for planning, directing and controlling the activities of the reporting enterprise. For example, in the case of a company, the managing director(s), whole time director(s), manager and any person in accordance with whose directions or instructions the board of directors of the company is accustomed to act, are usually considered key management personnel.

Explanation

A non-executive director of a company is not considered as a key management person under this Standard by virtue of merely his being a director unless he has the authority and responsibility for planning, directing and controlling the activities of the reporting enterprise. The requirements of this Standard are not applied in respect of a non-executive director even enterprise, unless he falls in any of the categories in paragraph 3 of this Standard.

The Related Party Issue

15. Related party relationships are a normal feature of commerce and business. For example, enterprises frequently carry on separate parts of their activities through subsidiaries or associates and acquire interests in other enterprises - for investment purposes or for trading reasons - that are of sufficient proportions for the investing enterprise to be able to control or exercise significant influence on the financial and/or operating decisions of its investee.

16. Without related party disclosures, there is a general presumption that transactions reflected in financial statements are consummated on an arm's-length basis between independent parties. However, that presumption may not be valid when related party relationships exist because related parties may enter into transactions which unrelated parties would not enter into. Also, transactions between related parties may not be effected at the same terms and conditions as between unrelated parties. Sometimes, no price is charged in related party transactions, for example, free provision of management services and the extension of free credit on a debt. In view of the aforesaid, the resulting accounting measures may not represent what they usually would be expected to represent. Thus, a related party relationship could have an effect on the financial position and operating results of the reporting enterprise.

17. The operating results and financial position of an enterprise may be affected by a related party relationship even if related party transactions do not occur. The mere existence of the relationship may be sufficient to affect the transactions of the reporting enterprise with other parties. For example, a subsidiary may terminate relations with a trading partner on acquisition by the holding company of a fellow subsidiary engaged in the same trade as the former partner. Alternatively, one party may refrain from acting because of the control or significant influence of another - for example, a subsidiary may be instructed by its holding company not to engage in research and development.

18. Because there is an inherent difficulty for management to determine the effect of influences which do not lead to transactions, disclosure of such effects is not required by this Standard.

19. Sometimes, transactions would not have taken place if the related party relationship had not existed. For example, a company that sold a large proportion of its production to its holding company at cost might not have found an alternative customer if the holding company had not purchased the goods.

Disclosure

20. The statutes governing an enterprise often require disclosure in financial statements of transactions with certain categories of related parties. In particular, attention is focussed on transactions with the directors or similar key management personnel of an enterprise, especially their remuneration and borrowings, because of the fiduciary nature of their relationship with the enterprise.

21. Name of the related party and nature of the related party relationship where control exists should be disclosed irrespective of whether or not there have been transactions between the related parties.

22. Where the reporting enterprise controls, or is controlled by, another party, this information is relevant to the users of financial statements irrespective of whether or not transactions have taken place with that party. This is because the existence of control relationship may prevent the reporting enterprise from being independent in making its financial and/or operating decisions. The disclosure of the name of the related party and the nature of the related party relationship where control exists may sometimes be at least as relevant in appraising an enterprise's prospects as are the operating results and the financial position presented in its financial statements. Such a related party may establish the enterprise's credit standing, determine the source and price of its raw materials, and determine to whom and at what price the product is sold.

23. If there have been transactions between related parties, during the existence of a related party relationship, the reporting enterprise should disclose the following:

(i) the name of the transacting related party;

(ii) a description of the relationship between the parties;

(iii) a description of the nature of transactions;

(iv) volume of the transactions either as an amount or as an appropriate proportion;

(v) any other elements of the related party transactions necessary for an understanding of the financial statements;

(vi) the amounts or appropriate proportions of outstanding items pertaining to related parties at the balance sheet date and provisions for doubtful debts due from such parties at that date; and

(vii)amounts written off or written back in the period in respect of debts due from or to related parties.

24. The following are examples of the related party transactions in respect of which disclosures may be made by a reporting enterprise:

(a) purchases or sales of goods (finished or unfinished);

(b) purchases or sales of fixed assets;

(c) rendering or receiving of services;

(d) agency arrangements;

(e) leasing or hire purchase arrangements;

(f) transfer of research and development;

(g) licence agreements;

(h) finance (including loans and equity contributions in cash or in kind);

(i) guarantees and collaterals; and

(j) management contracts including for deputation of employees.

25. Paragraph 23 (v) requires disclosure of 'any other elements of the related party transactions necessary for an understanding of the financial statements'. An example of such a disclosure would be an indication that the transfer of a major asset had taken place at an amount materially different from that obtainable on normal commercial terms.

26. Items of a similar nature may be disclosed in aggregate by type of related party except when seperate disclosure is necessary for an understanding of the effects of related party transactions on the financial statements of the reporting enterprise.

Explanation:

Type of related party means each related party relationship described in paragraph 3 above.

27. Disclosure of details of particular transactions with individual related parties would frequently be too voluminous to be easily understood. Accordingly, items of a similar nature may be disclosed in aggregate by type of related party. However, this is not done in such a way as to obscure the importance of significant transactions. Hence, purchases or sales of goods are not aggregated with purchases or sales of fixed assets. Nor a material related

party transaction with an individual party is clubbed in an aggregated disclosure.

Explanation:

(a) Materiality primarily depends on the facts and circumstances of each case. In deciding whether an item or an aggregate of items is material, the nature and the size of the item(s) are evaluated together. Depending on the circumstances, either the nature or the size of the item could be the determining factor. As regards size, for the purpose of applying the test of materiality as per this paragraph, ordinarily a related party transaction, the amount of which is in excess of 10% of the total related party transactions of the same type (such as purchase of goods), is considered material, unless on the basis of facts and circumstances of the case it can be concluded that even a transaction of less than 10% is material. As regards nature, ordinarily the related party transactions which are not entered into in the normal course of the business of the reporting enterprise are considered material subject to the facts and circumstances of the case.

(b) The manner of disclosure required by paragraph 23, read with paragraph 26, is illustrated in the Illustration attached to the Standard.

Illustration

Note: This illustration does not form part of the Accounting Standard. Its purpose is to assist in clarifying the meaning of the Accounting Standard.

The manner or disclosures required by paragraphs 23 and 26 of AS 18 is illustrated as below. It may be noted that the format given below is merely illustrative in nature and is not exhaustive.

IndiaCode

	Holding Company	Subsi-diaries	Fellow Subsi-diaries	Associates	Key Manage-ment Personnel	Relatives of Key Manage-ment Personnel	Total
Purchases of goods							
Sale of goods							
Purchase of fixed assets							
Sale of fixed assets							
Rendering of services							
Receiving of services							
Agency arrangements							
Leasing or hire purchase arrangements							
Transfer of research and development							
Licence agreements Finance (including loans and equity contributions in cash or in kind)							
Guarantees and collaterals							
Management contracts including for deputation of employees							

Note:

Name of related parties and description of relationship:

1. Holding Company A Ltd.

2.	Subsidiaries	B Ltd. and C (P) Ltd.
3.	Fellow Subsidiaries	D Ltd. and Q Ltd.
4.	Associates	X Ltd., Y Ltd. and Z (P) Ltd.
5.	Key Management Personnel	Mr. Y and Mr. Z
6.	Relatives of Key Management Personnel	Mrs. Y (wife of Mr. Y), Mr. F (father of Mr. Z)

Accounting Standard (AS) 19

Leases[19]

*(This Accounting Standard includes paragraphs set in **bold italic** type and plain type, which have equal authority. Paragraphs in bold italic type indicate the main principles. This Accounting Standard should be read in the context of its objective and the General Instructions contained in part A of the Annexure to the Notification.)*

Objective

The objective of this Standard is to prescribe, for lessees and lessors, the appropriate accounting policies and disclosures in relation to finance leases and operating leases.

Scope

1. This Standard should be applied in accounting for all leases other than:

(a) lease agreements to explore for or use natural resources, such as oil, gas, timber, metals and other mineral rights; and

(b) licensing agreements for items such as motion picture films, video recordings, plays, manuscripts, patents and copyrights; and

(c) lease agreements to use lands.

2. This Standard applies to agreements that transfer the right to use assets even though substantial services by the lessor may be called for in connection with the operation or maintenance of such assets. On the other hand, this Standard does not apply to agreements that are contracts for services that do not transfer the right to use assets from one contracting party to the other.

Definitions

3. The following terms are used in this Standard with the meanings specified:

3.1 A lease is an agreement whereby the lessor conveys to the lessee in return for a payment or series of payments the right to use an asset for an agreed period of time.

3.2 A finance lease is a lease that transfers substantially all the risks and rewards incident to ownership of an asset.

3.3 An operating lease is a lease other than a finance lease.

3.4 A non-cancellable lease is a lease that is cancellable only:

(a) upon the occurrence of some remote contingency; or

(b) with the permission of the lessor; or

(c) if the lessee enters into a new lease for the same or an equivalent asset with the same lessor; or

(d) upon payment by the lessee of an additional amount such that, at inception, continuation of the lease is reasonably certain.

3.5 The inception of the lease is the earlier of the date of the lease agreement and the date of a commitment by the parties to the principal provisions of the lease.

3.6 The lease term is the non-cancellable period for which the lessee has agreed to take on lease the asset together with any further periods for which the lessee has the option to continue the lease of the asset, with or

[19] In respect of assets leased prior to the effective date of the notification prescribing Accounting Standard (AS) 19 as part of Companies (Accounting Standards) Rules, 2006, the applicability of this Standard would be determined on the basis of the Accounting Standard (AS) 19, issued by the ICAI in 2001.

IndiaCode

without further payment, which option at the inception of the lease it is reasonably certain that the lessee will exercise.

3.7 Minimum lease payments are the payments over the lease term that the lessee is, or can be required, to make excluding contingent rent, costs for services and taxes to be paid by and reimbursed to the lessor, together with:

(a) in the case of the lessee, any residual value guaranteed by or on behalf of the lessee; or

(b) in the case of the lessor, any residual value guaranteed to the lessor:

(i) by or on behalf of the lessee; or

(ii) by an independent third party financially capable of meeting this guarantee.

However, if the lessee has an option to purchase the asset at a price which is expected to be sufficiently lower than the fair value at the date the option becomes exercisable that, at the inception of the lease, is reasonably certain to be exercised, the minimum lease payments comprise minimum payments payable over the lease term and the payment required to exercise this purchase option.

3.8 Fair value is the amount for which an asset could be exchanged or a liability settled between knowledgeable, willing parties in an arm's length transaction.

3.9 Economic life is either:

(a) the period over which an asset is expected to be economically usable by one or more users; or

(b) the number of production or similar units expected to be obtained from the asset by one or more users.

3.10 Useful life of a leased asset is either:

(a) the period over which the leased asset is expected to be used by the lessee; or

(b) the number of production or similar units expected to be obtained from the use of the asset by the lessee.

3.11 Residual value of a leased asset is the estimated fair value of the asset at the end of the lease term.

3.12 Guaranteed residual value is:

(a) in the case of the lessee, that part of the residual value which is guaranteed by the lessee or by a party on behalf of the lessee (the amount of the guarantee being the maximum amount that could, in any event, become payable); and

(b) in the case of the lessor, that part of the residual value which is guaranteed by or on behalf of the lessee, or by an independent third party who is financially capable of discharging the obligations under the guarantee.

3.13 Unguaranteed residual value of a leased asset is the amount by which the residual value of the asset exceeds its guaranteed residual value.

3.14 Gross investment in the lease is the aggregate of the minimum lease payments under a finance lease from the standpoint of the lessor and any unguaranteed residual value accruing to the lessor.

3.15 Unearned finance income is the difference between:

(a) the gross investment in the lease; and

(b) the present value of

(i) the minimum lease payments under a finance lease from the standpoint of the lessor; and

(ii) any unguaranteed residual value accruing to the lessor, at the interest rate implicit in the lease.

3.16 Net investment in the lease is the gross investment in the lease less unearned finance income.

3.17 The interest rate implicit in the lease is the discount rate that, at the inception of the lease, causes the aggregate present value of

(a) the minimum lease payments under a finance lease from the standpoint of the lessor; and

(b) any unguaranteed residual value accruing to the lessor, to be equal to the fair value of the leased asset.

3.18 The lessee's incremental borrowing rate of interest is the rate of interest the lessee would have to pay on a similar lease or, if that is not determinable, the rate that, at the inception of the lease, the lessee would incur to borrow over a similar term, and with a similar security, the funds necessary to purchase the asset.

IndiaCode

3.19 Contingent rent is that portion of the lease payments that is not fixed in amount but is based on a factor other than just the passage of time (e.g., percentage of sales, amount of usage, price indices, market rates of interest).

4. The definition of a lease includes agreements for the hire of an asset which contain a provision giving the hirer an option to acquire title to the asset upon the fulfillment of agreed conditions. These agreements are commonly known as hire purchase agreements. Hire purchase agreements include agreements under which the property in the asset is to pass to the hirer on the payment of the last instalment and the hirer has a right to terminate the agreement at any time before the property so passes.

Classification of Leases

5. The classification of leases adopted in this Standard is based on the extent to which risks and rewards incident to ownership of a leased asset lie with the lessor or the lessee. Risks include the possibilities of losses from idle capacity or technological obsolescence and of variations in return due to changing economic conditions. Rewards may be represented by the expectation of profitable operation over the economic life of the asset and of gain from appreciation in value or realisation of residual value.

6. A lease is classified as a finance lease if it transfers substantially all the risks and rewards incident to ownership. Title may or may not eventually be transferred. A lease is classified as an operating lease if it does not transfer substantially all the risks and rewards incident to ownership.

7. Since the transaction between a lessor and a lessee is based on a lease agreement common to both parties, it is appropriate to use consistent definitions. The application of these definitions to the differing circumstances of the two parties may sometimes result in the same lease being classified differently by the lessor and the lessee.

8. Whether a lease is a finance lease or an operating lease depends on the substance of the transaction rather than its form. Examples of situations which would normally lead to a lease being classified as a finance lease are:

(a) the lease transfers ownership of the asset to the lessee by the end of the lease term;

(b) the lessee has the option to purchase the asset at a price which is expected to be sufficiently lower than the fair value at the date the option becomes exercisable such that, at the inception of the lease, it is reasonably certain that the option will be exercised;

(c) the lease term is for the major part of the economic life of the asset even if title is not transferred;

(d) at the inception of the lease the present value of the minimum lease payments amounts to at least substantially all of the fair value of the leased asset; and

(e) the leased asset is of a specialised nature such that only the lessee can use it without major modifications being made.

9. Indicators of situations which individually or in combination could also lead to a lease being classified as a finance lease are:

(a) if the lessee can cancel the lease, the lessor's losses associated with the cancellation are borne by the lessee;

(b) gains or losses from the fluctuation in the fair value of the residual fall to the lessee (for example in the form of a rent rebate equalling most of the sales proceeds at the end of the lease); and

(c) the lessee can continue the lease for a secondary period at a rent which is substantially lower than market rent.

10. Lease classification is made at the inception of the lease. If at any time the lessee and the lessor agree to change the provisions of the lease, other than by renewing the lease, in a manner that would have resulted in a different classification of the lease under the criteria in paragraphs 5 to 9 had the changed terms been in effect at the inception of the lease, the revised agreement is considered as a new agreement over its revised term. Changes in estimates (for example, changes in estimates of the economic life or of the residual value of the leased asset) or changes in circumstances (for example, default by the lessee), however, do not give rise to a new classification of a lease for accounting purposes.

Leases in the Financial Statements of Lessees

Finance Leases

11. At the inception of a finance lease, the lessee should recognise the lease as an asset and a liability. Such recognition should be at an amount equal to the fair value of the leased asset at the inception of the lease. However, if the fair value of the leased asset exceeds the present value of the minimum lease payments from the standpoint of the lessee, the amount recorded as an asset and a liability should be the present value of the minimum lease payments from the standpoint of the lessee. In calculating the present value of the minimum lease payments the discount rate is the interest rate implicit in the lease, if this is practicable to determine; if not, the

lessee's incremental borrowing rate should be used.

Example

(a) An enterprise (the lessee) acquires a machinery on lease from a leasing company (the lessor) on January 1, 20X0. The lease term covers the entire economic life of the machinery, i.e., 3 years. The fair value of the machinery on January 1, 20X0 is Rs.2,35,500. The lease agreement requires the lessee to pay an amount of Rs.1,00,000 per year beginning December 31, 20X0. The lessee has guaranteed a residual value of Rs.17,000 on December 31, 20X2 to the lessor. The lessor, however, estimates that the machinery would have a salvage value of only Rs.3,500 on December 31, 20X2.

The interest rate implicit in the lease is 16 per cent (approx.). This is calculated using the following formula:

$$\text{Fair value} = \frac{ALR}{(1+r)^1} + \frac{ALR}{(1+r)^2} + \ldots + \frac{ALR}{(1+r)^n} + \frac{RV}{(1+r)^n}$$

The lessee would record the machinery as an asset at Rs. 2,35,500 with a corresponding liability representing the present value of lease payments over the lease term (including the guaranteed residual value).

(b) In the above example, suppose the lessor estimates that the machinery would have a salvage value of Rs. 17,000 on December 31, 20X2. The lessee, however, guarantees a residual value of Rs. 5,000 only.

The interest rate implicit in the lease in this case would remain unchanged at 16% (approx.). The present value of the minimum lease payments from the standpoint of the lessee, using this interest rate implicit in the lease, would be Rs.2,27,805. As this amount is lower than the fair value of the leased asset (Rs.2,35,500), the lessee would recognise the asset and the liability arising from the lease at Rs. 2,27,805.

In case the interest rate implicit in the lease is not known to the lessee, the present value of the minimum lease payments from the standpoint of the lessee would be computed using the lessee's incremental borrowing rate.

IndiaCode

12. Transactions and other events are accounted for and presented in accordance with their substance and financial reality and not merely with their legal form. While the legal form of a lease agreement is that the lessee may acquire no legal title to the leased asset, in the case of finance leases the substance and financial reality are that the lessee acquires the economic benefits of the use of the leased asset for the major part of its economic life in return for entering into an obligation to pay for that right an amount approximating to the fair value of the asset and the related finance charge.

13. If such lease transactions are not reflected in the lessee's balance sheet, the economic resources and the level of obligations of an enterprise are understated thereby distorting financial ratios. It is therefore appropriate that a finance lease be recognised in the lessee's balance sheet both as an asset and as an obligation to pay future lease payments. At the inception of the lease, the asset and the liability for the future lease payments are recognised in the balance sheet at the same amounts.

14. It is not appropriate to present the liability for a leased asset as a deduction from the leased asset in the financial statements. The liability for a leased asset should be presented separately in the balance sheet as a current liability or a long-term liability as the case may be.

15. Initial direct costs are often incurred in connection with specific leasing activities, as in negotiating and securing leasing arrangements. The costs identified as directly attributable to activities performed by the lessee for a finance lease are included as part of the amount recognised as an asset under the lease.

16. Lease payments should be apportioned between the finance charge and the reduction of the outstanding liability. The finance charge should be allocated to periods during the lease term so as to produce a constant periodic rate of interest on the remaining balance of the liability for each period.

Example

In the example (a) illustrating paragraph 11, the lease payments would be apportioned by the lessee between the finance charge and the reduction of the outstanding liability as follows:

Year		*Finance charge (Rs.)*	*Payment (Rs.)*	*Reduction in outstanding liability (Rs.)*	*Outstanding liability (Rs.)*
Year 1	(January 1)				2,35,500
	(December 31)	37,680	1,00,000	62,320	1,73,180
Year 2	(December 31)	27,709	1,00,000	72,291	1,00,889
Year 3	(December 31)	16,142	1,00,000	83,858	17,031*

* The difference between this figure and guaranteed residual value (Rs.17,000) is due to approximation in computing the interest rate implicit in the lease.

17. In practice, in allocating the finance charge to periods during the lease term, some form of approximation may be used to simplify the calculation.

18. A finance lease gives rise to a depreciation expense for the asset as well as a finance expense for each accounting period. The depreciation policy for a leased asset should be consistent with that for depreciable assets which are owned, and the depreciation recognised should be calculated on the basis set out in Accounting Standard (AS) 10, Property, Plant and Equipment. If there is no reasonable certainty that the lessee will obtain ownership by the end of the lease term, the asset should be fully depreciated over the lease term or its useful life, whichever is shorter.

19. The depreciable amount of a leased asset is allocated to each accounting period during the period of expected use on a systematic basis consistent with the depreciation policy the lessee adopts for depreciable assets that are owned. If there is reasonable certainty that the lessee will obtain ownership by the end of the lease term, the period of expected use is the useful life of the asset; otherwise the asset is depreciated over the lease term or its useful life, whichever is shorter.

20. The sum of the depreciation expense for the asset and the finance expense for the period is rarely the same as the lease payments payable for the period, and it is, therefore, inappropriate simply to recognise the lease payments payable as an expense in the statement of profit and loss. Accordingly, the asset and the related liability are unlikely to be equal in amount after the inception of the lease.

21. To determine whether a leased asset has become impaired, an enterprise applies the Accounting Standard (AS) 28, *Impairment of Assets*, that sets out the requirements as to how an enterprise should perform the review of the carrying amount of an asset, how it should determine the recoverable amount of an asset and when it should recognise, or reverse, an impairment loss.

22. The lessee should, in addition to the requirements of AS 10, Property, Plant and Equipment, and the governing statute, make the following disclosures for finance leases:

(a) assets acquired under finance lease as segregated from the assets owned;

(b) for each class of assets, the net carrying amount at the balance sheet date;

(c) a reconciliation between the total of minimum lease payments at the balance sheet date and their present value. In addition, an enterprise should disclose the total of minimum lease payments at the balance sheet date, and their present value, for each of the following periods:

(i) not later than one year;

(ii) later than one year and not later than five years;

(iii) later than five years;

(d) contingent rents recognised as expense in the statement of profit and loss for the period;

(e) the total of future minimum sublease payments expected to be received under non-cancellable subleases at the balance sheet date; and

(f) a general description of the lessee's significant leasing arrangements including, but not limited to, the following:

(i) the basis on which contingent rent payments are determined;

(ii) the existence and terms of renewal or purchase options and escalation clauses;

(iii) restrictions imposed by lease arrangements, such as those and concerning dividends, additional debt, and further leasing.

Provided that a Small and Medium Sized Company, as defined in the Notification, may not comply with sub-paragraphs (c), (e) and (f).

Operating Leases

23. Lease payments under an operating lease should be recognised as an expense in the statement of profit and loss on a straight line basis over the lease term unless another systematic basis is more representative of the time pattern of the user's benefit.

24. For operating leases, lease payments (excluding costs for services such as insurance and maintenance) are recognised as an expense in the statement of profit and loss on a straight line basis unless another systematic basis is more representative of the time pattern of the user's benefit, even if the payments are not on that basis.

25. The lessee should make the following disclosures for operating leases:

(a) the total of future minimum lease payments under non-cancellable operating leases for each of the following periods:

(i) not later than one year;

(ii) later than one year and not later than five years;

(iii) later than five years;

(b) the total of future minimum sublease payments expected to be received under non-cancellable subleases at the balance sheet date;

(c) lease payments recognised in the statement of profit and loss for the period, with separate amounts for minimum lease payments and contingent rents;

(d) sub-lease payments received (or receivable) recognised in the statement of profit and loss for the period;

(e) a general description of the lessee's significant leasing arrangements including, but not limited to, the following:

(i) the basis on which contingent rent payments are determined;

(ii) the existence and terms of renewal or purchase options and escalation clauses; and

(iii) restrictions imposed by lease arrangements, such as those concerning dividends, additional debt, and further leasing.

Provided that a Small and Medium Sized Company, as defined in the Notification, may not comply with sub-paragraphs (a), (b) and (e).

Leases in the Financial Statements of Lessors

Finance Leases

26. The lessor should recognise assets given under a finance lease in its balance sheet as a receivable at an amount equal to the net investment in the lease.

27. Under a finance lease substantially all the risks and rewards incident to legal ownership are transferred by the lessor, and thus the lease payment receivable is treated by the lessor as repayment of principal, i.e., net investment in the lease, and finance income to reimburse and reward the lessor for its investment and services.

28. The recognition of finance income should be based on a pattern reflecting a constant periodic rate of return on the net investment of the lessor outstanding in respect of the finance lease.

29. A lessor aims to allocate finance income over the lease term on a systematic and rational basis. This income allocation is based on a pattern reflecting a constant periodic return on the net investment of the lessor outstanding in respect of the finance lease. Lease payments relating to the accounting period, excluding costs for services, are reduced from both the principal and the unearned finance income.

30. Estimated unguaranteed residual values used in computing the lessor's gross investment in a lease are reviewed

IndiaCode

regularly. If there has been a reduction in the estimated unguaranteed residual value, the income allocation over the remaining lease term is revised and any reduction in respect of amounts already accrued is recognised immediately. An upward adjustment of the estimated residual value is not made.

31. Initial direct costs, such as commissions and legal fees, are often incurred by lessors in negotiating and arranging a lease. For finance leases, these initial direct costs are incurred to produce finance income and are either recognised immediately in the statement of profit and loss or allocated against the finance income over the lease term.

32. The manufacturer or dealer lessor should recognise the transaction of sale in the statement of profit and loss for the period, in accordance with the policy followed by the enterprise for outright sales. If artificially low rates of interest are quoted, profit on sale should be restricted to that which would apply if a commercial rate of interest were charged. Initial direct costs should be recognised as an expense in the statement of profit and loss at the inception of the lease.

33. Manufacturers or dealers may offer to customers the choice of either buying or leasing an asset. A finance lease of an asset by a manufacturer or dealer lessor gives rise to two types of income:

(a) the profit or loss equivalent to the profit or loss resulting from an outright sale of the asset being leased, at normal selling prices, reflecting any applicable volume or trade discounts; and

(b) the finance income over the lease term.

34. The sales revenue recorded at the commencement of a finance lease term by a manufacturer or dealer lessor is the fair value of the asset. However, if the present value of the minimum lease payments accruing to the lessor computed at a commercial rate of interest is lower than the fair value, the amount recorded as sales revenue is the present value so computed. The cost of sale recognised at the commencement of the lease term is the cost, or carrying amount if different, of the leased asset less the present value of the unguaranteed residual value. The difference between the sales revenue and the cost of sale is the selling profit, which is recognised in accordance with the policy followed by the enterprise for sales.

35. Manufacturer or dealer lessors sometimes quote artificially low rates of interest in order to attract customers. The use of such a rate would result in an excessive portion of the total income from the transaction being recognised at the time of sale. If artificially low rates of interest are quoted, selling profit would be restricted to that which would apply if a commercial rate of interest were charged.

36. Initial direct costs are recognised as an expense at the commencement of the lease term because they are mainly related to earning the manufacturer's or dealer's selling profit.

37. The lessor should make the following disclosures for finance leases:

(a) a reconciliation between the total gross investment in the lease at the balance sheet date, and the present value of minimum lease payments receivable at the balance sheet date. In addition, an enterprise should disclose the total gross investment in the lease and the present value of minimum lease payments receivable at the balance sheet date, for each of the following periods:

(i) not later than one year;

(ii) later than one year and not later than five years;

(iii) later than five years;

(b) unearned finance income;

(c) the unguaranteed residual values accruing to the benefit of the lessor;

(d) the accumulated provision for uncollectible minimum lease payments receivable;

(e) contingent rents recognised in the statement of profit and loss for the period;

(f) a general description of the significant leasing arrangements of the lessor; and

(g) accounting policy adopted in respect of initial direct costs.

Provided that a Small and Medium Sized Company, as defined in the Notification, may not comply with sub-paragraphs (a) and (f).

38. As an indicator of growth it is often useful to also disclose the gross investment less unearned income in new business added during the accounting period, after deducting the relevant amounts for cancelled leases.

Operating Leases

39. The lessor should present an asset given under operating lease in its balance sheet under fixed assets.

40. Lease income from operating leases should be recognised in the statement of profit and loss on a straight line basis over the lease term, unless another systematic basis is more representative of the time pattern in which benefit derived from the use of the leased asset is diminished.

41. Costs, including depreciation, incurred in earning the lease income are recognised as an expense. Lease income (excluding receipts for services provided such as insurance and maintenance) is recognised in the statement of profit and loss on a straight line basis over the lease term even if the receipts are not on such a basis, unless another systematic basis is more representative of the time pattern in which benefit derived from the use of the leased asset is diminished.

42. Initial direct costs incurred specifically to earn revenues from an operating lease are either deferred and allocated to income over the lease term in proportion to the recognition of rent income, or are recognised as an expense in the statement of profit and loss in the period in which they are incurred.

43. The depreciation of leased assets should be on a basis consistent with the normal depreciation policy of the lessor for similar assets, and the depreciation charge should be calculated on the basis set out in AS 10, Property, Plant and Equipment.

44. To determine whether a leased asset has become impaired, an enterprise applies AS 28, *Impairment of Assets,* that sets out the requirements for how an enterprise should perform the review of the carrying amount of an asset, how it should determine the recoverable amount of an asset and when it should recognise, or reverse, an impairment loss.

45. A manufacturer or dealer lessor does not recognise any selling profit on entering into an operating lease because it is not the equivalent of a sale.

46. The lessor should, in addition to the requirements of AS 10, Property, Plant and Equipment, and the governing statute, make the following disclosures for operating leases:

(a) for each class of assets, the gross carrying amount, the accumulated depreciation and accumulated impairment losses at the balance sheet date; and

(i) the depreciation recognised in the statement of profit and loss for the period;

(ii) impairment losses recognised in the statement of profit and loss for the period;

(iii) impairment losses reversed in the statement of profit and loss for the period;

(b) the future minimum lease payments under non-cancellable operating leases in the aggregate and for each of the following periods:

(i) not later than one year;

(ii) later than one year and not later than five years; (iii) later than five years;

(c) total contingent rents recognised as income in the statement of profit and loss for the period;

(d) a general description of the lessor 's significant leasing arrangements; and

(e) accounting policy adopted in respect of initial direct costs.

Provided that a Small and Medium Sized Company, as defined in the Notification, may not comply with sub-paragraphs (b) and (d).

Sale and Leaseback Transactions

47. A sale and leaseback transaction involves the sale of an asset by the vendor and the leasing of the same asset back to the vendor. The lease payments and the sale price are usually interdependent as they are negotiated as a package. The accounting treatment of a sale and leaseback transaction depends upon the type of lease involved.

48. If a sale and leaseback transaction results in a finance lease, any excess or deficiency of sales proceeds over the carrying amount should not be immediately recognised as income or loss in the financial statements of a seller-lessee. Instead, it should be deferred and amortised over the lease term in proportion to the depreciation of the leased asset.

49. If the leaseback is a finance lease, it is not appropriate to regard an excess of sales proceeds over the carrying amount as income. Such excess is deferred and amortised over the lease term in proportion to the depreciation of the leased asset. Similarly, it is not appropriate to regard a deficiency as loss. Such deficiency is deferred and amortised over the lease term.

50. If a sale and leaseback transaction results in an operating lease, and it is clear that the transaction is established at fair value, any profit or loss should be recognised immediately. If the sale price is below fair value, any profit or loss should be recognised immediately except that, if the loss is compensated by future lease payments at below

India Code

market price, it should be deferred and amortised in proportion to the lease payments over the period for which the asset is expected to be used. If the sale price is above fair value, the excess over fair value should be deferred and amortised over the period for which the asset is expected to be used.

51. If the leaseback is an operating lease, and the lease payments and the sale price are established at fair value, there has in effect been a normal sale transaction and any profit or loss is recognised immediately.

52. For operating leases, if the fair value at the time of a sale and leaseback transaction is less than the carrying amount of the asset, a loss equal to the amount of the difference between the carrying amount and fair value should be recognised immediately.

53. For finance leases, no such adjustment is necessary unless there has been an impairment in value, in which case the carrying amount is reduced to recoverable amount in accordance with the Accounting Standard dealing with impairment of assets.

54. Disclosure requirements for lessees and lessors apply equally to sale and leaseback transactions. The required description of the significant leasing arrangements leads to disclosure of unique or unusual provisions of the agreement or terms of the sale and leaseback transactions.

55. Sale and leaseback transactions may meet the separate disclosure criteria set out in paragraph 12 of Accounting Standard (AS) 5, *Net Profit or Loss for the Period, Prior Period Items and Changes in Accounting Policies.*

Illustration

Sale and Leaseback Transactions that Result in Operating Leases

The illustration does not form part of the accounting standard. Its purpose is to illustrate the application of the accounting standard.

A sale and leaseback transaction that results in an operating lease may give rise to profit or a loss, the determination and treatment of which depends on the leased asset's carrying amount, fair value and selling price. The following table shows the requirements of the accounting standard in various circumstances.

Sale price established at fair value (paragraph 50)	**Carrying amount equal to fair value**	**Carrying amount less than fair value**	**Carrying amount above fair value**
Profit	No profit	Recognise profit immediately	Not applicable
Loss	No loss	Not applicable	Recognise loss immediately
Sale price below fair value (paragraph 50)			
Profit	No profit	Recognise profit immediately	No profit (note 1)
Loss not compensated by future lease payments at below market price	Recognise loss immediately	Recognise loss immediately	(note 1)
Loss compensated by future lease payments at below market price	Defer and amortise loss	Defer and amortise loss	(note 1)
Sale price above fair value (paragraph 50)			

Profit	Defer and amortise profit	Defer and amortise profit	Defer and amortise profit (note 2)
Loss	No loss	No loss	(note 1)

Note 1. These parts of the table represent circumstances that would have been dealt with under paragraph 52 of the Standard. Paragraph 52 requires the carrying amount of an asset to be written down to fair value where it is subject to a sale and leaseback.

Note 2. The profit would be the difference between fair value and sale price as the carrying amount would have been written down to fair value in accordance with paragraph 52.

Accounting Standard (AS) 20

Earnings Per Share

*(This Accounting Standard includes paragraphs set in **bold italic** type and plain type, which have equal authority. Paragraphs in bold italic type indicate the main principles. This Accounting Standard should be read in the context of its objective and the General Instructions contained in part A of the Annexure to the Notification.)*

This Accounting Standard is mandatory for all companies. However, disclosure of diluted earnings per share (both including and excluding extra- ordinary items) is not mandatory for Small and Medium Sized Companies, as defined in the Notification. Such companies are however encouraged to make these disclosures.

Objective

The objective of this Standard is to prescribe principles for the determination and presentation of earnings per share which will improve comparison of performance among different enterprises for the same period and among different accounting periods for the same enterprise. The focus of this Standard is on the denominator of the earnings per share calculation. Even though earnings per share data has limitations because of different accounting policies used for determining 'earnings', a consistently determined denominator enhances the quality of financial reporting.

Scope

1. ***This Standard should be applied by all Companies. However, a Small and Medium Sized Company, as defined in the Notification, may not disclose diluted earnings per share (both including and excluding extraordinary items).***

2. In consolidated financial statements, the information required by this Standardshould be presented on the basis of consolidated information.[20]

3. In the case of a parent (holding enterprise), users of financial statements are usually concerned with, and need to be informed about, the results of operations of both the enterprise itself as well as of the group as a whole. Accordingly, in the case of such enterprises, this Standard requires the presentation of earnings per share information on the basis of consolidated financial statements as well as individual financial statements of the parent. In consolidated financial statements, such information is presented on the basis of consolidated information.

Definitions

4. For the purpose of this Standard, the following terms are used with the meanings specified:

4.1 An equity share is a share other than a preference share.

4.2 A preference share is a share carrying preferential rights to dividends and repayment of capital.

4.3 A financial instrument is any contract that gives rise to both a financial asset of one enterprise and a financial liability or equity shares of another enterprise.

4.4 A potential equity share is a financial instrument or other contract that entitles, or may entitle, its holder to equity shares.

4.5 Share warrants or options are financial instruments that give the holder the right to acquire equity shares.

4.6 Fair value is the amount for which an asset could be exchanged, or a liability settled, between knowledgeable, willing parties in an arm's length transaction.

[20] Accounting Standard (AS) 21, *Consolidated Financial Statements*, specifies the requirements relating to consolidated financial statements.

5. Equity shares participate in the net profit for the period only after preference shares. An enterprise may have more than one class of equity shares. Equity shares of the same class have the same rights to receive dividends.

6. A financial instrument is any contract that gives rise to both a financial asset of one enterprise and a financial liability or equity shares of another enterprise. For this purpose, a financial asset is any asset that is

(a) cash;

(b) a contractual right to receive cash or another financial asset from another enterprise;

(c) a contractual right to exchange financial instruments with another enterprise under conditions that are potentially favourable; or

(d) an equity share of another enterprise.

A financial liability is any liability that is a contractual obligation to deliver cash or another financial asset to another enterprise or to exchange financial instruments with another enterprise under conditions that are potentially unfavourable.

7. Examples of potential equity shares are:

(a) debt instruments or preference shares, that are convertible into equity shares;

(b) share warrants;

(c) options including employee stock option plans under which employees of an enterprise are entitled to receive equity shares as part of their remuneration and other similar plans; and

(d) shares which would be issued upon the satisfaction of certain conditions resulting from contractual arrangements (contingently issuable shares), such as the acquisition of a business or other assets, or shares issuable under a loan contract upon default of payment of principal or interest, if the contract so provides.

Presentation

8. An enterprise should present basic and diluted earnings per share on the face of the statement of profit and loss for each class of equity shares that has a different right to share in the net profit for the period. An enterprise should present basic and diluted earnings per share with equal prominence for all periods presented.

9. This Standard requires an enterprise to present basic and diluted earnings per share, even if the amounts disclosed are negative (a loss per share).

Measurement

Basic Earnings Per Share

10. Basic earnings per share should be calculated by dividing the net profit or loss for the period attributable to equity shareholders by the weighted average number of equity shares outstanding during the period.

Earnings - Basic

11. For the purpose of calculating basic earnings per share, the net profit or loss for the period attributable to equity shareholders should be the net profit or loss for the period after deducting preference dividends and any attributable tax thereto for the period.

12. All items of income and expense which are recognised in a period, including tax expense and extraordinary items, are included in the determination of the net profit or loss for the period unless an Accounting Standard requires or permits otherwise *(see Accounting Standard (AS) 5, Net Profit or Loss for the Period, Prior Period Items and Changes in Accounting Policies)*. The amount of preference dividends and any attributable tax thereto for the period is deducted from the net profit for the period (or added to the net loss for the period) in order to calculate the net profit or loss for the period attributable to equity shareholders.

13. The amount of preference dividends for the period that is deducted from the net profit for the period is:

(a) the amount of any preference dividends on non-cumulative preference shares provided for in respect of the period; and

(b) the full amount of the required preference dividends for cumulative preference shares for the period, whether or not the dividends have been provided for. The amount of preference dividends for the period does not include the amount of any preference dividends for cumulative preference shares paid or declared during the current period in respect of previous periods.

14. If an enterprise has more than one class of equity shares, net profit or loss for the period is apportioned over the different classes of shares in accordance with their dividend rights.

Per Share - Basic

15. For the purpose of calculating basic earnings per share, the number of equity shares should be the weighted average number of equity shares outstanding during the period.

16. The weighted average number of equity shares outstanding during the period reflects the fact that the amount of shareholders' capital may have varied during the period as a result of a larger or lesser number of shares outstanding at any time. It is the number of equity shares outstanding at the beginning of the period, adjusted by the number of equity shares bought back or issued during the period multiplied by the time-weighting factor. The time-weighting factor is the number of days for which the specific shares are outstanding as a proportion of the total number of days in the period; a reasonable approximation of the weighted average is adequate in many circumstances.

Illustration I attached to the Standard illustrates the computation of weighted average number of shares.

17. In most cases, shares are included in the weighted average number of shares from the date the consideration is receivable, for example:

(a) equity shares issued in exchange for cash are included when cash is receivable;

(b) equity shares issued as a result of the conversion of a debt instrument to equity shares are included as of the date of conversion;

(c) equity shares issued in lieu of interest or principal on other financial instruments are included as of the date interest ceases to accrue;

(d) equity shares issued in exchange for the settlement of a liability of the enterprise are included as of the date the settlement becomes effective;

(e) equity shares issued as consideration for the acquisition of an asset other than cash are included as of the date on which the acquisition is recognised; and

(f) equity shares issued for the rendering of services to the enterprise are included as the services are rendered.

In these and other cases, the timing of the inclusion of equity shares is determined by the specific terms and conditions attaching to their issue. Due consideration should be given to the substance of any contract associated with the issue.

IndiaCode

18. Equity shares issued as part of the consideration in an amalgamation in the nature of purchase are included in the weighted average number of shares as of the date of the acquisition because the transferee incorporates the results of the operations of the transferor into its statement of profit and loss as from the date of acquisition. Equity shares issued during the reporting period as part of the consideration in an amalgamation in the nature of merger are included in the calculation of the weighted average number of shares from the beginning of the reporting period because the financial statements of the combined enterprise for the reporting period are prepared as if the combined entity had existed from the beginning of the reporting period. Therefore, the number of equity shares used for the calculation of basic earnings per share in an amalgamation in the nature of merger is the aggregate of the weighted average number of shares of the combined enterprises, adjusted to equivalent shares of the enterprise whose shares are outstanding after the amalgamation.

19. Partly paid equity shares are treated as a fraction of an equity share to the extent that they were entitled to participate in dividends relative to a fully paid equity share during the reporting period.

Illustration II attached to the Standard illustrates the computations in respect of partly paid equity shares.

20. Where an enterprise has equity shares of different nominal values but with the same dividend rights, the number of equity shares is calculated by converting all such equity shares into equivalent number of shares of the same nominal value.

21. Equity shares which are issuable upon the satisfaction of certain conditions resulting from contractual arrangements (contingently issuable shares) are considered outstanding, and included in the computation of basic earnings per share from the date when all necessary conditions under the contract have been satisfied.

22. The weighted average number of equity shares outstanding during the period and for all periods presented should be adjusted for events, other than the conversion of potential equity shares, that have changed the number of equity shares outstanding, without a corresponding change in resources.

23. Equity shares may be issued, or the number of shares outstanding may be reduced, without a corresponding change in resources. Examples include:

(a) a bonus issue;

(b) a bonus element in any other issue, for example a bonus element in a rights issue to existing shareholders;

(c) a share split; and

(d) a reverse share split (consolidation of shares).

24. In case of a bonus issue or a share split, equity shares are issued to existing shareholders for no additional consideration. Therefore, the number of equity shares outstanding is increased without an increase in resources. The number of equity shares outstanding before the event is adjusted for the proportionate change in the number of equity shares outstanding as if the event had occurred at the beginning of the earliest period reported. For example, upon a two-for-one bonus issue, the number of shares outstanding prior to the issue is multiplied by a factor of three to obtain the new total number of shares, or by a factor of two to obtain the number of additional shares.

Illustration III attached to the Standard illustrates the computation of weighted average number of equity shares in case of a bonus issue during the period.

25. The issue of equity shares at the time of exercise or conversion of potential equity shares will not usually give rise to a bonus element, since the potential equity shares will usually have been issued for full value, resulting in a proportionate change in the resources available to the enterprise. In a rights issue, on the other hand, the exercise price is often less than the fair value of the shares. Therefore, a rights issue usually includes a bonus element. The number of equity shares to be used in calculating basic earnings per share for all periods prior to the rights issue is the number of equity shares outstanding prior to the issue, multiplied by the following factor:

$$\frac{\text{Fair value per share immediately prior to the exercise of rights}}{\text{Theoretical ex-rights fair value per share}}$$

The theoretical ex-rights fair value per share is calculated by adding the aggregate fair value of the shares immediately prior to the exercise of the rights to the proceeds from the exercise of the rights, and dividing by the number of shares outstanding after the exercise of the rights. Where the rights themselves are to be publicly traded separately from the shares prior to the exercise date, fair value for the purposes of this calculation is established at the close of the last day on which the shares are traded together with the rights.

Illustration IV attached to the Standard illustrates the computation of weighted average number of equity shares in case of a rights issue during the period.

Diluted Earnings Per Share

26. For the purpose of calculating diluted earnings per share, the net profit or loss for the period attributable to equity shareholders and the weighted average number of shares outstanding during the period should be adjusted for the effects of all dilutive potential equity shares.

27. In calculating diluted earnings per share, effect is given to all dilutive potential equity shares that were outstanding during the period, that is:

(a) the net profit for the period attributable to equity shares is:

(i) increased by the amount of dividends recognised in the period in respect of the dilutive potential equity shares as adjusted for any attributable change in tax expense for the period;

(ii) increased by the amount of interest recognised in the period in respect of the dilutive potential equity shares as adjusted for any attributable change in tax expense for the period; and

(iii) adjusted for the after-tax amount of any other changes in expenses or income that would result from the conversion of the dilutive potential equity shares.

(b) the weighted average number of equity shares outstanding during the period is increased by the weighted average number of additional equity shares which would have been outstanding assuming the conversion of all dilutive potential equity shares.

28. For the purpose of this Standard, share application money pending allotment or any advance share application money as at the balance sheet date, which is not statutorily required to be kept separately and is being utilised in the business of the enterprise, is treated in the same manner as dilutive potential equity shares for the purpose of calculation of diluted earnings per share.

Earnings - Diluted

29. For the purpose of calculating diluted earnings per share, the amount of net profit or loss for the period attributable to equity shareholders, as calculated in accordance with paragraph 11, should be adjusted by the following, after taking into account any attributable change in tax expense for the period:

(a) any dividends on dilutive potential equity shares which have been deducted in arriving at the net profit attributable to equity shareholders as calculated in accordance with paragraph 11;

(b) interest recognised in the period for the dilutive potential equity shares; and

(c) any other changes in expenses or income that would result from the conversion of the dilutive potential equity shares.

30. After the potential equity shares are converted into equity shares, the dividends, interest and other expenses or income associated with those potential equity shares will no longer be incurred (or earned). Instead, the new equity shares will be entitled to participate in the net profit attributable to equity shareholders. Therefore, the net profit for the period attributable to equity shareholders calculated in accordance with paragraph 11 is increased by the amount of dividends, interest and other expenses that will be saved, and reduced by the amount of income that will cease to accrue, on the conversion of the dilutive potential equity shares into equity shares. The amounts of dividends, interest and other expenses or income are adjusted for any attributable taxes.

Illustration V attached to the standard illustrates the computation of diluted earnings in case of convertible debentures.

31. The conversion of some potential equity shares may lead to consequential changes in other items of income or expense. For example, the reduction of interest expense related to potential equity shares and the resulting increase in net profit for the period may lead to an increase in the expense relating to a non-discretionary employee profit sharing plan. For the purpose of calculating diluted earnings per share, the net profit or loss for the period is adjusted for any such consequential changes in income or expenses.

Per Share – Diluted

32. For the purpose of calculating diluted earnings per share, the number of equity shares should be the aggregate of the weighted average number of equity shares calculated in accordance with paragraphs 15 and 22, and the weighted average number of equity shares which would be issued on the conversion of all the dilutive potential equity shares into equity shares. Dilutive potential equity shares should be deemed to have been converted into equity shares at the beginning of the period or, if issued later, the date of the issue of the potential equity shares.

33. The number of equity shares which would be issued on the conversion of dilutive potential equity shares is determined from the terms of the potential equity shares. The computation assumes the most advantageous conversion rate or exercise price from the standpoint of the holder of the potential equity shares.

34. Equity shares which are issuable upon the satisfaction of certain conditions resulting from contractual arrangements (contingently issuable shares) are considered outstanding and included in the computation of both the basic earnings per share and diluted earnings per share from the date when the conditions under a contract are met. If the conditions have not been met, for computing the diluted earnings per share, contingently issuable shares are included as of the beginning of the period (or as of the date of the contingent share agreement, if later). The number of contingently issuable shares included in this case in computing the diluted earnings per share is based on the number of shares that would be issuable if the end of the reporting period was the end of the contingency period. Restatement is not permitted if the conditions are not met when the contingency period actually expires subsequent to the end of the reporting period. The provisions of this paragraph apply equally to potential equity shares that are issuable upon the satisfaction of certain conditions (contingently issuable potential equity shares).

35. For the purpose of calculating diluted earnings per share, an enterprise should assume the exercise of dilutive options and other dilutive potential equity shares of the enterprise. The assumed proceeds from these issues should be considered to have been received from the issue of shares at fair value. The difference between the number of shares issuable and the number of shares that would have been issued at fair value should be treated as an issue of equity shares for no consideration.

36. Fair value for this purpose is the average price of the equity shares during the period. Theoretically, every market transaction for an enterprise's equity shares could be included in determining the average price. As a practical matter, however, a simple average of last six months weekly closing prices are usually adequate for use in computing the average price.

37. Options and other share purchase arrangements are dilutive when they would result in the issue of equity shares for less than fair value. The amount of the dilution is fair value less the issue price. Therefore, in order to calculate diluted earnings per share, each such arrangement is treated as consisting of:

(a) a contract to issue a certain number of equity shares at their average fair value during the period. The shares to be so issued are fairly priced and are assumed to be neither dilutive nor anti- dilutive. They are ignored in the computation of diluted earnings per share; and

(b) a contract to issue the remaining equity shares for no consideration. Such equity shares generate no proceeds and have no effect on the net profit attributable to equity shares outstanding. Therefore, such shares are dilutive and are added to the number of equity shares outstanding in the computation of diluted earnings per share.

Illustration VI attached to the Standard illustrates the effects of share options on diluted earnings per share.

38. To the extent that partly paid shares are not entitled to participate in dividends during the reporting period they are considered the equivalent of warrants or options.

Dilutive Potential Equity Shares

39. Potential equity shares should be treated as dilutive when, and only when, their conversion to equity shares would decrease net profit per share from continuing ordinary operations.

40. An enterprise uses net profit from continuing ordinary activities as "the control figure" that is used to establish whether potential equity shares are dilutive or anti-dilutive. The net profit from continuing ordinary activities is the net profit from ordinary activities (as defined in AS 5) after deducting preference dividends and any attributable tax thereto and after excluding items relating to discontinued operations[21].

41. Potential equity shares are anti-dilutive when their conversion to equity shares would increase earnings per share from continuing ordinary activities or decrease loss per share from continuing ordinary activities. The effects of anti-dilutive potential equity shares are ignored in calculating diluted earnings per share.

42. In considering whether potential equity shares are dilutive or anti- dilutive, each issue or series of potential equity shares is considered separately rather than in aggregate. The sequence in which potential equity shares are considered may affect whether or not they are dilutive. Therefore, in order to maximise the dilution of basic earnings per share, each issue or series of potential equity shares is considered in sequence from the most dilutive to the least dilutive. For the purpose of determining the sequence from most dilutive to least dilutive potential equity shares, the earnings per incremental potential equity share is calculated. Where the earnings per incremental share is the least, the potential equity share is considered most dilutive and vice-versa.

Illustration VII attached to the Standard illustrates the manner of determining the order in which dilutive securities should be included in the computation of weighted average number of shares.

43. Potential equity shares are weighted for the period they were outstanding. Potential equity shares that were cancelled or allowed to lapse during the reporting period are included in the computation of diluted earnings per share only for the portion of the period during which they were outstanding. Potential equity shares that have been converted into equity shares during the reporting period are included in the calculation of diluted earnings per share from the beginning of the period to the date of conversion; from the date of conversion, the resulting equity shares are included in computing both basic and diluted earnings per share.

Restatement

44. If the number of equity or potential equity shares outstanding increases as a result of a bonus issue or share split or decreases as a result of a reverse share split (consolidation of shares), the calculation of basic and diluted earnings per share should be adjusted for all the periods presented. If these changes occur after the balance sheet date but before the date on which the financial statements are approved by the board of directors, the per share calculations for those financial statements and any prior period financial statements presented should be based on the new number of shares. When per share calculations reflect such changes in the number of shares, that fact should be disclosed.

45. An enterprise does not restate diluted earnings per share of any prior period presented for changes in the assumptions used or for the conversion of potential equity shares into equity shares outstanding.

46. An enterprise is encouraged to provide a description of equity share transactions or potential equity share transactions, other than bonus issues, share splits and reverse share splits (consolidation of shares) which occur after the balance sheet date when they are of such importance that non- disclosure would affect the ability of the users of the financial statements to make proper evaluations and decisions. Examples of such transactions include:

(a) the issue of shares for cash;

(b) the issue of shares when the proceeds are used to repay debt or preference shares outstanding at the balance sheet date;

(c) the cancellation of equity shares outstanding at the balance sheet date;

(d) the conversion or exercise of potential equity shares, outstanding at the balance sheet date, into equity shares;

(e) the issue of warrants, options or convertible securities; and

(f) the satisfaction of conditions that would result in the issue of contingently issuable shares.

47. Earnings per share amounts are not adjusted for such transactions occurring after the balance sheet date

[21] Accounting Standard (AS) 24, *Discontinuing Operations*, specifies the requirements in respect of discontinued operations

because such transactions do not affect the amount of capital used to produce the net profit or loss for the period.

Disclosure

48. In addition to disclosures as required by paragraphs 8, 9 and 44 of this Standard, an enterprise should disclose the following:

(i) where the statement of profit and loss includes extraordinary items (within the meaning of AS 5, Net Profit or Loss for the Period, Prior Period Items and Changes in Accounting Policies), the enterprise should disclose basic and diluted earnings per share computed on the basis of earnings excluding extraordinary items (net of tax expense); and

(ii) (a) the amounts used as the numerators in calculating basic and diluted earnings per share, and a reconciliation of those amounts to the net profit or loss for the period;

(b) the weighted average number of equity shares used as the denominator in calculating basic and diluted earnings per share, and a reconciliation of these denominators to each other; and

(c) the nominal value of shares along with the earnings per share figures.

49. Contracts generating potential equity shares may incorporate terms and conditions which affect the measurement of basic and diluted earnings per share. These terms and conditions may determine whether or not any potential equity shares are dilutive and, if so, the effect on the weighted average number of shares outstanding and any consequent adjustments to the net profit attributable to equity shareholders. Disclosure of the terms and conditions of such contracts is encouraged by this Standard.

50. If an enterprise discloses, in addition to basic and diluted earnings per share, per share amounts using a reported component of net profit other than net profit or loss for the period attributable to equity shareholders, such amounts should be calculated using the weighted average number of equity shares determined in accordance with this Standard. If a component of net profit is used which is not reported as a line item in the statement of profit and loss, a reconciliation should be provided between the component used and a line item which is reported in the statement of profit and loss. Basic and diluted per share amounts should be disclosed with equal prominence.

51. An enterprise may wish to disclose more information than this Standard requires. Such information may help the users to evaluate the performance of the enterprise and may take the form of per share amounts for various components of net profit. Such disclosures are encouraged. However, when such amounts are disclosed, the denominators need to be calculated in accordance with this Standard in order to ensure the comparability of the per share amounts disclosed.

Illustrations

Note: These illustrations do not form part of the Accounting Standard. Their purpose is to illustrate the application of the Accounting Standard.

Illustration I

Example - Weighted Average Number of Shares

(Accounting year 01-01-20X1 to 31-12-20X1)

		No. of Shares Issued	*No. of Shares Bought Back*	*No. of Shares Outstanding*
1st January, 20X1	Balance at beginning of year	*1,800*	-	*1,800*
31st May, 20X1	Issue of shares for cash	*600*	-	*2,400*
1st Nov., 20X1	Buy Back of shares	-	*300*	*2,100*
31st Dec., 20X1	Balance at end of year	*2,400*	*300*	*2,100*

Computation of Weighted Average:

(1,800 x 5/12) + (2,400 x 5/12) + (2,100 x 2/12) = 2,100 shares.

The weighted average number of shares can alternatively be computed as follows:

(1,800 x12/12) + (600 x 7/12) - (300 x 2/12) = 2,100 shares

Illustration II

Example – Partly paid shares

(Accounting year 01-01-20X1 to 31-12-20X1)

		No. of shares issued	*Nominal value of shares*	*Amount paid*
1st January, 20X1	Balance at beginning of year	1,800	Rs. 10	Rs. 10
31st October, 20X1	Issue of Shares	600	Rs. 10	Rs. 5

Assuming that partly paid shares are entitled to participate in the dividend to the extent of amount paid, number of partly paid equity shares would be taken as 300 for the purpose of calculation of earnings per share.

Computation of weighted average would be as follows:

(1,800x12/12) + (300x2/12) = 1,850 shares.

Indiacode

Illustration III

Example - Bonus Issue

(Accounting year 01-01-20XX to 31-12-20XX)

Net profit for the year 20X0	Rs. 18,00,000
Net profit for the year 20X1	Rs. 60,00,000
No. of equity shares outstanding until 30th September 20X1	20,00,000
Bonus issue 1st October 20X1	2 equity shares for each equity share outstanding at 30th September, 20X1 20,00,000 x 2 = 40,00,000
Earnings per share for the year 20X1	Rs. 60,00,000 / (20,00,000 + 40,00,000) = Re. 1.00
Adjusted earnings per share for the year 20X0	Rs. 18,00,000 / 40,00,000) = Re. 0.30 (20,00,000 +

Since the bonus issue is an issue without consideration, the issue is treated as if it had occurred prior to the beginning of the year 20X0, the earliest period reported.

Illustration IV

Example - Rights Issue

(Accounting year 01-01-20XX to 31-12-20XX)

Net profit	Year	20X0 :	Rs. 11,00,000
	Year	20X1 :	Rs. 15,00,000
No. of shares outstanding prior to rights issue	5,00,000 shares		
Rights issue	One new share for each five outstanding (i.e. 1,00,000 new shares) Rights issue price : Rs. 15.00 Last date to exercise rights: 1st March 20X1		
Fair value of one equity share immediately prior to exercise of rights on 1st March 20X1	Rs. 21.00		

Computation of theoretical ex-rights fair value per share

$$\frac{\text{Fair value of all outstanding shares immediately prior to exercise of rights+total amount received from exercise}}{\text{Number of shares outstanding prior to exercise + number of shares issued in the exercise}}$$

$$\frac{\text{(Rs. 21.00 x 5,00,000 shares) + (Rs. 15.00 x 1,00,000 shares)}}{\text{5,00,000 shares + 1,00,000 shares}}$$

Theoretical ex-rights fair value per share = Rs. 20.00

Computation of adjustment factor

Fair value per share prior to exercise of rights = Rs. (21.00) = 1.05

Theoretical ex-rights value per share Rs. (20.00)

Computation of earnings per share

	Year 20X0	**Year 20X1**
EPS for the year 20X0 as originally reported: Rs.11,00,000/5,00,000 shares	Rs. 2.20	
EPS for the year 20X0 restated for rights issue: Rs.11,00,000/ (5,00,000 shares x 1.05)	Rs. 2.10	
EPS for the year 20X1 including effects of rights issue $\frac{\text{Rs. 15,00,000}}{\text{(5,00,000 x 1.05 x 2/12)+ (6,00,000 x 10/12)}}$		Rs. 2.55

IndiaCode

Illustration V

Example - Convertible Debentures

(Accounting year 01-01-20XX to 31-12-20XX)

Net profit for the current year	Rs. 1,00,00,000
No. of equity shares outstanding	50,00,000
Basic earnings per share	Rs. 2.00
No. of 12% convertible debentures of Rs. 100 each Each debenture is convertible into 10 equity shares	1,00,000
Interest expense for the current year	Rs. 12,00,000
Tax relating to interest expense (30%)	Rs. 3,60,000
Adjusted net profit for the current year	Rs. (1,00,00,000 + 12,00,000 - 3,60,000) = Rs. 1,08,40,000
No. of equity shares resulting from conversion of debentures	10,00,000
No. of equity shares used to compute diluted earnings per share	50,00,000 + 10,00,000 = 60,00,000
Diluted earnings per share	1,08,40,000/60,00,000 = Re. 1.81

IndiaCode

Illustration VI

Example - Effects of Share Options on Diluted Earnings Per Share

(Accounting year 01-01-20XX to 31-12-20XX)

Net profit for the year 20X1	Rs. 12,00,000
Weighted average number of equity shares outstanding during the year 20X1	5,00,000 shares
Average fair value of one equity share during the year 20X1	Rs. 20.00
Weighted average number of shares under option during the year 20X1	1,00,000 shares
Exercise price for shares under option during the year 20X1	Rs. 15.00

Computation of earnings per share

	Earnings	***Shares***	***Earnings per share***
Net profit for the year 20X1	Rs. 12,00,000		
Weighted average number of shares outstanding during year 20X1		5,00,000	
Basic earnings per share			Rs. 2.40

Number of shares under option		1,00,000	
Number of shares that would have been issued at fair value: (100,000 x 15.00)/20.00	*	(75,000)	
Diluted earnings per share	Rs. 12,00,000	5,25,000	Rs. 2.29

**The earnings have not been increased as the total number of shares has been increased only by the number of shares (25,000) deemed for the purpose of the computation to have been issued for no consideration {see para 37(b)}*

Illustration VII

Example - Determining the Order in Which to Include Dilutive Securities in the Computation of Weighted Average Number of Shares

(Accounting year 01-01-20XX to 31-12-20XX)

IndiaCode

Earnings, i.e., Net profit attributable to equity shareholders	Rs. 1,00,00,000
No. of equity shares outstanding	20,00,000
Average fair value of one equity share during the year	Rs. 75.00
Potential Equity Shares	
Options	1,00,000 with exercise price of Rs. 60
Convertible Preference Shares Attributable tax, e.g., corporate dividend tax	8,00,000 shares entitled to a cumulative dividend of Rs. 8 per share. Each preference share is convertible into 2 equity shares. 10%
12% Convertible Debentures of Rs. 100 each	Nominal amount Rs. 10,00,00,000. Each debenture is convertible into 4 equity shares.
Tax rate	30%

Increase in Earnings Attributable to Equity Shareholders on Conversion of Potential Equity Shares

	Increase in Earnings	*Increase in no. of Equity Shares*	*Earnings per Incremental Share*
Options			
Increase in earnings	Nil		
No. of incremental shares issued for no consideration {1,00,000 x (75 - 60) / 75}		20,000	Nil
Convertible Preference Shares			

Increase in net profit attributable to equity shareholders as adjusted by attributable tax [(Rs.8 x 8,00,000)+ 10%(8 x 8,00,000)]	Rs. 70,40,000		
No. of incremental shares {2 x 8,00,000}		16,00,000	Rs. 4.40
12% Convertible Debentures			
Increase in net profit {Rs. 10,00,00,000 x 0.12 x (1 - 0.30)}	Rs. 84,00,000		
No. of incremental shares {10,00,000 x 4}		40,00,000	Rs. 2.10

It may be noted from the above that options are most dilutive as their earnings per incremental share is nil. Hence, for the purpose of computation of diluted earnings per share, options will be considered first. 12% convertible debentures being second most dilutive will be considered next and thereafter convertible preference shares will be considered (see para 42).

Computation of Diluted Earnings Per Share

	Net Profit Attributable (Rs.)	*No. of Equity Shares*	*Net profit attributable Per Share (Rs.)*	
As reported	1,00,00,000	20,00,000	5.00	
Options		20,000		
	1,00,00,000	20,20,000	4.95	Dilutive
12% Convertible Debentures	84,00,000	40,00,000		
	1,84,00,000	60,20,000	3.06	Dilutive
Convertible Preference Shares	70,40,000	16,00,000		
	2,54,40,000	76,20,000	3.34	Anti-Dilutive

Since diluted earnings per share is increased when taking the convertible preference shares into account (from Rs. 3.06 to Rs 3.34), the convertible preference shares are anti-dilutive and are ignored in the calculation of diluted earnings per share. Therefore, diluted earnings per share is Rs. 3.06.

IndiaCode

Accounting Standard (AS) 21

Consolidated Financial Statements[22]

*(This Accounting Standard includes paragraphs set in **bold italic** type and plain type, which have equal authority. Paragraphs in bold italic type indicate the main principles. This Accounting Standard should be read in the context of its objective and the General Instructions contained in part A of the Annexure to the Notification.)*

Objective

The objective of this Standard is to lay down principles and procedures for preparation and presentation of consolidated financial statements. Consolidated financial statements are presented by a parent (also known as holding enterprise) to provide financial information about the economic activities of its group. These statements are intended to present financial information about a parent and its subsidiary(ies) as a single economic entity to show the economic resources controlled by the group, the obligations of the group and results the group achieves with its resources.

Scope

1. This Standard should be applied in the preparation and presentation of consolidated financial statements for a group of enterprises under the control of a parent.

2. This Standard should also be applied in accounting for investments in subsidiaries in the separate financial statements of a parent.

3. In the preparation of consolidated financial statements, other Accounting Standards also apply in the same manner as they apply to the separate financial statements.

4. This Standard does not deal with:

(a) methods of accounting for amalgamations and their effects on consolidation, including goodwill arising on amalgamation (see AS 14, *Accounting for Amalgamations*);

(b) accounting for investments in associates (at present governed by AS 13, *Accounting for Investments*[23]); and

(c) accounting for investments in joint ventures (at present governed by AS 13*, Accounting for Investments*[24]).

Definitions

5. For the purpose of this Standard, the following terms are used with the meanings specified:

5.1 Control:

(a) the ownership, directly or indirectly through subsidiary(ies), of more than one-half of the voting power of an enterprise; or

(b) control of the composition of the board of directors in the case of a company or of the composition of the corresponding governing body in case of any other enterprise so as to obtain economic benefits from its activities.

5.2 A subsidiary is an enterprise that is controlled by another enterprise (known as the parent).

5.3 A parent is an enterprise that has one or more subsidiaries.

5.4 A group is a parent and all its subsidiaries.

---

[22] It is clarified that AS 21 is mandatory if an enterprise presents consolidated financial statements. In other words, the accounting standard does not mandate an enterprise to present consolidated financial statements but, if the enterprise presents consolidated financial statements for complying with the requirements of any statute or otherwise, it should prepare and present consolidated financial statements in accordance with AS 21.

[23] Accounting Standard (AS) 23, *Accounting for Investments in Associates in Consolidated Financial Statements*, specifies the requirements relating to accounting for investments in associates in Consolidated Financial Statements.

[24] Accounting Standard (AS) 27, *Financial Reporting of Interests in Joint Ventures*, specifies the requirements relating to accounting for investments in joint ventures.

5.5 Consolidated financial statements are the financial statements of a group presented as those of a single enterprise.

5.6 Equity is the residual interest in the assets of an enterprise after deducting all its liabilities.

5.7 Minority interest is that part of the net results of operations and of the net assets of a subsidiary attributable to interests which are not owned, directly or indirectly through subsidiary(ies), by the parent.

6. Consolidated financial statements normally include consolidated balance sheet, consolidated statement of profit and loss, and notes, other statements and explanatory material that form an integral part thereof. Consolidated cash flow statement is presented in case a parent presents its own cash flow statement. The consolidated financial statements are presented, to the extent possible, in the same format as that adopted by the parent for its separate financial statements.

Explanation:

All the notes appearing in the separate financial statements of the parent enterprise and its subsidiaries need not be included in the notes to the consolidated financial statement. For preparing consolidated financial statements, the following principles may be observed in respect of notes and other explanatory material that form an integral part thereof:

(a) Notes which are necessary for presenting a true and fair view of the consolidated financial statements are included in the consolidated financial statements as an integral part thereof.

(b) Only the notes involving items which are material need to be disclosed. Materiality for this purpose is assessed in relation to the information contained in consolidated financial statements. In view of this, it is possible that certain notes which are disclosed in separate financial statements of a parent or a subsidiary would not be required to be disclosed in the consolidated financial statements when the test of materiality is applied in the context of consolidated financial statements.

(c) Additional statutory information disclosed in separate financial statements of the subsidiary and/or a parent having no bearing on the true and fair view of the consolidated financial statements need not be disclosed in the consolidated financial statements.

Presentation of Consolidated Financial Statements

7. A parent which presents consolidated financial statements should present these statements in addition to its separate financial statements.

8. Users of the financial statements of a parent are usually concerned with, and need to be informed about, the financial position and results of operations of not only the enterprise itself but also of the group as a whole. This need is served by providing the users -

(a) separate financial statements of the parent; and

(b) consolidated financial statements, which present financial information about the group as that of a single enterprise without regard to the legal boundaries of the separate

Scope of Consolidated Financial Statements

9. A parent which presents consolidated financial statements should consolidate all subsidiaries, domestic as well as foreign, other than those referred to in paragraph 11. Where an enterprise does not have a subsidiary but has an associate and/or a joint venture such an enterprise should also prepare consolidated financial statements in accordance with Accounting Standard (AS) 23, Accounting for Associates in Consolidated Financial Statements, and Accounting Standard (AS) 27, Financial Reporting of Interests in Joint Ventures respectively.

10. The consolidated financial statements are prepared on the basis of financial statements of parent and all enterprises that are controlled by the parent, other than those subsidiaries excluded for the reasons set out in paragraph 11. Control exists when the parent owns, directly or indirectly through subsidiary(ies), more than one-half of the voting power of an enterprise. Control also exists when an enterprise controls the composition of the board of directors (in the case of a company) or of the corresponding governing body (in case of an enterprise not being a company) so as to obtain economic benefits from its activities. An enterprise may control the composition of the governing bodies of entities such as gratuity trust, provident fund trust etc. Since the objective of control over such

entities is not to obtain economic benefits from their activities, these are not considered for the purpose of preparation of consolidated financial statements. For the purpose of this Standard, an enterprise is considered to control the composition of:

(i) the board of directors of a company, if it has the power, without the consent or concurrence of any other person, to appoint or remove all or a majority of directors of that company. An enterprise is deemed to have the power to appoint a director, if any of the following conditions is satisfied:

(a) a person cannot be appointed as director without the exercise in his favour by that enterprise of such a power as aforesaid; or

(b) a person's appointment as director follows necessarily from his appointment to a position held by him in that enterprise; or

(c) the director is nominated by that enterprise or a subsidiary thereof.

(ii) the governing body of an enterprise that is not a company, if it has the power, without the consent or the concurrence of any other person, to appoint or remove all or a majority of members of the governing body of that other enterprise. An enterprise is deemed to have the power to appoint a member, if any of the following conditions is satisfied:

(a) a person cannot be appointed as member of the governing body without the exercise in his favour by that other enterprise of such a power as aforesaid; or

(b) a person's appointment as member of the governing body follows necessarily from his appointment to a position held by him in that other enterprise; or

(c) the member of the governing body is nominated by that other enterprise.

Explanation:

It is possible that an enterprise is controlled by two enterprises — one controls by virtue of ownership of majority of the voting power of that enterprise and other controls, by virtue of an agreement or otherwise, the composition of the board of directors so as to obtain economic benefit from its activities. In such a rare situation, when an enterprise is controlled by two enterprises as per the definition of 'control', the first mentioned enterprise will be considered as subsidiary of both the controlling enterprises within the meaning of this Standard and, therefore, both the enterprises need to consolidate the financial statements of that enterprise as per the requirements of this Standard.

11. A subsidiary should be excluded from consolidation when:

(a) control is intended to be temporary because the subsidiary is acquired and held exclusively with a view to its subsequent disposal in the near future; or

(b) it operates under severe long-term restrictions which significantly impair its ability to transfer funds to the parent.

In consolidated financial statements, investments in such subsidiaries should be accounted for in accordance with Accounting Standard (AS) 13, Accounting for Investments. The reasons for not consolidating a subsidiary should be disclosed in the consolidated financial statements.

Explanation:

(a) Where an enterprise owns majority of voting power by virtue of ownership of the shares of another enterprise and all the shares are held as 'stock-in-trade' and are acquired and held exclusively with a view to their subsequent disposal in the near future, the control by the first mentioned enterprise is considered to be temporary within the meaning of paragraph 11(a).

(b) The period of time, which is considered as near future for the purposes of this Standard primarily depends on the facts and circumstances of each case. However, ordinarily, the meaning of the words 'near future' is considered as not more than twelve months from acquisition of relevant investments unless a longer period can be justified on the basis of facts and circumstances of the case. The intention with regard to disposal of the relevant investment is considered at the time of acquisition of the investment. Accordingly, if the relevant investment is acquired without an intention to its subsequent disposal in near future, and subsequently, it is decided to dispose off the investments, such an in- vestment is not excluded from consolidation, until the investment is actually disposed off. Conversely, if the relevant investment is acquired with an intention to its subsequent disposal in near future, but, due to some valid reasons, it could not be disposed off within that period, the same will continue to be excluded from consolidation, provided there is no change in the intention.

12. Exclusion of a subsidiary from consolidation on the ground that its business activities are dissimilar from those of the other enterprises within the group is not justified because better information is provided by

consolidating such subsidiaries and disclosing additional information in the consolidated financial statements about the different business activities of subsidiaries. For example, the disclosures required by Accounting Standard (AS) 17, *Segment Reporting,* help to explain the significance of different business activities within the group.

Consolidation Procedures

13. In preparing consolidated financial statements, the financial statements of the parent and its subsidiaries should be combined on a line by line basis by adding together like items of assets, liabilities, income and expenses. In order that the consolidated financial statements present financial information about the group as that of a single enterprise, the following steps should be taken:

(a) the cost to the parent of its investment in each subsidiary and the parent's portion of equity of each subsidiary, at the date on which investment in each subsidiary is made, should be eliminated;

(b) any excess of the cost to the parent of its investment in a subsidiary over the parent's portion of equity of the subsidiary, at the date on which investment in the subsidiary is made, should be described as goodwill to be recognised as an asset in the consolidated financial statements;

(c) when the cost to the parent of its investment in a subsidiary is less than the parent's portion of equity of the subsidiary, at the date on which investment in the subsidiary is made, the difference should be treated as a capital reserve in the consolidated financial statements;

(d) minority interests in the net income of consolidated subsidiaries for the reporting period should be identified and adjusted against the income of the group in order to arrive at the net income attributable to the owners of the parent; and

(e) minority interests in the net assets of consolidated subsidiaries should be identified and presented in the consolidated balance sheet separately from liabilities and the equity of the parent's shareholders. Minority interests in the net assets consist of:

(i) the amount of equity attributable to minorities at the date on which investment in a subsidiary is made; and

(ii) the minorities' share of movements in equity since the date the parent-subsidiary relationship came in existence.

Where the carrying amount of the investment in the subsidiary is different from its cost, the carrying amount is considered for the purpose of above computations.

Explanation:

(a) The tax expense (comprising current tax and deferred tax) to be shown in the consolidated financial statements should be the aggregate of the amounts of tax expense appearing in the separate financial statements of the parent and its subsidiaries.

(b) The parent's share in the post-acquisition reserves of a subsidiary, forming part of the corresponding reserves in the consolidated balance sheet, is not required to be disclosed separately in the consolidated balance sheet keeping in view the objective of consolidated financial statements to present financial information of the group as a whole. In view of this, the consolidated reserves disclosed in the consolidated balance sheet are inclusive of the parent's share in the post-acquisition reserves of a subsidiary.

14. The parent's portion of equity in a subsidiary, at the date on which investment is made, is determined on the basis of information contained in the financial statements of the subsidiary as on the date of investment. However, if the financial statements of a subsidiary, as on the date of investment, are not available and if it is impracticable to draw the financial statements of the subsidiary as on that date, financial statements of the subsidiary for the immediately preceding period are used as a basis for consolidation. Adjustments are made to these financial statements for the effects of significant transactions or other events that occur between the date of such financial statements and the date of investment in the subsidiary.

15. If an enterprise makes two or more investments in another enterprise at different dates and eventually obtains control of the other enterprise, the consolidated financial statements are presented only from the date on which holding-subsidiary relationship comes in existence. If two or more investments are made over a period of time, the equity of the subsidiary at the date of investment, for the purposes of paragraph 13 above, is generally determined on a step-by-step basis; however, if small investments are made over a period of time and then an investment is made that results in control, the date of the latest investment, as a practicable measure, may be considered as the date of investment.

16. Intragroup balances and intragroup transactions and resulting unrealised profits should be eliminated in full. Unrealised losses resulting from intragroup transactions should also be eliminated unless cost cannot be recovered.

IndiaCode

17. Intragroup balances and intragroup transactions, including sales, expenses and dividends, are eliminated in full. Unrealised profits resulting from intragroup transactions that are included in the carrying amount of assets, such as inventory and fixed assets, are eliminated in full. Unrealised losses resulting from intragroup transactions that are deducted in arriving at the carrying amount of assets are also eliminated unless cost cannot be recovered.

18. The financial statements used in the consolidation should be drawn up to the same reporting date. If it is not practicable to draw up the financial statements of one or more subsidiaries to such date and, accordingly, those financial statements are drawn up to different reporting dates, adjustments should be made for the effects of significant transactions or other events that occur between those dates and the date of the parent's financial statements. In any case, the difference between reporting dates should not be more than six months.

19. The financial statements of the parent and its subsidiaries used in the preparation of the consolidated financial statements are usually drawn up to the same date. When the reporting dates are different, the subsidiary often prepares, for consolidation purposes, statements as at the same date as that of the parent. When it is impracticable to do this, financial statements drawn up to different reporting dates may be used provided the difference in reporting dates is not more than six months. The consistency principle requires that the length of the reporting periods and any difference in the reporting dates should be the same from period to period.

20. Consolidated financial statements should be prepared using uniform accounting policies for like transactions and other events in similar circumstances. If it is not practicable to use uniform accounting policies in preparing the consolidated financial statements, that fact should be disclosed together with the proportions of the items in the consolidated financial statements to which the different accounting policies have been applied.

21. If a member of the group uses accounting policies other than those adopted in the consolidated financial statements for like transactions and events in similar circumstances, appropriate adjustments are made to its financial statements when they are used in preparing the consolidated financial statements.

22. The results of operations of a subsidiary are included in the consolidated financial statements as from the date on which parent-subsidiary relationship came in existence. The results of operations of a subsidiary with which parent-subsidiary relationship ceases to exist are included in the consolidated statement of profit and loss until the date of cessation of the relationship. The difference between the proceeds from the disposal of investment in a subsidiary and the carrying amount of its assets less liabilities as of the date of disposal is recognised in the consolidated statement of profit and loss as the profit or loss on the disposal of the investment in the subsidiary. In order to ensure the comparability of the financial statements from one accounting period to the next, supplementary information is often provided about the effect of the acquisition and disposal of subsidiaries on the financial position at the reporting date and the results for the reporting period and on the corresponding amounts for the preceding period.

23. An investment in an enterprise should be accounted for in accordance with Accounting Standard (AS) 13, Accounting for Investments, from the date that the enterprise ceases to be a subsidiary and does not become an associate[25].

24. The carrying amount of the investment at the date that it ceases to be a subsidiary is regarded as cost thereafter.

25. Minority interests should be presented in the consolidated balance sheet separately from liabilities and the equity of the parent's shareholders. Minority interests in the income of the group should also be separately presented.

26. The losses applicable to the minority in a consolidated subsidiary may exceed the minority interest in the equity of the subsidiary. The excess, and any further losses applicable to the minority, are adjusted against the majority interest except to the extent that the minority has a binding obligation to, and is able to, make good the losses. If the subsidiary subsequently reports profits, all such profits are allocated to the majority interest until the minority's share of losses previously absorbed by the majority has been recovered.

27. If a subsidiary has outstanding cumulative preference shares which are held outside the group, the parent computes its share of profits or losses after adjusting for the subsidiary's preference dividends, whether or not dividends have been declared.

Accounting for Investments in Subsidiaries in a Parent's Separate Financial Statements

28. In a parent's separate financial statements, investments in subsidiaries should be accounted for in accordance with Accounting Standard (AS) 13, Accounting for Investments.

Disclosure

---

[25] Accounting Standard (AS) 23, *Accounting for Investments in Associates in Consolidated Financial Statements*, defines the term 'associate' and specifies the requirements relating to accounting for investments in associates in Consolidated Financial Statements.

29. In addition to disclosures required by paragraph 11 and 20, following disclosures should be made:

(a) in consolidated financial statements a list of all subsidiaries including the name, country of incorporation or residence, proportion of ownership interest and, if different, proportion of voting power held;

(b) in consolidated financial statements, where applicable:

(i) the nature of the relationship between the parent and a subsidiary, if the parent does not own, directly or indirectly through subsidiaries, more than one-half of the voting power of the subsidiary;

(ii) the effect of the acquisition and disposal of subsidiaries on the financial position at the reporting date, the results for the reporting period and on the corresponding amounts for the preceding period; and

(iii) the names of the subsidiary(ies) of which reporting date(s) is/are different from that of the parent and the difference in reporting dates.

Transitional Provisions[26]

30. On the first occasion that consolidated financial statements are presented, comparative figures for the previous period need not be presented. In all subsequent years full comparative figures for the previous period should be presented in the consolidated financial statements.

Accounting Standard (AS) 22

Accounting for Taxes on Income

*(This Accounting Standard includes paragraphs set in **bold italic** type and plain type, which have equal authority. Paragraphs in bold italic type indicate the main principles. This Accounting Standard should be read in the context of its objective and the General Instructions contained in part A of the Annexure to the Notification.)*

Objective

The objective of this Standard is to prescribe accounting treatment for taxes on income. Taxes on income is one of the significant items in the statement of profit and loss of an enterprise. In accordance with the matching concept, taxes on income are accrued in the same period as the revenue and expenses to which they relate. Matching of such taxes against revenue for a period poses special problems arising from the fact that in a number of cases, taxable income may be significantly different from the accounting income. This divergence between taxable income and accounting income arises due to two main reasons. Firstly, there are differences between items of revenue and expenses as appearing in the statement of profit and loss and the items which are considered as revenue, expenses or deductions for tax purposes. Secondly, there are differences between the amount in respect of a particular item of revenue or expense as recognised in the statement of profit and loss and the corresponding amount which is recognised for the computation of taxable income.

Scope

1. This Standard should be applied in accounting for taxes on income. This includes the determination of the amount of the expense or saving related to taxes on income in respect of an accounting period and the disclosure of such an amount in the financial statements.

2. For the purposes of this Standard, taxes on income include all domestic and foreign taxes which are based on taxable income.

3. This Standard does not specify when, or how, an enterprise should account for taxes that are payable on distribution of dividends and other distributions made by the enterprise.

Definitions

4. For the purpose of this Standard, the following terms are used with the meanings specified:

4.1 Accounting income (loss) is the net profit or loss for a period, as reported in the statement of profit and loss, before deducting income tax expense or adding income tax saving.

4.2 Taxable income (tax loss) is the amount of the income (loss) for a period, determined in accordance with the tax laws, based upon which income tax payable (recoverable) is determined.

4.3 Tax expense (tax saving) is the aggregate of current tax and deferred tax charged or credited to the statement of profit and loss for the period.

---

[26] Transitional Provisions given in Paragraph 30 are relevant for standards notified under Companies (Accounting Standards) Rules, 2006 (as amended from time to time) as well as Companies (Accounting Standards) Rules, 2021.

4.4 Current tax is the amount of income tax determined to be payable (recoverable) in respect of the taxable income (tax loss) for a period.

4.5 Deferred tax is the tax effect of timing differences.

4.6 Timing differences are the differences between taxable income and accounting income for a period that originate in one period and are capable of reversal in one or more subsequent periods.

4.7 Permanent differences are the differences between taxable income and accounting income for a period that originate in one period and do not reverse subsequently.

5. Taxable income is calculated in accordance with tax laws. In some circumstances, the requirements of these laws to compute taxable income differ from the accounting policies applied to determine accounting income. The effect of this difference is that the taxable income and accounting income may not be the same.

6. The differences between taxable income and accounting income can be classified into permanent differences and timing differences. Permanent differences are those differences between taxable income and accounting income which originate in one period and do not reverse subsequently. For instance, if for the purpose of computing taxable income, the tax laws allow only a part of an item of expenditure, the disallowed amount would result in a permanent difference.

7. Timing differences are those differences between taxable income and accounting income for a period that originate in one period and are capable of reversal in one or more subsequent periods. Timing differences arise because the period in which some items of revenue and expenses are included in taxable income do not coincide with the period in which such items of revenue and expenses are included or considered in arriving at accounting income. For example, machinery purchased for scientific research related to business is fully allowed as deduction in the first year for tax purposes whereas the same would be charged to the statement of profit and loss as depreciation over its useful life. The total depreciation charged on the machinery for accounting purposes and the amount allowed as deduction for tax purposes will ultimately be the same, but periods over which the depreciation is charged and the deduction is allowed will differ. Another example of timing difference is a situation where, for the purpose of computing taxable income, tax laws allow depreciation on the basis of the written down value method, whereas for accounting purposes, straight line method is used. Some other examples of timing differences arising under the Indian tax laws are given in Illustration 1.

8. Unabsorbed depreciation and carry forward of losses which can be set- off against future taxable income are also considered as timing differences and result in deferred tax assets, subject to consideration of prudence (see paragraphs 15-18).

Recognition

9. Tax expense for the period, comprising current tax and deferred tax, should be included in the determination of the net profit or loss for the period.

10. Taxes on income are considered to be an expense incurred by the enterprise in earning income and are accrued in the same period as the revenue and expenses to which they relate. Such matching may result into timing differences. The tax effects of timing differences are included in the tax expense in the statement of profit and loss and as deferred tax assets (subject to the consideration of prudence as set out in paragraphs 15-18) or as deferred tax liabilities, in the balance sheet.

11. An example of tax effect of a timing difference that results in a deferred tax asset is an expense provided in the statement of profit and loss but not allowed as a deduction under Section 43B of the Income-tax Act, 1961. This timing difference will reverse when the deduction of that expense is allowed under Section 43B in subsequent year(s). An example of tax effect of a timing difference resulting in a deferred tax liability is the higher charge of depreciation allowable under the Income-tax Act, 1961, compared to the depreciation provided in the statement of profit and loss. In subsequent years, the differential will reverse when comparatively lower depreciation will be allowed for tax purposes.

12. Permanent differences do not result in deferred tax assets or deferred tax liabilities.

13. Deferred tax should be recognised for all the timing differences, subject to the consideration of prudence in respect of deferred tax assets as set out in paragraphs 15-18.

Explanation:

(a) The deferred tax in respect of timing differences which reverse during the tax holiday period is not recognised to the extent the enterprise's gross total income is subject to the deduction during the tax holiday period as per the requirements of sections 80- IA/80IB of the Income-tax Act, 1961. In case of sections 10A/10B of the Income-tax Act, 1961 (covered under Chapter III of the Income-tax Act, 1961 dealing with incomes which do not form part of total income), the deferred tax in respect of timing differences which reverse

during the tax holiday period is not recognised to the extent deduction from the total income of an enterprise is allowed during the tax holiday period as per the provisions of the said sections.

(b) Deferred tax in respect of timing differences which reverse after the tax holiday period is recognised in the year in which the timing differences originate. However, recognition of deferred tax assets is subject to the consideration of prudence as laid down in paragraphs 15 to 18.

(c) For the above purposes, the timing differences which originate first are considered to reverse first.

The application of the above explanation is illustrated in the Illustration attached to the Standard.

14. This Standard requires recognition of deferred tax for all the timing differences. This is based on the principle that the financial statements for a period should recognise the tax effect, whether current or deferred, of all the transactions occurring in that period.

15. Except in the situations stated in paragraph 17, deferred tax assets should be recognised and carried forward only to the extent that there is a reasonable certainty that sufficient future taxable income will be available against which such deferred tax assets can be realised.

16. While recognising the tax effect of timing differences, consideration of prudence cannot be ignored. Therefore, deferred tax assets are recognised and carried forward only to the extent that there is a reasonable certainty of their realisation. This reasonable level of certainty would normally be achieved by examining the past record of the enterprise and by making realistic estimates of profits for the future.

17. Where an enterprise has unabsorbed depreciation or carry forward of losses under tax laws, deferred tax assets should be recognised only to the extent that there is virtual certainty supported by convincing evidence that sufficient future taxable income will be available against which such deferred tax assets can be realised.

Explanation:

1. Determination of virtual certainty that sufficient future taxable income will be available is a matter of judgement based on convincing evidence and will have to be evaluated on a case to case basis. Virtual certainty refers to the extent of certainty, which, for all practical purposes, can be considered certain. Virtual certainty cannot be based merely on forecasts of performance such as business plans. Virtual certainty is not a matter of perception and is to be supported by convincing evidence. Evidence is a matter of fact. To be convincing, the evidence should be available at the reporting date in a concrete form, for example, a profitable binding export order, cancellation of which will result in payment of heavy damages by the defaulting party. On the other hand, a projection of the future profits made by an enterprise based on the future capital expenditures or future restructuring etc., submitted even to an outside agency, e.g., to a credit agency for obtaining loans and accepted by that agency cannot, in isolation, be considered as convincing evidence.

2 (a) As per the relevant provisions of the Income-tax Act, 1961 , the 'loss' arising under the head 'Capital gains' can be carried forward and set-off in future years, only against the income arising under that head as per the requirements of the Income-tax Act, 1961.

(b) Where an enterprise's statement of profit and loss includes an item of 'loss' which can be set-off in future for taxation purposes, only against the income arising under the head 'Capital gains' as per the requirements of the Income-tax Act, 1961, that item is a timing difference to the extent it is not set-off in the current year and is allowed to be set-off against the income arising under the head 'Capital gains' in subsequent years subject to the provisions of the Income-tax Act, 1961. In respect of such 'loss', deferred tax asset is recognised and carried forward subject to the consideration of prudence. Accordingly, in respect of such 'loss', deferred tax asset is recognised and carried forward only to the extent that there is a virtual certainty, supported by convincing evidence, that sufficient future taxable income will be available under the head 'Capital gains' against which the loss can be set-off as per the provisions of the Income-tax Act, 1961. Whether the test of virtual certainty is fulfilled or not would depend on the facts and circumstances of each case. The examples of situations in which the test of virtual certainty, supported by convincing evidence, for the purposes of the recognition of deferred tax asset in respect of loss arising under the head 'Capital gains' is normally fulfilled, are sale of an asset giving rise to capital gain (eligible to set-off the capital loss as per the provisions of the Income-tax Act, 1961) after the balance sheet date but before the financial statements are approved, and binding sale agreement which will give rise to capital gain (eligible to set-off the capital loss as per the provisions of the Income-tax Act, 1961).

(c) In cases where there is a difference between the amounts of 'loss' recognised for accounting purposes and tax purposes because of cost indexation under the Income-tax Act, 1961 in respect of long-term capital assets, the deferred tax asset is recognised and carried forward (subject to the consideration of prudence) on the amount which can be carried forward and set-off in future years as per the provisions of the Income-tax Act, 1961.

18. The existence of unabsorbed depreciation or carry forward of losses under tax laws is strong evidence that future taxable income may not be available. Therefore, when an enterprise has a history of recent losses, the enterprise recognises deferred tax assets only to the extent that it has timing differences the reversal of which will result in sufficient income or there is other convincing evidence that sufficient taxable income will be available against which such deferred tax assets can be realised. In such circumstances, the nature of the evidence supporting its recognition is disclosed.

Re-assessment of Unrecognised Deferred Tax Assets

19. At each balance sheet date, an enterprise re-assesses unrecognised deferred tax assets. The enterprise recognises previously unrecognised deferred tax assets to the extent that it has become reasonably certain or virtually certain, as the case may be (see paragraphs 15 to 18), that sufficient future taxable income will be available against which such deferred tax assets can be realised. For example, an improvement in trading conditions may make it reasonably certain that the enterprise will be able to generate sufficient taxable income in the future.

Measurement

20. Current tax should be measured at the amount expected to be paid to (recovered from) the taxation authorities, using the applicable tax rates and tax laws.

21. Deferred tax assets and liabilities should be measured using the tax rates and tax laws that have been enacted or substantively enacted by the balance sheet date.

Explanation:

(a) The payment of tax under section 115JB of the Income-tax Act, 1961 is a current tax for the period.

(b) In a period in which a company pays tax under section 115JB of the Income-tax Act, 1961, the deferred tax assets and liabilities in respect of timing differences arising during the period, tax effect of which is required to be recognised under this Standard, is measured using the regular tax rates and not the tax rate under section 115JB of the Income-tax Act, 1961.

(c) In case an enterprise expects that the timing differences arising in the current period would reverse in a period in which it may pay tax under section 115JB of the Income-tax Act, 1961, the deferred tax assets and liabilities in respect of timing differences arising during the current period, tax effect of which is required to be recognised under AS 22, is measured using the regular tax rates and not the tax rate under section 115JB of the Income-tax Act, 1961.

22. Deferred tax assets and liabilities are usually measured using the tax rates and tax laws that have been enacted. However, certain announcements of tax rates and tax laws by the government may have the substantive effect of actual enactment. In these circumstances, deferred tax assets and liabilities are measured using such announced tax rate and tax laws.

23. When different tax rates apply to different levels of taxable income, deferred tax assets and liabilities are measured using average rates.

24. Deferred tax assets and liabilities should not be discounted to their present value.

25. The reliable determination of deferred tax assets and liabilities on a discounted basis requires detailed scheduling of the timing of the reversal of each timing difference. In a number of cases such scheduling is impracticable or highly complex. Therefore, it is inappropriate to require discounting of deferred tax assets and liabilities. To permit, but not to require, discounting would result in deferred tax assets and liabilities which would not be comparable between enterprises. Therefore, this Standard does not require or permit the discounting of deferred tax assets and liabilities.

Review of Deferred Tax Assets

26. The carrying amount of deferred tax assets should be reviewed at each balance sheet date. An enterprise should write-down the carrying amount of a deferred tax asset to the extent that it is no longer reasonably certain or virtually certain, as the case may be (see paragraphs 15 to 18), that sufficient future taxable income will be available against which deferred tax asset can be realised. Any such write-down may be reversed to the extent that it becomes reasonably certain or virtually certain, as the case may be (see paragraphs 15 to 18), that sufficient future

IndiaCode

taxable income will be available.

Presentation and Disclosure

27. An enterprise should offset assets and liabilities representing current tax if the enterprise:

(a) has a legally enforceable right to set off the recognised amounts; and

(b) intends to settle the asset and the liability on a net basis.

28. An enterprise will normally have a legally enforceable right to set off an asset and liability representing current tax when they relate to income taxes levied under the same governing taxation laws and the taxation laws permit the enterprise to make or receive a single net payment.

29. An enterprise should offset deferred tax assets and deferred tax liabilities if:

(a) the enterprise has a legally enforceable right to set off assets against liabilities representing current tax; and

(b) the deferred tax assets and the deferred tax liabilities relate to taxes on income levied by the same governing taxation laws.

30. Deferred tax assets and liabilities should be distinguished from assets and liabilities representing current tax for the period. Deferred tax assets and liabilities should be disclosed under a separate heading in the balance sheet of the enterprise, separately from current assets and current liabilities.

31. The break-up of deferred tax assets and deferred tax liabilities into major components of the respective balances should be disclosed in the notes to accounts.

32. The nature of the evidence supporting the recognition of deferred tax assets should be disclosed, if an enterprise has unabsorbed depreciation or carry forward of losses under tax laws.

Transitional Provisions[27]

33. On the first occasion that the taxes on income are accounted for in accordance with this Standard, the enterprise should recognise, in the financial statements, the deferred tax balance that has accumulated prior to the adoption of this Standard as deferred tax asset/liability with a corresponding credit/charge to the revenue reserves, subject to the consideration of prudence in case of deferred tax assets (see paragraphs 15-18). The amount so credited/charged to the revenue reserves should be the same as that which would have resulted if this Standard had been in effect from the beginning.

34. For the purpose of determining accumulated deferred tax in the period in which this Standard is applied for the first time, the opening balances of assets and liabilities for accounting purposes and for tax purposes are compared and the differences, if any, are determined. The tax effects of these differences, if any, should be recognised as deferred tax assets or liabilities, if these differences are timing differences. For example, in the year in which an enterprise adopts this Standard, the opening balance of a fixed asset is Rs. 100 for accounting purposes and Rs. 60 for tax purposes. The difference is because the enterprise applies written down value method of depreciation for calculating taxable income whereas for accounting purposes straight line method is used. This difference will reverse in future when depreciation for tax purposes will be lower as compared to the depreciation for accounting purposes. In the above case, assuming that enacted tax rate for the year is 40% and that there are no other timing differences, deferred tax liability of Rs. 16 [(Rs. 100 - Rs. 60) x 40%] would be recognised. Another example is an expenditure that has already been written off for accounting purposes in the year of its incurrence but is allowable for tax purposes over a period of time. In this case, the asset representing that expenditure would have a balance only for tax purposes but not for accounting purposes. The difference between balance of the asset for tax purposes and the balance (which is nil) for accounting purposes would be a timing difference which will reverse in future when this expenditure would be allowed for tax purposes. Therefore, a deferred tax asset would be recognised in respect of this difference subject to the consideration of prudence (see paragraphs 15 - 18).

Illustration I

Examples of Timing Differences

Note: This illustration does not form part of the Accounting Standard. The purpose of this illustration is to assist in clarifying the meaning of the Accounting Standard. The sections mentioned hereunder are references to sections in the Income-tax Act, 1961, as amended by the Finance Act, 2001.

---

[27] Transitional Provisions given in Paragraphs 33-34 are relevant only for standards notified under Companies (Accounting Standards) Rules, 2006, as amended from time to time.

1. Expenses debited in the statement of profit and loss for accounting purposes but allowed for tax purposes in subsequent years, e.g.

a) Expenditure of the nature mentioned in section 43B (e.g. taxes, duty, cess, fees, etc.) accrued in the statement of profit and loss on mercantile basis but allowed for tax purposes in subsequent years on payment basis.

b) Payments to non-residents accrued in the statement of profit and loss on mercantile basis, but disallowed for tax purposes under section 40(a)(i) and allowed for tax purposes in subsequent years when relevant tax is deducted or paid.

c) Provisions made in the statement of profit and loss in anticipation of liabilities where the relevant liabilities are allowed in subsequent years when they crystallize.

2. Expenses amortized in the books over a period of years but are allowed for tax purposes wholly in the first year (e.g. substantial advertisement expenses to introduce a product, etc. treated as deferred revenue expenditure in the books) or if amortization for tax purposes is over a longer or shorter period (e.g. preliminary expenses under section 35D, expenses incurred for amalgamation under section 35DD, prospecting expenses under section 35E).

3. Where book and tax depreciation differ. This could arise due to:

a) Differences in depreciation rates.

b) Differences in method of depreciation e.g. SLM or WDV.

c) Differences in method of calculation e.g. calculation of depreciation with reference to individual assets in the books but on block basis for tax purposes and calculation with reference to time in the books but on the basis of full or half depreciation under the block basis for tax purposes.

d) Differences in composition of actual cost of assets.

4. Where a deduction is allowed in one year for tax purposes on the basis of a deposit made under a permitted deposit scheme (e.g. tea development account scheme under section 33AB or site restoration fund scheme under section 33ABA) and expenditure out of withdrawal from such deposit is debited in the statement of profit and loss in subsequent years.

5. Income credited to the statement of profit and loss but taxed only in subsequent years e.g. conversion of capital assets into stock in trade.

6. If for any reason the recognition of income is spread over a number of years in the accounts but the income is fully taxed in the year of receipt.

Illustration II

Note: This illustration does not form part of the Accounting Standard. Its purpose is to illustrate the application of the Accounting Standard. Extracts from statement of profit and loss are provided to show the effects of the transactions described below.

Illustration 1

A company, ABC Ltd., prepares its accounts annually on 31st March. On 1st April, 20x1, it purchases a machine at a cost of Rs. 1,50,000. The machine has a useful life of three years and an expected scrap value of zero. Although it is eligible for a 100% first year depreciation allowance for tax purposes, the straight-line method is considered appropriate for accounting purposes. ABC Ltd. has profits before depreciation and taxes of Rs. 2,00,000 each year and the corporate tax rate is 40 per cent each year.

The purchase of machine at a cost of Rs. 1,50,000 in 20x1 gives rise to a tax saving of Rs. 60,000. If the cost of the machine is spread over three years of its life for accounting purposes, the amount of the tax saving should also be spread over the same period as shown below:

Statement of Profit and Loss

(for the three years ending 31st March, 20x1, 20x2, 20x3)

(Rupees in thousands)

	20x1	20x2	20x3
Profit before depreciation and taxes	200	200	200
Less: Depreciation for accounting purposes	50	50	50
Profit before taxes	150	150	150
Less: Tax expense			

Current tax			
0.40 (200 – 150)	20		
0.40 (200)		80	80
Deferred tax			
Tax effect of timing differences originating during the year			
0.40 (150 – 50)	40		
Tax effect of timing differences reversing during the year			
0.40 (0 – 50)		(20)	(20)
Tax expense	60	60	60
after tax	90	90	90
Net timing differences	100	50	0
Deferred tax liability	40	20	0

In 20x1, the amount of depreciation allowed for tax purposes exceeds the amount of depreciation charged for accounting purposes by Rs. 1,00,000 and, therefore, taxable income is lower than the accounting income. This gives rise to a deferred tax liability of Rs. 40,000. In 20x2 and 20x3, accounting income is lower than taxable income because the amount of depreciation charged for accounting purposes exceeds the amount of depreciation allowed for tax purposes by Rs. 50,000 each year. Accordingly, deferred tax liability is reduced by Rs. 20,000 each in both the years. As may be seen, tax expense is based on the accounting income of each period.

In 20x1, the profit and loss account is debited and deferred tax liability account is credited with the amount of tax on the originating timing difference of Rs. 1,00,000 while in each of the following two years, deferred tax liability account is debited and profit and loss account is credited with the amount of tax on the reversing timing difference of Rs. 50,000.

The following Journal entries will be passed:

Year 20x1

Profit and Loss A/c	Dr.	20,000	
To Current tax A/c			20,000
(Being the amount of taxes payable for the year 20x1 provided for)			
Profit and Loss A/c	Dr.	40,000	
To Deferred tax A/c			40,000
(Being the deferred tax liability created for originating timing difference of Rs. 1,00,000)			

Year 20x2

Profit and Loss A/c	Dr.	80,000	
To Current tax A/c			80,000
(Being the amount of taxes payable for the year 20x2 provided for)			
Deferred tax A/c	Dr.	20,000	
To Profit and Loss A/c			20,000
(Being the deferred tax liability adjusted for reversing timing difference of Rs. 50,000)			

Year 20x3

Profit and Loss A/c	Dr.	80,000	
To Current tax A/c			80,000
(Being the amount of taxes payable for the year 20x3 provided for)			

Deferred tax A/c	Dr.	20,000	
To Profit and Loss A/c			20,000

(Being the deferred tax liability adjusted for reversing timing difference of Rs. 50,000)

In year 20x1, the balance of deferred tax account i.e., Rs. 40,000 would be shown separately from the current tax payable for the year in terms of paragraph 30 of the Standard. In Year 20x2, the balance of deferred tax account would be Rs. 20,000 and be shown separately from the current tax payable for the year as in year 20x1. In Year 20x3, the balance of deferred tax liability account would be nil.

Illustration 2

In the above illustration, the corporate tax rate has been assumed to be same in each of the three years. If the rate of tax changes, it would be necessary for the enterprise to adjust the amount of deferred tax liability carried forward by applying the tax rate that has been enacted or substantively enacted by the balance sheet date on accumulated timing differences at the end of the accounting year (see paragraphs 21 and 22). For example, if in Illustration 1, the substantively enacted tax rates for 20x1, 20x2 and 20x3 are 40%, 35% and 38% respectively, the amount of deferred tax liability would be computed as follows:

The deferred tax liability carried forward each year would appear in the balance sheet as under:

31st March, 20x1 = 0.40 (1,00,000)= Rs. 40,000

31st March, 20x2 = 0.35 (50,000) = Rs. 17,500

31st March, 20x3 = 0.38 (Zero) = Rs. Zero

Accordingly, the amount debited/(credited) to the profit and loss account (with corresponding credit or debit to deferred tax liability) for each year would be as under:

31st March, 20x1 Debit = Rs. 40,000

31st March, 20x2 (Credit) = Rs. (22,500)

31st March, 20x3 (Credit) = Rs. (17,500)

IndiaCode

Illustration 3

A company, ABC Ltd., prepares its accounts annually on 31st March. The company has incurred a loss of Rs. 1,00,000 in the year 20x1 and made profits of Rs. 50,000 and 60,000 in year 20x2 and year 20x3 respectively. It is assumed that under the tax laws, loss can be carried forward for 8 years and tax rate is 40% and at the end of year 20x1, it was virtually certain, supported by convincing evidence, that the company would have sufficient taxable income in the future years against which unabsorbed depreciation and carry forward of losses can be set-off. It is also assumed that there is no difference between taxable income and accounting income except that set- off of loss is allowed in years 20x2 and 20x3 for tax purposes.

Statement of Profit and Loss

(for the three years ending 31st March, 20x1, 20x2, 20x3)

(Rupees in thousands)

	20x1	20x2	20x3
Profit (loss)	(100)	50	60
Less: Current tax	—	—	(4)
Deferred tax:			
Tax effect of timing differences originating during the year	40		
Tax effect of timing differences reversing during the year		(20)	(20)
Profit (loss) after tax effect	(60)	30	36

Illustration 4

Note: The purpose of this illustration is to assist in clarifying the meaning of the explanation to paragraph 13 of the Standard.

Facts:

1. The income before depreciation and tax of an enterprise for 15 years is Rs. 1000 lakhs per year, both as per the books of account and for income-tax purposes.
2. The enterprise is subject to 100 percent tax-holiday for the first 10 years under section 80-IA. Tax rate is assumed to be 30 percent.
3. At the beginning of year 1, the enterprise has purchased one machine for Rs. 1500 lakhs. Residual value is assumed to be nil.
4. For accounting purposes, the enterprise follows an accounting policy to provide depreciation on the machine over 15 years on straight-line basis.
5. For tax purposes, the depreciation rate relevant to the machine is 25% on written down value basis.

The following computations will be made, ignoring the provisions of section 115JB (MAT), in this regard:

Table 1

Computation of depreciation on the machine for accounting purposes and tax purposes

(Amounts in Rs. lakhs)

Year	Depreciation for accounting purposes	Depreciation for tax purposes
1	100	375
2	100	281
3	100	211
4	100	158
5	100	119
6	100	89
7	100	67
8	100	50
9	100	38
10	100	28
11	100	21
12	100	16
13	100	12
14	100	9
15	100	7

IndiaCode

At the end of the 15th year, the carrying amount of the machinery for accounting purposes would be nil whereas for tax purposes, the carrying amount is Rs. 19 lakhs which is eligible to be allowed in subsequent years.

Table 2

Computation of Timing differences

(Amounts in Rs. lakhs)

1	2	3	4	5	6	7	8
	9						

Year	Income before Depreciation and tax (both for accounting purposes and tax purposes)	Accounting Income after depreciation	Gross Total Income (after deducting depreciation under tax laws)	Deduction under section 80-IA	Taxable Income (4-5)	Total Difference between accounting income and taxable income (3-6)	Permanent Difference (deduction pursuant to section 80-IA)	Timing Difference(due to different amounts of depreciation for accounting purposes and tax purposes) (O= Originating and R=Reversing)
1	1000	900	625	625	Nil	900	625	275 (O)
2	1000	900	719	719	Nil	900	719	181 (O)
3	1000	900	789	789	Nil	900	789	111 (O)
4	1000	900	842	842	Nil	900	842	58 (O)
5	1000	900	881	881	Nil	900	881	19(O)
6	1000	900	911	911	Nil	900	911	11 (R)
7	1000	900	933	933	Nil	900	933	33 (R)
8	1000	900	950	950	Nil	900	950	50 (R)
9	1000	900	962	962	Nil	900	962	62 (R)
10	1000	900	972	972	Nil	900	972	72 (R)
11	1000	900	979	Nil	979	-79	Nil	79 (R)
12	1000	900	984	Nil	984	-84	Nil	84 (R)
13	1000	900	988	Nil	988	-88	Nil	88 (R)
14	1000	900	991	Nil	991	-91	Nil	91 (R)
15	1000	900	993	Nil	993	-93	Nil	74 (R) 19 (O)

IndiaCode

Notes:

1. Timing differences originating during the tax holiday period are Rs.644 lakhs, out of which Rs. 228 lakhs are reversing during the tax holiday period and Rs. 416 lakhs are reversing after the tax holiday period. Timing difference of Rs. 19 lakhs is originating in the 15th year which would reverse in subsequent years when for accounting purposes depreciation would be nil but for tax purposes the written down value of the machinery of Rs. 19 lakhs would be eligible to be allowed as depreciation.

2. As per the Standard, deferred tax on timing differences which reverse during the tax holiday period should not be recognised. For this purpose, timing differences which originate first are considered to reverse first. Therefore, the reversal of timing difference of Rs. 228 lakhs during the tax holiday period, would be considered to be out of the timing difference which originated in year 1. The rest of the timing difference originating in year 1 and timing differences originating in years 2 to 5 would be considered to be reversing after the tax holiday period. Therefore, in year 1, deferred tax would be recognised on the timing difference of Rs. 47 lakhs (Rs. 275 lakhs - Rs. 228 lakhs) which would reverse after the tax holiday period. Similar computations would be made for the subsequent years. The deferred tax assets/liabilities to be recognised during different years would be computed as per the following Table.

Table 3

Computation of current tax and deferred tax

(Amounts in Rs. lakhs)

Year	Current tax (Taxable Income x 30%)	Deferred tax (Timing difference x 30%)	Accumulated Deferred tax (L= Liability and	Tax expense
1	Nil	47 × 30%= 14 (see note 2 above)	14 (L)	14
2	Nil	181 × 30%=54	68 (L)	54
3	Nil	111× 30%=33	101 (L)	33
4	Nil	58 × 30%= 17	118 (L)	17
5	Nil	19 × 30%=6	124 (L)	6

6	Nil	Nil[1]	124 (L)	Nil
7	Nil	Nil[1]	124 (L)	Nil
8	Nil	Nil[1]	124 (L)	Nil
9	Nil	Nil[1]	124 (L)	Nil
10	Nil	Nil[1]	124 (L)	Nil
11	294	–79 × 30%= -24	100 (L)	270
12	295	–84 × 30%= -25	75 (L)	270
13	296	–88 × 30%= -26	49 (L)	270
14	297	–91 × 30%= -27	22 (L)	270
15	298	–74 × 30%= -22	Nil	270
		–19 × 30%= -6	6(A)[2]	

1. No deferred tax is recognised since in respect of timing differences reversing during the tax holiday period, no deferred tax was recognised at their origination.

2. Deferred tax asset of Rs. 6 lakhs would be recognised at the end of year 15 subject to consideration of prudence as per AS 22. If it is so recognised, the said deferred tax asset would be realized in subsequent periods when for tax purposes depreciation would be allowed but for accounting purposes no depreciation would be recognised.

Accounting Standard (AS) 23

Accounting for Investments in Associates in Consolidated Financial Statements[28]

*(This Accounting Standard includes paragraphs set in **bold italic** type and plain type, which have equal authority. Paragraphs in bold italic type indicate the main principles. This Accounting Standard should be read in the context of its objective and the General Instructions contained in part A of the Annexure to the Notification.)*

Objective

The objective of this Standard is to set out principles and procedures for recognising, in the consolidated financial statements, the effects of the investments in associates on the financial position and operating results of a group.

Scope

1. This Standard should be applied in accounting for investments in associates in the preparation and presentation of consolidated financial statements by an investor.

2. This Standard does not deal with accounting for investments in associates in the preparation and presentation of separate financial statements by an investor.[29]

Definitions

3. For the purpose of this Standard, the following terms are used with the meanings specified:

3.1 An associate is an enterprise in which the investor has significant influence and which is neither a subsidiary nor a joint venture[30] of the investor.

3.2 Significant influence is the power to participate in the financial and/ or operating policy decisions of the investee but not control over those policies.

3.3 Control:

(a) the ownership, directly or indirectly through subsidiary(ies), of more than one-half of the voting power of an enterprise; or

(b) control of the composition of the board of directors in the case of a company or of the composition of the corresponding governing body in case of any other enterprise so as to obtain economic benefits from its activities.

3.4 A subsidiary is an enterprise that is controlled by another enterprise (known as the parent).

[28] It is clarified that AS 23 is mandatory if an enterprise presents consolidated financial statements. In other words, if an enterprise presents consolidated financial statements, it should account for investments in associates in the consolidated financial statements in accordance with AS 23.

[29] Accounting Standard (AS) 13, *Accounting for Investments*, is applicable for accounting for investments in associates in the separate financial statements of an investor.

[30] Accounting Standard (AS) 27, *Financial Reporting of Interests in Joint Ventures*, defines the term 'joint venture' and specifies the requirements relating to accounting for investments in joint ventures.

3.5 A parent is an enterprise that has one or more subsidiaries.

3.6 A group is a parent and all its subsidiaries.

3.7 Consolidated financial statements are the financial statements of a group presented as those of a single enterprise.

3.8 The equity method is a method of accounting whereby the investment is initially recorded at cost, identifying any goodwill/capital reserve arising at the time of acquisition. The carrying amount of the investment is adjusted thereafter for the post acquisition change in the investor's share of net assets of the investee. The consolidated statement of profit and loss reflects the investor's share of the results of operations of the investee.

3.9 Equity is the residual interest in the assets of an enterprise after deducting all its liabilities.

4. For the purpose of this Standard significant influence does not extend to power to govern the financial and/or operating policies of an enterprise. Significant influence may be gained by share ownership, statute or agreement. As regards share ownership, if an investor holds, directly or indirectly through subsidiary(ies), 20% or more of the voting power of the investee, it is presumed that the investor has significant influence, unless it can be clearly demonstrated that this is not the case. Conversely, if the investor holds, directly or indirectly through subsidiary(ies), less than 20% of the voting power of the investee, it is presumed that the investor does not have significant influence, unless such influence can be clearly demonstrated. A substantial or majority ownership by another investor does not necessarily preclude an investor from having significant influence.

Explanation:

In considering the share ownership, the potential equity shares of the investees held by the investor are not taken into account for determining the voting power of the investor.

5. The existence of significant influence by an investor is usually evidenced in one or more of the following ways:

(a) Representation on the board of directors or corresponding governing body of the investee;

(b) participation in policy making processes;

(c) material transactions between the investor and the investee;

(d) interchange of managerial personnel; or

(e) provision of essential technical information.

6. Under the equity method, the investment is initially recorded at cost, identifying any goodwill/capital reserve arising at the time of acquisition and the carrying amount is increased or decreased to recognise the investor's share of the profits or losses of the investee after the date of acquisition. Distributions received from an investee reduce the carrying amount of the investment. Adjustments to the carrying amount may also be necessary for alterations in the investor's proportionate interest in the investee arising from changes in the investee's equity that have not been included in the statement of profit and loss. Such changes include those arising from the revaluation of fixed assets and investments, from foreign exchange translation differences and from the adjustment of differences arising on amalgamations.

Explanations:

(a) Adjustments to the carrying amount of investment in an investee arising from changes in the investee's equity that have not been included in the statement of profit and loss of the investee are directly made in the carrying amount of investment without routing it through the consolidated statement of profit and loss. The corresponding debit/ credit is made in the relevant head of the equity interest in the consolidated balance sheet. For example, in case the adjustment arises because of revaluation of fixed assets by the investee, apart from adjusting the carrying amount of investment to the extent of proportionate share of the investor in the revalued amount, the corresponding amount of revaluation reserve is shown in the consolidated balance sheet.

(b) In case an associate has made a provision for proposed dividend in its financial statements, the investor's share of the results of operations of the associate is computed without taking in to consideration the proposed dividend.

Accounting for Investments – Equity Method

7. An investment in an associate should be accounted for in consolidated financial statements under the equity method except when:

(a) the investment is acquired and held exclusively with a view to its subsequent disposal in the near future; or

IndiaCode

(b) the associate operates under severe long-term restrictions that significantly impair its ability to transfer funds to the investor.

Investments in such associates should be accounted for in accordance with Accounting Standard (AS) 13, Accounting for Investments. The reasons for not applying the equity method in accounting for investments in an associate should be disclosed in the consolidated financial statements.

Explanation:

The period of time, which is considered as near future for the purposes of this Standard, primarily depends on the facts and circumstances of each case. However, ordinarily, the meaning of the words 'near future' is considered as not more than twelve months from acquisition of relevant investments unless a longer period can be justified on the basis of facts and circumstances of the case. The intention with regard to disposal of the relevant investment is considered at the time of acquisition of the investment. Accordingly, if the relevant investment is acquired without an intention to its subsequent disposal in near future, and subsequently, it is decided to dispose off the investment, such an investment is not excluded from application of the equity method, until the investment is actually disposed off. Conversely, if the relevant investment is acquired with an intention to its subsequent disposal in near future, however, due to some valid reasons, it could not be disposed off within that period, the same will continue to be excluded from application of the equity method, provided there is no change in the intention.

8. Recognition of income on the basis of distributions received may not be an adequate measure of the income earned by an investor on an investment in an associate because the distributions received may bear little relationship to the performance of the associate. As the investor has significant influence over the associate, the investor has a measure of responsibility for the associate's performance and, as a result, the return on its investment. The investor accounts for this stewardship by extending the scope of its consolidated financial statements to include its share of results of such an associate and so provides an analysis of earnings and investment from which more useful ratios can be calculated. As a result, application of the equity method in consolidated financial statements provides more informative reporting of the net assets and net income of the investor.

9. An investor should discontinue the use of the equity method from the date that:

(a) it ceases to have significant influence in an associate but retains, either in whole or in part, its investment; or

(b) the use of the equity method is no longer appropriate because the associate operates under severe long-term restrictions that significantly impair its ability to transfer funds to the investor.

From the date of discontinuing the use of the equity method, investments in such associates should be accounted for in accordance with Accounting Standard (AS) 13, Accounting for Investments. For this purpose, the carrying amount of the investment at that date should be regarded as cost thereafter.

Application of the Equity Method

10. Many of the procedures appropriate for the application of the equity method are similar to the consolidation procedures set out in Accounting Standard (AS) 21, Consolidated Financial Statements. Furthermore, the broad concepts underlying the consolidation procedures used in the acquisition of a subsidiary are adopted on the acquisition of an investment in an associate.

11. An investment in an associate is accounted for under the equity method from the date on which it falls within the definition of an associate. On acquisition of the investment any difference between the cost of acquisition and the investor's share of the equity of the associate is described as goodwill or capital reserve, as the case may be.

12. Goodwill/capital reserve arising on the acquisition of an associate by an investor should be included in the carrying amount of investment in the associate but should be disclosed separately.

13. In using equity method for accounting for investment in an associate, unrealised profits and losses resulting from transactions between the investor (or its consolidated subsidiaries) and the associate should be eliminated to the extent of the investor's interest in the associate. Unrealised losses should not be eliminated if and to the extent the cost of the transferred asset cannot be recovered.

14. The most recent available financial statements of the associate are used by the investor in applying the equity method; they are usually drawn up to the same date as the financial statements of the investor. When the reporting dates of the investor and the associate are different, the associate often prepares, for the use of the investor, statements as at the same date as the financial statements of the investor. When it is impracticable to do this, financial statements drawn up to a different reporting date may be used. The consistency principle requires that the length of the reporting periods, and any difference in the reporting dates, are consistent from period to period.

IndiaCode

15. When financial statements with a different reporting date are used, adjustments are made for the effects of any significant events or transactions between the investor (or its consolidated subsidiaries) and the associate that occur between the date of the associate's financial statements and the date of the investor's consolidated financial statements.

16. The investor usually prepares consolidated financial statements using uniform accounting policies for the like transactions and events in similar circumstances. In case an associate uses accounting policies other than those adopted for the consolidated financial statements for like transactions and events in similar circumstances, appropriate adjustments are made to the associate's financial statements when they are used by the investor in applying the equity method. If it is not practicable to do so, that fact is disclosed along with a brief description of the differences between the accounting policies.

17. If an associate has outstanding cumulative preference shares held outside the group, the investor computes its share of profits or losses after adjusting for the preference dividends whether or not the dividends have been declared.

18. If, under the equity method, an investor's share of losses of an associate equals or exceeds the carrying amount of the investment, the investor ordinarily discontinues recognising its share of further losses and the investment is reported at nil value. Additional losses are provided for to the extent that the investor has incurred obligations or made payments on behalf of the associate to satisfy obligations of the associate that the investor has guaranteed or to which the investor is otherwise committed. If the associate subsequently reports profits, the investor resumes including its share of those profits only after its share of the profits equals the share of net losses that have not been recognised.

19. Where an associate presents consolidated financial statements, the results and net assets to be taken into account are those reported in that associate's consolidated financial statements.

20. The carrying amount of investment in an associate should be reduced to recognise a decline, other than temporary, in the value of the investment, such reduction being determined and made for each investment individually.

Contingencies

21. In accordance with Accounting Standard (AS) 4, *Contingencies and Events Occurring After the Balance Sheet Date*[31], the investor discloses in the consolidated financial statements:

(a) its share of the contingencies and capital commitments of an associate for which it is also contingently liable; and

(b) those contingencies that arise because the investor is severally liable for the liabilities of the associate.

Disclosure

22. In addition to the disclosures required by paragraphs 7 and 12, an appropriate listing and description of associates including the proportion of ownership interest and, if different, the proportion of voting power held should be disclosed in the consolidated financial statements.

23. Investments in associates accounted for using the equity method should be classified as long-term investments and disclosed separately in the consolidated balance sheet. The investor's share of the profits or losses of such investments should be disclosed separately in the consolidated statement of profit and loss. The investor's share of any extraordinary or prior period items should also be separately disclosed.

24. The name(s) of the associate(s) of which reporting date(s) is/are different from that of the financial statements of an investor and the differences in reporting dates should be disclosed in the consolidated financial statements.

25. In case an associate uses accounting policies other than those adopted for the consolidated financial statements for like transactions and events in similar circumstances and it is not practicable to make appropriate adjustments to the associate's financial statements, the fact should be disclosed along with a brief description of the differences in the accounting policies.

Transitional Provisions[32]

---

[31] All paragraphs of AS 4 that deal with contingencies are applicable only to the extent not covered by other Accounting Standards prescribed by the Central Government. For example, the impairment of financial assets such as impairment of receivables (commonly known as provision for bad and doubtful debts) is governed by AS 4.

[32] Transitional Provisions given in Paragraph 26 are relevant for standards notified under Companies (Accounting Standards) Rules, 2006 (as amended from time to time) as well as Companies (Accounting Standards) Rules, 2021.

26. On the first occasion when investment in an associate is accounted for in consolidated financial statements in accordance with this Standard the carrying amount of investment in the associate should be brought to the amount that would have resulted had the equity method of accounting been followed as per this Standard since the acquisition of the associate. The corresponding adjustment in this regard should be made in the retained earnings in the consolidated financial statements.

Accounting Standard (AS) 24

Discontinuing Operations

*(This Accounting Standard includes paragraphs set in **bold italic** type and plain type, which have equal authority. Paragraphs in bold italic type indicate the main principles. This Accounting Standard should be read in the context of its objective and the General Instructions contained in part A of the Annexure to the Notification.)*

Objective

The objective of this Standard is to establish principles for reporting information about discontinuing operations, thereby enhancing the ability of users of financial statements to make projections of an enterprise's cash flows, earnings-generating capacity, and financial position by segregating information about discontinuing operations from information about continuing operations.

Scope

1. This Standard applies to all discontinuing operations of an enterprise.

2. The requirements related to cash flow statement contained in this Standard are applicable where an enterprise prepares and presents a cash flow statement.

Definitions

Discontinuing Operation

3. A discontinuing operation is a component of an enterprise:

(a) that the enterprise, pursuant to a single plan, is:

(i) disposing of substantially in its entirety, such as by selling the component in a single transaction or by demerger or spin-off of ownership of the component to the enterprise's shareholders; or

(ii) disposing of piecemeal, such as by selling off the component's assets and settling its liabilities individually; or

(iii) terminating through abandonment; and

(b) that represents a separate major line of business or geographical area of operations; and

(c) that can be distinguished operationally and for financial reporting purposes.

4. Under criterion (a) of the definition (paragraph 3 (a)), a discontinuing operation may be disposed of in its entirety or piecemeal, but always pursuant to an overall plan to discontinue the entire component.

5. If an enterprise sells a component substantially in its entirety, the result can be a net gain or net loss. For such a discontinuance, a binding sale agreement is entered into on a specific date, although the actual transfer of possession and control of the discontinuing operation may occur at a later date. Also, payments to the seller may occur at the time of the agreement, at the time of the transfer, or over an extended future period.

6. Instead of disposing of a component substantially in its entirety, an enterprise may discontinue and dispose of the component by selling its assets and settling its liabilities piecemeal (individually or in small groups). For piecemeal disposals, while the overall result may be a net gain or a net loss, the sale of an individual asset or settlement of an individual liability may have the opposite effect. Moreover, there is no specific date at which an overall binding sale agreement is entered into. Rather, the sales of assets and settlements of liabilities may occur over a period of months or perhaps even longer. Thus, disposal of a component may be in progress at the end of a financial reporting period. To qualify as a discontinuing operation, the disposal must be pursuant to a single co-ordinated plan.

7. An enterprise may terminate an operation by abandonment without substantial sales of assets. An abandoned operation would be a discontinuing operation if it satisfies the criteria in the definition. However, changing the scope of an operation or the manner in which it is conducted is not an abandonment because that operation, although changed, is continuing.

8. Business enterprises frequently close facilities, abandon products or even product lines, and change the size of

IndiaCode

their work force in response to market forces. While those kinds of terminations generally are not, in themselves, discontinuing operations as that term is defined in paragraph 3 of this Standard, they can occur in connection with a discontinuing operation.

9. Examples of activities that do not necessarily satisfy criterion (a) of paragraph 3, but that might do so in combination with othercircumstances, include:

(a) gradual or evolutionary phasing out of a product line or class of service;

(b) discontinuing, even if relatively abruptly, several products within an ongoing line of business;

(c) shifting of some production or marketing activities for a particular line of business from one location to another; and

(d) closing of a facility to achieve productivity improvements or other cost savings.

An example in relation to consolidated financial statements is selling a subsidiary whose activities are similar to those of the parent or other subsidiaries.

10. A reportable business segment or geographical segment as defined in Accounting Standard (AS) 17, *Segment Reporting*, would normally satisfy criterion (b) of the definition of a discontinuing operation (paragraph 3), that is, it would represent a separate major line of business or geographical area of operations. A part of such a segment may also satisfy criterion (b) of the definition. For an enterprise that operates in a single business or geographical segment and therefore does not report segment information, a major product or service line may also satisfy the criteria of the definition.

11. A component can be distinguished operationally and for financial reporting purposes - criterion (c) of the definition of a discontinuing operation (paragraph 3) - if all the following conditions are met:

(a) the operating assets and liabilities of the component can be directly attributed to it;

(b) its revenue can be directly attributed to it;

(c) at least a majority of its operating expenses can be directly attributed to it.

12. Assets, liabilities, revenue, and expenses are directly attributable to a component if they would be eliminated when the component is sold, abandoned or otherwise disposed of. If debt is attributable to a component, the related interest and other financing costs are similarly attributed to it.

13. Discontinuing operations, as defined in this Standard are expected to occur relatively infrequently. All infrequently occurring events do not necessarily qualify as discontinuing operations. Infrequently occurring events that do not qualify as discontinuing operations may result in items of income or expense that require separate disclosure pursuant to Accounting Standard (AS) 5, *Net Profit or Loss for the Period, Prior Period Items and Changes in Accounting Policies,* because their size, nature, or incidence make them relevant to explain the performance of the enterprise for the period.

14. The fact that a disposal of a component of an enterprise is classified as a discontinuing operation under this Standard does not, in itself, bring into question the enterprise's ability to continue as a going concern.

Initial Disclosure Event

15. With respect to a discontinuing operation, the initial disclosure event is the occurrence of one of the following, whichever occurs earlier:

(a) the enterprise has entered into a binding sale agreement for substantially all of the assets attributable to the discontinuing operation; or

(b) the enterprise's board of directors or similar governing body has both (i) approved a detailed, formal plan for the discontinuance and (ii) made an announcement of the plan.

16. A detailed, formal plan for the discontinuance normally includes:

(a) identification of the major assets to be disposed of;

(b) the expected method of disposal;

(c) the period expected to be required for completion of the disposal;

(d) the principal locations affected;

(e) the location, function, and approximate number of employees who will be compensated for terminating their services; and

(f) the estimated proceeds or salvage to be realised by disposal.

17. An enterprise's board of directors or similar governing body is considered to have made the announcement of a detailed, formal plan for discontinuance, if it has announced the main features of the plan to those affected by it, such as, lenders, stock exchanges, creditors, trade unions, etc., in a sufficiently specific manner so as to make the enterprise demonstrably committed to the discontinuance.

Recognition and Measurement

18. An enterprise should apply the principles of recognition and measurement that are set out in other Accounting Standards for the purpose of deciding as to when and how to recognise and measure the changes in assets and liabilities and the revenue, expenses, gains, losses and cash flows relating to a discontinuing operation.

19. This Standard does not establish any recognition and measurement principles. Rather, it requires that an enterprise follow recognition and measurement principles established in other Accounting Standards, e.g., Accounting Standard (AS) 4, *Contingencies and Events Occurring After the Balance Sheet Date*[33] and Accounting Standard (AS) 28, *Impairment of Assets*.

Presentation and Disclosure

Initial Disclosure

20. An enterprise should include the following information relating to a discontinuing operation in its financial statements beginning with the financial statements for the period in which the initial disclosure event (as defined in paragraph 15) occurs:

(a) a description of the discontinuing operation(s);

(b) the business or geographical segment(s) in which it is reported as per AS 17, Segment Reporting;

(c) the date and nature of the initial disclosure event;

(d) the date or period in which the discontinuance is expected to be completed if known or determinable;

(e) the carrying amounts, as of the balance sheet date, of the total assets to be disposed of and the total liabilities to be settled;

(f) the amounts of revenue and expenses in respect of the ordinary activities attributable to the discontinuing operation during the current financial reporting period;

(g) the amount of pre-tax profit or loss from ordinary activities attributable to the discontinuing operation during the current financial reporting period, and the income tax expense[34] related thereto; and

(h) the amounts of net cash flows attributable to the operating, investing, and financing activities of the discontinuing operation during the current financial reporting period.

21. For the purpose of presentation and disclosures required by this Standard, the items of assets, liabilities, revenues, expenses, gains, losses, and cash flows can be attributed to a discontinuing operation only if they will be disposed of, settled, reduced, or eliminated when the discontinuance is completed. To the extent that such items continue after completion of the discontinuance, they are not allocated to the discontinuing operation. For example, salary of the continuing staff of a discontinuing operation.

22. If an initial disclosure event occurs between the balance sheet date and the date on which the financial statements for that period are approved by the board of directors in the case of a company or by the corresponding approving authority in the case of any other enterprise, disclosures as required by Accounting Standard (AS) 4, *Contingencies and Events Occurring After the Balance Sheet Date*, are made.

Other Disclosures

23. When an enterprise disposes of assets or settles liabilities attributable to a discontinuing operation or enters into binding agreements for the sale of such assets or the settlement of such liabilities, it should include, in its financial statements, the following information when the events occur:

(a) for any gain or loss that is recognised on the disposal of assets or settlement of liabilities attributable to the discontinuing operation, (i) the amount of the pre-tax gain or loss and (ii) income

[33] All paragraphs of AS 4 that deal with contingencies are applicable only to the extent not covered by other Accounting Standards prescribed by the Central Government. For example, the impairment of financial assets such as impairment of receivables (commonly known as provision for bad and doubtful debts) is governed by AS 4.

[34] As defined in Accounting Standard (AS) 22, *Accounting for Taxes on Income*.

tax expense relating to the gain or loss; and

(b) the net selling price or range of prices (which is after deducting expected disposal costs) of those net assets for which the enterprise has entered into one or more binding sale agreements, the expected timing of receipt of those cash flows and the carrying amount of those net assets on the balance sheet date.

24. The asset disposals, liability settlements, and binding sale agreements referred to in the preceding paragraph may occur concurrently with the initial disclosure event, or in the period in which the initial disclosure event occurs, or in a later period.

25. If some of the assets attributable to a discontinuing operation have actually been sold or are the subject of one or more binding sale agreements entered into between the balance sheet date and the date on which the financial statements are approved by the board of directors in case of a company or by the corresponding approving authority in the case of any other enterprise, the disclosures required by Accounting Standard (AS) 4, *Contingencies and Events Occurring After the Balance Sheet Date* are made.

Updating the Disclosures

26. In addition to the disclosures in paragraphs 20 and 23, an enterprise should include, in its financial statements, for periods subsequent to the one in which the initial disclosure event occurs, a description of any significant changes in the amount or timing of cash flows relating to the assets to be disposed or liabilities to be settled and the events causing those changes.

27. Examples of events and activities that would be disclosed include the nature and terms of binding sale agreements for the assets, a demerger or spin-off by issuing equity shares of the new company to the enterprise's shareholders, and legal or regulatory approvals.

28. The disclosures required by paragraphs 20, 23 and 26 should continue in financial statements for periods up to and including the period in which the discontinuance is completed. A discontinuance is completed when the plan is substantially completed or abandoned, though full payments from the buyer(s) may not yet have been received.

29. If an enterprise abandons or withdraws from a plan that was previously reported as a discontinuing operation, that fact, reasons therefor and its effect should be disclosed.

30. For the purpose of applying paragraph 29, disclosure of the effect includes reversal of any prior impairment loss (see AS 28 *Impairment of Assets*), or provision that was recognised with respect to the discontinuing operation.

Separate Disclosure for Each Discontinuing Operation

31. Any disclosures required by this Standard should be presented separately for each discontinuing operation.

Presentation of the Required Disclosures

32. The disclosures required by paragraphs 20, 23, 26, 28, 29 and 31 should be presented in the notes to the financial statements except the following which should be shown on the face of the statement of profit and loss:

(a) the amount of pre-tax profit or loss from ordinary activities attributable to the discontinuing operation during the current financial reporting period, and the income tax expense related thereto (paragraph 20 (g)); and

(b) the amount of the pre-tax gain or loss recognised on the disposal of assets or settlement of liabilities attributable to the discontinuing operation (paragraph 23 (a)).

Illustrative Presentation and Disclosures

33. Illustration 1 attached to the Standard illustrates the presentation and disclosures required by this Standard.

Restatement of Prior Periods

34. Comparative information for prior periods that is presented in financial statements prepared after the initial disclosure event should be restated to segregate assets, liabilities, revenue, expenses, and cash flows of continuing and discontinuing operations in a manner similar to that required by paragraphs 20, 23, 26, 28, 29, 31 and 32.

35. Illustration 2 attached to this Standard illustrates application of paragraph 34.

Disclosure in Interim Financial Reports

36. Disclosures in an interim financial report in respect of a discontinuing operation should be made in accordance with AS 25, Interim Financial Reporting, including:

(a) any significant activities or events since the end of the most recent annual reporting period relating to a discontinuing operation; and

(b) any significant changes in the amount or timing of cash flows relating to the assets to be disposed or liabilities to be settled.

Illustration 1

Illustrative Disclosures

This illustration does not form part of the Accounting Standard. Its purpose is to illustrate the application of the Accounting Standard to assist in clarifying its meaning.

Facts

- Delta Company has three segments, Food Division, Beverage Division and Clothing Division.
- Clothing Division, is deemed inconsistent with the long-term strategy of the Company. Management has decided, therefore, to dispose of the Clothing Division.
- On 15 November 20X1, the Board of Directors of Delta Company approved a detailed, formal plan for disposal of Clothing Division, and an announcement was made. On that date, the carrying amount of lakhs minus liabilities of Rs. 15 lakhs).
- The recoverable amount of the assets carried at Rs. 105 lakhs was estimated to be Rs. 85 lakhs and the Company had concluded that a pre-tax impairment loss of Rs. 20 lakhs should be recognised.
- At 31 December 20Xl, the carrying amount of the Clothing Division's net assets was Rs. 70 lakhs (assets of Rs. 85 lakhs minus liabilities of Rs. 15 lakhs). There was no further impairment of assets between 15 November 20X1 and 31 December 20X1 when the financial statements were prepared.
- On 30 September 20X2, the carrying amount of the net assets of the Clothing Division continued to be Rs. 70 lakhs. On that day, Delta Company signed a legally binding contract to sell the Clothing Division.
- The sale is expected to be completed by 31 January 20X3. The recoverable amount of the net assets is Rs. 60 lakhs. Based on that amount, an additional impairment loss of Rs. 10 lakhs is recognised.
- In addition, prior to 31 January 20X3, the sale contract obliges Delta Company to terminate employment of certain employees of the Clothing Division, which would result in termination cost of Rs. 30 lakhs, to be paid by 30 June 20X3. A liability and related expense in this regard is also recognised.
- The Company continued to operate the Clothing Division throughout 20X2.
- At 31 December 20X2, the carrying amount of the Clothing Division's net assets is Rs. 45 lakhs, consisting of assets of Rs. 80 lakhs minus liabilities of Rs. 35 lakhs (including provision for expected termination cost of Rs. 30 lakhs).
- Delta Company prepares its financial statements annually as of 31 December. It does not prepare a cash flow statement.
- Other figures in the following financial statements are assumed to illustrate the presentation and disclosures required by the Standard.

1. Financial Statements for 20X1

1.1 Statement of Profit and Loss for 20X1

The Statement of Profit and Loss of Delta Company for the year 20X1 can be presented as follows:

(Amount in Rs. lakhs)

		20X1		**20X0**
Turnover		140		150
Operating expenses		(92)		(105)
Impairment loss		(20)		(---)
Pre-tax profit from operating activities		28		45
Interest expense		(15)		(20)
Profit before tax		13		25
Profit from continuing operations before tax (see Note 5)	15		12	

Income tax expense	(7)		(6)	
Profit from continuing operations after tax		8		6
Profit (loss) from discontinuing operations	(2)		13	
before tax (see Note 5)				
Income tax expense	1		(7)	
Profit (loss) from discontinuing operations after tax		(1)		6
Profit from operating activities after tax		**7**		**12**

1.2 Note to Financial Statements for 20X1

The following is Note 5 to Delta Company's financial statements:

On 15 November 20Xl, the Board of Directors announced a plan to dispose of Company's Clothing Division, which is also a separate segment as per AS 17, *Segment Reporting*. The disposal is consistent with the Company's long-term strategy to focus its activities in the areas of food and beverage manufacture and distribution, and to divest unrelated activities. The Company is actively seeking a buyer for the Clothing Division and hopes to complete the sale by the end of 20X2. At 31 December 20Xl, the carrying amount of the assets of the Clothing Division was Rs. 85 lakhs (previous year Rs. 120 lakhs) and its liabilities were Rs. 15 lakhs (previous year Rs. 20 lakhs). The following statement shows the revenue and expenses of continuing and discontinuing operations:

(Amount in Rs. Lakhs)

IndiaCode

	Continuing Operations (Food and Beverage Divisions)		**Discontinuing Operation (Clothing Division)**		**Total**	
	20X1	**20X0**	**20X1**	**20X0**	**20X1**	**20X0**
Turnover	90	80	50	70	140	150
Operating Expenses	(65)	(60)	(27)	(45)	(92)	(105)
Impairment Loss	(---)	(---)	(20)	(---)	(20)	(---)
Pre-tax profit from operating activities	25	20	3	25	28	45
Interest expense	(10)	(8)	(5)	(12)	(15)	(20)
Profit (loss) before tax	15	12	(2)	13	13	25
Income tax expense	(7)	(6)	1	(7)	(6)	(13)
Profit (loss) from operating activities after tax	8	6	(1)	6	7	12

2. Financial Statements for 20X2

2.1 Statement of Profit and Loss for 20X2

The Statement of Profit and Loss of Delta Company for the year 20X2 can be presented as follows:

(Amount in Rs. lakhs)

	20X2	**20X1**
Turnover	140	140
Operating expenses	(90)	(92)

Impairment loss		(10)		(20)
Provision for employee termination benefits		(30)		--
Pre-tax profit from operating activities		10		28
Interest expense		(25)		(15)
Profit (loss) before tax		(15)		13
Profit from continuing operations before tax (see Note 5)	20		15	
Income tax expense	(6)		(7)	
Profit from continuing operations after tax		14		8
Loss from discontinuing operations before tax (see Note 5)	(35)		(2)	
Income tax expense	10		1	
Loss from discontinuing operations after tax		(25)		(1)
Profit (loss) from operating activities after tax		**(11)**		7

2.2 Note to Financial Statements for 20X2

The following is Note 5 to Delta Company's financial statements:

On 15 November 20Xl, the Board of Directors had announced a plan to dispose of Company's Clothing Division, which is also a separate segment as per AS 17, *Segment Reporting*. The disposal is consistent with the Company's long-term strategy to focus its activities in the areas of food and beverage manufacture and distribution, and to divest unrelated activities. On 30 September 20X2, the Company signed a contract to sell the Clothing Division to Z Corporation for Rs. 60 lakhs.

Clothing Division's assets are written down by Rs. 10 lakhs (previous year Rs. 20 lakhs) before income tax saving of Rs. 3 lakhs (previous year Rs. 6 lakhs) to their recoverable amount.

The Company has recognised provision for termination benefits of Rs. 30 lakhs (previous year Rs. nil) before income tax saving of Rs. 9 lakhs (previous year Rs. nil) to be paid by 30 June 20X3 to certain employees of the Clothing Division whose jobs will be terminated as a result of the sale.

At 31 December 20X2, the carrying amount of assets of the Clothing Division was Rs. 80 lakhs (previous year Rs. 85 lakhs) and its liabilities were Rs. 35 lakhs (previous year Rs. 15 lakhs), including the provision for expected termination cost of Rs. 30 lakhs (previous year Rs. nil). The process of selling the Clothing Division is likely to be completed by 31 January 20X3.

The following statement shows the revenue and expenses of continuing and discontinuing operations:

	Continuing Operations (Food and Beverage Divisions)		**Discontinuing Operation (Clothing Division)**		**Total**	
	20X2	**20X1**	**20X2**	**20X1**	**20X2**	**20X1**
Turnover	100	90	40	50	140	140
Operating Expenses	(60)	(65)	(30)	(27)	(90)	(92)
Impairment Loss	....	....	(10)	(20)	(10)	(20)
Provision for employee termination	....	....	(30)	....	(30)	....

Pre-tax profit (loss) from operating activities	40	25	(30)	3	10	28
Interest expense	(20)	(10)	(5)	(5)	(25)	(15)
Profit (loss) before tax	20	15	(35)	(2)	(15)	13
Income tax expense	(6)	(7)	10	1	4	(6)
Profit (loss) from operating activities after tax	14	8	(25)	(1)	(11)	7

3. Financial Statements for 20X3

The financial statements for 20X3, would disclose information related to discontinued operations in a manner similar to that for 20X2 including the fact of completion of discontinuance.

Illustration 2

Classification of Prior Period Operations

This illustration does not form part of the Accounting Standard. Its purpose is to illustrate the application of the Accounting Standard to assist in clarifying its meaning.

Facts

1. Paragraph 34 requires that comparative information for prior periods that is presented in financial statements prepared after the initial disclosure event be restated to segregate assets, liabilities, revenue, expenses, and cash flows of continuing and discontinuing operations in a manner similar to that required by paragraphs 20, 23, 26, 28, 29, 31 and 32.

2. Consider following facts:

(a) Operations A, B, C, and D were all continuing in years 1 and 2;

(b) Operation D is approved and announced for disposal in year 3 but actually disposed of in year 4;

(c) Operation B is discontinued in year 4 (approved and announced for disposal and actually disposed of) and operation E is acquired; and

(d) Operation F is acquired in year 5.

3. The following table illustrates the classification of continuing and discontinuing operations in years 3 to 5:

FINANCIAL STATEMENTS FOR YEAR 3 (Approved and Published early in Year 4)			
Year 2 Comparatives		**Year 3**	
Continuing	Discontinuing	Continuing	Discontinuing
A		A	
B		B	
C		C	
	D		D

IndiaCode

FINANCIAL STATEMENTS FOR YEAR 4 (Approved and Published early in Year 5)			
Year 3 Comparatives		**Year 4**	
Continuing	Discontinuing	Continuing	Discontinuing
A		A	
	B		B
C		C	
	D		D
		E	

FINANCIAL STATEMENTS FOR YEAR 5 (Approved and Published early in Year 6)			
Year 4 Comparatives		**Year 5**	
Continuing	Discontinuing	Continuing	Discontinuing
A		A	
	B		
C		C	
	D		
E		E	
		F	

IndiaCode

4. If, for whatever reason, five-year comparative financial statements were prepared in year 5, the classification of continuing and discontinuing operations would be as follows:

FINANCIAL STATEMENTS FOR YEAR 5									
Year 1 Comparatives		**Year 2 Comparatives**		**Year 3 Comparatives**		**Year 4 Comparatives**		**Year 5**	
Cont.	Disc.	Cont.	Disc.	Cont.	Disc.	Cont.	Disc.	Cont.	Disc.
A		A		A		A		A	
	B		B		B		B		
C		C		C		C		C	
	D		D		D		D		
						E		E	
								F	

Accounting Standard (AS) 25

Interim Financial Reporting

*(This Accounting Standard includes paragraphs set in **bold italic** type and plain type, which have equal authority. Paragraphs in bold italic type indicate the main principles. This Accounting Standard should be read in the context of its objective and the General Instructions contained in part A of the Annexure to the Notification.)*

Objective

The objective of this Standard is to prescribe the minimum content of an interim financial report and to prescribe the principles for recognition and measurement in a complete or condensed financial statements for an interim period. Timely and reliable interim financial reporting improves the ability of investors, creditors, and others to understand an enterprise's capacity to generate earnings and cash flows, its financial condition and liquidity.

Scope

1. This Standard does not mandate which enterprises should be required to present interim financial reports, how frequently, or how soon after the end of an interim period. If an enterprise is required or elects to prepare and present an interim financial report, it should comply with this Standard.

2. A statute governing an enterprise or a regulator may require an enterprise to prepare and present certain information at an interim date which may be different in form and/or content as required by this Standard. In such a case, the recognition and measurement principles as laid down in this Standard are applied in respect of such information, unless otherwise specified in the statute or by the regulator.

3. The requirements related to cash flow statement, complete or condensed, contained in this Standard are applicable where an enterprise prepares and presents a cash flow statement for the purpose of its annual financial report.

Definitions

4. The following terms are used in this Standard with the meanings specified:

4.1 Interim period is a financial reporting period shorter than a full financial year.

4.2 Interim financial report means a financial report containing either a complete set of financial statements or a set of condensed financial statements (as described in this Standard) for an interim period.

5. During the first year of operations of an enterprise, its annual financial reporting period may be shorter than a financial year. In such a case, that shorter period is not considered as an interim period.

Content of an Interim Financial Report

6. A complete set of financial statements normally includes:

(a) balance sheet;

(b) statement of profit and loss;

(c) cash flow statement; and

(d) notes including those relating to accounting policies and other statements and explanatory material that are an integral part of the financial statements.

7. In the interest of timeliness and cost considerations and to avoid repetition of information previously reported, an enterprise may be required to or may elect to present less information at interim dates as compared with its annual financial statements. The benefit of timeliness of presentation may be partially offset by a reduction in detail in the information provided. Therefore, this Standard requires preparation and presentation of an interim financial report containing, as a minimum, a set of condensed financial statements. The interim financial report containing condensed financial statements is intended to provide an update on the latest annual financial statements. Accordingly, it focuses on new activities, events, and circumstances and does not duplicate information previously reported.

8. This Standard does not prohibit or discourage an enterprise from presenting a complete set of financial statements in its interim financial report, rather than a set of condensed financial statements. This Standard also does not prohibit or discourage an enterprise from including, in condensed interim financial statements, more than the minimum line items or selected explanatory notes as set out in this Standard. The recognition and measurement principles set out in this Standard apply also to complete financial statements for an interim period, and such statements would include all disclosures required by this Standard (particularly the selected disclosures in paragraph 16) as well as those required by other Accounting Standards.

Minimum Components of an Interim Financial Report

9. An interim financial report should include, at a minimum, the following components:

(a) condensed balance sheet;

(b) condensed statement of profit and loss;

(c) condensed cash flow statement; and

(d) selected explanatory notes.

India Code

Form and Content of Interim Financial Statements

10. If an enterprise prepares and presents a complete set of financial statements in its interim financial report, the form and content of those statements should conform to the requirements as applicable to annual complete set of financial statements.

11. If an enterprise prepares and presents a set of condensed financial statements in its interim financial report, those condensed statements should include, at a minimum, each of the headings and sub-headings that were included in its most recent annual financial statements and the selected explanatory notes as required by this Standard. Additional line items or notes should be included if their omission would make the condensed interim financial statements misleading.

12. If an enterprise presents basic and diluted earnings per share in its annual financial statements in accordance with Accounting Standard (AS) 20, Earnings Per Share, basic and diluted earnings per share should be presented in accordance with AS 20 on the face of the statement of profit and loss, complete or condensed, for an interim period.

13. If an enterprise's annual financial report included the consolidated financial statements in addition to the parent's separate financial statements, the interim financial report includes both the consolidated financial statements and separate financial statements, complete or condensed.

14. Illustration I attached to the Standard provides illustrative formats of condensed financial statements.

Selected Explanatory Notes

15. A user of an enterprise's interim financial report will ordinarily have access to the most recent annual financial report of that enterprise. It is, therefore, not necessary for the notes to an interim financial report to provide relatively insignificant updates to the information that was already reported in the notes in the most recent annual financial report. At an interim date, an explanation of events and transactions that are significant to an understanding of the changes in financial position and performance of the enterprise since the last annual reporting date is more useful.

16. An enterprise should include the following information, as a minimum, in the notes to its interim financial statements, if material and if not disclosed elsewhere in the interim financial report:

- ***(a) a statement that the same accounting policies are followed in the interim financial statements as those followed in the most recent annual financial statements or, if those policies have been changed, a description of the nature and effect of the change;***
- ***(b) explanatory comments about the seasonality of interim operations;***
- ***(c) the nature and amount of items affecting assets, liabilities, equity, net income, or cash flows that are unusual because of their nature, size, or incidence (see paragraphs 12 to 14 of Accounting Standard (AS) 5, Net Profit or Loss for the Period, Prior Period Items and Changes in Accounting Policies);***
- ***(d) the nature and amount of changes in estimates of amounts reported in prior interim periods of the current financial year or changes in estimates of amounts reported in prior financial years, if those changes have a material effect in the current interim period;***
- ***(e) issuances, buy-backs, repayments and restructuring of debt, equity and potential equity shares;***
- ***(f) dividends, aggregate or per share (in absolute or percentage terms), separately for equity shares and other shares;***
- ***(g) segment revenue, segment capital employed (segment assets minus segment liabilities) and segment result for business segments or geographical segments, whichever is theenterprise's primary basis of segment reporting (disclosure of segment information is required in an enterprise's interim financial report only if the enterprise is required, in terms of AS 17, Segment Reporting, to disclose segment information in its annual financial statements);***
- ***(h) material events subsequent to the end of the interim period that have not been reflected in the financial statements for the interim period;***
- ***(i) the effect of changes in the composition of the enterprise during the interim period, such as amalgamations, acquisition or disposal of subsidiaries and long-term investments, restructurings, and discontinuing operations; and***
- ***(j) material changes in contingent liabilities since the last annual balance sheet date.***

The above information should normally be reported on a financial year- to-date basis. However, the enterprise should also disclose any events or transactions that are material to an understanding of the current interim period.

17. Other Accounting Standards specify disclosures that should be made in financial statements. In that context, financial statements mean complete set of financial statements normally included in an annual financial report and sometimes included in other reports. The disclosures required by those other Accounting Standards are not required if an enterprise's interim financial report includes only condensed financial statements and selected explanatory notes rather than a complete set of financial statements.

Periods for which Interim Financial Statements are required to be presented

18. Interim reports should include interim financial statements (condensed or complete) for periods as follows:

(a) balance sheet as of the end of the current interim period and a comparative balance sheet as of the end of the immediately preceding financial year;

(b) statements of profit and loss for the current interim period and cumulatively for the current financial year to date, with comparative statements of profit and loss for the comparable interim periods (current and year-to-date) of the immediately preceding financial year;

(c) cash flow statement cumulatively for the current financial year to date, with a comparative statement for the comparable year-to-date period of the immediately preceding financial year.

19. For an enterprise whose business is highly seasonal, financial information for the twelve months ending on the interim reporting date and comparative information for the prior twelve-month period may be useful. Accordingly, enterprises whose business is highly seasonal are encouraged to consider reporting such information in addition to the information called for in the preceding paragraph.

20. Illustration 2 attached to the Standard illustrates the periods required to be presented by an enterprise that reports half-yearly and an enterprise that reports quarterly.

Materiality

21. In deciding how to recognise, measure, classify, or disclose an item for interim financial reporting purposes, materiality should be assessed in relation to the interim period financial data. In making assessments of materiality, it should be recognised that interim measurements may rely on estimates to a greater extent than measurements of annual financial data.

22. The Preface to the Statements of Accounting Standards states that "The Accounting Standards are intended to apply only to items which are material". The Framework for the Preparation and Presentation of Financial Statements, issued by the Institute of Chartered Accountants of India, states that "information is material if its misstatement (i.e., omission or erroneous statement) could influence the economic decisions of users taken on the basis of the financial information".

23. Judgement is always required in assessing materiality for financial reporting purposes. For reasons of understandability of the interim figures, materiality for making recognition and disclosure decision is assessed in relation to the interim period financial data. Thus, for example, unusual or extraordinary items, changes in accounting policies or estimates, and prior period items are recognised and disclosed based on materiality in relation to interim period data. The overriding objective is to ensure that an interim financial report includes all information that is relevant to understanding an enterprise's financial position and performance during the interim period.

Disclosure in Annual Financial Statements

24. An enterprise may not prepare and present a separate financial report for the final interim period because the annual financial statements are presented. In such a case, paragraph 25 requires certain disclosures to be made in the annual financial statements for that financial year.

25. If an estimate of an amount reported in an interim period is changed significantly during the final interim period of the financial year but a separate financial report is not prepared and presented for that final interim period, the nature and amount of that change in estimate should be disclosed in a note to the annual financial statements for that financial year.

26. Accounting Standard (AS) 5, *Net Profit or Loss for the Period, Prior Period Items and Changes in Accounting Policies,* requires disclosure, in financial statements, of the nature and (if practicable) the amount of a change in an accounting estimate which has a material effect in the current period, or which is expected to have a material effect in subsequent periods. Paragraph 16(d) of this Standard requires similar disclosure in an interim financial report. Examples include changes in estimate in the final interim period relating to inventory write-downs, restructurings, or impairment losses that were reported in an earlier interim period of the financial year. The disclosure required by the preceding paragraph is consistent with AS 5 requirements and is intended to be restricted in scope so as to relate only to the change in estimates. An enterprise is not required to include additional interim period financial information in its annual financial statements.

Recognition and Measurement

Same Accounting Policies as Annual

27. An enterprise should apply the same accounting policies in its interim financial statements as are applied in its annual financial statements, except for accounting policy changes made after the date of the most recent annual financial statements that are to be reflected in the next annual financial statements. However, the frequency of an enterprise's reporting (annual, half-yearly, or quarterly) should not affect the measurement of its annual results. To achieve that objective, measurements for interim reporting purposes should be made on a year-to-date basis.

28. Requiring that an enterprise apply the same accounting policies in its interim financial statements as in its annual financial statements may seem to suggest that interim period measurements are made as if each interim period stands alone as an independent reporting period. However, by providing that the frequency of an enterprise's reporting should not affect the measurement of its annual results, paragraph 27 acknowledges that an interim period is a part of a financial year. Year-to-date measurements may involve changes in estimates of amounts reported in prior interim periods of the current financial year. But the principles for recognising assets, liabilities, income, and expenses for interim periods are the same as in annual financial statements.

29. To illustrate:

(a) the principles for recognising and measuring losses from inventory write-downs, restructurings, or impairments in an interim period are the same as those that an enterprise would follow if it prepared only annual financial statements. However, if such items are recognised and measured in one interim period and the estimate changes in a subsequent interim period of that financial year, the original estimate is changed in the subsequent interim period either by accrual of an additional amount of loss or by reversal of the previously recognised amount;

(b) a cost that does not meet the definition of an asset at the end of an interim period is not deferred on the balance sheet date either to await future information as to whether it has met the definition of an asset or to smooth earnings over interim periods within a financial year; and

(c) income tax expense is recognised in each interim period based on the best estimate of the weighted average annual income tax rate expected for the full financial year. Amounts accrued for income tax expense in one interim period may have to be adjusted in a subsequent interim period of that financial year if the estimate of the annual income tax rate changes.

30. Under the Framework for the Preparation and Presentation of Financial Statements, recognition is the "process of incorporating in the balance sheet or statement of profit and loss an item that meets the definition of an element and satisfies the criteria for recognition". The definitions of assets, liabilities, income, and expenses are fundamental to recognition, both at annual and interim financial reporting dates.

31. For assets, the same tests of future economic benefits apply at interim dates as they apply at the end of an enterprise's financial year. Costs that, by their nature, would not qualify as assets at financial year end would not qualify at interim dates as well. Similarly, a liability at an interim reporting date must represent an existing obligation at that date, just as it must at an annual reporting date.

32. Income is recognised in the statement of profit and loss when an increase in future economic benefits related to an increase in an asset or a decrease of a liability has arisen that can be measured reliably. Expenses are recognised in the statement of profit and loss when a decrease in future economic benefits related to a decrease in an asset or an increase of a liability has arisen that can be measured reliably. The recognition of items in the balance sheet which do not meet the definition of assets or liabilities is not allowed.

33. In measuring assets, liabilities, income, expenses, and cash flows reported in its financial statements, an enterprise that reports only annually is able to take into account information that becomes available throughout the financial year. Its measurements are, in effect, on a year-to-date basis.

34. An enterprise that reports half-yearly, uses information available by mid-year or shortly thereafter in making the measurements in its financial statements for the first six-month period and information available by year- end or shortly thereafter for the twelve-month period. The twelve-month measurements will reflect any changes in estimates of amounts reported for the first six-month period. The amounts reported in the interim financial report for the first six-month period are not retrospectively adjusted. Paragraphs 16(d) and 25 require, however, that the nature and amount of any significant changes in estimates be disclosed.

35. An enterprise that reports more frequently than half-yearly, measures income and expenses on a year-to-date basis for each interim period using information available when each set of financial statements is being prepared. Amounts of income and expenses reported in the current interim period will reflect any changes in estimates of amounts reported in prior interim periods of the financial year. The amounts reported in prior interim periods are not retrospectively adjusted. Paragraphs 16(d) and 25 require, however, that the nature and amount of any significant

changes in estimates be disclosed.

Revenues Received Seasonally or Occasionally

36. Revenues that are received seasonally or occasionally within a financial year should not be anticipated or deferred as of an interim date if anticipation or deferral would not be appropriate at the end of the enterprise's financial year.

37. Examples include dividend revenue, royalties, and government grants. Additionally, some enterprises consistently earn more revenues in certain interim periods of a financial year than in other interim periods, for example, seasonal revenues of retailers. Such revenues are recognised when they occur.

Costs Incurred Unevenly During the Financial Year

38. Costs that are incurred unevenly during an enterprise's financial year should be anticipated or deferred for interim reporting purposes if, and only if, it is also appropriate to anticipate or defer that type of cost at the end of the financial year.

Applying the Recognition and Measurement principles

39. Illustration 3 attached to the Standard illustrates application of the general recognition and measurement principles set out in paragraphs 27 to 38.

Use of Estimates

40. The measurement procedures to be followed in an interim financial report should be designed to ensure that the resulting information is reliable and that all material financial information that is relevant to an understanding of the financial position or performance of the enterprise is appropriately disclosed. While measurements in both annual and interim financial reports are often based on reasonable estimates, the preparation of interim financial reports generally will require a greater use of estimation methods than annual financial reports.

41. Illustration 4 attached to the Standard illustrates the use of estimates in interim periods.

Restatement of Previously Reported Interim Periods

42. A change in accounting policy, other than one for which the transition is specified by an Accounting Standard, should be reflected by restating the financial statements of prior interim periods of the current financial year.

43. One objective of the preceding principle is to ensure that a single accounting policy is applied to a particular class of transactions throughout an entire financial year. The effect of the principle in paragraph 42 is to require that within the current financial year any change in accounting policy be applied retrospectively to the beginning of the financial year.

Transitional Provision[35]

44. On the first occasion that an interim financial report is presented in accordance with this Standard, the following need not be presented in respect of all the interim periods of the current financial year:

(a) comparative statements of profit and loss for the comparable interim periods (current and year-to-date) of the immediately preceding financial year; and

(b) comparative cash flow statement for the comparable year-to-date period of the immediately preceding financial year.

Illustration 1

Illustrative Format of Condensed Financial Statements

This illustration which does not form part of the Accounting Standard, provides illustrative format of condensed financial statements. Its purpose is to illustrate the application of the Accounting Standard to assist in clarifying its meaning.

Paragraph 11 of the Accounting Standard provides that if an enterprise prepares and presents a set of condensed financial statements in its interim financial report, those condensed statements should include, at a minimum, each of the headings and sub-headings that were included in its most recent annual financial statements and the selected explanatory notes as required by the Standard. Additional line items or notes should be included if their omission

[35] Transitional Provisions given in Paragraph 44 are relevant for standards notified under Companies (Accounting Standards) Rules, 2006 (as amended from time to time) as well as Companies (Accounting Standards) Rules, 2021.

would make the condensed interim financial statements misleading.

The purpose of the following illustrative format is primarily to illustrate the requirements of paragraph 11 of the Standard. It may be noted that these illustrative formats are subject to the requirements laid down in the Standard including those of paragraph 11.

Illustrative Format of Condensed Financial Statements for an enterprise other than a bank

(A) Condensed Balance Sheet

Particulars	Figures at the end of the current interim period (in Rs.) (DD/MM/YYYY)	Figures at the end of the previous accounting year (in Rs.) (DD/MM/YYYY)
I. EQUITY AND LIABILITIES		
(1) Shareholders' funds		
(a) Share capital		
(b) Reserves and surplus		
(c) Money received against share warrants		
(2) Share application money pending allotment		
(3) Minority interests (in case of consolidate financial statements)		
(4)Non-current liabilities (a) Long-term borrowings		
(b) Deferred tax liabilities (Net)		
(c) Other Long term liabilities		
(d) Long-term provisions		
(5) Current liabilities		
(a) Short-term borrowings		
(b) Trade Payables (A) total outstanding dues of micro enterprises and small enterprises; and (B) total outstanding dues of creditors other than micro enterprises and small enterprises.		
(c) Other current liabilities		
(d) Short-term provisions		
TOTAL		
II. ASSETS		
(1) Non-current assets		
(a) Property, Plant and Equipment		
(i) Tangible assets		
(ii) Intangible assets		
(iii) Capital work-in-progress		
(iv) Intangible assets under		

IndiaCode

development		
(b) Non-current investments		
(c) Deferred tax assets (net)		
(d) Long-term loans and advances		
(e) Other non-current assets		
(2) Current assets		
(a) Current investments		
(b) Inventories		
(c) Trade receivables		
(d) Cash and cash equivalents		
(e) Short-term loans and advances		
(f) Other current assets		
TOTAL		

See accompanying notes to the condensed financial statements

(B) Condensed Statement of Profit and Loss

IndiaCode

Particulars	**Three months ended (in Rs.) From (DD/MM/YYYY) To (DD/MM/YYYY)**	**Corresponding three months of the previous accounting year (in Rs.) From (DD/MM/YYYY) To (DD/MM/YYYY)**	**Year-to-date figures for current period (in Rs.) From (DD/MM/YYYY) To (DD/MM/YYYY)**	**Year-to-date figures for the previous year (in Rs.) From (DD/MM/YYYY) To (DD/MM/YYYY)**
I. Revenue from operations				
II. Other income				
III. Total Revenue (I + II)				
IV. Expenses:				
Cost of materials consumed				
Purchases of Stock-in-Trade				
Changes in inventories of finished goods				
work-in-progress and Stock-in-Trade				
Employee benefits expense				
Finance costs				

Depreciation and amortisation expense				
Other expenses				
Total expenses				
V. Profit before exceptional and extraordinary items and tax (III - IV)				
VI. Exceptional items				
VII. Profit before extraordinary items and tax (V - VI)				
VIII. Extraordinary items				
IX. Profit before tax (VII- VIII)				
X. Tax expense:				
(1) Current tax				
(2) Deferred tax				
XI. Profit (Loss) for the period from continuing operations (VII-VIII)				
XII. Profit/(loss) from discontinuing operations				
XIII. Tax expense of discontinuing operations				
XIV. Profit/(loss) from Discontinuing operations (after tax) (XII-XIII)				
XV. Profit (Loss) (XI + XIV)				
XVI Minority Interests (in case of consolidated financial statements)				
XVII. Net Profit (Loss) for the period available to equity shareholders				
XVIII Earnings per equity share:				
(1) Basic				
(2) Diluted				

IndiaCode

See accompanying notes to the condensed financial statements

(C) Condensed Cash Flow Statement

	Year-to-date figures for the current period **(in Rs.)** **From (DD/MM/YYYY)** **To**	**Year-to-date figures for the previous year** **(in Rs.)** **From (DD/MM/YYYY)** **To**

1. Cash flows from operating activities		
2. Cash flows from investing activities		
3. Cash flows from financing activities		
4. Net increase/(decrease) in cash and cash equivalents		
5. Cash and cash equivalents at beginning of period		
6. Cash and cash equivalents at end of period		

(D) Selected Explanatory Notes

This part should contain selected explanatory notes as required by paragraph 16 of this Standard.

Illustrative Format of Condensed Financial Statements for a Bank

(A) Condensed Balance Sheet

	Figures at the end of the current interim period (in Rs.) (DD/MM/YYYY)	**Figures at the end of the previous accounting year (in Rs.) (DD/MM/YYYY)**
I. Capital and Liabilities		
1. Capital		
2. Reserve and surplus		
3. Minority interests (in case of consolidated financial statements)		
4. Deposits		
5. Borrowings		
6. Other liabilities and provisions		
Total		
II. Assets		
1. Cash and balances with Reserve Bank of India		
2. Balances with banks and money at call and short notice		
3. Investments		
4. Advances		
5. Fixed assets (a) Tangible fixed assets (b) Intangible fixed assets		
6. Other Assets		
Total		

See accompanying notes to the condensed financial statements

IndiaCode

	Three months ended (in Rs.) From (DD/MM/YYYY) To _ (DD/MM/YYYY)	Corresponding three months of the previous accounting year (in Rs.) From (DD/MM/YYYY) To _ (DD/MM/YYYY)	Year-to-date figures for current period (in Rs.) From (DD/MM/YYYY) To _ (DD/MM/YYYY)	Year-to-date figures for the previous year (in Rs.) From (DD/MM/YYYY) To _ (DD/MM/YYYY)
INCOME				
1. Interest earned (a) Interest/discount on advances/bills (b) Interest on Investments (c) Interest on balances with Reserve Bank of India and other inter banks funds (d) Others				
2. Other Income				
Total Income				
EXPENDITURE				
1. Interest expended				
2. Operating expenses (a) Payments to and provisions for employees (b) Other operating expenses				
3. Provisions and contingencies				
4. Total expenses				
5. Profit or loss from ordinary activities before tax				
6. Extraordinary items				
7. Profit or loss before tax				
8. Tax expense				

(B) Condensed Statement of Profit and Loss

	Three months ended (in Rs.) From (DD/MM/YYYY)	Corresponding three months of the previous accounting year (in Rs.)	Year-to-date figures for current period (in Rs.) From	Year-to-date figures for the previous year (in Rs.) From

IndiaCode

	To _ (DD/MM/YYYY)	From (DD/MM/YYYY) To _ (DD/MM/YYYY)	(DD/MM/YYYY) To _ (DD/MM/YYYY)	(DD/MM/YYYY) To _ (DD/MM/YYYY)
9. Profit or loss after tax				
10. Minority Interests (in case of consolidated financial statements)				
11. Net profit or loss for the period available to equity shareholders				
Earnings Per Share 1. Basic Earnings Per Share 2. Diluted Earnings Per Share				

See accompanying notes to the condensed financial statements

(C) Condensed Cash Flow Statement

	Year-to-date figures for the current period (in Rs.) From _____ (DD/MM/YYYY) To _____ (DD/MM/YYYY)	**Year-to-date figures for the previous year (in Rs.)** From _____ (DD/MM/YYYY) To _____ (DD/MM/YYYY)
1. Cash flows from operating activities		
2. Cash flows from investing activities		
3. Cash flows from financing activities		
4. Net increase/(decrease) in cash and cash equivalents		
5. Cash and cash equivalents at beginning of period		
6. Cash and cash equivalents at end of period		

(D) Selected Explanatory Notes

This part should contain selected explanatory notes as required by paragraph 16 of this Standard.

Illustration 2

Illustration of Periods Required to Be Presented

This illustration which does not form part of the Accounting Standard, Illustrates application of the principles in paragraphs 18 and 19. Its purpose is to illustrate the application of the Accounting Standard to assist in clarifying its meaning.

Enterprise Preparing and Presenting Interim Financial Reports Half- Yearly

1. An enterprise whose financial year ends on 31 March, presents financial statements (condensed or complete) for following periods in its half-yearly interim financial report as of 30 September 2001:

Balance Sheet:

As at	30 September 2001	31 March 2001

Statement of Profit and Loss:

6 months ending	30 September 2001	30 September 2000

Cash Flow Statement[36]:

6 months ending	30 September 2001	30 September 2000

Enterprise Preparing and Presenting Interim Financial Reports Quarterly

2. An enterprise whose financial year ends on 31 March, presents financial statements (condensed or complete) for following periods in its interim financial report for the second quarter ending 30 September 2001:

Balance Sheet:

As at	30 September 2001	31 March 2001

Statement of Profit and Loss:

6 months ending	30 September 2001	30 September 2000
3 months ending	30 September 2001	30 September 2000

Cash Flow Statement:

6 months ending	30 September 2001	30 September 2000

Enterprise whose business is highly seasonal Preparing and Presenting Interim Financial Reports Quarterly

3. An enterprise whose financial year ends on 31 March, may present financial statements (condensed or complete) for the following periods in its interim financial report for the second quarter ending 30 September 2001:

Balance Sheet:

As at	30 September 2001	31 March 2001 30 September 2000

Statement of Profit and Loss:

6 months ending	30 September 2001	30 September 2000
3 months ending	30 September 2001	30 September 2000
12 months ending	30 September 2001	30 September 2000

Cash Flow Statement:

6 months ending	30 September 2001	30 September 2000
12 months ending	30 September 2001	30 September 2000

IndiaCode

Illustration 3

Illustration of Applying the Recognition and Measurement Principles

This illustration, which does not form part of the Accounting Standard, illustrates application of the general recognition and measurement principles set out in paragraphs 27-38 of this Standard. Its purpose is to illustrate the application of the Accounting Standard to assist in clarifying its meaning.

Gratuity and Other Defined Benefit Schemes

1. Provisions in respect of gratuity and other defined benefit schemes for an interim period are calculated on a year-to-date basis by using the actuarially determined rates at the end of the prior financial year, adjusted for significant market fluctuations since that time and for significant curtailments, settlements, or other significant one-time events.

Major Planned Periodic Maintenance or Overhaul

[36] It is assumed that the enterprise prepares a cash flow statement for the purpose of its Annual Report.

2. The cost of a major planned periodic maintenance or overhaul or other seasonal expenditure that is expected to occur late in the year is not anticipated for interim reporting purposes unless an event has caused the enterprise to have a present obligation. The mere intention or necessity to incur expenditure related to the future is not sufficient to give rise to an obligation.

Provisions

3. This Standard requires that an enterprise apply the same criteria for recognising and measuring a provision at an interim date as it would at the end of its financial year. The existence or non-existence of an obligation to transfer economic benefits is not a function of the length of the reporting period. It is a question of fact subsisting on the reporting date.

Year-End Bonuses

4. The nature of year-end bonuses varies widely. Some are earned simply by continued employment during a time period. Some bonuses are earned based on monthly, quarterly, or annual measure of operating result. They may be purely discretionary, contractual, or based on years of historical precedent.

5. A bonus is anticipated for interim reporting purposes if, and only if, (a) the bonus is a legal obligation or an obligation arising from past practice for which the enterprise has no realistic alternative but to make the payments, and (b) a reliable estimate of the obligation can be made.

Intangible Assets

6. An enterprise will apply the definition and recognition criteria for an intangible asset in the same way in an interim period as in an annual period. Costs incurred before the recognition criteria for an intangible asset are met are recognised as an expense. Costs incurred after the specific point in time at which the criteria are met are recognised as part of the cost of an intangible asset. "Deferring" costs as assets in an interim balance sheet in the hope that the recognition criteria will be met later in the financial year is not justified.

Other Planned but Irregularly Occurring Costs

7. An enterprise's budget may include certain costs expected to be incurred irregularly during the financial year, such as employee training costs. These costs generally are discretionary even though they are planned and tend to recur from year to year. Recognising an obligation at an interim financial reporting date for such costs that have not yet been incurred generally is not consistent with the definition of a liability.

Measuring Income Tax Expense for Interim Period

8. Interim period income tax expense is accrued using the tax rate that would be applicable to expected total annual earnings, that is, the estimated average annual effective income tax rate applied to the pre-tax income of the interim period.

9. This is consistent with the basic concept set out in paragraph 27 that the same accounting recognition and measurement principles should be applied in an interim financial report as are applied in annual financial statements. Income taxes are assessed on an annual basis. Therefore, interim period income tax expense is calculated by applying, to an interim period's pre-tax income, the tax rate that would be applicable to expected total annual earnings, that is, the estimated average effective annual income tax rate. That estimated average annual income tax rate would reflect the tax rate structure expected to be applicable to the full year's earnings including enacted or substantively enacted changes in the income tax rates scheduled to take effect later in the financial year. The estimated average annual income tax rate would be re-estimated on a year-to-date basis, consistent with paragraph 27 of this Standard. Paragraph 16(d) requires disclosure of a significant change in estimate.

10. To the extent practicable, a separate estimated average annual effective income tax rate is determined for each governing taxation law and applied individually to the interim period pre-tax income under such laws. Similarly, if different income tax rates apply to different categories of income (such as capital gains or income earned in particular industries), to the extent practicable a separate rate is applied to each individual categ ory of interim period pre-tax income. While that degree of precision is desirable, it may not be achievable in all cases, and a weighted average of rates across such governing taxation laws or across categories of income is used if it is a reasonable approximation of the effect of using more specific rates.

11. As illustration, an enterprise reports quarterly, earns Rs. 150 lakhs pre- tax profit in the first quarter but expects to incur losses of Rs 50 lakhs in each of the three remaining quarters (thus having zero income for the year), and is governed by taxation laws according to which its estimated average annual income tax rate is expected to be 35 per cent. The following table shows the amount of income tax expense that is reported in each quarter:

(Amount in Rs. lakhs)

	1st Quarter	2nd Quarter	3rd Quarter	4th Quarter	Annual
Tax Expense	52.5	(17.5)	(17.5)	(17.5)	0

Difference in Financial Reporting Year and Tax Year

12. If the financial reporting year and the income tax year differ, income tax expense for the interim periods of that financial reporting year is measured using separate weighted average estimated effective tax rates for each of the income tax years applied to the portion of pre-tax income earned in each of those income tax years.

13. To illustrate, an enterprise's financial reporting year ends 30 September and it reports quarterly. Its year as per taxation laws ends 31 March. For the financial year that begins 1 October, Year 1 ends 30 September of Year 2, the enterprise earns Rs 100 lakhs pre-tax each quarter. The estimated weighted average annual income tax rate is 30 per cent in Year 1 and 40 per cent in Year 2.

(Amount in Rs. lakhs)

	Quarter Ending 31 Dec. Year 1	Quarter Ending 31 Mar. Year 1	Quarter Ending 30 June Year 2	Quarter Ending 30 Sep. Year 2	Year Ending 30 Sep. Year 2
Tax Expense	30	30	40	40	140

Tax Deductions/Exemptions

14. Tax statutes may provide deductions/exemptions in computation of income for determining tax payable. Anticipated tax benefits of this type for the full year are generally reflected in computing the estimated annual effective income tax rate, because these deductions/exemptions are calculated on an annual basis under the usual provisions of tax statutes. On the other hand, tax benefits that relate to a one-time event are recognised in computing income tax expense in that interim period, in the same way that special tax rates applicable to particular categories of income are not blended into a single effective annual tax rate.

Tax Loss Carryforwards

15. A deferred tax asset should be recognised in respect of carryforward tax losses to the extent that it is virtually certain, supported by convincing evidence, that future taxable income will be available against which the deferred tax assets can be realised. The criteria are to be applied at the end of each interim period and, if they are met, the effect of the tax loss carryforward is reflected in the computation of the estimated average annual effective income tax rate.

16. To illustrate, an enterprise that reports quarterly has an operating loss carryforward of Rs 100 lakhs for income tax purposes at the start of the current financial year for which a deferred tax asset has not been recognised. The enterprise earns Rs. 100 lakhs in the first quarter of the current year and expects to earn Rs. 100 lakhs in each of the three remaining quarters. Excluding the loss carryforward, the estimated average annual income tax rate is expected to be 40 per cent. The estimated payment of the annual tax on Rs. 400 lakhs of earnings for the current year would be Rs. 120 lakhs {(Rs. 400 lakhs - Rs. 100 lakhs) x 40%}. Considering the loss carryforward, the estimated average annual effective income tax rate would be 30% {(Rs. 120 lakhs/Rs. 400 lakhs) x 100}. This average annual effective income tax rate would be applied to earnings of each quarter. Accordingly, tax expense would be as follows:

(Amount in Rs. lakhs)

	1st Quarter	2nd Quarter	3rd Quarter	4th Quarter	Annual
Tax Expense	30.00	30.00	30.00	30.00	120.00

IndiaCode

Contractual or Anticipated Purchase Price Changes

17. Volume rebates or discounts and other contractual changes in the prices of goods and services are anticipated in interim periods, if it is probable that they will take effect. Thus, contractual rebates and discounts are anticipated but discretionary rebates and discounts are not anticipated because the resulting liability would not satisfy the conditions of recognition, viz., that a liability must be a present obligation whose settlement is expected to result in an outflow of resources.

Depreciation and Amortisation

18. Depreciation and amortisation for an interim period is based only on assets owned during that interim period. It does not take into account asset acquisitions or disposals planned for later in the financial year.

Inventories

19. Inventories are measured for interim financial reporting by the same principles as at financial year end. AS 2 on *Valuation of Inventories*, establishes standards for recognising and measuring inventories. Inventories pose particular problems at any financial reporting date because of the need to determine inventory quantities, costs, and net realisable values. Nonetheless, the same measurement principles are applied for interim inventories. To save cost and time, enterprises often use estimates to measure inventories at interim dates to a greater extent than at annual reporting dates. Paragraph 20 below provides an example of how to apply the net realisable value test at an interim date.

Net Realisable Value of Inventories

20. The net realisable value of inventories is determined by reference to selling prices and related costs to complete and sell the inventories. An enterprise will reverse a write-down to net realisable value in a subsequent interim period as it would at the end of its financial year.

Foreign Currency Translation Gains and Losses

21. Foreign currency translation gains and losses are measured for interim financial reporting by the same principles as at financial year end in accordance with the principles as stipulated in AS 11 on *The Effects of Changes in Foreign Exchange Rates.*

Impairment of Assets

22. Accounting Standard (AS) 28, *Impairment of Assets* requires that an impairment loss be recognised if the recoverable amount has declined below carrying amount.

23. An enterprise applies the same impairment tests, recognition, and reversal criteria at an interim date as it would at the end of its financial year. That does not mean, however, that an enterprise must necessarily make a detailed impairment calculation at the end of each interim period. Rather, an enterprise will assess the indications of significant impairment since the end of the most recent financial year to determine whether such a calculation is needed.

Illustration 4

Examples of the Use of Estimates

This illustration which does not form part of the Accounting Standard, illustrates application of the principles in this Standard. Its purpose is to illustrate the application of the Accounting Standard to assist in clarifying its meaning.

1. **Provisions:** Determination of the appropriate amount of a provision (such as a provision for warranties, restructuring costs, gratuity, etc.) may be complex and often costly and time-consuming. Enterprises sometimes engage outside experts to assist in annual calculations. Making similar estimates at interim dates often involves updating the provision made in the preceding annual financial statements rather than engaging outside experts to do a new calculation.

2. **Contingencies:** Measurement of contingencies may involve obtaining opinions of legal experts or other advisers. Formal reports from independent experts are sometimes obtained with respect to contingencies. Such opinions about litigation, claims, assessments, and other contingencies and uncertainties may or may not be needed at interim dates.

3. **Specialised industries:** Because of complexity, costliness, and time involvement, interim period measurements in specialised industries might be less precise than at financial year end. An example is calculation of insurance reserves by insurance companies.

IndiaCode

Accounting Standard (AS) 26

Intangible Assets

*(This Accounting Standard includes paragraphs set in **bold italic** type and plain type, which have equal authority. Paragraphs in bold italic type indicate the main principles. This Accounting Standard should be read in the context of its objective and the General Instructions contained in part A of the Annexure to the Notification.)*

Objective

The objective of this Standard is to prescribe the accounting treatment for intangible assets that are not dealt with specifically in another Accounting Standard. This Standard requires an enterprise to recognise an intangible asset if, and only if, certain criteria are met. The Standard also specifies how to measure the carrying amount of intangible assets and requires certain disclosures about intangible assets.

Scope

1. This Standard should be applied by all enterprises in accounting for intangible assets, except:

(a) intangible assets that are covered by another Accounting Standard;

(b) financial assets[37];

(c) mineral rights and expenditure on the exploration for, or development and extraction of, minerals, oil, natural gas and similar non-regenerative resources; and

(d) intangible assets arising in insurance enterprises from contracts with policyholders.

This Standard should not be applied to expenditure in respect of termination benefits[38] also.

2. If another Accounting Standard deals with a specific type of intangible asset, an enterprise applies that Accounting Standard instead of this Standard. For example, this Standard does not apply to:

(a) intangible assets held by an enterprise for sale in the ordinary course of business (see AS 2, *Valuation of Inventories*, and AS 7, *Construction Contracts*);

(b) deferred tax assets (see AS 22, *Accounting for Taxes on Income*);

(c) leases that fall within the scope of AS 19, *Leases*; and

(d) goodwill arising on an amalgamation (see AS 14, *Accounting for Amalgamations*) and goodwill arising on consolidation (see AS 21, *Consolidated Financial Statements*).

3. This Standard applies to, among other things, expenditure on advertising, training, start-up, research and development activities. Research and development activities are directed to the development of knowledge. Therefore, although these activities may result in an asset with physical substance (for example, a prototype), the physical element of the asset is secondary to its intangible component, that is the knowledge embodied in it. This Standard also applies to rights under licensing agreements for items such as motion picture films, video recordings, plays, manuscripts, patents and copyrights. These items are excluded from the scope of AS 19.

4. In the case of a finance lease, the underlying asset may be either tangible or intangible. After initial recognition, a lessee deals with an intangible asset held under a finance lease under this Standard.

5. Exclusions from the scope of an Accounting Standard may occur if certain activities or transactions are so specialised that they give rise to accounting issues that may need to be dealt with in a different way. Such issues arise in the expenditure on the exploration for, or development and extraction of, oil, gas and mineral deposits in extractive industries and in the case of contracts between insurance enterprises and their policyholders. Therefore, this Standard

---

[37] A financial asset is any asset that is:

(a) cash;

(b) a contractual right to receive cash or another financial asset from another enterprise;

(c) a contractual right to exchange financial instruments with another enterprise under conditions that are potentially favourable; or

(d) an ownership interest in another enterprise.

[38] Termination benefits are employee benefits payable as a result of either:

(a) an enterprise's decision to terminate an employee's employment before the normal retirement date; or

(b) an employee's decision to accept voluntary redundancy in exchange for those benefits (voluntary retirement).

IndiaCode

does not apply to expenditure on such activities. However, this Standard applies to other intangible assets used (such as computer software), and other expenditure (such as start-up costs), in extractive industries or by insurance enterprises. Accounting issues of specialised nature also arise in respect of accounting for discount or premium relating to borrowings and ancillary costs incurred in connection with the arrangement of borrowings, share issue expenses and discount allowed on the issue of shares. Accordingly, this Standard does not apply to such items also.

Definitions

6. The following terms are used in this Standard with the meanings specified:

6.1 An intangible asset is an identifiable non-monetary asset, without physical substance, held for use in the production or supply of goods or services, for rental to others, or for administrative purposes.

6.2 An asset is a resource:

(a) controlled by an enterprise as a result of past events; and

(b) from which future economic benefits are expected to flow to the enterprise.

6.3 Monetary assets are money held and assets to be received in fixed or determinable amounts of money.

6.4 Non-monetary assets are assets other than monetary assets.

6.5 Research is original and planned investigation undertaken with the prospect of gaining new scientific or technical knowledge and understanding.

6.6 Development is the application of research findings or other knowledge to a plan or design for the production of new or substantially improved materials, devices, products, processes, systems or services prior to the commencement of commercial production or use.

6.7 Amortisation is the systematic allocation of the depreciable amount of an intangible asset over its useful life.

6.8 Depreciable amount is the cost of an asset less its residual value.

6.9 Useful life is either:

(a) the period of time over which an asset is expected to be used by the enterprise; or

(b) the number of production or similar units expected to be obtained from the asset by the enterprise.

6.10. Residual value is the amount which an enterprise expects to obtain for an asset at the end of its useful life after deducting the expected costs of disposal.

6.11. Fair value of an asset is the amount for which that asset could be exchanged between knowledgeable, willing parties in an arm's length transaction.

6.12. An active market is a market where all the following conditions exist:

(a) the items traded within the market are homogeneous;

(b) willing buyers and sellers can normally be found at any time; and

(c) prices are available to the public.

6.13. An impairment loss is the amount by which the carrying amount of an asset exceeds its recoverable amount (see AS 28, Impairment of Assets).

6.14. Carrying amount is the amount at which an asset is recognised in the balance sheet, net of any accumulated amortisation and accumulated impairment losses thereon.

Intangible Assets

7. Enterprises frequently expend resources, or incur liabilities, on the acquisition, development, maintenance or enhancement of intangible resources such as scientific or technical knowledge, design and implementation of new processes or systems, licences, intellectual property, market knowledge and trademarks (including brand names and publishing titles). Common examples of items encompassed by these broad headings are computer software, patents, copyrights, motion picture films, customer lists, mortgage servicing rights, fishing licences, import quotas, franchises, customer or supplier relationships, customer loyalty, market share and marketing rights. Goodwill is another example of an item of intangible nature which either arises on acquisition or is internally generated.

8. Not all the items described in paragraph 7 will meet the definition of an intangible asset, that is, identifiability, control over a resource and expectation of future economic benefits flowing to the enterprise. If an item covered by this Standard does not meet the definition of an intangible asset, expenditure to acquire it or generate it internally is recognised as an expense when it is incurred. However, if the item is acquired in an amalgamation in the

nature of purchase, it forms part of the goodwill recognised at the date of the amalgamation (see paragraph 55).

9. Some intangible assets may be contained in or on a physical substance such as a compact disk (in the case of computer software), legal documentation (in the case of a licence or patent) or film (in the case of motion pictures). The cost of the physical substance containing the intangible assets is usually not significant. Accordingly, the physical substance containing an intangible asset, though tangible in nature, is commonly treated as a part of the intangible asset contained in or on it.

10. In some cases, an asset may incorporate both intangible and tangible elements that are, in practice, inseparable. In determining whether such an asset should be treated under AS 10, *Property, Plant and Equipment*, or as an intangible asset under this Standard, judgement is required to assess as to which element is predominant. For example, computer software for a computer controlled machine tool that cannot operate without that specific software is an integral part of the related hardware and it is treated as a fixed asset. The same applies to the operating system of a computer. Where the software is not an integral part of the related hardware, computer software is treated as an intangible asset.

Identifiability

11. The definition of an intangible asset requires that an intangible asset be identifiable. To be identifiable, it is necessary that the intangible asset is clearly distinguished from goodwill. Goodwill arising on an amalgamation in the nature of purchase represents a payment made by the acquirer in anticipation of future economic benefits. The future economic benefits may result from synergy between the identifiable assets acquired or from assets which, individually, do not qualify for recognition in the financial statements but for which the acquirer is prepared to make a payment in the amalgamation.

12. An intangible asset can be clearly distinguished from goodwill if the asset is separable. An asset is separable if the enterprise could rent, sell, exchange or distribute the specific future economic benefits attributable to the asset without also disposing of future economic benefits that flow from other assets used in the same revenue earning activity.

13. Separability is not a necessary condition for identifiability since an enterprise may be able to identify an asset in some other way. For example, if an intangible asset is acquired with a group of assets, the transaction may involve the transfer of legal rights that enable an enterprise to identify the intangible asset. Similarly, if an internal project aims to create legal rights for the enterprise, the nature of these rights may assist the enterprise in identifying an underlying internally generated intangible asset. Also, even if an asset generates future economic benefits only in combination with other assets, the asset is identifiable if the enterprise can identify the future economic benefits that will flow from the asset.

Control

14. An enterprise controls an asset if the enterprise has the power to obtain the future economic benefits flowing from the underlying resource and also can restrict the access of others to those benefits. The capacity of an enterprise to control the future economic benefits from an intangible asset would normally stem from legal rights that are enforceable in a court of law. In the absence of legal rights, it is more difficult to demonstrate control. However, legal enforceability of a right is not a necessary condition for control since an enterprise may be able to control the future economic benefits in some other way.

15. Market and technical knowledge may give rise to future economic benefits. An enterprise controls those benefits if, for example, the knowledge is protected by legal rights such as copyrights, a restraint of trade agreement (where permitted) or by a legal duty on employees to maintain confidentiality.

16. An enterprise may have a team of skilled staff and may be able to identify incremental staff skills leading to future economic benefits from training. The enterprise may also expect that the staff will continue to make their skills available to the enterprise. However, usually an enterprise has insufficient control over the expected future economic benefits arising from a team of skilled staff and from training to consider that these items meet the definition of an intangible asset. For a similar reason, specific management or technical talent is unlikely to meet the definition of an intangible asset, unless it is protected by legal rights to use it and to obtain the future economic benefits expected from it, and it also meets the other parts of the definition.

17. An enterprise may have a portfolio of customers or a market share and expect that, due to its efforts in building customer relationships and loyalty, the customers will continue to trade with the enterprise. However, in the absence of legal rights to protect, or other ways to control, the relationships with customers or the loyalty of the customers to the enterprise, the enterprise usually has insufficient control over the economic benefits from customer relationships and loyalty to consider that such items (portfolio of customers, market shares, customer relationships, customer loyalty) meet the definition of intangible assets.

Future Economic Benefits

18. The future economic benefits flowing from an intangible asset may include revenue from the sale of products or services, cost savings, or other benefits resulting from the use of the asset by the enterprise. For example, the use of intellectual property in a production process may reduce future production costs rather than increase future revenues.

Recognition and Initial Measurement of an Intangible Asset

19. The recognition of an item as an intangible asset requires an enterprise to demonstrate that the item meets the:

(a) definition of an intangible asset (see paragraphs 6-18); and

(b) recognition criteria set out in this Standard (see paragraphs 20-54).

20. An intangible asset should be recognised if, and only if:

(a) it is probable that the future economic benefits that are attributable to the asset will flow to the enterprise; and

(b) the cost of the asset can be measured reliably.

21. An enterprise should assess the probability of future economic benefits using reasonable and supportable assumptions that represent best estimate of the set of economic conditions that will exist over the useful life of the asset.

22. An enterprise uses judgement to assess the degree of certainty attached to the flow of future economic benefits that are attributable to the use of the asset on the basis of the evidence available at the time of initial recognition, giving greater weight to external evidence.

23. An intangible asset should be measured initially at cost.

Separate Acquisition

24. If an intangible asset is acquired separately, the cost of the intangible asset can usually be measured reliably. This is particularly so when the purchase consideration is in the form of cash or other monetary assets.

25. The cost of an intangible asset comprises its purchase price, including any import duties and other taxes (other than those subsequently recoverable by the enterprise from the taxing authorities), and any directly attributable expenditure on making the asset ready for its intended use. Directly attributable expenditure includes, for example, professional fees for legal services. Any trade discounts and rebates are deducted in arriving at the cost.

26. If an intangible asset is acquired in exchange for shares or other securities of the reporting enterprise, the asset is recorded at its fair value, or the fair value of the securities issued, whichever is more clearly evident.

Acquisition as Part of an Amalgamation

27. An intangible asset acquired in an amalgamation in the nature of purchase is accounted for in accordance with Accounting Standard (AS) 14, *Accounting for Amalgamations*. Where in preparing the financial statements of the transferee company, the consideration is allocated to individual identifiable assets and liabilities on the basis of their fair values at the date of amalgamation, paragraphs 28 to 32 of this Standard need to be considered.

28. Judgement is required to determine whether the cost (i.e. fair value) of an intangible asset acquired in an amalgamation can be measured with sufficient reliability for the purpose of separate recognition. Quoted market prices in an active market provide the most reliable measurement of fair value. The appropriate market price is usually the current bid price. If current bid prices are unavailable, the price of the most recent similar transaction may provide a basis from which to estimate fair value, provided that there has not been a significant change in economic circumstances between the transaction date and the date at which the asset's fair value is estimated.

29. If no active market exists for an asset, its cost reflects the amount that the enterprise would have paid, at the date of the acquisition, for the asset in an arm's length transaction between knowledgeable and willing parties, based on the best information available. In determining this amount, an enterprise considers the outcome of recent transactions for similar assets.

30. Certain enterprises that are regularly involved in the purchase and sale of unique intangible assets have developed techniques for estimating their fair values indirectly. These techniques may be used for initial measurement of an intangible asset acquired in an amalgamation in the nature of purchase if their objective is to estimate fair value as defined in this Standard and if they reflect current transactions and practices in the industry to which the asset belongs. These techniques include, where appropriate, applying multiples reflecting current market transactions to certain indicators driving the profitability of the asset (such as revenue, market shares, operating profit, etc.) or discounting estimated future net cash flows from the asset.

31. In accordance with this Standard:

(a) a transferee recognises an intangible asset that meets the recognition criteria in paragraphs 20 and 21, even if that intangible asset had not been recognised in the financial statements of the transferor; and

(b) if the cost (i.e. fair value) of an intangible asset acquired as part of an amalgamation in the nature of purchase cannot be measured reliably, that asset is not recognised as a separate intangible asset but is included in goodwill (see paragraph 55).

32. Unless there is an active market for an intangible asset acquired in an amalgamation in the nature of purchase, the cost initially recognised for the intangible asset is restricted to an amount that does not create or increase any capital reserve arising at the date of the amalgamation.

Acquisition by way of a Government Grant

33. In some cases, an intangible asset may be acquired free of charge, or for nominal consideration, by way of a government grant. This may occur when a government transfers or allocates to an enterprise intangible assets such as airport landing rights, licences to operate radio or television stations, import licences or quotas or rights to access other restricted resources. AS 12, *Accounting for Government Grants*, requires that government grants in the form of non-monetary assets, given at a concessional rate should be accounted for on the basis of their acquisition cost. AS 12 also requires that in case a non-monetary asset is given free of cost, it should be recorded at a nominal value. Accordingly, intangible asset acquired free of charge, or for nominal consideration, by way of government grant is recognised at a nominal value or at the acquisition cost, as appropriate; any expenditure that is directly attributable to making the asset ready for its intended use is also included in the cost of the asset.

Exchanges of Assets

34. An intangible asset may be acquired in exchange or part exchange for another asset. In such a case, the cost of the asset acquired is determined in accordance with the principles laid down in this regard in AS 10, *Property, Plant and Equipment*.

Internally Generated Goodwill

35. Internally generated goodwill should not be recognised as an asset.

36. In some cases, expenditure is incurred to generate future economic benefits, but it does not result in the creation of an intangible asset that meets the recognition criteria in this Standard. Such expenditure is often described as contributing to internally generated goodwill. Internally generated goodwill is not recognised as an asset because it is not an identifiable resource controlled by the enterprise that can be measured reliably at cost.

37. Differences between the market value of an enterprise and the carrying amount of its identifiable net assets at any point in time may be due to a range of factors that affect the value of the enterprise. However, such differences cannot be considered to represent the cost of intangible assets controlled by the enterprise.

Internally Generated Intangible Assets

38. It is sometimes difficult to assess whether an internally generated intangible asset qualifies for recognition. It is often difficult to:

(a) identify whether, and the point of time when, there is an identifiable asset that will generate probable future economic benefits; and

(b) determine the cost of the asset reliably. In some cases, the cost of generating an intangible asset internally cannot be distinguished from the cost of maintaining or enhancing the enterprise's internally generated goodwill or of running day-to- day operations.

Therefore, in addition to complying with the general requirements for the recognition and initial measurement of an intangible asset, an enterprise applies the requirements and guidance in paragraphs 39-54 below to all internally generated intangible assets.

39. To assess whether an internally generated intangible asset meets the criteria for recognition, an enterprise classifies the generation of the asset into:

(a) a research phase; and

(b) a development phase.

Although the terms 'research' and 'development' are defined, the terms 'research phase' and 'development phase' have a broader meaning for the purpose of this Standard.

40. If an enterprise cannot distinguish the research phase from the development phase of an internal project to create an intangible asset, the enterprise treats the expenditure on that project as if it were incurred in the research phase only.

Research Phase

41. No intangible asset arising from research (or from the research phase of an internal project) should be recognised. Expenditure on research (or on the research phase of an internal project) should be recognised as an expense when it is incurred.

42. This Standard takes the view that, in the research phase of a project, an enterprise cannot demonstrate that an intangible asset exists from which future economic benefits are probable. Therefore, this expenditure is recognised as an expense when it is incurred.

43. Examples of research activities are:

(a) activities aimed at obtaining new knowledge;

(b) the search for, evaluation and final selection of, applications of research findings or other knowledge;

(c) the search for alternatives for materials, devices, products, processes, systems or services; and

(d) the formulation, design, evaluation and final selection of possible alternatives for new or improved materials, devices, products, processes, systems or services.

Development Phase

44. An intangible asset arising from development (or from the development phase of an internal project) should be recognised if, and only if, an enterprise can demonstrate all of the following:

(a) the technical feasibility of completing the intangible asset so that it will be available for use or sale;

(b) its intention to complete the intangible asset and use or sell it;

(c) its ability to use or sell the intangible asset;

(d) how the intangible asset will generate probable future economic benefits. Among other things, the enterprise should demonstrate the existence of a market for the output of the intangible asset or the intangible asset itself or, if it is to be used internally, the usefulness of the intangible asset;

(e) the availability of adequate technical, financial and other resources to complete the development and to use or sell the intangible asset; and

(f) its ability to measure the expenditure attributable to the intangible asset during its development reliably.

45. In the development phase of a project, an enterprise can, in some instances, identify an intangible asset and demonstrate that future economic benefits from the asset are probable. This is because the development phase of a project is further advanced than the research phase.

46. Examples of development activities are:

(a) the design, construction and testing of pre-production or pre-use prototypes and models;

(b) the design of tools, jigs, moulds and dies involving new technology;

(c) the design, construction and operation of a pilot plant that is not of a scale economically feasible for commercial production; and

(d) the design, construction and testing of a chosen alternative for new or improved materials, devices, products, processes, systems or services.

47. To demonstrate how an intangible asset will generate probable future economic benefits, an enterprise assesses the future economic benefits to be received from the asset using the principles in Accounting Standard (AS) 28, *Impairment of Assets*. If the asset will generate economic benefits only in combination with other assets, the enterprise applies the concept of cash- generating units as set out in (AS) 28.

48. Availability of resources to complete, use and obtain the benefits from an intangible asset can be demonstrated by, for example, a business plan showing the technical, financial and other resources needed and the enterprise's ability to secure those resources. In certain cases, an enterprise demonstrates the availability of external finance by obtaining a lender's indication of its willingness to fund the plan.

49. An enterprise's costing systems can often measure reliably the cost of generating an intangible asset internally, such as salary and other expenditure incurred in securing copyrights or licences or developing computer software.

50. Internally generated brands, mastheads, publishing titles, customer lists and items similar in substance should not be recognised as intangible assets.

51. This Standard takes the view that expenditure on internally generated brands, mastheads, publishing titles,

customer lists and items similar in substance cannot be distinguished from the cost of developing the business as a whole. Therefore, such items are not recognised as intangible assets.

Cost of an Internally Generated Intangible Asset

52. The cost of an internally generated intangible asset for the purpose of paragraph 23 is the sum of expenditure incurred from the time when the intangible asset first meets the recognition criteria in paragraphs 20-21 and 44. Paragraph 58 prohibits reinstatement of expenditure recognised as an expense in previous annual financial statements or interim financial reports.

53. The cost of an internally generated intangible asset comprises all expenditure that can be directly attributed, or allocated on a reasonable and consistent basis, to creating, producing and making the asset ready for its intended use. The cost includes, if applicable:

(a) expenditure on materials and services used or consumed in generating the intangible asset;

(b) the salaries, wages and other employment related costs of personnel directly engaged in generating the asset;

(c) any expenditure that is directly attributable to generating the asset, such as fees to register a legal right and the amortisation of patents and licences that are used to generate the asset; and

(d) overheads that are necessary to generate the asset and that can be allocated on a reasonable and consistent basis to the asset (for example, an allocation of the depreciation of fixed assets, insurance premium and rent). Allocations of overheads are made on bases similar to those used in allocating overheads to inventories (see AS 2, *Valuation of Inventories*). AS 16, *Borrowing Costs*, establishes criteria for the recognition of interest as a component of the cost of a qualifying asset. These criteria are also applied for the recognition of interest as a component of the cost of an internally generated intangible asset.

54. The following are not components of the cost of an internally generated intangible asset:

(a) selling, administrative and other general overhead expenditure unless this expenditure can be directly attributed to making the asset ready for use;

(b) clearly identified inefficiencies and initial operating losses incurred before an asset achieves planned performance; and

(c) expenditure on training the staff to operate the asset.

Indiacode

Example Illustrating Paragraph 52

An enterprise is developing a new production process. During the year 20X1, expenditure incurred was Rs. 10 lakhs, of which Rs. 9 lakhs was incurred before 1 December 20X1 and 1 lakh was incurred between 1 December 20X1 and 31 December 20X1. The enterprise is able to demonstrate that, at 1 December 20X1, the production process met the criteria for recognition as an intangible asset. The recoverable amount of the know-how embodied in the process (including future cash outflows to complete the process before it is available for use) is estimated to be Rs. 5 lakhs.

At the end of 20X1, the production process is recognised as an intangible asset at a cost of Rs. 1 lakh (expenditure incurred since the date when the recognition criteria were met, that is, 1 December 20X1). Rs. 9 lakhs expenditure incurred before 1 December 20X1 is recognised as an expense because the recognition criteria were not met until 1 December 20X1. This expenditure will never form part of the cost of the production process recognised in the balance sheet.

During the year 20X2, expenditure incurred is Rs. 20 lakhs. At the end of 20X2, the recoverable amount of the know-how embodied in the process (including future cash outflows to complete the process before it is available for use) is estimated to be Rs. 19 lakhs.

At the end of the year 20X2, the cost of the production process is Rs. 21 lakhs (Rs. 1 lakh expenditure recognised at the end of 20X1 plus Rs. 20 lakhs expenditure recognised in 20X2). The enterprise recognises an impairment loss of Rs. 2 lakhs to adjust the carrying amount of the process before impairment loss (Rs. 21 lakhs) to its recoverable amount (Rs. 19 lakhs). This impairment loss will be reversed in a subsequent period if the requirements for the reversal of an impairment loss in AS 28 are met.

Recognition of an Expense

55. Expenditure on an intangible item should be recognised as an expense when it is incurred unless:

(a) it forms part of the cost of an intangible asset that meets the recognition criteria (see paragraphs 19-54); or

(b) the item is acquired in an amalgamation in the nature of purchase and cannot be recognised as an

intangible asset. If this is the case, this expenditure (included in the cost of acquisition) should form part of the amount attributed to goodwill (capital reserve) at the date of acquisition (see AS 14, Accounting for Amalgamations).

56. In some cases, expenditure is incurred to provide future economic benefits to an enterprise, but no intangible asset or other asset is acquired or created that can be recognised. In these cases, the expenditure is recognised as an expense when it is incurred. For example, expenditure on research is always recognised as an expense when it is incurred (see paragraph 41). Examples of other expenditure that is recognised as an expense when it is incurred include:

(a) expenditure on start-up activities (start-up costs), unless this expenditure is included in the cost of an item of fixed asset under AS 10. Start-up costs may consist of preliminary expenses incurred in establishing a legal entity such as legal and secretarial costs, expenditure to open a new facility or business (pre-opening costs) or expenditures for commencing new operations or launching new products or processes (pre-operating costs);

(b) expenditure on training activities;

(c) expenditure on advertising and promotional activities; and

(d) expenditure on relocating or re-organising part or all of an enterprise.

57. Paragraph 55 does not apply to payments for the delivery of goods or services made in advance of the delivery of goods or the rendering of services. Such prepayments are recognised as assets.

Past Expenses not to be Recognised as an Asset

58. Expenditure on an intangible item that was initially recognised as an expense by a reporting enterprise in previous annual financial statements or interim financial reports should not be recognised as part of the cost of an intangible asset at a later date.

Subsequent Expenditure

59. Subsequent expenditure on an intangible asset after its purchase or its completion should be recognised as an expense when it is incurred unless:

(a) it is probable that the expenditure will enable the asset to generate future economic benefits in excess of its originally assessed standard of performance; and

(b) the expenditure can be measured and attributed to the asset reliably.

If these conditions are met, the subsequent expenditure should be added to the cost of the intangible asset.

60. Subsequent expenditure on a recognised intangible asset is recognised as an expense if this expenditure is required to maintain the asset at its originally assessed standard of performance. The nature of intangible assets is such that, in many cases, it is not possible to determine whether subsequent expenditure is likely to enhance or maintain the economic benefits that will flow to the enterprise from those assets. In addition, it is often difficult to attribute such expenditure directly to a particular intangible asset rather than the business as a whole. Therefore, only rarely will expenditure incurred after the initial recognition of a purchased intangible asset or after completion of an internally generated intangible asset result in additions to the cost of the intangible asset.

61. Consistent with paragraph 50, subsequent expenditure on brands, mastheads, publishing titles, customer lists and items similar in substance (whether externally purchased or internally generated) is always recognised as an expense to avoid the recognition of internally generated goodwill.

Measurement Subsequent to Initial Recognition

62. After initial recognition, an intangible asset should be carried at its cost less any accumulated amortisation and any accumulated impairment losses.

Amortisation

Amortisation Period

63. The depreciable amount of an intangible asset should be allocated on a systematic basis over the best estimate of its useful life. There is a rebuttable presumption that the useful life of an intangible asset will not exceed ten years from the date when the asset is available for use. Amortisation should commence when the asset is available for use.

64. As the future economic benefits embodied in an intangible asset are consumed over time, the carrying amount of the asset is reduced to reflect that consumption. This is achieved by systematic allocation of the cost of the asset, less any residual value, as an expense over the asset's useful life. Amortisation is recognised whether or not there has been an increase in, for example, the asset's fair value or recoverable amount. Many factors need to be considered in

determining the useful life of an intangible asset including:

(a) the expected usage of the asset by the enterprise and whether the asset could be efficiently managed by another management team;

(b) typical product life cycles for the asset and public information on estimates of useful lives of similar types of assets that are used in a similar way;

(c) technical, technological or other types of obsolescence;

(d) the stability of the industry in which the asset operates and changes in the market demand for the products or services output from the asset;

(e) expected actions by competitors or potential competitors;

(f) the level of maintenance expenditure required to obtain the expected future economic benefits from the asset and the company's ability and intent to reach such a level;

(g) the period of control over the asset and legal or similar limits on the use of the asset, such as the expiry dates of related leases; and

(h) whether the useful life of the asset is dependent on the useful life of other assets of the enterprise.

65. Given the history of rapid changes in technology, computer software and many other intangible assets are susceptible to technological obsolescence. Therefore, it is likely that their useful life will be short.

66. Estimates of the useful life of an intangible asset generally become less reliable as the length of the useful life increases. This Standard adopts a presumption that the useful life of intangible assets is unlikely to exceed ten years.

67. In some cases, there may be persuasive evidence that the useful life of an intangible asset will be a specific period longer than ten years. In these cases, the presumption that the useful life generally does not exceed ten years is rebutted and the enterprise:

(a) amortises the intangible asset over the best estimate of its useful life;

(b) estimates the recoverable amount of the intangible asset at least annually in order to identify any impairment loss (see paragraph 83); and

(c) discloses the reasons why the presumption is rebutted and the factor(s) that played a significant role in determining the useful life of the asset (see paragraph 94(a)).

IndiaCode

Examples

A. An enterprise has purchased an exclusive right to generate hydro-electric power for sixty years. The costs of generating hydroelectric power are much lower than the costs of obtaining power from alternative sources. It is expected that the geographical area surrounding the power station will demand a significant amount of power from the power station for at least sixty years.

The enterprise amortises the right to generate power over sixty years, unless there is evidence that its useful life is shorter.

B. An enterprise has purchased an exclusive right to operate a toll motorway for thirty years. There is no plan to construct alternative routes in the area served by the motorway. It is expected that this motorway will be in use for at least thirty years.

The enterprise amortises the right to operate the motorway over thirty years, unless there is evidence that its useful life is shorter.

68. The useful life of an intangible asset may be very long but it is always finite. Uncertainty justifies estimating the useful life of an intangible asset on a prudent basis, but it does not justify choosing a life that is unrealistically short.

69. If control over the future economic benefits from an intangible asset is achieved through legal rights that have been granted for a finite period, the useful life of the intangible asset should not exceed the period of the legal rights unless:

(a) the legal rights are renewable; and

(b) renewal is virtually certain.

70. There may be both economic and legal factors influencing the useful life of an intangible asset: economic factors determine the period over which future economic benefits will be generated; legal factors may restrict the period over which the enterprise controls access to these benefits. The useful life is the shorter of the periods

determined by these factors.

71. The following factors, among others, indicate that renewal of a legal right is virtually certain:

(a) the fair value of the intangible asset is not expected to reduce as the initial expiry date approaches, or is not expected to reduce by more than the cost of renewing the underlying right;

(b) there is evidence (possibly based on past experience) that the legal rights will be renewed; and

(c) there is evidence that the conditions necessary to obtain the renewal of the legal right (if any) will be satisfied.

Amortisation Method

72. The amortisation method used should reflect the pattern in which the asset's economic benefits are consumed by the enterprise. If that pattern cannot be determined reliably, the straight-line method should be used. The amortisation charge for each period should be recognised as an expense unless another Accounting Standard permits or requires it to be included in the carrying amount of another asset.

73. A variety of amortisation methods can be used to allocate the depreciable amount of an asset on a systematic basis over its useful life. These methods include the straight-line method, the diminishing balance method and the unit of production method. The method used for an asset is selected based on the expected pattern of consumption of economic benefits and is consistently applied from period to period, unless there is a change in the expected pattern of consumption of economic benefits to be derived from that asset. There will rarely, if ever, be persuasive evidence to support an amortisation method for intangible assets that results in a lower amount of accumulated amortisation than under the straight-line method.

74. Amortisation is usually recognised as an expense. However, sometimes, the economic benefits embodied in an asset are absorbed by the enterprise in producing other assets rather than giving rise to an expense. In these cases, the amortisation charge forms part of the cost of the other asset and is included in its carrying amount. For example, the amortisation of intangible assets used in a production process is included in the carrying amount of inventories (see AS 2, *Valuation of Inventories*).

Residual Value

75. The residual value of an intangible asset should be assumed to be zero unless:

(a) there is a commitment by a third party to purchase the asset at the end of its useful life; or

(b) there is an active market for the asset and:

(i) residual value can be determined by reference to that market; and

(ii) it is probable that such a market will exist at the end of the asset's useful life.

76. A residual value other than zero implies that an enterprise expects to dispose of the intangible asset before the end of its economic life.

77. The residual value is estimated using prices prevailing at the date of acquisition of the asset, for the sale of a similar asset that has reached the end of its estimated useful life and that has operated under conditions similar to those in which the asset will be used. The residual value is not subsequently increased for changes in prices or value.

Review of Amortisation Period and Amortisation Method

78. The amortisation period and the amortisation method should be reviewed at least at each financial year end. If the expected useful life of the asset is significantly different from previous estimates, the amortisation period should be changed accordingly. If there has been a significant change in the expected pattern of economic benefits from the asset, the amortisation method should be changed to reflect the changed pattern. Such changes should be accounted for in accordance with AS 5, Net Profit or Loss for the Period, Prior Period Items and Changes in Accounting Policies.

79. During the life of an intangible asset, it may become apparent that the estimate of its useful life is inappropriate. For example, the useful life may be extended by subsequent expenditure that improves the condition of the asset beyond its originally assessed standard of performance. Also, the recognition of an impairment loss may indicate that the amortisation period needs to be changed.

80. Over time, the pattern of future economic benefits expected to flow to an enterprise from an intangible asset may change. For example, it may become apparent that a diminishing balance method of amortisation is appropriate rather than a straight-line method. Another example is if use of the rights represented by a licence is deferred pending action on other components of the business plan. In this case, economic benefits that flow from the asset may not be received until later periods.

IndiaCode

Recoverability of the Carrying Amount— Impairment Losses

81. To determine whether an intangible asset is impaired, an enterprise applies AS 28. That Standard explains how an enterprise reviews the carrying amount of its assets, how it determines the recoverable amount of an asset and when it recognises or reverses an impairment loss.

82. If an impairment loss occurs before the end of the first annual accounting period commencing after acquisition for an intangible asset acquired in an amalgamation in the nature of purchase, the impairment loss is recognised as an adjustment to both the amount assigned to the intangible asset and the goodwill (capital reserve) recognised at the date of the amalgamation. However, if the impairment loss relates to specific events or changes in circumstances occurring after the date of acquisition, the impairment loss is recognised under AS 28 and not as an adjustment to the amount assigned to the goodwill (capital reserve) recognised at the date of acquisition.

83. In addition to the requirements of AS 28, an enterprise should estimate the recoverable amount of the following intangible assets at least at each financial year end even if there is no indication that the asset is impaired:

(a) an intangible asset that is not yet available for use; and

(b) an intangible asset that is amortised over a period exceeding ten years from the date when the asset is available for use.

The recoverable amount should be determined under AS 28 and impairment losses recognised accordingly.

84. The ability of an intangible asset to generate sufficient future economic benefits to recover its cost is usually subject to great uncertainty until the asset is available for use. Therefore, this Standard requires an enterprise to test for impairment, at least annually, the carrying amount of an intangible asset that is not yet available for use.

85. It is sometimes difficult to identify whether an intangible asset may be impaired because, among other things, there is not necessarily any obvious evidence of obsolescence. This difficulty arises particularly if the asset has a long useful life. As a consequence, this Standard requires, as a minimum, an annual calculation of the recoverable amount of an intangible asset if its useful life exceeds ten years from the date when it becomes available for use.

86. The requirement for an annual impairment test of an intangible asset applies whenever the current total estimated useful life of the asset exceeds ten years from when it became available for use. Therefore, if the useful life of an intangible asset was estimated to be less than ten years at initial recognition, but the useful life is extended by subsequent expenditure to exceed ten years from when the asset became available for use, an enterprise performs the impairment test required under paragraph 83(b) and also makes the disclosure required under paragraph 94(a).

Retirements and Disposals

87. An intangible asset should be derecognised (eliminated from the balance sheet) on disposal or when no future economic benefits are expected from its use and subsequent disposal.

88. Gains or losses arising from the retirement or disposal of an intangible asset should be determined as the difference between the net disposal proceeds and the carrying amount of the asset and should be recognised as income or expense in the statement of profit and loss.

89. An intangible asset that is retired from active use and held for disposal is carried at its carrying amount at the date when the asset is retired from active use. At least at each financial year end, an enterprise tests the asset for impairment under AS 28, and recognises any impairment loss accordingly.

Disclosure

General

90. The financial statements should disclose the following for each class of intangible assets, distinguishing between internally generated intangible assets and other intangible assets:

(a) the useful lives or the amortisation rates used;

(b) the amortisation methods used;

(c) the gross carrying amount and the accumulated amortisation (aggregated with accumulated impairment losses) at the beginning and end of the period;

(d) a reconciliation of the carrying amount at the beginning and end of the period showing:

(i) additions, indicating separately those from internal development and through amalgamation;

(ii) retirements and disposals;

(iii) impairment losses recognised in the statement of profit and loss during the period (if any);

(iv) impairment losses reversed in the statement of profit and loss during the period (if any);

(v) amortisation recognised during the period; and

(vi) other changes in the carrying amount during the period.

91. A class of intangible assets is a grouping of assets of a similar nature and use in an enterprise's operations. Examples of separate classes may include:

(a) brand names;

(b) mastheads and publishing titles;

(c) computer software;

(d) licences and franchises;

(e) copyrights, and patents and other industrial property rights, service and operating rights;

(f) recipes, formulae, models, designs and prototypes; and

(g) intangible assets under development.

The classes mentioned above are disaggregated (aggregated) into smaller (larger) classes if this results in more relevant information for the users of the financial statements.

92. An enterprise discloses information on impaired intangible assets under AS 28 in addition to the information required by paragraph 90(d)(iii) and (iv).

93. An enterprise discloses the change in an accounting estimate or accounting policy such as that arising from changes in the amortisation method, the amortisation period or estimated residual values, in accordance with AS 5, *Net Profit or Loss for the Period, Prior Period Items and Changes in Accounting Policies.*

94. The financial statements should also disclose:

(a) if an intangible asset is amortised over more than ten years, the reasons why it is presumed that the useful life of an intangible asset will exceed ten years from the date when the asset is available for use. In giving these reasons, the enterprise should describe the factor(s) that played a significant role in determining the useful life of the asset;

(b) a description, the carrying amount and remaining amortisation period of any individual intangible asset that is material to the financial statements of the enterprise as a whole;

(c) the existence and carrying amounts of intangible assets whose title is restricted and the carrying amounts of intangible assets pledged as security for liabilities; and

(d) the amount of commitments for the acquisition of intangible assets.

95. When an enterprise describes the factor(s) that played a significant role in determining the useful life of an intangible asset that is amortised over more than ten years, the enterprise considers the list of factors in paragraph 64.

Research and Development Expenditure

96. The financial statements should disclose the aggregate amount of research and development expenditure recognised as an expense during the period.

97. Research and development expenditure comprises all expenditure that is directly attributable to research or development activities or that can be allocated on a reasonable and consistent basis to such activities (see paragraphs 53-54 for guidance on the type of expenditure to be included for the purpose of the disclosure requirement in paragraph 96).

Other Information

98. An enterprise is encouraged, but not required, to give a description of any fully amortised intangible asset that is still in use.

Transitional Provisions[39]

99. Where, on the date of this Standard coming into effect, an enterprise is following an accounting policy of not

[39] Transitional Provisions given in Paragraphs 99-100 are relevant only for standards notified under Companies (Accounting Standards) Rules, 2006, as amended from time to time.

amortising an intangible item or amortising an intangible item over a period longer than the period determined under paragraph 63 of this Standard and the period determined under paragraph 63 has expired on the date of this Standard coming into effect, the carrying amount appearing in the balance sheet in respect of that item should be eliminated with a corresponding adjustment to the opening balance of revenue reserves.

In the event the period determined under paragraph 63 has not expired on the date of this Standard coming into effect and:

(a) if the enterprise is following an accounting policy of not amortising an intangible item, the carrying amount of the intangible item should be restated, as if the accumulated amortisation had always been determined under this Standard, with the corresponding adjustment to the opening balance of revenue reserves. The restated carrying amount should be amortised over the balance of the period as determined in paragraph 63.

(b) if the remaining period as per the accounting policy followed by the enterprise:

(i) is shorter as compared to the balance of the period determined under paragraph 63, the carrying amount of the intangible item should be amortised over the remaining period as per the accounting policy followed by the enterprise,

(ii) is longer as compared to the balance of the period determined under paragraph 63, the carrying amount of the intangible item should be restated, as if the accumulated amortisation had always been determined under this Standard, with the corresponding adjustment to the opening balance of revenue reserves. The restated carrying amount should be amortised over the balance of the period as determined in paragraph 63.

100. Illustration B attached to the Standard illustrates the application of paragraph 99.

Illustration A

This illustration which does not form part of the Accounting Standard, provides illustrative application of the principles laid down in the Standard to internal use software and web-site costs. Its purpose is to illustrate the application of the Accounting Standard to assist in clarifying its meaning.

I. Illustrative Application of the Accounting Standard to Internal Use Computer Software

Computer software for internal use can be internally generated or acquired.

Internally Generated Computer Software

1. Internally generated computer software for internal use is developed or modified internally by the enterprise solely to meet the needs of the enterprise and at no stage it is planned to sell it.

2. The stages of development of internally generated software may be categorised into the following two phases:

- Preliminary project stage, i.e., the research phase
- Development stage

Preliminary project stage

3. At the preliminary project stage the internally generated software should not be recognised as an asset. Expenditure incurred in the preliminary project stage should be recognised as an expense when it is incurred. The reason for such a treatment is that at this stage of the software project an enterprise cannot demonstrate that an asset exists from which future economic benefits are probable.

4. When a computer software project is in the preliminary project stage, enterprises are likely to:

(a) Make strategic decisions to allocate resources between alternative projects at a given point in time. For example, should programmers develop a new payroll system or direct their efforts toward correcting existing problems in an operating system.

(b) Determine the performance requirements (that is, what it is that they need the software to do) and systems requirements for the computer software project it has proposed to undertake.

(c) Explore alternative means of achieving specified performance requirements. For example, should an entity make or buy the software. Should the software run on a mainframe or a client server system.

(d) Determine that the technology needed to achieve performance requirements exists.

(e) Select a consultant to assist in the development and/or installation of the software.

Development Stage

5. An internally generated software arising at the development stage should be recognised as an asset if, and only if, an enterprise can demonstrate all of the following:

(a) the technical feasibility of completing the internally generated software so that it will be available for internal use;

(b) the intention of the enterprise to complete the internally generated software and use it to perform the functions intended. For example, the intention to complete the internally generated software can be demonstrated if the enterprise commits to the funding of the software project;

(c) the ability of the enterprise to use the software;

(d) how the software will generate probable future economic benefits. Among other things, the enterprise should demonstrate the usefulness of the software;

(e) the availability of adequate technical, financial and other resources to complete the development and to use the software; and

(f) the ability of the enterprise to measure the expenditure attributable to the software during its development reliably.

6. Examples of development activities in respect of internally generated software include:

(a) Design including detailed program design - which is the process of detail design of computer software that takes product function, feature, and technical requirements to their most detailed, logical form and is ready for coding.

(b) Coding which includes generating detailed instructions in a computer language to carry out the requirements described in the detail program design. The coding of computer software may begin prior to, concurrent with, or subsequent to the completion of the detail program design.

At the end of these stages of the development activity, the enterprise has a working model, which is an operative version of the computer software capable of performing all the major planned functions, and is ready for initial testing ("beta" versions).

(c) Testing which is the process of performing the steps necessary to determine whether the coded computer software product meets function, feature, and technical performance requirements set forth in the product design.

At the end of the testing process, the enterprise has a master version of the internal use software, which is a completed version together with the related user documentation and the training materials.

Cost of internally generated software

7. The cost of an internally generated software is the sum of the expenditure incurred from the time when the software first met the recognition criteria for an intangible asset as stated in paragraphs 20 and 21 of this Standard and paragraph 5 above. An expenditure which did not meet the recognition criteria as aforesaid and expensed in an earlier financial statements should not be reinstated if the recognition criteria are met later.

8. The cost of an internally generated software comprises all expenditure that can be directly attributed or allocated on a reasonable and consistent basis to create the software for its intended use. The cost include:

(a) expenditure on materials and services used or consumed in developing the software;

(b) the salaries, wages and other employment related costs of personnel directly engaged in developing the software;

(c) any expenditure that is directly attributable to generating software; and

(d) overheads that are necessary to generate the software and that can be allocated on a reasonable and consistent basis to the software (For example, an allocation of the depreciation of fixed assets, insurance premium and rent). Allocation of overheads are made on basis similar to those used in allocating the overhead to inventories.

9. The following are not components of the cost of an internally generated software:

(a) selling, administration and other general overhead expenditure unless this expenditure can be directly attributable to the development of the software;

(b) clearly identified inefficiencies and initial operating losses incurred before software achieves the planned performance; and

(c) expenditure on training the staff to use the internally generated software.

Software Acquired for Internal Use

10. The cost of a software acquired for internal use should be recognised as an asset if it meets the recognition criteria prescribed in paragraphs 20 and 21 of this Standard.

11. The cost of a software purchased for internal use comprises its purchase price, including any import duties and other taxes (other than those subsequently recoverable by the enterprise from the taxing authorities) and any directly attributable expenditure on making the software ready for its use. Any trade discounts and rebates are deducted in arriving at the cost. In the determination of cost, matters stated in paragraphs 24 to 34 of the Standard need to be considered, as appropriate.

Subsequent expenditure

12. Enterprises may incur considerable cost in modifying existing software systems. Subsequent expenditure on software after its purchase or its completion should be recognised as an expense when it is incurred unless:

(a) it is probable that the expenditure will enable the software to generate future economic benefits in excess of its originally assessed standards of performance; and

(b) the expenditure can be measured and attributed to the software reliably.

If these conditions are met, the subsequent expenditure should be added to the carrying amount of the software. Costs incurred in order to restore or maintain the future economic benefits that an enterprise can expect from the originally assessed standard of performance of existing software systems is recognised as an expense when, and only when, the restoration or maintenance work is carried out.

Amortisation period

13. The depreciable amount of a software should be allocated on a systematic basis over the best estimate of its useful life. The amortisation should commence when the software is available for use.

14. As per this Standard, there is a rebuttable presumption that the useful life of an intangible asset will not exceed ten years from the date when the asset is available for use. However, given the history of rapid changes in technology, computer software is susceptible to technological obsolescence. Therefore, it is likely that useful life of the software will be much shorter, say 3 to 5 years.

Amortisation method

15. The amortisation method used should reflect the pattern in which the software's economic benefits are consumed by the enterprise. If that pattern can not be determined reliably, the straight-line method should be used. The amortisation charge for each period should be recognised as an expenditure unless another Accounting Standard permits or requires it to be included in the carrying amount of another asset. For example, the amortisation of a software used in a production process is included in the carrying amount of inventories.

II. Illustrative Application of the Accounting Standard to Web-Site Costs

1. An enterprise may incur internal expenditures when developing, enhancing and maintaining its own web site. The web site may be used for various purposes such as promoting and advertising products and services, providing electronic services, and selling products and services.

2. The stages of a web site's development can be described as follows:

(a) Planning - includes undertaking feasibility studies, defining objectives and specifications, evaluating alternatives and selecting preferences;

(b) Application and Infrastructure Development - includes obtaining a domain name, purchasing and developing hardware and operating software, installing developed applications and stress testing; and

(c) Graphical Design and Content Development - includes designing the appearance of web pages and creating, purchasing, preparing and uploading information, either textual or graphical in nature, on the web site prior to the web site becoming available for use. This information may either be stored in separate databases that are integrated into (or accessed from) the web site or coded directly into the web pages.

3. Once development of a web site has been completed and the web site is available for use, the web site commences an operating stage. During this stage, an enterprise maintains and enhances the applications, infrastructure, graphical design and content of the web site.

4. The expenditures for purchasing, developing, maintaining and enhancing hardware (e.g., web servers, staging servers, production servers and Internet connections) related to a web site are not accounted for under this Standard but are accounted for under AS 10, *Property, Plant and Equipment*. Additionally, when an enterprise incurs an expenditure for having an Internet service provider host the enterprise's web site on it's own servers connected to

the Internet, the expenditure is recognised as an expense.

5. An intangible asset is defined in paragraph 6 of this Standard as an identifiable non-monetary asset, without physical substance, held for use in the production or supply of goods or services, for rental to others, or for administrative purposes. Paragraph 7 of this Standard provides computer software as a common example of an intangible asset. By analogy, a web site is another example of an intangible asset. Accordingly, a web site developed by an enterprise for its own use is an internally generated intangible asset that is subject to the requirements of this Standard.

6. An enterprise should apply the requirements of this Standard to an internal expenditure for developing, enhancing and maintaining its own web site. Paragraph 55 of this Standard provides expenditure on an intangible item to be recognised as an expense when incurred unless it forms part of the cost of an intangible asset that meets the recognition criteria in paragraphs 19-54 of the Standard. Paragraph 56 of the Standard requires expenditure on start-up activities to be recognised as an expense when incurred. Developing a web site by an enterprise for its own use is not a start-up activity to the extent that an internally generated intangible asset is created. An enterprise applies the requirements and guidance in paragraphs 39-54 of this Standard to an expenditure incurred for developing its own web site in addition to the general requirements for recognition and initial measurement of an intangible asset. The cost of a web site, as described in paragraphs 52-54 of this Standard, comprises all expenditure that can be directly attributed, or allocated on a reasonable and consistent basis, to creating, producing and preparing the asset for its intended use.

The enterprise should evaluate the nature of each activity for which an expenditure is incurred (e.g., training employees and maintaining the web site) and the web site's stage of development or post-development:

(a) Paragraph 41 of this Standard requires an expenditure on research (or on the research phase of an internal project) to be recognised as an expense when incurred. The examples provided in paragraph 43 of this Standard are similar to the activities undertaken in the Planning stage of a web site's development. Consequently, expenditures incurred in the Planning stage of a web site's development are recognised as an expense when incurred.

(b) Paragraph 44 of this Standard requires an intangible asset arising from the development phase of an internal project to be recognised if an enterprise can demonstrate fulfillment of the six criteria specified. Application and Infrastructure Development and Graphical Design and Content Development stages are similar in nature to the development phase. Therefore, expenditures incurred in these stages should be recognised as an intangible asset if, and only if, in addition to complying with the general requirements for recognition and initial measurement of an intangible asset, an enterprise can demonstrate those items described in paragraph 44 of this Standard. In addition,

(i) an enterprise may be able to demonstrate how its web site will generate probable future economic benefits under paragraph 44(d) by using the principles in AS 28. This includes situations where the web site is developed solely or primarily for promoting and advertising an enterprise's own products and services. Demonstrating how a web site will generate probable future economic benefits under paragraph 44(d) by assessing the economic benefits to be received from the web site and using the principles in AS 28, may be particularly difficult for an enterprise that develops a web site solely or primarily for advertising and promoting its own products and services; information is unlikely to be available for reliably estimating the amount obtainable from the sale of the web site in an arm's length transaction, or the future cash inflows and outflows to be derived from its continuing use and ultimate disposal. In this circumstance, an enterprise determines the futureeconomic benefits of the cash-generating unit to which the web site belongs, if it does not belong to one. If the web site is considered a corporate asset (one that does not generate cash inflows independently from other assets and their carrying amount cannot be fully attributed to a cash- generating unit), then an enterprise applies the 'bottom-up' test and/or the 'top-down' test under AS 28.

(ii) an enterprise may incur an expenditure to enable use of content, which had been purchased or created for another purpose, on its web site (e.g., acquiring a license to reproduce information) or may purchase or create content specifically for use on its web site prior to the web site becoming available for use. In such circumstances, an enterprise should determine whether a separate asset, is identifiable with respect to such content (e.g., copyrights and licenses), and if a separate asset is not identifiable, then the expenditure should be included in the cost ofdeveloping the web site when the expenditure meets the conditions in paragraph 44 of this Standard. As per paragraph 20 of this Standard, an intangible asset is recognised if, and only if, it meets specified criteria, including the definition of an intangible asset. Paragraph 52 indicates that the cost of an internally generated intangible asset is the sum of expenditure incurred from the time when the intangible asset first meets the specified recognition criteria. When an enterprise acquires or creates content, it may be possible to identify an intangible asset (e.g., a license or a copyright) separate from a web site. Consequently, an enterprise determines whether an expenditure to enable use of content, which had been created for

another purpose, on its web site becoming available for use results in a separate identifiable asset or the expenditure is included in the cost of developing the web site.

(c) the operating stage commences once the web site is available for use, and therefore an expenditure to maintain or enhance the web site after development has been completed should be recognised as an expense when it is incurred unless it meets the criteria in paragraph 59 of the Standard. Paragraph 60 explains that if the expenditure is required to maintain the asset at its originally assessed standard of performance, then the expenditure is recognised as an expense when incurred.

7. An intangible asset is measured subsequent to initial recognition by applying the requirements in paragraph 62 of this Standard. Additionally, since paragraph 68 of the Standard states that an intangible asset always has a finite useful life, a web site that is recognised as an asset is amortised over the best estimate of its useful life. As indicated in paragraph 65 of the Standard, web sites are susceptible to technological obsolescence, and given the history of rapid changes in technology, their useful life will be short.

8. The following table illustrates examples of expenditures that occur within each of the stages described in paragraphs 2 and 3 above and application of paragraphs 5 and 6 above. It is not intended to be a comprehensive checklist of expenditures that might be incurred.

Nature of Expenditure	**Accounting treatment**
Planning • undertaking feasibility studies • defining hardware and software specifications • evaluating alternative products and suppliers • selecting preferences	Expense when incurred
Application and Infrastructure Development • purchasing or developing hardware	Apply the requirements of AS 10
• obtaining a domain name • developing operating software (e.g., operating system and server software) • developing code for the application installing developed applications on the web server • stress testing	Expense when incurred, unless it meets the recognition criteria under paragraphs 20 and 44
Graphical Design and Content Development • designing the appearance (e.g., layout and colour) of web pages • creating, purchasing, preparing (e.g., creating links and identifying tags), and uploading information, either textual or graphical in nature, on the web site prior to the web site becoming available for use. Examples of content include information about an enterprise, products or services offered for sale, and topics that subscribers access	If a separate asset is not identifiable, then expense when incurred, unless it meets the recognition criteria under paragraphs 20 and 44
Operating • updating graphics and revising content • adding new functions, features and content • registering the web site with search engines	Expense when incurred, unless in rare circumstances it meets the criteria in paragraph 59, in which case the expenditure is included in the cost of the web site

IndiaCode

• backing up data • reviewing security access • analysing usage of the web site	
Other • selling, administrative and other general overhead expenditure unless it can be directly attributed to preparing the web site for use • clearly identified inefficiencies and initial operating losses incurred before the web site achieves planned performance (e.g., false start testing) • training employees to operate the web site	Expense when incurred

Illustration B

This Illustration which does not form part of the Accounting Standard, provides illustrative application of the requirements contained in paragraph 99 of this Accounting Standard in respect of transitional provisions.

Illustration 1 - Intangible Item was not amortised and the amortisation period determined under paragraph 63 has expired.

An intangible item is appearing in the balance sheet of A Ltd. at Rs. 10 lakhs as on 1-4-2003. The item was acquired for Rs. 10 lakhs on April 1, 1990 and was available for use from that date. The enterprise has been following an accounting policy of not amortising the item. Applying paragraph 63, the enterprise determines that the item would have been amortised over a period of

10 years from the date when the item was available for use i.e., April 1, 1990.

Since the amortisation period determined by applying paragraph 63 has already expired as on 1-4-2003, the carrying amount of the intangible item of Rs. 10 lakhs would be required to be eliminated with a corresponding adjustment to the opening balance of revenue reserves as on 1-4-2003.

Illustration 2 - Intangible Item is being amortised and theamortisation period determined under paragraph 63 has expired.

An intangible item is appearing in the balance sheet of A Ltd. at Rs. 8 lakhs as on 1-4-2003. The item was acquired for Rs. 20 lakhs on April 1, 1991 and was available for use from that date. The enterprise has been following a policy of amortising the item over a period of 20 years on straight-line basis. Applying paragraph 63, the enterprise determines that the item would have been amortised over a period of 10 years from the date when the item was available for use i.e., April 1, 1991.

Since the amortisation period determined by applying paragraph 63 has already expired as on 1-4-2003, the carrying amount of Rs. 8 lakhs would be required to be eliminated with a corresponding adjustment to the opening balance of revenue reserves as on 1-4-2003.

Illustration 3 - Amortisation period determined under paragraph 63 has not expired and the remaining amortisation period as per the accounting policy followed by the enterprise is shorter.

An intangible item is appearing in the balance sheet of A Ltd. at Rs. 8 lakhs as on 1-4-2003. The item was acquired for Rs. 20 lakhs on April 1, 2000 and was available for use from that date. The enterprise has been following a policy of amortising the intangible item over a period of 5 years on straight line basis. Applying paragraph 63, the enterprise determines the amortisation period to be 8 years, being the best estimate of its useful life, from the date when the item was available for use i.e., April 1, 2000.

On 1-4-2003, the remaining period of amortisation is 2 years as per the accounting policy followed by the enterprise which is shorter as compared to the balance of amortisation period determined by applying paragraph 63, i.e., 5 years. Accordingly, the enterprise would be required to amortise the intangible item over the remaining 2 years as per the accounting policy followed by the enterprise.

Illustration 4 - Amortisation period determined under paragraph 63 has not expired and the remaining amortisation period as per the accounting policy followed by the enterprise is longer.

An intangible item is appearing in the balance sheet of A Ltd. at Rs. 18 lakhs as on 1-4-2003. The item was acquired for Rs. 24 lakhs on April 1, 2000 and was available for use from that date. The enterprise has been following a policy of amortising the intangible item over a period of 12 years on straight-line basis. Applying

paragraph 63, the enterprise determines that the item would have been amortised over a period of 10 years on straight line basis from the date when the item was available for use i.e., April 1, 2000.

On 1-4-2003, the remaining period of amortisation is 9 years as per the accounting policy followed by the enterprise which is longer as compared to the balance of period stipulated in paragraph 63, i.e., 7 years. Accordingly, the enterprise would be required to restate the carrying amount of intangible item on 1-4-2003 at Rs. 16.8 lakhs (Rs. 24 lakhs - 3xRs. 2.4 lakhs, i.e., amortisation that would have been charged as per the Standard) and the difference of Rs. 1.2 lakhs (Rs. 18 lakhs-Rs. 16.8 lakhs) would be required to be adjusted against the opening balance of the revenue reserves. The carrying amount of Rs. 16.8 lakhs would be amortised over 7 years which is the balance of the amortisation period as per paragraph 63.

Illustration 5 - Intangible Item is not amortised and amortisation period determined under paragraph 63 has not expired.

An intangible item is appearing in the balance sheet of A Ltd. at Rs. 20 lakhs as on 1-4-2003. The item was acquired for Rs. 20 lakhs on April 1, 2000 and was available for use from that date. The enterprise has been following an accounting policy of not amortising the item. Applying paragraph 63, the enterprise determines that the item would have been amortised over a period of 10 years on straight line basis from the date when the item was available for use i.e., April 1, 2000.

On 1-4-2003, the enterprise would be required to restate the carrying amount of intangible item at Rs. 14 lakhs (Rs. 20 lakhs - 3xRs. 2 lakhs, i.e., amortisation that would have been charged as per the Standard) and the difference of Rs. 6 lakhs (Rs. 20 lakhs-Rs. 14 lakhs) would be required to be adjusted against the opening balance of the revenue reserves. The carrying amount of Rs. 14 lakhs would be amortised over 7 years which is the balance of the amortisation period as per paragraph 63.

Accounting Standard (AS) 27

Financial Reporting of Interests in Joint Ventures

*(This Accounting Standard includes paragraphs set in **bold italic** type and plain type, which have equal authority. Paragraphs in bold italic type indicate the main principles. This Accounting Standard should be read in the context of its objective and the General Instructions contained in part A of the Annexure to the Notification.)*

This Standard is mandatory in respect of separate financial statements of an enterprise. In respect of consolidated financial statements of an enterprise, this Standard is mandatory in nature where the enterprise prepares and presents the consolidated financial statements.

Objective

The objective of this Standard is to set out principles and procedures for accounting for interests in joint ventures and reporting of joint venture assets, liabilities, income and expenses in the financial statements of venturers and investors.

Scope

1. This Standard should be applied in accounting for interests in joint ventures and the reporting of joint venture assets, liabilities, income and expenses in the financial statements of venturers and investors, regardless of the structures or forms under which the joint venture activities take place.

2. The requirements relating to accounting for joint ventures in consolidated financial statements, contained in this Standard, are applicable only where consolidated financial statements are prepared and presented by the venturer.

Definitions

3. For the purpose of this Standard, the following terms are used with the meanings specified:

3.1 A joint venture is a contractual arrangement whereby two or more parties undertake an economic activity, which is subject to joint control.

3.2 Joint control is the contractually agreed sharing of control over an economic activity.

3.3 Control is the power to govern the financial and operating policies of an economic activity so as to obtain benefits from it.

3.4 A venturer is a party to a joint venture and has joint control over that joint venture.

3.5 An investor in a joint venture is a party to a joint venture and does not have joint control over that joint venture.

3.6 Proportionate consolidation is a method of accounting and reporting whereby a venturer's share of each of the assets, liabilities, income and expenses of a jointly controlled entity is reported as separate line items in the venturer's financial statements.

Forms of Joint Venture

4. Joint ventures take many different forms and structures. This Standard identifies three broad types - jointly controlled operations, jointly controlled assets and jointly controlled entities - which are commonly described as, and meet the definition of, joint ventures. The following characteristics are common to all joint ventures:

(a) two or more venturers are bound by a contractual arrangement; and

(b) the contractual arrangement establishes joint control.

Contractual Arrangement

5. The existence of a contractual arrangement distinguishes interests which involve joint control from investments in associates in which the investor has significant influence (see Accounting Standard (AS) 23, *Accounting for Investments in Associates in Consolidated Financial Statements*). Activities which have no contractual arrangement to establish joint control are not joint ventures for the purposes of this Standard.

6. In some exceptional cases, an enterprise by a contractual arrangement establishes joint control over an entity which is a subsidiary of that enterprise within the meaning of Accounting Standard (AS) 21, *Consolidated Financial Statements*. In such cases, the entity is consolidated under AS 21 by the said enterprise, and is not treated as a joint venture as per this Standard. The consolidation of such an entity does not necessarily preclude other venturer(s) treating such an entity as a joint venture.

7. The contractual arrangement may be evidenced in a number of ways, for example by a contract between the venturers or minutes of discussions between the venturers. In some cases, the arrangement is incorporated in the articles or other by-laws of the joint venture. Whatever its form, the contractual arrangement is normally in writing and deals with such matters as:

(a) the activity, duration and reporting obligations of the joint venture;

(b) the appointment of the board of directors or equivalent governing body of the joint venture and the voting rights of the venturers;

(c) capital contributions by the venturers; and

(d) the sharing by the venturers of the output, income, expenses or results of the joint venture.

8. The contractual arrangement establishes joint control over the joint venture. Such an arrangement ensures that no single venturer is in a position to unilaterally control the activity. The arrangement identifies those decisions in areas essential to the goals of the joint venture which require the consent of all the venturers and those decisions which may require the consent of a specified majority of the venturers.

9. The contractual arrangement may identify one venturer as the operator or manager of the joint venture. The operator does not control the joint venture but acts within the financial and operating policies which have been agreed to by the venturers in accordance with the contractual arrangement and delegated to the operator.

Jointly Controlled Operations

10. The operation of some joint ventures involves the use of the assets and other resources of the venturers rather than the establishment of a corporation, partnership or other entity, or a financial structure that is separate from the venturers themselves. Each venturer uses its own fixed assets and carries its own inventories. It also incurs its own expenses and liabilities and raises its own finance, which represent its own obligations. The joint venture's activities may be carried out by the venturer's employees alongside the venturer's similar activities. The joint venture agreement usually provides means by which the revenue from the jointly controlled operations and any expenses incurred in common are shared among the venturers.

11. An example of a jointly controlled operation is when two or more venturers combine their operations, resources and expertise in order to manufacture, market and distribute, jointly, a particular product, such as an aircraft. Different parts of the manufacturing process are carried out by each of the venturers. Each venturer bears its own costs and takes a share of the revenue from the sale of the aircraft, such share being determined in accordance with the contractual arrangement.

12. In respect of its interests in jointly controlled operations, a venturer should recognise in its separate financial statements and consequently in its consolidated financial statements:

(a) the assets that it controls and the liabilities that it incurs; and

(b) the expenses that it incurs and its share of the income that it earns from the joint venture.

13. Because the assets, liabilities, income and expenses are already recognised in the separate financial statements of the venturer, and consequently in its consolidated financial statements, no adjustments or other consolidation procedures are required in respect of these items when the venturer presents consolidated financial

statements.

14. Separate accounting records may not be required for the joint venture itself and financial statements may not be prepared for the joint venture. However, the venturers may prepare accounts for internal management reporting purposes so that they may assess the performance of the joint venture.

Jointly Controlled Assets

15. Some joint ventures involve the joint control, and often the joint ownership, by the venturers of one or more assets contributed to, or acquired for the purpose of, the joint venture and dedicated to the purposes of the joint venture. The assets are used to obtain economic benefits for the venturers. Each venturer may take a share of the output from the assets and each bears an agreed share of the expenses incurred.

16. These joint ventures do not involve the establishment of a corporation, partnership or other entity, or a financial structure that is separate from the venturers themselves. Each venturer has control over its share of future economic benefits through its share in the jointly controlled asset.

17. An example of a jointly controlled asset is an oil pipeline jointly controlled and operated by a number of oil production companies. Each venturer uses the pipeline to transport its own product in return for which it bears an agreed proportion of the expenses of operating the pipeline. Another example of a jointly controlled asset is when two enterprises jointly control a property, each taking a share of the rents received and bearing a share of the expenses.

18. In respect of its interest in jointly controlled assets, a venturer should recognise, in its separate financial statements, and consequently in its consolidated financial statements:

(a) its share of the jointly controlled assets, classified according to the nature of the assets;

(b) any liabilities which it has incurred;

(c) its share of any liabilities incurred jointly with the other venturers in relation to the joint venture;

(d) any income from the sale or use of its share of the output of the joint venture, together with its share of any expenses incurred by the joint venture; and

(e) any expenses which it has incurred in respect of its interest in the joint venture.

19. In respect of its interest in jointly controlled assets, each venturer includes in its accounting records and recognises in its separate financial statements and consequently in its consolidated financial statements:

(a) its share of the jointly controlled assets, classified according to the nature of the assets rather than as an investment, for example, a share of a jointly controlled oil pipeline is classified as a fixed asset;

(b) any liabilities which it has incurred, for example, those incurred in financing its share of the assets;

(c) its share of any liabilities incurred jointly with other venturers in relation to the joint venture;

(d) any income from the sale or use of its share of the output of the joint venture, together with its share of any expenses incurred by the joint venture; and

(e) any expenses which it has incurred in respect of its interest in the joint venture, for example, those related to financing the venturer's interest in the assets and selling its share of the output.

Because the assets, liabilities, income and expenses are already recognised in the separate financial statements of the venturer, and consequently in its consolidated financial statements, no adjustments or other consolidation procedures are required in respect of these items when the venturer presents consolidated financial statements.

20. The treatment of jointly controlled assets reflects the substance and economic reality and, usually, the legal form of the joint venture. Separate accounting records for the joint venture itself may be limited to those expenses incurred in common by the venturers and ultimately borne by the venturers according to their agreed shares. Financial statements may not be prepared for the joint venture, although the venturers may prepare accounts for internal management reporting purposes so that they may assess the performance of the joint venture.

Jointly Controlled Entities

21. A jointly controlled entity is a joint venture which involves the establishment of a corporation, partnership or other entity in which each venturer has an interest. The entity operates in the same way as other enterprises, except that a contractual arrangement between the venturers establishes joint control over the economic activity of the entity.

22. A jointly controlled entity controls the assets of the joint venture, incurs liabilities and expenses and earns income. It may enter into contracts in its own name and raise finance for the purposes of the joint venture activity. Each venturer is entitled to a share of the results of the jointly controlled entity, although some jointly

IndiaCode

controlled entities also involve a sharing of the output of the joint venture.

23. An example of a jointly controlled entity is when two enterprises combine their activities in a particular line of business by transferring the relevant assets and liabilities into a jointly controlled entity. Another example is when an enterprise commences a business in a foreign country in conjunction with the government or other agency in that country, by establishing a separate entity which is jointly controlled by the enterprise and the government or agency.

24. Many jointly controlled entities are similar to those joint ventures referred to as jointly controlled operations or jointly controlled assets. For example, the venturers may transfer a jointly controlled asset, such as an oil pipeline, into a jointly controlled entity. Similarly, the venturers may contribute, into a jointly controlled entity, assets which will be operated jointly. Some jointly controlled operations also involve the establishment of a jointly controlled entity to deal with particular aspects of the activity, for example, the design, marketing, distribution or after-sales service of the product.

25. A jointly controlled entity maintains its own accounting records and prepares and presents financial statements in the same way as other enterprises in conformity with the requirements applicable to that jointly controlled entity.

Separate Financial Statements of a Venturer

26. In a venturer's separate financial statements, interest in a jointly controlled entity should be accounted for as an investment in accordance with Accounting Standard (AS) 13, Accounting for Investments.

27. Each venturer usually contributes cash or other resources to the jointly controlled entity. These contributions are included in the accounting records of the venturer and are recognised in its separate financial statements as an investment in the jointly controlled entity.

Consolidated Financial Statements of a Venturer

28. In its consolidated financial statements, a venturer should report its interest in a jointly controlled entity using proportionate consolidation except:

(a) an interest in a jointly controlled entity which is acquired and held exclusively with a view to its subsequent disposal in the near future; and

(b) an interest in a jointly controlled entity which operates under severe long-term restrictions that significantly impair its ability to transfer funds to the venturer.

Interest in such a jointly controlled entity should be accounted for as an investment in accordance with Accounting Standard (AS) 13, Accounting for Investments.

Explanation:

The period of time, which is considered as near future for the purposes of this Standard primarily depends on the facts and circumstances of each case. However, ordinarily, the meaning of the words 'near future' is considered as not more than twelve months from acquisition of relevant investments unless a longer period can be justified on the basis of facts and circumstances of the case. The intention with regard to disposal of the relevant investment is considered at the time of acquisition of the investment. Accordingly, if the relevant investment is acquired without an intention to its subsequent disposal in near future, and subsequently, it is decided to dispose off the investment, such an investment is not excluded from application of the proportionate consolidation method, until the investment is actually disposed off. Conversely, if the relevant investment is acquired with an intention to its subsequent disposal in near future, however, due to some valid reasons, it could not be disposed off within that period, the same will continue to be excluded from application of the proportionate consolidation method, provided there is no change in the intention.

29. When reporting an interest in a jointly controlled entity in consolidated financial statements, it is essential that a venturer reflects the substance and economic reality of the arrangement, rather than the joint venture's particular structure or form. In a jointly controlled entity, a venturer has control over its share of future economic benefits through its share of the assets and liabilities of the venture. This substance and economic reality is reflected in the consolidated financial statements of the venturer when the venturer reports its interests in the assets, liabilities, income and expenses of the jointly controlled entity by using proportionate consolidation.

30. The application of proportionate consolidation means that the consolidated balance sheet of the venturer includes its share of the assets that it controls jointly and its share of the liabilities for which it is jointly responsible. The consolidated statement of profit and loss of the venturer includes its share of the income and expenses of the jointly controlled entity. Many of the procedures appropriate for the application of proportionate consolidation are similar to the procedures for the consolidation of investments in subsidiaries, which are set out in Accounting Standard (AS) 21, Consolidated Financial Statements.

IndiaCode

31. For the purpose of applying proportionate consolidation, the venturer uses the consolidated financial statements of the jointly controlled entity.

32. Under proportionate consolidation, the venturer includes separate line items for its share of the assets, liabilities, income and expenses of the jointly controlled entity in its consolidated financial statements. For example, it shows its share of the inventory of the jointly controlled entity separately as part of the inventory of the consolidated group; it shows its share of the fixed assets of the jointly controlled entity separately as part of the same items of the consolidated group.

Explanation:

While applying proportionate consolidation method, the venturer's share in the post-acquisition reserves of the jointly controlled entity is shown separately under the relevant reserves in the consolidated financial statements.

33. The financial statements of the jointly controlled entity used in applying proportionate consolidation are usually drawn up to the same date as the financial statements of the venturer. When the reporting dates are different, the jointly controlled entity often prepares, for applying proportionate consolidation, statements as at the same date as that of the venturer. When it is impracticable to do this, financial statements drawn up to different reporting dates may be used provided the difference in reporting dates is not more than six months. In such a case, adjustments are made for the effects of significant transactions or other events that occur between the date of financial statements of the jointly controlled entity and the date of the venturer's financial statements. The consistency principle requires that the length of the reporting periods, and any difference in the reporting dates, are consistent from period to period.

34. The venturer usually prepares consolidated financial statements using uniform accounting policies for the like transactions and events in similar circumstances. In case a jointly controlled entity uses accounting policies other than those adopted for the consolidated financial statements for like transactions and events in similar circumstances, appropriate adjustments are made to the financial statements of the jointly controlled entity when they are used by the venturer in applying proportionate consolidation. If it is not practicable to do so, that fact is disclosed together with the proportions of the items in the consolidated financial statements to which the different accounting policies have been applied.

35. While giving effect to proportionate consolidation, it is inappropriate to offset any assets or liabilities by the deduction of other liabilities or assets or any income or expenses by the deduction of other expenses or income, unless a legal right of set-off exists and the offsetting represents the expectation as to the realisation of the asset or the settlement of the liability.

36. Any excess of the cost to the venturer of its interest in a jointly controlled entity over its share of net assets of the jointly controlled entity, at the date on which interest in the jointly controlled entity is acquired, is recognised as goodwill, and separately disclosed in the consolidated financial statements. When the cost to the venturer of its interest in a jointly controlled entity is less than its share of the net assets of the jointly controlled entity, at the date on which interest in the jointly controlled entity is acquired, the difference is treated as a capital reserve in the consolidated financial statements. Where the carrying amount of the venturer's interest in a jointly controlled entity is different from its cost, the carrying amount is considered for the purpose of above computations.

37. The losses pertaining to one or more investors in a jointly controlled entity may exceed their interests in the equity[40] of the jointly controlled entity. Such excess, and any further losses applicable to such investors, are recognised by the venturers in the proportion of their shares in the venture, except to the extent that the investors have a binding obligation to, and are able to, make good the losses. If the jointly controlled entity subsequently reports profits, all such profits are allocated to venturers until the investors' share of losses previously absorbed by the venturers has been recovered.

38. A venturer should discontinue the use of proportionateconsolidation from the date that:

(a) it ceases to have joint control over a jointly controlled entity but retains, either in whole or in part, its interest in the entity; or

(b) the use of the proportionate consolidation is no longer appropriate because the jointly controlled entity operates under severe long-term restrictions that significantly impair its ability to transfer funds to the venturer.

39. From the date of discontinuing the use of the proportionate consolidation, interest in a jointly controlled entity should be accounted for:

(a) in accordance with Accounting Standard (AS) 21, Consolidated Financial Statements, if the venturer acquires unilateral control over the entity and becomes parent within the meaning of that

[40] Equity is the residual interest in the assets of an enterprise after deducting all its liabilities.

Standard; and

(b) in all other cases, as an investment in accordance with Accounting Standard (AS) 13, Accounting for Investments, or in accordance with Accounting Standard (AS) 23, Accounting for Investments in Associates in Consolidated Financial Statements, as appropriate. For this purpose, cost of the investment should be determined as under:

(i) the venturer's share in the net assets of the jointly controlled entity as at the date of discontinuance of proportionate consolidation should be ascertained, and

(ii) the amount of net assets so ascertained should be adjusted with the carrying amount of the relevant goodwill/capital reserve (see paragraph 36) as at the date of discontinuance of proportionate consolidation.

Transactions between a Venturer and Joint Venture

40. When a venturer contributes or sells assets to a joint venture, recognition of any portion of a gain or loss from the transaction should reflect the substance of the transaction. While the assets are retained by the joint venture, and provided the venturer has transferred the significant risks and rewards of ownership, the venturer should recognise only that portion of the gain or loss which is attributable to the interests of the other venturers. The venturer should recognise the full amount of any loss when the contribution or sale provides evidence of a reduction in the net realisable value of current assets or an impairment loss.

41. When a venturer purchases assets from a joint venture, the venturer should not recognise its share of the profits of the joint venture from the transaction until it resells the assets to an independent party. A venturer should recognise its share of the losses resulting from these transactions in the same way as profits except that losses should be recognised immediately when they represent a reduction in the net realisable value of current assets or an impairment loss.

42. To assess whether a transaction between a venturer and a joint venture provides evidence of impairment of an asset, the venturer determines the recoverable amount of the asset as per Accounting Standard (AS) 28, *Impairment of Assets*. In determining value in use, future cash flows from the asset are estimated based on continuing use of the asset and its ultimate disposal by the joint venture.

43. In case of transactions between a venturer and a joint venture in the form of a jointly controlled entity, the requirements of paragraphs 40 and 41 should be applied only in the preparation and presentation of consolidated financial statements and not in the preparation and presentation of separate financial statements of the venturer.

44. In the separate financial statements of the venturer, the full amount of gain or loss on the transactions taking place between the venturer and the jointly controlled entity is recognised. However, while preparing the consolidated financial statements, the venturer's share of the unrealised gain or loss is eliminated. Unrealised losses are not eliminated, if and to the extent they represent a reduction in the net realisable value of current assets or an impairment loss. The venturer, in effect, recognises, in consolidated financial statements, only that portion of gain or loss which is attributable to the interests of other venturers.

Reporting Interests in Joint Ventures in the Financial Statements of an Investor

45. An investor in a joint venture, which does not have joint control, should report its interest in a joint venture in its consolidated financial statements in accordance with Accounting Standard (AS) 13, Accounting for Investments, Accounting Standard (AS) 21, Consolidated Financial Statements or Accounting Standard (AS) 23, Accounting for Investments in Associates in Consolidated Financial Statements, as appropriate.

46. In the separate financial statements of an investor, the interests in joint ventures should be accounted for in accordance with Accounting Standard (AS) 13, Accounting for Investments.

Operators of Joint Ventures

47. Operators or managers of a joint venture should account for any fees in accordance with Accounting Standard (AS) 9, Revenue Recognition.

48. One or more venturers may act as the operator or manager of a joint venture. Operators are usually paid a management fee for such duties. The fees are accounted for by the joint venture as an expense.

Disclosure

49. A venturer should disclose the information required by paragraphs 50, 51, and 52 in its separate financial statements as well as in consolidated financial statements.

50. A venturer should disclose the aggregate amount of the following contingent liabilities, unless the probability of loss is remote, separately from the amount of other contingent liabilities:

(a) any contingent liabilities that the venturer has incurred in relation to its interests in joint ventures and its share in each of the contingent liabilities which have been incurred jointly with other venturers;

(b) its share of the contingent liabilities of the joint ventures themselves for which it is contingently liable; and

(c) those contingent liabilities that arise because the venturer is contingently liable for the liabilities of the other venturers of a joint venture.

51. A venturer should disclose the aggregate amount of the following commitments in respect of its interests in joint ventures separately from other commitments:

(a) any capital commitments of the venturer in relation to its interests in joint ventures and its share in the capital commitments that have been incurred jointly with other venturers; and

(b) its share of the capital commitments of the joint ventures themselves.

52. A venturer should disclose a list of all joint ventures and description of interests in significant joint ventures. In respect of jointly controlled entities, the venturer should also disclose the proportion of ownership interest, name and country of incorporation or residence.

53. A venturer should disclose, in its separate financial statements, the aggregate amounts of each of the assets, liabilities, income and expenses related to its interests in the jointly controlled entities.

Accounting Standard (AS) 28

Impairment of Assets

*(This Accounting Standard includes paragraphs set in **bold italic** type and plain type, which have equal authority. Paragraphs in bold italic type indicate the main principles. This Accounting Standard should be read in the context of its objective and the General Instructions contained in part A of the Annexure to the Notification.)*

Objective

The objective of this Standard is to prescribe the procedures that an enterprise applies to ensure that its assets are carried at no more than their recoverable amount. An asset is carried at more than its recoverable amount if its carrying amount exceeds the amount to be recovered through use or sale of the asset. If this is the case, the asset is described as impaired and this Standard requires the enterprise to recognise an impairment loss. This Standard also specifies when an enterprise should reverse an impairment loss and it prescribes certain disclosures for impaired assets.

Scope

1. This Standard should be applied in accounting for the impairment of all assets, other than:

(a) inventories (see AS 2, Valuation of Inventories);

(b) assets arising from construction contracts (see AS 7, Construction Contracts);

(c) financial assets[1], including investments that are included in the scope of AS 13, Accounting for Investments; and

(d) deferred tax assets (see AS 22, Accounting for Taxes on Income).

2. This Standard does not apply to inventories, assets arising from construction contracts, deferred tax assets or investments because existing Accounting Standards applicable to these assets already contain specific requirements for recognising and measuring the impairment related to these assets.

3. This Standard applies to assets that are carried at cost. It also applies to assets that are carried at revalued amounts in accordance with other applicable Accounting Standards. However, identifying whether a revalued asset may be impaired depends on the basis used to determine the fair value of the asset:

(a) if the fair value of the asset is its market value, the only difference between the fair value of the asset and its net selling price is the direct incremental costs to dispose of the asset:

(i) if the disposal costs are negligible, the recoverable amount of the revalued asset is necessarily close to, or greater than, its revalued amount (fair value). In this case, after the revaluation requirements have

[1] A financial asset is any asset that is:
(a) cash;
(b) a contractual right to receive cash or another financial asset from another enterprise;
(c) a contractual right to exchange financial instruments with another enterprise under conditions that are potentially favourable; or
(d) an ownership interest in another enterprise.

been applied, it is unlikely that the revalued asset is impaired and recoverable amount need not be estimated; and

(ii) if the disposal costs are not negligible, net selling price of the revalued asset is necessarily less than its fair value. Therefore, the revalued asset will be impaired if its value in use is less than its revalued amount (fair value). In this case, after the revaluation requirements have been applied, an enterprise applies this Standard to determine whether the asset may be impaired; and

(b) if the asset's fair value is determined on a basis other than its market value, its revalued amount (fair value) may be greater or lower than its recoverable amount. Hence, after the revaluation requirements have been applied, an enterprise applies this Standard to determine whether the asset may be impaired.

Definitions

4. The following terms are used in this Standard with the meanings specified:

4.1 Recoverable amount is the higher of an asset's net selling price and its value in use.

4.2 Value in use is the present value of estimated future cash flows expected to arise from the continuing use of an asset and from its disposal at the end of its useful life.

Provided that in the context of Small and Medium-sized Companies, as defined in the Notification, the definition of the term 'value in use' would read as follows:

"Value in use is the present value of estimated future cash flows expected to arise from the continuing use of an asset and from its disposal at the end of its useful life, or a reasonable estimate thereof. "

Explanation:

The definition of the term 'value in use' in the proviso implies that instead of using the present value technique, a reasonable estimate of the 'value in use' can be made. Consequently, if an SMC chooses to measure the 'value in use' by not using the present value technique, the relevant provisions of AS 28, such as discount rate etc., would not be applicable to such an SMC.

4.3 Net selling price is the amount obtainable from the sale of an asset in an arm's length transaction between knowledgeable, willing parties, less the costs of disposal.

4.4 Costs of disposal are incremental costs directly attributable to the disposal of an asset, excluding finance costs and income tax expense.

4.5 An impairment loss is the amount by which the carrying amount of an asset exceeds its recoverable amount.

4.6 Carrying amount is the amount at which an asset is recognised in the balance sheet after deducting any accumulated depreciation (amortisation) and accumulated impairment losses thereon.

4.7 Depreciation (Amortisation) is a systematic allocation of the depreciable amount of an asset over its useful life.[2]

4.8 Depreciable amount is the cost of an asset, or other amount substituted for cost in the financial statements, less its residual value.

4.9 Useful life is either:

(a) the period of time over which an asset is expected to be used by the enterprise; or

(b) the number of production or similar units expected to be obtained from the asset by the enterprise.

4.10 A cash generating unit is the smallest identifiable group of assets that generates cash inflows from continuing use that are largely independent of the cash inflows from other assets or groups of assets.

4.11 Corporate assets are assets other than goodwill that contribute to the future cash flows of both the cash generating unit under review and other cash generating units.

4.12 An active market is a market where all the following conditions exist :

(a) the items traded within the market are homogeneous;

(b) willing buyers and sellers can normally be found at any time; and

(c) prices are available to the public.

[2] In the case of an intangible asset or goodwill, the term 'amortisation' is generally used instead of 'depreciation'. Both terms have the same meaning.

Identifying an Asset that may be Impaired

5. An asset is impaired when the carrying amount of the asset exceeds its recoverable amount. Paragraphs 6 to 13 specify when recoverable amount should be determined. These requirements use the term 'an asset' but apply equally to an individual asset or a cash-generating unit.

6. An enterprise should assess at each balance sheet date whether there is any indication that an asset may be impaired. If any such indication exists, the enterprise should estimate the recoverable amount of the asset.

7. Paragraphs 8 to 10 describe some indications that an impairment loss may have occurred: if any of those indications is present, an enterprise is required to make a formal estimate of recoverable amount. If no indication of a potential impairment loss is present, this Standard does not require an enterprise to make a formal estimate of recoverable amount.

8. In assessing whether there is any indication that an asset may be impaired, an enterprise should consider, as a minimum, the following indications:

External sources of information

- ***(a) during the period, an asset's market value has declined significantly more than would be expected as a result of the passage of time or normal use;***
- ***(b) significant changes with an adverse effect on the enterprise have taken place during the period, or will take place in the near future, in the technological, market, economic or legal environment in which the enterprise operates or in the market to which an asset is dedicated;***
- ***(c) market interest rates or other market rates of return on investments have increased during the period, and those increases are likely to affect the discount rate used in calculating an asset's value in use and decrease the asset's recoverable amount materially;***
- ***(d) the carrying amount of the net assets of the reporting enterprise is more than its market capitalisation;***

Internal sources of information

- ***(e) evidence is available of obsolescence or physical damage of an asset;***
- ***(f) significant changes with an adverse effect on the enterprise have taken place during the period, or are expected to take place in the near future, in the extent to which, or manner in which, an asset is used or is expected to be used. These changes include plans to discontinue or restructure the operation to which an asset belongs or to dispose of an asset before the previously expected date; and***
- ***(g) evidence is available from internal reporting that indicates that the economic performance of an asset is, or will be, worse than expected.***

9. The list of paragraph 8 is not exhaustive. An enterprise may identify other indications that an asset may be impaired and these would also require the enterprise to determine the asset's recoverable amount.

10. Evidence from internal reporting that indicates that an asset may be impaired includes the existence of:

- (a) cash flows for acquiring the asset, or subsequent cash needs for operating or maintaining it, that are significantly higher than those originally budgeted;
- (b) actual net cash flows or operating profit or loss flowing from the asset that are significantly worse than those budgeted;
- (c) a significant decline in budgeted net cash flows or operating profit, or a significant increase in budgeted loss, flowing from the asset; or
- (d) operating losses or net cash outflows for the asset, when current period figures are aggregated with budgeted figures for the future.

11. The concept of materiality applies in identifying whether the recoverable amount of an asset needs to be estimated. For example, if previous calculations show that an asset's recoverable amount is significantly greater than its carrying amount, the enterprise need not re-estimate the asset's recoverable amount if no events have occurred that would eliminate that difference. Similarly, previous analysis may show that an asset's recoverable amount is not sensitive to one (or more) of the indications listed in paragraph 8.

12. As an illustration of paragraph 11, if market interest rates or other market rates of return on investments have increased during the period, an enterprise is not required to make a formal estimate of an asset's recoverable amount in the following cases:

- (a) if the discount rate used in calculating the asset's value in use is unlikely to be affected by the increase in these market rates. For example, increases in short-term interest rates may not have a material effect on the

discount rate used for an asset that has a long remaining useful life; or

(b) if the discount rate used in calculating the asset's value in use is likely to be affected by the increase in these market rates but previous sensitivity analysis of recoverable amount shows that:

(i) it is unlikely that there will be a material decrease in recoverable amount because future cash flows are also likely to increase. For example, in some cases, an enterprise may be able to demonstrate that it adjusts its revenues to compensate for any increase in market rates; or

(ii) the decrease in recoverable amount is unlikely to result in a material impairment loss.

13. If there is an indication that an asset may be impaired, this may indicate that the remaining useful life, the depreciation (amortisation) method or the residual value for the asset need to be reviewed and adjusted under the Accounting Standard applicable to the asset, such as Accounting Standard (AS) 10, *Property, Plant and Equipment*[3], even if no impairment loss is recognised for the asset.

Measurement of Recoverable Amount

14. This Standard defines recoverable amount as the higher of an asset's net selling price and value in use. Paragraphs 15 to 55 set out the requirements for measuring recoverable amount. These requirements use the term 'an asset' but apply equally to an individual asset or a cash-generating unit.

15. It is not always necessary to determine both an asset's net selling price and its value in use. For example, if either of these amounts exceeds the asset's carrying amount, the asset is not impaired and it is not necessary to estimate the other amount.

16. It may be possible to determine net selling price, even if an asset is not traded in an active market. However, sometimes it will not be possible to determine net selling price because there is no basis for making a reliable estimate of the amount obtainable from the sale of the asset in an arm's length transaction between knowledgeable and willing parties. In this case, the recoverable amount of the asset may be taken to be its value in use.

17. If there is no reason to believe that an asset's value in use materially exceeds its net selling price, the asset's recoverable amount may be taken to be its net selling price. This will often be the case for an asset that is held for disposal. This is because the value in use of an asset held for disposal will consist mainly of the net disposal proceeds, since the future cash flows from continuing use of the asset until its disposal are likely to be negligible.

18. Recoverable amount is determined for an individual asset, unless the asset does not generate cash inflows from continuing use that are largely independent of those from other assets or groups of assets. If this is the case, recoverable amount is determined for the cash-generating unit to which the asset belongs (see paragraphs 63 to 86), unless either:

(a) the asset's net selling price is higher than its carrying amount; or

(b) the asset's value in use can be estimated to be close to its net selling price and net selling price can be determined.

19. In some cases, estimates, averages and simplified computations may provide a reasonable approximation of the detailed computations illustrated in this Standard for determining net selling price or value in use.

Net Selling Price

20. The best evidence of an asset's net selling price is a price in a binding sale agreement in an arm's length transaction, adjusted for incremental costs that would be directly attributable to the disposal of the asset.

21. If there is no binding sale agreement but an asset is traded in an active market, net selling price is the asset's market price less the costs of disposal. The appropriate market price is usually the current bid price. When current bid prices are unavailable, the price of the most recent transaction may provide a basis from which to estimate net selling price, provided that there has not been a significant change in economic circumstances between the transaction date and the date at which the estimate is made.

22. If there is no binding sale agreement or active market for an asset, net selling price is based on the best information available to reflect the amount that an enterprise could obtain, at the balance sheet date, for the disposal of the asset in an arm's length transaction between knowledgeable, willing parties, after deducting the costs of disposal. In determining this amount, an enterprise considers the outcome of recent transactions for similar assets within the same industry. Net selling price does not reflect a forced sale, unless management is compelled to sell immediately.

23. Costs of disposal, other than those that have already been recognised as liabilities, are deducted in determining net selling price. Examples of such costs are legal costs, costs of removing the asset, and direct incremental costs to bring an asset into condition for its sale. However, termination benefits and costs associated with reducing or

[3] Amortisation (depreciation) of intangible assets is dealt with in AS 26, *Intangible Assets*.

reorganising a business following the disposal of an asset are not direct incremental costs to dispose of the asset.

24. Sometimes, the disposal of an asset would require the buyer to take over a liability and only a single net selling price is available for both the asset and the liability. Paragraph 76 explains how to deal with such cases.

Value in Use

25. Estimating the value in use of an asset involves the following steps:

(a) estimating the future cash inflows and outflows arising from continuing use of the asset and from its ultimate disposal; and

(b) applying the appropriate discount rate to these future cash flows.

Basis for Estimates of Future Cash Flows

26. In measuring value in use:

(a) cash flow projections should be based on reasonable and supportable assumptions that represent management's best estimate of the set of economic conditions that will exist over the remaining useful life of the asset. Greater weight should be given to external evidence;

(b) cash flow projections should be based on the most recent financial budgets/forecasts that have been approved by management. Projections based on these budgets/forecasts should cover a maximum period of five years, unless a longer period can be justified; and

(c) cash flow projections beyond the period covered by the most recent budgets/forecasts should be estimated by extrapolating the projections based on the budgets/forecasts using a steady or declining growth rate for subsequent years, unless an increasing rate can be justified. This growth rate should not exceed the long-term average growth rate for the products, industries, or country or countries in which the enterprise operates, or for the market in which the asset is used, unless a higher rate can be justified.

27. Detailed, explicit and reliable financial budgets/forecasts of future cash flows for periods longer than five years are generally not available. For this reason, management's estimates of future cash flows are based on the most recent budgets/forecasts for a maximum of five years. Management may use cash flow projections based on financial budgets/forecasts over a period longer than five years if management is confident that these projections are reliable and it can demonstrate its ability, based on past experience, to forecast cash flows accurately over that longer period.

28. Cash flow projections until the end of an asset's useful life are estimated by extrapolating the cash flow projections based on the financial budgets/ forecasts using a growth rate for subsequent years. This rate is steady or declining, unless an increase in the rate matches objective information about patterns over a product or industry lifecycle. If appropriate, the growth rate is zero or negative.

29. Where conditions are very favourable, competitors are likely to enter the market and restrict growth. Therefore, enterprises will have difficulty in exceeding the average historical growth rate over the long term (say, twenty years) for the products, industries, or country or countries in which the enterprise operates, or for the market in which the asset is used.

30. In using information from financial budgets/forecasts, an enterprise considers whether the information reflects reasonable and supportable assumptions and represents management's best estimate of the set of economic conditions that will exist over the remaining useful life of the asset.

Composition of Estimates of Future Cash Flows

31. Estimates of future cash flows should include:

(a) projections of cash inflows from the continuing use of the asset;

(b) projections of cash outflows that are necessarily incurred to generate the cash inflows from continuing use of the asset (including cash outflows to prepare the asset for use) and that can be directly attributed, or allocated on a reasonable and consistent basis, to the asset; and

(c) net cash flows, if any, to be received (or paid) for the disposal of the asset at the end of its useful life.

32. Estimates of future cash flows and the discount rate reflect consistent assumptions about price increases due to general inflation. Therefore, if the discount rate includes the effect of price increases due to general inflation, future cash flows are estimated in nominal terms. If the discount rate excludes the effect of price increases due to general inflation, future cash flows are estimated in real terms but include future specific price increases or decreases.

33. Projections of cash outflows include future overheads that can be attributed directly, or allocated on a reasonable and consistent basis, to the use of the asset.

34. When the carrying amount of an asset does not yet include all the cash outflows to be incurred before it is ready for use or sale, the estimate of future cash outflows includes an estimate of any further cash outflow that is expected to be incurred before the asset is ready for use or sale. For example, this is the case for a building under construction or for a development project that is not yet completed.

35. To avoid double counting, estimates of future cash flows do not include:

(a) cash inflows from assets that generate cash inflows from continuing use that are largely independent of the cash inflows from the asset under review (for example, financial assets such as receivables); and

(b) cash outflows that relate to obligations that have already been recognised as liabilities (for example, payables, pensions or provisions).

36. Future cash flows should be estimated for the asset in its current condition. Estimates of future cash flows should not include estimated future cash inflows or outflows that are expected to arise from:

(a) a future restructuring to which an enterprise is not yet committed; or

(b) future capital expenditure that will improve or enhance the asset in excess of its originally assessed standard of performance.

37. Because future cash flows are estimated for the asset in its current condition, value in use does not reflect:

(a) future cash outflows or related cost savings (for example, reductions in staff costs) or benefits that are expected to arise from a future restructuring to which an enterprise is not yet committed; or

(b) future capital expenditure that will improve or enhance the asset in excess of its originally assessed standard of performance or the related future benefits from this future expenditure.

38. A restructuring is a programme that is planned and controlled by management and that materially changes either the scope of the business undertaken by an enterprise or the manner in which the business is conducted[4].

39. When an enterprise becomes committed to a restructuring, some assets are likely to be affected by this restructuring. Once the enterprise is committed to the restructuring, in determining value in use, estimates of future cash inflows and cash outflows reflect the cost savings and other benefits from the restructuring (based on the most recent financial budgets/forecasts that have been approved by management).

Illustration 5 given in the Illustrations attached to the Standard illustrates the effect of a future restructuring on a value in use calculation.

40. Until an enterprise incurs capital expenditure that improves or enhances an asset in excess of its originally assessed standard of performance, estimates of future cash flows do not include the estimated future cash inflows that are expected to arise from this expenditure (see Illustration 6 given in the Illustrations attached to the Standard).

41. Estimates of future cash flows include future capital expenditure necessary to maintain or sustain an asset at its originally assessed standard of performance.

42. Estimates of future cash flows should not include:

(a) cash inflows or outflows from financing activities; or

(b) income tax receipts or payments.

43. Estimated future cash flows reflect assumptions that are consistent with the way the discount rate is determined. Otherwise, the effect of some assumptions will be counted twice or ignored. Because the time value of money is considered by discounting the estimated future cash flows, these cash flows exclude cash inflows or outflows from financing activities. Similarly, since the discount rate is determined on a pre-tax basis, future cash flows are also estimated on a pre-tax basis.

44. The estimate of net cash flows to be received (or paid) for the disposal of an asset at the end of its useful life should be the amount that an enterprise expects to obtain from the disposal of the asset in an arm's length transaction between knowledgeable, willing parties, after deducting the estimated costs of disposal.

45. The estimate of net cash flows to be received (or paid) for the disposal of an asset at the end of its useful life is determined in a similar way to an asset's net selling price, except that, in estimating those net cash flows:

(a) an enterprise uses prices prevailing at the date of the estimate for similar assets that have reached the end of their useful life and that have operated under conditions similar to those in which the asset will be used; and

(b) those prices are adjusted for the effect of both future price increases due to general inflation and specific future price increases (decreases). However, if estimates of future cash flows from the asset's

[4] See AS 29, *Provisions, Contingent Liabilities and Contingent Assets,* for further explanations on 'restructuring'.

continuing use and the discount rate exclude the effect of general inflation, this effect is also excluded from the estimate of net cash flows on disposal.

Foreign Currency Future Cash Flows

46. Future cash flows are estimated in the currency in which they will be generated and then discounted using a discount rate appropriate for that currency. An enterprise translates the present value obtained using the exchange rate at the balance sheet date (described in Accounting Standard (AS) 11, *The Effects of Changes in Foreign Exchange Rates*, as the closing rate).

Discount Rate

47. The discount rate(s) should be a pre tax rate(s) that reflect(s) current market assessments of the time value of money and the risks specific to the asset. The discount rate(s) should not reflect risks for which future cash flow estimates have been adjusted.

48. A rate that reflects current market assessments of the time value of money and the risks specific to the asset is the return that investors would require if they were to choose an investment that would generate cash flows of amounts, timing and risk profile equivalent to those that the enterprise expects to derive from the asset. This rate is estimated from the rate implicit in current market transactions for similar assets or from the weighted average cost of capital of a listed enterprise that has a single asset (or a portfolio of assets) similar in terms of service potential and risks to the asset under review.

49. When an asset-specific rate is not directly available from the market, an enterprise uses other bases to estimate the discount rate. The purpose is to estimate, as far as possible, a market assessment of:

(a) the time value of money for the periods until the end of the asset's useful life; and

(b) the risks that the future cash flows will differ in amount or timing from estimates.

50. As a starting point, the enterprise may take into account the following rates:

(a) the enterprise's weighted average cost of capital determined using techniques such as the Capital Asset Pricing Model;

(b) the enterprise's incremental borrowing rate; and

(c) other market borrowing rates.

51. These rates are adjusted:

(a) to reflect the way that the market would assess the specific risks associated with the projected cash flows; and

(b) to exclude risks that are not relevant to the projected cash flows.

Consideration is given to risks such as country risk, currency risk, price risk and cash flow risk.

52. To avoid double counting, the discount rate does not reflect risks for which future cash flow estimates have been adjusted.

53. The discount rate is independent of the enterprise's capital structure and the way the enterprise financed the purchase of the asset because the future cash flows expected to arise from an asset do not depend on the way in which the enterprise financed the purchase of the asset.

54. When the basis for the rate is post-tax, that basis is adjusted to reflect a pre-tax rate.

55. An enterprise normally uses a single discount rate for the estimate of an asset's value in use. However, an enterprise uses separate discount rates for different future periods where value in use is sensitive to a difference in risks for different periods or to the term structure of interest rates.

Recognition and Measurement of an Impairment Loss

56. Paragraphs 57 to 62 set out the requirements for recognising and measuring impairment losses for an individual asset. Recognition and measurement of impairment losses for a cash-generating unit are dealt with in paragraphs 87 to 92.

57. If the recoverable amount of an asset is less than its carrying amount, the carrying amount of the asset should be reduced to its recoverable amount. That reduction is an impairment loss.

58. An impairment loss should be recognised as an expense in the statement of profit and loss immediately, unless the asset is carried at revalued amount in accordance with another Accounting Standard (see Accounting Standard (AS) 10, Property, Plant and Equipment), in which case any impairment loss of a revalued asset should be treated as a revaluation decrease under that Accounting Standard.

IndiaCode

59. An impairment loss on a revalued asset is recognised as an expense in the statement of profit and loss. However, an impairment loss on a revalued asset is recognised directly against any revaluation surplus for the asset to the extent that the impairment loss does not exceed the amount held in the revaluation surplus for that same asset.

60. When the amount estimated for an impairment loss is greater than the carrying amount of the asset to which it relates, an enterprise should recognise a liability if, and only if, that is required by another Accounting Standard.

61. After the recognition of an impairment loss, the depreciation (amortisation) charge for the asset should be adjusted in future periods to allocate the asset's revised carrying amount, less its residual value (if any), on a systematic basis over its remaining useful life.

62. If an impairment loss is recognised, any related deferred tax assets or liabilities are determined under Accounting Standard (AS) 22, *Accounting for Taxes on Income* (see Illustration 3 given in the Illustrations attached to the Standard).

Cash-Generating Units

63. Paragraphs 64 to 92 set out the requirements for identifying the cash-generating unit to which an asset belongs and determining the carrying amount of, and recognising impairment losses for, cash-generating units.

Identification of the Cash-Generating Unit to Which an Asset Belongs

64. If there is any indication that an asset may be impaired, the recoverable amount should be estimated for the individual asset. If it is not possible to estimate the recoverable amount of the individual asset, an enterprise should determine the recoverable amount of the cash-generating unit to which the asset belongs (the asset's cash-generating unit).

65. The recoverable amount of an individual asset cannot be determined if:

(a) the asset's value in use cannot be estimated to be close to its net selling price (for example, when the future cash flows from continuing use of the asset cannot be estimated to be negligible); and

(b) the asset does not generate cash inflows from continuing use that are largely independent of those from other assets. In such cases, value in use and, therefore, recoverable amount, can be determined only for the asset's cash-generating unit.

India Code

Example

A mining enterprise owns a private railway to support its mining activities. The private railway could be sold only for scrap value and the private railway does not generate cash inflows from continuing use that are largely independent of the cash inflows from the other assets of the mine.

It is not possible to estimate the recoverable amount of the private railway because the value in use of the private railway cannot be determined and it is probably different from scrap value. Therefore, the enterprise estimates the recoverable amount of the cash-generating unit to which the private railway belongs, that is, the mine as a whole.

66. As defined in paragraph 4, an asset's cash-generating unit is the smallest group of assets that includes the asset and that generates cash inflows from continuing use that are largely independent of the cash inflows from other assets or groups of assets. Identification of an asset's cash-generating unit involves judgement. If recoverable amount cannot be determined for an individual asset, an enterprise identifies the lowest aggregation of assets that generate largely independent cash inflows from continuing use.

Example

A bus company provides services under contract with a municipality that requires minimum service on each of five separate routes. Assets devoted to each route and the cash flows from each route can be identified separately. One of the routes operates at a significant loss.

Because the enterprise does not have the option to curtail any one bus route, the lowest level of identifiable cash inflows from continuing use that are largely independent of the cash inflows from other assets or groups of assets is the cash inflows generated by the five routes together. The cash-generating unit for each route is the bus company as a whole.

67. Cash inflows from continuing use are inflows of cash and cash equivalents received from parties outside the reporting enterprise. In identifying whether cash inflows from an asset (or group of assets) are largely independent of the cash inflows from other assets (or groups of assets), an enterprise considers various factors including how management monitors the enterprise's operations (such as by-product lines, businesses, individual locations, districts or regional areas or in some other way) or how management makes decisions about continuing or disposing of the enterprise's assets and operations. Illustation 1 in the Illustrations attached to the Standard illustrates identification of a cash-generating unit.

68. If an active market exists for the output produced by an asset or a group of assets, this asset or group of

assets should be identified as a separate cash-generating unit, even if some or all of the output is used internally. If this is the case, management's best estimate of future market prices for the output should be used:

(a) in determining the value in use of this cash-generating unit, when estimating the future cash inflows that relate to the internal use of the output; and

(b) in determining the value in use of other cash-generating units of the reporting enterprise, when estimating the future cash outflows that relate to the internal use of the output.

69. Even if part or all of the output produced by an asset or a group of assets is used by other units of the reporting enterprise (for example, products at an intermediate stage of a production process), this asset or group of assets forms a separate cash-generating unit if the enterprise could sell this output in an active market. This is because this asset or group of assets could generate cash inflows from continuing use that would be largely independent of the cash inflows from other assets or groups of assets. In using information based on financial budgets/forecasts that relates to such a cash-generating unit, an enterprise adjusts this information if internal transfer prices do not reflect management's best estimate of future market prices for the cash-generating unit's output.

70. Cash-generating units should be identified consistently from period to period for the same asset or types of assets, unless a change is justified.

71. If an enterprise determines that an asset belongs to a different cash- generating unit than in previous periods, or that the types of assets aggregated for the asset's cash-generating unit have changed, paragraph 121 requires certain disclosures about the cash-generating unit, if an impairment loss is recognised or reversed for the cash-generating unit and is material to the financial statements of the reporting enterprise as a whole.

Recoverable Amount and Carrying Amount of a Cash- Generating Unit

72. The recoverable amount of a cash-generating unit is the higher of the cash-generating unit's net selling price and value in use. For the purpose of determining the recoverable amount of a cash-generating unit, any reference in paragraphs 15 to 55 to 'an asset' is read as a reference to 'a cash-generating unit'.

73. The carrying amount of a cash-generating unit should be determined consistently with the way the recoverable amount of the cash-generating unit is determined.

74. The carrying amount of a cash-generating unit:

(a) includes the carrying amount of only those assets that can be attributed directly, or allocated on a reasonable and consistent basis, to the cash-generating unit and that will generate the future cash inflows estimated in determining the cash-generating unit's value in use; and

(b) does not include the carrying amount of any recognised liability, unless the recoverable amount of the cash-generating unit cannot be determined without consideration of this liability.

This is because net selling price and value in use of a cash-generating unit are determined excluding cash flows that relate to assets that are not part of the cash-generating unit and liabilities that have already been recognised in the financial statements, as set out in paragraphs 23 and 35.

75. Where assets are grouped for recoverability assessments, it is important to include in the cash-generating unit all assets that generate the relevant stream of cash inflows from continuing use. Otherwise, the cash-generating unit may appear to be fully recoverable when in fact an impairment loss has occurred. In some cases, although certain assets contribute to the estimated future cash flows of a cash-generating unit, they cannot be allocated to the cash-generating unit on a reasonable and consistent basis. This might be the case for goodwill or corporate assets such as head office assets. Paragraphs 78 to 86 explain how to deal with these assets in testing a cash-generating unit for impairment.

76. It may be necessary to consider certain recognised liabilities in order to determine the recoverable amount of a cash-generating unit. This may occur if the disposal of a cash-generating unit would require the buyer to take over a liability. In this case, the net selling price (or the estimated cash flow from ultimate disposal) of the cash-generating unit is the estimated selling price for the assets of the cash-generating unit and the liability together, less the costs of disposal. In order to perform a meaningful comparison between the carrying amount of the cash-generating unit and its recoverable amount, the carrying amount of the liability is deducted in determining both the cash-generating unit's value in use and its carrying amount.

Example

A company operates a mine in a country where legislation requires that the owner must restore the site on completion of its mining operations. The cost of restoration includes the replacement of the overburden, which must be removed before mining operations commence. A provision for the costs to replace the overburden was recognised as soon as the overburden was removed. The amount provided was recognised as part of the cost of the mine and is being depreciated over the mine's useful life. The carrying amount of the provision for restoration costs is Rs. 50,00,000, which is equal to the present value of the restoration costs.

India Code

The enterprise is testing the mine for impairment. The cash-generating unit for the mine is the mine as a whole. The enterprise has received various offers to buy the mine at a price of around Rs. 80,00,000; this price encompasses the fact that the buyer will take over the obligation to restore the overburden. Disposal costs for the mine are negligible. The value in use of the mine is approximately Rs. 1,20,00,000 excluding restoration costs. The carrying amount of the mine is Rs. 1,00,00,000.

The net selling price for the cash-generating unit is Rs. 80,00,000. This amount considers restoration costs that have already been provided for. As a consequence, the value in use for the cash-generating unit is determined after consideration of the restoration costs and is estimated to be Rs. 70,00,000 (Rs. 1,20,00,000 less Rs. 50,00,000). The carrying amount of the cash-generating unit is Rs. 50,00,000, which is the carrying amount of the mine (Rs. 1,00,00,000) less the carrying amount of the provision for restoration costs (Rs. 50,00,000).

77. For practical reasons, the recoverable amount of a cash-generating unit is sometimes determined after consideration of assets that are not part of the cash-generating unit (for example, receivables or other financial assets) or liabilities that have already been recognised in the financial statements (for example, payables, pensions and other provisions). In such cases, the carrying amount of the cash-generating unit is increased by the carrying amount of those assets and decreased by the carrying amount of those liabilities.

Goodwill

78. In testing a cash-generating unit for impairment, an enterprise should identify whether goodwill that relates to this cash-generating unit is recognised in the financial statements. If this is the case, an enterprise should:

(a) perform a 'bottom-up' test, that is, the enterprise should:

(i) identify whether the carrying amount of goodwill can be allocated on a reasonable and consistent basis to the cash- generating unit under review; and

(ii) then, compare the recoverable amount of the cash- generating unit under review to its carrying amount (including the carrying amount of allocated goodwill, if any) and recognise any impairment loss in accordance with paragraph 87.

The enterprise should perform the step at (ii) above even if none of the carrying amount of goodwill can be allocated on a reasonable and consistent basis to the cash-generating unit under review; and

(b) if, in performing the 'bottom-up' test, the enterprise could not allocate the carrying amount of goodwill on a reasonable and consistent basis to the cash-generating unit under review, the enterprise should also perform a 'top-down' test, that is, the enterprise should:

(i) identify the smallest cash-generating unit that includes the cash-generating unit under review and to which the carrying amount of goodwill can be allocated on a reasonable and consistent basis (the 'larger ' cash- generating unit); and

(ii) then, compare the recoverable amount of the larger cash- generating unit to its carrying amount (including the carrying amount of allocated goodwill) and recognise any impairment loss in accordance with paragraph 87.

79. Goodwill arising on acquisition represents a payment made by an acquirer in anticipation of future economic benefits. The future economic benefits may result from synergy between the identifiable assets acquired or from assets that individually do not qualify for recognition in the financial statements. Goodwill does not generate cash flows independently from other assets or groups of assets and, therefore, the recoverable amount of goodwill as an individual asset cannot be determined. As a consequence, if there is an indication that goodwill may be impaired, recoverable amount is determined for the cash-generating unit to which goodwill belongs. This amount is then compared to the carrying amount of this cash-generating unit and any impairment loss is recognised in accordance with paragraph 87.

80. Whenever a cash-generating unit is tested for impairment, an enterprise considers any goodwill that is associated with the future cash flows to be generated by the cash-generating unit. If goodwill can be allocated on a reasonable and consistent basis, an enterprise applies the 'bottom-up' test only. If it is not possible to allocate goodwill on a reasonable and consistent basis, an enterprise applies both the 'bottom-up' test and 'top-down' test (see Illustration 7 given in the Illustrations attached to the Standard).

81. The 'bottom-up' test ensures that an enterprise recognises any impairment loss that exists for a cash-generating unit, including for goodwill that can be allocated on a reasonable and consistent basis. Whenever it is impracticable to allocate goodwill on a reasonable and consistent basis in the 'bottom-up' test, the combination of the 'bottom-up' and the 'top-down' test ensures that an enterprise recognises:

(a) first, any impairment loss that exists for the cash-generating unit excluding any consideration of goodwill; and

(b) then, any impairment loss that exists for goodwill. Because an enterprise applies the 'bottom-up' test first to all assets that may be impaired, any impairment loss identified for the larger cash-generating unit in the 'top-down' test relates only to goodwill allocated to the larger unit.

82. If the 'top-down' test is applied, an enterprise formally determines the recoverable amount of the larger cash-generating unit, unless there is persuasive evidence that there is no risk that the larger cash-generating unit is impaired.

Corporate Assets

83. Corporate assets include group or divisional assets such as the building of a headquarters or a division of the enterprise, EDP equipment or a research centre. The structure of an enterprise determines whether an asset meets the definition of corporate assets (see paragraph 4) for a particular cash- generating unit. Key characteristics of corporate assets are that they do not generate cash inflows independently from other assets or groups of assets and their carrying amount cannot be fully attributed to the cash-generating unit under review.

84. Because corporate assets do not generate separate cash inflows, the recoverable amount of an individual corporate asset cannot be determined unless management has decided to dispose of the asset. As a consequence, if there is an indication that a corporate asset may be impaired, recoverable amount is determined for the cash-generating unit to which the corporate asset belongs, compared to the carrying amount of this cash-generating unit and any impairment loss is recognised in accordance with paragraph 87.

85. In testing a cash-generating unit for impairment, an enterprise should identify all the corporate assets that relate to the cash-generating unit under review. For each identified corporate asset, an enterprise should then apply paragraph 78, that is:

(a) if the carrying amount of the corporate asset can be allocated on a reasonable and consistent basis to the cash-generating unit under review, an enterprise should apply the 'bottom-up' test only; and

(b) if the carrying amount of the corporate asset cannot be allocated on a reasonable and consistent basis to the cash-generating unit under review, an enterprise should apply both the 'bottom- up' and 'top-down' tests.

86. An Illustration of how to deal with corporate assets is given as Illustration 8 in the Illustrations attached to the Standard.

IndiaCode

Impairment Loss for a Cash-Generating Unit

87. An impairment loss should be recognised for a cash-generating unit if, and only if, its recoverable amount is less than its carrying amount. The impairment loss should be allocated to reduce the carrying amount of the assets of the unit in the following order:

(a) first, to goodwill allocated to the cash-generating unit (if any); and

(b) then, to the other assets of the unit on a pro-rata basis based on the carrying amount of each asset in the unit.

These reductions in carrying amounts should be treated as impairment losses on individual assets and recognised in accordance with paragraph 58.

88. In allocating an impairment loss under paragraph 87, the carrying amount of an asset should not be reduced below the highest of:

(a) its net selling price (if determinable);

(b) its value in use (if determinable); and

(c) zero.

The amount of the impairment loss that would otherwise have been allocated to the asset should be allocated to the other assets of the unit on a pro-rata basis.

89. The goodwill allocated to a cash-generating unit is reduced before reducing the carrying amount of the other assets of the unit because of its nature.

90. If there is no practical way to estimate the recoverable amount of each individual asset of a cash-generating unit, this Standard requires the allocation of the impairment loss between the assets of that unit other than goodwill on a pro-rata basis, because all assets of a cash-generating unit work together.

91. If the recoverable amount of an individual asset cannot be determined (see paragraph 65):

(a) an impairment loss is recognised for the asset if its carrying amount is greater than the higher of its net selling price and the results of the allocation procedures described in paragraphs 87 and 88; and

(b) no impairment loss is recognised for the asset if the related cash- generating unit is not impaired. This applies even if the asset's net selling price is less than its carrying amount.

Example

A machine has suffered physical damage but is still working, although not as well as it used to. The net selling price of the machine is less than its carrying amount. The machine does not generate independent cash inflows from continuing use. The smallest identifiable group of assets that includes the machine and generates cash inflows from continuing use that are largely independent of the cash inflows from other assets is the production line to which the machine belongs. The recoverable amount of the production line shows that the production line taken as a whole is not impaired.

Assumption 1: Budgets/forecasts approved by management reflect no commitment of management to replace the machine.

The recoverable amount of the machine alone cannot be estimated since the machine's value in use:

(a) may differ from its net selling price; and

(b) can be determined only for the cash-generating unit to which the machine belongs (the production line).

The production line is not impaired, therefore, no impairment loss is recognised for the machine. Nevertheless, the enterprise may need to reassess the depreciation period or the depreciation method for the machine. Perhaps, a shorter depreciation period or a faster depreciation method is required to reflect the expected remaining useful life of the machine or the pattern in which economic benefits are consumed by the enterprise.

Assumption 2: Budgets/forecasts approved by management reflect a commitment of management to replace the machine and sell it in the near future. Cash flows from continuing use of the machine until its disposal are estimated to be negligible.

The machine's value in use can be estimated to be close to its net selling price. Therefore, the recoverable amount of the machine can be determined and no consideration is given to the cash-generating unit to which the machine belongs (the production line). Since the machine's net selling price is less than its carrying amount, an impairment loss is recognised for the machine.

92. After the requirements in paragraphs 87 and 88 have been applied, a liability should be recognised for any remaining amount of an impairment loss for a cash-generating unit if that is required by another Accounting Standard.

Reversal of an Impairment Loss

93. Paragraphs 94 to 100 set out the requirements for reversing an impairment loss recognised for an asset or a cash-generating unit in prior accounting periods. These requirements use the term 'an asset' but apply equally to an individual asset or a cash-generating unit. Additional requirements are set out for an individual asset in paragraphs 101 to 105, for a cash-generating unit in paragraphs 106 to 107 and for goodwill in paragraphs 108 to 111.

94. An enterprise should assess at each balance sheet date whether there is any indication that an impairment loss recognised for an asset in prior accounting periods may no longer exist or may have decreased. If any such indication exists, the enterprise should estimate the recoverable amount of that asset.

95. In assessing whether there is any indication that an impairment loss recognised for an asset in prior accounting periods may no longer exist or may have decreased, an enterprise should consider, as a minimum, the following indications:

External sources of information

(a) the asset's market value has increased significantly during the period;

(b) significant changes with a favourable effect on the enterprise have taken place during the period, or will take place in the near future, in the technological, market, economic or legal environment in which the enterprise operates or in the market to which the asset is dedicated;

(c) market interest rates or other market rates of return on investments have decreased during the period, and those decreases are likely to affect the discount rate used in calculating the asset's value in use and increase the asset's recoverable amount materially;

Internal sources of information

(d) significant changes with a favourable effect on the enterprise have taken place during the period, or are expected to take place in the near future, in the extent to which, or manner in which, the asset is used or is expected to be used. These changes include capital expenditure that has been incurred during the period to improve or enhance an asset in excess of its originally assessed standard of performance or a commitment to

discontinue or restructure the operation to which the asset belongs; and

(e) evidence is available from internal reporting that indicates that the economic performance of the asset is, or will be, better than expected.

96. Indications of a potential decrease in an impairment loss in paragraph 95 mainly mirror the indications of a potential impairment loss in paragraph 8. The concept of materiality applies in identifying whether an impairment loss recognised for an asset in prior accounting periods may need to be reversed and the recoverable amount of the asset determined.

97. If there is an indication that an impairment loss recognised for an asset may no longer exist or may have decreased, this may indicate that the remaining useful life, the depreciation (amortisation) method or the residual value may need to be reviewed and adjusted in accordance with the Accounting Standard applicable to the asset, even if no impairment loss is reversed for the asset.

98. An impairment loss recognised for an asset in prior accounting periods should be reversed if there has been a change in the estimates of cash inflows, cash outflows or discount rates used to determine the asset's recoverable amount since the last impairment loss was recognised. If this is the case, the carrying amount of the asset should be increased to its recoverable amount. That increase is a reversal of an impairment loss.

99. A reversal of an impairment loss reflects an increase in the estimated service potential of an asset, either from use or sale, since the date when an enterprise last recognised an impairment loss for that asset. An enterprise is required to identify the change in estimates that causes the increase in estimated service potential. Examples of changes in estimates include:

(a) a change in the basis for recoverable amount (i.e., whether recoverable amount is based on net selling price or value in use);

(b) if recoverable amount was based on value in use: a change in the amount or timing of estimated future cash flows or in the discount rate; or

(c) if recoverable amount was based on net selling price: a change in estimate of the components of net selling price.

100. An asset's value in use may become greater than the asset's carrying amount simply because the present value of future cash inflows increases as they become closer. However, the service potential of the asset has not increased. Therefore, an impairment loss is not reversed just because of the passage of time (sometimes called the 'unwinding' of the discount), even if the recoverable amount of the asset becomes higher than its carrying amount.

Reversal of an Impairment Loss for an Individual Asset

101. The increased carrying amount of an asset due to a reversal of an impairment loss should not exceed the carrying amount that would have been determined (net of amortisation or depreciation) had no impairment loss been recognised for the asset in prior accounting periods.

102. Any increase in the carrying amount of an asset above the carrying amount that would have been determined (net of amortisation or depreciation) had no impairment loss been recognised for the asset in prior accounting periods is a revaluation. In accounting for such a revaluation, an enterprise applies the Accounting Standard applicable to the asset.

103. A reversal of an impairment loss for an asset should be recognised as income immediately in the statement of profit and loss, unless the asset is carried at revalued amount in accordance with another Accounting Standard (see Accounting Standard (AS) 10, Property, Plant and Equipment) in which case any reversal of an impairment loss on a revalued asset should be treated as a revaluation increase under that Accounting Standard.

104. A reversal of an impairment loss on a revalued asset is credited directly to equity under the heading revaluation surplus. However, to the extent that an impairment loss on the same revalued asset was previously recognised as an expense in the statement of profit and loss, a reversal of that impairment loss is recognised as income in the statement of profit and loss.

105. After a reversal of an impairment loss is recognised, the depreciation (amortisation) charge for the asset should be adjusted in future periods to allocate the asset's revised carrying amount, less its residual value (if any), on a systematic basis over its remaining useful life.

Reversal of an Impairment Loss for a Cash-Generating Unit

106. A reversal of an impairment loss for a cash-generating unit should be allocated to increase the carrying amount of the assets of the unit in the following order:

(a) first, assets other than goodwill on a pro-rata basis based on the carrying amount of each asset in the unit; and

IndiaCode

(b) then, to goodwill allocated to the cash-generating unit (if any), if the requirements in paragraph 108 are met.

These increases in carrying amounts should be treated as reversals of impairment losses for individual assets and recognised in accordance with paragraph 103.

107. In allocating a reversal of an impairment loss for a cash-generating unit under paragraph 106, the carrying amount of an asset should not be increased above the lower of:

(a) its recoverable amount (if determinable); and

(b) the carrying amount that would have been determined (net of amortisation or depreciation) had no impairment loss been recognised for the asset in prior accounting periods.

The amount of the reversal of the impairment loss that would otherwise have been allocated to the asset should be allocated to the other assets of the unit on a pro-rata basis.

Reversal of an Impairment Loss for Goodwill

108. As an exception to the requirement in paragraph 98, an impairment loss recognised for goodwill should not be reversed in a subsequent period unless:

(a) the impairment loss was caused by a specific external event of an exceptional nature that is not expected to recur; and

(b) subsequent external events have occurred that reverse the effect of that event.

109. Accounting Standard (AS) 26, *Intangible Assets*, prohibits the recognition of internally generated goodwill. Any subsequent increase in the recoverable amount of goodwill is likely to be an increase in internally generated goodwill, unless the increase relates clearly to the reversal of the effect of a specific external event of an exceptional nature.

110. This Standard does not permit an impairment loss to be reversed for goodwill because of a change in estimates (for example, a change in the discount rate or in the amount and timing of future cash flows of the cash-generating unit to which goodwill relates).

111. A specific external event is an event that is outside of the control of the enterprise. Examples of external events of an exceptional nature include new regulations that significantly curtail the operating activities, or decrease the profitability, of the business to which the goodwill relates.

Impairment in case of Discontinuing Operations

112. The approval and announcement of a plan for discontinuance[5] is an indication that the assets attributable to the discontinuing operation may be impaired or that an impairment loss previously recognised for those assets should be increased or reversed. Therefore, in accordance with this Standard an enterprise estimates the recoverable amount of each asset of the discontinuing operation and recognises an impairment loss or reversal of a prior impairment loss, if any.

113. In applying this Standard to a discontinuing operation, an enterprise determines whether the recoverable amount of an asset of a discontinuing operation is assessed for the individual asset or for the asset's cash-generating unit. For example:

(a) if the enterprise sells the discontinuing operation substantially in its entirety, none of the assets of the discontinuing operation generate cash inflows independently from other assets within the discontinuing operation. Therefore, recoverable amount is determined for the discontinuing operation as a whole and an impairment loss, if any, is allocated among the assets of the discontinuing operation in accordance with this Standard;

(b) if the enterprise disposes of the discontinuing operation in other ways such as piecemeal sales, the recoverable amount is determined for individual assets, unless the assets are sold in groups; and

(c) if the enterprise abandons the discontinuing operation, the recoverable amount is determined for individual assets as set out in this Standard.

114. After announcement of a plan, negotiations with potential purchasers of the discontinuing operation or actual binding sale agreements may indicate that the assets of the discontinuing operation may be further impaired or that impairment losses recognised for these assets in prior periods may have decreased. As a consequence, when such events occur, an enterprise re- estimates the recoverable amount of the assets of the discontinuing operation and recognises resulting impairment losses or reversals of impairment losses in accordance with this Standard.

[5] See Accounting Standard (AS) 24, *Discontinuing Operations*.

115. A price in a binding sale agreement is the best evidence of an asset's (cash-generating unit's) net selling price or of the estimated cash inflow from ultimate disposal in determining the asset's (cash-generating unit's) value in use.

116. The carrying amount (recoverable amount) of a discontinuing operation includes the carrying amount (recoverable amount) of any goodwill that can be allocated on a reasonable and consistent basis to that discontinuing operation.

Disclosure

117. For each class of assets, the financial statements should disclose:

(a) the amount of impairment losses recognised in the statement of profit and loss during the period and the line item(s) of the statement of profit and loss in which those impairment losses are included;

(b) the amount of reversals of impairment losses recognised in the statement of profit and loss during the period and the line item(s) of the statement of profit and loss in which those impairment losses are reversed;

(c) the amount of impairment losses recognised directly against revaluation surplus during the period; and

(d) the amount of reversals of impairment losses recognised directly in revaluation surplus during the period.

118. A class of assets is a grouping of assets of similar nature and use in an enterprise's operations.

119. The information required in paragraph 117 may be presented with other information disclosed for the class of assets. For example, this information may be included in a reconciliation of the carrying amount of fixed assets, at the beginning and end of the period, as required under AS 10, *Property, Plant and Equipment*.

120. An enterprise that applies AS 17, Segment Reporting, should disclose the following for each reportable segment based on an enterprise's primary format (as defined in AS 17):

(a) the amount of impairment losses recognised in the statement of profit and loss and directly against revaluation surplus during the period; and

(b) the amount of reversals of impairment losses recognised in the statement of profit and loss and directly in revaluation surplus during the period.

121. If an impairment loss for an individual asset or a cash-generating unit is recognised or reversed during the period and is material to the financial statements of the reporting enterprise as a whole, an enterprise should disclose:

(a) the events and circumstances that led to the recognition or reversal of the impairment loss;

(b) the amount of the impairment loss recognised or reversed;

(c) for an individual asset:

(i) the nature of the asset; and

(ii) the reportable segment to which the asset belongs, based on the enterprise's primary format (as defined in AS 17, Segment Reporting);

(d) for a cash-generating unit:

(i) a description of the cash-generating unit (such as whether it is a product line, a plant, a business operation, a geographical area, a reportable segment as defined in AS 17 or other);

(ii) the amount of the impairment loss recognised or reversed by class of assets and by reportable segment based on the enterprise's primary format (as defined in AS 17); and

(iii) if the aggregation of assets for identifying the cash-generating unit has changed since the previous estimate of the cash- generating unit's recoverable amount (if any), the enterprise should describe the current and former way of aggregating assets and the reasons for changing the way the cash-generating unit is identified;

(e) whether the recoverable amount of the asset (cash-generating unit) is its net selling price or its value in use;

(f) if recoverable amount is net selling price, the basis used to determine net selling price (such as whether selling price was determined by reference to an active market or in some other way); and

(g) if recoverable amount is value in use, the discount rate(s) used in the current estimate and previous estimate (if any) of value in use.

Provided that if a Small and Medium-Sized Company, as defined in the Notification, chooses to measure

India Code

the 'value in use' as per the proviso to paragraph 4.2 of the Standard, such an SMC need not disclose the information required by paragraph 121(g) of the Standard.

122. If impairment losses recognised (reversed) during the period are material in aggregate to the financial statements of the reporting enterprise as a whole, an enterprise should disclose a brief description of the following:

(a) the main classes of assets affected by impairment losses (reversals of impairment losses) for which no information is disclosed under paragraph 121; and

(b) the main events and circumstances that led to the recognition (reversal) of these impairment losses for which no information is disclosed under paragraph 121.

123. An enterprise is encouraged to disclose key assumptions used to determine the recoverable amount of assets (cash-generating units) during the period.

Transitional Provisions[6]

124. On the date of this Standard becoming mandatory, an enterprise should assess whether there is any indication that an asset may be impaired (see paragraphs 5-13). If any such indication exists, the enterprise should determine impairment loss, if any, in accordance with this Standard. The impairment loss, so determined, should be adjusted against opening balance of revenue reserves being the accumulated impairment loss relating to periods prior to this Standard becoming mandatory unless the impairment loss is on a revalued asset. An impairment loss on a revalued asset should be recognised directly against any revaluation surplus for the asset to the extent that the impairment loss does not exceed the amount held in the revaluation surplus for that same asset. If the impairment loss exceeds the amount held in the revaluation surplus for that same asset, the excess should be adjusted against opening balance of revenue reserves.

125. Any impairment loss arising after the date of this Standard becoming mandatory should be recognised in accordance with this Standard (i.e., in the statement of profit and loss unless an asset is carried at revalued amount. An impairment loss on a revalued asset should be treated as a revaluation decrease).

Illustrations

These illustrations do not form part of the Accounting Standard. The purpose of these Illustrations is to illustrate the application of the Accounting Standard to assist in clarifying its meaning.

All these illustrations assume the enterprises concerned have no transactions other than those described.

Illustration 1 - Identification of Cash-Generating Units

The purpose of this Illustration is:

(a) to give an indication of how cash-generating units are identified in various situations; and

(b) to highlight certain factors that an enterprise may consider in identifying the cash-generating unit to which an asset belongs.

A - Retail Store Chain

Background

Al. Store X belongs to a retail store chain M. X makes all its retail purchases through M's purchasing centre. Pricing, marketing, advertising and human resources policies (except for hiring X's cashiers and salesmen) are decided by M. M also owns 5 other stores in the same city as X (although in different neighbourhoods) and 20 other stores in other cities. All stores are managed in the same way as X. X and 4 other stores were purchased 4 years ago and goodwill was recognised.

What is the cash-generating unit for X (X's cash-generating unit)?

Analysis

A2. In identifying X's cash-generating unit, an enterprise considers whether, for example:

(a) internal management reporting is organised to measure performance on a store-by-store basis; and

(b) the business is run on a store-by-store profit basis or on region/city basis.

A3. All M's stores are in different neighbourhoods and probably have different customer bases. So, although X is managed at a corporate level, X generates cash inflows that are largely independent from those of M's other stores.

[6] Transitional Provisions given in paragraphs 124-125 are relevant only for standards notified under Companies (Accounting Standards) Rules, 2006, as amended from time to time.

Therefore, it is likely that X is a cash-generating unit.

A4. If the carrying amount of the goodwill can be allocated on a reasonable and consistent basis to X's cash-generating unit, M applies the 'bottom-up' test described in paragraph 78 of this Standard. If the carrying amount of the goodwill cannot be allocated on a reasonable and consistent basis to X's cash-generating unit, M applies the 'bottom-up' and 'top-down' tests.

B - Plant for an Intermediate Step in a Production Process

Background

A5. A significant raw material used for plant Y's final production is an intermediate product bought from plant X of the same enterprise. X's products are sold to Y at a transfer price that passes all margins to X. 80% of Y's final production is sold to customers outside of the reporting enterprise.

60% of X's final production is sold to Y and the remaining 40% is sold to customers outside of the reporting enterprise.

For each of the following cases, what are the cash-generating units for X and Y?

Case 1: X could sell the products it sells to Y in an active market. Internal transfer prices are higher than market prices.

Case 2: There is no active market for the products X sells to Y.

Analysis

Case 1

A6. X could sell its products on an active market and, so, generate cash inflows from continuing use that would be largely independent of the cash inflows from Y. Therefore, it is likely that X is a separate cash-generating unit, although part of its production is used by Y (see paragraph 68 of this Standard).

A7. It is likely that Y is also a separate cash-generating unit. Y sells 80% of its products to customers outside of the reporting enterprise. Therefore, its cash inflows from continuing use can be considered to be largely independent.

A8. Internal transfer prices do not reflect market prices for X's output. Therefore, in determining value in use of both X and Y, the enterprise adjusts financial budgets/forecasts to reflect management's best estimate of future market prices for those of X's products that are used internally (see paragraph 68 of this Standard).

Case 2

A9. It is likely that the recoverable amount of each plant cannot be assessed independently from the recoverable amount of the other plant because:

(a) the majority of X's production is used internally and could not be sold in an active market. So, cash inflows of X depend on demand for Y's products. Therefore, X cannot be considered to generate cash inflows that are largely independent from those of Y; and

(b) the two plants are managed together.

A10. As a consequence, it is likely that X and Y together is the smallest group of assets that generates cash inflows from continuing use that are largely independent.

C - Single Product Enterprise

Background

A11. Enterprise M produces a single product and owns plants A, B and C. Each plant is located in a different continent. A produces a component that is assembled in either B or C. The combined capacity of B and C is not fully utilised. M's products are sold world-wide from either B or C. For example, B's production can be sold in C's continent if the products can be delivered faster from B than from C. Utilisation levels of B and C depend on the allocation of sales between the two sites.

For each of the following cases, what are the cash-generating units for A, B and C?

Case 1: There is an active market for A's products.

Case 2: There is no active market for A's products.

Analysis

Case 1

India Code

A12. It is likely that A is a separate cash-generating unit because there is an active market for its products (see Example B-Plant for an Intermediate Step in a Production Process, Case 1).

A13. Although there is an active market for the products assembled by B and C, cash inflows for B and C depend on the allocation of production across the two sites. It is unlikely that the future cash inflows for B and C can be determined individually. Therefore, it is likely that B and C together is the smallest identifiable group of assets that generates cash inflows from continuing use that are largely independent.

A14. In determining the value in use of A and B plus C, M adjusts financial budgets/forecasts to reflect its best estimate of future market prices for A's products (see paragraph 68 of this Standard).

Case 2

A15. It is likely that the recoverable amount of each plant cannot be assessed independently because:

(a) there is no active market for A's products. Therefore, A's cash inflows depend on sales of the final product by B and C; and

(b) although there is an active market for the products assembled by B and C, cash inflows for B and C depend on the allocation of production across the two sites. It is unlikely that the future cash inflows for B and C can be determined individually.

A16. As a consequence, it is likely that A, B and C together (i.e., M as a whole) is the smallest identifiable group of assets that generates cash inflows from continuing use that are largely independent.

D - Magazine Titles

Background

A17. A publisher owns 150 magazine titles of which 70 were purchased and 80 were self-created. The price paid for a purchased magazine title is recognised as an intangible asset. The costs of creating magazine titles and maintaining the existing titles are recognised as an expense when incurred. Cash inflows from direct sales and advertising are identifiable for each magazine title. Titles are managed by customer segments. The level of advertising income for a magazine title depends on the range of titles in the customer segment to which the magazine title relates. Management has a policy to abandon old titles before the end of their economic lives and replace them immediately with new titles for the same customer segment.

What is the cash-generating unit for an individual magazine title?

Analysis

A18. It is likely that the recoverable amount of an individual magazine title can be assessed. Even though the level of advertising income for a title is influenced, to a certain extent, by the other titles in the customer segment, cash inflows from direct sales and advertising are identifiable for each title. In addition, although titles are managed by customer segments, decisions to abandon titles are made on an individual title basis.

A19. Therefore, it is likely that individual magazine titles generate cash inflows that are largely independent one from another and that each magazine title is a separate cash-generating unit.

E - Building: Half-Rented to Others and Half-Occupied for Own Use

Background

A20. M is a manufacturing company. It owns a headquarter building that used to be fully occupied for internal use. After down-sizing, half of the building is now used internally and half rented to third parties. The lease agreement with the tenant is for five years.

What is the cash-generating unit of the building?

Analysis

A21. The primary purpose of the building is to serve as a corporate asset, supporting M's manufacturing activities. Therefore, the building as a whole cannot be considered to generate cash inflows that are largely independent of the cash inflows from the enterprise as a whole. So, it is likely that the cash-generating unit for the building is M as a whole.

A22. The building is not held as an investment. Therefore, it would not be appropriate to determine the value in use of the building based on projections of future market related rents.

Illustration 2 - Calculation of Value in Use and Recognition of an Impairment Loss

In this illustration, tax effects are ignored.

Background and Calculation of Value in Use

A23. At the end of 20X0, enterprise T acquires enterprise M for Rs. 10,000 lakhs. M has manufacturing plants in 3 countries. The anticipated useful life of the resulting merged activities is 15 years.

Schedule 1. Data at the end of 20X0 (Amount in Rs. lakhs)

End of 20X0	*Allocation of purchase price*	*Fair value of identifiable assets*	*Goodwill(1)*
Activities in Country A	3,000	2,000	1,000
Activities in Country B	2,000	1,500	500
Activities in Country C	5,000	3,500	1,500
Total	10,000	7,000	3,000

(1) Activities in each country are the smallest cash-generating units to which goodwill can be allocated on a reasonable and consistent basis (allocation based on the purchase price of the activities in each country, as specified in the purchase agreement).

A24. T uses straight-line depreciation over a 15-year life for the Country A assets and no residual value is anticipated. In respect of goodwill, T uses straight-line amortisation over a 5 year life.

A25. In 20X4, a new government is elected in Country A. It passes legislation significantly restricting exports of T's main product. As a result, and for the foreseeable future, T's production will be cut by 40%.

A26. The significant export restriction and the resulting production decrease require T to estimate the recoverable amount of the goodwill and net assets of the Country A operations. The cash-generating unit for the goodwill and the identifiable assets of the Country A operations is the Country A operations, since no independent cash inflows can be identified for individual assets.

A27. The net selling price of the Country A cash-generating unit is not determinable, as it is unlikely that a ready buyer exists for all the assets of that unit.

A28. To determine the value in use for the Country A cash-generating unit (see Schedule 2), T:

(a) prepares cash flow forecasts derived from the most recent financial budgets/forecasts for the next five years (years 20X5-20X9) approved by management;

(b) estimates subsequent cash flows (years 20X10-20X15) based on declining growth rates. The growth rate for 20X10 is estimated to be 3%. This rate is lower than the average long- term growth rate for the market in Country A; and

(c) selects a 15% discount rate, which represents a pre-tax rate that reflects current market assessments of the time value of money and the risks specific to the Country A cash-generating unit.

Recognition and Measurement of Impairment Loss

A29. The recoverable amount of the Country A cash-generating unit is 1,360 lakhs: the higher of the net selling price of the Country A cash- generating unit (not determinable) and its value in use (Rs. 1,360 lakhs).

A30. T compares the recoverable amount of the Country A cash-generating unit to its carrying amount (see Schedule 3).

A31. T recognises an impairment loss of Rs. 307 lakhs immediately in the statement of profit and loss. The carrying amount of the goodwill that relates to the Country A operations is eliminated before reducing the carrying amount of other identifiable assets within the Country A cash-generating unit (see paragraph 87 of this Standard).

A32. Tax effects are accounted for separately in accordance with AS 22, Accounting for Taxes on Income.

Schedule 2. Calculation of the value in use of the Country A cash-generating unit at the end of 20X4 (Amount in Rs. lakhs)

Year	*Long-term growth rates*	*Future cash flows*	*Present value factor at 15% discount rate*[3]	*Discounted future cash flows*
20X5 (n=1)		230[1]	0.86957	200
20X6		253[1]	0.75614	191
20X7		273[1]	0.65752	180
20X8		290[1]	0.57175	166
20X9		304[1]	0.49718	151
20X10	3%	313[2]	0.43233	135
20X11	–2%	307[2]	0.37594	115
20X12	–6%	289[2]	0.32690	94
20X13	–15%	245[2]	0.28426	70
20X14	–25%	184[2]	0.24719	45
20X15	–67%	61[2]	0.21494	13
Value in use				1,360

(1) Based on management's best estimate of net cash flow projections (after the 40% cut).

(2) Based on an extrapolation from preceding year cash flow using declining growth rates.

(3) The present value factor is calculated as $k = 1/(1+a)^n$, where a = discount rate and n= period of discount.

Schedule 3. Calculation and allocation of the impairment loss for the Country A cash-generating unit at the end of 20X4 (Amount in Rs. lakhs)

End of 20X4	*Goodwill*	*Identifiable assets*	*Total*
Historical cost	1,000	2,000	3,000
Accumulated depreciation/ amortisation (20X1-20X4)	(800)	(533)	(1,333)
Carrying amount	200	1,467	1,667
Impairment Loss	(200)	(107)	(307)
Carrying amount after impairment loss	0	1,360	1,360

Illustration 3 - Deferred Tax Effects

A33. An enterprise has an asset with a carrying amount of Rs. 1,000 lakhs. Its recoverable amount is Rs. 650 lakhs. The tax rate is 30% and the carrying amount of the asset for tax purposes is Rs. 800 lakhs. Impairment losses are not allowable as deduction for tax purposes. The effect of the impairment loss is as follows:

	Amount in Rs. lakhs	
Impairment Loss recognised in the statement of profit and loss	350	
Impairment Loss allowed for tax purposes		—
Timing Difference		350
Tax Effect of the above timing difference at 30% (deferred tax asset)	105	
Less: Deferred tax liability due to difference in depreciation for accounting purposes and tax purposes [(1,000 – 800) x 30%]		60
Deferred tax asset	45	

IndiaCode

A34. In accordance with AS 22, *Accounting for Taxes on Income*, the enterprise recognises the deferred tax asset subject to the consideration of prudence as set out in AS 22.

Illustration 4 - Reversal of an Impairment Loss

Use the data for enterprise T as presented in Illustration 2, with supplementary information as provided in this illustration. In this illustration tax effects are ignored.

Background

A35. In 20X6, the government is still in office in Country A, but the business situation is improving. The effects of the export laws on T's production are proving to be less drastic than initially expected by management. As a result, management estimates that production will increase by 30%. This favourable change requires T to re-estimate the recoverable amount of the net assets of the Country A operations (see paragraphs 94-95 of this Standard). The cash-generating unit for the net assets of the Country A operations is still the Country A operations.

A36. Calculations similar to those in Illustration 2 show that the recoverable amount of the Country A cash-generating unit is now Rs. 1,710 lakhs.

Reversal of Impairment Loss

A37. T compares the recoverable amount and the net carrying amount of the Country A cash-generating unit.

Schedule 1. Calculation of the carrying amount of the Country A cash- generating unit at the end of 20X6
(Amount in Rs. lakhs)

	Goodwill	*Identifiable assets*	*Total*
End of 20X4 (Example 2)			
Historical cost	1,000	2,000	3,000
Accumulated depreciation/ amortisation (4 years)	(800)	(533)	(1,333)
Impairment loss	(200)	(107)	(307)
Carrying amount after impairment loss	0	1,360	1,360
End of 20X6			
Additional depreciation (2 years)[(1)]	–	(247)	(247)
Carrying amount	0	1,113	1,113
Recoverable amount			1,710
Excess of recoverable amount over carrying amount			597

[(1)]After recognition of the impairment loss at the end of 20X4, T revised the depreciation charge for the Country A identifiable assets (from Rs. 133.3 lakhs per year to Rs. 123.7 lakhs per year), based on the revised carrying amount and remaining useful life (11 years).

A38. There has been a favourable change in the estimates used to determine the recoverable amount of the Country A net assets since the last impairment loss was recognised. Therefore, in accordance with paragraph 98 of this Standard, T recognises a reversal of the impairment loss recognised in 20X4.

A39. In accordance with paragraphs 106 and 107 of this Standard, T increases the carrying amount of the Country A identifiable assets by Rs. 87 lakhs (see Schedule 3), i.e., up to the lower of recoverable amount (Rs.

IndiaCode

1,710 lakhs) and the identifiable assets' depreciated historical cost (Rs. 1,200 lakhs) (see Schedule 2). This increase is recognised in the statement of profit and loss immediately.

Schedule 2. Determination of the depreciated historical cost of the Country A identifiable assets at the end of 20X6 (Amount in Rs. lakhs)

End of 20X6	*Identifiable assets*
Historical cost	2,000
Accumulated depreciation (133.3 * 6 years)	(800)
Depreciated historical cost	1,200
Carrying amount (Schedule 1)	1,113
Difference	87

Schedule 3. Carrying amount of the Country A assets at the end of 20X6 (Amount in Rs. lakhs)

End of 20X6	*Goodwill*	*Identifiable assets*	*Total*
Gross carrying amount	1,000	2,000	3,000
Accumulated depreciation/ amortisation	(800)	(780)	(1,580)
Accumulated impairment loss	(200)	(107)	(307)
Carrying amount	0	1,113	1,113
Reversal of impairment loss	0	87	87
Carrying amount after reversal of impairment loss	0	1,200	1,200

IndiaCode

Illustration 5 - Treatment of a Future Restructuring

In this illustration, tax effects are ignored.

Background

A40. At the end of 20X0, enterprise K tests a plant for impairment. The plant is a cash-generating unit. The plant's assets are carried at depreciated historical cost. The plant has a carrying amount of Rs. 3,000 lakhs and a remaining useful life of 10 years.

A41. The plant is so specialised that it is not possible to determine its net selling price. Therefore, the plant's recoverable amount is its value in use. Value in use is calculated using a pre-tax discount rate of 14%.

A42. Management approved budgets reflect that:

(a) at the end of 20X3, the plant will be restructured at an estimated cost of Rs. 100 lakhs. Since K is not yet committed to the restructuring, a provision has not been recognised for the future restructuring costs; and

(b) there will be future benefits from this restructuring in the form of reduced future cash outflows.

A43. At the end of 20X2, K becomes committed to the restructuring. The costs are still estimated to be Rs. 100 lakhs and a provision is recognised accordingly. The plant's estimated future cash flows reflected in the most recent management approved budgets are given in paragraph A47 and a current discount rate is the same as at the end of 20X0.

A44. At the end of 20X3, restructuring costs of Rs. 100 lakhs are paid. Again, the plant's estimated future cash flows reflected in the most recent management approved budgets and a current discount rate are the same as those estimated at the end of 20X2.

At the End of 20X0

Schedule 1. Calculation of the plant's value in use at the end of 20X0 (Amount in Rs. lakhs)

Year	*Future cash flows*	*Discounted at 14%*
20X1	300	263
20X2	280	215
20X3	420(1)	283
20X4	520(2)	308
20X5	350(2)	182
20X6	420(2)	191
20X7	480(2)	192
20X8	480(2)	168
20X9	460(2)	141
20X10	400(2)	108
Value in use		2,051

(1) Excludes estimated restructuring costs reflected in management budgets.

(2) Excludes estimated benefits expected from the restructuring reflected in management budgets.

A45. The plant's recoverable amount (value in use) is less than its carrying amount. Therefore, K recognises an impairment loss for the plant.

Schedule 2. Calculation of the impairment loss at the end of 20X0 (Amount in Rs. lakhs)

	Plant
Carrying amount before impairment loss	3,000
Recoverable amount (Schedule 1)	2,051
Impairment loss	(949)
Carrying amount after impairment loss	2,051

At the End of 20X1

A46. No event occurs that requires the plant's recoverable amount to be re-estimated. Therefore, no calculation of the recoverable amount is required to be performed.

At the End of 20X2

A47. The enterprise is now committed to the restructuring. Therefore, in determining the plant's value in use, the benefits expected from the restructuring are considered in forecasting cash flows. This results in an increase in the estimated future cash flows used to determine value in use at the end of 20X0. In accordance with paragraphs 94-95 of this Standard, the recoverable amount of the plant is re-determined at the end of 20X2.

Schedule 3. Calculation of the plant's value in use at the end of 20X2 (Amount in Rs. lakhs)

Year	*Future cash flows*	*Discounted at 14%*
20X3	420(1)	368
20X4	570(2)	439
20X5	380(2)	256

IndiaCode

20X6	450(2)	266
20X7	510(2)	265
20X8	510(2)	232
20X9	480(2)	192
20X10	410(2)	144
Value in use		2,162

(1) Excludes estimated restructuring costs because a liability has already been recognised.

(2) Includes estimated benefits expected from the restructuring reflected in management budgets.

A48. The plant's recoverable amount (value in use) is higher than its carrying amount (see Schedule 4). Therefore, K reverses the impairment loss recognised for the plant at the end of 20X0.

Schedule 4. Calculation of the reversal of the impairment loss at the end of 20X2 (Amount in Rs. lakhs)

		Plant
Carrying amount at the end of 20X0 (Schedule 2)		2,051
End of 20X2		
Depreciation charge (for 20X1 and 20X2	Schedule 5)	(410)
Carrying amount before reversal		1,641
Recoverable amount (Schedule 3)		2,162
Reversal of the impairment loss		521
Carrying amount after reversal		2,162
Carrying amount: depreciated historical cost (Schedule 5)	2,400(1)	

(1) The reversal does not result in the carrying amount of the plant exceeding what its carrying amount would have been at depreciated historical cost. Therefore, the full reversal of the impairment loss is recognised.

At the End of 20X3

A49. There is a cash outflow of Rs. 100 lakhs when the restructuring costs are paid. Even though a cash outflow has taken place, there is no change in the estimated future cash flows used to determine value in use at the end of 20X2. Therefore, the plant's recoverable amount is not calculated at the end of 20X3.

Schedule 5. Summary of the carrying amount of the plant (Amount in Rs. lakhs)

End of year	*Depreciated historical cost*	*Recoverable amount*	*Adjusted depreciation charge*	*Impairment loss*	*Carrying amount after impairment*
20X0	3,000	2,051	0	(949)	2,051
20X1	2,700	n.c.	(205)	0	1,846
20X2	2,400	2,162	(205)	521	2,162
20X3	2,100	n.c.	(270)	0	1,892

n.c. = not calculated as there is no indication that the impairment loss may have increased/ decreased.

Illustration 6 - Treatment of Future Capital Expenditure

In this illustration, tax effects are ignored.

Background

A50. At the end of 20X0, enterprise F tests a plane for impairment. The plane is a cash-generating unit. It is

IndiaCode

carried at depreciated historical cost and its carrying amount is Rs. 1,500 lakhs. It has an estimated remaining useful life of 10 years.

A51. For the purpose of this illustration, it is assumed that the plane's net selling price is not determinable. Therefore, the plane's recoverable amount is its value in use. Value in use is calculated using a pre-tax discount rate of 14%.

A52. Management approved budgets reflect that:

(a) in 20X4, capital expenditure of Rs. 250 lakhs will be incurred to renew the engine of the plane; and

(b) this capital expenditure will improve the performance of the plane by decreasing fuel consumption.

A53. At the end of 20X4, renewal costs are incurred. The plane's estimated future cash flows reflected in the most recent management approved budgets are given in paragraph A56 and a current discount rate is the same as at the end of 20X0.

At the End of 20X0

Schedule 1. Calculation of the plane's value in use at the end of 20X0 (Amount in Rs. lakhs)

Year	*Future cash flows*	*Discounted at 14%*
20X1	221.65	194.43
20X2	214.50	165.05
20X3	205.50	138.71
20X4	247.25*(1)*	146.39
20X5	253.25*(2)*	131.53
20X6	248.25*(2)*	113.10
20X7	241.23*(2)*	96.40
20X8	255.33*(2)*	89.51
20X9	242.34*(2)*	74.52
20X10	228.50*(2)*	61.64
Value in use		1,211.28

(1) Excludes estimated renewal costs reflected in management budgets.

(2) Excludes estimated benefits expected from the renewal of the engine reflected in management budgets.

A54. The plane's carrying amount is less than its recoverable amount (value in use). Therefore, F recognises an impairment loss for the plane.

Schedule 2. Calculation of the impairment loss at the end of 20X0 (Amount in Rs. lakhs)

	Plane
Carrying amount before impairment loss	1,500.00
Recoverable amount (Schedule 1)	1,211.28
Impairment loss	(288.72)
Carrying amount after impairment loss	

Years 20X1-20X3

A55. No event occurs that requires the plane's recoverable amount to be re-estimated. Therefore, no calculation of

IndiaCode

recoverable amount is required to be performed.

At the End of 20X4

A56. The capital expenditure is incurred. Therefore, in determining the plane's value in use, the future benefits expected from the renewal of the engine are considered in forecasting cash flows. This results in an increase in the estimated future cash flows used to determine value in use at the end of 20X0. As a consequence, in accordance with paragraphs 94-95 of this Standard, the recoverable amount of the plane is recalculated at the end of 20X4.

Schedule 3. Calculation of the plane's value in use at the end of 20X4 (Amount in Rs. lakhs)

Year	*Future cash flows*[1]	*Discounted at 14%*
20X5	303.21	265.97
20X6	327.50	252.00
20X7	317.21	214.11
20X8	319.50	189.17
20X9	331.00	171.91
20X10	279.99	127.56
Value in use		1,220.72

(1) Includes estimated benefits expected from the renewal of the engine reflected in management budgets.

A57. The plane's recoverable amount (value in use) is higher than the plane's carrying amount and depreciated historical cost (see Schedule 4). Therefore, K reverses the impairment loss recognised for the plane at the end of 20X0 so that the plane is carried at depreciated historical cost.

Schedule 4. Calculation of the reversal of the impairment loss at the end of 20X4 (Amount in Rs. lakhs)

	Plane
Carrying amount at the end of 20X0 (Schedule 2)	1,211.28
End of 20X4	(484.52)
Depreciation charge (20X1 to 20X4-Schedule 5)	
Renewal expenditure	250.00
Carrying amount before reversal	976.76
Recoverable amount (Schedule 3)	1,220.72
Reversal of the impairment loss	173.24
Carrying amount after reversal	1,150.00
Carrying amount: depreciated historical cost (Schedule 5)	1,150.00[1]

(1) The value in use of the plane exceeds what its carrying amount would have been at depreciated historical cost. Therefore, the reversal is limited to an amount that does not result in the carrying amount of the plane exceeding depreciated historical cost.

Schedule 5. Summary of the carrying amount of the plane (Amount in Rs. lakhs)

Year	*Depreciated historical cost*	*Recoverable amount*	*Adjusted depreciation charge*	*Impairment loss*	*Carrying amount after*

					impairment
20X0	1,500.00	1,211.28	0	(288.72)	1,211.28
20X1	1,350.00	n.c.	(121.13)	0	1,090.15
20X2	1,200.00	n.c.	(121.13)	0	969.02
20X3	1,050.00	n.c.	(121.13)	0	847.89
20X4	900.00		(121.13)		
renewal	250.00		–		
	1,150.00	1,220.72	(121.13)	173.24	1,150.00
20X5	958.33	n.c.	(191.67)	0	958.33

n.c. = not calculated as there is no indication that the impairment loss may have increased/ decreased.

Illustration 7 - Application of the 'Bottom-Up' and 'Top-Down' Tests to Goodwill

In this illustration, tax effects are ignored.

A58. At the end of 20X0, enterprise M acquired 100% of enterprise Z for Rs. 3,000 lakhs. Z has 3 cash-generating units A, B and C with net fair values of Rs. 1,200 lakhs, Rs. 800 lakhs and Rs. 400 lakhs respectively. M recognises goodwill of Rs. 600 lakhs (Rs. 3,000 lakhs less Rs. 2,400 lakhs) that relates to Z.

A59. At the end of 20X4, A makes significant losses. Its recoverable amount is estimated to be Rs. 1,350 lakhs. Carrying amounts are detailed below.

Schedule 1. Carrying amounts at the end of 20X4 (Amount in Rs. lakhs)

End of 20X4	*A*	*B*	*C*	*Goodwill*	*Total*
Net carrying amount	1,300	1,200	800	120	3,420

IndiaCode

A - Goodwill Can be Allocated on a Reasonable and Consistent Basis

A60. At the date of acquisition of Z, the net fair values of A, B and C are considered a reasonable basis for a pro-rata allocation of the goodwill to A, B and C.

Schedule 2. Allocation of goodwill at the end of 20X4

	A	B	C	Total		
Ent of 20x0						
Net fair values	1,200	800	400	24,00		
Pro-rata	50%	33%	17%	100%		
End of 20x4						
Net carrying amount		1,300	1,200	800	3,300	
Allocation of goodwill (using the pro-rata above)		60	40	20	120	
Net carrying amount (after allocation of goodwill)		1,360	1,240	820	3,420	

A61. In accordance with the 'bottom-up' test in paragraph 78(a) of this Standard, M compares A's recoverable amount to its carrying amount after the allocation of the carrying amount of goodwill.

Schedule 3. Application of 'bottom-up' test (Amount in Rs. lakhs)

End of 20X4	A
Carrying amount after allocation of goodwill (Schedule 2)	1,360
Recoverable amount	1,350
Impairment loss	10

A62. M recognises an impairment loss of Rs. 10 lakhs for A. The impairment loss is fully allocated to the

goodwill in accordance with paragraph 87 of this Standard.

B - Goodwill Cannot Be Allocated on a Reasonable and Consistent Basis

A63. There is no reasonable way to allocate the goodwill that arose on the acquisition of Z to A, B and C. At the end of 20X4, Z's recoverable amount is estimated to be Rs. 3,400 lakhs.

A64. At the end of 20X4, M first applies the 'bottom-up' test in accordance with paragraph 78(a) of this Standard. It compares A's recoverable amount to its carrying amount excluding the goodwill.

Schedule 4. Application of 'bottom-up' test (Amount in Rs. lakhs)

End of 20X4	*A*
Carrying amount	1,300
Recoverable amount	1,350
Impairment loss	0

A65. Therefore, no impairment loss is recognised for A as a result of the 'bottom-up' test.

A66. Since the goodwill could not be allocated on a reasonable and consistent basis to A, M also performs a 'top-down' test in accordance with paragraph 78(b) of this Standard. It compares the carrying amount of Z as a whole to its recoverable amount (Z as a whole is the smallest cash-generating unit that includes A and to which goodwill can be allocated on a reasonable and consistent basis).

Schedule 5. Application of the 'top-down' test (Amount in Rs. lakhs)

End of 20X4	*A*	*B*	*C*	*Goodwill*	*Z*
Carrying amount	1,300	1,200	800	120	3,420
Impairment loss arising from the 'bottom-up' test	0	–	–	–	0
Carrying amount after the 'bottom-up' test	1,300	1,200	800	120	3,420
Recoverable amount					3,400
Impairment loss arising from 'top-down' test					20

IndiaCode

A67. Therefore, M recognises an impairment loss of Rs. 20 lakhs that it allocates fully to goodwill in accordance with paragraph 87 of this Standard.

Illustration 8 - Allocation of Corporate Assets

In this illustration tax effects are ignored.

Background

A68. Enterprise M has three cash-generating units: A, B and C. There are adverse changes in the technological environment in which M operates. Therefore, M conducts impairment tests of each of its cash-generating units. At the end of 20X0, the carrying amounts of A, B and C are Rs. 100 lakhs, Rs. 150 lakhs and Rs. 200 lakhs respectively.

A69. The operations are conducted from a headquarter. The carrying amount of the headquarter assets is Rs. 200 lakhs: a headquarter building of Rs. 150 lakhs and a research centre of Rs. 50 lakhs. The relative carrying amounts of the cash-generating units are a reasonable indication of the proportion of the head-quarter building devoted to each cash-generating unit. The carrying amount of the research centre cannot be allocated on a reasonable basis to the individual cash-generating units.

A70. The remaining estimated useful life of cash-generating unit A is 10 years. The remaining useful lives of B, C and the headquarter assets are 20 years. The headquarter assets are depreciated on a straight-line basis.

A71. There is no basis on which to calculate a net selling price for each cash-generating unit. Therefore, the recoverable amount of each cash- generating unit is based on its value in use. Value in use is calculated using a pre-tax discount rate of 15%.

Identification of Corporate Assets

A72. In accordance with paragraph 85 of this Standard, M first identifies all the corporate assets that relate to the individual cash-generating units under review. The corporate assets are the headquarter building and the research centre.

A73. M then decides how to deal with each of the corporate assets:

(a) the carrying amount of the headquarter building can be allocated on a reasonable and consistent basis to the cash-generating units under review. Therefore, only a 'bottom-up' test is necessary; and

(b) the carrying amount of the research centre cannot be allocated on a reasonable and consistent basis to the individual cash- generating units under review. Therefore, a 'top-down' test will be applied in addition to the 'bottom-up' test.

Allocation of Corporate Assets

A74. The carrying amount of the headquarter building is allocated to the carrying amount of each individual cash-generating unit. A weighted allocation basis is used because the estimated remaining useful life of A's cash-generating unit is 10 years, whereas the estimated remaining useful lives of B and C's cash-generating units are 20 years.

Schedule 1. Calculation of a weighted allocation of the carrying amount of the headquarter building (Amount in Rs. lakhs)

End of 20X0	*A*	*B*	*C*	*Total*
Carrying amount	100	150	200	450
Useful life	10 years	20 years	20 years	
Weighting based on useful life	1	2	2	
Carrying amount after weighting	100	300	400	800
		(100/800)	(300/800)	(400/800)
Allocation of the carrying amount of the building (based on pro-rata above)		19	56	75	150
Carrying amount (after allocation of the building)		119	206	275	600

IndiaCode

Determination of Recoverable Amount

A75. The 'bottom-up' test requires calculation of the recoverable amount of each individual cash-generating unit. The 'top-down' test requires calculation of the recoverable amount of M as a whole (the smallest cash- generating unit that includes the research centre).

Schedule 2. Calculation of A, B, C and M's value in use at the end of 20X0 (Amount in Rs. lakhs)

	A		B		C		M	
Year	*Future cash flows*	*Discount at 15%*	*Future cash flows*	*Discount at 15%*	*Future cash flows*	*Discount at 15%*	*Future cash flows*	*Discount at 15%*
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	18	16	9	8	10	9	39	34
2	31	23	16	12	20	15	72	54
3	37	24	24	16	34	22	105	69
4	42	24	29	17	44	25	128	73

5	47	24	32	16	51	25	143	71
6	52	22	33	14	56	24	155	67
7	55	21	34	13	60	22	162	61
8	55	18	35	11	63	21	166	54
9	53	15	35	10	65	18	167	48
10	48	12	35	9	66	16	169	42
11			36	8	66	14	132	28
12			35	7	66	12	131	25
13			35	6	66	11	131	21
14			33	5	65	9	128	18
15			30	4	62	8	122	15
16			26	3	60	6	115	12
17			22	2	57	5	108	10
18			18	1	51	4	97	8
19			14	1	43	3	85	6
20			10	1	35	2	71	4
Value in use		199		164		271		720(1)

(1) It is assumed that the research centre generates additional future cash flows for the enterprise as a whole. Therefore, the sum of the value in use of each individual cash- generating unit is less than the value in use of the business as a whole. The additional cash flows are not attributable to the headquarter building.

IndiaCode

Calculation of Impairment Losses

A76. In accordance with the 'bottom-up' test, M compares the carrying amount of each cash-generating unit (after allocation of the carrying amount of the building) to its recoverable amount.

Schedule 3. Application of 'bottom-up' test (Amount in Rs. lakhs)

End of 20X0	*A*	*B*	*C*
Carrying amount (after allocation of the building) (Schedule 1)	119	206	275
Recoverable amount (Schedule 2)	199	164	271
Impairment loss	0	(42)	(4)

A77. The next step is to allocate the impairment losses between the assets of the cash-generating units and the headquarter building.

Schedule 4. Allocation of the impairment losses for cash-generating units B and C (Amount in Rs. lakhs)

Cash-generating unit	*B*	*C*
To headquarter building	(12) (42*56/206)	(1) (4*75/275)
To assets in cash-generating unit	(30) (42*150/206)	(3) (4*200/275)
	(42)	(4)

A78. In accordance with the 'top-down' test, since the research centre could not be allocated on a reasonable and consistent basis to A, B and C's cash-generating units, M compares the carrying amount of the smallest cash- generating

unit to which the carrying amount of the research centre can be allocated (i.e., M as a whole) to its recoverable amount.

Schedule 5. Application of the 'top-down' test (Amount in Rs. lakhs)

End of 20X0	*A*	*B*	*C*	*Building*	*Research*	*M*
						centre
Carrying amount	100	150	200	150	50	650
Impairment loss arising from the 'bottom-up' test	–	(30)	(3)	(13)	–	(46)
Carrying amount after the 'bottom-up' test	100	120	197	137	50	604
Recoverable amount (Schedule 2)						720
Impairment loss arising from 'top-down' test						0

A79. Therefore, no additional impairment loss results from the application of the 'top-down' test. Only an impairment loss of Rs. 46 lakhs is recognised as a result of the application of the 'bottom-up' test.

Accounting Standard (AS) 29

Provisions, Contingent Liabilities and Contingent Assets

*(This Accounting Standard includes paragraphs set in **bold italic** type and plain type, which have equal authority. Paragraphs in bold italic type indicate the main principles. This Accounting Standard should be read in the context of its objective and the General Instructions contained in part A of the Annexure to the Notification.)*

Pursuant to this Accounting Standard coming into effect, all paragraphs of Accounting Standards (AS) 4, *Contingencies and Events Occuring After the Balance Sheet Date*, that deal with contingencies (viz., paragraphs 1(a), 2, 3.1, 4 (4.1 to 4.4), 5(5.1 to 5.6), 6, 7 (7.1 to 7.3), 9.1 (relevant portion). 9.2, 10, 11, 12 and 16), stand withdrawn except to the extent they deal with impairment of assets not covered by other Indian Accounting Standards.

Objective

The objective of this Standard is to ensure that appropriate recognition criteria and measurement bases are applied to provisions and contingent liabilities and that sufficient information is disclosed in the notes to the financial statements to enable users to understand their nature, timing and amount. The objective of this Standard is also to lay down appropriate accounting for contingent assets.

Scope

1. This Standard should be applied in accounting for provisions and contingent liabilities and in dealing with contingent assets, except:

(a) those resulting from financial instruments[41] that are carried at fair value;

(b) those resulting from executory contracts, except where the contract is onerous;

Explanation:

(i) An 'onerous contract' is a contract in which the unavoidable costs of meeting the obligations under the contract exceed the economic benefits expected to be received under it. Thus, for a contract to qualify as an onerous contract, the unavoidable costs of meeting the obligation under the contract should exceed the economic benefits expected to be received under it. The unavoidable costs under a contract reflect the least net cost of exiting from the contract, which is the lower of the cost of fulfilling it and any compensation or penalties arising from failure to fulfill it.

[41] For the purpose of this Standard, the term 'financial instruments' shall have the same meaning as in Accounting Standard (AS) 20, *Earnings Per Share.*

(ii) If an enterprise has a contract that is onerous, the present obligation under the contract is recognised and measured as a provision as per this Standard.

The application of the above explanation is illustrated in Illustration 10 of Illustration C attached to the Standard.

(c) those arising in insurance enterprises from contracts with policy-holders; and

(d) those covered by another Accounting Standard.

2. This Standard applies to financial instruments (including guarantees) that are not carried at fair value.

3. Executory contracts are contracts under which neither party has performed any of its obligations or both parties have partially performed their obligations to an equal extent. This Standard does not apply to executory contracts unless they are onerous.

4. This Standard applies to provisions, contingent liabilities and contingent assets of insurance enterprises other than those arising from contracts with policy-holders.

5. Where another Accounting Standard deals with a specific type of provision, contingent liability or contingent asset, an enterprise applies that Standard instead of this Standard. For example, certain types of provisions are also addressed in Accounting Standards on:

(a) construction contracts (see AS 7, *Construction Contracts*);

(b) taxes on income (see AS 22, *Accounting for Taxes on Income*);

(c) leases (see AS 19, *Leases*). However, as AS 19 contains no specific requirements to deal with operating leases that have become onerous, this Standard applies to such cases; and

(d) Employee benefits (see AS 15, *Employee Benefits*).

6. Some amounts treated as provisions may relate to the recognition of revenue, for example where an enterprise gives guarantees in exchange for a fee. This Standard does not address the recognition of revenue. AS 9, *Revenue Recognition*, identifies the circumstances in which revenue is recognised and provides practical guidance on the application of the recognition criteria. This Standard does not change the requirements of AS 9.

7. This Standard defines provisions as liabilities which can be measured only by using a substantial degree of estimation. The term 'provision' is also used in the context of items such as depreciation, impairment of assets and doubtful debts: these are adjustments to the carrying amounts of assets and are not addressed in this Standard.

8. Other Accounting Standards specify whether expenditures are treated as assets or as expenses. These issues are not addressed in this Standard. Accordingly, this Standard neither prohibits nor requires capitalisation of the costs recognised when a provision is made.

9. This Standard applies to provisions for restructuring (including discontinuing operations). Where a restructuring meets the definition of a discontinuing operation, additional disclosures are required by AS 24, *Discontinuing Operations.*

Definitions

10. The following terms are used in this Standard with the meanings specified:

10.1 A provision is a liability which can be measured only by using a substantial degree of estimation.

10.2 A liability is a present obligation of the enterprise arising from past events, the settlement of which is expected to result in an outflow from the enterprise of resources embodying economic benefits.

10.3 An obligating event is an event that creates an obligation that results in an enterprise having no realistic alternative to settling that obligation.

10.4 A contingent liability is:

(a) a possible obligation that arises from past events and the existence of which will be confirmed only by the occurrence or non-occurrence of one or more uncertain future events not wholly within the control of the enterprise; or

(b) a present obligation that arises from past events but is not recognised because:

(i) it is not probable that an outflow of resources embodying economic benefits will be required to settle the obligation; or

(ii) a reliable estimate of the amount of the obligation cannot be made.

10.5 A contingent asset is a possible asset that arises from past events the existence of which will be confirmed only

by the occurrence or non- occurrence of one or more uncertain future events not wholly within the control of the enterprise.

10.6 Present obligation - an obligation is a present obligation if, based on the evidence available, its existence at the balance sheet date is considered probable, i.e., more likely than not.

10.7 Possible obligation - an obligation is a possible obligation if, based on the evidence available, its existence at the balance sheet date is considered not probable.

10.8 A restructuring is a programme that is planned and controlled by management, and materially changes either:

(a) the scope of a business undertaken by an enterprise; or

(b) the manner in which that business is conducted.

11. An obligation is a duty or responsibility to act or perform in a certain way. Obligations may be legally enforceable as a consequence of a binding contract or statutory requirement. Obligations also arise from normal business practice, custom and a desire to maintain good business relations or act in an equitable manner.

12. Provisions can be distinguished from other liabilities such as trade payables and accruals because in the measurement of provisions substantial degree of estimation is involved with regard to the future expenditure required in settlement. By contrast:

(a) trade payables are liabilities to pay for goods or services that have been received or supplied and have been invoiced or formally agreed with the supplier; and

(b) accruals are liabilities to pay for goods or services that have been received or supplied but have not been paid, invoiced or formally agreed with the supplier, including amounts due to employees. Although it is sometimes necessary to estimate the amount of accruals, the degree of estimation is generally much less than that for provisions.

13. In this Standard, the term 'contingent' is used for liabilities and assets that are not recognised because their existence will be confirmed only by the occurrence or non-occurrence of one or more uncertain future events not wholly within the control of the enterprise. In addition, the term 'contingent liability' is used for liabilities that do not meet the recognition criteria.

IndiaCode

Recognition

Provisions

14. A provision should be recognised when:

(a) an enterprise has a present obligation as a result of a past event;

(b) it is probable that an outflow of resources embodying economic benefits will be required to settle the obligation; and

(c) a reliable estimate can be made of the amount of the obligation. If these conditions are not met, no provision should be recognised.

Present Obligation

15. In almost all cases it will be clear whether a past event has given rise to a present obligation. In rare cases, for example in a lawsuit, it may be disputed either whether certain events have occurred or whether those events result in a present obligation. In such a case, an enterprise determines whether a present obligation exists at the balance sheet date by taking account of all available evidence, including, for example, the opinion of experts. The evidence considered includes any additional evidence provided by events after the balance sheet date. On the basis of such evidence:

(a) where it is more likely than not that a present obligation exists at the balance sheet date, the enterprise recognises a provision (if the recognition criteria are met); and

(b) where it is more likely that no present obligation exists at the balance sheet date, the enterprise discloses a contingent liability, unless the possibility of an outflow of resources embodying economic benefits is remote (see paragraph 68).

Past Event

16. A past event that leads to a present obligation is called an obligating event. For an event to be an obligating event, it is necessary that the enterprise has no realistic alternative to settling the obligation created by the event.

17. Financial statements deal with the financial position of an enterprise at the end of its reporting period and not its

possible position in the future. Therefore, no provision is recognised for costs that need to be incurred to operate in the future. The only liabilities recognised in an enterprise's balance sheet are those that exist at the balance sheet date.

18. It is only those obligations arising from past events existing independently of an enterprise's future actions (i.e. the future conduct of its business) that are recognised as provisions. Examples of such obligations are penalties or clean-up costs for unlawful environmental damage, both of which would lead to an outflow of resources embodying economic benefits in settlement regardless of the future actions of the enterprise. Similarly, an enterprise recognises a provision for the decommissioning costs of an oil installation to the extent that the enterprise is obliged to rectify damage already caused. In contrast, because of commercial pressures or legal requirements, an enterprise may intend or need to carry out expenditure to operate in a particular way in the future (for example, by fitting smoke filters in a certain type of factory). Because the enterprise can avoid the future expenditure by its future actions, for example by changing its method of operation, it has no present obligation for that future expenditure and no provision is recognised.

19. An obligation always involves another party to whom the obligation is owed. It is not necessary, however, to know the identity of the party to whom the obligation is owed – indeed the obligation may be to the public at large.

20. An event that does not give rise to an obligation immediately may do so at a later date, because of changes in the law. For example, when environmental damage is caused there may be no obligation to remedy the consequences. However, the causing of the damage will become an obligating event when a new law requires the existing damage to be rectified.

21. Where details of a proposed new law have yet to be finalised, an obligation arises only when the legislation is virtually certain to be enacted. Differences in circumstances surrounding enactment usually make it impossible to specify a single event that would make the enactment of a law virtually certain. In many cases it will be impossible to be virtually certain of the enactment of a law until it is enacted.

Probable Outflow of Resources Embodying Economic Benefits

22. For a liability to qualify for recognition there must be not only a present obligation but also the probability of an outflow of resources embodying economic benefits to settle that obligation. For the purpose of this Standard[42] , an outflow of resources or other event is regarded as probable if the event is more likely than not to occur, i.e., the probability that the event will occur is greater than the probability that it will not. Where it is not probable that a present obligation exists, an enterprise discloses a contingent liability, unless the possibility of an outflow of resources embodying economic benefits is remote (see paragraph 68).

23. Where there are a number of similar obligations (e.g. product warranties or similar contracts) the probability that an outflow will be required in settlement is determined by considering the class of obligations as a whole. Although the likelihood of outflow for any one item may be small, it may well be probable that some outflow of resources will be needed to settle the class of obligations as a whole. If that is the case, a provision is recognised (if the other recognition criteria are met).

Reliable Estimate of the Obligation

24. The use of estimates is an essential part of the preparation of financial statements and does not undermine their reliability. This is especially true in the case of provisions, which by their nature involve a greater degree of estimation than most other items. Except in extremely rare cases, an enterprise will be able to determine a range of possible outcomes and can therefore make an estimate of the obligation that is reliable to use in recognising a provision.

25. In the extremely rare case where no reliable estimate can be made, a liability exists that cannot be recognised. That liability is disclosed as a contingent liability (see paragraph 68).

Contingent Liabilities

26. An enterprise should not recognise a contingent liability.

27. A contingent liability is disclosed, as required by paragraph 68, unless the possibility of an outflow of resources embodying economic benefits is remote.

28. Where an enterprise is jointly and severally liable for an obligation, the part of the obligation that is expected to be met by other parties is treated as a contingent liability. The enterprise recognises a provision for the part of the obligation for which an outflow of resources embodying economic benefits is probable, except in the extremely rare circumstances where no reliable estimate can be made (see paragraph 14).

29. Contingent liabilities may develop in a way not initially expected. Therefore, they are assessed continually to determine whether an outflow of resources embodying economic benefits has become probable. If it becomes

[42] The interpretation of 'probable' in this Standard as 'more likely than not' does not necessarily apply in other Accounting Standards.

probable that an outflow of future economic benefits will be required for an item previously dealt with as a contingent liability, a provision is recognised in accordance with paragraph 14 in the financial statements of the period in which the change in probability occurs (except in the extremely rare circumstances where no reliable estimate can be made).

Contingent Assets

30. An enterprise should not recognise a contingent asset.

31. Contingent assets usually arise from unplanned or other unexpected events that give rise to the possibility of an inflow of economic benefits to the enterprise. An example is a claim that an enterprise is pursuing through legal processes, where the outcome is uncertain.

32. Contingent assets are not recognised in financial statements since this may result in the recognition of income that may never be realised. However, when the realisation of income is virtually certain, then the related asset is not a contingent asset and its recognition is appropriate.

33. A contingent asset is not disclosed in the financial statements. It is usually disclosed in the report of the approving authority (Board of Directors in the case of a company, and, the corresponding approving authority in the case of any other enterprise), where an inflow of economic benefits is probable.

34. Contingent assets are assessed continually and if it has become virtually certain that an inflow of economic benefits will arise, the asset and the related income are recognised in the financial statements of the period in which the change occurs.

Measurement

Best Estimate

35. The amount recognised as a provision should be the best estimate of the expenditure required to settle the present obligation at the balance sheet date. The amount of a provision should not be discounted to its present value except in case of decommissioning, restoration and similar liabilities that are recognised as cost of Property, Plant and Equipment. The discount rate (or rates) should be a pre-tax rate (or rates) that reflect(s) current market assessments of the time value of money and the risks specific to the liability. The discount rate(s) should not reflect risks for which future cash flow estimates have been adjusted. Periodic unwinding of discount should be recognised in the statement of profit and loss.

36. The estimates of outcome and financial effect are determined by the judgment of the management of the enterprise, supplemented by experience of similar transactions and, in some cases, reports from independent experts. The evidence considered includes any additional evidence provided by events after the balance sheet date.

37. The provision is measured before tax; the tax consequences of the provision, and changes in it, are dealt with under AS 22, Accounting for Taxes on Income.

Risks and Uncertainties

38. The risks and uncertainties that inevitably surround many events and circumstances should be taken into account in reaching the best estimate of a provision.

39. Risk describes variability of outcome. A risk adjustment may increase the amount at which a liability is measured. Caution is needed in making judgments under conditions of uncertainty, so that income or assets are not overstated and expenses or liabilities are not understated. However, uncertainty does not justify the creation of excessive provisions or a deliberate overstatement of liabilities. For example, if the projected costs of a particularly adverse outcome are estimated on a prudent basis, that outcome is not then deliberately treated as more probable than is realistically the case. Care is needed to avoid duplicating adjustments for risk and uncertainty with consequent overstatement of a provision.

40. Disclosure of the uncertainties surrounding the amount of the expenditure is made under paragraph 67(b).

Future Events

41. Future events that may affect the amount required to settle an obligation should be reflected in the amount of a provision where there is sufficient objective evidence that they will occur.

42. Expected future events may be particularly important in measuring provisions. For example, an enterprise may believe that the cost of cleaning up a site at the end of its life will be reduced by future changes in technology. The amount recognised reflects a reasonable expectation of technically qualified, objective observers, taking account of all available evidence as to the technology that will be available at the time of the clean-up. Thus, it is appropriate to include, for example, expected cost reductions associated with increased experience in applying existing technology or the expected cost of applying existing technology to a larger or more complex clean-up operation than has previously been carried out. However, an enterprise does not anticipate the development of a completely new technology for cleaning up unless it is supported by sufficient objective evidence.

43. The effect of possible new legislation is taken into consideration in measuring an existing obligation when sufficient objective evidence exists that the legislation is virtually certain to be enacted. The variety of circumstances that arise in practice usually makes it impossible to specify a single event that will provide sufficient, objective evidence in every case. Evidence is required both of what legislation will demand and of whether it is virtually certain to be enacted and implemented in due course. In many cases sufficient objective evidence will not exist until the new legislation is enacted.

Expected Disposal of Assets

44. Gains from the expected disposal of assets should not be taken into account in measuring a provision.

45. Gains on the expected disposal of assets are not taken into account in measuring a provision, even if the expected disposal is closely linked to the event giving rise to the provision. Instead, an enterprise recognises gains on expected disposals of assets at the time specified by the Accounting Standard dealing with the assets concerned.

Reimbursements

46. Where some or all of the expenditure required to settle a provision is expected to be reimbursed by another party, the reimbursement should be recognised when, and only when, it is virtually certain that reimbursement will be received if the enterprise settles the obligation. The reimbursement should be treated as a separate asset. The amount recognised for the reimbursement should not exceed the amount of the provision.

47. In the statement of profit and loss, the expense relating to a provision may be presented net of the amount recognised for a reimbursement.

48. Sometimes, an enterprise is able to look to another party to pay part or all of the expenditure required to settle a provision (for example, through insurance contracts, indemnity clauses or suppliers' warranties). The other party may either reimburse amounts paid by the enterprise or pay the amounts directly.

49. In most cases, the enterprise will remain liable for the whole of the amount in question so that the enterprise would have to settle the full amount if the third party failed to pay for any reason. In this situation, a provision is recognised for the full amount of the liability, and a separate asset for the expected reimbursement is recognised when it is virtually certain that reimbursement will be received if the enterprise settles the liability.

50. In some cases, the enterprise will not be liable for the costs in question if the third party fails to pay. In such a case, the enterprise has no liability for those costs and they are not included in the provision.

51. As noted in paragraph 28, an obligation for which an enterprise is jointly and severally liable is a contingent liability to the extent that it is expected that the obligation will be settled by the other parties.

Changes in Provisions

52. Provisions should be reviewed at each balance sheet date and adjusted to reflect the current best estimate. If it is no longer probable that an outflow of resources embodying economic benefits will be required to settle the obligation, the provision should be reversed.

Use of Provisions

53. A provision should be used only for expenditures for which the provision was originally recognised.

54. Only expenditures that relate to the original provision are adjusted against it. Adjusting expenditures against a provision that was originally recognised for another purpose would conceal the impact of two different events.

Application of the Recognition and Measurement Rules

Future Operating Losses

55. Provisions should not be recognised for future operating losses.

56. Future operating losses do not meet the definition of a liability in paragraph 10 and the general recognition criteria set out for provisions in paragraph 14.

57. An expectation of future operating losses is an indication that certain assets of the operation may be impaired. An enterprise tests these assets for impairment under Accounting Standard (AS) 28, *Impairment of Assets.*

Restructuring

58. The following are examples of events that may fall under the definition of restructuring:

(a) sale or termination of a line of business;

(b) the closure of business locations in a country or region or the relocation of business activities from one country or region to another;

(c) changes in management structure, for example, eliminating a layer of management; and

(d) fundamental re-organisations that have a material effect on the nature and focus of the enterprise's operations.

59. A provision for restructuring costs is recognised only when the recognition criteria for provisions set out in paragraph 14 are met.

60. No obligation arises for the sale of an operation until the enterprise is committed to the sale, i.e., there is a binding sale agreement.

61. An enterprise cannot be committed to the sale until a purchaser has been identified and there is a binding sale agreement. Until there is a binding sale agreement, the enterprise will be able to change its mind and indeed will have to take another course of action if a purchaser cannot be found on acceptable terms. When the sale of an operation is envisaged as part of a restructuring, the assets of the operation are reviewed for impairment under Accounting Standard (AS) 28, *Impairment of Assets*.

62. A restructuring provision should include only the direct expenditures arising from the restructuring which are those that are both:

(a) necessarily entailed by the restructuring; and

(b) not associated with the ongoing activities of the enterprise.

63. A restructuring provision does not include such costs as:

(a) retraining or relocating continuing staff;

(b) marketing; or

(c) investment in new systems and distribution networks.

These expenditures relate to the future conduct of the business and are not liabilities for restructuring at the balance sheet date. Such expenditures are recognised on the same basis as if they arose independently of a restructuring.

64. Identifiable future operating losses up to the date of a restructuring are not included in a provision.

65. As required by paragraph 44, gains on the expected disposal of assets are not taken into account in measuring a restructuring provision, even if the sale of assets is envisaged as part of the restructuring.

Disclosure

66. For each class of provision, an enterprise should disclose:

(a) the carrying amount at the beginning and end of the period;

(b) additional provisions made in the period, including increases to existing provisions;

(c) amounts used (i.e. incurred and charged against the provision) during the period; and

(d) unused amounts reversed during the period.

Provided that a Small and Medium-sized Company, as defined in the Notification, may not comply with paragraph 66 above.

67. An enterprise should disclose the following for each class of provision:

(a) a brief description of the nature of the obligation and the expected timing of any resulting outflows of economic benefits;

(b) an indication of the uncertainties about those outflows. Where necessary to provide adequate information, an enterprise should disclose the major assumptions made concerning future events, as addressed in paragraph 41; and

(c) the amount of any expected reimbursement, stating the amount of any asset that has been recognised for that expected reimbursement.

Provided that a Small and Medium-sized Company, as defined in in the Notification, may not comply with paragraph 67 above.

68. Unless the possibility of any outflow in settlement is remote, an enterprise should disclose for each class of contingent liability at the balance sheet date a brief description of the nature of the contingent liability and, where practicable:

(a) an estimate of its financial effect, measured under paragraphs 35-45;

(b) an indication of the uncertainties relating to any outflow; and

(c) the possibility of any reimbursement.

69. In determining which provisions or contingent liabilities may be aggregated to form a class, it is necessary to consider whether the nature of the items is sufficiently similar for a single statement about them to fulfill the requirements of paragraphs 67 (a) and (b) and 68 (a) and (b). Thus, it may be appropriate to treat as a single class of provision amounts relating to warranties of different products, but it would not be appropriate to treat as a single class amounts relating to normal warranties and amounts that are subject to legal proceedings.

70. Where a provision and a contingent liability arise from the same set of circumstances, an enterprise makes the disclosures required by paragraphs 66-68 in a way that shows the link between the provision and the contingent liability.

71. Where any of the information required by paragraph 68 is not disclosed because it is not practicable to do so, that fact should be stated.

72. In extremely rare cases, disclosure of some or all of the information required by paragraphs 66-70 can be expected to prejudice seriously the position of the enterprise in a dispute with other parties on the subject matter of the provision or contingent liability. In such cases, an enterprise need not disclose the information, but should disclose the general nature of the dispute, together with the fact that, and reason why, the information has not been disclosed.

Transitional Provisions[43]

73. ***All the existing provisions for decommissioning, restoration and similar liabilities (see paragraph 35) should be discounted prospectively, with the corresponding effect to the related item of property, plant and equipment.***

Illustration A

Tables - Provisions, Contingent Liabilities and Reimbursements

The purpose of this illustration is to summarise the main requirements of the Accounting Standard. It does not form part of the Accounting Standard and should be read in the context of the full text of the Accounting Standard.

Provisions and Contingent Liabilities

IndiaCode

Where, as a result of past events, there may be an outflow of resources embodying future economic benefits in settlement of: (a) a present obligation the one whose existence at the balance sheet date is considered probable; or (b) a possible obligation the existence of which at the balance sheet date is considered not probable.		
There is a present obligation that probably requires an outflow of resources and a reliable estimate can be made of the amount of obligation.	**There is a possible obligation or a present obligation that may, but probably will not, require an outflow of resources.**	**There is a possible obligation or a present obligation where the likelihood of an outflow of resources is remote.**
A provision is recognised (paragraph 14). Disclosures are required for the provision (paragraphs 66 and 67).	No provision is recognised (paragraph 26). Disclosures are required for the contingent liability (paragraph 68).	No provision is recognised (paragraph 26). No disclosure is required (paragraph 68).

[43] Transitional Provisions given in Paragraph 73 are relevant only for standards notified under Companies (Accounting Standards) Rules, 2006 as amended from time to time.

Reimbursements

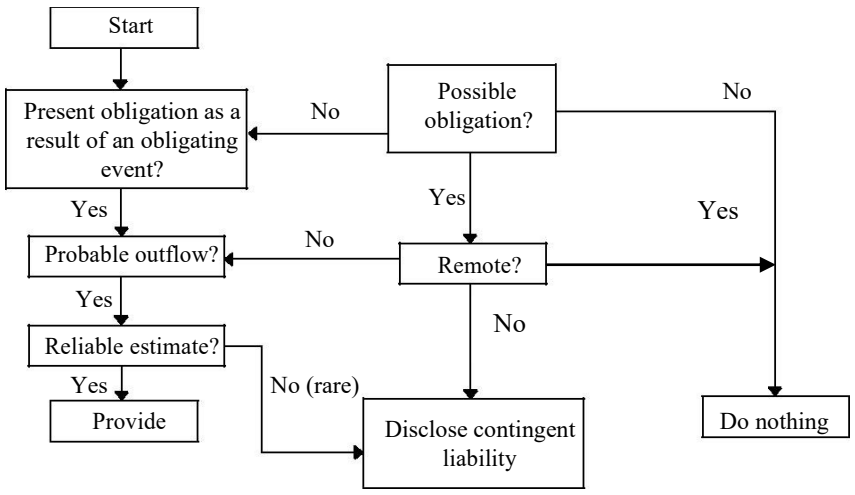
Some or all of the expenditure required to settle a provision is expected to be reimbursed by another party.		
The enterprise has no obligation for the part of the expenditure to be reimbursed by the other party.	**The obligation for the amount expected to be reimbursed remains with the enterprise and it is virtually certain that reimbursement will be received if the enterprise settles the provision.**	**The obligation for the amount expected to be reimbursed remains with the enterprise and the reimbursement is not virtually certain if the enterprise settles the provision.**
The enterprise has no liability for the amount to be reimbursed (paragraph 50).	The reimbursement is recognised as a separate asset in the balance sheet and may be offset against the expense in the statement of profit and loss. The amount recognised for the expected reimbursement does not exceed the liability (paragraphs 46 and 47).	The expected reimbursement is not recognised as an asset (paragraph 46).
No disclosure is required.	The reimbursement is disclosed together with the amount recognised for the reimbursement (paragraph 67(c)).	The expected reimbursement is disclosed (paragraph 67(c)).

IndiaCode

Illustration B

Decision Tree

The purpose of the decision tree is to summarise the main recognition requirements of the Accounting Standard for provisions and contingent liabilities. The decision tree does not form part of the Accounting Standard and should be read in the context of the full text of the Accounting Standard.



Note: in rare cases, it is not clear whether there is a present obligation. In these cases, a past event is deemed to give rise to a present obligation if, taking account of all available evidence, it is more likely than not that a present obligation exists at the balance sheet date (paragraph 15 of the Standard)

Illustration C

Illustrations: Recognition

This illustration illustrates the application of the Accounting Standard to assist in clarifying its meaning. It does not form part of the Accounting Standard.

All the enterprises in the Illustration have 31 March year ends. In all cases, it is assumed that a reliable estimate can be made of any outflows expected. In some Illustrations the circumstances described may have resulted in impairment of the assets - this aspect is not dealt with in the Illustrations.

The cross references provided in the Illustrations indicate paragraphs of the Accounting Standard that are particularly relevant. The illustration should be read in the context of the full text of the Accounting Standard.

Illustration 1: Warranties

A manufacturer gives warranties at the time of sale to purchasers of its product. Under the terms of the contract for sale the manufacturer undertakes to make good, by repair or replacement, manufacturing defects that become apparent within three years from the date of sale. On past experience, it is probable (i.e. more likely than not) that there will be some claims under the warranties.

Present obligation as a result of a past obligating event - The obligating event is the sale of the product with a warranty, which gives rise to an obligation.

An outflow of resources embodying economic benefits in settlement - Probable for the warranties as a whole (see paragraph 23).

Conclusion - A provision is recognised for the best estimate of the costs of making good under the warranty products sold before the balance sheet date (see paragraphs 14 and 23).

Illustration 2: Contaminated Land - Legislation Virtually Certain to be Enacted

An enterprise in the oil industry causes contamination but does not clean up because there is no legislation requiring cleaning up, and the enterprise has been contaminating land for several years. At 31 March 2005 it is virtually certain that a law requiring a clean-up of land already contaminated will be enacted shortly after the year end.

Present obligation as a result of a past obligating event - The obligating event is the contamination of the land because of the virtual certainty of legislation requiring cleaning up.

An outflow of resources embodying economic benefits in settlement - Probable.

Conclusion - A provision is recognised for the best estimate of the costs of the clean-up (see paragraphs 14 and 21).

Illustration 3: Offshore Oilfield

An enterprise operates an offshore oilfield where its licensing agreement requires it to remove the oil rig at the end of production and restore the seabed. Ninety per cent of the eventual costs relate to the removal of the oil rig and restoration of damage caused by building it, and ten per cent arise through the extraction of oil. At the balance sheet date, the rig has been constructed but no oil has been extracted.

Present obligation as a result of a past obligating event - The construction of the oil rig creates an obligation under the terms of the licence to remove the rig and restore the seabed and is thus an obligating event. At the balance sheet date, however, there is no obligation to rectify the damage that will be caused by extraction of the oil.

An outflow of resources embodying economic benefits in settlement - Probable.

Conclusion - A provision is recognised for the best estimate of ninety per cent of the eventual costs that relate to the removal of the oil rig and restoration of damage caused by building it (see paragraph 14). These costs are included as part of the cost of the oil rig. The ten per cent of costs that arise through the extraction of oil are recognised as a liability when the oil is extracted.

Illustration 4: Refunds Policy

A retail store has a policy of refunding purchases by dissatisfied customers, even though it is under no legal obligation to do so. Its policy of making refunds is generally known.

Present obligation as a result of a past obligating event - The obligating event is the sale of the product, which gives rise to an obligation because obligations also arise from normal business practice, custom and a desire to maintain good business relations or act in an equitable manner.

An outflow of resources embodying economic benefits in settlement - Probable, a proportion of goods are returned for refund (see paragraph 23).

Conclusion - A provision is recognised for the best estimate of the costs of refunds (see paragraphs 11, 14 and 23).

Illustration 5: Legal Requirement to Fit Smoke Filters

Under new legislation, an enterprise is required to fit smoke filters to its factories by 30 September 2005. The enterprise has not fitted the smoke filters.

(a) At the balance sheet date of 31 March 2005

Present obligation as a result of a past obligating event - There is no obligation because there is no obligating event either for the costs of fitting smoke filters or for fines under the legislation.

Conclusion - No provision is recognised for the cost of fitting the smoke filters (see paragraphs 14 and 16-18).

(b) At the balance sheet date of 31 March 2006

Present obligation as a result of a past obligating event - There is still no obligation for the costs of fitting smoke filters because no obligating event has occurred (the fitting of the filters). However, an obligation might arise to pay fines or penalties under the legislation because the obligating event has occurred (the non-compliant operation of the factory).

An outflow of resources embodying economic benefits in settlement - Assessment of probability of incurring fines and penalties by non-compliant operation depends on the details of the legislation and the stringency of the enforcement regime.

Conclusion - No provision is recognised for the costs of fitting smoke filters. However, a provision is recognised for the best estimate of any fines and penalties that are more likely than not to be imposed (see paragraphs 14 and 16-18).

Illustration 6: Staff Retraining as a Result of Changes in the Income Tax System

The government introduces a number of changes to the income tax system. As a result of these changes, an enterprise in the financial services sector will need to retrain a large proportion of its administrative and sales workforce in order to ensure continued compliance with financial services regulation. At the balance sheet date, no retraining of staff has taken place.

Present obligation as a result of a past obligating event - There is no obligation because no obligating event (retraining) has taken place.

Conclusion - No provision is recognised (see paragraphs 14 and 16-18).

Illustration 7: A Single Guarantee

During 2004-05, Enterprise A gives a guarantee of certain borrowings of Enterprise B, whose financial condition at that time is sound. During 2005- 06, the financial condition of Enterprise B deteriorates and at 30 September 2005 Enterprise B goes into liquidation.

(a) At 31 March 2005

Present obligation as a result of a past obligating event - The obligating event is the giving of the guarantee, which gives rise to an obligation.

An outflow of resources embodying economic benefits in settlement - No outflow of benefits is probable at 31 March 2005.

Conclusion - No provision is recognised (see paragraphs 14 and 22). The guarantee is disclosed as a contingent liability unless the probability of any outflow is regarded as remote (see paragraph 68).

(b) At 31 March 2006

Present obligation as a result of a past obligating event - The obligating event is the giving of the guarantee, which gives rise to a legal obligation.

An outflow of resources embodying economic benefits in settlement - At 31 March 2006, it is probable that an outflow of resources embodying economic benefits will be required to settle the obligation.

Conclusion - A provision is recognised for the best estimate of the obligation (see paragraphs 14 and 22).

Note: This example deals with a single guarantee. If an enterprise has a portfolio of similar guarantees, it will assess that portfolio as a whole in determining whether an outflow of resources embodying economic benefit is probable (see paragraph 23). Where an enterprise gives guarantees in exchange for a fee, revenue is recognised under AS 9, *Revenue Recognition.*

Illustration 8 : A Court Case

After a wedding in 2004-05, ten people died, possibly as a result of food poisoning from products sold by the enterprise. Legal proceedings are started seeking damages from the enterprise but it disputes liability. Up to the date of

approval of the financial statements for the year 31 March 2005, the enterprise's lawyers advise that it is probable that the enterprise will not be found liable. However, when the enterprise prepares the financial statements for the year 31 March 2006, its lawyers advise that, owing to developments in the case, it is probable that the enterprise will be found liable.

(a) At 31 March 2005

Present obligation as a result of a past obligating event - On the basis of the evidence available when the financial statements were approved, there is no present obligation as a result of past events.

Conclusion - No provision is recognised (see definition of 'present obligation' and paragraph 15). The matter is disclosed as a contingent liability unless the probability of any outflow is regarded as remote (paragraph 68).

(b) At 31 March 2006

Present obligation as a result of a past obligating event - On the basis of the evidence available, there is a present obligation.

An outflow of resources embodying economic benefits in settlement - Probable.

Conclusion - A provision is recognised for the best estimate of the amount to settle the obligation (paragraphs 14-15).

Illustration 9A: Refurbishment Costs - No Legislative Requirement

A furnace has a lining that needs to be replaced every five years for technical reasons. At the balance sheet date, the lining has been in use for three years.

Present obligation as a result of a past obligating event - There is no present obligation.

Conclusion - No provision is recognised (see paragraphs 14 and 16-18). The cost of replacing the lining is not recognised because, at the balance sheet date, no obligation to replace the lining exists independently of the company's future actions - even the intention to incur the expenditure depends on the company deciding to continue operating the furnace or to replace the lining.

Illustration 9B: Refurbishment Costs – Legislative Requirement

An airline is required by law to overhaul its aircraft once every three years.

Present obligation as a result of a past obligating event - There is no present obligation.

Conclusion - No provision is recognised (see paragraphs 14 and 16-18). The costs of overhauling aircraft are not recognised as a provision for the same reasons as the cost of replacing the lining is not recognised as a provision in illustration 9A. Even a legal requirement to overhaul does not make the costs of overhaul a liability, because no obligation exists to overhaul the aircraft independently of the enterprise's future actions - the enterprise could avoid the future expenditure by its future actions, for example by selling the aircraft.

Illustration 10: An Onerous Contract

An enterprise operates profitably from a factory that it has leased under an operating lease. During December 2005 the enterprise relocates its operations to a new factory. The lease on the old factory continues for the next four years, it cannot be cancelled and the factory cannot be re-let to another user.

Present obligation as a result of a past obligating event-The obligating event occurs when the lease contract becomes binding on the enterprise, which gives rise to a legal obligation.

An outflow of resources embodying economic benefits in settlement- When the lease becomes onerous, an outflow of resources embodying economic benefits is probable, (Until the lease becomes onerous, the enterprise accounts for the lease under AS 19, *Leases*).

Conclusion-A provision is recognised for the best estimate of the unavoidable lease payments.

IndiaCode

Illustration D

Illustrations: Disclosure

This illustration does not form part of the Accounting Standard. Its purpose is to illustrate the application of the Accounting Standard to assist in clarifying its meaning.

An illustration of the disclosures required by paragraph 67 is provided below.

Illustration 1 Warranties

A manufacturer gives warranties at the time of sale to purchasers of its three product lines. Under the terms of the warranty, the manufacturer undertakes to repair or replace items that fail to perform satisfactorily for two years from the date of sale. At the balance sheet date, a provision of Rs. 60,000 has been recognised. The following information is disclosed:

A provision of Rs. 60,000 has been recognised for expected warranty claims on products sold during the last three financial years. It is expected that the majority of this expenditure will be incurred in the next financial year, and all will be incurred within two years of the balance sheet date.

An illustration is given below of the disclosures required by paragraph 72 where some of the information required is not given because it can be expected to prejudice seriously the position of the enterprise.

Illustration 2 Disclosure Exemption

An enterprise is involved in a dispute with a competitor, who is alleging that the enterprise has infringed patents and is seeking damages of Rs. 1000 lakh. The enterprise recognises a provision for its best estimate of the obligation, but discloses none of the information required by paragraphs 66 and 67 of the Standard. The following information is disclosed:

Litigation is in process against the company relating to a dispute with a competitor who alleges that the company has infringed patents and is seeking damages of Rs. 1000 lakh. The information usually required by AS 29, Provisions, Contingent Liabilities and Contingent Assets is not disclosed on the grounds that it can be expected to prejudice the interests of the company. The directors are of the opinion that the claim can be successfully resisted by the company.

Uploaded by Dte. of Printing at Government of India Press, Ring Road, Mayapuri, New Delhi-110064
and Published by the Controller of Publications, Delhi-110054. ALOK KUMAR Digitally signed by ALOK KUMAR Date: 2021.06.25 20:04:53 +05'30'